२५

[illegible]

भेषज-लक्षण-संग्रह

[illegible]

३४

श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बाँसकोटा,
'हरि निवास' १/५०५, गुलिगाल,
ललितपुर, काठमाण्डू (नेपाल)

होमियोपैथिक

भैषज-लक्षण-संग्रह

या

मेटीरिया-मेडिका

[रोग-चिकित्सा-निर्घण्टके साथ]

प्रथम खण्ड

द्वितीय संस्करण

एम० भट्टाचार्य एण्ड को०
९४ न० नेताजी सुभाष रोड,
कलकत्ता
१९४७

Shri Haribamsta Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय वास्कोटा,
Ishw[illegible] (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U. P.)

[मूल्य १२)

प्रकाशक—
डा० समरेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य बि, एस् सि
इकनमिक फार्मेसी
८४ नं० नेताजी सुभाष रोड
कलकत्ता

सर्व-स्वत्व संरक्षित

मुद्रक—
श्रीब्रजेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य
इकनमिक प्रेस
२५ नं० रायबगान स्ट्रीट
कलकत्ता

ई० पि० ११००—२५-९-४७ ई०

भूमिका

साधारण दृष्टिसे देखनेपर यह मालूम होता है कि दुर्गा प्रसादकी आँख, कान, नाकसे मथुरा प्रसादकी आँख, कान, नाकका बहुत कुछ सादृश्य है ; परन्तु थोड़ा ध्यान देकर देखनेसे ही स्पष्ट मालूम होता है, कि दुर्गा प्रसादके चेहरेका अवयव और मथुरा प्रसादके चेहरेके अवयव सब ठीक एक-समान नहीं हैं—उनमें प्रभेद है। भीष्म, द्रोण, भीम, अर्जुन प्रभृति सभी एक महारथी थे ; सभी महान योद्धा थे, पर प्रत्येककी शूरता-वीरता भिन्न-भिन्न प्रकारकी थी। महाभारत पढ़नेवाले अच्छी तरह जानते हैं, कि भीमसेनका गदा-सञ्चालन और शान्तनु-पुत्रका अत्यन्त तेजोसे ज्या-रोपण और कोदण्ड-टंकार —इसमें सन्देह नहीं, कि उनकी वीरताके परिचायक हैं ; पर ये दोनों ही वीरत्व एक जातिके नहीं हैं—भिन्न और स्वतन्त्र प्रकारके हैं। जिन्होंने होमियोपैथिक मेटीरिया-मेडिका अच्छी तरह नहीं पढ़ी, वे केवल "चिकित्सा-प्रकरण" (Practice) ग्रन्थके सहारे दवा चुननेके समय, बहुत-सी जगहोंपर, कितनी ही दवाओंका सादृश्य देखकर, उन दवाओंको समगुणवाली दवाएँ समझ लेते हैं ; परन्तु वास्तवमें ऐसी बात नहीं है। जैसे—आर्सेनिक और सिकेलि इन दोनों दवाओंमें ही "शरीरमें दाह" "जलन" दूर करनेकी शक्ति है ; पर यदि शरीरमें दाह रहनेपर भी रोगी ओढ़नेसे शरीर ढँक रखना चाहे तो आर्सेनिकके प्रयोगसे लाभ होता है, पर यदि गात्र-दाहके कारण रोगी वस्त्र उतार फेंकें, शरीरपर वस्त्र बिलकुल ही न रखना चाहे तो सिकेलि लाभ करता है। इस प्रथम खण्डमें प्रायः साढ़े पाँच सौ दवाओंका विवरण है और प्रत्येक दवाका लक्षण प्रायः इस ढङ्गसे वर्णन किया गया है, कि उसके पढ़नेसे उक्त दवाओंका एक वास्तविक चित्र पाठकोंके चित्त-पटपर अङ्कित हो जाये। इसमें सफलता कितनी मिली है, इसका निर्णय तो पाठक ही करें। किसी दवाको पढ़नेके समय नये सीखनेवालेको पहले उस दवाको **"वृद्धि" "उपशम" "आभास"** और **"सम्बन्ध"** इन कई विषयोंपर विशेष ध्यान देना चाहिये।* इससे उस दवाका **चित्र** या

---

* अर्थात् (क) किस दवाके बाद कौन दवा ठीक बैठती है, (ख) किस दवाके बाद कौन दवा न देनी चाहिये, (ग) किस दवाकी विष-क्रियाको कौन दवा नष्ट करती हैं (विशेष विवरणके लिये "पारिवारिक चिकित्सा" दसवाँ संस्करण, तीसरा अध्याय देखिये)।

स्वरूप बहुत कुछ समझमें आ जायगा और यदि चिकित्सक किसी रोगको चिकित्सा करते समय, जिस दवाको उन्होंने रोगीको देनेके लिये चुना है, उसका प्रयोग करनेके पहले, उस दवाका समस्त विवरण पढ़ने बाद "सदृश" पैरामें दी हुई समस्त दवाएँ मनोयोग-पूर्वक पढ़ें और इस तरह पढ़ लेने बाद, जिस दवाके लक्षणोंसे रोगीके रोग-लक्षणोंकी सबसे अधिक समानता दिखाई दे, सदृश-विधानाचार्य हैनिमैनके मतसे उस रोगकी वही सच्ची और प्रकृष्ट दवा है।† इस तरह जिस दवाका निर्वाचन और प्रयोग होता है, उससे रोगीका तो मङ्गल होता ही है, साथ ही चिकित्सकको भी भरपूर यश प्राप्त होता है।

इस ग्रन्थके प्रणयन और संकलनमें असाधारण परिश्रम हुआ है और उसी प्रकारसे धन-व्यय। आशा है, हमारे सहृदय ग्राहक तथा पाठक इसे भी हमारे अन्य ग्रन्थोंकी भाँति ही अपनाकर हमारा परिश्रम सार्थक करेंगे।

इकनमिक फार्मेसी }
कलकत्ता }

भवदीय—
एम० भट्टाचार्य्य एण्ड को०

दूसरे संस्करणकी भूमिका

परमात्माकी कृपासे आज अपने पाठकोंके सामने इस महान ग्रन्थका दूसरा संस्करण पेश करते हुए बड़ा ही आनन्द हो रहा है। वर्त्तमान परिस्थितिमें कागज, छपाई वगैरहकी बहुत महँगीके कारण प्रकाशनका खर्च बहुत ही बढ़ गया है, जिससे इसका कीमत बहुत ज्यादा होना चाहिये था ; फिर भी अपने ग्राहकोंकी सुविधाके लिये इसकी कीमतमें थोड़ी-सी ही वृद्धि की गई है, जिससे इस महान ग्रन्थसे सर्वसाधारण लाभ उठा सकें।

आशा है, हमारे पाठक-पाठिकाएँ पूर्व संस्करणके भाँति ही इस महान परमोपयोगी ग्रन्थसे फायदा उठा हमें उत्साहित करेंगे।

भवदीय—
एम० भट्टाचार्य्य एण्ड को०

---

† यह भी बता देना आवश्यक है, कि कभी-कभी रोगके विशेष लक्षणके साथ दवाका विशेष लक्षण मिलाकर दवा देनेपर भी आशातीत लाभ होता है।

प्रथम खण्डकी

औषध-सूची

विषय … पृष्ठ

अर्गोटिनम … ८०८
अरम ड्रेकनकुलस … २५६
अरम इटालिकम … २५६
आइबिरिस ऐमेरा … १०५३
आइरिडियम … १०९७
आइरिस जर्मनिका … ११०२
आइरिस टेनैक्स … १०९८
आइरिस वर्सिकोलर … ११०२
आइरिस फिटिडिस्मा … ११०१
आइरिस फोरेण्टिना … ११०१
आयोडियम … १०७९
आयोडोफार्मम … १०८८
आरम आर्सेनिकम … २८६
आरम आयोडेटम … २८७
आरम ब्रोमेटम … २८६
आरम मेटालिकम … २८७
आरम म्यूरियेटिकम … २९४
आरम म्यूरियेटिकम कैलिनेटम २९५
आरम म्यूरियैटिकम नैट्रोनेटम २९६
आरम सल्फ्युरेटम … २९८
आरेण्टियम … २८६
आर्कटियम लैप्पा … २०९
आर्जेण्टम आक्साइडम … २२४
आर्जेण्टम आयोडेटम … २१२
आर्जेण्टम नाइट्रिकम … २१६
आर्जेण्टम मेटालिकम … २१२
आर्जेण्टम सायानेटम … २११
आर्टिमिसिया वल्गेरिस … २५४
आर्निका माण्टेना … २२८
आर्ब्युटस ऐण्ड्राचिन … २०९
आर्मोरेसिया रैस्टिकैना … २२६
आर्सेनिकम आयोडेटम … २४९
आर्सेनिकम ऐल्बम … २३५
आर्सेनिकम ब्रोमेटम … २४६
आर्सेनिकम मेटेलिकम … २५२
आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम फ्लेवम और रूब्रम … २५३
आर्सेनिकम हाइड्रोजेनिसेटम २४६
इक्टोडिस फिटिडा … १०५७
इकथाइयोलम … १०५६
इग्नेशिया ऐमेरा … १०५९
इट … ११०७
इण्डियम … १०७४
इण्डिगो … १०७०
इथिरम … ८१८
इथियोप्स ऐण्टिमोनैलिस ८२
इथिलम नाइट्रिकम … ८१९
इथ्यूजा सिनैपियम … ८३
इनुला … १०७९
इपिकाकुआन्हा … १०९१

विषय	पृष्ठ
इम्परेटोरिया ...	१०७०
इयुकैलिप्टस ग्लोब्यूलस ...	८१९
इयुजिनिया जेम्बस ...	८२२
इयुपियोनम ...	८५६
इयुपेटोरियम ऐरोमैटिकम	८३०
इयुपेटोरियम पर्पुरियम	८३५
इयुपेटोरियम पर्फोलियेटम	८३१
इयुफोर्बियम आफिसिनेरम	८४५
इयुफोर्बिया इपिकाकुआन्हा	८४४
इयुफोर्बिया ऐमिगडिलोइडिस	८३९
इयुफोर्बिया कोरोलेटा	८४१
इयुफोर्बिया पेप्लस ...	८५०
इयुफोर्बिया पेल्युलिफेरा ...	८५१
इयुफोर्बिया लैथेरिस ...	८४४
इयुफोर्बिया साइपेरिसियस	८४३
इयुफोर्बिया हाइपेरिसिफोलिया	८४३
इयुफोर्बिया हिटरोडोक्सा	८४३
इयुफ्रेशिया आफिसिनेलिस	८५१
इयोनियमस ऐट्रोपर्पुरिया	८२६
इयोनिमस युरोपिया	८२७
इयोनिमिनम ...	८२६
इरिजिरन कैनाडेन्सो	८०९
इरिञ्जियम ऐक्वेटिकम ...	८१३
इरिञ्जियम मेरिटिकम ...	७१७
इरियोडिक्टियोन कैलिफार्निकम	८११
इरेक्थाइटिस ...	८०७
इरोडियम ...	८१३
इलिइस ...	७९३
इलिसियम एनिसेटम ...	१०६९
इलेक्स इक्विफोलियम ...	१०६८
इलेक्ट्रिसिटस ...	८०२
इलैटेरियम ...	७९९
इलेप्स कोरैलिनस ...	७९४
इस्कुलस ग्लैब्रा ...	७७
इस्कुलस हिप्पोकैस्टेनम	७९
एइलैन्थस ग्लैण्डियुलोसा	९९
एकिनेशिया ऐङ्गस्टिफोलिया	७८९
„ पर्पुरिया ...	७९२
एक्विसेटम हायमेल ...	८०५
एपिजिया रैपेन्स ...	८०२
एपिफिगस वर्जिनियाना ...	८०४
एपिलोबियम पैलस्टर ...	८०४
एपिस मेलिफिका ...	१८५
एफिड्रा बल्गेरिस ..	८०३
एबीज कैनाडेन्सिस ...	१
एबीज नाइग्रा ...	२
एरंडो मारिटैनिका ...	२६१
एरम ड्राइफाइलम ...	२५८
एरम ड्रैकान्टियम ...	२५५
एरम मैकुलेटम ...	२५७
एरिन्थ्रिनस ...	८१७
एसिरिनम ...	१८
ऐकालिफा इण्डिका ...	९
ऐकोनाइटम कैमेरम ...	५८
ऐकोनाइट फेराक्स ..	६८
ऐकोनाइटम नेपेलस ..	५९
ऐकोनाइटम लाइकाक्टोनम	५८
ऐकोनाइटिनम ...	५७

विषय पृष्ठ
ऐकोया मेरिना … २०३
ऐक्टिया रेसिमोसा … ६९
ऐक्टिया स्पाइकेटा … ७४
ऐक्विलिजिया बल्गेरिस … २०३
ऐगरिकस ऐमेटिकस … ८७
ऐगरिकस फैलायडिस … ९४
ऐगरिकस मस्केरियस … ८८
ऐगेव अमेरिकाना … ९५
ऐग्नस कैस्टस … ९५
ऐग्राफिस न्यूटेन्स … ९८
ऐग्रास्टोमा गिथैगो … ९८
ऐङ्गास्टियुरा स्पुरिया … १५८
ऐङ्गस्टियुरा वेरा … १५८
ऐङ्गोफोरा … १५८
ऐजाडिरैक्टा इण्डिका … २९९
ऐट्रोपिनम … २८५
ऐड्रेनैलिन … ७७
ऐडोनिस वर्नेलिस … ७६
ऐण्टिपाइरिनम … १८२
ऐण्टिफेब्रिनम … १६८
ऐण्टिमोनियम आयोडेटम १७४
ऐण्टिमोनियम आर्सेनिकोसम १६७
ऐण्टिमोनियम क्रूडम … १६८
ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम १७६
„ म्यूरियैटिकम १७६
„ सल्फ्युरेटम आरियम १७५
ऐण्टिर्हिनम लिनारियम २०१
ऐथामाण्टा … २८४

विषय पृष्ठ
ऐनाइसम स्टेलेटम … १६२
ऐनाकार्डियम आक्सिडेण्टेल १५४
ऐनाकार्डियम ओरियण्टेलि १४९
ऐनागैलिस आर्वेन्सिस … १५५
ऐनान्थेरम म्यूरिकेटम … १५६
ऐनिलिनम … १६५
ऐन्थिमिस बोविलिस … १६३
ऐन्थ्राकोकाली … १६६
ऐन्थोक्सैन्थम … १६६
ऐन्थिस्ट्रोडन काण्टर्ड्रिक्स १५७
ऐन्हेलोनियम लिविनाई १६१
ऐपियम ग्रैवियोलेन्स … १९४
ऐपियम विरस … १९४
ऐपियोल … २०२
ऐपोमार्फाइनम या ऐपोमार्फिया २००
ऐपोसाइनम ऐण्ड्रोसिमिफोलियम १९६
ऐपोसाइनम कैनाबिनम … १९७
ऐफिस चिनोपोडियाई ग्लुकाई १९३
ऐब्सिन्थियम … ७
ऐब्रोटेनम … ४
ऐमिग्डेला ऐमेरा … १४५
ऐमिग्डेला पर्सिका … १४७
ऐमिलेनम नाइट्रोसम … १४७
ऐमोनियम ऐसेटिकम .. १२७
ऐमोनियम कार्बोनिकम १३१
ऐमोनियम कास्टिकम … १३७
ऐमोनियम पाइक्रेटम … १४४
ऐमोनियम फास्फोरिकम १४३
ऐमोनियम बेञ्जोयिकम … १२९

विषय	पृष्ठ
ऐमोनियम ब्रोमेटम	१३०
ऐमोनियम मूरियेटिकम	१३८
ऐमोनियेकम गमाई	१२८
ऐम्पिलौप्सिस	१४४
ऐम्फिसबिना	१४५
ऐम्ब्राग्रिसिया	१२२
ऐम्ब्रोसिया	१२६
ऐरिका	२११
ऐरिस्टोलोचिया ग्रैण्डिफ्लोरा	२२५
ऐरिस्टोलोचिया सर्पेण्टेरिया	२२५
ऐरेनिया डायाडेमा	२०६
ऐरेनिया साइनेन्सिया	२०५
ऐरेनियेरम टेला	२०५
ऐरेलिया रेसिमोसा	२०३
ऐर्क्टियम लैप्पा	२०९
ऐल्नस रूब्रा	१०७
ऐलस्टोनिया स्कौलरिस	११२
ऐलियम सिपा	१०२
ऐलियम सैटाइवम	१०५
ऐलेट्रिस फैरिनोसा	१०१
ऐलो सोक्रोटिना	१०८
ऐल्यूमिना	११६
ऐल्यूमेन	११३
ऐवियेरि	२९९
ऐवेना सैटाइवा	२९८
ऐसाफिटिडा	२६४
ऐसिडम आक्जैलिकम	४०
ऐसिडम ऐसेटिकम	१०
ऐसिड कार्बोलिक	१७
ऐसिड क्रोमिक	२०
ऐसिड क्राइसोफेनिक	२१
ऐसिड गैलिक	२५
ऐसिड टार्टारिक	५६
ऐसिड नाइट्रिक	३३
ऐसिड नाइट्रोमूरियेटिकम	३९
ऐसिड पिक्रिक	४८
ऐसिड फास्फोरिक	४२
ऐसिड फ्लुयोरिक	२२
ऐसिड बेञ्जोयिक	१३
ऐसिड बोरिक या बोरैसिक	१६
ऐसिड मूरियेटिकम	३०
ऐसिड लैक्टिक	२८
ऐसिड सल्फ्युरिक	५२
ऐसिड सैलिसिलिक	५०
ऐसिड हाइड्रोसियेनिक	२६
ऐसिमिना ट्राइलोबा	२७५
ऐसेरम युरोपियम	२६८
ऐस्क्लिपियम सिरियेका	२७१
ऐस्क्लिपियस टियुबरोसा	२७२
ऐस्टिरियस रूबेन्स या युरास्टर रूबेन्स	२८०
ऐस्टेकस फ्लुवियाटिलिस या कैन्सर ऐस्टेकस	२७८
ऐस्ट्रागेलस	२८३
ऐस्पिडस्पर्मा कुइब्रेका	२७८
ऐस्पेरेगस आफिसिनेलिस	२७६
कक्कस कैक्टाई	६४२
कैरिका पेपिया	५०३

विषय	पृष्ठ
काइङ्का	३९४
काक्सियोनेला सेप्टेम्पङ्क्टेटा	६३४
काकुलस इण्डिकस	६३५
काञ्चियोलिनम	६६८
काण्डियुरैङ्गो	६६८
कान्वलबूलस आर्वेन्सिस	६८२
,, डार्टिनस	६८२
कान्वेलेरिया मेजेलिस	६७९
काफिया क्रूडा	६४७
,, टोस्टा	६५०
काफिइनम	६५१
कामोक्लेडिया डेण्टाटा	६६६
कार्डुयस बेनिडिक्टस	४९७
,, मेरियेनस	४९९
कार्नस ऐल्टर्निफोलिया	६९०
कार्नस फ्लोरिडा	६९२
कार्नस सार्सिनेटा	६९०
कार्बो ऐनिमेलिस	४७७
कार्बो वेजिटेबिलिस	४८२
कार्बोनियम	४८९
,, आक्सिजेनिसेटम	४९१
,, सल्फयुरेटम	४९४
,, हाइड्रोजेनिसेटम	४९०
कार्लस बाड	५०७
कालोफिलम थैलिकट्राइडिस	५२१
कास्टिकम	५२४
किनिनम आर्सेनिकोसम	५७२
किनिनम म्यूरियेटिकम	५७५
किनिनम सैलिसिलिकम	५७५
किनिनम सल्फयुरिकम	५७५
कुरारि	७३५
कूफिया विस्कोसिसिमा	७२०
कैक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस	३८४
कैजुपुटम	३९६
कैञ्जेलेगुया	४५४
कैडमियम ब्रोमेटम	३९०
कैडमियम सल्फ्युरिकम	३९०
कैनाबिस इण्डिका	४५५
कैनाबिस सैटाइवा	४६०
कैन्थरिस वैसिकैटोरिया	४६४
कैप्सिकम ऐनियुयम	४७१
कैमोमिला मैट्रिकेरिया	५४९
कैम्फोरा आफिसिनेरम	४४८
कैम्फोरा मोनोब्रोमेटा	४५३
कैरिया ऐल्बा	५१२
कैलि आक्सैलिकम	११८९
कैलि आयोडेटम	११७०
कैलि आर्सेनिकोसम	११३०
कैलि ऐसेटिकम	११३०
कैलि कार्बोनिकम	११५३
कैलि क्लोरिकम	११६३
कैलि क्लोरोसम	११५२
कैलि टेल्युरिकम	१२०२
कैलि नाइट्रिकम या नाइट्रम	११८३
कैलि पर्माङ्गेनिकम	११८९
कैलि पिकरिकम	११९८
कैलि फास्फोरिकम	११९१
कैलि फेरोसायानेटम	११६९

विषय	पृष्ठ
कैलि बाइक्रोमिकम …	११३२
कैलि ब्रोमिटम …	११४४
कैलि म्यूरियेटिकम …	११८०
कैलि सल्फ्यूरिकम …	११९९
कैलि साइड्निकम …	११५३
कैलि सायानेटम …	११६७
कैलेडियम सिग्विनम …	३९९
कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया	४४५
कैलेण्डुला आफिसिनैलिस	४४२
कैल्केरिया आक्जैलिका …	४३१
कैल्केरिया आयोडेटा …	४२९
कैल्केरिया आविटेस्टि …	४३१
कैल्केरिया आर्सेनिका …	४०५
कैल्केरिया ऐसेटिका …	४०२
कैल्केरिया कार्बोनिका या आस्ट्रियेरम …	४०७
कैल्केरिया कास्टिका …	४२१
कैल्केरिया क्लोरिनेटा …	४२४
कैल्केरिया पाइक्रिका …	४३९
कैल्केरिया फास्फोरिका …	४३२
कैल्केरिया फ्लुयोरेटा …	४२४
कैल्केरिया ब्रोमेटा …	४०७
कैल्केरिया म्यूरियेटिका …	४३१
कैल्केरिया सल्फ्यूरिका …	४३९
कैल्केरिया साइलिसिया …	४३९
कैल्केरिया हाइपोफास्फोरोसा	४२८
कैल्था पैलस्ट्रिस …	४४७
कैल्मिया लैटिफोलिया …	१२०२
कैस्करा सैग्रेडा …	५१२

विषय	पृष्ठ
कैस्कैरिला … …	५१३
कैस्टर एकुई … …	५१६
कैस्टेनिया वेस्का …	५१५
कैस्टोरियम …	५१७
कोका … …	६२८
कोकेइन … …	६३१
कोटाइलिडन …	६९५
कोटो बार्क …	६९५
कोडिइनम … …	६४५
कोनायम ब्रोमिटम …	६७०
कोनायम मैकुलेटम …	६७०
कोबाल्टम … …	६२५
कोपेवा … …	६८३
कोरालियम रुब्रम …	६८६
कोरिडैलिस फार्मोसा …	६९४
कोरियारिया रस्किफोलिया	६८९
कोलचिकम आटमनेल	६५२
कोलचिसिनम …	६५२
कोलिन्सोनिया कैनाडेन्सिस	६५७
कोलेस्टेरिनम …	५८७
कोलोसिन्थस वलगेरिस	६६०
कोलोस्ट्रम …	६६५
क्यूकर्बिटा पेपो …	७१९
क्यूप्रम ऐसेटिकम …	७२२
क्यूप्रम आर्सेनिकोसम …	७२५
क्यूप्रम मेटालिकम …	७२७
क्यूप्रम सल्फ्यूरिक …	७३४
क्यूप्रेसम आस्ट्रैलिस …	७२१
„ लोसोनियाना …	७२१

विषय पृष्ठ

कूरबेबा मस्का ... ७१६
कूरलेक्स मस्का .. ७२०
क्रैटिगस आक्सियैकान्था ... ६९६
क्रोकस सैटाइवस ... ६९८
क्रोटन क्लोरेल ... ७१०
क्रोटन टिग्लियम ... ७११
क्रोटेलस केस्कैविला ... ७०१
क्रोटेलस होरिडस ... ७०२
क्रोमिकम आक्सिडेटम ५८८
क्लिमेटिस इरेक्टा .. ६२१
क्लोरम ५८५
क्लोरैलम ... ५८२
क्लोरोफार्मम ... ५८७
गलथोरिया प्रोकुबेन्स ... ९११
गासिपियम ... ९४७
गुयायेकम ... ९७०
गुयाराना ९७६
गुयारिया ९७७
गुयेको ९६८
ग्रण्डिलिया-रोबस्टा ... ९६६
गेटिसवर्ग ९३०
गेडस महुँया .. ९०४
गेलेगा ९०६
गेम्बोजिया .. ९०७
गेल्वेनिस्मस ... ९१२
गेलियम ९०७
गैस्टेन ९११
ग्रैटियोला आफिसिनेलिस ९६२
ग्रैनेटम .. ९४९

विषय पृष्ठ

ग्रैफाइटिस ... ९५२
ग्लोनोइनम ... ९३७
चायना आफिसिनैलिस ९०२
चायना बोलवियाना ५७२
चिनोपोडियम एन्थेलमिण्टिकम ५६४
चिनापोडियम वलवेरिया ... ५६८
चिमाफिला अम्बेलेटा ... ५६९
चिमाफिला मैकुलेटा ... ५६९
चियोनैन्थस वर्जिनिका ... ५८०
चिलोन ग्लैब्रा ... ५६३
चेइरैन्थस चेइरि ... ५५६
चेलिडोनियम मेजस ... ५५७
चेपारो ऐमार्गोजो ... ५५६
जङ्कस एफ्यूसस ... ११२६
जिनसेंग ... ९३२
जिम्निमा सिल्वेस्टर ९७९
जिम्नोक्लेडस ... ९८०
जियम राइवेल ... ९३१
जिरेनियम मैकुलेटम ... ९३०
जुग्लेन्स कैथर्टिका
या सिनारिया ११२०
जुगलेन्स रिजिया
या नक्स जुलैन्स ११२३
जुनिपेरस कम्युनिस ... ११२९
„ वर्जिनियेनस ११२९
जेक्विरिटो ... १११९
जेण्टियाना क्रूसियेटा ... ९२५
जेण्टियाना क्विन्क्विफोलिया ९२९
„ लूटिया ... ९२७

विषय ... पृष्ठ
कैलि बाइक्रोमिकम ... ११३२
कैलि ब्रोमिटम ... ११४४
कैलि म्यूरियेटिकम ... ११८०
कैलि सल्फ्युरिकम ... ११९९
कैलि साइट्रिकम ... ११५३
कैलि सायानेटम ... ११६७
कैलेडियम सिग्विनम ... ३९९
कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया ४४५
कैलेण्डुला आफिसिनैलिस ४४२
कैल्केरिया आक्जैलिका ... ४३१
कैल्केरिया आयोडेटा ... ४२९
कैल्केरिया आविटेस्टि ... ४३१
कैल्केरिया आर्सेनिका ... ४०५
कैल्केरिया ऐसेटिका ... ४०२
कैल्केरिया कार्बोनिका
या आस्ट्रियेरम ... ४०७
कैल्केरिया कास्टिका ... ४२१
कैल्केरिया क्लोरिनेटा ... ४२४
कैल्केरिया पाइक्रिका ... ४३९
कैल्केरिया फास्फोरिका .. ४३२
कैल्केरिया फ्लुयोरेटा ... ४२४
कैल्केरिया ब्रोमिटा ... ४०७
कैल्केरिया म्यूरियेटिका ... ४३१
कैल्केरिया सल्फ्युरिका ... ४३९
कैल्केरिया साइलिसिया ... ४३९
कैल्केरिया हाइपोफास्फोरोसा ४२८
कैल्था पैलस्ट्रिस ... ४४७
कैल्मिया लैटिफोलिया ... १२०२
कैस्केरा सैग्रेडा ... ५१२

विषय ... पृष्ठ
कैस्कैरिला ५१३
कैस्टर एकुई ५१६
कैस्टेनिया वेस्का .. ५१५
कैस्टोरियम ... ५१७
कोका ६२८
कोकेइन ६३१
कोटाइलिडन ... ६९५
कोटो बार्क .. ६९५
कोडिइनम ६४५
कोनायम ब्रोमिटम ... ६७०
कोनायम मैकुलेटम ... ६७०
कोबाल्टम ६२५
कोपेवा ६८३
कोरालियम रुब्रम ... ६८६
कोरिडैलिस फार्मोसा ... ६९४
कोरियारिया रस्किफोलिया ६८९
कोलचिकम आटमनेल ६५२
कोलचिसिनम ... ६५२
कोलिन्सोनिया कैनाडेन्सिस ६५७
कोलेस्टेरिनम ... ५८७
कोलोसिन्थस वलगेरिस ६६०
कोलोस्ट्रम ... ६६५
क्यूकर्बिटा पेपो ... ७१९
क्यूप्रम ऐसेटिकम ... ७२२
क्यूप्रम आर्सेनिकोसम ... ७२५
क्यूप्रम मेटालिकम .. ७२७
क्यूप्रम सल्फ्युरिक .. ७३४
क्यूप्रेसम आस्ट्रैलिस ... ७२१
„ लोसोनियाना ... ७२१

विषय पृष्ठ

कूरबेबा मस्का ... ७१६
कूरलेक्स मस्का .. ७२०
क्रै टिगस आक्सियैकान्था ... ६९६
क्रोकस सैटाइवस ... ६९८
क्रोटन क्लोरेल ... ७१०
क्रोटन टिग्लियम ... ७११
क्रोटेलस केस्कैविला ... ७०१
क्रोटेलस होरिडस ... ७०२
क्रोमिकम आक्सिडिटम ५८८
क्लिमेटिस इरेक्टा .. ६२१
क्लोरम ५८५
क्लोरैलम ५८२
क्लोरोफार्मम ... ५८७
गलथोरिया प्रोकुबेन्स ... ८११
गासिपियम ... ८४७
गुयायेकम ... ८७०
गुयाराना ८७६
गुयारिया ८७७
गुयेको ८६८
ग्रण्डिलिया-रोबस्टा ... ८६६
गेटिसवर्ग ८३०
गेडस मड्डुँया ... ८०४
गेलेगा ८०६
गेम्बोजिया .. ८०७
गेल्वेनिस्मस ... ८१२
गेलियम ८०७
गेस्टेन ८११
ग्रैटियोला आफिसिनैलिस ८६२
ग्रैनेटम .. ८४९

विषय पृष्ठ

ग्रैफाइटिस ... ८५२
ग्लोनोइनम ... ८३७
चायना आफिसिनैलिस ९०२
चायना बोलवियाना ५७२
चिनोपोडियम एन्थेलमिण्टिकम ५६४
चिनापोडियम वलवेरिया ... ५६८
चिमाफिला अम्बेलेटा ... ५६९
चिमाफिला मैकुलेटा ... ५६९
चियोनैन्थस वर्जिनिका ... ५८०
चिलोन ग्लैब्रा ... ५६३
चेइरैन्थस चेइरि ... ५५६
चेलिडोनियम मेजस ... ५५७
चैपारो ऐमार्गोजो ... ५५६
जङ्कस एफ्यूसस ... ११२६
जिनसेंग ... ८३२
जिम्निमा सिल्वेस्टर ८७९
जिम्नोक्लैडस ... ८८०
जियम राइवेल ... ८३१
जिरेनियम मैकुलेटम ... ८३०
जुग्लेन्स कैथर्टिका
या सिनारिया ११२०
जुगलेन्स रिजिया
या नक्स जुलेन्स ११२३
जुनिपेरस कम्युनिस ... ११२९
„ वर्जिनियेनस ११२९
जेक्विरिटो ... १११९
जेण्टियाना क्रूसियेटा ... ८२५
जेण्टियाना क्विन्क्विफोलिया ८२९
„ लूटिया ... ८२७

विषय	पृष्ठ
जेनिरुटा ·	९२४
जेलसिमियम ···	९१३
जेकाराण्डो कैरोबा ···	११११
जेकाराण्डा गुयालेण्डो	१११३
जेट्रोफा कार्कँस ··	१११६
" " युरेन्स	१११८
जेबोरेण्डो	११०७
जेलापा इपोमिया ···	१११४
जेस्मिनम ···	१११५
डर्का पेलास्ट्रस ···	७६८
डालिकस प्र रियेन्स ···	७७१
डालकेमेरा ···	७८२
डायस्कोरिया विलोसा ···	७६३
डिक्टैमेनस ···	७५२
डिजिटाक्सिनम ···	७६२
डिजिटेलिनम ···	७५३
डिजिटेलिस पर्प्युरिया ···	७५६
डेटुरा आर्बोरिया ···	९५०
" फेराक्स ···	७५१
डेटुरा मेटेल ···	७५१
डेरिस पाइनेटा ···	७५२
डेफनी इण्डिका ···	७४७
डेमियाना ···	७४६
डोरिफोरा ···	७७३
ड्रोसिरा रोटण्डिफोलिया ···	७७५
ड्रबोइसिनम ···	७७७
नेफिलियम पोलिसिफिलम	९४५
फार्मिका रियुफा ···	८९५
फ्रान्सिसिया इयुनिफ्लोरा ···	९०१

विषय	पृष्ठ
फ्युकस वेसिक्युलोसस ···	९०३
फिलिक्स मास ···	८९३
फेगस सिलवैटिका ···	८६६
फेरम ··· ···	८६८
फेरम आर्सेनिसिकम ···	८७५
" आयोडेटम ···	८९७
" टार्टारिकम ···	८९३
" परनाइट्रिकम ···	८८२
" पाइरोफास्फोरिकम	८९२
" पिक्रिकम	८९०
" फास्फोरिकम ···	८८३
" " हाइड्रिकम	८८९
" ब्रोमेटम ···	८७६
" म्यूरियेटिकम ···	८८१
" " मेग्नेटिकम	८८१
" सल्फ्युरिकम ···	८९२
फेलटारि ···	८६७
फेरुला गौका ···	८९३
फैगोपाइरम इस्क्युलेण्टम	८६२
फ्रेञ्जेन्स बेड ···	९०२
फैक्सिनस अमेरिकानस ···	९०२
फैगेरिया वेस्का ···	८९९
फ्रान्सिसिया यूनिफ्लोरा ···	९०१
फ्यूकस वेसिक्युलोसस ···	९०३
बाम्बिक्स प्रोसेसनिया ···	३५३
बार्बेरिस ऐक्विफोलियम ···	३३९
" वल्गेरिस ···	३४०
बालसमम पेरूवियेनम ···	३०४
बिस्मथ ··· ···	३४४

विषय	पृष्ठ
बेञ्जिनम	३३५
„ डाइनाइट्रिकम	३३६
„ नाइट्रिकम	३३६
बेञ्जोयिन	३३८
बेलिस पेरेनिस	३३३
बेलेडोना	३२३
बैडियेगा	३०१
बैप्टीशिया कान्फ्युसा ऐसेटिका	३०६
बैप्टीशिया टिङ्क्टोरिया	३०६
बैराइटा आयोडेटा	३२०
बैराइटा ऐसेटिका	३१३
बैराइटा कार्बोनिका	३१४
बैराइटा म्यूरियेटिका	३२१
बैरोस्मा	३१२
बैसिलिनियम टेस्टियम	३००
बोथ्राप्स लैन्सियोलेटस	३५९
बोरैक्स वेनेटा	३५४
बोलेटस लूरिडस	३५२
बोलेटस लैरिसिस	३५०
बोलेटस सैटेनस	३५२
बोविस्टा	३६०
ब्यूफो वलगैरिस	३८१
ब्रायोनिया ऐल्बा	३७१
ब्रूसिनम	३७१
ब्रूसिया ऐण्टिडाइसेण्टरिका	३७०
ब्रैकिग्लाटिस रिपेन्स	३६४
ब्रैङ्का आर्सिना	३६६
ब्रैसिका नेपस	३६६
ब्रोमियम	३६७

विषय	पृष्ठ
ब्लैटा अमेरिकाना	३४७
ब्लैटा ओरियेण्टेलिस	३४९
स्टिलिञ्जिया सिलवैटिका या रूबेन्स	२३३७
सर्वस	५४८
साइक्यूटा मैकुलेटा	५८८
साइक्यूटा वाइरोसा	५८९
साइट्रस लिमोनम	६२०
साइमेक्स लैक्टियुलारियस	५९४
साइप्रिपिडियम प्युबेसेन्स	७४५
सिकोरियम	५८८
सिक्लेमेन युरोपियम	७४०
सिङ्कोना आफिसिनैलिस या चायना	६०२
सिङ्कोनियम सल्फ्युरिकम	६११
सिट्रेरिया आइलैण्डिका	५४८
सिना (साइना)	५९७
सिनाबेरिस	६१२
सिनैमोमम जिलैनिकम	६१५
सिनेरेरिया मेरिटिमा	६१४
सिमिसिफ्यूगा	६९
सियानोथस अमेरिकानस	५३२
सिरियम आक्सालिकम	५४७
सिरियस बाँप्लैण्डियाई	५४५
सिरियस सर्पेण्टेनस	५४६
सिरेसस वर्जिनियाना	५४४
सिस्टस कैनाडेन्सिस	६१७
सीड्रन	५३५
सेंक्रिस कण्टार्ट्रिक्स	५३९

विषय	पृष्ठ
सेप्टोरिया टैगाना …	५४४
हाइड्रैञ्जिया आर्बोरिसेन्स	१०३१
हाइड्रैस्टिस …	१०३२
हाइड्रैस्ट्रिकम म्यूरियैटिकम	१०३२
हाइड्रैस्टिनिनम म्यूरियैटिकम	१०३१
हाइड्रोकोटाइल एसियाटिका	१०३८
हाइड्रोफाइलम वर्जिनियेनम	१०४१
हाइपिरिकम पर्फोलियेटम	१०५०
हायोसायमिनम …	१०४१
हायोसायेमस …	१०४२
हायोसिन हाइड्रोब्रोम …	१०४२
हाल … …	९८२
हिडियोमा … …	९९२
हिपर सलफ्युरियस कैल्केरियम	१०१३
हिपाटिका … …	१०२१
हिपाजिनम …	१०२१
हिपोमेनिस … …	१०२२
हिमैटाक्सिलन …	९८२
हिरैक्लियम … …	१०२१
हिलियैन्थस …	९९५
हेक्लालावा …	९९१
हेडिसेरम इल्डिफोन्सियैनम	९९२
हेडिसेरम इल्लिफोनसियैनम	९९५
हेडेरा हेलिक्स …	९९४
हेलिक्स टोस्टा …	९९७
हेलिबोरस ओरियण्टेलिस	१००५
„ विरिडिस …	१००५
हेलिबोरस नाइज़र …	९९८
हेलिबोरस फिटिडस …	९९८
हेलियोट्रोपियम ..	९९७
हेलोडर्मा …	१००६
हेलोनियस …	१००९
हैमामेलिस …	९८५
होमेरस … …	१०२४
होमेरिया … …	१०२७
होयाङ्गनान …	१०२३
ह्यूराक्रिपिटेन्स …	१०२८
ह्यूरा … …	१०२८

होमियोपैथिक

भेषज-लक्षण-संग्रह

एबीज़ कैनाडेन्सिस

(ABIES CANADENSIS)

दूसरा नाम।—इसे "कैनाडा पिच" कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक तरहके वृक्षकी ताजी छाल और कलियोंको कुचलकर मदर-टिञ्चर अर्थात मूल अर्क बनाया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—अजीर्ण और उससे पैदा हुई बीमारियाँ, यकृतकी बीमारी और जरायुका अपने स्थानसे हट जाना रोगमें इससे लाभ दिखाई देता है।

उपयोगिता और आभास।—यह दवा विशेषकर पाकाशयपर अपनी क्रिया दिखाती है और उसके भीतरकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें सर्दीका लक्षण (Catarrh) पैदा कर देती है। डाक्टर हेलने नीचे लिखे लक्षणोंपर इसका प्रयोग किया है और उन्हें फायदा दिखाई दिया है—"पाकाशयमें भूख तो लगती है, परन्तु उससे तकलीफ़ होती है और सुस्तीके साथ माथेमें शून्यता (खालीखाली) का भाव मालूम होता है। इस भूखके अनुसार भोजन करनेपर पेट फूलने लगता है और कलेजेमें जोरका धक्का लगनेका लक्षण उत्पन्न हो जाता है।"

लक्षणावली

मन।—स्थिर, ध्यान न देनेका भाव, सहजमें ही दुःखित हो जाना (कैमो, नक्स)।

मस्तक।—मस्तिष्कमें थोड़ी-सी शराब पीने जैसा नशाका भाव मालूम होता है, मानो माथा ढुलका जाता है; सुस्ती - मानो मस्तिष्कमें अधिक रक्त-सञ्चय हो गया है (बेल)। भूख और माथेमें खालीपनका भाव मालूम होना।

पाकाशय।—बहुत भूख ; उदरके ऊपरी प्रदेशमें (Epigastrium) चबानेकी तरह दर्द और सुस्ती मालूम होना (पल्स, सिपिया इग्नेशिया)। मांस, चटनी, मूली वगैरह सहजमें न पचनेवाली चीजें खानेकी प्रबल इच्छा।

आँत और तलपेट।—भोजनके बाद पेट गुड़गुड़ाना, इसके साथ ही भूख ; यकृत छोटा और कड़ा मालूम होना।

मलद्वार और मल।—मलद्वारमें जलन ; कब्जियत।

मूलयन्त्र।—दिन-रात बार-बार पेशाब होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रोगिनी समझती है, कि उसका जरायु कमजोर और कोमल हो गया है। जरायुके ऊपरी भागमें अकड़न-जैसा दर्द और दबानेपर आराम मालूम होना।

श्वास-यन्त्र।—श्वास लेने और छोड़नेमें तकलीफ़ (ऐकोन, आर्स) मालूम होता है, मानो दाहिना फेफड़ा छोटा और कड़ा हो गया है।

हृत्पिण्ड।—पाकाशयके फूलनेके साथ-ही-साथ हृत्पिण्डकी क्रियाका भी बढ़ जाना।

गर्दन और पीठ।—दाहिनी ओरकी स्कन्धफलकास्थिके नीचे दर्द (चेलिडो); कमरके स्थानपर कमजोरी मालूम होना।

निद्रा।—औंघाई या तन्द्रा, रातमें बेचैनी, इधर-उधर करवट बदलना।

ज्वर।—समूचे शरीरमें बहुत अधिक कँपकँपी मालूम होना, मानो खून जमकर बरफकी तरह हो गया है (कैम्फि, लैके); शीत ऊपरकी ओरसे नीचेकी ओर उतरता है।

सम्बन्ध।—एस्कुलस, कोपेवा, नक्स, इग्नेशिया ; टेरिबिन्थसे तुलनीय। यह नेट्रम-कार्ब और इग्नेशियाकी सदृश गुणवाली दवा है।

शक्ति।—निम्न-क्रम व्यवहारमें लाना चाहिये; कभी-कभी ३०वीं शक्ति।

एबीज़ नाइग्रा (ABIES NIGRA)

दूसरा नाम।—इसे "पाइनस नाइग्रा" कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक प्रकारके वृक्ष-विशेषके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक है :—कब्जियत ; खाँसी ; डकार ; रक्तस्राव ; व्याधि-शङ्का ; मैलेरिया ज्वर ; चाय और तम्बाकूका दुष्परिणाम।

उपयोगिता और आभास।—इस दवाकी क्रिया पाकाशयपर, खासकर उसके श्लैष्मिक आवरणपर विशेष होती है। जिस अंशपर यह काम करती है, उसी अंशके भीतरी प्रदेशपर इसका आक्रमण हुआ करता है। इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है—"पाकाशयके बाईं ओर मानो एक सिझाया हुआ अण्डा अड़ा हुआ है।" वृद्ध मनुष्योंके और चाय तथा तम्बाकू बहुत व्यवहार करनेवालोंके अजीर्ण रोगमें यदि ऊपर बताया हुआ निर्णायक लक्षण मौजूद रहे तो यह दवा अव्यर्थ फलप्रद होती है।

लक्षणावली

मन।—उदास और अपनेको हमेशा रोग-ग्रस्त समझता है। पढ़ने या सोचनेमें असमर्थ।

गलेके भीतर।—दम बन्द-प्राय ; मालूम होता है, कि गलनालीके नीचेवाले स्थानपर कुछ अड़ा हुआ है।

पाकाशय।—भोजनके बाद पेटमें दर्द, मानो एक सिझाया हुआ अण्डा पाकस्थलीमें बाईं ओर रुका हुआ है। पाकाशयमें कोई ऐसी चीज है, जिससे दर्द पैदा होता है। अन्ननालीके नीचेवाले स्थानपर बहुत अधिक संकोचन मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो सब कुछ एक साथ सटकर एक ढेला बन गया है। डकार, सवेरे एकदम भूख न लगना, पर दोपहरके समय और रातमें बहुत अधिक इच्छा उत्पन्न हो जाना। मुँहसे बदबू आया करती है।

तलपेट।—मल कड़ा।

वक्षके भीतर।—श्वास-कष्ट ; दर्द मालूम होना, मानो कोई पदार्थ छातीमें अड़ा हुआ है, जो खाँसनेपर निकल जायगा। रोनेपर दर्द बढ़ जाना। गलनालीमें मानो कुछ अड़ जाता है, जिससे साँस रुक जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तीन महीनेतक ऋतु-स्राव बन्द रहता है।

हृत्पिण्ड।—कतरनेकी तरह तेज़ दर्द ; हृत्पिण्डकी चाल धीमी और भार-मिली।

पीठ।— कमरमें दर्द, अङ्ग-प्रत्यङ्ग और हड्डियोंमें वातसे उत्पन्न दर्द।

निद्रा।—दिनमें तन्द्राका भाव, रातमें नींद न आना और बेचैनी; बुरे सपने देखा करता है।

ज्वर।—पर्यायक्रमसे जाड़ा और गर्मी मालूम होना; पुराना सविराम ज्वर और पेटमें दर्द।

वृद्धि।—पेटभर खा लेनेपर दर्द मालूम होना।

सम्बन्ध।—लैक्टिक-एसिड [मानो वक्षोस्थि (Sternum) के ऊपरी स्थानमें खायी हुई सब चीजें अड़ी हुई हैं]; सिङ्कोना [मानो वक्षोस्थिके बीचके स्थानपर एक गोले जैसा पदार्थ अड़ा हुआ है]; ब्रायोनिया, नक्स-वोम, कैलि-कार्ब।

शक्ति।—१ ली से ३० वीं शक्तितक।

ऐब्रोटेनम (ABROTANUM)

दूसरा नाम।—सदर्न उड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दक्षिणी युरोपके एक प्रकारके छोटे पौधेके ताजे रसका मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।— लक्षणके अनुसार नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक हुआ है:—फोड़ा, जाड़ेके दिनोंमें बिवाई फटना, मृगी, वातरक्त; अर्श (बवासीर); क्षय ज्वर; कोरण्ड या जल-कोरण्ड; अजीर्ण और अतिसार; बच्चोंका सुखण्डी रोग; बच्चोंकी नाकसे खून गिरना; पक्षाघात (लकवा); आमवात (पित्ती निकलना); क्रिमि इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—छोटे बच्चोंकी बीमारीमें, खासकर उनके दोनों पैरोंके दुबलापनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। बहुत भूख, पर भरपूर भोजन मिलनेपर भी दुर्बल होते जाना (आयोड, नेट्रम, सैनि, ट्यूब); अतिसार (पतले दस्त आना); रुककर या एकाएक बन्द होकर वात-रोग

पैदा हो जाना ; वात-रोगका इधर-उधर हटते रहना अर्थात् सन्धि-स्थानोंका वातका दर्द हटकर एकाएक हृत्पिण्ड या मेरुदण्डमें वात-रोग पैदा हो जाना। चेहरेपर झूलती हुई त्वचा या मांस झूल पड़ना ; तुरन्तके जनमे हुए बच्चोंको नाभीसे रस-रक्त बहना इत्यादि रोगोंमें इसका व्यवहार होता है।

लक्षणावली

मन।—चिड़चिड़ा, क्रोधी, नीरस और उत्कण्ठा-भरा। कुछ सोच नहीं सकता ; उत्तेजित ; बहुत बकवादी इत्यादि ; बहुत निष्ठुर और निष्ठुर कामोंमें अनुराग।

मस्तक।—माथा सीधा नहीं रख सकता। मानसिक परिश्रमसे दिमागमें कमजोरी मालूम होती है ; माथेमें टनक ; खुजली इत्यादि।

मुखमण्डल।—वृद्ध मनुष्योंकी तरह सिकुड़ी हुई त्वचा ; सूखी, मलिन और ज्योति-हीन, आँखोंके चारों ओर रेखा (बैराइटा-कार्ब, ओपियम, सार्सा)। बहुत दुबला और एक तरहके व्रणसे भरा हुआ चेहरा। नाकसे रक्त-स्राव। क्षय हुए दाँतमें (Carious teeth) छेदनेकी तरह दर्द।

पाकाशय प्रभृति।—मुँहमें लसदार चीज़ पैदा होना और खट्टापनका स्वाद। भूख खूब लगना, पर भोजन भरपूर करनेपर भी बहुत ज्यादा दुबलापन (आयोड, नेट्रम-म्यूर, सैनिक, टियुबर) ; खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें निकल जाते हैं (ऐण्टिम-क्रूड, आर्जेण्टम-नाइट्रस, कैल्केरिया-कार्ब और फासफो, सिनकोना, फेरम, ग्रैफाइटिस, हिपर, नक्स-मस, ओलियैण्डर, फासफो, ऐसिड-फास, पोडोफिल, सलफर) ; कतरने और चबाने जैसा दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशय गहरे पानीमें तैर रहा है, इसके साथ ही ठण्डक मालूम होना। दूध रोटी खानेकी इच्छा।

तलपेट और आँतें।—एक गुल्म या गोलेकी तरह पदार्थ अटका हुआ है—ऐसा मालूम होना। पेट फूलना, कब्जियत और उदरामय (पतले दस्त) पर्यायक्रमसे होने लगता है। अर्श (बवासीर) ; बार-बार पाखाना लगना ; खून मिला मल ; वातका दर्द दब जाने बाद बवासीरका बढ़ जाना।

मलद्वार।—मलके साथ सूत-क्रिमि, बवासीर। अर्श, बाहरी मसेमें जलन ; छूने या पाखाना जानेके समय उस जलनका बढ़ जाना (कास्टिकम)।

जननेन्द्रिय।—बच्चोंका कोरण्ड रोग। बायें डिम्बाशयमें दर्द।

श्वास-यन्त्र।—बहुत ज्यादा दर्द। साँस लेने और छोड़नेमें बाधा प्राप्त होना। उदरामय (पतले दस्त) के अन्तमें सूखी खाँसी। फुसफुसवेष्ट-प्रदाह (Pleurisy), इसके साथ ही वक्षमें दबाव पड़नेके कारण साँसमें तकलीफ़।

हृत्पिण्ड।— वक्ष और हृत्पिण्डके स्थानमें तेज़ दर्द। वात फैल जाना; नाड़ी क्षुद्र और दुर्बल।

पीठ।—गर्दन बहुत कमजोर, मानो माथेका बोझा सहन नहीं कर सकती (इथूजा)। पीठमें सुन्न जैसा मालूम होना और दर्द। कटि-देशसे कोष-रज्जु तक दर्द। अर्श रोगके कारण त्रिकास्थि या पिछले कटि-देशमें (Sacrum) दर्द। एकाएक मेरुदण्ड और मेरुमज्जाका प्रदाह (Myclitis) पैदा हो जाना। पीठमें लगातार दर्द होते रहना; हिलानेपर घटना; सुन्न भाव और पक्षाघात (लकवा)।

प्रत्यङ्ग आदि।—उदरामय एकाएक रुक जानेकी वजहसे वात-रोगका पैदा हो जाना। रोगवाली जगहपर सूजन आनेके पहले बहुत दर्द मालूम होना। वातका दर्द या अर्श या आमाशयका पर्यायक्रमसे पैदा होना। सन्धि-वात रोगमें सब सन्धियाँ बहुत कड़ी (न झुकनेवाली) और फूली हुई हो जाती हैं और उनमें कांटा गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। कलाई और गुल्फ-सन्धिमें प्रदाह और दर्द। शरीरमें सब जगह सुन्नका भाव और दर्द होता है। बहुत कमजोरी और सुस्ती मालूम होना। दोनों पैर बहुत ही दुबले-पतले, शीतकालके फोड़े, बिवाई (Chilblains—ऐगरिकस)।

त्वचा।—चेहरेपर खुजली; रुकी हुई (Suppressed), खुजलीके कारण त्वचाका रङ्ग बैंगनी हो जाना, ढीला और झूलता हुआ चमड़ा, फोड़ा (हिपरके बाद इसका व्यवहार करना चाहिये)।

सम्बन्ध।-सदृश।—फोड़ेमें हिपरके बाद ऐकोनाइट और ब्रायोनियाके बाद (प्लुरिसि या फुसफुस-आवरणका प्रदाह); ऐसिड-बेञ्जो, सार्सा, टियुबर-क्युलिन (मांस-क्षय या सुखण्डी रोगमें—Marasmus)।

तुलनीय।—ऐब्सिन्थ, कैमो, सिना, नक्स, ऐगार।

शक्ति।—मूल अर्क और १ ली से ३० वीं शक्तितक।

ऐब्सिन्थियम (ABSINTHIUM)

दूसरा नाम ।—वार्म उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—युरोपके एक तरहके पौधेके कोमल पत्तों और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—इसके द्वारा नीचे लिखे रोग आरोग्य हुए हैं:--मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता ; मृत्पाण्डु ; अजीर्ण ; बच्चोंकी अकड़न ; मृगी ; यकृतका प्रदाह ; स्नायवीयता ; कर्ण-स्राव (कानसे पीव जाना) ; नींद न आना (निद्राहीनता) ; अस्थिरता (बेचैनी) ; कशेरुकामें रक्तकी अधिकता ; सान्निपातिक ज्वर प्रभृति ।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी लक्षणावलीपर विचार करनेसे मालूम होता है कि अपस्मार या मृगी (epilepsy) रोगमें (हाल्वर्टके मतसे जहाँ एकदम बेहोशी नहीं आ जाती) इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक है । रोगका आक्रमण होनेके पहले कम्पन (कँपकँपी) और आक्रमणके समय बेहोशी अथवा आक्रमणके अन्तमें बुद्धिकी क्षीणता और देहकी दुर्बलताका लक्षण दिखाई देता है । इसके द्वारा पक्षाघाततक हो सकता है । मस्तिष्क, मज्जा और मेरुदण्डमें रक्तका बढ़ जाना और इसी कारणसे मस्तिष्कमें उत्तेजना, बच्चोंकी अकड़न (तड़का वगैरह) पर इसका अधिकार है । ताण्डव (Chorea) रोगमें और बुढ़ापेमें शरीरके किसी अंशका काँपना भी इस दवाका निर्देशक (बतानेवाला) लक्षण है । बालकोंपर इसकी क्रिया बहुत ही लाभदायक है ।

लक्षणावली

मन ।—अपस्मार रोगके आक्रमणके पहलेकी घटना भूल जाना, डरावनी चीजें और भ्रम देखना, पाशव प्रकृति हो जाना और उन्मत्त । भूल जाना । किसीकी बातपर विश्वास नहीं करना चाहता ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—मानो पीछेकी ओर गिर जायगा ; खड़े होनेपर बढ़ना । बुद्धिकी जड़ता (Dullness) । सर नीचा करके सोना चाहता है ।

आँखें ।—आँखोंकी पुतली फैली हुई ।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलकी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना (Twitching)। मृगी रोगमें मुँहकी पेशियोंका सिकुड़ना और मुँहमें फेन भर आना।

कान।—अधकपारीका दर्द या सरका दर्द घटनेपर कानसे पीव बहना।

मुखगह्वर।—दोनों हनुका आपसमें कसकर जुड़ जाना—दाँती लगना (Trismus)। जीभ काटता है (अपस्मार रोगाधिकारमें—कैम्फोरा; चबानेके समय दाँतसे काटता है—नाइट्रिक-ऐसिड; साधारणतः—थूजा, इग्नेशिया; ज्यादाकर—डायस्कोरिया, ऐसिड-फास); जीभका काँपना; (बेलेडोना); जीभ ऐसी मालूम हो मानो फूल गई है और बड़ी हो गई है; जीभ बाहर निकली हुई (Protruded) [ऐसिड हाइड्रोस, कोटोन-टिग, एपिस, लाइको, मर्क]। गलेके भीतरी स्थानमें दाहकी तरह दर्द; प्रदाह, मानो कुछ अड़ा हुआ है।

पाकाशय।—मिचली (ओकाई), डकार और वमन—सवेरे बढ़ना। उदरके दाहिने भागमें, पित्तस्थली प्रदेशमें और उसके पासवाले अन्त्राशयमें सूजन; पेट फूलना या वायु इकट्ठा होना; मालूम होता है कि प्लीहा और यकृत फूल गये हैं। आध्मान-शूल।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डकी क्रियाका बढ़ जाना। हृत्पिण्डमें टपक, स्कन्धास्थि या पृष्ठफलक प्रदेशमें सुनी जाती है।

मूत्राशय।—बार-बार पेशाबका वेग होना; पेशाब गहरा नारङ्गी रङ्गका (कैलि-फास, चेलिडो); पेशाबमें घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्ध।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दाहिनी डिम्ब-ग्रन्थि (Ovary) में तेज़ दर्द मालूम होना। औरतोंकी मृत्पाण्डु (Chlorosis) रोग। यह ऋतु-स्रावमें सहायता पहुँचाता है।

श्वास-यन्त्र।—यकृतकी बीमारी, सर्दी-खाँसी।

सार्वाङ्गिक लक्षण।—पैर ठण्डे। बहुत बेचैनी; बुरे-बुरे सपने मनकी शान्ति नष्ट कर देते हैं। उर्द्ध प्रत्यङ्गोंका एकाएक फड़कना (स्पन्दन)। दोनों हाथोंका काँपना, ताण्डव रोग। नींद न आना। भीतरी यन्त्रोंका पक्षाघात।

सम्बन्ध ।—आर्टिमिसिया-वल् ; ऐग्रोट, बेलाडो, कैमो, हायोसा, स्ट्रैमो, ऐसिड-हाइड्रो ।

शक्ति ।—१ ली से १२ वीं शक्तितक ।

ऐकालिफा इण्डिका

(ACALIPHA INDICA)

दूसरा नाम ।—मुक्तावर्षी या मुक्ताझुरी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—भारतवर्षमें पैदा हुए छोटे पौधेके ताजे पत्तेसे मूल अर्क बनाया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अन्न-प्रणाली और श्वास-प्रश्वास यन्त्रपर इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है । यक्ष्मा-कास रोगमें—जब सूखी खाँसीके साथ चमकीला लाल रक्तमिला थूक या कफ निकला करता है, धमनीसे रक्त-स्राव होता है, परन्तु बोखार नहीं रहता, रोगीको सवेरे बहुत कमजोरी मालूम होती है, पर ज्यों-ज्यों दिन उठता जाता है, त्यों-त्यों सबल होता जाता है ।

लक्षणावली

वक्षके भीतर ।—तेज़ सूखी-खाँसीके कारण रक्त-भरा थूक, सवेरे और रातके समय बढ़ना । वक्षःस्थलमें हमेशा बहुत दर्द मालूम हुआ करता है । थूक या कफमें मिला रक्त चमकीला लाल रङ्गका होता है ; सवेरे अधिक नहीं निकलता ; परन्तु सन्ध्याके समय गाढ़ा लाल रङ्गका और थक्का-थक्का खून निकला करता है । नाड़ी कोमल और नमनीय रहती है ।

पाकाशय आदि ।—गलकोष (Pharynx), अन्न-प्रणाली, पाकाशय और आँतमें जलन मालूम होती है । उदरामय (पतले दस्त) में काँखना और वेग देना पड़ता है । वायु आवाजके साथ निकलती है और मल बिखरकर निकलता है । ऐसा दर्द और कून्थन (काँखना) रहता है मानो आँतें आदि नीचेकी ओर खिंच रही हैं । पेटमें गड़गड़ शब्द, आध्मान और पेटमें मरोड़ होता है । मूलनालीसे खूनका स्राव, सवेरे बढ़ जाता है ।

त्वचा।—पाण्डुरोग (Jaundice) खुजलानेवाला और सीमावद्ध फोड़ेकी तरह उद्भेद और सूजन दिखाई देती है।

वृद्धि।—सभी लक्षण अकसर सवेरे बढ़ते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश—एसिड-ऐसेट, कैलि नाइट्, मिलिफो, फास।

शक्ति।—१ ली दशमिकसे ३० वीं शततमिक शक्ति।

ऐसिडम ऐसेटिकम

(ACIDUM ACETICUM GLACIALE)

दूसरा नाम।—सिर्केकी-खटाई।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक ड्राम ऐसिटिक ऐसिडमें दस ड्राम साफ़ चुआया हुआ पानी मिलानेसे १x शक्ति तैयार होती है। इससे ऊँचे क्रम तैयार करनेके लिये रेक्टिफायड स्पिरिटकी जरूरत पड़ती है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें यह लाभदायक है:—रक्ताल्पता (खूनकी कमी); क्रिमि दाह; गठिया; सुस्ती; बहुमूत्ररोग; डिफ्थीरिया; शोथ; जलातङ्क; पाकाशयका कर्कटीया जखम (कैन्सर); शरीरके कितने ही स्थानोंमें से हुआ रोग; मसे। जरायु वगैरहसे खूनका स्राव; नाकसे रक्तस्राव (खून गिरना); क्रूप या काली खाँसी; प्रलेपी या हेक्टिक ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—बच्चोंका क्षय रोग तथा दूसरी-दूसरी क्षय करनेवाली बीमारियाँ (एब्रोट, आयोडियम, सैनिक, टियुबर), रक्तहीनता; दुर्बलता और बार-बार सुस्ती आ जाना। साँसमें तकलीफ़, हृत्पिण्डकी कमजोरी, वमन, भरपूर पेशाब न होना वगैरह इस दवाको बतानेवाले लक्षण हैं। शरीरके किसी भी द्वारसे रक्तस्राव होना (फेरम, मिलिफोल), पीली, दुबली, शिथिल और फूलती हुई पेशियोंवाले मनुष्योंके लिये यह बहुत ही लाभदायक है।

लक्षणावली

मन।—क्रोध आ जाना; अपने रोगकी तथा बाल-बच्चोंकी चिन्ता; काम-काजमें बहुत ही उलझा हुआ। पेट फूलना; बहुत अधिक कब्जियतके

साथ उन्मत्तकी तरह प्रलाप। प्रलाप और बेहोशी पर्यायक्रमसे प्रकट होती हैं।

मस्तक।—स्नायविक सर-दर्द—तम्बाकू, अफ़ीम, काफी, शराब वगैरहका अपव्यवहार करनेकी वजहसे सरमें दर्द। मस्तिष्कमें रक्त बहुत अधिक इकट्ठा हो जानेकी वजहसे विकार। कनपटी या शङ्खदेश (Temporal) की धमनियाँ फूल उठती हैं। जीभकी जड़में दर्द मालूम होना। चोटकी वजहसे नाकसे खून बहना (आर्नि, हैमा)।

मुखमण्डल।—घुंड़ी या काली खाँसी रोगमें, ज्वरके समय, बायाँ गाल बहुत लाल हो जाता है। चेहरा उतरा हुआ, मलिन और मांस-हीन-जैसा हो जाता है; आँखें गड़हेमें धँसी और काले घेरेसे घिरी हुई; पसीनेसे तर। चेहरेका भाव उत्कण्ठा भरा और पागलोंकी तरह।

पाकाशय आदि।—पाकाशय और वक्ष-गह्वर (छातीका गड़हा) में बहुत जलन मालूम होनेके बाद शरीरकी त्वचा ठण्डी हो जाती है और कपालमें ठण्डा पसीना होने लगता है। चित्त सोनेपर जलन और भी बढ़ जाती है। ठण्डे पानीय (पीनेकी चीजोंसे) पाकाशयमें भार हो जाता है। उदरके ऊपरी अंशको छूनेसे तकलीफ़; जखमवाली जगहकी तरह जलन मालूम होना; गर्भके समय खट्टी गन्ध लिये वायु निकलना और खट्टा स्वादवाला वमन। ऐसा मालूम होना, मानो अन्त्राशय भीतर घुसा जाता है। सारे शरीरमें शोथ (सूजन), खासकर अन्त्राशय और दोनों पैरोंमें अधिक होता है। तेज़, न रुकनेवाली प्यास, मिचली और वमन।

शोथ, सान्निपातिक ज्वर (Typhus) और यक्ष्मा वगैरह रोगाधिकारमें, पतले दस्त आना, बहुत ज्यादा परिमाणमें मल निकलना—कमजोरी, प्यासकी अधिकता तथा रातमें पसीना (Night-sweat); निचली आँतसे रक्त-स्राव। गर्भावस्थामें मुँहमें ऐसा पानी भर आना (Waterbrash), जिससे जलन होती हो और बहुत ज्यादा लार बहना—दिन-रात, सभी समय लार बहा करती है (लैक्टि-ऐसिड ;—केवल रातमें लार बहना—मर्क)।

मल।—पानीकी तरह पतला मल—बार-बार मलका वेग होना; सवेरे बढ़ना; पेट फूला; यक्ष्माके रोगियोंको पतला या अजीर्ण मल; दोनों पैरोंपर सूजन। जरायुसे रक्त-स्राव एकाएक बन्द हो जाता है। कब्जियत; सूतकी तरह क्रिमि।

मूत्रयन्त्र।—बहुत पेशाब; मधुमेह या बहुमूत्रके रोगियोंकी तेज़ प्यास।

पुं-जननेन्द्रिय।—शुक्र-क्षरण; पाखानेके समय वेग देनेपर वीर्यकी तरह पदार्थ निकलना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मासिक ऋतुस्रावके समय बहुत अधिक मात्रामें खून जाना। जरायुसे रक्त-स्राव (Metrorrhagia—ट्रिलियम ट्लैस्पी); प्रसवके बादका रक्त-स्राव। गर्भावस्थामें मिचली। स्तनोंमें बहुत ज्यादा दूध इकट्ठा हो जानेकी वजहसे सूजन और दर्द; स्तनका दूध नीली आभा लिये, चमकीला और उसका स्वाद खट्टा; प्रसूतियोंकी रक्तहीनता।

वक्षके भीतर और श्वासयन्त्र।—फेफड़ेसे रक्त-स्राव घुँड़ी; बिगड़ी हुई या टूटी आवाज़, छातीमें साँय-साँय शब्द, श्वास-कष्ट; साँस लेनेपर खाँसी आ जाती है। श्वास-नालीमें खुजलाहट या सुरसुरी; उत्तेजना (Irritation)।

पीठ और प्रत्यङ्ग।—पीठमें दर्द, पेट दबाकर सोनेसे आराम मिलना, प्रत्यङ्गोंका दुबलापन, दोनों पैरोंमें शोथ, मेरुमज्जाका प्रदाह।

त्वचा।—मैली, मोम-जैसे रङ्गकी (Waxen) और सूजी। कभी गर्म, जलन-भरी, सूखी और कभी-कभी पसीनेसे तर। गट्ठे; मसे; सुन्न-जैसी मालूम होना, स्पर्श न मालूम होना। कीड़े, पतङ्ग आदिके डङ्क मारनेके बाद शिराओंके फैलनेकी वजहसे सूजन। घायल या चोट खाई हुई सन्धि।

ज्वर।—विलेपी (Hectic) ज्वराधिकारमें खाँसी; श्वासकष्ट, रातमें पसीना होना। पतले दस्त, अङ्ग-प्रत्यङ्गका शोथ और दुबलापन। बहुत अधिक ठण्डा पसीना।

निद्रा।—चित्त सोनेपर अच्छी तरह नींद नहीं आती (चित्त सोनेपर अच्छी तरह नींद आती है—आर्स)।

सम्बन्ध।—ऐसिड एसेटिक सब तरहकी बेहोश करनेवाली दवा सूँघनेके कारण जो दोष आ जाता है, उसका प्रतिविष या दोषघ्न है। रक्त-स्रावमें सिनकोनाका अनुगामी है और शोथ या उदरी रोगमें डिजिटेलिसका अनुगामी है। आर्निका, बेल, लेके और मर्कके साथ नहीं चलता।

शक्ति।—२ री से ३० क्रमतक व्यवहारमें आती है। धुंडी खाँसीके सिवा और किसी रोगमें बार-बार प्रयोग मना है।

क्रियाका स्थायित्व।—१४ से ४० दिन।

ऐसिड बेञ्जोयिक

(ACIDUM BENZOICUM)

दूसरा नाम।—लोहबान या बेञ्जोयिन नामक धूनेकी तरह पदार्थ शीशसे ऊर्द्धपातन करनेपर यह उत्पन्न होता है। इसका चूर्ण रेक्टिफायड स्पिरिटमें गल जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—यह नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। दमा या श्वास रोग, मूत्राधारकी बहुत-सी बीमारियाँ, जानुदेशका दर्द और सूजन; अतिसार; अनजानमें पेशाब हो जाना; आँखमें छोटे-छोटे अर्बुदकी तरहके उद्भेद; प्रमेह; वातरक्त; आमवात; साइक-दोष-युक्त धातुकी (Sycotic) बहुत-सी बीमारी; गलेका जखम; जीभका जखम; तालुमूल ग्रन्थिके जखम; पेशाबकी बहुत-सी बीमारियाँ; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह या उपदंश विषसे दूषित धातुके साथ यदि किसी रोगमें वातका दोष मिल गया हो तो उसपर यह दवा बहुत लाभ करती है। इसका निर्देशक लक्षण है—बहुत लाल रङ्गका और बदबूदार पेशाब।

लक्षणावली

मन।—बच्चा बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी; उसे हमेशा यदि गोदमें लेकर स्तन पिलाया जाये तो बहुत प्रसन्न रहता है। लिखनेके समय अक्षर या बात छोड़ जाता है। मानसिक अवसाद।

मस्तक।—सरमें चक्कर (कैनाब-कोना) मालूम होता है मानो बगलमें गिर जायगा,—खासकर सन्ध्याके समय कनपटीके बगलकी धमनीमें टपक—जैसे दर्दकी वजहसे कानमें मानो ताला बन्द हो जाता है। कोई चीज़ निगलनेके समय कानमें कितनी ही तरहकी मिली हुई आवाज़ होती है। कानकी पीछेके स्थानकी सूजन (कैप्सिकम)। जीभमें जखम। सवेरेके समय ज़ीभपर सफेद लेप चढ़ा हुआ रहता है।

नासिका।—भेदक या नासागह्वरके बीचकी हड्डी (Sewtue) में खुजलाहट। नासास्थि (नाककी हड्डी) में दर्द।

मुखमण्डल।— ताँबेके रङ्गके चकत्ते। गाल सीमावद्ध (Cricumscribed) लाल रङ्गका (तीसरे पहर—सैङ्ग) ; चेहरा लाल और बीच-बीचमें छोटे छाले निकलना। मुखमण्डलके सभी लक्षण बाहरी गर्मीसे, दबानेपर और खींचनेपर घट जाते हैं।

पाकाशय।—भोजन करनेके समय पसीना ; हिचकी ; टहलने खासकर किसी ऊँची जगहपर चढ़नेसे, पाकाशयके सभी लक्षण बढ़ जाते हैं।

तलपेट।—यकृतमें तेज़ दर्द।

मल।—बच्चोंका उदरामय (पतले दस्त आना),—मलका रङ्ग सफेद, बहुत बदबू, सुस्ती पैदा करनेवाला और पतला, इतना पतला कि बच्चेकी लंगोटी छेदकर बाहर निकल आता है। (पोडोफाइ) ; पेशाब दुर्गन्ध-भरा और गहरे लाल रङ्गका (नाइट-ऐसिड)।

पेशाब।—भूरे रंगका, तेज गन्ध। घोड़ेकी पेशाबकी तरह (नाइट-ऐसिड) ; अनजानमें पेशाब निकल जाना ; वृद्ध मनुष्योंको बूंद-बूंद पेशाब। पेशाबमें बहुत अधिक मात्रामें युरिक ऐसिड (Uric Acid) मौजूद रहता है। रुद्ध (Suppressed) प्रमेह ; अश्मरी ; वात रक्तकी वजहसे मूत्राशयकी सर्दी (Vesical catarrh), क्लिमेटिस।

मलद्वार।—मलनालीके निचले अंशमें संकोचन मालूम होना और मलद्वारमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। मलद्वारके चारों ओर मसेकी तरह खुजलानेवाला मांस बढ़ आता है या उद्भेद निकल आते हैं (कास्टिकम इयुफ्रे, थूजा)।

पुं०-जननेन्द्रिय।—प्रमेहका स्राव रुक जानेकी वजहसे पुं०-जननेन्द्रियकी ग्रन्थियाँ वगैरह स्थानोंमें खुजलाहट।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अनियमित ऋतु और जरायु-भ्रंश (जरायुका अपने स्थानसे हटना) आदिमें इस दवाका प्रकृतिगत पेशाबका लक्षण रहनेपर यह बहुत फायदा करता है। बहुत दिनोंतक रहनेवाला प्रसवके बादका स्राव।

श्वास-यन्त्र ।—रुके हुए प्रमेहकी वजहसे बहुत दिनोंतक स्थायी खाँसी। सवेरेके समय स्वरभङ्ग हो जाना, दमा मिली खाँसी—रातके समय और दाहिनी करवट सोनेपर इस खाँसीका बढ़ना। छातीमें तकलीफ और हृत्पिण्ड प्रदेशमें दर्द मालूम होना। फेफड़ेका प्रदाह (Pneumonia)—बहुत कमजोर बना देनेवाला; धीरे-धीरे बढ़नेवाली श्वास-कृच्छ्रता; छातीके भीतर सुई बेधने-जैसा दर्द (ब्रायो, कैलि-कार्ब, सैंगुइने—लम्बी साँस लेनेपर और सन्ध्याके समय बढ़ना)। हरी आभा लिये श्लेष्मा मिला मल (कैनाब, स्टैनम, सलफर, थूजा, पलस, नेट्रम-सल्फ)।

हृत्पिण्ड और नाड़ी ।—हृत्प्रदेशमें दर्द; कलेजा कांपना; कठिन नाड़ी इत्यादि।

पृष्ठ-देश । मेरुदण्डपर (पीठकी रीढ़में) दबाव मालूम होना। मेरुदण्डके निचले सिरेपर सर्दी मालूम होना। मसाना या मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें (Kidney region) धीमा-धीमा अस्पष्ट दर्द और कमरका अकड़ जाना (कड़ापन)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पैरके अंगूठेमें छेदने और सुई बेधनेकी तरह दर्द—रातके समय बढ़ना—चलने या हिलानेके समय सन्धियोंमें कड़कड़ आवाज़ होती है। एँड़ोकी पेशीके अगले भागमें दर्द (ऐसिड-म्यूर; पहले दाहिनी, फिर बाईं ओर दर्द मालूम होना, सन्धिवात (Gout) की वजहसे गुटिकाएँ (Nodes) सबमें बहुत दर्द होता है। जांघमें दर्द और सूजन, कलाईका फूलना। अंगूठेकी सन्धिकी जगहपर छेदनेकी तरह दर्द, जगह और पार्श्व-परिवर्त्तन करनेवाला दर्द। पहले बायें उरु, जानु और पैरके नीचे भागसे आरम्भ होकर पैरके तलवेकी पेशी और वहाँसे फिर जानुपर आक्रमण करता है और अन्तमें यह पार्श्व छोड़कर दाहिना उरु और गुल्फमें प्रकट होता है। अंगुली वगैरह स्थानोंमें लाल दाग, उपदंशके चिन्ह प्रकट हो जाते हैं।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—हाथ, पैर, जंघा और पीठका स्थान ठण्डा, शीतसे तकलीफ़ मालूम होना; ठण्डा पसीना; नींद खुलनेपर भीतरी उत्ताप मालूम होना।

वृद्धि ।—खुली हवामें और कपड़े उतारनेपर वृद्धि।

सम्बन्ध।—ग्रन्थि-वातमें कोलचिकमके बाद और प्रमेहमें कोपेवाके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये।

सदृश।—आर्निका, कार्बो-एसिड, लीडम, रोडोडेन, सलफरके साथ तुलनीय। कोपेवा, नेट्रम, फेरम और थूजा, खासकर आप-ही-आप पेशाब हो जानेके रोगमें नेट्रमसे लाभ न होनेपर इसका व्यवहार करना चाहिये।

दोषघ्न या प्रतिविष।—कोपेवा।

शक्ति।—१ लीसे १२ वींतक। अमेरिकाके चिकित्सक उच्च क्रमका प्रयोग करते हैं।

ऐसिड बोरिक या बोरैसिक

(ACIDUM BORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके दाने-जैसे पदार्थ सुरासारमें गला दिये जाते हैं।

उपयोगिता और आभास।—मूत्र-नाली (Ureters) प्रदेशमें दर्द और बार-बार पेशाबका वेग होना, इस अम्लका प्रधान लक्षण है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।— स्वस्थ शरीरपर परीक्षा करनेसे इसमें सर-दर्द, माथेमें भार, कानमें आवाज़, वमन, हिचकी, अण्डलाल मिला पेशाब और त्वचापर कितने ही प्रकारकी खुजलानेवाली फुन्सियाँ प्रकट हो जाती है। विषाद और हिमाङ्गावस्था इसका एक विशेष लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—विषाद ; स्नायविक सुस्ती ; सरमें दर्द।

आँख।—आँखोंका प्रदाह ; रोशनीका सहन न होना।

मुँह।—लार ठण्डी।

पाकाशय।—मिचली, हरे रङ्गका पदार्थ कै करना।

त्वचा।—हाथ-पैर तथा ऊपरी प्रत्यङ्गोंपर कितने ही तरहकी लाल फुन्सियाँ (Erythema या Rash) ददोरे। आँखके चारों ओर सूजन। इसका १५ ग्रेन, १ आउन्स पानीमें मिलाकर बाहरी प्रयोग करनेसे अञ्जनी या गुहीरी अच्छी हो जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वयःसन्धिके समय (Climaxis) एकाएक उत्ताप मालूम होना और इसी वजहसे चेहरा लाल हो जाना (एमिल-नाइट्रो-सम, लैकेसिस)। अपत्य-पथमें बहुत शीत मालूम होना (ग्रैफा, सिकेल) मानो बरफके टुकड़े रखे हुए हैं।

सम्बन्ध।—सदृश—बोरैक्स, कार्बोलिक-ऐसिड, कैलि-बाई।

शक्ति।—२ री से लेकर ६ ठी दशमिक (६x)।

ऐसिड कार्बोलिक

(ACIDUM CARBOLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्थरके कोयलेसे निकले हुए अलकतरेकी जातिके तेलको चुआकर यह तैयार किया जाता है। इसमें एक भाग औषध और नौ भाग अलकोहल रहता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक प्रमाणित हुआ है:—चेहरेपर मुँहासे, दुष्ट व्रण (विषैला फोड़ा), किसी स्थानका जल जाना, हैजा, कब्जियत, पेशाबकी बीमारी या बहुमूत्र, अतिसार, आमाशय; अजीर्ण, डकार, पेट फूलना, विसर्प, सड़नेवाला जखम, बहुव्यापक सर्दी रोग (इन्फ्लुएञ्जा), सविराम ज्वर; उत्तेजना; कुष्ठ रोग; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; स्नायु-शूल; बहुत तरहके चर्म-रोग; चेचक; सूँघनेकी शक्तिमें गड़बड़ी; दाँतका दर्द; कितने ही तरहके जखम; मूत्रक्षारसे उत्पन्न विषाक्तता या युरिमिया; वमन; जरायुका अपने स्थानसे हटना (नाभी टलना)।

उपयोगिता और आभास।—इस दवासे पैदा हुए दर्दसे बहुत तकलीफ़ होती है; एकाएक दर्द पैदा हो जाता है, थोड़ी देरतक ठहरता है और एकाएक बन्द हो जाता है (बेल, मैग-फास)। सुस्ती, जीवनी-शक्तिकी क्रियाका एकाएक सुस्त पड़ जाना या पतनावस्था (Collapse); शरीरकी त्वचा मलिन और ठण्डे पसीनेसे भरी हुई (कैम्फर, कार्बो-वेज, वेरेट्रम-ऐल्बम)। शारीरिक परिश्रम, यहाँतक कि अधिक भ्रमण न करनेपर भी थकन; फोड़े निकलना—खासकर दाहिने कानमें ज्यादा; सूँघनेकी शक्ति (घ्राण-शक्ति) की तेजी इस दवाका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है। इसके सभी स्राव गले हुए

और बहुत बदबूदार होते हैं, उनसे सड़ी गन्ध आती है—मुखगह्वर, नाक, गलनाली या अपत्य-पथ—चाहे जिस जगहसे स्राव क्यों न हो (ऐन्थ्रैसिनम, सोरिनम, पाइरोजिन), उसमें बदबू मौजूद रहती है।

लक्षणावली

मन।—मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा न होना; क्रोधी स्वभाव।

मस्तक।—सरमें दर्द, कपालमें बहुत भार मालूम होना—मानो एक फीता कनपटी (शङ्ख-देश) से दूसरी कनपटीतक (कपालपर) एक रबरका फीता खूब कसकर बाँधा हुआ है (जेल्स, प्लैटिन, सलफर)। दाहिनी भौंके ऊपर स्नायुशूल। हरी चाय या धूम्रपानके समय दर्दका घटना।

नासा-रन्ध्र।—घ्राण-शक्ति (सूंघनेकी शक्ति) का बहुत तेज़ हो जाना। नाकसे सड़ी गन्ध-भरा स्राव या बहुव्यापक सर्दी या इन्फ्लुएञ्जा (Influenza) और इसी वजहसे बहुत कमजोरी (बैप्टी, नेट्रम-सल्फ़)।

गलेके भीतर।—मुखगह्वरसे लेकर पाकाशयतक जलन। जीभकी जड़के दोनों ओरके गह्वर (Fauces) श्लेष्मासे ढँके रहते हैं। उपजिह्वापर सफ़ेद आभा और वह संकुचित सिकुड़ी-सी रहती है। किसी पदार्थका निगलना एकदम असम्भव-सा रहता है। डिफ्थीरिया (Diphtheria) उपझिल्ली-प्रदाहके रोगमें साँसमें बदबू—पतला जलीय पदार्थ पी लेनेपर वह फिर कै हो जाता है। चेहरा लाल, मुखगह्वर और नाकका स्थान सफ़ेद आभा लिये रहता है (कैम्फ़, कार्बो-वेज, वेरेट्रम)।

पाकाशय।—बार-बार पानी पीनेकी इच्छा, डकार आना, भूख न लगना, शराब पीने या तम्बाकू सेवन करनेकी बहुत तेज़ इच्छा (ऐसिरम, कार्बो-वेज) शराब पीनेवाली गर्भवती स्त्रियाँ और कर्कट (Cancer) रोगके रोगियोंका वमन (पाइरो); पेटमें वायु होनेके साथ-ही-साथ अजीर्ण रोगका वमन (कार्बो-वेज, लाइको)।

मल।—अतिसार और आमाशय; बदबूदार डकार मिली कब्जियत (ओपियम, सोरिनम)। रक्तामाशय (खूनी पेचिश)—पतली आँव, मानो आँतोंका आवरण छिलकर निकल पड़ता है; बहुत वेग और कांखना (कैन्थरिस)। फेनकी तरह मल; उदरामय—मल पतला, काली आभा लिये

सड़ी गन्ध-भरा ; अनजानमें आप-ही-आप निकल पड़ता है। कब्जियतके साथ साँसमें बदबू।

पेशाब।—हरी या काली आभा लिये ; बहुमूत्र ; ऐल्बुमिनुरिया।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—सब तरहके स्रावमें दुर्गन्धका रहना। योनि-कपाट (Vulva) के चारों तरफ खून-भरी या पीब-भरी फुन्सियाँ। कमरमें बहुत ही तेज़ तकलीफ़ देनेवाला दर्द—जांघतक खिंचाव पैदा हो जाता है। बाएँ अण्डाधारमें दर्द ; बाहरकी ओर घूमनेसे बढ़ना। प्रदर—तेज, बहुत ज्यादा और बहुत दुर्गन्धमय तथा हरी आभा लिये स्रावका होना ; खुजली और उसमें जलन पैदा होना (क्रियोजोटम्) और इसी स्रावसे जरायु-ग्रीवाका क्षय हो जाता है या उसकी खाल उधड़ जाती है। सूतिका ज्वराधिकारमें दुर्गन्धमय मल आदिका स्राव (एचिनेसिया)।

त्वचा।—शरीरसे बदबू निकलती है और उससे जलन-भरे तथा खुजलानेवाले रस-भरे दाने निकल आते हैं। जले हुए स्थानमें जखम हो जाता है और उससे बराबर रस बहा करता है। सांघातिक या तेज़ आरक्त ज्वर और चेचक (ऐमोन-कार्ब)। भोथरे अस्त्रसे चोट लगनेपर मांस कटकर हड्डी यदि बाहर निकल आये या चूर हो जाये या उसके कोमल अंशके जखमके ऊपर पपड़ी जमे (कैलेण्डुला). विसर्प।

निद्रा।—जम्हाई और औंघाई आना।

सम्बन्ध।—खड़िया और शर्करा मिले चूनासे इसका विष-दोष नष्ट हो जाता है। बहुत ज्यादा दूध पीनेसे अधिक लाभ होता है। सरके दर्दमें जेल्स, मर्क और सलफरके सदृश है। आर्सेनिक, कार्बो, चायना, दाह और बदबूदार स्रावमें ; ऐण्टिम-टार्ट और वैरियोलिनम, चेचकमें।

जलनेपर।—आर्स, क्रियोजोट, जिन सब जखमोंसे बदबूदार रस निकलता है—मर्क, सल्फ।

शक्ति।—२ री से ३० और २०० शक्तितक।

एसिड क्रोमिक

(ACIDUM CHROMICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सलफ्यूरिक एसिडके साथ बाइक्रोमेट आफ पोटास मिलाकर बनता है। यह २ री दशमिक शक्तितक चुआये हुए पानीमें गलाया जाता है।

इसको "क्रोमिक आक्साइडेटम" के साथ सम्मिलित भावसे परीक्षा की गयी है। डाक्टर हेरिङ्गने इसे इसी रूपमें ग्रहण किया है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—यह लक्षणके अनुसार नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक या फायदेमन्द है :—छातीका स्नायुशूल ; मस्तिष्क-प्रदाह ; खाँसी ; अतिसार ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; सड़नेवाले जखम ; वात-रक्त, अर्श (बवासीर) ; कटि-शूल ; स्वरनालीका क्षय रोग ; सन्धिवात ; उपदंश (गर्मी रोग) ; गलक्षत (गलेका जखम) ; दाँतका दर्द ; जबड़े अटकना ; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—यह दवा गलेमें डिफ्थीरिया या उपझिल्ली-प्रदाह (Diphtheria) ; नाकके पिछले छेदमें अर्बुद और जीभके कर्कट रोगमें लाभदायक है। प्रसवके बादका खून-भरा और बदबूदार स्राव (Lochia)। लक्षणोंका एकाएक पैदा होना और एकाएक गायब हो जाना तथा यथा-समय प्रकट होना।

लक्षणावली

नासा-रन्ध्र ।—नाकमें जखम और पपड़ी जमना या कटे घाव। निकली हुई साँसकी हवा बहुत बदबूदार ; जखम पैदा होनेकी तरह दर्द। पीनस या नासा-रन्ध्र (नाकका छेद) का सड़ा घाव (ऐसाफिटिडा)।

गलेके भीतर ।—डिफ्थीरिया (Diphtheria—लैक-कैनाइन, लैकेसिस, मर्क-सायाना, मर्क-प्रोटो-आयोड, मर्क-बिन-आयोड) ; गलेका जखम (बेल, बैरा-का, एपिस, आयोड. कैलि-बाई), गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा (हाइड्रेस्टिस, कैलि-बाई, एल्यूमिना, कार्बो-वेज), निगल जानेकी इच्छा ; सवेरे खाँसकर निकाल देनेकी इच्छाका बढ़ना (आर्जेण्ट-नाई)। नाककी पिछली हड्डी (पश्चान्नासास्थि) में अर्बुद (कैल्केरिया-कार्ब, कैलि-बाई, टियुक्रियम, थूजा)।

मल और मलान्त्र।—मल पानीकी तरह बहुत ज्यादा और बार-बार वेगका होना। इसके साथ ही मिचली और सरमें चक्कर आना। भीतरी रक्तस्रावी अर्श (खूनी बवासीर) (ऐसिड-म्यूर, कास्टिकम, हैमा, नक्स, सलफर); कमरमें कमजोरी (साइलि, इग्ने, सिङ्कोना, कैल्के-फास)।

सम्बन्ध।—सदृश, कैलि-बाई-क्रोमिकम, ऐसिड-म्यूर; मर्क-सायाना; आर्जेण्टम; थूजा।

दोषघ्न।—डेफनि; मार्क-कोर; रासटक्स इत्यादि।

शक्ति।—३ रे दशमिकसे ६ठे दशमिक क्रमतक साधारणतः इसका व्यवहार दिखाई देता है।

एसिड क्राइसोफैनिक

(ACID CHRYSOPHANIC)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रूवार्ब वगैरह द्रव्योंसे यह दवा तैयार होती है। (गोआ पाउडरका प्रधान उपादान)।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—दाद (वैसालिन); मसे (Fig-warts—थूजा), विचर्चिका (Psoriasis—थाइराइडिन, पेट्रोल, थूजा; प्रमेहसे उत्पन्न होनेपर=इथियोप्स, ऐण्टिमोनेलिस,—श्लेष्मा-प्रधान धातु होनेपर मर्क-बिन; उपदंशसे उत्पन्न होनेपर ग्रेफा और कानके पीछे होनेपर साइक्यूटा); केश-दद्रु या शिर-विसर्पिका (Herpes—सिपिया, मेडोरिन) वगैरहमें इस दवासे बहुत फायदा होता है। मुँहासे या वयोव्रण, Acne Rosacea=कार्बो-एनिमेल, हाइड्रोकोटाइल, ऐगरिकस, नक्स और रसटक्स)। बहुत खुजलानेवाला, बहुत ज्यादा और बहुत बदबूदार रस-स्राव होनेवाला; निचले प्रत्यङ्गोंका अकौत या खसड़ा (मर्क-कोर) में यह उपकारी है। (बाहरी प्रयोगसे बहुत तरहके रोग पैदा करनेवाले कीड़े नष्ट कर देता है)।

लक्षणावली

आँख और दृष्टि।—पलक योजकत्वचा या सफेद अंश वगैरहका प्रदाह (इयुफ्रेशिया, सल्फ, ऐण्टि-टार्ट, मर्क-कोर, अर्जेण्ट-नाइट)। दर्शन-

इन्द्रियोंमें अधिक चेतना अर्थात् थोड़ी भी रोशनीसे बहुत तकलीफ मालूम होती है।

कान।—खुजली और फटे घाव;—समूचा कान और उसके चारों ओरकी त्वचामें मानों एक जखम हो रहा है।

पाकाशय।—बच्चोंका वमन और उसके बाद भूरे रङ्गका पानीकी तरह पाखाना होना।

शक्ति।—३ रा चूर्णसे ३० शक्तितक।

ऐसिड फ्लुयोरिक

(ACIDUM FLUORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशुद्ध कैलसियम फ्लुराइडके चूर्णके साथ सल्फ्युरिक एसिड मिलाकर उसे साफ़ करने बाद यह मिलता है। १ ला क्रम चुआये हुए पानीसे यार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—परिपोषण शक्तिकी गड़गड़ी हो जानेपर जो रोग पैदा हो जाति हैं, उनमें यह उपयोगी है। इसलिये यह कैल्केरिया और साइलिसियाकी याद दिला देता है। जिनका शरीर पारा या उपदंश विषसे जर्जरित हो गया है और शराब आदि पीकर जिनका स्वास्थ्य नष्ट हो गया है, उनकी बीमारीमें बहुत लाभदायक है। शिराओंका फूलना, हड्डियोंकी बहुत-सी बीमारियाँ, शय्याका जखम (Bed-Sore), उपदंशका घाव, हड्डीके बीचकी नाली या दन्त नालीसे खून मिला नमकीन स्राव, अस्थिनाली, अंगुलहाड़ा, सब तरहकी हड्डियोंकी बीमारी और पीव पैदा हो जानेपर यह साइलिसियाकी तरह है। केवल ठण्डे प्रयोगसे घटना इसको अलग करनेवाला लक्षण है। यकृतकी बीमारी, वक्षोदक रोग, गलगण्ड, पीनस, कर्णस्राव (कानसे पीव बहना), केश उड़ जाना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बुढ़ापा या असमयके बुढ़ापेमें होनेवाले रोगोंमें और उपदंश विष या पाराके दोषसे दूषित धातुमें इसका हमेशा व्यवहार होता है। इसका रोगी थोड़ी ही उम्रमें बुड्ढे की तरह दिखाई देता

है। वह अक्लान्त भावसे अधिक परिश्रम कर सकता है। (कोका); गर्मीके ताप तथा जाड़ेकी ठण्डकसे वह बहुत कातर नहीं होता। त्वचापर इसकी क्रिया बहुत ही ध्वंस करनेवाली होती है। जैसे—शय्या-क्षत (Bed-sores) साधारण जखम; शिराका फूलना (Varicose Veins), हमेशा शरीरको हिलानेमें दर्द अथवा कोई बीमारी हो जाती है।

लक्षणावली

मन।—भूलनेवाला; अपने बाल-बच्चोंपर भी विराग; अपने बहुत प्रिय पात्रपर भी बहुत अनास्था प्रकट करता है; बहुत आनन्द; किसीका भय नहीं रहता और अपनी प्रकृति बहुत ही सन्तोषजनक समझता है। किसी कार्यका दायित्व अत्यन्त कम अनुभव करता है।

मस्तक।—माथेकी हड्डीमें जखम, बहुत रस-स्रावी जखम, गर्मीसे बढ़ना (शीतसे बढ़ना -साइलि)। हड्डीका बढ़ना (Exostosis हेकला, कैलि-बाईक्रोम); टाक पड़ना (कैलि-कार्ब, ऐसिड-फास)। कनपटी या शङ्खदेशमें (Temples) दबाव मालूम होना।

कान।—दोनों कानोंमें खुजली।

आँख।—मानो आँख भेदकर हवा निकलती है। अश्रुनालीका नासूर (साइलि। आँखमें मानो बालूके कण पड़े हैं, ऐसा मालूम होना।

नाक।—नाकके पासके अपाङ्गकी खुजली।

मुख-गह्वर।—दाँतमें दर्द, ठण्डे पानीसे वृद्धि (ब्राई, कैल्के, कैमो, कास्टि, हिपर, लैक, नैट्र-म्यूर, नक्स-मस्क, नक्स-वोम, पल्स, साइलि, स्टैफि, सल्फ); परन्तु मुँहमें पानी कुछ देर रहकर गर्म होनेपर घटना (नक्स-मस, नक्स-वोम, पल्स, रास-टक्स, सल्फ)। दाँतकी हड्डीका जखम, दाँतमें नासूर और उससे लगातार रक्त-मिला, नमकीन रस-स्राव, गलेमें उपदंश विषसे पैदा हुआ जखम, शीतल पदार्थके स्पर्शसे बहुत तकलीफ़। दाँत गर्म मालूम होते हैं। ऊपरी हनुकी हड्डीतक जखम फैल जाता है।

पाकाशय।—भूख ज्यादा लगना, पर तुरन्त ही पेट भर जाना, डकार, वमन, पेटमें दर्द।

अन्नाशय और मल।—यकृत प्रदेशमें दर्द मालूम होना, डकार और वायु निकलना। कब्जियत, मल कड़ा या पित्तज उदरामय। काफी

पीनेकी इच्छा न होना। अच्छी तरह जलाया हुआ खाद्य पदार्थ खानेकी इच्छा।

मूत्रयंत्र।—मूत्रनालीमें जलन मालूम होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—अत्यन्त प्रवल कामिच्छा। वृद्धोंका रातके समय निद्रावस्थामें लिङ्गोत्थान ; पुराने मेहके कारण रातके समय मूत्रनालीसे लाला-स्राव (geety discharge थूजा, सिनाबेरिस, नाइट्रिक-एसिड, नैफ्थेलिन, गुआयेकम), इससे कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु, बहुत ज्यादा स्राव और बहुत दिनोंतक स्थायी स्राव। जरायु और जरायुमुखका जखम। प्रदर, बहुत ज्यादा और जखम पैदा करनेवाला (Corrosive) स्राव। कामोन्माद (हायोसा) ओरिगेनम, स्ट्रैमो, टैरेण्टुला, कैल्के-फास, ग्रै टियोला।

अङ्ग-प्रत्यङ्गादि।—अंगुलीकी सन्धिका प्रदाह। ऐसा मालूम होता है, मानो नखमें कोई खोंचा मार रहा है (हिप, सिलि), नख टूट जाते हैं (ग्रैफ)। दीर्घास्थिका जखम और सड़ना (Necrosis—फास)। किसी तरहके परिश्रमसे नहीं थकना (कोका)।

त्वचा।—पुराने जखमके चिन्ह-सब (Cicatrices) प्रदाहयुक्त हो जाते हैं, लाल हो उठते हैं और ऐसी सम्भावना मालूम होती है, कि वहाँ फिर जखम पैदा हो जायगा (कास्टि, ग्रैफ)। कैशिक धमनीका फूलना (Capillary aneurism—कैल्के-फ्लू और टियुबर्क्युलिन)। शिराका फूलना (हैमा)। मातृचिन्ह या जटुल (Naevus—थूजा, कैल्के-फास, लाइको), लाल और रस-भरे दानेयुक्त जखम ; शय्याका जखम (आर्निका, हाइपेरिक); बहुत अधिक रस-स्राव होनेवाला जखम—उत्तापसे वृद्धि और शीतसे घटना। एक सीमावद्ध स्थानपर बिजलीकी शलाका रहनेकी तरह तेज़ दर्द (मैग-फास)।

निद्रा।—तन्द्रालु, परन्तु नींद नहीं आती ; सवेरे नींद आती है अवश्य, पर वह सपने-भरी रहती है।

ह्रास।—हिलानेसे और भ्रमणके समय।

वृद्धि।—सवेरे, विश्रामसे उठनेके समय इत्यादि।

सम्बन्ध ।—कोका और साइलिसिया—**अनुपूरक** । शराबियोंके उदरी रोगमें आर्सेनिकके बाद व्यवहारमें आना चाहिये। वंक्षण-सन्धि (Hip-Joinst)के रोगमें कैलि-कार्बके बाद काममें लाया जाता है; दाँतको छुआ न जा सके लक्षणमें काफिया और स्टैफिसेग्रियाके बाद ; बहुमूत्र रोगमें फास्फोरिक एसिडके बाद ; अस्थि रोगमें सिलि और सिम्फाइटमके बाद तथा कण्ठमाला रोगाधिकारमें स्पंजियाके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये ।

शक्ति ।—६ ठी से ३० वीं शक्तितक ।

ऐसिड गैलिकम

(ACIDUM GALLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—(माजूफलसे उत्पन्न एक तरहका खट्टा पदार्थ)। यह तरल और विचूर्ण दोनों तरहसे बनता है। इसमें टैनिक ऐसिडके सदृश पदार्थ हैं ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें इसका व्यवहार होता है :—दमा ; कब्जियत ; कमजोरी ; प्रलाप ; क्षयकास ; आमवात ; रक्तस्राव ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका व्यवहार क्षय रोगमें बहुत प्रसिद्ध है। दूषित स्राव (Secretions) सबको रोकना, पाकाशयको क्रियाको शक्ति बढ़ना और भूख बढ़ाना इसकी प्रधान क्रिया है। कभी-कभी इससे खूनका स्राव भी बन्द हो जाता है। इसकी क्रियाका प्रधान फल है, मुँहमें पानी भर आना ।

लक्षणावली

श्वासयंत्र ।—दाहिने फेफड़ेमें तेज़ दर्द, सन्ध्याके बाद सोनेपर घटना ; सवेरे कम रहता है ; खाँसने, जम्हाई लेने या भरपूर साँस लेनेपर दर्द बढ़ जाता है। यक्ष्मा—बाएँ फेफड़ेके शिखर-देशमें (सिरा Apex) गह्वर उत्पन्न हो जाता है और पीबकी तरह कफ (Expectoration) निकला करता है। दोनों फेफड़ोंके बीचमें और ऊपरी अंशमें, खासकर बाएँ फेफड़ेमें कुछ दर्द मालूम होता है। यह दर्द गर्दन और दाहिने कन्धेकी पेशी और मेरुदण्डके

ऊपरी अंशतक फैल जाता है। शरीरके हिलाने-डोलाने, माथा घुमानेपर और सवेरे तकलीफ बढ़ जाती है। फेफड़ेसे खूनका स्राव होता है। रातमें पसीना तथा मुँह और गलेमें बहुत सूखापन मालूम होता है।

सम्बन्ध।—आर्स-आयोड ; वैसिलिन ; कैल्के-कार्ब ; माइरिका ; फास ; सल्फ।

शक्ति।—पहला दशमिक विचूर्ण और ६ ठो और ३० वीं शक्ति।

ऐसिड हाइड्रोसियैनिकम

(ACID HYDROCYANICUM)

दूसरा नाम।—इसे Prussic Acid प्रुसिक एसिड भी कहते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—प्रूसियेट आफ पोटासके साथ पानी मिला सल्फ्युरिक एसिड मिलाकर, चुआनेपर यह सांघातिक विषैला पदार्थ पैदा हो जाता है। तुरन्त बनाकर इसका क्रम तैयार करना अच्छा है ; क्योंकि ज्यादा दिनोंका तैयार किया हुआ खराब हो जाता है और उससे भरपूर लाभ दिखाई नहीं देता।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें यह लाभदायक हुआ है :—वक्षमें स्नायुशूल रोग ; दमा ; हैजा ; अकड़न ; अजीर्ण रोग ; मृगी रोग ; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात ; हिचकी ; प्रसवकालकी अकड़न ; पाकाशयके बहुतसे विकार ; लू लग जाना या सर्दी-गर्मी ; धनुष्टङ्कार ; मूत्रक्षारकी वजहसे अकड़न ; क्रूप-खाँसी इत्यादि।

विशेष क्रिया।—डा० क्लार्कका कथन है—"यह सिलियक ग्रन्थिपर अपनी क्रिया कर आँतोंमें आक्षेप और शूल उत्पन्न करता है। अकड़नऔर पक्षाघात इस दवाका प्रधान निर्देशक लक्षण है।"

उपयोगिता और आभास।—अकड़नवाली बीमारी और पक्षाघातपर इसकी प्रधान क्रिया है। किसी मारात्मक रोगमें जब जीवनी-शक्तिकी क्रिया समाप्त हो जाती है, रोगी गाढ़े मोहमें पड़ा रहता है, जब साँस लेने और छोड़नेकी क्रिया बहुत लम्बी और धीमी होती है, यहाँतक कि कभी-कभी रोगी मुर्दे जैसा दिखाई देता है और जब पाखाना-पेशाब रुक जाता है, उस समय यह दवा संजीवनी सुधाकी तरह मृत व्यक्तिको फिरसे जिला देती है।

(डाक्टर सरकार) स्वरनलीका सङ्कोचन—ऐसा मालूम हो, मानो साँस रुक रही है, वक्षके भीतर दर्द और सङ्कोचन मालूम होना ; हृत्पिण्डका स्पन्दन ; नाड़ी दुर्बल और विषम ; पेटका ऊपरी भाग खाली मालूम होना। निस्पन्द वायु-रोग Catalepsy=कैनाबिस इण्डि, साइक्यूटा ; ऋतुकाल होनेपर—मस्कास ; आक्षेप-मिला पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाना (with opisthotonos) होनेपर—ऐङ्गस्टुरा ; वहिरायाम (शरीरका धनुषकी तरह पीछे टेढ़ा पड़ना) आक्षेप मिला और मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे होनेपर इग्ने ; डरकी वजहसे एकोन, जेल्स, ओपियम ; प्रणय और ईर्षाकी वजहसे होनेपर—हायोसा, लैकेसिस और आनन्दके कारण हो तो—काफिया)। विसूचिका रोगकी पतनावस्था (कार्बो-वेज) मृगी रोगमें जिस समय बेहोशीकी अवस्थामें जबड़े अटक जाते हैं, अंगुली मुट्ठी बन्द हो जाती है, मुँहसे फेन निकला करता है, निगला नहीं जाता और रोगके आक्रमणके अन्तमें बहुत ही नींद लगती है और सुस्ती मौजूद रहती है।

लक्षणावली

मन।—अचेतन अवस्था ; उन्मत्त प्रलाप ; कल्पित विपत्तिकी आशंका ; सुस्ती।

शिरोदेश।—यंत्रणा देनेवाला और बेहोश करनेवाला (Stupefying), सरका दर्द ; ऐसा मालूम हो मानो सर जला जाता है।

आँखें।—आँखोंकी पुतली स्थिर या फैली भौंवोंका (Supra-oribital) स्नायुशूल,—रोगवाला भाग गर्म और लाल हो जाता है।

कान।—दोनों कानोंमें दर्द।

मुखगह्वर।—दोनों हनु आपसमें कसकर जुड़ जाते हैं (Trismus) फेन निकलता है। दोनों ओंठ नीले और रक्तहीन। जीभ ठण्डी।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर अकड़न।

पाकाशय।—मीठा स्वाद। कोई पतला पदार्थ पीनेके समय अन्ननालीमें गड़गड़ आवाज, शूलका दर्द-पेट खाली रहनेपर दर्द मालूम होता है। पाकाशय और आँतोंका प्रदाह।

मल और मलद्वार।—अनजानमें पाखाना हो जाना ; हैजा और कालरामें एकाएक पाखाना बन्द हो जाना इत्यादि।

श्वासयंत्र ।—आवाज़के साथ और तेज़ श्वास-प्रश्वास। सूखी ; साँस रोकनेवाली और क्षण-क्षणपर आनेवाली खाँसी। गलनलीके सङ्कोचनके साथ दमा, क्रुप खाँसी (Whooping cough—ड्रोसेरा, मिफाइटिस, नैफ्थेलीन, सिना ; आर्निका ट्राइफोलियम) ; फेफड़ेकी क्रिया रुकना या पक्षाघात, (Paralysis of lungs)।

हृत्पिण्ड ।—धड़कनकी क्रिया दुर्बल, अनियमित, हृत्शूल (Angina pectoris), अपस्मार, उत्कण्ठा, और उसके साथ ही असम और क्षीण नाड़ी। कलाईमें नाड़ीकी गति मालूम नहीं होती। हाथ-पैरके अगले भाग बरफ-जैसे ठण्डे या शीतल।

निद्रा ।—बार-बार जम्हाई आना [चेलिडो—अनिद्रा साथ रहनेपर—ऐकोन, आर्निका ; नींदसे जागनेपर, आवे तो—नक्स, इग्ने] ; कम्पन ; बहुत ज्यादा औंघाई। अस्पष्ट और असम्बद्ध सपने।

ज्वर ।— कम्प ; मध्य रात्रिके बाद या सवेरे, भीतर और बाहर सर्दी मालूम होना ; हृत्पिण्डकी क्रिया असमान, इसके बाद ही प्रबल उत्ताप इत्यादि।

सम्बन्ध ।—प्रतिविष ।—कैम्फर, काफिया, इपिकाक, नक्स-वोमिका, वेरेट्रम।

तुलनीय या समगुणवाली दवाएँ ।—कैम्फर [हैजाकी हिमाङ्गावस्था या शीत], साइक्यूटा, [कशेरुकामें जलन, गर्दनका अकड़ना ; कोनायम (पक्षाघात) ; इनैन्थि (मृगी) ; लोरोसि (सूखी खाँसी) ; टैबेकम (श्वास रुकनेका भाव] ; हेलिबोरस (फेफड़ा और हृत्पिण्डका पक्षाघात) ; नक्स-वो (धनुष्टङ्कार)।

शक्ति ।—३ री से २०० शक्ति।

ऐसिड लैक्टिकम

(ACIDUM LACTICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी खटाई ; इसके बाद चुआये हुए पानीके साथ १म क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। सन्धिवात, पेशिक वात (पेशियोंका वात) ; बहुमूत्र, अजीर्ण, अम्ल रोग, खट्टी डकार आनेपर मानो कलेजा जल उठता है। वमन, मिचली ; गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन, नाकसे खून गिरना, घुंड़ी या काली खाँसी ।

उपयोगिता और आभास ।—गर्भवतियोंका सवेरेके समयका वमन ; बहुमूत्र और सन्धिवात और वात-व्याधिमें यह दवा बहुत लाभदायक है। स्तन-रोगके लक्षण, सरमें चक्कर आना ।

लक्षणावली

गलेके भीतर ।—ऐसा मालूम होना, मानो कोई एक गोला-सा अड़ा है। घूंट लेनेपर भी वह नहीं हटता। फेन-भरा श्लेष्मा हमेशा निकला करता है। संकोचन मालूम होना (लैकि) और मिचली (स्वरनलीके जखमकी बीमारीमें बाहरी प्रयोगसे लाभ होता है ।

पाकाशय ।—गर्भवती, खासकर उन स्त्रियोंको, जिनके शरीरमें रक्त कम हो, मिचली और सवेरेके समय वमन, भोजनके बाद घटना (अधिक ओकाई आनेपर—नक्स ; भोजनके बाद घटनेपर—ऐनाकार्ड, सिरियम-आक्ज़ेलेट, सिम्फरिकार्पा, नेट्र-फास, ऐसिड कार्बोलिक, टैबेकम)। जीभ सूखी और रसहीन। प्यास और बहुत भूख। सड़नेवाला मुँहका रोग (Canker मर्क, फास, आर्स), बहुत ज़्यादा लार बहना। कड़वा डकार।

वक्षस्थल ।—स्तनमें दर्द, बगलकी गांठोंका (Auxillary glands) बढ़ना ; दर्द बाँहतक फैल जाता है।

पेशाब ।—पाकाशय और यकृतकी गड़बड़ीके कारण बहुमूत्र ; पेशाब बहुत ज्यादा परिमाणमें और बड़े वेगसे होता है, उसमें चीनी रहती है और बहुत पीली आभा लिये होता है। बहुत अधिक प्यास लगना (लैक-डिफ्लो), ओकाई आना, दुबलापन, तेज भूख और मलमें कड़ापन ; मूत्रग्रन्थि या मसानेमें दर्द। बार-बार ज्यादा मात्रामें पेशाब करनेकी इच्छा। दिन-रात बराबर पेशाबका वेग, पेशाब रोकनेकी चेष्टा करनेपर दर्द होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—दाहिने डिम्बाधारके स्थानपर हमेशा दर्द, तेजीसे चलनेपर इस दर्दका बढ़ जाना। ऋतुके समय—थोड़ा खून जाना ; निर्द्धारित समयसे १० दिन आगे बढ़कर ऋतु-स्राव होना या दो दिन पहले ही हो जाना ;

कभी-कभी बहुत अधिक स्राव भी होता है। तलपेट और कमरमें दर्द मालूम होता है। ऋतु-स्रावके समय योनिके बगलमें खुजलाहट होती है। प्रदर—प्रदरके स्रावका दाग कपड़ेमें पीला लगता है; स्राव रुकनेपर सर्दी आरम्भ हो जाती है। ऐसा दर्द होता है. मानो रज:स्राव होगा। पैर ऊँचा रखकर बैठनेसे सब तकलीफें घट जाती हैं।

प्रत्यङ्गादि।—सन्धियाँ, कन्धे, मणिमन्ध (कलाई), जंघा वगैरहमें वातका दर्द और कमजोरी; चलनेके समय समूची देहका काँप उठना।

निद्रा।—नींद न आना।

सम्बन्ध।—ऐसिड-ऐसिटिक, ऐसिड-फास, ऐक्टिया-रेसिमोसा, ऐकोन, बेलिडो, इपिका, नक्सके साथ तुलनीय।

शक्ति।—३ रीसे २०० शक्ति।

ऐसिड म्यूरियेटिकम

(ACID MURIATICUM)

दूसरा नाम।—ऐसिड हाइड्रोक्लोरिकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये पानीमें निम्न-क्रम और उसके बाद सुरासारकी जरूरत पड़ती है। नमक और सल्फ्युरिक ऐसिडसे तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—डा० क्लार्कके मतसे—गुह्यद्वारका निकलना; ताण्डव या कोरिया; बहरापन; डिफ्थीरिया; सान्निपातिक ज्वर; अर्श; मुँहमें बहुत तरहके सड़े घाव; आरक्त ज्वर; शीताद; क्रुप खाँसी; पाराके अपव्यवहारका दुष्परिणाम।

डा० काउपरथायेट कहते हैं—सान्निपातिक ज्वरमें कमजोरीकी अवस्था; अनजानमें पाखाना हो जाना; दाँतपर कोट जमना; स्वल्पविराम ज्वर वगैरहमें जबड़ेका लटक पड़ना; शय्यामें पैतानेकी ओर खिसक जाना वगैरह लक्षणवाली अवस्थामें यह बहुत उपयोगी है। मुँहमें जीभपर बहुत तरहके सांघातिक सड़नेवाले जखम; डिफ्थीरिया; यकृतकी बीमारीमें पतले दस्त आना; विषैला फोड़ा; जखममें जलन इत्यादि लक्षणोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—काले केश, काली आँखें और गहरे रङ्गवाले तथा क्रोधी मनुष्योंकी बीमारियोंमें फायदेमन्द है। जिन रोगोंमें बलका क्षय हो जाता है, रोगी हमेशा कराहता रहता है। अचेतन अवस्था और किसी तरह भी उसे सन्तोष या आराम नहीं मिलता। शैवालकी तरह (fungoid) उद्भेदवाला जखम और आँतोंमें नकली झिल्ली पैदा हो जाती है। रोगी इतना कमजोर हो जाता है कि बैठनेके साथ ही उसकी आँखें मुँदने लगती हैं, निचली हनुबटी झूल पड़ती है और वह शय्यासे फिसल पड़ता है, खासकर मुख-गह्वर और मलद्वारपर इसका हमला होता है। जीभ और मलद्वारकी अवरोधक पेशी क्रियाहीन हो जाती है। रक्तके ऊपर अपनी पीव पैदा करनेवाली शक्ति प्रकटकर रोगीको बलक्षय करनेवाले रोगमें डाल देती हैं। उत्ताप जितना ही अधिक होता है, कमजोरी भी उसी अनुसार बढ़ने लगती है और शरीरके रसोंका सड़ना आरम्भ हो जाता है। पेशाब करनेके समय आप-ही-आप पाखाना हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—अचैतन्य, अस्पष्ट शब्दसे यन्त्रणा प्रकट करना अथवा कराहना, क्रोध आ जाना, अन्तर्दृष्टिशील और शान्त, भविष्यकी चिन्तामें बहुत व्याकुल रहता है, बेचैनी और सरमें चक्कर आना (ऐलो, पोडो)।

मस्तक।—सरमें चक्कर, माथेके पिछले भागमें भार मालूम होना। ऐसा दर्द मालूम होना मानो माथा टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। सरका दर्द- नित्य सवेरे ८ बजेसे दोपहरके १ बजेतक रहता है। बाईं भौंके पास दर्द आरम्भ होता है और बाईं आँख, नाकका आधा बायाँ भाग, ललाट और कनपटी या शङ्खदेशसे सरके पिछले भागतक फैला रहता है, मानो मस्तिष्क छिन्न-भिन्न हुआ जाता है। आँखें हिलानेपर (ब्रायो) या उठ बैठनेपर दर्द बढ़ जाता है, थोड़ा परिश्रम करनेपर घटता है। केश सब मानो खड़े हो गये हैं (लेकनेन्थिस) ऐसा अनुभव होता है।

आँख।—सीधे भावसे आधी दृष्टि (Perpendicular half-sight) ऊपरका आधा भाग या निचला आधा भाग दिखाई देता है। पुतली सिकुड़ी; रोशनी अच्छी न लगना; अन्धेरेमें आराम मिलना।

नाक।—हूप खाँसी (कुकुर खाँसी) में नाकसे खून गिरना, बहुत दिनोंतक रक्त-स्राव (लिडम); बार-बार छींक।

मुखमण्डल। - निचला हनु झूल पड़ता है; व्रण आदि; दोनों ओंठ सूखे, फटे। निचले ओंठके बाईं ओर दिनके ४ बजेसे आधी राततक दर्द।

मुख-गह्वर।—दूषित रोग या जखमसे भरा, गहरे, त्वचाको छेद देनेवाले जखमोंकी तली घोर लाल या काली आभा लिये रहती है, छोड़ी हुई साँसमें दुर्गन्ध रहती है और बहुत दुर्बलता मालूम होती है। गलनालीकी झिल्लीका प्रदाह (Diphtheria), कर्कट (Cancer), जीभ चमड़ेकी तरह सूखी और क्रियाहीन, दाँतकी जड़ और मसूढ़ेमें सूजन। दाँतमें दाग या मैल-चढ़ी (Sordes)।

गलेके भीतर।—उपजिह्वा फूली। गलेमें घाव और नकली झिल्ली या पर्दा पैदा हो जाना। गलनाली फूली, गाढ़ा लाल रङ्ग और दर्दसे छुआ न जाना। कुछ निगलनेकी चेष्टा करनेपर झिल्लीका सिकुड़ना, फैलना आरम्भ होता है और साँस रुकनेका लक्षण पैदा हो जाता है।

पाकाशय।—मांसको देखना तो दूरकी बात है, याद आनेपर भी रोगीको घृणा लगने लगती है (ऐसिड-नाइट्रिक)। कभी-कभी बहुत भूख और जलीय पदार्थ पीनेकी बार-बार इच्छा होती है।

हृत्पिण्ड।—कलेजेकी धड़कन मुँहमें अनुभव करना। नाड़ीकी गति धीर और चीण—कभी-कभी रुक-रुककर (Intermitting)। दिनमें धीर गति और रातमें अपेक्षाकृत तेज़।

मल और मलान्त्र।—बवासीर रहे या न रहे, मलद्वारमें बहुत स्पर्श अनुभव होता है। ऋतुके समय मलद्वारमें बहुत तकलीफ़ रहती है। अर्शकी बलि फूली, नीली आभा लिये, दर्द-भरी और उसका छुआ न जाना। बच्चेकी एकाएक बवासीरकी बीमारी हो जाती है, इतना दर्द कि कपड़ेकी रगड़तक सहन नहीं होती। पेशाब करनेके समय काँच निकल आती है (Prolapsus ani)। गर्भावस्थामें अर्श, उदरामय—पेशाब करनेके समय आप-ही-आप पाखाना हो जाना, वायु निकलनेके समय भी मल निकल जाता है (ऐलो); इस तरह पेशाब नहीं कर सकता, कि पाखाना न हो।

पेशाब।—धीरे-धीरे पेशाब निकलता है; मूत्राशय दुर्बल—पेशाब करनेके समय बहुत देरतक राह देखनेपर तब कहीं पेशाब होता है। इतना वेग देना पड़ता है, कि मूत्रनली बाहर निकल पड़ती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें ही ऋतु हो जाना—मानसिक सुस्ती, बात नहीं करती;—मानों उसकी मृत्यु निकट है। कमरमें दर्दके साथ प्रदर। ऋतुकालमें मलद्वारमें दर्द, जननेन्द्रियमें जखम, जननेन्द्रियमें स्पर्शानुभूति, उसमें साड़ीकी रगड़तक सहन नहीं होती (म्यूरेक्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—भार, दर्द-भरा और क्षीण। चलते-चलते ढुलक पड़ता है। गुल्फास्थिके पेशी सूत्रमें (Tendo Achillea)—दर्द (ऐसिड-बेञ्जोयिक)।

त्वचा।—बहुत खुजलानेवाली फुन्सियाँ और रस-भरे दाने (रास-टक्स); दुष्ट-व्रण (Carbuncle—ऐन्थ्रस)। निचले प्रत्यङ्गका बदबूदार जखम। आरक्त ज्वर,—नीली आभा लिये देह, फुन्सी-भरे थोड़ी संख्यामें उद्भेद।

ज्वर।—सान्निपातिक ज्वर और आन्त्रिक (Enteric), गाढ़ी बेहोशी जैसी नींद, जाग्रत अवस्थामें भी चेतनाका न रहना, जोरसे कराहना, जीभके दोनों पार्श्व मैल चढ़े, सूखे चमड़ेकी तरह सिकुड़े और सुन्न जैसे, पेशाबके समय आप-ही-आप बदबूदार पाखाना हो जाना। शय्यामें पायताने खिसक जाता है। प्रत्येक तीसरे स्पन्दनपर नाड़ी रुक जाती है या विलोप हो जाती है।

वृद्धि।—तर हवामें।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न—कैम्फर, ब्रायोनिया, इपिका। समगुण—ब्रायो—फास्फो-ऐसिड, एपिस, बैप्टी, बेलाडो, जेल्स, नाइट्रिक-ऐसिड इत्यादि। ब्रायोनिया, मार्क्युरियस और रास-टक्सके बाद इसका प्रयोग होता है।

द्रष्टव्य।—बहुत ज्यादा तम्बाकू या अफीमके कारण शरीरकी दुर्बलताको विशेष रूपसे नष्ट करता है।

शक्ति।—१ लीसे ६ ठी दशमिक और ३० या २०० क्रम।

ऐसिड नाइट्रिक।

(ACIDUM NITRICUM)

प्रस्तुत प्रक्रिया।—(यवक्षार द्रावक या यवक्षारका अम्ल) अर्थात् नाइट्रेट आव पोटास और सल्फ्यूरिक एसिडसे यह तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक हुआ है—(डा० क्लार्कका मत)—गुह्यद्वारका फटना, बगलमें बदबूदार पसीना, बदबूदार श्वास-प्रश्वास, मूत्रग्रन्थिकी बीमारी, श्वासनली, बाघी, उपदंश, पैरकी खाल उधड़ना, मसे, कब्जियत, गट्ठे, खाँसी, रक्तामाशय, अजीर्ण, कानकी बहुत-सी बीमारियाँ, मृगी, बहुतसे चक्षु-रोग (आँखोंकी बीमारियाँ), पैरमें पसीना होना, नासूरका जखम, ग्रन्थियोंका फूलना, प्रमेह, मसूढ़ेका जखम ; पेशाबमें खून ; रक्त-स्राव ; चर्ममें विकार ; बहुत चर्म-रोग ; आँखोंका प्रदाह (आँख उठना) ; उपदंशकी वजहसे उत्पन्न आइराइटिस ; बहुत रक्त-स्राव ; क्षीण-दृष्टि ; नखके बहुतसे विकार ; नाकमें पुराना जखम ; चमड़ी ; नाकका अर्बुद ; गुह्यद्वारका प्रदाह और निकलना ; प्रोस्टेट ग्रन्थिमें पीब ; जीभकी बहुत-सी बीमारियाँ ; हड्डीमें गड़बड़ी ; मुँहमें जखम और लार बहना ; उपदंश ; स्वादमें गड़बड़ी ; हूप खाँसी (कुकुर खाँसी) इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मनुष्य शरीरके नवद्वारकी श्लैष्मिक-झिल्ली और त्वचाके संयोग-स्थलपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है (ऐसिड-म्यूर)।

उपयोगी धातु।—डा० एलेनका मत—क्षीण देह होनेपर भी सुदृढ़ कृष्ण वर्ण और स्नायविक धातुवाले मनुष्योंकी बीमारी। जिन सब रोगियोंको पुराना वात रोग है अथवा सामान्य कारणसे ही जिन्हें सर्दी लग जाती है, जिन्हें हमेशा पतले दस्त आते हों, उनपर ही इस दवाकी क्रिया होती है। कब्जियत रहनेपर यह प्रायः फायदा नहीं करती। कमजोर, उदरामयग्रस्त वृद्ध मनुष्योंको भी इस दवाकी जरूरत पड़ती है। शारीरिक उत्तेजनाशीलता भी इससे उत्पन्न और आराम होती है। इसका दर्द सुई बेधने या काँटा गड़नेकी तरह होता है—मानो एक नोकीली चीज़ गड़ी हुई है। दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक अच्छा हो जाता है। जाड़ा और गर्मीके अदल-बदलसे पैदा हो जाता है। नींदके समय दर्द, जगह-जगहपर चबानेकी तरह दर्द, मानो जखम पैदा हो गया है। ऐसा मालूम होता है कि माथा किसी बन्धन या पट्टीसे कसकर बाँधा हुआ है (ऐसिड कार्बोलिक, सलफर, ऐनाकार्ड), रोगवाली जगहपर जखममें, गलनालीमें और पैरके नख प्रभृतिमें, कोई नोकदार चीज़ गड़ी हुई है, ऐसा मालूम होना ; जरा भी छू देनेसे दर्दका बढ़ जाना। किसी सांघातिक विषसे या पारा, उपदंश विष, कण्ठमाला दोषसे उत्पन्न रोगोंमें

यह प्रतिविष (Antidote) की तरह काम करता है और जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है और जिनके धातुमें विकार पैदा हो गया है, ऐसे शरीरपर ऐसिड नाइट्रिक विशेष उपयोगी है। सब तरहके स्राव, खासकर मल, मूत्र और पसीने में सड़ी गन्ध रहती है।

लक्षणावली।

मन।—रातमें बार-बार नींद खुल जाना और बहुत दिनोंतक रहनेवाली उत्कण्ठा; रोगीकी शुश्रूषाकी वजहसे बहुत अधिक दैहिक और मानसिक परिश्रम (कक्यूलस); किसी प्रियतम बन्धुके वियोगकी वजहसे मनःकष्ट; सब विषयोंमें उदासीनता; जीवनसे वितृष्णा; ऋतुके पहले मानसिक अवसाद। अपनी बीमारीके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता; बीती हुई विपत्तियोंपर सोचा करना; विसूचिकाका भय (आर्स); तीसरे पहरके समय मानसिक अवसाद और उत्सुकता। क्रोधी स्वभाव, अपने मतकी प्रधानता रखना चाहता है, बात न माननेवाला; बदला लेना प्रिय मालूम हो, दुष्टमति और किसीको क्षमा नहीं करना चाहता—क्षमाशीलताहीन।

मस्तक।—ऐसा मालूम होना, कि माथा एक बन्धनसे बँधा हुआ है (ऐनाकार्ड, ऐसिड कार्बोलिक, सलफर); सरमें दर्द,—टपक, मानो बाईं कनपटी या शंखदेशको कोई हथौड़ीसे ठोंक रहा है;—सवेरे धीरे धीरे आरम्भ होकर पहली बार भोजन करनेके समय निवृत्त हो जाता है। टोपीकी गर्मीसे बढ़ना (कैल्के-फास; कार्बो; नेट्रम); ठण्डी हवामें घटना। सरमें पूर्णता मालूम होना;—रास्तेकी गड़बड़ीसे वह बढ़ जाता है। माथेमें रसभरे दाने होकर केश उड़ जाते हैं। खोपड़ी (Scalp) छुई नहीं जाती, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

कान।—सुननेकी शक्तिका घटना—सवारीपर चढ़नेसे घटना। (ग्रैफा) पत्थरके बने रास्तेपर चलनेवाली सवारी का घड़घड़ शब्द सहन न होना। (काफिया, नक्स)। चबानेके समयमें कानमें कटकट आवाज।

आँख।—दो देखना अर्थात् एक चीजका दो दिखाई देना (Diplopia); तेज कांटा बेधने जैसा दर्द मालूम होना; आँखके सफेद अंश (Cornea) में जखम।

नाक।—पुराना पीनस (Ozoena) रोग; पुरानी सर्दी, पीली आभा लिये बदबूदार और जखम पैदा करनेवाला श्लेष्मा-स्राव। नित्य नाकसे पील

आभा लिये पपड़ी निकलना। सर्दीकी वजहसे नाकके छेदमें दर्द और उससे खून बहना। नाक लाल, उपदंश विषके कारण नासारन्ध्रमें सूखी, श्लेष्मासे ढकी सूजन। नाकके पिछले छेदसे मैला, खून मिला श्लेष्मा निकलना। सुई बेधने जैसा दर्द—मानो कोई नुकीली चीज गड़ी हुई है। (आर्जेण्ट नाईट्रि ; हिपर)। कानके पीछेवाली (Mastoid) हड्डीको चूर चूर कर देनेवाला जखम (Caries) ; वक्षके भीतरके रोगके साथ नाकसे रक्त-स्राव।

मुख गह्वर।—बदबू निकलना। लार बहना। मसूढ़ोंसे खून जाना। जीभकी बगलमें गहरा, टेढ़ा, सीमाबद्ध जखम ; उसमें तेज सुई बेधने जैसा दर्द ; मानो कोई बारीक सींक गड़ी हुई है।

गलनाली।—तालुमूलके बगलमें और गांठमें समूचे नाकसे छेद भरकी डिपथिरिटिक या नकली झिल्ली (Diphtheritic Membranes) द्वारा ढकी रहना। उससे भयङ्कर दुर्गन्ध निकलती है (कैलि-पार्मङ्ग) ; कानकी जड़की कर्णमूल ग्रन्थि भी फूल जाती है। हमेशा श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करता है ; जगह जगहपर सफेद लेप चढ़ी रहती है ; निगलनेके समय सींक गड़नेकी तरह दर्द होता है।

पाकाशय।—बहुत भूख ; मुँहका स्वाद मीठा। न पचनेवाली चीजें या खड़िया अथवा मिट्टी वगैरह खानेकी इच्छा ; हृत्पिण्डके पासवाले अंशमें दर्द मालूम होता है।

अन्त्राशय।—मलद्वार फटा हुआ या फटना (Rectal Fissures) ;–पाखाना फिरनेके समय क्षणभरके लिये छेदनेकी तरह तकलीफ ; नर्म पाखाना होनेपर भी कतरनेकी तरह दर्द (ऐल्यूमिन ; नेट्रम-कार्ब ; रैटान)। उदरामय,—बहुत कांखना पड़ता है, पर पाखाना बहुत थोड़ा होता है ; मानो मलनालीमें मल अटका हुआ है और निकलता नहीं (ऐल्यूमिना) ; मलनाली या मलद्वार मानो फूट रहा है या फटा जाता है (नेट्रम-म्यूर) ; पाखाना होने बाद, बहुत देरतक काटनेकी तरह दर्द रहता है (रैटान, सलफर ;—पाखाना फिरनेके समय और पीछे होनेपर -मार्क)। आँतोंसे खून निकलना—सान्निपातिक या आन्त्रिक ज्वरमें (क्रोटेलस, सैंगुई) ; या ज्यादा शारीरिक परिश्रमसे रक्तस्रावमें—रक्त चमकीला, लाल, परिमाणमें ज्यादा या गाढ़ा। थोड़ेसे सामान्य कारणसे भी अर्शसे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव।

मलनालीका बाहर निकलना (काँच निकलना)। शूलका दर्द—कसकर कपड़ा पहननेसे घट जाता है।

पेशाब ।—थोड़ा, गाढ़ा भूरा रङ्ग तेज गन्ध—घोड़ेकी पेशाबकी तरह (ऐसिड बेञ्जो) गन्ध ; निकलनेके समय ठण्डा और गदला ; जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाला। इसके अलावा खून और लार मिला पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमुण्ड और लिङ्गाग्रत्वचा (Prepuce) में दर्द। उपदंशकी वजहसे गहरा जखम,—नासूरका जखम, उनके किनारे उठे हुए, सीसाकी आभा लिये हुए जखम मांसांकुरोंसे भरे हुए। लिङ्ग प्रदेशके केश झड़ जाना (नेट्रम-म्यूर, जिङ्कम) जखमसे दुर्गन्ध मिला खून जाना। मसे, लिङ्गार्श और श्लेष्मागुटि (Warts Condylomata),—प्रमेह और उपदंश विषकी वजहसे उत्पन्न बड़ा, असम पृष्ठ और खोल भरा नोकदार (Pedunculated=थूजा) मसा ; धोनेके समय उससे खून निकलता है। दूसरे समय उससे रस बहा करता है—सुई बेधने जैसा उसमें दर्द (स्टैफ, थूजा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाहरी भाग जखम आदि कारणोंसे दर्द भरा (हिपर, मार्क)। ऋतु—बँधे समयके पहले ही हो जाता है ; अनियमित,—थोड़ा स्राव, कीचकी तरह ; पानी जैसा, प्रदेशसे योनितक सुई बेधने जैसा दर्द। प्रदर,—गाढ़ा और हरी आभा लिये श्लेष्मा ; कच्चा मांसके रङ्गका जखम पैदा करने वाला भूरा और बदबूदार स्राव। जरायुसे खूनका स्राव। प्रसवके अन्तका रक्त-स्राव (चमकीला लाल रङ्ग=सैबाइना ; गाढ़ा लाल रङ्ग=हैमा—प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ थक्का थक्का खूनका स्राव=कैमो ;—दुरारोग्य होनेपर=थ्लैस्पि)। जरायुका कर्कट रोग (Cancer Uteri) (आर्स, कोना, लैके, लाई, म्यूर, फास) ; अनियमित ऋतुके बीचके समयमें बहुत ज्यादा परिमाणमें, धुमैला और बदबूदार स्राव होना। जरायु ग्रीवामें उपमांस पैदा हो जाना।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्ग (सवेरे यदि बढ़ जाये=कास्टि ;; युपेटो-पर्फो। शामको बढ़े=कार्बो-वेज, फास)।

स्वरलोप ।—स्वरनाली और उदरके ऊपरी प्रदेशमें खुजलीकी वजहसे सूखी खाँसी (ऋतुके समय होनेपर—जेल्स ; उत्ताप लगकर

होनेपर—ऐण्टि-क्रूड ; स्वर सम्बन्धी पेशीकी क्रिया लोप हो जानेके कारण होनेपर—ऐसिड-आक्ज़ेलिक)। वक्षोस्थि (Sternum) के नीचे दर्द मालूम होना। ऊँचेपर चढ़नेपर श्वासकष्ट और दमा (आर्स ; कैल्के)। छातीमें पीव संचय होना,—बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा और पीव भरा थूक।

खाँसी।—सूखी,—पुरानी—स्वरनलीसे उत्पन्न खांसी—जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द, मानो स्वरनालीमें जखम हो गया है। (हमेशा एक ही पार्श्वपर आक्रमण होता है)।

पुरानी हँफनी खाँसी।—सूखी हो या कफ मिली हो, मलमें कड़ापनके साथ रातमें और सवेरे बढ़ जाती है। निद्रावस्थामें खांसी (कैमो)।

प्रत्यङ्गादि।—बदबूदार पैरका पसीना,—दर्द पैदा करनेवाला,—सुई वेधने जैसी तकलीफ ; पैरकी अँगुलीमें जाड़ेके फोड़े बवाई या पानी लगना (ऐगारिकस ; यदि इसका कारण औरतोंका ऋतु रुकना हो—पल्स)।

त्वचा।—जखम, सामान्य कारणोंसे हो उससे खून बहने लगना ; मुँहके कोनेमें (नेट्र-म्यूर) ; छूनेपर काँटा गड़ने जैसी तकलीफ (हिपर) ; टेढ़ी सीमावाला ; तलीमें कच्चे मांसकी तरह रङ्ग ; मांसाङ्कुर (Granulations) की अधिकता ;—श्लेष्मा-प्रधान धातुके साथ पारा या उपदंशविष मिल जानेसे उत्पन्न। स्राव,—पतला, बदबू, कटु ; रङ्ग भूरा या मैलके साथ पीलापन लिये हरा रङ्ग ; निर्दोष-पीव प्रायः नहीं दिखाई देता। जननेन्द्रिय और मलद्वार प्रदेशमें मसे, प्रमेह या उपदंश विषकी वजहसे लिङ्गार्श (Warts or Condylomata), बड़ा पीठ असम, नुकीला (सवृन्त-Pedunculated), धोनेके समय उससे सहजमें ही खून निकलना, खूनका स्राव करनेवाला, उसमें कांटा गड़ने जैसा दर्द (स्टैफ, थूजा, कास्टि, इयुफ्रेशिया)।

वृद्धि। (Aggravations)—सन्ध्या और रात्रिके समय। आधी रातके बाद ; छूने और सर्दी-गर्मीके परिवर्त्तनसे ; पसीना निकलनेके समय। (जागनेपर—लैके) ; टहलनेके समय।

घटना।—सवारी आदिमें भ्रमण करनेके समय (कक्यूलस विपरीत)।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—कैल्केरिया ; हिपर, मार्क, मेजेरियम, सलफर। अनुपूरक—आर्स ; कैलेडियम। लैकेसिससे इसका शत्रुता भाव है। विसूचिकाके आक्रमणमें—डरके सम्बन्धमें आर्सेनिकके सदृश है। पाराके

अपव्यवहारकी वजहसे बीमारीमें विशेष उपयोगी है ; डिजिटेलिसका बार-बार प्रयोगसे पैदा हुए रोगमें प्रतिषेधक रूपमें कार्य करता है।

कैल्केरिया, हिपर, मार्क्यूरियस नेट्रम-कार्ब ; पलसेटिला या थूजा वगैरहके बाद प्रयोग करनेपर, ज्यादा फायदा हुआ करता है, और कैलि-कार्बोनिकमके बाद यह आश्चर्यजनक रूपसे फायदा दिखाता है। (डा० एइच, सी, ऐलेन)।

शक्ति।—६ ठी से २०० शक्ति तक। पाराके विकारको नष्ट करने या घटानेके लिये २०० शक्तिसे बहुत लाभ दिखाई देता है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ६० दिन।

ऐसिड नाइट्रोम्यूरियैटिकम।

(ACIDUM NITRO-MURIATICUM)

दूसरा नाम।—ऐकोवा रिजिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—१८ भाग नाइट्रिक ऐसिड और ८२ भाग मियुऐसिडका सम्मिश्रण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है ;—गुह्यद्वारका सङ्कोचन ; कब्जियत ; अजीर्ण ; अश्मरी ; शीताद या मसूढ़ेसे रक्तस्राव ; रह रह कर लार बहना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—आकजैलूरिया (Oxaluria) नामक एक तरहकी पेशाबकी बीमारी (रेवत चीनी वगैरहसे एक तरहका द्रावक पैदा होता है, उसे आकजैलिक ऐसिड कहते हैं—जब पेशाबमें यह ऐसिड अधिक रहता है, उस समय उस रोगको आकजैलुरिया कहते हैं।) पित्तज अवस्था-विशेष, संकुचित मलद्वार और मूत्राश्मरी या मूत्ररेणु (पथरी-Gravel रोगादिमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

लक्षणावली

मुख-गह्वर।—गला हुआ मुखौष रोग अर्थात सड़नेवाला मुख-रोग (Cancrum Oris—मार्क-कोर, आर्स।) ; मुखगह्वर और जीभकी जड़में

छिछला (Superficial) जखम। धातव स्राव (क्यूप्रम)। मसूढ़ेसे सहजमें ही खून निकलने लगता है। मलस्राव—रातमें लगातार लार बहा करती है (मार्क)।

पाकाशय।—खट्टी डकार और पाकाशयमें भूख मालूम होना - खा लेनेपर भी यह भूख नहीं जाती। कलेजा हिलना या कलेजा धड़कना।

मलनाली।—कब्जियत—मलका कड़ापन और वृथा ही वेग। मलद्वारावरोधक पेशी (Sphincter ani) संकुचित। मलद्वारसे रस बहना या तर (Moist) रहना तथा दर्द।

पेशाब।—गदला। मूत्रनालीमें जलन मालूम होना। आकजैलुरिया (कैलि-फास)।

ज्वर।—निम्नाङ्गसे उर्द्धाङ्गतक कम्प होता है ;—बहुत पसीना।

शक्ति।—मूल अरिष्ट और निम्न क्रम।

एसिड आक्जैलिकम

(ACIDUM OXALICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रेवत चीनसे उत्पन्न एक तरहका विषैला द्रावक। इसका विचूर्ण बना करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है। डा० क्लार्क कहते हैं ;—वक्षका स्नायुशूल ; पीठमें दर्द ; वक्षकी बहुत बीमारियाँ ; बच्चोंकी विसूचिका ; आक्षेप ; हाथमें वातका दर्द ; बिछावनमें पेशाब कर देना ; आँखकी बीमारी , वातरक्त ; मूत्राश्मरी ; आँत उतरना ; अजीर्ण ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; मेरुमज्जाका प्रदाह ; स्नायुशूल ; नाककी बीमारी ; सुन्न हो जाना ; शुक्रनालीमें दर्द ; पाकाशयकी बीमारी ; धनुष्टङ्कार ; अण्डकोषकी बीमारी ; जीभकी बीमारियाँ ; मूत्रविकार ; स्वरविकार इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोग या दर्दके विषयमें सोचनेपर ही उसका बढ़ जाना—ऐसे विशेष लक्षण या रोग आदिमें यह विशेष उपकारी है। यह मेरुदण्डपर आक्रमण करता है और गति विधायिनी शक्तिको नष्ट करता है (Motor paralysis) ; शरीरमें जगह-जगह सीमित स्थानपर दर्द

होता है। (इग्ने ; कैलि-बाई); शरीरको हिलाने और दर्दके विषयमें सोचनेपर बढ़ता है (बैराई-कार्ब ; कैल्के-फास ; कास्टि ; हेलोन ; स्यूर ; आक्साइड्रोप ; पेट्रोल)। गलनाली और वक्षके भीतर आक्षेपिक लक्षण आदि। स्नायविक सुस्ती (Neurasthenia) पैदा कर देता है।

लक्षणावली

मन।—मनःसंयोगकी शक्तिका न रहना ; अत्यन्त फुर्त्ती ; कोई भी बात मनमें आते ही तुरन्त कर डालता है ; किसी बीमारीके विषयमें सोचते ही उसका तुरन्त पैदा हो जाना (बैराइटा ; कैल्के-फास ; कास्टिकम ; हेलोन ; स्यूर ; आक्साइड्रोपिस ; पेट्रोलियम)।

मस्तक।—सरमें चक्कर—खिड़कीसे मुँह निकालकर देखनेपर और आसनसे उठनेपर सरमें चक्कर आना। सोनेपर ऐसा मालूम होना कि मानो उड़ा जा रहा है। ऐसा दबाव मालूम होना मानो प्रत्येक कानके पीछे पेंच (स्क्रू) कसा जा रहा है ; गर्मी मालूम होना। पाखाना होनेके पहले और समयपर सरमें दर्द। (पाखाना हो जानेपर—कार्बो-सल्फ़, इग्ने)।

आँख।—आँखकी पुतलीमें बहुत दर्द और फैली-सी मालूम होना। रेटिना या अक्षिमुकुरमें चैतन्याधिक्य (Hyperaesthesia)। समरेखाके भावमें अवस्थित (Linear) द्रव्य बड़े मालूम होते हैं और दूर मालूम होते हैं।

पाकाशय।—ऊपरकी ओर उठनेवाली जलन ; पाकाशय-प्रदेशको छूनेसे असह्य दर्द मालूम होता है।

अन्त्राशय।—यकृतमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, शूलका दर्द। किसी सीमाबद्ध स्थानमें जलन मालूम होना। उदरामय—बार-बार आप-ही-आप अनजानमें पाखाना हो जाना ;—समूचे अन्त्राशयमें एकाएक तकलीफ़ पैदा हो जाना और अच्छा न मालूम होना। ऐसा मालूम होना मानो नाभि-प्रदेशको कोई मरोड़ रहा है। नीचेकी ओर वेग ; गाढ़ा, गदला और बहुत अधिक परिमाणमें मल—सवेरे छः बजनेके समय वृद्धि ; काफी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आना।

पुं०-जननेन्द्रिय और पेशाब।—रेतःरज्जु, या शुक्रवाहीनली (Spermatic cord) में असह्य स्नायुशूल (Neuralgia) ; दोनों कोष

(Testes) मानो निष्पेषित और भारयुक्त मालूम होते हैं। पेशाबकी बात याद आते ही पेशाब लग जाता है।

श्वास-यंत्र।—बाएँ फेफड़ेमें अस्त्रकी चोट जैसा दर्द—श्वासरोध करनेवाली यन्त्रणा। बाएँ फेफड़ेकी तलीमें खूनका इकट्ठा होना और प्रदाह। गलनाली और वक्षके भीतर संकोचनके साथ अकड़न-भरा श्वास प्रश्वास। स्वरभङ्ग; स्वर लोप; स्वरोत्पादक तन्त्रा (स्वरयंत्र—Vocal Cord) की क्रियाका न होना पक्षाघात (Paralysis)।

हृत्पिण्ड।—हृत्शूल—हृत्पिण्ड और बाएँ फ़ेफड़ेमें तेज़ अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द—यह उदरके ऊपरतक फैल जाता है। पीठका सुन्न और क्षीण जैसा मालूम होना; दोनों पैर बरफ जैसे ठण्डे और उनकी क्रियाशक्तिका न रहना। क्षणभरके लिये कष्टसाध्य श्वास-प्रश्वास,—मानो रह-रहकर रोगी अपनी असह्य यन्त्रणा घटानेके लिये फेफड़ेमें भरी सम्पूर्ण वायु निकाल डालनेकी चेष्टा करता है। दोनों बाहुओंमें तेज़ कतरनेकी तरह दर्द मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—सुन्न, क्षीण और दर्दभरे। मेरुदण्डमें दर्द पैदा होकर हाथ-पैरमें फैल जाता है—सिकुड़न और कतरनेकी तरह दर्द। पैशिक अवसाद (Muscular Prostation)। कलाईमें दर्द—मानो चोट लगी है (अलमस) मस्तिष्कमें मेरुमज्जीय आवरण-प्रदाह (Spinal Meningitis) रोगाधिकारमें दोनों पैर अकड़कर क्रियाहीन हो जाते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—क्रियोजोट; फास-एसिड; पल्स; सल्फ;—आर्स; कोल्चि; आर्जेण्टम; एसिड पिक्रिक।

दोषघ्न।—कार्बोनेट आव लाइम और मैग्नेशिया।

शक्ति।—६ से ३० शक्तितक।

ऐसिड फास्फोरिकम

(ACIDUM PHOSPHORICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—महात्मा हैनिमैनके मतसे—कैल्केरिया मिली हड्डीमें सल्फ्युरिक एसिडकी सम्मिलित क्रियासे इसकी उत्पत्ति होती है।

वि० फा० के मतसे नाइट्रिक एसिड और फास्फोरसकी सम्मिलित क्रियासे यह उत्पन्न होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—क्षीण दृष्टि; दमा; मस्तिष्ककी दुर्बलता; उपदंश; श्वासनालीका प्रदाह; हैजा; गट्ठे; खाँसी; कटि-स्नायुशूल; दुर्बलता; बहुमूत्र; अतिसार; अजीर्ण; शुक्रक्षय; आह्निक ज्वर; शय्यामें पेशाब; पेट फूलना; वातरक्त; मूत्राश्मरी; केश झड़ना; सर-दर्द; क्षय-ज्वर; वंक्षण सन्धिकी बीमारी; ध्वजभङ्ग; गण्डमालाका दोष; सन्धियोंकी बीमारी; स्तनमें विकार; गर्भिणीका उदरामय; नकली मैथुन और प्रणय भङ्ग हो जानेका परिणाम; मानसिक विकार; पारा और उपदंशका विकार; कामोन्माद; बहुत पसीना; पेशाबमें फास्फेट प्रभृति; लिङ्गको ढकनेवाली त्वचामें मसे; सूतिकाक्षेप; वात; झुनझुनीवाला वात; सान्निपातिक ज्वर; क्षत रोग; जरायुमें विकार; सरमें चक्कर आना; कृमि इत्यादि।

उपयोगी धातु।—रस रक्तका क्षय होना, बहुत अधिक इन्द्रिय सेवन, कड़ी नयी बीमारीके बादकी बीमारी और मनःक्षोभ, दुःख, शोक और प्रणय भङ्ग हो जानेके कारण जिनका शरीर और मन सुस्त पड़ गया हो, उनके लिये उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—कोमल, आत्मसमर्पण करनेवाली प्रकृति। जिन बच्चोंको पतले दस्त आया करते हैं और वे अच्छी तरह चल नहीं सकते, अकालवार्द्धक्य अर्थात् जो शिशु और थोड़ी उम्रवाले बालक जल्दी जल्दी बढ़ जाते हैं (जल्दी मोटे होते हैं=केल्के; दुबले हुए जाते हैं=आर्स; बेराइटा; फास)। अस्थि-वेष्टनी त्वचा (Periosteum) को मानो कोई छुरीसे छील रहा है, इस तरहका दर्द होना (रास-टक्स), आराम करनेपर दर्दका बढ़ना और शरीरको हिलाते रहनेपर घटना (डलका; कैलि-का; रास-टक्स; विश्रामसे घटना और शरीर हिलानेपर बढ़ना—ऐकोन; ब्राई; हिपर; मार्क)। नश्तर लगाये हुए अङ्गका स्नायुशूल और स्नायविक रोग। अस्थिर चित्त, सकरुण भाव इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—मृदु और कोमल स्वभाव (इग्ने, पल्स); गृहस्थीके विषयमें हो या और जिस किसी दूसरे विषयमें जिसमें पहले बहुत अनुराग था,

उन सभी विषयोंमें उदासीनता। शोकसे भरा हुआ और सुस्त (खासकर इसके साथ यदि शारीरिक दुर्बलता और दुबलापन भी मिला रहे= सिनकोना ; लाइको, मार्क ; सिपिया), बातचीतकी इच्छा न होना (बेल ; कोनायम ; इग्ने ; ऐसिड-नाई); गुम और दुखित भाव (इग्ने ; पल्स)। म्रियमाण और भविष्यकी चिन्तामें भरा हुआ (लाइको ; नेट्रम-म्यू ; एसिड-नाई)। स्मरणशक्तिका घट जाना (ऐनाका)। मन स्थिर नहीं रह सकता ; अपने भाव प्रकट करनेवाले वाक्य याद नहीं कर सकता। प्रलाप, निरर्थक, अस्पष्ट शब्दोंमें बताना ; मोहमें पड़ा हुआ है, ऐसी नींद ; रोगी अपने सामनेकी घटना भी समझ नहीं सकता ; सुषुप्ति दूर होनेपर एकदम होशमें रहने जैसा बोलता है और कोई बात पूछनेपर धीरे-धीरे सम्बद्ध भावसे ठीक-ठीक उत्तर देता है और फिर बेहोश जैसा हो जाता है (आर्निका—जवाब खतम करनेके पहले ही सो जाता है—बैप्टी ; बुद्धि मलिन रहनेपर भी ठीक-ठीक उत्तर देता है—कोलचि ; काक्यू ; आइरिस-वार्सि ; प्लम्बम)।

कान।—श्रवणशक्तिमें गड़बड़ी और कर्ण-विवरमें गड़गड़ शब्द, आन्त्रिक या सान्निपातिक (मोतीझरा) ज्वरके बाद स्नायविक (Nervous) बहरापन।

मस्तक।—सरमें दर्द—खोपड़ी-मूर्द्धदेशमें (Vertex) चूर करने जैसा भार मालूम होना। बहुत दिनोंके शोक या स्नायविक अवसादसे पैदा हुई बीमारियाँ ; पश्चाद्देश (माथेका पिछला भाग) और ग्रीवापृष्ठ (गर्दनके पीछे) में ; इसकी गति साधारणतः पीछेकी ओरसे सामनेकी ओर रहती है ;—वृद्धि = थोड़ा भी हिलानेसे या किसी तरहकी आवाजसे ; विशेषकर गाने-बजानेकी आवाजसे। सोनेके बाद (ब्राई, जेल्स, सिलि) घटना। पढ़नेवाली बालिकाओंका सर-दर्द—आँखोंसे बहुत काम लेने या अपव्यवहारकी वजहसे (कैल्के-फास ; नेट्रम-मूर) ; बच्चोंका सर दर्द, पढ़नेके समय दर्द पैदा हो जाना (तेजीसे और जल्दी बढ़नेवाले बालकोंको ही ऐसा दर्द होता है)। थोड़ी उम्रमें ही केश पक जाते हैं या उड़ जाते हैं, वमनके बाद धीमा सरका दर्द।

कानका दर्द।—सुई बेधनेकी तरह दर्द, गाल तथा दाँतोंतक संकोचन मालूम होना ; सङ्गीतकी आवाजसे बढ़ जाना। सङ्गीत असह्य (लाइको, फास, सल्फ)।

आँख।—प्रदाह और ऊपरी पलकमें **गुहौरी** (Styes = लाइको, पल्स,—निचली पलकमें = रास्टक्स), बहुत चमकीली चीज देखनेपर आँख झिलमिलाने लगती है। दोनों आँखोंके चारों ओर नीला घेरा। पलकके भीतर ठण्डक मालूम होना (ऐल्यू, आर्ज-नाई, कैलि-कार्ब); आँखका गोला बड़ा मालूम होना। दृष्टिकी मलिनता (Amblyopia) से उसकी उत्पत्ति होना, पलकोंकी बगलमें सूजन, लाली ; बरुनी उड़ जाती है और उसमें पीवके कण-से चिपटे रहते हैं।

नाक।—नाकसे रक्तका स्राव होना। नाककी छेदको अंगुली डाल कर खोंटता रहता है (सिना ; खोंट-खोंटकर खून निकाल डालता है—अरम)।

मुखमण्डल या मुख-विवर।—मुखमण्डल रक्त-शून्य, मैला और पीले रंगका चेहरा, मानो उसपरकी लसदार चीज सूख गयी है (मैग-कार्ब) सामनेवाले दाँतमें रातमें जलन मालूम होना, गर्म या ठण्डा पानीय पीनेपर घटना। सब मसूढ़े दाँतसे अलग हो जाते हैं। मसूढ़े दर्द-भरे और उन्हें मलनेपर उनसे खून बहता है (कार्बो-वेज, मार्क, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम ; मसूढ़ेमें शीताद रोग (Scorbutic) ; मसूढ़ा = ऐमोन-कार्ब, क्रियो, ऐसिड-म्यूर)। लसदार लेईकी तरह श्लेष्मासे ढका मुखगह्वर और जीभ (मार्क, नक्स-मस, पल्स ; साफ काली आभा लिये जीभ = आर्स, लेके, लाइको, मर्क) जीभ और गलनाली सूखी, पर प्यासका न होना (बेल, नक्स-मस; प्यास-भरी = ऐसिड-नाई, ब्राई, फास)।

पाकस्थली और अन्नाशय।—मिचली, यह मानो तालुसे पैदा होती है। तर या रसभरी चीजें खानेकी इच्छा (वेरेट्रम); रोटी बेस्वाद मालूम होती है (सभी खाद्य बेस्वाद मालूम होते हैं = ब्राई, कोलो, पल्स)। ऐसा मालूम होता है मानो पाकाशयमें कोई भारी चीज है और उसके साथ ही औंघाई (आर्स, ब्राई, नक्स, पल्स, सिपिया); पाकाशय मानो शून्यमें हिल रहा है। (पाकाशय मानो शिथिल और झूल पड़ता है = आर्ज-नाई, स्टाफ—मानो एक जन्तु हिलता है = कैनाब-सैट, क्रोकस, लेके, थूजा, सैबाई, सल्फ—मानो पानीमें तैर रहा है = ऐब्रोट)। यकृत प्रदेशमें भार मालूम होना (पोडो देखो)। प्लीहाका बढ़ना (सियानो)।

मल।—विसूचिका रोग (हैजा) जिस समय फैला हुआ हो, उसके पहलेका उदरामय (पतले दस्त आना) [फास, सिकेलि, वेरेट्रम]; मल बहुत

ज्यादा परिमाणमें; बिना तकलीफके पाखाना होता है (रास-बेन, कैस्टोरि फास, पोडो; काला मल = कैम्फो, सिङ्कोना, लेप, वेरेट्रम)—सुस्ती न आये (बहुत सुस्ती लानेवाला = आर्स, सिङ्को, सिकेलि, वेरेट्र); सफेद या हरी आभा लिये और पानीकी तरह पतला; अम्लकी वजहसे; वायु निकलनेके समय आप-ही-आप मल निकल जाता है (एलो, नेट्रम-म्यूर); विसूचिकाके भयकी वजहसे बीमारियाँ और विसूचिकाके मलकी तरह पाखाना होना।

पेशाब।—पेशाब दूधकी तरह और लारकी तरह खून मिला पेशाब, वह तुरन्त बिगड़ जाता है; रातमें चुआये हुए पानीकी तरह बहुत ज्यादा पेशाब होना और पेशाब होते ही वह सफेद हो जाता है। मधुमेह (Diabetes Mellitus = आर्जेण्ट-नाई; बोविष्ट; ड्रिल्-पि)।

पुं-जननेन्द्रिय।—हस्तमैथुन—जब रोगी अपनी कुप्रवृत्तिके कारण ज्ञानहीन जैसा हो जाता है। रेतःस्खलन—बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें वीर्यस्खलन और इससे कमजोरी आ जाती है; रमणके बाद और वीर्यस्खलनके अन्तमें बहुत ज्यादा मिचली; रातभरमें कई बार वीर्यस्खलन; रोगी लजालु, म्रियमाण और अपने आरोग्य होनेके सम्बन्धमें निराश रहता है (हस्त-मैथुन करनेकी अनिवार्य इच्छा = आस्टिलेगो)। शुक्राधारका प्रदाह (एसिड-आक्जैलिक)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—नियमित समयके बहुत पहले और परिमाणमें अधिक ऋतुका स्राव होना; इसके साथ ही यकृतमें दर्द; यह ऋतुका स्राव बहुत दिनोंतक जारी रहता है; जरायुमें जखम,—बहुत ज्यादा बदबूदार खून-भरा स्राव, खुजली और जखमकी तरह दर्द मालूम होना (हिपर, सिकेलि, जिङ्कम)। आर्त्तवके बाद पीले रङ्गका प्रदरका स्राव।

श्वासयंत्र।—बातचीतमें या खाँसनेपर छातीके भीतर कमजोरी मालूम होना (स्टैनम); यक्ष्मा रोगमें स्नायविक दुर्बलता—जीवनी-शक्ति देनेवाले रस आदिका चय हो जानेके कारण या जल्दी-जल्दी बढ़नेकी वजहसे और शोक आदिसे उत्पन्न सुस्ती लानेवाली बीमारियाँ। गलनालीमें दर्द और स्वरभङ्ग (कार्बो-ऐनिमेलिस, फास)। गलनाली और उदरके ऊपरी भागमें खुजलीकी वजहसे खाँसी; सवेरेके सिवा और किसी समय कफ नहीं निकलता (मैग-कार्ब, नक्स, पल्स, सिपि—केवल रातमें कफ निकलता

है=कास्टि, स्टैफि ; स्वरबद्धता (आवाज रुकना) के साथ जोरकी आवाजके साथ खाँसी=बेल, ड्रोसे, ऐसिड-नाई, बार्वेस्कम)।

अस्थि और प्रत्यङ्ग आदि।—हड्डी आदिके भीतरी पदार्थका प्रदाह, प्रमेह-विष, उपदंश विष या पाराके दोषसे पैदा हुआ अस्थि-वेष्ट (Periosteum) का प्रदाह—जलन और छेदने-जैसी तकलीफ, मानो अस्त्रसे छीला (Scraped) जाता है (रासटक्स) ; अस्थिक्षत (बेसिलिन ; मांसहीन दुर्बल शिशुको होनेपर=सिलि ; मोटे-ताजे लड़केको=कैल्केरिया ; उपदंश विषसे दूषित मनुष्योंको=ऐसिड-फ्लू ; कफ प्रधान धातु=सिलि ; क्षय हुई हड्डी=फास ; दीर्घास्थिका होनेपर—ऐङ्गस्टियुरा). **बालास्थिविकृति** (Rachitis) कोमल तन्तुवाले मोटे-ताजे बच्चेको=कैल्के-फास ; मांसहीन शिशुको=आर्स ; मांसहीन माथे और पेरमें पसीना होनेवाले बच्चेको=सिलि ; क्षयशील—बेसिलिन, फास) ; क्रमसे बढ़नेवाली तकलीफ। कटी हुई अंगुलीके कटे हुए अगले भागमें दर्द—श्वास-प्रश्वाससे बढ़ना ; नश्तर लगवानेके बाद कटे हुए प्रत्यङ्गमें दर्द (सिपा)। रातमें दर्द बढ़ जाना। सहजमें ही पैर फिसल जाता है।

त्वचा।—फुन्सियाँ, व्रण और लाल फोड़ा ; बदबूदार पीव बहनेवाला जखम ; आरक्त ज्वरके दानोंकी तरह दाने निकलना (Exanthema=ऐमोन कार्ब, बेल ; काले मसूरकी तरह=आर्स, रास)। शरीरमें सब जगह ददोरे (Rash) ;—खुजलीकी अपेक्षा जलन ज्यादा होती है। कितने ही स्थानोंमें खुजली। टाक पड़ना या केश झड़ जाना (कैलि-कार्ब, ऐ-फ्ल, नेट्रम-मूर, सेलिन)। ज्वरके बाद त्वचामें फोड़े निकलनेका लक्षण।

ज्वर आदि।—सविराम ज्वर, शामके समय कँपकँपी जैसा शीत, सब अँगुलियाँ बरफ जैसी ठण्डी हो जाती हैं, प्यास नहीं रहती ; उत्तापावस्था—प्यास न रहना ;—बहुत अधिक उत्तापके कारण रोगी बेहोश हो जाता है। भीतरी ताप बहुत ज्याद। सवेरे और रातमें बहुत पसीना (सिङ्कोना ; ऐसिड-सल्फ—कमजोरी और सुस्ती लानेवाला रातका पसीना=कैल्के, मार्क, सिलि, स्टैन) ; मस्तिष्कमें विकारके साथ आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वर (Typhus) ; बेहोशी और मूर्च्छा जैसा भाव ; ज्ञान न रहना ; "काठके टुकड़ेकी तरह पड़ा रहता है"—कौन क्या कर रहा है, इसपर बिलकुल ही ध्यान नहीं ; आँतोंसे रक्तस्राव—रक्तका रङ्ग—घोर लाल।

नींद।—दिनमें औंघाई और रातमें नींद। बहुत भूख लगकर जाग उठता है (लाइ); ऐसा मालूम हो मानो गिरा जाता है, विषादजनक भावना। कामोद्रेक पैदा करनेवाले सपने और स्वप्नमें वीर्यपात।

सम्बन्ध।—क्लार्कका मत ;—**दोषघ्न।**—कैम्फर, काफिया, स्टैफिसेग्रिया। इसके बाद आर्स, बेलाड, कास्टिक, लाइको, नक्स, पल्स, सिपिया, सलफर इत्यादि अच्छा काम करते हैं।

तुलनीय।—शोकके सम्बन्धमें इग्ने ; अत्यधिक बढ़ना—बौरक्स ; सान्निपातिक अवस्थामें—रासटक्स, सिना, फास्फोरस, आर्निका, ओपियम ; अतिसारमें रस-रक्त क्षय होनेपर चायना ; गुटिका-संचय—फास्फो ; बहुमूत्र—लैक्टि-ऐसिड ; मिचली—कोलचि। मस्तिष्क, मेरुमज्जाका अवसाद—पिकरिक ऐसिड। सुन्न-भाव—मूरियैटिक ऐसिड ; कोमल स्वभाव—पल्स। खाँसनेके समय पेशाब हो जाना—कास्टिक, नेट्रम इत्यादि।

वृद्धि।—मानसिक विकार, जीवनी-शक्ति देनेवाले रसोंका क्षय, खासकर वीर्यनाश, इन्द्रिय आदिका अपव्यवहार ; अन्याय या अपरिमित रति वगैरहसे बढ़ना ; बोलने चालनेसे फेफड़ेकी कमजोरी बढ़ जाती है (स्टैनम)।

घटना।—संचालनसे और कभी-कभी दबानेपर साधारणतः दर्द घट जाता है।

शक्ति।—१ म, दशमिक, १८, ३० और २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—४० दिन।

ऐसिड पिक्रिक

(ACIDUM PICRICUM)

नामान्तर।—ट्राइ-नाइट्रो-कार्बोलिक ऐसिड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह विचूर्ण और तरल दोनों ही आकारोंमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह दवा भग्न-स्वास्थ्य मनुष्योंके शरीरपर संजीवनी सुधाकी तरह काम करती है और स्पष्ट स्नायविक अवसाद

लाती है, इसीलिये उसे अच्छा कर देती है। क्रमसे बढ़नेवाली और विषसे दूषित रक्तहीनता (Progressive Pernicious Anæmia) और पूर्ण स्नायविक अवसादको दूर करता है (एसिड आकजेलिक)। मेरुमज्जाका बिगड़ना (Degeneration) और पक्षाघात बतानेवानी अवस्था। पेशियोंकी क्षीणता। बहुत लिखनेवालोंका पक्षाघात। मस्तिष्कका अवसाद (Brain fag) इसका निर्देशक लक्षण है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासे ; रक्तभरे फोड़े ; मस्तिष्ककी दुर्बलता ; दाह ; बहुमूत्र ; रेतःक्षरण ; अर्श ; पेशाब होना ; नाकसे खून जाना ; विद्यार्थियोंके सरका दर्द ; पक्षाघात ; कमरका दर्द ; यकृतकी बीमारी ; मेरुमज्जाका अवसाद ; कर्ण-प्रदाह ; नकली मैथुनसे पैदा हुए उपसर्ग ; मसे ; लिखनेवालोंका हाथ काँपना इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—अनमना—किसी विषयमें मन नहीं लगता ; इच्छा-शक्तिका घटना। किसी कार्यमें हस्तक्षेप नहीं किया चाहता, थोड़े अध्ययनसे भी मेरुदण्डमें जलन मालूम होती है।

मस्तक और मस्तिष्क।—मस्तिष्कका अवसाद,—साहित्यका अध्ययन करनेवाले या विषय काम-काजमें लगे रहनेवालोंका। सरका दर्द और मेरुमज्जाका प्रदाह या जलन पैदा हो जाती है (कैलि-फास Brain-fag = इथ्यूजा ; ऐनाकार्ड ; कैल्के-फास, सिलि); **सरमें दर्द**—विद्यार्थी, शिक्षक और हमेशा काम-काजमें लगे रहनेवाले मनुष्यका ; शोक या मानसिक अवसादकी वजहसे सरमें दर्द ;—गर्दनके पीछे और माथेके पिछले भागमें दर्द (नेट्रम-म्यू, सिलि) थोड़ा भी अंग हिलाने या माननिक परिश्रमसे बढ़ जाता है, कसकर बाँधनेसे घटता है। सरमें चक्कर आना और कानमें आवाज़ होना। गर्दनकी पीठपर और कानके छेदमें फोड़ा। बहुत दिनोंतक मानसिक परिश्रमके बादमें असफल होनेका भय और उत्सुकता।

पाकाशय।—मुँहका स्वाद कड़वा और भोजनसे अरुचि।

पुं०-जननेन्द्रिय।—मेरुदण्डकी बीमारीके साथ लिङ्गोद्गम—बहुत ज्यादा और दीर्घ कालतक स्थायी। लिङ्गोच्छ्वास—बहुत ज्यादा परिमाणमें वीर्य-स्खलन ; कामोन्माद (Satyriasis = कैन्थ, फास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाएँ डिम्बाधारमें दर्द ; ऋतुके समय पीला भूरा प्रदरका स्राव ; योनि-पार्श्वमें खुजली ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दुर्बलता मालूम होना—शरीरके हिलानेपर साधारण क्लान्ति मालूम होनेसे लेकर सारे शरीरका पक्षाघाततक हो सकता है। मेरुदण्डकी क्षीणता (ऐ-आक्जे) और उसमें जलन मालूम होना ; मेरुमज्जाका पतलापन (फास, जिङ्कम)। सारे शरीरमें भार मालूम होना, खासकर प्रत्यङ्गोंमें ; परिश्रमसे बढ़ना ।

वृद्धि ।—सामान्य परिश्रमसे, विशेषकर मानसिक ; नींदके बाद और पानीभरी तर हवामें ।

घटना ।—ठण्डी हवा और पानीमें ; कसकर बांधनेपर ।

सम्बन्ध ।—ऐसिड-पिक्रिकके साथ जेल्स. ऐसिड-फास, फास, आर्जेण्ट-नाई, सलफर, ऐल्यूमिना और साइलिसियासे तुलना करनी चाहिये ; क्योंकि ये कई दवाएँ मस्तिष्क मेरुमज्जा और समस्त स्नायु-विधानपर आक्रमण किया करती है (नैश)। मेरु-सम्बन्धी अवसाद—आक्स-ऐसिड ; इन्द्रिय-परिचालनकी वजहसे कमजोरी—फास-ऐसिड ; मस्तिष्कमें क्लान्ति—जेल्स सरमें दर्द ;—आर्जेण्ट-नाई, प्रवल लिङ्गोद्रेक—कैन्थ इत्यादि ।

शक्ति ।—३ रीसे २०० तक ।

ऐसिड सैलिसिलिक

(ACIDUM SALYCYLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह कार्बोलिक और फेनलसे तैयार हुआ करता है। विचूर्ण और अरिष्ट दोनों तरहसे ही तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अस्थि-क्षय रोग ; वयःसन्धिके समयकी बीमारी ; सर्दी ; उदरामय ; अजीर्ण ; आध्मान ; पैरका पसीना रुकना ; पाकाशयका प्रदाह ; वात ; सन्धिवात ; गृध्रसी या झुनझुनीवाला वात ; मुँहमें जखम ; सूतिका ज्वर ; आँखोंके ताराका प्रदाह इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—इसकी लक्षणावलीपर ध्यान देनेसे मालूम होता है, कि अजीर्ण रोग, वात रोग और श्रवणेन्द्रियके विकारके कारण सरमें चक्कर आना रोगमें (चिनिन-सल्फ़, लैके, थिरिड) और बहुव्यापक सर्दी इन्फ्लुएञ्जा रोगके बाद जो कमजोरी आ जाती है, उसमें इससे बहुत लाभ होता है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; बाईं ओर गिर जानेकी सम्भावना (ऐसिड-बेन, सरमें दर्द); एकाएक शय्यासे उठनेपर मस्तिष्कमें दुर्बलता मालूम होना। सर्दीकी पूर्वावस्था। कनपटी या कपालमें बेधने-जैसा दर्द। कानके छेदमें भनभन, कनकन आवाज़; बहरापनके साथ सरमें चक्कर आना।

गलनाली और पाकाशय।—गलनालीमें दर्द, लाली और सूजन। गलकोष-प्रदाह (Pharyngitis), निगलनेमें दर्द मालूम होना; सड़नेवाला मुख रोग (Cancrum Oris—ऐसिड म्यूर, मर्क, आर्स); जलनकी तरह दर्द और बदबू। उदराध्मान (पेट फूलना); गर्म और खट्टा वायु निकलना। पूति-जनक उत्सेचन (Fermentation), उत्सेचनके साथ अजीर्ण रोग। जीभका रङ्ग बैंगनी या सीसाकी आभा लिये (रैफेनस, हाइड्रैस्ट, ओपि, स्ट्रोक—सीसेकी आभा—आर्स, कार्बो-वेज, सिकेल)।

मल।—सड़ी गन्ध लिये पतले दस्त; मल हरा काईकी तरह (मैग कार्ब)।

प्रत्यङ्गादि।—दोनों जानु फूले और दर्द-भरे। तेज़ सन्धिवात—छूने और हिलानेसे बढ़ना; पसीना अधिक होना। जगह बदलनेवाला दर्द (पल्स लैक-कैन), कटि-स्नायुशूल (Sciatica—कैलो, नैफि, ऐमोन-म्यूर, मैग-फास), जलनकी तरह दर्द, रातमें बढ़ना। तलवेमें पसीना।

त्वचा।—खुजलानेवाले रस-भरे दाने और पीब-भरी फुन्सियाँ, खुजलानेपर घटना। अनिद्राके साथ पसीना होना (जागनेकी अवस्थामें पसीना—सैम्बियु; आँख बन्द करनेपर पसीना—सिङ्कोना, कोनायम)। आमवात (आर्टिका युरेन्स, ऐपिस); त्वचा गर्म और जलन-भरी (यह दवा अधिक पीब होना बन्द कर देती है—कैल्के-हाइपो; यह सड़ना रोकनेवाली एक बढ़िया दवा है)। व्रण या गट्ठे—उसका छूना असह्य, बहुत दर्द करनेवाले और जलन-भरे (फेरम-फास, ऐसिड-लैक्टिक)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—वातमें—कोलचि, सिङ्कोना ; पैरमें पसीना—साइलि ; वाचाल भाव—लैकेसिस, एसिड-लैक्टिक ।

शक्ति ।—२ रीसे ६ठीं दशमिक विचूर्ण या ३० वाँ क्रम ।

एसिड सल्फ्यूरिकम

(ACIDUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—गन्धकका तेजाब ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—महात्मा हैनिमैनने काँचके रिटर्टमें इसे तैयार करनेके लिये कहा है ; यह सलफरसे पैदा होता है ।

सतर्कता ।—एसिड-सल्फ्यूरोससे इसका भ्रम न होना चाहिये या यह सल्फ-एसिड भाफ़से उत्पन्न होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—डाक्टर क्लार्कका मत—अम्ल रोग, शराब पीनेका खराब फल । मुँहका घाव ; मस्तिष्कका संघात, कैन्सर, मुँहका सड़ा जखम ; स्त्रियोंकी वयःसन्धिकालकी बीमारियाँ, कब्जियत, बहुमूत्र, अतिसार, डिफ्थीरिया, अजीर्ण, सड़नेवाले जखम, पाकाशयका शूल, जीभका प्रदाह, केश झड़ जाना; आँतोंका बढ़ना या हटना, हिचकी, ध्वजभङ्ग, सविराम ज्वर, यकृतकी बीमारी, सीसाका काम करनेकी वजहसे पक्षाघात, अधिक पसीना होना, क्षय-कास, फेफड़ेका प्रदाह, गर्भिणीकी बीमारी, वात, प्लीहाकी बीमारी, बन्ध्यात्व (बाँझपन), जरायु और अपत्य-पथका हटना, मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—थोड़े केशवाले मनुष्य, वृद्धगण, खासकर स्त्रियाँ—इनपर इस दवाकी बहुत उत्तम क्रिया होती है । स्त्रियोंकी वयःसन्धिके समय रह-रहकर क्षण-क्षणमें उत्ताप मालूम होना, इससे पैदा हुआ दर्द, भोथरे शस्त्रसे चोट पहुँचाने जैसा होता है, दबाव मालूम होना—धीरे-धीरे बढ़नेवाला दर्द और भरपूर बढ़ जानेपर एकाएक बन्द हो जाना (पल्स) और बार-बार उस दर्दका पैदा होना । किसी भी जगह चोट लगनेपर खासकर वृद्ध मनुष्योंको, उस स्थानका सड़ना, देहके किसी गभीर प्रदेशमें छिपे हुए किसी विशेष विष या धातु-विकारकी वजहसे बहुत क्षीणता मालूम

होना—देहके दूसरे द्वारसे काले रङ्गका खूनका स्राव होना (क्रोटेलस, ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-नाई, टेरिबि); उदरमें शिथिलता मालूम होनेके साथ नशीली चीजें खाने-पीनेकी इच्छा। नशीले पदार्थ सेवन करनेवालोंका चीणतासे उत्पन्न कम्पन, प्रकृत कम्पन न रहनेपर भी समूची देहमें कम्पन मालूम होना।

लक्षणावली

मन।—असहिष्णु; प्रश्नका उत्तर नहीं देना चाहता—ताक़तका न रहनेके कारण, आवाध्यताकी वजहसे नहीं, हमेशा घबड़ाया हुआ जल्दबाज; सभी काम बहुत तेजीसे करना चाहता है (अर्जेण्ट नाई)।

मस्तक और मस्तिष्क।—मस्तिष्कका सामनेवाला भाग मानो उठा हुआ है और ऐसा मालूम होना कि एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व तक घूमता-फिरता है (बेल, ब्राई, रास, स्पाइजि)। सरमें दर्द, मानो एक सलाई तेजीसे और क्रमवर्द्धनशील आघातके द्वारा शिरामें घुसती जा रही है; दर्द क्रमसे बढ़कर एकाएक गायब हो जाता है। दाहिनी ओरका स्नायु-शूल (Neuralgia); तकलीफ देनेवाला आघात मालूम होना; त्वचा मानो नखसे खरोंची जा रही है। गिरने या चोटकी वजहसे मस्तिष्ककी विकृति या संघात (Concussion of Brain); शरीरकी त्वचा बरफकी तरह और शरीर ठण्डे पसीनेसे भरा हुआ। सरके पीछेके पार्श्व-देशमें पीसने जैसा दर्द, माथेके पास हाथ रखनेपर घटना।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—निचला हनु, दाहिना कपाल या कनपटीका स्नायुशूल—रातके ८ बजेसे आरम्भ, रोगवाली करवट सोने या गर्म प्रयोग करनेपर घटना (मैग-फास), धीरे-धीरे बढ़कर गायब हो जाता है। मुँहका जख्म—मुख-गह्वर अर्थात मसूढ़ा और समूचे गलेके भीतरी भागमें बीमारी पैदा हो जाना। मसूढ़ेसे सामान्य कारणसे ही खून जाने लगना; जख्ममें बहुत दर्द, मुँहमें बदबू (बोरैक्स, ऐसिड-म्यूर)।

आँख।—चोटकी वजहसे सफेद अंशके स्वच्छावरक (Cornea) के भीतर रक्त-स्राव; आँखके योजकत्व (Conjunctiva) की सूजन, उसमें तकलीफ और तेज़ दर्द।

पाकाशय।—पुरानी कलेजेकी जलन (Heart-burn) रोग—खट्टी डकारसे दाँततक खट्टे हो जाते हैं। (रोबिनिया), पाकाशयमें शिथिलता

मालूम होना और शराब पीनेकी इच्छा। खट्टे पदार्थका वमन। ताजे पदार्थ खानेकी इच्छा। हिचकी (आक्षेपिक हिचकी—मस्कस; सामान्य—नक्स या उसके बाद साइक्लामेन; खाने-पीनेके बाद—इग्नेशिया; उसके साथ आक्षेप और डकार आना—इथूजा; मलेरियाके आक्रमणमें—नेट्रम-म्यूर; दुर्निवार्य—एसिड-हाइड्रो या एसि-सल्फ; स्वादहीन या मीठी स्वाद मिली लार। शराब पीनेकी वजहसे बीमारियाँ।

अन्त्राशय और तलपेट।—पुट्ठे और उरूमें भार मालूम होनेके साथ आँतोंमें सुस्ती मालूम होना। अन्त्राशयमें दबाव मालूम होना, मानो आँत बढ़ने या आँत उतरने (Hernia) की तैयारी हो रही है, विशेषकर बाईं ओर (नक्स वोम; दाहिनी ओरका—लाइको; मोटे-ताजे बच्चेका—कैल्के; क्षीण और रोगी बच्चेका—सिलि; दाहिनी ओर कतरनेकी तरह स्नायविक दर्द, इसके बाद पुट्ठेके नीचे (Inguinal) अन्त्र-वृद्धि—इस्क्युलस-हिप)।

मलांत।—अर्श—खूनी बवासीर और उससे हमेशा रस बहा करता है। मानो मलद्वारमें एक गोला या गोल खोल अथवा खूंटी (Plug) अड़ी हुई है (एनाकार्ड); उदरामय—टुकड़े-टुकड़े मल मिला हुआ, उसका रङ्ग केशर जैसा, आम-मिला, लसदार और फेन भरा या हरी आभा लिये पानीकी तरह पतला; आँतोंमें क्षीणता और खालीपन मालूम होता है और मलद्वारमें दबाव जान पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु-स्राव—बँधे समयके पहले ही हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है। जरायु-ग्रीवामें जखम—सामान्य कारणसे ही रक्त-स्राव होने लगता है। प्रदर—स्राव कड़वा दूधकी तरह और जलन करनेवाला, कभी-कभी खून-भरा और श्लेष्मा मिला। बन्ध्यात्व—जल्दी-जल्दी होनेवाला और बहुत ज्यादा परिमाणमें आर्त्तव-स्राव (आरम-म्यू-नेट्रो); आत्महत्या कर लेनेकी इच्छाके साथ थोड़ा विलम्बसे ऋतु स्राव होता है या ऋतु रुक-रुककर बन्ध्यापन (बाँझपन पैदा हो जाता है—आरम; बहुत अधिक स्राव होनेवाले और असमयमें होनेवाले आर्त्तव-स्रावके साथ=कैल्के; बहुत रमणेच्छाकी वजहसे=फास; सुस्त, मूह्यमान रोनी, समझाना सहन न करनेवाली और मलिन वर्णकी स्त्रियोंका=नेट्रम-म्यूर; कड़वा प्रदरकी वजहसे=

बोरैक्स; ऋतुका स्राव थोड़ा और दर्द-भरे स्तन=कोनायम; स्तन और अण्डाधारका क्षय (Atrophy)= आयोड।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी प्रत्येक बार दो बार खाँसी आती है (मार्क; तीन—वारस्टेन); पृष्ठ-फलक दोनोंके बीचमें दर्द; क्लान्ति; वक्षके भीतर खुजलाहट मिली खाँसी; कफ—सवेरे गहरे रङ्गका रक्त या पतला, पीला और खून-मिला; खाँसनेके बाद वायु निकलना या डकार; वायु सेवनसे घटना; चलने-फिरने (डिजि, रियुमिक्स); ठण्डा पानी पीने (लाइ, स्कीला) और काफीकी गन्धसे बढ़ना।

त्वचा।—अच्छी तरह धोनेपर भी बच्चेके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है (हिपर, मैग-कार्ब, रियुम; स्नान करनेपर भी दुर्गन्ध—सोरिनम) नहीं जाती। कुचलना (Bruises), खाल उधड़ना और शरीरमें जगह-जगह नीला दाग वगैरह या ब्लक चोट आदिका कुफल (आर्निका, ऐसिड-ऐसेट); काला दाग पड़ना; पुराने शस्त्रोंके जखम सब फिरसे लाल या नीली आभा लिये हो जाते हैं और उनमें दर्द होता है (ऐसिड-फ्लू, लैके; हरा हो जाता है=लिडम)। हरी पीली फुन्सियाँ (जैसी सान्निपातिक ज्वरमें होती हैं)। रक्त-स्राव करनेवाला धूम्र-रोग—त्वचाके नीचे फैलनेके कारण त्वचाके ऊपरका स्थान जगह-जगहपर लाल हो जाता है (फास, रस, विनि, हैमा, कैलि-आयो, मर्क, लैके, ऐसिड-फास, क्रोटेलस, आर्निका) और शरीरके अन्य द्वारोंसे रक्त-स्राव (आर्स, जिङ्क, इरि-जि, हैमा, इपिका, लैके, म्यूरेक्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ और बाँहमें पक्षाघात लक्षणका सङ्कोचन मालूम होना; लिखनेके समय अंगुलीका फड़कना-या एकाएक काँप उठना (कास्टि, साइक्लामिन, स्टैनम)।

वृद्धि।—छूने, मलने, घसने और भोथरे यन्त्र आदिकी चोट; सवेरे शीत लगने, ठण्डा पानी पीने, शराब पीने, सन्ध्या और रात्रिमें तथा उठकर टहलनेपर और घुड़सवारीसे बढ़ना।

घटना।—गर्म प्रयोग और रोगवाली करवट सोनेपर (ब्राइ; रोगवाली करवट सोनेसे बढ़ना—बेल, मर्क) और विश्रामसे घटता है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न और अनुपूरक—पल्स। सदृश—आर्नि, बोरैक्स, कैलेण्डुला, लिडम, रियुटा और सिम्फाइटम। कोमल अंशके कुचलने और

फटने आदि आघातमें यह कैलेण्डुलाका समकक्ष है। अजीर्णमें—कार्बो-वेज ; अम्लरोगमें रोबिना ; सर-दर्दमें—नेट्रम ; रक्तस्रावमें—क्रोटेलस।

शक्ति।—३ रीसे २०० क्रमतक।

एसिड टार्टारिकम

(ACIDUM TARTARICUM)

दूसरा नाम।—अंगूरका सिर्का।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीमें १ क्रम तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बन सकता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—उदरामय, बहुत अधिक कमजोरी ; चलनेकी शक्तिका घटना और जीभ सूखी तथा भूरी (स्पञ्जिया, सलफर) ; लगातार वमन (श्लेष्मा या खाया हुआ पदार्थ वमन=इपिका ; शराब पीनेवालोंका सवेरेके समयका वमन=ऐण्टि-टार्ट ; पीते मात्र वमन=ऐण्टि-टार्ट ; पेटमें पानी धारण करनेकी क्षमता न रहनेके साथ=आर्स ; पेट फूलना और कोष्ठबद्धताके साथ=ऐसिड कार्बोलिक ; मांसहीनता और अजीर्ण रोगमें=आयोड ; दूध पीते ही—इथूजा ; बच्चोंको एकाएक दूध वमन करना—मर्क-सोल ; अपरिचित भुक्तद्रव्य वमन—फेर-म्यूर, ऐंग्रोट ; अम्ल या पित्त वमन—आइरिस ; सरमें दर्दके साथ श्लेष्मा और पित्त-वमन—एपोमार्फि ; शरीर हिलानेपर—काक्युलस)। डा० क्लार्क कहते हैं, कि गले और पाकस्थलीमें तेज़ जलन, मानो आग छू गई है, इसका प्रधान लक्षण है।

लक्षणावली

अन्त्राशय।—नाभीके चारों ओर अर पुट्ठे में दर्द मालूम होना। मल काफीके चूरकी तरह, रातमें बढ़ना। जीभ भूरी और सूखी ; गाढ़ा पीला वमन ; नाड़ी कमजोर, बार-बार जम्हाई आना।

शक्ति।—२ री (दशमिक) और ६ ठी दशमिक विचूर्ण।

ऐकोनाइटिनम

(ACONITINUM)

दूसरा नाम ।—ऐकोनाइटिन ; ऐकोन-इटिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ऐकोनाइट नैपिलसकी जड़ और काण्डसे प्रस्तुत किया हुआ एक तरहका उपचार ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—कम्प ; मृत्यु-भय ; बेचैनी ; जलातङ्क ; स्नायुशूल ; धनुष्टङ्कार ; वमन ; पक्षाघात ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐकोनाइटकी तरह यह भी एक तेज़ विष है । ऐकोनाइटकी भाँति इसमें भी मृत्यु-भय, अस्थिरता, कम्प, मानो शरीरके भीतर किसीने बरफ डाल दिया है ; गड़बड़ी मालूम होना, सुन्न हो जाना, सुरसुरी मालूम होना, कीड़े काटने या शूल बेधनेकी तरह यन्त्रणा और उत्तापका लक्षण दिखाई देता है ।

इसके लक्षण साधारणतः उर्द्धाङ्गसे निम्नाङ्गकी ओर फैलते हैं । ऐकोनाइटकी तरह एकोनाइटिनका रोग-लक्षण भी जिस तरह एकाएक पैदा हो जाता है और रोगीपर प्रचण्ड भावसे आक्रमण करता है, उसी तरह अच्छी तरह इलाज होनेपर बहुत जल्द निर्मल भावसे आरोग्य भी हो जाता है ।

शरीरका भारी मालूम होना, आँखके ऊपरी भागमें स्नायु-शूलके लक्षणमें भी इससे फायदा होता है ।

वृद्धि ।—सामान्य हिलानेसे, मानसिक परिश्रमसे, स्पर्शसे वृद्धि ।

घटना ।—सीधे होकर बैठने या खड़े होनेपर मिचली घट जाती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐकोन, बेल, हायोसा, कैन्थरिस, लैकेसिस (जलातङ्क) ।

शक्ति ।—१x—६ ।

ऐकोनाइटम कैमेरम

(ACONITUM CAMMARUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निस्पन्द वायु ; चर्म रोग ; सर-दर्द ; स्नायुशूल ; स्वप्नदोष ; लार बहना ; जीभका पक्षाघात ; वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके बहुतसे लक्षणोंका सादृश्य ऐकोनाइटके साथ है। निस्पन्द वायु, पहले जीभसे सुरसुरी आरम्भ होकर क्रमसे मुँहमें और सारे शरीरमें फैल जाती है ; इसी तरह कितनी ही तरहसे मुखभङ्गी और अङ्गभङ्गी रोगी दिखाया करता है । सामनेकी ओर टेढ़े पड़नेपर सर-दर्द घटता है । मुखमण्डलका स्नायुशूल और उसके साथ ही कानमें टुन-टुन शब्द और सरमें चक्कर आना ; उद्गार, मिचली, पर कै न होना, स्वप्न देखना, इसके अलावा नींदके समय अनजानमें शुक्रस्राव लक्षणकी यह एक लाभदायक दवा है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ऐकोनाइटिनम—न्यूमोएटेनम ।

शक्ति ।—१x—६ ।

ऐकोनाइटम लाइकाकटोनम

(ACONITUM LYCOCTONUM)

दूसरा नाम ।—ऐकोनाइटम टेलिफोनम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल खिलनेका उपक्रम होनेपर समूचा ताजा वृक्ष लेकर मूल अरिष्ट तैयार होता है। एकमात्र इसी जातिके ऐकोनाइटसे उपक्षार (Alkaloid) “ऐकोनाइटिन” तैयार नहीं होता ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कब्जियत, उदरामय, गण्डमाला, मूत्र-कृच्छ्रता ।

उपयोगिता और आभास।—और-और ऐकोनाइटोंकी तरह त्वचापर (लाल आभा, सूजन, उत्ताप, सूखापन, जलन वगैरह) इसकी क्रियाकी प्रधानता दिखाई नहीं देती ; परन्तु नाक, आँख, मलद्वार, योनिद्वार वगैरहमें खुजली, नाककी त्वचाका फट जाना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। गलदेश, बगल और स्तन-देशके ग्रन्थि-समूहोंके ऊपर ही इसकी क्रिया अधिक है। **गण्डमाला धातुमें** यहाँतक कि हाज्किन्स डिज़ीज (गलगण्ड रोग) पर ऐकोनाइटम लाइकाकटोनमके प्रयोगसे विशेष लाभ होता दिखाई देता है।

खाँसीमें खूनका स्वाद लक्षणमें यह फेरम-फासके साथ और सूअरका मांस खानेकी वजहसे उदरामयमें पल्सके साथ यह समलक्षण सम्पन्न है।

वृद्धि।—तीसरे पहर (लाइको); मानसिक परिश्रमसे; पेयाज खानेसे ; शराब पीने बाद वृद्धि।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—सिस्टस, लेपिस, ऐलो, कोनायम, आयोड, लाइको, पल्स (सूअरका मांस खानेकी वजहसे बीमारी)।

शक्ति।—३, ६।

ऐकोनाइटम नेपेलस

(ACONITUM NAPELLUS)

दूसरा नाम।—उल्फस बेन, मीठा विष इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—केमैरम, लाइकाक्टन, फेरोक्स वगैरह कितने ही तरहके ऐकोनाइट हैं, उनमें फेरोक्स बहुत तेज़ है और नेपेलसका व्यवहार अधिक होता है। औषधिके लिये जब इसकी केवल जड़ ली जाती, तब उसे "रैडिक्स" कहते हैं। समूचे पौधेसे मूल अर्क प्रस्तुत होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—डाक्टर क्लार्कके मतसे नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक है :—अन्धापन ; संन्यास ; दमा ; श्वासनाली-प्रदाह ; वक्षकी अनेक प्रकारकी बीमारियाँ ; विसूचिका ; बच्चोंकी विसूचिका ; सर्दी ; क्षयकास ; आक्षेप ; खाँसी ; घुंड़ी (काली खाँसी) ; मूत्राधार-प्रदाह ; दाँत निकलनेके समयकी बहुत-सी बीमारियाँ ; अतिसार ; शोथ ; रक्तामाशय

(पेचिश) ; कष्ट-रजः (मासिक ऋतुस्रावमें तकलीफ़) ; कर्ण-प्रदाह ; अन्त्र-प्रदाह ; आँखोंका प्रदाह ; डर जानेका कुफल ; जीभका प्रदाह ; प्रमेह ; रक्त-स्राव ; बवासीर ; सर-दर्द ; स्तन-विकार (स्तनमें गड़बड़ी) ; स्वरनलीका प्रदाह ; फुसफुस और उसके आवरणका प्रदाह ; छोटी माता ; मस्तिष्कका प्रदाह ; यकृत-प्रदाह ; मूत्रग्रन्थि (मसाना) का प्रदाह ; स्नायुशूल ; सुन्न हो जाना. अन्ननलीका प्रदाह, पक्षाघात (लकवा), अन्त्रावरण-प्रदाह, गर्भवतीकी बहुत-सी बीमारियाँ ; सूतिका ज्वर ; अनिद्रा ; अण्डकोषकी बीमारियाँ ; धनुष्टङ्कार ; प्यास ; जीभ और गलकोषका प्रदाह ; दाँतका दर्द ; चोटकी वजहसे बोखार ; पेशाबमें पथरी ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; गो-बीज टीका लगवानेका दुष्परिणाम ; सरमें चक्कर आना ; हूपिङ्ग कफ (कुकुर खाँसी), जम्हाई इत्यादि ।

उपयोगी धातु या उपयोगिता और आभास ।—जो युवक और युवतियाँ पूर्ण अवयव (जवान) और रक्त-प्रधान धातुवाले हैं, जो आलस्यमें दिन बिताते हैं, उन्हें कोई नयी बीमारी होनेके समय ऐकोनाइटम अधिक लाभ करता है । जो लोग जलवायुके परिवर्त्तनसे सहजमें ही बीमार पड़ जाते हैं और जिनके केश काले हैं, आँखें काली और सुदृढ़ तन्तुवाली बलिष्ठ देह है, उनपर ही इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है । नीचे लिखे लक्षण भी इसको बतानेवाले हैं—सूखी, शीतल और उत्तरी या पश्चिमी हवासे या पसीना निकलते समय ठण्डी हवा लगकर रुके हुए (Checked) पसीना आदि दोषकी वजहसे रोगोंमें ; हमेशा रोग या मृत्युका भय ; उत्कण्ठा ; मानसिक और शारीरिक बेचैनी और रोगका नया और एकाएक जोरका आक्रमण—ये ऐकोनाइटके सिद्धप्रद लक्षण हैं । सब तकलीफें असहनीय और चित्तकी स्थिरताको नष्ट करनेवाली होती हैं ; रोगी बेचैन हो पड़ता है ; रातके समय ही सब कष्ट बढ़ जाते हैं, जलनकी तरह और कड़मड़ाहट तथा कँपकँपी पैदा करनेवाला और सुन्न करनेवाला दर्द ; उत्कण्ठा, उद्वेग और डरके सभी लक्षण रोगीमें दिखाई देते हैं, प्रदाह आदिकी रक्त-सञ्चयवाली अवस्थामें और यन्त्रगत या सीमाबद्ध (Localised) होनेके पहले ऐकोनाइट उपयोगी है । ऐकोनाइटका रोगी भीड़में जानेसे डरता है ; यही सोच-सोचकर व्याकुल रहता है, कि भविष्यमें न जाने क्या होगा ; वह सोचता है, कि इस रोगसे अब उसका छुटकारा न होगा और अवश्य ही उसकी मृत्यु हो जायगी ;

शय्यापर करवट बदला करता है, किसी तरह भी उसे आराम नहीं मिलता ; रह-रहकर चौंक उठता है ; नाड़ी तेज़, कोमल और लोहेकी तरह न दबनेवाली रहती है । आवाज़ बिल्कुल ही सहन नहीं होती ; पानीके सिवा अन्य सभी चीजें तीती मालूम होती हैं । तेज़ प्यास ; बहुत-सा पानी पीनेपर आराम मालूम होता है । पेटमें इतना भार मालूम होता है, मानो पत्थरका एक टुकड़ा दबाया हुआ है । मल हरा और पीसी हुई सागकी तरह रहता है । कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है । पेशाब थोड़ा और गर्म होता है तथा मूत्रनालीमें सिकुड़न और मूत्रनालीमें जलन होती है । नाकका स्राव (Coryza) या सर्दी, नाकमें ठण्डी हवा घुसनेपर मस्तिष्कके भीतरतक ठण्डक मालूम होती है ; नासा-मूल (नाककी जड़) में दबाव मालूम होता है । खाँसी सूखी, श्वास-रोधकर ;—गर्म कमरेसे ठण्डे स्थानमें जानेसे ही बढ़ जाती है । ज्वरमें शरीरकी त्वचा सूखी और जलन-भरी ; गर्म या दाह-भरी रहती है, चेहरा लाल हो उठता है या पर्यायक्रमसे एक बार लाल फिर मलिन हुआ करता है ; भयानक बेचैनी ; सन्ध्याके समय और सोनेके समय यन्त्रणाएँ असह्य हो जाती हैं ।

लक्षणावली

मन ।—स्नायविक ; उत्तेजनाकी अधिकताके साथ बहुत डर और उत्कण्ठा । घरके बाहर अथवा जहाँ बहुतसे आदमी एकत्र हों, खासकर वहाँ यदि किसी तरहकी उत्तेजनाका लक्षण हो तो वहाँ जानेसे भय या चौड़ा रास्ता पार करनेमें अत्यन्त भय । चेहरेपर हमेशा ही डरके चिन्ह मौजूद रहते हैं, डरके कारण रोगीका जीवन दूभर हो पड़ता है ; रोगीके मनमें दृढ़ विश्वास जमा रहता है, कि इस रोगमें अवश्य ही उसकी मृत्यु होगी ; वह अपना मृत्युकाल पहलेसे ही निर्णय कर देता है ; गर्भावस्थामें मृत्यु-भय (रोगिनी समझती है, कि उसकी बीमारी अच्छी न होगी =आर्स, कैक्टस, इग्ने, लैक-कैन, लिल-टाइ, मिडोरि, नेट्र-म्यूर, सोराइन, सैबाड-नाइ ; उसका रोग अन्तमें सांघातिक हो जायगा—ऐसा समझता है =आर्जेण्ट-नाइ, म्यूर, ऐसिड-नाइ, सोराइन, सैबाड, सिफिल) । अन्धेरेमें डर ; रातके समय प्रलाप ; भयकी वजहसे बीमारी । उसे सगीत सहन नहीं होता, उसमें विषाद पैदा हो जाता है (संगीत-ध्वनि असह्य—ऐलोन, नेट्र-कार्ब, थूजा, बेल, ग्रैफा, क्रियोजोट, नेट्र-सल्फ, नक्स-वोम, सैबाड ; विषन्नता पैदा करनेवाला—ऐलो, सैबाड,

नेट्र-कार्ब ; ऋतुके समय—थूजा, क्रुण्डन, क्रियोजोटम ; उत्तेजक = टैरेण्टुला—क्युबेन्सिस)। समता-हीनता ; क्रोधी प्रकृति, कभी विद्वेष, कभी आनन्द ; सवालका जवाब देनेपर नाराज़ होता है ; पर्य्यायक्रमसे हँसना और रोना।

मस्तक।—मस्तकमें स्तब्ध करनेवाला दर्द ; आसनसे उठनेपर, सर झुकानेपर या ऊपर देखनेसे सरमें चक्कर आना (ब्राई, पोडो, पल्स) ; दाहिनी ओर गिर जानेका उपक्रम। माथेमें रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे चेहरा लाल हो जाना और गर्म हो उठना (बेल, ब्राई)। ललाटके पीछे पूर्णता और भार मालूम होना, मानो आँखकी राहसे मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा। (बेल, ब्राई, मार्क ; खालीपन मालूम होना = कोराल-रूब्र, कक्कु, इग्ने, ओपि) ललाट देशमें,—बेधने जैसा और टपकका दर्द और शरीर हिलानेपर बढ़ना। जलन करनेवाला सरका दर्द. माथेमें मानो गर्म पानी हिल रहा है (इण्डिगो), कपालमें ऐसा दर्द मानो मस्तिष्क आँखकी राहसे बाहर निकल पड़ेगा। ऐसा मालूम होता है मानो मूर्द्धदेश (खोपड़ी) के केश सब खड़े हो गये हैं (बैरा-का, डालका), मानो कोई केश खींच रहा है।

आँख।—नया आँखोंका प्रदाह, जलन और चिलक मारनेकी तरह दर्द। धूपसे डर मालूम होना (बेल, कोनायम, इयुफ्रे ; दीयेकी रोशनीसे भय = जेल्स)। पलकोंकी कड़ी और लाली-भरी सूजन। आँखोंमें मानो बालू गिर गयी है (आर्स, ऐसि-फ्ल्, इयुफ्रे)—इस ढंगका दर्द। किरकिराहट, सूखी ठण्डी हवा लगने और राखके कण निकल जाने बाद आँखका प्रदाह ; तिमिर-दृष्टि—डेरा देखना (Amourosis) ; गर्मीके दिनोंमें ठण्डे पानीसे स्नान करनेके कारण एकाएक या अकारण पैदा हुई दृष्टिहीनता = जेल्स। रतौंधी = लाइ ; अधिक तम्बाकू खानेकी वजहसे = नक्स-वोम), कनीनिकाका फैलना।

कान।—कानसे एक तरहकी आवाज़ (सिङ्कोना) ; श्रवण-शक्तिकी प्रखरता ; आवाज़का सहन न होना (मैग-कार्ब, ऐसिड-फास, सिलि)। बाहरी प्रदेशमें प्रदाह। गाना-बजाना असह्य। कानमें गरजनेकी आवाज़।

नाक।—रक्त-स्राव—खासकर रक्त-प्रधान प्रकृतिवाले मनुष्योंका (ब्राई, बेल),—रक्त चलकोला लाल। सूँघनेकी शक्तिकी तेजी या प्रखरता (बेलाडो) ; नासामूलमें दर्द मालूम होना ; नयी सर्दी ; बार-बार छींक आना ; टपक जैसा दर्द ; नाककी जड़में दबाव मालूम होना (मर्कु, नेट्रम-आर्स)।

मुखमण्डल।—सोये-सोये उठनेपर चेहरा रक्त-शून्य या मुर्दे जैसा हो जाता है या रोगी अवसन्न होकर और सरमें चक्कर आनेके कारण गिर पड़ता है। फिर उठनेसे डरता है ; कितनी ही बार इसके साथ ही दिखाई न देना और बेहोशी भी आ जाती है (सामान्य मानसिक उद्वेगसे चेहरा लाल हो जाता है—फेरम)। लाल रङ्ग, गर्म, फूला और उद्दीप्त (तमतमाया) चेहरा ; मुँहके बाईं ओर स्नायुशूल (Propalgia),—बेचैनी, कनकनी जैसा दर्द, इसके साथ ही सुन्न हो जाना (स्पाइजि)।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—दोनों ओठ सूखे और काली आभा लिये (आर्स, ब्राई, मार्क) ; मुखगह्वर और जीभ बहुत सूखी (आर्स, ब्राई, कैमो। प्यास न रहनेके साथ—बेल, लाइको, नक्स-मस) ; जीभपर सफेद लेप ; तालु, तालुमूलीय ग्रन्थि (Tonsils) और दोनों तालु-पार्श्व (Fauces) का प्रदाह, इसके साथ ही तेज बोखार ; रोगवाली जगहपर लाली और जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द (एपिस, बेल, मार्क),—कोई पदार्थ निगलनेके समय गलेमें डङ्क मारने जैसी तकलीफ मालूम होना (एपिस) ; दाँतमें दर्द ;—ठण्ड लग जानेकी वजहसे टपकका दर्द ; रोगवाले पार्श्वका गाल लाल हो जाता है ; निचली हनुबटीका चबानेकी तरह हिलाना (ब्राई) ; गर्म और प्रदाह-भरे मसूढ़े।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—पानीको सिवा सब चीजोंका स्वाद तीता मालूम होता है (सब तरहका पानीय पदार्थका स्वाद कड़वा मालूम होता है—ब्राई, कोलो, सिङ्कोना, पल्स)। प्यास कभी तृप्त ही नहीं होती, पर धीरे-धीरे पानी पीता है (आर्स, एपिस, सिङ्कोना, हायोसा ; बहुत देरका अन्तर देकर ज्यादा मात्रामें पानी पीता है—ब्राई) ; बहुत प्यासके साथ मुख-गह्वर, तालु और जीभ वगैरहमें सूखापन (सलफर—आधी रातमें जीभ सूखी, लसदार, परन्तु प्यास न रहना और तालुमूलमें लारका इकट्ठा होना—नक्स-वोम ; तीता स्वाद ; पित्त-वमन और ठण्डा पसीना होना (इसके साथ ही ठण्डा पसीना—वेरेट्रम). पाकाशयका प्रदाह (आर्स, कैन्थ, फास, नक्स)। पीने या भोजनके बाद पाकाशयमें शूलकी तरह दर्द (आर्स, फेरम, नक्स, पल्स)। नये यकृत-प्रदाहमें दबाव मालूम होना। अन्त्राशयका प्रदाह—समूचे अन्त्राशयमें तेज, पर क्षणभरके लिये पैदा होनेवाला दर्द ; अन्त्राशयका एकदम छुआ न जाना। पित्त वमनके साथ आंत उतरना (Hernia) ; वंक्षण या कुचकी (Inguinal)

प्रदेशका (Kernial Stricture) संकोचन और प्रदाह (नक्स देखिये); रक्त-वमन (Hæmatemesis)—रक्त चमकीला लाल ; पाकाशयसे गलनालीतक जलन। शूलका दर्द—किसी भी अवस्थामें आराम नहीं मिलता ; आँतोंमें आवाज़ या पेट गड़गड़ाना (ऐसिड-फास)।

मल।—पेट गड़गड़ाकर बार-बार थोड़ा पाखाना होना (आर्स, बेल, कोलचि, कार्बो); हरे रङ्गका पतला मल, सागके चूर या मेढ़कभरी तालाबकी काईकी तरह मल—मैग-कार्ब ; सफेद मल (कैल्के, चायना, हिपर, काला मल—कैम्फोरा, चायना, लेप्टेण्ड्रा, वेरेट्रम); सूत्र-क्रिमिकी वजहसे मलद्वारमें खुजलाहट। विसूचिका—मलका पतलापन—शारीरिक क्रियाका पतन या हिमाङ्ग (Collapse)। इसके साथ ही उत्कण्ठा और अस्थिरता। रक्त-स्रावी अर्श या खूनी बवासीर (हैमा, सल्फर, ऐलो): मलनाली (Rectum) का सुन्न हो जाना और इसी कारणसे अनजानमें पाखाना होना (कोलो, जेल्स, रूटा)। कब्जियत, कीचड़ जैसा मल (टैबेक, इसके साथ ही यकृतका बढ़ना—चियोनैन, डिजि)। आम-रक्त (खूनी पेचिश—Dysentry), ज्वर, प्रदाह, काँखना और खून-भरा पाखाना होनेके साथ मलनालीमें भयानक जलन।

पेशाब।—मूत्ररोध, ठण्ड लग जानेकी वजहसे बीमारी—मूत्रग्रन्थिके (Kidneys) भीतर सुई बेधनेकी तरह दर्द (बार्बे); चिल्लाना ; बेचैनी और बच्चा बार-बार लिङ्गमें हाथ लगाता है ; चमकीले लाल रङ्गका थोड़ा पेशाब, पेशाब करनेके समय तकलीफ़। मूत्राशयके ग्रीवा-देशमें जलन और सङ्कोचन। पेशाब करनेके पहले बहुत चिन्ता। मूत्रनालीमें जलन—प्रमेह रोगकी नयी अवस्था, इसके साथ ही मानसिक और शारीरिक अस्थिरताका लक्षण मौजूद रहना (कैना-सैट, जेल्स)।

पुं-जननेन्द्रिय।—पेशाब करनेके समय लिङ्गमणि (Glans penis सुपारी) में बेधने और कांटा या नख गड़नेकी तरह तकलीफ। अण्डकोषमें पीसनेकी तरह (Contusive—आर्जेण्ट-मेट, आर्जेण्ट-नाई, रोडो, स्टैफिसे) दर्द मालूम होना ; मूत्रनालीका प्रदाह (Urethritis) वाला रोगी बार-बार अपने लिङ्गकी ओर हाथ फैला देता है ; पेशाबका वेग और बूंद-बूंद खून-मिला पेशाब।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव स्राव एकाएक रुक जानेके कारण अण्डाधारका प्रदाह (Ovaritis); ऋतु—बहुत दिनोंतक स्थायी और स्राव

ज्यादा परिमाणमें होता है, खासकर रक्त-प्रधान धातुवाली स्त्रियोंको (बेल, कैल्के) बीमारी। डरकी वजहसे और पैरोंमें ठण्ड लग जानेके कारण रजःरोध (शीत लग जानेके कारण=डाल्का, पोडो, पल्स, सलफर ; सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द और देखनेकी शक्तिकी गड़बड़ीके साथ—साइक्लामेन ; मलका कड़ापन, जाड़ा सहन न होना, मानसिक विषाद और जागनेपर सरमें दर्द—नेट्रम-म्यूर)। प्रसवान्तिक स्राव (प्रसवके बादका स्राव Lochia) रुकना या घटना (फोड़ेकी तरह दर्द-मिला सरका दर्द रहनेपर—ब्राई); प्रसवके समय जरायुका कड़ापन (Rigid os); कृत्रिम वेग, बार-बार दर्द ; बहुत डर मालूम होना (कम्पन और अवसन्नता रहनेपर—जेलसि ; क्षीण वेगके साथ होनेपर—कालोफाइ)। अपत्य-पथ सूखा, गर्मी-भरा और उसके छूनेमें तकलीफ़। ऋतुस्रावके आरम्भमें उन्मत्त भाव (मैग-म्यूर)।

जरायु-प्रदाह (Metritis)।—तेज़ शूलकी तरह दर्द। अन्त्राशय-प्रदेशमें इतनी तकलीफ कि वह छुआ न जाये। बाधक या रजःकृच्छ्रता ; प्रसवके दर्दकी तरह वस्ति-प्रदेशमें (Pelvic Region) दबावकी तरह दर्द—रोगिनीको वाध्य होकर झुक जाना पड़ता है, परन्तु किसी अवस्थामें भी उसे आराम नहीं मिलता। सूतिका ज्वर, क्लेद-स्राव रुका हुआ (Suppressed Lochia); दोनों स्तन ढीले और खाली ; त्वचा सूखी और गर्म ; नाड़ी कड़ी तेज़ या संकुचित ; चमकीली आँखें और उन्मत्तकी तरह दृष्टि ; जीभ सूखी ; पेट फूला और उसको छूना सहन नहीं होता। प्रसवके बादका स्राव (Lochia) का फिरसे जारी हो जाना ; सौरी घरसे निकलनेपर इधर-उधर घूमनेकी वजहसे (रस, क्रियो) स्राव हुआ करता है।

श्वासयंत्र।—वायुनलीभुज-प्रदाह (Bronchitis) [बेल, कैल्के, हिप, स्टैफि] घुंड़ी खाँसी (काली खाँसी Croup); सूखी ठण्डी हवा लगनेके कारण पैदा हुई—पहली अवस्था—सूखी खाँसी और जोरसे आवाजके साथ श्वास-प्रश्वास (स्पञ्जिया); प्रत्येक प्रश्वास टूटी आवाजके साथ और तकलीफ देनेवाली खाँसीमें बदल जाता है। प्रत्येक बार बच्चा मानो श्वासनलीकी तकलीफ रोकनेके लिये अपने कण्ठपर हाथ रखता है, नींदके समय या खड़े होनेपर श्वास रुकनेका भाव (सोनेपर साँस रुकना—ऐमोन-कार्ब, क्लोरम, जेल्सि, ग्रिण्डेलिया, लैक-केन, लैकेसिस, ओपियाई)। क्षण-क्षणभरपर श्वास-रोध होनेका उपक्रम और उत्कण्ठा (आर्स, हिप, लैके)। वक्षावरण-प्रदाह (Pleurisy) और

फेफड़ेका प्रदाह, सुई बेधने जैसा दर्द, दाहिनी करवट सो नहीं सकता (बाईं करवट नहीं सो सकता—मर्क ; केवल चित या मुँह ऊँचा कर सो सकता है या सोया रहता है ; तकलीफ देनेवाली सूखी खाँसी, बहुत अधिक उत्ताप मालूम होना ; बहुत प्यास और स्नायविक उत्तेजना (ब्राई, कैलि-कार्ब, फास)। फेफड़ेमें गर्मी मालूम होना। कलेजा धड़कना (Palpitation)। मानो छातीके भीतर कोई गर्म पानी ढाल रहा है, मानो हृत्पिण्डसे गर्म पानीकी बूंदें टपक रही हैं—कैनाबिस-इण्डिका और सैटाइवा), इसके साथ ही बहुत अधिक मानसिक उद्वेग। कफ (Sputa) के साथ रक्त निकलना। नाड़ी पुष्ट, कड़ी, डोरीकी तरह दृढ़ और उछलती हुई (उछलती हुई और ऐसा मालूम हो, मानो परीक्षककी अंगुलीके नीचे छोटा लोहेका गंद चल रहा है—बेल); रुक-रुककर (Intermitting); बैठनेपर गर्दनकी नाड़ी (Carotid) का टपाटप स्पन्दन (Throbbing) अनुभव आता है।

पृष्ठ-देश।—पीठमें दर्दकी वजहसे लम्बी साँस लेनेमें दर्द मालूम होना। चोट लगने जैसा दर्द, यह दर्द पैरतक फैल जाता है ; अकड़न और सुन्न हो जाना ; दर्दके कारण रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके मसानेमें बीमारी हो गयी है (डा० ऐनार्ड)। बाईं बाँहका सुन्न हो जाना ; अंगुलियोंमें झुनझुनी (Tingling); गर्दनके पीछे अकड़ जाना (ऐक्टि-रेस), दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें (Between Scapulae) तेज़ दर्द।

प्रत्यङ्ग।—दोनों उरुके सामनेवाली जगहपर मानो ठण्डे पानीकी बूंदें टपक पड़ती हैं—ऐसा मालूम होना। हाथ-पैरका सुन्न होना और झुनझुनी (Tingling), चिलक मारनेकी तरह दर्द। हाथ-पैरमें ठण्डक और सुन्न हो जाना। हाथ गर्म, परन्तु पैर ठण्डे। बीचमें वाताश्रय—रातमें बढ़ना ; लाल, चमकीली सूजन, उसका स्पर्श बिलकुल ही सहन न हो, सोनेके बाद कूल्हेके जोड़ (Hip-joint) और उरुदेशमें सुन्न जैसा भाव। जानुदेशकी शिथिलता, चलनेके समय पैर घूम जाता है।

निद्रा।—बहुत बेचैनीके साथ नींद न आना (आर्स, बेल, कैमो—औंघाई आती है, परन्तु नहीं आती—बेल, कैमो, ओपि)। स्वप्न और कुछ परिमाणमें अदृश्य चीजें देखनेकी शक्ति आ जाना (फास)। रातके समय प्रलाप ; बार-बार जम्हाईके साथ नींद न आना।

त्वचा ।—लाल और गर्म, पसीना न होना ; फूली, चिकनी (बेल) त्वचा। छोटी माता, खुजली तथा त्वचाकी खाल निकलना, शीत सहन न होना ; इसके साथ ही त्वचा सूखी और रातमें बहुत प्यास। चिलक मारना, या मच्छड़ काटनेकी तरह दाग ; धूम्र रोगकी तरह उद्भेद। चींटी चलने जैसी सुरसुरी और शीत सहन न होना तथा सुन्न जैसा मालूम होना। चेहरा पीली आभा लिये।

ज्वर ।—ज्वराधिकारमें,—त्वचा पसीनेसे रहित गर्म ; चेहरेपर लाल या मलिनता और सुन्न जैसा भाव पर्यायक्रमसे प्रकट होता है (ऐमिल, कैम्फ, सिङ्को, मैग-कार्ब) ; ज्यादा मात्रामें पानी पीनेकी बहुत इच्छा ; बहुत अधिक स्नायवीय अस्थिरता ; रोगी तकलीफसे छटपटाता है ; सन्ध्याके समय और नींदके समय यन्त्रणा असह्य हो जाती है। जिस ज्वरमें शरीरपर दाने (Eruption) निकल आते हैं, उनमें बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजना और अस्थिरता यदि न रहे तो ऐकोनाइटम बिलकुल ही उपयोगी नहीं है। कँपकँपी, प्रादाहिक ज्वर ; ठण्डा पसीना ; नाड़ी पूर्ण और तेज़, कभी-कभी सविराम, मृदु और सूतकी तरह। शिरा और धमनीमें जाड़ा मालूम होना (वेरेट्रम ; मानो शिरामें गर्म जल प्रवाहित हो रहा है=आर्स, रासटक्स), पसीना रुकनेकी वजहसे बीमारियाँ। सरमें दर्द, शीत और मुँहकी ओर गर्मी मालूम होती है।

स्नायु ।—जिन बच्चोंको दाँत निकल रहा हो, उन्हें अकड़नकी बीमारी ; उत्ताप, पेशियोंका फड़कना (ऐगार, इग्ने, जिङ्कम), बच्चा अपनी मुट्ठीको दाँतसे काटता है, झुँझलाता और चिल्लाता है ; त्वचा गर्म और पसीनेसे रहित।

वृद्धि ।—शामको और रातके समय सब तकलीफें असह्य हो जाती है। गर्म घरमें शय्यासे उठनेके समय ; रोगवाली करवट सोनेपर (हिपर ; नक्स-मस्कोटा) ; **घटना**=वायु सेवनसे (ऐलू ; मैग-कार्ब, पल्स, सेबाइना)।

सम्बन्ध ।—बेलाडो, कैमोमिला, काफिया, नक्स, पेट्रो, सिपिया, स्पञ्जिया, सलफर।

दोषघ्न ।—ऐसेटिक ऐसिड और सुरासार तथा उद्भिदोंकी खटाईसे यह प्रतिषेधित (Antidoted) हुआ करता है।

समतुल्य औषध।—पल्स, लाइको, सिकेलि, कैम्फर (शरीर खोल देनेपर घटना); हिपर, काफिया (असह्य दर्द); चायना (सफेद दस्त); जेल्स (बुरी खबर, क्रोध और भयका कुफल); ब्रायो, नक्स (क्रोधकी वजहसे दस्त); ब्रायो (सूखी हवाके कारण)।

दोषघ्न।—ज्वराधिकारमें, अनिद्रा, तकलीफ़ सहन न होनेके सम्बन्धमें काफिया इसका अनुपूरक (Complementary) है; चोट आदिके सम्बन्धमें आर्निका अनुपूरक है; सभी अवस्थाओंमें सलफर।

जिन रोगोंकी नयी अवस्थामें ऐकोनाइटका प्रयोग होता है, उन सभी रोगोंकी पुरानी अवस्थामें सलफरका प्रयोग होता है; इसीलिये ऐकोनाइटम और सलफर आपसमें पहले और बाद सभी समय प्रयोग किया जाता है। ऐकोनाइटमके अपव्यवहारपर सलफरका प्रयोग करना चाहिये।

शक्ति।—१म दशमिक, ६ठीं, ३० से १००० शततमिकतक।

क्रियाका स्थिति काल।—एक घण्टेसे एक सप्ताहतक।

ऐकोनाइटम फेराक्स

(ACONITUM FEROX)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—हिमालय पर्वतपर पैदा होनेवाला एक बहुत विषैला काठ विष। इसीसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें इसका प्रयोग हुआ करता है; दाह मिली जलन; रह-रहकर श्वास लेना; कँपकँपी; श्वास-कष्ट; पाकाशयका शूल; स्नायु-शूल; सुन्न हो जाना।

उपयोगिता और आभास।—यह ऐकोनाइटम नेपेलसकी अपेक्षा भी अधिक तेज विष है। इनमें ज्वरका नाश करनेकी अपेक्षा पेशाब लानेकी अधिक शक्ति है। हृत्पिण्डमें विकारके कारण श्वासकृच्छ्रता, स्नायु-शूल और नये सन्धिवात आदि रोगोंमें बहुत लाभदायक है।

लक्षणावली

मन ।—पहले तो मानसिक अवस्था खूब तेज़पूर्ण रहती है, परन्तु इसके बाद ही बोध-शक्ति घट जाती है। जीभ सुन्न हो जाती है; जीभपर गाढ़ा सफेद पीली आभा लिये लेप; पेटमें दर्द; अनिद्रा; ज्वर।

श्वास-यंत्र ।—श्वासकृच्छ्रता—जबतक उठकर बैठ नहीं जाता, तबतक बहुत तकलीफ रहती है; श्वास-प्रश्वास तेज़। ऐसा अनुभव होना कि श्वास-प्रश्वासको चलानेवाली पेशियोंकी क्रिया बन्द हो गई है। इसके साथ ही श्वासकृच्छ्रता और उत्कण्ठा। उठँगनेकी अवस्थामें हाथपर माथा रखकर साँस लेनी पड़ती है।

सम्बन्ध ।—कुरेरि और फास्फोरससे तुलनीय।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३री दशमिकतक।

ऐक्टिया-रेसिमोसा या सिमिसिफ्यूगा

(ACTIA RACEMOSA)

दूसरा नाम ।—ब्लेक स्नेक-रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी सोरसे मूल अर्क तैयार होता है। सूखी सोरका मूल अर्क प्रूफ स्पिरिटमें तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— बार-बार गर्भ-स्राव हो जाना; वक्षका स्नायु-शूल; पीठमें दर्द; स्तनके दूधमें विकार; वय:सन्धिके समयकी बीमारियाँ; आँखकी बीमारी; ताण्डव; मृगी; मूर्च्छाभाव; सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; व्याधि-शंका; गुल्मवायु; कटि-शूल; विषाद-उन्माद; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; आर्त्तवमें विकार; स्नायुशूल; डिम्बाधारकी बीमारियाँ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह; गर्भिणीकी बीमारी; सूतिकावस्थामें उन्माद; आमवातसे पैदा हुई बीमारियाँ; वात; गृध्रसी या

पैरमें झुनझुनीवाला वात ; अनिद्रा ; कशेरुका मज्जाकी उत्तेजना ; गर्दन अकड़ना ; कम्पन ; जरायुकी गड़बड़ी ; गर्भवतियोंका वमन इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—डाक्टर कैण्ट कहते हैं—गुल्मवायु और वात-प्रधान धातुवालोंके लिये यह उपयोगी है। रोगिनी सहजमें ही शीतसे घबड़ा उठती है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं:—(१) प्रसवके बादकी उन्माद अवस्था (Puerperal Mania)। रोगिनी समझती है, कि जल्द ही उन्माद रोग हो जायगा ; अपने शरीरपर चोट पहुँचानेकी चेष्टा करती है। (२) स्नायुशूल दूर हो जानेपर उन्माद अवस्थाका पैदा हो जाना। रोगिनी समझती है कि वह मेघ समुद्रमें डूबी हुई है और अपने चारों ओर वह अन्धकार देखती है। (३) नाना प्रकारकी चीजें भ्रम-भरी देखना, जैसे—उसके आसनके नीचेसे चूहा भाग गया। (४) आँखोंमें स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia) ; आँखके गोलेमें दर्द और तेज शूल बेधने या कुछ विद्ध होने जैसा दर्द और वह दर्द माथेके चारों ओर फैल जाता है। (५) जरायु या अण्डाधारकी विकृतिका प्रतिक्षेप (Reflection) की वजहसे हृत्पिण्डकी बहुत तरहकी बीमारियाँ--रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हृत्पिण्ड रह-रहकर स्थिर हो जाता है, मानो उसकी साँस रुकना चाहती है ; शरीर हिलानेसे ही कलेजा धड़कने लगता है (डिजि)। (६) आर्त्तव—अनियमित, सुस्त करनेवाला, मानसिक आवेग, सर्दी लग जाने और बोखार आदिकी वजहसे विलम्बसे ऋतु-स्राव ; ऋतु-स्रावके समय मानसिक लक्षणोंका बढ़ जाना। (७) जरायुके विकारकी प्रतिक्षिप्त क्रियाकी वजहसे गुल्मवायु और अपस्मार आदि अकड़नवाली बीमारियाँ पैदा हो जाना। आर्त्तव-स्रावके समय उसकी वृद्धि। (८) बायें स्तनके नीचे तेज दर्द। (९) गर्भावस्थामें मिचली, अनिद्रा, नकली प्रसव-वेदना, तलपेटके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वमें फैलनेवाला तेज दर्द ; हर तीसरे महीने गर्भ-स्राव। प्रसवके दर्दके समय सिहरावन और कम्पन। धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप ; जरायु-द्वारका कड़ापन या फैल न सकना (Rigid os) ; बहुत देरतक ठहरनेवाला तेज दर्द। (१०) प्रसवके बादका दर्द (After Pains), पुट्ठेमें बहुत ज्यादा दर्द। (११) पेशियोंमें व्यथा, गर्दन और पीठमें वातका दर्द और मेरुदण्डमें स्पर्श सहन न हो। इसमें पेशियोंके सभी स्थूल अंश अधिक आक्रान्त होते हैं।

लक्षणावली

मन।—रोगिनी समझती है कि एक टुकड़े घने काले मेघमें उसका माथा डूबा हुआ है (आर्जेण्ट-नाई), इसी वजहसे उसे चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है। बहुत विषाद और हमेशा आसन्न विपत्तिकी आशङ्का। बन्द गाड़ीपर चढ़ना नहीं चाहती, कहीं उसमें न रह सकनेके कारण कूद न पड़े। लगातार बका करती है (स्ट्रैमो); भ्रम देखना, मानो उसके आसनके नीचेसे एक चूहा भाग गया (इथूजा, लैक-कैन)। मदात्यय (Dilirium Tremens), अपने ऊपर चोट पहुँचानेकी चेष्टा करती है। स्नायुशूल अच्छा होनेपर उन्माद रोगका पैदा हो जाना। प्रसवके बादका उन्माद (Puerperal Mania), सूतिकावस्थामें उन्माद; रोगिनी सोचती है कि वह मानो उन्मादिनी हो रही है; अपनी शरीरपर ही आघात करनेकी चेष्टा करती है (कामोन्मादके साथ—हायोसा; हर्ष-विषाद आदि पर्यायक्रमसे प्रकट होते हैं—क्रोकस-सैटाई, मानसिक यन्त्रणा, धर्म-सम्बन्धी विषाद और ललाटपर ठण्डा पसीना—वेरेट्रम)। एकान्त पसन्द करता है। देश-देशान्तरमें घूमनेकी इच्छा। मृत्युका भय—समझता है, वह मुमूर्ष हो रहा है। कोई बात पूछनेपर जल्दीसे और असम्बद्ध उत्तर देता है। काम-काजके सम्बन्धमें असफल होनेपर या प्रेमका बदला न मिलनेके कारण विषाद। गृहस्थीके सम्बन्धमें उदासीनता (सिपिया)।

मस्तक।—मानो खोपड़ी उड़ जायगी (बैप्टी, कैम, कोबाल्ट, नेट्रम-क्लोरेटम, इयुक्का)। मानसिक थकन, बहुत बढ़ने या जरायु रोगके प्रतिक्षिप्त कारणसे शिरामें तेज़ और टपक-जैसी तकलीफ़, मानो माथेमें तरङ्गें उठ रही हैं या माथेकी हड्डी पर्यायक्रमसे खुलती और बन्द होती है (कैनाब-इण्डिका), माथा बहुत बड़ा मालूम होता है। ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो भीतरसे बाहरकी ओर कोई दबाव डाल रहा है।

आँख।—पलकोंका स्नायु-शूल (Ciliary Neuralgia), आँखके गोलेमें लगातार तेज सलाई बेधने जैसा दर्द। कनपटी या कपालमें, मूर्द्धा और सरके पश्चाद्देशतक दर्द, सीढ़ी चढ़नेसे बढ़ना और सोनेपर घटना। दीयेकी रोशनीसे डर (Photo-phobia from artificial light), दो दिखाई देना (Diplopia); दृष्टि-पथपर काले-काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देना (Muscoe volitan)।

पाकाशय।—मेरुदण्ड और गर्दनके पीछे दबावसे पैदा हुई मिचली और वमन। पेटके ऊपरी भागमें खालीपन मालूम होना (सिपि, सल्फ)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्राव अनियमित; सुस्ती लानेवाला (ऐल्यू, काक्यु); देरसे रजःस्राव होना या रज रुकना; मानसिक उद्वेग; शीत लगने या बोखारकी वजहसे; इसके साथ ही ताण्डव रोग या मूर्च्छावायु (Hysteria)। रजःस्रावके समय मानसिक विकार (रजःस्रावके बाद मानसिक उत्तेजना—ऐकोन); बायें स्तनके नीचेवाली जगहमें दर्द, खासकर अनूढ़ा बालिकाओंका (दो ऋतुओंके मध्यमें होनेपर—आस्टि; थोड़े रजःस्रावके साथ—पल्स; वातकी वजहसे—रैनान, बल्बो; प्रदरके साथ—सियानो); गुल्मवायु, अपस्मार (मृगी) की वजहसे पेशियोंका आक्षेप (Spasm); जरायु-विकारके प्रतिक्षिप्त (Reflex) लक्षण सब; ऋतुकालमें बढ़ना। ताण्डव रोग (Chorea), बाईं ओर अधिक। अण्डाधार या जरायुकी उत्तेजना (Irritation) की वजहसे शरीरके कितने ही स्थानोंमें तेज़ कतरने और बिजलीकी लहरकी तरह दर्द; जरायु और अन्त्राशयके पासवाले स्थानमें एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक तेज, सलाई बेधने जैसा दर्द। गर्भावस्थामें—अनिद्रा; नकली प्रसव-वेदना; तीसरे महीने गर्भ-स्राव (सैबाई, अन्तिम आधे भागमें—सिकेलि; दुर्घटनाकी वजहसे—आर्निका; क्रोध आदिसे उत्पन्न—कैमो; बार-बार गर्भ-स्राव—उपदंशके विषकी वजहसे होनेपर—मर्क-कोर; श्लेष्मा-प्रधान धातुके कारण होनेपर—कैल्के; यक्ष्मा आदि दोषसे होनेपर—वैसिलिन; उद्भेद निकलनेवाली प्रकृति होनेपर—सलफर; अस्थि-वृद्धि न होनेका रोग रहनेपर—सिलि; साधारणतः वाइवर्नम ओप्युलस और वाइवर्नम-प्रूणिफोलियम)। प्रसव-वेदनाकी पहली अवस्थामें कम्पन; स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे आक्षेप; दर्द बहुत ही तेज़। आक्षेपिक; क्लान्तिजनक, बहुत देरतक ठहरनेवाला—सामान्य शब्दसे वृद्धि। प्रसवके बादवाला दर्द, योनि पार्श्वमें दर्दकी अधिकता। वात-मिला बाधकका दर्द (Rheumatic Dysmenorrhœa)।

बहुदर्शी चिकित्सकगण कहा करते हैं, कि गर्भवतीके अन्तिम महीनेके अन्तिम कई दिवस इस दवाको सेवन करनेपर (यदि उपयोगी लक्षण रहें) प्रसवका दर्द बहुत थोड़ी देरतक रहता है और बिना तकलीफ़के प्रसव हुआ करता है (यदि ऐसा मालूम हो कि प्रसवमें तकलीफ़ होगी तो अन्तिम

महीनेमें—आर्निका ; उदराध्मान आदि रहनेपर—कैल्के-फ्लू ; कब्जियत रहनेपर—कालिन्सोनिया ; पालोट दर्दकी अधिकता रहनेपर—कालोफाइलम ; अजीर्ण रोग होनेपर—पल्स)। बहुत रजःस्राव होनेपर (Menorrhagia), पीठसे लेकर पुट्ठेकी राहसे उरुदेशतक रुका हुआ या बहुत दबावकी तरह दर्द। प्रसवके बादका स्राव रुका हुआ (Suppressed) ; मानसिक उद्वेग या ठण्ड लगनेके कारण स्रावका रुकना ; पानी जैसा और छोटे थक्के-मिला (With clots) स्राव।

हृत्पिण्ड।—जरायु या डिम्बाधारकी बीमारीके कारण हृद्रोग ; हृत्पिण्डकी क्रिया एकाएक निरुद्वेग-सी हो जाती है ; श्वास रुकनेकी तैयारी ; थोड़ा भी शरीर हिलानेपर कलेजा धड़कना (डिजिटेलिस) ; अनियमित गति और काँपती हुई नाड़ी ; कलेजेमें दर्द—बाईं बाँहका सुन्न पड़ जाना (ऐकोन) ; मालूम होता है, कि इसी शरीरके साथ बँधा हुआ है।

पीठ।—पैशिक वात-वेदना (पेशियोंके वातका दर्द), पीठ और गर्दनकी पेशियोंका अकड़ना ; सुन्न और संकुचित हो जाना ; मेरुदण्डमें (Spine) स्पर्श असह्य ; ज्यादा सिलाई करना, टाइप राइटर लिखना या बहुत अधिक पियानो बजानेके कारण इस बीमारीकी उत्पत्ति (ऐगार, रैनान, बल्बो)। पंजरेके भीतरवाला (Inter-costel) वातका दर्द। पीठकी ऊपरवालीकी कशेरुका या शिर-दण्डके बन्धस्थलपर (Prosterior Spinal Sclerosis) में बिजलीकी लहरकी तरह तेज और क्षणभर रहनेवाला दर्द (मैग-फास)।

प्रत्यङ्ग।—अशान्ति और बेचैनी मालूम होना ; प्रत्यङ्गोंकी पेशियोंका (Muscular) दर्द (Soreness)। पेशियोंके स्थूल अंशके वातका दर्द ; सङ्कोचन और सुई बेधनेकी तरह मालूम होना, इसके साथ ही दोनों पैरोंका काँपना और इसी कँपकँपीके कारण चल न सकना ; स्नायविक चञ्चलता (नीलापन और शीतके साथ प्रत्यङ्गोंका कम्पन—ऐगर, थाइराइडिन)।

निद्रा।—नींद न आना। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय मस्तिष्ककी उत्तेजना। नींदके समय चौंक उठता है (बेल, कैमो)।

वृद्धि।—छूनेपर, शरीर हिलानेसे, ठण्डी हवा लगनेपर, गर्म कमरेमें रहनेके समय, रातमें और सवेरे, सन्ध्या होनेपर, गुल्फके पीछेवाली पेशीके अगले

भागमें या कण्डरामें दर्द और आर्त्तव-स्रावके समय, रजःस्रावके परिमाणके अनुसार तकलीफ़ घटा-बढ़ा करती है।

घटना।—विश्रामके समय, निर्मल हवा लगनेपर, गर्म प्रयोगसे और भोजनके बाद घटना।

सम्बन्ध।—जरायु और वातके दर्दके सम्बन्धमें ऐक्टिया, कालोफाइलम और पलसेटिलाके सदृश है। बेचैनी और मृत्यु-भयमें—ऐकोन; वातमें—पल्स, ब्रायो; पार्श्व-वेदनामें—लाइको; अकेलेमें भय—आर्सेनिक; चट्टा काटनेपर—कैल्केरिया, ऐगार, लिलियम और सिपिया।

शक्ति।—३ से २००। ३य दशमिक अधिक व्यवहृत होती है।

ऐक्टिया स्पाइकेटा

(ACTIA SPICATA)

दूसरा नाम।—वेन-बेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें इसकी उपयोगिता दिखाई देती है; छोटी सन्धियोंमें वातका दर्द; पाकाशयमें कैन्सर या कर्कट रोग; भयकी वजहसे बीमारी; आमवात; दन्तशूल इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—छोटी सन्धियोंमें दर्दके साथ इसका सम्बन्ध (कालोफाइलम) है, खासकर मणिबन्ध (कलाई) पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। दाहिना हाथ और दाहिनी हाथकी कलाई ही इसका प्रधान आक्रमण स्थल है। छेदनेकी तरह दर्द इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है। व्यायामके बाद हड्डियोंके भीतर दर्द मालूम होना। ऐक्टिया-रेसिमोसाके प्रत्यङ्गोंके कम्पनके बदले ऐक्टिया स्पाइकेटासे शरीरके सभी स्थानोंमें टपक-मिला दर्द आराम होता है। यकृत और वृक्क-प्रदेशमें (मसाना) दर्द अधिक रहता है।

लक्षणावली

मन।—रातमें सोनेपर मृत्यु-भय; प्रलाप; डर वगैरह मानसिक उत्तेजना।

मस्तक।—मतवाला जैसा भाव; सरमें चक्कर आना; चारों ओर नीले रङ्गकी रेखा।

ज्वर।—पानी पीने बाद कँपकँपी; कम्पनके साथ डकार इत्यादि।

मुख-गह्वर।—ऊपरी हनुमें भयानक दर्द, क्षय हुए दाँतको छेदकर हनुकी पेशीसे कनपटी (Temples) या कपालतक फैला हुआ दर्द। चेहरे और माथेमें अधिक पसीना।

पाकाशय।—ऊपरी उदरमें छेदने और सलाई घुसाने जैसा दर्द मालूम होना और वमन। श्वास-कृच्छ्रताके साथ ऊपरी पेटमें सङ्कोचनकी तरह यन्त्रणा (मानो चिपक जाता है), मानो साँस रुक जाती है। भोजनसे आलस्य और एकाएक सुस्ती।

प्रत्यङ्ग आदि।—कलाई, अंगुली, गुल्फ, पैरकी अंगुली वगैरह छोटी सन्धियोंके स्थानपर वातका दर्द (अंगुली आदिके अकड़नेके साथ मणिबन्ध और अंगुलियोंमें संकोचनकी तरह दर्द—कालोफाइलम); अंगूठेकी पहली सन्धिमें बेधने जैसा दर्द और दूसरी अंगुलियोंमें छेदने और सुई बेधनेकी तरह दर्द—(अस्थिवेष्टमें स्पर्श असह्य रहनेके साथ—लिडम; विश्रामसे या हिलानेपर, मणिबन्ध और अंगुलियोंकी पीठकी हड्डीमें दर्द—रूटा; कलाईमें पीसनेकी तरह और अंगुलियोंकी सन्धियोंके स्थानपर छेदने जैसा दर्द; स्थिर रहनेपर दर्दका बढ़ना—रस-टक्स; अंगुलियोंका फूलना और सञ्चालनके समय अकड़नकी तकलीफ़ मालूम होना—पल्स; अंगुली उत्तप्त और पीले रङ्गकी सूजन; हिलानेपर बढ़ना—ब्राई); कलाई सूजी हुई, लाली (थोड़ा भी हिलानेपर दर्द बढ़ जाना—ब्राई)। पक्षाघातकी तरह बाँहकी दुर्बलता। बोलने-चालनेके बाद एकाएक आलस्य मालूम होने लगना।

सम्बन्ध।—नक्सके बाद खूब फायदा करता है। सदृश—ऐक्टिया-रेसिमोसा, कालोफाइलम, लिडम, ब्रायोनिया, रियुटा।

शक्ति।—३री दशमिकसे ६ ठीं दशमिकतक।

ऐडोनिस वर्नेलिस

(ADONIS VERNALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछका अर्क; इसका सार भाग विचूर्ण (ऐडोनिडिन) है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है—अण्डलाल मिला पेशाब; शोथ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; दमा।

उपयोगिता और आभास।—यह हृत्पिण्डकी बीमारीकी एक महौषधि है। नाड़ीका विकार दूर करता है और हृत्पिण्डकी संकोचन-शक्तिको बढ़ाता है; इसके द्वारा पेशाब आनेवाली शक्ति भी बढ़ा करती है। हृत्पिण्डका कपाट या द्वारावरोधिनी (Valves) की गड़बड़ीमें इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक और प्रसिद्ध है। हृत्पिण्डका शोथ या हृत्पिण्डके बाहरी आवरणमें जल-सञ्चय होना रोगकी भी एक अत्यन्त आवश्यक दवा है।

लक्षणावली

मस्तक।—हलका मालूम होना; ललाट और शिरोपश्चात्से लेकर कनपटी या शङ्खदेश (Temples) होकर आँखतक फैला हुआ सर-दर्द। सरमें चक्कर आना। माथेकी त्वचामें खींचन मालूम होना।

मुख-विवर।—मुँहमें लसदार भाव। जीभ मैल चढ़ी, पीली, दर्द-भरी और झुलसी हुई-सी मालूम होना (जीभका पार्श्व झुलसा हुआ मालूम होना—पल्स, सिपिया; जीभका अगला भाग—लाइको, सोराइन, सैंगुइनेरिया, ऐमोन-ब्रोम, आइरिस, सिपिया; पहली बार भोजनके एक घण्टा बाद—मर्क-बिन)।

हृत्पिण्ड।—हृद्कोषका आवरक सम्बन्ध (Mitral) और हृद्-धमनीके रक्तका पीछे लौटना या पुनरुद्गरण (Regurgitation) (आरम, कैक्टस, कानवेलेरिया, लौरोसिरेसस, स्पाइजि, जिङ्कम)। हृदावरक-झिल्लीका प्रदाह (Pericarditis), हृद्-स्पन्दन (कलेजा धड़कना) और श्वास-कष्ट; शिरा आदिमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे सूजन; हृत्पिण्ड-रोगसे पैदा हुआ दमा।

पाकाशय ।—बहुत भार मालूम होना । भूखकी अधिकताकी वजहसे मानो पाकाशय ही चबाया जा रहा है । ऊपरी पेटमें खालीपन मालूम होना । घरसे बाहर रहनेपर घटना ।

पेशाब ।—पेशाबके ऊपर तेल जैसा पदार्थ तैरा करता है ।

निद्रा ।—बेचैन नींद ; भयङ्कर सपने देखा करता है ।

प्रत्यङ्ग ।—गर्दनके पीछेमें दर्द ; मेरुदण्ड अकड़ा और उसमें हमेशा दर्द रहना ।

एडोनिससे उत्पन्न उपचार ।—(Alkaloid) **ऐडोनाइडिन** यह हृत्पिण्डका बल बढ़ानेवाला और पेशाब लानेवाला है । धमनी आदिकी संकोचनी शक्तिको बढ़ाता है, हृत्पिण्डका फैलना बढ़ाता है और देरतक ठहरनेवाला बनाता है और शिराओंके रक्त छोड़नेमें सहायता पहुँचाता है ।

सम्बन्ध ।—समतुल्य—डिजिटेलिस, स्ट्रोफैन्थ, कानवे ।

शक्ति ।—मूल अर्क, ५ से २० बून्दतक । इसके सारका १म दशमिक विचूर्ण (१x) एक ग्रेन मात्रा ।

ऐड्रेनैलिन

(ADRENALIN)

[विचूर्ण और टिंचर]

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—आँतकी ग्रन्थियोंका दोष ; त्वचाका बदरङ्ग (विवर्ण) हो जाना ; दुर्बलता, रक्त-मिला पेशाब, हृत्कम्पन (कलेजा काँपना) वगैरह रोगोंमें लाभदायक है ।

इस्क्यूलस ग्लैब्रा

(AESCULAS GLABRA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकाके एक तरहके वृक्षके पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—कब्जियत; खाँसी; पाकाशयमें मरोड़; बवासीर; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; पक्षाघात; बोलीकी जड़ता; सरमें चक्कर आना; गर्दनका कड़ापन या गर्दन अकड़ना।

उपयोगिता और आभास ।—स्वस्थ शरीरमें इस दवाकी परीक्षा करते समय मालूम हुआ है, कि मलान्त्र या मलनालीसे इसका बहुत निकटस्थ सम्बन्ध है और इसके अधिकांश लक्षण शरीरके इसी अंशमें प्रकट होते हैं। अतएव मलनालीके उन लक्षणोंवाली बीमारीमें यह ज्यादा लाभदायक है। मलद्वारमें गर्मी और संकोचन, मलद्वारका बाहर निकलना (काँच निकलना) और अर्श, खासकर जो आलस्यमय जीवन व्यतीत करते हैं और शराब आदि पिया करते हैं, उनकी बीमारीमें यह अधिक उपयोगी है।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्करके साथ मोह। स्थिर दृष्टि; जीभके पक्षाघातकी वजहसे बोलीमें जड़ता (बोलते-बोलते रुक जाती है—कैलि-ब्रोम; बात छोड़ जाता है—कैमो; बात या बातका कोई अंश छोड़ देता है—नक्स; जड़वाक् या तोतलाना—स्ट्रैमो; अनुपयोगी वाक्य या वाक्यांशका व्यवहार करता है—लाइको; पक्षाघातसे आक्रान्त—कास्टि; सूजन और अकड़न, मानो पक्षाघात-ग्रस्त—डलकैम; जीभके बहुत मोटापनकी वजहसे बोलनेकी शक्तिका प्रायः न रहना—जेल्स)। दृष्टि-शक्तिका घटना।

पाकाशय ।—मिचली, भूख न लगना इत्यादि।

मलान्त्र और मल ।—दर्द-भरा, गाढ़ा बैंगनी रङ्गका मसा या अर्श—मलमें कड़ापन, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नीला रङ्ग—कार्बो-वेज; मलमें कड़ापनके साथ दर्द-भरा, जलन-भरा और श्लेष्माका स्राव करनेवाला बवासीर—ऐमोन-म्यूर)। कड़ा गांठ-गांठ मल। गुह्यद्वार या मलान्त्रका बाहर निकलना; गर्मी और उसमें संकोचन मालूम होना (बच्चोंका काँच निकलना)—फेरम-फास; उदरामय, रक्त-स्राव और कूथनके साथ मलान्त्रका बाहर निकलना—ऐलो; पाखाना फिरनेके समय थोड़ा वेग देनेपर—इग्ने; हर बार पाखाना हो आनेपर छींक और उसके साथ ही साधारण वेग और उदरामय—पोडो; पेशाब करनेके समय—ऐसिड-म्यूर)।

प्रत्यङ्ग।—त्रिकास्थि (Sacrum) और दोनों पैरोंका पतला और क्षीण हो जाना। कम्पन—पैर काँपनेकी वजहसे चल नहीं सकता (ऐकिया-रेसि ; नीलापन और ठण्डापनके साथ पैर आदिका काँपना—ऐगरि ; कमजोरी और सुस्तीके साथ—थाइराइडिन)। फेर आदिमें संकोचन पैदा होनेका लक्षण (गुल्फ स्थानकी पेशीके अगले भागका सिकुड़ना—ऐमोन-म्यूर, कास्टि, साइलिक्स)। इसके साथ ही धीरे-धीरे घटनेवाली दृष्टि-शक्ति और प्रत्यङ्गोंकी आंशिक निष्क्रियता (Ptosis) या पक्षाघात।

साधारण लक्षण।—आक्षेप या तड़काके बादका पक्षाघात।

सम्बन्ध।—सदृश—ऐलो, कालिन्सोनिया, इस्क्यूलस-हिप, इग्नेशिया, नक्स-वोमिका।

शक्ति।—१ली दशमिकसे ३री दशमिक।

इस्क्यूलस हिपोकैस्टेनम

(AESCULAS HIPPOCASTANUM)

दूसरा नाम।—कटूस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—भारतवर्ष और अमेरिकामें पैदा हुए वृक्षके फलकी गिरीसे अर्क तैयार होता है। अमेरिकन मतसे ताजे फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मलद्वार और कमरकी बहुत-सी बीमारियाँ ; कब्जियत ; खाँसी ; अर्श ; सरका दर्द ; आँत उतरना ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारी ; कामला ; कटि-शूल ; प्रोस्टेट-ग्रन्थिकी बीमारी ; त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्द ; स्वाद बिगड़ना ; गले और मुख-गह्वरकी बीमारियाँ ; जीभकी बीमारी ; जरायुका अपने स्थानसे हटना।

उपयोगी धातु।—जिन्हें बवासीर है, जिनके पाकाशयमें विकार हैं, सर्दीका धातु है और जो दुःखित हैं और जिन्हें सहजमें ही क्रोध आ जाता है, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है।

आभास।—कमरमें दर्दके साथ अर्श और तालुमूलकी कोषिक झिल्ली प्रदाहित (Follicular pharyngitis) रोगमें यह अधिक लाभदायक

है। इसके कुछ प्रधान निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं—(१) दुःखित और क्रोधी स्वभाव, (२) पश्चात कटिदेश और नितम्बमें भार और क्षीणता मालूम होना ; (३) कमरमें लगातार धीमा-धीमा दर्द, रोगी बहुत कष्टसे चल सकता है और शरीर झुकाकर खड़ा हो सकता है ; (४) ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमें कुछ पतली खीलें गड़ रही हैं ; (५) अर्श आदिकी शिराका फूलना, इसके साथ ही मलद्वार सूखा और भरा हुआ मालूम होना ; (६) प्रदर—नितम्ब और दोनों उरु-शिखरमें क्षीणता मालूम होनेके कारण रोगिनीके लिये चलना बहुत कठिन हो जाता है और बहुत तकलीफ़ होती है।

लक्षणावली

मन।—विमर्ष, अवसादग्रस्त ; बहुत क्रोधी स्वभाव ; सामान्य कारणसे ही धीरज नष्ट हो जाता है, धीरे-धीरे चित्तमें स्थिरता आती है ; सभी विषयोंमें असन्तुष्ट (कैमो) ; किसी विषयमें मन नहीं लग सकता (इथ्यूजा)।

मस्तक।—मस्तिष्ककी जड़ता। मिचली या वमनेच्छाके साथ ललाट देशमें दबाव मालूम होना, माथेकी त्वचामें दर्दके साथ मस्तकके पश्चात् देशसे लेकर ललाट-देशतक फैलनेवाला दर्द—सवेरे बढ़ना, ललाटदेशके दाहिनी ओरसे बाईं ओर स्नायुकी तरह तेज और जल्दीसे फैलनेवाला दर्द और इसके अन्तमें ऊपरी पेटमें उछलने-जैसा दर्द।

आँख।—पलक और बाईं आँखकी नीचेवाली पेशीका फड़कना। बाएँ अक्षि-कोटरमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। आँखसे आँसू बहना ; इसके साथ ही आँखोंमें भार और उत्ताप मालूम होना।

नाक।—पतली सर्दी (Fluent Coryza) पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव और जलन ; स्पर्श सहन न हो और नाकसे खींची हुई हवा बहुत ठण्डी मालूम हो।

मुखगह्वर।—तालुमूल या गलनालीका कोषिक-प्रदाह (Follicular Pharyngitis), कण्ठनालीमें बहुत जलन, छुआ न जाना ; सूखापन और रुखड़ापन मालूम होना ; यकृतमें रक्त-सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे और अर्शके धातुवाले मनुष्योंकी बीमारी। जलन और सुई या डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा ; जिह्वा-मूलके दोनों पार्श्वके गह्वरोंका (Fauces) संकुचित मालूम होना (एपिस, बेल)।

वक्षके भीतर ।—एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व तक सुई वेधने जैसा दर्द—वह दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैल जाता है ।

पाकाशय ।—दर्द और चबाने जैसे दर्दके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयमें पत्थरके एक टुकड़ेकी तरह कोई भारी चीज़ रखी हुई है (ब्राइ, नक्स, पल्सेटिला); भोजनके तीन घण्टे बाद, ठीक ऐसा ही स्पष्ट मालूम होता है, यकृत-प्रदेशमें भरापन और स्पर्शका सहन न होना ।

मलान्त्र और मल ।—गुह्यद्वार या मलान्त्र (Rectum) सूखा और गर्म, मानो पतली खोलोंसे भर रहा है ; गलनालीसे ऊपर फैलनेवाला कतरने-जैसा दर्द (इग्ने, सलफर); अन्धबलि या बादी बवासीर—मसेमें दर्द, जलन और उसका रङ्ग बैंगनी (इस्क्यूलस-ग्लैबरा देखिये), कभी-कभी उससे रक्त-स्राव होता है । मलान्त्रमें दर्द, पूर्ण (भरा) मालूम होना (कांटो अड़नेकी तरह—ऐनाकार्ड), जलन और खुजलाहट (सलफर); मल कड़ा, सूखा ; कड़ा मल, पाखाना फिरनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होना । मलनाली सूखी और गर्म ; पश्चात कटि और त्रिकास्थिके बीचवाले प्रदेशमें (Lumbo-sacral region) लगातार ऐंठन (Aching) । पाखाना हो जाने बाद—मलान्त्रमें भार मालूम होना और मलद्वारमें बहुत देरतक ठहरनेवाला तेज़ दर्द (ऐलो, इग्ने, ऐसिड-म्यूर, सल्फ) ।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—पाखाना फिरनेके समय मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव (Discharge of Prostratic fluid—ऐल्यू, कास्टि) ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—विटपास्थि सन्धि अर्थात् गुह्यद्वारसे जननेन्द्रियके मध्यवर्त्ती प्रदेश (Pubic Symphysis) में टपकका दर्द । जरायु-भ्रंश (Uterine Prolapsus) के साथ प्रदर,—त्रिकास्थि और पश्चात कटिके संयोगस्थलका सुन्न हो जाना ; गाढ़े, पीले रङ्गका, लसदार, त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव ; ऋतु-स्रावके बाद बढ़ना ।

पीठ ।—पीठमें बहुत दर्द ;—पश्चात् कटि और त्रिकास्थिके सन्धि स्थानमें (Lumbo sacral articulation)—थोड़ा और दीर्घकाल स्थायी दर्द ; कभी-कभी त्रिकास्थि वगैरह प्रदेश भी आक्रान्त हो जाते हैं । श्रोणि या पश्चात् कटि सुन्न हो पड़ती है—गर्भावस्थामें, जरायु-भ्रंशकी अवस्थामें और प्रदाह रोगमें ; टहलने और सर झुकाने (Strooping) के समय रोगी बैठ

जाता है या सो पड़ता है। पीठमें भार या सुन्न मालूम होना। टहलनेके समय पैर घूम जाते हैं। तलवा थका हुआ, दर्द-भरा और फूला हुआ मालूम होता है। हाथ-पैर फूलते हैं और धोनेके बाद लाल हो जाते हैं। बाँह, दोनों पैर, मेरुदण्ड वगैरहमें मानो पक्षाघात हो गया हो।

सम्बन्ध।—सदृश।—अर्श आदि रोगमें—ऐलो, कोलिन, इग्ने, ऐसिड-म्यूर, नक्स, सलफर, कालिन्सोनियाके प्रयोगसे जब अर्शमें कुछ फायदा दिखाई दे तो इस्कूलससे एकदम आराम हो जाता है।

नक्स और सलफरसे जब अर्शमें पूरा-पूरा लाभ नहीं होता, तब इस्कूलसके प्रयोगकी बहुत आवश्यकता होती है। गलेके भीतरके लक्षणोंमें केलि-बाई।

वृद्धि।—देह संचालनसे; पीठमें लगातार दर्द और तकलीफ़, चलने और सर झुकानेपर पैदा हो जाता है। सर्दी वगैरह ठण्डी हवाके सेवनसे वृद्धि।

घटना।—स्थिर हो रहनेपर और ठण्डे प्रयोगसे घटना।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक शक्ति।

इथियोप्स ऐण्टिमोनैलिस

(AETHIOPS ANTIMONALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दो भाग सल्फ्युरेट आव ऐण्टिमोनी और एक भाग पाराका विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है—आँखोंका प्रदाह; कानका स्राव; गण्डमाला; चर्म-रोग; उपदंश।

उपयोगिता और आभास।—श्लेष्मा प्रधान-धातु-ग्रस्त मनुष्यकी आँख, कान, त्वचा वगैरहकी बीमारीमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

लक्षणावली

त्वचा।—कच्छु (खसड़ा) की तरह खुजलानेवाले, दर्द-भरे उद्भेद (Eruptions) और मधुचक्रकी तरह लाल रङ्गका एक तरहका चर्म-रोग (Favus); श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्योंका विचर्चिका रोग (Psoriasis)

और गण्डमाला दोष-युक्त (Scrofulous) मनुष्यकी आँखोंका प्रदाह, बदबूदार कर्ण-स्राव (कानसे पीब बहना—Otorrhœa), वंश-परम्परागत उपदंश।

शक्ति।—३री दशमिक विचूर्णसे ६ठे क्रमतक।

इथ्यूजा सिनैपियम

(AETHUSA CYNAPIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युरोपके एक तरहके फूलवाले गाछ या पौधेसे स्पिरिटके सहारे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें यह लाभदायक है:—मस्तिष्ककी क्लान्ति ; बच्चोंकी विसूचिका ; आक्षेप ; खाँसी ; प्रलाप ; फटना ; आँख और ग्रन्थिकी बहुत-सी बीमारियाँ ; सरका दर्द ; हिचकी ; मानसिक जड़ताका भाव ; बचपनके समयका पक्षाघात ; अनिद्रा ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना ; वमन।

उपयोगिता और आभास।—जो बच्चे दूध सहन नहीं कर सकते और जो सब युवक मनःसंयोग नहीं कर सकते ; बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजनाके साथ बच्चोंके पाकाशय और आँतोंका (Gastro-intestinal) रोग आदिमें यह विशेष उपयोगी है। इससे पैदा हुए सब लक्षणोंकी प्रबलता (Violence) और बच्चोंका दूध सहन न होना, इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है। आगे लिखे कुछ सिद्धिप्रद लक्षण—(१) सब लक्षणोंकी तेजी, बहुत वमन, एकदम धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप, बहुत तकलीफ़ और बहुत ही अधिक विकार। (२) बहुत उत्ताप और प्यास न होना। (३) बहुत ज्यादा पसीना निकलना, बहुत पसीना निकलनेके समय भी शरीरका कपड़ा नहीं उतारना चाहता। (४) नाक और ओठमें एक तरहका दाग (Lenia Nasalis) ; मुखमण्डलका अत्यन्त यन्त्रणा-सूचक सङ्कोचन विशेष। (५) दूधका बिलकुल सहन न होना ; पीते ही जमकर दही जैसा वमन हो जाता है। (६) मलका पतलापन—मल पतला हरी आभा लिये (Greenish) ; मलके साथ थक्का-थक्का गाढ़ा दूध मिला रहता है ; पाखाना होनेके पहले अम्ल-शूल (Colic) और पाखाना हो जाने बाद सुस्ती और औंघाई। (७) वमनके समय पसीना

निकलना और बहुत तकलीफ़ मालूम होना। (८) वमन या पाखाना हो जाने बाद औंघाई।

लक्षणावली

मन।—बच्चेकी जड़-बुद्धि; सोचनेकी शक्तिका न रहना; किंकर्त्तव्य-विमूढ़ भाव। बेचैनी, उत्कण्ठा-भरा, रोनी प्रकृति। ऐसा भ्रम दिखाई देना मानो चूहा आदि जन्तु चल-फिर रहे हैं (ऐक्टिया, लैक-कैन); मन:संयोगकी शक्तिका न रहना (ऐलेट्रिस-फेरि, एइलेन्थस, ऐवेना-सैट, बोविस्टा, डल्का, आइरि-वार्सि, लैक-कैन, लाइकोपस, मिलि-लोट, ऐसिड-आक्जैलिक, ऐसिड-फास); औंघाई (वमनके बाद); बच्चा बुड्ढे-जैसा दिखाई देता है।

डाक्टर गार्नसी कहते हैं—"बच्चोंकी और कितनी ही बार जवानोंकी मानसिक यन्त्रणा बढ़ जाना और रोना—इस दवाका अत्यन्त साधारण लक्षण है। रोग जितना ही बढ़ता जाता है, उतना ही निर्जनता-प्रिय और रोना भी बढ़ता जाता है।

मस्तक।—भयानक यन्त्रणा, मानो कोई माथा जोरसे पटककर टुकड़े-टुकड़े कर रहा है (कार्बो-ऐनिम)। माथा आदि मानो बँधा हुआ है और शिकंजेमें (As if in vice) कसा हुआ है (कैक्टस, काक्युलस, मैग-सल्फ, मार्क, थिरिड)। मेरुदण्डमें फैलनेवाला सरके पिछले भागका दर्द—सोने और दबानेपर घटना (सोनेके समय—कैल्के-फास, क्यूप्रम, हेलिबोरस, इग्नेशिया, ओलियैण्डर; दबानेपर घटना—साइमेक्स—लेक्)। माथेका दर्द, वायु छूटनेपर घटना (साइक्यूटा)।

आँख।—रोशनीसे भय (आर्स, बेल, कैल्के, इयुफ्रे, हिपर, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स, रस); श्लेष्मासे पैदा हुआ आँखोंका प्रदाह (Conjunctivitis आँख उठना); योजकत्वक् (Conjunctiva) और पलककी भीतरवाली ग्रन्थिका फूलना; पलकोंका किनारा प्रदाहित, रातमें पलक सट जाती है, सवेरे पानी लगाकर छुड़ानी पड़ती है (बोरैक्स, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, साइक्यूटा, क्रोकस, इग्ने, लाइको, फास, पल्स, रसटक्स, सिपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फर), अकड़नके समय आँखें नीची किये रहता है और पुतली फैली रहती है।

कान।—कानमें सुई बेधने-जैसी तकलीफ़। ऐसा मालूम होता है, मानो कोई गर्म चीज़ कानसे निकल रही है; कानमें साँय-साँय शब्द।

नासिका।—गाढ़ा सर्दीका स्राव। नाकको ठोरमें दादकी तरह उद्भेद; बार-बार छींकनेकी इच्छा।

मुखमण्डल।—चेहरेपर बहुत मानसिक और शारीरिक यन्त्रणा—प्रकट होती है और नाकके बाहरी छेदसे, ओंठके संयोगस्थलतक, एक सफ़ेद रेखा मिली सिकुड़न प्रकट होती हैं। उसे नैसिक रेखा (Linea Nasalis) कहते हैं—यह एक खास लक्षण है।

मुख-गह्वर।—विशुद्ध।—ऐसा मालूम होता है, कि जीभ बहुत लम्बी हो गयी है। कण्ठनालीमें जलनके साथ निगलनेमें तकलीफ़ मालूम होती है।

पाकाशय।—एकदम प्यासका न रहना (एपिस); दूधका सहन न होना, किसी तरहका दूध पचा नहीं सकता; पीनेके साथ ही जमी हुई दहीके आकारमें कै हो जाता है; कै हो जाने बाद सुस्ती आ जानेके कारण बच्चा सो जाता है (मैग-कार्ब देखिये); जिन बच्चोंको दाँत निकल रहा हो, उनका अजीर्ण रोग; फेन-भरा दूधकी तरह पदार्थका ज्यादा वमन होना या पीली आभा लिये वमन और उसके बाद खट्टा दूध और पनीरकी तरह पदार्थकी कै होती हैं, भोजनके प्राय: एक घण्टा बाद खाया हुआ पदार्थ कै हो जाता है और बहुत-सा हरे रङ्गका पदार्थ कै हुआ करता है (खट्टे गन्ध-वाला पाखाना होनेके साथ दहीकी तरह पदार्थ वमन—कैल्के-कार्ब); खानेके पदार्थ देखनेके साथ ही मिचली (आर्स, कोलचि, सिपि); ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशय उलट गया है और वक्षस्थलतक जलन मालूम होती है। छेदने जैसा दर्द।

अन्त्राशय।—भीतर और बाहर शीत मालूम होना और आँतोंमें दर्द, शूल वेदनाके अन्तमें वमन, सरमें चक्कर आना और सुस्ती; पेट वायुसे भरा, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। नाभि-प्रदेशमें कुटकुटाहटका शब्द।

मल।—शूल-जैसे दर्दके अन्तमें, काँखनेके साथ अजीर्ण; पतला, हरी आभा लिये मल-त्याग, पाखाना होनेके बाद बहुत सुस्ती और औंघाई। बच्चोंका गर्मीके दिनोंका अतिसार; विसूचिका (Cholera Infantum) बच्चेके प्रत्यङ्ग सब बरफकी तरह ठण्डे—शरीर लसदार पसीनेसे भरा; बच्चा मोहाच्छन्नकी तरह पड़ा रहता है, टकटकी लगाकर देखता रहता है और पलक नहीं

गिरती। दुरारोग्य कब्जियत, मानो आँत प्रभृति सब यन्त्र निष्क्रिय हो गये हैं। मूत्राशयमें कतरनीकी तरह दर्द और बार-बार पेशाबका वेग होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अस्त्रके चोटकी तरह दर्द। फुन्सियोंकी तरह (Pimples) उद्भेद; उत्तापके स्पर्शसे खुजलाहट। आर्त्तवका स्राव पानीकी तरह। स्तन-वृन्तका फूलना और उसमें कतरनीकी तरह यन्त्रणा।

श्वास-यन्त्र।—साँस लेने और छोड़नेमें कष्ट, वाधा मिला और उससे उत्कण्ठा पैदा हो जाती है; फेफड़ेमें दर्द-भरा संकोचन; हृद्स्पन्दन। यन्त्रणासे रोगीकी बोली नहीं निकलती।

प्रत्यङ्ग।—खड़े होने या सर ऊँचा रखनेकी शक्तिका न रहना (ऐब्रोट); पीठमें कस जानेका भाव। कटि-देशमें लगातार दर्द। निचले प्रत्यङ्ग आदि कमजोर। हाथ-पैरोंका सुन्न हो जाना। अपस्मार या मृगीकी तरह अकड़न—मुट्ठी बाँध लेता है, चेहरा लाल, नज़र नीची, पुतली स्थिर और फैली हुई; मुँहसे फेन निकलना; दोनों जबड़े कसे और नाड़ी क्षीण; कठिन और द्रुत। वमन, पाखाना होना और मृगीके दौरेके बाद बहुत कमजोरी, सुस्ती और औंघाई।

त्वचा।—भ्रमणकी वजहसे ऊरुदेशकी त्वचा (दाँत निकलनेवाले बच्चेका एक तरहका उद्भेद या त्वाच रोग—मध्य द्रोही (Interrigo—कास्टि, लाइको)। सामान्य परिश्रमसे ही पसीना निकल आना। शरीरकी त्वचा बरफकी तरह या लसदार पसीनेसे भरी। लसिका-ग्रन्थियाँ (Lymphatic glands) फूली। सन्धि-प्रदेशमें खुजलानेवाले उद्भेद। तलहत्थीकी त्वचा सूखी और सिकुड़ी हुई; काला दाग। सर्वाङ्गीन शोथ (Dropsy)।

ज्वर।—बहुत अधिक उत्ताप; प्यास न रहना; बहुत-सा बरफकी तरह पसीना निकलता है। पसीना निकलनेके समय भी ओढ़ना उतार नहीं सकता (नक्स-वोम)।

निद्रा।—सोते-सोते चौंक उठता है (एम्ब्रा, आर्निका, बेल, कास्टि, कैमो, इयुफ्रे, ड्रोसेरा, सिना, लाइको, पल्स, ऐण्टिम-टार्ट, ब्रोम, थूजा); ठण्डा पसीना निकलना (नींद लगते ही पसीना—आर्स, ऐसिड-म्यूर; नींदके समय—चायना, फेरम, हायो, सेलिन; नींदके लिये आँख बन्द करते ही पसीना आने लगना—सिङ्कोना, कोनायम; नींद लगते ही उत्ताप पैदा हो

आना—सेम्बु)। वमन होने या पाखाना होने या अकड़नके बाद औंघाई; वमन और पाखाना होने बाद बच्चा इतना कमज़ोर हो जाता है, कि वह सो जाता है।

वृद्धि।—खाने-पीने बाद; वमन, मल-त्याग और अकड़नके बाद सभी उपसर्गोंका बढ़ जाना।

उपशम।—वायु सेवन और बन्धु-समाजमें जानेपर अच्छा रहता है।

सम्बन्ध।—सदृश—दूध वमनमें—ऐण्टि-क्रूड, आर्स, कैल्के, सैनिकु, साइक्यूटा, कोनायम; इसके अलावा एसेरम, क्यूप्रम, इपिका, ओपियम।

दोषघ्न।—उद्भिदसे प्रतिषेधित होता है। डा० टेस्टो इसको सलफरका समगुण कहते हैं और यही उन्होंने स्थिर किया है।

शक्ति।—३री दशमिक, ३० या २०० शततमिक।

ऐगरिकस एमेटिकस

(AGARICUS EMETICUS)

परिचय।—युरोपमें पैदा हुए बेंगका छत्ता जातिका एक वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।- ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह दूसरे-दूसरे ऐगरिकसोंके समान लक्षणवाला ही है, पर इसकी एक विशेषता यह है, कि ठण्डे पानीसे ऐगरिकस-मस्कके रोग-लक्षण बढ़ जाते हैं; परन्तु ऐगरिकस एमेटिकसके रोग-लक्षण **ठण्डे पानीके प्रयोगसे तेजीसे और पूरी तरह** आरोग्य हो जाते हैं।

पाकाशयके प्रदाहमें।—पाकाशयमें तेज़ जलन, मिचली, कपालमें ठण्डा पसीना, ठण्डा पानी या बरफका पानी पानेपर घटना—लक्षणको यह एक बहुत बढ़िया दवा है।

बहुत **मिचली**; मिचलीको वजहसे खड़े होने या बैठनेकी सामर्थ्य न रहना और इसी वजहसे शय्यापर लेट जाना इसका एक निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—ऐकोन, सल्फ (ठण्डा पानी पीनेपर बेचैनीका कुछ घटना); ऐण्टिम-क्रूड, आर्स, बेल, ब्रोम, फेरम, सिपि, सल्फ (विनिगर सेवनसे वृद्धि) ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ऐगरिकस मस्केरियस

(AGARICUS MUSCARIUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे छत्तेको धोकर डाइल्यूट अलकोहलमें मूल अर्क तैयार होता है। सूखी अवस्थामें विचूर्ण हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—मुँहासे; पलकोंका काँपना; मस्तिष्ककी कोमलता; जाड़ेके दिनोंके फोड़े; ताण्डव; खाँसी; ऐंठन; मदात्यय या शराब पीनेका दुष्परिणाम; बाधक; आतिसारिक विकार या सान्निपातिक ज्वर; मृगी; सड़नेवाली जखम; बहुत अधिक ताप; खुजलाहट; कामला; आँखका नासूर; कटि-वेदना : मस्तिष्कावरण-प्रदाह; निकट दृष्टि (पासकी चीज़ दिखाई देना); स्नायुशूल; सुन्न हो जाना; क्षयकास; वात; अर्बुद; बहुत इन्द्रिय परिचालनका दुष्परिणाम; प्लीहाकी बीमारी; कम्पन या फड़कन; आक्षेप; दाँतका दर्द; सान्निपातिक ज्वरका लक्षण; मस्तिष्कका सान्निपात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—जिनकी त्वचा और पेशियाँ शिथिल हैं, जो मतवाले, अमिताचारी, वृद्ध और जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। सङ्कोचन या फड़कन (Twichings) और कम्पन इस दवाका एक अनन्य साधारण लक्षण है। देहकी सभी पेशियोंका स्पन्दन किसी-किसी समय इतना बढ़ जाता है, कि अन्तमें वह एकदम ताण्डव (Chorea) रोगमें परिणत हो जाता है। इस दवाकी लक्षणावलीमें ताण्डवके सभी लक्षण दिखाई देते हैं और इन्हीं लक्षणोंके कारण इसके गुणसे बहुत ताण्डव रोग इससे आराम हुए हैं। त्वचामें हर जगह सुरसुरी और खुजलाहट मालूम हुआ करती है; केवल त्वचामें ही नहीं, कभी-कभी पेशियोंके भीतर भी ऐसा मालूम होता है, मानो चींटी चल रही है; खुजलाहट भी सब जगह

मौजूद रहती है ; खुजलानेपर दूसरी जगह पैदा हो जाती है। इसके अलावा कभी-कभी त्वचापर या प्रत्यंगोंमें एक प्रकारका ऐसा विचित्र अनुभव हुआ करता है कि मानो त्वचा बरफकी तरह ठण्डी हो गयी है या असंख्य बरफके टुकड़ेकी भाँति शीतल हो रही है अथवा शरीरके किसी अंशमें गर्म सुई घुसाई जा रही है। कान, नाक, हाथ, पीठ और हाथ-परकी अंगुलियोंमें छेदनेकी तरह दर्द ; डंक मारनेकी तरह दर्द और जलन मालूम होती है, मानो (Frost-bitten) हो गयी है। जलन और खुजलाहट मिली लाली भी किसी विशेष स्थानपर दिखाई देती है। शीतकालके फोड़े (Chilblains पानी लगना, खाल उधड़ना) की यह एक उत्कृष्ट दवा है। खुजलाहट, सुई बेधनेकी तरह दर्द ; कनकनी वगैरह तकलीफें, मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाती हैं और शारीरिक परिश्रमसे घट जाती हैं।

ऐगरिकससे पैदा हुए सभी लक्षण खासकर मेरुदण्डके लक्षण, रमण आदिसे बढ़ जाते हैं। विवाहिता स्नायु-प्रधाना स्त्रियोंकी रमणके अन्तमें अपस्मार या मृगी अथवा मूर्च्छा वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं—इसमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मन।—अस्थिर चित्त, क्रोधी, मानसिक अवसाद-ग्रस्त, अत्यन्त मानसिक परिश्रम और पढ़ने-लिखनेकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ, प्रलाप—हमेशा उन्मत्तताका प्रकट होना ; शय्यासे उठनेकी चेष्टा करता है (मोह-ज्वर या आन्त्रिक ज्वरमें); बहुत जोर लगाता है। परिश्रमसे कातर हो पड़ता है या उदासीनता पैदा हो जाती है। प्रलाप आदिमें कभी गाता है, कभी चिल्लाता है और कभी-कभी बुदबुदाया करता है, बच्चा देरसे बोलना और चलना सीखता है (देरसे बोलना आरम्भ करता है—नेट्रम-मूर ; देरसे चलना आरम्भ करता है —कैल्के) ; स्नायु-प्रधाना बालिकाओंका जब तिरस्कार किया जाता है तब उन्हें आक्षेप (Convulsion) पैदा होता है। बच्चा कोई भी विषय याद नहीं रख सकता ; पाठ देरसे सीखता है। जवान भी पढ़ने और सीखनेमें भ्रम करते हैं ; मूर्खोंकी तरह निरर्थक बात बोलते हैं। असमयमें सीटी बजाते और गाते हैं ; पद्य लिखते हैं। मानसिक लक्षण सवेरे बढ़ जाते हैं और ज्यों-ज्यों सन्ध्या होती जाती है त्यों-त्यों घटते जाते हैं।

मस्तक।—सरमें दर्द—शराबियोंका—शराब पीने और मौज करने बाद (लोबेलिया, नक्स, ग्लैनान) सरमें दर्द; जो बोखार आनेपर या कोई तकलीफ़ होनेपर सहजमें ही प्रलाप बकने लगते हैं (बेल)। ताण्डव रोगवाले मनुष्योंका या जिनकी पेशियाँ सब जभी-तभी फड़का और संकुचित हुआ करती हैं; मेरुमज्जाके विकारकी वजहसे उपसर्ग। धूपकी वजहसे सरमें चक्कर आना; पीछेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना, मानो माथेके पिछले भागमें कोई भारी चीज़ है। (एपिस, कैनाबिस-सैट)। अधकपारीका सर-दर्द, मानो कपाल या कनपटीमें कोई प्रेक बेध रहा है। (काफिया, इग्ने, नक्स; अधकपारीका दर्द—आर्स, ब्राइ, कैल्के, चायना, साइक्यूटा, कोलोसिन्थ, इग्ने, मार्क, नक्स, पल्‌स, रास, बैडो, सिपि, स्टैफि, वैलो, वेरेट्र)। बहुत देरतक लिखने-पढ़नेकी वजहसे अस्पष्ट सरका दर्द, मानो अनगिनती बहुत ठण्डी सुइयाँ बिध रही हैं। गर्म सुई बेधनेके लक्षणमें—आर्सेनिक; गर्म कपड़ेसे माथा ढँकनेपर अच्छा रहता है। खुजलाहट—खुजलाने बाद जाड़ा मालूम होना। सवेरे बिछावन छोड़नेपर खोपड़ीकी त्वचामें खुजली। फटे घाव मिला खसड़ा रोग (Eczema)। तेज़ सरका दर्द—दर्द नाककी जड़तक फैल जाता है, इसके साथ ही नाकसे खून या गाढ़ा श्लेष्मा निकलना।

आँख।—आँखके गोले या पलकोंमें फड़कन (संकोचन) और स्पन्दन—नींदके समय अच्छा होना (साइकूटा, आर्स, सलफर, पल्स)। दो देखना—काँपती हुई दृष्टि, बड़े कष्टसे पढ़ सकता है। काले कीड़ेकी तरह पदार्थ आँखके सामने उड़ा करते हैं (सुस्त करनेवाले स्रावकी वजहसे होनेपर—चायना; यकृतके विकारकी वजहसे होनेपर—ऐसिड नाइट्रिक; बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवनकी वजहसे—फास; बहुत शराब पीनेके कारण—नक्स)। आँखोंसे बहुत काम लेनेकी वजहसे दृष्टि-शक्तिका घटना या ह्रास। (रातमें महीन काम नहीं किया जा सकता—बेप्टी; बहुत परिश्रमकी वजहसे—आर्निका, रियुटा); छोटी चीज़ बड़ी दिखाई देना—ऐसिड-आक्ज़े; महीन सिलाई या कसीदेका काम या बहुत पढ़नेकी वजहसे—रियुटा; दूरकी चीज़ देखनेकी शक्ति घट जाना—फाइजस्टिग्मा)। ऐसा मालूम होता है, मानो आँखोंके सामने कुहासा, मेघ या मकड़ेका जाल फैला हुआ है (लिलि-टाइ)। पलकोंके बगलमें लाली; पलकोंमें खुजली या जलन मालूम होना और सट जाना।

कान।—लाल, जलन भरे और खुजलानेवाले—मानो बरफ आदि लगकर वैसे ही हो गये हैं। कानका सिकुड़ना और फैलना, कर्णपटह (Tinnitus) का प्रदाह।

नाक।—भीतर और बाहर खुजलाहट ; एक बार छींक आना आरम्भ होनेपर सहजमें बन्द नहीं होती ; बिना जलनका पानीकी तरह स्राव। रक्त-स्राव—बहुत ज्यादा परिमाणमें और सड़ी गन्ध लिये स्राव ; नाकका अगला भाग लाल (लीडम, लैके)।

मुखमण्डल।—मुँहकी पेशियोंमें अकड़न मालूम होना ; खुजली और जलन, मानो बरफसे जल गया है। गालमें काटने और छेदनेकी तरह दर्द, मानो काठकी सलाई बिध रही है (आर्जेण्ट, डलिकस, हिपर, ऐसिड-नाई)। मुँहका स्नायुशूल, मानो बरफकी तरह ठण्डी सुई बेधी जा रही है या बरफ छुआया जा रहा है। चेहरेमें जड़-बुद्धिता (Idiocy) का भाव ; कम्पन, विशेषकर सवेरे बढ़ना।

मुख-गह्वर।—ओठमें विसर्प ; ओठका फड़कना ; मुँहका स्वाद मीठा। जीभके अगले भागमें लकड़ीकी सलाई बेधने जैसा दर्द। जीभ काँपती हुई (ऐब्सिन्थ, बेल, हायो, कैल्के), मृगी रोगमें फेन निकलना। दाँत सब बहुत लम्बे और दर्द-भरे मालूम होते हैं (ब्राई, आर्निका, बेल, कैल्के, कास्टि, कैमो, लैके, नेट्रम-म्यूर, पल्स, स्टैफि, सल्फ)।

कण्ठनाली।—कर्णनालीके पिछले छेदसे लेकर कानतक सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़ ; गलनालीमें संकोचन मालूम होना। श्लेष्मामय कड़े गोले सब कफ़के रूपमें (With sputa) निकलते हैं। तालुमूल विशुष्क, परन्तु निगलनेमें तकलीफ़। पुराना गलेका जखम।

पाकाशय।—असह्य प्यास ; सर्वग्रासी भूख। खानेकी इच्छा नहीं, पर भूखकी अधिकतासे मानो पाकाशय चबाया जा रहा है। लगातार बदबूदार वायु निकलना ; बहुत पेट फूलना ; आँतोंमें गड़गड़ शब्द ; छूटी हुई वायु बदबू भरी ; खट्टा स्वाद और गन्ध मिली डकार ; स्नायविक बीमारीमें हिचकी ; भोजनके प्रायः तीन घण्टे बाद पाकाशयमें जलन मालूम होना और उसके साथ ही अस्पष्ट दबाव मालूम होना।

अन्त्राशय।—यकृत, प्लीहा और आँतोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। बहुत ज्यादा परिमाणमें गर्म वायु निकलना। इसके साथ ही सवेरेके समय

उदरामय (ऐलो) ; मलान्त्रमें जलन ; बहुत काँखनेके साथ कोमल मल निकलना ; असह्य वेग ; पाखाना होनेके पहले, समयपर और बादमें, आप-से-आप अत्यन्त वेग, मानो मलनाली फट जायगी। बदबूदार मल। बार-बार पेशाबका वेग, मूत्रनालीमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़। लिङ्ग आदिमें खुजलाहट। बूंद-बूंद पेशाब होना। पेशाब धीरे-धीरे निकलता है। पेशाबमें वेग बहुत अधिक। मल त्यागनेके समय काँखनेपर पाखाना नहीं होता, पर अन्तमें आप-ही-आप पाखाना निकलता है (आर्जेण्ट-नाई)। मूत्रके ऊपर तेल जैसा पदार्थ तैरता रहता है ; दोपहरके पहले पानीकी तरह, तीसरे पहर दूधकी तरह या सफ़ेद तली जमती है। पेशाब थोड़ा होते ही सरकी बीमारियाँ बढ़ जाती हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—परिमाणमें अधिक और समयके पहले ही होता है। योनि और पीठमें खुजली और छेदनेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होना। आक्षेपिक (Spasmodic) बाधक (वात या श्लेष्मासे उत्पन्न—ऐंठिया), मानो जरायु बाहर निकला आता है, ऐसा दर्द—खासकर वयःसन्धिके समय जब फिर ऋतु नहीं होता (लिलियम, म्यूरेक्स, सिपिया)। इन्द्रियोंकी उत्तेजना। स्तन-वृन्तमें खुजली ; प्रसवके बादका दर्द आदि। प्रदर—बहुत ज्यादा स्राव, गाढ़ा खून मिला कड़वा और जख्म पैदा करनेवाला (ऐसिड-फ्लूरिक)।

श्वास-यन्त्र ।—रातमें सोनेपर आक्षेपिक (Spasmodic) खाँसी, कड़ा श्लेष्मा या कफ निकलना। श्वास-प्रश्वास श्रान्ति-जनक और कष्टकर। प्रत्येक बार खाँसीके बाद छींक (बेल)। सब शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, सन्ध्याके समय पसीना, नाड़ीकी गति द्रुत, पीवकी जगह श्लेष्माका स्राव—ऊपरकी ओर मुँहकर सोनेपर बढ़ना। हृत्पिण्डका काँपना या स्पन्दन,—सोनेके समय वृद्धि। डा० एस० एम० गिल्डलेगेट कहते हैं, कि "खड़े होते ही कलेजा धड़कने लगता है।"

प्रत्यंग ।—जागनेवाली अवस्थामें इच्छा न रहनेपर भी (शरीरके कितने ही अंशोंका) फड़कना या सिकुड़ना, नींद लग जानेपर बन्द हो जाता है (केवल मुँहकी पेशीका काँपना = माईगेल)। मेरुदण्डमें स्पर्श असहिष्णुताके साथ चेतन्याधिक (थिरिडि),—सवेरे बढ़ना। मेरुमज्जाकी खुजली, बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनके कारण (कैलि-फास ; कमरके पीछेकी जगह और

त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें दर्द और यन्त्रणा, दिनमें परिश्रम करनेपर या बैठनेपर बढ़ना। देहको घूमाने-फिरानेपर मेरुदण्डमें तकलीफ़ मालूम होती है। कशेरुका (Vertebrae) का छुआ न जाना; चलनेमें डगमगाना; प्रत्येक क़दमपर डगमगा जाता है; खड़े होनेपर गुल्फ-देशमें दर्द मालूम होता है। सभी तरहका दर्द कोना-कोनी भावसे प्रकाशित होता है अर्थात् बायें ऊर्द्धाङ्ग और दाहिने निम्नाङ्गमें मालूम होता है (ऐण्टि-टार्ट, स्ट्रैमो—दाहिने ऊर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्गमें मालूम होता है—ऐग्रा, ब्रोम, मेडोरिन, फास, ऐसिड-सल्फ)। सारी देह मानो अकड़ी हुई, नितम्ब क्षीण। वातका दर्द और सन्धि-वात रोग।

त्वचा।—शीत-स्फोटक (Chilblains) या शीतकालके फोड़े, पानी लगना; खाल उधड़ना), बेहद खुजली और जलन (टेमासका मूल अर्क बाहरी प्रयोग)। घोर लाल और बहुत अधिक जलन-भरा—रस-टक्स; गाढ़ा बैंगनी रङ्ग—वेरेट्रम-विर; पीव पैदा होनेवाला—हिपर)। फुन्सियाँ (Pimples) कड़ी, मच्छड़ काटनेकी तरह, घमौरी, उसके साथ ही बहुत खुजली और जलन (बहुत अधिक चर्म-संयोगसे—जैबोरैण्डाई या पाइलोकार्पास)। पाटल व्रण (Acne Rosacea) लाली-भरा और शीतकालके फोड़े निकलनेके साथ (जरायु रोगके साथ मिला हुआ—हाइड्रोकोटाइल; शराब पीनेकी वजहसे—नक्स; लाली और बहुत अधिक खुजली मिला हुआ—रस-टक्स; दुर्दमनीय (अच्छा न होता हो—आर्स-आयोड); ऐसा मालूम हो, मानो अनगिनती बरफकी तरह ठण्डी सुइयाँ बेधी जा रही हैं। ठण्डी हवाका सहन न होना (कैल्के, कैलि-कार्ब, सेप्न-राई)। रुका हुआ, बाधा प्राप्त या स्तम्भित उद्भेदके कारण उत्पन्न अपस्मार या मृगी रोग (Epilepsy)। कान, नाक, मुखमण्डल और हाथ-पैर आदिमें खुजली, जलन और लाली मालूम होना; रोगवाली जगह लाल, फूली और गर्म हो जाती है।

नींद।—जलन और खुजलीकी वजहसे बेचैन नींद। नींद आनेपर त्वचा आदिका नाचना या फड़कना अथवा बार-बार चौंक उठना। सच्ची घटनाकी तरह सपने। दिनमें औंघाई।

ज्वराधिकारमें।—ठण्डी हवा सहन नहीं होती। शामके समय बहुत अधिक उत्ताप; बहुत ज्यादा पसीना। शरीरमें जगह-जगह जलन।

वृद्धि ।—भोजनके बाद ; रमणके अन्तमें (कैलि-कार्ब) ; ठण्डी हवा सेवन करनेपर ; मानसिक परिश्रमसे ; अन्धड़-पानीके पहले (फास, सोराइन) ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—एक्टिया, आर्स, कैल्के, कैनाबिस-इण्डिका, हायोसा, कैलि-फास, बोविस्टा, लैकेसिस, नक्स, ओपियम, स्ट्रैमो, काफिया, विरेट्रम (शराबियोंका प्रलाप और उन्माद ; ताण्डव-रोग और मेरुमज्जाकी उत्तेजना) ; माइगेल, टैरेक्सेकम और जिङ्कम (ताण्डव रोगमें), साइक्यूटा और कोडेइनम ।

दोषघ्न ।—यह शराब, काफी वगैरहके द्वारा प्रतिषेधित (Antidoted) होता है। यह बेलेड, कैल्के, ओपि, पैरे और टैबे इसके बाद ही लाभदायक होता है (पलकोंका फड़कना और अकड़न)। स्ट्रैमो और लैकेसिस मध्यवर्त्ती दवाएँ हैं।

शक्ति ।—३री, ३० से २०० क्रम। उच्च क्रमसे ताण्डव आदि रोगोंमें अधिक लाभ होता है। मृगी रोगका आक्रमण होनेके पहले निम्नक्रम प्रयोग करना चाहिये।

क्रियाकी स्थिति ।—४० दिनोंतक।

ऐगरिकस फैलायडिस

(AGARICUS PHALLOIDIS)

दूसरा नाम ।—ऐमोनिटा पाल्बोसम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—युरोपमें पैदा हुआ कुकुरमुत्ता जातिका एक वृक्ष। ताजे छत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कालेरा, आक्षेप, उदरामय, पाकाशयका प्रदाह, पेशाब रुक जाना, वमन, दाँती लगना, ताण्डव।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक तेज़ विष है। इसके सेवनके दस-बारह घण्टे बाद एशियाटिक कालेराके सभी लक्षण प्रकट हो जाते हैं और फिर क्रमसे मृत्यु हो जाती है।

तेज़ प्यास, मिचली, बार-बार श्लेष्मा और पित्तभरे पदार्थका वमन, बदबूदार हरी आभा लिये वमन, रक्त-वमन, पाकाशय और उदरमें आक्षेपकी तरह दर्द, पेटका दर्द, दबानेसे बढ़ना (डायस्को ; दबानेसे घटना—कोलोसिन्थ) ; उदरामय ; बार-बार पाखाना लगना ; बहुत अधिक सुस्ती, ठण्डा पानी पीनेपर तेज़ प्यास, पेशाब रुकना वगैरह एशियाटिक कालेराके लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐगरिकस मस्के (कालेराका लक्षण)।

शक्ति ।—६—३० ।

ऐगेव अमेरिकाना

(AGAVE AMERICANA)

दूसरा नाम ।—अमेरिकन ऐलोज ; सैन्चुरी प्लैण्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पीसे हुए पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—प्रमेह, जलातङ्क, स्कर्वी, मुँहका जखम।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाका अबतक प्रूविङ्ग नहीं हुआ। हाइड्रोफोबिया या जलातङ्क रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। शीताद रोग, प्रमेह, मुँहका जखम वगैरह रोगोंमें भी इससे लाभ होता देखा गया है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लिसिन, फेगास, लैके, ऐलो।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

ऐग्नस कैस्टस

(AGNUS CASTUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके फलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—स्तनमें दूध कम होना ; मलद्वारका फटना ; उदरी ; प्रमेह ; सन्धि-प्रदाह ; ध्वजभङ्ग ; प्रदर ; मुँहका घाव ; वात ;

प्लीहाकी बीमारी ; बन्ध्यात्व ; अण्डकोषका फूलना ; दाँतका दर्द आदि रोगोंमें फलप्रद है।

उपयोगिता और आभास।—डाक्टर एलेनने लिखा है:—जिनका धातु लसिका-ग्रन्थियुक्त है, अकाल वृद्ध हो गये हैं ; विषन्नता, आत्म-ग्लानि और मानसिक विपर्यय, जिनके सहचर हो रहे हैं, उनकी बीमारीमें बहुत उपयोगी है। कामेन्द्रिय (इन्द्रिय-परिचालनका दुष्परिणाम) इसका क्रिया-स्थल है, यह इन्द्रिय-परिचालना शक्तिका ह्रास और उसके साथ ही मानसिक स्नायविक शक्तिमें अवसाद पैदा करता है। स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंपर ही इसकी क्षमता अधिक प्रकट होती है। बहुत ज्यादा काम-तृप्तिकी वजहसे असमयमें ही बुढ़ापा और बार-बार प्रमेहका आक्रमण इसके विषय हैं। कुचलने या मोच खानेके कारण पैदा हुए दर्दमें विशेष लाभ करता है। त्वचामें हर जगह कुचल जानेकी तरह दर्द और खुजली—खासकर पुट्ठेमें। स्त्रियोंका प्रदर—साफ़ पानीकी तरह स्राव, इतनेपर भी कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है ; अनजानमें आप-ही-आप स्राव हुआ करता है—इस रोगमें भी यह खासा फायदा करता है।

लक्षणावली

मन।—अन्यमनस्क, अन्तर्दृष्टिकी शक्तिका न रहना ; कोई विषय याद नहीं रख सकता ; जबतक किसी पाठको दो-तीन बार नहीं पढ़ लेता, तबतक उसका भाव ग्रहण नहीं कर सकता (लाइको. ऐसिड-फास, सिपिया) ; बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे या बहुत अधिक वीर्यपातके कारण अकाल वार्द्धक्यके साथ विषन्नता, उदासी, अनस्थिर चित्तता (चित्त-चाञ्चल्य), अपने ही प्रति आप घृणा। मृत्यु-भय ; जल्दी मृत्यु हो जायगी ; ऐसे विश्वासके साथ खेद ; साहस-हीनता ; ऐसा मालूम होता है, कि किसी मछली या मृगनाभि (कस्तूरी) की गन्ध आ रही है।

मुख-विवर।—पीनेकी या खानेकी चीज़ छू जानेपर दाँतमें दर्द होने लगता है, जीभ सूखी ; लार लेईकी तरह, खींचनेपर सूतकी तरह बढ़ती है (कैलि-बाई) ; खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें कपड़ेका टुकड़ा झूल रहा है।

पाकाशय।—मिचली और ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें दबावके कारण नीचेकी ओर जा रही हैं। अन्त्राशय अर्थात् तलपेट टेढ़ाकर

रखना चाहता है। प्लीहा-प्रदेशमें अत्यन्त दर्द; सविराम ज्वरके साथ प्लीहा कड़ी और फूली। यकृत प्रदेशमें लगातार दर्द मालूम होते रहना। छूनेपर दर्द और भी बढ़ जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—पुराने पापी या बहुत दिनोंतक काम-वासना परितृप्त करनेवालोंकी नपुंसकता या ध्वजभङ्ग और लाला-मेह (gleet) या पुराना मेह-रोग; अविवाहित पुरुषोंका स्नायविक दौर्बल्य, सम्पूर्ण क्लैव्य या ध्वजभङ्ग। लिङ्ग ठण्डा और शिथिल। इन्द्रियमें उत्तेजना और रमण-शक्ति नहीं रहती (कैलेडियम, सेलिनियम); बार-बार प्रमेह रोग हो जानेकी वजहसे ध्वजभङ्ग। रुके हुए या स्तम्भित प्रमेहके स्रावसे पैदा हुई बीमारी (मेड्राइन) लाला-मेहकी वजहसे रमणेच्छा या लिङ्गोत्थान न होना। मूत्रनालीसे पीली आभा लिये पीवका स्राव। पाखाना फिरनेके समय वेग देनेपर मूत्राधार-मुखशायी ग्रन्थि अर्थात् प्रोस्टेट ग्रन्थिसे रस-स्राव। दोनों अण्डकोष ठण्डे, फूले, कड़े और दर्द-भरे।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदरका स्राव साफ़, पर कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है, शिथिल इन्द्रियसे आप-ही-आप बहा करता है। प्रसवके बाद स्तनमें दूध न उतरना (Agalactia = ऐसाफि, लैके डिफ्लोरेटम, रिसिनस, कम्यूनिस); इस अवस्थामें बहुत अधिक मानसिक अवसाद मौजूद रहता है, रोगिनी कहती है, कि उसकी मृत्यु निश्चित है। बन्ध्यात्व (अरम; अरम-म्यूर्ट्रोनेटम; नेट्रम म्यूर; बोरेक्स)।

पैर आदि।—चलनेके समय दोनों उरूमें रगड़ लगनेकी वजहसे त्वचाका क्षय होना रोकता है। (इथ्यूजा, ऐगार)। गुल्फ आदिकी सन्धि मोच खाकर दर्द करने लगती है (टियुरा)।

सम्बन्ध।—इसके प्रयोगके बाद अकसर, आर्स, इग्ने, लाइको, पल्स, सल्फ और सेलीनियमकी जरूरत पड़ती है। क्लैव्य रोगमें या रमण-शक्तिके अभावमें प्रायः ही कैलेडियम और सेलीनियमकी इसके प्रयोगके बाद जरूरत पड़ती है और उससे बहुत फायदा होता है।

तुलनीय।—नक्स, चेलिडो, कार्बो, क्रियोज।

दोषघ्न।—कैम्फर और नेट्रमके द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति ।—तृतीय दशमिक (३x) से लेकर ३० और २०० शततमिकतक ।

क्रियाकी स्थिति ।—८ से १४ दिन ।

ऐग्राफिस-न्यूटेन्स
(AGRAPHIS NUTANS)

दूसरा नाम ।—ब्लू-बेल ; सिला-न्यूटेन्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिद और अंकुरोंसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—एडिनायड (नासिका-मूलके स्थानके तन्तुका बढ़ना); सर्दी, बहरापन ; उदरामय ।

उपयोगिता और आभास ।—नासिका मूल (नाककी जड़) पर इसकी प्रधान क्रिया होती है । एडिनायेड या नासिका मूल-देशीय तन्तु-समूह बढ़कर सर्दी, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, बहरापन और तालुमूल ग्रन्थि-प्रदाह, सर्दी हो जाना, सर्दी लगकर उदरामय होना आदि लक्षणमें लाभदायक है ।

ठण्डी हवामें कम्पके लक्षणमें साइलीसियाके साथ इसकी तुलना की जा सकती है ।

कोई भी बीमारी क्यों न हो, ढँक लेनेपर घटनेके लक्षणमें इस दवाके प्रयोगसे विशेष उपकारकी आशा की जाती है ।

सम्बन्ध । —तुलनीय ।—ऐलि-सिपा, ऐलि-सैटा, सिला, साइलीसिया ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ऐग्रोस्टोमा गिथैगो
(AGROSTOMA GITHAGO)

दूसरा नाम ।—लिस-निस-गिथैगो ; कार्ण-ककल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीयेसे विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—पाकाशय-प्रदाह, पक्षाघात, कुन्थन ।

उपयोगिता और आभास।—मुखविवरसे मलद्वारतक जलन, माथेमें जलन, सरमें चक्कर आना ; सरमें दर्द, विह्वलता (कोमा), चलने और खड़े होनेमें कष्टके लक्षणमें लाभदायक है।

तुलनीय।— लैथिरिस ; सिकेलि-कर।

शक्ति।— ६, ३०।

ऐइलैन्थस ग्लैण्डियुलोसा

(AILANTHUS GLANDULOSA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूलवाली शाखाकी त्वचा और मूलकी छालसे मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासे ; मस्तिष्कावरण और मेरुमज्जाका प्रदाह ; उपदंश ; डिपथीरिया ; सरका दर्द ; कर्ण-मूल प्रदाह ; सूतिका ज्वर ; वात ज्वर ; सान्निपातिक ज्वर ; आरक्त ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० क्लार्कका मत ;—पित्त और स्नायु प्रधान धातु तथा मनुष्योंके लिये उपयोगी है। इससे पैदा हुए चर्म लक्षणोंको देखकर स्पष्ट मालूम होता है, कि यह सुस्ती लानेवाली और उद्भेद या स्फोट (Exanthematic) ज्वर आदिमें उपयोगी है ; खूनका खराब होना और निकृष्टता पैदा होती है। रोगीके शरीरकी त्वचा नीला या पीली आभा लिये नीला रंग धारण करती है, मुखमण्डलका रंग तांबे जैसा और वह गर्म हो जाता है। दाँतपर मैल या एक तरहका दाग रहता है ; कण्ठनाली फूली ; पीली आभा लिये नीली या नीलाभ हो जाती है (ऐमोन-कार्ब देखिये) ; रोगका आक्रमण आरम्भ होते ही बहुत सुस्ती (एपिस, एसिड-कार्बोलिक) ; अर्द्ध-चेतना ; प्रदाह ; और नाड़ी बहुत क्षीण हो जाती है। सभी लक्षण प्रायः आरक्त ज्वरकी तरह रहते हैं। बहुत कमजोरी ; कमजोरीके साथ उदरामय, आमाशय और आमरक्त इसके क्रिया फल हैं।

लक्षणावली

मन।—मनोवृत्तियोंको किसी विषयपर केन्द्रीभूत नहीं कर सकता (तुल्य ऐलेट्रिस, ऐवेना-सैट, लैक-कैन, ऐसिड-आक) इत्यादि ; पढ़नेपर भाव

ग्रहण नहीं कर सकता (ऐसिड-फास, ऐग्नस, लाइको, सिपिया); स्पर्श ज्ञानका न रहना; बेहोशी; और बहुत अधिक उदासीनता। सुस्ती और बारम्बार दीर्घ श्वास छोड़ना। प्रलापावस्थामें हमेशा कुछ बुदबुदाया करता है (ऐगार, बेल, कैन्थ, क्यूप्रम, इनेन्थि—क्रो, टैरेण्टियु, वेरेट, कोलचि, हायोसा, ओपि, स्ट्रैमो)।

मस्तक और मुखमण्डल।—ललाट देशमें दर्दके साथ औंघाई। माथेमें चक्कर, चेहरा गर्म, उठकर बैठ नहीं सकता; बहुत बेचैन और चिन्तित; लगातार बुदबुदाकर प्रलाप बका करता है और रोगी किसीको भी पहचान नहीं सकता। आँख गदली अस्वच्छ और पुतली फैली हुई; रोशनीसे भय। चेहरा मानो काला। नाकसे गन्धहीन पानीकी तरह खूनका स्राव।

कण्ठनाली।—प्रदाहित, फूली; मैल भरी; लाल, भीतर और बाहर अधिक सूजन। कण्ठनाली नीली और फूली; दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ (Tonsils) लाल जखमसे भरीं; सड़ी गन्ध भरा थोड़ा स्राव; गर्दनमें स्पर्श सहन न होना और सूजन, मानो श्वास रुक रही हैं; स्वर-भग्न और गलेमें साँय-साँय शब्द। जीभके बीचका स्थान लाल और भूरे रंगका (बेप्टी; आयोडम, स्पंजिया, सलफर, ऐक्टिया-रेस), दाँतमें मैल और दाग पड़ना; निगलनेके समय कानतक फैलनेवाला दर्द।

मल।—पानीकी तरह पतली, बदबूदार मल; पेशाब करनेके समय आप-ही-आप निकल जाता है (ऐलो); सूता जैसी कृमि (Tape-worm)।

श्वास-यंत्र।—विषम (असमान) और तेज़ श्वास-प्रश्वास। सूखी, यन्त्रणादायक खाँसी, श्वास-कष्ट, छातीके भीतर जलन और दर्द मालूम होना; थोड़ा थूक या कफके साथ साँय-साँय शब्द; फेफड़ा दर्द भरा,—परिश्रमसे वृद्धि। सोने और शय्या छोड़नेके समय खाँसी।

त्वचा।—मुखमण्डल और समूचे शरीरकी त्वचापर पीली आभा लिये या बैंगनी (Purplish) उद्भेद; अंगुलीसे दबानेपर गायब हो जाते हैं; फिर धीरे-धीरे निकल आते हैं (डा० आर्गुंट)। नीली आभा लिये रस-भरा बड़ा-सा छाला; त्वचा बरफ जैसी ठण्डी।

निद्रा।—औंघाई और बेचैन; रोगी तुरन्त आच्छन्न भावमें जा पड़ता है।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न ।**—(अस्पष्ट सरका दर्द) —ऐलो (२ री दशमिक); (सरमें दर्द और विसर्प भरा मुखमण्डल) —रास-टक्स ; साधारणतः नक्स-वोम । **सदृश**—ऐमोन-कार्ब, बैप्ट, आर्निका (दर्द भरा फेफड़ा) ; ऐसिड-म्यूर (कण्ठनालीका जख्म इत्यादि) ; लैकेसिस ।

शक्ति ।—१ म से ३० शततमिक ।

ऐलेट्रिस फेरिनोसा

(ALETRIS FARINOSA)

नामान्तर ।—कालिक रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकामें पैदा हुए एक वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—गर्भस्राव ; रक्तकी कमी ; शूल ; कब्जियत ; अकड़न ; वाधक ; पेशाबमें कष्ट ; जरायुका विकार ; ज्वर ; अर्श ; मूर्च्छावायु जैसी अवस्था ; अजीर्ण ; श्वेत-प्रदर ; बहुत रक्त-स्राव ; स्नायुशूल ; गर्भावस्थामें वमन ; बन्ध्यात्व ; जरायु-च्युति, जरायुमें दर्द इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मानसिक और शारीरिक क्लान्तिके साथ जरायु और पाकाशयमें गड़बड़ी हो तो यह उपयोगी है । जिन स्त्रियोंमें जरायुके विकारके साथ प्रदर और बहुत कब्जियत रहती है, खूब कांखने बिना पाखाना नहीं होता, मुँहमें फेन-भरी लार संचित रहती है और जिनकी पाचन-शक्ति थोड़ी रहती है और भोजनके बाद पेटमें तकलीफ़ और भार मालूम होता है, उनके लिये यह दवा विशेष उपयोगी है । वे सब स्त्रियाँ हमेशा इतनी क्लान्त और थकी-मांदी जैसी रहती है, कि न जाने कितना परिश्रम किया है । बहुत दिनोंतक रोग भोगनेकी वजहसे कमजोरी (सोराइन ; केल्के-फास) ।

लक्षणावली

मन ।—मानसिक शक्ति और परिश्रमे करना सहन करनेकी शक्ति न रहना । वोध-शक्तिकी क्षीणता । किसी विषयमें मन-संयोग नहीं कर सकना । सरमें चक्करके साथ सुस्ती । भोजनसे अरुचि ।

पाकाशय।—बहुत थोड़ा खानेपर भी तकलीफ़ मालूम होती है। गर्भावस्थामें बहुत कै होना। स्नायविक अजीर्ण रोग। पेटमें आधानवायुकी वजहसे शूलका दर्द। सरमें चक्कर आनेके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम। औंघाई और दुबलापन। भोजनसे अरुचि; मिचली (Nausea); दुरारोग्य अजीर्ण रोग। सन्ध्याके समय खाई हुई चीज़का डकार और गलेमें जलन; सवेरे उठनेपर पाकाशयका खाली मालूम होना—भोजनसे घटना। पेटमें दर्द—खासकर तलपेटमें; वायु और थोड़ी मात्रामें पतला मल निकलने बाद घटना; दर्द सामनेकी ओर झुकनेपर बढ़ता है और पीछेकी ओर शरीर झुकानेपर घटता है (डायस्को)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—असमयमें और परिमाणमें बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव होता है और प्रसव जैसा दर्द होता है (बेल, कैमो, केलि-कार्ब, प्लैट), जरायुका भारी मालूम होना। बहुत अधिक कब्जियतके साथ जरायुका अपने स्थानसे हटना और प्रदर रोग। जरायुमें कमजोरीकी वजहसे बार-बार गर्भस्राव (एपिस, कालो-फाइल, सेबाईन, सीपिया, बाइबर्नम प्रुनिफोलियम) गर्भावस्थामें पेशियोंमें दर्द।

सम्बन्ध।—सदृश या तुलनीय—हेलोनियस (रोगिनीकी रक्तहीनता और मानसिक विषादके साथ गर्भस्राव); वाईवार्नम प्रुनिफोलियम (बार-बार गर्भस्राव)। चायना, हाइड्रो, सैबाइना, पल्स, कोलोफा (शूल); कास्टिक, फेरम (खाँसनेके समय मूत्रस्राव); ऐलूमिना (कब्जियत) कोलोफा।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३री शततमिकतक साधारणतः व्यवहारमें आती है।

ऐलियम सिपा

(ALLIUM CEPA)

दूसरा नाम।—प्याज़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है—मलद्वारका फटना; शोथ (उदरी); सर्दी-खाँसी; अतिसार; मुँहका पक्षाघात; आँत उतरना; बहुव्यापक तरुण-सर्दी (इनफ्लुएञ्जा); स्वरनालीका प्रदाह; फेफड़ेका प्रदाह; अँगुल-हाड़ा; हूप खाँसी; पीत ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक-झिल्लीका सर्दीसे पैदा हुआ प्रदाह और ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव इसका प्रधान लक्षण है। गर्म घरमें और सन्ध्याके समय बढ़ना (पल्स—वायु सेवनसे—इयुफ्रेशिया), वायु सेवनसे घटना। नश्तर लगवाने या चोट खाये हुये स्नायुओंसे उत्पन्न स्नायुशूल भी इससे अच्छा हो जाया करता है—तेज़ दर्द, सूतकी तरह सूक्ष्म-भावसे चारों ओर फैल जाता है,—मुखमण्डलमें, मस्तकमें और गर्दनमें बहुत कमजोरीकी वजहसे हमेशा पड़े रहनेकी इच्छा।

लक्षणावली

मन।—अंगुलीमें पीब पैदा हो जानेकी वजहसे इतनी तकलीफ़ होती है, कि रोगी समझता है कि वह पागल हो जायगा। बुद्धिकी जड़ता और विमर्ष भाव।

मस्तक।—सर्दीकी वजहसे धीमा (Dull) सरका दर्द,—संध्याके समय या गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर बढ़ जाता है और निर्मल वायु सेवनसे घट जाता है (युफ्रे, पल्स देखो)। ऋतुके समय सरका दर्दका आराम हो जाना और स्राव बन्द होते ही फिरसे पैदा हो जाना (लैकेसिस, जिङ्कम)। सूतकी तरह सूक्ष्म भावसे शूलका दर्द दौड़ पड़ता है।

आँख।—धुआँ लगनेकी वजहसे जलन और किरकिराहट होती है; अंगुलीसे रगड़े बिना नहीं रह सकता है। आँख अस्वच्छ और आँसूसे भरी रहती है; कैशिक या कैपिलरी (केशकी तरह सूक्ष्म) शिराएँ सब खूनसे भर जाती हैं और आँखसे लगातार आँसू बहा करता है।

कान।—कर्ण-शूल—तालुमूलसे कर्णपश्चान्नालीतक तेज़ दर्द मालूम होता है (पल्स, हाइड्रो, बेल, कैमो, नक्स-वोम); कानमें शब्द (कास्टि, ग्रैफा, पल्स)।

नाक।—सर्दी—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें, पानीकी तरह और जखम पैदा कर देनेवाला स्राव (आर्स, मार्क, ऐसिड-नाई, नक्स, पल्स) और आँखसे बहुत ज्यादा, चिकना, कड़वा वगैरह गुणरहित (Bland) आँसू बहना (आँखोंसे अपर्याप्त जखम पैदा करनेवाला और नाकसे स्निग्ध स्राव=युफ्रेशिया)। नाकके अगले भागसे बूंद-बूंद पानीकी तरह जखम पैदा करनेवाला श्लेष्मा निकलना (आर्स, आर्स-आयोड)। वसन्त ऋतुमें होनेवाली

सर्दी—जलभरी ; उत्तर-पूर्वीय हवाकी वजहसे निकलनेवाला श्लेष्मा नासारन्ध्र और ऊपरी ओठकी त्वचाको क्षय कर देता है। हैमन्तिक सर्दी (Hay Fever नये शस्यकी गन्धसे उत्पन्न एक प्रकारकी सर्दी) ; शय्यासे उठनेके समय तेज़ छींक या चुल्कार (आर्स, साइक्लामिन, क्रियोजोट, लैके)। नासा रोग या नासार्बुद =मेरम-वेरेम, कैल्के, कैलि-बाई, थूजा -- सरके दर्दके साथ रहनेपर= सैङ्गियु, सङ्ग्यु-नाइट्रि ; नाककी जड़में जकड़ जानेका भाव, दुर्गन्धित स्राव= कैडमियम-सल्फ ; छूते ही खून निकलना और उसके साथ ही हरा या पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव= फास ; पुराना या बहुत दिनोंतक स्थायी सर्दीका स्राव। सर्दी मालूम होना और कमजोरी= सोराइनम)। मालूम होता है, कि नाकके छेदमें कुछ अड़ा हुआ है।

कण्ठनाली।—सर्दीके वजहसे कण्ठनालीका प्रदाह (Catarrhal Laryngitis) ; खाँसीके दर्दकी वजहसे रोगी हाथसे कण्ठनाली पकड़ लेता है, मानो खाँसनेपर कण्ठनाली टूट जायगी।

पाकाशय।—शूलका दर्द—पैरमें ठण्ड लग जानेके कारण या कोंहड़ा चटनी वगैरह खानेकी वजहसे पैदा हुई बीमारी ; अर्शकी वजहसे बीमारी ; बच्चोंकी बीमारी ; बैठनेसे बढ़ना और टहलते रहनेपर घटना।

श्वासयंत्र।—स्वरभङ्ग। यन्त्रणादायक खाँसी—नाकमें ठण्डी हवा लगनेकी वजहसे खाँसी। कण्ठनालीमें खुजली। श्वास-कष्ट। उपजिह्वा (Epiglottis) प्रदेशमें सिकुड़न मालूम होना। कानतक फैलनेवाला दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—सूतकी तरह तेज स्नायुशूल, इधर-उधर दौड़ता है (मुँहमें, वक्षमें, माथेमें, गर्दनमें) ऐसा मालूम होता है। पुरानी चोटकी वजहसे स्नायु-प्रदाह (Neuritis) ; नश्तर लगवाने बाद कटे हुए अङ्गमें स्नायु-शूल,—जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। अंगुलीकी हड्डीका प्रदाह ; अंगुलहाड़ा ; लाली, हाथकी रेखाएँ सब ऊपरकी ओर फैल जाती हैं ; दर्दसे पागल बना डालता है,—प्रसवके बाद (कट-कट झन-झन करनेवाला दर्द-भरा =डायस्कोरिया ; कट-कट झन-झन जैसा दर्द और रोगवाली जगहसे नीली रेखा चारों ओर फैली हुई =लैकेसिस ; अंगूठा और अन्यान्य अंगुलियाँ प्रदाहित, टपक जैसा दर्द, काठकी सलाई बिधनेकी तरह दर्द= ऐसिड-फ्लुओ-रिक ; उत्तापसे टपककी वजहसे सूजन और तकलीफ़की वजहसे नींद न आना =अंगुली उठाये रहता है—हिपर ; पैरका कोई विशेष अंश बहुत

दर्द भरा रहता है, उसमें स्पर्श सहन नहीं होता ; विशेषकर ऐंड़ीके नीचे (नैङ्ग-क्लोरेट) या तलवेका चय होकर बहुत दर्द होता है। यन्त्र आदिकी सहायतासे प्रसव कराने बाद शिराका प्रदाह (Phlebetis—पल्सेटिला ; साधारण शिरा-प्रदाह—हैमा ; पीव आशोषण (Absorption) की वजहसे शिरा-प्रदाह—लैके) ।

चर्म ।—लाल, एक तरहका उद्भेद, छोटी माता, आमवात इत्यादि ।

ज्वर ।—खुजलानेवाला सर्दी ज्वर। प्यास, बहुत पसीना। नाड़ी पूर्ण और द्रुत।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक ; फास, पल्स, थूजा ; नाकके अर्बुद रोगमें =कैल्केरिया और साइलिसियाके पहले काममें आता है। **प्रतिषेधक या दोषघ्न** = आर्निका ; (दन्तशूल) कैमो ; पेटमें दर्द =नक्स, थूजा ।

शक्ति ।—२ री दशमिकसे १८ वीं दशमिक द्वारा अधिक लाभ होता है ।

ऐलियम सैटाइवम

(ALIUM SATIVUM)

दूसरा नाम ।—लहसुन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे फलसे मदर टिंचर या मूल अर्क बनता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है:—केश-हीनता या चँदला पड़ जाना ; दमा ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ; कब्जियत ; खाँसी ; कटिशूल ; बहुमूत्र ; अतिसार ; अजीर्ण ; ज्वर ; सरमें दर्द ; वात ; स्वरभंग ; आर्त्तवकी अधिकता या बहुत ज्यादा खनका स्राव ; आँखे उठना ; लार बहना ; शीताद ; बहुत तरहके चर्मरोग ; अँगुल-हाड़ा , कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—अजीर्ण और श्लैष्मिक रोगग्रस्त मोटे-ताजे मनुष्योंपर ऐलियम और सैटाइवाकी उत्तम क्रिया होती है। फेफड़ेमें क्षय रोग हो जानेकी सम्भावनामें इस दवाका प्रयोग करनेपर यह परिणाम

होता है, कि खाँसी, थूक या कफ थोड़ा आता है (वैसिलाइन); शरीरकी उत्ताप स्वाभाविक अवस्थामें आ जाता है, रोगीके शरीरपर माँस चढ़ने लगता और नींद आदि नियमित हो जाती हैं। रक्त-कास (Hoemoptysis) या फेफड़ेसे खून जाना रोगमें भी इसके द्वारा कितनी ही बार बहुत फायदा हुआ करता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा निकलनेके साथ पुरानी खाँसी, शीतका सहन न होना और विसर्प या दाद पैदा होनेवाले धातुमें भी इससे उत्तम फल प्राप्त होता है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना;—बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखनेपर बढ़ना (कास्टिकम); सरमें दर्द; सरके पीछेकी ओर दर्द; सवेरेके समय बहुत दर्द, चित सोनेपर बढ़ना।

आँख।—सर्दीसे उत्पन्न (Catarrhal ophthalmia); आँखोंका प्रदाह; सर्दी और शीत आदिसे उत्पन्न योजकत्वकका प्रदाह; रातमें और पढ़नेके समय आँखोंका किरकिराना, जलन और आँखोंसे आँसू निकला करता है; पलक सट जाती है और बड़े कष्टसे अलग होती है।

मुख-गह्वर।—भोजनके बाद और रातके समय मुँहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें मीठा स्वाद; लार संचित होना।

पाकाशय।—सर्वग्रासी भूख। जलन करनेवाली डकार। जरा भी खानेके पदार्थमें अदल-बदल हुआ कि बीमारी पैदा हो गई। तलपेटमें लगातार दर्दके साथ कब्जियत,—जीभ मैलके साथ लाल और जीभपरके काँटे (Papillae) मानो गायब हो गये हों, ऐसा मालूम होना।

श्वासयंत्र।—वायुनलीभुजमें बराबर श्लेष्माकी घड़घड़ाहटकी आवाज़। सवेरे शय्यागृह त्यागनेपर खाँसी; गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा-भरा थूक। बड़े कष्टसे निकलता है। शीत सहन नहीं होता। श्वासनालीमें सूजन या फैलना; सड़ी गन्ध-भरा श्लेष्मा-स्राव (क्रियोजोट, सूंघनेपर अधिक लाभ होता है)।

हृत्पिण्ड।—नाड़ीका स्पन्दन उछलता हुआ।

चर्म।—सूखापन, चैतन्याधिक्य।

निद्रा।—भोजनके बाद औंघाई।

ज्वर ।—एक अङ्गमें शीत या कम्पन, ज्वरके समय वमन ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ऐलियम-सिपा ; ब्रायो, कैप्सि (दुर्गन्ध श्वास) ; कोलोसिन्थ (दर्द), इग्ने, कैलि, रास, लाइको, नक्स, सिनेगा ।

दोषघ्न ।—लाइको । अनुपूरक—आर्सेनिक ।

शक्ति ।—निम्न और मध्यवर्त्ती क्रम ।

ऐलनस रूब्रा

(ALNUS RUBRA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये पल्लव या जड़से मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— ऋतु प्रकट न होना ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; दादकी तरह उद्भेद ; श्वेत-प्रदर ; वात ; गण्डमाला दोष ; उपदंश और सोरा-दोष इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह शरीरके यन्त्र आदिकी पोषण क्रिया उद्दीप्त कर देता है ; इसलिये लसिका-ग्रन्थियोंको स्वाभाविक अवस्थामें रखनेमें विशेष सहायता करता है । पाकाशयिक रस थोड़ा सञ्चय होनेकी वजहसे अजीर्ण रोगमें यह बहुत फायदा करता है और किसी-किसी चर्म-रोगमें भी इससे लाभ हुआ करता है । स्त्री-जननेन्द्रियपर इसकी आश्चर्य-जनक क्रिया होती है ।

लक्षणावली

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर—स्राव जखम करनेवाला और जरायु ग्रीवाकी झिल्लीके क्षयकी वजहसे सहजमें खूनका स्राव होने लगना । रजो-राहित्य या रजःस्तम्भ ;—पीठसे लेकर विटपास्थि—संयोग स्थल (Pubis) तक जलन जैसी तकलीफ ; पाखाना होने बाद मलान्त्रमें जलन ।

त्वचा ।—बहुत दिनोंका विसर्पिका रोग या दाद । हनुके नीचेवाली लसिका ग्रन्थिका फूलना । खसड़ा रोग, त्वचामें खुजली (बिना उद्भेदकी खुजली—डलिकस ; खुजली और सुरसुरी—ऐसिड-सल्फ ; ऐसी खुजलाहट

मानो चींटी रेंग रही है—मार्फिया ; समूचे शरीरमें खुजलाहट ; शय्याके उत्तापसे बढ़ना—ऐल्यूमिना ; शीतल प्रयोगसे खुजलाहट—रियुमेक्स ; बहुत अधिक खुजलाहट और भूसीकी तरह छाल निकलना—पेट्रोल ; जलन-भरी खुजलाहट—क्रियोजोटम ; आर्त्तव-स्रावके बाद खुजलाहट—टैरेण्ट्)।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—हैमा ; स्टिलिञ्ज ; फाइटो ; कैलि ; मर्क ; नक्स ; बैप्ट।

शक्ति।—मूल अर्क और ६ठो दशमिक शक्ति।

ऐलो सोक्रोटिना

(ALOE SOCROTINA)

दूसरा नाम।—घीकवारका सार या मुसब्बर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस उद्भिदका सत—प्रूफ स्पिरिटमें भिंगोकर मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बन सकता है।

उपयोगी धातु।—जो सब व्यक्ति पुरानी बीमारी भोग रहे हैं, जिनके शरीरका ताप कम है, जो दोहरे शरीरवाले, काले, कभी प्रसन्न, कभी दुःखित रहते हैं, जिनके शरीरमें एक तरहका उद्भेद निकलता है और जिनका समय किसी तरह नहीं बीतता, ऐसे मनुष्योंकी बीमारीमें यह अधिक उपयोगी है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है—तलपेटका थुलथुलापन ; मलनाली या गुह्यद्वारकी बीमारी ; श्वासनलीका प्रदाह ; आँतोंमें शूल ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; रक्तामाशय ; पुराना प्रमेह ; अर्श ; गुल्मवायु ; कटिवात ; नकली मैथुनका फल ; यक्ष्मा-कास ; मलनालीका प्रदाह ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; प्रोस्टेट ग्रन्थिकी बीमारी ; पश्चात् कटिमें दर्द ; वेग या कूथन ; रक्त-स्राव इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बहुत दिनोंके पुराने रोगोंमें जब ऊपर-के-ऊपर कितनी ही प्रकारकी दवा प्रयोग करनेके कारण रोगके लक्षण आदिके साथ दवासे पैदा हुए लक्षण आदि मिल जाते हैं और एक अद्भुत रोगकी सृष्टि हो जाती है और चिकित्सक औषध-निर्वाचनके सम्बन्धमें किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो जाते हैं, उस समय सलफरकी तरह ऐलो भी रोगीके शरीर-विधानमें

सामञ्जस्य पैदा कर देता है और चिकित्सक अनायास ही उपयोगी औषधका निर्वाचनकर रोगीको रोगहीन बना देता है। आँतोंका विकार, बवासीर और यकृतमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे पैदा होनेवाले रोग आदिमें यह विशेष लाभदायक है। इसके कुछ निर्णायक लक्षण ये हैं—(१) अक्षि-गोलकके ऊपर (Supra-orbital) वाला सर-दर्द, बहुत धीमा (Dull) और पीसनेकी तरह दर्द। (२) पेट भरा, भारसे युक्त और फूला हुआ। अन्त्राशयमें (Abdomen) बहुत अधिक वायु सञ्चय होना या पेट फूलना, जलन करनेवाला दर्द, नीचेकी ओर दबाव रहता है और आँतोंमें तेज़ शूलका दर्द रहता है। आँतोंका शूल—गर्म हवा निकलनेपर घटना। (४) वायु निकलनेके समय मलद्वारमें शिथिलता, अनजानमें पाखाना निकल जाता है; मलद्वारकी अवरोध करनेवाली पेशीकी शिथिलता, मलका वेग रोकनेकी शक्ति न रहनेकी वजहसे दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है। कड़ा मल भी अनजानमें बाहर निकल जाता है। (५) मल—पानी-जैसा पतला, माँड़की तरह (Jelly-like), बहुत वायु निकलनेके साथ निकलता है। (६) पाखाना होनेके पहले और पाखाना होनेके समय ऐसा तेज़ दर्द, मानो कुछ मरोड़ खा रहा है; पाखाना होने बाद दर्द घट जाता है और रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। (७) मलान्त्र और मलद्वारमें जलन।

लक्षणावली

मन।—मानसिक परिश्रमसे कातर और क्लान्तिजनक भाव। अपने रोगकी वजहसे अत्यन्त क्रोध और असन्तोष प्रकट करता है। चिड़चिड़ा स्वभाव; अवसाद-वायुग्रस्त (Hypocondriac); बदली-भरे दिनोंमें बढ़ना (नेट्र-कार्ब)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, मानो उसके साथ ही सारी चीजें घूम रही हैं; सीढ़ी चढ़नेके समय (कैल्के) या तेजीसे माथा घुमानेपर (कोनायम, कैल्के, कैलि-कार्ब) बढ़ना; नाकसे जब सर्दीका स्राव होने लगे, तब घटना। सरमें दर्द—सारे ललाटमें यह दर्द फैला रहता है; प्रत्येक क़दम चलनेपर बढ़ना (बेल, ब्राई); दोनों आँखोंमें भार और उसके साथ ही मिचली मालूम होती है। सरमें दर्द—गर्मीसे बढ़ना और ठण्डे प्रयोगसे घटना (आर्स); सरमें दर्द और गृध्रसी (Sciatica) या पेटमें झुनझुनीवाला वात पर्यायक्रमसे प्रकट होता है; पाखाना भरपूर न होनेपर बढ़ जाता है।

आँख।—चेहरेमें लालीके साथ काँपती हुई दृष्टि; ऐसा मालूम हो मानो पीली आभा लिये गोले आगे उड़ते हुए मालूम होते हैं। अक्षिकोटरके भीतरी प्रदेशमें दर्द—दाहिनी आँखमें अधिक मालूम होना। आँख लाल और सारी चीजें लाल दिखाई देती है। ललाटमें दर्दकी वजहसे आँख अधमुँदी रखना पड़ता है।

कान।—दोनों हनुको हिलानेसे कानमें चिलक मारनेकी तरह दर्द हो उठता है।

नाक।—सवेरे जागनेपर और शय्या त्याग करनेके पहले रक्त-स्राव होता है; नाक लाल हो जाती है; बाहरी हवामें बढ़ना।

पाकाशय।—मुँहमें तीता स्वाद। मांससे अरुचि (ग्रैफा, सल्फ) और रस-भरी चीजें खानेकी इच्छा (ऐसिड-फास), भोजनके बाद पेट फूलना; मलनालीमें टपक जैसा दर्द और खट्टी चीज़ सहन नहीं होती। सरमें दर्दके साथ मिचली; पैर फिसल जानेपर पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द मालूम होना। भोजनके बाद वाध्य होकर पाखाना जाना पड़ता है।

अन्त्राशय और मलनाली।—नाभि-प्रदेशमें टपकका दर्द। विटपास्थि (गुह्यद्वारसे जननेन्द्रियकी ओर) और मेरुदण्डके निम्नतम प्रदेशके बीचवाले स्थानमें मालूम होता है, मानो खूँटी अड़ी हुई है; मल-वेग—इसके साथ ही यकृत-प्रदेशमें भरापन मालूम होना और दाहिने पँजरेके निचले प्रदेशमें दर्द। बहुत अधिक वायु-सञ्चय और नीचेकी ओर दबावके कारण मलान्त्रमें बहुत तकलीफ़ मालूम होना। शूलका दर्द—दाहिने उदरके निम्न-प्रदेशमें कतरने और दाँतसे काटनेकी तरह दर्द; पाखाना होनेके पहले और पाखाना होते समय मोच खानेकी तरह दर्द; पाखाना हो जानेके बाद सभी तकलीफें घट जाती हैं, केवल पसीना और कमजोरी बाकी रह जाती है; आक्रमणके पहलेके कई दिन दुर्दमनीय कब्जियत रहती है।

उदरामय।—भोजन करना समाप्त करते ही तेजीसे पाखाना जाना पड़ता है (क्रोटन); मलद्वार आवरक पेशी (Spincter Ani) अत्यन्त शिथिल हो जाती है; सवेरे शय्यासे उठते ही पाखानेकी ओर दौड़ना पड़ता है (सोरिनम, रियुमेक्स, सलफर)। वायु त्यागनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो पाखाना निकल जायगा (ओलियेण्डर, ऐसिड-म्यूर, नेट्रम-म्यूर)। छूटी हुई हवामें बहुत बदबू और जलन रहती है तथा बहुत ज्यादा परिमाणमें

वायु छूटती है। मल थोड़ा निकलता है, पर उसके साथ ज्यादा परिमाणमें और आवाज़के साथ हवा निकलती है (ऐगरि)। कड़ा मल और चाशनीकी तरह "ढेला-ढेला" आँव निकला करती है। उदरामय रोगाधिकारमें भूख ज्यादा लगना (बैराइटा-कार्ब, कैल्के, कैल्के-फास, आयोड, मर्क, सोराइन, सल्फ ; भूख तृप्त न होनेपर बहुत सुस्ती—फास)। पाखाना होनेके पहले आँतोंका गड़गड़ाना, एकाएक पाखानेका वेग होना, मलान्त्रमें भार मालूम होना, पाखाना फिरनेके समय काँखना और बहुत ज्यादा आवाज़के साथ वायु निकलना, पाखाना हो जाने बाद सुस्ती। अर्श—नीला रङ्ग, अंगूरके गुच्छेकी तरह (ऐसिड-म्यूर), मलनालीमें बराबर दबाव मालूम होना, बलि, रक्त-स्रावी, दर्द-भरी, उसका छुआ न जाना ; उष्ण—ठण्डे पानी आदिका प्रयोग करनेपर घटना (गर्म प्रयोगसे घटना—ऐसिड-म्यूर) ; बहुत खुजली, मलद्वारमें खुजली और जलनकी वजहसे नींद न आना (इण्डिगो)।

श्वास-यन्त्र।—शीतके समय खाँसी और श्वासनलीमें खुजली ; यकृत-प्रदेशसे वक्षस्थलतक सुई बेधनेकी तरह दर्द। इसके साथ ही श्वासकृच्छ्रता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मलनालीमें बहुत दबाव मालूम होना, खड़े होने और रज निकलनेके समय बढ़ना। जरायुमें भार मालम होना (चायना, नक्स, सिपिया)। पैरतक फैलनेवाला और पश्चात् कटि-देश तथा नितम्बमें दर्द—प्रसवके दर्दकी तरह दर्द। स्त्रियोंका वयःसन्धिके समयका (Climacteric) रक्त-स्राव। असमयमें आर्त्तव-स्राव और भरपूर स्राव न होना। खून-मिला श्लेष्मा-भरा प्रदर-स्राव।

पीठ।—कटिवात—सरमें दर्द और कटिवात पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है ; कभी-कभी बवासीरके साथ पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। त्रिकास्थि देशसे लेकर श्रोणि-देश या नितम्ब (अर्थात पश्चात कटि-प्रदेश) तक सुई बेधनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग।—सब ही प्रत्यङ्ग मानो सुन्न-जैसे। सन्धिदेशमें अकड़नकी तरह दर्द ; चलनेके समय तलवेमें दर्द होता है।

त्वचा।—प्रत्येक शीत ऋतुमें खुजली खसड़ा पैदा होना (सोराइन)।

वृद्धि।—सवेरे ; निकम्मेकी तरह दिन बितानेपर ; गर्म सूखी हवामें ; पीने या भोजनके बाद ; खड़े होनेपर और टहलनेपर बढ़ना।

घटना ।—ठण्डे पानीके प्रयोगसे ; ठण्डी वायु और मल निकलनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।— सलफर (अन्त्राशयमें रक्तकी अधिकता और यकृत स्थानमें ज्यादा रक्त-सञ्चय होना ; रुके हुए उद्भेदके फिरसे निकल आनेके सम्बन्धमें सहायता पहुँचाता है) ; ऐमोन-मूरर, गैम्बोजिया, नक्स, पोडो कैलिबाई, लाइको ।

दोषघ्न ।—सलफर ; मस्टर्ड, कैम्फर द्वारा प्रतिषेधित होता है ।

शक्ति ।—१म से २०० शततमिकतक । ६, ३०, २०० वगैरह क्रम अधिक व्यवहार होते हैं ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० से ४० दिन ।

ऐलस्टोनिया स्कौलरिस

(ALSTONIA SCHOLARIS)

दूसरा नाम ।—सप्तपर्णी ; इस पेड़को छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ऐलस्टोनिया कान्स्ट्रिक्टा न्यू साउथवेल्स और क्वीन्सलैण्डमें पाया जाता है । इसकी छालमें रेक्टिफायड स्पिरिट मिलाकर मदर टिञ्चर बनाया जाता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— कमजोरी ; अतिसार ; रक्तामाशय ; ज्वर ; बहुत दूध स्तनसे पिलानेका दुष्परिणाम ; श्वेत-प्रदर ; हृत्स्पन्दन ; गर्भावस्थामें वमन ; जरायुकी दुर्बलता ।

उपयोगिता और आभास ।—इससे दुर्बलता ; सुस्ती लानेवाला बोखार, कितनी ही बार उदरामय और अधिक मात्रा सेवन करानेपर कम्पन, पसीना, बार-बार पाखाना, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें मरोड़ और सरमें चक्कर प्रभृति लक्षण पैदा हो जाते हैं । व्यवहारमें—जाड़ा बोखार, शीत ज्वर और मलेरियासे पैदा हुआ (सड़ी गन्ध लग जानेकी वजहसे) उदरामय वगैरहमें इससे बहुत लाभ होता देखा गया है (फैरिङ्गटन) ; पाकाशयमें खालीपन मालूम होना और कमजोरी इसका निर्णायक लक्षण है । पाचन-शक्तिका घट जाना और दुर्बलता ; जीभ साधारणत: मैली और सफेद लेप-चढ़ी, खासकर जड़में ; मिचली—सवेरे भोजनके पहले ज्यादा मालूम होती है ; असमयमें पाकाशय खाली मालूम

होना ; तलपेटमें फटने या दबावकी तरह दर्द, मानो समस्त यन्त्र योनिकी राहसे बाहर निकल जायेंगे (ऐलेट्रिस-फार, लिलि-टाई, हेलोन); मुखमण्डल मलिन, मानो खून न हो—थोड़ी-सी बातमें ही उत्तेजित हो पड़ता है (वेरे); खाये हुए पदार्थ बहुत देरतक अजीर्ण अवस्थामें पाकस्थलीमें पड़े रहते हैं। खाना समाप्त करते ही अजीर्ण पदार्थ मिला पाखाना होना, खाना समाप्त होते न होते ही पाखाना जाना पड़ता है (ऐलो); प्रदर और जरायु आदिका नीचेकी ओर आकर्षण (Bearing down—सियेनोथस)। चलनेसे बढ़ना। दाहिने डिम्बाधार प्रदेशमें सूजन मालूम होना (एपिस, फेर-आयोड)। पाकाशयके बाईं ओरसे पीठतक तेज़ बेधनेवाला दर्द (सियोनोथस)। एकाएक सो जाता है और जागनेके पहले कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाया करती है। सब शिराओंमें टपक मालूम होती है और जीभ सुन्न-सी मालूम होती है (बलक्षय करनेवाले ज्वर आदिके बाद इसको बलकारक रूपमें व्यवहार करते हैं)।

अन्त्राशय।—प्रबल बिरेचन (बहुत पतले दस्त आना) और मलाशयमें ऐंठन। तलपेटमें खुजली और उत्ताप मालूम होना। खीमामें रहनेके समय अर्थात विदेशमें तम्बूमें रहनेके कारण पतले दस्त आना और खूनी आँव, खून भरा मल ; खराब पानी आदि पीने या सड़ी गन्धसे (चायना) भरा बिना दर्दका पानीकी तरह मल निकलना (ऐसिड-फास)।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐलिट्रिस, लिलियम, हेलोनियस, सिड्रन, सियेनोथस, चायना।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३ या ६ ठीं शक्तितक।

एल्यूमेन

(ALUMEN)

दूसरा नाम।—फिटकिरी ; पोटास ; अलम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और २० भाग बुझाया हुआ पानी मिलाकर १ ला क्रम ; इसके बाद नियमानुसार उच्च क्रम तैयार होते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—शराब पीनेका दुष्परिणाम; गुह्यद्वारकी बीमारियाँ; सर्दी; श्वासनाली-प्रदाह; कैन्सर या कर्कटका जखम; शूल-वेदना; कोष्ठबद्धता; खाँसी; बहुमूत्र; अतिसार; आमाशय; एक्ज़िमा या शूल; श्वेत-प्रदर; पैरका पक्षाघात; अन्ननालीका सङ्कोचन; पालिपस; योनिद्वारमें खुजली; शीताद; चर्म रोग; तिर्यक-दृष्टि (डेरा देखना); दाँतकी बीमारीमें नश्तर लगवाना; सान्निपातिक ज्वरमें रक्तस्राव; कितनी ही तरहके जखम; जरायुमें विकार; अपत्य-पथका स्नायुशूल इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोग आरोग्य-जनित अभिज्ञतासे मालूम होता है, कि अन्त्राशयपर ऐल्यूमिनका विशेष अधिकार है; क्या मलका कड़ापन और क्या सान्निपातिक ज्वरमें आँतोंसे रक्तस्राव—दोनों ही स्थानोंपर इससे विशेष लाभ हुआ करता है। शरीरमें सब जगह पक्षाघातसे पैदा हुई कमजोरीकी तरह पेशियोंकी दुर्बलता—अन्तवाली अवस्थामें यह बहुत ही लाभदायक है। इसके द्वारा शरीरमें एक तरहकी विकृत-तन्तुजनन शक्तिका आविर्भाव होता है और इसी वजहसे पेशियोंमें कड़ापन पैदा हो जाना भी इसकी एक क्रियाका परिणाम ही है। आँखोंके स्वच्छ आवरक (Cornea) का गदलापन इससे अच्छा हो जाता है; जिन वृद्धोंकी वायुनालीमें प्रायः श्लेष्मा पैदा हो जाया करता है और सञ्चित रहता है, उनके लिये ऐल्यूमिन विशेष उपयोगी है। बहुत ही अधिक मलका कड़ापन,—मल पत्थरकी तरह कड़ा; दो-तीन दिनोंतक पाखाना बिलकुल ही नहीं लगा करता (ओपि)।

लक्षणावली

मस्तक।—मस्तकमें जलन जैसी यन्त्रणा, मानो खोपड़ीमें किसी भारी चीज़का एक टुकड़ा दबाया हुआ है (कैक्टस, कैनाबिस-सैट, सल्फर); हाथसे दबानेपर आराम मालूम होता है [ऐमोन-कार्ब, एपिस, आर्जेण्ट-नाई; एसाफि, बेल, कैल्के (ठण्डे हाथसे); ऐक्टिया, सिङ्कोना, मिनियैन]। उदरके ऊपरी भागमें कमजोरी मालूम होनेके साथ सरमें चक्कर आना, चित्त होकर सोनेपर बढ़ना (मार्क)।

आँख।—डेरा देखना (Squint डेरा), दाहिनी आँखकी पुतली नाककी ओर लीन हो जाती है अर्थात भीतरी तिर्यक दृष्टि; दाहिनी या बाईं कोई भी आँख—ऐल्यूमिना (जेल्सि)।

मुखमण्डल।—मुँहका जखम (Aphthae), वृद्ध मनुष्योंके नकली दाँतसे उत्पन्न मुँहका जखम। दाँत उखड़वाने बाद दाँतसे बहुत खून जाना।

गलेके भीतर।—तालुमूलमें सर्दी पैदा होना; जिह्वा-ग्रन्थि (Tonsils) फूले और कड़े। गलेके जखममें, अलिजिह्वामें शिथिलता आदिमें स्वरभङ्ग या स्वरलोप (Aphonia) [ऋतुके समय = जेल्स; उत्ताप लगनेसे हो = ऐण्टि-क्रूड; स्वर पैदा करनेवाले तन्तुकी निष्क्रियताकी वजहसे = ऐसिड-आक्जैलिक]।

गुह्यद्वार या मलनाली और मल।—विदारित मलद्वार (Anal Fissure) बहुत नरम पाखाना होनेपर भी छुरीसे काटनेकी तरह यन्त्रणा (ऐसिड-नाइ; नेट्र-कार्ब; रैटान); निम्नगामी स्थूलांत्र (बड़ी आँत) (Descending colon) का दोहरा जानेवाले (Sigmoid Flexure) प्रदेशमें या मलांत्रमें कर्कटका अर्बुद (Cancerous Tumour); भयङ्कर और असह्य कष्ट (स्पाइजि)। पाखानेमें बहुत तकलीफ़—खून मिला मल। अर्श—बवासीरमें बहुत दर्द और उससे खूनका स्राव (हैमा; सलफर, इस्क्यूलस-हिप, ऐलो, कैप्सि, कोलिन्सो, हाइपेरिक); शराब आदि पीनेके बाद रक्तस्राव। कब्जियत—गोलीकी तरह बहुतसे काले गुठले निकल जानेपर भी मालूम होता है, कि मलांत्र मलसे भरा हुआ है। मलद्वारमें खुजली। बवासीरका मसा पीला (नीला—कार्बो-वेज)। आंत्रिक (Enteric) ज्वराधिकारमें गाढ़ा, बड़ा, जमा हुआ खूनका टुकड़ा मलके रूपमें निकलता है (ऐसिड-नाइ)।

श्वास-यन्त्र।—रक्तकास या कफ़के साथ फेफड़ेसे रक्तस्राव (Pulmonany hoemorrhage = ऐकालिफा, मिलिफो, इपिकाक); फेफड़े आदिकी बहुत कमजोरी; श्लेष्मा निकालनेमें बहुत तकलीफ़, वृद्ध मनुष्योंको सवेरे अपर्याप्त परिमाणमें लेईकी तरह श्लेष्मा निकलता है। दमा; खाँसी।

हृत्पिण्ड।—हृत्स्पन्दन,—दाहिनी करवट दबाकर सोनेपर। (बाईं करवट सोनेपर—ब्रोम, नेट्र-म्यू, पल्स)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु ग्रीवा (Cervix uteri) और स्तन्य ग्रन्थिमें कड़ापन पैदा हो जानेकी सम्भावना (कार्बो-ऐन, कोनायम), योनिगत (Vaginal) पुराना प्रदर, पीले रङ्गका स्राव (एल्यूमिना); योनि-झिल्लीमें जगह-जगहपर मुँहमें जखमकी तरह जखम (कोलोफाइ)। आर्त्तव—पानी जैसा पतला स्राव।

पुं०-जननेन्द्रिय।—पुराना प्रमेह या लाला मेह ; पीली आभा लिये पीव-स्राव ; कभी-कभी मूत्रनालीसे जमा हुआ पीवका टुकड़ा निकलता है।

त्वचा।—कड़ी, त्वचापर जख्म। फूली और कड़ी ; लसिका-ग्रन्थियाँ। उपत्वकका कर्कट रोग (Epithelioma थूजा, हाइड्रेस्ट, कैली, लाइको, आर्स-आयोड)। शिराका फैलना (Varicosis) और उससे रक्त-स्राव (हैमा)।

प्रत्यङ्ग।—हाथ-पैरकी पेशियोंकी दुर्बलता। प्रत्यङ्गोंमें कसकर जकड़ जानेका भाव।

ज्वर।—नाड़ी मृदु ; प्रबल प्रलाप इत्यादि।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐलूमिना ; ऐलो (सरलांत्र) ; कैप्स ; कैलि-बाई, मार्क (जरायुका अपने स्थानसे हटना) ; मार्क-कोर, ऐसिड-नाइट, म्यूरिक, नक्स, ओपियम, प्लैटि, प्लम्बम, रैटानिया, सलफर ; जिङ्कम।

दोषघ्न।—कैमो (पेटमें मरोड़) ; नक्स ; इपिकाक (वमन आदि) ; सलफर।

शक्ति।—पहली शततमिकसे हज़ार शक्तितक। २०० शक्तिसे उच्चतम शक्तितकके प्रयोगसे आश्चर्यजनक लाभ होता है।

ऐल्यूमिना

(ALUMINA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण और इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—गुह्य-द्वारकी बीमारी ; फोड़ा ; बाघी ; सर्दी ; मृत्पाण्डु ; कोष्ठ-बद्धता ; स्तन पीनेवाले बच्चोंकी कब्जियत ; खाँसी ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; उकौत ; आँखकी बीमारियाँ ; मलद्वारका फटना ; भगन्दर ; सरका दर्द ; आँत उतरना ; श्वेत-प्रदर ; पक्षाघात ; नखकी बीमारी ; कानसे स्राव ; नकसीर ; गर्भिणीकी कब्जियत ; दाँतका दर्द ; प्रोस्टेट ग्रन्थिसे रस-स्राव ; गण्डमाला ; डेरा देखना ; स्वादमें गड़बड़ी ; कितनी तरहके चर्म-रोग ; गलक्षत (गलेका जख्म) ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना। मस्तिष्कका सान्निपात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—देखनेमें क्षीण; मांस सिकुड़ा हुआ और सूखी देहवाले वृद्ध मनुष्य या मृत्पाण्डु अथवा हरित्पीड़ा (Chlorosis) रोगग्रस्त बड़ी उमरकी बालिका और नकली दूधसे जिनका प्रतिपालन हुआ है तथा लसिका-ग्रन्थिकी बीमारीकी धातुवाले बच्चे ऐल्यूमिनाके उत्कृष्ट और उपयोगी क्षेत्र हैं। इन मनुष्योंको प्रायः हमेशा ही कब्जियत बनी रहती है। मल कोमल रहनेपर भी बिना काँखे पाखाना नहीं होता। इसका कारण यही है, कि (ऐल्यूमिनाके उपयोगी) रोगीकी आँतें बिलकुल ही निष्क्रिय हो जाती हैं। बच्चोंको शुष्क नासा रोगके साथ पुराना नकसीर हुआ करता है और उनकी नाकसे साँय-साँय शब्द निकला करता है। ये बच्चे दाँत निकलनेके समय डेरा देखा करते हैं, जवान मनुष्य अवसादवायुग्रस्त (Hypochondriac) रहते हैं। शीत ऋतुमें बढ़ना, खुजलानेवाले, सूखे उद्भेदोंसे उनका शरीर भरा रहता है (पेट्रो)। शय्याके उत्तापसे बेहद खुजलाहट आरम्भ हो जाती है। उनके प्रत्यङ्ग जड़ भावसे परिपूर्ण रहते हैं, उनमें भार मालूम होता है और सुन्नकी तरह रहता है।

लक्षणावली

मन।—रोगी समझता है, कि बोलने या देखनेके पहले वह किसी दूसरे मनुष्यमें परिवर्त्तित हो जायगा। उसे थोड़ी भी बाधा ऐसी मालूम होती है, कि उसे पार न कर सकेगा। आत्महत्या करनेकी इच्छा होती है, पर मरनेसे भय मालूम होता है। हमेशा दुःखित रहता है; समझता है, कि वह पागल हो जायगा। अपने आरोग्यके सम्बन्धमें निराश रहता है, समय बहुत धीरे-धीरे बीतता है (कैनाबिस-इण्डिका, आर्जेण्ट-नाई)। मनकी गति परिवर्त्तनशील, जितना ही समय बीतता है, यह अवस्था भी उतनी ही घटती जाती है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ मिचली, ऐसा मालूम होता है, मानो सभी चीजें उनके साथ घूम रही हैं (ऐलो); पहली बार भोजनके बाद आँख खोलने और झुकानेपर बढ़ना (बेल, नक्स, पल्स, ब्राई, लाइको, पेट्रोल), खानेके बाद या आँख मलनेपर घटना। कपालमें टपककी तरह दर्द, सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना। सरमें दर्द—स्थिर होकर सोनेपर घटना। कनपटीमें या शङ्खदेशमें (Temples) रस बहानेवाले फटे घाव, खुजलाने बाद खून निकलने लगता है। सन्ध्याके समय, अमावस्या और पूर्णिमाके दिन बढ़ जाता है। केश सूखे और उड़ जाते हैं; मूर्द्धा या खोपड़ीमें खुजलानेवाले उद्भेद।

आँख।—आँखें बन्दकर और अन्धकारमें एक क़दम भी नहीं चल सकता। आँखें बन्दकर चलनेकी चेष्टा करनेपर डगमगाया करता है और गिर जाता है (आर्जेण्ट-नाई, जेल्स), दूसरी आँखकी भीतरी तिर्यक दृष्टि (जेल्स, दाहिनी आँखकी—ऐल्यूमिन); आँखकी भीतरी सरल (Rectus) पेशीकी निष्क्रियता। दोनों आँखें प्रदाहित—नाकके ओरके कोनेमें खुजली, रातमें पलकें सट जाती हैं, दिनमें आँसू निकलता है; दीप-शिखा (दीयेकी लौ) के चारों ओर पीली आभा लिये मण्डल दिखाई देता है; आँसू गर्म और जख्म करनेवाला (कषाय-रस)। चीजें पीली दिखाई देती हैं। पलकोंका आंशिक पक्षाघात। उनका कड़ापन, उनमें जलन और करकराहट।

कान।—कानमें शब्द, कर्णनाद (Tinitis) कर्णपश्चान्नाली (Eustachian tube) में ऐसा मालूम होता है, मानो कांटी ठोकी हुई है (ऐनाक, मैङ्गो)। दोनों जबड़ेको हिलानेके समय कानके छेदमें चिलक मारने-जैसा दर्द (ऐलो, मैङ्गो, मस्कस, साइलि)।

नाक।—सर्दी, बार-बार छींकके साथ ही लगातार सर्दी या श्लेष्माका स्राव, एक नाक खुली, दूसरी बन्द, इसके साथ ही आँसू बहना। नाक लाल (अरम-म्यूर, बेल, मैग-म्यूर, मर्क, फास, रैनान), नाकका अगला भाग फटा-फटा। पुराना पीनस (Chronic Catarrh), पपड़ी जमना, छेदमें दर्द, गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलना। इसके अलावा कभी-कभी सूखी, कड़ी, पीली नीली पपड़ी निकलती है (ऐसिड-क्रूड, कैल्के, कैलि-कार्ब, कैलि-बाई, लैके, लाइको, मैग-म्यूर, स्टैफ, थूजा)। नाक फूली (ब्राइ, सिपि, सल्फ़, ज़िङ्कम), लाल रङ्ग और स्पर्शका सहन न होना, सन्ध्याके समय बढ़ना। नाककी जड़में भयानक दर्द।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—त्वचाका संकुचित मालूम होना, मानो चेहरेपरका रस सूख गया है। चेहरेपर मुँहासे या लाल फोड़े। निचले हनुका फड़कना या सङ्कोचन; इसके साथ ही अन्त्राशयसे रक्त-स्राव। बोलते-बोलते बहुत थक जाता है और सुस्त हो पड़ता है (स्टैन)। बोलने और गानेसे खाँसी आ जाती है। दाँतका दर्द—दाँत उठे और लम्बे मालूम होते हैं—चबानेके समय दर्द बढ़ जाता है; हवा खानेपर और सन्ध्याके समय भी

बढ़ जाता है। दाँतोंपर मैल चढ़ी रहती है या दाग पड़ा रहता है; मसूढ़ेमें दर्द और खून बहता है।

कण्ठनाली।—तालुमूलसे लेकर पाकाशयतक समूची अन्ननाली मानो संकुचित, खानेकी चीज़ उसमें प्रवेश नहीं कर पाती। मालूम होता है, कि कण्ठनालीमें कांटी ठोंकी हुई है।—इसके साथ ही दर्द और सूखापन। देखनेमें चिकनी और साफ़। नाकके पिछले छेद (Posterior Nares) से लसदार श्लेष्मा कण्ठनालीमें आता है। वक्ताओंके गलेका जखम (Speakers या Clergymans Sore-throat) रोग, खासकर क्षीण मनुष्योंका (आर्निका)। जिह्वामूलके बगलवाले गह्वरका जखम (Ulcers in Fauces), छेद-भरा बदबूदार, पीला, भूरा (Yellowish Brown), पीव निकलनेवाला जखम; जिह्वामूल पार्श्वसे लेकर दाहिनी कनपटी और माथेतक फाड़नेवाला दर्द।

पाकाशय।—अद्भुत रुचि—श्वेतसार (माड़ या फेन), खड़िया, साफ़-सुथरा कपड़ेका टुकड़ा, कोयला, बड़ी इलायची, खटाई, काफी या चायका चूर, सूखा चावल वगैरह न पचनेवाली चीजें खानेकी इच्छा (साइक्ला, सोराइन)। आलू खानेपर रोग आदिका बढ़ना। श्लैष्मिक-झिल्लीमें उद्दीपना पैदा करनेवाले पदार्थ, जैसे - नमक, सुरा, सिर्का (Vineger), काली मिर्च, खानेके साथ ही खाँसी आने लगती है। बहुत देरतक स्थायी डकार, शामके समय बढ़ना। मांस खानेसे अरुचि (ऐलो, ग्रैफ, पल्स, आर्निका)। छोटे ग्रासके सिवा और कुछ निगल नहीं सकता। कलेजेमें जलन (थोड़ी होनेपर=आर्जेण्ट-नाइ; सफेद लेप चढ़ी जीभ, लाल पेशाब, पेट फूलना और मलमें कड़ापनके साथ—लाइको, उदरामय और मोटे लेपसे ढँकी जीभ—पल्स; आक्रमणके समय—कैप; दाँत खट्टे हो जानेपर—एसिड-सल्फ़; खट्टी कैके साथ—रोबिनिया; खाई हुई चीज़ खट्टी होकर कै हो जानेपर—सलफर)। अन्ननालीमें संकोचन मालूम होना (आर्स, ब्राई, नक्स, फास, रास, ऐण्टि-टा)।

अन्त्राशय।—पेट फूलनेके साथ शूलका दर्द, चिलकारीका आँतोंके शूलकी तरह दर्द। सन्ध्याके समय दोनों बन्धन या पुट्ठेकी जगहसे लेकर लिङ्गकी ओर दबाव मालूम होना। तीसरे पहर टहलनेके समय पेट मानो भूल पड़ता है। बाईं ओरके अन्त्राशयकी बीमारी। मलमें कड़ापन, आँतोंमें ज्यादा परिमाणमें जबतक मल इकट्ठा नहीं हो जाता, तबतक पाखानेका वेग

या इच्छा बिलकुल ही नहीं होती (मिलि-लोट); बहुत वेग देना अर्थात काँखना पड़ता है, यहाँतक कि दीवार पकड़कर जोर देना पड़ता है ; मल कड़ा, गुठला, भेंड़के मलकी तरह और श्लेष्मासे लिपटा हुआ (ग्रैफ) या कोमल, लसदार, कीचकी तरह मलद्वारमें सट जाता है (प्लैटि)। मलनाली (Rectum) की निष्क्रियता (Inactivity), पतला मल रहनेपर भी भयानक वेग दिये बिना नहीं निकलता (ऐनाका, हिपर, प्लैटि, सिलि, वेरेट)। मलकाठिन्य—स्तनसे दूध पीनेवाले बच्चोंको नकली दूध पिलानेकी वजहसे अथवा जिनकी माताके स्तनमें दूध न होनेके कारण बोतलसे दूध पिलाया जाता है ; वृद्ध मनुष्योंका (लाइको, ओपि); गर्भावस्थामें (कोलिन्सो)—मलान्त्रकी निष्क्रियताकी वजहसे (सिपिया) कब्जियत। रोगिनीको पेशाब करते समय पतला पाखाना निकल जाता है। पाखाना फिरनेके समय वेग न देनेपर पेशाब नहीं होता। आन्त्रिक (Enteric) ज्वरमें अन्त्राशयसे थक्का-थक्का रक्त-स्राव होता है—वह कितनी ही बार देखनेमें यकृतके टुकड़ेकी तरह मालूम होता है (ऐल्यूमिन)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रमणेच्छाकी अधिकता। पाखानेमें वेग देनेपर अनजानमें वीर्य निकल जाता है या मूत्राधार मुखशायी ग्रन्थिके रसका स्राव होता है (Discharge of Prostatic fluid—इक्युलस्-हिप, ऐनाक, कोनायम, कैल्के, हिपर, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपिया, स्टैफि, थूजा ; पेशाबके समय —हिपर-सलफर)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर—कसैला और बहुत ज्यादा—पैरसे लेकर एँड़ीतक चू पड़ता है (सिफिलाइन); दिनमें अधिक स्राव ; ठण्डे पानीसे नहानेपर घटता है। आर्त्तव—एकदम असमयमें, थोड़ी देरतक ठहरनेवाला और थोड़ा स्राव ; मैला रक्त ; सरमें दर्दके बाद स्राव होने लगता है। ऋतु-स्रावके बाद रोगिनी शारीरिक और मानसिक सुस्त हो पड़ती है, यहाँतक कि उसे बोलनेमें भी ताक़त लगानी पड़ती है (कार्बो-ऐन, काकु); बोलनेपर श्रान्त हो पड़ती है ; इतनी सुस्ती और थकन मालूम होती है कि खड़ी नहीं रह सकती है और बैठ जाती है।

श्वास-यन्त्र।—स्वर-भङ्ग ; स्वर लोप ; तालुमूलमें खुजली, साँय-साँय घड़-घड़ शब्द। छातीमें अत्यधिक कसावट मालूम होना (कैक्टस); चटनी या खटाई खानेसे खाँसी आती है। बोलनेपर छातीका दर्द बढ़ जाता है।

खाँसी ; बार-बार छींकके साथ सूखी और यन्त्रणादायक खाँसी ; ऐसा मालूम होता है मानो स्वरनालीके मुँहपर मांसका एक टुकड़ा झूल रहा है (लैके, फास) ; उपजिह्वा बढ़ जानेकी वजहसे खाँसी, बोलने या गानेपर बढ़ना ; दाहिने शंखदेश या दाहिनी कनपटी (Temple) और मूर्द्धा-प्रदेश (खोपड़ी) में दर्द मालूम होना ; सवेरे जागनेपर बहुत देरतक खाँसना पड़ता है और अन्तमें बड़े कष्टसे एक टुकड़ा-सा सफेद आभा लिये श्लेष्मा निकलता है ; खाँसनेके समय वृद्ध और शुष्क दिखाई देनेवाले मनुष्योंको अनजानमें पेशाब हो जाना (कास्टि, स्क्विला, वेरेट्रम)।

हृत्पिण्ड ।—भयानक हृद्‌स्पन्दन ; वक्षस्थलके बीचमें दबावकी तरह दर्द और हृद्‌स्पन्दन पर्यायक्रमसे प्रकट होता है, खासकर मध्यान्ह भोजनके बाद ; प्रति दिवस टहलनेके समय।

पीठ और अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—मेरुमज्जाके क्षयकी वजहसे गति शक्तिका न रहना (Locomotor Ataxia)। निम्न प्रत्यङ्गोंमें बहुत भार मालूम होना, बड़े कष्टसे पैर खींचकर चल सकता है, चलते-चलते डगमगा जाता है और शामके समय वाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है। दिनमें और आँख खोले बिना एक क़दम भी नहीं चल सकता। चलनेके समय गुल्फ़देश सुन्न मालूम होता है। बहुत क्लान्ति और थकन मालम होती है, बैठकर विश्राम करना पड़ता है ; पीठमें ऐसा दर्द, मानो निम्न कशेरुका (Vertebrae) के भीतरसे एक जलती हुई लोहेकी सलाई बेधी जा रही है। नखके नीचे चबानेकी तरह दर्द। नख सब टूटनेवाले (Brittle)।

त्वचा ।—सूखी और फटी-फटी। शय्याके उत्तापसे असह्य खुजली। खुजलाते-खुजलाते खून निकाल देता है और इसके बाद जलन होती है।

निद्रा ।—सवेरे औंघाई ; निद्रित अवस्थामें छटपटाता है और असम्बद्ध सपने देखता है।

वृद्धि ।—ठण्डी हवामें ; जाड़ेके दिनोंमें ; बैठनेके समय ; आलू खानेके कारण ; एक दिनका नागा देकर ; अमावस्या या पूर्णिमाके समय घटना। हलकी और गर्मीके दिनोंकी हवामें ; गर्म पानी आदि पीनेसे ; भोजनके समय (सोराइन) ; तर पानीके कण हवामें बहनेपर (Damp = कास्टि)।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—ब्रायो, कैमो, इपिकाक, ब्रायोनिया :—अनुपूरक—ब्राई, लैकेसिस और सलफर वगैरहके बाद इसका प्रयोग होता है।

जिस रोगकी नयी अवस्थामें ब्रायोनियाका प्रयोग होता है, उसी रोगकी पुरानी अवस्थामें ऐल्यूमिनाका प्रयोग किया जाता है।

सदृश।—ऐल्यूमिन, एलुमिनियम, आर्जेण्ट, वैराइटा-कार्ब (वृद्धोंकी बीमारी); ब्रायो, कैल्के, कोनायम, फेरम (हरित रोग); फेरम-आयोड, ग्रैफाइ, इपिक्र, केलि, लैके, पल्स, पिकरिक ऐसिड, रूटा, सिपिया, लाइ, सल्फ, जिङ्कम।

शक्ति।—६ से २०० तक। इसकी क्रिया धीरे-धीरे प्रकट होती है, इसलिये जल्दी-जल्दी बदलना न चाहिये।

क्रियाकी स्थिति।—४० से ६० दिनोंतक।

ऐम्ब्रा ग्रिसिया

(AMBRA GRISIA)

दूसरा नाम।—तिमि जातिकी मछलीकी आँतमें मिलनेवाला एक तरहका सुगन्धित द्रव्य।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण अथवा बीस भागका एक भाग विचूर्ण या औषध द्रव्य। इसी हिसाबसे सुरासारमें टिंचर भी बनता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—गुह्यद्वारमें उत्तेजना; दमा; बहुत लज्जायुक्त भाव; मस्तिष्कका कोमल मालूम होना या कोमलता; हृद्पिण्डके रोगकी वजहसे दमा; आक्षेप; खाँसी; बहरापन; दुबलापन; नाकसे रक्तस्राव; मुँहासे; मूर्च्छावायु, कामला; आर्त्तवमें विकार; गाना-बजाना सहन न होना; कामोन्माद; योनिद्वारकी खुजलाहट; सूतिकावस्थामें अकड़न; जीभके नीचे अर्बुद; प्लीहा प्रदेशमें दर्द; पेट फूलना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० एलेनका मत:—बच्चा और जो थोड़ी उम्रवाली बालिकाएँ उत्तेजनावाली प्रकृतिकी, स्नायु प्रधान और क्षीण होती हैं (ऐम्ब्रा), उनके लिये यह बहुत ही उपयोगी है। गृहस्थीके कारण क्लान्त वृद्ध मनुष्योंके स्नायविक रोगोंमें भी अधिक उपयोगी है। मांसहीन, दुर्बल, दुःखित व्यक्ति, जिन्हें थोड़ी भी सर्दी लगते ही बीमारी पैदा हो जाती

है, व्यवसायमें जिन्हें हानि हो गयी है ऐसे मनुष्य भी इसकी उत्कृष्ट क्रिया-भूमि हैं। आक्षेपिक (Covulsive) खाँसीके साथ मेरुमज्जामें उत्तेजना, इससे आराम हो जाती है। कोई-न-कोई स्नायविक लक्षण मौजूद रहे बिना ऐम्ब्रा-ग्रिसियाके निर्वाचनसे लाभ नहीं होता। मस्तिष्क और मेरुमज्जागत स्नायु-विधानपर (Cerebro-Spinal Nerve-System) क्रियाकी वजहसे इसके द्वारा आक्षेप विक्षेपके लक्षण पैदा हो जाया करते हैं, चेहरेकी पेशीमें फड़कन या सङ्कोचन हुआ करता है। इसके कुछ निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) रोगी बहुत दुःखी रहता है। दिन-रात सोया करता है। (२) नाना प्रकारके विषय-सम्बन्धी गड़बड़ीके कारण उसे नींद नहीं आती, शय्यासे उठकर टहला करता है। (३) जीभकी तलीमें अर्बुद (Ranula) हो जाता है और उससे बहुत बदबू आया करती है। (४) तलपेटमें बहुत सर्दी मालूम होती है। (५) बच्चेको पाखाना होते समय वह किसीका अपने पास रहना, यहाँतक कि अपनी धायका पास रहना भी सहन नहीं कर सकता। बार-बार वृथा ही मलवेग होनेके कारण अत्यन्त चिन्तित रहता है। (६) ऋतुस्रावके समय थोड़े भी कारणसे रक्तस्राव होने लगता है। (७) प्रदर-स्राव—विशेषकर केवल रातमें होता है, गाढ़ा नीला—सफेद श्लेष्मा मिला। (८) प्रचण्ड आक्षेपिक हूप खाँसी; इसके साथ ही डकार और स्वरभङ्ग; बोलने या जोरसे पढ़नेपर बढ़ना।

लक्षणावली

मन।—स्थूल बुद्धि,—दो-तीन बार भी एक विषयको पढ़नेपर समझ नहीं सकता। उन्माद हो जानेसे भय (ऐलि-सिपा, ऐल्यूमिना); ऐण्टि-पाइरिन, कैल्के, कैनाब-इण्डिका, चेलिडोन, सिमिसि, युपेटोर, हाइड्रोफो, आयोड, केलि-फास, लैक-कैन, लिल-टाइ, मैन्सि, मिडोराइन, मार्क, नक्स, सिफिलाइन। समस्त रात्रि मानसिक यन्त्रणा और पसीना बहना। भीड़ या समाजमें जानेसे भय; अकेलेमें रहना चाहता है; गाना सुननेपर रुलाई आ जाती है। (ऐको, सैबाई, नेट्र-कार्ब, क्रियोजोट, थूजा); अत्यन्त विषाद—दो-तीन दिनोंतक लगातार रोता रहता है। व्यापार वगैरहमें विफल हो जानेकी वजहसे नींद न आना; रातमें खाटसे उतरकर टहला करता है। (ऐक्टिया, सिपि) लज्जाशीलता; जीवनसे उदासीनता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, रोगीके शरीर हिलाते ही और टहलनेके समय ढुलक पड़ता है, इसके साथ ही मस्तक और पाकाशयमें कमजोरी।

सरमें चक्कर आनेके कारण रोगी वाध्य होकर सोया रहता है। ललाटमें छेदनेकी तरह दर्द ; बाईं कनपटीसे मूर्द्धदेश (खोपड़ी) तक डङ्क मारनेकी तरह दर्द। मस्तककी ओर दर्द ; केश उड़ जाना।

कान।—श्रवण-शक्तिका घटना। कानके छेदमें कुटकुट आवाज़ (घड़ीमें चाभी देनेकी आवाज़की तरह) ; सङ्गीतकी आवाज़से खाँसी बढ़ जाती है। सङ्गीत सुननेपर माथेकी ओर खून दौड़ जाता है।

नासिका।—शोणित स्राव (नाकसे खून जाना), विशेषकर सवेरे (साधारणत:—मिलिफो ; चोटकी वजहसे—आर्निका ; माथेमें टपक-जैसा दर्दके साथ—बेल ; चमकीला रक्त—सवेरे शय्यासे उठनेपर ब्राई ; सवेरे जमा हुआ रक्तका टुकड़ा—नक्स ; खींचनेपर रबरकी तरह बढ़ता है—क्रोक ; अकसर नाकसे खून गिरा करता है ; रक्त स्राव—प्रवण-धातु—फास ; वृद्ध मनुष्यको बारम्बार स्राव—कार्बो-विज ; यकृतमें विकारकी वजहसे—चेलिडो)।

मुख-विवर।—जीभके नीचेका अर्बुद (Ranula Frog tongue) थूजा, कार्बो, कैल्के ; ठीक बँधे समयपर—प्रति वर्ष—हाइड्रोफोब ; मुँहमें दुर्गन्ध ; जीभकी तलीमें दर्द होता है। क्रुप खाँसीकी बीमारीमें मुँहमें दुर्गन्ध।

पाकाशय।—गर्म पीनेका पदार्थ, खासकर गर्म दूध पीनेपर सब रोग-लक्षणोंका बढ़ना। भोजनके बाद घटना। आक्षेपिक खाँसी (Spasmodic) के साथ बहुत डकार आना। छातीमें जलन (आर्जेण्ट-नाई ; ऐल्यूमिना देखिये)। विफल या तृप्ति न करनेवाली डकार—वायु सेवनके लिये टहलनेके समय ; दूध पीनेकी वजहसे डकार। पाकाशय और अन्त्राशयमें आध्मान ; पाखाना जानेके पहले आँतोंमें गड़गड़ाहट अर्थात् कलकल शब्द होना (ऐलो, नेट्रम-सल्फ, पल्स)।

तलपेट या अन्त्राशय और मलांत।—अन्त्राशयमें ठण्डक मालूम होना (कैल्के, आस्टि) ; पाखाना फिरनेके समय, दूसरे मनुष्योंका यहाँतक कि धायका उपस्थित रहना भी बच्चा सहन नहीं कर सकता। बार-बार पाखाना लगने और न होनेकी वजहसे रोगिनी बहुत चिन्तित हो उठती है।

श्वास-यन्त्र।—क्रुप खाँसी—डकार और टूटी फूटी आवाज़ (भग्न-स्वर), इसके साथ ही बार-बार अकड़न-भरी और शरीरको हिला देनेवाली खाँसीका आक्रमण ; जोरसे पढ़ने या बात करनेपर ही खाँसीका बढ़ना (ड्रोसेरा,

फास) ; सन्ध्याके समय श्लेष्मा नहीं निकलता। सवेरे निकलता है (हायोसा)। हूप खाँसी, पर खाँसी आने बाद साँस लेनेके समय जो "कों" शब्द हुआ करता है उसका न होना ("कों" शब्द मिली—सिना)। थूक या कफ़ (Expectoration) भूरा-सफेद, कभी कभी पीली आभा लिये होता है और उसका स्वाद नमकीन या खट्टा होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषकी त्वचामें बहुत ही आराम देनेवाली खुजलाहट। लिङ्गोद्रेकसे आकांक्षा या आनन्द नहीं मिलता। रातमें अनजानमें या स्वप्नमें वीर्यपात हो जाना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दो ऋतुओंके बीचके समयमें सामान्य कारण होनेपर भी रक्त-स्राव होने लगना, थोड़ा ज्यादा घूमने-फिरने और कड़ा पाखाना होनेपर भी रक्त दिखाई देता है इत्यादि। प्रदर—गाढ़ा, नीला ; सफेद श्लेष्माकी तरह पदार्थका स्राव, खासकर रातके समय अधिक (कास्टि, मर्क, ऐसिड-नाई); प्रत्येक बार स्रावके पहले योनि-देशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। सोनेपर जरायुके लक्षण सब बढ़ जाते हैं।

हृत्पिण्ड।—भयानक हृत्कम्पन—पीसनेकी तरह दर्द, मानो वक्षके भीतर एक ढेला या कोई जड़ पदार्थ रुका हुआ है, मानो वक्षका भीतरी भाग भरा हुआ है ; वायु सेवनके लिये टहलनेके समय वह बढ़ जाता है, उसके साथ चेहरा मलिन रहनेका लक्षण भी इसके साथ मिला रहता है।

प्रत्यङ्ग।—विश्राम और रातके समय बाँह मानो "सो जाते हैं" अर्थात् सुन्न हो जाते हैं या उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। मालूम होता है, मानो दोनों पैर सो गये हैं अर्थात पैरमें झुनझुनी होती है। हाथ बहुत देरतक ठण्डा रहता है। प्रायः प्रत्येक रातमें जानुदेश (घुटना) और जंघाकी पींडलीकी पेशियोंमें (Calves) ऐंठन हो जाती है या वह जकड़ जाता है (नक्स, कूप्रम, कैम्फोरा), स्नायविक बीमारीमें पेशीमय प्रदेशोंका फैलना और सिकुड़ना।

त्वचा।—लिङ्ग-प्रदेशमें खुजली और दर्द ; त्वचामें स्पर्श-ज्ञानका न रहना। जलन करनेवाला दादकी तरह उद्भेद (Herpes)।

ज्वराधिकार।—दोपहरके पहले आलस्य और औंघाईके साथ शीत या कम्प ; भोजनके बाद घटना। हर पन्द्रह मिनटका अन्तर देकर उत्ताप पैदा

होना—सन्ध्याके समय बहुत अधिक। रातमें, खासकर आधी रातके समय बहुत पसीना ; रोगवाले पार्श्वमें अधिक पसीना होना।

निद्रा।—विषय-सम्बन्धी दुर्भावनाकी वजहसे नींद न आना ; खाटसे उठकर घूमना पड़ता है। शरीर बरफकी तरह ठण्डा और निद्रित अवस्थामें प्रत्यङ्गोंका सिकुड़ना (निद्रावस्थामें फड़कना बन्द होता है—ऐगरि)।

वृद्धि।—गर्म चीजें पीने, गर्म घर, सङ्गीत, सोने, जोरसे पढ़ने या बातचीतसे, बहुत लोगोंकी भीड़भाड़ और टहलना वगैरह कारणोंसे बढ़ना।

घटना।—भोजनके बाद ; ठण्डी हवामें ; ठण्डी चीजें खाने-पीनेसे ; शय्यासे उठकर घूमनेपर।

सम्बन्ध।—ऐम्ब्रा-ग्रोसियासे तुलनीय—मस्कस (मूर्च्छा-भाव और जरायु रोगसे उत्पन्न दमा) ; ऐसाफि, सोराइनम, वैलेरि, कोका (सलज्ज भाव) ; कैलि, ब्रायो, नक्स, कैल्के, नेट्रम-कार्ब, सिमिसि, आर्स (दमा ; स्नायवीय-दौर्बल्य) ; बोविस्टा (ऋतुके मध्यवर्त्ती समयमें आर्त्तव-स्राव) ; लेके, सिपिया, काफिया, चायना, इग्ने, सल्फ, पल्स, स्टैफ, सिकेलि (आलसी स्त्रियोंका)।

दोषघ्न।—कैम्फ, काफिया, नक्स, पल्स, स्टैफि। यह स्वयं स्टैफि और नक्सका दोषघ्न है।

शक्ति।—२री दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक या उससे भी ऊँचा क्रम लाभदायक है।

ऐम्ब्रोसिया

(AMBROSIA)

दूसरा नाम।—वार्म उड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नये पल्लव और फूलसे मूल अर्क बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—सर्दी और दमा रोगमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—यह सर्दी खाँसी और हूप खाँसीको एक उत्तम दवा है।

लक्षणावली

नाक ।—सर्दी, छींकके साथ नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव। नाकसे रक्त-स्राव, श्वासनाली और श्वासनाली भुजमें खुजली, श्वासकृच्छ्रता (ऐरालिया, युकैलिप), इसके साथ साँय-साँय शब्द करनेवाली खाँसी मौजूद रहती है।

हूप खाँसी (Pertussis)—रातके ८ बजेसे १२ बजेतक खाँसी, दमा और वक्षके भीतर दर्दके साथ साँय-साँय शब्द ; नाकसे रक्तस्राव ; नाकका छेद, मस्तक और वक्ष मानो भरा हुआ है, ऐसा मालूम होना। आँखें लाल और करकराती हैं। आँखसे बहुत ज्यादा आँसू निकलते हैं (डा० ई० ई० हालमैन)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३री दशमिक क्रमतक।

ऐमोनियम ऐसिटिकम

(AMMONIUM ACETICUM)

दूसरा नाम ।—ऐमोनिया-ऐसिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—बहुमूत्र ; ज्वर ; पसीना।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत प्राचीन कालसे ऐलोपैथगण इसे फीवर मिक्सचरके एक उपादानके रूपमें व्यवहार करते आ रहे हैं। त्वचापर विशेषकर चेहरे और पेटपर तापका बढ़ जाना, गलेमें खुरच जानेकी तरह दर्द, माथेमें भार मालूम होना—इन लक्षणोंमें यह लाभदायक है। बहुत पेशाब ; पेशाबमें सैकरिन या चीनी निकलना ; बहुत अधिक पसीना—कार्बो-वेज। मानो पसीनेमें नहा गया है—लक्षणोंमें यह बहुमूत्र रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है।

शक्ति ।—३०—२००।

ऐमोनियैकम गमाई

(AMMONIACUM GUMMI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक प्रकारकी गोंद या गोंद जैसे पदार्थसे रेक्टिफायड स्पिरिटके सहयोगसे मदर-टिंचर तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बना करता है।

उपयोगी धातु।—विषन्न प्रकृतिवाले, क्षीण देह, वृद्ध मनुष्योंके लिये तथा पुराने स्वरनालीभुज-प्रदाह (Bronchitis) में यह बहुत लाभदायक है। रोगी ऐसा मालूम होता है मानो उसकी जांघ फूल गई है।

लक्षणावली

मन।—असन्तुष्ट, चिड़चिड़ा, बकवादी, मस्तिष्ककी जड़ता।

आँख।—अस्पष्ट दृष्टि, ऐसा मालूम होता है, कि तारे और आगकी चिनगारियाँ आँखोंके आगे उड़ रही हैं (ऐमोन-कार्ब देखिये); पढ़नेके समय आँख बहुत जल्द थक जाती है (रियुटा)। दीयेकी रोशनीमें पढ़नेसे आँखें करकराती हैं और उनमें जलन पैदा हो जाती है, लाल हो जाती हैं और उनमें टपकका दर्द होता है (बेल)। कानमें फाड़ने या तोड़ने-जैसा दर्द।

श्वास-यन्त्र।—तालुमूल सूखा; निर्मल हवाके नाकमें जानेपर वृद्धि। श्वासकृच्छ्रता; वायुनली भुजकी पुरानी प्रादाहिक सर्दी—पीवकी तरह श्लेष्मा अधिक परिमाणमें सञ्चित होता है, परन्तु कफ़ (Sputa) की मात्रा बहुत थोड़ी रहती है। ठण्डी हवामें बढ़ना; श्लेष्मा गाढ़ा, लसदार और कड़ा। हृत्पिण्डकी गति प्रबल और ऊपरी पेटतक फैली हुई; पतला श्लेष्मा मिला दमा—गाढ़ा लेईकी तरहं थूक या कफ़ निकालनेकी चेष्टा करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके भीतरका कोई यन्त्र टूट जायगा।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—आर्निका; ब्रायोनिया; ऐसाफि; कोना; साइकूटा (सदृश उद्भेद), ऐम्ब्रा; अरम; आर्निका (चोट); पल्स; बेल; रूटा (आँख)।

शक्ति।—६ठे दशमिक विचूर्णसे ३० शक्तितक प्रयोग हुआ करता है।

ऐमोनियम ।—डाइल्यूट एसेटिक ऐसिडके साथ ऐमोनिया मिलाकर मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

फलप्रद ।—बहुमूत्र, ज्वर और पसीनेके लक्षणमें व्यवहृत होता है ।

ऐमोनियम बेञ्जोयिकम

(AMMONIUM BENZOICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें गलाकर मदर-टिञ्चर तैयार होता है ; विचूर्ण भी बनता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—पेशाबमें अण्डलाल ; शोथ ; गठिया या सन्धिवात ; जीभकी जड़में अर्बुद ; अजीर्ण और सन्धिवातमें इसका प्रयोग किया गया है और लाभ हुआ है ।

उपयोगिता और आभास ।—लाला-मूत्र रोगकी यह अन्यतम दवा है। खासकर यदि रोगीकी धातु सन्धिवात (Gouty) वाली हो। पैरकी अंगुलियोंमें रस-सञ्चयके साथ-ही-साथ सन्धिवात रोग हो तो यह बहुत फायदा करती है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—भारी और गड़बड़ी मालूम होना ।

मुखमण्डल ।—दोनों आँखें फूलीं ; जीभ फूली, मानो जीभके नीचे अर्बुद (Ranula) हो गया है (ऐम्ब्रा) ।

पेशाब ।—गाढ़ा और गदला—अण्डलाल मिले पेशाबमें (ऐसिड-बेन, आर्स, कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, टेरिबिन्थ) ; पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा ।

स्वरनाली ।—स्वरनालीके भीतर सर्दी ।

पीठ ।—पाखानेके वेगके साथ त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें दर्द । वृक्क या मूत्रग्रन्थि (Kidney region) प्रदेशमें दर्दका भाव ।

सम्बन्ध । –**सदृश** ।—एपिस, आर्निका, ऐसिड-बेन, ओपियम, कास्टिक, कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, नेफोलियम, टेरिबिन्थ ।

शक्ति ।—३रीसे ६ठी विचूर्ण या टिञ्चर ।

एमोनियम ब्रोमेटम

(AMMONIUM BROMATUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आफ ऐमोनिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले चुआये हुए पानीमें गलाया जाता है। इसके बाद उच्च क्रम सुरासारमें तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—आँखोंके स्नायु और पेशीका शूल; चर्बी बढ़ जाना और स्थूलता; सर्दीकी वजहसे खाँसी; मृगी; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी; स्वरनालीकी बीमारी; गण्डमाला; दूषित आँखोंका प्रदाह; डिम्बाधारका प्रदाह; हूप खाँसी (कुकुर खाँसी); श्वासनाली-प्रदाह इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—तालुमूल और स्वरनली (Larynx); मुँहकी पुरानी सर्दी प्रभृति रोगोंमें उपयोगी है। इसके अलावा शिरःशूल (Clavus) और मेदाधिक्य (शरीरका मोटापन) रोगमें (फाइटोलैक्का, वेरि) साधारणतः इसका व्यवहार हुआ करता है। मस्तक, वक्षस्थल वगैरह स्थानोंमें कसावट या जकड़ जानेकी तरह मालूम होना (कैक्टस)।

लक्षणावली

मन ।—डर; निरुत्साह।

मस्तक ।—मालूम होता है, कि कानके ऊपरी अंशसे एक बन्धन मस्तकको कसकर लपेटे हुए है (ऐनाका)। दाहिनी कनपटीमें दर्द, मानो काँटी ठोकी जा रही है (इथि, काफि)।

कण्ठनाली ।—मुख-गह्वरमें जलन और कण्ठनालीमें खुजली; सूखी, अकड़न-भरी खाँसी; रातके समय बढ़ना। दिनके समय गलेमें खून-मिला सफेद कफ़ भरा रहता है।

श्वास-यंत्र ।—यन्त्रणादायक और शरीरको हिला देनेवाली आक्षेपिक खाँसी, कभी-कभी कई मिनटका अन्तर देकर बार-बार दो-तीन घण्टेतक आती रहती है, खासकर रातमें शयनावस्थामें स्वरनालीमें खुजली मालूम होती है। खाँसी, विरक्ति पैदा करनेवाली, उसके साथ ही स्वरभङ्ग और श्वास-कृच्छ्रता

और थकावट तथा सुस्ती मालूम होती है। श्लेष्मा नहीं निकलता। एकाएक ऐसी खाँसी, मानो श्वास-रोध हो जायगा। रात २ बजनेके समय खाँसता-खाँसता जाग उठता है। एकाएक पाखाना लग जाता है, पतला मल। छातीके पीछे और गर्दनके पीछे जाड़ा मालूम होनेके साथ बोखार।

सम्बन्ध।—आर्जेण्ट-नाइ; कोनायम; कास्टिकम; लैकेसिस; हायोसा; कैलि-ब्रोम; सिनेगा।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे ३य दशमिक क्रम व्यवहारमें आता है।

ऐमोनियम कार्बोनिकम

(AMMONIUM CARBONICUM)

दूसरा नाम।—कार्बोनेट आफ ऐमोनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआए हुए पानीमें २ दशमिक क्रमतक तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—(डा० क्लार्क कहते हैं)—दमा; श्वासनालीका प्रदाह; खाँसी; हड्डी खिसक जानेकी वजहसे दर्द; अनजानमें पेशाब हो जाना; विसर्प; मसूढ़ेमें दर्दका बढ़ जाना; अर्श; गुल्मवायु; फेफड़ेकी सूजन या शोथ; छोटी माता; नाककी बहुत-सी बीमारियाँ; कर्णमूल-प्रदाह; बालास्थि-विकृति; आरक्त ज्वर; आघात; मोच खाना; वक्षोस्थिमें दर्द; दाँतका दर्द; मूत्रक्षारसे पैदा हुई विषाक्तता; अंगुलहाड़ा इत्यादि।

उपयोगी धातु या आभास।—रक्त-स्रावी धातु। रक्तके लाल कणोंका क्षय हो जाना और खूनका पानीकी तरह पतलापन वगैरह ऐमोन-कार्बको क्रियाके परिणाम हैं। सभी जखम सड़नेवाले होते हैं। बलिष्ठ और मोटे-ताजे व्यक्ति, खासकर वे स्त्रियाँ जो आलस्यमें दिन काटती हैं और इसी कारणसे उन्हें नाना प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं और जो सब थोड़ेमें ही कातर हो पड़नेवाली स्त्रियाँ हमेशा सुगन्धित ऐमोनियाकी गन्ध लिया करती है और जाड़ेके दिनोंमें जिन्हें बराबर सर्दी हो जाया करती है, उनके लिये ऐमोनियम

कार्बोनिकम विशेष उपयोगी है। जिन स्त्रियोंको ऋतुके पहले या आरम्भकालमें विसूचिका जैसे लक्षण पैदा हो जाते हैं; जिन्हें थोड़े ही समयके अन्तरसे ऋतु-स्राव हो जाया करता है और स्राव बहुत ज्यादा होता है। बच्चा नहानेसे बहुत चिढ़ता है। औंघाई, लसिका ग्रन्थियाँ फूलीं, घोर लाल और धीरे-धीरे निकलनेवाले उद्भेदके साथ आरक्त ज्वर ऐमोन-कार्बका निर्णायक लक्षण है। मूत्रनाश विकार (Uroemia), मूत्रक्षारसे पैदा हुआ विकार इसके विषय हैं और उस समय रोगीमें ये सभी लक्षण पैदा हो जाते हैं:—निद्रालुता, फेफड़ेके भीतर श्लेष्माके बुलबुले फटनेकी तरह शब्द; केश नोंचनेकी चेष्टा; रक्तमें अम्लजान वायु न रहनेकी वजहसे दोनों ओंठ नीले या नीले-पीले रङ्गके हो जाते हैं और जीभ भूरी (ऐण्टि-टार्ट) हो जाती है।

लक्षणावली

मन।—अन्धड़-पानीके समय क्रोध आ जाना। सरमें दर्दके साथ भूलना; अनमनापन। तुरन्त किसी विपत्तिके आक्रमणकी आशङ्का (ऐमिल-नाइट्र, चिनिन-सल्फ, ऐक्टिया, क्लिमेटिस, क्यूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, लिलि-टाइग्र, मैग-कार्ब, स्कुटेलेरिया, सिपि, वेलि, वेरेट, वेरि)। परिश्रमसे डरना (ऐनाका, ऐगार, ग्रैफा, गुयार, लाइको, आक्साइड्रोप, ऐसिड-पाइ, सैबाइ, सिपि, सल्फ, टैराक्सेकम, जिङ्कम)। अपने रोगके सम्बन्धमें बहुत चिन्ता (दूसरोंके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें उत्सुकता—कास्टि, काकुलस; अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें—पल्स, सिपि)।

मस्तक।—सरमें दर्द—भरा हुआ मालूम होना, मानो ललाट फट जायगा (बेल, ग्लोनोइन)। ऐसा जान पड़ता है, मानो माथा हिल रहा है (बैराइट, कार्बो-ऐन, सिङ्कोना, साइलि, क्रोकस, डिजिटे, हायोसा, कैलि-कार्ब, नक्स-मस, नक्स-वोम, रसटक्स, सिपि, सलफर, ऐसिड-सल्फ, वेरेट्रम-ऐल्ब) और रोगी जिस पार्श्वमें चलता है, मालूम होता है, कि उसी ओर माथा ढ़लक पड़ता है, मूर्द्धाकी त्वचामें और केशतक दर्द मालूम होता है (ऐरण्डोना ऐसेरम, बेल, कैल-फास, कार्बो-वेज, सिनकोना, कोडिइनम, कोलोसिन्थ, वेरम, मर्क, मस्कस, एसिड-नाइट्र, नक्स, थूजा, वेरेट्र) "मस्तिष्कका आसन्न पक्षाघात"।

आँख।—रोशनी सहन न होनेके साथ आँखमें जलन। दृष्टि-शक्तिका बहुत व्यवहार—सुईके कामके बाद दृष्टि-पथमें काले-काले विन्दु उड़ते दिखाई

देना (रोग आदिके बाद बहुत दुर्बलताके साथ=सिङ्कोना ; यकृतके विकारसे उत्पन्न=ऐसिड-नाइ। अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे=फास ; बहुत शराब पीनेके कारण=नक्स-वोम)। ऊपरी पलकपर गुहौरी (Styes),—उसके साथ ही बहुत सङ्कोचन मालूम होना (पल्स, स्टैफि—पुराना=हिपर)।

कान ।—कानमें शब्द, रातमें अधिक। दाँतपर दाँत रगड़नेसे आँख, कान और नाकमें मानो चोट और धक्का लगता है। श्रवण-शक्तिका घट जाना, वधिरता—कर्णमूल ग्रन्थिका बढ़ना।

नाक ।—रक्तस्राव—सवेरे मुँह (आर्निका, मैग-कार्ब) और हाथ धोनेके समय बाईं नाकसे रक्तस्राव ; भोजनके बाद (सवेरे=आर्निका, ब्राई, नक्स) स्राव। पुराना पीनस—बार-बार नाक साफ़ करनेके समय खून मिला श्लेष्मा निकलता है ; माथा झुकानेपर नाकके अगले भागमें खून दौड़ पड़ता है। रातके समय प्रायः नाककी छेद रुक जाती है—मुँह फाड़कर साँस लेना पड़ता है—[उपझिल्ली प्रदाह रोगमें (Diphtheria) यह लक्षण ऐमोन-कार्बका निर्णायक लक्षण है] ; बहुत समयतक रहनेवाली सर्दी, बच्चोंकी नाक चिपक जाना (हिपर, नक्स, सेम्बुकस, स्टिक्टा)। नाकसे बहुत तेज़ जलन करनेवाला पानी निकलता है।

मुखमण्डल ।—मुँहके चारों ओर खुजलानेवाला पिसर्प या दादकी तरह चकत्ते। रजस्वला अवस्थामें फोड़ा, फुन्सी इत्यादि। ओंठके जोड़की जगह फटी, दर्द-भरी और जलनयुक्त। गाल, कानकी जड़ और गलेकी गांठोंका कड़ापन और सूजन। तकलीफ़ देनेवाला दाँतका दर्द,—सन्ध्याके समय और शय्यापर सोते ही (बेल, हायो, मार्क, पल्स, रास) आरम्भ होना, रजस्वलावस्थामें=कैल्के, कैमो, कार्बो-वेज, नेट्रम-म्यूर, लैके, फास ; घटना=भोजनके बाद=आर्नि कैल्के, कैमो, ऐसिड-फास, रास-टक्स, सल्फ ; बढ़ना—मुँहमें गर्म पानी लेनेपर=ब्राई, कैल्के, कैमो, कास्टि, हिपर, लैके, मार्क, नैट्र-म्यूर, नक्स-मस, नक्स-वोम, पल्स, सिलि, स्टैफ, सलफर ; चबानेके समय दोनों हनुमें चिलक मार उठती हैं=कैप्सि, फेरम, लिडम)।

कण्ठनाली ।—बदबूदार या सड़नेवाला गलेका जखम (Putrid Sore-throat) ; जिह्वामूलकी ग्रन्थिका सड़ना ; ग्रन्थियाँ फूलीं और कड़ी ; रोहिनी या गलनालीकी उपझिल्लीका प्रदाह (Diphtheria) या आरक्तज्वराधिकारमें रोगीकी नाक रुक जाती है और रोगीको मुँह फाड़कर साँस लेना

पड़ता है। गलनालीमें कुछ अटका जैसा मालूम होनेके कारण निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती हैं।

पाकाशय।—छातीमें जलन; मिचली; लार बहना और जाड़ा मालूम होनेके साथ-ही-साथ ऊपरी पेटमें दर्द; दूध पीनेकी इच्छा न होना; मीठी चीज़ खानेकी इच्छा। प्यास; भूख ज्यादा, पर थोड़ा ही खानेसे तृप्ति (लाइको)। मुँहमें रक्तका स्वाद, तीता स्वाद।

आमाशय।—आँतोंमें आवाज़, कलकल शब्द और दर्द। आध्मानकी वजहसे आँतका बढ़ना; खूनी बवासीर; रजस्वलावस्थामें बढ़ना। मलद्वारमें खुजली; बाएँ कोखकी ओर सूजन, बहुत दर्द, बाईं करवट सो नहीं सकता; जागनेपर देखा जाता है कि सूजन और दर्द दोनों ही गायब हो गये हैं। ऋतुके पहले विसूचिकाकी तरह दस्त-के आरम्भ हो जाता है (बोविस्टा, वेरेट्रम); मल कड़ा; गुठला-गुठली और पाखाना फिरते समय बहुत तकलीफ़ होता है (ऐकोन, ऐल्यूमिना, ऐनाक, आर्जेण्ट-नाइ, बेराई-कार्ब, कार्बो-वेज, कोकस, ग्रैफ़ाइटिस, इग्ने, कैलि-कार्ब, लाइको, मर्क, ऐसिड-नाई, फास, प्लैटि, सिपि, सल्फ, टियुक्रियम, थूजा)।

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग; रातमें अनजानमें पेशाब हो जाता है। मूत्रस्थलीमें आकुञ्चनकी वजहसे वेग। पेशाब सफेद आभा लिये खून मिला, बहुत ज्यादा, गदला और सड़ी गन्ध-भरा। मूत्र-रोध-जनित (Uroemia) विकार—निद्रालुता, केश नोंचनेकी चेष्टा, दोनों ओंठ नीली आभा लिये और जीभ भूरे रंगकी; फेफड़ेमें श्लेष्माके बुलबुले फटनेका शब्द (अर्थात फुटफुट शब्द)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषकी त्वचा (Scrotum) और कोष-रज्जु, या शुक्रवाही नलीमें (Spermatic Chord) खुजली और दर्द। बहुत ज्यादा रमणकी इच्छा परन्तु लिङ्गोद्रेक (Erection) नहीं होता। प्रायः नित्य रातमें वीर्यस्राव हो जाता है। (डिजिटेलिन) पाखाना होने बाद मूत्रनाली या मूत्राशय सुखशायी-ग्रन्थिरस (Prostratic Fluid) का स्राव (ऐगनस, ऐनाका, हिपर, नैट्र-कार्ब, सेलिन, सिपि, सिलि, स्टैफ, सलफर, थूजा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुके आरम्भमें विसूचिकाकी तरह दस्त और मलका पतलापन (बोवि, स्टैफि, सलफर, वेरेट्रम)। आर्त्तव,—अत्यन्त असमयमें होता है; बहुत ज्यादा स्राव; कड़वा (Acrid)—दोनों उरूमें जखम

हो जाता है ; रातमें और बैठनेपर स्राव बढ़ जाता है—केवल चलनेके समय स्राव—लिलि-टाइ, कास्टि ; सोने बाद—क्रियो, मैग-कार्ब ; दिनमें—कैक्टस, कास्टि, लिलियम ; केवल रातके समय—मैग-कार्ब, बोवि) ; इसके साथ ही दाँतमें दर्द (कैल्के, कैमो, कार्बो-वेज, नेट्रम-म्यूर, लैके, फास) ; आँतोंमें शूल और विषन्नता ; दोनों उरु थके मालूम होते हैं ; जम्हाई और जाड़ा लगना। प्रदर—स्राव पानीकी तरह, जरायुसे गर्म-गर्म जलनके साथ निकलता है ; योनिसे कड़वा बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव होता है, जो योनि-द्वारमें जखम पैदा कर देता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्कम्पनके साथ श्वासकृच्छ्रता, परिश्रम करने और ऊँचे चढ़नेपर या गर्म कमरेमें रहनेके समय बढ़ना। सर झुकानेपर, टहलने या चलनेके समय, शय्यापर उठ खड़े होनेसे, दाहिनी ओरके वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बाएँ वक्षमें सुई बेधने जैसा दर्दके कारण बायीं करवट सो नहीं सकता (लोबेलियला) ; हृत्शूल (Angina Pectoris)—जोर-जोरसे कलेजा धड़कना ; रोगी बहुत डर जाता है, मानो अब वह मरना ही चाहता है ; ठण्डा पसीना ; अनजानमें आँसूका स्राव हो जाता है।

श्वास-यंत्र।—आवाज़ और तकलीफ़के साथ श्वास-प्रश्वास और दोनों हाथोंका काँपना। प्रत्येक रातमें ३ बजनेके समय खाँसी (कैलि-कार्ब)—गलेमें एक टुकड़ा अड़ा हुआ है, ऐसा अनुभव होना ; श्वासकष्ट, हृत्स्पन्दन और छातीमें जलन ; सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ना। स्वरभङ्ग, फेफड़ेमें वायुकी वजहसे सूजन (Emphysema), नींद आते ही श्वास रुक जाता है, जागकर साँस लेता-छोड़ता है (क्लोरम, जेल्स, ग्रण्डी, लैक-कैन, लैके, ओपि) ; बहुत श्वासकृच्छ्रता—जरा भी परिश्रम करते ही श्वासकष्ट पैदा हो जाना ; गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर या कई सीढ़ियाँ चढ़ते ही बढ़ जाना। शीतकालकी सर्दी—बूंद-बूंद खून-मिला या श्लेष्मा मिला हुआ स्राव निकलता है।

ग्रीवा-पृष्ठ।—कटि-स्थानमें दर्द, गलगण्ड इत्यादि।

प्रत्यंग।—दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे और नीली शिराएँ फूली हुईं। हाथ झुला रखनेपर अंगुलियाँ फूल जाती हैं। अंगुलहाड़ा (Whitlow) अस्थिवेष्टमें दर्द (डायस्को, सिलि)। पैरकी पोटली या जंघास्थिके पेशीमें (Calves) और पैरके तलवेमें ऐंठन (ऐम्ब्रा, नक्स, क्यूप्रम)। बैठनेके समय,

बहुत देरतक खड़े रहने और रातमें पैर दबाकर सोनेपर दोनों पैर निष्क्रिय हो जाते हैं और उनमें झुनझुनी पैदा हो जाती हैं। शरीरके दाहिनी ओरकी बीमारियाँ आदि (ब्राई, लाइकोपो ; बाईं ओरका—लैके, रसटक्स)।

त्वचा।—आरक्त ज्वरकी तरह शरीर लाल हो जाता है ("एइलेन्थस" देखिये)। विषाक्त आरक्त ज्वराधिकारमें—गहरी नींद ; नाकसे जोरकी आवाजके साथ श्वास-प्रश्वास ; जीवनी-शक्तिका अभाव (Low vitality) की वजहसे उद्भेद (Eruption) भरपूर नहीं निकलते और मस्तिष्कमें पक्षाघात हो जानेकी सम्भावना रहती है (टियुबर, जिङ्कम)। दुर्बल वृद्धोंका विसर्प रोग (Erysipelas) ; मुँहमें बाईं ओर आरम्भ होकर दाहिनी ओर फैल जाता है—ग्रेफा ; विशेषकर दाहिनी ओरका। कीड़े आदिके डङ्क मारनेपर—ऐन्थ्राक्स ; लिडम ;

नींद।—दिनमें औंघाई ; निद्रावस्थामें साँस रुक जाती है। प्रेत, मरे और मुमूर्ष मनुष्योंके सपने देखना।

ज्वर।—सन्ध्यामें ज्वर ; नाड़ी पूर्ण और कठिन ; रातके समय पसीना इत्यादि।

वृद्धि।—ठण्डी तर हवामें ; गीली पोल्टीस (Poultice) के प्रयोगसे ; नहलानेपर ऋतुके समय।

घटना।—नीचेकी ओर पेट दबाकर सोनेपर (ऐसिड-ऐसेटिक) ; बीमार और दर्दवाली करवट सोनेपर (ब्राई, पल्स—सूखी हवामें उपसर्गोंका घटना)।

सम्बन्ध।—कैम्फर, आर्निका और हिपरके द्वारा प्रतिषेधित होता है। रसटक्स, विषसे उत्पन्न चर्म रोग और कीड़े डङ्क मारनेका प्रतिविष है। लैकेसिस इसका शत्रुभावापन्न (Inimical) है।

सदृश।—ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, अरम, फास, सलफर।

शक्ति।—२री दशमिकसे ३० शततमिकतक। निम्न-क्रम और उच्च क्रमका व्यवहार होता है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० दिन।

ऐमोनियम कास्टिकम

(AMMONIUM CAUSTICUM)

दूसरा नाम।—ऐमोनियमका एक तरहका उग्र द्रव्य।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीमें गलता है। उच्च क्रम तैयार करनेके लिये स्पिरिटकी जरूरत पड़ती है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—स्वरलोप; मसानेका प्रदाह; अन्ननालीका प्रदाह; वात; सड़नेवाला जखम; वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—ऐमोनियम कास्टिकम हृत्पिण्डकी एक जबर्दस्त उद्दीपक दवा है, इसलिये एकाएक हृत्पिण्डकी सुस्ती या निष्क्रियता, शिराओंमें जमा हुआ रक्त प्रवेश करनेकी वजहसे शिराका रुकना, रक्त-स्राव, साँप काटने और क्लोरोफार्मकी गन्धसे उत्पन्न मत्तता वगैरह लक्षणोंमें सुंघाकर इसका प्रयोग होता है। अन्ननालीमें जलनके साथ कृत्रिम झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी खाँसी (काली खाँसी) (Membranous Croup) रोगके साथ इसीकी वजहसे श्लैष्मिक सूजन और जखम हो जानेका लक्षण हो जाता है। प्रवल वमन, नाक और मुँहसे निकलता है। मुँह, नाक वगैरह नवद्वारसे रक्तका स्राव होने बाद सुस्ती और भयका भाव।

लक्षणावली

मल।—बार-बार खून मिला मल। बहुत काँखनेके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें खून मिला मल।

श्वास-यंत्र।—तालुमूलमें जलनके साथ स्पर्श सहन न हो और स्वर-लोप। गलनालीका उपझिल्ली प्रदाह (Diphtheria) रोगमें पहले नासारन्ध्र (नाककी छेद) में रोगका हमला होता है। जलन और जखम करनेवाला स्राव और बहुत अधिक शारीरिक अवसाद। फेफड़ेमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा सञ्चयके साथ लगातार खाँसी। श्वासनालीके द्वार या उपजिह्वाका (Epiglottis) सिकुड़ना और फैलना—इसी कारणसे श्वास-रोध—रोगी मानो मुँह फाड़ा करता है—हाँफा करता है। कण्ठनाली और अन्ननालीमें कुटकुट और जलन होती है। अलिजिह्वा (Uvula) सफेद श्लेष्मासे ढँकी रहती है।

प्रत्यङ्ग।—बहुत थकन और पेशियोंमें कमजोरी मालूम होती है। सारा अङ्ग काँपता है। कन्धेमें वात-वेदनाकी बीमारी। त्वचा गर्म और विशुष्क।

तुलनीय।—एमोन-कार्ब प्रभृति। विनिगर (सिर्का) या खटाई इसका प्रतिषेधक या दोषघ्न है।

शक्ति।—१म दशमिकसे ६ठी दशमिकतक क्रम साधारणतः लाभदायक है।

ऐमोनियम म्यूरियैटिकम

(AMMONIUM MURIATICUM)

दूसरा नाम।—ऐमोन क्लोराइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और टिंचर। पहले पानीमें गलाकर; उसके बाद उच्च क्रम स्पिरिटके सहारे तैयार किया जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अनिद्रा; श्वासनालीका प्रदाह; कोष्ठबद्धता (कब्जियत); सर्दी, खाँसी; अतिसार; आँखकी बीमारी; ग्रन्थिका बढ़ना; अर्श; यकृतकी बीमारी; विषाद; उन्माद; ऋतुकालकी बीमारियाँ; फेफड़ेका प्रदाह; पैरका झुनझुनीवाला वात; शोताद; प्लीहामें दर्द; मोच खाना इत्यादि; नश्तर लगवाने बाद जखम आराम हो जानेपर भी उस स्थानमें स्नायविक दर्द; तालुमूल ग्रन्थियोंका बढ़ना; कितने ही प्रकारका जखम इत्यादि।

उपयोगी धातु।—जो व्यक्ति स्थूलकाय हैं; परन्तु उनके हाथ-पैर बहुत दुबले होते हैं और जो आलसी और स्थूलकाय होते हैं, उनके लिये यह दवा अधिक उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—ऐमोनियम म्यूरियैटिकमके कई प्रधान निर्णायक लक्षण:—(१) नाकसे स्राव या सर्दी, स्राव कड़वा (Acrid—खारा, नैङ्ग-स्यूर), पानीकी तरह, ओंठकी त्वचाको क्षय करनेवाला। (२) नासारन्ध्र और नाकका कुआ न जाना, मानो त्वचा क्षय हो गयी है; खुजलाहट; नाक बन्द रहना बहुत खराब मालूम होना, नाकका रुद्ध भाव दूर करनेके लिये बारम्बार नाक छिड़कना पड़ता है। (३) भग्न और

कर्कश स्वर; स्वरनाली (Larynx) में जलन। (४) कण्ठका भीतरी और बाहरी भाग फूला हुआ; गलेकी ग्रन्थियाँ दोनों (Tonsils) में भार मालूम होता है और कोई चीज निगलनेमें तकलीफ होती है। (५) सूखी और वक्षको विदारण करनेवाली खाँसी, तीसरे पहरके समय श्लेष्मा पतला रहता है; वक्षमें घड़घड़ शब्द होता है और बहुत-सा श्लेष्मा निकल पड़ता है। (६) उपजिह्वाके पिछले अंशमें जखम मालूम होता है। कुछ खानेसे आराम मालूम होता है। (७) छाती में जगह-जगहपर जलन मालूम पड़ती है। (८) दोनों पृष्ठफलकके बीचमें बरफ छू जानेकी तरह ठण्डक मालूम होती है (नेट्र-कार्ब, सिपि, ऐगार, पल्स, कास्टि), अच्छी तरहसे ढक लेनेपर भी जाड़ा दूर नहीं होता। (९) यकृतमें बहुत दिनोंका रक्त-सञ्चयकी अधिकता (Congestion)। (१०) मल-काठिन्य, चर-चर होकर निकलता है और श्लेष्मासे ढँका रहता है; पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन और जखम मालूम होता है। (११) उदरामय या पतले दस्त—हरा रङ्ग, श्लेष्माभरा मल (ऋतुके समय भी होता है)। (१२) आर्त्तव—असमयमें ही प्रकट हो जाता है—स्राव बहुत ज्यादा, घोर लाल या काला रङ्ग: थक्का-थक्का (Clotted); रातमें बहुत अधिक स्राव हुआ करता है; ऋतुके समय दोनों पैरोंमें दर्द होता है। (१३) प्रदर—स्राव अण्डलालकी तरह, इसके साथ ही नाभि-प्रदेशमें शूलकी तरह दर्द। (१४) बैठने या सोनेके समय मेरुदण्डके निचले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है। पेशाबके बाद योनिसे भूरा गोंदकी तरह पदार्थ निकलता है। (१५) गृध्रसी या कटि-स्नायु शूलकी तरह दर्द, रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसके पीछेवाली कण्डरा या पेशीकी अन्तिम भाग संकुचित या छोटा हो गया है और इसी वजहसे पैर खींचकर चलता है। इसकी क्रियाका एक आश्चर्य व्यापार यह है, कि इसमें, शरीरके उर्द्ध, मध्य और निम्न अंशके रोग आदिकी घटा-बढ़ी दिनके प्रथम, मध्य और शेष भागके अनुसार विभक्त रहती है; जैसे—मस्तक और वक्षस्थलकी बीमारियाँ सवेरे, अन्त्राशयके रोग तीसरे पहर और प्रत्यंग, त्वचा तथा ज्वर आदिके लक्षण सब सन्ध्याके समय बढ़ते हैं।" (डा० बोरिक)।

लक्षणावली

मन।—बातचीतसे अनिच्छा। शङ्कित चित्त और दुःखित, मानो उसके भीतर न जाने कितना दुःख भरा हुआ है। रोनेकी इच्छा होती है और कभी-कभी वास्तवमें रोने लगता है। सभी विषयोंमें घबड़ा उठता है।

मस्तक ।—सरमें चक्कर और पूर्णता मालूम होना ; कभी-कभी बगलकी ओर गिर जानेकी सम्भावना हो जाती है। बाईं कनपटी (Temple) और माथेके वाम पार्श्वमें सुई बेधने-जैसा दर्द, माथा झुकानेपर, माथेके शीर्ष भाग अर्थात मूर्द्धदेशमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो माथा दो टुकड़े हो जायगा। रूसी (Dandruff), खुजलीके साथ केश झड़ जाना।

आँख ।—आँखके सामने कुहरेकी तरह मालम होना, घरके बाहरी भाग या चमकीली रोशनीमें बढ़ना ; कोठरीके भीतर घट जाना। ऐसा मालम होता है, मानो किसी चीज़ने सामने आकर दृष्टि-पथको रोक दिया। प्लवमान रसरेणु (Muscoe Volitantes), मानो आँखके आगे मक्खीकी तरह अर्थात काले-काले बिन्दुकी तरह कुछ उड़ रहा है (एमोन-कार्ब देखिये)। रातमें जलन और आँसुओंका स्राव।

नाक ।—सर्दी—पानीकी तरह, कड़वा स्लेष्माका स्राव, ओठमें लग जानेपर जखम पैदा कर देता है (सिपा ; नेट्र-म्यूर)। बार-बार छींक ; बाएँ नासारन्ध्रमें घाव पैदा हो जानेकी तरह दर्द और उसका छुआ न जाना, सर्दीके कारण घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना। नासारन्ध्रमें खुजलाहट और बारम्बार नाक छिड़कनेकी इच्छा ; मालूम होता है, किसी रुखड़ी चीज़ने नाक बन्द कर रखी है। दिनमें एक नाक बन्द रहती है और रातमें दोनों ही बन्द हो जाती है (सेम्बि ; नक्स)।

मुख ।—मुँहका प्रादाहिक स्नायुशूल (Neuralgia) ; बाईं ओरके निचले मसूढ़ेमें सूजन,—सुई बेधनेकी तरह दर्द ; यह दर्द बाईं कनपटीतक फैल जाता है। मुख-गह्वर और दोनों ओठमें स्पर्श सहन नहीं होता ; खाल उधड़ जाती है। ओठमें आग छू जानेकी तरह जलन। निम्न हनुबटीकी सन्धिकी नीचेवाली गांठ (Gland) में सूजनके साथ गालका फूलना ; वहाँ टपक जैसा दर्द और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

गलेके भीतर ।—जिह्वा-मूल-ग्रन्थियों (Tonsils) में सूजन और टपकका दर्द ; निगलनेमें बहुत तकलीफ़। गलक्षत रोगाधिकारमें (Sore-throats), गलनालीमें इतना गाढ़ा स्लेष्मा इकट्ठा होता है कि खाँसकर निकाला नहीं जा सकता।

पाकाशय ।—लेमोनेड या शराब पीनेकी बहुत इच्छा। खाया हुआ पदार्थ और खट्टा पानी, डकारके साथ गलेमें आ जाता है। भोजनके बाद

मिचली आती है और मुँहमें पानी भर आता है। भोजनके बाद ऊपरी पेट (Pit of stomach) में दर्द।

अन्त्राशय या निम्नोदर।—बैठनेके समय प्लीहामें सुई बेधनेकी तरह दर्द। नाभिके चारों ओर मरोड़की तरह मालूम होना। तलपेटमें कोई भारी चीज़ रहनेकी तरह मालूम होना और दर्द, मानो पेट फट जायगा। यकृतमें बहुत दिनोंकी रक्ताधिक्यता या रक्त-सञ्चय (Congestion)। अन्त्राशयमें अर्थात तलपेटमें चर्बीका बढ़ जाना (Fatty Deposit)। विटपास्थि (Os pubis) से लेकर श्रोणि-देश अर्थात गुह्यद्वारसे जननेन्द्रियके बीचके स्थानमें कतरने या सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। गर्भावस्थामें तलपेटकी बहुत तरहकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं।

मल और मलान्त्र।—दुरारोग्य कब्जियत, इसके साथ ही बहुत पेट फूलना; मल कड़ा और बाहर निकलनेके समय चूर-चूर हो जाता है; पाखाना फिरनेके समय बहुत काँखना पड़ता है; मलद्वारसे ही मल टूट जाता है (मैग-म्यूर)। हर बार अलग-अलग रंगका पाखाना होता है (पल्स)। अर्श—वह छुआ नहीं जाता और जलन-भरी रहती है। पाखाना होने बाद बहुत देरतक मलनालीमें जलन हुआ करती है और डङ्क मारने जैसा दर्द होता है (इस्क्यूलस, सल्फ); खासकर स्राव रुक जाने बाद ऐसा अर्श होता है। कड़ा और हरे रङ्गका पतला मल पर्यायक्रमसे होता है। मलद्वारमें जखम पैदा हुआ दर्द और पीव-भरा फोड़ा (Pustules) निकलता है और पतले दस्त आते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुके समय दस्त और कै (ऐमोन-कार्ब देखिये); आँतोंसे रक्तस्राव (फास); पैरके निचले भागमें शूलकी तरह दर्द; रातमें अधिक आर्त्तव-स्राव होना (बोवि; केवल सोनेपर ही स्राव होता है और बैठने या टहलनेपर रुक जाता है—क्रियो; केवल शरीर हिलानेके समय स्राव, टहलना या चलना रोकते ही स्रावका रुक जाना—लिलि-टाइ; केवल रातमें या सोने बाद स्राव, चलनेके समय रुक जाता है—मैग-कार्ब)। प्रदर, अण्डलालकी तरह, स्राव आरम्भ होनेके पहले नाभि-स्थानमें मोच खानेकी तरह दर्द मालूम होता है; प्रत्येक बार पेशाब करने बाद, भूरे रङ्गका, लसदार और बिना तकलीफ़का स्राव (भूरा—एसिड-नाइ; अण्डलालकी तरह सफ़ेद—एल्यू, बोवि, मैंगो, नैट्र-म्यूर, पोडो, स्टैन)।

श्वास-यन्त्र ।—स्वरभङ्ग और स्वरनालीमें जलन ; सन्ध्याके समय बार-बार श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करनेपर थोड़ा-थोड़ा श्लेष्माका टुकड़ा निकलता है। उपजिह्वाके पिछले अंशमें जखम होनेकी तरह मालूम होना ; छाती फाड़नेवाली खाँसी, ऐसा मालम होना, मानो स्वरनालीकी झिल्ली करकर करती है। दाहिनी पार्श्व या ऊपर मुँह उठाकर सोनेपर और ठण्डी चीज़ पीने या भोजन करनेपर खाँसी बढ़ जाती है। तीसरे पहर सहजमें ही श्लेष्मा निकलता है। बहुत ज्यादा कफ़ (Expectoration) और गलेमें घड़-घड़ शब्द। छातीमें दबाव या सुई बेधनेकी तरह दर्द, मानो एक ग्रास खाया हुआ पदार्थ वहीं अड़ा है।

पीठ ।—दोनों स्कन्धास्थिके बीचवाले प्रदेशमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना (ऐगार, नैट्र-कार्ब, सिपि), क्षय-कास रोगाधिकारमें (लाच-नेन ; जलन मालम होना—ग्लोनोइन, लाइको, फास) ; गरम ओढ़नेपर भी नहीं घटना ; इसके बाद खुजली। बैठने या सोनेपर मेरुदण्डके सबसे निचले अग्रभाग—पिकचंचु-अस्थिमें (Coccyx) चोटकी तरह मालूम होना। श्रोणि या त्रिकास्थिके मध्यवर्त्ती प्रदेश अर्थात् नितम्ब और कटि-देशमें (Lumbo sacral-region) भयानक दर्द।

प्रत्यङ्ग ।—टहलनेके समय पैरकी पिछली हड्डीमें, कण्डरा या पेशीके अन्तिम भागमें सङ्कोचन मालूम होना ; सन्धि-प्रदेशमें सङ्कोचन मालूम होना, मानो पेशियाँ सिकुड़ रही हैं (कास्टि, साइमिक्स)। दुर्गन्ध-भरा पैरका पसीना (ऐल्य, ग्रैफ, सोराइन, सैनिक, सिलि)। कटि-स्नायुशूल (Sciatica),—बैठनेके समय बढ़ना ; टहलनेके समय थोड़ा घटना और सोने बाद एकदम आराम हो जाना ; रजःस्वलावस्थामें पैरके तलवेमें दर्द मालूम होना (एँड़ीमें दर्द—साइक्ले, मैंगोनम, लीडम और कास्टिक)। नश्तर लगवाये हुए प्रत्यङ्गका स्नायुशूल (सिना)। सवेरे उठनेके समय सारी देहमें दर्द मालूम होता है ; परन्तु दिन चढ़नेपर आराम हो जाता है।

त्वचा ।—सन्ध्याके समय शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली आरम्भ होना।

सम्बन्ध ।—सद्दश—श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहमें—(ऐण्टिम-क्रूड) ; (दोनों स्कन्धास्थिके बीचमें सर्दी मालम होना) ; कैल्के, नैट्रम-कार्ब ; (कण्डराके सङ्कोचनमें)—कास्टि और साइमेक्स, रबरकी तरह श्लेष्मा—कैलि-बाई,

हिपर ; सर्दीके सम्बन्धमें—कैलि-क्लोर, नेट्र-म्यूर ; टुकड़े टुकड़े मल—मैग-म्यूर (बैठनेके समय सन्धि-स्थानमें दर्दको अधिकता) रस-टक्स ; (ऐंठन) सिनेगा ; (स्थूल व्यक्ति) सिपिया, सलफर।

द्रष्टव्य।—गर्म पानीसे नहानेपर ऐमोन-म्यूरसे पैदा हुए लक्षण घट जाते हैं।

वृद्धि।—चित्त सोनेपर, भोजनके बाद, ठण्डी पतली चीजें पीनेपर, सवेरे शय्यासे उठनेके समय।

प्रतिविष या दोषघ्न।—काफिया, नक्स-वोमिका।

शक्ति।—३ री दशमिकसे ३० शततमिक शक्तितक।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

ऐमोनियम फास्फोरिकम

(AMMONIUM PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम।—ऐमोनि फास्फोरस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पानीमें गलता है। इसके बाद स्पिरिटमें उच्च शक्ति तैयार होती है। इसका विचूर्ण भी बनता है।

उपयोगिता और आभास।—धातुगत गठिया (Gout) रोगाधिकारमें, रोगवाली सन्धियोंमें अस्थि-गुल्म (Nodes) या वातिका क्रियाके कारण सञ्चित पदार्थ विशेषका संस्थित (Gouty Deposit) होनेपर ऐमोन-फास एक प्रधान औषधिके रूपमें व्यवहृत हुआ करता है। बीमारीकी नयी अवस्थामें चिलक मारनेकी तरह दर्द रहनेपर यह लाभ नहीं करता, परन्तु जब रोग शरीर-विधानके अंशकी तरह हो जाता है और रोग-पीड़ित सन्धियोंमें युरेट आफ सोडा या सज्जी मिट्टीके चूरकी तरह पदार्थ (Urate of Soda) संचित होता है, अस्थि-गुल्मका लक्षण पैदा हो जाता है और बाँहमें टेढ़ापन पैदा होकर उसका आकार बिगड़ जाता है, उसी समय ऐमोनियाका प्रयोग करना चाहिये (स्टैफिसेग्रिया)। मुँहका पक्षाघात (Facial Paralysis)। स्कन्ध-देशका वातका दर्द, इससे अच्छा होता है।

शक्ति—३य से ६ठी दशमिक।

ऐमोनियम पाइक्रेटम

(AMMONIUM PICRATUM)

दूसरा नाम।—पाइक्रेट आफ ऐमोनिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—प्रथम क्रम विचूर्ण या पानीमें तैयार करने बाद सुरासारमें ४र्थ क्रम होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें यह लाभदायक है :—सर-दर्द ; स्नायुशूल और हुप खाँसी (कुक्कुर खाँसी)।

उपयोगिता और आभास।—सड़ी भाफ़ लगनेकी वजहसे स्नायुशूल और पित्त-विकारके कारण सरमें दर्द होनेपर इससे लाभ होता है।

लक्षणावली

मस्तक।—बीच-बीचमें कभी-कभी पैदा होनेवाला स्नायुशूल (Neuralgia)—शिरोपश्चातके दाहिने पार्श्वका—कान, आँखका गड़हा और हनुदेशतक फैला हुआ बेधनेकी तरह दर्द (बेल, कोलोसिन्थ) ; सड़ी भाफ़के कारण (चिनिनम-सल्फ ; माथेके पश्चात्‌देशमें आकर दाहिनी आँखपर ठहर जाता है—सैङ्गिविन) और पित्त-मिला सरका दर्द (आइरिस, सैङ्गि, चियोनैन्थस)।

शक्ति।—२री से ६ठीं दशमिक विचूर्ण।

ऐम्पिलौप्सिस

(AMPELOPSIS)

दूसरा नाम।—वार्जिनिया क्रीपर ; ऐमेरिकन आइवी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे और सतेज़ उद्भिदसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—शोथ, हैज़ा, उदरामय, स्वरभङ्ग, एकशिरा।

उपयोगिता और आभास।—मूल-ग्रन्थिकी बीमारीकी वजहसे उर्ध्वाङ्गका शोथ, गण्डमाला दोषके कारण बालकोंका स्वरभङ्ग और दस्त कै, आक्षेप आदि लक्षणोंकी यह एक लाभदायक दवा है।

सम्बन्ध।—इथूजा।

शक्ति।—२-६ शक्ति।

ऐम्फिसबिना

(AMPHISBOENA)

दूसरा नाम।—ऐम्फिसबीना-वार्सिकुलरिस। साँपकी आकृतिवाली हाथ-पैरसे हीन एक तरहकी छिपकिली।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके विषभरे जबड़ेसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—जबड़ेका फूलना, सर-दर्द, हड्डीकी बीमारी, चर्मोद्भेद।

उपयोगिता और आभास।—जबड़े और हड्डीपर इसकी प्रधान क्रिया होती है और दाहिने अङ्गकी बीमारीपर ही इसकी ज्यादा क्रिया होती है। जबड़े विशेषकर दाहिने जबड़ेकी सूजनमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द और हवा तथा तरीमें बढ़नेके लक्षणमें विशेष लाभदायक है।

सर-दर्दमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द और त्वचापर फुन्सियों-जैसे दानेके लक्षणमें यह बढ़िया काम करता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—क्रोटेलस, लेपीडिया, नैजा, हेलोडर्मा, साइलिसिया।

शक्ति।—३०-२००।

ऐमिग्डेला ऐमेरा

(AMYGDALAE AMARAE)

दूसरा नाम ।—बिटर आलमण्ड (तोता बादाम) ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है । इसके साथ जल संयोग क्रियाके द्वारा हाइड्रोसियैनिक ऐसिड तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—जिह्वामूल-ग्रन्थि (Tonsils) और गलनालीकी नयी उपझिल्ली प्रदाहकी अवस्था-विशेषमें यह बहुत लाभदायक है ।

लक्षणावली

गलनाली ।—जह्वामूल ग्रन्थिका प्रदाह (Tonsilitis)—जिह्वामूलके पार्श्वको, जिह्वामूलकी ग्रन्थि और उपजिह्वामें तेज़ दर्द और लाली पैदा हो जाती है, कोई चीज़ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है ; कभी-कभी तकलीफ़ इतनी ज्यादा हो जाती है, कि रोगी चिल्ला उठता है । इन लक्षणोंके मौजूद रहनेपर उपझिल्ली-प्रदाह (Diphtheria) रोगकी पहली अवस्थामें जब रोगी बहुत ही सुस्त और श्रान्त रहता है, उस समय इसका व्यवहार होता है ।

प्रत्यङ्ग ।—सारे शरीरमें धनुष्टङ्कारकी तरह अकड़न, बहुत देरतक यह अकड़न बनी रहती है और रोगी धनुषकी तरह पीछेकी तरफ़ टेढ़ा पड़ जाता है (Opisthotonos) । हाथ-पैर शिथिल—उठा रखनेपर किसी जड़ पदार्थकी तरह गिर जाते हैं (ओपि) । पैरमें झुनझुनी आ जाती है और चलता-चलता ढुलक पड़ता है ।

वक्षःस्थल ।—बाएँ स्तनके नीचे क्षणस्थायी सुई बेधनेकी तरह दर्द । इस दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है (ऐक्टिया-रेसि) ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—लौरोसिरे, ऐसिड-हाइड्रो, ओपियम, बेल, ऐरम-ट्राइफि, एपिस, फाइटोलैक्का । स्ट्रैमो, टैबेकम, लैके, ऐण्टिम-टार्ट, नैजा (हृत्पिण्ड) ।

दोषघ्न ।—ओपियम ।

शक्ति ।—३य दशमिकसे ३० शक्तितक ।

ऐमिगडेला पार्सिका

(AMIGDALAE PERSICA)

दूसरा नाम।—पीचकी छाल।

उपयोगिता और आभास।—कितने ही तरहके वमन रोगकी यह एक बहुत ही उत्कृष्ट औषधि है। खासकर गर्भावस्थामें, सवेरेके समयका वमन (सिम्फोरि-कार्पस, ऐपोमार्फिया, सिरियम-आक्सैलेट, ऐसिड-कार्बोलिक), मूत्रस्थलोंसे रक्त-स्राव (टेरिबिन्थ, चिनिनम-सल्फ, हैमा, आर्निका)। बच्चोंके पाकाशयका विकार, किसी तरहका खाद्य-पदार्थ सहन नहीं होता (ऐन्नोट)।

शक्ति।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम।

ऐमिलेनम नाइट्रोसम

(AMYLENUM NITROSUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रेट आव ऐमिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नाइट्रिक ऐसिडके साथ ऐमिलिक सुरासारका संमिश्रण होनेपर यह रासायनिक पदार्थ तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—हृत्शूल; वक्षका स्नायुशूल; लज्जाके कारण गाल या चेहरा लाल हो जाना; ताण्डव; मृगी; मस्तक आदिमें खूनका दबाव; सर-दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; मूर्च्छावायु; सर्दी-गर्मी।

उपयोगिता।—स्नायु-प्राधान्य, मेदाधिक्य धातुवाली वय:सन्धिकाल प्राप्त स्त्रियोंकी बीमारीमें उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास।—इस उड़ जानेवाले (Volatile) पदार्थको सूंघनेपर शरीरकी छोटी धमनियाँ और कैशिक नाड़ियाँ सब फैलती हैं और इसी वजहसे रक्तसञ्चय अधिक होता है और चेहरा लाल तथा माथा प्रभृति स्थान गर्म हो उठते हैं। वय:सन्धिके समय मुखमण्डल और मस्तकमें अधिक रक्तसञ्चय होता है, बहुत तरहकी व्याकुलता मालूम होती है और इससे हृत्पिण्डका स्पन्दन आदि अच्छा हो जाता है। हिचकी, जम्हाई और प्रत्यङ्गोंका

फैलना (Stretching) (चेलिडोन)। अपस्मार या मृगीका आक्रमण (Epileptic Fits) में क्षणिक लाभ होता है। कितने ही दुरारोग्य रोगोंमें यह क्षणिक उपकारक औषध (Palliative) के रूपमें व्यवहृत हुआ करता है और एकाएक श्वास-रोध हो जानेको वजहसे मृत्युमें यह प्रायः प्राणदान दिया करता है।

लक्षणावली

मस्तक।—हमेशा आसन्न विपत्तिकी आशंका (ऐमोन-का, ऐक्टिया, ऐसिड-हाइ, लोरोसि, लिलि-टाई, वैली) ; निर्मल वायु सेवनका आग्रह, रोगी शरीरका ओढ़ना उतार फेंकता है और घोर जाड़ेमें भी खिड़की आदि खोल देता है (आर्जेण्ट-नाई, लैके, सलफर, ऐकोन) ; माथा और मुखमण्डलकी ओर बड़े वेगसे खून दौड़ता है (बेल, ग्लोनोइनम)। उत्तापका सञ्चार (Flushigs) मुखमण्डल, पाकाशय वगैरहसे आरम्भ होता है और इसके बाद गर्मी और बहुत ज्यादा पसीना होता है (ऐको) ; निचले प्रत्यङ्ग आदि बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं और इसीके अनुसार बहुत अधिक सुस्ती भी आ जाती है, थोड़ी-सी मानसिक उत्तेजना होनेपर भी चेहरा तमतमा उठता है और गर्म हो जाता है (कोका, फेरम) ; बिना किसी कारणके ही चेहरा लाल हो जाना (Blushing), पुरानी या नयी अवस्था ; सरमें चक्कर आना—नाव या जहाज़ आदिमें समुद्रमें भ्रमण करनेकी वजहसे। अधकपारीका दर्द (Hemicrania) रोगवाला पार्श्व रक्तशून्य और मलिन मालूम होता है।

कण्ठ।—गर्दनपर पहना हुआ कोई अलंकार या कपड़ा बहुत कसा हुआ मालूम होता है। जबतक नहीं खोल देता है, तबतक व्याकुल रहता है (लैकेसिस)।

श्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड।—हृत्शूल (Angina Pectoris), हृत्पिण्डकी गति प्रबल वेगशाली ; हृत्पिण्ड और ग्रीवा पार्श्ववाली (Carotid) धमनी—दोनोंमें भयानक टपक ; हृत्पिण्डका दृढ़ आवद्ध भाव और दर्द (कैक्टस) ; श्वासकृच्छ्रता और दमा ; छातीके भीतर पूर्णता और दबाव मालूम होना। हूप खाँसी—क्षणभर रहनेवाली और श्वास-रोध कर देनेवाली (इपिका, काक्कस-कैक्टाई)। थोड़ी भी मानसिक उत्तेजना होनेपर कलेजा धड़कता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रसवके बादका दर्द और चेहरा लाल अर्थात चेहरा लाल हो जाता है (Blushing)। इसके साथ ही रक्त-स्राव । वयःसन्धि-कालीन (Climactric) सिरका दर्द और मस्तिष्कमें उत्तापका पैदा होना ; मानसिक यन्त्रणा और उसके साथ ही हृत्कम्पन। सन्तान भूमिष्ठ होते ही प्रसवान्तिक आक्षेप (Convulsion)—साइक्यूटा, जेल्सि, ऐसिड-हाइड्रो ।

प्रत्यङ्ग ।—बहुत देरतक बार-बार प्रत्यङ्गोंको फैलाना (Stretching) या अँगड़ाई लेना—इससे तृप्ति नहीं होती ; पलङ्ग पकड़कर हाथ-पैर खींच देनेके लिये दूसरे आदमियोंको सहायता चाहता है। बार-बार और गहरी जम्हाई लेना (कैलि-का), हाथकी शिराएँ सब फूल (मार्क-पेरेन, लोरो) जाती हैं और अंगुलीके अगले भागतक टपकका दर्द होता है।

वृद्धि ।—शारीरिक और मानसिक परिश्रमसे और गर्म कमरेमें रहनेके समय ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बेल, कैक्टस, कोका, फेरम, ग्लोनोइनम और लैकेसिस ।

दोषघ्न या प्रतिविष ।—कैक्टस, आर्गट (आक्षेप-विकारमें स्ट्रिकनि)।

शक्ति ।—सूंघनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। जब कि बेहोश करनेवाली दवाकी शक्तिकी वजहसे कोई रोगी क्रमशः सुस्त हो पड़ता है, उस समय यह एक उत्कृष्ट उत्तेजक और फिरसे जिला देनेवालोंका काम करती है। इसका मूल अरिष्ट थोड़ी देरके लिये आराम पहुँचानेमें समर्थ (Paliative) है और इसीलिये इसका बार-बार प्रयोग करना चाहिये। उच्चतम क्रममें प्रयोग करनेपर इससे रोग आरोग्य या स्थायी उपकार हुआ करता है।

सूंघनेके लिये २ से ५ बून्द—रूमालमें डालकर सूँघना चाहिये।

ऐनाकार्डियम ओरियण्टेलि

(ANACARDIUM ORIENTALE)

दूसरा नाम ।—भल्लातक या भेलावा—जिसके रससे धोबी कपड़ेपर चिन्ह लगाते हैं।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण या टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—शराब पीनेका दुष्परिणाम; संन्यास; मस्तिष्ककी क्लान्ति; कब्जियत; खाँसी; दुर्बलता; अजीर्ण; खसड़ा; अर्श (बवासीर); सरका दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; व्याधि शङ्का; मूर्च्छा-वायु; उन्माद रोग; स्मरण-शक्तिकी कमजोरी; हृत्कम्पन; पक्षाघात; वात; कृत्रिम मेहका दुष्परिणाम; चर्म-रोग; मेरुदण्डकी बीमारी; गर्दन अकड़ना; गर्भिणीका वमन; क्रुप खाँसी (कुकुर खाँसी); मसे; लिखनेवालोंका हाथ काँपना।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक विकारकी वजहसे अजीर्ण रोग, स्मरण-शक्तिमें गड़बड़ी, निर्ममता और उत्तेजित प्रकृति; काम-काजमें उदासीनता; आत्म-विश्वासका न रहना और शपथ खाने और लोगोंको दुर्वचन कहनेकी अनिवार्य इच्छा; ऐसा मालूम होना कि शरीरके किसी-न-किसी द्वारमें कील ठोंकी हुई है और माथा प्रभृति किसी बन्धनसे घिरे हुए हैं—पाकाशयका खाली मालूम होना; खा लेने बाद सब तरहकी गड़बड़ीका कुछ दब जाना—ये ही कई ऐनाकार्डियमके सर्वश्रेष्ठ प्रकृतिगत और अव्यर्थ सिद्धिप्रद लक्षण माने जाते हैं। सुन्न भये हुए अंशमें मानो सुई गड़ी हुई है—ऐसा ही मालूम होता है। जगह-जगहपर पैदा हुए जखमोंपर ऊँची पपड़ी जमी रहती है और स्पर्श ज्ञानसे रहित होती है—इत्यादि लक्षण तथा कुष्ठ आदि चर्म रोगोंमें अवश्य लाभ करता है। नीचे लिखे कई लक्षण भी इसके अव्यर्थ निर्णायक हैं:—रोगी इस संसारमें किसीका भी विश्वास नहीं करता; अपनेको हमेशा रोगग्रस्त समझता है; उसमें अपने दायित्व या जिम्मेदारीका ज्ञान नहीं रहता। सरमें दर्द—भोजन करते ही, पर थोड़ी देरके लिये बन्द हो जाता है; मानसिक या शारीरिक परिश्रम करते ही बढ़ जाता है। रोगी बहुत घबड़ाया हुआ; खाना-पीना बहुत जल्दी और त्रस्त-भावसे करता है। कब्जियत,—रोगी समझता है, कि उसकी मलनालीमें एक कील ठोंकी हुई है और इसीलिये मल नहीं निकल सकता है। सारे शरीरमें दुर्दमनीय खुजलाहट,—एक तरहके विषके जैसे घाव निकलते हैं।

लक्षणावली

मन।—समझता है, कि दूर देशोंमें रहनेवाले माता, भ्राता वगैरहका कण्ठ स्वर सुन रहा है। (कैमो); मानो उसकी दो तरहकी मतियाँ हैं—एक

काममें लगाना चाहती है और दूसरी कामसे हटाना, मानो वह जगतसे अलग है। उसका शरीर और आत्मा अलग अलग वास करते हैं (थूजा)। सभी विषय सपनेमें देखते हुएसे मालूम होते हैं ; चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसका पीछा कर रहा है (कैलि-ब्रोम) ; सबपर सन्देह करता है, सबपर ही अविश्वास करता है (हायो)। अद्भुत प्रकृति—हँसनेकी बातमें तो गम्भीर हो जाता है और गुरुतर विषयोंमें दिल्लगी करता है। अर्श और कब्जियतमें तो उसे व्याधि-शङ्का घेरे रहती है ; अवसाद वायु-ग्रस्त रहता है (Hypocondriasis)। दुर्वृत्त स्वभाव। बुरे कामोंमें खूब अधिक आसक्ति। शपथ खाने और गाली-गलौज करनेकी अनिवार्य इच्छा (लैक-कैन, लिलि-टाइ, नाइट्रिक-एसिड)। सभी इन्द्रियोंकी दुर्बलता। अपनेको राक्षस या बहुत भारी बदमाश समझता है। ऐसा समझता है, कि उसके शरीरका कोई खास अंश बन्धनी द्वारा घिरा हुआ है (कैक्टस, एसिड-कार्बोलिक, सलफर) या किसी भोथरे दाँतसे कोई खास अंग दबाया जा रहा है ; मानो शरीरके किसी एक द्वारमें कील ठोंकी हुई है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—सामने, दृष्टि-पथमें अन्धेरा छा जाता है (फेरम, मार्क) ; चलने अथवा सर झुकानेपर मानो रोगी और उसके चारों ओरके पदार्थ ढुलक रहे हैं ; झुका हुआ माथा उठानेके साथ ही ऐसा मालूम होता है मानो बाईं ओर घूमकर गिर पड़ेगा। मानसिक परिश्रम करनेपर ललाट, कनपटी (Temples), सरके पिछले भागमें छेदने और दबानेकी तरह दर्द मालूम होता है। सर-दर्द,—भोजन करते ही एकदम आराम हो जाता है, परन्तु यह आराम होना स्थायी नही होता (एपियम, ग्रैवि, कैल्के-फास, सोराइन), शय्यापर सोनेके समय और जब नींद आने लगती है, शरीर हिलाने और परिश्रम करनेपर बढ़ना। आलस्यमय जीवन बितानेवालोंके पाकाशय और स्नायुमें विकार हो जानेकी वजहसे सर-दर्द (आर्जेण्ट-नाई, ब्राई, नक्स)।

आँख।—धुँधला देखना। दीयेके लौके चारों ओर शोभा या दीप्ति दिखाई देती है। ऐसा मालूम होता है कि भवोंपर भोथरे अस्त्रसे बेधा जा रहा है।

नाक।—कर्ण-विवर (कानका छेद) में भोथरे यन्त्रसे छेदनेकी तरह दर्द। छेदने या सुई बेधनेकी तरह दर्द,—कोई चीज़ निगलनेके समय बढ़ना। कर्ण-स्राव, बहरापन।

नाक ।—हमेशा कबूतर या मुर्गेके मलकी तरह गन्ध आया करती है। सर्दी—पानीकी तरह श्लेष्मा ; आँसू बहना और बार-बार छींक (सिपा, युफ्रेशिया, साइक्लामेन)। नाकसे खू गिरना ; सूँघनेकी शक्तिका घटना।

मुखमण्डल और मुख-विवर ।—आँखें नीली और काले घेरेसे घिरी। चेहरा मलिन और उतरा हुआ। किसी चीज़का स्वाद नहीं मिलता। मुँहसे बदबू निकलती है, पर रोगी उसे स्वयं अनुभव नहीं करता ; जीभ फूली मालूम होती है,—इस सूजनकी वजहसे बोली साफ़ नहीं निकलती (बैप्टी, ऐसिड-फास, नेट्रम-म्यूर)।

दाँतका दर्द ।—मुँहमें गर्म पानी लेनेपर दाँतका दर्द बढ़ना (ठण्डी चीज़ छू जानेपर—काफि, पल्स, नक्स ; गर्म द्रव्य—ब्राई, कैमो)। खाने-पीनेके समय अकसर छातीमें ग्रास अटक जाता है और श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाती है (कैनाबि सेट, कैवा-कैवा, ऐसिड-नाई) ; खाने-पीनेकी चीजें बड़ी घबड़ाहटसे निगलता है (बेल, काफि, हिप, प्लैट) ; भोजन करने बाद सब लक्षण घट जाते हैं (कैलि-फास, सोराइन)।

पाकाशय ।—सब तरहके रोग लक्षण खाने बाद घटते हैं, पर दो घण्टे बाद ही फिर पैदा हो जाते हैं (खाई हुई चीज़ पच जाने बाद अर्थात भोजनके दो-तीन घण्टे बाद लक्षण घटते हैं—नक्स)। पेट खाली रहनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत दिनोंतक उसने भोजन नहीं किया हो। भोजनके बाद घटना (चेलिडोन, आयोड) ; पचनेकी क्रिया होनेके समय घटना (भोजनके बाद या जबतक पच नहीं जाता, तबतक लक्षणोंका बढ़ना—ब्राई, नक्स) ; डकार—शून्य ; कभी-कभी गलेमें पानी चढ़ आता है ; पाकाशयमें क्षणभरके लिये दर्द। छातीमें जलन—मांसका शोरवा वगैरह पीनेकी वजहसे रोग होनेपर, पाकाशयसे लेकर तालुमूलतक जलन (कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, सिनेबिस) मालूम होना।

तलपेट ।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसी भोथरी सलाईसे आँतें बेधी जा रही है ; आँतोंका बोलना या पेट गड़गड़ाना (Borborygmi)। ऐसा मालूम होता है मानो पेट मरोड़ रहा है। पाखानेका वेग बहुत अधिक होता है, पर पाखाना फिरनेकी चेष्टा करने या पाखाना जानेपर बिलकुल ही वेग नहीं रहता ; मलान्त्र मानो शक्तिहीन या निष्क्रिय हो पड़ा है, मानो खील ठोका हुआ है (वेग यथेष्ट होता है, परन्तु मल थोड़ा ही

निकलता है—नक्स); कोमल मल भी भरपूर वेग दिये बिना नहीं निकलता (हिपर, सिलि, ऐल्यू, प्लाटिना, वेरेट); खूनी या बादी बवासीर—बहुत दर्द रहता है (ऐसिड-नाइ, हाइपेरि, रैटान)।

मूत्रयंत्र ।—गदला पेशाब या बहुत अधिक पानीकी तरह पेशाब।

पुं०-जननेन्द्रिय ।—कामेन्द्रियमें बहुत उत्तेजना। दिनमें उत्तेजनाके अलावा लिङ्गमें कड़ापन। कामोत्तेजना पैदा करनेवाली खुजलाहट। इन्द्रियोंमें उद्दीपना पैदा होनेवाला सपना देखनेके बिना भी वीर्य-स्खलन हो जाना। पाखाना फिरनेके समय मूत्रनालीकी मुखशायी ग्रन्थि रस (Prostratic, Fluid) का स्राव (ऐल्युमिना देखिये)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—थोड़ा आर्त्तवका स्राव। प्रदर—त्वचा क्षय करनेवाला (क्रियो, युपियोन), खुजलानेवाला स्राव।

श्वास-यंत्र ।—भीतरी उत्ताप और पित्तजनक यन्त्रणाके साथ वक्षःस्थल और हृत्पिण्डमें दर्द। दबाव मालूम होना, रोगीको ऐसा श्वास-कष्ट हो जाता है, कि उसे निर्मल वायु सेवनके लिये तेजीसे घरके बाहर दौड़ जाना पड़ता है (ऐमिल, लैके)। खाँसी,—बोलने और अबाध्य बच्चोंके क्रोध प्रकट करनेपर बढ़ना।

प्रत्यङ्ग ।—पक्षाघात रोगके बादकी (Post Paralytic) कमजोरी। जानु-देश सुन्न हो जाता है। पैरकी पोटली (Calves) में ऐंठन होती है (ऐम्ब्रा, ऐमोन-का, कैम्फो, क्यूप्रम); नितम्बकी पेशीमें काँटा गड़ने जैसा मालूम होता है। तलहत्थीमें मसे (नैट्र-म्यू)। बाईं बाँहमें झुनझुनी पैदा हो जाती है।

त्वचा ।—बहुत खुजलाहट; छालेकी तरह उद्भेद; सूजन; पीत-पार्णिका या पित्ती निकलना (Urticaria) या आमवात। छाला—पीला सफेद रस-स्राव करनेवाला; निकला हुआ रस हवामें सूख जाता है और पपड़ी जम जाती है। कुष्ठ-व्याधि—सुई वेधनेकी तरह मालूम होना, रोगवाली जगह बरफकी तरह ठण्डी; लाल, कड़ी पपड़ीसे ढकी; स्पर्श-ज्ञान-रहित।

निद्रा ।—सच्ची घटनाकी तरह स्वप्न। दिन-रात रोगी अघोरावस्थामें पड़ा रहता है। कितने ही तरहके भयानक सपनेसे भरी नींद।

ज्वर ।—नाड़ी तेज़; शीत; भीतरी उत्ताप; रातके समय पसीना इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—सदृश—कैमो-क्लो, रास-टक्स, एण्टि-टार्ट, एपिस, फ़ेरम, आयोड, लाइको, नाइट्रिक-एसिड, नक्स, फास्फोरिक-एसिड, पल्स, नेट्रम, थजा प्रभृतिके साथ तुलनीय। यह रासका दोषघ्न है और काफियासे प्रतिषेधित होता है; लक्षण आदि दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैल जाते हैं (लाइको)।

लाइकोपोडियम और पल्सेटिलाके बाद ऐनाकार्डियमका प्रयोग होता है। प्लाटिना एनाकार्डियमके बाद और पहले, दोनों ही समय व्यवहारमें बहुत फायदेमन्द है।

शक्ति ।—६ठे से १००० क्रमतक व्यवहारमें आता है।

ऐनाकार्डियम आक्सिडेण्टेल

(ANACARDIUM OCCIDENTALE)

प्रभेद ।—ऐनाकार्डियम ओरियेण्टेलि देखनेमें हृत्पिण्डकी तरह है (Heart shaped); पर यह ऐनाकार्डियम आक्सिडेण्टल देखनेमें मूत्रग्रन्थि या मसानेकी तरह (Kidney shaped) होता है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके भीतरी और बाहरी आवरणसे जो काला रस निकलता है, उसीसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—डा० क्लार्क कहते हैं, कि यह नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गट्ठे, विसर्प; खुजली; मस्तिष्ककी सूजन; रास-टक्सको विषाक्तता; दाद; चेचक; मसे इत्यादि।

सम्बन्ध ।—एनाकार्ड, रास-टक्स, कैन्थ, मेजे, क्रोटोनके साथ तुलनीय।

दोषघ्न ।—रास-टक्स।

ऐनागैलिस आर्वेन्सिस

(ANAGALLIS ARVENSIS)

दूसरा नाम ।—वेदर ग्लास (Weather glass)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस पौधेके समूचे अंशसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—यह नीचे लिखे रोगोंमें फायदेमन्द है :—क्षीण दृष्टि ; आँखोंमें जाला ; कब्जियत ; शोथ ; मृगी ; नाकसे खून गिरना ; प्रमेह ; वात ; अर्श ; सर-दर्द ; मूर्च्छा-वायु ; अवसाद-वायु ; उन्माद ; स्नायु-शूल ; दाद वगैरह चर्म्मरोग ; उपदंश ; जख्म इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—त्वचापर ही इसकी प्रधान क्रिया है। वात और सन्धिवात वगैरह रोगमें लक्षणके अनुसार प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। मूत्रनालीमें कामोद्दीपक खुजली इसका एक निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मन और मस्तक ।—बहुत आनन्द। डकार या आँतोंमें गड़गड़ाहटके साथ आँखके गोलेपर (Supra-Orbital) सरमें दर्द ; काफी पीनेसे घटना। मुखमण्डलकी पेशियोंमें दर्द मालूम होना। समूचे शरीरमें दर्दके साथ, सरमें दर्द और मिचली। दाहिनी गण्डास्थिसे लेकर भौंवोंतक फैलनेवाला मुखका स्नायुशूल—रातमें बढ़ना। मुखमण्डलपर एक तरहकी खुजली चकत्तेके रूपमें निकलती है।

पेशाब ।—मूत्रनालीमें एक तरहकी कामोद्दीपक खुजली मालूम होना, पेशाबके समय जलन होती है और मूत्रद्वार जुड़ जाता है (क्युप्रम)। पेशाबकी धार कितनी तरहसे विभक्त होकर निकलती है (आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-सैट, कैन्थ, मार्क, रास) ; बिना जोर लगाये पेशाब ही नहीं होता।

प्रत्यंग ।—वातादि आश्रित वेदना। कन्धे और बाँहमें दर्द मालूम होना। अंगूठेके कोमल स्थानमें और अंगूठेमें ऐंठन। अँगुलियोंकी सन्धियाँ वातकी वजहसे फूल जाती हैं। बाएँ कन्धेसे गर्दनतक अकड़ जाता है।

त्वचा।—खुजली, सूखे धान आदिकी भूँसीकी तरह आवरणवाले उद्भेद (Eruption); खासकर हाथ और अंगुलियोंमें। तलहत्थीमें बीमारी सबसे अधिक होती है। काठकी सींक आदि गड़नेपर इसके सेवनसे निकल जाती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय—साइली; काफिया (आनन्द), लिथिक ऐसिड (चर्म्म); सीपिया, टेल्यू (दाद), पल्स, रास्टक्स।

शक्ति।—१ला दशमिकसे लेकर ६ठा दशमिक क्रम।

ऐनान्थेरम म्यूरिकेटम

(ANANTHERUM MURICATUM)

दूसरा नाम।—Cuscus grass (एक तरहका घास)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़से मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्नलिखित रोगोंमें फलप्रद है:— फोड़ा; खरलोप; व्रण; कर्कटका जखम; विसर्प; ग्रन्थि-स्फीति (गांठोंका फूलना); जलातङ्क; उपदंश; कितनी ही तरहके आक्षेप और अर्बुद; जखम।

उपयोगिता और आभास।—यह एक तरहकी मतवालापन-जैसी अवस्था उत्पन्न कर देता है; खुजली; दाद; फोड़े और जखम आदि रोगोंकी यह एक महौषधि है। शरीरके कितने ही अंशोंमें पीव पैदा होनेवाली सूजन और ग्रन्थि वगैरहके प्रदाहमें भी इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। खास-खास लक्षणोंमें प्रमेह रोगमें भी यह फायदा करती है।

लक्षणावली

मन।—अवसादवायुग्रस्त (अर्थात हमेशा यह चिन्ता बनी रहती है, कि मैं बीमार हूँ); समाज-भय—जहाँ दस आदमी रहते हैं, वहाँ नहीं जाना चाहता (अरम, बैराइटा, साइक्यूटा, कैलि-बाई, लाइको, सिपिया, स्टैन, सलफर); निर्जनता-प्रिय (आर्निका, केम्फि, कार्बो-ऐन, ऐक्टिया, जेल्स, इग्ने, मैग-म्यू, हायो, आक्साइड्रो, सिपि, थूजा); अपने आत्म-महलका बहुत अधिक

ज्ञान अर्थात अहमन्यता (ऐनहैलो ; प्लाटिनम)। अपनी प्रकृति और कामोंसे बहुत ही सन्तुष्ट।

मस्तक।—सरमें दर्द,—ऐसा अनुभव होना मानो माथेमें एक सूक्ष्म तीर बिध रहा है (ऐस्क्लिपियस-सिरि) तीसरे पहरको वृद्धि। भौंवोंके बीचमें मसेकी तरह उद्भेद। नाकके अगले भागमें फोड़ा और अर्बुद, खून अधिक सञ्चय होनेके साथ सरमें चक्कर—पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम।

पेशाब।—लिङ्गोद्रेकके साथ पीली आभा लिये या हरे रङ्गका गाढ़ा पीबका स्राव ; मूत्रनालीमें जलन और छेदनेकी तरह तकलीफ़ ; पुट्ठे या वंक्षण-प्रदेशीय ग्रन्थिका (Inguinal Glands) प्रदाहके साथ शिश्नका प्रदाह और सूजन। बार-बार पेशाबका वेग—मूत्राशयमें थोड़ा भी पेशाब सञ्चय होनेपर पेशाबका वेग होने लगता है।

मल।—बहुत दिनोंकी कब्जियत (प्लाटिना, प्लम्बम, हाइड्रैस्टिस, कास्टिकम) ; इसके बाद सूखा, भूरा और बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना होता है—इसके बाद ही पतले दस्त आने लगना। मल बड़ा, कड़ा और गांठ-गांठ (ब्राई, ओपि) ; मलद्वारमें असह्य खुजलाहट (बाहरी जननेन्द्रियमें खुजलीके साथ—ऐम्ब्रा ; कृमिकी वजहसे उत्पन्न—टियुक्रियम ; कृमिसे उत्पन्न बोखारके साथ—सिना ; मलनाली और मलद्वारमें भयानक खुजलाहट—इग्ने ; पाखाना होने बाद और हवा खानेके लिये टहलते समय—ऐसिड-नाई ; खुजली और जलन ; ऐल्यूमिना ; रातमें जलन और खुजली—ऐण्टि-क्रूड)।

सम्बन्ध।—प्लैटिना, स्टैन, थूजा।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ६ठाँ दशमिक क्रम।

ऐन्सिस्ट्रोडन काण्टर्ट्रिक्स

(ANCESTRODON CONTORTRIX)

“सेङ्क्रिस—काण्टर्टिक्स” देखिये।

ऐङ्गोफोरा

(ANGOPHORA)

दूसरा नाम।—ऐङ्गोफोरा—लैन्सियोलेरा; रेड-गाम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशुद्ध गोंदसे विचूर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बार-बार मल-वेग। ऐसा मालूम होना, कि आँतें मलद्वारको राहसे बाहर निकल पड़ेंगी, पेटमें दर्द, लम्बे-लम्बे होकर सो जानेपर कूथन और दर्दका घटना लक्षणवाले आमाशय रोगमें और बहुत अधिक कब्जियत—कड़ा खून-भरा मलके लक्षणोंमें—कब्जियत रोगमें लाभ करता है।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न।**—इपिकाक।

शक्ति।—६—३०।

ऐङ्गस्टियुरा स्पुरिया

(ANGUSTURA SPURIA)

"ब्रूसिया—ऐण्टि-डिसेण्टरिका" देखिये।

ऐङ्गस्टियुरा वेरा

(ANGUSTURA VERA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालसे विचूर्ण और टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हड्डीमें दर्द; हड्डीका क्षय रोग; अतिसार; चोट; सविराम ज्वर; निकट दृष्टि दोष; धनुष्टङ्कार; दाँतका दर्द; क्रूप खाँसी।

उपयोगिता और आभास।—यह उत्तेजनाशील प्रकृतिवालोंके लिये उपयोगी है। इसका एक निर्णायक लक्षण है—काफी पीनेकी अत्यन्त

इच्छा। इसकी क्रियाका परिणाम यह होता है, कि पेशी और सन्धि-स्थानोंमें सङ्कोचन और अकड़न तथा चोटकी वजहसे पैदा हुआ दर्द और उस स्थानमें स्पर्श सहन न होना, खासकर कनपटी या शङ्खदेशमें और दोनों हनुकी बगलवाली पेशीमें मानो हनुस्तम्भ (Trismus) या जबड़े अटकना रोग पैदा हो जायगा; धनुष्टङ्कार, पक्षाघात वगैरह भी इसके भीतर आ जाते हैं। काँखनेके साथ बहुत पतला पाखाना और अत्यन्त वेगके साथ बहुत अधिक पेशाब होना भी इसका लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—क्रोधी प्रकृति—सामान्य कारणसे भी क्रोध आ जाता है; जब किसी तरहका मानसिक परिश्रम करना पड़ता है, उस समय बहुत मौजमें रहता है; परन्तु पढ़ना आरम्भ करते ही सरमें चक्कर आना आरम्भ हो जाता और इसके बाद ही सो जाता है। बहुत अन्यमनस्क, नीच मन और आत्मनिर्भरता नहीं रहती।

मस्तक।—ऐसा गोलमाल भाव मानो नशा खाया है। कोई झरना, नदी या जल-राशि पार करनेके समय शरीर ढलमलाया करता है (लाइसिन), सन्ध्याके समय पीसनेकी तरह सरमें दर्दके साथ मूर्च्छाका उपक्रम। दोनों शङ्खदेश या कनपटीमें ऐसा दर्द मानो कुछ बेधा जा रहा है। आँखोंका प्रदाह, दोनों आँखें लाल, गर्मी और जलन-भरी, रातमें आँख सट जाती है (युफ्रे)। तिमिर-दृष्टि—चारों ओर अन्धेरा दिखाई देना। सब चीजें मानो बहुत दूर है (ऐक्, नक्स-मस)।

मुखमण्डल।—चेहरेपर नीली आभा, लाली और उत्ताप। गण्डास्थिके भीतर और चर्वण-पेशीमें अकड़न मालूम होना; कभी-कभी वह दर्द आँखके गोलेके भीतर होकर कनपटीकी ओर आता है। माथा झुकानेपर टहलनेके समय या मानसिक उत्तेजना पैदा हो जानेपर बढ़ जाना। हनुस्तम्भ (Trismus); ओंठ दोनों खुलकर दाँत बाहर निकल पड़ते हैं (आक्षेपके अन्तमें भी कुछ देरतक चेहरा और दोनों ओंठ नीले मालूम होते हैं)।

श्वास-यंत्र।—वक्षोस्थि (Sternum) के नीचे एक तरहकी खुजलाहटकी वजहसे बार-बार खाँसी आती है; श्वासनालीमें गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा सञ्चित होता है और बहुत कुछ चेष्टा करनेपर भी नहीं निकलता। सवेरे

श्वासनालीके गम्भीरतम प्रदेशमें खाँसीका वेग होता है और पीली आभा लिये कफ़ (Sputa) निकलता है। ऐसा दर्द होता है, मानो हृत्पिण्ड प्रदेशमें छुरी बेधी जा रही है। सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर या सीधे बैठनेपर या सन्ध्याके बाद बाईं करवट सोनेपर हृत्पिण्डमें टपकका प्रचण्ड दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड एकाएक फूल गया है और अत्यन्त मृत्यु-भय पैदा हो जाता है—बाईं करवट सोनेपर घटता है। हृत्पिण्डमें कष्टकर सङ्कोचन मालूम होता है।

जननेन्द्रिय।—लिङ्गमुण्डमें इतनी अधिक कामोद्दीपक खुजली पैदा हो जाती है, कि जोरसे घसनेकी इच्छा होती है। ऋतु होनेके एक दिन पहले थोड़ा-सा सफ़ेद श्लेष्मा निकलता है। जननेन्द्रियमें खुजलाहट।

मल।—बार-बार ऐसा वेग होता है, मानो पतला पाखाना होगा, इसके साथ ही मुखमण्डलपर एकाएक ठण्डक मालूम होने लगना। पाखाना हो जाने बाद भी ऐसा मालूम होता है, मानो मलनालीमें और भी मल रह गया है तथा और भी पाखाना होगा (नक्स-वोम)।

प्रत्यङ्ग।—बाँह, उरु और निचले पैरकी दीर्घास्थिमें जख्म, अस्थि-आवरक झिल्लीमें चोटके कारण पैदा हुआ दर्द और धनुष्टंकार (स्ट्रिकनी)—पेशी और सन्धियोंमें सङ्कोचन, अकड़न, दर्द और स्पर्शका सहन न होना वगैरह तकलीफें मालूम होना ; कनपटी या शङ्खदेशमें हनुकी बगलवाली पेशीमें इतनी अधिक खींचन मालूम होना और ऐसी अकड़न मालूम होना, मानो हनुस्तम्भ (Trismus या Lock-jaw) या जबड़े अटकनेकी बीमारी हो जायगी।

नींद।—सन्ध्याके समय औंघाई, इसके बाद ही नींद।

ज्वर।—तीसरे पहर ३ बजनेके समय भयानक कम्प, प्यास, वमन इत्यादि।

सम्बन्ध।—रियुटा (हड्डीमें), स्ट्रिकनिया, नक्स-वोमिका, ब्रूसिया, बेल, ब्रायो, कैमो, काफिया (दाँतका दर्द), इग्ने, नक्स (धनुष्टंकार), मर्क, फास, साइलि, पल्स, सिपिया।

दोषघ्न।—काफिया द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति।—३री दशमिकसे २०० शततमिकतक।

ऐन्हैलोनियम लिविनाई

(ANHALONIUM LEWINIE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्म पानीमें इसका मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मस्तिष्कको क्लान्ति ; प्रलाप ; सर-दर्द ; भ्रम-पूर्ण चीजें देखना ; अधकपारीका दर्द ; मानसिक दुर्बलता और स्नायविक उत्तेजना ; पक्षाघात ; दृष्टिमें गड़बड़ी इत्यादि रोगोंमें यह लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० क्लार्क कहते हैं—डा० हेलने जो लक्षण संग्रह किये हैं, उनसे मालूम होता है, कि कितनी ही रङ्ग बिरङ्गी चमकीली मूर्त्तियाँ और दृश्य सब नाना प्रकारकी भाव-भङ्गीसे आँखोंके सामने घूमा करते हैं और ये मूर्त्तियाँ सङ्गीतके ताल लयके अनुसार नाचा करती हैं—यह इसका एक आश्चर्य-जनक क्रिया-फल है। कितना समय बीत रहा है इसका ज्ञान न रहना, माथेके पश्चाद्भागमें दर्द, मस्तिष्कमें क्लान्ति मालूम होना और मिचली इत्यादि, पेशियोंका स्पन्दन, जानु-देशका एकाएक फड़क उठना, उसमें जोरका झटका लगना (Knee-jerk) और सब पेशियोंकी क्रियामें विशृङ्खलता वगैरह इसके लक्षण हैं। आँख-सम्बन्धी लक्षण आँख बन्द करनेपर बढ़ जाते हैं, मिचली, सुस्ती वगैरह शरीरसे काम लेनेपर बढ़ते हैं और सभी लक्षण सोनेपर घट जाते हैं ।

लक्षणावली

मन ।—जागनेवाली अवस्थामें सपने देखना। समय बहुत दीर्घ मालम होना। बोलनेके समय भाव प्रकट करनेवाले वाक्य याद नहीं आते। रोगी सबको सन्देह करता है और सभी विषयोंमें उसे मोह रहता है। समझता है कि उसके बन्धु उसका उपहास कर रहे हैं (बैराइटा-का), उनपर अत्याचार करनेकी इच्छा, समझता है, कि उसमें न जाने कितनी ताक़त और बुद्धि है ; आत्म-महत्वज्ञान (ऐनान्थेरम, प्लैट)।

मस्तक ।—ललाटके बाईं ओर सरमें दर्द—इसके साथ ही दृष्टि-शक्तिमें विकार, पश्चाद्भाग (Occipital) में सर-दर्द । माथेके पिछले भागमें लगातार दर्द बना रहता है ; ४-५ दिनोंतक इतना अधिक दर्द, कि काम नहीं कर सकता ।

आँख।—लाल रङ्गसे रंगी मूर्त्तियाँ और दृश्य हँसानेवाले भावसे, उसकी आँखोंके सामने नाचा करते हैं और गाने-बजानेके ताल लयपर नाचा करते हैं; आँख खोलनेपर बिलकुल ही नहीं रहते,—दूसरा आकार धारण करते हैं। आँखकी पुतली फैल जाती है।

सम्बन्ध।—सदृश—कैनाबिस-इन (समय और बुद्धिमें गड़बड़ी); जेल्स (दृष्टि-शक्तिको टेढ़ी ओर लगानेकी शक्तिका गायब हो जाना); बेल; स्ट्रैमो; ओपि; पिकरिक-ऐसिड; प्लैट (सब चीजें छोटी देखता है); सोराइन।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ३री और ६ठी दशमिक शक्ति।

ऐनाइसम स्टेलेटम

(ANISUM STELLATUM)

दूसरा नाम।—इलिसियम (Illicium) या ऐनिसेटम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है—सर्दी; शूल; खाँसी; खून मिली खाँसी; फेफड़ेकी बीमारी; पाकस्थलीकी सर्दी; सन्निवात; उरदेशमें दर्द वगैरहमें फलप्रद है।

उपयोगिता और आभास।—क्षयकास तथा और-और तरहकी खाँसीकी बीमारीमें भी तृतीय पञ्जरास्थिके पास दर्द इसका एक निर्णायक लक्षण है। पेटमें वायु होना और "त्रैमासिक शूल-वेदना" (तीसरे महीने दर्द खासकर यदि बँधे समयपर होता हो) इसका एक उत्कृष्ट निर्देशक लक्षण है। पुराने श्वासरोगी (Asthematics) और पुराने शराबियोंका उदरामय या पाकाशयकी सर्दी रोगमें यह विशेष लाभ करता है (हेरिङ्ग)।

लक्षणावली

मुख-विवर।—ऊपरी ओंठमें डंक मारनेकी तरह दर्द, मानो फटकर खून निकल पड़ेगा; ऐसा मालूम होना और स्पर्शसे घटना। समूची जीभमें खासकर दोनों पार्श्वमें जखम (Aphthae); (गर्भवतियोंका =काली-

फाइल) स्तन पीनेवाले बच्चे का—सियानो, बोरैक्स, मार्क, नक्स-वोम, सलफर, ऐसिड-सल्फ, इथूजा, फास, प्लम्बम)।

नाक।—सर्दी, नाकसे पानीकी तरह स्राव बहना; नासा-रन्ध्रमें जलन और तकलीफ़ मालूम होना और बार-बार छींक (छींक—सिपा; नेट्रम्यूर); नाकके अगले भागमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द।

पाकस्थली।—पाकस्थली आध्मानयुक्त और फूली; अम्ल रोग, प्लीहा-प्रदेशमें दर्द। त्रैमासिक शूल-वेदना,—ठीक बँधे समयपर पैदा होता है (सिड्रो)।

श्वास-यन्त्र।—श्वास-कृच्छ्रता। खूनके साथ क्षय कास या खून मिली खाँसी; तीसरी पञ्जरास्थिके पास दर्द; वक्षोस्थिसे तीन अंगुल दूर—साधारणतः दाहिनी ओर—कभी-कभी बाईं ओर भी मालूम होता है (बाईं ओरके ऊपरी अंशमें—मार्टस-कम्युनिस; बाईं ओर—पिक्स-लिकुइडा; स्तनके नीचे—ऐसिड-फ्ल, एसिड आक्जेलिक, ऐक्टिया; स्तनसे वक्षको भेदकर पीठतक—लिलियम; वक्षस्थलसे पीठतक—कैलि-का, सलफर; पीठसे वक्षतक—सार्सापैरिला; ऊपरी तीन पञ्जरास्थिके पास पीवकी तरह श्लेष्मा रहनेपर गुयाइयेकम; अधिककर—थिरीडियन, फास, सिलि); उसी तरहके दर्दके साथ बार-बार खाँसी। पीवकी तरह श्लेष्मा निकला करता है—एनाई, लाई, सिलि। मुँहमें जखमके साथ हृत्स्पन्दन। खून-मिली खाँसी।

सम्बन्ध।—सदृश—सलफर, थिरीडियन, पिक्स, लिकुइडा, कैलि-कार्ब।

शक्ति।—३य दशमिकसे लेकर ६ठाँ दशमिक क्रम।

ऐन्थिमिस नोबिलिस

(ANTHEMIS NOBILIS)

दूसरा नाम।—रोमन कैमोमिला।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस वृक्षके समूचे अंशसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—सूत-जैसी कृमि; शूल-वेदना; अजीर्ण; सर-दर्द; यकृतमें रक्तकी अधिकता वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—डा० बेरिज और बार्नेटके मतसे अजीर्ण और पाकाशयके लक्षणमें लाभदायक है। सर्दी, पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, गलनालीमें सङ्कोचन और त्वचाके क्षयकी वजहसे दर्द और खुजलाहटकी वजहसे खाँसी; कमरेमें बढ़ना वगैरह इसके निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—बहुत विषाद-भरा। ऐसा मालूम होता है, मानो कोई विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, चिनिन-सल्फ, ऐक्टिया, लिलि-टाई इत्यादि); सन्ध्याके समय घरसे निकलकर बाहरी ओर जानेपर सशङ्कित भाव और गाड़ीसे दब जानेका बहुत भय (ऐको)

आँख।—बिछावनसे उठनेपर आँखसे पानी गिरना और नाकके दोनों छेदोंसे निर्मल पानीका स्राव।

नाक।—सर्दी, बहुत ज्यादा आँसू बहना। नासा-रन्ध्रसे चुआये हुए पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (युफ्रे)।

अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें लगातार दर्द मालूम होना और आँतमें मरोड़ जैसा दर्द और शीत अनुभव होना। मलद्वारमें खुजलाहटके साथ सफेद लसदार कीचड़की तरह पाखाना होना (लेईकी तरह मलद्वारमें चिपका रहता है—सलफर, प्लैटि और लसदार कीचकी तरह गात्रमें लगा रहता है—ग्रैफा)।

श्वासयंत्र।—तीसरे पहर तालुमूलमें सुरसुरी होती है (Tickling)। इसी वजहसे लगातार खाँसी आया करती है; परन्तु खाँसनेपर तालुमूलका खुजलानेका भाव बहुत कुछ घट जाता है; गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर खाँसी बढ़ जाती है; पर रातमें शय्यामें सो जानेपर फिर खाँसी नहीं रहती (मैंगो, इयुफ्रे, मैग्नि, लाइ); कमरा गर्म हो जानेपर भी खाँसी नहीं आती।

पेशाब।—मूत्राशय (Bladder) फूल जाता है। रेतोरज्जुमें (Spermatic Cord) दर्द और मोटा मालूम होना, मानो वह फूल गया है। बार-बार पेशाबका वेग होना।

त्वचा ।— तलवेमें खुजली, मानो शीत-स्फोट (या अंगुलीका सड़ना रोग) की वजहसे (ऐगार, ऐम्ब्रा, सिलि ; पैरकी अंगुलीकी खुजली—ऐगार, लैक्टियुका, नक्स, स्टैफ, जिङ्कम)।

सम्बन्ध ।—सदृश—ऐलियम-सिपा, इयुफ्रेशिया, कास्टिकम, ऐगार, सिलि।

तुलनीय ।—सिपा ; चायना (जब कैमोमिलाके अपव्यवहारसे जरायुसे रक्त-स्राव होता है)।

शक्ति ।—३री दशमिकसे १२वीं दशमिकतक ।

ऐनिलिनम

(ANILINUM)

दूसरा नाम ।—फेनिलामिन ; कायानल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारमें मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— रक्त-स्वल्पता (खूनकी कमी); कैन्सर या कर्कटीया जखम, विसूचिका ; सफेद खसड़ा रोग ।

उपयोगिता और आभास ।—विषाक्त लक्षणोंके द्वारा मालूम हुआ है, कि इसको क्रिया बहुत कुछ आर्सेनिककी तरह है। दस्त, कै, सर-दर्द, मूर्च्छा ; मृगीकी तरह रङ्ग नीला हो जाना वगैरह इसका निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मस्तक । — सरमें चक्कर ; सर-दर्द ।

पाकस्थली ।—पाकाशय और माथेमें जलन ; इसके बाद कै, दस्त, पेटमें दर्द, साथ ही प्रत्यङ्ग सब बरफकी तरह ठण्डे ।

जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमें दर्द ; ध्वजभङ्ग ।

चर्म ।—कितनी ही तरहके खसड़ा रोग ।

सम्बन्ध ।—ऐण्टि-पाइरिन, ऐण्टि-फेब्रिन, फेनासिटिन, ग्लोनोयिन और आर्सेनिकसे तुलनीय ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

ऐन्थोक्सैन्थम
(ANTHOXANTHUM)

दूसरा नाम ।—ऐन्थोक्सैन्थम आयोडिटम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये खिले वृक्षसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह सर्दी और ज्वरकी एक बहुत बढ़िया दवा है । युरोप और अमेरिकामें हे-फीवर नामक एक तरहका बोखार होता है—इसे औषधि ज्वर भी कह सकते हैं । इस बोखारमें इसका काढ़ा या यह दवा मिली चाय सेवन करनेकी चाल है ।

सम्बन्ध ।—सिपा, आर्स, नैफ्थैलिन, सेबाडि, सोरि, ऐनान्थि ऐवेना, एराण्डु, लिलियम, सैकाराम, ड्राफिसि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

ऐन्थ्राकोकालि
(ANTHRAKOKALI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहका रसायनिक पदार्थ ; हङ्गरीके एक तरहके पत्थरके कोयलेके साथ कास्टिक पोटास मिलानेपर उत्पन्न होता है । इसका विचूर्ण या टिञ्चर बना करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—क्षय रोग ; बहुमूत्र ; पेशाबमें तकलीफ़ ; खसड़ा, खुजली आदि चर्म रोग ; वात ; माथेका प्रदाह ; नासा-रन्ध्रकी बीमारियाँ ; सन्धिवात ; कच्छ्र या खुजली ; कण्ठमाला ; प्रमेह विष ; आमवात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० हेरिङ्गका कथन है, कि इसकी अच्छी तरह परीक्षा नहीं हुई ।

सम्बन्ध ।—कार्बोन-सल्फ ; ऐण्टिमोनि, रस-टक्स, डलकामारा, कैलि-आयोड (खुजली इत्यादि) से तुलनीय ।

शक्ति ।—निम्नक्रम व्यवहृत होता है ।

ऐण्टिमोनियम आर्सेनिकोसम

(ANTIMONIUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम ।—आर्सेनियेट आव ऐण्टिमोनो ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ; इसके बाद टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—न्यूमोनिया ; फेफड़ेकी सूजन ; आँखोंका प्रदाह ; हृद्वेस्ट-प्रदाह ; क्षयकास ; गठिया ; फुसफुस-आवरण-प्रदाह इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—फेफड़ेके वायु-स्फीति रोगमें (Emphysema) बहुत अधिक श्वासकृच्छ्रता और खाँसी ; भोजनके बाद और सोनेपर बढ़ना—ऐसी अवस्थामें यह अधिक उपयोगी है । फुस्फुसवेस्ट या फुस्फुस-आवरक झिल्लीका प्रदाह (Pleurisy), खासकर बाएँ फेफड़ेसे रस-स्राव, हृत्पिण्डके वहिरावरणके प्रदाहमें रस-सञ्चय और रस-स्राव वगैरह अवस्थामें यह लाभदायक है । रोगीको बहुत सुस्ती मालूम होती है । आँखोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है । मुखमण्डलका फूलना और बच्चोंके फेफड़ेके प्रदाहमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—सदृश—आरम, कैन्थरिस, ब्रायोनिया, लैकेसिस, लोबेलिया, पल्स, मर्क, आर्स, अन्यान्य ऐण्टिमोनि, सलफर ।

शक्ति ।—३री दशमिकसे ६ठी दशमिक विचूर्ण ।

ऐण्टि फेब्रिनम

(ANTI FEBRINUM)

दूसरा नाम।—एसेट निलिडम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और जलीय द्रव दोनों ही आकारमें तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—दमा, नीलपाण्ड, माथेका बड़ा मालूम होना, हृद्स्पन्दन, धमनीमें रक्त जम जाना वगैरह।

उपयोगिता और आभास।—इसके व्यवहारसे शारीरिक उत्ताप बहुत जल्द घट जाता है। अधकपारीका सर-दर्द, माथा बड़ा हो जाता है, ऐसा मालूम होना, मानो समूचे माथा उस कमरेमें समा नहीं सकता। आँखकी पुतलीका फैलना, चक्षुमण्डल मलिन, रक्तवहा शिरामें रक्त जमा रहता है, रक्तके दौरानमें गड़बड़ी, दमा, अनियमित हृत्स्पन्दन, पैरका शोथ वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एण्टिपाइरिन, एनिलिनम, ग्लोनोयिन।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ऐण्टिमोनियम क्रूडम

(ANTIMONIUM CRUDUM)

दूसरा नाम।—नेटिव सल्फाइड आव ऐण्टिमोनी—सुर्मा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका ६x तक विचूर्ण; इसके बादका क्रम या शक्ति टिंचर हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मलद्वार और सरलान्त्रमें उत्तेजना; सर्दीसे उत्पन्न रोग; ताण्डव रोग; कब्जियत; गट्टे; उदरामय; अजीर्ण; खसड़ा रोग; पैरमें गट्टे और जखम; ज्वर; दाँत निकलनेकी वजहसे चर्मरोग; नखका विकार; आमवात; बवासीर; गुह्यद्वार बाहर निकलना या काँच

निकलना ; स्वल्प विराम ज्वर ; पाकाशयमें विकार ; सर्दी-गर्मी या पेशीके अन्त या अग्रभागकी बीमारी ; जीभमें सफ़ेद रङ्गका लेप ; स्वर-क्षीणता ; मसे ; हूप-खाँसी इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—बहुत अधिक क्रोध परायणता और सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट होनेके साथ सफ़ेद लेप चढ़ी जीभ इसका प्रधान और सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण है। सभी लक्षण उत्तापसे और ठण्डे पानीसे नहानेपर बढ़ जाते हैं। धूप बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। जो सब बच्चे और थोड़ी उमरवाले बालकोंके मोटे होनेकी सम्भावना रहती हो या जिन सब व्यक्तियोंको पतले दस्त आते हों, उन्हें यदि एकाएक कब्जियत पैदा हो जाये या पर्यायक्रमसे कब्जियत और उदरामय, नाड़ी कठिन, तेज़ वगैरह लक्षण दिखाई दें तो ऐण्टिम-क्रूड विशेष उपयोगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) बच्चेको और किसीको देखनेपर या कोई उसको छूए तो वह बड़ा ही असन्तुष्ट होता है, ठण्डे पानीसे नहाना नहीं चाहता ; रोगी उत्ताप बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। (२) चेहरेपर मुँहासे ; ओंठके जोड़परका स्थान फटा (Cracked) ; गाल और चिबुकके ऊपर पीले रङ्गकी पपड़ी (Crusts) जमना। (३) जीभपर सफ़ेद रङ्गका लेप चढ़ा, मानो किसीने दूध लगा दिया है। (४) कानके ऊपर और पीछे रस-भरी फुन्सियाँ निकलना। (५) हाथके नख सब आप-ही-आप फट जाते हैं और उनके नीचेका मांस कड़ा पड़ जाता है। (६) शरीरमें जगह-जगह मासांकुर पैदा हो जाते हैं (Horny excrescenes)। (७) मसूढ़े सब फूले और छेद भरे हो जाते हैं, उनसे सहजमें ही खून निकलता है। (८) स्वाद बिगड़ा रहता है, चटनी और खटाई खानेकी बहुत इच्छा होती है। (९) हमेशा वायु निकला करता है या हवा छूटा करती है। (१०) पतले दस्त, आवाज़के साथ वायु निकलता है, उसके साथ ही पतली लेईकी तरह पाखाना होता है। पतले मलके साथ गाठें मिली रहती हैं। (११) वक्षमें खुजलीकी वजहसे खाँसी ; गर्म घरमें प्रवेश करनेपर बढ़ना। (१२) शरीरमें जगह-जगह और चिबुकके ऊपर मोटी पपड़ी जमा हुआ जखम ; छूते ही उससे खून निकलता है। (१३) शरीरकी त्वचापर फोड़े, रस-भरी फुन्सियाँ और चकत्ते (Vesicles) निकलते हैं। (१४) इतना दर्द होता है कि तलवा बिलकुल ही छुआ नहीं जाता, तलवेमें और पैरकी पीठपर गट्ठे (Corns) पैदा हो जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—बच्चा सभी विषयोंमें असन्तुष्ट रहता है, चिड़चिड़ा, यदि कोई उसे छू लेता है अथवा उसकी ओर देखता है तो सहन नहीं कर सकता; किसीसे बोलना अथवा दूसरा कोई उससे बोलना चाहे तो वह भी पसन्द नहीं करता (ऐण्टि टार्ट, आयोड, सिलि)। यदि कोई उसका कोई काम करता है, तो उसे क्रोध आता है। बहुत ही दुःखित भाव और रोना। जीवनसे घृणा। हमेशा रोगिनी चिन्तित और रोनी बनी रहती हैं, सामान्य कारणसे भी उसके मनमें दुःख या शोक पैदा हो जाता है (पल्स); बहुत निराशा, पानीमें डूबकर आत्महत्या करना चाहती है (ड्रोसेरा, रस-टाक्स, सिकेलि, सिलि)। छन्द या कविता पढ़नेकी दुर्दमनीय इच्छा। चाँदनीमें काव्यमय भाव या प्रेम उबल पड़ता है और प्रेमोन्माद पैदा हो जाता है; प्रेमका बदला न मिलनेकी वजहसे बीमारियाँ (कैल्के-फास)।

मस्तक।—सरका दर्द,—नदीमें नहानेकी वजहसे; सर्दी लगनेके कारण; शराब वगैरह पीनेके कारण; पाचन-शक्तिकी गड़बड़ीसे; खटाई, तेलके बने पदार्थ और फल आदि खानेकी वजहसे सरमें दर्द,—मूर्द्धादेशमें और सीढ़ी चढ़नेके समय दर्दका बढ़ जाना; उद्भेद (गोटियाँ या दाने) निकलना रुक जानेके कारण सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना; मिचली और नाकसे रक्तस्रावके साथ ललाट देशमें भार मालूम होता है।

आँख।—बहिरापाङ्ग (External Canthi) में दर्द। पलकोंकी बहुत दिनोंकी लाली। आँखें लाल, खुजली और प्रदाह-भरी और श्लेष्मा जमा हो जाता है, इसी कारणसे पलक सट जाती है। आँखके भीतर और पलकके ऊपर रसभरे दाने निकलते हैं।

कान। लाल, फूले और कानके पीछेवाली नली (Eustachian tube) में दर्द मालूम होना। कानमें ढं-ढं आवाज़ और बहरापन, कानके चारों ओर रसभरे दाने निकलना।

नाक।—नासारन्ध्र और ओंठके संयोगस्थलपर दर्द; फट जाना और पपड़ी जमना (काण्डिरैंगो; ग्रैफा; ऐसिड-नाई); नाकसे रक्तस्राव, शामके समय और सर-दर्दके अन्तमें (नाकसे खून गिरने बाद सर-दर्दका घट जाना—ब्यूफो, मिलिलोट, सैंग-सल्फ, फेरम-फास)। इसके साथ ही सरमें चक्कर आना।

खाँसनेपर नाकके पिछले छेदसे (Posterior Nares) श्लेष्मा निकलता है (एलेन, बैराई, हिप, लिलि-टाई, नैट्र-सल्फ) ; थोड़ी भी ठण्ड लग जानेपर सर्दी हो जाती है।

मुखमण्डल ।—रस भरे दाने (Vesicles) ; फुन्सियाँ (Pimples), फोड़े (Boils), गालमें पीली आभा लिये पपड़ी जमा जखम। दोनों ओठोंका संयोगस्थल फटा और दर्द भरा। दोनों ओंठ सूखे।

मुख-गह्वर ।—नमकीन लार। जीभ, सफेद लेप चढ़ी, मानो चूना या दूध लगा हुआ है (आर्निका, आर्स, ब्राई, ग्लोनोयिन, नक्स, सिपिया) ; दाँतसे मसूढ़े अलग (मार्क) हो जाते हैं और सामान्य कारणसे भी रक्तस्राव होता है। दाँतका दर्द,—कीड़े खाये हुए खोखले दाँतमें (कार्बो-वेज, कैमो, हायो, लैके, मार्क, स्टैफ) ; दर्द बढ़ना - रातमें, (बेल, कार्बो-वेज, रास, स्टैफि) ; भोजनके बाद (बेल, ब्राई, मार्क, नैट्र-म्यूर, नक्स-वोम, स्टैफ, सलफर) और ठण्डे पानीमें (सलफर, नक्स, पल्स, काफि) ; जीभ दाँतमें लगते ही ऐसा मालूम होता है मानो एक शिरा टूट गयी है ; घरसे बाहरी हवा सेवन करनेपर घटना। मुँहका सड़नेवाला जखम (Cancrum Oris) प्रायः हो जाता है (आर्जेण्ट-नाई, मार्क-कोर, ऐसिड-सल्फ)।

कण्ठनाली ।—खाँसनेपर नाकके पिछले छेदसे (Posterior Nares) पीली आभा लिये श्लेष्मा निकलता है (ऐलैन, बैराइ, नैट्र-सल्फ, लिलि-टाइग्रिन)।

पाकाशय ।—बहुत खानेकी वजहसे पाकाशयिक (Gastric) रोग आदि। पाचन-शक्ति बहुत कमजोर, सहजमें ही गड़बड़ा जाती है। जीभ मोटी दूधकी तरह सफेद लेप चढ़ी। रोटी, मिठाई, खटाई, खट्टी या खराब शराब पीना, ठण्डे पानीसे नहाना, बहुत गर्मी लग जाना और गरमी प्रभृति कारणोंसे पाकाशय और अन्त्राशयकी बीमारियाँ। खट्टी चटनी खानेकी बहुत इच्छा। भूख न लगना। शामके समय और रातमें प्यास। डकारके साथ बिना पची और अजीर्ण चीजोंका स्वाद और गन्ध मिलती है (कैल्के, कार्बो, इपिका, फास, सिलि)। छातीमें जलन, मिचली और वमन। बच्चा स्तन पीने बाद दहीकी तरह जमा हुआ कै करता है (इथ्यु, मैग-फास) और इसके बाद फिर स्तन पीना नहीं चाहता और एकदम चिढ़ उठता है। ऊर्द्ध-द्वार और अधो-द्वार

(डकार और मलद्वारसे) दोनों ओरसे बार-बार वायु निकलता है। मुँहमें बार-बार मीठी स्वाद मिली लार एकत्र होती है। भोजनके बाद पेट फूलता है।

मल।—उदरामय (पतले दस्त) और कब्जियत पर्यायक्रमसे पैदा होता है (विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका)। खटाई, खट्टी, शराब, ठण्डे पानीमें स्नान और बहुत खानेकी वजहसे पतले दस्त आना। कड़े मलके साथ पतला मल मिला रहना; आँतोंसे खूनका स्राव। मलद्वारसे रस-स्राव—पहननेका वस्त्र पीले रङ्गका हो जाता है। श्लेष्मा-स्रावी अर्शसे बाराबर श्लेष्मा निकला करता है; बेधनेकी तरह दर्द और जलन (ऐमोन मूा, कैप्सि, पल्स)। केवल आँव मिला मल। पानीकी तरह पतले मलके साथ कड़ा गांठ-गांठ या जमा हुआ दुग्ध-पिण्ड (पैलि) निकलना।

मूत्र।—बार-बार वेग, पेशाब गदला और बदबूदार—निकलनेके समय जलन और कमरमें दर्द। सोनेकी तरह पीली आभा लिये (ऐमो-कार्ब, कडियास-सोरि, सिफिलाइन); कभी-कभी फीका लाल और बहुत देरतक रहनेपर उसमें रक्तके कण दिखाई देते हैं।

पुं-जननेन्द्रिय।—रमणेच्छाकी वृद्धि; मनमें अश्लील भावका पैदा होना; रातमें रेतःस्राव या स्वप्न-दोष।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामोत्तेजना और खुजली; ऋतु होनेके पहले ही दन्तशूल (आर्स, नैट्र-म्यूर); ऋतु अत्यन्त असमयमें होता है और बहुत अधिक स्राव होता है। ठण्डे पानीमें नहानेकी वजहसे ऋतु बन्द होनेके कारण डिम्बाधार प्रदेशमें (Ovarian Region) स्पर्श सहन न होना और तलपेटमें दबाव मालूम होना। प्रदर स्राव पानीकी तरह, कसैला (Carrosive—कैमो, क्रियो, नैट्र-फास) और जमा हुआ श्लेष्मा खण्ड-खण्ड निकलता है।

श्वास-यंत्र।—क्रूप खाँसी; धूपमें शरीर बहुत उत्तप्त होनेपर या ठण्डे पानीमें नहानेसे बढ़ना; प्रकोपके अन्तमें केवल एक बार खाककर खाँसी आती है। खाँसी—गर्म घरमें प्रवेश करनेपर वृद्धि (ब्राइ, लाई, पल्स),—छातीमें जलन (लैके, फास, स्पञ्जि, जिङ्क) और खुजलाहट। धूपमें बहुत घूमनेकी वजहसे स्वरभङ्ग। खाँसनेपर नाककी पिछली नलीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है।

पीठ।—आसनसे उठनेके समय श्रोणि अथवा नितम्ब देशमें भयानक दर्द (साइली, लैके, सल्फ) मालूम होता है, पर थोड़ा भी चलनेपर बन्द हो

जाता है (आर्जेण्ट-नाइ)। सन्ध्याके बाद या सोनेके बाद अथवा सवेरे ग्रीवा-पृष्ठ (Nape of Neck) और पीठकी हड्डी (अंशफलक) तक मानो अकड़ जाता है या चिपक जाता है। झुकने, बाँह हिलाने और बाईं ओर माथा फिरानेपर वृद्धि।

प्रत्यङ्ग ।—प्रत्येक बार लक्षण प्रकट होनेके समय भिन्न-भिन्न पार्श्वपर आक्रमण करते हैं या स्थान परिवर्त्तन करते हैं। तलवेमें बड़े और बहुत कड़े गट्ठे (रैनान-बाल्बो) पैदा हो जाते हैं। चलनेके समय बहुत दर्द होता है, खासकर पत्थरकी बनी भूमिपर चलनेसे। अँगुलीमें वातकी तरह दर्द—अंगुलीके नख-सब किसी भारी चीज़से दब जानेपर या आप-से-आप टूटकर दर्द पैदा होता है और नखके नीचेका मांस गट्ठेकी तरह कड़ा हो जाया करता है।

त्वचा ।—धूप बिलकुल ही सहन नहीं होती ; धूपमें परिश्रम करनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है (लैके, नैट्र-म्यू)। आगकी गर्मी ज्यादा लगनेपर भी लक्षणोंकी वृद्धि हो जाती है ; गर्मीके दिनोंमें थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत थकावट आ जाती है ; धूप लगनेके कारण रोग ;—फुन्सियां, खुजली, व्रण प्रभृति। शराब पीनेकी वजहसे बड़ा लाल व्रण। ठण्डे पानीसे नहाना अच्छा न मालूम होना ; बच्चे धोने और ठण्डे पानीसे नहलानेपर चिल्लाने लगते हैं। ठण्डे पानीसे नहानेके कारण ऋतुरोध ; पानीमें गिरने या तैरनेकी वजहसे सर्दी (रास-टक्स); आमवात ; छोटी माता वगैरहकी तरह उद्भेद ; चिपटे मसे ; कड़े गट्ठे। शय्यापर शरीर गर्म होते ही खुजलाहट आरम्भ हो जाती हैं। मसा (थूजा, सैबाइ, कास्टि, टियुक्रि)।

निद्रा ।—दिनमें विशेषकर पूर्वान्हमें, बहुत औंघाई। सवेरे ७ बजनेके समय नींद आने लगती है।

ज्वरादि ।—मध्यान्हमें प्यासके साथ कम्प देकर ज्वर आता है। तीसरे पहर ४ बजनेके समय शीत मालूम होना—गर्म घरमें, आग या चूल्हेके निकट बैठनेपर भी जाड़ा नहीं घटता। (उत्तापसे घटना = आर्स, कोरालियम-रूब्रम ; इग्ने ; उत्तापसे अधिकता = एपिस, इपिका) ; ज्वरका प्रकोप थोड़ा भी घटते ही रोगी गाढ़ी नींदमें सो जाता है। श्वास लेनेपर नाकमें शीतलता मालूम होती है। त्वचाका सूखापन और पसीना—पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है ;—नित्य एक ही समय होता है, साधारणतः प्रत्येक द्वितीय रातमें ; सविराम ज्वरमें

(डकार और मलद्वारसे) दोनों ओरसे बार-बार वायु निकलता है। मुँहमें बार-बार मीठी स्वाद मिली लार एकत्र होती है। भोजनके बाद पेट फूलता है।

मल ।—उदरामय (पतले दस्त) और कब्जियत पर्यायक्रमसे पैदा होता है (विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका)। खटाई, खट्टी, शराब, ठण्डे पानीमें स्नान और बहुत खानेकी वजहसे पतले दस्त आना। कड़े मलके साथ पतला मल मिला रहना; आँतोंसे खूनका स्राव। मलद्वारसे रस-स्राव—पहननेका वस्त्र पीले रङ्गका हो जाता है। श्लेष्मा-स्रावी अर्शसे बाराबर श्लेष्मा निकला करता है; बेधनेकी तरह दर्द और जलन (ऐमोन म्यू, कैप्सि, पल्स)। केवल आँव मिला मल। पानीकी तरह पतले मलके साथ कड़ा गांठ-गांठ या जमा हुआ दुग्ध-पिण्ड (पैलि) निकलना।

मूत्र ।—बार-बार वेग, पेशाब गदला और बदबूदार—निकलनेके समय जलन और कमरमें दर्द। सोनेकी तरह पीली आभा लिये (ऐमो-कार्ब, कडियास-सोरि, सिफिलाइन); कभी-कभी फीका लाल और बहुत देरतक रहनेपर उसमें रक्तके कण दिखाई देते हैं।

पुं-जननेन्द्रिय ।—रमणेच्छाकी वृद्धि; मनमें अश्लील भावका पैदा होना; रातमें रेतःस्राव या स्वप्न-दोष।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कामोत्तेजना और खुजली; ऋतु होनेके पहले ही दन्तशूल (आर्स, नेट्र-म्यूर); ऋतु अत्यन्त असमयमें होता है और बहुत अधिक स्राव होता है। ठण्डे पानीमें नहानेकी वजहसे ऋतु बन्द होनेके कारण डिम्बाधार प्रदेशमें (Ovarian Region) स्पर्श सहन न होना और तलपेटमें दबाव मालूम होना। प्रदर स्राव पानीकी तरह, कसैला (Carrosive—कैमो, क्रियो, नेट्र-फास) और जमा हुआ श्लेष्मा खण्ड-खण्ड निकलता है।

श्वास-यंत्र ।—क्रुप खाँसी; धूपमें शरीर बहुत उत्तप्त होनेपर या ठण्डे पानीमें नहानेसे बढ़ना; प्रकोपके अन्तमें केवल एक बार खाककर खाँसी आती है। खाँसी—गर्म घरमें प्रवेश करनेपर वृद्धि (ब्राइ, लाई, पल्स),—छातीमें जलन (लेके, फास, स्पञ्जि, जिङ्क) और खुजलाहट। धूपमें बहुत घूमनेकी वजहसे स्वरभङ्ग। खाँसनेपर नाककी पिछली नलीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है।

पीठ ।—आसनसे उठनेके समय श्रोणि अथवा नितम्ब देशमें भयानक दर्द (साइली, लेके, सल्फ) मालूम होता है, पर थोड़ा भी चलनेपर बन्द हो

जाता है (आर्जेण्ट-नाइ)। सन्ध्याके बाद या सोनेके बाद अथवा सवेरे ग्रीवा-पृष्ठ (Nape of Neck) और पीठकी हड्डी (अंशफलक) तक मानो अकड़ जाता है या चिपक जाता है। झुकने, बाँह हिलाने और बाईं ओर माथा फिरानेपर वृद्धि।

प्रत्यङ्ग ।—प्रत्येक बार लक्षण प्रकट होनेके समय भिन्न-भिन्न पार्श्वपर आक्रमण करते हैं या स्थान परिवर्त्तन करते हैं। तलवेमें बड़े और बहुत कड़े गट्ठे (रेनान-ग्राल्बो) पैदा हो जाते हैं। चलनेके समय बहुत दर्द होता है, खासकर पत्थरकी बनी भूमिपर चलनेसे। अँगुलीमें वातकी तरह दर्द—अंगुलीके नख-सब किसी भारी चीज़से दब जानेपर या आप-से-आप टूटकर दर्द पैदा होता है और नखके नीचेका मांस गट्ठेकी तरह कड़ा हो जाया करता है।

त्वचा ।—धूप बिलकुल ही सहन नहीं होती ; धूपमें परिश्रम करनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है (लैके, नैट्र-म्यू)। आगकी गर्मी ज्यादा लगनेपर भी लक्षणोंकी वृद्धि हो जाती है ; गर्मीके दिनोंमें थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत थकावट आ जाती है ; धूप लगनेके कारण रोग ;—फुन्सियाँ, खुजली, व्रण प्रभृति। शराब पीनेकी वजहसे बड़ा लाल व्रण। ठण्डे पानीसे नहाना अच्छा न मालूम होना ; बच्चे धोने और ठण्डे पानीसे नहलानेपर चिल्लाने लगते हैं। ठण्डे पानीसे नहानेके कारण ऋतुरोध ; पानीमें गिरने या तैरनेकी वजहसे सर्दी (रास-टक्स) ; आमवात ; छोटी माता वगैरहकी तरह उद्भेद ; चिपटे मस्से ; कड़े गट्ठे। शय्यापर शरीर गर्म होते ही खुजलाहट आरम्भ हो जाती हैं। मसा (थूजा, सेबाई, कास्टि, टियुक्रि)।

निद्रा ।—दिनमें विशेषकर पूर्वान्हमें, बहुत औंघाई। सवेरे ७ बजनेके समय नींद आने लगती है।

ज्वरादि ।—मध्यान्हमें प्यासके साथ कम्प देकर ज्वर आता है। तीसरे पहर ४ बजनेके समय शीत मालूम होना—गर्म घरमें, आग या चूल्हेके निकट बैठनेपर भी जाड़ा नहीं घटता। (उत्तापसे घटना = आर्स, कोरालियम-रूब्रम : इग्ने ; उत्तापसे अधिकता = एपिस, इपिका) ; ज्वरका प्रकोप थोड़ा भी घटते ही रोगी गाढ़ी नींदमें सो जाता है। श्वास लेनेपर नाकमें शीतलता मालूम होती है। त्वचाका सूखापन और पसीना—पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है ;—नित्य एक ही समय होता है, साधारणतः प्रत्येक द्वितीय रातमें ; सविराम ज्वरमें

रोगी बहुत चिड़चिड़ा और दुःखपूर्ण अन्तःकरणवाला हो जाता है”—(डा० नैश)।

वृद्धि ।—भोजनके बाद ; ठण्डे पानीसे नहानेपर ; खट्टी चीजें खानेपर ; धूप या आगकी गर्मीसे ; जाड़ा या गर्मीकी अधिकतासे वृद्धि।

घटना ।—हवा खानेपर ; विश्रामसे और गर्म पानीसे नहानेपर उपसर्ग घट जाते हैं।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—साइलिसिया—नखका बढ़ना बन्द हो जाना ; ग्रैफाइटिस—नख मोटा और वृद्धिमें रुकावट ; थूजा—नाखून टूट-टूट जाते हैं, चूर हो जाते हैं और टेढ़े पड़ जाते हैं। पसीना निकलनेकी वजहसे पैरके तलवेमें जखम हो जाना—बैराइटा ; तलवा छुआ न जाये और दर्द-भरा हो—पल्सेटिला ; टहलनेके समय एँड़ी और पैरकी अँगुलीमें दर्द मालूम हो—लीडम ; जांघपर सहारा दिये बिना चल नहीं सकता—मिडोरिनम ; पैरका तलवा फूला और दर्द-भरा—लाइकोपोडियम। स्ट्रैमो—किसीके देखनेसे ही चिढ़ उठता है ; सलफर—नहानेकी इच्छा न होना।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—स्क्विउला।

दोषघ्न ।—कैल्के, हिपर, मार्क। पल्सके पहले और बाद उपयोगी है।

शक्ति ।—३ री दशमिकसे ३० या २०० शततमिक पर्यन्त व्यवहारकर बहुत लाभ होते देखा गया है।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० दिनोंतक।

ऐण्टिमोनियम आयोडेटम

(ANTIMONIUM IODATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—दमा, श्वासनालीका प्रदाह और फेफड़ेका प्रदाह वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

ऐण्टिमोनियम सल्फ्युरेटम आरियम

(ANTIMONIUM SULPHURATUM AUREUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है:—मुँहमें मुँहासे; क्षीण दृष्टि; सर्दी; कब्जियत; अतिसार; अजीर्ण; आँखोंमें जलन; नाकसे खून गिरना; फेफड़ेका प्रदाह।

उपयोगिता।—वक्ष और आँखोंपर इसकी क्रिया अधिक होती है। नाक और वायुनलीभुजमें प्रवेश की हुई, बहुत तरहकी पुरानी सर्दी और कफ़ आदिमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। मस्तकमें जलन; अन्धापन वगैरह लक्षणमें भी लाभदायक है।

लक्षणावली

नाक और गलेके भीतर।—हाथ-मुँह धोनेके समय नाकसे रक्त-स्राव (ब्राइ, नक्स-वोम)। नासा-रन्ध्र और गलेके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा एकत्र होना। गलेके भीतरसे बदबूदार कफ़ निकलता है। गलेमें रूखड़ापन और कुटकुटाहट मालूम होती है। घ्राण-शक्ति लोप हो जाती है। मुँहमें धातुका स्वाद आता है।

श्वास-यन्त्र।—तालुमूलमें खुजलाहट। श्लेष्मा अधिक सञ्चय हो जाता है और दोनों वायुनलीभुजोंमें श्लेष्मा भरा रहता है। श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है। वायुनलीभुजमें सङ्कोचन और दबाव मालूम होना। तालुदेश और वायुनलीभुजमें लेईकी तरह श्लेष्मा जमा रहता है (ब्राइ, कैलि-बाइक्रोम)। वायुनलीभुजके भीतर पीब मिले श्लेष्मा-सञ्चयसे पैदा हुआ दमा (ऐण्टिम-टार्ट)।

मल।—अधिक परिमाणमें पाखाना होना; वायु निकलनेके अन्तमें एकाएक मलका वेग, इसके बाद ही पहले कड़ा मल, इसके बाद पीले रंगका पतला लसदार मल और अन्तमें आँतोंमें भयानक शूल और नाभिके चारों ओर आँतोंमें आवाज़ या कलकल गड़गड़ शब्द। मलमें कड़ापन, कड़ा मल बड़े कष्टसे निकलता है।

त्वचा ।—पीबभरी फुन्सियोंमें (Pustules) व्रण। शरीरमें खुजलाहट, विशेषकर मुष्कत्वक् (Scrotum) में (कास्टि, ग्रैफ, पेट्रोल) और दोनों ऊरुके बीचके स्थानमें खुजलाहट।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अन्यान्य ऐण्टिमोनी, ऑरम (आँखोंमें); आर्स, फेरम, मार्क-सोल (नाकसे रक्तस्राव)।

शक्ति ।—३री से ६ठी दशमिक विचूर्ण।

ऐण्टिमोनियम म्यूरियैटिकम

(ANTIMONIUM MURIATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—ओंठके कैन्सरमें लाभदायक है।

ऐण्टिमोनियम टार्टारिकम

(ANTIMONIUM TARTARICUM)

दूसरा नाम ।—टार्टरेट आफ ऐण्टिमोनी; पोटास या टार्टर ऐमेटिक;

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— विचूर्ण; पहले चुआये हुए पानीमें, इसके बाद स्पिरिटमें उच्चक्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं :— मदात्यय या शराब पीनेका दुष्परिणाम; मुँहमें उपक्षत; नये पैदा हुए बच्चेका श्वासरोध; दमा; श्वासनालीका प्रदाह; सर्दी; पनसाहा माता; चेचक; विसूचिका; खाँसी; घुंड़ी खाँसी; अजीर्ण; कितने ही तरहकी आँख और त्वचाकी बीमारी; सविराम ज्वर; स्वरनालीका प्रदाह; कटिवात; फेफड़ेकी बीमारी; हृत्पिण्डकी बीमारी; कँपकँपीके साथ पक्षाघात; फेफड़ेका प्रदाह; सन्धिवात; दाद; ग्रीवा-स्तम्भ (गर्दन अकड़ना); प्रमेह दोष; अस्थिवेष्ट-प्रदाह; प्यास; कम्प; वमन; हूप खाँसी (कुक्कुर खाँसी) इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—आलसी स्वभाव और श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले व्यक्तियोंकी बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है। खासकर जो सब मनुष्य (डा० ग्रेवोग्लके मतसे रस-वात-प्रधान धातुवाले हैं और जो सब बीमारियाँ नीचे घरोंमें रहनेकी वजहसे होती हैं (आर्स, ऐरेनिया, टेरिबिन्थ), उनको बीमारीमें यह उपयोगी है। फुसफुस, पाकाशयिक स्नायु (Pneumo gastric) के ऊपर इसकी क्रिया अधिक रहनेकी वजहसे, ऐण्टिम-टार्ट, श्वास-प्रश्वास और रक्त-संचालनकी क्रियामें रुकावट पैदा कर देता है, इसी वजहसे नीचे लिखे सिद्धिप्रद लक्षण पैदा हो जाया करते हैं - रोगीके खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है मानो उसके दोनों वायुनलीभुज श्लेष्मासे परिपूर्ण हो रहे हैं, मानो खाँसनेपर बहुत अधिक बलगम निकल जायगा ; परन्तु वास्तवमें कुछ निकलता नहीं है। निद्रालुता, दुर्बलता और पसीना इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है :—(१) अत्यन्त सुस्ती और तन्द्रा। (२) श्वास-प्रश्वासमें ऐसा शब्द होता है, मानो आरेसे लकड़ी चीरी जा रही है। (३) बच्चा हमेशा शङ्कायुक्त रहता है ; पासके आदमीको पकड़ रखता है ; उसकी यही इच्छा रहती है, कि कोई उसे गोदमें लेकर घूमता रहे ; बहुत चिड़चिड़ा,—कोई उसका शरीर छू लेता है, तो एकदम महाक्रोध करने लगता है। (४) चेहरा म्लान, मानो यन्त्रणासूचक, बिगड़ी हुई भावभंगी और ठण्डापन ; चेहरेकी पेशियाँ सब सिकुड़ती और फैलती (Twitch) रहती हैं। (५) शरीरकी त्वचा ठण्डी ; लसदार पसीना ; जीभपर पतला सफेद रंगका लेप चढ़ा रहता है और बीच-बीचमें काँटे सब (Papillae) दिखाई देते हैं ; लाल रेखामय या मध्य-रेखायुक्त शुष्क जिह्वा। (७) वायुनली श्लेष्मासे परि-पूर्ण रहनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है। (८) खाँसनेपर गलेमें घड़घड़ शब्द होता है ; कण्ठ और फेफड़ेमें श्लेष्माके बुलबुले फूटने-जैसी आवाज़ सुन पड़ती है। (९) खाँसी, भोजनके बाद या क्रोध आनेपर बढ़ जाती है ; प्रायः ही खाँसते-खाँसते बहुत-सा श्लेष्माका वमन हो जाता है और फिर तुरन्त आराम मिलता है। (१०) शरीरपर जगह-जगह पीव-भरे दाने (Pustules) निकल आते हैं और उसके आराम होनेपर नीला दाग रह जाता है ; बहुत धीरे-धीरे पकता है और बहुत देरसे उसमें पीव इकट्ठा होता है।

लक्षणावली

मन।—दिनमें प्रफुल्लता, सन्ध्याके समय उत्कण्ठा और भय। जो पासमें रहता है, बच्चा उसीको पकड़ रखता है, उसकी प्रधान इच्छा यह रहती है, कि कोई उसे गोदमें लेकर घूमता रहे; कोई छूता है तो नकियाकर रोने लगता है; चिकित्सककी नाड़ी नहीं देखने देता (ऐण्टि-क्रूड; सैनिक), अकेला नहीं रहना चाहता, डर जानेके भयसे। प्रलापावस्थामें बुदबुदाकर कुछ बका करता है और बहुत निद्रालु हो जाता है।

मस्तक।—मस्तकमें जड़ता और सरमें चक्कर आना; आँखें बन्द कर लेनेपर (आर्जेण्ट-नाई, स्ट्रैमो, लैके, थूजा; थिरिड), टहलनेपर (नैट्रम-म्यू, नक्स, पल्स); दृष्टि काँपती हुई के साथ; सर उठानेके समय (सर घुमानेपर—कोनायम, कैल्के, कैलि-कार्ब; मस्तकके संचालनसे—ब्राई, कैल्के, कोनायम; ऊपर देखनेपर—पल्स, सिलि); सरमें चक्कर आना; बाध्य होकर सो जाना पड़ता है (ब्राई, काक्यु, फास, पल्स); सरमें दर्द, मानो ललाटको किसीने बन्धनसे कसकर बाँध दिया है (ऐसिड-कार्बोलिक, ऐसिड-नाई)।

आँख।—आँखोंमें थकावट, आँखें इस तरह बन्द हो जाती हैं मानो नींद आ रही है; आँखोंमें चिलक मारनेकी तरह दर्द, क्षीण दृष्टि इत्यादि।

कान।—कानमें गुन-गुन शब्द इत्यादि।

मुख।—जीभ लसदार; पतला सफेद लेप चढ़ा हुआ—बीच-बीचमें लाल काँटे और किनारे लाल (दूधकी तरह सफेद लेप—ऐण्टि-क्रूड, आर्निका, आर्स, ब्राई, ग्लोनोइनम, नक्स, सिपि; बीचका स्थान सफेद, किनारा लाल—थ्लेस्पियम, आर्स-आयोड; मैलके साथ सफेद और मोटा लेप चढ़ी अथवा कुछ पीली आभा लिये—माइरिका)। कभी-कभी बीचका स्थान लाल और सूखा (बीचका स्थान लाल और अगल-बगल सफेद—कैमो; बीचका स्थान लाल रङ्गका—आर्स, कास्टि; कभी-कभी धुमैला और सूखा (बीचका स्थान धुमैला और सूखा—फास; धुमैली और सूखी जीभ—स्पञ्जिया)। चेहरा—बरफकी तरह ठण्डा, नीलिमायुक्त और रक्तहीन, ठण्डे पसीनेसे भरा (टैबेकम)।

वाताश्रयसे पैदा हुआ दन्तशूल।—मुँहके समस्त पार्श्वमें फैला हुआ या कभी-कभी उसी पार्श्वके समूचे मुँह, माथा और गर्दनमें छेदनेकी तरह दर्द (ऐसिड-फास)।

पाकाशय ।—खाली डकार ; सेव खानेकी प्रवल इच्छा (ऐलो ; खटाई और चटनी खानेका आग्रह—ऐण्टि-क्रूड), वमन—दाहिनी करवट सोनेके अलावा और सभी अवस्थाओंमें बहुत कै होना, अन्तमें रोगी सुस्त हो पड़ता है ; दूध पीने बाद ही वमन, प्रवल वमनेच्छा और चेष्टा, इसके बाद ही औंघाई और बहुत सुस्ती। विसूचिका रोगाधिकारमें बहुत दस्त, ललाटमें बहुत ठण्डा पसीना (वेरेट्रम)। ठण्डा पानी पीनेके लिये बहुत आग्रह ; बार-बार, परन्तु थोड़े परिमाणमें (आर्स) पीना।

तलपेट ।—पेटमें दर्दके साथ शारीरिक और मानसिक उत्तेजना।

मल ।—पीला, भूरा अर्थात् पीला या भूरे रङ्गका पतला-मल, पित्त मिश्रित और श्लेष्मामय मल ; कभी पानीकी तरह ; हरा और मलद्वारमें गर्म मालूम होनेवाला मल ; कभी-कभी चटचटा शराबके फेन (Yeast) की तरह, अत्यन्त दुर्गन्ध या सड़ी गन्ध-भरा मल ; पर्यायक्रमसे कब्जियत और अतिसार।

श्वास-यन्त्र ।—श्वास-रोध,- पानीमें नहाने आदि बाहरी कारणसे ; वायुनलीभुजमें श्लेष्माकी अधिकताकी वजहसे ; फेफड़ेका—तुरन्त होनेवाला पक्षाघात-सूचक ; गलेमें और वायुनलीमें बाहरसे (Foreign) कोई पदार्थ प्रवेश करनेकी वजहसे उत्पन्न बीमारी ; औंघाई, आच्छन्नता या मोह। बच्चा पैदा होनेके समय रक्तशून्यकी तरह रहता है, साँस नहीं चलती और मानो हाँफता और मुँह फाड़ता है,—नवजात शिशुका श्वासरोध। मुमूर्ष मनुष्यकी गलेकी घड़घड़ाहट बन्द करता है (टेरेण्टियु) ; फेफड़ेका प्रदाह (Pneumonia) के साथ पाण्डु रोग (Jaundice),—खासकर दाहिने फेफड़ेका प्रदाह। स्वर-भङ्ग—सवेरे गलेके भीतर खरखरापन और पतला कफ़ इकट्ठा होना, खाँसनेके बाद और बोलनेसे बढ़ना। वायुनलीमें श्लेष्माकी घड़घड़ाहट होती है, पर खाँसनेपर निकलता नहीं है। वायुनली भुजके ऊपरी अंशमें घड़घड़ शब्द बहुत दूरसे सुन पड़ता है। रात ३ बजनेके समय छातीमें दबाव मालूम होता है और श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है। श्वास-प्रश्वासमें सरलता प्राप्त होनेके लिये रोगी वाध्य होकर उठ बैठता है ; कुछ देरतक खाँसने और कुछ श्लेष्मा निकल जाने बाद आराम मिलता है। श्वास-प्रश्वास तेज़—मानो उसका श्वास रुक जायगा। पर्यायक्रमसे खाँसी और जम्हाई आना। खानेपर खाँसी बढ़

जाती है; खाँसते-खाँसते जम्हाई आने लगती है (बेल, लोबेल, ओपि)। फेफड़ेमें सूजन और पक्षाघात होनेकी सम्भावना। फेफड़ेका प्रदाह (Pneumonia), फेफड़ेकी यकृद्भाव प्राप्ति (Hepatization) वाली अवस्था ;— फेफड़ेमें सूजन आ जाती है और उससे रस-स्राव (Exudation) हुआ करता है; वक्षपर अंगुलीसे आघात करनेपर ढप-ढप शब्द होता है; श्वास-प्रश्वासकी गड़गड़ाहट (Crepitation) नहीं सुन पड़ती ; श्वास-प्रश्वास द्रुत ; रोगी रक्त-हीन, दुर्बल और निद्रालु रहा करता है।

हृत्पिण्ड और नाड़ी।—कलेजा धड़कना ; नाड़ी—कड़ी, द्रुत, क्षुद्र, कमजोर और काँपती हुई ; अनुभवमें नहीं आती।

पीठ।—त्रिकास्थि-श्रोणिदेशीय (Sacro-Lumbar) अर्थात् पश्चात् कटिके निम्न-प्रदेशमें भयङ्कर दर्द ; उठनेकी सामान्य चेष्टा करनेसे ही मिचली आती है और ठण्डा लसदार पसीना हुआ करता है। मेरुदण्डके निचले अंशमें अत्यन्त भार मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग।—पेशियोंका स्पन्दन। समस्त शरीरका आभ्यन्तरिक कम्पन, माथे और हाथ-पैर आदिका पाक्षाघातिक स्पन्दन। शराबियोंका शरीरका काँपना और जी घबड़ाना।

त्वचा।—त्वचापर खुजलानेवाली फुन्सियाँ या उद्भेद; खसड़ा या चेचककी तरह खुजलीके दाने या उद्भेद; पृष्ठव्रण (पीठपरका फोड़ा) इत्यादि।

ज्वराधिकार।—शीत मालूम होना, कम्पन और शीत-प्रधान ज्वर। बहुत तेज़ उत्ताप। बहुत अधिक पसीना। ठण्डा लसदार पसीना और बहुत औंघाई। ज्वरके प्रकोपके समय रोगी आँख नहीं खोल सकता। इतनी नींद आती है, परन्तु नींद खुलनेपर एकदम निराशा और विषाद पैदा हो जाता है। बहुत देरतक जाड़ा रहता है और फिर उतना ही दीर्घकाल व्यापी उत्ताप भी रहता है, जरा शरीर हिलानेसे ही बढ़ जाता है। नीचे तलेवाले मकानमें या गीली जमीनमें रहनेकी वजहसे (आर्स, आयोड, नेट्र-सल्फ) ज़्वर।

नींद।—प्रायः सब लक्षणोंके साथ अत्यन्त निद्रालुता या अनिवार्य निद्राका आवेश। नींदमें एकाएक शरीर भड़क उठता है या रोगी चौंक उठता है।

वृद्धि।—निचले तलेमें या गीली जमीनमें रहनेपर; शीतल जलीय वायुमें; रातमें सोने बाद; घरकी गर्मीसे; बसन्त ऋतुमें वायु परिवर्त्तनके समय (कैलि-सल्फ, नेट्र-सल्फ)।

घटना।—निर्मल, शीतल वायुमें; सीधे होकर बैठे रहनेपर; श्लेष्मा निकल जानेपर; दाहिनी करवट सोनेपर (टैबेकम)।

सम्बन्ध।—सदृश—एकोन (काली खाँसी), थूजा, इपिका (वमन), एकोन, ब्राई, आर्स, ब्रायो (फेफड़ेमें), लैकेसिस (श्वास-कष्ट); लाइको (फेफड़ा); विरेट्रम (शूल और वमन); ओपियम (तन्द्रा)।

दोषघ्न।—ऐसाफि, चायना, काक्युलस, कोना, इपिका, ओपि, पल्स, सिपिया इत्यादि।

तुलनीय।—लाइकोपोडियमके सदृश है; परन्तु इसकी नासापुटकी पंखेकी तरह गतिके बदले, ऐण्टि-टार्टमें केवल नासापुटका फैलना और सिकुड़ना दिखाई देता है। यह वेरेट्रमके सदृश भी है; क्योंकि दोनोंमें ही दस्त, कै, मिचली, ठण्डा पसीना और खट्टी चीजें खानेकी इच्छा मौजूद रहती है, वेरेट्रमकी अपेक्षा ऐण्टिम-टार्टमें पेशियोंका फड़कना, औंघाई और पेशाबका वेग ज्यादा मौजूद रहता है, परन्तु इसके साथ ही वेरेट्रममें ऐण्टि-टार्टकी अपेक्षा अधिक ठण्डा पसीना और सुस्ती मौजूद रहती है। कुछ अंशोंमें इपिकाकुआन्हा भी सदृश है, परन्तु ऐण्टिम-टार्टमें बाधा प्राप्त श्वास-प्रश्वासकी वजहसे निद्राका आवेश अधिक रहता है और मिचली तथा वमनके बाद घटनेका लक्षण मौजूद रहता है। जब फेफड़ा अवसन्न होता जाता है, उस समय इपिकाकके बदले ऐण्टिम-टार्टका प्रयोग करना चाहिये। गो-बीजका टीकाके दोषको वजहसे पैदा हुए रोगोंमें, यदि थूजासे लाभ न हो और साइलिसियाके लक्षण न दिखाई दें तो ऐण्टिम टार्टका प्रयोग करना चाहिये।

वायुनलीमें यदि और कोई पदार्थ प्रवेश करनेकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाय तो साइलिसियाके पहले, रुके हुए प्रमेहमें पल्सेटिलाके पहले और गीली जमीनपर सोनेकी वजहसे पैदा हुए रोग आदिमें टेरिबिन्थके पहले इसका व्यवहार प्रसिद्ध है।

बच्चेकी खाँसीमें यदि ऐण्टिम-टार्टसे लाभ न हो तो हिपरका प्रयोग करना चाहिये। बसन्त ऋतुमें और शरत् ऋतुमें, यदि तर हवा बहनी आरम्भ हो

और उस समय बच्चोंकी जो खाँसी बढ़ जाती है, उसमें ऐण्टिम-टार्ट बहुत फायदा करता है।

शक्ति।—३रे दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम और २०० शक्ति लाभदायक है।

ऐण्टिपाइरिनम

(ANTIPYRINUM)

दूसरा नाम।—फिनाजोन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अलकतरेसे पैदा हुए एक प्रकारके पदार्थसे विचूर्ण और टिंचर दोनों ही तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—रजःकृच्छ्रता ; अनजानमें पेशाब होना ; मृगी ; नाकसे रक्तस्राव ; लाल रङ्गकी फुन्सियाँ ; छोटी माता ; सरमें दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; मानसिक विकार ; गलेका जखम ; दाँतका दर्द और आमवात।

उपयोगिता और आभास।—गर्दनके दोनों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो हजारों पिनें बेधी जा रही हैं ; वक्षस्थल और उदरके भीतरवाले यन्त्र-सब ऊपरको ओर खिंच रहे हैं—ऐसा होनेके साथ-ही-साथ मूर्च्छा और गिर जाना ; सारे शरीरकी पेशियोंका सङ्कोचन, दाँत कड़मड़ाना और जी घबड़ाना वगैरह यदि मालूम हो और इसके साथ ही मृगीकी तरह (Epileptic) आक्षेप या आवेश ; शरीरका नीला रङ्ग हो जाना ; हिमाङ्ग और शारीरिक क्रियाका रुक जाना या हिमाङ्ग अवस्था (Collapse) ; ऐसा मालूम होता है, कि शरीरमें बरफ भरा हुआ है ; शरीरके कितने ही स्थानोंमें जगह-जगहपर पित्तज उद्भेद, अरुणिमा (Erythema) या आमवात,—पहले मुखमण्डल और बाँहमें और अन्तमें दोनों पैरोंमें बहुत ज्यादा पसीना निकलना ; नाकसे रक्तस्राव ; रातमें अनजानमें पेशाब हो जाना वगैरह कई इसके प्रधान क्रियाफल हैं। दाहिने अङ्गके साथ इसकी अधिक घनिष्टता है, जैसे—दाहिना वक्ष, दाहिना मुष्कत्वक और अण्डकोषमें अधिक दर्द होना (आलपीन गड़ानेकी

तरह) मालूम होता है। गर्म पानी आदि पीनेसे लक्षण घट जाते हैं। स्त्री-जननेन्द्रियके ऊपरकी क्रियामें मानसिक विषादके साथ रजःकृच्छ्रता। मनोवृत्तिपर इसकी यह क्रिया है, कि उन्माद होनेकी सम्भावना मालूम होती है और श्वास-यन्त्रके ऊपरकी क्रियामें क्रमशः घटनेके बाद क्रमशः बढ़नेवाला श्वास-प्रश्वास (Cheyne Strokes Respiration—ऐकोन, फेराक्स, ग्रैण्डि, कैलि-साया इत्यादि) प्रकट हुआ करता है।

लक्षणावली

मन।—बेहोशी ; उन्माद होनेका भय (ऐम्ब्रा, ऐक्टिया, कैल्के-कार्बोनिका, लैक-कैन, लिलि-टाई, सिफिल) ; स्नायविक उद्वेग या उत्कण्ठा (ऐको, चिनिन-आर्स, कैलि-फास, लैकेसिस, लिल-टाई, मेडोरिन, सैंगु. सिपि) ; देखने और सुननेकी इन्द्रियोंमें गड़बड़ी (ऐनहैलो, कैनाबिस-इन, ऐबसिन्थ, ऐक्टि, कोकेइन, कैलि-ब्रोम, ओपि, स्ट्रैम), लगातार दर्द।

मस्तक।—सरमें टपकका दर्द, साथ ही दाँतमें दर्द (बेल, युपेटोर, क्रियोजोट, पिक्रोल, सिपिया, सलफर, वेरेट्रम) ; दृढ़ आवद्ध भाव (ऐकोन, आर्नि, कैक्टस, काक्यु, ग्रैफ, नेट्रम-म्यूर, ऐण्टिम-टार्ट) और उत्तापका सञ्चार (एमिल, लैके)। दोनों कानके नीचे फाड़नेकी तरह दर्द ; दन्तशूलके साथ सरमें दर्द।

आँख।—पलकोंकी सूजनकी वजहसे आँखें बन्द रहती हैं ; आँसू बहनेके साथ ही पलकोंके भीतर (Conjunctiva) का स्थान लाल और फूला हुआ (बेल, इयुफ्रे, हायो, मर्क, नक्स, स्पाइजि, थूजा, आर्जेण्ट, सैबाडि, बेलि)। आँखोंके सफेद अंशके (Cornea) ऊपर लाल बूंद-बूंद दाग (एपिस)।

कान।—दर्द और झिन-झिन आवाज़ (ऐमोन-कार्ब, बेल, कैल्के, कास्टि, ग्रैफा, मस्कस, नेट्र-मूरर, पल्स, सलफर)। कानके छेदमें खुजलाहट (ऐगार, ऐमोन-कार्ब, आर्जेण्ट, सलफर)।

मुखमण्डल।—फूला हुआ, उसका रङ्ग गहरा लाल (बेल, ब्राई, कैमो, हायो, ओपि, स्ट्रैमो) ; दाँतमें दर्द।

मुख-विवर।—दोनों ओंठ फूले (बेल, लाइको, मर्क, नेट्रम-मूरर, रस)। मुँहके भीतर और मसूढ़ेमें जलन मालूम होना (कार्बो-वेज, मेजेरियम) ; ओंठ और जीभमें जखम, रस-भरी फुन्सियाँ और छाले (बोरैक्स, मर्क,

ऐसि-नाइ, आर्जेण्ट, हेलिबो, लाइको, नेट्रम-म्यूर); गालपर कुछ ऊँचो सूजन (एपिस, मर्क); जीभ फूली (आर्स, आरम, बेल, कैन्थ, हेलिबो, मर्क, रास, सलफर); खून-भरी लार बहना।

गलेके भीतर।—निगलनेके समय दर्द मालूम होना (बेल, एपिस, आयोड, मार्क, आयोड, फ्लेवस, फाइटो, मर्क-सायानिटस); बदबूदार पीब कफ़के रूपमें व्यवहृत होता है (Expectorted—कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्कोना, कोनायम, फेरम, हिपर, कैलि-कार्ब, क्रियोजोट, लाइको, ऐसिड-नाई, नाइट्रम, फास, सिपि, स्टैन, स्टैफ)। फोड़ा—सफ़ेद रङ्गको पपड़ीसे भरा, जलन मालूम होना (आर्स, कैन्थ, लैके, मार्क, फास)।

पाकाशय।—मिचली, वमन, जलन मालूम होना और दर्द (आर्स); पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी झुक जाता है और चिल्ला उठता है (कोलो)।

जननेन्द्रिय।—मूत्रयन्त्र और मूत्रका परिमाण कम हो जाना। अपत्यपथमें खुजली और जलन। रजःस्राव रुका हुआ और पानीकी तरह प्रदर-स्राव (कार्बो-ऐनिमि, सिङ्कोना, ग्रैफ, कैलि-हाइ-नाइट्रोसम)।

श्वास-यंत्र।—सर्दी—पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (ऐकोन, आर्स, एलियम-सिपा, युफ्रेशिया)। नासा-रन्ध्रके भीतरकी झिल्ली फूली हुई; ललाट पश्चात् स्थित गह्वर (ललाटके पीछेवाला गह्वर—Sinus) के भीतर अस्पष्ट या धीमा-धीमा दर्द मालूम होना। स्वरलोप (Aphonia) सर्दीकी वजहसे—कास्टि; ऋतुके समय—जेल्स; उत्तापकी प्रबलताकी वजहसे—ऐण्टिम-क्रूड; स्वर-तन्तुके पक्षाघातसे उत्पन्न—एसिड-आक्जेलिक); फेफड़ेमें दबाव मालूम होना और श्वास-कष्ट। क्रमशः घटनेके बाद क्रमशः बढ़नेवाला श्वास-प्रश्वास (Cheyne Strokes Respiration)।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्ड मानो स्थिर हो गया है (लिल-टाइ, साइक्रूटा, जेलसि, आरम, लोबेल), ऐसा अनुभव होनेके साथ-ही-साथ सुस्ती आ जाना; समूचे शरीरमें टपक मालूम होना (नेट्र-म्यूर)। नाड़ी तेज़, क्षीण और उसकी गति अनियमित।

स्नायु।—मृगीकी तरह अकड़न-भरा रोगका आक्रमण। पेशीका सङ्कोचन, स्पन्दन और ऐंठन (कैल्के, कास्टि, युपेवा, ग्रैफ, लैके, फास, सलफर,

एसिड-सल्फ़, टियुक्रियम)। पेशियोंमें लचीलापन रहना और त्वचापर चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना; समूचे शरीरमें बहुत सुस्ती मालूम होना।

त्वचा।—घमौरी, एकज़िमा (Eczema—ग्रैफ, रास, वायोला-ट्राई), छाले। अत्यन्त खुजली (Phemphigus)। आमवात (एपिस, आर्टिका-यु, उल्कामारा; यकृत-विकारसे उत्पन्न—ऐस्टेकस, फ्लुवियाटिलिस)।

ज्वर।—बहुत पसीना; सारे शरीरमें टपकका दर्द, हाथ-पैर बहुत ठण्डे; स्नायविक कम्पन, सन्ताप या शरीरके तापके साथ नाड़ीकी तेजी घटा-बढ़ा करती है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—ऐनिलि (चर्म); आर्स (ऐकोन—सुन्न होना), तेज़ आक्रमण।

शक्ति।— ३री दशमिकसे ३० शततमिकतक।

एपिस मेलिफिका

(APIS MELLIFICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह मधुमक्खीसे तैयार होता है। मधुमक्खीका डङ्क छेद और पीसकर, क्रमसे अरिष्ट और विचूर्ण तैयार होता है। इसका सार “एपियम-वेरस” इत्यादि है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—फोड़ा; एँड़ी फूली हुई; संन्यास; दमा; मूत्राधारकी बीमारियाँ; दुष्ट-व्रण; उपदंश; बच्चोंकी कब्जियत; अतिसार; उपझिल्ली-प्रदाह; शोथ; कानमें विसर्प; अरुणिमा; आँखकी बीमारी; पैरमें जलन; सड़नेवाला जखम; वात; हाथ फूलना; हृत्पिण्डकी बीमारी; गर्मीके दिनोंका व्रण; जानुकी सूजन; मस्तिष्कोदक रोग; वक्षोदक रोग; आघात (चोट); सविराम ज्वर; उत्तेजना; ईर्षाका दुष्परिणाम; मसानेकी बीमारी; मधुमेह; योनिके बाहरी भागकी सूजन; स्वरनलीका प्रदाह; मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह; आर्त्तवमें विकार; आमवात; नश्तर लगवानेका दुष्परिणाम; डिम्बाधारका दर्द, प्रदाह और अर्बुद;

अंगुलहाड़ा ; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह ; फुस्फुसावरक-झिल्ली-प्रदाह ; मूत्राधार और मुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह ; लाल (आरक्त) ज्वर ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; उद्भेद बैठ जाने या भरपूर न निकलनेका दुष्परिणाम ; माषक धातु (Sycosis), गलेका जखम ; जीभमें सूजन और जखम ; अर्बुद ; सान्निपातिक ज्वर ; मूत्रनालीका प्रदाह ; मूत्रमें विकार ; गो-बीजका टीका लगवानेका दुष्परिणाम ; चेचक ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता ।—गण्डमाला दोष-युक्त धातु ; विधवा, बालक और बालिकाएँ, जिनके हाथसे सब पदार्थ सहजमें ही गिर जाते हैं ; ईर्षा, भय, क्रोध, विरक्ति या कोई दुःसम्वाद सुननेकी वजहसे बीमारी ; स्नायविक उत्तेजनाशील, हताश और रोगी प्रकृतिवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऊपर लिखे रोगोंमें और कर्कटीया अर्बुद (Scirrhous Tumours) और जखममें यह विशेष उपयोगी है। यदि मधुमक्खी डङ्क मार दे तो उसके बाद जो लक्षण पैदा हो जाते हैं, उनमें और इनके अलावा कितने ही स्थानोंकी सूजन, गाढ़ा लाल रङ्ग, डङ्क मारनेकी जैसी तकलीफ़, स्पर्शका सहन न हो सकना, गर्मी, उत्तापका सहन न होना वगैरह एपिसके निर्णायक लक्षण हैं। तीसरे पहर रोगका बढ़ना भी इसका निर्देशक है। विसर्पकी तरह (Erysipelatous) त्वचाका प्रदाह ; शोथकी तरह सूजन और उनमें जल-सञ्चयी रोग और सारे शरीरका शोथ ; किडनी या मूत्रग्रन्थिका नया प्रदाह (Acute Nephritis) और दूसरे-दूसरे जालकी तरह या विरल तन्तु अथवा झिल्लीक-प्रदाह एपिसकी क्रिया-भूमि हैं और एपिससे ही ऐसे रोग आराम होते हैं। किसी स्थानमें स्पर्श सहन न हो और तन्तु आदिमें संकोचन मालूम हो, यह भी इसका निर्णायक लक्षण है।

नीचे लिखे कई लक्षण इसके अत्यन्त सिद्धिप्रद हैं :—(१) सुस्ती और मानो समूचे शरीरमें चोट लग गयी है (Bruised)। (२) आँखके नीचे कोष या थैलीकी तरह सूजन (आँखके ऊपर—कैलि-कार्ब)। (३) सब लसिका-ग्रन्थियाँ फूली हुईं और उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द। (४) ऐसा मालूम हो मानो जीभकी खाल उधड़ गयी है (raw) या जल गई है ; जीभका अगला भाग लाल और गर्म। (५) बिना प्यासका शोथ रोग (Dropsy), पेशाब थोड़ा। (६) अत्यन्त श्वास-कृच्छ्रता—हरेक श्वास अन्तिम श्वास

श्वास मालूम होता है। (७) गलेमें गहरा जखम और उसका पार्श्व-भाग सूजनसे भरा। (८) मूत्रकृच्छ्रता—थोड़ा पेशाब,—पेशाबके पहले और बाद अत्यन्त जलन। (९) बिना प्यासका बोखार। (१०) वक्षोस्थिके ऊपरी अंश (Supra Sternal fossa) में उत्तेजना (irritation) की वजहसे खाँसी। (११) तालुमूलके पीछे, थोड़ा-सा श्लेष्मा अड़ा रहनेकी वजहसे, जबतक वह श्लेष्मा नहीं निकल जाता, तबतक खाँसी आया करती है। (१२) प्रचण्ड खाँसी; खाँसनेपर समूचा माथा हिल जाता है और उसमें एक तेज कनकनी मालूम होती है। रोगी आराम मिलनेकी आशामें माथा पीछेकी ओर झुका रखता है। (१३) उदरामय,—मल पीला हरे रंगका; इसके साथ ही उदरकी पेशीमें दर्द—इस दर्दका सवेरे बढ़ना। (१४) डिम्ब या अण्डाधारका फूलना, जलन और उनमें डंक मारनेकी तरह दर्द। (१५) तलपेटमें भार मालूम होना; मानो रक्त-स्राव आरम्भ हो जायगा और इसके बाद थोड़े परिमाणमें काला श्लेष्मा निकलना। (१६) ज्वराधिकारमें—तीसरे पहर ३ बजेसे ५ बजेके बीचमें शीत मालूम होना, जाड़ा पीठ होकर निम्नाङ्गमें उतरता है, गर्म कमरेमें और बोरसी या चूल्हेके पास बढ़ना।

लक्षणावली

मन।—स्थूल-बुद्धि—हाथसे चीजें गिर जाती हैं (बोविस्टा); प्रणय और ईर्षा, भीति, क्रोध, विरक्ति और दुःसंवाद वगैरहसे पैदा हुए रोग। क्रोधी प्रकृति; डरपोक; चंचल; सहजमें ही सन्तुष्ट नहीं होता। रोना-स्वभाव; बिना रोये रह नहीं सकता; आशा-भरोसा उसका मानो छूट जाता है; विमर्ष (पल्स) उदासी और बेहोशी। बीच-बीचमें तेज़ या कष्ट-सूचक चीत्कारके साथ मोह प्राप्त अवस्था (हेलिबो)। कामोन्माद, आच्छन्नावस्था ये दोनों पर्यायक्रमसे प्रकट होते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो आयु समाप्त होती आ रही है, अमनोयोगी—किसी काममें मन नहीं लगता। साफ़-साफ़ सोचनेकी शक्तिका न रहना इत्यादि।

मस्तक।—समूचे मस्तिष्कमें सुस्ती मालूम होना। सरमें चक्कर आना; सोनेके अन्तमें (कोनायम) या आँखें बन्द करनेपर बढ़ना (आर्जेण्ट-नाइ, स्ट्रैमो; आँखें खोलनेपर बढ़ना—टैबेकम, पल्स, सिलि)। एकाएक छुरी लगनेकी तरह तकलीफ़; सरके पिछले भागमें भार मालूम होना; वह

गर्दनतक फैल जाता है, मानो किसीने आघात किया है,—दबा रखनेसे आराम मालूम होता है, इसके साथ ही इन्द्रियको उत्तेजना। नया मस्तिष्कोदक (Hydrocephalus आयोडो-फार्म, वैसिलाइन)। रुका हुआ (Suppressed) या अच्छी तरह उद्भेद (eruptions) न निकलने बाद बच्चा बेहोश जैसा आच्छन्न अवस्थामें पड़ा रहता है, प्रलाप बकता है और बीच-बीचमें लोमहर्षक तीक्ष्ण चित्कार कर उठता है; डेरा देखना; दाँत-पर-दाँत घसता है, तकियेमें सर गड़ाता है (बेल, हेलिबो), चेहरेके एक पार्श्वमें स्पन्दन होता है और दूसरा पार्श्व सुन्न हो जाता है; माथेमें पसीना; पेशाब थोड़ा और दूधकी तरह सफेद, पैरका अंगूठा ऊपरकी ओर टेढ़ा हो जाता है, शयनावस्थामें मिचलो इत्यादि।

आँख।—शोथकी तरह रस-भरी सूजन; आँखके नीचे थैलीकी तरह हो जाता है (आँखके ऊपरमें—कैलि-कार्ब)। पलकोंका फूलना, लाल रंग, बाहर निकली हुई (Overted) या उल्टी पलक। इसके साथ प्रदाह; डंक मारनेकी तरह दर्द और जलन। आँखोंकी योजकत्वचा (Conguntive) चमकीली लाल और फूली हुई, गर्म आँसूका स्राव। रोशनीसे भय; एकाएक बेधनेकी तरह दर्द, आँखके गह्वरके चारों ओर दर्द। रसस्राव, शोथकी तरह सूजन और तेज़ यन्त्रणा। आँखके स्नायुका प्रदाह (Optic Neuritis)।

कान।—दोनों कानका बाहरी भाग लाल, प्रदाह-भरा और उसमें स्पर्श सहन न होना; डंक मारनेकी तरह तकलीफ़। विसर्प; कर्ण-प्रदाह; बहरापन+

नाक।—नाकका अगला भाग बरफकी तरह ठण्डा; नासारन्ध्रके बीच-बीचमें फोड़ा, ठण्डे प्रयोगसे घटना। नाक फूली और लाल। सर्दी।

मुखमण्डल।—फूला, लाल और उसमें बेधनेकी तरह दर्द, उसका रंग मोमकी तरह बदरंग, मलिन और शोथकी तरह (ऐसिड-ऐसेटिक)।

मुखविवर।—श्वासरोगाधिकारमें दोनों ओंठ नीले, जीभ फूली और उसमें स्पर्श सहन न हो, फटो-फटी और रसभरे दानोंसे भरी (Vesicles)—जीभ फूली और उसके दोनों किनारोंपर छाले—लैके। रसभरे दानोंसे भरी—रासटक्स, थूजा, बोरै, कैप्स, हिप, इनैन्थि-कोकेटा, फाइटो, रास-वेन, स्क्विला, वाईपेरा)। मुँह और गलेमें जल जानेकी तरह मालूम होना। ऐसा मालूम

हो, मानो जीभ जल गई है (आर्स, बैप्टी, कोलो, ग्रैफ, हायो, आइरिस, मर्क-सोल, टिलिया-ड्राई, फाजस, रासवेनि, रियुमेक्स, सैंगुइ, स्टिलि, वेरेट-विर); लाल, गर्म और हिलती हुई (ऐब्सिन्थ, बेल ; बाहर निकलनेके समय काँपती है—लैके); जीभका अगला भाग लाल रङ्गका या सूखा और पीछेसे अगले भागतक, बीचमें एक भूरे रङ्गकी रेखा रहती है, दोनों पार्श्व तर रहते हैं ; दाँत निकलनेके समय—मसूढ़े फूल उठते हैं (Sacculated) और जलभरे दिखाई देते हैं, बच्चा चिल्लाकर जाग उठता है ; बदनपर जगह-जगह सीमावद्ध भावसे लाल रङ्गके चिन्ह दिखाई देते हैं। ऊपरी ओठ फूले।

गलेके भीतर ।—गल-ग्रन्थि (Tonsils) फूली, गर्म, लाल और कोई चीज़ निगलनेके समय डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़ होती है। अलि-जिह्वा फूलकर थैलीकी तरह बन जाती है। गलग्रन्थि और तालुमें गहरे जखम पैदा हो जाते हैं, उसके चारों ओरका प्रदेश विसर्प-भरा (Erysipelatous) और रसभरी सूजनसे युक्त (Oedematus) मालूम होता है। गलेमें गाढ़ा, लसदार श्लेष्मा जमा रहता है (हाइड्रैस्ट, ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाइ, नेट्र-कार्ब), उपजिह्वाका शोथ या रस-भरी सूजन (Oedema Glottidis)।

पाकाशय ।—प्यास न रहना, सारे शरीरके शोथ रोगमें और उदरीमें (ऐसिड-ऐसेटिक ; परन्तु इसमें चेहरेका रङ्ग और भी उतरा हुआ और बहुत प्यास मौजूद रहती है); दर्द-भरा मालूम होता है ; खाई हुई चीज़ कै हो जाती है ; वायुनलीगत सर्दी, उदरामय, गलेके भीतरकी उपझिल्लीका प्रदाह (Diphtheria) वगैरहमें दुर्दमनीय प्यास ; दूध पीनेकी बहुत इच्छा (रास); पेटमें जलन, मानो अम्ल रोग हो गया है।

अन्त्राशय ।—आमाशय रोगाधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो अन्त्राशयमें अत्यन्त दर्द होता है—चलनेमें दर्द मालूम होता है ; एकदम छुआ नहीं जाता। अन्त्रावरणी एकदम न लचनेवाली मालूम होती है ; बड़ी आँतके साथ छोटी आँत जहाँपर मिलती है, उस जगह बहुत अधिक स्पर्श असहनीयता मालूम होना, खासकर मोहज्वर (Typhus) में। उदरी—प्यास न रहना (ऐसिड-ऐसेटिक, एपोसाइनम-कैन); अन्त्रावरण-प्रदाह (Peritonitis), इसके साथ ही रस निकलना (Exudation), कितनी ही बार जरायु-प्रदाहके साथ—पेशाब परिमाणमें थोड़ा, गाढ़ा, लाल रङ्ग, पेटकी त्वचाका लचीली न

रहना और अन्धान्त्र (Cœcum) के साथ सूक्ष्मान्त्र (छोटी आँतके संयोग स्थानपर इतना दर्द कि छुआ न जाये (कैन्थर, ब्राई) मौजूद रहता है।

मल।—मलका कड़ापन—ऐसा मालूम होता है, कि वेग देनेपर भीतरका कोई न झुकनेवाला अंश टूट जायगा। मलनालीका बाहर निकलना (काँच निकलना—Prolapsus Recti); गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटने या भ्रंश होनेपर अन्त्राशयसे रक्त-स्राव, भयानक जलन और मलद्वारकी त्वचाका क्षय हो जाता है; बार-बार काँखना। शराबियोंका उदरामय, उद्भेदयुक्त (Eruptive) रोगमें या रुके हुए उद्भेद (Suppressed) की वजहसे बीमारी; प्रत्येक बार पेशाब करते समय मल निकल आता है। मल—पानीकी तरह, पीला, पानीकी तरह और बहुत बदबूदार; पानीकी तरह बहुत ज्यादा और काली आभा लिये; हरा-पीला श्लेष्मा मिला; सवेरे वृद्धि; लेईकी तरह और रक्तमय आँव; सुस्त करनेवाला।

पेशाब।—मूत्राशय-द्वारपर बहुत खुजली, इसके साथ ही बार-बार और जलन करनेवाला पेशाब; बार-बार इच्छा या वेग होनेपर भी कई बूंद पेशाब निकलता है। पेशाब परिमाणमें थोड़ा और गाढ़ा लाल रङ्गका होता है; लाल, खून-मिला, गर्म और बहुत थोड़ा; बहुत थोड़ा और बदबूदार; बहुत थोड़ा, रङ्ग हलका लाल; कुछ देरतक रख छोड़नेपर गदला दिखाई देता है; परिमाणमें थोड़ा, दूधकी तरह सफेद और लार-भरा; काली आभा लिये और उसमें काफीके चूरकी तरह तली जमती है; पेशाबके साथ मसानेके भीतरका बहुत पतला सूक्ष्म नलखण्ड (Tubuli Uriniferi) और उपत्वक (Epithelium) मिला रहता है। मूत्रकृच्छ्रता; डङ्क मारनेकी तरह दर्द; अन्तका कई बूंद पेशाब होनेके समय बहुत जलन और तकलीफ़ मालूम होना (काइङ्का, क्लिमेट, कैन्थ, कोलचि, मर्क); पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना।

पुं०-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषकी सूजन, विशेषकर दाहिने अण्डकोषकी; मुष्कत्वक (Scrotum) में भयानक खुजली और लाली; छूनेसे दर्द मालूम होता है। मुष्कत्वकमें जल-सञ्चय होना; एकशिरा (स्पञ्जिया, रोडो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधार या अण्डाधारका शोथ (Ovarian Dropsy), खासकर दाहिने डिम्बाधारका। जरायु और डिम्बाधार-प्रदेशमें

जलन और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़। गर्भके पहले दो-तीन महीनेके भीतर हो गर्भ-स्राव। स्तनका विसर्प; स्तनमें कर्कटीय अर्बुदमें या कर्कटीय जखममें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा। योनिका बाहरी भाग फूला; शीतल पानीके प्रयोगसे घटना। मासिक ऋतु-स्राव रुके रहने (Suppressed) की वजहसे मस्तक और मस्तिष्कमें यन्त्रणा और दर्द (खासकर छोटी उमरवाली बालिकाओंको), वाधक, डिम्बाधार-प्रदेशमें भयानक यन्त्रणा और बहुत सामान्य लसदार स्राव। बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव (Menorrhagia), तलपेटमें बहुत भार मालूम होना; सुस्ती; बेचैनी; बार-बार जम्हाई आना और त्वचापर जगह-जगह बहुत ही तकलीफ़ देनेवाले सीमाबद्ध (Circumscribed) लाल चकत्ते। तलपेटमें बहुत भार मालूम होना,—मानो ऋतु-स्राव आरम्भ होगा (क्रोकस, लेथियम, मैग-कार्ब, कोना, लिलि-टाई, मस्क, ऐम्ब्र); प्रदर-स्राव बहुत अधिक कड़वा और हरी आभा लिये। जिन स्त्रियोंको मूत्रकृच्छ्रता हो अथवा गर्भ-स्राव हो जाया करता हो, उन्हें यह दवा देना उचित नहीं है। यदि बहुत ही अधिक आवश्यकता हो तो बहुत ऊँचा क्रम देना चाहिये।

श्वास-यंत्र।—सवेरेके समय स्वरभंग,—(कास्टि, युपिटोर; सन्ध्याके समय स्वरभङ्ग—कार्बो-वेज, फास); श्वास-कृच्छ्रता; श्वास-प्रश्वास तेज़ और जोर लगाना पड़ता है; किसी तरहका गलेका बन्धन या गलाबन्द सहन नहीं होता (लैके)। प्रत्येक बार साँस लेने और छोड़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो वही उसकी अन्तिम साँस है, इसके बाद फिर साँस न ले सकेगा; हृत्पिण्डका शोथ, एकाएक किसी शस्त्रकी चोटकी तरह या तीर बेधनेकी तरह और डङ्क मारने जैसा दर्द, यह दर्द हृत्पिण्डके नीचे पैदा होकर कोना-कोनी भावसे, दाहिने वक्षकी ओर फैलता है और साँस बहुत रुकती हुई मालूम होती है। रोगी समझता है, कि साँसकी कमीसे उसका दम रुक जायगा; पानी-भरी या एकाएक शोथकी तरह सूजन; श्वास-कष्ट; बहुत बेचैनी और चिन्ता; हृत्पिण्डका फैलना (Diastole) के समय सूतकार (वेगसे रक्त प्रवेश करनेके कारण सों-सों शब्द); वक्षस्थलमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है; हृत्पिण्डके प्रत्येक सङ्कोचनमें समूची देह मानो काँपती है (नैट्र-म्यूर)। रोगी बहुत बेचैन रहता है और किसी अवस्थामें आराम नहीं मिलता (ऐको); सवेरेके समय बहुत जी घबड़ाता है और तकलीफ़ मालूम होती है; हृत्पिण्डके दोनों द्वारोंकी अक्षमता (Mitral

Insufficiency); हृत्पिण्डकी गड़बड़ी (अर्थात् चारों ओर समभावसे नहीं) बढ़ना (Hypertrophy); नाड़ीकी गति असम, प्रति तृतीय या चतुर्थ स्पन्दन रुककर सविराम होता है। रक्तहीन दिखाई देता है। नाड़ी ऐसी मालूम होती, मानो एक बन्दूकके छर्रेकी तरह चिकित्सककी अंगुलीके नीचेसे धीरेसे निकल जाती है"—(डा० ग्रैनन)।

प्रत्यङ्ग।—अंगुलीकी हड्डीका प्रदाह (अंगुलहाड़ा); जलन, डङ्क मारनेकी तरह और टपक जैसा दर्द। रस और जल-भरी सूजन। प्रत्यङ्गकी सन्धिमें तेलकी तरह रस स्रावी (Synovial) झिल्लीका प्रदाह,—जानुदेश फूला; चमकीला उसमें स्पर्श सहन न हो और डङ्क मारनेकी तरह दर्द। ऐसा मालूम हो, मानो पैरके तलवे बहुत बढ़ गये हैं।

त्वचा।—दर्द—सब जगह और सब रोगोंमें जलन पैदा करनेवाला; डंक मारनेकी तरह दर्द और उस स्थानका छुआ न जाना; एकाएक एक अंशसे दूसरे अंशमें यह दर्द और फैल जाता है (केलि-बाई, लैक-कैन, पल्स)। स्पर्श-ज्ञान अत्यन्त तीक्ष्ण,—जरा-सा छू देनेसे ही बहुत दर्द मालूम होता है (बेल, लैके)। विसर्प—बहुत लाली लिये सूजन और उसका छूना सहन नहीं होता। आमवात, जलन-भरा और उसमें डंक मारनेकी तरह तकलीफ़ (आर्टिका-युरेन्स); पीठका फोड़ा, उरुस्तम्भ, पैरका फोड़ा वगैरह विषैले फोड़े—उनमें जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द (ऐन्थ्रास, आर्स, हिपोजिनिनम, युफोर्बियम।

निद्रा।—बहुत औंघाई; चिन्ता और परिश्रमवाले कामोंके सपने। निद्रावस्थामें एकाएक चिल्लाकर जाग उठता है।

ज्वराधिकारमें।—शीत—तीसरे पहर ३ बजेसे ४ बजेके भीतर थूजा—(रातमें ३ बजे और तीसरे पहर ३ बजेतक), शीतके समय प्यास भी मौजूद रहती है; वक्षस्थलमें इतना दबाव मालूम होना मानो श्वास रुक जायगी—गर्म घरमें बढ़ना। ज्वर या उत्तापावस्थामें—छातीमें श्वास रोध करनेवाला दबाव मालूम होना; हाथ, छाती और पेटके ऊपरी प्रदेशमें उत्तापकी अधिकता। आमवात, पसीनेवाली अवस्था—यह अवस्था प्रायः नहीं रहा करती है, विशेषकर बहुत दिनोंके बोखारमें। एक बार पसीना और एक बार पसीना न होना, ऐसा पर्यायक्रमसे दिखाई देता है—इस अवस्थामें भी

निद्रालुता मौजूद रहती है। "पसीनेवाली अवस्थामें प्यास बिलकुल ही नहीं रहती।" (एस, एफ, शैनन)। सविराम ज्वरमें जब यह दिखाई दे, कि रोगीकी त्वचा एक बार पसीनेसे तर हो जाती है और फिर सूख जाती है, उसी समय एपिसको याद करना चाहिये।"—(नेश)

वृद्धि ।—नींदके बाद (लैके); बन्द और खासकर गर्म कमरा असह्य; पानीमें भींजनेपर वृद्धि (रासटक्स); पर रोगवाला अंश ठण्डे पानीसे धोनेपर या भिंजानेपर घटना।

घटना ।—निर्मल वायु-सेवनसे, ठण्डे पानीमें भींजनेपर या स्नान करनेपर; ओढ़ना उतारनेपर; खाँसनेपर, टहलने या सोनेपर, बैठने वगैरहकी अवस्थाके परिवर्त्तनसे; सीधे होकर बैठनेपर घटना।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक—नेट्र-म्यू, रासटक्सके पहले या बाद इसका व्यवहार करना उचित नहीं है। बेसा, सर्प-विष, ऐसे-ऐसिड (शोथ); ऐनाका (आमवात); ऐपोसा, आर्निका (चोटसे); आर्सेनिक (सान्निपातिक, सड़ा घाव, शोथ); बेलाडो, ब्रोमि, ब्रायो (मस्तक); कैन्थ (जलना), चायना, क्रोटोन, इयुफि, आयोड, लैकेसि, लाइकोपो, मार्क, नेट्रम (कम्पज्वर, आमवात); पल्स, रास-टक्स (आँखकी बीमारी); रियुमेक्स, सैबाई, सिपिया, साइलि इत्यादि।

दोषघ्न ।—नेट्रम, इपिका, लैकेसि, लीडम।

शक्ति ।—३ री दशमिकसे ३० और २०० शततमिक या इससे ऊँचा क्रम।

ऐफिस चिनापोडाई ग्लुकाई

(APHIS CHENOPODII GLAUCI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह चिनोपोडियम वृक्षमें रहनेवाला एक तरहका कीड़ा है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—शूल-वेदना, सर्दी, खाँसी, उदरामय, सरमें दर्द, पाखाना होनेके समय काँखना; दाँतमें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—सर्दी, जखम करनेवाला सर्दीका स्राव, इसीलिये नाकका छेद, खासकर दोनों नासारन्ध्रके बीचके अस्थिखण्डकी मानो खाल उधड़ जाती है (सिपा)—यह इसका एक निर्भर योग्य लक्षण है।

सोनेपर दाँतके **दर्दका बढ़ जाना**, पसीना होनेपर घटना (कैमो), उदरशूल, पेटमें गड़गड़ शब्द, बार-बार पाखाना होनेकी इच्छा, मलान्त्रमें दर्द, पाखाना होनेके समय वायु निकलना, पतला चिकना मल, मलका रंग काला, रक्तका दाग वगैरह लक्षणोंकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—इथूजा (पाखाना होने बाद मल-वेग, पाखाना होनेके पहले, चिकोटी काटनेकी तरह या कतरनेकी तरह दर्द। पाखाना होने बाद काँखना), नेट्रम-सल्फ (शय्यासे उठनेपर मलवेग, मलत्यागके साथ वायु निकलना), नक्स-वोम (बार-बार पाखाना पेशाबका वेग); जेल्स (पीठके ऊपर और नीचे शीतका फैलना)।

शक्ति।—६—३०।

ऐपियम विरस

(APIUM VIRUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मधुमक्खियोंको चिढ़ा देनेपर उनके डङ्कसे जो रस निकलता है, उसीसे यह दवा तैयार की जाती है। पहले इसका हमेशा व्यवहार होता था। एपिस मेलिफिकाकी तरह ही इसके भी लक्षण हैं। इसकी विशेष क्रिया यह है, कि रोगीके शरीरमें अपने ही जखम आदिका पीव जब सोख जाता है (Auto-taxoemina) और इसी वजहसे जो रोग पैदा होते हैं, वे इससे अच्छे हो जाते हैं।

ऐपियम ग्रैवियोलेन्स

(APIUM GRAVEOLENS)

सतर्कता।—यह ऐपियम विरससे बिल्कुल ही दूसरी चीज़ है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके फलसे मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—सरमें दर्द; बेचैनी; छातीमें जलन; कानसे स्राव; दाँतका दर्द; पेशाब रुका हुआ; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पेटमें गड़बड़ी मालूम होना; बहुत उत्ताप मालूम होना; छातीमें जलन; खाई हुई चीज़का डकार आना या कै हो जाना; पाकाशय खाली मालम होना; खानेके बाद कुछ-कुछ घटना; पेशाब रुकना या मूत्राघात—कैथिटर या शलाका दिये बिना पेशाब नहीं होता। चिन्ता किये बिना रह नहीं सकता। शरीरकी चञ्चलताकी वजहसे स्थिर होकर बैठ या सो नहीं सकता; त्रिकास्थि और कटिके पिछले भागके नीचेवाले प्रदेशमें अत्यन्त दर्द; सोनेसे वृद्धि; टहलनेसे घटना; मालूम होता है, मानो दोनों आँखें गड़हेमें धँस गई हैं। टपक-जैसा सर-दर्द, जरा भी शरीर हिला देनेपर दर्दका बढ़ जाना; विश्रामसे घटना। कँपकँपीके साथ आमवात पैदा होता है। बहुत खुजलाहट और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़; एक जगहकी खुजलाहट बन्द होनेपर दूसरी जगह पैदा हो जाती है।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—बहुत बेचैनी मालूम होना; बहुत चिन्ताके कारण नींद नहीं आती (काफिया)। सर-दर्द—आँख बन्द करनेपर (बेल, कैल्के, हायो); विश्रामसे, ठण्डा पानी पीनेसे और भोजनके समय घटना; (भोजनके समय—नेट्रम-सल्फ़, रैनान; भोजनके बाद—बिसमथ, सिङ्कोना, कैलि-कार्ब, नक्स, नक्स-मस; भोजनके समय घटना—ऐनाक्, कैलि-फास, सोराइन; सरमें दर्दके समय भूख लगना—सोराइन)।

श्वास-यंत्र।—खुजलाहटकी वजहसे सूखी खाँसी। वक्षोस्थिके ऊपर अत्यन्त सङ्कोचन भाव (Constriction—कैक्टस, स्टैन) और सोनेके सम ऐसा मालूम होता है, मानो छाती भेदकर पीठतक खिंच रहा है।

नींद।—नींद तृप्ति-जनक नहीं होती; अनिद्रा।

शक्ति।—१लीसे ६ठीं दशमिकतक।

ऐपोसाइनम ऐण्ड्रोसिमिफोलियम

(APOCYNUM ANDROSAEMIFOLIUM)

दूसरा नाम ।—डाग्स् बेन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समस्त गाछ या मूलसे मदर-टिञ्चर अर्थात् मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अतिसार ; शोथ ; मिचली या ओकाई ; मुँहका स्नायु-शूल ; वमन ; इधर-उधर हटनेवाला सन्धिवात ; मूत्राश्मरी ; कृमि वगैरह रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—सन्धि या आमवात और वातजनन-शक्ति ही इसकी प्रयोजनीयताका प्रधान कारण है । इसका दर्द जगह बदला करता है ; अकड़न और सङ्कोचन उसकी प्रधान प्रकृति है । शरीरमें कम्पन; ऐसा मालूम हो, कि मानो मुँह और शरीर फूल गया है । ऐपोसाइनम कैना-बिनम और स्ट्रोफान्थसकी तरह इससे भी हाथ-पैरमें शोथ पैदा हुआ करता है । डा० हेलने इससे सन्धिवात वगैरह रोग आरोग्य किये हैं ।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथेके पिछले भागमें और गर्दनमें दर्द और अकड़न मालूम होती है ।

मुँह ।—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना (ऐगरिकस, ज़िङ्कम), खुजली और जलन मालूम होना । निचली पंक्तिके बाईं ओरके सभी दाँतोंमें दर्द मालूम होना ।

पाकाशय ।—दस्त और कै ; कब्जियत ।

जननेन्द्रिय ।—बहुत ज्यादा साफ़ और निर्मल पेशाब होता है । ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा ; आठ दिनोंतक रहनेवाला और तलपेटमें अत्यन्त दबावकी तरह मालूम होना ।

प्रत्यङ्ग ।—सब सन्धियोंमें ही दबाव मालूम होता है । अंगुली और पैरके तलवेमें दर्द (ऐसिड-क्रूड, एपियोल, बैराइटा-कार्ब, लिडम, मिडोरिनम,

लाई)। तलवेमें बहुत गर्मी मालूम होती है और पसीना होता है (ऐमोन-म्यूर, ऐल्यू, सोराइन, बैराइटा, सैनिक्युला, सिलि, ग्रैफ); पैरके तलवेमें बहुत जलन (ऐम्ब्रा, कैल्के, लैके, ऐसिड-फास, सलफर)। हाथ-पैरोंमें फूलन। दर्द जगह बदला करता है,—आज एक जगह है तो कल उस जगहसे हटकर दूसरी जगहपर आक्रमण करता है (एपिस, कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स)। दर्द निम्नगामी—नीचेकी ओर उसकी गति रहती है (कैक्ट-कैल्मिया—ऊर्द्ध-गामी—लीडम)।

त्वचा।—समूचे शरीर और मुखमण्डलमें असह्य खुजलाहट मालूम होना। शरीरके सब अंशोंमें भरपूर और बहुत ज्यादा पसीना होता है (समूची देह खासकर जननेन्द्रिय प्रदेशमें—ऐसिड-फास; सुस्त करनेवाला पसीना—फास; यक्ष्मादि रोगमें, उसके साथ ही स्नायवीय अवसाद—जैबोरैण्डी)।

सम्बन्ध।—सदृश—ब्रायो, आइरिस, कोलचि, कैल्के, सलफर, ऐसिड-फास, ऐपोसाइनम-कैन, स्ट्रापन्थ।

शक्ति।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम और ३री दशमिक।

ऐपोसाइनम कैनाबिनम

(APOCYNUM CANNABINUM)

दूसरा नाम।—एक तरहकी अमेरिकन भाँग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे वृक्ष या मूलसे मूल अर्क तैयार होता है। इसके जलीय सारको "इनफ्यूशन कैनाबिनम" कहते हैं और इसके सारांशको (विचूर्ण) ऐपोसाइनिन कहते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है;—शोथ; सर्दी; बहुमूत्र; अतिसार; हृत्पिण्डकी बीमारी; मस्तिष्कोदक; बहुत ज्यादा रजःस्राव; जरायुसे खूनका स्राव; स्नायुशूल; वमन; मिचली; पेशाबमें कष्ट इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके क्रियाका परिणाम है, पसीना और पेशाबका घटते जाना और रक्तरस-स्रावी झिल्लीमय प्रदेशमें लाल रंगका

प्रदाह और शोथ पैदा हो जाता है। लाल मूत्र या अण्डलालमूत्र रोगाधिकारमें (Albuminuria), पाकाशयमें विकारकी वजहसे मिचली, वमन, निद्रालुता, श्वासकृच्छ्रता वगैरहमें यह विशेष लाभदायक है। इसकी वजहसे शोथ रोगाधिकारमें, यकृतमें विकारकी वजहसे प्यासकी अधिकता और पाकाशयकी बीमारी पैदा होनेका लक्षण, इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—किंकर्त्तव्यविमूढ़ ; स्नायविक लक्षण ; निस्तेज।

मस्तक।—नया मस्तिष्कोदक (Hydrocephalus) हाइड्रोकेफालस), अस्थि-फलककी सन्धियाँ खुल जाती हैं ; रोगी मानो तन्द्रामें पड़ा रहता है ; उसको एक आँखसे दिखाई नहीं देता, एक हाथ और एक पैर हमेशा हिला करते हैं (बायाँ हाथ और पैर—ब्राई) ; ललाट बाहर निकलता हुआ (projected) मालूम होता है।

नाक।—नासारंध्र और गलेमें पीला गाढ़ा श्लेष्मा भरा रहता है। बच्चोंको नाक बन्द करनेवाली सर्दी (Snuffles—सैम्बियुकस), बहुत देरतक आनेवाली छींकका रोग।

पाक और अन्त्राशय।—नयी प्रादाहिक उदरी (Dropsy), बहुत प्यास (ऐसिड-ऐसेट) ; परन्तु पानी पीनेसे ही तकलीफ़ मालूम होने लगती है या कै हो जाती है (आर्स) ; इसके साथ आंत्रिक रोग आदि प्रायः मिले नहीं रहते हैं ; आन्त्रिक ज्वर, यकृतका छोटा हो जाना (Cirrhosis—सिरोसिस) और क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे मिचली और निद्रालुता ; नींद खुलते ही प्यास लगना ; बहुत वमन ; कुछ भार मालूम होना और तकलीफ़ ; पेटके ऊपरी भाग और वक्षस्थलमें दबाव मालूम होना, मानो श्वास रुक जायगी। पेट फूलना, खासकर थोड़ा भी खानेसे वृद्धि।

मल।—सवेरे सामान्य उदरामय ; बहुत ज्यादा पीली आभा लिये, पानीकी तरह मल, साथ ही वायु निकलता है और मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, कि खाल उधड़ गयी है—खानेके बाद वृद्धि ; वेग ; बवासीरके साथ उदरामय।

मूत्र-स्राव।—मूत्राशय बहुत फैला हुआ ; गदला, गर्म और बहुत-सा श्लेष्मा मिला हुआ पेशाब। पेशाब होनेके समय मूत्रनालीमें जलन। वेग

बहुत कम ; बूंद-बूंद पेशाब निकलता है, मूत्रकृच्छ्रता ; अनजानमें पेशाब होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—शोथ, अण्डकोषमें सूजन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—थोड़ी उम्रकी स्त्रियोंका रजोलोप (Amenorrhoea), अन्त्राशय और हाथ-पैरमें शोथकी तरह सूजन, इसके साथ ही जरायुसे रक्त-स्राव (Metrorrhagia) रुक-रुककर या लगातार होता रहता है। रक्त पतला और जमा हुआ ; मिचली, वमन और उसके साथ ही कलेजा धड़कना, जीवनी-शक्तिका अवसाद, तकियेसे सर उठानेकी चेष्टा करते ही मूर्च्छा आ जानेकी तरह हो जाता है।

श्वास-यन्त्र।—श्वास-कष्ट ; बोल नहीं सकता ; खाँसी—थोड़ी और सूखी या गर्भावस्थामें गहरी और पतले श्लेष्मासे युक्त (कोनायम)। वक्षोदक या वक्षस्थलका शोथ (Hydrothorax), उदरके ऊपरी भाग और वक्षमें दबाव मालूम होना; थोड़ा भोजन कर लेनेपर बोलने योग्य श्वासकी क्रिया नहीं कर सकता।

हृत्पिण्ड।—कलेजेमें धड़कन और दर्द, सुस्ती मालूम होना ; दम रुकना ; नाड़ी द्रुत, दुर्बल, सविराम, असमान, इसके बाद कोमल।

विधान-तन्तु (Tissues)।—सारे शरीरका शोथ, पेटके ऊपरी भागमें खालीपन मालूम होना, आमाशयमें चोटकी वजहसे दर्दकी तरह दर्द (एपिस), सामान्य कारणसे भी पाकाशयमें गड़बड़ी जैसा हो जाना ; रोगीको वाध्य होकर सीधे बैठना पड़ता है ; सोनेपर भयानक श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है (आर्स) ; पेशाब बहुत थोड़ा, गाढ़ा, पीला और गदला होता है।

निद्रा।—बहुत बेचैनी और बहुत थोड़ी नींद।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ऐसिड-ऐसेटिक, स्ट्रोफैन्थ, एपिस (परन्तु इसमें प्यास नहीं रहती) ; आर्स, सिङ्कोना, बेलाडो, ब्रायो, चायना, कोलचि, हेलिबोरस (मस्तिष्कोदक) ; अतिसार, गैम्बोज, रास ; लाइको, मार्क, नक्स, साइलि, सलफर प्रभृति। शोथ रोगाधिकारमें एपिस, ऐपोसाइनम और डिजिटेलिससे यदि लाभ न हो तो ब्लैटा ओरियेण्टेलिससे भी दुरारोग्य सर्वाङ्गीन शोथ रोग आरोग्य हो जाता है। (डा० हेल्स)

शक्ति।—मूल अर्क (डा० क्लार्कका कथन है, कि इसका प्रयोग अत्यन्त सावधानतासे करना चाहिये; क्योंकि बहुतसे रोगियोंमें यह वमन, जीवनी क्रियामें अवसाद या हिमाङ्ग (Collapse) पैदा कर देता है। १म दशमिकका बार-बार प्रयोग करना चाहिये।

ऐपोमार्फाइनम या ऐपोमार्फिया

(APOMORPHINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह अफ़ीमके उपचारसे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—मदात्यय; अफ़ीम सेवनका अभ्यास; गर्भावस्थामें वमन; मस्तिष्क-विकृतिकी वजहसे वमन।

उपयोगिता और आभास।—इसकी वमन पैदा करनेवाली शक्ति ही प्रधान निर्णायक लक्षण है। मिचली और यन्त्रणा-रहित वमन।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, आँखकी पुतलीका फैलना। श्रवण-शक्तिकी गड़बड़ी।

पाकाशय।—मस्तिष्ककी उत्तेजना (Irritation) की वजहसे वमन (Cerebral Vomitting)—वमनके पहले मिचली नहीं होती, वमनके बाद सरमें दर्द, औंघाई और सुस्ती (एथ्यू) पैदा होती है। एकाएक और बहुत ज्यादा वमन; साधारण मिचली और वमन; वमन करनेका असह्य वेग। सारे शरीरमें खासकर माथेमें उत्ताप मालूम होना। सूखी ओकाई (Retching) और सरमें दर्द; छातीमें जलन; स्कन्धास्थिके बीचके स्थानमें दर्द। गर्भावस्थामें वमन, (सिम्फोरिकार्पस, ऐसिड-कार्बोलिक)। खाया हुआ पदार्थ और श्लेष्माका वमन होता है। कभी-कभी पित्तकी कै होती है (पेट्रोल), खासकर भोजनके बाद; जीभ निर्मल। कै होने बाद सुस्ती और औंघाई आने लगना (इथ्यू)।

सम्बन्ध।—तुलनीय—ओपियम, इपिका, ऐण्टि-टार्ट।

शक्ति।—३रा और ६ठाँ क्रम।

ऐण्टिर्हिनम लिनारियम

(ANTIRRHINUM LINARIUM)

दूसरा नाम ।—लिनारिया वलगेरिस (Linaria Vulgaris)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— ताजे गाछके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अतिसार ; अनजानमें पेशाब ; मूर्च्छा ; अर्श ; आँखोंका प्रदाह ; जीभका रुखड़ापन ; जीभमें काँटा गड़नेकी तरह दर्द इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—हृत्पिण्डकी निष्क्रियतासे पैदा हुआ अवसाद (डा० फैरिङ्गटन); अनजानमें पेशाब, जीभ रुखड़ी और सूखी (रुखड़ी और सूखी जीभ, बहुत लार बहना, उसके साथ ही प्यास—डालका) और गलेमें सङ्कोचन मालूम होना (रुखड़ी जीभ और गलेमें गर्मी मालूम होना—साम्बुक)। मस्तिष्ककी गड़बड़ी और हतबुद्धिकी तरह भाव (Confusion—आर्जेण्ट-नाई, ऐसा, बेल, ब्राई, कैम्फोरा, साइक्यूटा, ग्रैटियोला, हेलिबो, कैलि-का, लैक्टि-युका, मस्कस, नैट्र-म्यू, नक्स, ओपि, फेलेण्ड्रि, ऐसिड-फास, प्लस, रोडो, रास, सिपि)। अनिवार्य निद्रालुता (ऐण्टि-टार्ट, क्रोकस, नक्स-मस, नक्स-वोम, ओपि, पल्स)। घरके बाहर टहलनेपर सब लक्षण बढ़ जाते हैं (आर्निका, बेल, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्कोना, कोनायम, डिजिटि, लिडम, सिपिया, सलफर ; टहलनेसे घटना—आर्स, डालका, मस्कस, ऐसिड-म्यू, प्लैट, पल्स, रास, स्ट्रैम, वैलि, वेरेट्रम)।

सम्बन्ध ।—सदृश—दोषघ्न—दूधके साथ चाय पीना। लाइनम युसिटेटिसिनमसे दमा, खाँसी और आमवातमें लाभ होता है ; डिजिटे (मूर्च्छा); कास्टिकम, युपे, इक्विसेट (पेशाब होना)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३रा या ६ठा दशमिक क्रम।

ऐपियोल

(APIOL)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पेट्रोसेलिनम सैटाईवसके तेलकी तरह पदार्थसे इसका मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथेमें अकसर चक्कर आया करता है। पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो दाहिने पृष्ठके छपे अक्षर बाएँ पृष्ठके छपे अक्षरपर आ पड़े हैं। सर बहुत बड़ा मालूम होना (आर्जेण्ट-नाई)।

मूत्र ।—प्रत्येक पाँच मिनटके बाद पेशाबका वेग, परन्तु पेशाब बहुत थोड़ा निकलता है, बार-बार वेग, पेशाबका रङ्ग कुसुम फूलकी तरह होता है।

हृत्पिण्ड ।—स्थिर होकर बैठने या सोनेके समय अथवा रातमें एकाएक कलेजा धड़कने लगना, मानो रोगिनी डर गयी है या ऊपरसे नीचे दौड़ आयी है, इसके बाद लम्बी साँस लिया करती है। कलेजेकी धड़कन बन्द होने बाद बहुत उत्ताप मालूम होता है, चेहरा लाल हो उठता है और ऐसा मालूम हो उठता है, मानो माथा फैल गया है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—अपत्य-पथसे पतला सफेद श्लेष्माका स्राव; स्राव सूखकर कड़ा हो जाता है (ग्रेल, ओलि—ऐनिम, स्टैनम)।

प्रत्यङ्ग ।—टहलनेके समय तलवेमें दर्द (ऐसिट-क्रूड, बैराइटा-कार्ब, मिडोरिन, लाइको), खड़े होनेपर बढ़कर सुई बेधनेकी तरह दर्दमें परिणत हो जाता है।

निद्रा ।—बेचैनी—रात १, २ बजनेके पहले नींद नहीं आती, यदि १२ बजनेके समय नींद आती भी है तो १, २ बजनेके समय नींद खुल जाती है और सूर्योदयतक फिर नींद नहीं आती। हाथ-पैर लगातार हिलाये बिना सो नहीं सकता (नींदके समय दोनों पैर लगातार हिला करते हैं—इग्ने, जिङ्कम, वैलि)।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३री दशमिकतक।

ऐकोया मेरिना

(AQUA MARINA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह समुद्रके पानीसे तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—पित्त-विकार ; कब्जियत ; सर-दर्द ; वमन ; समुद्र किनारे रहनेका दुष्परिणाम ।

सम्बन्ध ।—सदृश—नेट्रम ; साइलिसि ।

शक्ति ।—उच्च क्रम ।

ऐक्विलिजिया वलगैरिस

(AQUILEGIA VULGARIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास और लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—गुल्म-वायु (Hysteria) रोग आदिमें इसका प्रधान व्यवहार है । गुल्म-वायु (Globus Hystericus—मस्कस, इग्ने, ऐसाफि) और शिरःशूल रोगमें (कैलि-कार्ब, इग्ने) और औरतोंके वयःसन्धिकालमें (Climaxis) हरी कै, खासकर सवेरे बढ़नेके लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐकोन, सिमिसि, ऐसाफिटिडा, इग्नेशिया, मस्कस ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

ऐरेलिया रेसिमोसा

(ARALIA RACEMOSA)

दूसरा नाम ।—स्पाइक नेयार्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास।—दमा ; श्वास-कृच्छ्रता और खाँसी—सोनेपर बढ़ना ; सामान्य सर्दी भी सहन नहीं होती—ऐसी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है। क्षयकास, प्रदर, रजोलोप वगैरह रोगमें भी यह बहुत फायदा किया करता है।

लक्षणावली

मन।—फेफड़ेकी बीमारीका भय।

नाक।—कपाल और त्वचाको क्षय करनेवाले श्लेष्माका स्राव होनेकी वजहसे नाकके पिछले छेद (Posterior Nares) में बहुत जलन और दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों नासा-पुट फट गये हैं। बार-बार छींक। ठण्डी हवा लगनेके साथ ही छींक आती है और त्वचाको क्षय करनेवाला (Excoriating) पानीकी तरह और नमकीन श्लेष्मा निकलता है (सिपा)।

श्वास-यन्त्र।—सूखा ; साँय-साँय शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास (आर्स, इपिका, कैलि-कार्ब, नेट्र-स्यू) ; मानो श्वास रुकना चाहता है ; साँस लेने समय अधिक साँय-साँय शब्द, सोनेपर बहुत बढ़ जाता है, रोगीको बाध्य होकर उठकर बैठ जाना पड़ता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, कैलि-कार्ब, कैलि-नाई)। खाँसता-खाँसता जाग उठता है (आर्स, सैम्बियुकस) और खाँसीकी वजहसे फिर नींद नहीं आती। वक्षोस्थिके पीछेकी ओर और दोनों फेफड़ोंमें (खासकर दाहिने फेफड़ेके भीतर बहुत जलन और दर्द मालूम होता है) ऐसा मालूम होता है मानो वक्षस्थल खूब कसा हुआ है ; वायु-नलीमें किसी दूसरी जातिका पदार्थ प्रवेश कर गया है (ड्रोसेरा, फास, मिफाइटिस, आर्जेण्ट-मेट) ; श्वास रोगका प्रकोप दब जानेपर सहजमें ही नमकीन, गर्म थूक या बलगम निकला करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ठण्ड लग जानेकी वजहसे एकाएक रजोलोप (ऐकि, डालका, कोना, पल्स, ओलि, कैजुपुट)। प्रदर, खट्टा, बदबूदार स्राव और जरायुमें दबाव मालूम होना। प्रसवके बादका स्राव (Lochia) रुक जानेकी वजहसे पेट फूलना (Tympanites—कोलो, ह्यायोसा) ; अन्त्राशय और जरायु प्रदेशमें भयानक यंत्रणादायक दर्द।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कैल्केरिया, रियुमिक्स (खाँसी); क्लोरोफ, आर्स-आयोड, सिपा, सैम्बुकस, रोजा, सिनैप-नाइग्रा ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे १२ दशमिक क्रम ।

ऐरेनियेरम टेला

(ARANEARUM TELA)

दूसरा नाम ।—मकड़ेका जाला ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मकड़ेके जालसे विचूर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह नींद न आनेकी एक बढ़िया दवा है। इसके सेवनसे नाड़ीका स्पन्दन बहुत जल्द मृदु हो जाता है और क्रमसे मानसिक प्रसन्नता और अन्तमें नींद आ जाती है। अफ़ीमकी तरह इससे भी मानसिक प्रसन्नता पैदा होती है, परन्तु इससे अफ़ीमकी तरह अनेक बुरे लक्षण या दुष्परिणाम नहीं पैदा होते ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ऐरेनिया साइनेनसिया

(ARANEA SEINENCIA)

परिचय ।—पुरानी दीवारोंमें रहनेवाला एक तरहके भूरे रंगका मकड़ा। ये जाल नहीं तैयार करते ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया । – इससे अरिष्ट नहीं तैयार होता ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—दुर्बलता, आँखकी बीमारी, सर-दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—लगातार दोनों आँखोंकी निचली पलकोंका काँपना—इसका एक उल्लेख योग्य लक्षण है। कोरियाके लक्षणमें माइगेलके साथ इसका सादृश्य है ।

आँखमें सूजन, आँसू बहना, पलकोंका फूलना, बहुत ज्यादा लार बहना, मुँहका स्वाद मीठा, सरमें दर्द, नींद न आना, लक्षणमें यह बढ़िया काम करता है। इसके रोग लक्षण सब गर्म कमरेमें बढ़ जाते हैं ।

सम्बन्ध।—ऐगरिकस, कार्बो-वेज, पल्स, एपिस, सल्फ और दूसरी-दूसरी मकड़ेसे तैयार दवाएँ।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ऐरेनिया डायाडेमा

(ARANIA DIADEMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके युरोपीय और अमेरिकन मकड़ेसे अर्क तैयार होता है; इसका विचूर्ण भी हो सकता है।

उपयोगिता और आभास।—बँधे समयका अन्तर देकर रोग आदिका पैदा होना; सर्दी और सामान्य ठण्ड लग जानेपर भी बीमार हो जाना; जिन मनुष्योंको तर हवाके सेवनसे या जिसे साधारणतः रसवात या श्लेष्मा-प्रधान धातुवाला कहा जाता है, उनके देशमें पूतिवाष्पज (Malaria) विषके प्रवेशसे उत्पन्न रोगोंमें यह उपयोगी है। रोगी अपनी गभीरतम हड्डीमें भी शीत अनुभव करता है और किसी तरह भी वह शीत नहीं घटता। ऐसा मालम होता है, मानो प्रत्यङ्ग सब बड़े और भारी हो गये हैं। रातमें नींद खुलनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका हाथ लम्बाईसे दूना हो गया है। बहुत जाड़ा मालूम होने बाद बहुत थोड़ा बोखार; निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पीत-ज्वर या स्नायुशूल आदि रोगोंका आविर्भाव होता है; रोग आदिका एकाएक पैदा हो जाना और उसका प्रचण्ड प्रकोप; मस्तक, मुखमण्डल, हाथ वगैरह प्रत्यंग मानो फूले हुएसे मालूम होते हैं; ऐसी सर्दी या जाड़ा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब तुषारमय हो गयी हैं; शरीरके कितने ही स्थानोंसे रक्तस्राव होता है; चोट लगी हुई जगहसे खूनका स्राव; बिजलीके वेग (Current) की तरह चारों ओर दौड़नेवाला स्नायुशूल (मैग-फास); बहुत सुस्ती; हमेशा सोनेकी इच्छा; दाँतका दर्द—रातमें सोनेके बाद बढ़ना; दाहिनी ओर लक्षणोंकी अधिकता; बाहरी उत्ताप और शीतसे वह नहीं घटती। बोखारके अन्तमें पसीना न होना वगैरह कई डायाडेमाके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—हताश, मृत्युकी आकाँक्षा ।

मस्तक ।—मुखमण्डलके बाईं ओरके स्नायुकी सीमासे अन्तरतम प्रदेशतक दर्द मालूम होता है। माथेके सामनेवाले भागमें अधिक दर्द, मस्तिष्कको दुर्बलता, घरके बाहरी भागमें जाने या धूम्रपान करनेपर सरका दर्द और कमजोरी दोनों ही एकदम आराम हो जाते हैं (ऐ-कार्ब)। आँखोंमें गर्मी मालूम होना और काँपती हुई दृष्टि, जलीय वायुमें वृद्धि। सरमें दर्द घटनेका समय आनेके पहले सरमें चक्कर आना और दृष्टिका धुँधलापन, रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। सर-दर्द—इसके साथ ही आँखोंमें जलन और चेहरेमें उत्ताप मालूम होना। ललाट और मुखमण्डलमें आगकी तरह उत्ताप।

मुँहके भीतर ।—रातमें सोनेके कुछ ही बाद समूची ऊपरी और निचली दन्तपंक्तियोंमें एकाएक तेज़ दर्द पैदा हो जाता है (किसी एक समूची पंक्तिमें—कैमो, मार्क, रास, स्टैफि)। जीभ प्रायः सुन्न-सी मालूम होती है। बोली अस्पष्ट और जकड़ी हुई और जिह्वामूल तथा निचले हनुमें असह्य यन्त्रणा।

श्वास-यंत्र ।—पंजरेके भीतरके स्नायुओंके अन्तिम अंशसे मेरुदण्डतक दर्द मालूम होता है। दुबले-पतले और रक्त-शून्य रोगियोंके फेफड़ेसे चमकीले लाल रङ्गका रक्तस्राव (Hoemoptysis—ऐकोन, डालका, हायोसा, इपिका, मिलिलोट, रास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु, नियमित समयके आठ दिन पहले ही हो जाता है और बहुत तेज तथा अत्यन्त अधिक स्राव होता है। तलपेट वायुसे भरा और फूला रहता है। चतड़, पुट्ठे और समूचे तलपेटमें स्नायुशूल। जरायुसे (Metrorrhagia) चमकीले लाल रङ्गका रक्तस्राव होता है—ट्रिलिथेन, थ्लेस्पी। योनिसे गाढ़ा लसदार श्लेष्माका स्राव, गाढ़ा लसदार प्रदर-स्राव (बोवि, हाइड्रेस्ट, कैलि-बाई); वाधक।

पाकाशय ।—पाकस्थलीमें यंत्रणाजनक सिकुड़ना और फैलना या आक्षेप (Spasm) आरम्भ होता है।

मल ।—तलपेटमें दर्दके साथ पतला तरल मल निकलता है; हाथसे मलनेपर पेटका दर्द घट जाता है। पानीकी तरह मल और आँतोंमें गुड़-गुड़

गुड़गुड़ शब्द, मानो पेटके भीतर उत्तेजन (Fermentation) की क्रिया हो रही हैं। उदरामयके साथ बाँह और दोनों पैर सुन्न मालूम होते हैं।

प्रत्यंग ।—हाथ-पैरकी हड्डीमें दर्द। पैरकी पोटलीकी हड्डीमें या उसकी बगलवाली हड्डीमें दर्द ; हाथ-पैर मानो लम्बे और बहुत भारी मालूम होते हैं और रातमें नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों हाथ दूने लम्बे हो गये हैं। ऐसा मालूम होता है, कि प्रत्यङ्ग आदि फूल गये हैं और सुन्न हो गये हैं। प्रत्यह एक ही समय दर्द पैदा होता है (सिड्रन ; बन्दूककी गोली लगने बाद रक्त-स्राव। हड्डियाँ मानो बरफकी तरह ठण्डी मालूम होती है (हेलोडर्मा)। बाएँ गुल्फके नीचे जखम पैदा हो जाना (कास्टि)।

निद्रा ।—बेचैन नींद और जागनेपर हाथ आदि मानो फूले और भारी हो गये हैं, ऐसा मालूम होता है।

ज्वराधिकारमें ।—जाड़ा नित्य या एक दिनका अन्तर देकर ठीक एक ही समय होता है (सीड्रन) ; शीत सबसे ज्यादा, हमेशा—जाड़ा मालूम होता रहता है ; बर्सातके दिनोंमें या तर हवामें वृद्धि (डालका, नेट्र-सल्फ, नक्स, रास, रोडोडे) ; प्लीहा बढ़ी हुई। नित्य एक ही समय ऐसा मालूम होता है, मानो उदरमें पत्थरकी तरह कोई कड़ी चीज़ है। दीर्घास्थिमें दर्द और शीत मालूम होता है। शीत पैदा होनेके पहले पाकस्थलीमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होना। वमन और कटिवेदना। हमेशा जाड़ा मालूम होना। सेंकने आदिसे भी जाड़ा नहीं जाता, मानो हड्डियाँ सब बरफ-भरी हैं। नित्य ४ बजनेके समय शीत। प्यास और बिना पसीनाका बोखार। उत्तापावस्थामें सरमें दर्द और नींद आना (जेल्स)। बोखार छूटनेपर वमन और अवसन्नता ; मुर्देकी तरह पड़ा रहता है ; आँखोंमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होना।

सार्वाङ्गिक ।—नवद्वारके प्रत्येक द्वारसे रक्तस्राव हो सकता है। स्नायुशूल, अधिकांश स्थानोंमें दाहिनी तरफ, जोरसे मलनेपर घटता है ; ऋतुके समय वृद्धि ; यंत्रणा असह्य हो उठती है—रोगिनीको वाध्य होकर शय्या छोड़ देनी पड़ती है ; प्रति तीन सप्ताहका अन्तर देकर ऋतुस्राव होता है। अत्यन्त सुस्ती और आलस्य मालूम होना। बैठनेकी अवस्थामें प्रत्यङ्ग हमेशा हिलाया करते हैं।

वृद्धि ।—जलीय वायु ; भींजी जमीन ; तीसरे पहर और बिचली रातमें वृद्धि।

घटना ।—निर्मल वायु और धूम्रपानसे ।

सम्बन्ध ।—सदृश—माइगेल, आर्स, हेलोडर्मा, सीड्रन (ग्रीष्म-प्रधान देशका सविराम ज्वर ; डायाडेमा—शीतप्रधान देशका) ; नेट्र-सल्फ, इपिका, थिरिड, टैरिण्टिउला, आर्स (सविराम ज्वर) ।

दोषघ्न ।—चायना, क्विनाइन, मार्क ।

शक्ति ।—६ठें से २०० क्रम ।

आर्बियुटस ऐण्ड्राचिन

(ARBUTUS ANDRACHINE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये ब्लू-बेरिके वृक्षकी फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० कूपरने इसकी स्वस्थ शरीरपर परीक्षा की थी । इसके बाद इसका प्रचार किया था । उनके मतसे गठिया वात और ऐक्ज़िमा रोगकी यह एक बहुत ही उत्कृष्ट दवा है । छोटी सन्धियोंकी अपेक्षा बड़ी सन्धियोंपर इसकी क्रिया अधिक होती है । ऐलोपैथगण इसे एक पेशाब लानेवाली दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लिडम, कैलमिया, ब्रायो, इयुवा-उर्सि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

आर्कटियम लैप्पा

(ARCTIUM LAPPA)

दूसरा नाम ।—लैप्पा आफिसिनैलिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग । —मुँहासे ; पामा ; ग्रन्थियोंकी बीमारी ; नाना प्रकारके उद्भेद ; प्रमेह ; वात ; ध्वजभंग ; श्वेतप्रदर ; दाद ; कण्ठमाला ; वन्ध्यत्व ; जखम ; जरायु-भ्रंश इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—चर्म्म-रोग और स्त्रियोंके जरायु-भ्रंश या स्थान-च्युति रोगमें यह अत्यन्त लाभदायक है ।

लक्षणावली

मस्तक और मुखमण्डल ।—मस्तक, मुखमण्डल और गलेपर रस-भरी फुन्सियाँ, फोड़े, दूधिया फोड़े (Crusta Lactea) या दूधिया पपड़ी जमनेवाले फोड़े, खसड़ा आदि उद्भेद पैदा हो जाते हैं । चेहरेपर फोड़ा और पलकपर गुहौरी (Styes—पल्स, स्टैफि) और जखम आदि पैदा हो जाते हैं । बच्चोंके मस्तक वगैरह स्थानोंमें दुधिया पपड़ी (Crusta Lactea) जमनेवाला फोड़ा या फटे घाव और जूँ पैदा हो जाती है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनि-तन्तुकी अत्यन्त शिथिलताके साथ जरायुमें तेज़ दर्द ; उसमें स्पर्श सहन नहीं होना और वस्ति-गह्वर (Pelvis) में मानो कोई भारी चीज़ है, ऐसा मालूम होता है । खड़े होने, टहलने और पैर फिसलनेपर या किसी तरह एकाएक शरीर हिलनेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है (हेलोनियस, लिसिन) । बहुत तेज़ नीचेकी ओर खींचनके साथ जरायु भ्रंश (Prolapsus uteri) रोग या जरायुका अपने स्थानसे हट जाना (फेक्सिनम-ऐमे, लिलि-टाइ, सिपि, प्लैटि) ।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा और बार-बार पेशाब । पेशाब कर लेने बाद मूत्राशयमें दर्द मालूम होता है ।

प्रत्यङ्ग ।—बाँह, जंघा और पैरकी पोटलीसे दर्द पैदा होकर हाथ-पैरकी अंगुलियोंतक फैल जाता है । सभी सन्धियोंमें दर्द । प्रत्यङ्गोंमें नाना प्रकारके उद्भेद (Eruptions) और फोड़े निकल आते हैं, वक्षमें या बगलमें बदबूदार पसीना (लैक-कैन, सिपि, नक्स-मस्कोटा—औरतोंका) । वातकी वजहसे दर्द, पतले दस्त आना आरम्भ होनेपर घटता है (एकाएक उदरामय रुकनेकी वजहसे वात-वेदना—ऐब्रोट) । बगलकी गाँठमें (Axillary glands) पीव पैदा हो जाना (युग्-रिजी, इलैप्स) ।

त्वचा ।—बार-बार असंख्य फोड़े पैदा होना, बड़े कष्टसे वे आराम होते हैं (आर्निका, सल्फ, बेलिस) । चकत्तेकी तरह दाद (Tinea Favosa) माथेके ऊपर, मुखमण्डलपर और गर्दनमें धुमैला-सफेद (Greyish white) चकत्तेकी तरह जखम पैदा हो जाता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्निका, कैलेण्डुला, सिना, ब्रायो (वात्त ; बेल ; हेलोनियस ; लिसीन, बेलिस, फ्रैक्सिनस अमेरिकानस, लिलियम-टाइ, सिपा (जरायु-च्युति), कैल्के-फास, तायला (चर्म) ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिकतक ।

ऐरिका

(ARECA)

दूसरा नाम ।—ऐरिका कैरेचू ; सुपारी ; बिट्ल-नट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—क्रिमिका धातु, अदूर-दृष्टि—दूरकी चीज़ देख नहीं सकता ; लार बहना ; फीता जैसी क्रिमि ।

उपयोगिता और आभास ।—भारतवर्षमें, भोजनके बाद मुख-शुद्धिके लिये पानके साथ या केवल सुपारी ही खानेकी प्रथा है। इसे चबानेसे मसूढ़े मजबूत होते हैं, पर ज्यादा मात्रामें प्रयोग करनेपर मृत्युतक हो सकती है ; दूरकी चीज़ न दिखाई देना, लार बहना वगैरह लक्षणोंमें यह उपयोगी है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति और विचर्ण ।

आर्जेण्टम सियानेटम

(ARGENTUM CYANATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ; इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—वक्षका स्नायुशूल या हृत्शूल ; दमा ; खाँसी ; ऐंठन इत्यादि ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

आर्जेण्टम आयोडेटम

(ARGENTUM IODATUM)

(Iodide Silver)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—सर्दी ; स्वरभङ्ग ; पक्षाघात , उपदंश ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

आर्जेण्टम मेटालिकम

(ARGENTUM METALLICUM)

दूसरा नाम ।—चाँदी । रौप्य ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण ; इसके बाद तरल क्रम तैयार होती है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—पलकोंका प्रदाह ; मस्तिष्ककी क्लान्ति ; हड्डियोंका क्षय ; हरित्पाण्डु रोग ; खाँसी ; बहुमूत्र ; अनजानमें पेशाब ; मृगी ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; वंक्षण सन्धिकी बीमारी । डिम्बाधारका प्रदाह ; क्षय-कास ; स्वप्न-दोष ; वात ; जरायुका कर्कटीया जखम ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; स्वरभङ्ग ।

उपयोगिता और आभास ।—लम्बे, रोगी और चिड़चिड़े मनुष्योंके लिये तथा जो रोग पाराके अपव्यवहारकी वजहसे पैदा हुए हैं ; उनमें विशेष उपयोगी और लाभदायक है। अस्थि-संयोजक स्थान, अस्थि, उपास्थि (Cartilages) और हड्डियोंकी बन्धनी (Ligaments) वगैरहके ऊपर ही चाँदीकी क्रिया प्रकट हुआ करती है । वायुनलीके मुखपर भी इसका विशेष अधिकार है । इसीलिये, पेशेवर गवैयोंके स्वर विकारकी यह एक उत्कृष्ट दवा है । पलक, कान, नाक और कानके पीछेवाली उपास्थियोंपर यह आक्रमण किया करता है और इन सब अंशोंकी उपास्थिके रोगादिमें बहुत ही उत्कृष्ट फल दिखाता है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं ;—(१) स्नायविक

स्वरका दर्द ; नित्य होनेवाला, बाईं कनपटीका (Left temporal) दर्द ; सहजमें चक्कर आना । (२) पेशेवर गवैयोंका स्वर-भङ्ग और स्वरलोप (Aphonia) । (३) खाँसी—हँसनेपर बढ़ जाती है । (४) वक्षोस्थिके ऊपरी अंशवाले गह्वरमें लाली पैदा हो जाना । (५) बाएँ वक्षकी कमजोरी । (६) खाँसीकी स्वरनली (Larynx) के ऊपरी अंशमें, खाल उधड़नेकी तरह (Soreness) मालूम होना ; परन्तु निगलनेके समय ऐसा मालूम नहीं होता । (७) स्वरनलीमें गाढ़ा माड़की तरह श्लेष्मा इकट्ठा होता है, जो सवेरेके वक्त निकलता है । (८) सिझाये हुए माँड़की तरह श्लेष्मा सहजमें ही निकलता है । (९) हाथ-पैरकी सन्धियोंमें अकड़न ; चोट खा जानेकी तरह दर्द । (१०) सीढ़ी चढ़नेके समय पैरकी पोटली छोटी मालूम होती है या उसमें खींचन होती है । (११) हाथ-पैरोंमें और सन्धि-स्थानोंमें बिजलीका करेण्ट लग जानेकी तरह चिलकका दर्द मालूम होता है । (१२) हस्तमैथुनकी कुप्रवृत्तिके बाद रेत:स्खलन ; प्रत्येक रातमें, पर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता ; इसके साथ ही शिश्नका पतलापन ; अण्डकोषमें कुचलनेकी तरह दर्द (रोडो-ड्रेन) । (१३) जरायु-भ्रंश ; बाएँ डिम्ब-कोष (Ovary) और उसके साथ ही कमरमें दर्द (दाहिने डिम्बकोषमें दर्द—पैलेड) ; वय:सन्धिकालमें जरायुसे स्राव । (१४) अवसादक (Exhausting) सर्दी ; बार-बार छींक (ऐरेलिया-रेस, सिपा, साइक्ल) और पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव । (१५) दोनों वायुनलीभुजके संयोगस्थलके ऊपरी अंशमें क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होना ।

लक्षणावली

मन ।—संन्यास या सर्दी-गर्मी रोग हो जानेका भय (काफि, फेरम ; विसूचिकाका भय—ऐ-नाई) ; खासकर उसके साथ ही हृत्कम्पन । चिड़चिड़ा स्वभाव और बात करनेकी इच्छा न होना (कैमो, जेल, ग्लोनो) ; बेचैनी और दुश्चिन्ताकी वजहसे एक स्थानपर रह नहीं सकता (कैल्के, आर्स, आरम, जेल्स, टैबेकम) प्रलापकी तरह क्रोध ।

मस्तक ।—मध्य-रात्रिके कुछ ही पहले नींदके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका मस्तक शय्या:से लुढ़का जाता है और इसके बाद ही वह चौंक उठता है । नित्य बाएँ शङ्खदेश या कनपटीमें (Temple) स्नायुशूलकी तरह दर्द ; धीरे-धीरे बढ़कर एकाएक आराम हो जाता है । मूर्द्धादेश (खोपड़ीका मध्य-स्थान) का छूना सहन न हो । सरमें चक्कर आना, ऐसा

मालूम हो, मानो शराब पी है (आर्ज-नाइ, बेल, कैमो, कैम्फ, चिनिन-सल्फ, साइक्यूटा, ग्रैटो, नक्स, ओपि, पल्स, रास, सिकेलि, स्ट्राम)। बहते हुए सोतेको तरफ देखनेसे ही सरमें चक्कर आने लगता है (लिसिन)। माथा शून्य मालूम होता है (काकुलस)। पलकें लाल और मोटी हो जाती हैं। सर्दीको वजहसे सुस्ती (Exhausting); बार-बार छींक (साइक्लामिन, ऐलियम-सिपा); पानीको तरह श्लेष्माका स्राव। मुँहकी हड्डीमें दर्द मालूम होता है।

आँख।—आँखमें खुजलाहट। पलकोंका किनारा फूला और लाल।

कान।—कानमें चिलक मारनेकी तरह दर्द; कान रुकेसे मालूम होना।

नाक।—नाकसे खून गिरना। नाक बन्द। छींक।

गलेके भीतर।—पेशेवर गवैये और वक्ताओंका स्वरभङ्ग (ऐल्यू; ऐरम-ट्राइ)। पेशेवर गवैयोंका स्वरलोप। निगलनेके समय या खाँसनेपर गलेके भीतर और स्वरनलीके मुखपर क्षय हुई त्वचा और जखमकी वजहसे दर्द मालूम होना। हँसनेके समय खाँसी आती है (ड्रोसेरा, साफ, स्टैन) और स्वरनलीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा सञ्चित होता है। जोरसे पढ़नेके समय बार-बार गला साफ करना पड़ता है। पेशेवर गवैये और प्रकाश्य वक्ताओंकी स्वर चढ़ा लेनेकी शक्तिमें विकार पैदा हो जाना (अरम-ट्राई)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—पाकाशयमें वक्षस्थलतक फैलनेवाला दर्द। बोखारकी अत्यन्त उत्तापावस्थामें भी प्यासका न रहना। उदरकी पेशीमें अत्यन्त सङ्कोचनकी वजहसे रोगीको झुककर चलना पड़ता है। बहुत ओकाई आना और कसैले पदार्थ वमन करने बाद गलेमें रुखड़ापन और जलन मालूम होना। भोजन करना आरम्भ करते ही समूचे उदर और विटप-देश (Pubis) पर्यन्त दबाव मालम होता है; श्वास-प्रश्वासकी वृद्धि होती है और खड़े हो जानेपर ह्रास होता है। बार-बार पाखानेका वेग।

पेशाब।—मूत्राधिक्य, बहुत ज्यादा गदला और मीठी गन्ध लिये पेशाब; बार-बार पेशाबका वेग; बहुमूत्र (लैक-डिफलो)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रेतःस्खलन, इन्द्रियके अस्वाभाविक व्यवहारकी वजहसे रोग; प्रायः प्रत्येक रातमें रेतःस्खलन; शिश्नका पतलापन। ऐसा दर्द मानो अण्डकोष पीसा जा रहा है (रोडोडे)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु-भ्रंश—बायाँ डिम्बाधार और श्रोणिदेशमें या नितम्ब-देशमें दर्द और यह दर्द उदरके सामने या नीचेकी ओर फैल जाता है (दाहिने डिम्बाधारमें दर्द—पैलेडियम); वयःसन्धिकालीन (Climacteric) जरायु-स्राव। डिम्बाधार बड़ा मालूम होना। जरायु-ग्रीवाको खींचने या किसी सामान्य कारणसे रक्तस्राव होना; बदबूदार और त्वचाको क्षय करनेवाला प्रदर। जरायुमें एक अर्बुद (Uterine scirrhosis), जरायुसे रक्त-स्राव—शरीरको हिलानेसे ही रोग बढ़ जाता है। समूचे तलपेटमें स्पर्श-असहनीयता मालूम होती है, किसी तरह हिलने-डोलनेसे ही दर्द बढ़ जाता है।

श्वास-यंत्र।—फेफड़ेमें बहुत कमजोरी मालूम होना (स्टैनम), बाईं ओर वृद्धि। खाँसनेपर सहजमें गाढ़ा लेईकी तरह या सिझाये हुए माँड़की तरह श्लेष्मा निकलता है। दोनों वायुनलीभुजके संयोग-स्थलपर क्षय हुई त्वचा जैसा मालम होता है; स्वरका व्यवहार करने, बोलने या गानेके समय वृद्धि। सीढ़ी चढ़नेके समय और सर झुकानेपर वायुनलीमें श्लेष्मा आ जाता है और खाँसते ही निकल जाता है।

प्रत्यङ्ग।—हड्डियोंमें स्पर्श असहनीयता और छेदनेकी तरह दर्द तथा पीसने-जैसा मालूम होना। सन्धियाँ कमजोर और दर्द-भरी मालूम होती हैं, खासकर किसी स्थानसे उतरनेके समय सन्धिमें वातका दर्द, खासकर किसी केहुनी और जानु-सन्धिमें। दोनों पैर पतले, क्षीण और काँपते हुए। अपस्मार या मृगी (Epilepsy), भयानक उन्मत्तता और जो कोई पास रहता है, उसीको प्रहार करता है। अत्यन्त सुस्ती—हमेशा लेटकर सो जानेकी इच्छा (एबिज-कैन, बेलिस, नेट्र-कार्ब)।

ज्वर।—विलेपी या क्षय ज्वर (Hectic fever); रोज़ ११ बजेसे १२ बजेतक या १ बजेके बीचमें बोखार आता है। पीठ और तलवेमें शीत मालूम होता है। रातमें थोड़ा भी ओढ़ना उतारनेसे ऊपरी अङ्गमें शीत मालूम होता है। ज्वरके लक्षण दोपहरमें फिर पैदा हो जाते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश और तुलनीय—ऐल्यूमिनाके बाद ज्यादा फायदा करता है, हँसनेकी वजहसे खाँसीमें स्टैनमके सदृश। जरायु और डिम्बाधारके लक्षणके सम्बन्धमें आर्जेण्टम मेटालिकम, पैलेडियम सम्पूर्ण, सदृश गुणयुक्त

है; पर पैलेडियमकी क्रिया दाहिने डिम्बाधारके ऊपर और आर्जेण्टमकी क्रिया बायें डिम्बाधारपर होती है। ज़िङ्कम (आँखके कोनेमें खुजली)।

दोषघ्न।—मर्क्युरियस और पल्सेटिला।

शक्ति।—३रे से लेकर ६ठा दशमिक विचूर्ण और ३० शततमिक क्रम।

आर्जेण्टम नाइट्रिकम

(ARGENTUM NITRICUM)

दूसरा नाम।—(नाइट्रेट आफ सिलवर, लूनर कास्टिक)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें निम्नतर-क्रम प्रस्तुत होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अम्ल-रोग; खूनकी कमी; उपदंश; अजीर्ण; मृगी; डकार; विसर्प; चक्षु-रोग; पेट फूलना; पाकाशयका जखम; प्रमेह; हाथ फूलना; सरका दर्द; छातीमें जलन; पक्षाघात; स्नायुशूल; बच्चोंके आँखोंका प्रदाह; मूत्रद्वारशायी ग्रन्थिकी सूजन; चेचक; कशेरुकाकी उत्तेजना; उपदंश; गलेके भीतर कितनी ही तरहकी बीमारियाँ; जीभका जखम; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० एइच० सी० एलेनका कथन है, कि जब कभी सूखी देह, क्षय हुआ मांस, देखनेमें वृद्ध-जैसा आदमी दिखाई दे, उसी समय आर्जेण्टम नाइट्रिकमको स्मरण करना चाहिये। (क्षीण-देह, चिपके हुए गाल, गड्ढेमें धँसी आँखें—सिकेलि), क्रमसे बढ़नेवाला दुबलापन और शीर्णता—विशेषकर अधमाङ्गका (ऐमोन-म्यूर); प्रार्थना मन्दिर या अभिनय-गृह (थियेटर) में जानेमें भय मालूम होता है और इससे अतिसार पैदा हो जाता है; उत्तेजनाशील प्रकृति। स्थूलकायता रोग भी इसके विषयके अन्तर्गत हैं (ऐण्टिम-क्रूड, ऐब्रोट, बैसिलाइन, आयोड, सार्सापेरिला)। दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है और धीरे-धीरे घटता जाता है। रोगी हमेशा घबड़ाया हुआ रहता है। निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित रहता है। लोगोंको प्यार नहीं करता। किसी सभा-समितिमें जानेकी बात होते ही उसे पतले दस्त आने लगते हैं। उसके दिन मानो नहीं कटते, एक दिन—एक वर्षकी तरह मालूम

होता है। उससे ऐसा अनुमान होता है, कि मानो रोगवाले अंश सब बढ़ रहे हैं। स्नायु-विधान, मस्तिष्क, मेरुमज्जा प्रभृति स्थान इसके क्रिया-क्षेत्र हैं। इसकी प्रकृतिगत क्रियाका फल है—तालुमूल, पाकाशय और अन्त्राशयमें तीव्र प्रदाह पैदा हो जाना। मिठाई अच्छी लगना, रोगवाली जगहमें ऐसा मालूम होना, मानो सलाई दी जा रही है और आक्रान्त श्लैष्मिक-झिल्लीसे पीबकी तरह श्लेष्माका स्राव वगैरह इसके प्रकृतिगत और अवश्य फल देनेवाले लक्षण हैं। इसका एक निर्देशक लक्षण यह भी है, कि ऐसा मालूम होता है, कि शरीरका कोई अंश विशेष फैलता जा रहा है। सरमें दर्द, माथा कपड़ेसे कसकर बाँध लेनेपर आराम मालूम होना, आँखोंमें भयानक उत्ताप मालूम होना, आँखोंका प्रदाह (Ophthalmia)—पलकोंकी त्वचा क्षय हो जाती है, फूल जाती है और रोशनी सहन नहीं होती ; आँखोंमें बहुत गर्मी मालूम होती है। पीबकी तरह श्लेष्मा या पपड़ी निकला करती है ; सवेरे आँख सट जाती है। नवजात शिशुकी आँखोंका प्रदाह (आँख उठना—Ophthalmia Neonatrum)। नाकमें खुजली—रगड़नेपर खून गिरता है। चढ़े सुरमें गानेपर खाँसी आती है ; बहुत दिनोंतक स्वरभङ्ग बना रहता है, गलेमें इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो फोड़ा हुआ हो। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कोई नुकीली शलाका बिंध रही है। पाकाशयका शूल (Gastralgia) ; आगे उठी नाभीमें बीचवाली अंगुलीके अगले भाग जितने अंशमें सीमाबद्ध वेदना ; इसके साथ ही बहुत अधिक स्पर्श-असहनीयता ; दर्द—पीठ, कन्धा और दोनों कोखोंतक फैल जाता है। पाकाशयका दर्द हाथकी मुट्ठी बाँधकर दबानेसे घटता है। बहुत अधिक पाकाशयिक (Gastric) विकृति—पेट फूलना (Flatulency), उदरामय—सागके चूरकी तरह पानी जैसा हरे रङ्गका मल ; थक्का-थक्का आँव निकलती है ; पीने या मिष्टान्न भोजनसे ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थली फट जायगी ; बड़े कष्ट और बड़ी आवाजसे वायु निकलता है। खाते ही मलका वेग होता है। मूत्रनाली (Urethra) के बीचके अंशमें जखम हो जानेकी तरह दर्द, मानो कोई कांटा चुभा हुआ है। पेशाबके समय अन्तकी कई बूंदें निकलनेके समय, मूत्रनालीके पीछेवाले स्थानसे मलद्वारतकके स्थानमें कतरनेकी तरह तकलीफ मालूम होती है। दोनो पैरोंकी क्षीणता और सुन्न हो जानेके कारण खड़े होने और चलनेके समय रोगी ढलमलाया करता है।

लक्षणावली

मन।—किसी काममें हस्तक्षेप नहीं करना चाहता, हमेशा यही सोचता है कि उसके काम-काज सब निष्फल होंगे (अरम, सोराइनम)। बहुत व्यस्त, समझता है कि समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा है (कैन-इ, ऐल्यू, अरम, कैमो, मिडोराइन, नक्स, ऐनहैलो ; बहुत तेजीसे बीतता है—काक्युलस, थिरोडियन) सब काम तेजीसे करना चाहता है ; चलनेके समय बहुत तेज़ चलता है ; भावनायुक्त, क्रोधी स्वभाव, कोमल हृदय (अरम, लिलियम)। खिड़कीसे कूद पड़नेकी चेष्टा करता है (ग्लोनोइनम) ; अवसादग्रस्त और कम्पनशील। दुःखित ; रोशनी और बातचीत रोकनेके लिये आँखें बन्दकर सोया रहता है। रोगीको ऐसा विश्वास रहता है कि उसके पुत्र कलत्र आदि उससे घृणा करते हैं। समझता है कि बादलका एक टुकड़ा उसके माथेपर मंडरा रहा है (ऐक्टिया-रे) ; इसके साथ ही अत्यन्त विषाद, भय, इस बातका कि शायद उसका रोग सांघातिक न हो जाये (मिडोराइन ; सेबैड ; सिफिलाइन)। सभा-समितिमें जानेकी बात होते ही दस्त आने लगते हैं (जेल्स)।

मस्तक।—अधिक शोणित संचय होनेकी वजहसे सरमें दर्द:—माथेमें भरापन (ऐको, बेल, ब्राई, डैफनी, रास-रैडि) और उसके साथ ही भारीपन मालूम होनेकी वजहसे सरमें दर्द (बेल, ब्राई, कोरैली, डैफनी, इग्ने, नक्स, फीलेन, सिनि, स्पाइजि) ; साहित्यानुरागी, मनुष्योंकी पुरानी पाकाशयिक विकृतिकी वजहसे सर-दर्द ; नर्त्तनकी वजहसे सर-दर्द, अधकपारीका सर-दर्द या शिरार्द्ध शूल (Hemicrania),—पीसने और रक्त-बेधनेकी तरह दर्द,—ललाटमें ; शृङ्गदेशमें (Frontal eminence) या बाईं कनपटी या शंखदेशमें दर्द ; सर दर्दके बाद पित्त आदिका वमन (ऐल्यू, ब्राई, सिङ्को, कोनायम ग्रैफा, इपिका ; कैलि-कार्ब, मक्सस, नैट्र-मूर, ऐसिड-नाई, पल्स, सैङ्ग्वि, सिपि, वेरेट्र ; अवसादजनक, मानसिक परिश्रमसे वृद्धि (नक्स, सलफर) ; दबाने या कसकर बांध देनेसे घटना (ऐपिस, पल्स)। दर्द, चरम सीमातक बढ़ जानेपर समूची देह काँपा करती है और रोगी अचेतन अवस्थामें आँखें बन्द कर पड़ा रहता है। बोलनेकी इच्छा नहीं रहती और रोशनीकी ओर देख नहीं सकता। मूर्द्धाकी त्वचाकी खुजलाहट और माथेकी हड्डियाँ सब अलग हुई जैसी मालूम होती हैं।

स्नायु-विधान।—ऊँची अट्टालिका देखनेसे ही रोगीके सरमें चक्कर आ जाता है और वह ढुलका करता है। उसे ऐसा मालूम होता है, कि मानो रास्तेके दोनों ओरके मकान सब उसके पास इस तरह हटे आते हैं, मानो उसे दबा देंगे। सड़कपर चलते समय, सड़क पार करते समय डरता है; क्योंकि उसे ऐसा मालूम होता कि इस मोड़के कोनेका कोई मकान आगे बढ़ आयगा और उसपर गिर पड़ेगा।

आँख।—आँखके योजकत्वकका नया अङ्कुरमय (Granular) प्रदाह (Acute Granular Conjunctivitis) या चक्षु-प्रदाह; योजक त्वचा लाल हो उठती है: स्राव बहुत ज्यादा और पीवकी तरह श्लेष्मामय रहता है; नवप्रसूत शिशुका चक्षु-प्रदाह (Ophthalmia neonatrum), बहुत अधिक पीवकी तरह स्राव; आँख खोलनेपर यदि बहुत ज्यादा पीव पैदा हो जाय तो मार्क-सोल अधिक लाभदायक होता है—(डा० नैश)। स्वच्छावरक (Cornea) कोया गदला और जखम-भरा मालूम होता है। पलकोंमें दर्द रहता है और पलकें मोटी और फूली रहती हैं; सवेरे जुड़ी हुई दिखाई देती हैं (एपिस, मार्क-सोल, रास)। दर्शन-शक्तिके बहुत व्यवहारकी वजहसे—बहुत अधिक सीनेका काम या सिलाईके कामके कारण बीमारी; गर्म कमरेमें वृद्धि; निर्मल वायुमें घटना (नेट्र-म्यू, रूटा)। पेशी प्रभृतिकी क्रियाके सामंजस्यमें गड़बड़ी होनेकी वजहसे बीमारी; बहुत देरतक एक ओर देख नहीं सकता। आँखोंके कोने या दोनों अपाङ्ग खूनकी तरह लाल; बहिर अपाङ्गस्थित (External Canthi) त्रिकोण झिल्ली फूलकर कच्चे मांस-पिण्डकी तरह दिखाई देती है और नाकके पासवाले कोनेसे कैशिक (Capillary) शिरा आदि लाल रङ्गकी होकर स्वच्छ आवरक (सफेद कोया) की ओर फैल जाती हैं।

नाक।—सर्दी, लगातार जाड़ा लगनेका भाव, आँखसे आँसू बहना। छींक और सरमें बहुत तेज दर्दकी वजहसे रोगीको वाध्य हो आँखें बन्दकर सो जाना पड़ता है, नाकमें इतनी खुजली होती है, कि रोगी नाक मल-मलकर जखम पैदा कर लेता है (अरम-ट्राई); घ्राण-शक्तिका ह्रास।

मुखमण्डल।—रोग बतानेवाला चेहरा और आँखें गड़हेमें धसी और मुखमण्डलकी त्वचा हड्डोके ऊपर दृढ़ भावसे चारों ओर फैली रहती है।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—मसूढ़ेमें दर्द और सहजमें ही उससे रक्तस्राव होना। जीभका अगला भाग लाल, दर्द और जलन-भरा तथा सूखा—कार्बो-वेज, नैट्र-म्यू, फास); जिह्वा-कण्टक (Papillae) उठे हुए और स्पष्ट दिखाई देते हैं; बीचमें आदिसे अन्ततक लाल रेखा। स्वस्थ दाँतोंमें दर्द (कास्टिकम); गायकोंका बहुत दिनोंका (पुराना Chronic) स्वरनाली प्रदाह (Laryngitis), थोड़ा भी स्वर चढ़ानेकी चेष्टा करनेपर खाँसी आ जाती है (ऐल्यू, आर्ज-मेट, अरम); निगलनेके समय गलेके भीतर छोटी और तेज़ शलाकाएँ बेधनेकी तरह मालूम होता है (डलिकस, हिपर, ऐसिड-नाई, सिलि)। गलेमें या वायुनलीमें सवेरे गाढ़ा लसदार श्लेष्मा संचित होनेके कारण बार-बार खाँसकर निकाल डालनेकी चेष्टा करता है (हाइड्रेस, ऐल्यू, फास, नैट्र-कार्ब, लैके); तम्बाकू सेवन करनेवालोंकी सर्दी; गलेमें मानो केशखण्ड अड़ा है, ऐसा अनुभव होना और खुजली।

पाकाशय।—मीठा अच्छा मालूम होना, बच्चा मीठी चीजें पसन्द करता है, परन्तु इससे उसके पेटमें बीमारी पैदा हो जाती है। ऊर्ध्व या अधोवायु निकलना, पाकाशयकी बीमारीमें ऐसे लक्षणोंकी अधिकता; पेट फूलनेके साथ अजीर्ण रोग, प्रत्येक बार भोजनके बाद वायु छूटना; पेटमें इतना वायु भर जाता है कि ऐसा मालूम होता है, कि पेट फट जायगा। सहजमें ही वायु त्याग नहीं होता, पर बहुत जोर देनेपर जोरकी आवाज़के साथ निकलता है। पाकाशय शूल (Gastralgia); कुल्फी बरफ खानेके बाद बीमारी, दर्द चारों ओर फैल जाता है—भोजनके बाद वृद्धि। इसके साथ ही वायु; ऐसा मालूम होता है, मानो वायु शिकञ्जेमें (As if in vise) कसी हुई हो (साइक्लू, आयोड, मैग-सल्फ, प्लैट, पल्स, स्टैन, सलफर)। पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द-भरी सूजन, इसके साथ ही चिन्ता। बालकोंको तम्बाकू सेवनकी वजहसे बीमारी (आर्स, वेरेट्र)। पाकाशयका स्नायुशूल (Gastrodynia)। अग्रकड़ा और नाभीके बीचके एक क्षुद्र अंशमें स्पर्श असहनीयता; दर्द चारों ओर फैलता है और धीरे-धीरे बढ़ता है और घटता है।

अन्त्राशय और मल।—पेट फूलनेके साथ अन्त्रशूल। पाकाशयके बाईं ओर पंजरेके नीचे सुई बेधने और जखम करनेकी तरह दर्द। उदरामय, मल हरा श्लेष्मामय, सागके चूरकी तरह मल या बिछावनके चादरके ऊपर

कुछ देर रहनेसे ही पीले रङ्गका या हरा हो जाता है (रियुम ; नीला हो जाता है—फास, जोरकी आवाज़ निकलनेके साथ वायु निकलनेके साथ ही मल वेग (ऐलो) से निकलता है (मानो नलसे गिर रहा है—क्रोटन-टिग, वेगके साथ निकलता है—फेरम ; पाखानामें चारों ओर फैल जाता है—नेट्र-सल्फ ; पतली धारमें निकलता है—इलेट) ; मिठाई खाने बाद पगले दस्त ; आँव और लसिका (Lymph—एक तरहका पीवका रस) थक्का-थक्का या सूतकी तरह आकारमें निकलता है (ऐसेरम)। पानीय (पतली पीनेकी चीजें) पीते ही पाखाना लग आता है। (आर्स, क्रोटन, ट्राम्बिडी) ; आमाशय, पूर्णावस्थामें—ऐसा मालूम होता है, मानो जखम पैदा हो गया है ; रसरक्त मिला हुआ मल ; थक्का-थक्का लाल या हरा और सूतकी तरह आँव निकलती है, इसके साथ ही तलपेटमें भयानक ऐंठन।

पेशाब।—दिन-रात अनजानमें पेशाब निकला करता है (कास्टि) ; मूत्रनलीका प्रदाह, दर्द, जलन और खुजलानेवाला—ऐसा मालूम हो, मानो एक तेज़ काठकी सलाई बेधी जा रही है। पेशाबके अन्तमें बूंद-बूंद पेशाब निकला करता है। प्रमेहकी तरुणावस्थामें—बहुत ज्यादा पीव बहना और कतरनेकी तरह असह्य दर्दकी तकलीफ़ ; प्रमेहकी नली अवस्था, बहुत ज्यादा पीवका स्राव और कतरनेकी तरह असह्य दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्रनाली रुक गयी है ; पुं-जननेन्द्रियकी उत्तेजना होनेपर चरचराने लगता है ; कभी-कभी खून-मिला पेशाब भी होता है। पेशाबकी अन्तवाली कई बूंदें निकलनेके समय मूत्रनालीकी जगहसे मलद्वारतक भयानक कतरनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना (एपिस, कैन्थ)।

पुं-जननेन्द्रिय।—ध्वजभङ्ग (Impotence), स्त्री-संसर्गकी चेष्टा करनेपर लिङ्ग शिथिल हो जाता है (ऐगनस, कैलेडियम, सेलिन) ; रमणकी इच्छा बिलकुल ही नहीं रहती। लिङ्ग शिथिल हो जाता है। स्त्री-संसर्ग अत्यन्त कष्टजनक। कर्कटीया जखमकी तरह चर्मरोग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमण अत्यन्त कष्ट-जनक, योनिसे रक्त निकलता है (ऐ-नाइट्रिक)। रातमें कामाग्निकी प्रबलता ; जरायु-भ्रंश (Prolapsus Uteri), इसके साथ ही जरायु-मुख या जरायु-ग्रीवामें (Cervix) में जखम ; पीली आभा लिये प्रदरका स्राव, बहुत अधिक और त्वचाकी चय

करनेवाला। जरायु (Metorrhagia) -कम उम्रवाली विधवाओंको बहुत अधिक शोणित-स्राव ; बन्ध्या स्त्रियोंके वय:सन्धिके समय (at climaxis) इसके साथ ही स्नायविक उत्तेजना (लैके), ऋतुके दो सप्ताह बाद सब उपसर्ग प्रकट होते हैं। गर्भावस्थामें आध्मान (पेट फूलना), मानो पेट फट जायगा। ऐसा मालूम हो मानो माथा फैल रहा है। बच्चा पैदा होनेपर प्रत्येक बार अस्थिक्षय (Rickets) होकर मर जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो जरायुमें तेज काठकी शलाका बिध रही है। विशेषकर टहलने या सीढ़ी चढ़नेके समय (ऐ-नाइट्रिक, डलिकस, हिपर) ; ऐसा अनुभव होना।

श्वास-यंत्र।— गवैयोंका पुराना स्वरनालीका प्रदाह (Laryngitis), स्वर चढ़ानेपर खाँसी आती है (ऐल्यू, आर्जेण्ट मेट ; अरम)। रोगी निर्मल हवा सेवन करनेके लिये लालायित रहता है (एमिल पल्स, ऐको, सलफर)। श्वासरोध करनेवाली खाँसी ; ऐसा मालूम हो मानो गलेमें केश अड़ा है, (नैजा) खाँसी ; वक्षस्थलमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक लोहेके बन्धनसे बँधा हुआ है (कैक्ट) ; देहको हिलाने, सीढ़ी चढ़ने या किसी तरहका शारीरिक परिश्रमका काम करनेपर दमा और कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है (आर्स, कैल्के, आयोड मार्क, नक्स, ओलियम-ऐनिम ; स्टैन)। कलेजा धड़कना—दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ जाता है (कैलि-नाइ ; बाईं करवट सोनेसे वृद्धि—कैक्टस, स्पाइजि)।

गर्दन और पीठ।—गर्दनकी (Cervical) ग्रन्थियोंका फूलना और कड़ा हो जाना ; उपदंशके विषकी वजहसे (कैलि-बाई, सिफिलाइन, मार्क-बिन, मार्क-प्रोटो) बीमारी। कमर और नितम्ब देशमें दर्द, बैठने या सोने बाद, पहले-पहल उठनेके समय बहुत तकलीफ़ मालूम होती है, पर कुछ देर खड़े रहने या टहलनेपर फिर दर्द नहीं रहता (रास)। पीठ या कमरके दर्दमें रोगीको बहुत सुस्ती (काली-कार्ब) और थकावट मालूम होती है, खासकर हाथ-पैरके निचले अंशमें और जंघाकी पोटलीमें अधिक। सरमें चक्कर आना और हाथ-पैरमें कँपकँपी मालूम होना (डा० नैश)।

प्रत्यङ्ग।—निचले प्रत्यंग बहुत क्षीण और काँपते हैं (ऐनाक, आर्स, काष्टि, साइक्यूटा, ग्रैनेट, आयोड, लाइकोप, नक्स, ओपि, फास, प्लम्ब, पल्स, रास, सिपा, स्ट्राम, सल्फ, थिरिड, वैरेट ; आँखें बन्दकर एक क़दम भी नहीं

चल सकता है (ऐल्यू, जेल्स, स्ट्राम) ; खड़े होने और टहलनेके समय पैर डगमगाते हैं ; जब उसे यह मालूम होता है कि कोई उसे देख नहीं रहा है । मृगीकी तरह आक्षेप (Epileptic fits), आक्रमणके बाद रोगीमें बहुत बेचैनी हो जाती है (दो आक्रमणोंके बीचके समयमें बेचैनी दिखाता है—क्यूप्रम) और उसके दोनों हाथ काँपा करता है, ऋतुके समय या डरनेकी वजहसे बीमारी ; आक्रमणके पहले रोगीके मनमें एक तरहकी अव्यक्त भीति पैदा हो जाती है और उस समय वह जान जाता है, कि उसे शीघ्र ही यह रोग होगा (ऐमिल, नेट्र-म्यूर) ।

त्वचा ।—भूरे रंग (Brown) की त्वचा ; नरम नहीं रहती और कड़ी । ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचापर कोई लसदार चीज सूख गई है या मकड़ेका जाल लगा हुआ है । त्वचा सूखी और ऊँची-नीची, मानो झोल पड़ गया है । आराम होनेके अवसरपर जख्म आदिमें बहुत अधिक मांसाङ्कुर (Granulations) पैदा हो जाता है । दर्द तेजीसे बढ़ता है और वैसी ही तेजीसे घटता है या धीरे-धीरे पैदा होता है और धीरे-धीरे ही गायब हो जाता है ।

निद्रा ।—मनुष्यकी आँखके सामने या मनमें नाना प्रकारके दृश्य पैदा हो जानेके कारण नींद नहीं आती । स्वप्नमें मृत-बन्धु और प्रेतात्मा देखता है । सड़ी गन्धभरा पानी, साँप, मछली वगैरह सपनेमें देखकर बहुत डरता है । इन्द्रिय परितृप्तिके सपने । औंघाई और आच्छन्न भाव ।

ज्वराधिकारमें ।—शरीरके वस्त्र खोलसेसे बहुत जाड़ा मालूम होता है (नक्स देखो), पर शरीर ढँकनेपर ऐसा मालूम होता है, कि साँस रुक जाती है (लैक) ; निर्मल वायु सेवनका आग्रह प्रकट करता हैं । बहुत ज्यादा पसीना निकलकर मुखमण्डलके ऊपर मोतीके दानेकी तरह दिखाई देते हैं ; ज्वरके समय वक्षके बगलमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (वक्षमें—बाईं ओर, कैलि-कार्ब) और खुजली दिखाई देती है । सवेरेके वक्त पसीना । शय्यामें शरीर गर्म होते ही पसीना और शीत पैदा हो जाता है (ऐल्यू) ।

वृद्धि ।—ठण्डे भोजनसे, ठण्डी हवा ; चीनी आदि मिष्टान्न, कुलफी बरफ खाने और बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और व्यायामसे वृद्धि ।

उपशम ।—निर्मल वायु और ठण्डे पानीसे स्नान । रोगीके चेहरेपर ठण्डी हवा लगनेसे बहुत आराम मालूम होता है ।

सम्बन्ध ।—आर्जेण्टम नाइट्रिकम या सिलवर नाइट्रेट अर्थात् कास्टिकमके द्वारा कोई अंश जल जानेपर, यदि किसी तरह स्वास्थ्य खराब हो जाये (नेट्रम म्यूरियेटिकम) और दूध वगैरह उसके प्रतिविषके रूपमें व्यवहार होता है।

दोषघ्न ।—पल्स, कैल्के, सिपिया, लाइको, साइलि; रास, सल्फ।

सदृश ।—आर्जेण्ट-मेट, अरम, क्यूप्रम, लैके, नेट्र-म्यूर, ऐ-नाई, मार्क-कोर, मार्क-प्रोटो और कैलि बाई। कैल्के; ब्रायो, कास्टिकम, सार्सा, पल्स; स्ट्रेनम; रक्ताधिक्यकी वजहसे सर-दर्द—ग्लोनो। सदृश, गलेमें दर्द—एसिड-नाइट, हिपर।

शक्ति ।—३ रीसे २०० शततमिक क्रम लाभदायक है; उच्चसे उच्चतम क्रम व्यवहारसे, पुराना अजीर्ण और आमाशय वगैरहमें विशेष लाभ करता है।

आर्जेण्टम आक्साइडम

(ARGENTUM OXIDUM)

दूसरा नाम ।—चांदीका विकार; रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—औरतोंकी हरित् पीड़ामें या मृत्पाण्डु रोगमें (Chlorosis) ऋतुके समय बहुत ज्यादा स्राव और उदरामय प्रवणता मौजूद रहनेपर इसका प्रयोग आर्जेण्टम नाइट्रिकमके बदलेमें होता है। जरायुके सूत्रमय अर्बुदके साथ (Fibroid tumor) उससे रक्तस्राव यदि होता हो, तो उससे भी फायदा करता है।

शक्ति ।—६ठी और ३० वीं।

ऐरिस्टोलोचिया सर्पेण्टेरिया

(ARISTOLOCHEA SERPENTAREA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—आर्जेण्टम फास्फोरिकम, आर्जेण्टम म्यूरियेटिकमका व्यवहार होता है; इनकी सूक्ष्म दैहिक परीक्षा अभी नहीं हुई, इसीलिये लक्षण नहीं लिखे गये ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—अजीर्ण और आध्मान ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

ऐरिस्टोलोकिया ग्रैण्डिफेरा

(ARISTOLOCHIA GRANDIFERA)

दूसरा नाम ।—ऐरिस्टोलोकिया मिलहोमेन्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके फूलसे मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है। यह एक जातिका और भी होता है, उसे ऐरिस्टोलोकिया क्लिमेटाइटिस कहते हैं ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुमूत्र वगैरह रोगोंमें इसका व्यवहार होता है ।

लक्षणावली

वक्षस्थल ।—हृत्पिण्ड-शिखर (Apex) प्रदेशमें मानो छुरी विद्ध हो रही है, इस तरहकी तकलीफ़के साथ श्वास-रोध (कैक्टस, सिफिलिनम); वक्षस्थलके वाम पार्श्वमें चोटकी वजहसे पैदा हुएकी तरह दर्दका भाव ; रातमें इस अंशमें इतना दर्द होता है, कि दर्द बिलकुल ही सहन नहीं होता (ऐकोन, बैरा-कार्ब, नेट्र-म्यू ; दाहिने पार्श्वमें—ज़िङ्कम-मेट ; स्पर्श सहन न हो—ऐङ्गस्टियुरा, रैनान, एसिड-फास) ।

सम्बन्ध ।—ऐकोन, बैराइटा-कार्ब, नेट्रम-म्यूर ।

शक्ति ।—सदृश—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम ।

आर्मोरेसिया रैस्टिकेना या कोचलियारिया

(ARMORACEA RUSTICANA)
or
(COCHLEARIA ARMORACEA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके मूलसे मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—अण्डलाल मिला पेशाब; स्वरभङ्ग; दमा; मोतियाबिन्द; शूल; उद्भेद या खुजली; प्रमेह; पथरी; सरका दर्द; प्रदर; वात; फेफड़ेकी सूजन; पेशाबमें तकलीफ़; दाँतका दर्द; जखम इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—मूत्र आदिमें विकार और प्रमेह तथा शीताद (Scurvy नामक दन्त रोग) वगैरहमें यह बहुत लाभदायक है। मन्दाग्नि रोगमें यह पाचककी गोलीकी तरह काम करता है (जेण्टियाना लुटिया देखिये); श्लैष्मिक-झिल्लीपर क्रिया रहनेकी वजहसे इससे आँव मिला दस्त, प्रदर, श्लेष्माकी अधिकता, जिसमें बहुत-पैदा होता है, ऐसे श्वास रोग (Pituitous Asthma) और श्लेष्मा, बहुत पैदा होनेवाले यक्ष्मा रोगमें इससे विशेष उपकार हुआ करता है। आँतोंके शूलके साथ कमरमें दर्द इसका प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। दर्द तलपेटसे पीठ और पीठसे उतरकर त्रिकास्थि-प्रदेश (Sacrum) में ठहर जाता है। स्थान बदलनेवाली पुरानी वात व्याधिमें और पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे होनेवाली बीमारीमें विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें दर्द, कभी बाईं ओर और कभी दाहिनी ओर पैदा हो जाता है; एकदम पूरी-पूरी आँख खोलनेसे बढ़ जाता है; मिचलीके साथ सरमें तेज़ दर्द; बैठनेपर बढ़ जाता है, ऐसा दर्द, मानो माथा फटकर माथा बाहर निकल पड़ेगा। हूप खाँसीमें नाकसे खूनका स्राव (ऐ-म्यूर; आर्निका, ड्रोसे, इपिका)।

पाकस्थली।—पाकस्थलीसे लेकर पीठको ओरतक दर्द ; पीठके बीचवाली कशेरुका (Vertebrae) दबने या रगड़नेसे दर्दका बढ़ना आरम्भ हो जाता है। अन्त्राशयसे पीठतक फैलनेवाला दर्द, तलपेटसे लेकर पीठ और पीठसे उतरकर त्रिकास्थि (Sacrum) के ऊपर दर्द स्थिर हो जाता है। बहुत ज्यादा और यन्त्रणा-रहित अतिसारके साथ ही अस्वाभाविक भूख। पित्तमय पदार्थकी के होना (Regurgitation) ; पेटमें ऐंठन (Cramps) की तकलीफ़से रोगी बेचैन हो जाता है।

पेशाब।—पेशाब करनेके समय, पहले और बाद मूत्रनलीमें जलन और कतरनेको तरह यन्त्रणा (कैप्सि, आर्जेण्ट-नाई, कैन्थ, मार्क, नक्स, ओलियम, ऐनिस, लैके, कैनाब-सैट, लाइकोपो, बार्बेरिस, कोलचि, डिजि, कैलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ़, सैबाड, सार्सा, सेनेग, स्टैफि, थूजा, वेरेट, जिङ्कम)। बार-बार और असंख्य बार पेशाबका वेग (आर्जेण्ट, बेराई-कार्ब, कास्टि, कोपेवा, युफ्रे, मार्क, रास, स्क्वियुला, स्टैफि)। मूत्रकृच्छ्र (Strangury) (कैनाब, कैन्थ, डालका, नक्स-वोम ; चलना आरम्भ करते ही पेशाबका वेग और सोनेपर या अर्द्धशायित अवस्थामें (लेटनेपर) घट जाता है—डिजिटेलिस), अण्डलाल मिला पेशाब (Albuminuria)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—पेशाब करनेके समय योनिसे गाढ़ा लसदार (क्रोकस-सैट) काला खूनका स्राव। आर्त्तव—प्रत्येक दस या पन्द्रह दिनोंपर ऋतुस्राव आरम्भ हो जाता है। रुका हुआ आर्त्तव (Suppressed Menses), इसके साथ ही हरित् या मृत्पाण्ड् रोग (with Chlorosis)। वयःसन्धि-कालके आरम्भसे पेटमें अकड़नकी तरह दर्द या ऐंठन।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारसे अनजानमें श्लेष्माका स्राव (ऐगार, कोलचि, ग्रैफ ; रातमें शय्यामें सोनेके समय—ऐसिड-कार्बोलिक ; निद्रावस्थामें—बेल, हायो, ऐसिड-म्यूर, रूटा, फास ; खाँसने या छींकनेमें—स्क्वियुला ; खड़े होनेपर, टहलनेपर या भोजनके बाद—ऐलो ; वायु त्यागनेके समय—ऐलो ; ऐसिड-म्यूर, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, पोडो, वेरेट्रम ; पेशाब करनेके समय—ऐलो, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-सल्फ़, स्क्विला ; शरीरमें प्रत्येक सञ्चालनसे—एपिस)।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभङ्गके साथ सर्दी (बेल, कार्बो-वेज, कैमो, ड्रोसेरा, डाल्का, हिपर, मार्क, नक्स, फास, पल्स, ऐण्टिम-टार्ट), फेफड़ेका शोथ। वक्षस्थलको छूनेसे बहुत दर्द मालूम होता है।

सम्बन्ध ।—सदृश—कैनाब, कैन्थ, सिनेप, कोपेवा, क्यूबेबा, रस-टक्स, आर्जेण्ट-नाई ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३० शततमिकतक ।

आर्निका माण्टेना

(ARNICA MONTANA)

दूसरा नाम ।—लियो पार्ड्स बेन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समस्त वृक्ष और मूलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— फोड़ा ; संन्यास ; पीठमें दर्द ; शय्याका जखम ; व्रण ; मस्तिष्ककी बीमारी ; टाक पड़ना ; बदबूदार श्वास ; चोट ; दुष्ट व्रण (दूषित फोड़ा) ; श्वासनलीका प्रदाह ; पार्श्व-शूल ; फुसफुसकी आवरक झिल्लीका प्रदाह और वहाँ स्नायुशूल ; ताण्डव ; गट्ठे ; बहुमूत्र ; अकड़न ; ऐंठन ; अतिसार ; रक्तामाशय ; चोट लगनेकी वजहसे काला दाग पड़ना ; खाल उधड़ना ; सुस्ती ; आँखोंमें चोटकी वजहसे बीमारी ; पैरका जखम ; रक्त-वमन ; खून-भरा पेशाब ; सरका दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; ध्वजभङ्ग ; प्रसव-वेदना ; प्रसवके बादका दर्द ; कटिवात ; मस्तककी आवरक झिल्लीका प्रदाह ; मानसिक रोग ; गर्भ-स्राव ; चुचुकका जखम ; नाककी बीमारी ; पक्षाघात ; वस्ति-गह्वरका लाल अर्बुद ; रक्तका विषैला हो जाना ; प्लीहाका स्नायुशूल ; मोच खाना ; काँटा गड़ना ; पीव-सञ्चय ; प्यास ; स्वादका बिगड़ना ; हूप खाँसी ; जखम या तुरन्तका घाव ; जम्हाई इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-प्रधान, रक्तप्रधान या स्थूलकाया स्त्रियाँ, रस-वात धातु, लाल या प्रफुल्ल चेहरेवालोंकी बीमारी ; चोटका दुष्परिणाम वगैरह क्षेत्रोंमें यह उपयोगी है। इससे शरीरकी चोट, गिरना, कुचलना, दबना और अत्यधिक शारीरिक परिश्रमकी तरह अवस्था पैदा हो जाती है। शरीरमें हमेशा दर्द बना रहता है और ऐसा मालूम होता है, कि सन्धियाँ मोच खा गयी हैं, रोगी चाहे कितनी ही कोमल और कैसी भी शय्यापर क्यों न सोये, वह उसे बहुत कड़ी मालूम होती है। यदि कोई पाससे

जाता है, तो रोगीको डर मालूम होता है, कि कहीं वह दर्द-भरे हाथ-पैर छू न ले। रक्त-स्राव और सुस्ती लानेवाली बीमारियोंपर इसका प्रधान क्रिया-फल है। इससे शरीरके विधान-तन्तुओंका अपजनन (Degeneration) हो जाता है तथा पीव-सञ्चय और फोड़ा पैदा होनेकी भित्ति स्थापित होती है। शरीरके कितने ही स्थानोंपर फोड़े निकला करते हैं; परन्तु वे पकते नहीं हैं। अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दर्द, काम करनेकी शक्तिका न रहना, सुन्न हो जाना और कुचल जानेकी तरह मालूम होना। शरीरके किसी भी अंशमें चोटकी वजहसे विकार, चाहे कितने भी दिनोंका क्यों न हो, इससे आराम हो जाता है। कण्डराकी पेशी वगैरहके साथ अस्थि-भङ्ग होनेपर (Compound Fracture) इससे विशेष उपकार होता है और पीव पैदा होना रुक जाता है (कैलेण्डुला)। सारे शरीरमें दर्द और अकड़न, मानो किसीने खूब पीटा है। दोनों उरुमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन नहीं होता और इसी वजहसे रोगी टहल नहीं सकता। माथा गर्म और बाकी अंश शीतल; हाथ-पैर ठण्डे, पर भीतरी उत्ताप मालूम होना; ज्वरकी शीतावस्थामें प्यास; मुँह सड़ा रहता है; पाकस्थलीमें ऐसा भार मालूम होता है, मानो एक पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है। उदरामय—मल बदबू-भरा, भूरा, बदरङ्ग, सड़ी गन्ध-भरा (Putrid) और खून-मिला; पाखाना होने बाद बहुत कमजोरी; इसी वजहसे रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। शरीरमें जलन और सारे शरीरमें खुजलानेवाली फुन्सियाँ या फोड़े। जगह-जगह काले दाग और नीला दाग इत्यादि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—भुलक्कड़, जो कुछ करता है, वह उसी समय भूल जाता है, बातचीतके समय यह भूल जाता है, कि वह क्या कर रहा था (मोह-ज्वराधिकारमें)। शय्याके वस्त्र नोंचा करता है (बेल, हेलिबो, हायो, जिङ्कम-मूरर); रङ्गालय आदि भीड़-भाड़वाली जगहमें जानेसे डरता है। कोई पाससे जाता है, तो उसे ऐसा मालूम होता है, कि उसका दर्द-भरा अङ्ग छू न ले (कैलि-कार्ब, लैकेसिस, नक्स-मस, सैनिक, टेलार, थूजा)। अचेतन्य—कोई बात पूछनेपर जवाब तो ठीक-ठीक देता है: परन्तु तुरन्त ही फिर प्रलाप करने लगता है और बेहोश-सा हो जाता है। बात खतम होते-न-होतेतक सो जाता है—बैप्टो)।

रोगीसे जब यह पूछा जाता है, कि वह कैसा है, तो कहता है, कि कोई बीमारी नहीं है, अच्छा है (हाइयो, क्रियो, ओपि), बहुत देरतक परिश्रम नहीं कर सकता। स्नायु-प्रधान धातु—किसी तरहके दर्दको भी असह्य समझ लेता है, अकेला रहना पसन्द करता है (कैम्फि, सिमिसि, कोका, साइक्ला, जेलसि, हेलिबो, इग्ने, लिडम, मैग-म्यू, हायो, आक्सा-ड्रोपिस, रास, थूजा)।

मस्तक।—मस्तिष्कावरक-झिल्ली-प्रदाह—चोट आदि बाहरी कारणसे (जैसे—गिरना, संघात Concussion वगैरह) बीमारी; यदि यह सन्देह हो कि मस्तिष्क-गह्वरमें शोणित-स्राव होता है, उसके सोखनेमें यह सहायता पहुँचाता है। मस्तिष्कोदक (Hydrocephalus), बच्चेके बाँहका अगला अंश ठण्डा (उदरामयमें इसी तरह बाँहका अगला भाग ठण्डा हो जानेपर—ब्रोमाइन); संन्यास या सर्दी-गर्मी—बेहोशी, अन्त्राशय, मूत्राशयसे अनजानमें पाखाना, पेशाब होना; नयी बीमारीकी अवस्थामें रक्त-स्राव रोकता है और सोखनेकी क्रियामें सहायता पहुँचाता है (इसका तबतक बार-बार प्रयोग करते रहना चाहिये, जबतक लक्षण बदलनेकी वजहसे अन्य दवाकी जरूरत न हो)। सरमें चक्कर आना—माथा हिलानेपर उठानेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो सब चीजें उसके साथ ही घूम रही हैं (बेल, ब्राई, साइकि, लाइको, लोरोसि, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, फास, वेलो, वेरेट), बैठनेके समय या सर झुकाये रखनेपर कुछ भी मालूम नहीं होता। सरमें असह्य दर्द, सवेरे नींद खुलनेपर—दिनके ८ बजे इतना बढ़ जाता है, कि बाहर चलनेके समय ऐसा मालूम होता है कि सरमें चक्कर आकर गिर जायगा। दस बजनेके समय एकदम छूट जाता है। ललाटमें सीमाबद्ध स्थानपर बरफकी भाँति शीतलता मालूम होती है, मानो कोई ठण्डी अंगुली द्वारा उसका ललाट स्पर्श कर रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो शङ्खदेश या कनपटीमें कोई प्रेक ठोंक रहा है (इग्ने, काफिया)। शरीरका निचला अंश ठण्डा अथवा माथेके भीतर मानो आग जल रही है, ऐसा मालूम होना (कास्टि, ऐको, मर्क, नक्स, रास)। सरमें चक्कर आना, पाकाशयमें विकारकी वजहसे मिचली, इसके साथ ही वमन और पतले दस्त आना (नक्स)। मूर्द्धा-देशमें शीत बोध—मानो बरफ दबा हुआ है (आर्स, कैल्के, लोरोसि, सिपि, सल्फर, वेरेट)।

आँख।—योजकत्वक या आँखका भीतरी भाग (Conjunctive) और चित्रपत्रमें (Retina—जहाँ दिखाई देनेवाली चीज़की छाया पड़ती है)

खून इकट्ठा होता है। रक्त-भरी शिराएँ सब ऊँची उठ जाती हैं, चोट या खाँसीके प्रतिक्षेपकी वजहसे ऐसा लक्षण (लीडम ; नक्स)। आँख गड्ढेमें धँसी, काँचकी तरह चमकीली और फैली हुई पुतली मिली। दृष्टिकी अस्पष्टता।

कान।—चोट लगते ही दर्द ; कानसे रक्तस्राव ; कानसे कम सुनना।

मुखमण्डल।—आनन्द बतानेवाला और लाल ; दोनों ओठ उत्तप्त। मुखमें उत्ताप मालूम होता है, पर पसीना और प्यास नहीं रहती ; नश्तर लगवाने बाद दाँतमें दर्द।

नाक।—बार-बार रक्तस्राव ; गाढ़ा और तरल ; परिश्रमसे वृद्धि। पहले दिवस कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे छींक।

मुखविवर।—मुँहसे बदबू निकलना, जीभपर सफेद लेप चढ़ा हुआ (ऐण्टि, ब्राई) ; जीभका सूखापन, प्यासकी अधिकता ; स्वाद कड़वा।

पाकाशय।—वायु निकलना, बार-बार डकार ; सड़ी गन्ध मिला। भूख न लगना। जमा रक्त कै करना। ओकाई। पेट हमेशा—भरा मालूम होता है और भोजनसे अरुचि रहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें पत्थर दबाया हुआ है (नक्स, पल्स, ब्राई) ; ऐसा भाव मालूम होता है।

तलपेट या अंत्राशय।—वस्ति-गह्वर (Pelvis) में दर्दकी वजहसे सीधा होकर चल नहीं सकता। आमाशय और उसके साथ ही मूत्रकृच्छ्रता ; वृथा वेग ; बहुत समयका अन्तर देकर पाखाना होना, मल लसदार और श्लेष्मामय ; खून मिला ; पीवकी तरह बहुत बदबू ; नींदमें अनजानमें पाखाना होना ; चोटके बाद बाईं करवट सोनेसे बढ़ना। मल काठिन्य, मलान्त्र (Rectum) मलसे परिपूर्ण अथच मल नहीं निकलता ; मूत्रनाली मुखशायी (Prostate) ग्रन्थि फूली, जरायुका पश्चाद् आवर्त्तन (Retroversion) की वजहसे फीतेकी तरह मल निकलता है (खड़ियेकी तरह कड़ा और सफेद रङ्ग—फेलैन ; फीका रङ्ग और थक्का-थक्का—कोलिन ; भेंड़के मलकी तरह छोटा-छोटा गांठमय—बेल, प्लम्बम, रूटा, वार्बेस्कम ; कड़ा, पतला और लम्बा, कुत्तेकी तरह मल—कास्टि, फास, प्रूनस, स्पाई ; अत्यन्त बड़ा, कड़ा और कष्टजनक – ब्राई, कैलि-कार्ब, नक्स, वेरेट)। प्रति बार पाखाना होने बाद वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। अनजानमें मल-मूत्रके स्रावके साथ मोहावस्था।

भूरा और शराबके फेनकी तरह मल। उप-पञ्जरके नीचे सुई बेधनेकी तरह दर्द। पेट बदबूदार वायुसे भरा। तलपेटमें तेज़ अस्त्राघातकी तरह दर्द मालूम होता है। सूत-जैसे कृमि।

पेशाब।—बहुत अधिक परिश्रमकी वजहसे मूत्ररोध, बहुत देरतक बैठे रहे बिना पेशाब नहीं होता। रातमें अनजान अवस्थामें पेशाब निकलता है। पेशाबके अन्तमें मूत्ररोध या अनजानमें पेशाब निकलना (ओपि); ईंटके चूरकी तरह पदार्थ निकलता है (Sediment) (ऐको, एण्ट, कैनाब, कैन्थ, कैलि-बाई, लाइको, नैट्र-म्यूर, पल्स, सीपि, स्क्वियुला, वैले)। खूनभरा पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्ग और अण्डकोषकी लाल आभा लिये सूजन; चोटकी वजहसे अण्डकोष प्रदाह; जलकोरण्ड; रति इच्छाकी वृद्धि; ध्वजभङ्ग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—संघातकी वजहसे (Concussion) जरायु-भ्रंश या रक्तस्राव; जरायु-प्रदेशमें चोटसे पैदा हुआ तेज़ दर्द और इसी कारणसे सीधे होकर चल न सकना (आर्जेण्ट-मेट), पेशाब करने बाद प्रसव-द्वारमें दर्द (प्रसवके बाद सेवन करनेपर प्रसवके बादका रक्तस्राव और पीव पैदा हो जानेके कारण लक्षणोंकी जटिलताको दूर करता है)। प्रसवके बादका दर्द असह्य। रमणके बाद या चोटकी वजहसे रक्तस्राव। स्तनकी घुंडीमें जखम। स्तनमें चोटकी वजहसे या स्तन पीनेवाले शिशुके मस्तक दबनेकी वजहसे ठुनका रोग (Mastitis) ऐसा मालूम होता है, मानो भ्रूण प्रसूतिके गर्भके भीतर बाईं ओर या दाहिनी ओर लम्बा हो रहा है। गिरने या चोट लगने बाद गर्भ-स्रावकी आशङ्का।

श्वास-यन्त्र।—बच्चोंके रोनेकी वजहसे खाँसी; वक्ष-पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (ब्राई, सैङ्गियु, कैलि-कार्ब)। खाँसनेके समय पंजरेमें दर्द मालूम होना; समूचे शरीरको हिला देनेवाली खाँसी; रोज़ सवेरे जागने बाद सूखी खुसखुसी खाँसी, वायुनलीसे निम्न-तम प्रदेशमें खुजली पैदा करनेवाली खाँसी। कफ़के साथ खून मिला रहता है। रक्त-कासके साथ श्वास-कृच्छ्रता। हूप खाँसी—आरम्भ होनेके पहले बच्चा रोया करता है। नाकसे रक्तस्राव होता है या कफके साथ रक्तकी बूंद निकलती है। खाँसते-खाँसते आँखकी त्वचाके पीछे रक्तस्रावकी वजहसे आँखें लाल हो जाती हैं (खाँसनेके पहले रोता है—कैप्स, बेल; खाँसने बाद रोता है—कैप्स)।

हृत्पिण्ड।—बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलनेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द, इसके साथ ही सुस्ती। छातीमें धड़कन मालूम होना, हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्द मालूम होना, मानो उसे कोई पीस रहा है।

ग्रीवा।—पेशियोंकी कमजोरी; चोटकी वजहसे अकड़न।

प्रत्यङ्ग आदि।—वात और छोटी सन्धियोंका वात (Gout); रोगवाली जगहमें इतना दर्द होता है, कि कोई पास आनेपर उसे डर मालूम होता है, कि कहीं दर्दवाला अंश छू न ले या उसमें चोट न लगा दे। बायें अङ्गका पक्षाघात; नाड़ी पुष्ट और प्रबल; लम्बी साँस लिया करता है, कुछ बुदबुदाकर बका करता है और श्वास-प्रश्वासमें घड़घड़ आवाज़ सुन पड़ती है। प्रसवके बाद उदरदेशमें दर्द, मेरुदण्डमें भयानक दर्द, मानो स्नायविक वेदना हो गई है; पश्चात् कटि या नितम्बमें और प्रत्यङ्गोंमें चोट लगनेकी तरह दर्द—कुचल जाने और सन्धि-भ्रष्ट (Dislocated) जैसा मालूम होता है। अपरिमित परिश्रमके बाद शरीरमें दर्द। देहका ऊपरी अंश गर्म, निचला अंश बरफकी तरह ठण्डा। रोगी चाहे जैसी शय्यापर सोये, वही उसे कड़ी मालूम होती है, लगातार कष्ट प्रकट करता है और कोमल जगहकी खोजमें इस करवटसे उस करवट लेटा करता है (मानो तख़्तेपर सोया है और जो अंश दबाकर सोता है, वही अंश दर्द-भरा मालूम होता है—बेप्टी, पाइरोज; आराम मिलनेकी इच्छासे लगातार हिला-डोला करता है या करवट बदला करता है—रास; माथेसे पैरतक बहुत दर्द मालूम होना, पेशियोंमें दर्द और जरा भी शरीर हिलानेपर दर्दसे कराहने लगता है—फाइटो); मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (Hydrocephalus) रोगमें दोनों बाहुओंका अगला भाग मुर्देकी तरह ठण्डा।

त्वचा।—एकके बाद दूसरा छोटा और बहुत दर्द-भरा फोड़ा बराबर निकला करता है (एकदम बहुतसे फोड़े बार-बार निकलते हैं—सलफर)। पीब पैदा होनेकी सम्भावना नष्ट करता है और रक्तके साथ पीबके कण मिलनेकी वजहसे पैदा हुए रोगादिमें प्रतिविषका काम करता है; चोटकी वजहसे काली लकीर पड़ जाना—त्वचाके भीतर शिरामें बहनेवाला रक्त आ जानेके कारण—फास)।

नींद।—सन्ध्यामें बार-बार जम्हाई आती है, परन्तु नींद नहीं आती (ऐको)। कब्रस्तान, श्मशान, काला कुत्ता, बज्राघात, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ

मृत शरीर वगैरह डरावनी चीज़ें स्वप्नमें देखता है। नींदके बाद भी आराम नहीं मिलता।

ज्वर।—सविराम ज्वरमें—जाड़ा पैदा होनेके पहले या उसी समय बहुत प्यास; बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है और फिर उसे कै कर देता है; जम्हाई और प्रत्यङ्गोंका फैलाना। सभी हड्डियोंमें दर्द, सभी तरहकी शय्या कड़ी मालूम होती है। पेटके ऊपरी प्रदेशमें ज्यादा जाड़ा मालूम होता है; हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं; परन्तु चेहरा और मुखमण्डल गर्म रहता है और एक ओरका गाल लाल रहता है; उत्तापका आविर्भाव होनेपर रोगी अपनी अवस्थाके सम्बन्धमें उदासीनता दिखाता है। पूछनेपर कहता है, कि वह अच्छा है, पर बेहोशकी तरह पड़ा रहता है, उस समय पानी थोड़ा ही पीता है; रातमें खट्टा पसीना निकलता है; विज्वरावस्थामें (Apyrexia) प्लीहा प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है; अंगुलीसे प्लीहाको दबानेपर दर्द मालूम होता है; अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ऐसा मालूम होता है, मानो चोट लगी है। सवेरे ६ बजनेके समय शीत पैदा होता है (७ बजे—युपेटो, हिपर, पोडो; ६ बजे—वेरेट्रम-ऐल्बम)।

वृद्धि।—विश्रामावस्थामें, सोनेके समय, शराब पीनेसे, जलीय तर हवामें और ठण्ड लगनेपर।

उपशम।—सर झुकाकर सोनेपर, छूनेसे और शरीर हिलानेपर (रास, रूटा)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—ऐकोन, हाइपेरि, रस-टक्स।

सदृश।—ऐकोन, ऐमोन, क्रोटन, आर्सेनिक; चोट लगनेकी तरह दर्दके सम्बन्धमें और सान्निपातमें—बैपटी, बेल, कैमो, चायना, फाइटो, इयुफ्रे, कैलेण्डुला, हाइपि, हैमा, इपिका, लिडम, मर्क, पल्स, राइरोजिन, रास, रूटा और स्टैफि, साइलि, सल्फ, वेरेट। शराब पीने या कोयलेका धुआँ सूँघनेकी वजहसे बीमारीमें यह अधिक लाभदायक हुआ करता है (ऐमोन-का, वोवि)।

दोषघ्न।—कैम्फर, इपिका, काफिया, ऐकोन, मर्क, चायना, इग्ने।

शक्ति।—आर्निकाका दुष्परिणाम शराब पीनेसे बढ़ जाता है। १म से २०० शक्तितक। पुराने सविराम ज्वरमें उच्चतम क्रमसे ही विशेष लाभ होता है।

आर्सेनिकम ऐल्बम

(ARSENICUM ALBUM)

दूसरा नाम।—संखिया; शङ्ख-विष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—फोड़ा; मुँहासा; खूनकी कमी; रजोरोध; मुँहका जखम; दमा; दुबलापन या शीर्णता; श्वासनाली-प्रदाह; आँतकी बीमारी; कर्कटका घाव; मुँहका सड़नेवाला जखम: दूषित फोड़े; विसूचिका; ऐसियाटिक कालेरा; हिमाङ्गावस्था; खाँसी; काली या घुँड़ी खाँसी; प्रलाप; अतिसार; उपझिल्ली-प्रदाह; शोथ; अजीर्ण; आँखकी बीमारी; मूर्च्छा; ज्वर; सड़नेका लक्षण; पाकाशयका जखम; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ; क्षय-ज्वर; वक्षोदक रोग। मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारियाँ; श्वेत-प्रदर; ओंठमें जखम; उद्भेद; नाना प्रकारका पक्षाघात; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह; वक्ष और फुसफुसके आवरणका प्रदाह; स्नायुशूल; फेफड़ेका प्रदाह; रक्त-विषाक्तता (खूनका विषैला हो जाना); स्वल्प-विराम-ज्वर; वात; सन्धि-प्रदाह; आमवात; दद्रु; कम्पन; मोच खाना; पीबका पैदा होना; प्यास; गलेका जखम; पाकाशय और जीभकी बहुत-सी बीमारियाँ; गलनालीकी बीमारी; अभियातिक ज्वर (फौजी बोखार); सान्निपातिक ज्वर; बहुत तरहके घाव; वमन; हूप खाँसी; कास; कृमि; पीत-ज्वर इत्यादि रोगोंमें लाभदायक सिद्ध हुआ है।

उपयोगिता और आभास।—हताश, दुःखित, अनमना, उद्विग्न, भय, बेचैन, उत्तेजित, डरपोक, कर्कश और सहजमें ही चिढ़ उठनेवाला तथा मृत्यु भयसे भीत मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है। जीवनी-शक्तिका बहुत जल्दी-जल्दी सुस्त हो जाना; सारे शरीरमें कमजोरी; अस्थिरता; मानसिक अवसन्नता; निराशा; चिन्ता; डर मालूम होना; क्रोध पैदा होना प्रभृति और रात्रिके समय सब लक्षणोंका बढ़ना इसका सबसे बड़ा प्रकृतिगत लक्षण है। शरीरके सभी अंशोंपर इसकी क्रिया प्रकट हुआ करती है, इसलिये, सभी रोगोंकी अवस्था-विशेषमें यह उपयोगी है। सभी लक्षण तीसरे पहर १ से ८ बजनेके बीचमें और रातमें १२ से २ बजनेके बीचमें बढ़े दिखाई देते हैं। जो बीमारियाँ

प्रति वर्ष पैदा हो जाती हैं (कार्बो, लैके, सलफर, थूजा) ; उनमें अधिकांश ही इसके अन्तर्गत आ जाती हैं।

यहाँ इसके कुछ प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं ;—(१) चेहरा म्लान, दुबला, ठण्डा और ठण्डे पसीनेसे भरा, उसको देखनेसे ही ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें कुछ तकलीफ़ हैं। (२) अशेष यन्त्रणा, निराशा, मृत्युका भय और आत्महत्या करनेका आवेग पैदा होना। (३) माँस और बलका बहुत जल्दी-जल्दी क्षय होते जाना, रोगी जीर्ण हो जाता है और उसमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती। जीवनी-शक्तिका बहुत ही तेज़ अवसाद। (४) बहुत अधिक बेचैनी, रोगी लगातार एक शय्यासे दूसरीपर जाना चाहता है या जानेकी इच्छा प्रकट करता है। (५) शरीर बरफ़की तरह ठण्डा हो जाता है। (६) बहुत ही तेज़ प्यास, बार-बार, पर हरेक बार बहुत थोड़ा-थोड़ा पानी पीता है, पर या तो ठण्डा पानी पेटमें रहता नहीं है या तकलीफ़को बढ़ाता है। (७) नयी सर्दी, कषैला श्लेष्मा निकलना, नाक रुकना। (८) बहुत अधिक श्वास-कृच्छ्रता, रोगी समझता है, कि उसकी अवश्य ही मृत्यु हो जायगी, उसकी मृत्यु अनिवार्य है। श्वास-प्रश्वासमें सुविधा प्राप्त करनेकी आशामें उठकर बैठ जाता है। बहुत थोड़ा गाढ़ा लेईकी तरह और फेन-भरा कफ़ (Expectoration) निकलता है और रात तीन बजनेके समय श्वास-कृच्छ्रता बहुत बढ़ जाती है। कलेजेमें धड़कन हुआ करती है और चित्त सो नहीं सकता। (९) खाने-पीने बाद बहुत सुस्तीके साथ मिचली, ओकाई और पानी, श्लेष्मा, पित्त या खून-भरी कै ; वमन हो जाने बाद भयानक सुस्ती आ जाती है और पाकस्थलीमें दर्द पैदा हो जाता है। (१०) जलन भरी यन्त्रणा मानो रोगवाली जगहपर किसीने जलता हुआ अंगारा रख दिया है। (११) उदरामय, भयानक बदबू-भरा, घोर धुमैले रङ्गका मल, खाने-पीने बाद बढ़ जाना। (१२) लगातार दस्त और कै (विसूचिका)। (१३) पेशाब बहुत थोड़ा, घोर, लारभरा। (१४) जाड़ा जोरका, परन्तु उसमें प्यासका न रहना। (१५) जलन करनेवाले जखम आदि गर्म प्रयोगसे घटते हैं।

लक्षणावली

मन।—अपने दोस्तोंसे मिलना नहीं चाहता, क्योंकि वह मन-ही-मन समझता है, कि मैंने पहले उसके साथ दुर्व्यवहार किया है। क्या और किस

तरह किया है, यह बता नहीं सकता (क्लिमेट, कैलि-फास, सिपि, स्टैन, थूजा), अकेला रहनेमें डर लगता है (ऐण्टि-टार्ट, बिस्मथ, क्लिमेट, कोना, हायो, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लिल-टाइ, लाइको, सिपि, स्ट्रैमो, इलैप्स, वेरेट), कहीं वह अपने ऊपर ही कुछ अत्याचार न कर बैठे। बहुत अधिक तकलीफ़की वजहसे आत्महत्या करनेकी प्रतिज्ञा करता है। आधी रातके समय तकलीफ़ इतनी बढ़ जाती है, कि वह शय्यासे उठकर भागना चाहता है। बहुत अधिक मानसिक अस्थिरता, एक स्थानपर बहुत देरतक बैठ नहीं सकता, पर रोगीमें इतनी ताक़त नहीं रहती, कि वह हट जाय; बार-बार जगह बदलता है; वह चाहता है, कि एक शय्यासे दूसरीपर कोई ले जाये। अभी एक जगह सोया हुआ है, तुरन्त ही दूसरी जगहपर जाकर सोता है। बहुत ही यन्त्रणादायक मृत्यु-भय; समझता है, कि उसका रोग दुरारोग्य है, उसे मरना ही होगा, अतएव दवा खाना निष्प्रयोजन है। अकेला रहना या अकेले सोनेमें डर लगता है। मृत्यु-भय पैदा हो जाता है। बहुत कृपण (लाइको, सिपि); हमेशा दूसरेकी अनिष्ट चिन्ता किया करता है (ऐनाक्, लाइको, नक्स); स्वार्थ-परता (सलफर); कापुरुषता (ऐगनस, एपिस, जेल्स, स्टैन)। रातके समय भयानक प्रलाप, इसके साथ ही बहुत अधिक अस्थिरता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, मानो गिर जायगा (ग्लोन, जेल)। पूतवाष्प (Malaria) की वजहसे सरमें चक्कर आना, श्रवण-शक्तिकी प्रखरता सर्दी रोगमें नाकके ऊपर ललाट देशमें टपककी तरह सर-दर्द। टपककी तरह दर्द, मानो मस्तिष्कमें कोई भारी चीज़ रखी हुई है। शय्यापर उठ-बैठने या शरीर हिलानेसे वृद्धि। ठण्डा पानी पीने या क्षणभर निर्मल वायुमें टहलनेपर एकदम आरामकी तरह मालूम होना; दर्द माथा और मुँहके बाएँ पार्श्वमें बहुत तेज़ मालूम होता है; रोगी बीमारीवाली करवट सो नहीं सकता; मूर्द्धाकी त्वचा इतनी दर्द-भरी होती है, कि यदि कोई केश भी छू लेता है, तो दर्द मालूम होने लगता है। कभी-कभी अस्थिरताके साथ जलन पैदा करनेवाला दर्द मालूम होता है—सर्दी लगनेसे ही बढ़ता है। अधकपारीका दर्द, मूर्द्धाकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी मालूम होती है, इसके साथ ही बहुत कमजोरी। मूर्द्धाकी त्वचामें हमेशा असह्य खुजली; जगह-जगहपर गोलाकार केश उड़ जाते हैं, वह स्थान रुखड़ा, मैला, सूखा और पपड़ीसे ढँका रहता है, उसे छुआ नहीं जाता—स्पर्श असह्य मालम होता है;

रातके समय जलन और खुजली, रूसी (Pityriasis) (सोराइन, सलफर), माथा हिलानेके समय ऐसा मालम होता है, मानो सरके भीतर मस्तिष्क भी डोल रहा है (Moving) (कास्टि, क्रोकस, नक्स-मस) और खोपड़ीमें धक्का देता है।

आँख।—पलक फूली, इतनी कि कभी-कभी आँख भी ढँक जाती है। आँखसे कषाय (Acrid) आँसू निकलता है और वही लगकर गाल और पलकमें जखम हो जाता है। सभी चीजें हरी (Green) दिखाई देती हैं (सिना, साइक्ल, डिजि, फास; लाल रंगकी दिखाई देती हैं—बेल; पीले रङ्गकी—सैण्टोनाइनम)। धुँधली दृष्टि।—आँखको जोड़नेवाली त्वचा फूल जाती है और कच्चे मांस-खण्डकी तरह मालूम होती हैं (आर्जेण्ट-नाइ)। आँखका बाहरी प्रदाह और बहुत ज्यादा दर्दका मालूम होना, दर्द जलन-भरा। गर्म और त्वचाको क्षय करनेवाला आँसू निकलना। स्वच्छ-आवरक (Cornea) जखम-भरा। बहुत अधिक आलोकातङ्क (रोशनीका सहन न होना—Photophobia), बाहरी उत्तापसे घटना। कनीनिकाका सङ्कोचन। आँखोंमें जलन। पलकोंका स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia), सूक्ष्म भावसे जलन पैदा करनेवाला दर्द यदि कण्ठमाला दोषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह हो (In scrofulous Ophthalmia) तो ऐसा ही होता है।

कान।—कर्ण-विवर (कानके छेद) के भीतरकी झिल्ली ऐसी मालूम होती है, मानो क्षय हुई त्वचा हो, उसमें जलन मालूम हुआ करती है। पानीकी तरह, त्वचाको क्षय करनेवाला और बदबूदार पीवका स्राव। सुननेकी शक्तिका घटना। आदमीकी आवाज़ अच्छी तरह सुन नहीं पड़ती। यंत्रणाके समय कानमें सों-सों और घण्टा बजनेकी तरह आवाज़।

नाक।—नयी सर्दी—बार-बार छींक और जखम करनेवाला श्लेष्माका स्राव। पानीकी तरह श्लेष्मा बहकर नाकमें बहुत ही गड़बड़ी और जलन पैदा कर देता है, मानो नाकमें जखम हो गया है। नाकमें कर्कटीय रोग (हाइड्रोकोट, बैसिलाइन)। ऐसा मालूम होता है, मानो अलकतरा और गन्धककी गन्ध आ रही है।

मुखमण्डल।—चेहरा पसीनेसे तर और उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि भीतर कोई तकलीफ़ है। मुर्देकी तरह रक्तहीन, म्लान और

जीर्ण-शीर्ण, पीली आभा लिये और भीतरी विकारको प्रकट करनेवाला। चेहरा फूला हुआ; आँख और गाल गड्हेमें धँसे और ठण्डे पसीनेसे तर; बिगड़ी हुई भावभङ्गी; मुँहका रङ्ग सीसेकी तरह, ओठमें कर्कटीया जखम।

मुख-विवर।—रातमें नींदमें दाँत कड़मड़ाता है (बेल, कैनाब, सिला, हायो)। दाँत निकलनेके समय बच्चेका रङ्ग उतरा हुआ, क्षीण, अत्यन्त असन्तुष्ट और हमेशा गोदमें चढ़कर एक जगहसे दूसरी जगह जाना चाहता है (कैमो देखिये)। मुँहमें जखम—इसके साथ ही सूखापन और जलन। जीभका अगला भाग लाल, सूखा या सूखा और भूरा लेप-चढ़ा, मुँह बहुत सूखा और तेज़ प्यास, परन्तु बार-बार और बहुत थोड़ा पानी पीता है। दोनों ओठ इतने सूखे रहते हैं और फट-फट जाते हैं, कि रोगी बार-बार जीभसे उन्हें तर किया करता है। जीभ या तो लाल रहती है और उसके काँटे सब उठे रहते हैं या लाल और दोनों किनारे ऊँचे-नीचे रहते हैं या खड़िया मिट्टीकी तरह सफेद आभा लिये या सीसा (Lead) का रङ्ग अथवा आन्त्रिक ज्वरमें सूखी, भूरी या काली आभा लिये रहती है। दाँतमें दर्द—दाँत बड़े और दर्द-भरे रहते हैं। आधी रातमें बढ़ना; गर्म प्रयोगसे घटना।

गलेके भीतर।—सूजन, शोथ-भरा, संकुचित और जलन-भरा; एकाएक कण्ठनालीका संकोचन (Stricture) के साथ निगलना असम्भव-सा हो जाता है, तकलीफ़ होती है। सूखापन और जलन मालूम होना। गलेका भीतरी रङ्ग धुमैला, पीली आभा लिये; नमकीन या तीता स्वाद मिला श्लेष्मा सञ्चित होता है।

पाकाशय।—दुर्दमनीय तृष्णा, पर रोगी पानी पीनेके लिये कोई विशेष आग्रह नहीं करता; मालूम होता है, मानो पाकाशय उसे सहन नहीं कर सकता; क्योंकि रोगीका पाकाशय ठण्डे पानीको शरीरके पोषण करनेवाले उपादानमें परिणत नहीं कर सकता। पानी पीनेपर ऐसा मालूम होना, मानो पेटमें एक पत्थरका टुकड़ा रखा हुआ है। पानी पीनेकी आवश्यकता है, परन्तु रोगी पी नहीं सकता या पीनेका साहस नहीं होता (ऐपीसाइ-कैन)। खानेका पदार्थ देखना या सूँघना—दोनों ही सहन नहीं होता (कोलचि, सीपिया)। ठण्डे पानीकी प्यास मालूम होना, बार-बार पानी पीता है, पर थोड़े परिमाणमें; रोगी शायद ही कभी खाता है, परन्तु जब खाता है, तब बहुत अधिक खाता है। पाकाशयमें विकार या रोग—बासी फल खानेके बाद (कार्बो-वेज, चायना,

सिस्टस-कैन, कोलो, पल्स ; खट्टा फल खाने बाद—इपिका)। कुल्फी बरफ (ब्राई, आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वेज, पल्स, पाइरोजिन) ; बरफका पानी या खट्टी हुई बियर नामक शराब पीनेपर (लैके, ऐगरि, नक्स) या उत्तेजक पानीय पीनेपर। खाने-पीने बाद मिचली, ओकाई और वमन। पेटके ऊपरी प्रदेशमें गड़बड़ी मालूम होना ; जलन। छातीमें जलन, कड़वा और खट्टा पदार्थ कै होता है और इसके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो गलेकी त्वचा छिल गई है। बहुत देरतक डकार आती रहना (आर्जेण्ट-नाई) ; रक्त, पित्त, हरे रङ्गका श्लेष्मा और भूरा काली आभा लिये पदार्थ रक्तके आकारमें कै होते हैं। पाकाशयका शूल, इसके साथ ही बहुत भय और श्वासकृच्छ्रता तथा सुस्ती। शरीर बरफकी तरह ठण्डा और क्लान्त मालूम होना। रोगी जो कुछ खाता है, वह सब अन्ननालीमें अड़ा हुआ-सा मालूम होता है।

अन्त्राशय ।—आँतोंमें भयङ्कर दर्द—अत्यन्त यन्त्रणा, किसी स्थानमें आराम नहीं मालूम होना, जमीनमें पड़कर तकलीफ़से लेटा करता है और जीवनकी आशा त्याग देता है—समूची देह कितनी ही प्रकारसे घुमाया करता है। चबानेकी तरह जलन करनेवाला दर्द, मानो कोई जलता हुआ अङ्गारा छुला रहा है। प्लीहा और यकृत फूले रहते हैं और उनमें दर्द रहता है। आँतकी बीचवाली ग्रन्थिका कड़ापन। नाभीके ऊपर जखम ; आध्मान—पेट फूलना ; प्लीहा सूजी हुई ; शोथ इत्यादि।

मलान्त्र और मल ।—मलान्त्र और मलद्वारमें जलन और ऐंठनकी तरह मालूम होना। मलान्त्र और गुह्यद्वार (Rectum) में दर्द ; एकाएक बाहर निकल पड़ता है। काँखना, उदरामय—खाने-पीने बाद (ट्राम्बिडि, आर्जेण्ट-नाई, क्रोटन, लाइकोप ; भोजनके समय—फेरम) ; मल परिमाणमें थोड़ा, गाढ़ा, पीली आभा लिये, बदबूदार और थोड़ा हो या अधिक रोगी बहुत कमजोर हो जाता है। मल—लेईकी तरह, पीली आभा लिये और श्लेष्मामय ; मलद्वारमें कतरनेकी तरह दर्द और काँखनेके समय थोड़ा-थोड़ा श्लेष्मा निकलना, लगातार वमनके साथ काला श्लेष्मा और काला कषाय (Acrid) और सड़ी गन्ध-भरा मल ; पीली आभा लिये मल—कूथन और जलनके साथ ; विसूचिका—बहुत यन्त्रणा—मानसिक और शारीरिक अवसन्नता और ज्वालामयी तृष्णाके साथ—शरीर बरफकी तरह ठण्डा (वेरेट्रम, कैम्फो)। अर्श—चलने और बैठनेके समय (पाखाना फिरनेके समय नहीं) सुई गड़नेकी

तरह तकलीफ़ सोने या बैठने नहीं देती ; आगसे छू जानेकी तरह जलन—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे घटना ; मलद्वार फट जाने या विदारणकी वजहसे पेशाब करनेके समय बहुत तकलीफ़। मलद्वारके चारों ओरकी त्वचा चय हो जाया करती है। अर्श या बलिमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। कब्जियत, मलका वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता।

मूत्रयंत्र और पेशाब।—पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें बहुत जलन। अनजानमें पेशाब होना—रोगिनीके पेशाब करनेके स्थानपर पहुँचनेके पहले ही पेशाब हो जाता है। मूत्राशयमें मानो पक्षाघात हो गया हो। पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा और निकलनेके समय बहुत जलन मालूम होती है। मूत्रनाश या मूत्रलोप-जनित विकार (Uræmia); मानसिक यन्त्रणा और इसके साथ-ही-साथ हत्या करनेकी चिन्ता, खासकर शराबियोंका पेशाबका रङ्ग गहरा पीला ; कभी मैला या स्लेष्मा-भरी तली जमती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गकी आवरक त्वचा और लिङ्गमणि (सुपारी)में खुजलानेवाले और जलन पैदा करनेवाले दर्दका पैदा हो जाना ; जननेन्द्रियका प्रदाह और दर्द-भरी सूजन, दोनों अण्डकोषोंकी विसर्पयुक्त सूजन। पतला पाखाना होनेके समय मूत्राधार-मुखशायी ग्रन्थिसे रस-स्राव होता है।

स्त्री-जननेन्द्रियं।—आर्त्तव—स्राव एकदम असमयमें होने लगता है ; डिम्बाधार-प्रदेशमें जलन मालूम होती है। प्रदर—पीले रङ्गका और गाढ़ा स्राव और शरीरके जिस स्थानमें यह लगता है, उसी स्थानमें जखम पैदा हो जाता है। ऐसी तकलीफ़ मालूम होना, मानो जलते हुए धातुमय सूत्र सब चारों ओर फैले हुए हैं ; परिश्रम मात्रसे ही इस लक्षणका बढ़ जाना ; गर्म कमरेमें ह्रास ; बहुत ही सुस्ती लानेवाला स्राव। जरायुका कर्कटीया जखमकी तरह मालूम होना।

श्वास-यंत्र।—श्वास-प्रश्वास—दमाकी तरह ; रोगीको वाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है या माथा झुका लेना पड़ता है। वह चित्त होकर सो नहीं सकता (कैलि-नाई, लैके, नैजा, सिलि); आधी रातके बाद शय्यासे उछलकर बाहर निकल पड़ता है और श्वास-रोध होनेके भयसे सो नहीं सकता (नींद आनेके समय श्वास रोध होने लगता है—क्लोरम, जेल्सि, ग्रिण्डि, लैक-कैन, लैके, ओपि); दमा रोगमें साधारणत: जिस तरह आमवात हो जाता है, वैसा न होकर, रोग घुंड़ी या काली खाँसीकी तरह हो जाता है। अन्धड़-पानीके

समय श्वास-कृच्छ्रता बढ़ जाती है ; तेजीसे चलने, ऊँचेपर चढ़नेके समय, गर्म और हलकी पोशाकें और शीत या उत्तापके परिवर्त्तनसे रोग बढ़ जाता है। सीटी देने (Whistling) की तरह श्वास-प्रश्वास ; खाँसी ; फेन-भरा और गोंदकी तरह बलगम (Expectoration), मानो कुचले हुए अण्डेकी तरह (Beaten white eggs), फेफड़ेकी वायु-स्फीति (Emphysema) ; बहुत अधिक श्वास-कृच्छ्रता ; नीला और ठण्डे पसीनेसे भरा चेहरा, इसके साथ ही बहुत अधिक मानसिक उद्वेग। खाँसीका क्षणभरके लिये आ जाना, रातमें ही इसका आक्रमण आरम्भ होता है, रोगीकी नींद खुल जाती है और अन्तमें बहुत थोड़ा कफ निकलता है। आधी रातके बाद खाँसी बढ़ती है ; इसी वजहसे रोगी चित सो नहीं सकता।

हृत्पिण्ड।—हृत्स्पन्दन, मानसिक यन्त्रणाके साथ हृत्स्पन्दन। चित सो नहीं सकता (बाईं करवट सोनेपर बढ़ना—कैक्टस, स्पाइजि ; दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ना—आर्जेण्ट-नाइ, कैलि-नाइ), सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ जाती है (बेल, नेट्रम-म्यूर, ऐसिड-नाइ, कैल्के, सल्फर, थूजा)। हृत्शूल—हृत्पिण्डके ऊपरी प्रदेशमें एकाएक कसावटका भाव आ जाता है (कैक्ट, लिलि-टाइ) ; बहुत तकलीफ़ देनेवाला कलेजेका दर्द (Proecodial Pain) ; गर्दन और माथेके पश्चात् भागतक यह दर्द फैल जाता है (वेरेट) ; उद्वेग, दबाव मालूम होना, श्वासकृच्छ्रता और मूर्च्छा पैदा हो जानेका उपक्रम ; जरा भी शरीर हिलानेपर साँस रुकने लगती है (प्रूनस) ; या तो सर झुकाकर (चिनिन-आर्स) अथवा माथा पीछेकी झुकाकर बैठा रहता है (लैके) ; वृद्धि—रातके समय, विशेषकर रातके १ बजेसे ५ बजेतकके बीचमें। तम्बाकू खानेवालोंका किसी सामान्य कारणसे हृदय-सम्बन्धी रोग (फास, स्पाइ)। पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे कलेजा धड़कना ; हृत्पिण्डको ढँकनेवाले पर्देमें जल-सञ्चय।

गर्दन और पीठ।—ग्रीवामें प्रबल सूजन ; कटिदेश दुर्बल ; त्रिकास्थि (Sacrum) से लेकर पीठतक अकड़न मालूम होना ; पीठमें जलन मालूम होना—छूनेसे ही यह जलन बढ़ जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—प्रत्यङ्गोंमें बहुत कमजोरी रहनेकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है (ऐमिगडे, फेरम) ; दोनों पैरोंमें तकलीफ़

मालूम होना, रोगी रातमें स्थिर भावसे सो नहीं सकता और दोनों पैरोंको बार-बार एक जगहसे दूसरी जगह रखा करता है। आराम मिलनेकी आशामें स्वयं उठकर टहलने लगता है। कँपकँपी, फड़कन, अकड़न, दुर्बलता, भार मालूम होना और अस्वाच्छन्द्य मालूम होना। पैरकी पोटली (Calves) में ऐंठन (कैम्फ़, क्युप्रम-ऐसेट, प्लम्ब, सिकेलि); दोनों तलवोंमें सूजन। कटिस्नायु-शूल (Sciatica); ज्वाला-भरी यंत्रणा, गर्म प्रयोग (सेंकने) से घटना। सन्धियोंमें उजले रङ्गकी सूजन और उसमें इस ढंगकी जलन मालूम हो, मानो किसीने जलता हुआ अङ्गारा रख दिया हो। थोड़े भी परिश्रमसे बहुत थकावट मालूम होना (ऐमोनियक), रोगी जबतक सोया रहता है, तबतक समझ नहीं सकता, परन्तु शरीर हिलाते ही समझ जाता है, कि वह कितना कमजोर हो गया है।

त्वचा।—जल्दी-जल्दी मांसका क्षय या दुबलापन (Emaciation—फास, प्लम्ब, पोडो) बरफकी तरह ठण्डा पसीना और बहुत कमजोरी (टियुबर, वेरेट)—खासकर बीमारीवाले अंशमें। बच्चोंका मांस-क्षय (सुखण्डी) रोग (ऐ-ऐसेट, एराम; कैल्के-फास; आयोड, इथ्यू, लाइ, फास); सार्वाङ्गिक—(समूचे शरीरमें) शोथ—त्वचा राखकी तरह बदरङ्ग सफेद; मिट्टी-जैसा रंग (ऐसिड ऐसेट)। ज्वालामयी यंत्रणा, रोगवाले स्थान सबमें इतनी जलन मालूम होती है, मानो जलता हुआ अङ्गारा रखा हो (ऐन्थ्रासीन), गर्म पानी पीने या सेंकनेसे तकलीफ घटती है। त्वचा सूखी रहती है और निकल जाती है। ठण्डी, नीली और सिकुड़ी हुई; ठण्डा लसदार पसीना; पार्चमेण्ट कागजकी तरह; सफेद आभा लिये और लेई जैसा; काली आभा लिये, रस-गुटीमय और जलन-भरा। ओंठके चारों ओर लाल रंगके दादकी तरह उद्भेद, उसमें बहुत जलन और दर्द मालूम होता है। विषैले फोड़े आदि—उसमें अंगारा छू जानेकी तरह जलन (युफोर्बि)। जखम या घावोंसे क्लेदमय रसका स्राव होती है। आमवातमें जलन और बेचैनी पैदा हो जाती है (एपिस, नेट्र-म्यू)। जलन-भरा कर्कटीया क्षत (Cancerous Ulcers)। फैली हुई शिराएँ सबमें (Varicose) आग छू जाने या जल जानेकी तरह जलन होती है। पीब पैदा होनेवाला पुराना जखम—बहुत सुस्ती, विलेपी (Hectic) ज्वर, लाल रङ्गकी जीभ, प्यास, बेचैनी और चिन्तामें रोगी भरा रहता है।

स्नायुशूल।—अविमिश्र (Pure) स्नायुशूल, जलन और बहुत तकलीफ, इसके साथ ही शारीरिक और मानसिक अस्थिरता; सविराम (रह-रहकर) ठीक समयपर होनेवाला स्नायविक; पहले ठण्डे प्रयोगसे आराम मालूम होता है, पर इसके बाद ही तकलीफ़ बढ़ जाती है। विश्रामसे वृद्धि; व्यायाम और गर्म प्रयोगसे घटना; पाकाशयका शूल; मलेरियासे उत्पन्न स्नायुशूल (Malarial Neuralgia—मलेरिया—आफि)।

निद्रा।—नींदमें चौंक उठता है। नींद खुल-खुल जाती है। मानसिक उद्वेगसे परिपूर्ण रहती है और बेचैन नींद रहती है। नींदके समय बीच-बीचमें श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है (अरम, स्पञ्ज) माथेके ऊपर बाँह रखकर सोता है। स्वप्न, भावना या चिन्तासे परिपूर्ण; अन्धड़-पानी, वज्राघात, अग्नि, काला पानी और अन्धकारके सपने देखता है।

ज्वर।—आक्रमणके पहले—सरमें चक्कर आना; सरमें दर्द, जम्हाई; प्रत्यङ्गोंका फैलाना (अँगड़ाई लेना); सारे शरीरमें अस्वाच्छन्द्य मालूम होना, दुर्बलता, उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और डकार; आँतमें कतरनेकी तरह दर्द। शीतावस्था, प्रायः उत्ताप मिली रहती है या पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप पैदा होता है। शीतावस्थामें प्यास प्रायः नहीं रहती, यदि रहती भी है और रोगी पानी भी पीता है तो उससे जाड़ बढ़ जाता है और कै होनेकी तैयारी हो जाती है। छातीमें दबाव और यंत्रणादायक खाँसी। उदरका ऊपरी प्रदेश वायुसे भरा रहता है, वेदना, उद्वेग, अस्थिरता और नख सब नीले मालूम पड़ते हैं, मानो उत्ताप या उत्तापावस्था बिलकुल होती नहीं है या जाड़ा और शीत पर्यायक्रमसे पैदा होते हैं अथवा अत्यन्त उत्ताप, विकार, अचेतनावस्था और माथेमें दर्द, बेचैनी और उद्वेग; सारे शरीरमें टपककी तरह दर्द (लिलि-टाई, जिङ्क); बार-बार थोड़ा या बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है. वक्षस्थलमें भार या दबाव मालूम होना और श्वास-प्रश्वास तेज़ तथा कलेजेमें धड़कन हुआ करती है। बहुत देर बाद पसीनेवाली अवस्था पैदा होती है या पसीना बिलकुल ही नहीं होता। पसीनेवाली अवस्थामें प्यास बहुत अधिक रहती है और उत्तापावस्थामें तकलीफ बहुत घट जाती है। विज्वरावस्थामें (बोखार छूट जाना) प्रायः स्पष्ट नहीं मालूम होती। चेहरा उतरा हुआ पीला; आँखें और गाल दोनों धँसे; मिट्टीके रंगके दोनों ओठ पीली आभा लिये; मुँहका स्वाद बिगड़ जाता

है या नीला हो जाता है—विशेषकर भोजनके बाद जीभका रंग सफेद और सूखा अथवा पीला लेप चढ़ा हो जाता है; दोनों ओंठ सूखे, मलिन, फटे और पपड़ी जमेसे हो जाते हैं। कभी-कभी भूख ज्यादा लगती है; खानेपर मिचली और उत्ताप पैदा हो जाता है और उसकी परितृप्ति यदि न की जाये तो जी एकदम खराब मालूम होता है। मल पतला; दोनों कोखोंमें सूजन, विशेषकर बायें कोखमें; पेट फूलना; पेशाब थोड़ा और गदला; दोनों पैर फूले और शोथयुक्त मालूम होते हैं; त्वचा पीली और लसदार पसीनेसे ढँकी रहती है। नींद नहीं आती, खासकर ज्वर आनेके पहलेवाली रातमें (आक्रमणके पूर्ववाली रातमें बहुत बेचैनी—सिङ्कोना; रोग आक्रमणके पहले दिवस बहुत अच्छा मालूम होना—सोराइन)। वृद्धि—नित्य दिनके १-२ बजेके बीचमें और रातमें १२—२ बजेके मध्यमें (नित्य दिनके ३ बजनेके समय—एपिस, सिङ्कोना, नक्स, पल्स, सैबाडिला)। ज्वरावस्थामें हड्डियोंमें, कमरके पीछे और ललाटमें दर्द मालूम होता है। नींदके आरम्भमें पसीना।

वृद्धि।—आधी रातके बाद या रातके १ से ८ बजेके भीतर जाड़ा लगकर रातमें, ठण्डी चीजें खाने बाद या ठण्डी चीजें पीनेपर, रोगवाली करवट या सर झुकाकर सोनेपर वृद्धि।

उपशम।—सभी लक्षण गर्म प्रयोगसे (सिकेलि इसके विपरीत है); परन्तु सरका दर्द उत्तापसे बढ़ जाता है; ठण्डे पानीसे नहानेपर कुछ देरके लिये घटता है (स्पाइजि); जलन-भरी यन्त्रणा उत्तापसे घटती है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न—कैम्फर, चायना, फेरम, ग्रैफाइ, हिपर, आयोड, इपिका, नक्स, सेम्बु, टैबेकम, विरेट्रम; अनुपूरक—ऐलियम, सैटाइवा, कार्बो-वेज, फास, पाइरोजिनियम। तम्बाकू खाने, मदात्यय (Alcohlism); समुद्रमें नहाने, कृत्रिम उपायसे जीर्ण खाद्य आदिका भोजन; मुर्दा चीरनेके समय उसी अस्त्रके द्वारा अपने शरीरको काटना, पीठके फोड़े आदि विष दूषित खूनसे उत्पन्न और विषैले कीड़े आदि काटनेकी वजहसे या डङ्क मारनेकी वजहसे पैदा हुए रोग आदिमें अत्यन्त लाभदायक है।

सदृश।—ऐकोन, ऐपोसाइन, आर्जेण्ट-नाई, बेलेडोना, बिस्मथ, कैल्क, कैनाब, कार्बो-वेज, चायना, फेरा, हायो, इपिका, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, फास, पल्स, रास, सिलि, टैबेक, वेरेट।

शक्ति।—३री दशमिकसे १००० शततमिक क्रम। पुराने और कठिन रोगोंमें कभी-कभी इससे भी ऊँचा क्रम लाभदायक होता है।

क्रियाका स्थितिकाल।—६० से ९० दिन।

आर्सेनिकम ब्रोमेटम

(ARSENICUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोमाइड आफ आर्सेनिक।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासा और बहुमूत्र रोगमें लाभ होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह कच्छु विष (Psora) और उपदंश विष (Syphilis) दूषित धातुकी एक प्रतिषेधक दवा है। दाद, चकत्ते और उपदंशसे उत्पन्न उपमांस (Excrescenes), ग्रन्थिमय अर्बुद, ग्रन्थियोंका कड़ा हो जाना, कर्कट रोग, कशेरुकाके भीतरकी मज्जाका क्षय हो जानेकी वजहसे शरीरकी सञ्चालन शक्तिका लोप हो जाना या लोप होनेका उपक्रम; दुरारोग्य सविराम ज्वर (कैल्के-आर्स, बैसिलाइन) और बहुमूत्र वगैरह रोगोंमें यह अत्यन्त लाभदायक है। चेहरेपर पाटल व्रण (Acne Rosacea) और नाकके ऊपर नीली पीली फुन्सियाँ या दाने (Papules) वगैरहमें इसकी (कार्बो-ऐन ; जरायु रोगकी वजहसे व्रण आदि—हाइड्रोकोटाइल ; शराब पीनेकी वजहसे—ऐण्टि-क्रूड, नक्स-वोम ; अत्यन्त लाली और खुजलाहट, रासटक्स ; नीलिमा लिये—ऐगार ; दुरारोग्य—आर्स-आयोड, ऐण्टि-टार्ट) विशेष क्रिया है।

शक्ति।—निम्न-क्रम व्यवहार करना चाहिये।

आर्सेनिकम हाइड्रोजेनिसेटम

(ARSENICUM HYDROGENISATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें गलाया जाता है। इसके बाद सुरासारका व्यवहार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—विसूचिकाकी हिमाङ्गावस्था ; हिचकी ; रजोरोध ; पित्तज्वर इत्यादिमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इसके द्वारा आर्सेनिककी तरहके ही लक्षण पैदा हुआ करते हैं, पर आर्सेनिकके लक्षण प्रबल होते हैं और बहुत ही तीव्र भावसे प्रकट होते हैं। रक्तशून्यता, उद्वेग, निराशा, खूनका पेशाब, लिङ्गमुण्ड और आवरकपर पीवभरी फुन्सियाँ (Pustules) और गोल चकत्तेकी तरह जखम वगैरह अवस्थाओंमें लाभदायक हैं। हैजा, जीवनी-क्रियाका एकदम अवसाद या हिमाङ्ग अवस्थामें इसका उत्तेजक रूपमें प्रयोग होता है।

लक्षणावली

मन।—मानसिक उद्वेग, रोगी समझता है, कि उसकी मृत्यु बहुत पास आ गयी (ऐकोन, एपिस, आर्स, लैके, डिपलो, कैनाब-इन, हाइड्रेस, पेट्रोल, फाइटो, पोडो, सिलि) ; अपने आराम होनेके सम्बन्धमें निराशा (लैक-कैन, ऐसिड-फास, सिफिलिनम)।

मस्तक।—सीढ़ी चढ़नेके समय सरमें चक्कर आना (बोरैक्स, कैल्के-आस्ट्र, सलफर)। माथेपर मानो कोई एक भार दबाया हुआ है।

आँख।—पीली आभा लिये गड़हेमें धँसी और उसके चारों ओर चौड़ी नीली रेखा (आर्स, सिना, क्यूप्रम, डिजि, हायोसा, ओपि, वेरेट ; गड़हेमें धंसी—आर्स, केम्फर, कार्बो-वेज, लोरो, सिकेल, वेरेट)। चेहरा देखनेमें बुड्ढोंकी तरह और यन्त्रणा-व्यंजक।

नाक।—भयानक छींक (आर्स, कैलोड, साइक्ले, डालका, सिपा, क्रियो, लैके, स्क्विला, स्टैफ) और नाक इतनी ठण्डी रहती है, कि उसे गर्म कपड़ेसे ढँक लेना पड़ता है (आर्निका, प्लम्बम, वेरेट)।

पाकाशय।—पेटमें जो कुछ जाता है, सब वमन हो जाता है (इपिक, इथ्यू, फेरम-म्यू, क्रियो, पेट्रोल) ; पानी या कोई भी पतले पदार्थ पेटमें नहीं रहते (ऐण्टि-टार्ट, आर्स ; बच्चा दूध पीते ही कै कर देता है—कैल्के, इथ्यूजा, इपिका) ; भयानक वमन, पेटमें कुछ भी रहता नहीं है (एपोमार, आर्स, क्यूप्रम, आयोड, जैट्रोफा, नक्स, वेरेट)।

पेशाब ।—खूनका पेशाब—दो तीन आउन्स खून निकलता है (कैनाब-सैट, पल्स, टेरिबिन्थ, चिनिन-सल्फ़, हैमा ; चोटकी वजहसे—आर्निका)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—ऊपरी त्वचा (Prepuce) और लिङ्गमुण्डपर पीव-भरे दाने पहले पैदा होते हैं और अन्तमें छोटा गोलाकार, छिछला (Superficial) जखम हो जाता है (मार्क, ऐसिड-नाई, थूजा ; मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें (Region of kidneys) असह्य दर्द, इसके साथ ही बार-बार पेशाबका वेग (बार्बेरिस, कैनाब-सैट, क्लिमैट, ओसिमम-कैनम, टेरिबिन्थ, हैमा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—एकाएक रजोरोध होकर आन्तरिक कम्प और इसके बाद ही हाथ-पैरमें छेदनेकी तरह दर्द, मस्तिष्ककी दुर्बलता, पतला लाल मल निकलना और रातमें खाँसी तथा ओकाई आना ।

ज्वर ।—प्रत्येक तीसरे दिवस दिनके ३ बजनेके समय (एपिस, सिङ्कोना, नक्स, पल्स, सैबाडिला)। भयानक शीत पैदा हो जाना, बार-बार जम्हाई आना ; मानसिक अस्थिरता, शीत मालूम होना और वक्षस्थलमें दबाव मालूम होनेके साथ-ही-साथ शीत आरम्भ हो जाता है, गर्दनमें दर्द और खींचन मालूम होना ; ललाट देशकी शिराओंमें दर्द । इसके बाद ही उत्ताप पैदा हो जाना ; हलका उत्ताप—यह रातके ८ बजेतक रहता है—मुखगह्वर एकदम गर्म—साथ ही प्यास और इसके बाद बहुत थोड़ा पसीना । पसीना आरम्भ होते ही रोगी सो जाता है (ओपि, पोडो, रास) और नींदमें चौंक उठता है । रात १२ बजने बाद फिर कोई तकलीफ़ नहीं रह जाती ।

सार्वाङ्गिक लक्षण ।—निचला अङ्ग दुर्बल और सुस्त । एकाएक बहुत सुस्ती पैदा हो जाना और जी मिचलाने लगना । त्वचा गह्वर खाकी रङ्गकी हो जाती है । कलाईके ऊपरतक बाँह, घुटनेतक दोनों पैर और नाक तथा दोनों भौंवें सुन्न हो जानेकी तरह मालूम होती हैं । नाड़ीकी गति रुक जाती है और जीवनका कोई चिन्ह नहीं रहता, पर हाथ-पैरोंमें हिलानेकी शक्ति रहती है ।

सम्बन्ध ।—सदृश—आर्सेनिक ।

दोषघ्न ।—एमोन-ऐसेटिक, नक्स-वोम ।

शक्ति ।—३य से लेकर ६ दशमिक क्रम ।

आर्सेनिकम आयोडेटम

(ARSENICUM IODATUM)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आफ आर्सेनिकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह विचूर्ण और मूल अर्कके रूपमें तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—चेहरेपर मुँहासा; लाल अर्बुद; हृदशूल; कलेजेका दर्द; वक्षमें अर्बुद; श्वासनलीका प्रदाह; कर्कटीय जखम; सर्दी; क्षयकास; दुर्बलता; शोथ; पाकाशयका प्रदाह; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; वक्षोदक रोग; स्वरनालीका प्रदाह; नाना प्रकारके चर्म-रोग; यकृत और फेफड़ेकी बीमारी; खसड़ा; कानसे स्राव; फेफड़ेका प्रदाह; आमवात; कण्ठमाला दोषयुक्त धातु; आँखोंका प्रदाह (आँख उठना); उपदंश इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहमें जब त्वचाको क्षय करनेवाला और खुजलानेवाला स्राव निकला करता है; निकला हुआ रस कभी-कभी बहुत बदबूदार और पानीकी तरह पतला होता है तथा जिस श्लैष्मिक-झिल्लीमें प्रदाह होता है, वह बहुत लाल हो जाती है, उसमें सूजन, जलन और खुजलाहट होती है, उस समय आर्स-आयोडसे विशेष लाभ होता है। बहुव्यापक सर्दी (Influenza); नये पैदा हुए शस्य आदिकी गन्धकी वजहसे पैदा हुए या वसन्त ऋतुमें होनेवाले सर्दीके ज्वरमें (Hay fever); पुराना पीनस रोग और मध्यकर्ण (कानका बिचला भाग) से पीब आदिका स्राव; नासारन्ध्र (नाकके छेद) के भीतरवाले तन्तुओंमें सूजन और कर्ण-पश्चात्नलीकी सूजन और बहरापन वगैरह लक्षणोंमें उपयोगी है। डाक्टर जे० एच० क्लार्क वगैरह चिकित्सकोंका कथन है, कि यह क्षय रोगवाले धातु रोगीकी एक महौषधि है। इसका निर्देशक लक्षण यह है कि—बहुत ही तेज़ शारीरिक अवसन्नता, तेज़ और उत्तेजनाशील नाड़ी, बार-बार बोखार और पसीना होना तथा तेजीसे मांस क्षय होती जाना या दुबलापन; उदरामय, पुराना फेफड़ेका प्रदाह और फेफड़ेमें फोड़ा होना; विलेपी ज्वर (Hectic fever); क्षीणता और रातके

समय पसीना। फेफड़ा और वायु तथा श्वासनलीमें (Bronchial Tubes) कभी-कभी पैदा होनेवाला प्रदाह; बहुत ज्यादा हरी आभा लिये पीला (Greenish Yellow) पीवकी तरह श्लेष्मा निकलना और श्वासका छोटापन, इसका एक प्रधान निर्देशक लक्षण है। डा० केण्टका कथन है, कि अगर शहदके रङ्गका गाढ़ा लसदार लेईकी तरह बलगम निकलता हो तो यह एक अव्यर्थ सिद्धिप्रद लक्षण है। ऊपर बताया हुआ कटु और त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव, इसी वजहसे पैदा हुए श्लैष्मिक-झिल्लीके स्रावमें ही दिखाई दिया करता है; कानसे भी इसी ढङ्गका स्राव या स्त्री-योनिसे ऐसा ही प्रदर-स्राव इसका निर्देशक लक्षण है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही शरीरमें थोड़ा स्पन्दन मालूम होना, खासकर वृद्ध मनुष्योंकी बीमारी; नींद खुलने बाद सरमें धीमा दर्द, मानो भीतरसे कुछ बाहरकी ओर ठेल रहा है; माथा हिलाने, झुकाने और पढ़नेके समय वृद्धि। दर्दके कारण माथा बहुत बड़ा मालूम होता है।

मुखमण्डल, आँख और कान।—ओठकी श्लैष्मिक-झिल्लीके कर्कट रोगसे विषाक्त जखम (Epithelioma); श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्योंकी आँखोंका प्रदाह। दुरारोग्य पाटल व्रण (Acne Rosacea); कानके प्रदाहके साथ बदबूदार जखम पैदा करनेवाला पीवका स्राव। कर्ण-पटह (कानका पर्दा) मोटा हो जानेके कारण बहरापन।

नाक।—नाकके पिछले और अगले छिद्रमें खुजलाहट और जलन पैदा करनेवाला तथा त्वचाको क्षय करनेवाला पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (ऐलियम-सिपा); बार-बार छींक (सिपा, आर्स, साइक्लामिन); नये पैदा हुए शस्य आदिकी गन्धकी वजहसे सर्दी ज्वर (Hay fever); पुरानी सर्दी—श्लैष्मिक-झिल्ली फूली और लाल; बहुत ज्यादा गाढ़ा पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव (पल्स); निर्मल वायु सेवनसे वृद्धि। नासारंध्रमें जखम।

गलेके भीतर।— तालुमूलमें जलन; जिह्वामूलकी ग्रन्थि भी आक्रान्त हो जाती है। तालुमूलीय झिल्लीका प्रदाह या गलनलीकी उपझिल्ली (Diphtheria) का प्रदाह, इसके साथ ही त्वचाको क्षय करनेवाला पीले रङ्गका गाढ़ा लेईकी तरह स्राव (कैलि-बाई, कैलि-आयो)।

नाड़ी ।—द्रुत, क्षीण और अनियमित ।

श्वास-यंत्र ।—यक्ष्मा-कास ; स्वरभङ्ग मिली यन्त्रणादायक खाँसी ; पीवकी तरह पीले रङ्गका कफ़ (Sputa) और उसके साथ ही हृत्पिण्डकी दुर्बलता, शीर्णता और सारे शरीरमें कमजोरी तथा पुराना उदरामय, पानीकी तरह काली आभा लिये मल। सामान्य खुसखुसी खाँसी और सूखा तथा रुका हुआ नाकका छेद। फेफड़ेका प्रदाह—रोगकी नयी अवस्था बीत जानेपर भी फेफड़ा साफ़ नहीं होता या फोड़ा पैदा हो जानेकी तैयारी हो जाती है। वायु-नली-भुज-प्रदाह (Bronchitis), ज्वरके साथ रातमें पसीना और पीवकी तरह श्लेष्मा निकलना ; यक्ष्माका लक्षण और कमजोरी मौजूद रहती है। छातीमें कसावटका भाव।

पाकाशय ।—भूख यथेष्ट रहती है ; भरपूर खाता है, पर इतनेपर भी रोगी दिनोंदिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, आयोड, सैनिक्यूला, सार्सा, बैसिलाइन)।

ज्वर ।—बार-बार आनेवाला बोखार और पसीना होना। रातमें इतना पसीना होता है, कि रोगीकी समूची देह भींग जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो स्नान कर लिया है। विलेपी (Hectic) ज्वर, रातमें पसीना और बहुत कमजोरी ; रोगीको भरपूर भूख रहनेपर भी दिनोंदिन क्षीण होता जाता है (टियुबर्क्युलिनम)।

मल ।—उदरामय ; मल पानीकी तरह पतला और काला ; रातमें बिलकुल नहीं होता ; परन्तु सवेरे जरा इधर-उधर टहलनेपर ही पाखाना लग आता है और पतले दस्त आने लगते हैं (ब्राई, नेट्र-सल्फ़, सलफर), इसके साथ ही आँतोंमें जखम।

त्वचा ।—सूखी, जलन और खुजली ; मछलीके चोंयटेकी तरह चर्म-खण्ड उड़ जाते हैं। सभी लसिका ग्रन्थियाँ फूली रहती हैं। सुस्ती लानेवाला रातका पसीना। श्मश्रु-पामा (दाढ़ीमें पैदा होनेवाला एक तरहका अकौत), इसके साथ ही पानीकी तरह रस बहना और खुजली—धोनेसे ही खुजली बढ़ती है। क्रमसे दुबलापन आते जाना या मांस-क्षय (सुखण्डी—Marasmus) रोग ; पुराना दुरारोग्य रोग ; अरुणिमा (Erythema)—जगह-जगहपर बिना फूला ही उद्भेद ; हाथ-पैरकी अंगुलियाँ सड़कर गिर जाती हैं ; सभी ग्रन्थियाँ फलीं ; बाघी।

ज्वर ।—अनमनीय पुष्ट नाड़ी ; निचली पलक और चेहरा फूला ; जीभ मोटी और सफेद आभा लिये और जीभका पार्श्व भाग तथा अगला भाग लाल ।

निद्रा ।—रातमें रोगी छटपटाता है, सो नहीं सकता ।

वृद्धि ।—ठण्डी हवा और तर जमीनमें (डायोडिम, नेट्र-सल्फ़, डलकैम ; जलीय वायुमें उपशम—कास्टिकम) ।

सम्बन्ध ।—सदृश—टियुबर्क्युलिनम, ऐलियम-सिपा, सैंगुइ-नाई, ऐरेनिया, नेफथेलिन, वैसेलिन ; कर्ण-स्राव—ऐ-नाई, क्रियो, अरम, कोना ।

दोषघ्न ।—बेलेडोना ।

अनुपूरक ।—फास्फोरस । सलफरके बाद उपयोगी है ।

शक्ति ।—३री से लेकर ६ठो दशमिक (पाकाशयकी बीमारीमें निम्नक्रम और भोजनके बाद ही इसका प्रयोग करना चाहिये—डा० क्लार्क) ।

आर्सेनिकम मेटालिकम

(ARSENICUM METALLICUM)

दूसरा नाम ।—मेटालिक आर्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया । — विचूर्ण, इसके बाद टिञ्चर ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— कब्जियत ; सर्दी ; अतिसार ; आँखकी बीमारी ; अर्श ; सर-दर्द ; खुजलाहट ; उपदंश ; कमरका शूल ।

उपयोगिता और आभास ।—धातुगत उपदंशज विषको पुनः जागरितकर रोगको आरोग्य करता है । इसके लक्षण—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होते हैं । दो या तीन सप्ताहका अन्तर देकर सर्दी हो जाती है ; रोगीको बहुत अधिक सुस्ती मालूम होती है । जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है और उसपर दाँतके दाग दिखाई देते हैं (मार्क, पोडो, युक्का, फिलेमिण्टोसा, रास,

स्ट्रैमो, मुखगह्वरमें बहुत दर्द रहता है और जखम भरा-रहता है (मर्क्यूरियस-कोर, कैलि-क्लोरिकम), रोगवाली जगह फूली मालूम होती है (बाँह फूला मालूम होना—वेरेट ; हाथ, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर—इथ्यूजा ; हाथकी तलहत्थी रातमें—आर्स ; कन्धा—कैलि-आयोड ; जानुदेश—ऐमोनियैकम)।

सम्बन्ध ।—तुलनीय—आयोड, मार्क, नेट्रम-कार्ब (उपदंश) ; नक्स (तन्द्रालुता), रास-टक्स (दर्द) ; सल्फ (नाड़ी) ; आर्स ।

दोषघ्न ।—बेलाडो ।

शक्ति ।—३री दशमिकसे ६ठीं दशमिक ।

आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम फ्लेवम और रूब्रम

(ARSENICUM SULPHURATUM FLAVUM AND RUBRUM)

(Yellow Sulphuret of Arsenic and Red Sulphuret of Ars)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है :—संन्यास, क्षय-रोग, अतिसार, प्रमेह, अजीर्णता, स्वरनालीका क्षयरोग ; चर्म्म-रोग ; व्रण, पाकाशयका प्रदाह, स्नायुशूल, विचर्च्चिका इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्वास-कृच्छ्रता ; जननेन्द्रियका चर्म-रोग। धवल रोगकी यह एक बहुत उत्कृष्ट दवा है। उपदंश विषकी वजहसे शल्क (सूखी मरी छाल) से ढँका चर्म रोग वगैरहमें लाभदायक है।

(Arsenicum Sulphuratum Rubrum—आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम रूब्रम)—कटि-स्नायु-शूल (Sciatica), बहुव्यापक सर्दी (Influenza) रोगके आक्रमणके बाद पैदा हो जानेपर और आर्सेनिक तथा सलफर दोनोंका ही वामाङ्गिक (बाएँ अङ्गका) लक्षण मौजूद रहनेपर विशेष लाभदायक है। इस लक्षणवाला विचर्च्चिका रोग (Psoriasis) ; व्रण और बहुव्यापक सर्दी रोग आदिमें इसके व्यवहारसे लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सलफर, कैल्केरिया ।

शक्ति ।—६ठीं दशमिकसे लेकर ३० शततमिकतक ।

आर्टिमिसिया वलगैरिस

(ARTEMISIA VULGARIS)

दूसरा नाम ।—वार्म उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निस्पन्द वायुरोग (Catalepsy); आक्षेप ; ताण्डव ; वाधक ; मृगी ; मस्तिष्कोदक ; मूर्च्छावायु ; कृमि रोग व रहमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—मृगी और कृमिके कारण बच्चोंमें जो अकड़न पैदा हो जाती है, वैसे रोगोंमें उपयोगिताके लिये यह बहुत ही प्रसिद्ध है । रोगका आक्रमण होनेके पहले ही उत्तेजना आ जाती है—वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मस्तक ।—आक्षेपिक सङ्कोचन और प्रसारणकी वजहसे मस्तक पीछेकी ओर और मुँह बाईं ओर निकल जाता है ।

आँख ।—रंगीन रोशनीसे सरमें चक्कर आने लगता है । पढ़ना-लिखना आदि नजरोंका काम करनेपर आँखमें दर्द पैदा हो जाता है । दृष्टि, मानो धुँधली सी होती जाती है । हाथकी अंगुलीसे रगड़नेपर या आँख बन्द कर लेनेपर थोड़ी देरके लिये आराम मिलता है ।

स्नायुमण्डल ।—मृगी रोग, भयानक मानसिक उद्वेग या डरकी वजहसे बीमारी, कई बार एकके बाद दूसरा आक्रमण होनेपर कुछ देरके लिये बन्द हो जाना ; इसके बाद फिर उसी तरह लगातार एकके बाद दूसरा आक्रमण होता है । इसके आक्रमणके बाद रोगी प्रायः सो जाया करता है । थोड़ी देरतक ठहरनेवाला मृगी रोग (Patil Mal) में भी यह बहुत फायदा करता है ; रोगी कहीं जाता-जाता एकाएक रुक जाता है ; शून्य दृष्टिसे एक बार चारों ओर देखता है । कई बातें बुदबुदाकर कहता है, इसके बाद उसी समय होशमें आकर चलने लगता है ; पर इस थोड़े समयमें उसे क्या हो गया था, इस

सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कह सकता। बच्चोंको कृमिकी वजहसे अकड़न (सिना, स्टैनम), क्या हुआ था, इस सम्बन्धमें कुछ भी नहीं कह सकता।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातमें रेतःपात हो जाना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—गर्भावस्थामें जरायुमें भयानक यन्त्रणादायक सङ्कोचन और प्रसारण होता है। प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द होता है। गर्भ-स्राव होनेका उपक्रम हो जाता है। ऋतुके समय बहुत अधिक रक्त-स्राव होता है। जरायुसे खूनका स्राव (Metrorrhagia)। ऋतुमें विकृति या गड़बड़ी रहनेकी वजहसे अपस्मार।

पसीना।—बहुत ज्यादा पसीना, बहुत ही सड़ी गन्ध-भरा—लहसनकी तरह गन्धवाला पसीना (पियाजवाली गन्धका—बोविस्टा)।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐब्रोट, ऐबिसिन्थ, सिना, कैमो, आर्निका, मिलिफोलियम। सदृश—साइक्यूटा, सिना, हेलिबो, बूफो, कास्टिक, कैमो, रूटा, सिनकोना, ब्रायो।

शक्ति।—१लासे ६ठाँ शततमिक क्रम।

एरम ड्रैकाण्टियम

(ARUM DRACONTIUM)

दूसरा नाम।—ग्रीन ड्रैगोन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़से टिञ्चर और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—घुंड़ी या काली खाँसी; कानकी बीमारी; स्वरभङ्ग; ध्वजभङ्ग; बहुव्यापक सर्दी; योनिमें खुजली; गलेका जखम; आमवात इत्यादि।

कान।—बिचले छेद (मध्य-विवर—Middle ear) में पूर्णता और बहुत तेज़ दर्द मालूम होना।

मुख-विवर।—सूखापन और जलन, बार-बार घूंट लेने या खाँसकर गला साफ़ करनेका आग्रह, गलेमें चय हुई त्वचा या खाल उधड़ जानेकी तरह

मालूम होना और उस स्थानमें स्पर्शका सहन न होना। गह्वर, लसदार, बदबूदार और स्वाद कड़वा; जीभपर मैल चढ़ी; मुँहका स्वाद बहुत कड़वा।

श्वास-यंत्र।—स्वरनालीमें अत्यन्त दर्द; आधी रातके समय श्वास-प्रश्वास रुक जानेकी तरह मालूम होना। छातीमें दबाव मालूम होना और दर्दके साथ श्वास-कष्ट—स्वरनलीमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है। कफ़ बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलता है और गाढ़ा पीला या सफेद आभा लिये और पीवकी तरह होता है। गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी हो और स्वरभङ्गके साथ श्वासरोध करनेवाली खाँसी आती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कैलेडियम; त्वचा—अरम-ड्राई इत्यादि।

शक्ति।—३रीसे लेकर ३० शततमिकतक।

अरम ड्रेकनकुलस

(ARUM DRACUNCULUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सारे शरीरमें विशेषकर हाथकी अंगुलीमें दर्द, ऐसा मालूम होना, मानो हाथमें बिछुआ लग गया है वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—१x—३०।

अरम इटालिकम

(ARUM ITALICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—माथेके पीछेकी ओर दर्द, तर हवामें बढ़ना; थोड़े भी मानसिक परिश्रमसे माथेमें धीमा दर्द, नाभि-प्रदेशमें शूलका दर्द, उदरामय, पाखाना होनेके समय मलद्वारमें दर्द, त्वचापर छोटे-छोटे उद्भेद, सुई बेधनेकी तरह दर्द और खुजलीके लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलीनय ।—ऐबासि, इथूजा, पिक्रि-ऐसिड ; ऐनाकार्डि ।

शक्ति ।—१x—३० ।

एरम मेक्युलेटम

(ARUM MACULATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकन मतसे ताजी जड़से मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—छोटी कृमि ; दमा ; सर्दी ; बहुव्यापक सर्दी ; नाकमें अर्बुद ; गुह्यद्वार या मलान्त्रका अपने स्थानसे हट जाना इत्यादि ।

लक्षणावली

मुखगह्वर ।—जीभ इतनी फूल जाती है, कि कोई चीज़ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है । जीभके ऊपर सुई बेधनेकी तरह दर्द और जलन । जीभ फूली और लाल, दर्द-भरी और उठी, हुई तथा प्रदाह-भरीकी तरह और काँटेसे ढकी रहती है (Pallilae—एरम-ट्राइफि) ।

गलेके भीतर ।—गलेमें बहुत सूजन ; जीभ, गलेके भीतर और अन्ननालीमें डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना, निगलना असम्भव हो जाता है ।

पाकाशय ।—खूनकी कै । पेट दबानेपर दबाव मालूम होता है ।

पेशाब ।—मूत्रनालीसे खूनका स्राव । पेशाब बहुत ज्यादा और स्वच्छ पानीकी तरह होता है ; जली हुई सींगकी तरह उसमें गन्ध रहती है और कुछ देरतक रख छोड़नेपर उसमें तली जमती है ।

श्वास-यन्त्र ।—खून मिला बलगम (कफ़—आर्निका, फेर, इपिका, नाइट्रम, फास, पल्स) ।

नींद और स्वप्न ।—दुर्दमनीय औंघाई, खासकर भोजनके दो-अढ़ाई दण्ड बाद ; नींदके समय चेहरा लाल हो जाता है ।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न ।**—दूध इत्यादि ।

शक्ति ।—३रीसे ३० शततमिक क्रमतक हमेशा व्यवहारमें आता है ।

एरम ट्राइफाइलम

(ARUM TRIPHYLLUM)

दूसरा नाम ।—वेट कोल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी डालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणकी अनुसार प्रयोग ।—मस्तिष्क-प्रदाह ; गलेका जखम ; प्रलाप ; उपझिल्ली प्रदाह ; ग्रन्थियोंका फूलना ; सरमें दर्द ; मुँहमें जखम ; जीभका फटना ; सान्निपातिक ज्वर ; स्वरभङ्ग इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—वेट कोल जातीय कई वृक्षोंमें प्रदाहको तरह एक प्रकारकी क्रिया उत्पन्न कर देनेकी शक्ति है और इसी वजहसे इसके द्वारा श्लैष्मिक-झिल्ली मात्रमें ही पहले प्रदाह और पीछे उनका ध्वंस संसाधित होता है। इस उद्भिदका रस कसैला होता है और इसी वजहसे यह गलेके बीचवाले उपझिल्ली प्रदाहमें या रोहिनी रोगमें (Diphtheria) लाभदायक होता है ; विषाक्त या आरक्त ज्वरमें और आन्त्रिक ज्वरमें इससे लाभ हुआ करता है। मुख-विवर, नासा-रन्ध्र और दोनों ओठोंकी त्वचा उड़कर लाल हो जाती है और उसमें खुजली पैदा हो जाती है। रोगी दोनों ओठोंको नोंच-नोंचकर खून निकाल देता है ; मुँहके कोनेमें जखम हो जाता है, फटी हुई त्वचा (Cracked) और उससे खून निकलता है। वह हमेशा नख और नाक खोंटा करता है। जीभ फट जाती है और उससे खून निकलता है। पेशाब बहुत थोड़ा होता है या रुद्ध (Suppressed) रुका हुआ रहता है। रोगी बेहोश होकर पायताने उतर जाता है। तकियेमें सर गड़ाया करता है। इससे पैदा हुए सभी स्राव त्वचाको क्षय करनेवाले होते हैं और मुँह, नाक आदिके रन्ध्रोंमें उत्तेजना (Irritation) पैदा कर देता है। सर्व-साधारणमें व्याख्यान देनेवाले वक्ताओंका स्वरभङ्ग, कण्ठ स्वरमें परिश्रम पड़नेकी वजहसे स्वरभङ्ग इत्यादि एरमके कई सिद्धिप्रद लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—बेचैनी, प्रलाप, नाकमें अंगुली प्रवेश करना और अन्यमनस्कता

मस्तक ।—तकियेमें सर गड़ाया करता है (बेल, हेलिबो, वेरेट)। सरमें दर्द, गर्म वस्त्र ओढ़ लेने या गर्म काफी पीनेकी वजहसे (कैमो, इग्ने, नक्स) बच्चा दर्दकी वजहसे माथेके पिछले भागमें हाथ रखकर रोया करता है। उसका मूर्द्धदेश ठण्डा और खुला मालूम होता है। माथेमें भयानक उत्ताप रहता है।

आँख ।—ऊपरी पलक काँपती है। रोशनीकी ओर देखना नहीं चाहता, मानो दृष्टि दोष हो गया है। मिचके भीतरसे चीजें देखता है।

नाक ।—सर्दी—श्लेष्मा कड़वा—खाल उधड़नेवाला (Excoriating) और पानीकी तरह तथा लगातार नाकसे स्राव हुआ करता है। नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है। नाक रुकी हुई मालूम होती है ; खासकर बाँयीं नाक। यद्यपि बराबर उससे पानी टपका करता है, पर रोगी मुँहसे साँस लेता छोड़ता है (ऐमोन-कार्ब, सेम्बुकस, सिनेपिस) ; सवेरे वृद्धि ; लगातार ऊपरके ऊपर छींक आती है, रातमें वृद्धि। कड़वा (Acrid) क्लेदकी तरह स्राव, नासारन्ध्र, नासाद्वार और ऊपरी ओंठकी खाल उधड़ जाती है (आर्स, सिपा)। सान्निपातिक ज्वरमें रोगी लगातार नाक खोंटा करता है, खोंटते-खोंटते नाकसे खन निकाल देता है, नासारन्ध्रमें अंगुली घुसाकर बराबर खोंटा करता है। गलेकी भीतर-वाली उपझिल्लीके प्रदाह रोगमें (Diphtheria) पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है। पानी आदि पीने बाद नाकसे निकला करता है (ऐनान्थि, लैके, मार्क, फाइटो)।

मुख-गह्वर ।—ओंठ खोंट-खोंटकर खून निकालता है ; दोनों ओंठोंके जोड़की जगहपर दर्द, पपड़ी और खून-भरा (विष दोष नष्ट होनेपर—काणिड्यु) हो जाता है। दाँतसे नख काट-काटकर खून निकाल देता है, सब श्लैष्मिक झिल्लियोंमें बहुत दर्द रहता है ; खाल उधड़ जाने और खून निकलनेपर भी रोगी उसे नोंचता ही रहता है। दर्दसे चिल्ला उठता है, तब भी काटना नहीं छोड़ता। मुख-विवर और गलेके भीतर दर्द बना रहता है और त्वचा क्षय हो जानेकी वजहसे रोगी खा-पी नहीं सकता (मार्क) ; सो नहीं सकता। लार, बहुत ज्यादा और कषाय (Corroding)—श्लैष्मिक-झिल्लीकी त्वचा

क्षय करनेवाला ; जीभ और गलेकी भीतरवाली झिल्ली बिदारी या खाल उधेड़नेवाली और रक्तस्रावशील।

गलेके भीतर और श्वास-यंत्र।—वक्ताओंके गलेका जखम (Clergyman's Sore throat), आवाज़ टूटी हुई, इच्छानुसार स्वर नीचा-ऊँचा नहीं किया जा सकता ; बार-बार परिवर्त्तनशील, वृद्धि—बोलने, वक्तृता देने, गाना गाने (आर्जेण्ट-नाइ, आर्निका, कास्टि, फास, सेलिन)। स्वरलोप, सम्पूर्ण, उत्तर-पश्चिमी हवाकी वजहसे (ऐको, हिपर) ; गाना गाने (आर्जेण्ट-नाइ ; कास्टि, फास, सेलिन)। जीभ और गलेमें तेज़ दर्द और गलेमें सड़ा घाव ; दर्दकी वजहसे खाना पीना नहीं चाहता। स्वरभङ्ग, सवेरे वृद्धि (कास्टि, हिपर)। हनुतलस्थ (Submaxillary) ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं (कैल्के, कैल्के-आयोड, लैक-कैन, मार्क, फाइटो, सिलि)।

ज्वर।—आन्त्रिक ज्वर (Enteric), रोगी लगातार अंगुलीका अगला भाग खोंटा करता है और नाकके छेदको खोंटकर खून निकाल डालता है ; बराबर छटपटाता रहता है और शय्यासे उठकर भागना चाहता है ; अचैतन्य भाव, सभी विषयोंमें (ताच्छिल्य भाव—ऐ-फास, ओपि) प्रकट करता है ; पेशाब रुकनेकी वजहसे मूत्रचार विकार (Uraemic Coma) होनेका उपक्रम हो जाता है (आरक्त ज्वराधिकारमें—ऐइलेन्थस)।

त्वचा।—आरक्त ज्वरमें रोगीकी नाकसे दो-तीन बार सूखी जैसी रूसी (मरी छाल) निकला करती है (ऐन्फलु, ओरिक, कोमोक्लेडिया)।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—मठा ; लैक-ऐसिड ; पल्स।

तुलनीय।—कैलेडि ; ऐइलैन्थ ; सिना (नाकमें अंगुली) ; ऐमोन-कार्ब ; ऐमोन-म्यूर ; आर्जेण्ट-नाइट्रि ; आर्स ; कैन्थ ; कैम्फ ; सिपा ; हिपर ; लैके ; मार्क ; मेजे ; नाइट्रिक-ऐसिड ; सैंगु ; सल्फ।

सदृश।—स्वरभङ्गयुक्त श्वासरोधक सूखी खाँसीमें—हिपर और ऐसिड नाइट्रिकके अनुपूरक रूपमें इसका प्रयोग होता है और सवेरेके वक्त होनेवाले स्वरभङ्ग और बहरापनमें हिपर और कास्टिकमका अनुगामी हुआ करता है।

शक्ति।—१२ से २०० शततमिक क्रम (बार-बार निम्नक्रमका प्रयोग करनेपर अक्सर नुकसान होता है—उच्चतम क्रमसे बहुत जल्दी और स्थायी होता है)।

एरण्डो मारिटैनिका

(ARUNDO MAURITANICA)

दूसरा नाम ।—इटैली देशका एक तरहका घास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—सर्दी ; बहुव्यापक सर्दी ; दाँत निकलना ; अतिसार ; कानसे स्राव ; दमा ; पाकाशयकी गड़बड़ीकी वजहसे मुँहका जखम ; पेशाबमें कितनी ही तरहकी तली या अधःक्षेप ।

उपयोगिता और आभास ।—सर्दी और दाँत निकलनेके समय बच्चोंके उदरामय रोगमें लाभके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है । मूत्रमें लाल बालू-भरी तली ; गण्डमाला दोषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (Scraphulous Ophthalmia) ; कानसे पीवका स्राव इत्यादि इसके विषयीभूत हैं ।

लक्षणावली

मन ।—अश्लील भावका उदय होना ; सहजमें ही हँसी आ जाना ।

मस्तक ।—लाली लिये फुन्सियाँ (Pustules),—ये पक और गलकर पपड़ी जमे घावमें परिणत हो जाती हैं । ललाटमें खुजली मालूम होना । मूर्द्धदेशमें सुरसुरी और चैतन्य लोप करनेवाला (Stupefying) दर्द । बच्चेके केश उड़ जाते हैं ; केशकी जड़ोंमें दर्द ; सरमें चक्कर आना—शय्यासे उठनेपर (कैल्के-फास, चेलिडो, चायना) ।

आँख ।—बच्चोंका कण्ठमाला दोषयुक्त (Scrofulous) आँखोंका प्रदाह ; ऊपरकी ओर देख नहीं सकता ; आँखके सफेद अंशमें या योजकत्वकमें कुटकुटी, खुजलाहट पैदा हो जाती है और जलन पैदा हो जाती है ।

कान ।—कर्ण-विवर (कानके छेद) में लगातार जलन और असह्य खुजली ; पीवका स्राव । बायें कानसे चमकीले लाल रङ्गका खूनका स्राव । कानमें ठुन-ठुन शब्द (कैल्क, कास्टि, क्रियो, नेट्र-म्यू, पेट्रोल, साइलि) ।

नाक ।—छींकनेपर नाकके छेदसे हरे रङ्गका श्लेष्मा-खण्ड निकलता है। सर्दी—पहले पानीकी तरह श्लेष्मा (इयुफ्रेशिया), इसके बाद हरे रङ्गका या जमा हुआ श्लेष्माका स्राव, घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना (सलफर, स्वाद-शक्ति और घ्राण-शक्ति लोप हो जाना—मैग-म्यूर)।

मुख-विवर और पाकाशय ।—जीभमें जलन, खुजली और प्रदाह, मसूढ़ेसे रक्त-स्राव ; भूख न लगना ; बहुत ज्यादा और लगातार प्यास बनी रहती है। खट्टी चीज़ खानेकी इच्छा ; वायु निकलने या डकार लेनेकी चेष्टा किया करता है, पर होता या आता नहीं है। सवेरे शय्यासे उठनेपर मिचली (ऐनाका, ग्रैफ, क्रियो. लैके, लाइको, नक्स, पेट्रोल, फास, सिलि)। पाकाशयमें सर्दी मालूम होना (आर्स, कोलचि, लैक्ट, नाइट्रम, ओलियम-ऐन, फास-ऐसिड, सल्फ, टैबेकम)।

अन्त्राशय ।—ऐसा मालूम होता है, मानो अन्त्राशयमें कोई जीव हिल रहा है (कैल्के-फास, कैनाबिस-सैट, क्रोकस-सैट, सैबाइना, सलफर, थूजा), मानो एक कृमि दाहिने कोंखमें रेंग रही है।

मल ।—मल पहले कड़ा पीछे पतला ; पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन। स्तन पीनेवाले बच्चोंको लगातार उदरामय (कैमो, कैल्क-फास), मल कुछ हरे रङ्गका ; अर्श और सरलान्त्रका अपने स्थानसे हटना (काँच निकलना)।

पेशाब ।—पेशाब करने बाद मूत्रनलीमें खुजली और जलन (पेट्रो-सेलिनम); लाल आभा लिये पेशाब (कैन्थरिस, लाइको, बार्बेरिस, पल्स, स्कियुला, फास, जिङ्कम) और लाल रङ्गकी बुकनीकी तरह पदार्थकी तली जमती है (Red Sandy Sediment—लाइको, सिपि, नेट्रम-म्यूर, पल्स, सिपि, स्कियुला, वेलि)।

जननेन्द्रिय ।—रमणके बाद रेतोरज्जुमें (Spermatic Cord) दर्द मालूम होना (क्लिमेट, पल्स)। रमणके बाद श्वासकृच्छ्रता ; ऋतु एकदम असमयमें होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है—स्राव बहुत दिनोंतक होता रहता है। काला थक्का-थक्का ऋतुस्राव हुआ करता है (कैक्ट, काक्यु, ग्रैफ, कैलि-नाई, मैग-कार्ब, प्लैट, जैन्थक्स)। मुँहसे कन्धेतक और विटपास्थि (Pubes) तक स्नायुशूल फैल जाता है और इतना जला करता है, मानो आगसे छू गया है।

श्वास-यन्त्र ।—खाँसनेपर छातीमें धड़कन होती है (इपिक, ऐण्टिम-टार्ट, ब्राई) ; क्षणभरमें स्वरलोप ; सूखी खाँसी और श्लेष्मा-भरा वमन (कैमो, इपिक, कोकस, कूप्रम, पेरिस, फास, सैम्बि, सेना, स्टैन)। गोलाकार भूरे रङ्गका जमा हुआ श्लेष्मा या बलगम (Sputa) निकलता है, स्तन-वृन्तमें जलन और दर्द (ग्रैफ, फास, सलफर) ; माताके स्तनमें अधिक दूधका सञ्चय होना, इसी कारणसे बाएँ स्तनमें दर्द (बेल, ब्राई, पल्स, रास)।

पीठ ।—गर्दनके बाईं ओर मानो एक कीड़ा रेंग रहा है। बायें अंस-फलक (Scapula) के नीचे दर्द। कटिवात (Lumbago—रास ; देह सञ्चालनसे उपशम—डालका ; बहुत देरतक माथा झुकाए रहनेकी तरह दर्द ; बार्बेरिस—अकड़न-जैसे भावसे बैठना, सोने या सवेरे नींद खुलनेपर वृद्धि ; रोडो—अन्धड़-पानीसे वृद्धि।

प्रत्यङ्ग ।—ऐसा दर्द, मानो कसकर बाँध दिया है। दोनों हाथ ठण्डे मालूम होते हैं। ऊपरी देशसे आरम्भ होकर कलाईसे निचली अंगुली और वहाँसे अंगूठेतक जलन मालूम होना। हाथ अकड़े और रस-भरी सूजन (Oedematous)। ऐसा मालूम होता है मानो हाथके ऊपर चींटी रेंग रही है। कटि-स्नायुशूलकी तरह (Sciatica) वंक्षण या पुट्ठेके स्थानसे लेकर गुल्फतक जलन करनेवाला दर्द, जानुदेशमें रस-भरी सूजन। बायें पैरकी पोटलीकी पेशीमें दर्द—खड़े होने और चलनेके समय। पैरमें बहुत ज्यादा बदबूदार पसीना (कैलि-कार्ब, लाई, ऐ-सैलि, सिलि)। पैरके तलवेमें जलन और सूजन, मानो रोगी बहुत दूरसे चलकर आ रहा है।

त्वचा ।—त्वचाका अंश विशेष लाल, मानो शरीरके लहसनके दागकी तरह (Nœves) ; वक्षपर और बच्चेके कानके पीछे जलन-भरे खसड़ेकी तरह उद्भेद। बच्चेके शरीरपर खुजलानेवाली फुन्सियाँ (Papules) और छाती तथा बाँहोंपर सड़नेवाले दाने निकलते हैं। कमर और कन्धेमें और कभी-कभी समूचे शरीरमें ऐसा मालूम होता है, मानो चींटी रेंग रही है।

ज्वर ।—पहले जाड़ा मालूम होना और फिर प्यास ; बच्चोंको उत्ताप मालूम होना—उत्ताप बहुत अधिक हो जानेपर ही शरीर नीला हो जाता है। बोखारके समय प्यास हमेशा मौजूद रहती है। शरीर हिलानेसे ही बहुत ज्यादा

पसीना होता है। कन्धे और छातीमें पसीना होकर ज्वर छूटता है और इसी समय सरमें चक्कर आने लगता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—लिलियम, टिस्यूलेण्टम (पैरकी पोटलीकी पेशियोंमें कसावटका भाव), सिपा, युफ्रेशिया, ऐनान्थि, सेब्राड, सोरिनम ।

शक्ति ।—३री दशमिकसे १२वीं शततमिकतक ।

ऐसाफिटिडा

(ASAFOETIDA DISGUNENSIS)

दूसरा नाम ।—हींग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह गोंदकी तरह पदार्थ वृक्षोंसे मिलता है, इनसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; अस्थि-सम्बन्धी रोग ; ताण्डव ; अतिसार ; अजीर्ण ; उदरामय ; सरदर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; बहुत चेतनता ; गुल्म-वायु या मूर्च्छा रोग ; आँखके तारकामण्डलका प्रदाह ; स्तनके स्रावके विकारसे पैदा हुई बीमारी ; पारेका विकार ; स्नायु-शूल ; मेदकी अधिकता ; आँखकी पुतलीका स्नायुशूल ; नकसीर फूटना ; उदरामय (पेट फूलना) ; जखम ; कर्ण-प्रदाह (कानके पर्दे) का प्रदाह ; अंगुलहाड़ा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—जिस स्नायु-प्रधान मनुष्योंके रसस्रावी फोड़े-फुन्सियाँ बाहरी प्रयोगसे आराम किये गये हों या उदरामय एकाएक बन्द कर दिया गया हो वगैरह स्राव रोध होनेकी वजहसे जो बीमारियाँ पैदा होती हैं और जिनके शरीरमें पारा और उपदंशका विष है और इसी वजहसे जिन्हें अस्थि या अस्थिवेष्टिनीमें जखम आदि हो जाया करता है, उनके लिये ऐसाफिटिडा बहुत उपयोगी है। इन सब रोगियोंका अवसाद वायु गुल्मवायु रोग हो जाया करता है। उनके जखम आदिको छूनेसे बहुत अधिक दर्द होता है और यह टपकका दर्द रातमें इतनी तकलीफ़ बढ़ा देता है, कि रोगीको बेचैन कर डालता है। प्रसूताओंके स्तनमें बहुत थोड़ा दुग्ध सञ्चय होता है

(ऐग्नस, लैक-कैन, लैक-डिफ्लो, रिसिनस)। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं, जो यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं :—(१) गुल्मवायु-ग्रस्तता, मानो एक गुल्म पेटसे ऊपर उठकर गला रोध करता है (Globus Hystericus)। (२) नाक और कानसे बदबूदार हरे रङ्गका पीबका स्राव होना। (३) बहुत दर्द और स्पर्श-असहनीयता ; अस्थिवेष्टमें सूजन और दर्द। (४) मुँहमें चर्बीका स्वाद ; खानेके पदार्थपर अरुचि ; मिचली। (५) बड़े कष्टसे डकार आती है, रोगीको पक्का विश्वास रहता है, कि डकार आनेसे बीमारी दब जायगी या आराम मिलेगा। (६) वक्ष और हृत्पिण्डमें दबाव मालूम होना, वायु निकलने बाद तुरन्त आराम मालूम होना। (७) कलाई, हाथ वगैरह अस्थिमय प्रदेशोंमें फोड़े निकलना और उससे पतला रस निकलना ; रगड़नेपर आराम मालूम होता है। (८) रोगवाली जगहपर भीतरसे बाहरकी ओर टपकको तरह दर्द होता है या फटने और शूल बेधनेको तरह दर्द होता है।

लक्षणावली

मन।—अस्थिर-मति ; कोई भी काम आग्रहके साथ अधिक देरतक नहीं कर सकता ; इधर-उधर घूमता-फिरता है ; कभी-कभी तो बहुत ही प्रसन्न होता है, पर किसी-किसी समय एकदम अस्थिर और उद्वेग-पूर्ण हो जाता है। हमेशा अपनी बीमारीकी चिन्तामें ही लगा रहता है (ऐण्टि-टार्ट, नक्स वोम)। क्रोध-प्रवणता।

मस्तक।—ललाटमें भीतरसे बाहरकी ओर बहुत दबाव मालूम होना, बाईं भौंमें एकाएक बेधनेकी तरह दर्द, अक्षि-कोटरगत स्नायुशूल (Orbital Neuralgia) ; दबानेपर और विश्रामसे आराम मालूम होता है। सरके दर्दका बढ़ना—सन्ध्याके समय घरके भीतर बैठने या सोनेके समय घटना—निर्मल वायुमें टहलनेसे।

आँख।—आँखके स्वच्छावरक (Cornea) में बड़ा बाहरी जखम, उसके साथ ही जलन और भीतरसे बाहरकी ओर निचोड़ने या सुई बेधनेकी तरह दर्द ; विश्राम या अंगुलीसे रगड़नेसे आराम मिलना। उग्रता या प्रदाह (Iritis) और आँखके भीतरका प्रदाह या उसके साथ ही रातमें बेधनेकी तरह दर्द या टपक-जैसा दर्द ; उपदंश दोषकी वजहसे उग्रता या प्रदाह (Syphilitic Iritis—आर्जेण्ट-नाई, कैलि-आयोड, ऐ-नाई, मर्क-कोर)।

नाक ।—बदबूदार क्लेद-स्राव। नाकके छेदसे सड़ी गन्ध आती है। पूतिनस्य या पीनस (Ozœna) रोग; नाकसे बहुत ही बदबूदार हरे रङ्गका पीव निकलता है। हड्डियाँ फूली या प्रदाहयुक्त हो जाती हैं (ऐनाक्य)।

गलेके भीतर ।—मूर्च्छावायु गुल्म (Globus Hystericus) (इग्ने, मस्कस, कैलि-कार्ब, लैक-डिफलो)। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीसे एक गोलाकार पदार्थ अन्ननलीकी राहसे उठकर गलेमें रुक जाता है; रोगी बार-बार घूंट लेता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी आँतोंकी क्रियाने विपरीत गति धारण की है और खाये हुए पदार्थ नीचेकी ओर न जाकर पाकाशयसे ऊपर अन्ननलीकी राहसे गलेमें आ रहे हैं।

पाकाशय ।—डकार, लहसुनकी तरह गन्ध और बहुत ही तेज़ या सड़ा स्वाद-मिला डकार। डकार सहजमें ही नहीं होती। मूर्च्छावायुकी वजहसे उत्पन्न (Hysterical) आध्मान—पेट बहुत फूला और फैला हुआ, ऊपरी पेटके स्थानपर टपककी तरह दर्द, दिनके १२ बजनेके समय डकार और उसके बाद ही जलीय पदार्थ गलेमें आ जाता है। यन्त्रणाजनक पाकाशयका शूल—पाकाशय और उदरको व्यवच्छेदक पेशी (वक्षोदर मध्यस्थ पेशी—Diaphragm) में काटने और जलनकी तरह दर्द। पेट फूलना—आध्मान-वायु (Flatus) ऊपरकी ओर उठा करता है। सभी द्रव्योंमें अरुचि।

अन्त्राशय ।—पेट फूलना, ऐसा मालूम होता है, मानो मरोड़ रहा है, इसके बाद ऐसी ही यन्त्रणाजनक भूख, मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचवाले स्थानपर या विटपके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानो कोई चीज़ भीतरसे धक्का दे रही है। उदरामय, इसके साथ ही बदबूदार मल, पेट फूलना और डकारके साथ ही खाई हुई चीज़का निकल जाना। पेटमें हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द और इसके साथ ही बहुत जोरकी आवाज़के साथ डकार। वायु सब ऊपरकी ओरसे निकलता है, नीचेसे बिलकुल ही नहीं निकलता। अन्त्राशयके ऊपरी स्थानमें दर्द, मानो सर्दी लग गई है या उदरामय आरम्भ होनेका उपक्रम हो गया है (ऐग्नस, ऐण्टि क्रूड, नाई, टेरिब, लिलि-टाई; प्रसवके बाद वेगका घटना—लिलियम)। राक्षसी भूख (आयोड-ऐब्रोट)।

श्वास-यन्त्र ।—वक्षस्थलमें दृढ़ आवद्ध भाव, मानो फेफड़ा अच्छी तरह फैल नहीं पाता (कैक्टस, ब्राई, फास)। वक्षस्थलका दबाव बढ़कर बहुत ही

यन्त्रणादायक भाव धारण करता है, श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा कर देता है और रोगीको बेचैन बना देता है। स्तन पीनेवाले बच्चोंको हूप खाँसी—घुंड़ी खाँसी (Croup) की तरह आवाज़; श्वास-प्रश्वासके समय कलेजेमें घड़घड़ आवाज़ होती है; बच्चा शारीरिक और मानसिक अस्थिरता प्रकट किया करता है; पेट और छाती बहुत गर्म रहती है, पेशाब फीके रंगका होता है। कलेजेकी धड़कन कुछ कम्पनकी तरह होती है। बैठनेपर बढ़ना (कार्बो-वे, मैग-म्यू)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्नायु-प्रधाना रोगिनी बीमारीके बाद जल्दी स्वस्थ नहीं हो पाती (कैस्टोरियम)। प्रबल रतीच्छा, ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी होता है, स्राव बहुत थोड़ा होता है और दो-एक दिन बाद ही बन्द हो जाता है। जरायु-प्रदेशमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द मालूम होता है और काटने और दबानेकी तरह दर्द मालूम होता है। जरायुका जखम, दर्द-भरा और उसमें स्पर्श सहन न हो। प्रदर—बहुत ज्यादा, हरा रंग, पानीकी तरह और बदबूदार क्लेद निकलना। दोनों स्तन दूधसे भर और फूल उठते हैं (गर्भ न रहनेपर भी)। स्तनमें दूधका अभाव—जरा भी छू लेनेसे ही दर्द होता है (लैक-डिफ्लो, लैक-कैन, रिसिनस ; अत्यन्त विषन्नताके साथ—एग्नस-कैस्टस)।

तन्तु-अस्थि।—सभी ग्रन्थियाँ कड़ी, फूली, गर्म, उसमें टपककी तरह दर्द। तेज़ चिलक मारनेकी तरह दर्द। उरुमें नश्तर लगवाने बाद नश्तरवाली जगहपर स्नायुशूल (ऐलियम-सिपा)। अस्थि-प्रदाह और अस्थिका जखम, रोगवाली जगह कुछ नीलापन लिये लाल रहती है और फूली रहती है। जखम, प्रान्तदेश नीली आभा लिये, कड़ा और थोड़ा भी छू देनेपर बहुत दर्द होता है। जखमसे साफ़ पानीकी तरह और बदबूदार स्राव होता है या क्लेद निकलता है।

त्वचा।—क्षत आदिमें बाहरी प्रयोगसे रस निकलना रोक देनेकी वजहसे उत्पन्न बीमारी; क्षत ऊँचा, कड़ा, किनारे नीले, स्पर्श सहन न हो और जरासेमें ही रक्त निकलने लगता है। पीब बहुत ज्यादा निकलता है। हरी आभा लिये पानीकी तरह पतला, बदबूदार और क्लेदकी तरह होता है, फ़ोड़ा यदि ज्यादा दिनोंतक रह जाता है, तो काला पड़ने लगता है। पुराने जखमके चिह्नोंपर ही फिर फोड़ा हो जाता है (ऐ-फ्लू, ग्रैफा, हिपर) और उसका रङ्ग काला हो जाता है। खुजलाहट, खुजलानेपर बन्द होना।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न—पल्स, कास्टिकम, कैम्फर ; सदृश ।—चायना, मार्क, वैलेरि, आर्जे-नाइट, लैक, डिफ्लो, मस्कस, अरम (हड्डीकी बीमारीमें), चायना, कास्टिकम, क्रोटन (हूप खाँसी—बैसिलाइन, ऐङ्गस्टियुरा, सिलि)। हिपर (चैतन्याधिक्य)। कैलि—आयोड, इग्ने, पल्स, थजा, वैले।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० तक।

क्रियाका स्थायित्व ।—६० दिन।

ऐसेरम यूरोपियम

(ASARUM EUROPEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे गाछ और जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मदात्यय ; मलद्वार और सरलान्त्रका अपने स्थानसे हटना ; सर्दी ; उदरामय ; वाधक ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; मूर्च्छा-वायु तथा सान्निपातिक ज्वरमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-प्रधान, उद्वेगशील, उत्तेजना-प्रवण या दूषित विमर्ष भाववाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। इसका रोगी रेशमकी रगड़का शब्द सहन नहीं कर सकता, उनकी पेशियाँ सब आक्षेप और विक्षेपयुक्त रहती हैं ; किसी गरहकी मानसिक उत्तेजना होनेपर वे काँप उठती हैं और हमेशा उन्हें जाड़ा लगा करता है। स्नायवीय विकारकी वजहसे बहरापन और दृष्टि-शक्तिका घटना वगैरह लक्षणोंमें ऐसेरम अत्यन्त लाभदायक है।

लक्षणावली

मन ।—मानसिक वृत्तियोंका धीरे-धीरे लोप होते जाना, जैसा नींद आनेके पहले हो जाता है। इसके साथ ही ललाटकी त्वचामें संकोचन मालूम होना। हवा खानेके लिये टहलनेके समय समझता है कि मानो वह प्रेतात्माकी तरह शून्यमें उड़ रहा है (लैक-कैन, स्टिक्टा, वैलि), परिश्रम करनेकी शक्तिका न रहना ; कोई काम करनेकी इच्छा न होना। रहता है दुःखित, पर उत्तेजना बनी रहती है।

मस्तक।—कनपटी या शंखदेशमें (Temporal) सर-दर्द मालूम होता है, मानो दोनों कनपटीकी शिराएँ माथेमें खिंच रही हैं, दिनके दो बजनेके समय निर्मल वायुके सेवनसे और सोनेसे घटना। बाईं कनपटीमें और कानके पीछे पीसनेकी तरह दर्द, खाने और सर झुकानेपर बहुत दर्द होता है, बैठनेपर घटता है। मूर्द्धाकी त्वचामें खींचन मालूम होती है।

आँख।—पढ़नेके समय बहुत दबावकी तरह दर्दकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखें आपसमें अलग-अलग हो रही है या बाहर निकल पड़ेंगी; ठण्डे पानीसे धोनेपर घटता है। ठण्डी हवा या पानी आँखोंमें बहुत आराम पहुँचाता है; दृष्टि-शक्तिकी दुर्बलता (नेट्र-म्यूर, फाइजस्टिग्मा)।

कान।—श्रवण-शक्तिकी बहुत अधिक प्रखरता, नये कपड़ेका खसखस शब्द या कागजकी खड़खड़ाहट सहन नहीं होती (फेरम, रैटान)। कानके छेदमें मानो खील ठोंकी हुई है या ठेपी लग रही है, ऐसा मालूम होना (ऐनाक)।

नाक।—सूखी सर्दी—नाकका छेद रुक जाता है। नाकके छेदमें खुजली; बहुत चेष्टा करनेपर छींक आती है और निर्मल पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है। भयानक छींक या चुतकार (साइक्लो, आर्स, युफ्रे)।

पाकाशय।—मिचली, कभी-कभी या लगातार मिचली (इपिकाक), भोजनके बाद मिचलीका बढ़ना; जीभ साफ़ (सलफर); गर्भावस्थामें मिचली (सिम्फोरि-कार्पस, ऐसिड कार्बोलि)। शराब पीनेकी बहुत अधिक इच्छा। रातमें शराब आदि पीनेके कारण उन्मत्तता पैदा होने बाद सवेरे नींद खुलनेपर पाकाशयमें भयानक पीसनेकी तरह या खोंचा मारनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना। बहुत सुस्ती मालूम होना और बार-बार जम्हाई आना (चेलिडो, इग्ने); मिचली, ललाटमें दबावकी तरह दर्द और इसके साथ ही मुँहमें पानी भर आना। हरी आभा लिये खट्टी कै। भूख न लगना या भोजनसे अरुचि।

अन्त्राशय।—गन्ध-हीन, डोरीकी तरह लम्बा गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है। कड़ा श्लेष्मा मिला पतला मल, इसके साथ ही छोटी कृमिसे भरा रुखड़ा श्लेष्मा निकलता है। पाखाना होनेके पहले और समय अन्त्राशय और मलान्त्रमें काटनेकी तरह अनुभव होना; वायु निकलनेपर उपशम।

श्वास-यंत्र ।—गलेमें गाढ़ा श्लेष्मा, खाँसकर निकालनेमें तकलीफ़ होती है (हाईड्रास, आर्जेण्ट-नाई, फास, नैट्र-कार्ब) ; खाँसनेके पहले गला साँय-साँय करता है। वायुनलीमें श्लेष्मा रहनेकी वजहसे बार-बार खाँसी ; गलेमें श्लेष्मा उठकर श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है और अन्तमें फिर खाँसनेपर श्लेष्मा निकलता है। क्षयकास ; रोगीकी खुसखुसी खाँसी।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—वायुकी अत्यन्त प्रधानताके कारण गर्भस्रावका उपक्रम। आर्त्तव निकलने बाद कमरमें इतना भयानक दर्द हो जाता है, कि रोगिनी साँस नहीं छोड़ सकती।

गर्दन और पीठ ।—गर्दन अकड़ना या गलेकी पेशीकी अकड़न (Stiff-Neck) या कोई भोथरी शलाका बेधी जा रही है। गर्दनकी पीठवाली पेशीमें सुन्न जैसा दर्द। कमरमें एक ओरसे दूसरी ओरतक छेदनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग ।—बाएँ हाथकी कलाईमें संकोचनका दर्द। चलनेके समय वंक्षण सन्धि या पुट्ठे (Hip-joint) में और उसके बीचमें असह्य दर्द मालूम होना ; पैरका तलवा सुन्नकी तरह मालूम होता है, उसपर भार नहीं दे सकता। हमेशा जाड़ा मालूम होना। हाथ, पैर, जानु और तलपेटमें बहुत अधिक शीत मालूम होना, गर्म घरमें और गर्म कपड़े पहने रहनेपर भी बहुत जाड़ा मालूम होना।

स्नायु ।—संध्याके समय इतनी कमजोरी और मिचली मालूम होती है, कि सोये-सोये उठनेपर उसको ऐसा मालूम होता है, मानो उसी समय गिरकर मर जायगा, बाध्य होकर सो जाना पड़ता है।

वृद्धि ।—ठण्डी सूखी या निर्मल निर्मेघ वायुमें (कास्टि), उपशम—मुँह या रोगवाली जगह ठण्डे पानीसे धोनेपर और जलीय तर हवामें (कास्टि)।

सम्बन्ध-सदृश ।—ह्रास-वृद्धिके सम्बन्धमें कास्टिकमके सदृश और श्लेष्मा-भरी डोरीकी तरह मलके सम्बन्धमें—ऐलो, आर्ज-नाई, मार्क, पोडो, ऐसिड-सल्फकी तरह।

दोषघ्न ।—कैम्फर, विनिगर।

तुलनीय ।—ऐकोन, ऐलोज, कैम्फर (विसूचिकाकी तरह उदरामय), कूप्रम, इपिक, नक्स, पल्स, सिपिया, विरेट्रम इत्यादि ।

ऐसिरमके बाद बिस्मथ, कास्टिकम, पलसेटिला और ऐसिड-सल्फका व्यवहार होता है ।

शक्ति ।—३य दशमिकसे ३० शक्ति (शततमिक) ।

ऐस्क्लिपियस सिरियैका

(ASCLEPIAS SYRIACA Or CORNUTI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी जड़से मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्राव ; श्वासनलीका प्रदाह ; सर्दीका बोखार ; शोथ ; बाधक या कष्ट-रजः ; सरका दर्द ; अजीर्ण ; पार्श्व-वेदना ; आमवात ; जरायुमें दर्द ; मूत्र-क्षार-जनित विकार ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-तन्तु, हृत्पिण्ड और मसाना (Kidney) में विकारकी वजहसे उदरी या शोथ रोग, कष्टरजः और पसीना तथा पेशाब आदिके बढ़नेकी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—वमन होनेके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो एक धारदार सलाईसे एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक बेधा जा रहा है । ललाटकी त्वचा बहुत संकुचित मालूम होती है । पसीना रुकनेकी वजहसे माथेका स्नायुशूल और इसके बाद ही बढ़े हुए आपेक्षिक-गुरुत्व (Increased specific gravity) मिला पेशाब होना ; मल मूत्राशयमें अवस्थानकी वजहसे सरका दर्द ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कष्टरजः (Dysmenorrhœa)—स्नायवीय, क्षणभर रहनेवाले प्रसवके दर्दकी तरह यन्त्रणादायक (उदरी रोगाधिकारमें) और इसके बाद बहुत थोड़ा स्राव हुआ करता है ।

सार्वाङ्गिक ।—उदरी (Ascites)—हृत्पिण्ड या मसानेकी बीमारीमें प्रतिक्षिप्त कारणकी वजहसे पैदा हुआ रोग और लाल ज्वरके बाद इस दवाका प्रयोग करनेपर पसीना और पेशाबकी मात्रा बढ़कर शोथ घट जाता है (ऐसिड-ऐसेट, ऐपोसाइन) उदरी रोगाधिकारमें रजोरोध ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सिलिसि, ब्रायो, कोलचि इत्यादि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम ।

ऐस्क्लिपियस ट्यूबरोसा

(ASCLEPIAS TUBEROSA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस गाछके मूल अर्कसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— टाक पड़ना ; दमा ; पैत्तिक ज्वर ; श्वासनली प्रदाह ; सर्दी ; उपदंश ; शूल ; खाँसी ; अतिसार ; आमाशय ; सरका दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; आँखोंका प्रदाह ; हृद्वेष्ट-प्रदाह ; पार्श्व-शूल ; वात ; गण्डमाला दोष इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—रस-प्रधान या वात-रोगग्रस्त धातुमें यह उपयोगी है । ठण्डी तर हवामें रोग आदिका बढ़ना ; कोना-कोनी भावसे अर्थात् बाएँ अर्द्धाङ्ग और दाहिने निम्नाङ्ग या इसके विपरीतवाले दोनों अंशोंमें आक्रमण करनेवाला वातका दर्द । पेशियों अथवा सन्धियोंकी वात-वेदना ; नुकीली सलाई घुसानेकी तरह, इसके साथ ही घोर लाल रङ्गका और गर्म पेशाब तथा त्वचामें पसीना ; तम्बाकू पीना सहन न होना ; खाँसनेपर ललाट और उदरमें दर्द मालूम होना ; मलनेपर आराम मिलना ; हैमन्तिक रक्तातिसार ; वक्षमें उत्ताप मालूम होना ; सूखी ; स्वरभङ्ग पैदा करनेवाली और संघातजनक श्वास-कृच्छ्रता ; स्वर-तन्तुके आक्षेपकी वजहसे (Croupy) श्वास-प्रश्वासमें व्याघात और स्वरनलीके रुकनेकी वजहसे (Pleura) में तेज़ दर्द ; सामनेकी ओर झुकनेपर आराम होनेवाला फेफड़ेका दर्द ; वक्षके बाएँ पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; वक्षको भेदकर दाहिनी ओर या बाएँ कन्धे तक फैल जाता है ; फुसफुसवेष्टमें शलाका बेधनेकी तरह दर्दवाला बहुव्यापक सर्दी रोग, इसमें

वक्षोस्थिके पीछे कतरनेकी तरह दर्द होता है ; वक्षोस्थिके पासवाले पँजरेके भीतरी प्रदेशमें स्पर्श-कातरता ; हृत्पिण्ड प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो कोई सुई बेध रहा है ; हृत्पिण्डमें संकोचनकी वजहसे दर्द ; गर्दनके बाईं ओर अकड़नके साथ स्तन-वृन्तसे नीचेकी ओर फैलनेवाला दर्द ; बहुत सुस्तीके कारण चलनेकी शक्तिका न रहना और प्रवल ज्वराधिकारमें गर्म पसीना वगैरह कई ऐस्क्लिपियस ट्यूबरोसाके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—मानसिक अवसाद और दुःखित भाव । स्मृति-शक्ति क्षीण, कोई विषय सोच नहीं सकता ।

मस्तक ।—खाँसनेके बाद ललाटमें दर्द मालूम होना (खाँसनेपर ऐसा मालूम हो मानो खोपड़ी फट जायगी—कैप्सि ; प्रत्येक बार खाँसनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है—नेट्रम-म्यूर ; खाँसनेपर माथेके पिछले भागमें दर्द मालूम होना—सलफर ; माथा झुकानेपर दर्द मालूम होना—हिपर) । दो-एक बार ही धूम्रपानमें धुआँ खींचनेपर नशा हो जाता है और दृष्टि क्षीण हो जाती है । ललाटके पीछे जड़ता मालूम होनेके साथ-ही-साथ ऐसा मालूम होना, मानो माथा उड़ा जाता है । ललाट (Fore-head) और मूर्द्धादेश (Vertex) में धीमा सर-दर्द ; शरीर या माथा हिलानेसे बढ़ना ; सोनेके बाद घटना । सवेरे नींद खुलनेपर सरमें दर्द, गर्म पानीसे दोनों पैर धोनेपर दर्द घट जाता है ।

नाक ।—सर्दी, पानीकी तरह स्राव और बार-बार छींक (युफ्रे, सैङ्गिविन, सिपा, नेट्रम-म्यूर) ।

मुख-विवर ।—गाढ़ी लेईकी तरह पीली आभा लिये लेपसे ढँकी जीभ, मुँहका स्वाद एकदम कड़वा और सड़ा (Putrid—जीभ पीली आभा लिये लेपसे ढँकी और उसपर दाँतका दाग—मर्क-बाई ; पीली आभा लिये लेप और लसदार—हाइड्रैस ; सवेरे पीली आभा लिये लेपसे आवृत्ति—वार्बस्कम ; सवेरे पीली लेपसे ढँकी, जड़का भाग बहुत मोटा—मेनिस-पार्माम ; पीले रङ्गकी लेपसे ढँकी—ओलियमयेक-ऐसेलाई) ।

पाकाशय और अन्त्राशय ।—मिचली और बार-बार वमनकी चेष्टा । दस्त और कै, इसके साथ ही बहुत सुस्ती । सर्दीसे उत्पन्न (Catarrhal) रक्तातिसार रोग, पीली और हरी आभा लिये मांड़की तरह मल, मानो आँतकी छालमें मिली हुई है। अत्यन्त बदबूदार, छोटी क्रिमि मिला गाढ़ा पीले रङ्गका मल; रातमें और जाड़ेके दिनोंमें वृद्धि या जब दिनमें गरमी और रातमें सर्दी मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो आँतोंमें आगकी लपटें जल रही हैं और मानो आँत बाहर निकल पड़ेगी। मलान्त्र (Rectum) और मलद्वारमें जलन तथा दर्द मालूम होना। भोजनके बाद पेट फूलना और तलपेटमें दर्द। पाखाना होनेके पहले आँतोंमें गड़गड़ाहट या पेट गड़गड़ाना (Rumbling), भयानक दर्द (ऐलो, एपिस, आइरिस, ऐसिड-म्यूर, नेट्रम-सल्फ़, पल्स, थूजा, वेरेट)।

श्वास-यंत्र।—श्वास-प्रश्वासके समय बार-बार फेफड़ेके नीचे दर्द मालूम होता है। वक्षोस्थिके पासवाले प्रदेशमें पञ्जरेके भीतरी स्थानमें अत्यन्त स्पर्श-कातरता और दर्द। फेफड़ेमें दर्द,—सामने झुकनेसे उपशम होता है। घड़घड़ शब्दवाली खाँसी (ब्रायोनिया); इसके साथ ही वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द; रोगीको बहुत सुस्ती रहती है और चलनेकी शक्ति नहीं रहती। झुककर बैठनेसे तकलीफ़ घट जाती है। फुसफुस आदिकी वेष्टिनीका प्रदाह (Pleurisy), बहुत दर्द; सन्ध्याके आरम्भसे अन्ततक दर्द-भरा (खासकर बाएँ फेफड़ेके नीचे); श्वास-प्रश्वास, खाँसी सूखी, क्षण प्रकोपयुक्त (थोड़ी देरतक रहनेवाली) और तकलीफ़ देनेवाली; बहुत थोड़ा कफ़ निकलता है; झुकनेपर सब लक्षण घट जाते हैं। वक्षके भीतर दर्द; बाएँ स्तनसे तेजीसे नीचेकी ओर फैल जाता है। गर्दनका अगला भाग अकड़ा हुआ, इसके साथ ही ललाट और खोपड़ीमें (मूर्द्धा-देशमें) दर्द; शरीर हिलानेसे वृद्धि। सोनेपर घटना; वक्षोस्थिके पीछेके स्थानपर भयानक तेज़ दर्द, दीर्घ निश्वास लेने या हाथ हिलानेपर बढ़ना। झुक जानेपर घटना। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचवाले अंशमें कतरनेकी तरह दर्द।

त्वचा और प्रत्यङ्ग।—रस-भरे दाने, फुन्सियाँ और पीव-भरे दाने समूचे शरीरमें निकल आते हैं। हाथ-पैरोंमें वातका दर्द। वाताश्रित वेदना, दाहिने अर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्गमें या इसके विपरीतवाले दोनों अंशपर हमला होनेपर—ऐगार, ऐण्टिम-टार्ट, स्ट्रैमो; दाहिने अर्द्धाङ्ग और बायाँ निम्नाङ्ग—ऐम्ब्रा, ब्राम, मिडोरिन, फास, ऐ-सल्फ़), पैशिक या सन्धिवात

(Articular), वात, दर्द सुई बेधनेकी तरह, इसके साथ ही घोर लाल और गर्म पेशाब और पसीना निकलना। गर्दन अकड़ना (Stiff Neck), बाईं, ओर ; बाईं ओर गलेका पिछला भाग अकड़ जाना।

सम्बन्ध।—सदृश—नेट्र-सल्फ, ब्राई, स्टैनम, ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, डालका।

शक्ति।—मदर टिंचर या मूल अर्कसे ६ठाँ शततमिक।

ऐसिमिना ट्राइलोबा

(ASIMINA TRILOBA)

दूसरा नाम।—पेपया वलगैरिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकाका एक तरहका पपीता। इसके पके, बिन पके फल, पत्ते, छाल और जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहका जखम ; दूषित फोड़ा ; अतिसार ; ज्वर ; आरक्त ज्वर ; ऐंठन इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—गलेका जखम, बोखार, वमन, लाल रङ्गके उद्भेद, जिह्वामूल और निम्न हनुके नीचेकी ग्रन्थियोंका फूलना और उदरामय वगैरह आरक्त ज्वरके लक्षण पैदा हो जाते हैं। बरफकी तरह ठण्डी चीजें खानेकी इच्छा (फास, वेरेट)।

लक्षणावली

मुख।—मुँहमें जखम ; गाँठोंका बढ़ना। अतिसार।

श्वास-यंत्र।—स्वर-भङ्ग, बात स्पष्ट नहीं कह सकता, बोलनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (कार्बो-वेज, हिपर, ऐसिड-नाई, फास), सामान्य सूखी खाँसी। वक्षके ऊपरी देशमें अत्यन्त दर्द, दाहिनी ओर बहुत दर्द, दाहिनी ओरकी अपेक्षा बाईं ओर अधिक।

त्वचा।—व्रण, वस्त्र आदि खोलनेपर खुजली आरम्भ हो जाती है (रियुमेक्स)। ज्वर ; बरफ आदि ठण्डी चीजें खानेकी इच्छा, प्यास।

सम्बन्ध ।—सदृश—कैप्सिकम, बेलेडोना ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० दशमिक ।

ऐस्पैरेगस आफिसिनैलिस

(ASPARAGUS OFFICINALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तोंसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मूत्राशय, मसाना और हृत्पिण्डपर इसकी प्रधान क्रिया होती है । इसलिये शोथ, हृत्पिण्डका अवसाद और वातका दर्द वगैरहमें इससे लाभ होता है । नयी सर्दी—पतले सफेद आभा लिये श्लेष्माके साथ बार-बार छींक ; गलेसे गाढ़े लेईकी तरह श्लेष्माका स्राव, बार-बार पेशाब और मूत्र-मार्गमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, पेशाब करने बाद जलन और ऐसा मालूम होना, कि लाल पेशाब निकल रहा है, पेशाब गदला ; पेशाबके बर्तनके नीचे तली चर्बीकी तरह लगी रहती है ; मूत्राश्मरी (Gravel) ; शिश्न और योनिके बाहरी स्थानपर खुजली ; वक्षमें जल सञ्चय ; कलेजेकी धड़कन ऊपरसे दिखाई देती है ; बैठनेके समय—बेचैनी ; इसके साथ ही शरीर हिलाने या सीढ़ीपर चढ़नेसे बढ़ना, छातीमें दबाव मालूम होना ; बायाँ कन्धा, बायाँ कण्ठतल और समूची बाईं बाँहमें दर्द और हमेशा गोदमें चढ़कर घूमनेकी बच्चोंकी इच्छा इसका प्रधान लक्षण है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—मस्तकमें गड़बड़ी । भयानक सर्दी, नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला सफेद आभा लिये श्लेष्माका लगातार स्राव हुआ करता है । गलेमें खाल उधड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है और खाँसीके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा निकलता है (हाइड्रैस, ऐल्युमिना, आर्जेण्ट-नाई, नैट्र-कार्ब, ऐण्टिकस-पलूवि) ।

पेशाब ।—बार-बार पेशाबका वेग और मूत्रद्वारपर महीन सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है ; पेशाब करनेपर जलन और ऐसा मालूम होना कि और भी पेशाब होगा । पेशाब निर्मल होता है, पर उसमें एक

तरहकी अद्भुत गन्ध रहती है। मूत्राशय-प्रदाह, काँखनेके साथ ही पीव और श्लेष्मा निकलता है। अश्मरी पैदा होनेका लक्षण (Lithiasis अर्थात् जैसे—विकारसे पथरी पैदा होती है—आर्टिका युरेन्स)। पेशाबके बर्त्तनमें चर्बीकी तरह तली लगी रहती है।

श्वास-यंत्र ।—बार-बार छींक और खाँसीका आना तथा कफ निकालनेकी चेष्टा, परन्तु सहजमें ही वायुनलीसे छूट नहीं जाता है। खाँसीके प्रकोपमें, रोगीको आसन छोड़कर उठकर खड़े हो जाना पड़ता है, पहली बारके भोजनके बाद आराम हो जाती है। छातीमें दबाव मालूम होनेके साथ सवेरे खाँसी और बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव। खाँसते-खाँसते ओकाई आ जाती है (ऐ-नाई, नेट्र-म्यू, लैक)। कण्ठमें बहुत ज्यादा श्लेष्मा सञ्चित होता है, वक्षमें लगातार श्लेष्माकी घड़घड़ाहट और कण्ठमें कर्कशता मालूम हुआ करती है। लिखनेके समय छातीमें दबाव मालूम होना ; शरीर हिलाने, सीढ़ी चढ़नेके समय और कभी-कभी रातमें (ओपि) श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है, रोगी शय्यासे उठ बैठनेके लिये वाध्य होता है (आयोड)। पहली बार भोजनके बाद (ऐसाफिटिडा, नक्स-मस, फास) घटती है। वक्षगह्वरमें जगह-जगहपर चिलक मारने (Shooting) की तरह दर्द, विशेषकर बाएँ पृष्ठ-फलकके नीचे (ब्राई, सिपि)।

हृत्पिण्ड ।—बैठनेके समय कलेजा धड़कना (कार्बो-वेज, मैग-म्यू, फास, रास, स्पाइजि), बाएँ कन्धेमें दर्दके साथ वृद्ध मनुष्योंकी हृत्पिण्डकी बीमारी। इसके साथ ही मूत्राशयमें विकारकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता।

प्रत्यङ्ग ।—पीठमें वातका दर्द, विशेषकर बाएँ कन्धे और हाथ-पैरोंमें, दोनों कन्धोंके बीचमें वातका दर्द (लोबेल-इन, लाइकोपो-वार्जि, वेरेट)। दाहिने उरु शिखरमें सन्धि टूटनेकी तरह या हाड़ खिसक जानेकी तरह (Dislocation) दर्द और उसी पैरमें लङ्गड़ापन। रातमें दोनों जङ्घाओंमें बेधने जैसा दर्द और इसके बाद बैठनेपर जानु-फलकके नीचे (Under patella) दर्द ; बाएँ उरुमें रगड़ खाने या चोट लगनेकी तरह दर्द, रोगीको चलने, खासकर सीढ़ी चढ़नेमें बहुत तकलीफ़ होती है। दाहिने पैरकी पोटलीकी पेशीमें बहुत तेज़ खींचनकी तरह दर्द ; सवेरे नींद खुलनेपर और इस पैरके फैलानेपर दर्द ; दोनों पोटलियोंमें ऐंठन (कैमो, क्यूप्रम ; नैफेल, प्लम्ब, सिकेल, सिलि, कैम्फो)।

सार्वाङ्गिक।—उदरी या शोथ—चेहरा मलिन, मोमकी तरह उजला, (ऐसिड-ऐसेट) और फूला हुआ। उद्वेग और यन्त्रणाव्यंजक मुखमण्डल। रातमें कलेजा धड़कना; दूरसे दिखाई देता है। छातीमें पूर्णता मालूम होना; परिमाणमें थोड़ा, घासके रङ्गका और बदबूदार पेशाब (ऐसिड-ऐसेट, डिजि, ऐस्क्लिप, सिरि, ऐपोसाइन, कैन)।

दोषघ्न।—ऐकोन, एपिस।

सम्बन्ध।—सदृश—डिजि, ऐस्क्लिपियस, सिरि, स्वाइजि, ऐसिड-ऐसेटिक, सार्सा, ऐपोसाइन-कैन, कानवेलेरिया इत्यादि।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम।

ऐस्पिडास्पर्मा कुइब्रेको

(ASPIDOSPERMA QUEBRACO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ब्रेजिल देशके एक तरहके वृक्षसे मदर टिंचर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बहुत तरहके दमा रोगमें इससे लाभ दिखाई देता है; क्योंकि यह श्वास-प्रश्वास बढ़ानेवाले केन्द्रको क्रिया बढ़ा देता है और फेफड़ेके भीतरको वायुमें अधिक परिमाणमें अम्लजान मिला देता है। किसो तरहका जोर लगाकर साँस लेनेका भाव इसका प्रधान निर्णायक लक्षण है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैल्के, कोका, आयोड, नक्स, फास, स्टैन)।

सदृश।—ताजा कोला; ऐमोन-कार्ब, कैल्के, स्टैन।

शक्ति।—प्रथम या द्वितीय दशमिक क्रम या विचूर्ण।

ऐस्टेकस फ्लूवियाटिलिस या कैन्सर ऐस्टेकस

(ASTACUS FLUVIATILIS or CANCER ASTACUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके केकड़ेसे इसका मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है; पैत्तिक लक्षण; शूल; खाँसी; अतिसार; ज्वर; ग्रन्थियोंका बढ़ना; सविराम ज्वर; कँवल; यकृतकी बीमारी; आमवात; स्नायुशूल; पाकाशयका विकार; दाँतका दर्द; अर्बुद।

उपयोगिता और आभास।—बहुत जाड़ा मालूम होना; यकृत विकार और आमवात वगैरह रोगोंमें ऐस्टेकस विशेष लाभदायक है। फूली हुई लसिका (Lymphatic) ग्रन्थिके साथ दुधिया खसड़ा रोग (Crusta Lactea); बच्चे और वृद्धोंकी गलेकी गांठका बढ़ना; यकृतको छूनेसे दर्द; कँवल; सफेद कीचड़की तरह मल; भीतरी जाड़ा और हवा सहन न होना; ओढ़ना उतारनेपर बढ़ना; सरमें दर्द; तमतमाया हुआ लाल चेहरा और भीतरी जाड़ेके साथ तेज़ बोखार; शरीरमें जगह-जगह सुरसुरी (Crawls) मालूम होना; नवीन अर्बुद आदि। शराबियोंका क्षुद्र सन्धिवात और दर्द वगैरह इसके कई प्रधान क्रिया-फल हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—प्रवल छींक और माथेमें तेज़ दर्द (खाँसनेपर माथेमें तेज दर्द—ब्राइ, कैप्सि, नेट्र-मूर, सल्फ)। दूधिया उकौत—माथेमें फोड़ेपर पपड़ी जमती है, इसके साथ ही ग्रन्थियोंका बढ़ना।

आँख।—आँखकी योजकत्वचा लाल; पीली आभा लिये (चेलिडो, फास, कैली)। पुतली फैली हुई; धुँधली दृष्टि। पढ़नेके समय पुस्तकमें जगह-जगह कितने ही रङ्ग दिखाई देते हैं।

कान।—दाहिने कानमें ऐसा मालूम होता है, मानो अन्य जातीय पदार्थ प्रवेशकर बहरापन पैदा कर रहे हैं (मैंगिनम)।

नाक।—बार-बार तेज़ छींक। रक्तस्राव, छः-सात दिनोंतक लगातार रक्तस्राव; चेहरा लाल और फूला हुआ; नाकसे शोणित-स्राव होनेके बाद बहुतसे लक्षणोंका घट जाना।

पाकाशय।—किसी तरहका आयास या मिचली नहीं मौजूद रहे, तथापि सब खाई हुई वस्तु के हो जाती है; भूख अच्छी रहती है; वमन होते ही फिर भोजनकी प्रवल इच्छा; पेटमें भार मालूम होना; पेटके ऊपरी प्रदेशमें जलन और इसके बाद मलद्वारमें वेग मालूम होना; अन्त्राशय—तलपेट

फूला और उसमें दर्द और नाभीके चारों ओर भी दर्द मालूम होता है। ऐसा बोध होता है मानो किसीने मुट्ठीमें पकड़ लिया है, इसके बाद ही पाखाना लग आता है। द्वादश अंगुलि नामवाली आँतमें (Duodenum) बहुत तेज़ दर्द, यकृतमें प्रदाह और स्पर्श सहन न होना ; बच्चोंका यकृत और पाण्डु-रोग (Jaundice), प्लीहा प्रदेशमें दबाव मालूम होना। आँतोंमें शूलकी तरह दर्द, इसके साथ ही मरोड़ और उठनेकी शक्तिका न रहना—टहलनेसे वृद्धि।

श्वास-यंत्र।—वायुनलीके निम्नदेशमें सुरसुरी या खुजलाहटकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाती है (फास, वायुनलीके ऊपरी अंशमें खुजलाहटसे खाँसी—कास्टि, हिपर)। वायुनली और वायुनलीभुजमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा एकत्र हो जाता है और वह गोंदकी तरह चिपक जाता है, सहजमें ही निकलता नहीं है। सवेरे खाँसी आती है और उसके द्वारा वायुनलीभुजमें श्लेष्मा उठता है और वक्षके भीतरकी त्वचा क्षय हुई-सी मालूम होती है ; श्लेष्माका रङ्ग कुछ पीली आभा लिये ; कफ़का स्वाद कुछ मीठा ; खून-मिला कफ़ और यक्ष्मा-कास रोग। टहलनेके समय स्थिर होकर खड़े होनेपर खाँसीका बढ़ना (इग्ने)।

त्वचा।—पीली या पाण्डु ; यकृतमें स्पर्श-असहिष्णुता और मिट्टीके रङ्गका पाखाना (हिपर, आयोड) ; पेशाबका रङ्ग सुनहला (कार्डिया मेरिफि-लाइन)। पेशाब, लार, आँसू और नाकसे निकला हुआ श्लेष्मा और रक्ताम्बु सभी पित्तमय। मल एकदम पित्त वर्जित और प्रायः सफ़ेद आभा लिये और भूरे रङ्गका। शरीरमें सब जगह पीले रङ्गका आमवात (Urticaria—आर्टिका-इयु) खुजलानेवाला दुधिया उकौता (Crusta Lactea), इसके साथ ही ग्रन्थियोंका बढ़ना। गर्दनकी गाँठका फूलना।

ज्वर।—भीतरी जाड़ा, हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती ; शीतकी वजहसे—शरीरका कपड़ा उतारनेपर बढ़ना (नक्स, हेलोड, कार्बो-वेज, लोरो, लाइको, सिपिया, वेरेट्रम)। तमतमाया हुआ और लाल चेहरा, सरमें दर्द, इसके साथ ही तेज़ बोखार (बेल, नक्स)।

सम्बन्ध।—सदृश—एपिस, मार्क, चेलिडोनि, आर्टिका, हेलोडर्मा, होमेरस, नक्स।

दोषघ्न।—ऐकोन।

शक्ति।—२री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ऐस्टिरियस रूबेन्स

(ASTERIAS RUBENS)

or

(URASTER RUBENS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहकी मछलीसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुख-व्रण (मुँहासा); संन्यास; कर्कटीया जखम; कब्जियत; आक्षेप; मृगी; सरमें दर्द; मूर्च्छावायु; लार बहना; जीभकी सूजन और सुन्न हो जाना; जखम; जरायुकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—प्रमेह-विषवाला विकृत धातु, शिथिल, मांस पेशी, श्लेष्मा-प्रधान और उत्तेजना-प्रवण प्रकृतिवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। स्नायविक विकारकी वजहसे स्नायुशूल, ताण्डव रोग और गुल्मवायु रोग वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं। कर्कट रोगमें (Cancer), विशेषकर स्त्रियोंके स्तनमें होनेपर, इससे विशेष लाभ हुआ करता है। स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही प्रबल रमणेच्छा रहती है।

लक्षणावली

मन।—उत्तेजनशील या चिड़चिड़ा स्वभाव; किसी तरहका मानसिक आवेग पैदा होनेपर उत्तेजित हो उठता है। प्रतिवाद बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता (ऐनाक्, कोनायम, अरम-म्यू; नेट्र, कैमो, हेलोनि, सिना)।

मस्तक।—सिरमें उत्ताप, मानो माथा आग भरी भाफ़से घिरा हुआ है, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय (ऐको, बेल, लेके, नक्स, ओपि)। संन्यास या सर्दी-गर्मी (Apoplexy) मुँह लाल—बेल; गाढ़ा लाल रङ्गका चेहरा—ओपि), नाड़ी अनमनीय, पुष्ट और उसकी गति तेज़। सरमें चक्कर आना, क्षणभरके लिये होनेवाला, चलनेके समय दोनों पैरोंका सुन्न मालूम होना (दोनों पैर मानो शून्यमें उड़ रहे हैं, ऐसा मालूम होना—नक्स-मस)। रातमें सोते सोते सिरमें बिजलीका धक्का लगने-जैसा मालूम होना और इसी वजहसे नींद खुल जाना। संन्यास रोगकी आशङ्का (आर्जेण्ट-मेट, एपिस, फ़ेरम-फास)। बहुत

कब्जियतके साथ सरमें अधिक रक्त-सञ्चय हो जाना। ललाटमें भयानक दबावकी वजहसे ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखें पीसी जा रही हैं। माथेके सभी अस्थि-फलक बहुत दर्द-भरे रहते हैं। सरके दर्दका लक्षण सवेरेके वक्त पैदा होता है, दिनको नहीं रहता और शामको फिर पैदा हो जाता है ; दोनों आँखें मानो पीछेकी ओर खिंच रही हैं—ऐसा मालूम होना (हिप, ओलियैन, वारिस), कानके छेदमें ऐसा मालूम होता है, मानो बिजलीकी सलाई बेधी जा रही है, कानमें ढन-ढन शब्द (बैराई, कैल्के)।

वक्षस्थल ।—स्तनमें कर्कट रोग (Cancer of the breasts), रातमें स्तनमें तेज़ अस्त्राघातकी तरह दर्द ; रोगवाले स्तनमें कसावट और खींचन मालूम होना ; स्तन फूले, जैसे ऋतुके पहले हो जाया करते हैं ; स्तन मानो भीतरकी ओर खिंच रहे हैं और ऐसा मालूम होता है, मानो स्तन गोल कड़े मांस-पिण्डसे भरे हुए हैं। इसके साथ ही रजःरोध (कोनायम ; स्तन मानो कड़े मांस-पिण्डसे भरे हैं, पर ठीक निश्चय नहीं होता कि कर्कट रोग है या नहीं—ब्राई ; सूजन एक भावसे रहनेपर—कैल्के-आयोड)। एक स्तनके ऊपर एक लाल फुन्सी हो गयी और फिर गल गयी, वही जखम क्रमसे समूचे स्तनमें फैल जाता है, उससे बदबू आती है, जखमके किनारे उठे रहते हैं, फुन्सियोंका आकार (क्षुद्र स्तनाकार) कड़ा और बाहरकी ओर घूमा रहता है और जखमकी तलीमें हलके लाल रङ्गका मांसांकुर (Granulations) रहता है। बायें वक्ष और बायें हाथमें स्नायुशूल। बायाँ स्तन ऐसा मालूम होता है, कि पीछेकी ओर खिंच रहा है और यह दर्द बायें कोषसे कनिष्ठा अंगुल-तक फैल जाता है। बायें हाथकी अंगुली सुन्न हो जाती है। बगलकी (Axillary) गांठ सब कड़ी और पिण्डमय हो जाती हैं।

स्नायवीय लक्षण ।—हाड़ खिसकना अर्थात् चलते समय हड्डी खिसक जाती है (ऐल्यू, ऐकिराम, बेल, कास्टि) ; पैरकी पेशियाँ इच्छानुसार काम नहीं करतीं अर्थात हाथ-पैर इच्छानुसार घुमाये-फिराये नहीं जा सकते (ऐसिटम, एल्यू, जेल्स, ब्राई)। अपस्मार या मृगी रोग (Epilepsy), आक्रमणके चार-पाँच दिन पहलेसे पेशियोंका स्पन्दन आरम्भ हो जाता है।

मलान्त्र ।—मलका कड़ापन, दुरारोग्य (प्लम्बम-ऐसेट), निष्फल वेग (ऐनाक), मल कड़ा और गोल गाँठ-गाँठ (ओपि, ब्राई ; मेषके मलका

तरह छोटी गाँठ-गाँठ—मैग-म्यू, कास्टि) उदरामय, मल पानीकी तरह, भूरे रङ्गका, वेगवान—तेज़ धारमें स्रोतेके आकारमें निकलता है (क्रोटन-टिग्, ग्रेटि, गैम्बो, जेट्रोफा, थूजा)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही प्रवल रमणेच्छा। जरायुका आवर्त्तन या घूम जाना अथवा स्पन्दन। जरायुसे मानो कुछ नीचेकी ओर धक्का दे रहा है। यन्त्र आदिके दबावकी वजहसे चलनेमें तलपेटमें तकलीफ़, मानो कभी-कभी वाहर निकल पड़ेगा। योनि-मार्ग एकदम रस-सिक्त रहता है, उससे रोगिनीको आराम मिलता है। अन्त्रशूल आदिकी यन्त्रणा; ऋतुके रक्तस्राव होने वाद तकलीफ़ घट जाती है (लैके, सिरियम-आक्सेल)। दोनों स्तनोंके मध्य भागमें छोटे खसड़ेकी तरह (Miliary) उद्भेद।

प्रत्यङ्ग आदि और त्वचा।—शरीरकी त्वचा लचीली और स्थितिस्थापक नहीं रहती। जगह-जगहपर खुजली पैदा हो जाती है। जखमसे सड़ी गन्ध-भरा क्लेद निकलता है। बगलकी गांठें (Axillary glands) फूली और कड़ी हो जाती हैं। हाथके अंगूठेसे कान्धे तक दर्द रहता है। केहुनी (Elbow) प्रदेशमें अस्त्र वेधनेकी तरह दर्द। वायें पैरके अंगूठेके कुछ ऊपर वातका दर्द, यह अंश लाल और गर्म मालूम होता है; जगह-जगहपर सूखी छाल या पपड़ी जमे जखम प्रकट हो जाते हैं।

वृद्धि।—शरीरके वायें पार्श्वमें; काफी पीनेपर; रातमें जलीय वायुमें।

सम्बन्ध।—सदृश—प्लम्ब-ऐसेट, कोनायम; कार्बो, आर्स, काण्डियुरे; मृगी रोगमें—वेल, कैल्के, सल्फर; रमणेच्छा आदिके सम्बन्धमें—म्यूरेक्स, सिपिया।

दोषघ्न।—प्लम्बम।

शक्ति।—१म दशमिकसे २०० क्रमतक।

ऐस्ट्रागेलस

(ASTRAGALUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तेके रससे मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—शून्यता या खालीपन मालूम होना। मुँहकी हड्डियोंमें दर्द ; सर-दर्द।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक कम्प अर्थात् ऐसा मालूम होता है, मानो सब स्नायु काँप रहे हैं (ऐसिड-सल्फ, इग्ने, ऐक्टिया, थाइराइ)। नींदमें छटपटाता है और कलहके सपने देखता है (ऐल्यू , कास्टि, कोनायम, लैके, नेट्र-म्यू, निकोलम, फास, सेलिन)। दोनों हनुकी हड्डोमें (मैग-कार्ब, प्लैट, कार्बो-ऐन, स्पाइजि) और चबानेवाली पेशोमें दर्द मालूम होना।

सम्बन्ध।—ऐसिड-सल्फ, कास्टि, कार्बो-ऐन।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

ऐथामाण्टा

(ATHAMANTA OREOSELINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मस्तककी जड़ता ; सर-दर्द ; अजीर्ण ; सरमें चक्कर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सरमें चक्कर आना ; कान बन्द हो जाना ; मुँह बेस्वाद और उसमें लार सञ्चय और ज्वराधिकारमें हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे वगैरह कितने ही लक्षण पैदा हो जाया करते हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सोनेसे उपशम (कैल्के-फास, कूप्रम, फेलैण्ड्रियम), शरीर हिलाने और चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके पीछेकी ओरसे एक तरहकी भाफ़ने निकलकर उसे बेहोश कर दिया।

कान।—ऐसा मालूम होता है, मानो रूईसे कान बन्द कर दिया गया है।

पाकाशय।—मुँह बेस्वाद, जितनी ही बार खाता है, उतनी ही बार यह भाव पैदा हो जाता है। रातमें खानेके पहले बहुत भूख लगती है और

मुँहका स्वाद तीता और तीती ही लार एकत्र होती है। डकार पूरी-पूरी नहीं आती, गलेतक आकर गायब हो जाती है।

प्रत्यङ्ग।—चलनेके समय ऊरुमें अकड़न मालूम होती है, मानो उसमें चोट पहुँची हो। हाथ-पर बरफकी तरह ठण्डे और रोगीका समूचा शरीर काँपा करता है और उसे इतनी सुस्ती मालूम होती है, कि वह बिना सोये नहीं रह सकता।

सार्वाङ्गिक लक्षण।—रोगीको मानसिक और शारीरिक सुस्ती मालूम होती है; परन्तु कुछ भी परिश्रम और बलका प्रयोग करनेपर भी उसे मालूम हो जाता है, कि उसकी कमजोरी केवल कल्पना-सम्भूत है। शरीरके कितने ही अंगोंमें जलन मालूम होती है; पर जिन अंगोंमें जलन होती है, वहाँ हाथ रखनेपर जलन घट जाती है।

सम्बन्ध।—सदृश। - इथूजा।

शक्ति।—१ले दशमिकसे ६ठा क्रम।

ऐट्रोपिनम

(ATROPINUM)

दूसरा नाम।—ऐट्रोपिन। बेलेडोनाका एक तरहका क्षार।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल रूपमें क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—आँखकी बीमारियाँ, संन्यास, पक्षाघात, दृष्टि-विभ्रम; पाकाशयका जखम; क्लोम-प्रदाह; गर्दन अकड़ना।

उपयोगिता और आभास।—यद्यपि यह बेलेडोनासे ही तैयार होता है; परन्तु इसकी क्रिया एक-नहीं है। यह अनुभूति-विधायक स्नायुमें चेतनाकी अधिकता पैदा कर देता है। आँखके ऊपर ही इसकी क्रिया अधिक दिखाई देती है। ऐट्रोपिनके रोगियोंको सब चीजें बड़ी दिखाई देती हैं (विपरीत—प्लेटिना); ऐसा मालूम होता है, मानो एक मैले पर्देके भीतरसे देख रहा है और नाना प्रकारकी भ्रम-पूर्ण चीजें देखता है; उसे दृष्टि-विभ्रम पैदा हो जाता है। बायें अङ्गकी अपेक्षा दाहिने अङ्गपर ही इसकी क्रिया

अधिक होती है, इसके द्वारा पुराना गलेका अकड़न रोग आराम हो जाया करता है।

सम्बन्ध ।—यह मस्कोरिन और ओपियमका दोषघ्न है। ओपियम और फाइसोस्टिग्मा इसका विष-दोष नष्ट करता है।

शक्ति ।—६ से ३० क्रमतक व्यवहारमें आता है।

आरेण्टियम

(AURANTIUM)

दूसरा नाम ।—साइट्रम-वलगेरिस, कमला नेबू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कमला नेबूकी छालसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—श्वासरोध भाव, बेहोश होने जैसा मालूम होना; सर-दर्द; स्नायुशूल; कलेजा धड़कना; बहुत रजःस्राव वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति ।—मूल अर्क से ३x क्रमतक व्यवहृत होता है।

आरम आर्सेनिकम

(AURUM ARSENICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सोना और संखियाको मिलाकर यह दवा तैयार होती है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— रक्ताल्पता; कर्कटीया जखम; मृत्पाण्डु; उपदंश; सरका दर्द; क्षय-कास।

शक्ति ।—६ठी और ३०वीं।

आरम ब्रोमेटम

(AURUM BROMATUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आफ गोल्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द,—अधकपारीका दर्द, रातमें डर मालूम होना ; सपनेमें घूमना वगैरह स्नायु-सम्बन्धी बीमारियाँ और हृत्पिण्डका फैलना, सारे शरीरकी शीतलताके साथ बेहोश हो जाना, मृदुनाड़ी, बहुत कलेजा धड़कना, चेहरा लाल वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—६ दशमिकसे २०० शततमिकतक ।

आरम आयोडेटम

(AURUM IODATUM)

दूसरा नाम ।—आयोडाइड आव गोल्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—पुराना हृद्वेष्ट-प्रदाह अर्थात् हृत्पिण्डकी वेष्टनीका प्रदाह (Pericarditis—हृद्वेष्ट—Pericardium और Itis—प्रदाह—ब्राई, मार्क-सोल, आर्स), हृदुपिण्डकी मुखावरक झिल्लीका (Valves) विकार ; सब धमनियोंमें सूजन और मोटाई, पीनस, वृक्क-रोग (Lupus—गले आदिमें एक तरहका विषैला जखम) ; अस्थि-प्रदाह, उपदंश और वृद्ध मनुष्योंका पक्षाघात ; डिम्बाधारमें कोषकी तरह अर्बुद पैदा होना ; जरायुकी पेशीमें टेढ़ापन वगैरह शारीरिक विकार आदिमें और वृद्धोंकी पक्षाघातकी तरह अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदिकी कार्यक्षमतामें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है ।

शक्ति ।—२x से ६ठाँ दशमिक विचूर्ण ।

आरम मेटालिकम

(AURUM METALLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खूब महीन सोनेके वर्कका चूर्ण बनाकर उससे ६ठें क्रमतक विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार किया जाता है।

उपयोगिता।—रक्त-प्रधान धातु; अस्थिर; उत्कण्ठापूर्ण; वृद्ध-व्यक्ति; स्थूलकाय; जीवनसे वितृष्णा; पारा और उपदंश विषसे जर्ज्जरित; खूब दुबला शरीरवाला बालक; निस्तेज; आत्महत्याकी इच्छा; गहरे विषादसे भरा; शोक, निराश-प्रणय वगैरह कारणोंसे उत्पन्न रोग या धातुमें उपयोगी है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक प्रमाणित हुआ है:—शराब पीनेका दुष्परिणाम; रजोरोध; बदबूदार श्वास; हृद्-शूल; दमा; अस्थि-विकार; स्थूलता; विषाद; कानकी बीमारी; विसर्प; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; ज्वर; प्रमेह; रक्तस्राव; अर्श; अण्डकोषमें जल-सञ्चय; कामला; श्वेत-प्रदर; गति-शक्ति देनेवाले यन्त्रोंकी बहुत-सी बीमारियाँ; पाराका विकार; नाककी सर्दी; रातमें भय; नकसीर; विषाद; पक्षाघात; यक्ष्माकास; धीरे-धीरे दुबला होते जानेवाला बच्चा; गण्डमाला; सूंघनेकी शक्तिका विकार; उपदंश; बच्चेका अण्डकोष छोटा होते जाना या उसमें पूर्णता न प्राप्त होना; जीभके ऊपर गुटिका (दाना); जरायुका कड़ापन; अर्बुद; सरमें चक्कर आना; दृष्टिमें व्याघात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—शरीरके रक्त, हड्डी और स्नायु वगैरहपर पारा या उपदंश विष जैसा विकार पैदा कर देता है, सोना भी ठीक वैसा ही विकार पैदा कर देता है, उपदंश वगैरहमें रोगीका मन एकदम विषादयुक्त, निराशा-पूर्ण रहता है और उसकी इच्छा आत्महत्या कर लेनेकी होती है—ठीक वैसे ही कई मानसिक लक्षण आरम मेटालिकमके सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण हैं। पारा और उपदंश विषसे दूषित व्यक्तिकी हड्डीमें नाना प्रकारके विकार पैदा हो जाते हैं, सभी तकलीफें रातमें बढ़ जाया करती हैं और रोगीको बेचैन कर डालती है, उपदंश विषसे तैयार की हुई सिफिलिनम दवाके लक्षण भी रातमें ही बढ़ते हैं। इसका एक प्रकृतिगत लक्षण यह है और इसमें आश्चर्यका विषय यह है, कि स्वर्णसे पैदा हुई यन्त्रणाएँ भी रोगीको रातमें ही इतनी

बेचैन बना डालती है कि यह आत्महत्या कर अपनी असीम यन्त्रणासे छुटकारा पाना चाहता है। पारा और उपदंश विष आदिके गौण ((Secondary) या आनुसङ्गिक लक्षणादिमें आरम बहुत लाभदायक है। देखने, सुनने, सूँघने स्वाद लेने सभी लक्षण बहुत तीक्ष्ण रहते हैं। आरमके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) अत्यन्त विषाद, आत्महत्या करनेकी इच्छा प्रकट करता है, अधिकांश स्थानोंमें शिराओंमें रक्तकी अधिकता पैदा हो जाती है और कामोन्मादका संयोग रहा करता है। कभी-कभी एकाएक कुछ आनन्द और स्फूर्ति रोगी प्रकट करता है, परन्तु अधिकांश समय ही उसमें गहरे विषादका भाव दिखाई देता है। (२) यन्त्रणा और शीत बिलकुल ही सहन नहीं होता। (३) कभी अरुचि और कभी-कभी राक्षसकी तरह भूख दिखाई देती है। (४) सरमें बहुत प्रचण्ड दर्द होता है; रक्त-सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे आँखोंमें चकचौंधी पैदा हो जाती है; चेहरा लाल हो जाता है और कामेन्द्रियमें बहुत उत्तेजना दिखाई देती है। (५) आँखोंके चारों ओर अस्थिगत वेदना, ऊपरसे नीचे और आँखके गोलेमें फैल जाती है; ठण्डे प्रयोगसे घटती है। (६) दाँतकी जड़में जखम या स्पर्श-असहिष्णुता न रहनेपर भी लार बहती है। मुँहसे सड़े पनीरकी तरह गन्ध निकलती है, विशेषकर बालिकाओंके यौवनारम्भके समय। (७) नाकसे बदबूदार खून-मिला और पीबकी तरह स्राव, सड़ी गन्ध निकलना और हड्डीमें बेधनेकी तरह दर्द। (८) चुचुकास्थिके जखम रोगमें; कानके बाहरी छेद पीब-भरे दिखाई देते हैं। पुट्ठेकी गाँठें फूल जाती हैं और कड़ी पड़ जाती हैं; पुट्ठेसे उसके भीतरतक खींचनकी तरह दर्द रहता है। अण्डकोषकी पुरानी सूजन और कड़ापन, गर्दनकी ग्रन्थियाँ सब कड़ी और फूली; छूनेसे बढ़ना। (९) माथा और वक्षमें रक्त-सञ्चयकी अधिकताके साथ ही जोर-जोरसे कलेजा धड़कना, रोगी बहुत कातर हो पड़ता है, उसके हाथ-पैर ठण्डे मालूम होते हैं और नाड़ी क्षीण, तेज़ और अनियमित गति धारण करती है। (१०) वक्षमें रक्त-सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे श्वास रोग (Asthma), रोगी अस्थिरता और असहिष्णुता प्रकट करता है; हृत्प्रदेशमें रह-रहकर चौंका देनेवाला भाव और चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है; रोगी लगातार इधर-उधरकर अपनी यन्त्रणाकी अधिकता प्रकट करता है और किसी तरह भी एक स्थानपर स्थिर नहीं रह सकता है। (११) पाकाशय और अन्त्राशयमें दर्द, इसके साथ ही हाथ-पैरमें शीतलता। (१२) पेशाब मठाकी तरह सफेद

दिखाई देता है, तुरन्त सड़ जाता है, झालकी तरह गन्ध रहती है और जितना जलीय-पदार्थ पीता है, पेशाब उससे कहीं अधिक होता है। (१३) जरायु-भ्रंश और जरायुका कड़ापन तथा सूजन। (१४) योनिमें जलन और खुजलीकी वजहसे अस्वाभाविक उपायोंसे खुजली मिटानेकी चेष्टा करती है; जननेन्द्रियमें जगह-जगहपर स्पर्श सहन नहीं होता।

लक्षणावली

मन।—जीवनसे वितृष्णा; हमेशा आत्महत्याकी चेष्टा और परामर्श (नफा; आत्महत्या करनेकी इच्छा, परन्तु मरनेसे भय मालूम होता है—आर्स, नक्स)। गहरा विषाद, सभी विषयोंमें घृणा और कलह-प्रिय। जीवन एक भार-सा मालूम होता है (सभी रोगोंमें)। अस्वाच्छन्द भावयुक्त, व्यस्त; मानसिक और शारीरिक परिश्रम अच्छा मालूम होता है; सभी काम जल्दी-जल्दी करनेकी इच्छा, विलम्ब असह्य (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, कैनाबिस-इन, कैमो, मिडोरिन, नक्स-वोम)। शोक, निराश-प्रणय, डर, क्रोध, प्रति बार मर्म-पीड़ा, विरक्ति, मनका क्रोध मनमें ही दबा रखना (स्टैफि) वगैरह मानसिक उद्वेगकी वजहसे बीमारी (मृत्युकी आकांक्षा और चिन्ताके साथ निराश-प्रणयकी वजहसे बीमारियाँ—कैल्के-फास, ऐक्टिया, हायो, इग्ने, लैके; शोककी वजहसे—कास्टि, कोलचि, इग्ने, नेट्र-म्यू, फास, प्लैट, स्टैफ; मनका क्रोध मन ही में दबा रखनेके कारण—लाइको, नेट्र-मूर, इग्ने, स्टैफ,-वेरेट, सिपि; डरकी वजहसे—जेल्सि, हाइड्रोफोब, हाइपिरि, ओपि, ऐसिड-फास; किसीकी बात सहन नहीं होती; अभिमानी; सामान्य प्रतिवादसे भी क्रोध आ जाना (ऐनाका, ऐष्टिरियस, अरम-म्यू-नेट्र, कैमो, सिना, काक्युलस, कोनायम, फेरम, हेलोनियस, लाइको); दिनोंदिन क्षय होनेवाला शिशु,—उत्साहहीन, उद्यमहीन, स्मरण-शक्ति दुर्बल, बालकोंमें जैसा आनन्द और फुर्त्ती रहती है, वैसी न रहना; अपुष्ट अण्डकोष (आयोड); समाजमें जानेसे भय—लोगोंके पास जाना नहीं चाहता। जवाबकी राह देखे बिना ही जल्दी-जल्दी सवाल किया करता है। रातके समय भयानक प्रलापयुक्त विकार और भ्रम देखना (Hallucination), मानो कुत्ता आ रहा है, मानो दीवारपर किसीका हाथ है। दरवाजेपर थोड़ी भी आवाज हुई कि डर जाता है। समझता है, कि वह इस पृथ्वीके अयोग्य है, वह कभी किसी काममें सफल नहीं हो सकता। दर्द एक स्थानसे दूसरे स्थानपर घूमा करता है

(आर्जेण्ट, कैल्के. फास, आर्स, जेलिस, टैबे)। अकेला नहीं रह सकता। "पुरुषोंके यकृत रोगमें और स्त्रियोंके जरायु-सम्बन्धी रोगमें हमेशा आत्महत्याकी चिन्ता दिखाई देती है"—डा० नैश।

मस्तक।—सरमें दर्दके साथ दुःखित भाव, बोलनेसे अनिच्छुक, सामान्य मानसिक परिश्रमसे ही सर-दर्द, केश उड़ जाना (खासकर उपदंश और पारा दोषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंका), सरमें भार मालूम होना और कानमें गुनगुन शब्द (बेल, कास्टिकम, ग्रैफा, नक्स, पल्स, सलफर), घरके बाहरकी हवा खानेके समय नहीं रहता, पर लौटकर घर आते ही फिर आरम्भ हो जाता है। ललाटमें भयानक दर्दके साथ सरमें चक्कर आना ; माथेके किसी एक पार्श्वमें आँखतक फैल जानेवाला धीमा, पर बार-बार चोट पहुँचा देनेकी तरह दर्द, दोनों भौंओंके बीचके प्रदेशमें और नासिका मूल (नाककी जड़) में टपककी तरह दर्द। अधकपारी या शिरार्द्धशूल। माथेके किसी एक ओरकी आँखतक फैलनेवाला धीमा और बार-बार धक्का देनेकी तरह दर्द।

आँख।—अर्द्ध-दृष्टि (Hemiopia)—सभी चीजोंका निचला आधा भाग दिखाई देता है (केवल दाहिना आधा भाग दिखाई देता है—लाइको ; बायाँ आधा भाग—लिथिया-कार्ब ; ऊपरी या निचला भाग—ऐसिड-म्यू)। बहुत अधिक रोशनीका भय (Photophobia—लिलियम, बेल)। चीज़का आधा भाग दिखाई देता है और दूसरा आधा अन्धेरेमें ढँका दिखाई देता है। पलकें लाल ; उनमें पीव-सञ्चय ; डङ्क मारने या सुई बेधनेकी तरह दर्द (ऐपिस) और खुजलाहट ; सवेरे आँखें सट जाती हैं (ऐल्यू, कैमो, युफ्रे, कैलि-कार्ब, लाइको, मार्क, पल्स, रास, स्टैफ)। पलकके केश झड़ जाते हैं। दो देखना (Diplopia) (बेल, हायो, नैट्र-म्य, ओलियैण्डर)। आँखकी पुतली लाल और मांस-भरी हो जानेपर धीरे-धीरे स्वच्छावरक झिल्ली (Cornia) में जखम हो जाता है। उसमें भीतरसे बाहरकी ओर पीसनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; दबानेसे बढ़ना।

नाक।—पूतिनस्य (नकसीर) या पीनस रोग, बहुत बदबूदार पीवका स्राव और ललाटमें भयानक दर्द मालूम होना। सर्दी, गाढ़ा अण्डलालकी तरह श्लेष्माका स्राव और बार-बार छींक (युफ्रे, साइक्ले, आर्स)। नासास्थिमें जखम, दाहिने पार्श्वकी नासास्थिमें और उसके साथ लगी हनुतक दर्दका

फैलना और स्पर्श असहिष्णुता। बाईं नासास्थिके भीतर बेधनेकी तरह दर्द, जो हनुतक फैल जाता है ; सभी तकलीफें रातके समय बढ़ जाती हैं। भयानक सड़ी गन्ध निकलती है।

कान।—कानसे स्राव या कानसे बदबूदार पीब (Otorrhœa), कानमें बहुत अधिक गुनगुन शब्द, निर्मल वायु सेवनके समय ऐसा बिलकुल नहीं होता, परन्तु घरमें प्रवेश करते ही फिर आरम्भ हो जाता है। कानके भीतरकी मैस्टायड अस्थिमें जखम (Caries of Mastoid), उसमें इतना भयङ्कर दर्द होता है, कि रोगी बेचैन हो पड़ता है।

मुखमण्डल और मुखविवर।—मुँहकी सभी हड्डियोंका प्रदाह ; गण्डास्थिका जखम, छेदने, बेधने, जलन करने या सुई बेधनेकी तरह दर्द, रातमें इस रोगका बहुत बढ़ जाना। मुँहसे भयानक बदबू निकला करती है। बालिकाओंके यौवनमें पदार्पणके समय (Puberty) मुँहसे एक तरहकी सड़ी गन्ध आया करती है। चेहरा फूला तमतमाया (नैट्र-स्यू), मानसिक उत्तेजना या परिश्रमसे बढ़ना ; नीली आभा लिये चेहरा। निगलनेके समय गलेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (हिपर, ऐसिड-नाई, डलिकस) ; कर्णमूलग्रन्थि (Parotids) में बहुत दर्द और उसमें स्पर्श सहन न होना। तालुकी हड्डीमें जखम—बहुत बदबू निकलती है।

श्वास-यंत्र और हृत्पिण्ड।—बहुत श्वास-कृच्छ्रता और रातमें श्वास-प्रश्वासमें व्याघात। बार-बार लम्बी साँस लेना, पर उससे भी उसकी तृप्ति नहीं होती। साँस लेनेके समय वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। कभी-कभी हृत्पिण्डकी गति दो-तीन मिनटतक रुकी रहती है और इसके बाद ही प्रबल वेगसे उछलनेकी तरह चलना आरम्भ हो जाता है। इसके साथ ही उदरोर्द्ध प्रदेशमें सुस्ती मालूम होना (सिपिया ; कभी-कभी हृत्पिण्ड उछलकर पंजरेमें आघात करता है)। बहुत तेज़ हृद्स्पन्दन, इसके साथ ही उद्वेग तथा शारीरिक परिश्रम करनेपर माथा और वक्षमें अधिक रक्त-सञ्चय हो जाना—हृत्पिण्डकी गति क्षीण, तेज़ और अनियमित और गर्दनके बगलकी (Carotid) शङ्खदेशीय या कनपटीकी (Temporal) पार्श्वकी धमनीकी गति स्पष्ट मालूम होती है (बेल, ग्लोनोइन)। वक्षमें रक्त-सञ्चय अधिक हो जानेके कारण दमा ; रातमें और वायु सेवनके लिये टहलनेके समय छातीपर भार मालूम

होना ; वक्षःस्थलमें कसावटके भावके साथ कभी-कभी श्वास-रोधक भाव ; मुखमण्डल नीली आभा लिये लाल ; हृत्स्पन्दन आरम्भ होनेपर रोगी बेहोश हो जाता है। हृत्पिण्डमें मेदापजनन (Fatty Degeneration—फास)।

पुं-जननेन्द्रिय।—शिथिल शिश्न (Penis) से मूत्राधारकी मुखशायी ग्रन्थिका रस (Prostatic fluid) निकलता रहता है, मानसिक विषादके साथ दाहिने अण्डकोषकी सूजन, छूनेपर उसमें पीसनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बच्चोंका अण्डकोष पुष्ट नहीं रहता अथवा धीरे-धीरे क्षय होता जाता है। बहुत दिनोंकी या पुरानी (Chronic) इसके साथ ही रेतोरज्जु और कोषमें तेज़ दर्द (स्पंजिया)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु स्थान-भ्रष्ट और कड़ा, बहुत ऊँचेपर रखी चीज़ उतारनेकी वजहसे या काँखनेकी वजहसे (पोडो, रास) या जरायुके अत्यन्त बढ़ जानेके कारण (कोनायम) चोटसे उत्पन्न और संकोचनकी तरह दर्द ; ऋतुके समय दर्दका बढ़ना। बन्ध्यात्व—उपदंश विषसे दूषित धातुवाली स्त्रियोंका या जो स्त्रियाँ बहुत क्षीणकाय होती हैं और जिन्हें सन्तान नहीं होती और इस कारणसे जो बहुत दुःखित रहती हैं, उनका प्रदर,—गाढ़ी सफेद आभा लिये स्राव ; योनिद्वारमें जलन रहती है और बाहरी भाग लाल या लाल आभा लिये और फूला रहता है।

प्रत्यङ्ग।—माथेसे सब खून पैरकी ओर दौड़ पड़ता है—ऐसा अनुभव होता है ; दोनों पैर सुन्न मालूम होते हैं और रोगिनीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। सवेरे सोकर उठनेके समय पैरकी एँड़ीमें शोथ हो जाता है ; कुछ दूर चलनेपर यह तकलीफ़ घट जाती है। ऐसा मालूम होता है, मानो शिरामें गर्म अग्निमय शोणितका प्रवाह हो रहा है ; सन्धियोंमें सुन्न जैसा मालूम होना और छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है। जानु दुर्बल ; दोनों पैरोंमें खुजली।

निद्रा।—निद्रितावस्थामें ऊँचे स्वरसे रो उठता है ; चोरी आदिके सम्बन्धके सपने देखता है और चिल्ला उठता है (नेट्र-म्यू)। हड्डीमें दर्दकी अधिकताकी वजहसे जाग उठता है और तकलीफ़से इतना अधीर हो पड़ता है, कि अपना जीवन ही नष्ट कर डालना चाहता है।

ज्वर।—सन्ध्याके समय ज्वरका शीत पैदा होता है ; मुँह गर्म और हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं ; सवेरे सारे शरीरमें, विशेषकर जननेन्द्रियमें पसीना होता है ; नाड़ी क्षुद्र और द्रुत।

वृद्धि ।—ठण्डी हवामें, जाड़ा मालूम होनेपर, सोनेके समय ; मानसिक परिश्रमसे कितने ही लक्षण केवल जाड़ेके दिनोंमें पैदा होते हैं ।

उपशम ।—गर्म हवामें, गर्म मालम होनेपर, सवेरे और ग्रीष्म ऋतुमें ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐसाफिटिडा (आँखमें दर्द, अस्थि-क्षत), बेल, कैल्कि (स्थूलता, हड्डोकी बीमारी) ; कैल्केरिया (रातमें दस्त) ; काक्युलस (शून्य मालूम होना) ; कूप्रम (दमा) ; कैलि-बाई, जखम (पीनस) ; कैलि-आयोड (उपदंश) ; नक्स-वोमिका (जरायुका अपने स्थानसे हटना) ; टैरेण्टुला (हृत्पिण्ड मानो उतर गया है) ; पल्स इत्यादि ।

सदृश ।—सिपि, हिपर, मर्क, कैलि-आयोड, मेजेरियम ।

दोषघ्न ।—बेलेडोना, चायना, काफिया, कूप्रम, मर्क, पल्स, स्पाइजि इत्यादि ।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० क्रम ।

क्रियाका स्थितिकाल ।—५० से ६० दिन ।

आरम म्यूरियैटिकम

(AURUM MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—क्लोराइड आफ गोल्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सोनेके साथ नाइट्रो-हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड मिलाकर यह बनता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अण्डलाल मिला पेशाब ; अम्ब्लापन ; हृत्शूल ; गुह्यद्वारमें नासूर ; दमा ; बाघी ; कैन्सर ; उपदंश ; मसे ; शोथ ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; केश झड़ जाना ; हृत्पिण्डमें विकार ; यकृतकी बीमारी ; आँखोंका प्रदाह ; पूतिनस्य ; अस्थिवेष्टका प्रदाह ; यक्ष्मा ; प्लीहाका बढ़ना ; बन्ध्यात्व ; जरायुका अर्बुद ; जरायुसे रक्त-स्राव ; अपत्य-पथमें उत्ताप, जलन और खुजली ; स्वरभङ्ग इत्यादि ।

लक्षणावली

मस्तक ।—समूचे माथेमें जलन ।

आँख ।—लड़कपनमें एकाएक अन्धापन ; आँखके किनारे नासूर ।

मुख-विवर ।—जीभके ऊपर मसेकी तरह उद्भेद निकलते हैं ।

नाक ।—नाकके बाईं ओर लाल सूजन ; नासारन्ध्रमें गहरा जखम पैदा हो जाता है और उससे सूखी पीली आभा लिये पपड़ी निकलती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो नासारन्ध्र रुक गया है ; नासारन्ध्रसे एक तरहका बदबूदार पानीकी तरह स्राव हुआ करता है ।

मलद्वार ।—अर्श,—पाखाना होनेके समय रक्तस्राव होता है (हैमा, सलफर, ऐलो, कैप्सि, कालिन्सो)।

जननेन्द्रिय ।—योनि-द्वारसे लगातार रस-स्राव ; योनि-द्वारमें जलन और खुजलाहट ; अपत्य-पथ अत्यन्त गर्म और खुजलानेवाला ; प्रदर पीली आभा लिये, कषाय-गुणयुक्त और जलन पैदा करनेवाला स्राव । पुं-जननेन्द्रियके ऊपर मसे निकलते हैं (थूजा, ऐसिड-नाइ, कास्टि)।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्ग ; बोलनेमें तकलीफ़ होती है । श्वासकृच्छ्रता—स्वरनली ऐसी मालूम होती है, मानो बन्द हो गयी है । उपदंश या पारा विषकी वजहसे स्वरनलीकी बीमारियाँ । वक्षोस्थिमें दबाव मालूम होना । आवाज़के साथ खाँसी ; बलगम गाढ़ा और पीले रङ्गका श्लेष्माभरा (श्वासरोग, Asthma—दमा)। रातमें बढ़ना । बाईं ओरके फुसफुसवेष्ट (Pleura) के भीतर दर्द, कभी-कभी यह दर्द दूसरी जगह भी मालूम होता है । हृत्पिण्ड-प्रदेशमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द ; प्रचण्ड हृत्कम्पन, बहुत दर्द, हृत्पिण्डमें भार मालूम होना और दृढ़ आवद्ध भाव ; हृत्पिण्डमें रक्तकी अधिकता ।

अङ्ग-प्रत्यङ्ग ।—मणिबन्धमें सूजन ; दोनों पैरोंमें सूजन ; बहुत बेचैन ।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—बेलेडो, कैनाबिस, मर्क ।

सदृश ।—आर्जेण्टम, आर्स, बेलेडो, लाइको, मर्क, नाइट्रिक-ऐसिड, सलफर ।

शक्ति ।—२य दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिकतक ।

आरम म्यूरियैटिकम कैलिनेटम

(AURUM MURIATICUM KALINATUM)

दूसरा नाम ।—डबेल क्लोराइड आफ पोटासियम एण्ड गोल्ड ।

उपयोगिता और आभास ।—जरायुके अर्बुदका कड़ापन और रक्त-स्राव आदिकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

सम्बन्ध ।—आरम-म्यूर—नेट्रोनेटम ; हाइड्रैस्टिनिन—म्यूर ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ६ठी दशमिकतक ।

आरम म्यूरियैटिकम नेट्रोनेटम

(AURUM MURIATICUM NATRONATUM)

दूसरा नाम ।—क्लोराइड आव गोल्ड एण्ड सोडियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—उदरी ; कर्कटोया रोग ; अर्श ; खल्वाट हो जाना ; सर-दर्द ; ज्वर ; कामला ; यक्ष्मा ; प्रमेह ; उपदंश ; अर्बुद ; जरायुका कड़ापन और कर्कटोया जखम ; मसे ।

उपयोगिता और आभास ।—पारा और उपदंश विषसे दूषित शरीरके लिये उपयोगी है । स्त्री-जननेन्द्रियके ऊपर क्रिया और जरायु आदिके बहुत तरहके विकारमें इसकी उपकारिता बहुत प्रसिद्ध है । डाक्टर हेलका कथन है, कि इसके सेवनसे तम्बाकूसे अनिच्छा पैदा हो जाती है और अफीम सेवनका अभ्यास छोड़नेका एक बहुत ही सुन्दर उपाय है (१म शततमिक सेवन करना चाहिये) । बाईं आँखके ऊपरी प्रदेशमें, खोपड़ी या माथेकी हड्डी (Skull) के भीतर, वक्षमें, जङ्घास्थिमें (Tibia) और अन्यान्य अस्थियोंमें ऐसा मालूम होना, मानो नोंच रहा है । इसके दर्दकी ऐसी ही प्रकृति होती है । इसके लक्षण ठण्डी तर हवा लगने और हेमन्तसे बसन्त ऋतुतक बहुत बढ़ जाते हैं । जीभके ऊपर मसेकी तरह, कोमल या पाण्डु रोगमें सफेद रङ्गका पाखाना होता है । दुरारोग्य कामला रोग—कभी काला और कभी सफेद

पाखाना होता है (डा० नैश)। लालामूत्र और उपदंश; लिङ्गार्श (Condylomata); बाघी; अण्डाधार बहुत बड़ा और कड़ा मालूम होता है। जरायुका एक अंश कोमल तथा दूसरा कड़ा रहता है। त्वचाको क्षय करनेवाला प्रदरका स्राव; जननेन्द्रिय आदिके ऊपर पीव-भरी फुन्सियाँ (Pustules) निकलना; स्तन या जरायुका कर्कट रोग या कर्कटीया अर्बुद (Scirrhus); बहुत दिनोंकी वात-व्याधि या छोटी सन्धियोंका वात (Gout), गण्डमाला (Scrofula); विश्राम करनेपर लक्षणोंका बढ़ना; उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द, मिचली, मन्दाग्नि, पेट फूलना और कब्जियत; स्नायविक अजीर्ण रोगमें खाते ही पाखाना लग आना और पतला पाखाना होना; पाकाशय या आँतोंकी सर्दी या प्रतिश्याय; जरायु और डिम्बाधारमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता या उपदाह, जरायुका धीमा प्रदाह (Metritis); डिम्बाधारका प्रदाह; असमयमें ही बहुत ज्यादा रजःस्राव; बार-बार गर्भ-स्राव; कामोन्माद; जरायुमें जखम; जरायु-ग्रीवाका अन्तर्वेष्ट-प्रदाह (Endocervicitis); जरायुकी पेशीमें क्षीणताके कारण रजोरोध; विलम्बसे आर्त्तव-स्राव; स्वल्परजः; कामाग्निका कम पड़ जाना; डिम्बाधारमें निष्क्रियतासे उत्पन्न बन्ध्यत्व; डिम्बाधारका शोथ (Ovarian Dropsy); प्रसवके बादका उन्माद और कामकी प्रबलता इत्यादि स्त्री-रोगोंमें आरम म्यूरियेटिकम नेट्रोनेटमसे अत्यन्त लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली

मस्तक।—समूचे माथेमें छेदनेकी तरह दर्द। केश झड़ना।

आँख।—अन्धापन इत्यादि।

नाक।—जखम; नकसीर।

जीभ।—कड़ी और जलनभरी, सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—अन्त्राशयमें शीत मालूम होना। जरायु और दोनों डिम्बाधारमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे उनमें प्रदाह पैदा हो जाता है (Ovaritis); असमयमें बहुत अधिक ऋतु-स्राव होता है; बार-बार गर्भ-स्राव (वाद्वर्नम); कामोन्माद, समय-समयपर जरायुमें जखम और जरायु-ग्रीवाका अन्तर्वेष्ट-प्रदाह। प्रसवके बादका उन्माद; पाकाशय और अन्त्राशयका प्रदाह (Gastro Intestinal Irritation) के साथ आत्महत्या करनेकी प्रबल

इच्छा। जरायुकी पैशिक दुर्बलतासे उत्पन्न (Atomic) रजोलोप (नेट्र-म्यूर, कैलि-कार्ब, पल्स) ; डिम्बाधारकी क्रिया न होनेके कारण बाँझपन पैदा हो जाना ; डिम्बाधारका शोथ।

त्वचा।—सारे शरीरमें खुजली, ज्वर इत्यादि।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आर्जण्ट, आर्स, ग्रैफाइ, हिपर, आयोड, कैलि सल्फ, मर्क, नाइट्रिक, सल्फ, थूजा।

शक्ति।—३रा या ६ठा दशमिक विचूर्ण।

आरम सल्फ्यूरेटम

(AURUM SULPHURATUM)

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—शय्यामें पेशाब कर देना ; गलगण्ड ; ध्वजभङ्ग ; काँवल ; पक्षाघात वगैरह रोगमें लाभदायक है। सलफर और आरमके सम्मिश्रित लक्षणोंमें यह अधिक उपयोगी होता है।

ऐवेना सैटाइवा

(AVENA SATIVA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यवनाल या यनोरके ताजे गाछसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मदात्यय या शराब पीनेकी वजहसे उपसर्ग ; विसूचिका ; दुर्बलता ; बहुव्यापक सर्दी ; अफीमका अभ्यास ; हृत्कम्पन (कलेजा धड़कना) ; बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवाका दुष्परिणाम ; अनिद्रा ; यक्ष्मा रोग।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक अवसाद—अफीम आदि नशीले पदार्थ छोड़नेपर जैसा हो जाता है ; जननेन्द्रियकी कमजोरी और कोई क्षय करनेवाली या बहुत दिनोंकी बीमारीके बादकी कमजोरी इससे दूर हो जाती है। दुर्बलताकी वजहसे वीर्य स्खलन। शराब आदि पीनेकी इच्छा यदि

बहुत अधिक होती हो तो इसके सेवनसे अच्छी हो जाती है। शराबी और अफ़ीमचियोंका अभ्यास छोड़नेके कारण अनिद्रा और मानसिक विकार; मनको एक विषयमें लगा रख नहीं सकता।

सम्बन्ध।—सदृश।—पैसिफ्लोरा-इन्कार्नेटा और अफ़ीम छोड़नेका अभ्यास त्यागनेमें सहायक—आरम-म्यू-नेट्र।

ऐवियैरि

(AVIAIRE)

परिचय।—क्षय-रोगग्रस्त पक्षीसे यह दवा तैयार होती है।

बेसिलिनम, टियुबर्क्युलिनमके साथ यह दवा प्रायः सम-लक्षण सम्पन्न है; परन्तु फेफड़ेके सूक्ष्म अन्त्रोंपर ही इसकी विशेष क्रिया दिखाई देती है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बेसिलिनम, बेसिलिनम-टियु, टियुबरक्युलिनम, आर्स, आयोड।

शक्ति।—३० और इससे उच्च क्रम।

ऐजाडिरेक्टा इण्डिका

(AZADIRECTA INDICA)

दूसरा नाम।—नीम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नीमकी छालसे मूल अर्क या मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—कब्जियत; अतिसार; सविराम ज्वर; क्विनाइनका अपव्यवहार; प्लीहामें रक्त-सञ्चय।

उपयोगिता और आभास।—कलकत्तेके विख्यात चिकित्सक डाक्टर प्रतापचन्द्र मजुमदार महाशयके द्वारा इसकी परीक्षा हुई है। तीसरे पहरमें बोखार, शरीरके नाना स्थानोंमें वातकी वजहसे दर्द। तलहत्थीमें जलन और उत्ताप और उसमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालम होना।

लक्षणावली

मन ।—विषन्न भाव और भुलक्कड़ ; लिखनेमें विवर्णकी भूल हो जाती है ; केवल सोये रहनेकी इच्छा ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना (Giddiness), मानो माथा ढलढल कर रहा है ; बैठनेकी अवस्थासे उठनेके समय बढ़ना । कानमें भों-भों शब्द (एमोन-कार्ब, कास्टि, ग्रैफा, मस्कस, पल्स, सिलि) । आँखोंमें जलन (एल्यू, कैमो, लाइको, पल्स, रास, स्टैफि) ; नाकसे पानीकी तरह स्लेष्मा निकलना (एलियम-सिपा, युफ्रे, आर्स, कैमो, ग्रैफ, मर्कु, नक्स, सलफर) ।

मुख-विवर ।—प्यास नहीं लगती, परन्तु मुँह लसलसाया करता है (नक्स-मस, युफोर्बिया, लाइको) । ऐसा मालूम होना, मानो जीभ जल गई है (पार्श्वदेश जलनेकी तरह—पल्स, सिपि ; जीभका अगला भाग जलनेकी तरह मालूम होना—सैङ्गिविने) ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें वातसे पैदा हुआ दर्द, वक्षोस्थिमें, पञ्जरेके बीचमें, कन्धेमें और हाथ-पैरोंमें दर्द मालूम होना । तलहत्थी गर्म, जलन-भरी और उसमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ।

ज्वर ।—हलका जाड़ा मालूम होनेके साथ-ही-साथ तीसरे पहर ज्वर बढ़ना, मुँहमें बहुत अधिक उत्ताप मालूम होना, तलहत्थी और पैरका तलवा बहुत गर्म और शरीरके ऊपरी अंशमें बहुत अधिक पसीना होता है (आर्जेण्ट, ऐसेरम, कैमो, ओपि, रियुम, वेरेट) ।

त्वचा ।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली पैदा हो जाना ; परन्तु किसी तरहका उद्भेद नहीं पैदा होता (डलिकस) ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—सिङ्कन, चायना, आर्स, नेट्रम, गोयारिया ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रमतक ।

बैसिलिनम-टेस्टियम

(BACILLINUM TASTIUM)

उपयोगिता और आभास ।—यह एक जान्तव पदार्थ है। गुटिका-दोषयुक्त अण्डकोषसे यह दवा विचूर्णके आकारमें तैयार होती है।

निम्न अङ्गके गुटिका रोगपर (अर्द्धाङ्गका—बैसिलिनम-टियु) इसकी विशेष क्रिया दिखाई देती है। पुट्ठेकी ग्रन्थियाँ, तलपेटकी ग्रन्थियाँ और अण्डकोषके गुटिका दोषमें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है। अर्द्धाङ्गके गुटिका रोगमें इसका व्यवहार होता है।

तुलनीय ।—एवियेरो, बैसि, टियुबरकुलिनम ; आयोडियम, बेरा-आयोड ।

शक्ति ।—३० शततमिक और २०० क्रम ।

बैडियेगा

(BADIAGA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—यह रूस देशका पानीसे उत्पन्न स्पञ्ज है ; सूखी अवस्थामें विचूर्ण और उससे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—स्तनमें कर्कटीया जखम ; बाघी ; काला दाग ; सर्दी ; आँखमें दर्द ; ग्रन्थियोंकी बीमारी ; अर्श ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; हृद्कम्पन ; सन्धिवात ; गण्डमाला ; उपदंश ; क्रुप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—लसिका-ग्रन्थि और श्वास-यन्त्रपर ही इसकी क्रिया दिखाई देती है। सब ग्रन्थियोंका फूलना और कड़ा हो जाना ; सर्दी, खाँसी और शीत आदिकी वजहसे पेशी और पेशी-बन्धनीमें दर्द होता है। जहाँ दर्द होता है, उस जगहपर पहननेके कपड़ेकी रगड़तक वर्दाश्त नहीं होती। बार-बार छींक और श्वास-कृच्छ्रताके साथ सर्दी और क्रुप-खाँसीमें इससे लाभ हुआ करता है। संक्षेपमें, इसके ये कई प्रधान लक्षण हैं:—(१) सरमें दर्दके साथ आँखके गोलेके पीछे दर्द—दिनके २ बजेसे ७

बजेतक बढ़ना—माथा हिलानेसे, मूर्द्धा या माथेके शीर्ष-देशमें (In vertex) प्रचण्ड सरका दर्द—रातमें घटना ; पहली बार भोजनके बाद बहुत जोरसे पैदा हो जाता है। चक्षु-प्रदाहके साथ सरमें दर्द। (२) आँखके कोयेमें दर्द—माथेके भीतरतक दर्द फैल जाता है। (३) माथेकी त्वचामें (Scalp) क्षय हुई त्वचाकी तरह स्पर्श सहन न होना, सूखी और पसीनेसे रहित ; खुजलाती रहती है और उसमें रूसी जम जाती है। (४) केवल रोगवाली जगह छुई जा सकती है। (५) नाकसे बहुत पानी गिरता है। (६) बायाँ गाल और गण्डास्थिमें स्पर्श सहन नहीं होता। (७) पाकस्थली और यकृतमें और अंशफलक (Scapula) के नीचे, मूत्र-मार्गमें और वक्षमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द। (८) बाघी और बीमारीवाली ग्रन्थियाँ सब पत्थरकी तरह कड़ी हो जाती हैं और फूल जाती हैं, उनमें इतनी तकलीफ़ होती है, मानो जलती हुई सुई घुसाई जा रही है। (९) कास्टिक आदिसे रुका हुआ उपदंशका जखम। (१०) बचपनका धातुगत उपदंश विष और उसीकी वजहसे पैदा हुए जखम। (११) स्तनमें कर्कटीया क्षत (Mamary Carcinoma)। (१२) खाँसते-खाँसते छींक आ जाती है और नाकसे बहुत अधिक श्लेष्माका स्राव होता है ; कभी-कभी बहुत खाँसी आती है, खाँसते-खाँसते मुँहसे गाढ़ा, लेईकी तरह जमा हुआ कफ ऐंठकर बाहर निकलता है ; गलेमें खुजलाहटकी वजहसे खाँसी ; गर्म घरमें घटना। (१३) शरीरकी जरा हिलानेसे ही कलेजा धड़कने लगता है, दाहिनी करवट सोनेसे बढ़ना। प्रसन्नताके बाद कलेजा धड़कना। (१४) पैरोंके सामनेकी पेशीको छूना सहन न होना। चलनेपर पैरकी अंगुलियाँ टेढ़ी पड़ जाती हैं। (१५) दाहिनी एँड़ीके नीचे, पीछेकी ओरकी पेशीमें तेज़ डङ्क मारनेकी तरह दर्द, दबानेसे ही बढ़ना। (१६) पुरानी वात व्याधि ; जाड़ा, खासकर ठण्डी हवा लगनेपर वृद्धि।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें दर्द—दिनके दो बजेसे सवेरे ७ बजेतक यह दर्द बना रहता है, पहले आँखके गोलेके पीछे यह दर्द धीरे-धीरे आरम्भ होता है। ललाटदेशीय (Frontal)—कपालमें होनेवाला सरका दर्द। यह बाईं आँखके पीछेतक फैल जाता है, आँख हिलानेपर बढ़ता है। मूर्द्धा-देशका सर-दर्द, यह नींदके बाद घट जाता है, रातमें और सवेरे कम रहता है, पर पहली बार

भोजनके बाद ही बहुत भीषण आकार धारण करता है, माथेकी त्वचा—क्षय हुई त्वचाकी तरह या खाल उधेड़नेकी तरह हो जाती है, सहिष्णुता ; सूखी, खुजलानेवाली और रूसीकी तरह छालसे ढँकी हुई।

आँख।—दोनों पलकोंके किनारे नीले और आँखके नीचेवाली जगह भी नीली मालूम होती है। बाईं आँखके गोलेमें बहुत दर्द रहता है, यहाँतक कि कसकर आँख बन्द करनेपर भी दर्द मालूम होता है। आँखके गोलेमें दर्द, वह माथेके भीतरतक फैल जाता है।

कान।—कानमें कभी-कभी कुछ चोट-सी मालूम होती है, मानो दूरपर गोला दग रहा है या तोप छूट रही है। थोड़ी आवाज़ भी बहुत ज्यादा मालूम होती है (आरम)।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—म्लान, पीला या सीसेकी रङ्गकी तरह मुखमण्डल, मुखगह्वर और साँस बोखारकी अवस्थाकी तरह गर्म रहती है और प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें बार-बार पानी पीनेकी इच्छा बनी रहती है (ब्राई)। सवेरे खाँसते-खाँसते एक टुकड़ा खून-भरा जमा हुआ श्लेष्मा निकलता है (लाइको)। निगलनेके समय गलेमें बहुत दर्द मिला प्रदाह मालूम होता है।

नाक।—सर्दी, बार-बार छींकके साथ पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, दमाकी तरह श्वास-प्रश्वास और साँस रोक देनेवाली खाँसी। बहुव्यापक सर्दी (Influenza) या कफज्वर (सिपा, इपिक, नैट्र-सल्फ, युपेटोर, युफ्रेशिया), नाकसे बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव हुआ करता है।

श्वास-यन्त्र। क्षण-क्षणभरपर बहुत खाँसी पैदा हो जाती है, खाँसनेके समय नासा-रन्ध्र और मुँहसे छोटे-छोटे श्लेष्माके जमे हुए टुकड़े छिटककर निकलते हैं (चेलिडो, कैलि-कार्ब) ; उक्त लक्षणवाली हूप-खाँसी ; सन्ध्याके समय बढ़ना और गर्म घरमें घटना ; वक्षस्थल, ग्रीवा और पीठमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। नये उत्पन्न शस्य आदिकी गन्ध लगकर सर्दी ज्वर (Hay Fever), इसके साथ ही श्वास-कष्ट। खाँसते-खाँसते छींक आ जाती है। गलेमें एक तरहकी सुरसुरी या खुजलीकी वजहसे खाँसी। छातीकी बगलमें दर्द, शरीर हिलाने या श्वास-ग्रहण करनेके समय ऊर्द्ध जत्रास्थि प्रदेशमें (Supraclavicular region) अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द। दाहिनी करवट

सोनेपर एकाएक श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाना, रोगी एकाएक करवट बदल लेता है। फुस फुस प्रदाहकी वजहसे विकार (Typhoid pneumonia)।

गर्दन और पीठ।—गर्दनमें दर्द और सुन्न ; भाव गर्दनके पीछे सुई बेधनेकी तरह दर्द ; माथेको सामने और पीछे पर्यायक्रमसे हिलानेपर बढ़ जाता है। दाहिने ओरके पृष्ठ-फलकके नीचेवाले स्थानमें भयानक अस्त्राघात और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना ; छाती सामनेकी ओर, एक कन्धा पीछेकी तरफ घुमानेपर दर्दका बढ़ना। ऐसा दर्द मानो पेशी और त्वचामें चोट लग गयी है। गर्दन बेतरह अकड़ जाती है (ऐण्टि-टार्ट, कोलचि ; सर्दी लगकर होनेपर—डलकामारा ; दाहिनी ओर अकड़ी हुई—चेलिडो)। लसिका ग्रन्थियोंका बढ़ना, कड़ापन और पीब-सञ्चय होनेका लक्षण।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुसे रक्त-स्राव, रातमें बढ़ जाना (ऐमोन-कार्ब); इसके साथ ही माथा फैला हुआ मालूम होना (आर्जेण्ट कोरैलि, ऐपियोल, डैफनी, इग्ने)। स्तनमें कर्कट रोग (ऐस्टैरि, कोनायम, कार्बो-ऐन, प्लम्बम्-आयोड)।

प्रत्यङ्गादि।—बाघी, रोगवाली ग्रन्थि लोहेकी तरह कठिन, हड्डी और ग्रन्थियोंमें रातके समय भयानक यन्त्रणा—तपती हुई सुई बेधनेकी तरह, मानो उसमें एक गर्म सलाई प्रवेश करायी जा रही है। कास्टिक वगैरह द्वारा जलाया या पारा आदि मिले प्रलेपके प्रयोगसे दबे हुए (Suppressed) उपदंशका जखम आदि, इसके साथ ही ऊँचा और मैला जखमका चिन्ह। (कार्बो-ऐनि मैलिस)।

सम्बन्ध।—**अनुपूरक।**—सल्फ, आयोड, मार्क।

तुलनीय।—संजिया, सिनिगा (छींकनेपर खाँसी पैदा हो जाती है), ग्रिण्डिलिया, संजिया (खाँसीके साथ छींक); कैलि-कार्ब (मुँहसे श्लेष्मा निकल पड़ता है); कैल्के-सल्फ (कड़ापन); कार्बो-ऐनि (व्रण, कड़ा); सिस्टस (कण्ठमाला); हिपर, आयोड, कैलि-आयोड, लैके, मार्क, नाइट्रिक, ऐसिड, सल्फ। लैकेसिसके बाद उपयोगी है।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम। उच्चतरसे उच्चतम क्रम।

बालसमम पेरुवियेनम

(BALSUMUM PERUVIANUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गाछके तनेका रस या गोंदसे तैयार होता है। यह रेक्टिफायड स्पिरिटमें गलता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— श्वासनाली-प्रदाह; सर्दी; नाकसे खून गिरना; क्षय-कास; कच्छु विष; यक्ष्मा; जखम।

उपयोगिता और आभास।—वायुनली-भुजकी सर्दीमें पीवकी तरह श्लेष्मा निकलनेपर यह बहुत लाभ करता है। कफ गाढ़ा, मक्खनकी तरह, पीली आभा लिये सफेद; छातीमें घड़घड़ शब्द (Rales); रातमें पसीना और विलेपी ज्वर इसका प्रधान लक्षण है।

लक्षणावली

नाक।—बिना कारण ही रोज़ सन्ध्याके ७ बजे बार-बार रक्तस्राव। बहुत ज्यादा गाढ़े श्लेष्माका स्राव। नासारन्ध्रमें फटे घाव और जखम। पुरानी सड़ी बदबूदार सर्दीका स्राव (आरम, ऐसिड-नाइ, सिलि, मार्क), तालु लाल और दर्द-भरा।

पाकाशय।—खाये हुए पदार्थ और श्लेष्मा वमन (इपिक, पेट्रोल, ऐपोमार्फि, क्रियोजोटम)।

श्वास-यंत्र।—वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis), गाढ़े पीवकी तरह पीली आभा लिये सफेद, श्लेष्मामय, मक्खनकी तरह कफ़ निकला करता है (कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्कोना, कोनायम, कैलि-कार्ब, लाइको, फास, सिलि, स्टैन, स्टैफ)। छातीमें घड़घड़ आवाज़ होती है (ऐण्टि-टा, ब्राइ, कास्टि, कैमो, इपिक, नेट्र-म्यू पल्स, सैम्बु, कैलि-सल्फ); थोड़ा श्लेष्मा मिली खाँसी; विलेपी ज्वर (बैप, आर्स, सिनकोना, चिनिन्-आर्स) और रातमें पसीना (ऐसिड-फास, फास, कार्बो-ऐन; अन्तिम रातमें—कैल्के; नींद आते ही पसीना आने लगता है—सिनकोना, कोनायम; नींद लगते ही पसीना रुक जाता है—सैम्बुकस)।

पेशाब।—मूत्रनालीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। पेशाब करनेके समय कतरनेकी तरह दर्द (कैन्थ, लैके, लाइको)। बार-बार पीले निर्मल रङ्गका पेशाब होना; पेशाबके बर्त्तनमें लाल रङ्गका लेप दिखाई देता है (लाइको, नैट्र-म्यू, पल्स, सिपि, स्क्वियुला)। पेशाबकी तली श्लेष्मामय (कैन्थ, कैमो, लैके, मेजेरियम, सार्सा, जिङ्कम)। मूत्राशयका श्लेष्मा-स्राव रोग (कैन्थ, जलीय वायुकी वजहसे होनेपर—डाल्का; रातमें अनजानमें पेशाब—पल्स; बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा-सञ्चय होनेके साथ—पैरीरा-ब्रावा; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्धवाला पेशाब—ऐसिड-बेन; दुरारोग्य होनेपर—चिमाफिला।

सम्बन्ध।—सदृश।—कैन्थरिस, ब्रायोनिया, मर्क्यरियस, एसिड-फास।

शक्ति।—१म दशमिक क्रम। मूल अर्कके बाहरी प्रयोगसे खुजली और अकौतामें विशेष लाभ होता है और उसके कोड़े मर जाते हैं।

बैप्टीशिया-कन्फ्यूसा-ऐसेटिका

(BAPTISIA-CONFUSA-ACETICA)

परिचय।—आस्ट्रेलिया देशकी बैप्टीशिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तने और पत्तेसे मूल अर्क बनता है।

उपयोगिता और आभास।—दाहिने जबड़ेमें दर्द, बाईं ओरका कटिशूल, पेटमें बाईं ओर दबाव मालूम होना और इसीलिये श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, सीधे खड़े होने या बैठनेपर घटना या कुछ खानेपर घटना और पेटमें गड़गड़ शब्द—इन लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

बैप्टीशिया टिङ्कटोरिया

(BAPTISIA TINCTORIA)

दूसरा नाम।—बननील।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़ और छालसे मूल अरिष्ट बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भस्रावकी आशङ्का ; संन्यास ; मस्तिष्कका कोमल हो जाना ; एपेण्डिसाइटिस या उपाङ्ग प्रदाह ; कर्कट रोग ; यक्ष्मा-कास ; उपझिल्ली प्रदाह ; रक्तामाशय ; आन्त्रिक ज्वर ; चक्षु-रोग ; सर-दर्द ; विलेपी ज्वर ; मूर्च्छा ; सर्दी ; कर्णमूल-प्रदाह ; प्लेग ; बुरी भाफ़से पैदा हुई बीमारियाँ ; पाकाशयका प्रदाह ; मुँहका जखम ; जीभमें वायु ; बहुव्यापक क्षत ; सान्निपातिक ज्वर ; चेचक ; कृमि।

उपयोगिता और आभास।—श्लेष्मा या रस-प्रधान धातुमें यह विशेष उपयोगी है। इस दवासे बहुत सुस्ती आती है और इससे एक तरहका सड़न पैदा करनेवाला विलेपी ज्वर पैदा हो जाता है। बीमारीकी अवस्थामें शरीरसे निकलनेवाले सभी पदार्थ (मल, मूत्र, पसीना, साँस, जखमसे निकलनेवाला रस वगैरह) बहुत दुर्गन्धमय होता है (सोराइन, पाइरो) ; रोगी शय्यागत हो पड़ता है और उसे बहुत सुस्ती मालूम होती है। उसकी पेशियोंमें इतना दर्द होता है, कि रोगी एक करवट अधिक देरतक सो नहीं सकता, थोड़ी देरतक एक पार्श्वमें रहनेसे ही उसे बहुत ही दर्द होने लगता है (पाइरोजिनियम)। आगे लिखे हुए कई लक्षण भी इसके प्रकृतिगत हैं :—(१) चेहरा तमतमाया हुआ, नशा खाने जैसा और बहुत मलिन ; उसकी छोड़ी हुई साँसमें बहुत बदबू रहती है। (२) जीभ पीली, भूरी या पीली आभा लिये भूरी (Yellowish Brown) लेप चढ़ी रहती है, उसके बीचका अंश सूखा और दोनों किनारे पार्श्व लाल रहते हैं ; फटी हुई त्वचा (Cracked) रहती है और उसमें बहुत दर्द रहता है ; दन्तमल (Sordes) या दाँतमें दाग लगना। (३) रोगी तन्द्रालु ; कोई बात पूछनेपर उसका पूरा-पूरा उत्तर देते-न-देते सो जाता है। (४) माथा जखमकी तरह स्पर्श असहिष्णु हो जाता है। (५) नाड़ी नमनीय। (६) रोगी जिस करवट सोता है, उसी ओर बहुत दर्द हो जाता है। (७) विकार, प्रलाप असम्बद्ध—एक बात कहते-न-कहते दूसरी बात कहने लगता है ; बुदबुदाकर अपने मन-ही-मन कुछ बकने लगता है ; उसे बराबर ऐसा ही मालूम होता है कि उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग सब शरीरके टूटकर खाटपर बिखरे पड़े हैं वह उन्हें एकत्रित नहीं कर सकता, इसीलिये उन्हें नींद नहीं आती। सभी विषयोंमें ताच्छिल्य और उदासीनता प्रकट करता है। (८) शरीरके कितने ही स्थानोंमें और हाथ-पैरके ऊपर नीला दाग निकल आता है। ८) मलका पतलापन, मल बहुत बदबूदार, गाढ़ा और खून मिला। (१०) सवेरे

पेशाब।—मूत्रनालीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। पेशाब करनेके समय कतरनेकी तरह दर्द (कैन्थ, लैके, लाइको)। बार-बार पीले निर्मल रङ्गका पेशाब होना; पेशाबके बर्त्तनमें लाल रङ्गका लेप दिखाई देता है (लाइको, नैट्र-म्यू, पल्स, सिपि, स्क्वियुला)। पेशाबकी तली श्लेष्मामय (कैन्थ, कैमो, लैके, मेजेरियम, सार्सा, जिङ्कम)। मूत्राशयका श्लेष्मा-स्राव रोग (कैन्थ, जलीय वायुकी वजहसे होनेपर—डाल्का; रातमें अनजानमें पेशाब—पल्स; बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा-सञ्चय होनेके साथ—पैरीरा-ब्रावा; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्धवाला पेशाब—एसिड-बेन; दुरारोग्य होनेपर—चिमाफिला।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—कैन्थरिस, ब्रायोनिया, मर्क्यूरियस, एसिड-फास।

शक्ति।—१म दशमिक क्रम। मूल अर्कके बाहरी प्रयोगसे खुजली और अकौतामें विशेष लाभ होता है और उसके कीड़े मर जाते हैं।

बैप्टीशिया-कन्फ्यूसा-एसेटिका

(BAPTISIA-CONFUSA-ACETICA)

परिचय।—आस्ट्रेलिया देशकी बैप्टीशिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तने और पत्तेसे मूल अर्क बनता है।

उपयोगिता और आभास।—दाहिने जबड़ेमें दर्द, बाईं ओरका कटिशूल, पेटमें बाईं ओर दबाव मालूम होना और इसीलिये श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, सीधे खड़े होने या बैठनेपर घटना या कुछ खानेपर घटना और पेटमें गड़गड़ शब्द—इन लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

बैप्टीशिया टिङ्कटोरिया

(BAPTISIA TINCTORIA)

दूसरा नाम।—बननील।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़ और छालसे मूल अरिष्ट बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भस्रावकी आशङ्का ; संन्यास ; मस्तिष्कका कोमल हो जाना ; ऐपेण्डिसाइटिस या उपाङ्ग प्रदाह ; कर्कट रोग ; यक्ष्मा-कास ; उग्रझिल्ली प्रदाह ; रक्तामाशय ; आन्त्रिक ज्वर ; चक्षु-रोग ; सर-दर्द ; विलेपी ज्वर ; मूर्च्छा ; सर्दी ; कर्णमूल-प्रदाह ; प्लेग ; बुरी भाफ़से पैदा हुई बीमारियाँ ; पाकाशयका प्रदाह ; मुँहका जखम ; जीभमें वायु ; बहुव्यापक क्षत ; सान्निपातिक ज्वर ; चेचक ; कृमि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मा या रस-प्रधान धातुमें यह विशेष उपयोगी है। इस दवासे बहुत सुस्ती आती है और इससे एक तरहका सड़न पैदा करनेवाला विलेपी ज्वर पैदा हो जाता है। बीमारीकी अवस्थामें शरीरसे निकलनेवाले सभी पदार्थ (मल, मूत्र, पसीना, साँस, जखमसे निकलनेवाला रस वगैरह) बहुत दुर्गन्धमय होता है (सोराइन, पाइरो) ; रोगी शय्यागत हो पड़ता है और उसे बहुत सुस्ती मालूम होती है। उसकी पेशियोंमें इतना दर्द होता है, कि रोगी एक करवट अधिक देरतक सो नहीं सकता, थोड़ी देरतक एक पार्श्वमें रहनेसे ही उसे बहुत ही दर्द होने लगता है (पाइरो-जिनियम)। आगे लिखे हुए कई लक्षण भी इसके प्रकृतिगत हैं :—(१) चेहरा तमतमाया हुआ, नशा खाने जैसा और बहुत मलिन ; उसकी छोड़ी हुई साँसमें बहुत बदबू रहती है। (२) जीभ पीली, भूरी या पीली आभा लिये भूरी (Yellowish Brown) लेप चढ़ी रहती है, उसके बीचका अंश सूखा और दोनों किनारे पार्श्व लाल रहते हैं ; फटी हुई त्वचा (Cracked) रहती है और उसमें बहुत दर्द रहता है ; दन्तमल (Sordes) या दाँतमें दाग लगना। (३) रोगी तन्द्रालु ; कोई बात पूछनेपर उसका पूरा-पूरा उत्तर देते-न-देते सो जाता है। (४) माथा जखमकी तरह स्पर्श असहिष्णु हो जाता है। (५) नाड़ी नमनीय। (६) रोगी जिस करवट सोता है, उसी ओर बहुत दर्द हो जाता है। (७) विकार, प्रलाप असम्बद्ध—एक बात कहते-न-कहते दूसरी बात कहने लगता है ; बुदबुदाकर अपने मन-ही-मन कुछ बकने लगता है ; उसे बराबर ऐसा ही मालूम होता है कि उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग सब शरीरके टूटकर खाटपर बिखरे पड़े हैं वह उन्हें एकत्रित नहीं कर सकता, इसीलिये उन्हें नींद नहीं आती। सभी विषयोंमें ताच्छिल्य और उदासीनता प्रकट करता है। (८) शरीरके कितने ही स्थानोंमें और हाथ-पैरके ऊपर नीला दाग निकल आता है। ९) मलका पतलापन, मल बहुत बदबूदार, गाढ़ा और खून मिला। (१०) सवेरे

११ बजनेके समय जाड़ा देकर बोखार आता है। (११) गलेके भीतरकी त्वचा क्षय हो जाती है और उसमें बहुत बदबू रहती है। दूसरोंको ऐसा मालूम होता है, मानो रोगीके कण्ठके भीतर बहुत दर्द है; परन्तु रोगी उस विषयमें तकलीफ़वाली कोई भी बात नहीं कहता।

लक्षणावली

मन।—मानसिक परिश्रमसे कातर, कोई विषय सोच नहीं सकता या किसी विषयकी इच्छा नहीं करता। एकदम उदास, किसी विषयमें हस्तक्षेप नहीं किया चाहता, किसी विषयमें पूरा-पूरा जी नहीं लगा सकता। आच्छन्नावस्था, कोई बात बोलता-बोलता खतम करते-करते, न करते तुरन्त सो जाता है (बात ख़तम न कर तुरन्त बेहोश हो जाता है—आर्निका)। उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह दो आदमी है या मानो उसका माथा और हाथ-पैर आदि शरीरसे अलग होकर शय्यापर बिखरे हुए हैं और वह उन अलग और टूटे हुए अंशोंको जोड़नेके लिये शय्यापर घूमता-फिरता है। बहुत अधिक मानसिक अस्थिरता, परन्तु इतना नहीं कि छटपटाये (आर्स), सो नहीं सकता; क्योंकि शरीरके टूटे हुए अंशोंको जोड़ नहीं सकता, मानो तीन आदमी हैं—तीन आदमियोंको ढँक नहीं सकता (पेट्रोल)। रोगी जिस करवट सोता है उसी ओर बहुत दर्द मालूम होता है; आन्त्रिक ज्वरमें (Enteric) शय्याक्षत (आर्निका, ऐसिड-म्यू, पाइरोजिनियम) पैदा हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही समूची देहमें, विशेषकर जांघमें बहुत सुस्ती मालूम होती है; ललाट देशीय (Frontal) शिरोवेदना (ऐको, आर्निका, कोलो, नैट्र-म्यू, ओलियैन, वेलि), नासिका मूलमें कुचलनेकी तरह दर्द (ऐको, ऐगार, ऐमोन-म्यू, कैप्सि, इग्ने; नाककी जड़में बेधनेकी तरह दर्दके साथ—हिपर); मानो माथा परिपूर्ण हो रहा है (ऐको, बेल, ब्राई, डैफनी, सिनकोना, रास, रास-रैड, सलफर) और माथेकी त्वचा जोरसे कसी हुई है (ऐको, एसेराम, कैम्फ, कार्बो-वेज, कास्टि, साइक्लि, क्लिमैट, ग्रैफ, मैङ्ग, मार्क, मस्कस, पल्स, स्ट्रान्सि, सल्फ)। माथा भार-युक्त (बेल, कार्बो-वेज, नक्स, रास-रैड) और फैला हुआ मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाइ, बेल, कोरैलियम, ऐपियम, डैफनी, इग्ने, फेलैन, साइजि; मानो माथा फूलकर बहुत बड़ा आकार धारण किया है—बोवि)। माथेकी खोल

(Skull—खोपड़ी) ऐसा मालूम होता है कि उड़ जायगी (ऐक्टिया-रेसि, कैमो, कोबेल्टम, नेट्र, क्लोरेटम, युक्का ; मानो मूर्द्धास्थि एक बार जुड़ती है, एक बार खुलती है—कैना-इन, ऐक्टिया)। आँखके गोलेमें बहुत दर्द होता है ; हिलानेपर भी दर्द होता है (आर्निका, सिङ्कोना, रास, वेरेट)।

आँख।—रोशनी सहन नहीं कर सकता ; आँखमें जलन ; आँखके गोलेमें अकड़न ; इसके साथ ही दृष्टिकी अस्पष्टता। पलकोंका आंशिक पक्षाघात।

कान।—अच्छी तरह सुन नहीं सकता ; प्रलापके साथ बहरापन।

नाक।—नासामूलमें धीमा-धीमा दर्द, छींक और सर्दी या बादवाली अवस्थाकी तरह मालूम होना ; दाहिनी नाकसे गाढ़ा लाल रक्तका स्राव। गन्धमें गड़बड़ी, मानो जला हुआ पर सूँघ रहा है—ऐसा मालूम होना।

मुखमण्डल।—लाल और उन्मादकी तरह (हायोसा, जेल्स, ओपि, बेल, स्ट्रैम)। दोनों गालोंमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप (आर्निका, बेल, ब्राई, ग्रेटि, इग्ने, नेट्र-कार्ब, नक्स, प्लेट, रास-रड, सैङ्गिविन, वेरेट)। निचला जबड़ा झूल पड़ता है (ओपि) ; मैला और लाल रङ्गका चेहरा (ब्राई)।

मुख-विवर।—जीभ पहले लाल काँटे-भरे सफेद लेपसे परिपूर्ण, इसके बाद सूखी, फटी और उसके बीचकी जगह पीली आभा लिये भूरी (Yellowish brown) लेपसे ढँकी (कालिन्सो) ; अन्तमें सूखी, फटी और जखम-भरी (एपिस, आर्स, रसटक्स)। बहुत ज्यादा लार बहती है, लेईकी तरह फीका स्वाद। मुँह बहुत बेस्वाद, कड़वा (ब्राई, कैमो, मर्क, नक्स, पल्स, वेरेट) ; सड़ी गन्ध-भरी ; शीताद या दाँतकी जड़का जखम (कार्बो-वेज, मर्क, नेट्र-मूर, स्टैफ, ऐसिड-मूर)।

गलेके भीतर।—पतले जलीय पदार्थके सिवा और कुछ भी निगल नहीं सकता (वैराइटा-कार्ब ; सभी पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है, खासकर जलीय पदार्थ—बेल ; कड़े पदार्थ निगलनेमें आराम मिलता है—इग्ने ; जलीय पदार्थ निगल सकता है ; परन्तु वे एकदम अच्छे नहीं लगते—सिलि)। गलकोष या जिह्वामूलके दोनों पार्श्व (Fauces) गाढ़े लाल रङ्गके, काली आभा लिये सड़नेवाले जखमसे भरे ; जिह्वामूल ग्रन्थि (Tonsils) और कर्णमूल-ग्रन्थि फूली (बेल, कैन्थ, लैके, मर्क, एसिड-नाई, थूजा), ऐसा गलक्षत जिसमें बिलकुल ही दर्द न हो (Quinsy या Sore-throat), सड़ी गन्धवाला

क्लेद निकलता है (डिफिथरिन)। अन्ननली संकुचित—खाये हुए पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है।

पाकाशय।—पाकस्थली एकदम खाली मालूम होना (ऐमोन-कार्ब, कैमो, काक्यु, गैम्बो, इग्ने, इपिक, लैके, एसिड-मूर, नेट्र-म्यू ; दिनके ११ बजनेके समय ऐसा ही मालूम होता है, भोजनमें विलम्ब सहन नहीं होता—सलफर ; दिनके १० या ११ बजे भोजनके बाद घटना—नेट्रम-कार्ब)। बार-बार पानी पीनेकी इच्छा ; मिचली ; भूख न लगना (मुँहमें कड़वापनके साथ खाने-पीने और तम्बाकू खानेकी इच्छाका न होना—इग्ने ; किसी पदार्थके खानेकी इच्छा न होना—रास ; कई ग्रास खाते ही पेट भर जाना—पल्स ; सिलि ; साधारणतः जिस तरह भूख लगती है, उसमें जेनसियाना लूटिया या मेयोरा)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द—कैमो, लाइको, नेट्रम-मूरर, सिपिया) ; पाकाशयमें मानो एक कड़ा जड़ पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना—एबीज-नाई, ब्राई, पल्स, नक्स, निकोलम, रास-रैड, सिपि, सिलि)।

अन्त्राशय।—दाहिनी ओरकी बीमारीका आक्रमण अधिक हुआ करता है (चेलिडोन, ब्राई, लाइको—दाहिनी ओरसे बायीं ओर गति ; बाएँ पार्श्वसे दाहिनी पार्श्वकी ओर गति—लैके)। आध्मान और कलकल शब्द-भरा (आर्जेण्ट-नाई, बिस्मथ, कैल्के, कार्बो-एन, कार्बो-वेज, ऐलो, ऐसेरम-इयु, गैम्बो, जैट्रोफा, ज़िङ्कम) ; रोगी मनमें समझता है, कि कै हो जाये तो यह पेट फूलना और पेटका कलकल-गड़गड़ शब्द बन्द हो जायगा। पित्तस्थली (Gall Bladder) के ऊपर दर्दके साथ पतले दस्त आना (बोलिटस, मर्क-वाई, नेट्र-सल्फ)। आँवरक्त (Dysentry)—जाड़ा मालूम होना, हाथ-पैर और पुट्ठेमें दर्द ; मल थोड़ा—केवल रक्त और गाढ़ा रक्त ; काँखना ; बहुत सुस्ती ; मल बहुत बदबूदार ; शरद या ग्रीष्म ऋतुमें अवसाद लानेवाले बोखारके साथ वृद्ध मनुष्य और बच्चोंको पतले दस्त आना, खासकर मल बहुत ही बदबूदार (कार्बो-वेज, पोडो, कैल्के-फास, सोराइन) ; यकृत प्रदेशमें बहुत दर्द—इतना अधिक कि रोगी चल नहीं सकता।

श्वास-यंत्र।—श्वास रुकनेकी वजहसे रोगीकी नींद खुल जाती है (रोगी चौंककर जाग उठता है और हाँफने लगता है—ग्रिण्ड ; नींदका झोंका आते ही साँस रुक जाती है—क्लोरम, जेल्स, लैक-कैन, ओपि) ; फेफड़ा कसा

मालूम होता है (कैक्टस) ; तप्त करनेवाली साँस नहीं ले सकता (ब्राई) ; खिड़की खोलकर निर्मल वायुकी साँस लेता है (ऐको, लेके) ; शरीरमें प्रदाह ; सूखी जीभ ; नाड़ीकी गति तेज़ ; सब लक्षण ही सोनेपर बढ़ जाते हैं ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—गर्भ-स्राव होनेका उपक्रम,—मानसिक अवसाद या शोथ, रातमें जागरण और विलेपी ज्वरकी वजहसे । ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी प्रकाशित होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है । प्रसवके बादका स्राव (Lochia) खाल उधेड़नेवाला (Excoriating) और सड़ी बदबू-भरा । प्रसवके बादका बोखार (Puerperal Fever) के साथ विकारके लक्षण आदि (एचिनेशिया, पाइरोजिनम) ।

पीठ और प्रत्यङ्ग आदि ।—गला क्षीण,—सीधा रखनेमें तकलीफ़ होती है । अकड़न और भार मालम होता है ; हाथ-पैरमें दर्द और सङ्कोचन । त्रिकास्थि या कमरके पीछेवाली हड्डीके निम्न भाग (Sacrum) और उरु तथा पैरमें दर्द मालूम होना ।

नींद ।—अस्थिरता और अनिद्रा । निद्रावस्थामें साँस रुक जाना और डरावने सपने देखना । शरीरके भिन्न-भिन्न अंश सब एकत्र नहीं कर सकता, इसीलिये रोगीको नींद नहीं आती ; सवालका जवाब देता-न-देता सो जाता है ।

त्वचा ।—बहुत बदबूदार पसीना आता है । आन्त्रिक Enteric ज्वरमें शय्याक्षत—Bed-sore (आर्निका, एसिड-म्यूर, पाइरोजेन) । त्वचा विशेषकर मुखमण्डलमें जलन और उत्ताप मालम होना । शरीरमें जगह-जगह नीला दाग दिखाई देता है ।

ज्वर ।—आन्त्रिक (Enteric or Typhoid) ज्वर,—पहली अवस्थामें रोगी बहुत उत्तेजित रहता है, उसे शीत मालूम होता है । सारे शरीरमें दर्द होता है, खासकर माथा, पीठ और हाथ-पैरोंमें ; मानो कोई प्रहार कर रहा है । इसके बाद ही रोगी अवसन्न और दुर्बल हो पड़ता है । उसका चेहरा और दोनों आँखें भूरी, लाल और भाव पागलकी तरह हो जाता है (जेल्स) । मस्तिष्क इतना आच्छन्न हो जाता है, कि रोगी सवालका जवाब देता-देता या पूरा करता-न-करता सो जाता है । इस समय जीभके बीचमें एक रेखा दिखाई देती है । यह रेखा पहले सफेद रङ्गकी होती है और धीरे-धीरे धुमैली या भूरी (Brown) रङ्गकी हो जाती है और रोगीमें विकार जितना ही बढ़ता जाता

है, उतना ही वह बुदबुदाकर बका करता है ; वह मनमें समझता है, कि उसके शरीरके सभी अंश देहसे अलग होकर इधर-उधर बिखरे पड़े हैं और इन सब वियुक्त और विच्छिन्न अंशको एकत्र करनेके लिये वह शय्यामें इधर-उधर हटा करता है ; इस समय पेट नरम होना आरम्भ हो जाता है, गुड़गुड़ाया करता है, खासकर अन्धान्त्र प्रदेशमें—जहाँ बड़ी आँतके साथ छोटी सूक्ष्माग्र आँत मिली है (Ileo Cecal region)—इस अंशमें स्पर्श एकदम सहन नहीं होता और इसके कुछ ही देर बाद पाखाना होना आरम्भ हो जाता है ; पाखाना, पेशाब और पसीना सबमें ही बहुत दर्द होता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता (पाइरोजेन, रस-टक्स)। आन्त्रिक ज्वरमें शय्याक्षत (Bed-sore—आर्निका, ऐसिड-म्यूर, पाइरोज)।

सामान्य अविराम ज्वर (Simple continued fever)।—पाकाशय और पित्त आदिके साथ शरीरमें बहुत दर्द मालूम होता है। प्रायः दिनके ११ बजनेके समय शीतका आविर्भाव होता है और तीसरे पहर उत्ताप प्रकट होता है।

सम्बन्ध, सदृश और तुलनीय।—आर्निका, आर्स, ब्राई, जेलस, एचिनेशिया, हायोस, कैलि-मूर, लैके, मूरियेटिक-एसिड, नक्स-वोम, ओपि, रास। आन्त्रिक ज्वरमें आर्सका यदि अधिक प्रयोग हो गया हो, तो बैप्टीशिया उसका दोष दूर करता है। बैप्टीशियाके बाद आन्त्रिक ज्वरमें रक्तस्राव होनेपर क्रोटेलस, हैमा, ऐसिड-नाइ और टेरिबिन्थ विशेष लाभदायक होता है।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे २०० क्रमतक। ३रा और ३० क्रम ज्वर आदिकी नयी अवस्थामें बहुत बार व्यवहारमें आया करता है।

बैरोस्मा ग्रैनुलेटा

(BAROSMA GRANULATA)

दूसरा नाम।—बूचू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मूत्रस्थलीकी बीमारी ; मूत्राश्मरी या पित्त-शिला ; सर्दी ; श्वेतप्रदर ; मूत्रनलीका मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—पाकाशयिक झिल्लीकी सर्दीकी (Gastric catarrh) वजहसे अजीर्ण रोग; आँतोंकी दीर्घकालव्यापी पुरानी सर्दी (Intestinal catarrh); मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रिय आदिके पुराने रोग आदिके वजहसे पीव-भरा श्लेष्मा-स्राव; मसानोंके भीतर या मूत्रपिण्डका शोथ (Pelvis of kidneys) और मूत्रस्थलीकी झिल्लीका पुराना प्रदाह,—इसके साथ ही बहुत ज्यादा श्लेष्माका स्राव (ऐसिड-बेञ्जो, चिमाफि, युरेनियम-नाइ, सिना, ऐसिड-आक्स), मूत्रनलीका संकोचन (Stricture), स्रावशील पुराना प्रमेह (Gleet); अश्मरी (पथरी) पैदा हो जानेका लक्षण (Lithiasis or gravel) मूत्रनालीकी ग्रन्थिकी बीमारी (Prostatic disorders) अपर्याप्त स्राव; बहुत ज्यादा स्राव; मूत्रग्रन्थिके गलेमें खुजलाहटके कारण अनजानमें पेशाब हो जाना (स्त्रियोंके मूत्राशय-ग्रीवामें खुजलाहटके साथ—कोपिबा; दिनमें अनजानमें पेशाब होना—फेरम-फास; निद्रावस्थामें—सेनेगा; दिनमें या रातमें निद्रावस्थामें—बेल; खाँसी या छींकनेके समय—कास्टि, स्क्विला, वेरेट्रम); धातु विकारकी वजहसे शोथमें (ऐपोसाइ); मूत्राशयकी बीमारीके साथ प्रदर और बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवाकी वजहसे मूत्रनालीसे या सुखशायी-ग्रन्थि या रेतःकोषसे बहुत ज्यादा स्राव।

सम्बन्ध—सदृश।—कोपेबा, बार्बेरिस, ककुलस, थजा, सिला, सेबाल।

शक्ति।—मूल अर्क या प्रथम दशमिक क्रम २-४ बून्द।

बेराइटा ऐसेटिका

(BARYTA ACETICA)

दूसरा नाम।—ऐसिटेट आव रेडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया। – कार्बोनेट आफ रेडियमके साथ डाइल्यूट ऐसेटिक ऐसिड मिलाकर यह तैयार होता है।

मन्तव्य।—डा० क्लार्ककी पुस्तकमें लिखा है—"हेरिङ्ग और हैनिमैनके मतसे इन दो दवाओंमें (बेराइटा कार्बोनेट और ऐसिटेट) कुछ भी प्रभेद नहीं है।" एक तरल है, दूसरी विचूर्ण।

लक्षणावली

मन।—दो उद्देश्योंमें बहुत देरतक मन डोला रहता है (ऐनाक)। दिनमें कोई काम करना स्थिर करता है, पर सन्ध्यामें उसके लिये पछताता है और यह स्थिर नहीं कर सकता कि वह काम करे या नहीं। भुलक्कड़; बात करते-करते भूल जाता है, कि वह क्या कह रहा था (ऐनाक, बैराइ-कार्ब)।

मुखमण्डल और आँखें।—ऐसा मालूम होता है, मानो समूचे मुखमण्डलपर मकड़ेका जाल ढँका हुआ है (बैराई-कार्ब, बोरैक्स, ब्रोमियम, रैनान, सालिसिएटस, ग्रैफ), सभी चीजें अन्धेरेमें ढँकी या अन्धकारमय मालूम होती हैं (ऐल्यू, बेल, कैल्के, कास्टि, क्रोकस, फास, रूटा, सल्फ)।

पाकाशय।—कोई चीज़ खानेपर ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो पाकाशयकी समस्त अन्त्र-मण्डलीको कोई मरोड़ रहा है—ऐसी तकलीफ़ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो खाया हुआ पदार्थ किसी दर्द-भरी नलीके भीतरसे प्रवेश कर रहा है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें बहुत दर्द।

प्रत्यङ्ग।—मलवेगके साथ पुट्ठेमें बेचैनी और गड़बड़ी मालम होना। बाएँ पैरमें ऊपरसे तलवेतक संकोचनकी तरह दर्द मालूम होता है।

त्वचा।—त्वचामें सुरसुरी मालूम होना, मानो जलती हुई सुई घुसाई जा रही है; रोगीको बाध्य होकर खुजलाना पड़ता है, पर इससे उसकी खुजलाहट कम नहीं होती।

शक्ति।—३रा दशमिकसे ६ दशमिकतक विचर्ण। कोई-कोई ३० शततमिक क्रमतक व्यवहार किया करते हैं।

बैराइटा कार्बोनिका

(BARYTA CARBONICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—क्लोराइड आव बेरियमके साथ कार्बोनेट आव ऐमोनियाको मिलाकर उसमें जो अधःक्षेप या तली जमती है, उससे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अर्बुद ; संन्यास ; खल्वाट पड़ जाना ; मस्तिष्कमें विकार ; कोषमय अर्बुद (Casts) ; पैरमें पसीना ; ग्रन्थियोंका फूलना ; अर्श ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; स्मरणशक्तिकी दुर्बलता ; अन्ननालीका आक्षेप ; अंगुलहाड़ा ; पक्षाघात ; कर्ण-मूल-ग्रन्थि-प्रदाह ; प्रोस्टेट ग्रन्थिका बढ़ना ; गलेका जखम ; मसे इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सोरा धातु और गुटिका-दोषयुक्त धातुमें निम्न-लिखित लक्षणोंमें उपयोगी है:—जिन बच्चोंकी उम्रके साथ दैहिक और मानसिक उन्नति नहीं होती ; प्राय: सर्दी आदि श्लैष्मिक रोग लगे रहते हैं, बुद्धि अत्यन्त स्थूल, हमेशा लार चुआ करती है। जिन बच्चोंको गलकोषका प्रदाह या और गलेका जखम आदि रोग हो जाया करते हैं, जरा भी सर्दी लग जानेसे ही आँख उठ जाती है और नाकसे सर्दीका स्राव हुआ करता है ; यह बच्चा घरके एक कोनेमें चुपचाप बैठा रहता है, हिलना नहीं चाहता, क्योंकि उनमें फुर्ती बिलकुल नहीं रहती। बेराइटा-कार्ब मानव जीवनकी दो अवस्थाओंमें विशेष लाभदायक होता है—एक अत्यन्त शैशव और दूसरी एकदम बुढ़ापा। जिन युवकोंने अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय-परिचालन किया है, उन युवकोंके अजीर्ण आदि रोगोंमें भी बहुत फायदा करता है। ग्रन्थि-मण्डली, शिरा और धमनी वगैरहमें इससे विकार पैदा हुआ करता है। पैरके पसीनेकी बीमारीमें भी यह बहुत लाभदायक है। वृद्धोंमें बच्चेका भाव और बच्चोंमें वृद्धोंका भाव दिखाई देता है। श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले, खर्व आकृति-वाले और उम्रके अनुसार जिनकी वृद्धि नहीं होती, जिन्हें सर्दीके कारण आँखोंमें प्रदाह हो जाया करता है, पेट फूला हुआ, दोनों गाल फूले और सारे शरीरका मांस क्षय होता हो, जिन्हें बार-बार आँतोंमें शूलकी बीमारी हो जाया करती हो, ऐसे बच्चोंके लिये बेराइटा कार्बोनिका सबसे अधिक उपयोगी है। छोटे आकारवाली, गुल्म-वायुग्रस्त तथा जिन्हें ऋतु बहुत थोड़ा होता है, जिन युवतियों और प्रौढ़ाओंको शीत बहुत लगता हो तथा क्षीण देह और रोगी शरीरवाले वृद्धगण ; मोटे-ताजे, पर श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्य तथा वे जिन्हें अकसर सन्धिवात हो जाया करता है (ऐसिड-फ्लू), इन सब मनुष्योंकी बीमारीमें यह दवा बहुत ज्यादा फायदा करती है। मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका फैलना और सूजन और मानसिक तथा शारीरिक दुर्बलता वगैरह वृद्धोंकी बीमारियोंमें, वृद्धोंकी संन्यास-प्रवणतामें और वृद्ध मनुष्योंके सर-

दर्दमें बैराइटा कार्बोनिका विशेष उपयोगी है। नीचे लिखे कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:—श्रवण-शक्तिका घटना और कानके चारों ओरकी ग्रन्थियोंका फूलना और दर्द। हनुतलस्थित (Sub-maxillary) और कर्णमूलीय (कानके जड़की) ग्रन्थिकी सूजन। दोनों गलग्रन्थियोंका बढ़ना और पीव-सञ्चय होना, सामान्य सर्दी लगनेसे ही बढ़ना; वायुसे भरा और कसा हुआ पेट; आँतोंका शूल; प्रायः कब्जियत रहती है और गाँठ-गाँठ कड़ा पाखाना होता है। शरीरमें एक ओर पसीना इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—सामान्य विषयोंमें भी इधर-उधर किया करता है, किंकर्त्तव्य विमूढ़ (बैराइटा-ऐसेटिका, आर्जेण्ट-नाई, काकुलस-इन, क्रोकस, कुरारी, ग्रैफ, इग्ने, पल्स, टैबाकम)। बहुत भुलक्कड़; उसमें आत्म-निर्भरता बिलकुल नहीं रहती। अपरिचित मनुष्योंसे डर मालूम होता है, किसीके आनेपर वह दौड़कर भाग जाता है और छिप रहता है (अपने बन्धु-बान्धवोंसे मिलना नहीं चाहता—आर्स, क्लिमेट, कैलि-फास, सिपि, स्टैन, थूजा; मनुष्योंका भय—जहाँ अधिक मनुष्य रहते हैं, वहाँ जाना नहीं चाहता। अरम, साइक्यूटा, कैलि-बाई, लाइको, सिपिया, सलफर)। सोचता है, कि लोग उसके दोष-गुणपर विचार कर रहे हैं, मानो लोग उसका उपहास कर रहे हैं (कोई उसका पीछा करता है—ऐनाक, कैलि-ब्रोम; मानो शत्रु, उसपर अत्याचार करते हैं—सिङ्कोना, कैलि-ब्रोम, लैके)। बच्चा घरके कोनेमें बैठ-जाता है—खेलना नहीं चाहता। बच्चा बहुत भुलक्कड़ और अमनोयोगी; सिखानेपर सीख नहीं सकता, क्योंकि उसे कुछ भी याद नहीं रहता। जड़ बुद्धि होनेका उपक्रम (बैसिलाइन, थाईराइडिन)। अपने रोगके विषयमें सोचने या याद करनेसे रोग बढ़ जाता है (रोगके विषयमें सोचनेपर घटना—कैम्फो, कैल्के-फास, काष्टि हेलोन, मिडोर, ऐसिड-आक्सैल, पेट्रोल, आक्साइट्रोप; अनमना रहनेपर अच्छा रहता है—हेलोन, हाइपर-स्यू)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; धूपमें खड़े होनेपर माथेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। माथा उठा हुआ मालूम होता है, जिधर माथा झुकाता है उसी तरफ ढुलक जाता है (ऐको, ऐमोन-कार्ब, बेल, कार्बो-ऐन, सिङ्कोना, साइक्यू, हायो; नक्स-मस, नक्स-वोम, रास, सिपि)। केश झड़

जाना या टाक पड़ना (कैलि-कार्ब, ऐसिड-फ्लू, ऐसिड-फास,)। चारों ओर कुहासे भरा दिखाई देता, सवेरे और भोजनके बाद (ऐल्यू, बेल, बैराइटा-आर्स, कास्टि, ऐसिड-फास, रूटा)। मस्तिष्कका जड़ भाव (बेल, नक्स, ओपि); दुधिया पपड़ी या बच्चोंके माथेका एक तरहका फोड़ा (Crusta Lactia), सूखी या रस-भरी पपड़ी जमना ; खुजली और जलन, केश उड़ जाना ; इसके साथ ही गर्दनकी (Cervical) गांठका फूलना (वायोला-ट्राई, विङ्कामाई, सिपिया, लाइको, कैल्के-फ्लू); आँखोंमें जाला (कैल्के-फास, सिलि)।

कान ।—छींकने या निगलने अथवा टहलनेमें कानमें “कड़ाक”-सी आवाज़ होती है (कैल्के, मैङ्ग, मस्कस, सिलि)। श्रवण-शक्तिका घट जाना (पश्चात् नाली रुकनेकी वजहसे—मार्क, हाइड्रास ; चोटके कारण—चिनिन-सल्फ ; गड़बड़ीमें अच्छा सुन पड़ता है—ग्रैफा, ऐसिड-नाई ; इसके साथ ही कानमें आवाज़ और सरमें चक्कर आना—नेट्र-सैलि, सिङ्कोना ; बहुत दिनोंतक पीव निकलनेके साथ—इलैप्स, कोरैल ; खूनमें विकार होनेकी वजहसे—फेरम-फास और फेरम-पिक)। कानके चारों ओरकी ग्रन्थि सबका फूलना और दर्द। नाक साफ़ करनेके समय कानमें आवाज़ (कास्टि, फास, ऐसिड-फास)।

नाक ।—नासारन्ध्र सूखा, बार-बार छींक ; ऊपरी ओंठ और नाकमें सूजनके साथ सर्दी। गाढ़ी पीली आभा लिये श्लेष्माका स्राव (कैल्के, क्रियो, लाइको, फास, पल्स, सिलि)। बार-बार रक्त-स्राव (मिलिफो, फास, फेरम-फास ; वृद्धोंका बार-बार—कार्बो-वेज), पपड़ी पड़ा जखम (ग्रैफ, ऐसिड-नाई, ऐसिड-फास); नासा-पुट।

मुखमण्डल ।—मुखमण्डल फूला मालूम होता है। मुखमण्डलकी त्वचामें खींचन मालम होती है, मानो मकड़ेका जाल उसपर लगा हुआ है (दाहिने गालपर—बोरेक्स ; नाकके ऊपर—ब्रोमियम ; कपालमें—ग्रैफ ; मुख-मण्डल—रैनान, स्किलेरेटस)।

मुख-विवर ।—नींद खुलनेपर मुँहमें सूखापन मालूम होता है और प्यास लगती है। मसूढ़े से प्रायः खून बहा करता है (मर्क-सोल)। रजः-प्रकाशके पूर्व दाँतमें दर्द (आर्स); दाँतमें दर्दकी बात मनमें आते ही दाँतमें दर्द पैदा हो जाता है और उधर ध्यान न देनेपर घटना। समूचे मुख-विवरमें प्रदाह पैदा करनेवाले रस-भरे दाने (Vesicle) भरे रहते हैं (ऐमोन-म्यूर, ऐम्ब्रा, मैग-सल्फ, मैंगे, मर्क, नेट्रम-म्यूर, नक्स, सलफर)। रोज़ सवेरे मुँह बेस्वाद हो

जाता है (ब्राई, कैमो, मर्क, पल्स, वेरेट-ऐल)। जीभके पक्षाघातकी वजहसे बोलनेकी शक्तिका घट जाना (कास्टि, जेलस, प्लम्ब ; अस्पष्ट बात—इस्क्यु-ग्लै ब्रा)। जीभके आगे कुरकुरी और जलन (बैप, आर्जेण्ट-नाई, फास, इस्क्युलस-हिप)। जीभके बीचमें, अगले भागमें और तलदेशमें रस-भरे दाने (Vesicles)।

गलेके भीतर।—थोड़ी भी सर्दी लगनेपर गलेमें जखम ; थोड़ी भी सर्दी लगते-न-लगते गल-ग्रन्थि (Tonsils) का प्रदाह और उनमें पीब पैदा हो जाना (हिपर, सोराइन); जलीय पदार्थके सिवा और कोई चीज़ निगल नहीं सकता (बैप, सिलि, बैप्टीशिया देखिये)। अलिजिह्वा बढ़ी हुई ; थोड़ी भी सर्दी लगनेसे ही बढ़ना (ऐल्यू)। निम्न-हनुतलस्थ (Sub-maxillary) ग्रन्थियोंका फूलना—निगलनेमें तकलीफ़ मालूम होना ; घूंट लेनेमें दर्दका बढ़ जाना। पैरका पसीना रुकनेके कारण गलग्रन्थिकी बीमारी (ग्रैफ, सोरिनम, सैनिक, सिलि)।

पाकाशय।—भूख रहती है, पर रुचि नहीं रहती (ऐल्यू, फेरम, लाइको, नेट्र-मूर, ओपि, रास, सिलि); पाकाशयके भीतर पत्थरकी तरह कोई भारी चीज़ है ऐसा मालूम होना, डकार आनेपर आराम मालूम होना (ब्राई, नक्स, पल्स)। खाते ही दर्द और भार मालूम होना और पेटके ऊपरी प्रदेशमें (Pit of stomach) स्पर्शका सहन न होना (कैलि-कार्ब); गर्म चीजें खानेसे बढ़ना।

अन्त्राशय।—पेट कड़ा, वायुसे भरा और दर्द-भरा ; शय्यापर करवट बदलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो आँत आदि समस्त चीजें उसी ओर ढुलक पड़ीं। बच्चोंको बार-बार अन्त्रशूलका पैदा हो जाना। मध्यान्त्र त्वचाकी सब ग्रन्थियोंका (Mesenteric glands) फूलना। कब्जियत, मलमें कड़ापन—कड़ा गाँठ-गाँठ मल। पेशाब करनेके समय बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है। मलान्त्र (Rectum) के बीचमें सुरसुरी और मलद्वारसे थोड़ा-थोड़ा तरल मल निकलना। बड़े केचुएकी तरह क्रिमि निकलना (सिना, सैण्टोनाइन)।

पुं-जननेन्द्रिय।—वृद्धोंके अण्डकोष और मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका (Prostate glands) बढ़ना और उसमें लचीलापनका न रहना (आर्जेण्ट, नाई, थूजा)। प्रबल रमणेच्छा, पर शिश्न शिथिल और बहुत जल्दी वीर्यपात हो जाता है। सङ्गमके समय रेतस्खलन होते-न-होते सो जाता है। मुष्क और दोनों ऊरूके बीचवाले अंशोंकी खाल उधड़ जाना और उस स्थानसे रस-स्राव होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रजःप्रकाशके पहले पाकाशय और पुट्ठेमें दर्द मालूम होना ; आर्त्तव आरम्भ होनेके कुछ पहले प्रदर-स्राव ।

श्वास-यंत्र ।—कच्छु-विष दूषित धातु (Psoric) बच्चेको जन्मसे ही खाँसी ; गलग्रन्थि (Tonsils) या अलिजिह्वा (Uvula) का बढ़ना । सामान्य सर्दी लगनेसे ही बढ़ना (ऐल्यू) ; सूखी, श्वासरोधक खाँसी । वायु-नलीके मुखपर ऐसा मालूम होता है मानो धुआँ घुस गया है । वृद्धोंकी श्वास-नली रोध करनेवाली सर्दी ; फेफड़ेका पक्षाघात होनेका उपक्रम । तालुके बीचमें रुखड़ापन और खुजलीके कारण होनेवाली खाँसी ; सन्ध्याके समय और आधी रातके समय बढ़ना । खाँसनेपर वक्षस्थलमें दर्द मालूम होता है । खाँसीका बढ़ना—सन्ध्यासे आधी राततक ; दोनों पैरोंमें ठण्ढी लगनेपर ; शारीरिक व्यायामके अन्तमें ; बाईं करवट सोनेपर (लाइ, पैरिस, फास, रास) ; ठण्ढी हवा लगने और खाँसीके विषयमें सोचनेपर ।

हृत्पिण्ड ।—कलेजा धड़कना—बाईं करवट दबाकर सोनेपर (डैफनी, नेट्र-म्यू, पल्स) ; हृत्पिण्डके पास दर्द मालूम होना, बहुत बेचैनी, इस विषयको सोचनेसे ही रोगका बढ़ जाना ('ऐल्यू, ऐसिड-आक्सैल) ।

गर्दन और पीठ ।—गर्दनकी गाँठोंका कड़ापन और फूलना और उनमें पीव पैदा होनेका लक्षण । ग्रीवा-देशीय मेदार्बुद (Fatty tumors), अर्बुदके नीचे भयङ्कर जलन मालूम होना । पृष्ठफलकके बीचमें चोटकी वजहसे दर्द । त्रिकास्थि या पश्चात् कटिके नीचेवाले अंशके (Sacrum) बीचमें दर्द—बैठनेके समय बहुत तकलीफ़ । श्रोणि या नितम्ब देशमें अकड़नकी वजहसे रोगी बैठ नहीं सकता ।

प्रत्यङ्ग ।—खड़े होनेपर दोनों पैर काँपा करते हैं, कुछ पकड़े बिना स्थिर होनेपर खड़ा नहीं हो सकता । दोनों पैरमें खींचन मालूम होना मानो कण्डरा या पेशीका अगला भाग संकुचित हो गया है (ऐमोन-म्यूर, कास्टि) ; खड़े होनेपर बढ़ना और सोनेपर घटना । नींदके समय शरीरकी सब पेशियोंका सिकुड़ना और फैलते रहना (सोनेपर पेशियोंका फड़कना बन्द हो जाता है—ऐगार) । बदबूदार पैरका पसीना—पैरकी अंगुली और तलवे जखमसे भरे । गुल्फके नीचे पसीना होना (ग्रैफा, सोराइन, मिडोरिन, सैनिक, सिलि) । शीत एकदम सहन नहीं होता (कैल्के, कैलि-कार्ब, सोरिन) ; निम्न-प्रत्यङ्गोंमें

जलन। एक ही पार्श्व में पसीना (ऐम्ब्रा, जिबोरैन, नक्स, पल्स ; बायें पार्श्व में—पल्‌स, फास ; जिस करवट सोता है, उसी पार्श्व में—ऐको, ऐसिड-नाई ; जिस करवट सोता है, उसके विपरीत पार्श्व में—ऐको, ऐसिड-नाई, बेञ्जिनम ; खुले अनावृत अंशमें—थूजा) ; दाद (वैसिलिन)।

निद्रा।—निद्रावस्थामें बोलता है ; बार-बार नींद खुल जाती है ; बहुत जलन मालूम होती है। भयानक सपने देखकर पसीनेसे भर जाता है।

वृद्धि।—रोगके विषयमें सोचनेपर ; रोगवाली करवट सोनेपर ; भोजनके बाद ; रोगवाली जगह धोनेपर।

घटना।—निर्मल वायु सेवनके लिये टहलनेके समय और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—सोरिनम, सलफर और वैसिलिनमके पहले और बाद ज्यादा फायदा करता है। गलकोषका प्रदाह पैदा होनेके लक्षणोंमें बैराइटा-कार्बके बाद सोरिनम इस दोषको एकदम आराम कर देता है (ऐल्यू, ऐण्टि-टार्ट, कैल्के-आयोड, कास्टिकम, कैमो, चायना, डल्कामारा, ऐसिड-फ्लू, सिलि, आयोड, लैके, लाइको, मर्क, नेट्रम, फास, पल्स, सल्फ)।

दोषघ्न।—ऐण्टि-टार्ट, बेलेडो, डाल्का, मर्क, जिङ्कम। कैल्केरियाके बाद इसका व्यवहार नहीं होता।

शक्ति।—३री दशमिकसे २०० शतततिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—४१ दिन।

बैराइटा आयोडेटा

(BARYTA IODATA)

दूसरा नाम।—बेरी आयोडाइडम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—स्तनका कर्कटीया जखम ; कैन्सर या कर्कट रोग ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; अर्बुद।

उपयोगिता और आभास।—गलकोष प्रभृति ग्रन्थियोंका फूलना और कड़ापन ; गर्दनकी गाँठें सब अर्बुदका आकार धारण कर लेती हैं और

दोनों अण्डकोषोंमें बहुत दूरतक फैली हुई सूजन तथा कड़ापन पैदा करता है। अवस्थाकी वृद्धिके साथ-ही-साथ दैहिक और मानसिक उन्नति नहीं होती।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐकोनाइटम लाइकोटोनम (Aconitum lycotonum)—ग्रीवा-देशकी और बगलकी और स्तनकी सब गाँठें फूल जाती हैं। इसके अलावा ग्रन्थि-मण्डलीके रोगादिमें लैपिस ऐल्बम (गर्दनकी) कोनायम (स्तनकी); मार्कुरियस आयोडेटम (वंक्षण प्रदेशकी Inguinal) और कार्बो-ऐनिमैलिस (बाघी—जब कड़ी हो जाती है, पर उसमें पीब सञ्चय नहीं होता); कैल्केरिया आयोडेटा—बदरङ्ग और शिथिल माँसवाले व्यक्तिका बहुत दिनोंकी ग्रन्थियोंका फूलना), एरम-ट्राइफिलम; (निम्न हनुकी नीचेकी ग्रन्थिका फूलना—कैलि आयोडेटा) और गल-ग्रन्थिकी (Thyroid glands) विवृद्धिमें—थाइरायडिन और आयोडेटम सबसे ज्यादा लाभदायक है। गलकोष प्रदाह (Tonsilitis)—दाहिने पार्श्वके गलकोषमें प्रदाह और सूजन होनेपर—गुयेकम; श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर रसभरे दाने निकलनेके साथ—फाइटोलैक्का; दाहिने कोषमें आरम्भ होकर बाएँ कोषमें फैलनेपर—लाइकोपोडियम और बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलनेपर—लैकेसिस।

शक्ति।—२री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

बैराइटा म्यूरियैटिका

(BARYTA MURIATICA)

दूसरा नाम।—क्लोराइड आव बेरियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—धमनीमें अर्बुद; गुह्यद्वारमें फोड़ा; दमा; अकड़न; बहरापन; अजीर्ण; ग्रन्थियोंका फूलना; प्रमेह; नया मेह; श्वेत-प्रदर; उन्माद; कर्णमूल-प्रदाह; कामोन्माद; कास; स्राव; पक्षाघात; गण्डमाला; वन्ध्यत्व; कर्ण-पटहका प्रदाह; अर्बुद; कर्ण-मूल-प्रदाह; अण्डकोषकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान लक्षण है—अन्ननलीके मुँहके सङ्कोचनकी वजहसे किसी चीज़के निगलनेमें तकलीफ़ और दर्द (नैजा, मार्क-कोर, जेल्स) मालूम होना और गलनालीमें ऐसा मालूम होना मानो कोई ठेपी लगी हुई (plugged) (ऐनाक) है; धमनीकी (artery) सूजन (aneurism)—शिरा (vein) को varicosis—वैरिकोसिस कहते हैं) और बहुत दिनोंकी गलकोषकी विवृद्धिमें यह विशेष फायदा किया करता है। इसकी क्रिया जननेन्द्रियपर रहनेके कारण स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही कामोद्रेक हुआ करता है। रक्त-संचालनमें व्याघात पैदा करता है, इसलिये इसके द्वारा शरीरका बरफकी तरह ठण्डा मालूम होना और इसके साथ ही पक्षाघात पैदा हुआ करता है।

लक्षणावली

कान।—कर्ण-पटहका प्रदाह (Tinnitis Aurium), कानमें झिन-झिन आवाज़ (ऐमोन-कार्ब, कास्टि, कोना, चिनिन-सल्फ, मस्कस, नैट्र-म्यू, सिलि, सलफर)। चिबाने, निगलने या छींकनेके समय कानमें “कड़ाक” से आवाज़ हो जाती है या सों-सों शब्द होता है (कैल्के, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम ; खाँसनेके समय (ऐम्ब्रा); कर्णमूलीय ग्रन्थिका फूलना। कर्णशूल ठण्डा पानी धीरे-धीरे थोड़े परिमाणमें पीनेपर घटना। बदबूदार पीवका स्राव (कैलि-म्यू, ऐसिड-नाई)।

गलेमें।—श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्योंको बहुत दिनोंका गलकोषका बढ़ना—निगलनेके समय दर्द मालूम होना और गलनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो ठेपी बैठी हुई है। अन्ननालीका मुँह और कर्ण-पश्चान्नालीकी पक्षाघात जैसा अवस्था।

पाकस्थली।—अरुचि। सवेरे वमन और उसके साथ ही ओकाई। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकाशयमें, वक्षमें और माथेमें गर्मी चढ़ रही है, वमनके साथ पाकाशयमें जलन। पेटके ऊपरी प्रदेशमें प्रदाह और उसपर बीच-बीचमें काले दाग दिखाई देते हैं। पाकस्थलीमें गड़बड़ी मालूम होना, जैसा कृमि रहनेपर मालूम होता है।

उदर।—उदरमें टपक (Pulsations—इग्ने, कैलि-कार्ब ; सब शरीरमें, खासकर उदरमें—सेलिनियम ; पेटके ऊपरी प्रदेशमें—कैलेड, रास,

ऐण्टि-टार्ट ; तलपेटमें—सिना ; बाएँ कुक्षि-प्रदेशमें—ग्रैटी, रैनानक्यू, रूटा ; दाहिने कोषमें—कोलो, सिपि ; दाहिने पार्श्वमें—सिङ्कोना ; नाभि-प्रदेशमें—ऐको, ऐलो ; वंक्षण प्रदेशमें—लाइ, सलफर), क्लोम-ग्रन्थिमें (Pancreas) सूजन मिला कड़ापन (कैलि-आयोड, मार्क-सोल) ; पुट्ठेकी ग्रन्थिका फूलना (मार्क-आयोड, बैडियेगा, कैलि-आयोड) ।

जननेन्द्रिय ।—स्त्री-पुरुष दोनों ही कामोन्माद-ग्रस्त हो पड़ते हैं (आत्महत्याकी प्रवृत्तिके साथ कामोन्माद—ओरिगेनम ; सद्य प्रसूताओंका—प्लैटिना ; पुरुषोंका—ऐसिड-नाइ, कैन्थरिस, फास, हाइड्रोफो ; शराबियोंका—नक्स-वोम ।

सर्वाङ्गीन ।—अकसर मस्तिष्क और मेरुमज्जामें मेद पैदा हो जाता है (प्लम्बम, प्लम्बम-आयोड, आरम-म्यूर) । शरीर बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है और पक्षाघातग्रस्त रहता है। शरीरके कितने ही स्थानोंपर क्षणभरके लिये पैदा होनेवाला और फिर तुरन्त गायब हो जानेवाला दर्द, अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका काँपना और हाथकी अंगुलीका बढ़ना। अंगुलीकी प्रादाहिक सूजनके साथ बाँहका सुन्न हो जाना और पेशियोंका फड़कना (थूजा) और सुन्न करनेवाला पक्षाघात।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—बैराइटा-कार्ब, प्लम्बम-आयोड, आरम-म्यूर, चिनिन-सल्फ़, नैजा, इग्ने ।

तुलनीय ।—कोनायम (उदर-ग्रन्थिका कड़ापन) ; आयोड, कैलि-आयोड, आइरिस (क्लोम-ग्रन्थि), सेलेन (पेटमें टपक) ; वमन—ऐबसिन्थ द्वारा प्रतिषेधित होता है।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

बेलेडोना

(BELLADONA)

दूसरा नाम ।—सोलेनम मैनियेकम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे वृक्षमें जब फूल खिलना आरम्भ होता है, उस समय उससे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— फोड़े और मुँहासे ; अन्धापन ; संन्यास ; व्रण ; मस्तिष्कको बीमारियाँ ; दूषित फोड़ा ; शूल ; कब्जियत ; अकड़न या तड़का ; खाँसी ; घुंड़ी (काली) खाँसी ; अवसाद ; अतिसार ; रक्तामाशय ; आँखको बीमारियाँ ; कानको बीमारियाँ ; आन्त्रिक ज्वर ; मृगी ; विसर्प ; उत्तेजना ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; गलगण्ड ; सन्धिवात ; अर्श ; सरका दर्द ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; जलातङ्क ; रक्ताधिक्य ; बहुव्यापक सर्दी ; फेफड़ेकी बीमारी ; दुष्ट-व्रण ; रतौंधी या रात्रग्न्धता ; कामोन्माद ; पक्षाघात ; डिम्बाधार-प्रदाह ; जरायु-प्रदाह ; फेफड़ेके वेष्टका प्रदाह ; फुसफुस-प्रदाह ; गर्भिणी रोग ; सूतिकोन्माद ; आमवात ; आमरक्त ; छोटी माता ; नींदका विकार ; मूत्र-क्लेश ; काँखना ; प्यास ; अण्डकोषकी बीमारी ; गलेका जखम ; गुटिका रोग ; जखम ; जरायुकी बीमारी ; गो-बीजके टीकाका दुष्परिणाम ; सरमें चक्कर आना ; क्रूप खाँसी ; कृमिकी वजहसे ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—पित्त-प्रधान, स्थूलकाय और रस-प्रधान धातुवाले मनुष्य और जो बालक-बालिकाएँ और स्त्रियाँ सुन्दर केशवाली हों तथा जिनकी आँखें पीली हों, जो सहजमें ही उत्तेजित हो जाती हों अथवा जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती हो, जिनके चेहरे और माथेमें सहजमें ही खून चढ़ जाता हो, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। स्नायु-मण्डलके सभी रोगोंमें बेलेडोनाका अधिकार है। माथेमें रक्तका दबाव बढ़ जाना, मस्तिष्कमें विकार, उन्मत्तता, प्रलाप, भ्रम देखना, पेशियोंका फड़कना और ग्रन्थिमण्डलोंका फड़कना और ग्रन्थि-मण्डलोंका प्रदाह—ये कई इसकी क्रियाके प्रधान फल हैं। लाल चेहरा, लाल आँखें, उत्ताप और जलन-भरी देह, ग्रीवा-देशीय (Carotid) धमनीकी सूजन और टपक, इन्द्रियोंमें चेतनाकी अधिकता, विकार, प्रलाप, बेचैन नींद, नींद न आना, मुख-विवरका सूखापन, जल-भीति वगैरह इसके निर्णायक लक्षण हैं। इसके कई निर्णायक लक्षण संक्षेपमें दिये गये हैं :—(१) सिरमें खूनका अधिक सञ्चय होना, मुखमण्डल उत्तापयुक्त। आँखें चढ़ीं, टकटकी लगाकर देखना, गर्दनकी (Carotids) धमनीमें टपकका दर्द और बहुत अधिक मानसिक उत्तेजना। (२) सभी शोणित-मार्गमें टपक, रोगी सोनेके समय शिराओंमें धमकका शब्द सुन पाता है और इसलिये उसे नींद नहीं आती। (३) देखने, सुनने (दर्शन, श्रवण) आदि सभी इन्द्रियोंमें उत्तेजना (Irritation),—आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती, जरा भी ऊँची

आवाज़ कानोंके लिये असह्य हो जाती है और नाकमें नाना प्रकारकें गन्धोंकी कल्पना होती है। (४) प्रचण्ड प्रलाप—रोगी भागनेकी चेष्टा करता है; जो सामनेमें रहता है, उसीको दाँत काटने या मारनेकी चेष्टा करता है और जो कुछ सामने पाता है, उसे ही तोड़-फोड़ डालनेकी चेष्टा करता है। (५) सरमें दर्द—शोणित सञ्चयकी अधिकताकी वजहसे (Congestive)—शिरामें टपक और पूर्णताका मालूम होना; रोशनीमें एकाएक माथा हिलानेपर शब्द और सोनेसे वृद्धि—दबाने और अधलेटी अवस्थामें आराम मिलना। सरमें दर्द, केश छटवाने और तेज़ धूप लगनेपर। (६) सरमें चक्कर आना, झुकने—पीछे या बाईं ओर गिर जानेका उपक्रम। (७) जीभ, सफेद रङ्गकी और दोनों किनारे लाल; लाल या ऊँचे लाल कण्टकोंसे भरे (Strawberry like)। (८) गलेके भीतर खाल उधड़ जाना, खासकर दाहिने पार्श्वमें; बार-बार लार निगल जानेकी इच्छा; निगलनेमें कष्ट, विशेषकर जलीय पदार्थ, जलीय पदार्थ निगलनेके समय वे प्रायः नाककी राहसे बाहर निकल जाते हैं। (९) पेट गर्म, फूला हुआ,—कतरनेकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो आँतोंको कोई पकड़कर निचोड़ रहा है, बहुत दर्द होता है, छूने, दबाने या एकाएक धक्का लग जानेसे यहाँतक कि शय्याका वस्त्र भी लगनेसे दर्द बढ़ जाता है और रोगी अनुभव करता है, कि दर्द बढ़ गया। (१०) मल पतला और हरा या चाय, खड़ियाकी तरह थक्का-थक्का। (११) रमणियोंकी प्रसवके दर्दकी तरह दर्द और वस्तिगह्वरके यंत्रोंका बड़े जोरसे नीचेकी ओर खिंचना, मानो सभी पदार्थ योनि-मार्गसे बाहर निकल जायँगे। (१२) जरायुका स्राव (Metrorrhagia), खूब गर्म और चमकीला लाल रङ्गका। ऋतु, असमयमें ही ऋतु हो जाता है, स्राव बहुत ज्यादा। (१३) खांसी, खुसखुसी खाँसी; सूखी और वायुनलीमें खुजलाहट; घं-घं शब्द करनेवाली खाँसी, शरीरको हिला देनेवाली और आक्षेपिक (Convulsive) खाँसी; स्वरनालीमें (Larynx) दर्द और क्षय हुई त्वचाको बतानेवाली खाँसी। हृद्प्रदेशमें ऐसा मालूम होना मानो (Bubbling) बुलबुले उठ रहे हैं। (१४) शरीरकी त्वचा गर्म और सूखे उद्भेद आदि एक साथ मिल जाते हैं या एक ही आकारके रहते हैं, उनका रङ्ग लाल, अंगुलीसे दबानेपर अदृश्य हो जाते हैं और अंगुली हटानेपर फिर पैदा हो जाते हैं। (१५) दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है और क्रमसे बहुत तेज़ होकर, एकाएक गायब हो जाता है और फिर इसी

भावसे पैदा हो जाता है। (१६) दाहिने अंगमें लक्षणोंका अधिक पैदा होना।

लक्षणावली

मन।—जीवनसे विराग और पानीमें डूबकर आत्महत्या करनेकी इच्छा। अस्पष्ट भावसे कुछ बका और बुदबुदाया करता है और शय्याको नोचा करता है, मानो किसी चीज़को खोज रहा है (आर्निका, हेलिबो, हायोसा, जिङ्कमस्यूर)। रोगी अपने मनमें समझता है कि यह भूत, प्रेत, भयङ्कर मूर्त्तियाँ और नाना प्रकारके कीट, पतङ्ग, काला कुत्ता वगैरह देखता है (स्ट्रैमो; असंख्य सर्प घरमें प्रवेश कर रहे हैं—लैक-कैन)। काल्पनिक वस्तुका भय,—भागनेकी चेष्टा करता है। भ्रम देखना। प्रचण्ड विकार—दाँत काटना, लोगोंके बदनपर थूक देना, मारता है और कपड़े फाड़ डालता है (स्ट्रैम); भागनेकी चेष्टा करता है (हेलिबो); रोशनी और आवाज़ बिलकुल ही सहन नहीं होती। विकारावस्थामें माथा गर्म और दर्द-भरा हो जाता है। उद्दीप्त और उन्मादकी तरह दृष्टि, शून्य दृष्टिसे एक ओर देखा करता है, पुतली फैली हुई, नाड़ी पुष्ट और उछलती हुई, मानो छोटा लोहेका एक गोला चिकित्सकके हाथमें धक्का दे रहा है; मुख-विवर सूखा; मल धीरे-धीरे निकलता है और पेशाब रुक जाता है। नींद आनेसा लगता है, पर नींद नहीं आती (कैमो, ओपि)। कुत्तेकी तरह गरजना और शब्द करना। बोलना नहीं चाहता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ बाईं ओर गिरनेका उपक्रम, मानो उसके चारों ओरके सब पदार्थ घूम रहे हैं (कोना, ब्राई, आर्नि; वेलि, नक्स, वेरेट); माथा झुकानेपर (नक्स, पल्स, सलफर, लाई, पेट्रोल); झुके रहनेपर उठनेके समय—ब्राई, ग्रैफा, पेट्रोल, रास); रातमें सोनेमें करवट बदलनेके समय, अवस्था परिवर्त्तन करते ही सरमें चक्कर आना; मस्तक और मुखमण्डलमें रक्तका अधिक सञ्चय होना (ऐमिल, ग्लोनोइन; मिलिलोट)। सरमें दर्द—रक्तसञ्चयकी अधिकताकी वजहसे—लाल मुखमण्डल और मस्तिष्कमें ग्रीवा-देशीय धमनीकी टपक मालूम होना (Pulsation of Carotids) (मिलि-लोट, क्रियो, पेट्रोल, सैङ्गिविन, सिपि, सिलि, सल्फ, बेरेट, टोङ्गो); एकाएक शरीर हिलाने, रोशनी, सोने, परिश्रम करने वगैरहसे बढ़ना। कसकर

बाँधने ; कपड़ा ओढ़ लेने और ऋतुके समय घटना। तकियेमें सर गड़ाया करता है (एपिस, हेलिबो, पोडो)। सरमें दर्द—दाहिनी ओर रहता है और केश कटवानेसे बढ़ जाता है।

आँख।—चमकीली और टकटकी लगी दृष्टि ; पुतली फैली हुई ; आँख मानो बाहर निकल पड़ेगी। रोशनीका ज्ञान न रहना ; आँख लाल और चेहरा फूला हुआ। सूखा मालूम होना ; आँख हिलानेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो वे सूखी और अकड़ी हुई हैं। दीप-शिखाओंके चारों ओर आगका गोला दिखाई देना। उसका थोड़ा अंश लाल रङ्गका दिखाई देता है ; कभी-कभी दीयेकी लौ मानो किरणोंकी रेखाओंमें बैठी हुई-सी मालूम होती है। आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं ; पलक तेजीसे गिरती है। रोशनीसे भय मालूम होता है। आँखमें तेज़ दर्द ; भ्रम देखना ; दो देखना ; डेरा देखना (Spuinting—तड़क और दूसरी तरहके आक्षेपोंकी वजहसे—ऐमोन ; ताण्डव (Chorea) रोगग्रस्त व्यक्तियोंका—हायो ; कृमिकी वजहसे—सिना, स्पाइजि ; किसी एक आँखकी तिर्यक दृष्टि—ऐल्य ; दाहिने आँखकी—ऐल्यूमिन)। पलकोंका आक्षेप या स्पन्दन (कोडोया, ऐगार ; उज्ज्वल दृष्टिके साथ—पल्स)। सारी चीजें अन्धकारसे ढँकी मालूम होती हैं। रतौंधी (Hemeralopia—हेलिब्रो ; दिनौंधी—मर्क, ऐको, सिपि, सिलि)।

कान।—दाहिनी कर्णमूल-ग्रन्थिका फूलना और लाली, उनमें तेज़ दर्द मालूम होना (मर्क-कोरे, पल्स)। छेदनेकी तरह (कैमो, नक्स, पल्स), कर्णपटह फूला और लाल मालूम होता है, ऊँची आवाज़ सहन नहीं होती—चौंक उठता है। श्रवण-शक्तिकी अत्यन्त प्रखरता या बधिरता।

नाक।—एकाएक सर्दी रुक जानेकी वजहसे तेज़ और उन्मत्त करनेवाला सर-दर्द। नाना प्रकारकी काल्पनिक चीज़ोंकी गन्ध आती है। नाकका अगला भाग लाल, फूला, चमकीला और जलन-भरा। लाल मुखमण्डलके साथ नासारन्ध्रसे रक्त-स्राव। बाएँ नासारन्ध्रमें खुजलाहटके साथ बार-बार सूखी छींक। खून-भरा श्लेष्मा निकलता है। सूंघनेकी शक्तिका बहुत बढ़ जाना ; बच्चा सोया-सोया तकलीफ़से चिल्लाता और रो उठता है।

मुखमण्डल।—चेहरा तमतमाया हुआ, लाल और गर्म ; पर पसीना बिलकुल ही नहीं होता, इसके साथ ही माथेमें भयङ्कर यन्त्रणा। सब पेशियाँ

अकड़नकी वजहसे सिकुड़ती और फैलती हैं और मुँह टेढ़ा पड़ जाता है। चेहरा और ऊपरी ओंठ फला मालूम होता है।

मुख-विवर।—सूखा—दाँतका दर्द, भोजनके बाद ही धीरे-धीरे बढ़कर धीरे-धीरे घट जाता है (स्टैन); बच्चोंको दाँत निकलनेके समय तड़का और ज्वर होता है (ज्वर-रहित होनेपर—मैग-फास), एकाएक आरम्भ होता है; माथा गर्म और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे, जीभ लाल कांटोंसे भरी; फूली और प्रदाह-भरी; सूखी, लेपसे ढकी; अगला भाग सूखा और ठण्डा मालूम होता है, विकारावस्थामें दाँत-पर-दाँत घसता है। तोतलाना (स्टैन), दाँत खट्टे मालम होना।

गलेके भीतर। – गलकोष-प्रदाह (Tonsilitis)—दाहिनी ओर अधिक मालूम होना; रोगवाली जगह बहुत लाल; पानी आदि पीनेके समय गलेमें दर्द (एक बूंद पानी भी निगलनेके समय दर्द—आयोड मर्क-आयोड, फेर); अन्ननलीका संकुचित मालूम होना (कैप); गलेमें मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ अड़ा मालूम होना (ऐनाक, लैके, बेराइटा-म्यूर), तालुमूल अकड़न भरा। बार-बार निगलनेकी इच्छा (लिसिन, मर्क-आयो-फ्लेव)। गलेके भीतरकी झिल्लीमें रुखड़ापन मालम होना। जलन और सूखापन मालूम होना (सेबाड)।

पाकाशय।—पानी अच्छा न लगना; पानीसे भय (Hydrophobia—स्ट्रैम, हाइड्रोफोब); भूख न लगना (जैण्टियाना-लूट)। मांस और दूधसे अरुचि। पेटके ऊपरी प्रदेशमें सिकुड़न और फैलाव मालूम होना। सङ्कोचन और इस सङ्कोचनसे पैदा हुआ दर्द मेरुदण्डतक फैल जाता है। मिचली और वमन (इपिका, ऐपोमार्फिया)। आक्षेपिक हिचकी।

अन्त्राशय।—उसमें स्पर्श सहन न हो और वायुसे फूला हुआ, जरासा हिलने-डोलनेसे दर्द बढ़ा मालूम होता है, यहाँतक कि शय्या छू जाना या शय्यापर हिलने-डोलनेसे भी दर्द बढ़ा हुआ मालम होता है; चलनेके समय बड़ी सावधानीसे पैर रखना पड़ता है; दाहिने अन्धान्त्र-प्रदेशमें जहाँ स्थूलान्त्रके साथ सूक्ष्मान्त्र जाकर मिली है (Ileo Cœcal region) वहाँ दर्द; जरा भी शय्याके स्पर्शसे दर्द बढ़ जाता है। दाहिने कोखसे बायें कोखतक फैली हुई स्थूलान्त्र (Transverse colon) एक गोलेके आकारमें फूल जाती हैं—अन्त्रशूलके आक्रमणके समय ऐसा ही हो जाता है। मालूम होता है कि कोई

आँतोंको हाथसे पकड़कर मरोड़ रहा है—हिलाने या दबानेसे बढ़ना। खाँसनेके समय, छूनेसे, छींकनेपर और बाएँ पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

मल।—आमातिसार सुलभ, पतला और हरे रङ्गका। कब्जियत—मल खड़ियाके टुकड़ेकी तरह खण्ड-खण्ड निकलता है। पाखाना फिरनेके समय शरीर सिहर उठता है। मलनालीमें डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा (एपिस); मलद्वार एकाएक संकुचित हो जाता है। कमरमें दर्दके साथ बहुत दर्द-भरा बवासीर; उस स्थानका छुआ न जाना। मलद्वार या गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना (पोडो)।

पेशाब।—पेशाबकी नलीमें मानो एक कीड़ा रेंग रहा है, ऐसा मालूम होना (मूत्रनालीके भीतर होनेपर—पेट्रोसेल, जिङ्कम)। मूत्र-रोध—केवल बून्द-बून्द पेशाब निकलता है—आर्निका, कैम्फो, कैन्थ, क्लिमे, कोपेवा, युफोर्बिया, स्टैफ, सलफर)। पेशाब परिणाममें बहुत थोड़ा, पीली आभा लिये गाढ़ा और पतला। मूत्राशयमें दर्द। लगातार स्राव होना—बूंद-बूंद पेशाब निकलता है (दिनके समय सोनेमें अनजानमें हो जाना—फेरम-फास), मूत्र-स्थलीका क्षणिक पक्षाघात (साइक्यु, डाल्का, हायो, लैके, लोरो, फास); मूत्राशयका सङ्कोचन (बार्बे, कैप्स, सार्सा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोष कड़े, ऊपरकी ओर उठे और प्रदाह भरे (हैमा); रातमें इस स्थानपर पसीना होता है (कैलेड, मार्क, सिपि, थूजा; बदबूदार—नैट्र-म्यू, सल्फ; मुष्कत्वक्‌से पसीना निकलना—कैलेड, सिपि, सिलि, थूजा; मूत्राधार सुखशायिका ग्रन्थि (Prostate Glands) से रस-स्राव (इस्क्यू, ऐग्नस, ऐल्य, ऐनाक, कैल्के, कास्टि, हिपर, नैट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें भयानक दबाव मालूम होना मानो जरायु वगैरह समूचे यंत्र अपत्य-पथसे बाहर निकल आना चाहते हैं; खड़े होने या सीधे होकर बैठनेपर घटना; बदबूदार स्राव (गर्म पसीना निकलनेके साथ—टीलिया—इयु; हाथसे योनि-मुख दबा लेनेपर घटना —सिपि; प्रबल रमणेच्छाके साथ—स्ट्रेम्; अधिककर—फ्रेक्सिनस-ऐमे; ऐलेट-फैरिनो); झुककर बैठने, चलनेके समय और सवेरे तकलीफ़का बढ़ जाना। अपत्य-पथ सूखा। कमरमें ऐसा दर्द मालूम होता है मानो कमर टूट जायगी (आर्जेण्ट-नाई, बार्बेरिस; मैग-सल्फ, रास—कमरमें कमजोरीकी अधिकतासे—स्टैन)।

दाहिने डिम्बाधारका बढ़ना—और उसमें सुई बेधनेकी तरह दर्द या पटक जैसा दर्द ; दर्द एकाएक पैदा होता है और उसी तरह एकाएक गायब हो जाता है। ऋतुके समय स्रावका बढ़ जाना (Monorrhagia)—खून चमकीला लाल, बहुत जल्दी-जल्दी स्राव होता है। खून बहुत ज्यादा ; गर्म, चमकीला लाल ; कभी-कभी यह रक्तस्राव जमा हुआ और बदबूदार होता है ; ऋतुके बीचके समय रक्तस्राव (ऐम्ब्रा, ऐन्थ्रा-काकी, आर्निका, बोवि, कैल्के, कैमो, काक्य ; जमा हुआ ऋतु—कैमो, सिङ्कोना, फेर, पल्स, रास, सैबाइ ; बदबूदार—कार्बो-वेज, कैमो, क्रोकस, सैबाइ)। प्रसवका दर्द—एकाएक पैदा होता है और एकाएक अच्छा हो जाता है। स्तन-प्रदाह (Mastitis), स्तनमें दर्द, टपक, लाली—स्तनवृन्तसे लाल रेखा चारों ओर फैल जाती है (ब्राइ, फाइटो) ; दोनों स्तनोंमें भार, लाली और कड़ापन मालूम होता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia) बदबूदार और परिमाणमें घट जाता है (कार्बो-ऐन, बैप्टी)।

श्वास-यंत्र ।—नासारन्ध्र, मुखविवर, तालुमूल और वायुनलीमें बहुत सूखापन मालूम होना। खुजलाहटकी वजहसे वायुनलीसे पैदा हुई खाँसी, सन्ध्याके समय बढ़ना ; आक्षेपिक खाँसी ; मुखमण्डल गर्म और आँखें मानो जल रही हैं ; वायुनलीके मुखपर खुजलीकी वजहसे खाँसी, मानो पीछेकी ओर धूल पड़ी है ; परिश्रम, सोने या ठण्डी साँस लेनेके समय खाँसी पैदा हो जाती है ; वायुनलीमें दर्द मालूम होना ; श्वासकृच्छ्रता और फेफड़ेमें दबाव मालूम होना ; स्वरभङ्ग, स्वरलोप ; सर्दीकी वजहसे क्रुप खाँसी—घुंड़ीकी तरह घड़-घड़ शब्द करनेवाली और तेज़—बच्चेका चेहरा लाल हो उठता है। (नीलिमा-युक्त होता है—कोरैल, रूम, इपिक)। आँख फूली और उसका सफेद अंश लाल हो जाता है और नाकसे स्राव हुआ करता है खाँसनेके पहले बच्चा रोया करता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्निका), खाँसनेपर छातीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (एको, ब्राइ, फास) ; कलेजा धड़कना, गर्दन और सरमें ऐसा मालूम होता है मानो टपकका दर्द हो रहा है।

पीठ ।—(Stiff-neck)—दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचके अंशमें और गर्दनका पिछला भाग अकड़ा हुआ (कैलि-कार्ब, फास, सिपि ; ग्रीवा सामनेकी ओर अकड़ी हुई—ऐण्टिम-टार्ट ; दर्दवाली जगह छूने या हिलनेसे वृद्धि—ब्राइ ; सर्दीकी वजहसे, मानो सोनेके समय गर्दन ठण्डी हो गयी थी ; इसी

वजहसे दर्द हो गया है—डालका)। लगातार कमरमें दर्द, मानो टूट गयी है—मैग-कार्ब, ग्रैफ, फास), गर्दनकी ग्रन्थिका फूलना (कोनायम)।

प्रत्यङ्ग।—दोनों बाहुओंमें भार मालूम होना (ऐसिड-म्यू, नेट्र-म्यू, पल्स, स्ट्रैम)। बाहुओंका सुन्न मालूम होना, उसमें छेदनेकी तरह दर्द मालूम हो (ब्राई, रास)। मेरुदण्डके निचले अंशमें दर्द (Coccygodynia), वंक्षण-सन्धिमें (Hip-joint) डङ्क मारनेकी तरह या जलनकी तरह दर्दके साथ रातमें और थोड़ा भी हिलानेसे दर्दका बढ़ना (खींचने या चोटकी वजहसे दर्द—कास्टि ; मानो ऊरुमें कोई भारी चीज़ लटक रही है और रोगीको खींचकर बैठा देना चाहती है—ऐण्टि-टार्ट ; छेदनेकी तरह या झटकेकी खींचनकी तरह दर्द—साइक्लूम ; दबानेसे दर्द—सिलि ; बैठनेपर दर्द होताहै—घूमने या छूनेपर दर्दका बढ़ना—कैलि-नाई)। सूतिकास्तम्भ या नव-प्रसूतिकी जंघाकी शिराका प्रदाह (Phlegmasia Alba Dolens)—पल्स, हैमा, बिस्मथ।

त्वचा।—चिकनी, चमकदार और लाल—सब जगह एक समान ; सूखी, उत्तापयुक्त और जलन-भरी ; कोई रोगीका शरीर हाथसे छूता है तो ऐसा मालूम होता है, कि उसका हाथ जल जायगा। इसके साथ ही सूजन (घमौरीकी तरह उद्भेद और बीचकी जगह मोटी या नीली—आइलैन्थस, रस-टक्स), फैलनेवाले त्वचाका प्रदाह विसर्प—चमकीली, चिकनी त्वचा और सामान्य सूजन (सूजनकी बहुतायत—एपिस ; विस्फोटकवत् प्रदाहयुक्त Phlegmonous—वेरेट्रम-विरिडि ; इधर-उधर घूमनेवाला—दाहिनी ओरसे बाईं ओर—रस-टक्स। दर्द दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होता है (मर्क, प्लम्बम, चायना, बैप्टी, कैन्थ, आइरिस) ; बाएँ पार्श्वसे (आयोड, एपिस, सलफर, लैके)।

नींद।—औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (एपिस, कैमो, लैके, ओपी ; दिनमें औंघाई, परन्तु रातमें नींद न आना—लाइको, मर्क, सल्फ)। औंघाई और लगातार कुछ बड़बड़ाना या अस्पष्ट भावसे अपनी तकलीफ़ कहना या कराहना। सोते-न-सोते चौंक उठता है, मानो डर गया है (आर्स, ब्राई, सिना, नक्स ; सोते ही चौंककर रोने लगता है—कैमो, स्ट्रैमो, सिना, ज़िङ्कम ; नींदकी अवस्थामें हाथ-पैर पटककर मानो चौंक उठता है—आर्स, लाइको, कास्टि, पल्स ; सोनेपर चौंककर जाग जाता है—कैमो, सैम्बुकस, सल्फ, स्ट्रैम ; लोमहर्षक भयानक चिल्लार करता है—एपिस, हेलिबो)।

ज्वर ।—नाड़ी तेज़ और पुष्ट या धीरगति और पुष्ट, सन्ध्याके समय कँपकँपी या जाड़ा मालूम होना, इसके साथ ही हाथ-पैर और माथेमें उत्ताप मालूम होना (माथा गर्म और शरीरका बाकी अंश ठण्डा—आर्स, ब्राई, हायो); सेंकने या आग तापनेपर जाड़ा नहीं जाता (फास, नक्स ; इसके विपरीत होनेपर—आर्स, इग्ने, कैलि-कार्ब)। शरीर ढँके रहनेपर भी हिलने-डोलनेपर जाड़ा मालूम होता है (नक्स, पल्स); ज्वालाजनक उत्ताप, भीतर और बाहर और उसके साथ ही बेचैनी ; आन्त्रिक (Enteric) ज्वरके साथ मस्तिष्कमें उत्तेजनाकी अधिकता ; आरक्त (Scarlet) ज्वर—चिकनी, उज्वल, लाल त्वचा और बहुत उत्ताप ; लगातार प्यास ; इसके साथ ही आन्तरिक यन्त्रणा और कम्पन ।

सार्वाङ्गिक ।—दाहिने पार्श्वपर ही रोगका सबसे अधिक आक्रमण होता है (बैप, कैन्थ, आइरिस ; बायें पार्श्वपर—एपिस, लैके)। दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक गायब हो जाता है (धीरे-धीरे पैदा होता है और धीरे-धीरे जाता है—प्लैट, स्टैन)। सन्धि-स्थानोंमें दर्द, एक स्थानसे दूसरी जगहपर हट जाता है (कैलि-बाई, पल्स, सल्फ)। अकड़न या पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना, छूने या रोशनीसे या चमकीली चीज़ देखनेसे फिरसे पैदा हो जाता है (स्ट्रैम, हाइड्रोफोर), सारा शरीर अकड़ जाता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय अकड़न (Convulsions), ज्वर अकड़न (ज्वर न रहनेपर—मैग-फास)। एकाएक रुक जाना या निवृत्त हो जाना। माथा गर्म और दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे ।

वृद्धि ।—छूनेसे, शरीर हिलानेसे, आवाज़से या वायुका प्रवाह लगनेपर, चमकीली या चमकदार चीज़ देखनेसे (लिसिन, स्ट्रैम); दिनके ३ बजनेके समय ; रातमें—दोपहरके बाद ; पीनेके समय ; माथा ढँक लेनेपर या माथा मुड़वा लेनेपर ; गर्मीके दिनोंकी धूपमें और सोनेपर ।

घटना ।—विश्रामसे, खड़े होनेपर या सीधे होकर बैठनेपर और गर्म घरमें घटना ।

दोषघ्न ।—(अधिक मात्रामें) उद्भिदोंकी खटाई, चाय, काफी (क्षुद्र-मात्रामें), काफिया, हिपर, हायोसा, ओपि, सल्फ, सेबाडिला ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐकोन, आर्स (कर्कटकी वेदना), ब्रायो (आमवात), कैल्के, कैमो, साइक्लूटा, क्यूप्रम, ओपि, युपेट (मूत्रक्लेश), जेल्स, हिपर, हायोसा, लैके, लिलियम, मर्क, नक्स, ओपि, पल्स, रास, स्ट्रैम (क्रोध), विरेट्र, आर्निका। इसका अनुपूरक—कैल्के-कार्ब। जिस रोगकी नयी अवस्थामें बेलेडोनाका प्रयोग होता है, उसी रोगकी पुरानी या दीर्घकाल स्थायी अवस्थामें कैल्केरियाका प्रयोग होता है। यदि बेलेडोनासे किसी रोगमें कुछ लाभ पहुँचे तो उसे एकदम आराम करनेके लिये कैल्केरियाका प्रयोग करना पड़ता है।

शक्ति ।—१म दशमिक, ६ठी, ३०, २०० क्रम व्यवहार होता है।

क्रियाका स्थायित्व । - १ से ७ दिन।

परीक्षक ।—महात्मा हैनिमैन।

बेलिस पेरेनिस

(BELLIS PERENIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस पौधेके समूचे अंशसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— वयोव्रण; क्लान्ति; सरमें चक्कर आना; फोड़ा; छोटी सन्धियोंका वात; सरका दर्द; अजीर्ण; नकली मैथुनका दुष्परिणाम; पसीना; गर्भावस्थामें बहुतसी बीमारियाँ; चर्म-रोग; आमवात; अनिद्रा रोग; प्लीहाकी बीमारी; चोटका दुष्परिणाम; अर्बुद; जरायुकी क्लान्ति; शिराओंका फैलना।

उपयोगिता और आभास ।—डा० कमटस बार्नेटका कथन है कि जहाँ यह दिखाई दे, कि किसी तरहका अत्याचार हुआ है, वह रोगिनीका निजका किया हुआ हो या दूसरेका अथवा स्वामीका किया हुआ हो, उन सब बीमारियोंमें बेलिस पेरेनिस अमोघ लाभदायक है (हाइपेरिकम)। युवतियाँ बहुत ज्यादा सन्तान होनेके भयसे या सन्तान बिल्कुल ही न हो इसलिये, कितने ही उपाय कर जरायुको उत्पीड़ित किया करती हैं और इसीलिये उनका जरायु उस अत्याचारको चुपचाप सहन न कर उसके अर्थात उस स्थानकी अधिकारिणीके शरीरमें नाना प्रकारकी बीमारियाँ पैदाकर बदला चुका लिया करता है। ऐसी

युवतियोंके दोनों स्तन सूख जाते हैं यहाँतक कि उनमें कुछ भी नहीं रहता। डा० बार्नेट कहते हैं—“× × × Genesiac fraud causes disease and produces a debased state of the womb ; it becomes too fibrous, hard ; loses its erectility andcontractility, and instead of ballooning about in the abdomen in happy unconsciousness it flops down on the floor of the pelvis miserable and discontent and a sorry burden,—it has been cheated and it verily does not bear it uncomplainingly.”

वस्ति-गह्वर प्रदेशमें बहुत दर्द मालूम होता है। अस्वाभाविक मैथुन आदिसे पैदा हुई बीमारीमें और कोई स्थान (एँड़ी या कलाई) में मोच खा जानेपर या चोट लग जानेपर जो दर्द होता है, उसमें यह बहुत लाभदायक है। लगातार और शरीरके सभी अंशोंमें फोड़े निकलना ; व्रण ; शरीरकी गर्म अवस्थामें पानीय (शरबत आदि) पीनेकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है। ठण्डी हवा लगनेपर जो बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें भी इससे फायदा दिखाई दिया करता है।

लक्षणावली

मस्तक।—बुड्ढोंके सरमें चक्कर आना। शिर-पश्चात् (सरका पिछला भाग—Occiput) से मूर्द्धादेश (Vertex) तक दर्द। कपालकी त्वचा संकुचित मालूम होती है। चोटकी वजहसे दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियके अत्याचारकी वजहसे जरायुका सामनेकी ओर या पीछेकी ओर हट जाना (अरम-नैट्र, हाइपिरिक, फ्रैक्सिनस-ऐमे)। दोनों स्तन और जरायुमें अधिक रक्त-संचय हो जाना (Congestion) ; शिराका फैलना (हैमा)। गर्भावस्थामें चल न सकना। तलपेटकी सब पेशियाँ सुन्न और शक्ति-शून्य मालूम होती हैं। जरायुमें बहुत दर्द होता है। प्लीहामें सुई बिंधनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग।—दाहिनी बगलमें दर्द—मानो फोड़ा निकलेगा। कभी-कभी बायें हाथकी मध्यमा अंगुलीमें दर्द, मानो फोड़ा निकलना चाहता है।

त्वचा।—सारे शरीरमें एकके बाद दूसरे, इस तरह लगातार फोड़े निकलना (आर्निका, सलफर)। काला दाग और सूजन, विसर्पकी तरह

(erysipelatous), बहुत दर्द और छुआ न जाना। चोटकी वजहसे शिराका फैलना या शिरामें खूनका अधिक इकट्ठा हो जाना।

सार्वाङ्गिक।—शरीरमें बहुत थकन मालूम होना, सोये रहनेपर आराम मालूम होना (ऐबिस-कैन, आर्जेण्टम, आर्स, कैमो, साइक्ले, फेर, नक्स, रास-टैड, थोया, नेट्र-कार्ब)। बाईं ओर बीमारीका होना (लैकेसिस)।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—या तुलनीय—आर्निका, आर्स, हैमा, हाइपेरिकम, फ्रेक्सिनस-ऐमे, हेलोनि, स्टैफ।

शक्ति।—मूल अरिष्टसे ३रा दशमिक क्रम।

बेञ्जिनम

(BENZINUM)

दूसरा नाम।—बेन्जन्।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अलकतरेको चुआकर एक तरहका पदार्थ निकाला जाता है और उससे सुरासारमें मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—रक्तामाशय; ज्वर; सर-दर्द; अनिद्रा; पसीना; सान्निपातिक ज्वर; दृष्टिका विकार।

लक्षणावली

मन।—सामान्य कारणसे ही रोने लगना (पल्स, नेट्र-मि, लिलि-टाइ, सिपिया); अपने आराम होनेके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, कैक्टस, लैक-कैन, लिलि-टाइ, मेडोर, पल्स, आर्जेण्ट-नाइ, ऐसिड-हाइ, सोरिनम, सिफिलि); बहुत ही क्रोधी और परच्छिद्रान्वेषी (दूसरोंका दोष देखनेवाला—वेरेट-ऐल्ब)।

आँख।—ऊपर देखनेपर सरमें दर्द मालूम होना। अन्धकारमें मानो एक सफेद हाथ सामने आकर, उसके मुँहकी ओर अग्रसर हो रहा है। यही भ्रम देखकर रोगी भयसे चिल्ला उठता है।

मुखमण्डल।—कभी-कभी बायें गाल और बाईं जंघास्थिकी पेशी एकाएक फूल जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो रोगवाली जगह वायुसे भर गई है।

मुख-विवर ।—दाँतोंपर एक तरहका मैला दाग पड़ता है (Sordes), जीभ सूखी, भूरा रङ्ग । दर्द-भरा, गोल आकारका मुँहका जखम, खासकर दोनों गालोंके भीतरकी ओर ।

पाकाशय ।—भूख न लगना; कमला नेबू खानेकी इच्छा । बरफका पानी पीनेकी प्रवल इच्छा रहती है, एक घूंट पीनेपर ही तृप्ति हो जाती है और फिर तुरन्त भागने लगता है (आर्स) ।

पेशाब ।—काला, बदबूदार । तली, लाल बालूकी तरह जमती है (लाइको, सिपि; सफेद—सिना, बार्बे, ग्रैफ) ।

सार्वाङ्गिक ।—दर्द ऊपरकी ओर जाता है; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह शय्या और छत भेदकर नीचे गिरा जाता है (ब्राई) ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ब्रायो (आँख हिलानेसे वृद्धि); बेन्‌जिन नाइट, सलफर (नीचेकी ओरसे ऊपरकी ओर गति) ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३री दशमिक ।

बेञ्जिनम डाइनाइट्रिकम

(BENZINUM DINITRICUM)

दूसरा नाम ।—डाई-नाइट्रो-बेञ्जोल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारमें गलाकर क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—खूनकी कमी, तम्बाकूसे वितृष्णा, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, रङ्गोंका न दीख पड़ना, दृष्टि-शक्तिका घटना, काला रक्त और पेशाब वगैरह लक्षणोंमें उपयोगी है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—बेञ्जिनम, बेञ्जिनम-नाइट्रि, हाइड्रोसियेनिक-एसिड, आर्स ।

दोषघ्न ।—स्ट्रिकनिन ।

शक्ति ।—६ शततमिकसे ३० शततमिकतक ।

बेञ्जिनम नाइट्रिकम

(BENZINUM NITRICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बेञ्जलके साथ नाइट्रिक एसिड मिलाकर यह तैयार होता है । सुरासारमें मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन ; आक्षेप ; नीलिमा रोग ; मृगी ; श्वास-प्रश्वासमें दृढ़ता ; डेरा देखना ; धनुष्टङ्कार ; दाँती लगना ।

उपयोगिता और आभास ।—सुस्ती, भ्रम, मूर्च्छा, अकड़न, पेशियोंका संकोचन और प्रसारण (सिकुड़ना और फैलना) ; मोहाच्छन्न, तन्द्रा ; श्वास-प्रश्वासमें खर्वता ; पुतलियोंका फैलना ; मुँदी हुई आँखें ; बाईं ओरसे दाहिनी ओर घूमनेवाला आँखका गोला ; ओंठ, चेहरा और हाथके नख नीले ; नासा-पुटका सिकुड़ना और फैलना ; आक्षेपावस्थामें पीछेकी ओर या बगलमें माथा लटक जाना ; अनजानमें पाखाना-पेशाब हो जाना ; सारे शरीरका पक्षाघात इत्यादि इसका प्रधान क्रियाफल है ।

लक्षणावली

मन ।—बेहोश, चेहरा नीलिमा लिये, नीले-नीले ओंठ, फैली हुई पुतली, श्वास-प्रश्वास इतना धीमा और आयास-साध्य (जोर लगाकर लेना-छोड़ना पड़ता है), कि देखनेपर ऐसा मालूम होता है, कि रोगी जीवित नहीं है, इसके बाद मृत्यु । बहुत बोलना और इसके बाद मोह ।

मस्तक ।—माथेकी त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होना, मानो चींटी रेंग रही हैं, मानो रोएँ खड़े हो रहे हैं (आर्नि, कैन्थ, ज़िङ्कम, क्रोटेलस)।

आँख ।—आँखका गोलक बराबर दाहिनी ओरसे बाईं ओर हिला करता है ।

कान ।—कानमें भयानक हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द (चिनिन-सल्फ, डिजि ; सरमें चक्कर आनेके साथ—नेट्र-सैलिसाई ; बहरेपनकी वजहसे—ग्रैफ, ऐसिड-नाई ; कर्णपश्चान्नालीके प्रतिश्याय (सर्दी) की वजहसे (हाइड्रैस, मर्क-सोल)।

नाक ।—नासापुट सिकुड़ा और फैला करता है (लाई, ऐण्टि-टार्ट)।

मुखमण्डल ।—फूला और मृत्युव्यञ्जक, चेहरा उतरा हुआ और नीला, दोनों ओंठ गहरे नीले, जीभ फूली और सफेद ; तोतलाकर बोलना ।

श्वास-यंत्र ।—साँस लेने और छोड़नेके समय वक्षमें घड़घड़ शब्द होता है और बीच-बीचमें श्वास-प्रश्वासकी गति बहुत धीमी, कष्टजनक और लम्बी साँसकी तरह हो जाती है ।

प्रत्यङ्गादि ।—हाथ-पैरकी पेशियाँ स्पन्दनशील (हिलती रहती हैं)। बाँह एकाएक टेढ़े हो जाते हैं या मुड़ जाते हैं। सब नख नीले मालूम होते हैं। टहलने या चलनेके समय ढुलक पड़ता है और बार-बार पैर फिसल जाता है, मानो नशेमें मतवाला हो रहा हो ।

पेशियोंका तेज़ सिकुड़ना, फैलना या अकड़न ।—रोगी बेहोश-जैसा रहता है ; उसका माथा ढुलककर कन्धेपर आ जाता है ; ओंठ दोनों पीले-नीले और दाँत-पर-दाँत बैठे रहते हैं ; आँखें बन्द ; ऊपरी अङ्गकी संकोचनी पेशी और चर्वण-पेशीका धनुष्टङ्कारकी तरह सिकुड़ना और फैलना, देह नीली, विशेषकर चेहरा और गला ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एसिड-हाइड्रोसियैनिक, साइकूटा, इग्नेशिया, क्रोकेटा, जेल्स ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

बेञ्जोयिन

(BENZOIN)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—ज्वर ; तेलहा केश ; सरमें चक्कर आना ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—लैकेसिस ।

शक्ति ।—निम्न-क्रम ।

बार्बेरिस ऐक्विफोलियम

(BERBERIS AQUIFOLIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—पित्त-दोष ; श्वासनालीकी सर्दी ; सरका दर्द ; श्वेत-प्रदर ; कितने ही प्रकारके चर्म-रोग ; प्लीहाकी बीमारियाँ ; पाकाशयिक सान्निपातिक ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—कितने ही तरहके चर्म-रोगमें, गौण (Secondary) उपदंश रोगकी सभी अवस्थाओंमें और सर्दी आदि रोगमें इसकी उपकारिता बहुत प्रसिद्ध है।

लक्षणावली

मस्तक।—ऐसा मालूम होता है, मानो कानके ऊपरसे माथेको घेरकर एक चौड़ी लोहेकी पट्टी बँधी हुई है (इथू, ऐनाक्, लोबेलिया)। पित्तके कारण (Bilious) सरका दर्द। भयानक विचर्चिका अर्थात् एक प्रकारके विष-दोषसे पैदा हुआ चर्म-रोग (Psoriasis), मूर्द्धा-देशसे लेकर मुखमण्डल और वक्षस्थल पर्यन्त यह फैल जाता है। कान, शिरोपश्चाद्भाग और गर्दनके बीचमें सीमावद्ध विचर्चिका रोग ; चेहरेपर मुँहासे और फुन्सियाँ (ऐक्टिया)। मिचलीके साथ माथेकी जड़ता। माथा शून्य मालूम होता है—नींदके बाद या शरीरके संचालनसे बढ़ना।

आँख।—आँखोंमें रक्तसंचयकी अधिकताकी वजहसे आँखें लाल। आँख मानो एक झिल्ली या मलाईकी तरह पदार्थ (Film) से ढँकी हुई है (ऐमिल, लैक-कैन, फाइजस)। दोनों काँखें बहुत थकीं और गड़हेमें धँसी मालूम होती हैं और उनमें जलन और दर्द मालूम होता है।

पाकाशय।—जीभ गाढ़ी पीली भूरी (Yellowish brown) लेप चढ़ी (बैप्ट, सिना, कैलि-बाई, फास, पिटलिया, ह्राई ; जीभपर मानो छाले हो गये हैं, ऐसा मालूम होना। जीभके अगले भागमें—नैट्र-फास, नैट्र-सल्फ, ऐमोन-म्यू, नाइट्रम ; दोनों पार्श्वमें—फाइटो, एपिस) ; पाकाशयके भीतर जलन मालूम होना (आर्स, बिस्मथ, साइक्यूटा, कोलचि, सिकेलि,

आइरिस)। भोजनके बाद मिचली और वमन (आर्स, सिकेल ; खट्टी हो जाती है—कैल्के, हिपर, पल्स ; ताजे मांसके भोजनके बाद—कास्टि ; खानेकी चीज़ देखते ही—आर्स, कोलचि ; गन्ध मिलनेपर—कोलचि, स्ट्रैम ; अण्डे या मछलीके गन्धसे—कोलचि)। प्लीहा बहुत दर्द-भरी।

पेशाब ।—मूत्रनालीमें सुई बेधनेकी तरह (कैन्थ, लैके, लाइको) यंत्रणा, तल-पतित पदार्थ (तली—Sediment) गाढ़ा श्लेष्मा भरा, चमड़ी लाल और साबूदानेकी तरह। बहुत ज्यादा या थोड़ा पेशाब।

त्वचा ।—रमणियोंके मुखमण्डलकी त्वचाकी कर्कशता और रुखड़ापन। देह सूखी, रुखड़ी और रूसीसे भरी—स्तनका अर्बुद (Tumor of the breast), तेज़ दर्द-भरा, रातमें बढ़ना (ब्राई, बेल, फाइटो) ; स्तन कड़ा और पिण्डमय, मानो कर्कटीय अर्बुदसे भरा है (Cancersus tumor) (कोनायम, फाइटो, कैल्के, आयोड, आर्स-आयोड, हाइड्रैस)। सारे शरीरमें फैली हुई विचर्चिका (Psoriasis deffusa) और व्रण।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐसिड कार्बोलिक, कैन्थ, बार्बेरिस।

शक्ति ।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम।

बार्बेरिस वल्गेरिस

(BERBERIS VULGARIS)

दूसरा नाम ।—बार-बेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसकी जड़की छालसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—पित्तके कारण या पैत्तिक शूल ; मूत्राश्मरी या पथरी ; मूत्राधारकी बीमारी ; वाधक या रजःशूल ; नाना प्रकारके बोखार ; नासूर या नालिक्षत ; दादकी तरह उद्भेद ; यकृत प्रदाह ; सन्धि-प्रदाह या सन्धियोंमें दर्द ; घुटनेमें दर्द ; श्वेत-प्रदर ; यकृतके-बहुतसे विकार ; कटिवात ; आँखोंका प्रदाह ; पेशाबके बहुतसे दोष ; दूधकी तरह पेशाब ; पालिपस या अर्बुद ; आमवात ; पार्श्व-वेदना ; शुक्रवाही नालीमें

स्नायुशूल ; प्लीहाका प्रदाह ; प्लीहाका विकार ; अपत्य-पथका स्नायुशूल इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करते ही यह उसके मसानोंपर अपनी क्रिया आरम्भ कर देता है और मसानेसे लेकर मूत्रवाही प्रणालीके भीतरसे मूत्रस्थली और मूत्रस्थलीको सर्दी (Catarrh) और पित्ताश्मरी पैदा होनेके लक्षणमें (Gall stone) और इसी कारणसे शूलके दर्दमें यह बहुत लाभदायक है। खासकर जब बायां मसाने या मूत्र-ग्रन्थिपर रोगका आक्रमण होता है, कमरसे आरम्भ होकर यह दर्द समूची देहमें मालूम हुआ करता है। इसका एक और भी प्रधान गुण यह है कि यह यकृतसे पित्त निकालनेकी क्रियाको बढ़ा देता है। मूत्रयंत्रकी विकृतिके साथ वात और सन्धि-वात रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) सवेरे प्रथम भोजनके पहले मिचली। (२) कमरमें दर्द, दर्द कमरसे लेकर शरीरमें चारों ओर फैल जाता है। (३) मसानेमें स्पर्श-कातरता या उस स्थानमें स्पर्श सहन न होना, पेशाब घोर लाल। (४) बाँह, कन्धा, पैर और दोनों पैरोंमें वातकी वजहसे दर्द ; कटि वात (Lumbago)। (५) पीठके सामनेवाले प्रदेशमें (Renal region) एक नोकदार सलाई प्रवेश कर जानेकी तरह दर्द (Sritching pain), दर्द अन्त्राशय, उरु-शिखर, कमर, मूत्रस्थली वगैरहमें फैल जाता है—शरीर हिलाने और श्वास-प्रश्वासमें दर्द बढ़ जाता है। (६) पेशाबके समय उरु और कमरमें दर्द—यकृत, पित्तकोष (Gall bladder) और दोनों मसानोंके सामनेवाले अंशमें नोकदार सलाई बेधनेकी तरह दर्द, शरीरके विभिन्न अंशोंमें दर्द फैल जाया करता है और कोखसे खूब भीतरी प्रदेशमें भी दर्द मालूम होता है। (७) पेशाब चमकीला लाल रंगका और गाढ़ा श्लेष्मामय ; तली (Sediments) मैदेके गोलीकी तरह जमती है। (८) पाखाना पतला (Diarrhoea), बिना तकलीफ़का और मल कीचकी तरह रङ्गका होता है। शरीरकी त्वचा खुजलाती है और जलन-भरी होती है, खुजलाने बाद बढ़ना ; छोटे-छोटे फोड़े और पीव-भरे दाने (Pustules) निकलते हैं।

लक्षणावली

मन।—सभी चीजें, यहाँतक कि अपना शरीर भी दूना बड़ा मालूम होता है (निकोलस ; नक्स-मस); एकाग्रताके साथ सोच नहीं सकता।

सामान्य कारणसे भी विचारका सिलसिला टूट जाता है ; विषन्नता, उदासी—सभी विषयोंमें उदासीन (फास, एसिड-फास, लिल-टाई, नक्स-वोम)। बोलनेसे अनिच्छा (एमो-म्यू एण्टि-क्रू, एसिड कार्ब, हेलिबो, इग्ने, मैग्ने, नैजा, आक्साइस्ट्रोप, स्ट्रैम); असन्तुष्ट चित्त, जीवनसे विराग (एण्टि-क्रू, अरम, नैट्र-सल्फ, फास, प्लैट, सिफिलाइन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ सुस्ती मालूम होना (क्रोक, लैके, मस्कस, नक्स-वोम)। ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फैल गया है (आर्जेण्ट-नाई, बेल, ब्राई, कोराल-रू, एपियोल, डैफनी, इग्ने, फैलेन)। शिरःपश्चात्में और पीठमें जाड़ा मालूम होना। दाहिनी कनपटीमें (Temple) में ठण्डक मालूम होना। सारे मस्तकमें, ललाटमें और कनपटीमें छेदनेकी तरह दर्द।

मुखमण्डल।—चेहरा उतरा हुआ, रोग भोगनेकी तरह। दोनों गाल और आँख गड़हेमें धँसे और दोनों आँखोंके चारों ओर नीला घेरा।

मुख-विवर।—लसदार भाव ; लार संचय होना घट जाता है। लसदार फेनभरी लार मानो रूईकी तरह (नक्स-मस, नैट्र-म्यू, केलि-नाई); सवेरे पहली बार खानेके पहले मिचली (इग्ने)। छातीमें जलन।

अंत्राशय।—पित्तशूल (Bilious colic)—यह रोग होनेपर समूची देह पीली हो जाती है, कीचकी तरह रङ्गका मल होता है (आयोड-हिपर, चियोनैन)। भगन्दर (Fistula in ano)—यह पित्त आदिसे पैदा हुआ लक्षण और खुजलीमें ; खुसखुसी खाँसी और दूसरी-दूसरी वक्षकी बीमारीके साथ, खासकर भगन्दर आदिमें नश्तर लगवानेके बाद (कैल्क-फास, सिलि); पाखाना होने बाद मलद्वारमें चाहे उसके ऊपरी प्रदेशमें अण्डकोषके नीचे भयानक जलन और यंत्रणा मालूम होती है, बार-बार पाखाना लगता है ।

मूत्रयन्त्र आदि।—कमरमें दर्द ; मसाना और उसके पासके स्थानोंमें स्पर्शका सहन न होना ; बैठने, सोने या संघात (Jar) या थक जानेपर दर्द बढ़ जाता है, मसानेके प्रदेशमें जलन और बहुत दर्द ; सुन्नता, अकड़न आदि, बहुत दबाव मालूम होता है, पेशाबके यंत्रके विकारके साथ वात और सन्धिवात रोग, पित्ताश्मरी (Gall stone) की वजहसे शूलका दर्द (कैलके, चियोनैन, डायस्को)। बाएँ मसानेसे मूत्रस्थलीको भेदकर मूत्रनालीतक सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है (टैबाक ; दाहिने मसानेमें—लाइको) मसानेमें

शूल (Renal colic), बाएँ पार्श्व में ही अधिक (टैब ; किसी भी ओर—बहुत पेशाबका वेग, पेशाब रुकनेके साथ—कैम्फ) ; मसानेके भीतर बुलबुले उठनेकी तरह शब्द (मिडोराइन ; पर फड़फड़ानेकी तरह मालूम होना Fluttering—चिमेफि)। पेशाबका रङ्ग हरा, लाल खूनकी तरह, गाढ़ा। लसदार स्लेष्मा मिलो, तलो (Sediment), स्वच्छ, लार या मांड़की तरह। शरीरके सञ्चालनसे मूत्रयंत्रके रोगोंकी वृद्धि, पेशाबके समय उरुमें और कमरमें दर्द मालूम होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—रेतोरज्जु (Spermatic cord) और अण्डकोषके भीतर शूलके दर्दकी तरह तकलीफ़ (स्पञ्जिया, रोडो, आरम, पल्स, क्लिमैट)। अण्डकोष, सिढ्लक और मुष्कत्वकके भीतर जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामाद्रि (Mons veneris) प्रदेशमें संकोचन मालूम होना और ऐसा मालूम होता है मानो सिकुड़ा जाता है। अपत्य-पथमें जलन और जखमकी तरह मालूम होना ; रमणेच्छा घट जाती है ; मसानेके प्रदेशमें दर्दके साथ थोड़ा आर्त्तव-स्राव होना। प्रदर—भूरा (Gray) स्लेष्मा-स्राव और इसके साथ ही मूत्रयन्त्रके यन्त्रणादायक लक्षण।

श्वास-यंत्र।—वक्षमें ऐसा मालूम होता है, मानो त्वचा क्षय हो गई है और उसमें दर्द भर जाता है, नयी सर्दीके समय जैसा हुआ करता है। वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, खासकर बाएँ पार्श्व में। वक्षस्थलसे तलपेटतक मानो जकड़ जाता है और रोगीको वाध्य होकर झुक जाना पड़ता है। हृत्प्रदेशमें भी सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है, सीढ़ी चढ़नेके समय या हाथ उठानेके समय श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है।

पीठ।—गर्दन और पीठमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; साँस लेने और छोड़नेके समय वृद्धि। कटिवात (Lumbago) सोनेपर, बैठनेपर, खासकर सवेरेश य्यापर सोनेसे बढ़ना। पीठ सुन्नकी तरह मालूम होना और अवश मालम होना, इसके साथ ही कमर या वृक्क (मसाने) के स्थानमें दर्द और दबाव मालम होना ; परिश्रमसे थक जानेपर बढ़ना (रास, ऐण्टि-टार्ट)।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेमें बुलबुले उठनेकी तरह मालूम होना या ऐसा मालूम होना, कि सन्धियोंके भीतर कोई सजीव पदार्थ है—क्रोकस, सैबा,

थूजा), खासकर आधी रातके बाद (माथेमें मानो कोई सजीव पदार्थ हिल रहा है—पेट्रोल, सिलि), निम्न-प्रत्यङ्गको पेशियोंका संकोचन और प्रसारण मालूम होना या ऐसा मालूम होना मानो उसमें कोई जीव हिल रहा है। कन्धे, बाँह, हाथ, अंगुली, पैर और तलवा वगैरहमें वातका दर्द। हाथकी अंगुलीके नखके नीचे भयानक स्नायुशूल, इसके साथ ही अंगुलीकी सन्धियोंका फूलना। उरुके बाहरी भागमें ठण्डक मालम होना; गुल्फ अर्थात् एँड़ीमें बहुत दर्द मालूम होना, मानो उसमें जखम हो गया है। चलनेके समय पैरके तलवेके पिण्डमय स्थानमें दर्द मालूम होना।

त्वचा।—खुजली, जलन और क्षय हुई त्वचाकी तरह तकलीफ़; खुजलानेसे बढ़ना। खुजली, फोड़े—पीव पैदा होना बन्द करता है और फिरसे पैदा होना रोकता है।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, चलने, किसी तरहका एकाएक धक्का पहुँचने, बैठने और सोनेके समय।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐलो, ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, कैल्के-फास (नाली), कैन्थ, कार्ब, चायना, लाइकोपो, नेट्रम, नाइट्रिक-एसिड, नक्स, पल्स इत्यादि।

सदृश।—कैन्थ, लाइको, सार्सा, टैबाक—मसानेके शूल-सम्बन्धी घाव आदिके दर्दमें—आर्निका, ब्राई, कैलि-बाई, रस-टक्स और सलफरके बाद इसका व्यवहार विशेष लाभदायक है।

दोषघ्न।—कैम्फर, बेलेडोना।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३० शततमिकतक।

बिस्मथ

(BISMUTHUM SUBNITRICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले चूर्ण, इसके बाद अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— तलपेटमें नश्तर लगवाने बाद वमन; कलेजेमें दर्द; विसूचिका; खाँसी;

मूलाधारका प्रदाह ; कँपकँपीके साथ प्रलाप या विकार ; अतिसार ; हिचकी ; सड़नेवाला जखम ; पाकाशयका शूल ; पाकाशयका प्रदाह ; सरमें दर्द ; वमन ; प्रसवके बाद पैरमें सफेद रङ्गकी सूजन ; पाकाशयमें कर्कटका जखम ; दाँतका दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—अन्नवहानलीपर इसकी प्रधान क्रिया होती है ; इसके द्वारा इस नलीमें प्रदाहयुक्त सर्दी जमी रहती है और इसलिये पाकाशयसे पानीके छू जाते ही वह कै हो जाता है । हैजेकी तरह दस्त और कै भी इसके भीतर आ जाता है । नीचे लिखे कई लक्षण इसके निर्वाचनमें बहुत सहायता पहुँचाते हैं और ये बहुत ही आवश्यक हैं :—(१) चेहरा उतरा हुआ, मानो उसमें खून नहीं है, मानो रोगी अभी किसी प्राणघातक बीमारीसे अच्छा हुआ है ; आँखें चारों ओर नीले घेरेसे घिरी रहती हैं । (२) बहुत आलस्य मालूम होता है ; अकेला नहीं रहना चाहता, कहीं अकेले न रहना पड़े इसलिये बच्चा माताका हाथ नहीं छोड़ना चाहता (कैलि-कार्ब, लिलियम, लाइ) । बहुत चंचलता, कभी बैठना, कभी टहलना और फिर कभी सो जाना ; एक भावसे बहुत देरतक नहीं रह सकता । (४) संध्याके समय शरीरमें गर्मी न मालूम होनेपर भी ठण्डे पानीकी प्यास लगने लगती है । पाकाशयका शूल (Gastralgia), दर्द पाकस्थलीसे शरीर भेदकर मेरुदण्डकी ओर फैल जाता है ; पाकस्थीमें एक जगह ऐसा मालूम होता है मानो कोई भारी चीज़ दबा रही है । (५) पाकस्थलीमें भयानक आक्षेपिक और यंत्रणादायक वेदना ; पाकाशयमें पानी जाते ही कै हो जाती है ; पर दूसरी-दूसरी खायी हुई चीजें बहुत देरतक रह जाती हैं । पाकस्थलीमें दर्दके साथ कितनी ही बार दस्त और कै होता है । (७) बहुत अधिक मानसिक उद्वेग, नाड़ी क्षीण और सरमें चक्कर आता है, इसके अलावा सुस्तीके साथ बहुत ज्यादा वमन हुआ करता है । कभी-कभी पाकस्थलीमें कई दिनोंकी खायी चीजें इकट्ठी होनेपर बहुत ज्यादा वमन हुआ करता है । (८) पानी पीने बाद भाफ़ भरी डकार । (९) पाकस्थली शून्य मालूम होती है । अंत्रगत (Intestinal) आध्मान या पेट फूलना ; (Flatulence) । छूटी हुई हवा या मल बहुत सड़ी गन्धसे भरा रहता है । (१०) सांघातिक विसूचिका और गर्मीके दिनोंका अतिसार, दस्तकी अपेक्षा कै ज्यादा होती है ; मल बदबूदार, माँड़की तरह, पानीकी तरह और सुस्ती लानेवाला होता है ।

लक्षणावली

मन।—अकेले रहना एकदम सहन नहीं होता; बिना साथीके तो रह ही नहीं सकता, कहीं अकेले न रहना पड़े इसलिये, बच्चा माताको छोड़ना नहीं चाहता (कैलि-कार्ब, लिलियम-टाइ, लाइको, स्ट्रैम)। अस्थिर चित्त, कभी बैठता है, कभी घूमता है, कभी सो जाता है, एक स्थानपर अधिक देरतक रहना नहीं चाहता। एक काम छोड़ते ही दूसरे काममें हाथ डाल देता है—वह भी थोड़ी देरके लिये।

मस्तक।—सरमें दर्द, प्रति वर्ष जाड़ेके दिनोंमें यह दर्द पैदा हो जाता है। पाकाशयका शूल और सरमें दर्द पर्यायक्रमसे पैदा होते हैं। स्नायुमें शूलकी तरह यंत्रणा, मानो चिमटेसे माँस नोचा जा रहा है। यह दर्द समूचे चेहरे और दाँतोंतक फैल जाता है। ठण्डे प्रयोगसे घटना। मस्तिष्कमें धीमा-धीमा कतरनेकी तरह दर्द, दाहिनी भौंसे माथेके पश्चाद्देशतक फैल जाता है। सरके पश्चाद्देशमें पीसनेकी तरह यंत्रणा (मानो भारयुक्त—ऐगार, ऐपिस, कैनाबिस-इण्डि); देह हिलानेसे ही बढ़ना।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—मुर्देकी तरह रक्तशून्य और आँखके चारों ओर नीली रेखा, मानो अभी भयंकर बीमारीसे आराम हुआ है। दाँतमें दर्द, मुँहमें ठण्डा पानी लेनेसे घटना (ब्राइ, काफि, पल्स); मसूढ़े फूले। जीभपर सफेद लेप; शरीरमें गर्मी न मालूम होनेपर भी ठण्डे पानीय पीनेकी इच्छा (विशेषकर सन्ध्याके समय)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—वमन, पेटमें पानी जाते ही कै हो जाती है, बल्कि अन्यान्य खाये हुए पदार्थ कुछ देरतक पेटमें रहते हैं (खाते ही पानी और दूसरे खाये हुए पदार्थ दोनों ही कै हो जाते हैं—आर्स); बहुत दिनोंके बाद पाकाशय खाये हुए पदार्थसे भर जानेपर बहुत ज्यादा परिमाणमें वमन हो जाता है। पतले जलीय पदार्थ खानेसे ही कै हो जाती है; पेटमें नश्तर लगवाने बाद अर्थात तलपेटमें किसी तरहका नश्तर लगवानेपर, आक्षेपिक और श्वासरोधक वमन और बहुत तेज़ दर्द बना रहता है (नक्स, स्टैफ), वमनके साथ ही बहुत बदबूदार पाखाना होता है (पानीकी तरह मल—विरेट्रम); पाकाशयके भीतरके किसी एक अंशमें बहुत दबाव मालूम होता है, मानो उस अंशमें कोई भारी चीज़ रखी हुई है; भार

मालूम होना और जलन पर्यायक्रमसे प्रकट होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़न पैदा हो रही है, मानो पाकाशयकी पेशी सिकुड़ रही है; पाकाशयमें गड़बड़ी और अस्वाच्छन्द्य मालूम होना; इसके साथ ही छातीमें जलन और मुँहमें पानी भर आना। सांघातिक विसूचिका और गर्मीके दिनोंका अतिसार, दस्तकी अपेक्षा वमन बहुत अधिक होता है; बदबूदार, सूखा या पानीकी तरह दस्त; उससे बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है (आर्स, वेरेट्र)। पाकाशयके कर्कटमें यदि ये सब लक्षण मौजूद हों तो इसके द्वारा विशेष उपकार होता है।

श्वास-यन्त्र।—उदर वक्षव्यवधायक पेशी (Diaphragm) के बीचमें ऐंठनकी तरह दर्द और चिकोटीकी तरह दर्द। वक्षस्थलके भीतरतक फैल जाता है। टहलनेसे बढ़ना। वक्ष-शूल—कलेजेमें दर्द—दर्द बाईं बाँहसे अंगुलीतक फैल जाता है।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ-पैरोंमें अकड़न होती है। कलाईमें छेदनेकी तरह दर्द होता है (बार्बेरिस)।

त्वचा।—बिचले पैरकी सामनेवाली हड्डीमें और पिछले भागमें और गुल्फ सन्धिके पास त्वचाको क्षय करनेवाली खुजली; खुजलानेसे बढ़ जाती है; पर जबतक खून नहीं निकलता तब तक वाध्य होकर खुजलाना ही पड़ता है।

निद्रा।—सवेरे शय्या त्यागनेके दो-एक घण्टा पहले बहुत औंघाई, रातमें निद्रावस्थामें बार-बार जाग उठता है मानो डर गया हो; रातमें गहरी नींद नहीं आती, कारण लगातार कामोत्तेजक सपने देखता है और प्रायः स्वप्नदोष हो जाता है—यद्यपि नित्य रातमें नहीं होता।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐसिट-क्रूड (वमन), पाकाशयका प्रदाह, कैन्सर (सड़े जखम), बेलेडो, ब्रायो (दन्त-शूल), कैल्के, इग्ने, लैकेसि (गलेका जखम), लाइको, मार्क, नक्स, (पाकस्थलीकी बीमारी), रास, पल्स, साइलि, स्टैफिसे।

दोषघ्न।—कैल्के, कैप्सि, काफिया, नक्स-वोमिका।

शक्ति।—१लीसे ३० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—१० से २५ दिन।

ब्लैटा अमेरिकाना

(BLATTA AMERICANA)

दूसरा नाम।—अमेरिका देशका झींगुर ; तेलचिट्टा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित तेलचिट्टेको दूधकी चीनीके साथ विचूर्ण कर, उससे मूल अर्क तैयार किया जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
दमा ; शोथ ; कामला।

उपयोगिता और आभास।—उदरी और अन्यान्य अङ्गोंके शोथ रोगमें यह विशेष लाभदायक है। शरीरका रंग पीला ; बहुत सुस्ती और पेशाबके समय मूत्रनालीमें दर्द।

लक्षणावली

मुखमण्डल।—आँखोंका सफेद अंश और चेहरा बहुत पीले रंगका (चेलिडो, चियोनैन, मार्क-सोल)।

पाकाशय।—दाहिनी ओरसे बाएँ पार्श्वतक सरल-रेखा भावसे विस्तृत स्थूलान्त्र (Transverse colon) और डियोडिनम या द्वादश अङ्गुलिका (Duodenum) के भीतर और उदरके ऊपरी-प्रदेश (Epigastrium) में दर्द।

पेशाब।—पेशाबके समय मूत्रनलीमें जलन पैदा करनेवाली गर्मी मालूम होती है (कैन-इण्डि, कैनाब-सैट, कैन्थ)। पेशाब चमकीला पीले रङ्गका और लार-भरा (चेलिडो, चिनोपोड, कैमो, मार्क, आर्स, एड्रिनेलिन, आर्जेण्ट-नाई)।

ग्रीवा और पीठ।—गर्दनके बाईं ओर सुई वेधनेकी तरह मालूम होना, दर्द पीठसे लेकर पृष्ठ-फलकतक फैल जाता है।

वक्षःस्थल।—श्वासके अभावके साथ वक्षमें भयानक दर्द (ब्लैटा-ओरियेण्ट)।

सार्वाङ्गिक।—सीढ़ी चढ़नेके समय बहुत कमजोरी मालम होना (ऐनाक, कल्के, काक्कु, कोना, लैके, नेट्र-कार्ब, स्टैन)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—चेलिडो, ऐपोसाइन-कैन, मार्क-सोल, कैन्थ ।

शक्ति ।—३रा दशमिक क्रम ।

परीक्षक ।—डा० मूर प्रभृति ।

ब्लैटा ओरियैण्टेलिस

(BLATTA ORIENTALIS)

दूसरा नाम ।—बङ्गालका तिलचट्टा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित तिलचट्टेके सूखे चूर्णसे इसका मदर-टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; श्वासनलीका प्रदाह ; यक्ष्माकास ।

उपयोगिता ।—स्थूलकाय मोटे-ताजे मनुष्य, सड़ी गन्ध (Malarious) विषाक्त धातु और अन्धड़-पानीके दिनोंमें जिनका रोग बढ़ जाता है, उनके रोगमें यह विशेष लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका बड़े ही आश्चर्य-रूपसे आविष्कार हुआ है । किसी आदमीको बड़े जोरोंका दमा था और वे नित्य सवेरे चाय पीते थे ; परन्तु उनका रोग दिनोंदिन बढ़ता ही जाता था । बहुत तरहकी चिकित्सा की, पर कोई लाभ न हुआ । एक दिन चाय पीने बाद उन्हें एकाएक बहुत आराम मालूम हुआ । वे इसका कारण खोजने लगे । पता लगा, कि उनकी चायकी केतलीमें एक तिलचट्टा पड़ा था, जो उसमें खूब सिद्ध हो गया और यही चाय पीकर उन्हें लाभ हुआ है । भारत-विख्यात ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशयने इसके बाद डा० डी० एन० रायने तिलचट्टेका अर्क भी तैयार कराया और उससे असंख्य मनुष्योंका उपकार हुआ । कोई तो एकदम अच्छा हो गया और किसीका रोग दब गया ।

शक्ति ।—आक्रमणावस्थामें मूल अर्कका बार-बार प्रयोग करना चाहिये । इसके बाद रोग आरोग्यके लिये उच्च क्रमका प्रयोग करना चाहिये ।

डा० सी० एम० एलेन और हेनेसका कहना है, कि भयानक शोथ रोगमें जहाँ एपिस, एपोसाइन और डिजिटेलिससे कोई उपकार नहीं हुआ है, वैसे स्थानपर ब्लैटा ओरियेण्टेलिस रोगीको एकदम आरोग्य कर देता है।

बोलेटस लैरिसिस

(BOLETUS LARICIS)

दूसरा नाम।—पोलिपोरस आफिसिनैलिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह चिल जातीय परगच्छासे तैयार होता है। पहले चूर्ण बनता है, इसके बाद टिञ्चर।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; रक्तामाशय; ज्वर; सरमें दर्द; यकृतकी बीमारी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोज़ आनेवाला सविराम ज्वर और यक्ष्मा रोगमें रातमें पसीना। पसीना थोड़ा होता है और उससे आराम नहीं मिलता; इसके साथ ही यदि पतले दस्त आते हों तो यह अधिक लाभदायक है।

लक्षणावली

मन।—अत्यन्त दुःखित और गम्भीर भाव, थोड़ेमें ही क्रोधित हो जाता है।

मस्तक।—बहुत हलका और शून्य मालूम होता है (आर्जेण्ट, चिनिन-सल्फ, काक्यु, कूप्रम, ग्रेनेट, पल्स)। ललाटके गभीरतम प्रदेशमें दर्द मालूम होता है, इसके साथ ही सुस्ती (लाइको, स्ट्रैम)।

आँख।—रोज़ सवेरे आँखें सट जाती हैं (ऐल्यू, लाई, कैमो, युफ्रे, लाइको, मार्क, पल्स, रास) और आँखके गोलेमें तेज़ दर्द (बेल, क्रोक, हिप, रास, रियुटा, ऐण्टि-टार्ट)।

मुख-विवर।—दाँतके मसूढ़ेमें अत्यन्त दर्द—क्षय हुई त्वचाकी तरह जीभपर गाढ़ा सफेद रङ्गका लेप और उसपर दन्ताङ्क या दाँतका दाग पड़ता है (मर्क-वाइ, चेलिडो, पोडो, रस-टक्स); स्वाद ग्रहण करनेकी शक्तिका गायब हो जाना या तमैला (ताँबेका) स्वाद (जीभके मध्य भाग या जड़में पीला लेप

चढ़ा रहता है और स्वाद तीता रहता है—काक्यु)। लगातार मिचली या ओकाईकी वजहसे पाकाशयमें गड़बड़ी मालूम होना। तीते तरल पदार्थोंकी कै होती है। पाकाशयमें खालीपन और सुस्ती मालूम होना (ऐनाक, आरम, ऐसा, सिङ्को, लैके, मिनियैन, नक्स-मस, फास, स्ट न)। पूरी तरह श्वास लेनेपर यकृतके दाहिने खण्ड (right lobe) और पीछेकी तरफ पित्तस्थली प्रदेशमें तेज़ दर्द मालूम होता है, पित्तस्थली प्रदेशमें भी तेज़ दर्द होता है।

मल।—पीली आभा लिये जलमय, फेन-भरा और रुखड़ा मल। कभी-कभी पित्त फेन-भरा श्लेष्मा या तेलहे पतले फेन-मिले दस्त; पाखाना हो जाने बाद यकृत और नाभि-प्रदेशमें दर्द हुआ करता है; अजीर्ण पदार्थ मिला और बिना तकलीफ़का; मल बहुत ज्यादा परिमाणमें और बड़े वेगसे निकलता है (क्रोटन, ऐङ्गो, फेरम-स; छिटक पड़ता है—नेट्र-सल्फ़; कितनी ही विभक्त धारोंमें अकसर निकलता है—इलैट)।

पेशाब।—गाढ़ा, लाल और परिमाणमें थोड़ा।

पीठ और प्रत्यङ्ग आदि।—धीमा भार मालूम होनेकी तरह दर्द—पीठ और दोनों पैरोंमें होता है। सभी सन्धियोंमें लगातार दर्द मालूम होता रहता है। आधी राततक रोगी छटपटाया करता है। बहुत कमजोरी और सुस्ती मालम होती है।

ज्वर।—रोज़ आनेवाला सविराम ज्वर (Quotidion Intermittent) कैल्के, कैम्फि, डायोडेमा, सैबाड, आर्स, चायना, सोड्रन, इपिका, नक्स-वोम; मेरुदण्डके एक ओरसे दूसरी ओरतक शीत घूमा करता है और इसके बाद ही एकाएक उत्ताप पैदा होकर पसीना निकलनेके बाद आराम हो जाता है। शीतावस्थामें बार-बार जम्हाई और हाथ-पैर फैलाता है (अङ्गड़ाई लेता है, शरीरको मरोड़ता है—ऐमिल, साइमिक्स); त्वचा सूखी और उत्तापयुक्त, खासकर दोनों तलहथियाँ, शीत और उत्तापवाली अवस्थामें कन्धे और प्रत्येक सन्धिमें बहुत दर्द मालूम होता है। पाण्डु रोग।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—बोलेटिस-ल्यूटिडस—पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और गुठिला दोषयुक्त आमवात; ऐनाक; ऐस्टेकस-फ्लुव, नेट्र-मूर।

शक्ति।—१ली दशमिकसे ३० शततमिकतक; ज्वराधिकारमें २०० शततमिक अधिक लाभदायक है।

परीक्षक।—डा॰ वार्टने परीक्षा की है।

बोलेटस लूरिडस

(BOLETUS LURIDUS)

दूसरा नाम।—बोलेटस—नाइप्रिस्टेन्स।

परिचय।—बेंगके छत्ता जातिका एक उद्भिद।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता।—यह एक विषैला उद्भिद है। इसकी विष-क्रियामें प्रलाप, सुस्ती, नाक और ओंठका कथई रङ्ग, तेज़ प्यास, उदरके ऊपरी प्रदेशमें असह्य दर्द। शीत पित्त, ठण्डा पसीना वगैरह लक्षण प्रकट होकर अन्तमें रोगीकी मृत्यु होती है। इन ऊपर लिखे लक्षणोंमें यह दवा सुन्दर काम करती है।

शक्ति।—६ शततमिकसे ३० तक।

बोलिटस सैटेनस

(BOLETAS SATANUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक दूसरी जातिके जूँसे इसका पहले विचूर्ण और इसके बाद मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; रक्तामाशय इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—डर-भरा और चञ्चल।

दोनों आँखें।—ऐसा मालूम होता है, मानो आँखोंके आगे आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (सुस्ती लानेवाली बीमारियोंके बाद—चायना;

यकृतमें विकारकी वजहसे—ऐसिड-नाइ ; इन्द्रिय-परतन्त्रतासे उत्पन्न—फास)।

कर्ण-विवर।—ऐसा अनुभव होता है, मानो कानमें नाना प्रकारके शब्द हो रहे हैं (कैलि-आयोड, चिनिन-सल्फ, डिजि, कार्बोनि-सल्फ)।

मुँह और गलेके भीतर।—तकलीफ़-भरा सूखा भाव। गलेमें भयानक जलन और सूखापन मालूम होना।

मल।—आमातिसार, बहुत ज्यादा परिमाणमें, रक्त और आँतोंसे श्लैष्मिक-झिल्लीके टुकड़े मिले मल निकलता है। वक्षःस्थलमें दबाव मालूम होना।

नाड़ी।—नाड़ी बहुत क्षीण, प्रायः लुप्तकी तरह।

प्रत्यङ्ग आदि।—मुँह और प्रत्यङ्गोंकी पेशियोंमें भयानक यंत्रणादायक भावसे अकड़न पैदा हो जाती है; एकाएक प्रत्यङ्ग आदिके भीतर टनक-सी हो जाती है; मानो तुरन्त ही रोगीको संन्यास रोग हो जायगा।

सार्वाङ्गिक।—एकाएक बहुत सुस्ती मालूम होती है। ज्वालामय प्यास; एकाएक कै; मिचली; पाकस्थलीमें असह्य यंत्रणा। दो-तीन घण्टेमें २०-३० बार वमन; पेट भीतरकी ओर धँस जाता है (प्लम्ब); भयानक यंत्रणाजनक भावसे चिपक जाता है। वमनके बाद और वमन होते समय बहुत सुस्ती मालम होती है। हाथ-पैर भी कभी-कभी बरफकी तरह ठण्डे पड़ जाते हैं।

शक्ति।—निम्न-तम क्रम।

बाम्बिक्स प्रोसेसनिया

(BOMBYX PROCESSIONEA)

दूसरा नाम।—प्रासेशन-मथ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित प्रत्यङ्गसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह शीत-पित्त रोगकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—एपिस, ऐण्टि-क्रू, रास-टक्स, आर्टिका इयु।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

बोरैक्स वेनेटा

(BORAX VENETA)

दूसरा नाम।—सोहागा, बोरेट आव सोडियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और अर्क तैयार हुआ करता है; पानीमें गल जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— मुँहका जखम; गट्ठे; दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ; अतिसार; कानसे पीव बहना; विसर्प; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; अंगुलीकी सन्धियोंमें जखम; दादकी तरह उद्भेद; रजःशूल या बाधक; स्तनकी घुंडीमें जखम; नाककी बहुत-सी बीमारियाँ; फेफड़ेकी आवरक झिल्लीका प्रदाह; विचर्चिका; चिल्ला उठना; नाव या गाड़ीमें चढ़नेपर वमन या मिचली; बन्ध्यत्व; उपदंश दोषसे पैदा हुआ गलेका जखम; स्वादमें गड़बड़ी; बहुत तरहके जखम; पेशाबमें तेज़ गन्ध; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० एलेन कहते हैं, बहुत ही स्नायविक, सहजमें ही डर जाता है; नीचेकी ओरकी गतिमें प्रबल भय वगैरह स्वभाववाले रोगीमें यह बहुत लाभदायक है। शरीरकी नीचेकी ओरकी गतिमें प्रबल भय—यह लक्षण अधिकांश बच्चे या छोटी उमरके रोगियोंमें ही दिखाई देता है; बच्चेको लेकर सीढ़ी उतरते समय, वह तुम्हें कसकर पकड़ लेगा और रोने लगेगा; धात्री या माता सोये हुए बच्चेको जब उसकी शय्यापर सुलाने लगती है, तो वह चौंककर जाग उठता है (एपिस, सिना, स्ट्रैम); शब्द बिलकुल ही सहन नहीं होता। ये सभी बोरैक्सके निर्णायक लक्षण हैं, बच्चोंके मुँहके जखम रोगमें; विशेषकर, यदि उसके साथ पतले दस्त भी आते हों और किसी ऊँची जगहसे उतरनेमें डरता हो तथा अपस्मार (मृगी) और ऐसे रजःकृच्छ्र रोगमें जिसमें झिल्ली निकलती हो—यह विशेष लाभदायक है। इसके और भी कई प्रधान-निर्णायक लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं:—(१)

चेहरेपर उद्वेग मालूम होता है, थोड़ी-सी बातमें भी डर जाता है ; थोड़ेमें ही कातर हो पड़ता है। (२) एकाएक कोई आवाज़ कानमें पड़ते ही है, बहुत कातर हो जाता है। (३) चेहरेपर ऐसा मालूम होता है मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है। (४) माथेके केश सूअरके केशको तरह कड़े और रुखे होते हैं ; चोटी करने या केश-सँवारनेके समय वे किसी तरह नहीं झुकते, या तो जटा-से बँध जाते हैं या अलग हो जाते हैं। (५) मांसांकुरमय (Granulates) पलक, रातके अन्तिम भागमें पलकें जुड़ जाती हैं ; दोनों आँखें जखमसे भरीं और दोनों अपाङ्ग या आँखमें खुजली। (६) मुख-विवरमें उत्ताप, दर्द और जखम मिले ; मुँहके भीतरके जखम सबमें स्पर्श सहन नहीं होता और छूते ही उससे खून जाने लगता है ; मुँहमें जखम होना ; बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता, मुँहमें दर्दको वजहसे एक बार तो स्तनमें मुँह लगाता है और फिर मुँह हटा लेता है और रोने लगता है। (७) मलका पतलापन—मल कोमल, पीली आभा लिये, लसदार और मांड़की तरह। बच्चोंका हरे रंगका मल मिला उदरामय। (८) बाँझपन। (९) प्रदर-स्राव ; अण्डेके सफेद अंशको तरह और स्रावके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो गर्म पानी निकल रहा है।

लक्षणावली

मन ।—अतिशय उद्वेग, खासकर शरीरकी नीचेकी ओरकी गतिमें ; सोये हुए बच्चेको सुलानेके समय वह धाय या माताको पकड़ रखता है ; झूलेमें झुलानेके समय या हिलानेके समय बच्चा डरने लगता है, सोया हुआ बच्चा एकाएक चौंककर जाग उठता है और पालनेका किनारा पकड़ कर रोया करता है ; क्यों रोता है, उसका कोई कारण नहीं मालूम होता, (एपिस, सिना, जेलसि, सैनिक, स्ट्रैम)। बहुत ही स्नायु-प्रधान स्वभाव या थोड़ेमें ही कातर, सामान्य आवाज़से, यहाँतक कि छींक या खाँसनेको आवाज़से भी डरता या चौंक उठता है (ऐसेट, कैलेड)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, ऊपर चढ़नेके समय (कैल्के, सल्फ) ; सवेरे १० बजनेके समय मिचली और समूचे शरीरके कम्पनके साथ सरमें दर्द। माथेके केशके अगले भाग-सबमें जटा बँध जाती है और वह लसदार हो जाती है। इन केशोंके काट डालनेपर फिर बढ़कर जटा बँधना आरम्भ हो जाता है।

केश झाड़नेके समय या झाड़नेपर केश सम-भावसे नहीं रहते (ऐसिड-फ्लू, लाइको ; सोराइन, टियुबर, विङ्का-माइ)।

आँख।—बरुनी या पलक सब सूखे लसदार रससे भर जाते हैं, रातके पिछले पहरमें आँख सट जाती है (युफ्रे, पल्स, मार्क); बरुनी टेढ़ी होकर आँखोंके भीतर घुस जाती है और आँखमें प्रदाह पैदा कर देती है, सवेरे काँपती हुई दृष्टि, लिखनेके समय स्पष्ट दिखाई नहीं देता।

नाक।—दोनों छेदोंमें पपड़ी जमती है और प्रदाह हो जाता है; नाकका अगला भाग लाल और चमकीला; युवतियोंकी नाक लाल; नाकके छेदमें बार-बार सूखी पपड़ी पैदा हो जाती है और दाहिनी नाकका छेद सूख जाता है या पहले दाहिनी फिर बाईं नाक रुक जाती है; बार-बार रोगी नाक झाड़ा करता है (एमोन-कार्ब, लैक-कैन, मैग-म्यू)।

कान।—डा० नैश कहते हैं कि इस दवाकी सहायतासे उन्होंने कानसे चौदह बरसतक पीव निकलनेवाला रोग अच्छा किया है। बाएँ कानमें सुई वेधनेकी तरह यंत्रणा, कानमें आवाज़ और श्रवण-शक्तिका घट जाना।

मुखमण्डल और मुखविवर।—चेहरा उतरा, पीला और उससे ऐसा मालूम होता है, मानो भीतर तकलीफ़ है। नाक और ओंठके ऊपर व्रण रहनेके कारण चेहरा फूला हुआ मालूम होता है। मुँहके दाहिनी ओर मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है ऐसा मालूम होना (ब्रोम, ग्रैफा, बेराई), मुँहके भीतर जीभके ऊपर और दोनों गालोंके भीतर सफेद रंग, बून्द-बून्दकी तरह जखमके चकत्ते; सामान्य कारणसे भी उनसे खून निकलने लगता है। भोजनके समय या छूनेपर यह अवस्था होती है; दर्दकी वजहसे बच्चा खून नहीं पी सकता—एक बार स्तन खींचता है, पर छोड़कर तुरन्त ही रोने लगता है; मुखके भीतर उत्ताप और सूखापन; प्यास अधिक होना (आर्स); जीभ फटकर उससे खून निकलता है (अरम); दाँत निकलनेके समय बहुत ज्यादा लार बहना; मुहमें जखमके कारण मुख-विवरमें बहुत दर्द होता है। छूने अथवा नमकीन या खट्टे पदार्थ खानेपर दर्द और भी बढ़ जाता है; बुड्ढोंके नकली दाँतकी रगड़ लगकर मुँहमें जखम (ऐल्यूमिन), मसूढ़ेमें फोड़ा (Gumboil), मसूढ़े बाहरकी ओर फूले और बहुत दर्द भरे; बायें गाल और समूचे बाएँ पार्श्वमें सूजन। मुँहका स्वाद कड़वा।

पाकाशय, अन्त्राशय और मलान्त्र ।—भोजनके बाद पेट फूलना और गड़बड़ी मालूम होना, कोई भारी चीज़ उठानेकी वजहसे पेटमें दर्द—दर्दकी वजहसे रोगिनी रातमें करवट नहीं बदल सकती। जरायुमें गड़बड़ी या विकृतिकी वजहसे पाकाशयका शूल। पेटमें दर्द—पतले दस्त आनेका उपक्रम (ऐलो देखिये)। दस्तका पतलापन—दस्त पतला, पीली आभा लिये, फीका, पीला रङ्ग और आँव-भरा ; कभी पीले रङ्गका आँव-भरा, कभी-कभी बहुत पतला, भूरे रङ्गका फेन-भरा, बहुत बदबूदार और बिना किसी तरहका वेग दिये निकला करता है। (जब मल भूरा रहता है),—स्तन पीनेवाले बच्चोंका और दाँत निकलनेके समय बच्चोंके पाखाना होनेके पहले बच्चा चिड़चिड़ा हो जाता है ; चिड़चिड़ा भाव प्रकाशित करता है ; पाखाना फिरनेके समय जलन और कमजोरी मालम होना और पाखाना हो जाने बाद अच्छा मालम होना।

पेशाब ।—बच्चा बार-बार पेशाब करता है और पेशाब करनेके पहले चिल्लाता है (पेशाबके समय तेज़ जलन और कतरनेकी तरह यन्त्रणा—इक्विसेटा ; पेशाब करनेके बाद असह्य यन्त्रणा—बच्चा तकलीफ़से छटपटाने लगता है—सार्सा ; मसानेमें और कमरमें असह्य दर्द—पेशाब करने बाद घटना—मूरर ; बच्चा पेशाब करनेके पहले रोता है—लाइको)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—निर्दिष्ट समयके बहुत पहले पैदा हो जाता है, बहुत ज्यादा स्राव और उसके साथ ही तलपेटमें दर्द और मिचली। प्रदर—अण्डलालकी तरह या माँड़की तरह बहुत ज्यादा स्राव, स्रावके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो अपत्य-पथसे 'चमकीला स्राव होता है ; दो ऋतु-स्रावके बीचके समयमें प्रदर पैदा हो जाता है और दो सप्ताहतक स्थायी रहता है (बोविस्टा और कोनायम)। प्रदाहके साथ बन्ध्यत्व ; जरायु-भ्रंशके साथ बन्ध्यत्व—आरम-मूरा-नेट्र)। प्रसव-वेदनाके समय प्रबल और बार-बार डकार। बहुत ज्यादा माताके स्तनसे स्राव (कैल्के, कोना, बेल)।

श्वास-यंत्र ।—सीढ़ी चढ़नेपर इतना हाँफता है, कि मुँहसे बोली नहीं निकलती ; कुछ देर बाद बोलनेके समय दाहिनी छातीमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होता है (कैक्ट देखिये) या छातीकी बगलमें दर्द (Pleurodynia)—दाहिने पार्श्वके ऊपरी अंशमें अधिक। खाँसने या साँस लेनेमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (कतरनेकी तरह दर्द, शामको सोनेके बाद और साँस लेनेपर

सुई बेधनेकी तरह मालूम होना—कैलि-कार्ब ; बहुत परिश्रमकी वजहसे पार्श्व-वेदना—आर्निका ; दाहिने पार्श्वमें दर्द ठहर जानेपर—बोरैक्स, चेलिडो, ऐस्क्लिप-टियुब ; बाईं ओर होनेपर—रैनान ; जरायु-विकृतिके प्रतिक्षिप्त (Reflex) कारणकी वजहसे—ऐक्टिया)। सोनेपर साँस रुक जाती है, रोगी उछल पड़ता है, तब साँस ले सकता है—इसी वजहसे दाहिनी ओर दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्ड मानो वक्षके दाहिनी ओर है और मानो कोई हाथसे दबा रहा है ऐसा मालूम होता है। खाँसनेके समय दर्द दूर करनेके लिये दाहिनी करवट दबाकर सोता है।

त्वचा ।—रक्त बहुत दूषित ; शरीरमें किसी तरहका नखका खरोंच आदि लगनेपर या कट जानेपर उसमें पीव पैदा होकर जखममें परिणत हो जाता है (कैलेण्डुला, हिप, मार्क, ग्रैफ, सिली)। पुराना जखम और नश्तर या घावके चिन्हमें फिरसे पीव सञ्चय हो जाता है (ऐसिड-फ्लू, कास्टि, ग्रैफ) ; अंगुलीकी सन्धियोंकी पीठपर खुजलाहट ; चेहरेपर फैलनेवाला त्वचाका प्रदाह या विसर्प (एपिस, रास)।

निद्रा ।—रात तीन बजनेके समय नींद खुल जाती है और शरीरमें विशेषकर माथेमें उत्तापकी वजहसे फिर नींद नहीं आती। इसके साथ ही उरुमें पसीना निकलना, बच्चा रोता-रोता चिल्ला उठता है और माताको पकड़ रखता है, मानो स्वप्न देखकर डर रहा है। रोगिनी स्वामीके साथ रमणमें नियुक्त रहनेपर ऐसे ही सपने देखती है।

घटना ।—दबाने, दर्दवाला अंश हाथसे दबा रखनेपर।

वृद्धि ।—नीचेकी ओर गतिमें, एकाएक शब्दसे, धूम्रपान करनेपर (इससे उदरामयतक हो सकता है) ; जलीय ठण्डी हवामें और पेशाब करनेके पहले, जबतक पेशाब नहीं होता।

दोषघ्न ।—कैमोमिला ; काफिया।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—मैग-म्यूर (दक्षिण नासारन्ध्रमें) ; कैल्के (गहरी श्वास लेनेकी प्रवृत्ति) ; कैलि-बाई (कड़ा श्लेष्मा) ; पल्स (पर्यायक्रमसे रोना और हँसना) ; बेञ्जो-ऐसिड (उग्रमूत्र) ; अरम (मुँहमें जखम) ; बैराइटा-कार्ब (मकड़ेकी जालकी तरह अनुभव) ; नेट्रम-सल्फ (दस्तके बाद आनन्द)। ऐसेटिक-एसिडके पहले या बाद इसका व्यवहार नहीं होता।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३रा दशमिक विचूर्ण और ६से ३० शक्तितक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन ।

बोथ्राप्स लैनसियोलेटस

(BOTHROPS LANCEOLATUS)

दूसरा नाम ।—एक तरहका पीले रङ्गका साँप—यलो-वाइपर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले ग्लिसरिनमें मदर-टिञ्चर तैयारकर इसके बाद सुरासारमें उच्चक्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—अन्धापन ; अस्थिक्षय रोग ; दिनौंधी ; सड़नेवाला जखम ; फेफड़ेमें खूनकी अधिकता ; जिह्वाका पक्षाघात ।

लक्षणावली

आँख ।—तिमिर दृष्टि या अन्धापन (Amaurosis)—दिनौंधी—सूर्योदयके बाद फिर राह दिखाई नहीं देती और चल नहीं सकता (Nyctalopia—ऐको, फास, सिलि, स्ट्रैम)।

मुख-विवर ।—जीभमें कोई विकार नहीं है, परन्तु बोल नहीं सकता (Aphasia—चिनोपोड-ऐन्थ)।

श्वास-यन्त्र ।—फेफड़ेमें अधिक रक्तसञ्चय होना ; खूनभरा कफ़ ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दाहिने पैरके बड़े अंगूठेमें दर्द मालूम होना । हाथ-पैर फूलकर तिगुने मोटे हो जाते हैं । अर्द्धाङ्ग पक्षाघात अर्थात् एक हाथमें हाथ या एक पैरका पक्षाघात Hemiplegia-वृद्धोंको होनेपर—बैराइटा-कार्ब ; पाचन-शक्तिमें विकारके कारण होनेपर—नक्स ; सरके पिछले स्थानमें दर्द, कँपकँपी, कष्टके कारण बोली नहीं निकलती—जेल्स ; धीरे-धीरे बात करता है—लेके ; अत्यन्त विमर्ष भाव और रुलाईके साथ—अरम ; यदि एकदम अकड़न (Anchylosed) पैदा हो जानेका उपक्रम हो तो—सिकेल) ; हाथ-पैर एकदम ठण्डे ।

सार्वाङ्गिक ।—वृहदंशव्यापी पीव-सञ्चय (कैल्के-हाइपोफास) होना ; सड़े घावकी वजहसे हड्डी बाहर निकल आती है । खून पानीकी तरह पतला और काले रङ्गका ; रक्त-स्राव (खासकर नश्तर लगाई हुई जगहसे) अत्यन्त पतला काला रक्त रह-रहकर सोतेकी तरह निकलता है, हड्डीका जखम (सैंगु ; स्नायवीय कम्पन—इग्ने, जेल्स, ऐण्टि-टार्ट ; प्रकृत बाहरी कम्पन न रहनेपर भी रोगी समझता है, कि उसकी देह काँप रही है—ऐसिड-सल्फ ; भयजनित—स्ट्रैम) ; बार-बार बेहोशी आ जाना या हृत्पिण्डकी क्रियाका न होना (मस्कस ; मूर्च्छावायुसे उत्पन्न—इग्ने) ; दर्द कोना-कोनी भावसे चलता है (बायें उर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्ग—ऐम्ब्रा, ब्रोम, मिडोरि, फास, ऐसिड-सल्फ) ।

त्वचा ।—नीली या पीली । शरीरमें दर्द, मानो बहुत मार खाई है, क्षत आदि सहजमें आरोग्य नहीं होते ।

ज्वर ।—सामान्य शीत या कम्पके बाद बहुत ज्यादा पसीना होना ; ठण्डा पसीना । रोगके आरम्भ और अन्तमें ठण्डा पसीना होता है ।

सम्बन्ध ।—दूसरे-दूसरे सर्प-विष—बेलेडो (रतौंधी) ।

शक्ति ।—३री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

बोविस्टा

(BOVISTA NIGRESCENS)

दूसरा नाम ।—वाटेड पाफ-बाल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण इसके बाद टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— पीठके नीचे दर्द ; गट्ठे ; बहुमूत्र ; अतिसार ; कानमें एक तरहका विषैला जखम ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; सरका दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; कामला ; डिम्बाधारकी बीमारी ; सन्धिकी बीमारी ; ऋतुका विकार ; वात ; तोतलाना ; जीभका जखम ; अर्बुद ; आमवात ; अंगुलहाड़ा ; जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन मनुष्योंको अकसर खुजलानेवाले उद्भेद निकला करते हैं ; वे चाहे जो करें, उनका एक हाथ हमेशा शरीर

खुजलानेमें लगा रहता है और जो वृद्धा स्त्रियाँ प्रायः ही हृत्स्पन्दन (कलेजेकी धड़कन) के रोगसे ग्रसित रहते हैं, उनके लिये और तोतलानेवाले बच्चोंके लिये यह दवा बहुत लाभदायक है। इससे नाना प्रकारके रक्तस्राव भी उत्पन्न हो जाया करते हैं ; आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं :—(१) इससे पैदा हुई श्लैष्मिक-झिल्लीकी सर्दी या प्रतिश्याय आदिका स्राव गाढ़ा डोरीकी तरह कड़ा गोंदकी तरह होता है। (२) कमरमें वस्त्र आदि कसकर पहन नहीं सकता। (३) कक्षदेश या बगलसे निकले हुए पसीनेकी गन्ध प्याजकी तरह। (४) उखाड़े हुए दाँत, जखमवाली जगह और नाकसे बहुत ज्यादा खून निकलना। (५) छुरी, कैंची या सुईका व्यवहार करनेपर अंगुलीमें गहरा दाग पड़ जाता है। (६) प्रत्यङ्ग आदिकी सन्धि और हाथ-पैरमें बहुत क्षीणता मालूम होना (७) अत्यन्त असावधान और दुर्बल हाथ, प्रायः हाथसे चीजें गिर जाती हैं और रोगिनी माथा खुजलाती हुई अप्रस्तुत भावसे परिचय देती है (निर्बोधकी तरह खड़ी होकर देखती है या हँसती है—ऐपिस)। (८) रजःस्राव केवल रातके समय होता है ; आर्त्तव स्राव आराम होनेके पहले पतले दस्त आने लगते हैं ; रजःनिवृत्ति (ऋतु-स्राव बन्द होना) के बाद पाँच सात दिनोंका अन्तर देकर फिर खून दिखाई देता है ; प्रत्येक पक्षके अन्तमें गाढ़ा और काले रंगका रक्त-स्राव होता है, इसके साथ ही जरायु आदिमें दर्द-भरी नीचेकी ओर खींचन रहती है। (९) मेरुदण्डके निचले अगले भागमें असहनीय खुजली, खुजलाते-खुजलाते खाल उधड़के जखम बना देता है। (१०) बहुत धूआँ सूंघनेकी वजहसे श्वासरोध या अलकतरा लगाने या प्रयोगकी वजहसे बीमारी।

लक्षणावली

मन।—बहुत अधिक अन्यमनस्क ; सहजमें ही किसी विषयमें मन नहीं लगा पाता ; ऐसा मालूम होता है, कि अङ्ग-प्रत्यङ्ग बढ़े हुए जाते हैं (प्लेट, आर्जेण्ट-नाई, स्टैफ, स्ट्रैम)—अत्यन्त असावधानी, सभी चीजें उसके हाथसे गिर जाती हैं (ऐपिस देखिये)। मुँह फाड़कर एक ओर देखा करता है (स्टैफ)। बहुत अभिमानी ; थोड़ेमें ही क्रोधित हो जाता है।

मस्तक।—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बढ़ा हुआ जाता है (बेल, कोरैल-रू, ऐपियोल, डैफनी, इग्ने, फेलैन, सिली, स्पाइजि)। माथा

फैलनेकी अनुभूति मालूम होनेके साथ ही सरमें दर्द, सवेरे टहलने और सोनेपर अत्यन्त वृद्धि। माथेमें चोट लगनेकी तरह दर्द, माथेके आवरक (खोपड़ी Scalp) में बहुत खुजली—गर्मीसे बढ़ना ; स्पर्श सहन न होना ; खुजलाकर खून निकाल देता है।

मुखमण्डल।—सवेरे शय्यासे उठनेपर चेहरा एकदम उतर जाता है (उतरा हुआ और आँख तथा गाल गड़हेमें धँसे दिखाई देते हैं—ओलियेन)। नासारन्ध्र और अन्यान्य श्लैष्मिक झिल्लीसे गाढ़े डोरीकी तरह कड़े श्लेष्माका स्राव होता है, खींचनेसे बढ़ता है (कैलि-बाई)। स्तनका दूध पीनेके समय बच्चा जितनी ही बार स्तन खींचता है, उतनी ही बार मसूढ़ेसे खून निकलता है और मसूढ़ेमें दर्द होता है, जितनी ही बार छींकता है, उतनी ही बार नासारन्ध्रसे कई बून्द खून गिरता है। सवेरे नाकसे रक्तस्राव (मिलिफो, ब्राई, नक्स ; ऐसा खून जो खींचनेपर डोरीकी तरह बढ़ता है—क्रोकस)। उखाड़े हुए दाँतकी जड़से बहुत अधिक खून बहना (हैमा, क्रियो) ; आँतके जखमसे खून बहना (ब्रोथ्रप्स)। दोनों ओठ फटे, उनपर पपड़ी जमी या दाग पड़े। पलकोंका प्रदाह ; रोज़ रातके अन्तिम प्रहरमें आँखें सट जाती हैं (इयुफ्रे, पल्स)। एक दृष्टिसे टकटकी लगाकर और मुँह फाड़कर आकाशकी ओर देखता रहता है। तोतलाना—काँपती हुई बोली (स्ट्रैम, मार्क), सभी चीजें बहुत पास दिखाई देती हैं (कैनाब-इण्डि) ; डकारमें जलन या शून्य डकार (आर्जेण्ट-नाई ; खाई हुई चीज़के स्वादका डकार—पेट फूलनेके साथ—कार्बो-वे ; श्वासरोध करनेवाली डकार—कार्बो-ऐन ; इसके साथ ही खाये हुए पदार्थ या खट्टे कणोंका निकलना—सलफर)।

अन्त्राशय।—मानो पाकाशयमें एक बरफका टुकड़ा रखा हुआ है, ऐसा मालूम होना, इसके साथ ही दर्द (मानो पाकाशयमें एक आधा सिझा हुआ अण्डा रखा हुआ है—ऐबियेज नाइग्रा ; मानो पत्थरका टुकड़ा रखा है—ब्राई, नक्स, पल्स)। अन्त्रशूल, इसके साथ ही लाल रङ्गका पेशाब—खानेसे घटना, दर्दके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है। नाभीके चारों ओर दर्द (कैल्के, सिना, ऐनाक्, रास-रड, रैफेनिस, रियुम, लैके, टैबाक)। वृद्ध मनुष्योंका उदरामय—रातमें और सवेरे बढ़ना ; कूथन (Tenesmus) और मलद्वारमें जलन, पानीकी तरह पाखाना होनेके बहुत देर बादतक यह कूथन

मौजूद रहता है (इग्ने)। ऋतुके पहले और ऋतुके समय पतले दस्त आना (ऐमोन-का, वेरेट)। बार-बार पेशाबका वेग, पेशाब कर आनेपर फिर तुरन्त लग आता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु, शोणित-स्राव—सिर्फ रातमें होता है, दिनमें कोई चिन्ह भी नहीं रहता (ऐमोन-म्यू, मैग-कार्ब ; केवल दिनमें और सोनेके साथ स्राव रुक जाते हैं—कैक्ट, कास्टि, लिलि-टाइ ; जबतक वह चलती-फिरती रहती है, तबतक स्राव होता है, चलना बन्द करते ही स्राव बन्द हो जाता है—लिलि-टाई ; केवल सोनेके समय स्राव, उठ बैठने या चलते रहनेपर बन्द होता है—क्रियो) ; ऋतुके समय और ऋतुके पहले उदरामय पैदा हो जाता है (ऐमोन-कार्ब)। रजोनिवृत्तिके समय और ५-७ दिन बाद रक्त दिखाई देता है (बोरेक्स) ; प्रत्येक दो सप्ताहके अन्तरपर लाल रंगका और जमा हुआ रक्त निकलता है (नक्स-वोम, सलफर) ; ऋतुके समय तलपेटमें बहुत भार मालूम होना, मानो आँतें आदि बाहर निकल पड़ना चाहती हैं (बेल, सिपि, ट्रिलि-पेन)। प्रदर, स्राव बहुत गाढ़ा, कसैला और त्वचाको क्षय करनेवाला और डोरीकी तरह कड़ा तथा हरे रंगके श्लेष्मासे भरा हुआ। कमरमें वस्त्र आदि कसकर नहीं पहना जा सकता (कैल्के, लैके, सल्फ)। ऋतुके समय विटपदेश (Pubes) में बहुत दर्द मालूम होना।

श्वास-यंत्र।—दमाके साथ आक्षेपिक भावसे हँसना और रोना। सूखी खाँसी, स्वरभङ्ग, कष्टकर श्वास-प्रश्वास, वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, कलेजा धड़कना।

प्रत्यङ्ग आदि।—कैंची, छुरी आदिका व्यवहार करनेपर अंगुलीमें बहुत दाग पड़ता है या गहरा हो जाता है। कन्धे या बगलमें प्याजकी तरह गन्ध आती, है और इसी गन्धका पसीना निकलता है (सुगन्धित पसीना—कोपेवा, रोडो ; कड़वी गन्ध—फेरेट ; खूनकी गन्ध—लाइको ; कपूरकी गन्ध—कैम्फो ; कस्तूरीकी तरह—पल्स, सल्फ ; बदबू—आर्नि, बैराइ, कार्बो-ऐन, लैके, मार्क, ऐसिड-नाई, रास ; प्याजकी गन्ध—बोविस्टा, लैके, लाइको ; सड़ी गन्ध—स्टैफ ; खट्टी गन्ध—ब्राई, कास्टि, कैमो ; गन्धककी गन्ध—फास ; पेशाबकी गन्ध—बार्बा, कैन्थ, कोलो, ऐसिड-नाई ; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्ध—ऐसिड-नाई)। सन्धियाँ बहुत बलहीन और हाथ-पैर आदिका बहुत क्षीण हो जाना। द्रव्य आदि हाथसे गिर जाते हैं, इतना बल नहीं कि कसकर

पकड़ रख सके (असावधानतासे गिर जाते हैं—ऐपिस)। जंघाकी पोटलीकी पेशी (Calves) अत्यन्त सङ्कुचित मालूम होती है—सवेरे ऐंठन होती है (आर्निका, नक्स, कैम्फो, क्यूप्रम)।

त्वचा।—आमवात—बहुत दिनोंका—वातकी वजहसे त्वचाका सुन्न हो जाना, हृत्स्पन्दन और इसके साथ ही पतले दस्त आना (डालका), शरीर गर्म होते ही खुजली आरम्भ हो जाती है, सारे शरीरमें खुजली (राससे लाभ न होनेपर)। तलहत्थीकी पीठपर रसस्रावी अकौत। मेरुदण्डका सबसे निचला अंश खुजलाने लगता है, रोगी खुजला-खुजलाकर जखम बना डालता है। रोज़ ७ बजे संध्याके समय उत्ताप पैदा हो जाता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऋतु-विकारमें—ऐमोन-कार्ब, ऐमो-म्यू, बेल, मैग-कार्ब, मैग-सल्फ, सिपिया वगैरह बोविस्टासे तुलनीय हैं; इसके अलावा स्ट्रैमो (हँसना और रोना पर्यायक्रमसे), सल्फ (भोजनके बाद कमजोरी)। व्यूफो (मानो हृत्पिण्ड पानीमें डूबा हुआ है); ऐम्ब्रा (दो आर्त्तवोंके बीचके समयमें खूनका स्राव) इत्यादि; अलकतराके बाहरी प्रयोग और धुएँकी वजहसे श्वास रुक जानेके कारण पैदा हुई बीमारीमें बोविस्टा बहुत लाभदायक है।

दोषघ्न।—कैम्फर, काफिया।

शक्ति।—३री दशमिकसे २०० क्रमतक हमेशा व्यवहारमें आता है।

क्रियाका स्थायित्व।—५० दिन।

ब्रैकिग्लोटिस रिपेन्स

(BRACHYGLOTIS REPENS)

दूसरा नाम।—न्यूजिलैण्ड देशके प्यूक नामक एक तरहका फूलका गाछ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पत्ते और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है:—मूत्रग्रन्थिकी बीमारी (ब्राइटकी बीमारी); वाधक इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इसके द्वारा लालामय मूत्र और मूत्रनलीके अन्यान्य विकार पैदा हुआ करते हैं। ब्राइट्स या लाला मूत्र-रोगमें इससे विशेष लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और तमतमाया हुआ चेहरा।

कान ।—कानमें खुजलाहट, सुई बेधनेकी तरह मालूम होना।

नाक ।—नासा-रन्ध्रमें खुजली और जलन।

अन्त्राशय ।—अन्त्राशय और दाहिने डिम्बाधार प्रदेशमें बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होना, मानो कुछ धड़फड़ कर रहा है (Fluttering sensation)।

पेशाब ।—पेशाब लालामय (बोवि, हेलोन, मर्क-कोर)। मसाना या मूत्र-ग्रन्थि प्रदेशमें ऐसा बहुत अधिक दर्द मालूम होना, मानो त्वचा क्षय हो गई है। मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशमें क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द और पोसने-जैसा मालूम होना ; पेशाबका वेग। मूत्रनालीमें जखमकी तरह मालूम होना और ऐसा मालूम होना, मानो पेशाब आप-से-आप ही निकल जायगा। पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना। पेशाबकी नलीमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होना (एपिस), श्लेष्माके कण और मूत्रनालीका शल्क मिला बहुत ज्यादा परिमाणमें फीके रङ्गका पेशाब निकलना। पेशाब होनेके पहले तलपेटमें दर्द। मूत्रनालीमें टपक और पेशाबका वेग।

श्वास-यंत्र ।—श्वास-प्रश्वासमें बाधा और प्रायः रुकी हुई-सी साँस। सन्ध्याके समय वक्षस्थलके बायें पार्श्वमें और हृत्प्रदेशमें दर्द मालूम होना ; लम्बी साँस लेनेपर श्वासकृच्छ्रताका घट जाना।

मलान्त्र और मल ।—निष्फल वेग। कब्जियत—मल सूखा, गांठ-गांठ, निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्रमें जखम हो गया है, विशेषकर सन्ध्याके समय (ग्रम्बम)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—चलने-फिरने बाद नितम्ब प्रदेशमें बहुत सुस्ती और दर्द मालूम होना, हाथ-पैरमें क्षीणता मालम होना, लिखनेके समय हाथकी

अंगुलोमें, अंगूठे और कलाईमें ऐंठन—कलाईसे लेकर प्रकोष्ठतक पेशियोंकी खींचन पड़ती है।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस (मूत्रनलीमें डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़), हेलेन, मर्क-कोर (ऐल्बुमिनुरिया), प्लम्बम, फेरम-फास, आर्स, कैलेण्डु, सेनेसियो, आर्निका (चोटकी तरह अकड़न), बोविस्टा, नक्स (वेग); ओपियम (कब्जियत)।

शक्ति।—३री दशमिकसे ६ठी दशमिकतक।

परीक्षक।—डा० फिङ्कर।

ब्रैङ्का अर्सिना

(BRANCA URSINA)

or

(HERACLEUM SPHONDYLIUM)

उपयोगिता और आभास।—भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता। मिचली, वमन, आँतोंका शूल, उदरामय, प्लीहामें दर्द, औंघाईके साथ सरमें दर्द हो आदि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—पढ़नेके समय या बैठनेके समय (ऐमोन-कार्ब, कूप्रम, ग्रेटि, लैके, स्ट्रैन) औंघाईके साथ सरमें दर्द; हवा खानेके लिये टहलते समय बढ़ना; वस्त्रसे माथा बाँध रखनेपर घटना; माथेमें बहुत पसीना, माथेमें तेल-भरा पसीना (ग्रैफ, प्लम्बम, नेट्र-मूर); माथेमें बहुत खुजली; बार-बार छींक और इसी कारणसे प्लीहामें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना।

पाकाशय।—भूख लगती है, पर मिचली और सब तरहके भोजनोंसे अरुचि रहती है। प्लीहा प्रदेशमें टपककी तरह दर्द होता है; शूल वेदना, मानो कोई मरोड़ता है या सुई बेध रहा है; गोंदकी तरह तथा बदबूदार मल।

त्वचा ।—अकौतकी तरह रस बहानेवाले उद्भेद और शरीरमें बहुत खुजली ; छातीमें सूखे उद्भेद, खुजलानेपर जलन होती है ।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रमतक ।

ब्रैसिका नेपस

(BRASSICA NAPUS)

दूसरा नाम ।—कोल-सीड ; रेप-सिड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे सतेज़ उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।— शोथ, मुखविवरमें शीतादका जखम, बहुत अधिक भूख, उदरमें वायु-सञ्चय, शरीरके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें आगसे जलनेकी तरह दाग, नख निकल जाना, सड़नेवाले जखम वगैरह रक्तके विषाक्त हो जानेके लक्षणमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—रैफैनस, आर्मोरेसिया, सिनापिस, सिकेलि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ब्रोमियम

(BROMIUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समुद्र अथवा नमकीन झरने आदिके पानीमें यह पाया जाता है । सुरासार मिलाकर उच्च क्रम तैयार किया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— संन्यास ; दमा ; छातीमें कर्कटका जखम ; खाँसी ; घुंड़ी ; उपझिल्ली-प्रदाह या डिफ्थीरिया ; कष्टरजः ; पलकोंके किनारे नासूर ; ग्रन्थियोंमें विकार ; गलगण्ड ; हृत्पिण्डका बढ़ना वगैरह रोग ; स्वरनलीका अकड़न ; अधकपारीका

सर-दर्द ; कर्णमूल रोग ; कर्णमूल ग्रन्थिका कड़ापन ; श्वास-प्रश्वासकी बीमारी ; गण्डमाला ; अण्डकोषका कड़ापन या विवृद्धि ; गलेका जखम ; तालुमूल ग्रन्थिका प्रदाह और कड़ापन ; गुटिका दोष ; क्षयकास या यक्ष्मा ; नाना प्रकारके जखम ; जरायु या अपत्य-पथमें वायु इकट्ठा होना ; सरमें चक्कर आना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—गोरा रङ्ग, कुछ नीली आभा लिये कोमल केश और कोमल त्वचावाले मनुष्य, श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले मनुष्य जो प्रायः स्वरनली प्रभृति श्वासयन्त्रके रोगसे ग्रसित रहा करते हैं और थोड़ी भी सर्दी लगनेपर जिनकी रस-ग्रन्थियाँ सब प्रदाहित हो जाती है, उनके शरीरमें ब्रोमियम बहुत लाभ करता है। कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह और गण्डमाला रोगमें भी इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है। इसके ये कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—(१) नासामूलमें दबावके साथ नयी सर्दी या नाकसे पानी बहना, दोनों नासारन्ध्रकी त्वचा मानो क्षय हो गई हो और उसमें स्पर्श सहन न होता हो। (२) बहुत अधिक स्वरभङ्ग। (३) श्वास लेनेके समय गलेमें सर्दी मालूम होती है और खाँसी आने लगती है ; आक्षेपिक खाँसी—खाँसनेपर गला घड़घड़ाता है ; गला रुकना—गलरोध नहीं होता है। (४) छातीमें दबाव मालूम होता है, श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ़ होती है और दर्द होता है।

लक्षणावली

मन ।—सन्ध्याके समय अकेले रहनेपर उसे ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसके पीछे खड़ा है, जमीनकी ओर देखा करता है, मानो कोई जीव-जन्तु जमीन भेदकर निकलेगा—ऐसी प्रत्याशा करता है ; मानसिक परिश्रम करनेका अत्यन्त आग्रह।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—पुलपर खड़े रहनेपर या बहते हुए सोतेकी ओर देखनेसे (ऐङ्गस, फेरम, मिलिन, सलफर) ; अधकपारीका सर-दर्द (Hemicrania)—बाईं ओर। झुकनेपर और दूध पीनेपर बढ़ जाना (ऐसे, बैराइ, ब्राई, हिप, क्रियो, इग्ने, प्लैट, स्टैफ, फाइटो ; सरमें दर्द—धूपमें और जोरसे माथा हिलानेपर बढ़ना (ब्रूसिया, लैके, नेट्र-कार्ब ; माथा हिलानेपर—कैप्स, आकोराल, ग्रैफ, लैक्ट, नेट्र-म्यूर, साइ)। आँखें भेदकर तेज़ दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो चेहरेपर मकड़ेका जाल लगा हुआ है (राइ, बोरैक्स, ग्रैफ)।

नाक।—दोनों नासा-पुटोंकी सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे पंखा हिलाने-जैसी गति (ऐण्टिम-टार्ट, लाइको); बहुत दिनोंकी स्थायी दुरारोग्य सर्दी; नासारन्ध्रके नीचे और रन्ध्रके मुँहपर जखम पैदा हो जाता है और नासा-मूलमें दबाव मालूम होता है। पानीकी तरह निकलनेवाला सर्दीका स्राव; पहिले दाहिनी और फिर बाईं नाकका छेद बन्द हो जाता है (बोरैक्स); नाकका अगला भाग हमेशा खुजलाया करता है, मानो उसमें मकड़ेका जाल हमेशा ही लगा हुआ है। नाककी जड़में दबाव मालूम होना और बार-बार छींकके साथ सर्दी।

कान।—बाईं कर्णमूलीय ग्रन्थि (Parotid gland) कड़ी और फूली हुई, छूनेसे गर्म मालूम होती है, पीब संचय होनेका लक्षण, पककर फट जानेपर त्वचाको क्षय करनेवाला पानीकी तरह स्राव होता है, पर इतनेपर भी फूला हुआ अंश कड़ा और न झुकनेवाला रहता है, नरम नहीं होता।

अंत्राशय।—जीभसे पाकाशयतक तेज़ दर्द। ऐसा मालूम होता है मानो पाकाशयमें पत्थरका एक टुकड़ा रखा हुआ है, (ब्राई, नक्स, पल्स); पाकाशयका शूल, कुछ खा लेनेपर घटना (बोविस्टा)। अन्त्राशयमें बहुत वायु भरा रहता है; काले पाखानेके साथ दर्द-भरा बवासीर।

श्वास-यंत्र।—गलेके भीतर उपझिल्ली प्रदाह (Diphtheria), जिह्वामूल अर्थात् जीभकी जड़में नकली झिल्ली निकलती है; वायुनली-भुजके भीतर या स्वरनालीके मुँहपर, नकली झिल्ली आरम्भ होकर ऊपरकी ओर फैल जाती है; वक्षस्थलका दर्द ऊपरको ओर फैलता है। नकली झिल्ली पैदा करनेवाली काली खाँसी (Croup)—खाँसनेके समय बहुत घड़घड़ाहट सुन पड़ती है, पर साँस नहीं रुकती (हिपरकी तरह); पतले श्लेष्माका शब्द, परन्तु कफ़ नहीं निकलता (ऐण्टि-टार्ट)। क्रूप-खाँसी, स्वरभङ्ग और घुंड़ी (काली) खाँसीकी तरह लक्षणवाली; रोगी हाँफता है और मुँह फाड़ा करता है। श्वास-कृच्छ्रता—साँस लेनेसे जी नहीं भरता, मानो किसी छेदभरी चीज़के भीतरसे सांस खींच रहा है (स्पंजिया) या सब श्वासनालियाँ मानो धूआँ या गन्धकके धुएँसे भर रही हैं; घड़घड़ और साँय-साँय शब्दवाला श्वास-प्रश्वास; आवाज़—स्वर इतना टूटा रहता है, कि सुना नहीं जाता: स्वरनालीमें श्लेष्मा भरा रहनेकी वजहसे साँस रुक जानेका उपक्रम हो जाता है (यदि

वायुनली-भुजमें ऐसा हो जाये—ऐण्टि-टार्ट)। बढ़नेवाले बालकोंके व्यायामकी वजहसे हृत्पिण्डका फैलना। युवतियोंके उपयोगी शारीरिक व्यायामको वजहसे हृत्पिण्डका फैलना (कास्टि)। साँस लेनेके समय स्वरनालीके मुँहपर बहुत सर्दी मालूम होना (रास, सल्फ)। हजामत बनवाने बाद घटना या आराम हो जाना (हजामत बनवाने बाद बढ़ना—कार्बो-ऐन)। दाहिने फेफड़ेमें ही अधिकांश स्थानोंमें रोग हुआ करता है। यक्ष्मा-रोगमें छातीमें कतरनेकी तरह दर्द, ऊपरकी ओर फैलता है। फेफड़ेके प्रदाहमें सभी निम्नांश यकृत-भावापन्न (Hepatized—अर्थात् यकृतकी तरह रंग और कड़ापन) हो जाता है।

ग्रन्थि-मण्डली ।—निम्न-हनुके नीचेवाली और कण्ठ (Sub-maxillary) और कर्ण-मूल ग्रन्थि और अण्डकोष वगैरह पत्थरकी तरह कड़े हो जाते हैं (अरम, पल्स क्लिमैट्) और श्लेष्माश्रित या यक्ष्मासे विदूषित सूजन-भरे रहते हैं। अत्यन्त अनमनीय गलगण्ड (Goitre—स्पंजिया ; थाइरायड) रोगमें यह लाभदायक है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुमें वायुकी सूजन (Physomete)—अपत्य-पथसे जोरसे वायु निकलता है (लैक-कैन, लाइको, ऐसिड-फास, बेल)। नकली झिल्ली-निर्मोचक वाधकका दर्द (बोरैक्स), ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी होता है, स्राव बहुत ज्यादा और उसमें झिल्लीके टुकड़े मिले रहते हैं। ऋतु होनेके पहले मन चिड़चिड़ा हो जाता है। स्तनमें अर्बुद पैदा हो जाता है; उसमें सुई बेधनेकी तरह दर्द—बाएँ स्तनमें अधिक। स्तनसे कनपटीतक सुई बेधनेकी तरह दर्द।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—घुंड़ी (काली-खाँसी) और अन्यान्य रोगोंमें क्लोरम, हिपर, आयोड, स्पञ्जिया वगैरहके सदृश। कड़ापन-मिला गण्डमाला रोगमें “आयोडम” से यदि लाभ न हो तो ब्रोमियमसे फायदा होता है।

डा० हेरिङ्ग कहते हैं, कि ब्रोमियम और आयोडियममें यही प्रभेद है, कि ब्रोमियम नीली आँखवाले मनुष्योंके लिये और आयोडियम काली आँखवाले व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है। लैकेसिस, एपिस, आर्जेण्ट-नाइ, कोना, कूप्रम, लाइकोपो, मार्कु, फास्फोरस (हृत्पिण्डका कड़ापन), सिपिया, सल्फ, ऐण्टि-टार्ट, पल्स इत्यादि।

दोषघ्न।—कैम्फ, ऐमोन-कार्ब, मैग-कार्ब, ओपियम।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे तीसरी दशमिकतक घुंड़ी (काली) वगैरह रोगोंमें (हमेशा नया तैयार कर लेना चाहिये) तथा अन्यान्य रोगोंमें उच्च क्रम व्यवहार होता है।

ब्रूसिया ऐण्टि-डाइसेण्टरिका

(BRUCEA ANTI DYSENTERICA)

दूसरा नाम।—ऐङ्गस्टु रा-फल्सा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अरिष्ट किसी भी आकारमें तैयार किया जा सकता है।

उपयोगिता और आभास।—नक्स-वोमिकाकी छालसे यह दवा तैयार होती है। **सर-दर्द**, इसके साथ ही बहुत अधिक औंघाई, संध्यामें घटना और **पाकाशय और समूचे उदरमें** टपक जैसा दर्द होना इसका निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—जिनसेङ्ग, हिराक्लियम, जेलस, नक्स-म, नेट्रम-स, सल्फ, सर-दर्दके साथ निद्रालुता।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

ब्रूसिनम

(BRUCINUM)

दूसरा नाम।—ब्रूसिन। स्ट्रिकनियाकी छाल और बीजसे तैयार किया हुआ एक तरहका उपचार।

उपयोगिता और आभास।—निम्नाङ्गका एकाएक फड़कना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

ब्रायोनिया ऐल्बा

(BRYONIA ALBA)

दूसरा नाम।—हमारे देशका गाछ न होनेपर भी सफ़ेद जंगली सीजकी तरहका एक पौधा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क या मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—शराब पीनेका दुष्परिणाम ; ऋतु थोड़ा होना ; मुँहमें जख्म ; संन्यास ; दमा ; पित्तका विकार ; स्तनका प्रदाह ; श्वासनलीका प्रदाह ; कैन्सर ; मृत्पाण्डु ; कब्जियत ; क्षयकास ; सर्दी ; खाँसी ; दाँत निकलनेकी बीमारी ; उदर और फुसफुस-व्यवच्छेदक पर्देका आमवात ; अतिसार ; शोथ ; अजीर्ण ; अकौता ; आंत्रिक ज्वर या सान्निपातिक ज्वर ; नाना प्रकारके उद्भेद ; पाकाशय और आँतोंका प्रदाह ; रक्त-स्राव ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डका प्रदाह ; आँतका हटना (आँत उतरना) ; हिचकी ; कोरण्ड ; मस्तिष्ककी बीमारी ; सविराम ज्वर ; कामला ; मस्तिष्कोदककी बीमारी ; स्तनके दूधका विकार ; यकृतका विकार ; कमरका दर्द ; खसड़ा ; वात ; मस्तिष्क प्रदाह ; ऋतु-स्रावमें विकार ; ठुनका ; स्नायुशूल ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; नाकसे खून गिरना ; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह ; फुसफुस आवरक झिल्ली प्रदाह ; सूतिकावस्थाकी बीमारियाँ ; सूतिका ज्वर ; स्वल्प-विराम ज्वर ; पार्श्व-वेदना ; गर्दन अकड़ जाना ; उद्भेद बैठ जानेकी वजहसे बीमारी ; प्यास ; दाँतका दर्द ; सरमें चक्कर आना ; मुँहमें पानी भर आना ; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सन्धिवात धातुवाले मनुष्य और जो अकसर पित्त-संचयके विकारकी वजहसे रोग भोगा करते हैं, जिनका स्वभाव चिड़चिड़ा रहता है, जो साधारण-सी बातमें भी क्रोधमें अन्धे हो जाते हैं, जिनके केश गहरे काले होते हैं ; जो साँवले और दृढ़ पेशीवाले मनुष्य हैं ; जिन्हें पसीना नहीं होता, थोड़ेमें ही कातर हो पड़ते हैं, जो बहुत क्षीण नहीं हैं, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। इससे शरीरमें कितनी ही जगह सुई बेधनेकी तरह या कतरनेकी तरह दर्द पैदा होता है और वे सब दर्द बढ़ते हैं—रातमें ;

शरीर हिलानेके साथ ही, साँस लेने या खाँसनेपर और स्थिर होकर बैठनेपर या रोगवाली करवट सोनेपर आराम मालूम होता है (टिलिया, पल्स—सुई बेधनेकी तरह दर्द, पर शरीर हिलानेसे घटना ; स्थिर होकर बैठनेपर वृद्धि—कैलि-कार्ब)। इसके द्वारा मुँहके भीतर, श्वासनालीके भीतर या मलद्वारमें जहाँ कहीं भी क्यों न हो, स्लैष्मिक झिल्ली मात्रमें ही बहुत सूखापन पैदा हो जाता है। शरीरके दाहिने पार्श्वमें, संध्याके समय, निर्मल-वायु सेवनसे, शीतके बाद ग्रीष्म आदिमें इसकी क्रिया पूरी-पूरी दिखाई देती है। इसके अलावा निम्नलिखित लक्षण इसके निर्णायक लक्षण हैं :—(१) प्रलाप, दिनके किये हुए कामके सम्बन्धमें रातमें प्रलाप बका करता है। (२) सरमें दर्द, फटनेकी या फाड़नेकी तरह या भीतरसे बाहरकी ओर दबानेकी तरह दर्द, अधिकांश स्थानोंमें माथेके पिछले भागमें दर्द ; देह या देहांश, यहाँतक कि आँखतक हिलानेसे दर्द बढ़ जाता है। (३) सरमें दर्द—तेज़ शलाका बेधनेकी तरह या टपककी तरह दर्द—ललाट-देशमें,—दर्द नीचे जानेवाला—ललाटसे सरके पीछे और वहाँसे गर्दन, गर्दनसे कन्धा और क्रमसे पीठतक फैल जाता है। मुख-विवर सूखा और स्वाद तीता ; जीभपर घना सफेद या पीली आभा लिये और भूरे रङ्गका लेप रहता है और नीरसता। (५) तेज़ प्यास, प्रति बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है। (६) वमन—भोजनके बाद तुरन्त ही पित्तभरा पानीकी तरह पदार्थ के हो जाता है। (७) पाकस्थली—स्पर्श सहन नहीं होता ; ऐसा अनुभव होता है, कि पाकस्थलीके भीतर मानो एक बहुत भारी पत्थर दबा हुआ है, खासकर खानेके बाद ; खाँसनेपर पाकाशयमें दर्द मालूम होता है। (८) मलकाठिन्य—बहुत कड़ा और गांठ-गांठ मल। मल सूखा—मानो जल गया है। (९) आमाशयमें स्पर्श सहन न होना अर्थात् तलपेटपर इतना दर्द होता है कि हाथ रखना सहन नहीं होता। (१०) उदर हिलानेसे, खाँसनेसे, श्वास-प्रश्वासमें और हाथसे दबानेपर दर्दका बढ़ जाना। (११) पेशाब बहुत थोड़ा, गर्म, गदला, बियर नामक शराबकी तरह। (१२) दोनों स्तन बहुत कड़े और दर्द-भरे हो जाते हैं। (१३) खाँसी—दोनों कण्ठमें खुजलानेवाली सूखी खाँसी ; रातमें वृद्धि, इसके साथ छातीको फैलाये बिना साँस लेने और छोड़नेमें ऐसा मालूम होता है कि आराम न मिलेगा। उदरके ऊपरी प्रदेशमें (Epigastrium) खुजलाहट मालूम होनेके साथ खाँसी, गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर और भी बढ़ जाना ; मिचली न रहनेपर भी ओकाईके साथ

खाँसी और खाई हुई चीज़की कै। (१४) वक्षमें नोकीली सलाई बेधनेकी तरह दर्द, श्वास-प्रश्वासमें बाधा पैदा करनेवाला—शरीर हिलानेसे वृद्धि। (१५) खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है मानो छाती फटकर दो हो जायगी; छातीपर जोरसे रगड़नेपर घटना। (१६) बलगम (Expectoration) का रङ्ग जङ्गकी तरह, डोरीकी तरह कड़ा, थक्का-थक्का, मांड़की तरह। (१७) सभी प्रत्यङ्गोंकी सन्धियाँ गर्म, लाल, फूली, दबाने और शरीर हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है। (१८) ज्वराधिकारमें (बोखारमें) तेज़ प्यास और खट्टी गन्धभरा पसीना। (१९) ज्वरकी आच्छन्न (बेहोश) अवस्थामें चिबानेकी तरह जबड़ेका हिलाना या दण्ड सञ्चालन।

लक्षणावली

मन।—बहुत चिड़चिड़ा; सब बातोंमें वह क्रोधी हो उठता है (कैमो, हिप, कैलि-कार्ब, लाई; फुर्त्तीला—क्रोक, लैके, सैबाई); मर्म-वेदना, निराशा और क्रोधकी वजहसे बीमारियाँ (कोलो, इपिका, स्टैफ), क्रोधके बाद बहुत शीत और ठण्डा मालूम होता है, पर माथा गर्म और चेहरा लाल हो उठता है (अरम); बच्चेको यह अच्छा नहीं लगता कि कोई उसे उठाये और गोदमें लेकर घूमे (कैमो और सिनाके विपरीत), जो नहीं मिलता है वैसी ही चीज़ मांगता है, परन्तु देनेपर फिर लेना नहीं चाहता (कैमो)। विकारयुक्त—रातमें अपने दिनके किये हुए काम-काजके या विषय-व्यापारके सम्बन्धमें प्रलाप बकता है; शय्या छोड़कर भागनेकी चेष्टा करता है या अपने घर जानेकी इच्छा करता है (ऐकि, कैम्फि, युपेटो, ओपि, हायो), विकारावस्थामें रोगी लगातार बायाँ हाथ हिलाया करता है (ऐपोसाइन, हेलिबो)।

मस्तक।—शय्यामें उठकर बैठते ही सरमें चक्कर आने लगना, मिचली, सुस्ती पैदा हो जाती है (ऐको, पल्स); सरमें दर्द, झुकनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो ललाट फटकर माथा बाहर निकल पड़ेगा (ऐको, मार्क, बेल, रास-टक्स)। वस्त्र आदिपर इस्तरी करनेकी वजहसे (सिपि), खाँसनेपर सवेरे शय्यासे उठने या पहली बार सोकर आँख खोलते ही रोगोंका बढ़ जाना; सवेरे आराम मालूम होता है और सन्ध्यातक बढ़ा करता है; कब्जियतकी वजहसे माथेमें दर्द (ऐलो, कोलिन, ओपि), ऐसा मालूम होना कि माथेके सामनेवाला भाग मानो भरा हुआ है (खाली मालूम होना—कोरैल-रू, काक्यु, इग्ने, ओपि;

मस्तिष्कमें मानो गोलेकी तरह एक पदार्थ है—कोना ; मानो मस्तिष्क समूचा सजीव है—पेट्रोल)। माथा गर्म और चेहरा लाल, परन्तु शरीरका बाकी अंश ठण्डा (आर्नि, सिना)। सरमें चक्कर आना, शय्यापर सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वह नीचे जा रहा है ; मानो बहा जा रहा है ; आँख बन्द करनेपर बढ़ना (थिरिड)।

नाक।—नाक फूली ; मासिक ऋतु-स्रावके बदले नाकसे रक्त-स्राव होना—अनुकल्प रजः (बेल, हैमा, फास, पल्स)। सूखी सर्दी, दिनमें श्लेष्मा निकलता है, पर रातमें नाकका छेद सूख जाता है (नक्स) ; नाकमें सूखा श्लेष्मा जमा रहता है।

कान।—श्रवण-शक्तिके विकारकी वजहसे सरमें चक्कर आना (एमिल-नाई, अरम, सिङ्को, नेट्र-सैलि, सिलि, थिरिड)। बहरापन और कानमें आवाज़के साथ सरमें चक्कर आना ; कानके पीछे और सामने ऊँची सूजन, कर्णमूल-प्रदाह (Parotitis) ; कानसे खून निकलना।

मुखमण्डल।—उतरा हुआ सफेद चेहरा ; गर्म और कोमल, सूजा या लाल (बेल ; गाढ़ा लाल भाव—हाइयो, ओपि) ; नाना प्रकारके उद्भेद ; मुँहका नासूर।

मुख-विवर।—ओठ और जीभ बहुत सूखी ; लार-हीन और फटी (सूखी, बिना लारकी और कालिमायुक्त—ऐकोन, आर्स, हायो, मार्क) ; मुख-विवर—गलेके भीतर और जीभ समूची बहुत सूखी (ऐको, आर्स, बेल), जीभपर सफेद या पीला लेप, जीभ रुखड़ी, फटी और गाढ़े भूरे रङ्गकी, दाँतमें दर्द ; मुँहमें गर्म पदार्थ आदि ले लेनेसे बढ़ना (कैल्के, मार्क, पल्स ; ठण्डा पानी लगनेपर घटना—ब्राई, काफि, पैल्सि), दर्द-भरे दाँत बड़े मालूम होते हैं (आर्नि, कास्टि, कैमो, लैके, नक्स, रास, सलफर), लगातार चबानेकी तरह जबड़े हिलाना, मानो कोई चीज़ चबा रहा है। दाँतमें दर्द। ज्वालामय तृष्णा। बच्चोंका उत्सङ्ग या मुँहका जखम ; जबतक स्तनके दूधसे बच्चेका मुँह तर न कर दिया जाता है, जबतक वह स्तनमें मुँह नहीं लगाता।

गलेके भीतर।—गलेका जखम (Sore-throat), स्वरभङ्ग और निगलनेके समय दर्द मालूम होना। निगलनेके समय सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, मानो गलेमें तेज़ काठकी सलाई बेधी जा रही है—आर्जेण्ट-नाई,

हिपर, डलिकस, एसिड-नाई ; मानो गलेके भीतर गर्म लोहेका गोला अड़ा हुआ है—फाइटो ; गलनलीमें सङ्कोचन मालूम होना (आर्स, बेल, हायो, नक्स); गलेमें रुखड़ापन मालूम होना, गलेमें मानो श्लेष्मा अड़ा हुआ है, बिना जोर लगाये अर्थात् सहजमें नहीं निकलता।

पाकाशय।—भोजनके बाद पेटके ऊपरी प्रदेशमें बहुत भार मालूम होना। ऐसा मालम होता है, मानो उसमें पत्थरका एक टुकड़ा दबाया हुआ है (नक्स, आर्स, मर्क, सिपि, पल्स ; डकार आनेपर आराम मालम होता है। राक्षसी भूख—बार-बार खाना चाहता है ; स्वादकी शक्तिका लोप हो जाना (ऐनाक, हिप, लाइको, नेट्रम-मूर); पीने और खानेकी सब चीजें तीती मालम होती हैं (कोलो, पल्स ; खट्टा स्वाद मिला मालम होता है—सिङ्को, लाइको, नक्स ; मीठा स्वाद मालूम होता है—ऐसिड-मूर, स्क्वियुला); मुँह मानो सड़ गया है (आर्निका, मर्क, नक्स); ज्वालामयी तृष्णा—प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें और बहुत देरका अन्तर देकर पानी पीता है (बार-बार परन्तु प्रति बार थोड़े परिमाणमें पानी पीता है—आर्स, ऐपिस, सिङ्को, हायोसा), हिचकी, खाते ही कै हो जाना (आर्स, नक्स, पल्स)। पित्तमय पानी कै हो जाता है (श्लेष्मा और खाया हुआ पदार्थ कै होता है—इपिका ; पानी आदि पीनेके बर्त्तनमें कै कर देता है—ऐण्टि-टार्ट, बिस्मथ ; दूध पीते ही वमन—इथु, मर्क-सोल ; अम्ल और पित्त वमन—आइरिस-वार्सि) ; स्पर्श सहन नहीं होता; खाँसनेपर पेटमें दर्द होता है ; खाली डकार।

तलपेट और अन्त्राशय।—यकृत प्रदेशमें दर्द-भरी सूजन, क्षय हुई त्वचाकी तरह दर्द और अनमनीय रहना, जलन और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, दबाने और खाँसनेपर दर्दका बढ़ना (मर्क, नक्स)। उदरमें स्पर्श सहन न होना। प्लीहामें चिलक मारनेकी तरह दर्द। अन्त्रशूल (आँतोंमें दर्द) ; यकृतमें प्रदाह ; उदर-शोथ इत्यादि।

मल।—मलमें कड़ापन—मलान्त्र निष्क्रिय, वेगहीन (पाखाना नहीं लगता), मल बड़ा कड़ा, काली आभा लिये, सूखा, गांठ-गांठ, मानो जला हुआ है। समुद्र यात्राके समय (प्लैट ; मल बड़ा गांठ-गांठ—कैल्के, कैलि-कार्ब, नक्स ; छोटा, कड़ा, काला और गांठ-गांठ—चेलिडो, ओपि, प्लम्ब)। उदरामय एकाएक बहुत गर्मी पड़ जानेपर ; पित्तभरा और कषाय—मलद्वारमें जखम पैदा

हो जानेवाला मल ; कादे-भरा पानीकी तरह (पोडो) ; अजीर्ण खाई हुई चीज़ मिला (ऐण्टिम-क्रूड), आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, सिङ्कोना, फेरम, ग्राफ, हिप, नक्स-मस, ओलियेन, ऐसिड-फास, फास, पोडो, सल्फ) ; बहुत देरतक धूपमें घूमनेपर, ठण्डा पानी पीनेकी वजहसे दस्त (आर्स, पल्स) ; फल खानेकी वजहसे (कार्बो-वेज, सिङ्को, सिस्टस, कोलो, पल्स) या जली हुई कोबी वगैरह खानेकी वजहसे (पेट्रोल) ; सवेरे शरीर तथा हाथ या पैर हिलानेसे बढ़ना (लेप्टेन, नेट्रम-सल्फ ; शय्यासे उठते ही—लाइको, सल्फ ; शय्यासे उठनेके पहले—ऐलो, नूफर-लूट, सोराइन, रियुमेक्स, सल्फर ; सवेरे नींद खुलते ही—केलि-बाई, पेट्रोल ; सवेरे ठीक ६ बजनेके समय—आर्जेण्ट-नाई) ; पाखाना होनेके पहले आँतोंमें दर्द, कतरनेकी तरह दर्द ।

पेशाब ।—पेशाब गर्म, लाल और भूरा रङ्ग और बहुत थोड़े परिमाणमें तली सफ़ेद जमती है (सिना, एसिड-आक्स)। पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें जलन (कैन्थ) और कतरनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना (बार्बे, कैन्थ, कैप्सि, डिजि, लाइको, मार्क)। अनजानमें पेशाब होना। बार-बार पानीकी तरह पेशाब ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—लिङ्गमूलमें लाल और खुजलानेवाले उद्भेद ; अण्डकोषमें चिलक मारनेकी तरह दर्द ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—आर्त्तव—ऋतुस्राव बहुत जल्दी-जल्दी होता है, स्राव बहुत अधिक और गाढ़ा लाल रङ्गका, शरीर हिलानेसे ही बढ़ जाता है (क्रोक, सैब्राई)। ऋतुके समय दोनों पैरोंमें छेदनेकी तरह दर्द (कैमो), प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia), जरायुमें जलन और बहुत ज्यादा स्राव या माथा दो हो जायगा—इस ढङ्गका सर-दर्दके साथ स्राव रुका हुआ (जरायुमें भरापन मालूम होना और जलनके साथ—पल्स) ; स्तनका प्रदाह (Mastitis), रोगवाला स्तन पत्थरकी तरह कड़ा हो जाता है, लाल हो जाता है, गर्म और दर्द-भरा रहता है (फाइटो) ; अनुकल्परजः (Vicarious menstruation), ऋतुके बाद नाकके छेदसे रक्त-स्राव । दो ऋतुओंके बीचमें तलपेटमें दर्द, तलपेट और वस्ति-गह्वरमें (Pelvis) बहुत दर्द और स्पर्श सहन न होना (हैमा)।

श्वास-यंत्र —स्वरभङ्ग—खासकर घरके बाहरकी हवाकी वजहसे खाँसी, इसके साथ ही पसीना निकलना, सूखी और आक्षेपिक (Spasmodic)

श्वासरोध करनेवाली और वमन लानेवाली खाँसी (कैलि-कार्ब) ; खाँसीसे वक्षके बगलमें दर्द पैदा हो जाता है, इसके साथ ही सरमें दर्द, मानो माथा फटकर टुकड़े-टुकडे हो जायगा। (कैप्स ; प्रत्येक खाँसीमें सरमें दर्द मालूम होता है—नैट्र-म्यू० माथेके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है—सल्फ ; बेहोश करनेवाला सर-दर्द पैदा हो जाता है—इग्नेशिया ; उन्मत्त कर देनेवाला—मानो माथा फट जायगा, इस ढंगका सर-दर्द पैदा हो जाता है—नक्स ; छातीमें दर्द पैदा करता है—ऐगार ; खाँसनेके समय पेशाब हो जाता है—कास्टि, फेरम, पल्स, वेरेट, स्क्विला), खाने-पीने बाद, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर और जोरसे साँस लेनेपर खाँसी बढ़ जाती है (खाने-पीने बाद खाँसी घटती है—स्पंजिया ; ठण्डा पानी पीनेपर घटना—कास्टि, क्यूप्रम)। लगातार ठण्ढी साँस लेनेकी प्रवृत्ति। खाँसनेपर खायी हुई चीज़ कै हो जाती है (डिजि, फेर, ड्रोसे, फास)। खाँसी, रातमें शय्यापर सोनेके समय ; खाँसीकी वजहसे रोगी खाटपर उठकर बैठ जाता है (उठ बैठता है और हाथपर माथा रख लेता है—निकोल ; दोनों वक्ष पार्श्व पकड़ लेता है- नेट्र-सल्फ ; उठ बैठनेपर घटती है—हायोसा)। खाँसनेपर छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है और लाल मिर्चके रङ्गका कफ निकलता है (फास, रास, सैङ्ग्वि ; लाल आभा लिये कफ़—बेल, मार्क, नाइट्रम)। वक्षमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़ और इसी वजहसे श्वासमें तकलीफ़ और तेज़ श्वास-प्रश्वास ; शरीरके हिलानेपर बढ़ जाना। खाँसनेपर अनजानमें पेशाब हो जाना। खाँसनेके साथ ताजा खून निकलना और पीली आभा लिये कफ़ इत्यादि। बायें स्तनके नीचे तेज़ दर्द मालूम होता है, जो साँस लेनेपर बढ़ता है। गाढ़े लेईकी तरह श्लेष्मासे वायुनली भरी रहती है, पर बहुत चेष्टा करनेपर भी उसका एक कण नहीं निकलता। गर्म घरमें प्रवेश करनेपर खाँसी बढ़ जाती है (नैट्र-कार्ब) ; वक्षोस्थिके नीचेसे दाहिने कन्धे तक भार मालूम होता है। दाहिने पार्श्वके फेफड़ेका प्रदाह ; इसके साथ ही छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (बेल, मार्क ; बाईं और रुका हुआ—फास, रास)।

वक्षस्थल।—श्वास-कष्ट ; तेज़ और छोटी साँस। वक्षका कम जाना।

हृत्पिण्ड—बार-बार स्पन्दन, नाड़ी पूर्ण—हृदयके स्थानपर सुई बेधनेकी तरह दर्द।

गर्दन और पीठ।—दोनों अंसफलकों (Scapulae) के बीचके अंशमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़; तीसरे पहर लेटी हुई अवस्थामें—दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें जलन मालूम होना (लाइको—ठण्डक मालूम होना—ऐमोन-म्य)। कमर और नितम्ब देशमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे रोगी चल फिर नहीं सकता, कमर दबाकर सोनेपर दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—सन्धियाँ फूलकर लाल और चमकीली हो जाती हैं; बाँहके ऊपरी अंशमें सुई बेधने और फाड़नेकी तरह दर्द, हिलाते ही दर्दका बढ़ जाना (ऐको, बेल; हिलानेपर घटना—कोना, लाइको, रास, सिपि)। उत्ताप और प्रदाह-भरी पैरकी सूजन (आर्निका, काकु, पल्स)। दोनों जंघोंमें दर्द और अकड़न। शोथकी तरह सूजन—सवेरेसे संध्यातक क्रमशः बढ़ती जाती है और रातमें आराम हो जाती है। विकारावस्थामें रोगी बायाँ हाथ और बायाँ पैर हमेशा हिलाया करता है (एक हाथ और पैर—ऐपोसाइन, हेलिबो)। दाहिने कन्धेके शिखर-देशमें पीसनेकी तरह दर्द; छूनेसे दर्दका बढ़ना; लम्बी साँस लेने और छोड़नेपर एक मोटी सलाई घुसानेकी तरह दर्द बढ़ता जाता है; ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो कलाई मोच खा गई है; हिलानेसे ही दर्द मालूम होता है। उरुके शिखरपर या पुट्ठेके निकट छुरी बेधनेकी तरह दर्द, सीढ़ी चढ़नेके समय दोनों उरुमें थकन मालूम होती है। दाहिने उरुमें बहुत दर्द। दाहिने उरुमें इतना दर्द कि रोगी तीसरे पहर टहल या चल नहीं सकता, रोगीको वाध्य होकर यह पैर स्थिर रखना पड़ता है।

निद्रा।—लगातार जम्हाई लेते रहना; दिनमें बहुत नींद आना (मर्क, नक्स, फास, सिपि)। नींद आते-न-आते चौंक उठता है, नींद खुलते ही विकार पैदा हो जाता है। रातमें विकारावस्थामें रोगी दिनके किये हुए काम बका करता है। दिनमें किये हुए काम-काजके सपने देखता है (साइकूटा, लाइ, पल्स, रास)। सपनेमें घूमना इत्यादि।

ज्वर।—नाड़ी पुष्ट, अनमनीय और द्रुत। मस्तिष्कमें गड़बड़ी या आच्छन्न भावके साथ-ही-साथ बहुत जाड़ा मालूम होना, गाल लाल और बहुत प्यास। सविराम ज्वर, बहुत जाड़ा, शीत और उत्तापावस्थामें प्यास ज्यादा रहना; इसके साथ ही सूखी खाँसी और वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द

(शीतावस्थाके पहले और शीतावस्थाके साथ सूखी और जलन करनेवाली खाँसी—रास); ओंठ और हाथ-पैरकी अंगुलीसे शीत आरम्भ होता है। उत्ताप सूखा और जलन पैदा करनेवाला—भीतरी, मानो शिरामें गर्म खून खूब प्रवाहित हो रहा है (आर्स देखिये)।

त्वचा।—पीली या पाण्डु-वर्ण—नैजा। प्रसवके बाद प्रसूति और नये पैदा हुए बच्चेको एक प्रकारका दाना निकल आना (ऐको, कैमो)। उद्भेदयुक्त (Eruptive) ज्वरमें सभी उद्भेद धीरे-धीरे प्रकाशित होते या निकलते हैं या अच्छी तरह दाने निकलते-न-निकलते बैठ जाते हैं और उसके अन्तमें छातीमें प्रदाह और श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है।

सार्वाङ्गिक।—जाड़ेके बाद एकाएक गर्मी पड़ जाने या गर्मीके दिनोंमें ठण्डी चीजें अथवा बरफ आदि मिले पानी पीनेके कारण या गर्मीके दिनोंमें सर्दी लगने या शरीर बहुत ही उत्तप्त होनेपर या शरीरकी बहुत ही गर्म अवस्थामें सर्दी लग जानेपर (रोगी लात मारकर शरीरके ऊपरके कपड़े फेंक देता है—एपिस, लाई) या शरीरमें सर्दी लगनेपर (ऐको, हिप) या ऋतु, स्तनका दूध वगैरह स्राव रुककर या नयी पनसाहा माता आदिके दाने बैठ जानेके कारण—जो सब बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें ब्रायोनिया बहुत ही लाभदायक है, इसके पैदा हुए सभी रोग शरीर हिलानेसे बढ़ते हैं और एकदम स्थिर भावसे रहनेपर घटते हैं। प्रदाहवाली जगह कुछ लाल हो जाया करती है (बेलेडोना या ऐकोनाइटकी तरह एकदम गहरी लाल नहीं हो जाती)।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर, शारीरिक परिश्रमसे, छूनेपर; सीधे होकर बैठने, उठकर बैठनेपर उसे ऐसा मालूम होता है, मानो बेहोश हो जायगा या जी मिचलाने लगता है; उत्तापसे, गर्म भोजनसे और किसी तरहका स्राव रुकनेपर बढ़ना।

घटना।—सोनेपर, विशेषकर रोगवाली करवट या अंशको दबाकर सोनेपर (टिलिया, पल्स)। दबने या दबानेपर; विश्रामसे या स्थिर होकर सोये रहनेपर; ठण्ड लगने या सर्द चीज़ खाने-पीनेसे।

दोषघ्न।—ऐकोन, ऐलम, कैमो, चेलिडो, क्लिमे, इग्ने, नक्स, पल्स, रास, सेनेगा। ब्रायोनियाका पुराना (Chronic) ऐल्यूमिना है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—ऐल्यूमिना, रस-टक्स। तेजीसे बोलना या जल्दी-जल्दी पानी आदि पीनेके सम्बन्धमें—बेलेडोना और हिपर इसके सदृश हैं,

वक्षस्थल या फेफड़ेके वाताश्रित दर्दके सम्बन्धमें रैनानक्यलस इसका समगुण-सम्पन्न है ; यकृत या यकृत-प्रदेशमें दर्द और भार मालूम होना, दाहिने पार्श्व को दबाकर सोनेपर घटना और बायें पार्श्व सोनेपर बढ़ना और बाईं करवट पलटनेपर ऐसा मालूम होना मानो किसीने खींच रखा है, इस सम्बन्धमें टिलिया ब्रायोनियाके सदृश है। ब्रायोनियाके प्रयोगके बाद ऐल्यूमिना, कैलि-कार्ब, नक्स, फास, रास, सलफर वगैरहका व्यवहार होता है।

शक्ति।—१ली दशमिकसे १००० शततमिकतक। ज्वराधिकारमें ब्रायोनिया और अन्यान्य सभी दवाएँ उच्चसे उच्चतम क्रममें व्यवहार करनेपर ज्यादा फायदा हुआ करता है। डा० विलियम ए० ऐलेन, जिन्होंने सविराम ज्वर आदिके सम्बन्धमें बहुत बड़ी अभिज्ञता प्राप्त की थी। अपनी पुस्तककी भूमिकामें लिखा है—"किस क्रमके प्रयोगसे मैंने सबसे अधिक सफलता प्राप्त की है और किस अवस्थामें किस मात्राका प्रयोग उचित समझता हूँ, यदि यह बात कोई मुझसे पूछे, तो मैं उससे निःसङ्कोच कह सकता हूँ, कि २०० और उससे ऊँचा क्रम।"

क्रियाका स्थायित्व।—७ दिनसे २१ दिन।

ब्यूफो वलगैरिस

(BUFO VULGARIS)

दूसरा नाम।—रैना, ब्यूफो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहके मेंढ़ककी त्वचाके नीचेकी ग्रन्थिके रसमें सुरासार मिलाकर मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मस्तिष्कका कोमल हो जाना ; बागी या ब्रध्न ; कैन्सर या कर्कटका जखम ; दूषित व्रण ; अस्थिक्षय रोग ; ताण्डव ; शोथ ; मृगी ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; ध्वजभंग ; सविराम ज्वर ; मस्तिष्क-प्रदाह ; अंगुलहाड़ा ; गर्भिणीकी या सूतिका अवस्थामें पैरकी सफेद रंगकी सूजन ; महामारी ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; त्वचाकी बहुत-सी बीमारियाँ ; तोतलाना ; पीब पैदा होना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—सहानुभूतिक स्नायु-विधानपर इसकी प्रधान क्रिया है। इसकी क्रियाकी वजहसे मानव देहकी नीचतम प्रकृतियाँ सब जागरित हो उठती हैं, उसे लज्जा या घृणा बिलकुल ही नहीं रहती; वह चाहे जहाँ कहीं रहे, उसका एकमात्र ध्यान रहता है, अस्वाभाविक या कृत्रिम उपायसे काम-तृष्णाको परिपूर्ण करना। शराब पीनेकी बहुत इच्छा होती है और अन्तमें क्लीवता या ध्वजभंग हो जाया करता है। डा० क्लार्क कहते हैं:—ब्रेजिल देशकी रहनेवाली स्त्रियोंको इसके गुणकी अच्छी खबर थी; कितनी ही नष्ट-चरित्रवाली स्त्रियाँ अपनी पाप-वासना चरितार्थ करनेके लिये, अपने स्वामियोंको इसे पिलाकर ध्वजभङ्ग पैदा कर दिया करती थीं। कामेन्द्रियके विकारकी वजहसे इसकी क्रियाके अधीन रहनेवाले मनुष्यको धीरे-धीरे अपस्मार या मृगी रोग हो जाया करता है। अन्यान्य औषधोंसे पैदा हुए मृगी रोगके लक्षणसे इसका यही प्रभेद है, कि इससे पैदा हुए रक्तके संचालनमें व्याघातकी वजहसे शरीरमें मृगी रोगके आक्रमणके पहले जो एक तरहका "सुरसुरी" (Aura) मालूम होती है, वह जननेन्द्रिय प्रदेशसे उत्पन्न होकर क्रमसे सारे शरीरमें फैल जाती है और रोगी एकदम एक बार जोरसे लोमहर्षण रूपसे चिल्लाकर जमीनपर गिर पड़ता है और आक्रमणके बाद ही गहरी नींदमें सो जाता है। निद्रावस्थामें ही इससे उत्पन्न अपस्मारका प्रकोप आविर्भूत हो जाया करता है (कूप्रम, लैके)। ये सब लक्षण पैदा होनेके पहले रोगीका मन बहुत उत्तेजित हो जाया करता है और वह लगातार बिना मतलबकी बातें अनर्गल बका करता है; यदि कोई उसकी बात समझ नहीं पाता, तो रोगी उसपर बहुत अधिक नाराज़ और क्रोधित हो जाता है और उसे दाँतसे काटनेको तैयार हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—दाँतसे काटनेकी इच्छा। हाय-हाय कर चिल्लाता है; धीरज-हीन, थोड़ेमें ही कातर; पुरुषत्वहीन, अस्वाभाविक उपायोंसे काम परितृप्त करनेके लिये एकान्त स्थान खोजा करता है। बच्चा बहुत दुर्बल चित्तका रहता है। निर्लज्जता।

मस्तक।—रक्त-संचयकी अधिकताकी वजहसे एक पार्श्वमें होनेवाला सरका दर्द; नाकसे खूनका स्राव हो जानेपर घटना (मिलिलोट, फेर-फास,

मैग-सल्फ)। सवेरे भोजनके पहले सरमें दर्द (भोजनमें विलम्ब होनेपर सरमें दर्द—आर्स, कैक्ट, लैके, लाइकोपो)—रोशनी और आवाज़से बढ़ना, इसके साथ ही दोनों पैर ठण्डे और कलेजा धड़कना।

आँख।—लाल, शिरायें फूलीं ; खुजली भरी और फूलीं। चमकीली चीज़की ओर देख नहीं सकता। आँखोंमें छोटे-छोटे छाले निकल आते हैं। आँखका गोल ऊपरकी ओर घूमता है।

कान।—संगीतकी आवाज़ असह्य (ऐको, बेल, ग्रैफ, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स, सैबाई, थूजा), आवाज़से ही चिढ़ या चिड़चिड़ापन पैदा हो जाता है (आर्निका, बेल, काफि, नक्स, अरम, सिङ्को, लाई, सिपि)।

मुखमण्डल।—चेहरा उतरा हुआ या पीला (आर्स, सिङ्को, लाइको, लैके)। सर्दीके साथ पेटके ऊपरी ओंठमें दाने। रह-रहकर चेहरा लाल हो जाता है (ऐमिल, फेर)।

पाकाशय।—सड़े अण्डेकी गन्ध डकारमें आती है, पानी आदि पीनेके साथ ही कै हो जाती है (बिस्मथ, आर्स)। दूध पीने बाद शूलका दर्द पैदा हो जाता है (रैफेनस ; गर्म दूध पीनेपर घटना—क्रोटन-टिग)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी होता है। इसके साथ ही सरमें दर्द, प्रदर—स्राव पानीकी तरह (ऐमोन-कार्ब, ग्रैफ, कैलि-आयोड, नाइट्रम, ओलियम-ऐन), काम प्रवृत्तिकी उत्तेजनाके साथ अपस्मारकी तरह आक्रमण (कैलि-ब्रोम) ऋतुके समय अपस्मार या मृगी रोग पैदा हो जाना। स्तन-ग्रन्थिका कड़ा हो जाना। डिम्बाधार और जरायुमें जलन मालूम होना ; जरायु-ग्रीवामें ज़खम, दुर्गन्धमय बदबूदार खून मिला स्राव। जरायुसे दोनों पैरोंतक दर्द फैल जाता है। सूतिकावस्थामें पैरोंमें सफेद रङ्गकी सूजन, इसके साथ ही बोखार और बेचैनी (ऐको ; शिरावाही वेदना और स्पर्श-असहनीयता, शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता—पल्स, हैमा, बिस्मथ)। शिराओंका फैलना (हैमा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—लगातार हस्तमैथुनकी इच्छा। उसका बायाँ हाथ बार-बार जननेन्द्रियको स्पर्श करता है। अनजानमें वीर्यपात हो जाना। रमणके समय बहुत ही शीघ्र वीर्यस्खलन (ऐपाइ, बार्ब, कैल्के, जेलसि)। हस्तमैथुन और उसीकी वजहसे अपस्मार रोग (कैल्के, लैके, प्लैट, स्ट्रैमो)। अपस्मार

(Epilepsy) के आक्रमणके आरम्भमें रोगी एक हृदय-विदारक चिल्कार कर जमीनपर गिर पड़ता है और बेहोशीकी अवस्थामें इस तरह चिल्लाता है कि सुननेवालोंके रोएँ खड़े हो जाते हैं, निद्रावस्थामें ही आरम्भ होती है (क्यूप्रम, ओपि, लैके), और आक्रमणके बाद रोगी गहरी नींदमें सो जाता है।

त्वचा और प्रत्यङ्ग।—अंगुलीमें चोटकी वजहसे दर्द, बाँहकी राहसे ऊपरकी ओर फैल जाता है। तलहत्थीमें एक बहुत बड़ा छाला निकल आता है। अंगुलहाड़ा, नखके चारों ओर काली लकीरकी तरह सूजन और इसके बाद ही पीव इकट्ठा हो जाना। पैरमें ऐंठन होना; तलवेमें भी छाला पैदा हो जाता है। सामान्य चोट लगे अंशमें पीव पैदा हो जाता है (ग्रैफ, हिपर)। तलहत्थी और पैरके तलवेके छाले सब फट जानेपर उससे क्लेद-भरा स्राव होता है। त्वचा पीले रङ्गकी और फोड़ोंसे भरी। जलन-भरे जखम। बहुत सुस्त और कमजोरी, समूचा शरीर फूला; पेशियोंका संकोचन; भयकी वजहसे मृगी-रोग।

वृद्धि।—गर्म घरमें और रातमें।

उपशम।—ठण्डी अवस्थामें।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—लैके, सिनेगा।

सदृश।—क्यूबेब आर्स, कैन्थ, लैक (पीवकी वजहसे आक्षेप); कैल्के, नक्स, साइलि (मृगीकी आवेश); लैके, सलफर (ताण्डव); हायोसा, सलफर (नकली मैथुन); ऐन्थ्राकस (दुष्ट-व्रण)।

शक्ति।—३रे से २०० क्रम।

कैक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस

(CACTUS GRANDIFLORUS)

दूसरा नाम—सिरियस--ग्रैण्डिफ्लोरस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नये कोमल पल्लवके साथ फूलसे मदर टिंचर तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—धमनीका अर्बुद ; हृत्शूल ; संन्यास ; दमा ; मूत्राधारका पक्षाघात ; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता ; श्वासनालीका प्रदाह ; उदर और वक्ष-व्यवधायक पेशीका आमवात ; शोथ ; कानोंका प्रदाह ; नासूर ; गलगण्ड ; रक्त मिला पेशाब ; रक्तस्राव ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; अजीर्ण ; सविराम ज्वर ; फेफड़ेसे रक्तस्राव ; विषाद ; कष्ट-रजः ; स्नायुशूल ; डिम्बाधारका प्रदाह ; वात ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूर्याघात या लू लगना ; आभिघातिक ज्वर ; योनि-पथका स्नायु-शूल इत्यादि ।

उपयोगिता।—स्थूलकाय व्यक्तियोंमें रक्त-वेग या रक्त-सञ्चय लक्षणमें और रक्त-स्राव प्रबलतामें यह उपयोगी है। इन मनुष्योंमें मृत्युभय बहुत अधिक रहता है। रोगी विश्वास करता है कि उसकी बीमारी आराम न होगी (आर्स) ।

आभास।—इससे देहमें सब जगह कसावट और संकोचन उत्पन्न हुआ करता है। गलेके भीतर, वक्षस्थल, हृत्पिण्ड, मूत्रनाली, मलान्त्र, जरायु, अपत्य-पथ वगैरह शरीरके सभी द्वार रुक जाते हैं ; मानो किसीने कसकर बाँध दिया है, यहाँतक कि सारी देह किसी पींजरेमें बँधी-सी मालूम होती है और वह पींजड़ा मानो धीरे-धीरे संकीर्ण और छोटा होता जाता है। हृत्पिण्ड और धमनी आदि इसकी प्रधान क्रिया-भूमि हैं :—ऐसा मालम होता है, मानो हृत्पिण्डको किसीने लोहेकी मुट्ठीसे कसकर पकड़ लिया है और रोगीकी सभी मनोवृत्तियाँ हृत्पिण्डकी बीमारियोंके अनुसार हो जाती हैं। रोगी बहुत दुःखित और चिन्तित हो पड़ता है और उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसका रोग अब अच्छा न होगा ; नाक, फेफड़ा, पाकस्थली, मलान्त्र (Rectum) मूत्रस्थली वगैरहसे खूनका स्राव, सरमें दर्द, रजमें गड़बड़ीकी वजहसे बीमारियाँ और स्नायु-शूल (Neuralgia), हृत्शूल वगैरह रोगमें यह हाथोहाथ फायदा दिखाता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) अधिक रक्त सञ्चय होनेकी वजहसे सरमें दर्द, मानो माथेकी धमनियाँ आदि फूल उठी हैं और माथा खूब दृढ़ भावसे कसा हुआ है, कानमें टपकके साथ सरमें दर्द। (२) हृत्पिण्ड, अन्ननाली (Æsophagus), पाकस्थली, मूत्रकोष और जरायु मानो खूब कसा हुआ है। (३) श्वास-कृच्छ्रता—हृत्पिण्डका दृढ़ आबद्ध भावके साथ मानो हृत्पिण्ड एक लोहेके बने हाथसे दबाया जा रहा है या किसी वज्र मुष्टिसे

पकड़ा हुआ है। (४) हृत्स्पन्दन बायीं बाँहकी राहसे तेज़ दर्द नीचेकी ओर चलता है, आर्त्तव-स्रावका समय पास आनेपर हृत्शूल (Angina pectoris)। (५) मृत्यु-भय। (६) बाधक या रजःकृच्छ्रता—अलकतरेकी तरह घोर काले रङ्गका स्राव, जरायु और डिम्बाधार प्रदेशमें टपकका दर्द, कलेजेका धड़कना और रोगवाली जगह खूब कसी मालूम होना। (७) चलनेपर ऋतु-स्राव होना बन्द हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—विमर्ष, बोलना नहीं चाहता। मृत्यु-भय, सोचता है कि वह आराम न हो सकेगा (आर्स, लैक-कैन, लिलि-टिग, ऐसिड-नाई, सोराइन, म्यूर, पल्स)। बिना कारणके ही रोना, सान्त्वना देनेपर रोना और भी बढ़ जाता है (हेलिबो, लिलि-टिग, नैट्र-म्यू, सिपी ; सान्त्वना नहीं दी जाती—कैलि-ब्रोम ; सान्त्वना देनेपर आराम मिलता है—पल्स)। दुर्दमनीय विमर्ष भाव और अवसाद वायु-ग्रस्त या व्याधिशंका ग्रस्त (Hypochondriacal)।

मस्तक।—रक्त-प्रधान व्यक्तियोंमें खूनकी अधिकता या रक्त-संचयकी वजहसे संन्यास (Apoplexy)। सरमें दर्द, मानो मूर्द्धा-देश (खोपड़ीपर एक भारी चीज़ दबायी हुई है (धीमे दर्दके साथ मूर्द्धा-स्थानमें भार मालूम होना—जेल्स ; कनपटीमें दर्द और जलनके साथ मूर्द्धा-देशमें बहुत अधिक भार मालूम होना—फ़ेलैन ; जिनको ऋतुस्राव होना बन्द हो गया है, उनके मूर्द्धा-स्थानमें दर्द—लैके ; दबानेपर आराम मालूम होना—मिनियैन) ; वयःसन्धिके समयका (Clemacteric) सर-दर्द (ग्लोन, लैके) ; धूपमें रहनेकी वजहसे, भरापन और सङ्कोचन मालूम होनेके साथ या आर्त्तवके विकारके साथ (मूर्द्धा-देशमें मानो कोई भारी चीज़ दबायी हुई है—ऐलो, कैन-सैट, कैलि-बाई)। स्नायुशूल (Neuralgia)—अधिक रक्त सञ्चय हो जानेके कारण कभी-कभी उत्पन्न हो जाता है ; दाहिनी ओर धीमा, टपकका दर्द ; मध्याह्नमें भोजनमें देर होनेसे ही सरमें दर्द पैदा हो जाता है (आर्स, लैके, लाई ; सवेरेके भोजनके पहले—ब्यूफो) ; ऐसा मालूम होता है कि चिमटेसे कसकर माथा पकड़े हुए है (साइक्यूटा ; लोरो ; मैग-सल्फ ; प्लैट, पल्स, स्टैन, सल्फ)। सर-दर्दके रोगमें ऐसा मालूम होता है, मानो माथेकी शिरायें फूली हुई हैं ; चेहरेका स्नायुशूल (Prosopalgia), दाहिने पार्श्वका (बेल, कैलमिया ; बायें

पार्श्वका—स्पाइजि); पुराना, सामान्य परिश्रमसे ही बढ़ जाता है, स्थिर होकर सोनेपर ऐसा मालूम होता है, कि सहन हो जायगा। सुरापान, संगीत-ध्वनि, चमकीली रोशनी या भोजनमें विलम्ब होनेपर सरमें दर्द पैदा हो जाता है या बढ़ जाया करता है; रोज़ एक ही समय पैदा हो जाया करता है (सीड्रन); तकलीफ़से रोगी चिल्ला उठता है; कानके छेदमें टपकका दर्द मालूम होता है, कानमें ऐसा शब्द होता है, मानो नदीका सोता बह रहा है (ऐष्टोर, कक्यु, पेट्रोल, पल्स,), पसीना गिरनेकी वजहसे कानमें दर्द।

नाक।—बहुत ज्यादा खूनका स्राव, तुरन्त ही रुक जाता है। सर्दी, पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव; रातमें रोगी मुँह फाड़कर साँस फेंकता है। श्लेष्मा कषाय (कसैला) जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड़ जाती है, रन्ध्रका मुँह जखमसे भर जाता है।

गलेके भीतर।—गलनलीका संकोचन। जीभ सूखी, मानो जल गई है (पल्स, रियुमेक्स, सेङ्गियु), जबतक बहुत-सा पानी नहीं पी लेता, तबतक खायी हुई चीज़ गलेके नीचे नहीं उतरती। हृत्शूलकी बीमारीमें गलेका भीतरी भाग संकुचित होकर श्वास-रोध होनेके लक्षण पैदा हो जाते हैं और गर्दनकी धमनियोंमें टपकका दर्द हुआ करता है।

पाकाशय।—दृढ़ आवद्धभाव (कसावट) पैदा करनेवाला, टपक और भार मालूम होना। बहुत-सा खून कै करना। पाकाशय और आमाशयमें शूल अर्थात् ऊपरी पेट और तलपेटमें दर्द (Gastrio-enteritis)। मुँहका स्वाद खट्टा।

मल।—मलद्वारमें बहुत भार मालूम होना (सिपि) और खुजलाहट, मलद्वारसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव (कैल्के, कैसकेरिला, हैमा), पर वह जल्दी ही रुक जाता है; कड़ी, काली आभा लिये मल (गांठ-गांठ निकलता हो तो—ओपियम, प्लम्ब)। अर्शका मसा फूला और दर्द-भरा।

पेशाब।—मूत्राशय-ग्रीवाका संकोचन (क्लिमेट, पेट्रोल) की वजहसे मूत्ररोध (बार्बे, कैम्फि, पल्स, सार्सा, सिगी, प्रूसस)। पेशाबका बहुत अधिक वेग, पर पेशाब निकलता नहीं है। जलनके साथ बूंद-बूंद पेशाब निकलता है। मूत्रस्थलीसे रक्त-स्राव, मूत्रस्थलीके भीतरसे जमे हुए छोटे-छोटे खूनके टुकड़े निकलते हैं। पेशाबका रङ्ग सूखी हुई घासके पानीकी तरह; पेशाबमें

लाल बालूकी तरह तली जमती है (लाइ, सिलि ; भूरे रङ्गकी बालूकी तरह—लैके) ; खून-मिला पेशाब (इपिका, मिलिफो, एसिड-नाई, सिकेलि)।

जननेन्द्रिय।—जरायु और डिम्बाधार-प्रदेश संकुचित मालूम होना (भार मालूम होना—जेल्सि)। रजःकृच्छ्रता बोधक—जरायु और डिम्बाधार-प्रदेशमें टपकका दर्द और भयङ्कर तकलीफ़ ; रोगिनी तकलीफ़से बेचैन रहती है (कैमो, कूप्रम, नक्स) और बेचैनीकी वजहसे रो पड़ती है। जरायु और उसकी बन्धनियोंमें दर्द, यह दर्द उरु देशतक फैल जाता है। नित्य सन्ध्याके समय पैदा हो जाता है। ऋतु आठ दिन पहले प्रकट होता है, पर लेटते ही स्राव बन्द हो जाता है (बोवि, कास्टि, लिलि-टाइग्रि ; सोनेपर स्राव बन्द होता है—क्रियो) ; ऋतुके समय कलेजेमें धड़कन पैदा हो जाती है। ऋतुस्राव गाढ़ा काला (काकु, मैग-कार्ब, कैमो, इग्ने, क्रोकस, ग्रैफ, नाइट्रस)।

श्वास-यंत्र।—वक्षस्थलमें दबाव मालूम होना, मानो छातीपर कोई भारी चीज़ दबाकर रखी हुई है (एम्ब्रा, आर्स, ब्राई, कैम्फो, कैमो, काक्यु, क्रोटन, डाल्का, ग्रैफ, इग्ने, क्रियो, लैके, लैक्टियुका, नक्स-मस, फास, रास, स्टैन, वायोला-ओडो), मानो कोई लोहेकी बन्धनी इसका फैलना और सिकुड़ना रोक रहा है (आर्स, कार्बो-वेज, लैके, फास, पल्स, स्टैनम)। ऐसा मालूम होता है, कि वक्षस्थलका निचला अंश एक डोरीसे कसकर बाँधा हुआ है (ऐगार, रैनन) ; मानो किसी मजबूत लोहेके हाथसे एक बार जोरसे दबाया जाता है और एक बार छूट जाता है, मानो कसकर बाँधा हुआ है—मानो सिकुड़ने-फैलनेकी जगह नहीं है, मानो हृत्पिण्ड जोरसे दबाया जाता है (आयोड ; मानो पर्यायक्रमसे मजबूत और दृढ़ हाथोंसे एक बार पकड़ा और फिर छोड़ दिया जाता है—लिलियम-टाई ; जागनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड सिकुड़ गया है और रोगी ओढ़ना दूर फेंक देता है—लैके ; टहलने या चलनेके समय हृत्पिण्ड संकुचित होता है या मानो दबाया जाता है—ऐसा ही मालूम होता है—आर्स। श्वास-कृच्छ्रता, कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी, चेहरेपर ठण्डा पसीना आ जाता है—ग्रैफ, नेट्र-म्यूर, पेरिस, स्टैफ) और रातके समय (आर्स), बाईं करवट सोनेपर (ऐङ्गस, बेराइ, ब्रोम, ग्रैफा, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पल्स, टैबेक ; सिर्फ़ खड़े होनेपर—ऐगार ; दाहिनी करवट सोनेपर—आर्जेण्ट-नाई, कैलि-नाई)। हृत्पिण्डमें बहुत दर्द, बायें हाथकी राहसे अंगुलीतक बहुत तेजीसे दौड़ पड़ता है। आक्षेपिक (Spasmodic)

खाँसी—शरीरको हिला देनेवाली ; खून-मिला कफ़ (इपिका)। थोड़ी देरतक ठहरनेवाली खाँसी, बहुत श्लेष्मा मिला कफ़। छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग।—बाँहकी सूजन, बाएँ हाथमें अधिक ; तलवेसे जांघतक सूजन (एपिस); बाएँ हाथका सुन्न हो जाना। ऊपरी अङ्गमें आरम्भ होकर सन्धिके भीतर वातके दर्दका आक्रमण हो जाता है ; हमेशा पैर हिलाता है।

निद्रा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें टपक-जैसा दर्द हो जाता है और इसी वजहसे नींद नहीं आती। रातमें नींद खुल जानेपर प्रलाप बकना आरम्भ कर देता है या विकार पैदा हो जाता है (ब्राई)। डरावने सपने देखना।

ज्वर।—पीठ और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे। शीत—कपड़ा भरपूर ओढ़ लेनेपर भी जाड़ा नहीं जाता ; नित्य बँधे समयपर—एक ही समय कम्प पैदा होता है (सिड्रन); रोज़ नियमित भावसे दिनके ११ बजे या रातके ११ बजे बोखार होता है (दिनके ११ बजे—नेट्र-मूर, नक्स, सिपि)। सविराम ज्वर—माथेमें रक्त ज्यादा सञ्चय हो जानेके कारण ; मुँहमें कभी-कभी उत्तापका आविर्भाव हो जाता है ; पेशाब रुकना—मूत्रस्थलीमें दर्द ; हृत्प्रदेशमें छुरी मारनेकी तरह तकलीफ़ और तेज़ वमन ; पसीना नहीं निकलता, धूपमें रहनेकी वजहसे ज्वरकी उत्पत्ति। शीतके बाद उत्तापका आविर्भाव—श्वासकृच्छ्रता, सरमें दर्द और प्यास ; आधी राततक होश न होना, इसके बाद साँस छोटी ; रोगी सोया नहीं रह सकता, इसके बाद बहुत अधिक पसीना और प्यास।

दर्द आदि।—प्रायः शरीरके सभी अंशोंमें दर्द, दर्द बहुत तेज़ और तेजीसे फैलनेवाला, उछलनेकी तरह, लगातार बिजलीकी तरह दर्द (चिलक मारनेकी तरह) एक स्थानसे दूसरी जगहतक फैलता है और अन्तमें रोगवाली जगहमें बहुत तेज़ दर्द मालूम होता है, मानो चिमटेसे कसकर कोई पकड़े हुए है ; इसी तरह बार-बार दर्द पैदा होना।

दोषघ्न।—ऐकोन, कैम्फ़, चायना, युपेटो।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐकोन, डिजि, जेल्सि, कैलि-कार्ब, लिलियम टाइग्रि, आयोडम, लेके और टेबेकम।

तुलनीय।—मानसिक लक्षणमें—डिजि, लेके ; मस्तकमें रक्तकी अधिकता—बेलेडो, ग्लोनो ; हृत्पिण्डकी बीमारी—ऐकोन, ऐक्टिया, ऐमिल-नाइट्रेट, क्रोटे, कैल्मि, लेके, नेजा, स्पाइजे ; रजःस्राव रातमें बन्द—कास्टिक ;

श्वेत-प्रदर—ऐमोन-मूरर ; सविराम ज्वरमें—आर्स, कैल्के, युपि, नेट्रम ; सन्धि-शोथमें—डिजिटे, कैलमिया ; अनिद्रामें—सल्फर ; स्नायु-शूलमें—आर्स ; रक्त-स्रावमें—डायाफ्रेममें दर्द—रैनान।

वृद्धि।—ऊँचे चढ़नेमें, रातमें चलनेमें, बाईं करवट सोनेपर बढ़ना।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम ; ३० शततमिक शक्तिसे उत्तम काम होता है।

परीक्षक।—डा० रूबिनो और उनकी स्त्री।

कैडमियम ब्रोमेटम

(CADMIUM BROMATAM)

परिचय।—कैडमियम—ब्रोमाइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल दोनों ही तरहसे तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कैडमियम सल्फके साथ इसके बहुतसे लक्षणोंका सादृश्य है। मुख-विवर, गलनली और पाकाशयमें जलन और दर्द तथा वमनके लक्षणमें यह सुन्दर कार्य करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैडमियम सल्फ्युरिकम

(CADMIUM SULPHURICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार किया जाता है। कैडमियम ब्रोमेटम, तरल और विचूर्ण।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—संन्यास ; स्फोटक ; फोड़ा ; बच्चोंकी विसूचिका ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; मुँहकी पेशीका पक्षाघात ; अजीर्ण ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; नाकका अर्बुद ; नकसीर फूटना।

उपयोगिता और आभास।—पाकाशयपर इसकी प्रधान क्रिया होती है और इसके द्वारा पाकाशयके विकारके साथ बहुत तरहकी सुस्त करनेवाली बीमारियाँ पैदा हो जाया करती हैं। जैसे—पीतज्वर, विसूचिका वगैरह, जिन सब रोगोंमें रोगी बहुत सुस्त हो जाते हैं और बार-बार दस्त और कै आनेकी वजहसे उनमें घोर अवसाद पैदा होकर मृत्यु-मुखमें जा पहुँचते हैं। काली चीजोंकी कै होती है, बहुत ठण्ड मालूम होती है, पाकाशय और तलपेट छुआ नहीं जाता और चेहरेपर ठण्डा पसीना होने लगता है—ये कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। गर्भावस्थामें अजीर्ण रोग आदि इसके अन्यतम क्रिया-फल हैं। रातमें सोनेपर शरीरमें बहुत खुजली—छूने या शीत लगनेके कारण खुजली पैदा हो जाती है; खुजलाहटका बन्द होना या महासुखका उदय होता है।

लक्षणावली

मन।—किसीके पास आनेपर डर मालूम होता है (आर्नि, सिना, लैके) ; बेहोशी।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; घर और खाट मानो घूम रही है (आर्नि, बेल, साइकूट, नक्स ; मानो शय्याके साथ नीचेकी ओर जा रहा है—ब्राई) ; वमनके कुछ ही पहले ऐसा मालम होता है, मानो माथेमें कोई छोटी हथौड़ीसे मार रहा है (क्लिमे, फेरम-ऐसेट, इग्ने, नेट्र-म्यूर, फास, पल्स, सिलि)। बेचैनी, हिमाङ्ग, नाकसे खूनका स्राव होना, कण्ठनलीका सिकुड़ना, प्यास, मिचली और वमनके साथ सरमें दर्द, अधिकांश स्थानोंमें नींद खुलनेके बाद, निर्मल हवा लगनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर या धूप लगनेपर ये लक्षण पैदा होते मालूम हुआ करते हैं।

नाक।—पीनस या पूतिनस्य (Ozæna)—(हाइड्रास, आरम) ; नासा-मूल मानो सट जाता है, नासारन्ध्र (नाकका छेद) मानो बन्द हो जाता है ; नाककी हड्डीमें जखम (अरम)। नासा-व्रण या फोड़ा। नासा-रोग (Polypus), नासा-मूल मानो सटा रहता है—चिपक जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो नाक खिंची हुई है और इसके साथ ही बदबूदार स्राव निकलता है (सोरिनम)।

आँख।—एक आँखकी पुतली फैली हुई और दूसरी आँखकी पुतली सिकुड़ी हुई। रतौंधी (बेल, हेलिबोरस-नाई)। आँखका सफेद आवरण मैला होना (Opacity of the cornea—युफ्रे, मैग-कार्ब, कैल्के, कैन-सेट, सिलि)। आँखके चारों ओर नीलापन।

कान।—सुनने और देखनेमें भ्रम पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। सभी शब्द माथेमें प्रतिध्वनित होते हैं (फास, कास्टि, ऐसिड-फास ; सभी शब्दोंसे ऐसा मालूम होता है मानो सारी देहको भेदकर प्रवेश कर रहा है—थेरिडियन)। कानमें करकराहट होती है ("कर" से शब्द होता है—मैङ्ग, मस्क, सिलि)।

मुखमण्डल।—चेहरेमें ऐसा मालम होता है, मानो कुछ सड़सड़ा रहा है (ऐग्नस, ऐम्ब्रा, ग्रैनेटम, पियोनि, रास, सैबाडि) ; मुखकी बिगड़ी हुई भङ्गी (ऐङ्गस, कैम्फो, कूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लौरो, ओपि, प्लैट, स्ट्रैम) ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना। मुँहकी पेशियोंका पक्षाघात (ऐको, कास्टि, कैलि-म्यूर ; मकड़ेका जाल लगा हुआ है ऐसा मालूम होता है, इसके साथ ही—ग्रैफ ; बायीं ओर अधिक,—ठण्डी हवा लगनेकी वजहसे दोनों ओठोंका फूलना।

मुख-विवर।—अन्ननलीका संकोचन (बैप्टी, कैक्टस) की वजहसे किसी पदार्थके निगलनेमें दर्द मालूम होना (बेल, एपिस, आयोड, मर्क, आयोड-फ्लेव, फाइटो ; जलीय पदार्थके अलावा और कुछ भी निगल नहीं सकता—कैप्सि, वैराई, सिलि ; जलीय (पतले) पदार्थ निगलनेमें तकलीफ़ होती है—बेल ; कड़ी चीज़ निगलनेमें आराम मालूम होता है—इग्ने)। नमकीन हवा निकलना और डकार। मुँहमें बदबू और उससे लसदार गोंदकी तरह पदार्थ निकलता है। मुँहका स्वाद नमकीन।

पाकाशय।—ऊपरी प्रदेशमें दबाव डालनेपर खाल उधड़ जानेकी तरह या स्पर्श-असहनीयता मालूम होती है ; जलन और कतरनेकी तरह दर्द, बहुत ओकाई आती है, श्वासरोध होनेकी तैयारी हो जाती है, कै हुई चीज़ काली होती है (आर्स, नक्स, फास, वेरेट) या पीले रङ्गका (आर्स, कोलचि, डालका, आयोड) दोपहरके समय बदबूदार डकार आती है (कार्बो-वेज)। वमनके समय चेहरेपर ठण्डा पसीना होता है और ऐसा मालम होता है, मानो

तलपेट मरोड़ खा रहा है (फास, जिङ्कम)। दस्त-कै आदि पाकाशयके लक्षण गर्भावस्थामें बढ़ जाते हैं। अन्त्राशयसे काले रङ्गका बदबूदार जमा हुआ खून निकलता है। माँड़की तरह पीली आभा लिये हरे रङ्गका मल। पेट फूला हुआ और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता अर्थात् पेटपर हाथ रखना सहा नहीं जाता। मल खूनभरा, काला और बदबूदार ; इसके साथ ही पेशाब रुक जाना।

हृत्पिण्ड आदि।—हृत्पिण्डके संकोचनके साथ कलेजा धड़कना (कैक्ट) ; बेहोशी, चञ्चलता, चेहरा लाल, पाकाशयमें दर्द या पित्त वमनके साथ खाँसी।

शीत-उत्ताप।—अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं (वेरेट, कैम्फो ; इतना जल्दी मानो रक्त जमकर मर जायगा—हेलीड और बहुत जाड़ा मालूम होना, आगके पास बैठनेपर भी जाड़ा नहीं घटता।

त्वचा।—त्वचा नीली या पीले रंगकी, उजली रूसी भरी और फटी-फटी। हाथ-पैरमें लाल दाग पड़ जाते हैं। छातीमें भूरे रङ्गका दाग। ललाट, नाकके ऊपर और मुँहके चारों ओर व्रण आदि उद्भेद पैदा हो जाते हैं। त्वचा बहुत खुजलानेवाली ; खुजलानेके बाद आराम मालूम होता है और खुजलानेपर घट जाता है। बगलकी गाँठें पक जाती हैं (युगलैन्स-रिजि)।

निद्रा।—आँख खोलने अर्थात् देखते ही नींद आ जाती है। निद्रावस्थामें भी आवाज़ होती है और हँसता है। नींद आते ही साँस रुकनेकी तैयारी हो जाती है (क्लोरम, जेलस, ग्रिण्डेलिया, लैक-कैन, लैके, ओपि) ; हाँफते-हाँफते जाग उठता है ; फिर दुबारा सोनेसे डरता है। बहुत दिनोंतक गड़बड़ी भरी नींद।

वृद्धि।—चलनेके समय, भारी चीज़ उठाने और निद्रित अवस्थामें या नींदके बाद (लैके, क्लोरम, स्टाफि)।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—कैडमियम-ब्रोमेटम—पाकाशयमें दर्द और जलनके साथ वमन। कैडमियम आयोडेटम—सेलिका या रस-ग्रन्थि, सबोंकी सूजन। सब सन्धियोंका पुराना प्रदाह और रोगवाली सन्धियोंमें श्लेष्मा-भरी गुटिकाएँ (Nodes) पैदा हो जाती हैं। श्लेष्मा-प्रधान धातु। डा० क्लार्कके मतसे—जिङ्कम (जिङ्कमकी क्रिया पहले मस्तिष्कमें ; पर कैडमियमकी पाकाशयपर होती है) ; छातीकी संकोचनमें कैलि-क्लोर ; वमनमें आर्सेनिक ; काला

वमन, दुर्बलता, आर्स, लेकेसिस ; मिचलीमें इपिका, टैबेकम ; मल—ऐलोज, पोडो ; नींदके समय श्वास रुकना—कार्बो, ओपियम, लेकेसिस।

शक्ति।—३रे शततमिकसे ३० शततमिकतक।

काइङ्का

(CAINCA)

दूसरा नाम।—ब्रेजिल देशका एक तरहका उद्भिद।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखे मूलकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— खाँसी, शोथ, क्लान्ति, मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारी, आँखोंका प्रदाह, बहुमूत्र, प्लीहामें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—पसीना न होना या सूखी त्वचाके साथ शरीरमें शोथ, उदरी, भ्रमणके अन्तमें बहुमूत्र और लालामेह रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें तेज़ दर्द, पिछले भागमें अधिक (ऐनाक, बैराई, ग्रैफ, लेके, नक्स, रास, सिपि) ; पढ़ना आदि मानसिक परिश्रम बिलकुल सहन नहीं होता (आर्स; आरम, लेके, नक्स)। दाहिनी कनपटीमें (Temple) बेधनेकी तरह दर्द।

आँख।—आँखमें जलन। खुजलानेके साथ पलकोंका फूलना। तीसरे पहर सोनेके बाद कोई चीज़ साफ़ नहीं दिखाई देती, मानो आँखोंके सामने कुहरा (Mist) छाया हुआ है। ऐसा मालूम होता है (ऐगार, आर्ज-नाई, बेल, कास्टि, फार्मि, जेल, ग्लोन, ग्रैफ, पेट्रोल, रैनान-बल्बो)।

कान।—कानमें भुन-भुन आवाज़, मानो कानके भीतर बहुतसे कीड़े उड़ रहे हैं (ऐमो-कै, कास्टि, ग्रैफ, नेट्र-स्यू, पलस, सिलि)।

नाक।—भयानक सर्दी, बहुत पतले श्लेष्माका स्राव होता है, इस स्रावसे नासा-रन्ध्रके मुँहमें जखम पैदा हो जाता है (ऐलियम-सिपा, आर्स-आयोड)। मुँहसे बहुत बदबू निकलती है।

गलेके भीतर।—गलेमें जलन मालूम होती है, मानो मिर्चकी झाल लगी हुई है। रुखड़ापन दूर होनेकी आशामें बार-बार गला साफ़ करता है, अन्ननलीमें ठण्डक मालूम होना ; बार-बार स्वाद-रहित डकार। उदरके ऊपरी भागमें सर्दी मालूम होना (कैम्फो, सिङ्को)।

अन्त्राशय।—उदरमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना ; ओकाई आनेके साथ पेट भरा मालूम होना (ऐण्टि-क्रू, ऐसा, जेण्ट-लुट, ग्रैफ, ऐसिड-म्यू, स्टैन), तलपेटमें गड़गड़ाहट हुआ करती है (कैलो, अरम, साइक्लेम, सल्फ़, ऐसिड-सल्फ)। छूनेपर या पीछेकी ओर झुक पड़नेपर तलपेटमें दर्द मालूम होता है (बेल, एपिस, मर्क, नक्स, पल्स, सल्फ़)। प्लोहामें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

मल।—बार-बार वेग, पर सिर्फ वायु निकला करता है। मलद्वारमें जलन, सन्ध्याके बाद सोनेके लिये लेटनेपर मलद्वारमें बहुत खुजली पैदा हो जाती है और रोगीको बार-बार वाध्य होकर खुजलाना पड़ता है।

पेशाब।—मूत्रनलीके सामनेवाले प्रदेशमें जलनके साथ मूत्रकृच्छ्रता (कैन, कैन्थ, लैके, कैप्स) ; बार-बार पेशाबका वेग (ऐपो-साइन, इक्विसेट), देश-भ्रमणके समय बहुमूत्र (स्क्वियुला ; रातमें वृद्धि—ऐसिड-फास, कास्टि ; ज्यादाकर म्यूरेक्स, युरेन-नाई, रातमें बहुत ज्यादा, पर बहुत देरतक बैठे रहनेपर कहीं पेशाब होता है—कैलि-कार्ब ; पानी पीते ही पेशाबका वेग—कार्लस-बैड ; कब्जियतके साथ बार-बार वेग—नक्स)। पेशाब बहुत गर्म (कैन्थ), उसमें तेज़ गन्ध, पेशाब करनेके समय तकलीफ़, पेशाब गर्म आगकी तरह, पेशाबके समय लिङ्गमें कड़ापन और भीतर भयानक जलन (ऐपोसाइन, सार्सा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—सन्ध्याके समय अण्डकोष और रेतःरज्जुमें बार-बार खींचनकी तरह दर्द, इसके साथ ही मुष्कत्वककी शिथिलता और ऐसा मालूम होता है मानो वह बहुत फैल गया है, इसके बाद दर्द—तेज़ गन्ध-वाला पेशाब निकलनेके समय दर्दका बढ़ना। रात्रिमें लिङ्गमें उत्तेजना होना

और बेचैनीके साथ भयंकर कामोत्तेजक सपने देखना और सवेरे नींद खुलनेके समय रेतःस्खलन हो जाता है।

पीठ।—मसानेकी जगहपर दर्द, पीछेकी ओर टेढ़े होकर सोनेपर आराम मालूम होता है (डायस्को, पैरीरा-ब्रा, ओसिमम-कैन)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-ऐसेट, ऐसिड-फास, ऐपोसाइन, ब्रायोनिया।

दोषघ्न।—कोलचि, रस-टक्स, विरेट्रम।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ६ठा दशमिकतक।

कैजुपुटम

(CAJUPUTUM)

दूसरा नाम।—तेजपत्तेका तेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस तेलमें अलकोहल मिलाकर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—बहरापन; रातके समयका अतिसार; शोथ; मृगी; छोटी सन्धियोंका वात; सरका दर्द; छातीमें जलन; हिचकी; मूर्च्छावायु; आर्त्तवमें विकार; पक्षाघात; वात; जीभकी बीमारियाँ; दाँतका दर्द; सरमें चक्कर आना।

उपयोगिता और आभास।—बहुत ज्यादा पसीना बहना, जगह बदलनेवाला सन्धिवात या वातरक्त (Gout), स्नायवीय विकारकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता और प्रदाह न पैदा करनेवाली स्नायविक बीमारियाँ, इसके मुख्य क्रियास्थल हैं। पेट फूलना और जीभकी सूजन और अङ्ग-प्रत्यङ्गका बढ़ना मालूम होना वगैरह भी इसके लक्षण हैं। नीचे लिखे कई लक्षण भी इसके निर्णायक हैं :—सारे शरीरका बढ़ना मालूम होना अर्थात् ऐसा मालूम होता है कि माथा एक टोकरीके बराबर बढ़ गया है, मानो अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग इकट्ठे नहीं कर सकता (बैप्टी), रोगीको ऐसा ही मालम होता है। वस्त्र आदि बहुत पासमें रहनेपर भी लेनेमें देर होती है। रोगीको ऐसा विश्वास

होता है, मानो उसे कोई विष दे रहा है। मानो उसके दोनों हाथ शरीरसे बँध गये हैं और वे भारी तथा अकर्मण्य मालूम होते हैं ; सारे शरीरमें स्पर्शका अनुभव नहीं होता। छोटी माताकी तरह सारे शरीरमें दाने निकल आते हैं, उनमें बहुत खुजली होती है। जरायु आदि स्त्री-जननेन्द्रियके विकारकी प्रतिक्षिप्त (Reflected) स्नायविक बीमारियाँ (ऐक्टिया)। मूर्च्छावायु (हिस्टीरिया—Hysteria) रोग-ग्रस्तकी तरह कभी श्वास रुकने जैसा मालम होता है और स्नायविक पेट फूलना। मुख-शूल और कर्ण-शूल। कर्णपुटका लाल हो जाना ; दोनों नासा-पुट एकाएक लाल हो जाते हैं और नाक फूली हुई मालूम होती है। बोलने-चालने, हँसने, शरीरके सञ्चालन-मात्रसे जोरकी हिचकी आने लगना। इसके लक्षण एकाएक पैदा होते हैं और एकाएक गायब हो जाते हैं—दिनके ५ बजनेके समय पैदा होकर भोजनके बाद एकाएक गायब हो जाते हैं, धम्रपानसे जी मिचलाने लगना (ऐगार, स्टैल्ड)।

लक्षणावली

मन।—वह ऐसा नहीं चाहता कि कोई उससे बातें करे (ऐम्ब्र, आयोड, सिलि)। औरतोंके बीचमें रहनेसे उसे आनन्द मिलता है। बहुत उदास, मानो रोना ही चाहता है। रातके दस बजे उसे ऐसा मालूम होता है, मानो प्रत्यङ्ग आदि उससे अलग हुए जाते है, उन्हें इकट्ठा नहीं कर सकता। वस्त्र आदि पासमें रहनेपर भी उन्हें लेनेमें देर होती है। निर्मल वायुके सेवनसे घटना।

मस्तक।—ललाट-देशमें सरमें दर्द (ऐकोन, लेप्टेन), विशेषकर माथा झुकानेपर आँखके गोलेमें दर्द बढ़ जाता है (एक आँखसे दूसरी आँखतक दर्द—दबानेसे आराम मिलता है और माथा झुकानेपर बढ़ जाता है—ब्राई)। दिनके ५ बजनेके समय सरमें बहुत दर्द और उसके साथ ही दोनों जबड़े अकड़ जाना। रोगी समझता है कि उसका माथा एक टोकड़ीके बराबर हो गया है।

आँख।—दोनों आँखोंमें भार मालम होना। दोनों आँखोंकी ऊपरी पलकें जूतेके चमड़ेकी तरह भारी मालूम होती हैं तथा मोटी मालूम होती हैं, आधी रातके बाद घरसे बाहर निकलनेपर कुछ दिखाई नहीं देता,—देखनेकी आशामें आँखें मला करता है (क्रोकस)।

मुखमण्डल आदि।—दोनों कर्णपुट लाल और दोनों नासापुट एकाएक लाल आभा हो उठते हैं ; मुखमण्डलमें जलन मालूम होना। लगातार ऐसा मालूम होता है, कि कण्ठनलीमें संकोचनकी वजहसे श्वासरोध होनेकी तैयारी हो रही है। अन्ननलीका एकाएक संकोचन। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभने फूलकर समूचा मुख-विवर छेंक लिया है (जीभ फूलनेकी वजहसे श्वास-रोध होनेका भय—क्लोरो-हाइड्रेट या क्लोरेलम) ; सूजनकी वजहसे जीभ बाहर निकल पड़ती है—स्ट्रैम ; जीभकी सूजनकी वजहसे बाहर नहीं निकाल सकता—मर्क-कोर ; फूली हुई जीभ बाहर रहती है—इनैन्थि, क्रोक ; जीभकी सूजनकी वजहसे बोलनेमें तकलीफ़ होती है—बैप्ट)। जीभ सफेद लेप चढ़ी और रूखी मालूम होती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो जल गई है और मानो उसकी छाल उधड़ जायगी (जिह्वा-पार्श्वमें दग्ध होनेकी तरह मालूम होना—पल्स, सिपि ; मानो सफेद लेप चढ़ी और जली—साइमेक्स ; जीभकी खाल या चमड़ा निकल जाता है—रैनान, स्क्लिरिटस ; जीभका सफेद आवरण छालकी तरह उधड़ जाता है—टैरेक्स)।

पाकाशय।—भूख-प्यासका न रहना। मिचली और बोलने-चालने, हँसने, खाने, शरीर हिलाने वगेरह सामान्य कारणसे ही हिचकी आने लगती है (ऐसिड-हाई, ऐसिड-सल्फ़, साइक्लैमेन) ; पान खाने या धूम्रपान करने बाद—इग्ने ; उदरकी पेशीके सिकुड़ने, फैलने और वायु छूटनेके साथ—साइकूट ; आक्षेपिक—इथ्यूजा ; मलेरिया आदिकी वजहसे बीमारीमें हिचकी—नेट्र-म्यूर)।

अन्त्राशय।—पेट फूलनेके साथ आँतोंका शूल (कैमो, सिना ; ऋतुके समय—काक्कु-इन ; रोगी और काले केशवाले मनुष्योंकी कब्जियतके साथ—नक्स) ; पेट बहुत फूल जाता है (ऐसा, टेरिब), बिल्लीके पेशाबकी गन्धकी तरह पेशाबमें गन्ध (वायोला-ट्राई ; घोड़ेके पेशाबकी तरह गन्धकी—ऐबेन, ऐसिड-नाई ; वायोलेट फूलकी तरह गन्धयुक्त—कोपिबा, टेरिब, नक्स-मस ; मांसकी गन्ध—युरेन-नाई)। आक्षेपिक (Spasmodic) विसूचिका, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें ऐंठन (कूप्रम, सिकेलि)। उदरामय—पानीकी तरह और पीला मल ; रातमें बढ़ जाता है (आर्स, सिङ्को, नक्स-मस, सोराइन, पल्स)।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गमें कड़ापन और बहुत रमणेच्छा (स्त्री आदिका प्यार और आलिङ्गन करनेपर भी लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता—कैलेड, सेलिन)।

वक्षस्थल ।—एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व तक दर्द और बाएँ कन्धेमें दर्द मालम होना; श्वास-कृच्छ्रता; बायाँ हाथ ऐसा मालूम होता है, मानो सन्धि-भ्रष्ट हो गया है अर्थात् जोड़से हट गया है (निकोल)। बायाँ हाथ उठानेमें बहुत दर्द होता है; छोटी सन्धियोंका वात—एकाएक रोगवाली जगह छोड़कर शरीरके अन्तर्तम प्रदेशमें दूसरे रोगके रूपमें पैदा हो जाता है (क्युप्रम)।

त्वचा ।—समूचे शरीरमें, बाँहमें और पैरके ऊपरी अंशमें छोटी माताकी तरह एक प्रकारके दाने निकलते हैं, उनमें बहुत खुजली होती है, खुजलाने बाद बढ़ना।

शीतोत्तापादि ।—बहुत जाड़ा मालम होता है और समूचे शरीरमें बहुत पसीना निकलता है (फास)।

वृद्धि ।—सवेरे ५ बजे और रातमें।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—बोविस्टा (सूजन मालूम होना); प्लैण्टेगो (कान और दन्तमूल); कोलचि (वात)। एकोन और बेलेडो (पसीना आदि)। युकैलिप्टस इत्यादि। सदृश—ऐसा, बोवि, टेरेबिन्थ, पल्स, नक्स-मस, इग्ने, क्यूप्रम,।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ६ठे शततमिक क्रमतक।

कैलेडियम सेग्विनम

(CALADIUM SEGUINUM)

दूसरा नाम ।—अरम सेग्विनम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा; शोथ; प्रमेह; ध्वजभङ्ग; उत्तेजना; कामोन्माद; योनिमें खुजली; सान्निपातिक अवस्था; कृमिका लक्षण इत्यादि।

उपयोगिता ।—श्रवणेन्द्रियके सभी स्नायु बहुत उत्तेजित हो जाते हैं—आवाज़से ही रोगी चौंक उठता है और उसकी नींद खुल जाती है (ऐसे, नक्स, टेरेण्टियु), इसके सेवनसे तम्बाकूका धुआँ पीनेकी इच्छा घट जाती है।

उपयोगिता और आभास।—स्त्री-जननेन्द्रियपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। यह क्लीवता उत्पन्न करता है और योनिमें इस ढंगकी खुजली और कामकी उत्तेजना पैदा करता है कि अस्वाभाविक उपायसे उसकी परितृप्ति करनेकी प्रबल इच्छा पैदा हो जाती है। रोगी एकदम हिलना नहीं चाहता; स्थिर होकर सोया रहता है, पर बाईं करवट सोनेसे ही उसकी यन्त्रणाएँ बढ़ जाती हैं; बार-बार डकार आती है; पर डकारमें बहुत थोड़ा वायु निकलता है—पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो सूखे और नीरस पदार्थसे भरी हुई है। नपुंसकता; रोगीका मन बहुत ही दुःखित रहा करता है; रमणकी इच्छा बहुत अधिक रहती है और कामोत्तेजना मनमें तो होती है, पर शिश्न शिथिल रहता है, स्त्री आदिका आलिङ्गन या प्यार करनेपर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता, प्यार करनेके समय उत्तेजना (कैल्के, सेलिन) या वीर्यस्खलन नहीं होता। योनिमें अकीत (ऐम्ब्रा, रास, सल्फ़, ग्रैफ), अस्वाभाविक उपायोंसे काम-परितृप्त केरनेकी इच्छा होती है (ओरिगेनम, जिङ्कम), शामके वक्त बोखार आनेपर रोगी सो जाता है और बोखार छोड़नेपर नींद खुल जाती है। पसीनेकी गन्धसे मक्खियाँ लगने लगती हैं, मच्छड़ आदि कीड़े काटनेपर जलन और खुजली आदि इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—रोगी दवा नहीं खाना चाहता, जबर्दस्ती खिलाये बिना दवा नहीं निगलता, अपने स्वास्थ्यकी उसे बहुत चिन्ता और यत्न रहता है। डरभरा चित्त अर्थात् उसके मनमें हमेशा भय समाया रहता है; कामोद्दीपक चिन्ता; श्रवण-शक्ति बहुत प्रखर; सामान्य शब्दसे भी चौंक उठता है और उसकी नींद खुल जाती हैं (आर्स, नक्स, टैरेण्टियु)। जरा भी हिलना नहीं चाहता; हिलनेसे ही उसे डर मालूम होता है (ब्राई)।

मुखमण्डल।—मानो जगह-जगहपर मकड़ीका जाल लगा हुआ है (बेराई बोरेक्स, ग्रैफा), मुखमण्डल और माथेपर मीठे स्वादका पसीना निकलता है; इसी वजहसे मक्खियाँ लगने लगती हैं।

नाक।—नाककी जड़में एकाएक जलन आरम्भ हो जाती है, साथ ही लगातार छींक आती रहती है मानो छेदमें मिर्चेंका चूर लग गया है, पानीकी तरह सर्दीका स्राव और बार-बार हलकी छींक।

पाकाशय आदि।—दाँतमें दर्द, मानो कोई दाँतकी जड़में गड्ढा खोद रहा है, कानमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। जीभके बीचवाले स्थानपर गाढ़े भूरे रङ्गकी रेखा दिखाई देती है, बार-बार डकार आती है, मानो पाकाशय सूखे और नीरस पदार्थसे भर रहा है। पाकाशयमें ऐसा अनुभव होना मानो कुछ फड़फड़ कर रहा है और इसी वजहसे मिचली। श्वास-प्रश्वास दीर्घ, तम्बाकूके धूम्रपानसे चिढ़ पैदा कर देता है (प्लैण्टेगो, सिङ्कोना)।

पुं-जननेन्द्रिय।—बहुत उदास-भावके साथ नपुंसकता या ध्वजभङ्ग (ब्यूफोसे तुलनीय), लिङ्गेन्द्रिय बहुत शिथिल, पर रमणेच्छा बहुत प्रबल रहती है (लाई, सेलिन)। आलिङ्गन या प्यार करनेपर भी लिङ्गोद्रेक नहीं होता ; रमणके समय वीर्य एकदम नहीं निकलता (कैल्के, सेलिन)। शिश्न बड़ा और पसीनेसे भरा मालूम होता है। अर्द्ध-निद्रित अवस्थामें लिङ्गमें कड़ापन आ जाता है, पर जागते ही कड़ापन दूर हो जाता है। जननेन्द्रियमें खुजलाहट।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनि-देशमें पामा (Pruritus Valvae), गर्भावस्थामें योनि-देशमें ऐसी कामोद्दीपक खुजली पैदा होती है, कि रोगिनी अस्वाभाविक उपायोंसे वह खुजलाहट मिटाना चाहती है (ओरिगैन, जिङ्कम)। योनिसे श्लेष्माका स्राव। आधी रातके बाद एकाएक जरायु चिपक जाते है।

श्वास-यंत्र।—वक्षोस्थिके बाईं ओर वक्षःस्थलमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; चिन्ताके साथ दाहिनी ओर भी दर्द मालूम होता है, बाईं करवट सोनेसे बढ़ना (मार्क), दाहिनी करवट सोनेपर घटना। स्वर-नलीके संकोचनकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता, सर्दीकी वजहसे दमा रोग। स्वर-नालीके ऊपरी अंशसे खाँसी पैदा हो जाती है, कफ़ नहीं निकलता और बोलनेपर बढ़ जाता है (बेराई, नैट्र-म्यू, स्टैन, लैके, फास)।

त्वचा।—पसीनेकी मीठी गन्धके कारण मक्खी लगती है। मच्छड़ आदि कीड़े काटनेकी वजहसे बहुत जलन (ऐन्थ्र) और खुजली। छातीपर आमवात या दमा पर्यायक्रमसे प्रकट होते हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है (ऐगार) ; निम्न बाँहके भीतरकी ओर बहुत खुजलाहट और जलन करनेवाली लाल रङ्गकी फुन्सियाँ (red pimples) निकल आती हैं, वक्षस्थलपर अत्यन्त दबाव मालूम होता है और

इसके साथ ही वायुनलीके भीतर श्लेष्मा अधिक हो जानेके कारण श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है।

निद्रा।—शामके समय ज्वर आनेपर रोगी सो जाता है और बोखार छूटनेपर नींद खुल जाती है। बहुत औंघाई। निद्रावस्थामें रोगी गों-गों करता है। सच्ची घटनाकी तरह सपने देखता है (बेल, सिना; कैमो, बोरेक्स)। जरा-सी आवाज़से ही नींद खुल जाती है, बहुत दिन हुए जिन घटनाओंको रोगी भूल गया है, उसे स्वप्नमें वे सब ही याद आती हैं।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, बाईं करवट सोने और उत्ताप लग जानेपर।

घटना।—जरा भी नींद लगनेपर, पसीना निकलनेपर, ठण्डे पानीसे धोनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर और स्थिर रहनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—अनुपूरक—ऐसिड-नाइट्रिक। मर्क्युरियसका दोषघ्न है। इसके दोषघ्न हैं—कैम्फि, इग्नेशिया, कार्बो-वेज, हायोसा, जिजियाई, मार्क इत्यादि।

तुलनीय।—ऐकोन, ब्रायो, कास्टिक, कार्बो, कैम्फि, सिना (कृमि); जेल्स (इन्द्रियोंका परिचालन); हायोसा, इग्ने, लाइको, मार्क, नाइट्रिक-सल्फ, जिजिया, नक्स-वोम, फास (कामोन्माद); पल्स, सिपि।

शक्ति।—३री दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

कैल्केरिया ऐसेटिका

(CALCAREA ACETICA)

दूसरा नाम।—बिना साफ़ किया हुआ कैलसियम ऐसिटेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कैल्केरिया कार्बोनिकाकी तरह यह भी एक अपरिशुद्ध चना (Lime) से तैयार होता है। महात्मा हैनिमैनने इसकी स्वस्थ शरीरपर परीक्षा की है। इसका तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—(डा० क्लार्कका मत) मलद्वारमें खुजली; उपझिल्ली-मिला श्वासनालीका प्रदाह; कर्कट या कैन्सर रोगमें दर्द; बाधक; सर-दर्द और सरमें चक्कर आना।

उपयोगिता और आभास।—इसकी क्रिया प्रायः कैल्केरिया आष्ट्रियमकी तरह है; इसका प्रधान क्रिया फल है, नकली झिल्लीका पैदा हो जाना—श्लैष्मिक-झिल्लीसे जरायु आदिके बीचमें नकली झिल्लीका पैदा हो जाना; कर्कट रोगकी तकलीफ़में यह बहुत ही लाभदायक है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—घरके बाहर टहलनेसे ही सरमें चक्कर आने लगना; ललाटमें बेहोश करनेवाला दबावकी तरह दर्द; समूचा माथा मानो पिसा जा रहा है, ऐसा मालूम होना; इसके साथ ही अध्ययनके समय सुनने, देखने आदिकी शक्तिका गायब हो जाना; पढ़ते-पढ़ते रोगी रुक जाता है और वह कहाँ है, यह कुछ भी स्थिर नहीं कर पाता। मुँहमें खट्टा स्वाद, माथेमें खालीपन और शून्य मालूम होना। एक आँख और एक पार्श्वमें दर्द, आँखें लाल, उनसे बहुत आँसू बहा करता है। खट्टी फीर बदबूदार डकार, उदरामय, बहुत ज्यादा, बिना तकलीफ़का और कमजोर करनेवाला नहीं। मलद्वारमें बहुत अधिक खुजली। नकली झिल्ली पैदा करनेवाली रजःकृच्छ्रता या बाधकका दर्द और वायुनली-भुजके प्रचण्ड विकारकी वजहसे खाँसी।

लक्षणावली

मन।—बहुत चिन्ता, मानो उसने न जाने कितना अपराध किया है (चेलिडो, फेरम) या वह ऐसी आशा करता है कि उसका बहुत अधिक तिरस्कार किया जायगा। विचारोंमें शंकायें, मानो किसी अमंगल-सूचक खबरकी राह देख रहा हो (ऐस्टेरि-रियुब, लिसिन)। हमेशा कोई-न-कोई काम करते रहनेका आग्रह (कैल्के, बार्वेस्कम)। दिनके पहले आधे भागमें विषाद और अन्तिम भागमें प्रसन्न रहता है। बहुत दुःखित भाव-युक्त, मानो रुलाई आ रही है। इसके अलावा वर्त्तमान और भविष्य कालके कामोंको लेकर बहुत घबड़ाहट प्रकट करता है। बहुत अधिक असन्तुष्ट चित्त और किसीके साथ भी बात नहीं करना चाहता। घरके बाहर निर्मल वायु-सेवन करनेमें उसे आराम मिलता है।

मस्तक।—वायु सेवनके लिये टहलते समय सरमें चक्कर आना (नेट्र-म्यू, नक्स. फास, पल्स)। पढ़नेके समय इस ढंगका दर्द कि बेहोशी आ जाती है (बोवि, क्रोक, साइक्लेमेन, डालका, हेलिबो, हायो, लिडम, फास)। शिरार्द्धशूल या अधकपारीका सर-दर्द, दाहिनी स्कन्ध-देशीय पेशीमें दबाने और

खींचनेकी तरह दर्द, सरमें सर्दी मालूम होना, खट्टी स्वादका डकार और उसके साथ ही वमन। मूर्द्धा-देशमें असह्य टपक। मूर्द्धा-प्रदेशमें खुजली और केशकी जड़में दर्द होता है, घिसनेपर नहीं घटता।

आँख।—बहुत खुजली। सवेरे नींद खुलनेके समय आँखें सट जाती हैं (साइक्लेम, पल्स)।

नाक।—सर्दी नहीं, पर बार-बार छींक आती है, पानी जैसा सर्दीका स्राव, इसके साथ ही बार-बार तंग करनेवाली छींक।

मुँहके भीतर।—मुँहमें उत्ताप और जलनके साथ जीभपर छाले निकल आना (जीभके आगे छाला—नेट्र-सल, ऐमोन-म्यूर, नाइट्रम, जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ जीभके बगलमें छाला—एपिस; जख्मकी तरह दर्द और जलन करनेवाला छाला—आर्जेण्ट, कैप्स; मुँहका भीतरी भाग और जीभ छालेसे भरी—स्टैफ; जीभके ऊपर जलन और दर्द-भरे छाले—ऐसिड-म्यूर)। जीभपर सफेद लेपचढ़ी और उसपर खाल उधड़ जाने या क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होना, निचले जबड़ेकी नीचेवाली गांठोंका फूलना और पीसनेकी तरह दर्द होना।

पाकाशय आदि।—बार-बार हिचकी (नक्स, मस्कस)। खाँसी और छातीमें जलनके साथ मिचलीकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है, बायें पुट्ठे या वंक्षण प्रदेशीय (Inguinal) ग्रन्थि सबकी सूजन (आर्स, अरम, बेडि, कैल्के, कार्बो-वेज, क्लिमैट, मार्क, आयोड, ऐसिड-नाई, स्टैफ, थूजा)। मलद्वारमें बहुत अधिक खुजली (ऐम्ब्रा; ऐमोन-कार्ब, बेराई, कैल्के, कार्बो-वेज, कास्टि, सिना, क्रोक, इग्ने, लाइको, ऐसिड-नाई, सिलि, सल्फ, टियुब, जिङ्क)।

जननेन्द्रिय।—बार-बार पेशाबका वेग होता है। बहुत देरतक रख छोड़नेपर पेशाब गदला हो जाता है। प्रायः रेतःस्खलन हो जाता है। योनिके बाहरी स्थानपर खुजली (कैलेडा), जरायुमें नकली झिल्ली पैदा करनेवाला (Membraneous) बाधक—विशेषकर जिन स्त्रियोंके शरीरमें अधिक चूना पैदा हुआ करता है।

श्वास-यंत्र।—वायुनली वगैरहमें धड़-धड़ आवाज़ और खुजलाहटकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाना (कैलेड, मार्क, प्रुनस, रास, सिना, सिपा)। बड़े और जमे हुए पीवके टुकड़ोंकी तरह कफ़, श्वास-प्रश्वास लेनेमें थकावट

और गड़बड़ी, दोनों कन्धोंको कुछ पीछेकी ओर हटा लेनेपर थोड़ा आराम मिलता है (कैसके:—वृद्धि—ऐमोन-कार्ब, आर्स)। दोनों कन्धोंको पीछे झुकानेपर वक्षमें दर्दकी अधिकता—बौरैक्स, रैटान।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथकी कलाई या मणिबन्धके कुछ ऊपर और बाईं जांघकी फलकास्थिमें मानो मोच खानेकी तरह दर्द मालूम होना (ब्राई, युफ्रे, आर्निका, ऐसिड-सल्फ, रास; रियुटा)। स्थिर होकर रहनेपर बढ़ना (रास, आर्निका)। रातमें और जूता पहननेके समय तलवे और पैरकी अंगुलीमें अकड़न होना (तलवेमें—ऐमोन-कार्ब, कैल्के-ऐस्ट्रि; लाइको, क्यूप्रम, फिर, मार्क)।

नींद।—झगड़ा और विवादसे भरी घटनाओंका प्रत्यक्षकी तरह सपने देखना।

ज्वर।—रोज़ रातमें पसीना होता है (ऐल्यू, फिर, मैग-कार्ब, मार्क, ऐसिड-नाइ, पैरिस, ऐसिड-फास, फास, रास, सल्फ)।

त्वचा।—कर्कट रोगमें भयानक जलन और यंत्रणा (जब आर्स, युफोर्बियम, इयुफोर्बियाम हेटेरोडक्सके द्वारा आराम नहीं मिलता है)।

सम्बन्ध।—सदृश।—ब्रोमि, बोरैक्स, युफोर्बियम।

शक्ति।—३रे दशमिक विचूर्णसे १२ या ३० शततमिक क्रम।

कैल्केरिया आर्सेनिका

(CALCAREA ARSENICA)

दूसरा नाम।—आर्सेनाइट आव लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचर्ण।

मन्तव्य।—कितने ही सोचते हैं, कि कैल्केरिया और आर्सेनिकके सम्मिलित लक्षणमें इसका प्रयोग किया जाता है; पर वास्तवमें स्वस्थ दैहिक परीक्षामें यह एकदम दूसरे ही लक्षण प्रकट करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—अम्ल; अण्डलाल मिला पेशाब; दमा; विसूचिका; यकृतकी शीर्णता; कब्जियत; क्षयकास; शोथ; मेदाधिक्य;

हृत्पिण्डकी बीमारी ; मृगी ; सरमें दर्द ; पाकाशयमें विकारकी वजहसे जखम ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारी ; हृत्कम्पन ; अर्बुद ; सान्निपातिक ज्वर ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत अधिक मानसिक अवसाद । हृत्पिण्डका द्वार रोकनेवाली झिल्लीमें विकारकी वजहसे अपस्मार रोगमें मस्तक और वक्षमें रक्तसंचयकी अधिकता (ऐमिल, ग्लोन)। सामान्य मानसिक उत्तेजना होनेपर भी हृद्कम्प और वक्षमें धड़फड़ी मालूम होती है—लिथिया-कार्ब)। शराबियोंका शराब पीनेका अभ्यास छोड़नेके समय स्वास्थ्य-विकार और शराब पीनेकी दुर्दमनीय आकांक्षा (ऐसेट, सिङ्कोना—रुब्रा, ऐसिड-सल्फ, ऐवेना-सेट, पैसिफ्लोरा)। वयःसन्धिके समय रजोरोधकी वजहसे बीमारी, सामान्य मानसिक आवेग पैदा हो जानेपर छातीमें धड़कन पैदा हो जाती है और छातीमें और माथेमें खून दौड़ पड़ता है (लैके, ऐमिल)।

ज्वर ।—मलेरियासे उत्पन्न (Malarious) सविराम ज्वर ; लगातार होनेवाला और विलेपी ज्वर ; रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है। त्वचा और उसके पासवाले अंशमें उत्ताप मालूम होनेके साथ जाड़ा पैदा हो जाना। रातमें २ बजेके बाद पसीना होता है (आधी रातके बाद—मार्कुरियस, पोलिपोरस ; सवेरेके समय पसीना—मार्क, ऐसिड-नाई, फास, ऐसिड-फास) ; यकृत और प्लीहा दोनोंका ही आकार बढ़ा हुआ। डा० प्रतापचन्द्र मजुमदार महाशयके मतसे बच्चोंके प्लीहा और यकृत बढ़नेकी बीमारीमें यह ज्यादा लाभदायक है (नैट्र-म्यू, सिङ्को चेलिडो, नक्स, लेपटन, मार्क)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कोनीयम, ग्लोनाइनम, लिथिया-कार्बोनिका, पल्स, नक्स या श्लेष्मा-प्रधान धातु हो या यक्ष्मा-प्रवण धातु हो—सभी धातुओंमें कोनायमके बाद बहुत लाभदायक है।

शक्ति ।—६ठे दशमिक विचूर्णसे २०० क्रमतक विशेष लाभदायक है।

कैल्केरिया ब्रोमेटा

(CALCAREA BROMATA)

दूसरा नाम।—क्लोराइड आव कैलसियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—शिथिल पेशीवाले, स्नायु-प्रधान बहुत ग्रन्थियोंवाले और चिड़चिड़े मिजाज़वाले बच्चोंके लिये कैल्केरिया और ब्रोमिनके सम्मिलित लक्षणमें लाभदायक है।

नींद न आना, चिड़चिड़ा मिज़ाज, मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय वगैरह लक्षणमें इसका विशेष लक्षण दिखाई देता है। किसी-किसीके मतसे यह जरायुका प्रदाह अच्छा करनेकी एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बेल, इथूजा, कैल्के, ब्रोमियम।

शक्ति।—१x और निम्नशक्ति।

कैल्केरिया कार्बोनिका या आस्ट्रियेरम

(CALCAREA CARBONICA)

or

(CALCAREA OSTREARUM)

दूसरा नाम।—कैलसियम कार्बोनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे कार्बोनेट आफ लाइमसे यह तैयार होता है। पहले ६x तक विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—डाक्टर क्लार्कके मतसे नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक है :—पेट मोटा; अम्ल-रोग; खूनकी कमी; भूख ठीक-ठीक न लगना; अस्थि-विकार; ताण्डव; सर्दी; यक्ष्मा; मेद-वृद्धि; खाँसी; घुंड़ी; माथेमें चर्म-रोग; मदात्यय; दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ; बहुमूत्र; अतिसार; शोथ; अजीर्ण; कानसे स्राव; मृगी; आँखकी बहुत-सी

बीमारियाँ ; ज्वर ; नासूर ; पित्ताश्मरी या पथरी ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; प्रमेह ; गलगण्ड ; सन्धिवात ; सरमें दर्द ; अन्त्रवृद्धि ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; व्याधि-शङ्का ; मूर्च्छावायु ; ध्वजभङ्ग ; सन्धियोंकी बीमारी ; स्तन्य-विकार या स्तनके दूधमें विकार ; श्वेत-प्रदर ; नकली मैथुनकी वजहसे बीमारियाँ ; आर्त्तवमें विकार ; स्तनके रोग ; ज्वर ; गर्भ-स्राव ; स्नायविक ज्वर ; स्नायुशूल ; रातके समय डर जाना ; पक्षाघात ; कर्णमूल ; ग्रन्थियोंमें विकार ; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह ; बहुत अधिक पसीना ; नाकके भीतर अर्बुद ; गर्भावस्थाकी बीमारी ; मुँहका स्नायुशूल ; जीभकी जड़का अर्बुद ; मूत्ररेणु या अश्मरी (पथरी) या इसी वजहसे पैदा हुआ दर्द ; वात ; दाद ; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; गण्डमाला ; चर्म-रोग ; अनिद्रा ; घ्राण-शक्तिमें गड़बड़ी ; मसे ; मध्यान्त्रकी बीमारी; स्वादमें गड़बड़ी ; दाँतका दर्द ; दाँतकी बहुत-सी बीमारियाँ ; गुटिका ; स्वरनलीका प्रदाह ; अर्बुद ; सान्निपातिक रोग ; आमवात ; जरायुकी बीमारी ; शिराकी बीमारी ; सरमें चक्कर आना ; अंगुलहाड़ा ; क्रिमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मा और रस-प्रधान धातुवाले (साधारण भाषामें हमलोग जिसे जलवात कहते हैं), केश थोड़े, गोरे रङ्गके मनुष्योंके लिये और सोरा तथा गण्डमाला दूषित धातुवालोंके लिये यह उपयोगी है। ये सब मनुष्य साधारणतः बहुत ही स्थूलकाय (मोटे) होते हैं और उनकी मांसपेशियाँ शिथिल होती हैं, थोड़े ही परिश्रमसे वे थक जाते हैं, मनमें भय बना रहता है। चेहरा मलिन और उतरा हुआ रहता है और उनकी प्रकृति कच्छु-दोष-प्रवण होती है, ये धीरे-धीरे बहुत मोटे होते जाते हैं और उनमें चलनेकी शक्ति नहीं रह जाती। बच्चोंका चेहरा लाल, पेशियाँ शिथिल और सामान्य कारणसे ही पसीना होने लगता है। इसके अलावा उन्हें अक्सर सर्दी आदिकी बीमारी लगी ही रहती है ; बच्चेके सब अङ्ग-प्रत्यङ्ग समान रूपसे नहीं बढ़ते अर्थात् उनका माथा बड़ा, पेट मोटा और गला तथा हाथ-पैर पतले रहते हैं ; माथेमें सब अस्थि-संयोगस्थल (Fontanelles) बहुत धीरे-धीरे भरते हैं ; अङ्ग-प्रत्यङ्गकी हड्डियाँ सब लचीली रहती हैं और बहुत धीरे-धीरे बढ़ती हैं, उनके पोषणकी क्रिया ठीक-ठीक नहीं होती। लसिका-ग्रन्थि सब खासकर गर्दन और मध्यान्त्रकी भीतरवाली (Mesenteric) ग्रन्थि प्रायः ही फूल जाती है और निद्रित अवस्थामें उनके माथेमें इतना अधिक पसीना होता है, कि बहुत दूरतक तकिया भींज जाती है। इन सब बच्चोंके दाँत

निकलनेमें बहुत देर होती है और दूध पीते ही दहीके आकारमें जमकर वह कै हो जाता है, देहके किसी खास अंशमें पसीना ज्यादा होना—इसका एक निर्णायक लक्षण है। श्लेष्मा-प्रधान धातुवालेको परिवर्त्तित कर शीतोत्ताप सहन करानेमें कैल्केरिया आस्ट्रियेरम सर्वश्रेष्ठ है। तेजीसे बढ़नेवाले और बहुत मोटी-ताजी युवतियोंको जिन्हें बहुत जल्दी-जल्दी ऋतुस्राव होता है, जिन्हें ऋतुकालमें बहुत अधिक स्राव हुआ करता है, जिनका पैर अकसर पसीनेसे तर रहता है तथा ठण्डा रहता है, उनके लिये कैल्केरिया आस्ट्रियेरम विशेष लाभदायक है। बहुत देरतक पानीमें रहने या पानीका व्यवहार करनेपर जो बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें भी यह फायदा करता है। इनके अलावा आगे लिखे कई लक्षण भी कैल्केरियाके प्रकृति-गत लक्षण हैं:—इनके रोगी खासकर रोगिनियाँ, देखनेमें ताकतवर मालूम होती हैं, पर थोड़े ही परिश्रमसे थक जाती हैं, दो सीढ़ी चढ़नेमें ही हाँफने लगती हैं और उन्हें वाध्य होकर उसी जगह बैठकर हाँफना पड़ता है। रोगिनी सभी विषयोंमें निराशा प्रकट करती है, उसे विश्वास रहता है कि उपस्थित रोगसे वह अच्छा नहीं हो सकती, उसको बुद्धि-भ्रंश हुआ चाहती है और वह डरती है कि शायद फिर कोई इसे लक्ष्य न कर ले। ठण्डी हवा सहन नहीं होती। दोनों पैर हमेशा पसीनेसे तर रहते हैं। प्रत्येक वायु-परिवर्त्तनमें उसे सर्दी हो जाती है, सरमें दर्द, भार मालूम होता है, किसी-किसी समय एक अंशपर रोगका हमला होता है, कभी-कभी माथेमें उत्ताप और रक्त-संचयकी अधिकता मालूम होती है; पर कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि जाड़ा ही मालूम हुआ करता है। भ्रम-भरी गन्ध आया करती हैं—मानो बारूद या सड़े अण्डेकी गन्ध आ रही है। नाककी सर्दी (Nasal catarrh), बदबूदार, पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है और नाकमें बदबू मालूम होती है। कर्णस्राव (Otorrhœa), पीबकी तरह श्लेष्मा निकलनेके साथ ग्रन्थियोंका बढ़ना, कभी-कभी कानमें फुरफुर आवाज़ और सुई बेधनेकी तरह और टपक जैसा दर्द मालूम होता है। मुँहका स्वाद खट्टा, खट्टी डकार और खट्टा मल और सारे शरीरमें खट्टी गन्ध, पेटके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह स्थान भीतर घुस गया है, पर वास्तवमें पेट फूला और ढोलकी तरह कसा हुआ रहता है। अधपका अण्डा खानेकी बहुत अधिक इच्छा होती है, खासकर बच्चोंको रोगसे आरोग्य होनेके समय, मांस और गर्म सिझाये हुए खाद्यसे अरुचि, बिना सिझी चीजें

खानेकी बहुत इच्छा ; दूध सहन नहीं होता ; पेटमें वायु इकट्ठा होकर, पेट फूल जाता है और उसमें कतरनेकी तरह दर्द होता है। पुट्ठे या वंक्षण प्रदेशकी (Inguinal) ग्रन्थियाँ सब बढ़ी हुई रहती हैं। कब्जियत, मल बड़ा, कड़ा—या पहला अंश कड़ा, इसके बाद मांड़की तरह और अन्तमें पतला पानीकी तरह। मलान्त्र (Rectum) में जलन—टपक और चिलक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। वक्षस्थलमें बहुत दबावके साथ और छूनेसे दर्द मालूम पड़ता है। रातमें खाँसी आया करती है, जलीय भाफ़ लगनेसे छातीमें दबाव मालूम होना और कण्डराके नीचे स्पर्श सहन न होनेके साथ-ही-साथ खाँसी ; श्लेष्मा रातमें प्रायः सूख जाता है, सवेरे पतला और दोपहरके पहले पीले रङ्गका सरल बलगम निकलता है। जरायु-भ्रंश-प्रवणता। रजः—असमयमें ही पैदा हो जाता है, स्राव बहुत ज्यादा, बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और हाथ-पैर ठण्ढे। सामान्य उत्तेजनासे ही आर्त्तव बन्द हो जाता है, पर फिर पैदा हो जाता है (थोड़ा भी शरीर हिलानेपर—एम्ब्रा)। प्रदर—स्राव दूधकी तरह, बहुत ज्यादा, इसके साथ ही योनिमें जलन और खुजलाहट। स्त्री-पुरुष दोनोंके ही जननेन्द्रिय-प्रदेशमें जलन और खुजली पैदा हो जाती है। पेशाब गाढ़ा, भूरा, बदबूदार, उसमें सफेद रङ्गकी तली जमती है।

लक्षणावली

मन।—शंकासे भरा या भय-युक्त चित्त ; रोगिनी हमेशा डरा करती है कि उसकी बुद्धि लोप हो जायगी ; उसे उन्माद रोग हो जायगा (ऐलियम सिपा ; ऐल्युमिना ; एम्ब्रा, कैना-इन, ऐक्टिया, आयोड, लैक-कैन, सिफिलि) और लोग सब उसके चित्तकी यह विकलता लक्ष्य कर रहे हैं। किसी तरहका परिश्रम करनेको उसे इच्छा नहीं होती। विषन्न चित्त और दुःखित भाव ; हमेशा ही उसे कोई अमंगल होनेका भय बना रहता है (ऐमोन-कार्ब, चिनन-सल्फ, ऐक्टिया, क्यूप्रम, लिलि-टाइग, सिपि, वैलि, वेरेट, डिजि)। हमेशा निराशाका भाव प्रकट करता है और मनमें सोचा करता है, कि उसका रोग आरोग्य न होगा।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, वायु सेवनके लिये टहलने या चलनेके समय (नैट्र-म्यू, नक्स, फास, पल्स, सिपि), उसके साथ ही सवेरे उसका

बढ़ जाना—मिचली और वमन (मिचलीके साथ –ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रू, आर्स, बैराई, काक्यु, मस्कस, फास, पल्स, सिलि ; वमनके साथ—लैके, नैट्र-सल्फ, ब्रोम, थिरिडि)। सरमें दर्द—सीढ़ीपर चढ़नेके समय, बोलनेके समय, चलनेके समय, गर्मीके दिनोंमें और सर्दीके दिनोंमें बढ़ता है। पुराना सरका दर्द—मस्तिष्कसे बहुत परिश्रमकी वजहसे, कसकर बाँधनेपर (आर्जेण्ट-नाई, बेल, एपिस, पल्स); आँख बन्द करनेपर (ब्राई, सिङ्को, जेण्टिया-लुटि); श्लेष्मा और पित्त वमनके बाद, सोनेपर (ऐम्ब्रा कैलि-फास, क्यूप्रम, हेलि, ब्राई, इग्ने, ओलियैन) और ठण्डे हाथसे मलनेपर (आर्स, साइमिक्स, पैरिस) घटता है। बड़े माथेवाले बच्चेके माथेसे नींदवाली दशामें इतना पसीना निकलता है कि उससे माथेकी तकिया या वस्त्र बहुत दूरतक भींज जाता है, माथेके पीछे और गर्दनसे बहुत ज्यादा पसीना निकलता है (माथेसे पसीना निकलना—ऐकी, बेल, ब्राई, कैमो, सिङ्को, सिना, कोलो, डिजि, ग्रैफ, गुयायेक, हिप, लिड, मार्क, सिपि, सिलि, वेरेट ; बगलसे—बोवि, सल्फ, थूजा ; पीठसे—सिङ्को, चिनिन-सल्फ, लाइको, सिपो, गर्दनसे—बेल, क्लिमि, युफोर्बि)। नव-प्रसूताओंके केश झड़ जाते हैं (नैट्र-म्यूर, सिपि)। माथेमें और मूर्द्धादेशमें बहुत सर्दी मालूम होती है, खोपड़ीमें ऐसा मालूम होता है मानो बरफ रखा हुआ है (माथेमें ठण्डक मालूम होना—आर्नि—लोरो, फास, फाइटो, वैलि, सिपि, सल्फ, वेरेट); मूर्द्धादेशमें बरफकी तरह मालूम होना—आर्निका, आर्स, ऐगार, चेल, लोरो, अरम-म्यू, सल्फ, वेरेट ; मूर्द्धादेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो आग निकल रही है (आर्स, ब्राई, कोलो, क्रोटन, क्यूप्र, मार्क, ओलि-ऐन, रनान, सैग्वाड टैबाक)। माथेके अस्थि-संयोग-स्थान सब (Fontanelles) बहुत धीरे और विलम्बसे मिलते या भरते हैं (कैल्के,-फास, सिलि, सलफर) ललाटके स्थानपर भार मालूम होना ; लिखने और पढ़नेपर बढ़ जाता है। भारी चीज़ उठानेकी वजहसे सरमें दर्द। माथेमें खुजली—नींद खुलनेपर वह बढ़ जाती है (बोवि, ग्रैफ ; ओलियैन, रोडो, सिपि, स्टैफ); ऋतुके समय माथेमें रक्त-संचयकी अधिकता और उत्ताप मालूम होना।

आँख।—पलकें फूली और लाल, रातमें आँखें सट जाती हैं (पल्स, ग्रैफ, युफ्रे); दिनमें पपड़ीसे भर जाती हैं और जलन हो जाती है। ठण्डी—हवा लगनेसे ही आँखसे आँसू गिरने लगते हैं। सर्दी लगकर अश्रुनाली रुक जाती है। दृष्टि-पथ अन्धकारमय दिखाई देता है और इसी वजहसे चीजोंका

एक पार्श्व ही देखता है (चीजोंका दाहिना भाग नहीं देख पाता—लिथिया-कार्ब ; बायाँ आधा नहीं देख पाता है—लाइको)। पलक और आँखमें खुजलाहट (आँखमें खुजली—क्रियो, मर्क, नक्स, फेलेन, सिलिसिया, स्टैफ, सल्फ ; पलकोंमें खुजलाहट—नक्स, रास, रोडो, स्टैफ)। बहुतों दिनोंसे अकड़न फैली रहती है।

कान।—बाएँ कानके सामनेवाला अंश फूला हुआ। छूनेसे ही उसमें दर्द मालूम होता है। कानमें उत्ताप मालम होता है (आर्स, कैन्थ, क्रियो, सेङ्गिविन)। कोई खाई हुई चीज़ निगलनेमें कड़ाकसे आवाज़ होती है (मैङ्ग, मस्क, सिलिसिया, बेराई, ऐसिड-नाई)। कोई तरहका खाद्य पदार्थ चिबानेके समय कानके छेदमें टपक (कैन, मैग-म्यू, फास), साँय-साँय शब्द (ग्रैफ, पेट्रो, सेल, ओलि-ऐन), गड़-गड़ शब्द (बेल, कास्टि, ग्रैफ, नक्स, पल्स, सल्फ) और कट-कट शब्द (बेराई, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यू, ऐसिड-नाई, पेट्रोल), पानीमें काम करनेकी वजहसे बहरापन (डालका) ; कानसे पीब गिरना (कैलि-म्यू)। कर्णमूल ग्रन्थिका प्रदाह (Parotids), गांठ फूली (बेल, यदि प्रदाह अण्डकोषमें चला जाये—पल्स ; क्विनीन सेवनकी वजहसे मर्क-कोर) सविराम ज्वर रोकनेके कारण बहरापन।

नाक।—बार-बार छींक (सिपा, साइक्लेमन, सिना, गैम्बो, मार्क, नेट्र-म्यू, रास, रास-वे, सेबाड) और नाकके अगले भागमें दर्द और जखम। नाकसे बदबूदार गन्ध निकलती है (कार्बो-वे, कैमो, मर्क, ऐसिड-नाई, पोडो, पल्स, रास-रे, सिपि ; बालिकाओंके प्रथम यौवनागमनके समय—अरम, ह्वायो, पल्स, सिपि, सल्फ)। पीनस (Ozœna), रातमें नाकका छेद सूखा और रुका हुआ ; दिनमें स्राव होता है ; लगातार श्लेष्मा निकला करता है (नक्स, सैम्ब्यु)। प्रति बार जाड़ा गर्मीकी घटी-बढ़ीके समय सर्दी हो जाती है (ब्राई, डालका, मैङ्गो, मार्क, नक्स-मस, फास, रोडो, रास, सिलिसिया ; सल्फ, वेरेट)। नासार्बुद (Polypus)—नासारन्ध्रकी जड़में (थुजा ; कैलि-बाई, ऐसिड-नाई, टियुक्रि ; सर-दर्दके साथ—सैङ्ग्वि ; नासा-मूल (नाककी जड़) चिपक जाती है, ऐसा मालूम होता है और बदबू मालूम होती है—कैडमि, सल्फ ; सहजमें ही रक्तस्राव होता है—फास)। सर्दी होनेपर बदबूदार पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है (पल्स) ; सवेरे नाकसे खूनका स्राव (ब्राई ; जमा हुआ रक्त—नक्स ; गाढ़ा, लसदार और खींचनेपर रबरकी तरह बढ़नेवाला रक्त—क्रोकस ; जभी-तभी निकलता है और बहुत ज्यादा—फास)।

मुखमण्डल ।—सवेरे ऊपरी ओंठ फूल जाते हैं, निचले जबड़ेके नीचे-वाली हनुतलस्थ (Sub-maxillary) ग्रन्थियोंका फूलना (कैमो, सिस्ट्स, मर्क, सल्फ), चेहरा मलिन, आँखें गड़हेमें धँसी और दोनों आँखोंके चारों ओर काला घेरा ; दुधिया पपड़ी जमती है (Crusta-lactea—वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, सिपि लाइको), बहुत खुजलानेवाले और पानीसे धोनेपर उनमें जलन पैदा हो जाती है। चिबुक कुटकुटाता है।

मुख-विवर ।—दाँतोंसे बदबू निकलती है। दाँत-पर-दाँत रगड़नेकी इच्छा होती है ; दाँत कटकटाते हैं, जैसा जाड़ेकी कँपकँपीके समय होता है। ऋतुस्राव होनेके बाद ही दाँतमें दर्द पैदा हो जाता है (ब्राई, कैमो, फास) ; जाड़ा या ठण्डी हवा लगनेपर तकलीफ़ होती है, सहन नहीं होती और इसी वजहसे दाँतमें दर्द पैदा हो जाता है। जभी-तभी मुँह खट्टा मालूम होता है और मुँहमें खट्टा पानी भर आता है। बच्चोंके दाँत निकलनेमें बहुत देर होती है (कैल्के-फास, सिलि), जीभपर सफ़ेद लेप चढ़ा रहता है, जीभके अगले भागमें बहुत जलन मालूम होती है, मानो उनमें जखम हो गये हैं—गर्म चीजें खानेपर दर्द बढ़ जाता है, बड़ी कठिनतासे मुँहसे साफ़ बात निकलती है। दाँत निकलनेके समय मुँहमें जखम (बोर, कैमो)।

गलेके भीतर ।—कण्ठनलीमें दर्द, मानो भीतर फूल गया है ; दर्द कानतक फैल जाता है, निगलनेके समय गलेके भीतर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। गलकोष (Tonsils) और हनुके नीचेवाली ग्रन्थि फूलकर मुर्गेके अण्डेकी तरह हो जाती है, चबानेके समय तेज़ खींचन और छूनेके समय सुई बेधनेकी तरह दर्द हुआ करता है। गलगण्ड रोग (Goitre)—(आयोड, लैपिस, ऐल)।

पाकाशय ।—बीमारीकी अवस्थामें और आरोग्य होनेके समय भी रोगी आधा सिझा अण्डा खानेके लिये अत्यन्त आग्रह प्रकाश करता है ; ऐसी चीजें खानेकी इच्छा करता है, जो न पचा सके (ऐल्यू) ; मांससे एकदम अरुचि (ग्रेफ, सल्फ ; सिझाये हुए माँससे अरुचि—बेल, ऐसिड-नाई ; रोटीसे अरुचि—नेट्र-म्यूर ; अण्डेसे अरुचि—फेर ; मछलीसे अरुचि—ग्रेफ ; माताका दूध पीनेसे अरुचि—सिलिसि ; मिष्टान्नसे अरुचि —बेराई, कास्टि, ग्रेफ, एसिड-नाई ; धम्रपानसे अरुचि—कैल्य, काक्यु, इग्ने, नक्स) ; समूची अन्नवहानली

खट्टी हो जाती है (हिप, रियुम); खट्टी डकार, खट्टी गन्धकी वमन, खट्टा मल, शरीरसे खट्टी गन्ध निकलती है—हिप, रियुम; पाकस्थलीका ऊपरी अंश औंधाये हुए ढकनेकी तरह ऊँचा हो जाता है और दबानेपर दर्द मालूम होता है। दूध बिलकुल सहन नहीं होता (ओलि, हेपर)। ठीक-ठीक भोजनके बाद दबानेकी तरह दर्द, मानो पाकस्थलीमें कोई भारी पदार्थ दबाया हुआ रखा है; शरीरको हिलानेसे बढ़ना और चित्त होकर स्थिर भावसे सोनेपर घटता है। गर्म चीजें खानेसे अरुचि (लाइको; गर्म पतली चीजें पीनेकी इच्छा—चेल, कूप्र); राक्षसी भूख (आयोड, एब्रोट, वैसिलाइन)। अरुचि, पर खानेसे चीजें अच्छी लगती हैं। खाई हुई चीज़की गन्धकी डकार; बहुत प्यास, ठण्डी चीजें पीनेकी इच्छा (फास, वेरेट)। भोजनके समय पाकाशयके लक्षण सब बढ़ जाते हैं। भोजनके बाद कण्ठतक जलन होती है, रातके समय खट्टी चीजोंकी कै (फास)।

अन्त्राशय।—कमरमें कसकर कपड़ा पहनना बिलकुल ही सहन नहीं होता (ऐमोन-म्यूर, ब्राई, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिपर, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, स्पञ्जि, सल्फ); उदरके ऊपरी प्रदेशमें पेट फूल उठता है—वायु इकट्ठा होती है (अरम, हिपर, इपि, ऐण्टि-टार्ट)। यकृत-प्रदेशमें दबाव मालूम होना, प्रत्येक क़दम चलनेपर या चलनेके सयय सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है, माथा झुकानेपर दर्द मालूम होता है। आध्मान-वायु आँतोंके खास अंशमें जमा रह जाता है (कैन्थ, कार्बो-ऐन, आयोड, कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-म्यूर, नाइट्रम, ऐसिड-नाई, नक्स, फास, प्रूनस, हाइपेरिक, सल्फ)। उदराध्मान—पेट बहुत फला हुआ और कड़ा हो जाता है (नक्स-मस, कार्बो-वे, ऐसिड-कार्बोलिक, कैमो, लाई, लैके, रैफेनस, कैल्के-आयोड), मध्यान्त्र और पुट्ठेकी (Inguinal) ग्रन्थि सब फूल जाती हैं और उसमें दर्द हो जाता है (आयोड, वैसिलाइन, मर्क)। पित्ताश्मरी (Gall-stones) निकलनेके समय बेहद तकलीफ़ होती है (बार्ब, डायस्को; प्रतिषेधक—सिङ्कोना)। नाभिदेशकी आँतोंका हट जाना (Umbilical Hernia), स्थूलकाय बच्चोंकी। अन्त्रवेष्ट या अन्त्रावरक-झिल्लीका प्रदाह (Peritonitis); शीतल प्रयोगसे घटना।

मलान्त्र और मल।—क्रिमिकी वजहसे मलद्वारमें खुजली (ऐको, ऐसेट, सिङ्को, सिना, क्रोटन, कूप्रम, ऐसेट, फेरम, इग्ने, मैग-सल्फ, मार्क,

स्पाइजि, स्टैन, सल्फ, टियुक्रि) ; सोनेके समयसे लेकर कई घण्टेतक बहुत तकलीफ हुआ करती है। अर्श—चलनेके समय मसा बाहर निकल पड़ता है और उसमें दर्द होता है ; बैठनेपर घटता है। पतला पाखाना होनेके समय भी बहुत दर्द होता है ; अर्शसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव हुआ करता है। ऐसा भाव मानो अतिसार या पतला पाखाना होगा ; शामके समय बढ़ना ; मल काठिन्य - मल कड़ा और बड़ा तथा गांठ-गांठ। कब्जियतवाली अवस्थामें सभी लक्षण घट जाते हैं। मल इतना कड़ा होता है कि अंगुलीका सहारा लगाये बिना बाहर नहीं निकलता (ऐल्य, ऐलो, सैलिक, सेलिन, सिपि, साइलिसिया)। मल पहले कड़ा, इसके बाद लसदार कादेकी तरह और इसके बाद या अन्तमें पतला पाखाना होता है अर्थात् क्रमशः अत्यन्त कड़े मलके बाद पतला पाखाना होने लगता है (सिङ्को)। उदरामय—पतला, सड़े अण्डेकी तरह उसमें बदबू, पीला धुमैले रङ्गका या कीचड़की तरह मल मिला हुआ ; इसके अलावा कभी-कभी कुछ सफेद आभा लिये भी होता है ; पानीकी तरह ; तीसरे पहर बढ़ जाता है ; प्रायः अम्ल गन्धयुक्त, अजीर्ण, खाये हुए पदार्थ मिला। दाँत निकलनेके साथ बच्चोंको प्रायः खड़ियाकी तरह सफेद गांठभरा पाखाना होना।

पेशाब।—पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है। बार-बार पेशाब होता है। पेशाब घोर लाल या भूरा, बदबूदार और खट्टी गन्ध-मिला, बहुत ज्यादा तली, कभी सफेद आभा लिये या कभी ईंटके चूरकी तरह, मूत्रस्थली उत्तेजित होकर अर्थात् सामान्य कारणसे स्नायु आदिकी क्रियाकी अधिकताकी वजहसे विकार पैदा होता है, भींजी जमीनपर बैठना (ऐरेनिया), बहुत देरतक पानीमें खड़े होने या कीचड़ लेकर काम करनेके कारण पेशाब बन्द हो जाता है या पेशाब नष्ट हो जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातके २ बजनेके समय प्रबल रमणेच्छा। अकड़न, रातमें वीर्यपात हो जाता है और इसी कारणसे शरीर और मन दोनों ही सुस्त हो पड़ते हैं, रमणके समय बहुत जल्दी वीर्यक्षय हो जाता है। रमणके बाद शरीर दुर्बल हो पड़ता है और सब स्नायुओंमें बहुत उत्तेजना पैदा हो जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्थूलकाया (मोटी थुलथुली) रक्त-प्रधान बालिकाएँ,—उनकी उमरकी अपेक्षा उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग और अन्यान्य स्त्री-

लक्षण आदि बहुत शीघ्र पूर्णताको प्राप्त होते हैं ; उन्हें ऋतु-स्राव भी बहुत जल्दी होने लगता है और बहुत दिनोंतक हुआ करता है और कई वर्ष बाद ही उनको रजोलोप, रक्तकी कमी या रक्ताल्पता (Anæmia) या हरित् रोग (Chlorosis) हो जाते हैं और जब ऋतु होता है, तब बहुत थोड़ा हुआ करता है। वयस्था रमणियाँ—बहुत जल्दी-जल्दी ऋतुमती हो जाया करती हैं और उन्हें रजःस्राव बहुत अधिक हुआ करता है, उनके दोनों पैर हमेशा तर रहते हैं, मानो गीला मोजा पहने हुए हों ; रोगीको सोनेके समय हमेशा जाड़ा मालूम हुआ करता है (सिहरावनका भाव)। थोड़ी-सी मानसिक उत्तेजनाका कारण पैदा होते ही फिर ऋतु-स्राव होने लगता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है (बोरैक्स, ब्राई, कैन्थ, कास्टि, सिङ्को, क्रोक, हायो, इग्ने, लाइको, मैग-म्यूर, मर्क, नेट्र-म्यू फास, प्लैट, सैबाई, सिकेल, सिपि, सेलिन, सल्फ, ऐसिड-सल्फ, वैसिलाइन, वेरेट) ; रजोलोप या अवरुद्ध—ऐको, आर्स, कास्टि, कैमो, सिङ्को, काक्यु, कोना, कूप्रम, ग्रैफ, आयोड, कैलि-कार्ब, लाइको, मर्क, नेट्र-म्यू, नक्स-मस, ओपि, प्लैट, पल्स, रोडो, सैबा, सिपि, साइलिसिया, स्टैफ, स्ट्रैम, सल्फ, वैलि, वेरेट, जिङ्क)। बहुत देरतक पानीमें रहनेकी वजहसे रजोलोप (डालका)। ऋतुके समय जरायुमें कतरनेकी तरह दर्द (म्यूरेक्स, पल्स) ; प्रदर—दूधकी तरह स्राव (पल्स, ऐसिड-सल्फ, कोना, फास, सैबाई, सिपि, साइलिसिया)। इसके साथ ही जलन और खुजली। अल्पवयस्का युवतियोंको ऋतुके पहले और बाद योनिमें जलन और खुजली होती है। रमणेच्छा बहुत प्रबल हो जाती है, वह जल्दी-जल्दी गर्भवती भी होती हैं (मर्क, नेट्र-कार्ब) ; स्तन गर्म और फूले रहते हैं (बेल, ब्राई, फाइटो, कोना), स्तनका दूध बहुत ज्यादा होता है, बच्चा पीना नहीं चाहता (बोर, रास)। ऋतु होनेके पहले दोनों स्तनोंमें दर्द हो जाता है (कोना) और वे फूल जाते हैं। स्तनमें दूध कम पैदा होता है (ऐसा ; रोगिनी स्त्रियोंके लिये--साइलि ; यक्ष्मा-प्रवण धातु औरतोंका--फास), श्लेष्मा-प्रधान रमणियोंका, प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia), बहुत अधिक दिन स्थायी होता है (सिकेल) ; स्राव दूधकी तरह (लाल—रास, सिके ; बदबूदार—बेल, कार्बो-ऐन, सिकेल, सल्फ ; रक्ताम्बुकी तरह या रसकी तरह—कार्बो-ऐन ; रुका हुआ या बहुत थोड़ा—कोलो, हायो, नक्स, प्लैट, सिकेल, विरेट; तेज़ गन्ध—क्रोक, हिप, पल्स, रास, सिकेल)। योनिके बाहरी स्थानपर बहुत अधिक पसीनेका स्राव (ऐसिड-फास,

कैलेड, कोरैल, मार्क, सिपि, थूजा); मुष्कत्वकमें—डेफनी, इग्ने, नेट्र-सल्फ, रोडो, सिपि, सिलि, थूजा)। बहुत अधिक आर्त्तव-स्रावके साथ बन्ध्यत्व (मार्क, नेट्र-म्यूर, सल्फ, एसिड-सल्फ; देरसे ऋतुके साथ—कास्टि, ग्रैफ; रुके हुए रजके साथ—कोना; बहुत थोड़ा स्राव होनेवाले ऋतुके साथ—एमोन कार्ब; साधारणतः—अरम-म्यू, नेट्र, बोर) जरायुमें झिल्ली भरा अर्बुद (Polypus—थूजा, टियु, फास; कण्ठ-ग्रन्थि बढ़नेवाली औरतोंका—थाइरायडिन, सिकेल)।

श्वास-यंत्र।—लम्बी आकृति, बहुत मोटी नहीं और जल्दी-जल्दी बढ़नेवाले युवकोंकि-फेफड़ेकी बीमारी—दाहिने फेफड़ेके ऊपरी तृतीयांशपर साधारणतः रोगका आक्रमण होता (आर्स; बायाँ ऊपरी आधा अंश—माईरिका, सल्फ)। दो-एक सीढ़ी चढ़नेसे ही, श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है (एमोन-कार्ब, आर्स, ऐङ्गस, बोर, लिड, हायो, मार्क, एसिड-नाई, रैट, रियुटा, सेना, नाइट्रम, आयोड, नक्स, ओलि-ऐनि, स्टेन)। स्वरभङ्ग—सवेरेके वक्त स्वर-भङ्ग बढ़ जाता है, बोल नहीं सकता (कास्टि, युपेटोर; सन्ध्या समय वृद्धि—कार्बो-वे, फास)। घरमें रहनेके समय निर्मल वायु सेवनकी आकांक्षा पैदा हो जाती है, क्योंकि उससे उसमें फुर्त्ती आती है और ताक़त पैदा हो जाती है (पल्स, सल्फ)। खाँसी—पहली नींदके बाद, कण्ठमें खुजलाहटकी वजहसे; ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें या स्वरनालीमें धूल भर गयी है; वक्षोस्थि (Sternum) के बीचमें बराबर खुजली मालूम होती है और इसी वजहसे खाँसी आती है, भोजनके समय और उसके बाद भी खाँसी आती है; खाँसी पहले सूखी आती है, बादमें बहुत ज्यादा नमकीन स्वादका बलगम निकलता है; ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो स्वरनालीमें कुछ छिल गया है; वक्षमें घड़-घड़ शब्द; सवेरे पीले रङ्गका श्लेष्मा या कफ़ निकलता है। वक्षस्थलमें बहुत अधिक दर्द, समूचे वक्षःस्थलमें स्पर्श सहन नहीं होता और साँस लेने तथा छोड़नेके समय दर्द होता है। वक्षःस्थलके बाएँ ओर सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। कलेजा धड़कना, सन्ध्याके समय और शय्यापर शयन करनेके समय और नींद आनेके पहले और भोजनके बाद (कैम्फो, लाई, एसिड-नाई)। इसके साथ ही चिन्ता और उत्कण्ठा।

गर्दन और कण्ठ।—गलेकी ग्रन्थि फूली और कड़ी (आयोड, कोना, बेसिलाइन)। पीठमें बहुत दर्द, मानो मोच खा गयी है, भारी चीज़

उठानेकी वजहसे (आर्निका)—उठनेमें बहुत तकलीफ़ होती है। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें बहुत दर्द, हिलनेपर साँस रुकनेकी तैयारी हो जाती है। कमरमें इतना दर्द कि बैठ जानेपर उठनेमें बहुत तकलीफ होती है। ग्रीवापृष्ठ (Nape of the neck) में बहुत तकलीफ़ होती है (ऐको ; गर्दन घूमी रहती है—ऐक्टिया, गर्दन सामनेकी ओर और माथेके पीछेकी ओर घूमी हुई—ऐण्टि-टार्ट ; दर्द और अकड़न मालूम होना—कोलचि ; ठण्डा या शीत लगकर होनेपर और इस तरहके दर्दके साथ मानो माथा टेढ़ा कर सोया है—डालका ; अन्धड़ पानीमें बढ़ना—रोडो ; दाहिनी ओर दर्द और अकड़न—बेल)।

प्रत्यङ्ग आदि।—खाई हुई चीजके पाचनकी वजहसे रस आदिका असम विभाग या नियमित विभागके अभावकी वजहसे अस्थि-गठन शक्तिमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है और इसीलिये बच्चोंके खड़े होने हा चलनेमें देर होती है ; बच्चा बिलकुल ही चलनेकी चेष्टा नहीं करता या चलनेकी इच्छा भी नहीं करता। सारे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें कमजोरी। हड्डीका टेढ़ापन, विशेषकर मेरुदण्ड और हाथ पैरकी दीर्घास्थिमें ; हड्डीके अगले भाग घूमे हुए और टेढ़े आकारके पसीना बहनेकी वजहसे पैरके तलवेमें जखम हो जाता है, तलवेमें छाला हो जाता है और बदबूदार पसीना होता है (बैराई, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, मार्क, सिलिशिया, सैनिक्युला, सोराइन) ; शरीरके अंश विशेषसे पसीना निकलता है, जैसे माथा, मूर्द्धादेश, गर्दनकी पीठ, वक्षःस्थल, जननेन्द्रिय प्रदेश, हनु, जानु और पदतल (सिपि)। ठण्डा लगनेसे वातकी तरह दर्द मालूम होता है। हाथ दबाकर सोनेपर झुनझुनी आ जाती है। सन्ध्याके बाद बैठनेके समय दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं। रातमें ३ बजनेके समय पैरकी पीटलीकी पेशीमें (Calves—कैम्फो), जानुके पीछेके गह्वरमें ; पैर पसारनेके समय और बाँयें पैरके तलवे और पैरकी अंगुलीमें ऐंठन होती है। दोनों पैर हमेशा तर मामलू होते हैं। पैरके तलवेमें जलन (ऐम्ब्रा, ऐनाक, लैके, मैङ्ग, फास, ऐसिड-फास, सैङ्गियु, सिपि, सिलिया स्टैन, सलफर)। हाथमें पसीना (कोना, नैट्र-म्यू, सलफर, थूजा)। रमणके बाद जानुके ऊपर और नीचेका अंश कमजोर मालूम होता है और काँपा करता है। चलनेके समय बहुत थकावट मालूम होती है। रोगिनी सीढ़ी नहीं चढ़ सकती। अपस्मार, आक्रमणके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो बाँहके निचले भागसे ऊपरकी ओर या ऊपरके उर्द्धदेशसे तलपेटके बीच होकर पैरतक चूँटीकी तरह "सरसर"

न जाने क्या चला जाता है। पूर्णिमाके समय और जून और दिसम्बरके अन्तिम भागमें और उत्तरायण और दक्षिणायणके समय बढ़ जाता है।

त्वचा।—शरीरके अंश-विशेष अर्थात् मस्तक, उदर और दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं (कैलि-बाइ); ठण्डी हवा बिलकुल ही नहीं सहन होती, मानो ठण्डी हवा उनका शरीर भेदकर एकदम अन्तरतम प्रदेशमें प्रवेश कर रही है, थोड़ी भी सर्दी लगनेसे बढ़ जाता है। जखम पैदा होनेवाली देह—सामान्य कारणसे ही शरीरमें जखम पैदा हो जाता है। थोड़ी-सी चोट लगकर यदि जखम पैदा होता है तो वह जल्दी अच्छा नहीं होता। आमवात, ठण्डी हवामें अच्छा रहता है (ऐपिस, नेट्रम-मूर), दाद (वैसिलाइन, टेलर, सिपि)। मुखमण्डल और हाथमें मसे निकल आते हैं (थूजा, मिडोरिन, ऐसिड-नाई ; हाथके मसे—कैलि-मूर ; बाँह, हाथ, पलक और मुखमण्डलमें—कास्टि ; तलहत्थीमें—नेट्र-मूर)।

निद्रा।—नाना प्रकारकी चिन्ताओंकी वजहसे नींद न आना (काफि)। आँख खोलनेपर भयङ्कर चीजें सब दिखाई देती हैं। प्रत्येक शब्दपर चौंक उठता है। सन्ध्याके आरम्भमें नींद आती है। रातमें बार-बार नींद खुलती है।

ज्वर।—दोपहरमें और दो बजनेके समय जाड़ा आरम्भ होता है। शीतावस्थामें प्यास रहती है, बार-बार उत्ताप पैदा हो जाता है और इसके साथ ही कलेजा काँपता है। तापके समय प्यास नहीं रहती। उत्तापके बाद फिर शीत पैदा हो जाता है और हाथ सर्द मालूम होता है, उत्तापके समय शरीरपर कपड़ा नहीं रखता। बदन गर्म, पर भीतर शीत रहता है। सन्ध्याके समय पसीनेवाली अवस्थामें प्यास नहीं रहती। सवेरे पसीना निकलता है। नाड़ी पुष्ट और तेज़ रहती है। शरीरके एक-एक अंशमें पसीना होता है (कैमो, सिङ्को, नक्स, स्ट्रैम, थूजा)। रातके समय पसीना—तीन बजनेके बाद, खासकर माथेमें, गलेमें और वक्षमें, ऋतुके समय रातमें उत्ताप और बेचैनी मालूम होती है। जीभपर सफेद लेप चढ़ा रहता है। ज्वर एकदम नहीं छूटता।

सम्बन्ध।—बेलेडोना। ब्रायोके साथ—विषम। लाइकोपोडियम, नक्स-वोमिका, फास्फोरस और साइलिसियाके पहले कैल्केरियासे बहुत अधिक लाभ होता है। महात्मा हैनिमैनके मतसे नाइट्रिक एसिड और सलफरके पहले कैल्केरियाका व्यवहार अनुचित है, इससे दूसरे-दूसरे उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

बच्चोंको बार-बार सेवन कराया जा सकता है ; परन्तु वृद्धोंको बार-बार न देना चाहिये, खासकर यदि पहली खुराकमें ही लाभ हुआ हो।

वृद्धि।—ठण्डी हवासे, जलीय हवासे, ठण्डे पानीसे नहानेपर, सवेरे और पूर्णिमाके समय, आधी रातके बाद, नींद खुल जानेपर, वस्त्र आदिके भारसे, वायु सेवनके लिये टहलते समय, भोजनके बाद भारी चीज़ उठानेपर, मानसिक परिश्रमसे, झुकनेपर और रोशनीमें।

घटना।—सूखी हवा और रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर (ब्राई, पल्स)। अन्धकारमें, चित्त होकर सोनेपर, सोनेके बाद, मलनेसे, खुजलानेपर और उठनेपर।

दोषघ्न।—कैम्फर, इपिका, नाइट्रिक एसिड, नक्स, सलफर।

तुलनीय।—ऐमोन-म्यूर (वक्षका कसा भाव); आर्निका (जोरसे खींचन पड़ना); आर्सेनिक (मध्यान्त्रकी ग्रन्थिका फलना); रस-रक्तका क्षय—चायना; बाईं तालुमूल ग्रन्थि (बैराइटा); मिचली (पल्स); श्वेत-प्रदर (ग्रैफाई, सल्फ); पाकाशयमें अम्ल (लाइको, सलफर, पल्स); बहुत रज (बेल); अन्धकारमें भय (ऐमोन-म्यूर, स्ट्रैमो); दूध कै करना (इथूजा, ऐण्टि-क्रूड); मृगी (क्युप्रम); मूर्द्धदेशमें ताप (सल्फ); नाकका अर्बुद (टियुक्रियम) इत्यादि।

शक्ति।—६, ३०, २०० शततमिक और इसका ऊँचा क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—६० दिन।

कैल्केरिया कास्टिका

(CALCAREA CAUSTICA)

दूसरा नाम ।—ऐकोया कैलसिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बुझाये हुए पानीमें चूना मिलाकर और उसके बाद उसमें सुरासार मिलाकर तली जमायी जाती है और वही दवा ले ली जाती है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—पीठमें दर्द ; पिकचंचु-प्रदेशमें दर्द ; कदर या गट्ठे ; एँड़ीमें दर्द ; स्वरभङ्ग, जबड़ेमें दर्द ; मुँहकी हड्डीमें दर्द ; स्नायुशूल ; पक्षाघात ; वात या आमवात ; प्लीहामें विकार ; ग्रीवा-स्तम्भ या गर्दन अकड़ना ; फीतेकी तरह कृमि ; दन्तशूल इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना और पीठ, गर्दन, हनु और मुँहके पश्चात् भागमें तथा दाँतमें दर्दपर इसकी प्रधान क्रिया होती है । नीचे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—कोई विषय सोचनेमें रोगीको बहुत चेष्टा करनी पड़ती है । मस्तिष्ककी जड़ता सरमें चक्कर आना, ऐसा मालूम होता है, मानो एक मकान घूम रहा है । शरीरके विभिन्न अंशमें तेज़ नोकीली सलाई बेधने या फाड़नेकी तरह या टपककी तरह दर्द । दाहिनी आँखमें दर्द, मानो उसमें कुछ गिर गया है । आँखोंमें जलन और फटनेकी तरह दर्द । दाहिनी गण्डास्थि और दाहिनी हनु सन्धिमें फाड़ने या उखाड़नेकी तरह दर्द । प्रत्येक रातमें दो बजनेके समय दाँतमें दर्द होता है, दाँत सब हिला करते हैं और लम्बे मालूम होते हैं । कण्ठमें कफ-सञ्चय, जलन और मानो मछलीकी हड्डी गड़ गयी है, पाकस्थलीमें जलन ऐसा मालूम होना । पट्ट-कृमि ; कण्ठमें दर्दके साथ स्वरभङ्ग ; वायुनलीमें ऐसा मालूम होता है मानो त्वचा क्षय हो गयी है और इसके साथ ही खाँसी, छातीमें पतली सलाई बेधनेकी तरह दर्द, समूची पीठमें और खासकर पीठके निचले अंशमें अकड़न और उखाड़नेकी तरह दर्द मालूम होना । दाहिने कन्धेसे बाँहके अग्रभागतक एक तरहका दर्द मालूम होना ; बाएँ गुल्फके पीछेवाले वृहत् कण्डारमें और बायें गुल्फमें फाड़नेकी तरह दर्द । गट्ठे

(Corns) में सुई बेधनेकी तरह दर्द। दोनों पैर पानीमें धोनेके बाद हाथ तथा पैरोंमें दर्द मालूम होना, अन्यान्य-प्रदेशमें नया प्रदाह, उपाङ्ग-प्रदाह (Appendicitis)—क्षय करनेवाले जखममें परिणत हुए बवासीरमें भयानक दर्द (क्लार्क)।

लक्षणावली

मस्तिष्क।—मस्तिष्कको जड़ता (बेल, नक्स, ओपि)। सरमें चक्कर आना—मानो समूचा मकान ही चक्कर खा रहा है (आर्स, ऐसा, बेल, ब्राई, साइक्यू, लाई, नैट्र-म्य, नक्स-वोम, फास, वैलि, वेरेट); मानो वह चौकीसे गिर पड़ेगा। सर झुकानेसे ही भयानक दर्द होता है, मानो माथा पृथ्वीके आकर्षणके अनुसार झुका जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो कोई केश पकड़कर नीचेकी ओर खींच रहा है (ऐको, एल्यु, कैल्य, सिङ्को, इग्निड, रास, सेलिन)।

आँख।—सवेरे नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आँखमें एक कांटा गड़ रहा है, रोगीको बाध्य होकर आँख मलनी पड़ती है ; आँख खोल नहीं सकता। घरके बाहरकी हवा लगते ही आँखसे आँसू गिरने लगता है (फिलैन, फास, पल्स, रियुम, रियुटा, सैबाड, सिपिया, साइलिसिया, सल्फ, थजा,) पलकोंको जोड़नेवाली त्वचा लाल हो जाती है। ऐसा दर्द होता है, मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ेगा।

कान।—सुई बेधनेकी तरह दर्द; कर्णविवरको भेदकर वह मस्तिष्कमें प्रवेश करता है। कानमें ढं-ढं, गड़-गड़, शब्द सुन पड़ता है (कैल्के, कास्टि, बेल, कोना, क्रियो, ग्रैफ, लाइको, नैट्र-म्य, नक्स, पेट्रो, पल्स, सिलीसिया, स्पाइजि, सल्फ,)।

श्वास-यंत्र।—गलेमें दर्दके साथ स्वरभङ्ग (कास्टि, कार्बो-वेज, फास ; बिना दर्दका—कैल्के-कार्ब); छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; ऐसा मालूम हो कि गलेकी त्वचा क्षय हो गयी है और उसके साथ ही खाँसी (ऐको, ब्राई, कार्बो-ऐन, कैलि-कार्ब, लैके, नाइट्रम, स्क्विला, सल्फ, ऐक्टिया-रेस) और श्लेष्मा तथा रक्त-भरा बलगम निकलता है (ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, बेल, फेर-ऐसेट, कैलि-कार्ब, नैट्र-म्यू, नाइट्रम, साइलिसिया)। वक्षोस्थिके बाईं ओर सुई बेधनेकी तरह दर्द (ऐमोनियम, ऐमोन-कार्ब, आयोड,

लेकिटुका, फास, स्टैन, सल्फ, वेल, कैलि-कार्ब, ओलि-ऐन, सेनेगा), छठें और सातवें पञ्जरेके बीचवाले प्रदेशमें दर्द।

गर्दन और पीठ।—गर्दन अकड़ी हुई, बैठनेके समय दोनों पृष्ठ-फलकसे लेकर कमरतक तेज़ दर्द मालूम होता है। ८ बजे रातके समय दोनों पृष्ठफलकोंमें (Scapulæ) सुन्न-जैसा मालूम होता है। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचके स्थानमें वातकी वजहसे दर्द और साँस छोड़नेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है और इस स्थानसे वक्षोस्थितक (Sternum) ऐसा मालूम होता है मानो किसीने दबा रखा है; नींद खुलनेके समय कमरमें बहुत दर्द होता है, पर जरा हिलने-डोलनेसे ही घट जाता है (मर्क, सलफर, रास; कड़ी शय्यापर चित्त होकर सोनेसे आराम मालूम होता है—नेट्रम-म्यूर), समूची पीठमें और मेरुपुच्छमें छेदनेकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ-पैर कमजोर और काँपते हुए (बाँह—ऐगार, कैल्के, कास्टि, आयोड, लेके, फास, स्टैम, सल्फ, टैबेक, ऐण्टि-टार्ट, वैलि, जिङ्क; दोनों पैर—वैराई, साइकूटा, कोलो, प्लैट, पल्स, रियुटा); बैठनेके समय बढ़ना। हाथ-पैर आदिमें स्थान परिवर्त्तन करनेवाला दर्द (पल्स, कैलि-बाई, डैफनो, लैकिटु, मैङ्गो, मिफाइट, नक्स-मस, प्लम्ब)। दाहिना बाँह इतना सुन्न हो जाता है कि उठाया नहीं जाता (ऐम्ब्रा, कार्बो-ऐन, काक्यु, क्रोक, जिनसेङ्ग, लोरो, लाई, रास-रैड, साइलिसिया); दोनों बाहुओंको झुलानेपर आराम मालूम होता है (कैल्के-कार्ब); दाहिने कन्धेसे बाँहके अग्रभागतक उखाड़नेकी तरह दर्द रहता है।

त्वचा।—बहुत खुजलाता है और कुटकुटी होती है, खासकर गर्दन और पीठमें। लालीसे घिरी छोटी फुन्सियाँ सब रसभरी हो जाती हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—कैल्के-आस्ट्रेयेरम; बेलेडोना; कैमो; रास; मर्क।

तुलनीय।—कैल्केरिया, रस-टक्स (सन्धि-वेदना), मेजे, मैग-कार्ब (मुँहकी हड्डीमें दर्द); वैलेरि (एँड़ीमें दर्द); सिपिया (कमरमें दर्द); हिपर, नाइट्रिक (ऐसा मालम होना मानो गलेमें काँटा अड़ा है)।

शक्ति ।—३रे शततमिकसे ३० शततमिक क्रमतक साधारणतः व्यवहृत होता है ।

कैल्केरिया क्लोरिनेटा

(CALCAREA CHLORINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—फोड़े और विस्फोटकमें इसका व्यवहार होता है ।

कैल्केरिया फ्लुयोरेटा

(CALCAREA FLUORATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—लक्षणके अनुसार प्रयोग करनेपर नीचे लिखे रोगोंमें फायदा होता है :—ग्रन्थियोंका बढ़ना ; धमनीमें अर्बुद ; अस्थि-विकार ; स्तनकी ग्रन्थिमें कड़ापन ; रोहा ; सर्दी ; सर्दीकी वजहसे जखम ; खाँसी ; अस्थिका बढ़ना ; उदराध्मान (पेट फूलना) ; ग्रन्थियोंमें कड़ापन ; रक्तोत्कास (खून-मिली खाँसी) ; दादकी तरह उद्भेद ; सन्धियोंमें खट-खट आवाज़ ; यकृतकी बीमारी ; कमरमें दर्द ; पूतिनस्य (नकसीर) ; पेशाब करनेके समयके उपसर्ग ; चोट ; उपदंश ; शोथ ; भगन्दर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह दवा डा० सुसलरको बहुत ही प्रिय है। ऐसिड-फ्लुओरिक और साइलिसियाके एकत्र होनेपर बहुत कुछ कैल्केरिया फ्लुओरेटाकी तरह ही हो जाता है। इसका प्रधान आधिपत्य है—ग्रन्थि और अस्थियोंपर, गाँठें फूलीं और लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं ; शिराएँ फूल जाती हैं और देखनेमें डोरीकी तरह मालूम होती हैं और हड्डियोंके निर्माणमें विकारकी वजहसे अस्थिमय अर्बुदका उत्पन्न होना आरम्भ

हो जाता है और हड्डियाँ सड़ने लगती हैं। रोगवाली जगह या सभी ग्रन्थियोंमें पीब पैदा हो जानेका लक्षण दिखाई देता है। कभी-कभी आँखोंपर भी इसकी क्रिया होती है और आँखोंमें रोहा पड़ता है या मोतियाबिन्द हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—बहुत विषाद-भरा; वृथा ही आर्थिक हानि होनेका भय प्रकट करता है।

मस्तक।—नये पैदा हुए बच्चेके माथेके पार्श्व-देशमें लाल रङ्गका रक्तार्बुद पैदा हो जाता है (फास, कार्बो-ऐन, साइलिसिया)। मूर्द्धादेशमें कड़ी या अस्थिमय बतौड़ी या अर्बुद पैदा हो जाता है। मूर्द्धा-स्थानका जखम, उसके बगलका भाग पत्थरकी तरह कड़ा। माथेमें कट-कट शब्द (बैराइ, मस्कस, ऐसिड-नाइ)।

कान।—कर्ण-पटहपर चूनेकी तरह चूर पैदा हो जाता है। कानके भीतरकी छोटी हड्डियाँ सब (Ossicula) और शिलास्थि (Petrous Bone) मोटी हो जाती हैं। इसी वजहसे रोगी बहरा हो जाता है और कानमें ढं-ढं हु-हु शब्द होता है (कैल्के, कास्टि, बेल, कोना, क्रियो, ग्रैफ, नेट्र-मूर, पेट्रोल, पल्स, साइलिसिया)।

आँख।—काँपती हुई दृष्टि और आगकी चिनगारियाँ (आरम, बेल, कास्टि, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-मूर, ओपि, फास, स्टैफ, क्यूप्रम-आर्स, वेलि)। आँखोंके स्वच्छ आवरक (Cornea) के ऊपर धब्बे-धब्बे जैसा दाग मालूम होता है; आँखकी योजक-त्वचा (Conjunctivitis—मर्क, आर्जेण्ट-नाइ, युफ्रे)। मोतियाबिन्द (चोटकी वजहसे होनेपर—कोना; आँखोंके भीतर अस्वच्छता—Opacity—इयुफ्रे; अधिकतर कैल्के-फास, साइलिसिया)।

नाक।—सर्दी—माथा बहुत भारी मालूम होता है; सूखी खाँसी; नासारन्ध्रसे बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार गाढ़ी, पीली या पीली आभा लिये सर्दी निकलती है।

मुख।—दाँतमें दर्दकी वजहसे गला फूला और न झुकनेवाला और जबड़ेकी हड्डियोंका फूलना और कड़ा हो जाना। दाँतकी जड़ या मसूढ़ेमें पीब पैदा होनेकी वजहसे हनुके ऊपरी भागमें सूजन, जो लोहेकी तरह कड़ी हो

जाती है। दर्दके साथ जीभ भी फटी-फटी दिखाई देती है। कभी-कभी प्रदाहकी वजहसे जीभ फूली और कड़ी हो जाती है। असमयमें ही दाँतोंसे मसूढ़े अलग हो जाते हैं, उनमें दर्द नहीं रहता। दाँतमें दर्द—कोई खानेकी चीज़ दाँतमें लगते ही दर्द बढ़ जाता है (कार्बो-वेज, कास्टि, कैमो, लैके, मर्क, पल्स, स्टैफ)। (ज्ञानदन्त या अकलदन्त निकलनेके समय जो दर्द होता है, उसमें चिइरैन्थस बहुत फायदा करता है)।

गलेके भीतर।—कण्ठमें जलन (आर्स, बेल, कार्बो-वेज, कैम्फो, कास्टि, कैमो, युफोर्बि, लोबेल, लाई, मर्क, मेजिर, ऐसिड-नाई, फास, रैनान-स्क्लिरेटस, रास-रैड, स्पञ्जि)।

पाकाशय।—खाई हुई चीज़ अजीर्ण अवस्थामें कै हो जाती है (फेरम-म्यूर, पेट्रोल)। हिचकी (नक्स, कैजुपुट, साइक्लैमेन, ऐसिड-सल्फ ; खाने-पीने या धूम्रपानके बाद—इग्ने ; आक्षेप और वायु-निर्गमनके साथ—साइक्यु ; आक्षेपिक—इथ्यूजा ; मलेरियाकी वजहसे रोगोंमें यन्त्रणादायक हिचकी--नेट्र-म्यू ; गुल्मवायु रोगमें—मस्कस)।

अन्त्राशय।—पेट फूलना (ऐ-कार्बोल, कार्बो-वेज, रैफैना, नक्स-मस, कैमो), दाहिने कोषमें ग्यारहवें पञ्जरेके नीचे तेज़ छुरी बेधनेकी तरह दर्द ; दर्दकी वजहसे प्रायः आधी रातके समय नींद खुल जाया करती है। वृद्धि—रोगवाली करवट सोनेपर और सामनेकी ओर शरीर टेढ़ा करनेपर ; रोगी बहुत बेचैन हो जाता है। सबेरे ८ बजनेके समय यकृत-प्रदेशमें बार-बार छुरी बेधनेकी तरह दर्द। वृद्धि—बैठे रहनेपर ; घटना—रातमें सोनेके बाद। दाहिनी कोखमें बहुत धीमा और अच्छा न मालूम होनेवाला भार मालूम होना।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारका फटना ; मलान्त्रके नीचे बहुत जखम पैदा करनेवाला फटा घाव (ऐसिड-नाई, ग्रैफ, रैटान)। खूनी बवासीर (हैमा, सल्फ, कैल्य, कालिन्सो, हाइपेरि)। मलद्वारमें खुजली मानो छोटी क्रिमि पैदा हो गई है (साइना, इग्ने, टियुक्रि, ऐम्ब्रा, कैल्के-कार्ब, कैल्के-कास्टि, एसिड-फ्लुयो), बादी या बिना स्रावका बवासीर, अकसर कमर और नितम्बमें दर्द मालूम होता है, इसके साथ ही कब्जियत (इस्क्यु-हिप, नक्स, इग्ने)। तलपेटमें बहुत वायु सञ्चित हो जाना (ऐकी, आरम, सिङ्को, कोली, साइक्लैमी, फास, साइलिसिया, सल्फ, ऐसिड-सल्फ)।

पुं-जननेन्द्रिय।—एकशिरा (जन्मसे—ब्राईं ; चोटकी वजहसे—आर्निका, आयोड, स्पञ्जिया, रडो, आरम, पल्स) ; अण्डकोष बहुत कड़े मालूम होते हैं (स्पञ्जिया, क्लिमेट, रोडो)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा रजःस्राव (बेल, सिङ्को सिनैमो, इपिक) और तलपेटमें दबाव मालूम होना ; जरायुका अपने स्थानसे हटना (फ्रेक्सिनस-ऐमे, अरम-म्यूर-नैट, लिलि-टाईं, सिपि, हेलोन, म्यूरैक्स, सैबाईं), जरायु मानो बाहर निकल पड़ेगा ; जरायुसे उरुतक खींचनकी तरह दर्द मालूम होना (बेल, लिलि-टाईं, सिपि, फ्रेक्सिनस-ऐमे)। स्तनमें कड़ी गांठ पैदा हो जाती है (कोना, बेल)।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभङ्ग (कास्टि, फास, कार्बो-वेज) ; घुँड़ी (क्लोरैल, क्यूप्रम, मस्कस)। सोने बाद वायुनलीमें खुजली और कुट-कुटी मालूम होनेके साथ खाँसी ; पीली आभा लिये छोटा-छोटा जमा कफ़ निकलता है।

गर्दन और पीठ।—बहुत दिनोंका पुराना कटिवात, हिलना आरम्भ करनेके समय दर्द अधिक बढ़ जाता है, पर कुछ देरतक चलनेपर घट जाता है (रास, कैल्के, कास्टि)। अस्थिमय अर्बुद (ऐसिड-फ्लू, साइलिसिया)।

प्रत्यङ्गादि।—कलाईके पीछेवाले भागमें कोषवेष्टित अर्बुद। अंगुलीका सन्धियाँ सब वातकी वजहसे फूल जाती हैं। अंगुलीका अस्थि-वर्द्धन (हड्डीका बढ़ना Exostosis—उपदंशसे उत्पन्न—मार्क-कोर ; माथेका—कैली-बाईं ; दर्द-भरा—हेक्ला ; अस्थि-संयोजक स्थानपर—काञ्जियोलिन)।

त्वचा।—नाड़ी-मय अर्बुद ; फूली हुई शिरा मिला लहसन या मातृ चिह्न (Nævus—थूजा ; फास, लाईं, ऐसिड-फ्लू, टियुबर्क्युलिनम)। शिरा फूलना (Varicose Veins—हैमा, ऐसिड-फ्लु), इसके साथ ही तेज बेधनेकी तरह दर्द ; स्त्री-योनिके बाहरकी शिराका फूलना (हैमा, लैके)। शरीर फटना ; तलहत्थी फटना (नैट्र-कार्ब, पेट्रोल, कैल्के)। मलद्वारका फटना ; अंगुल-हाड़ा, मानो अंगुलीमें कोई काँटा बेध रहा है (ऐसिड-फ्लू, लैके, सिलि)। दुरारोग्य नासूर (Sinus)—पीले रङ्गका गाढ़ा पीब या रस निकलता है (सिलि, ऐसिड-फ्लू, मार्क ; कैल्के, सल्फ)। ग्रन्थियाँ सब फूली और लोहे जैसी कठिन—कोना ; आयोड)।

निद्रा।—वर्त्तमान घटनाकी तरह सपने देखना और ऐसा मालूम होता है, कि विपत्ति आया ही चाहती है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-फ्लू, कैल्के-सल्फ, कोना, लैपिस-ऐलबम, वैराई-मूर, हेक्ला।

तुलनीय।—कैल्के-फास (नकसीर), नैट्रम, साइलिसिया इत्यादि।

शक्ति।—२री, छठी ; ३० से २०० शततमिक क्रम।

कैल्केरिया हाइपोफास्फोरोसा

(CALCAREA HYPOPHOSPHOROSA)

दूसरा नाम।—हाइपो फास्फेट आव लाइम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल, दमा, रक्ताधिक्य, सर-दर्द, पक्षाघात, पसीना।

उपयोगिता और आभास।—माथेके मूर्द्धादेशमें धीमा भार मालूम होना और इसी वजहसे मानसिक अवसाद, छातीमें भार मालूम होना और दबाव मालूम होना तथा श्वासकृच्छ्रता ; बाँह, हाथ, गला और माथेकी शिराएँ सब फूलकर डोरीकी तरह हो जाती हैं ; श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ीकी वजहसे खिड़की आदि खोल देता है ; समूची देहमें बहुत ज्यादा पसीना होता है और पेशियोंकी दुर्बलताकी वजहसे हाथ-पैर अवश मालूम होते हैं।

डा० नैशके मतसे फोड़ा निकलनेके समय जब किसी तरह भी पीव पैदा होना बन्द नहीं किया जा सकता और पैदा हुआ पीव भी सोखा नहीं जाता, ऐसे स्थानपर इस दवाके प्रयोगसे फोड़ा बैठ जाता है और वह किसी तरह नहीं पकता। इकट्ठा हुआ पीव सब भी नष्ट हो जाता है।

सदृश।—कैल्के-फास, बेराइटा, ग्लोनोयिन।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३रा दशमिक क्रम।

परीक्षक।—डा० बारेट।

कैल्केरिया आयोडेटा

(CALCAREA IODATA)

दूसरा नाम ।—आयोडाइड आव लाइम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—कैन्सर या कर्कटका जखम ; क्षयकास या यक्ष्मा ; पेट फूलना ; ग्रन्थियोंका फूलना ; सर-दर्द ; स्तनका अर्बुद ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मासे पैदा हुई बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है । ग्रन्थियोंका फूलना, गल-ग्रन्थि (Tonsils) प्रदाह (पुराना), खासकर ऐसे आदमियोंको जिनमें खून कम है, जिनका रङ्ग उतरा हुआ और जिनकी मांस-पेशियाँ शिथिल हैं, उनकी बीमारीमें यह लाभदायक है । जरायुके तन्तुमय अर्बुद रोगमें भी यह खासा फायदा करता है ।

लक्षणावली

मन ।—सभी विषयोंमें उदासीनता प्रदर्शित करता है ।

मस्तक ।—ठण्डी हवाके प्रतिकूलमें घुड़सवारी करनेपर या दौड़नेपर सरमें दर्द मालूम होता है (जोरसे हवा लगनेपर—ऐको, बेल, सिङ्को, कोलो, नक्स, वैलि ; ठण्डी हवामें—सिङ्को, ऐसिड-म्यूर)। दाहिनी कनपटीमें (Temple) तेज़ बेधनेकी तरह दर्द (बेल, आयोड, लैके, मैङ्ग, निकोल, नाइट्रम, स्टैफ, ऐसिड-सल्फ), मस्तक बहुत हलका मालूम होता है (स्ट्रैम)।

नाक ।—पुरानी सर्दी—नासा-मूलमें अधिक दर्द मालूम होना (ऐगा, हायो, मिनो, पेट्रोल, पल्स, रियुटा), छींक नहीं आती । कान और नासारन्ध्रमें झिल्ली-भरा अर्बुद (Polypi—थूजा, कैल्के, कैलि-बाइ, फास, टियुक्रि, सैङ्गियु, कैड-सल्फ, सोराइन)।

मुख-विवर ।—जिह्वा और दोनों ओठोंमें ऐसा मालूम होता है, मानो लेप चढ़ी हुई है । मुँह और मसूढ़ेमें आग छू जानेकी तरह जलन (मसूढ़

जलन-भरे—बेल, कैमो, मर्क, नेट्रम-सल्फ, नक्स, पेट्रोल, पल्स, रास, टेरिब ; मुँहमें जलन—ऐसेर, मेजे, नेट्र-सल्फ, नाइट्रि-स्पिरि-डल, वेरेट) ; जिह्वामूल ग्रन्थि फूली और छोटे-छोटे कोषोंसे भरी रहती है (Follicular tonsilitis—कौषिक गल-ग्रन्थि-प्रदाह—इग्ने, बैराई-म्यूर, फाइटो, लैके)।

उदर ।—लगातार बहुत ज्यादा परिमाणमें नीचेकी ओरसे वायु निकलती रहती है (आर्जेण्ट-नाई, नक्स-मस, कार्बो-वेज)।

श्वास-यंत्र ।—बहुत दिनोंकी खाँसी, इसके साथ ही विलेपी ज्वर (Hectic) ; हरे रङ्गके पीवकी तरह कफ़ (आर्स, कार्बो-वेज, फेर, ड्रोसेरा, कैलि-कार्ब, लाई, नेट्र-कार्ब, फास, पल्स, स्टैन, सल्फ ; घुंड़ी—क्लोरेल, आयोड, स्पञ्जिया, सैम्बु, ऐण्टि-टार्ट)।

ग्रीवा और प्रत्यङ्ग ।—गर्दनकी पीठमें अकड़न। उरुदेशके ऊपरी अंशमें चोट लग जानेकी तरह दर्द। बाँह और अंगुलीके सुन्नपनके साथ दाहिने बाँहका सुन्न हो जाना और उसमें दर्द।

त्वचा ।—शरीरमें जगह-जगह खुजली मालूम होती है, एक जगहसे हटकर फिर दूसरी जगह पैदा हो जाती है, बहुत देरतक खुजलाने बाद कहीं कम होती है (डलिकस)। दाहिनी केहुनीकी लगातार खुजलाते रहना और फिर वहाँसे हटकर बाईं जांघमें पैदा हो जाती है (दाहिने उत्तमाङ्गसे बायें अधमाङ्गमें लक्षणोंका पैदा होना—ऐम्ब्रा, ब्रोम, मिडोरिन, फास, ऐसिड-सल्फ ; बाएँ उत्तमाङ्गसे दाहिने अधमाङ्गमें—ऐगार, ऐण्टि-क्रू, स्ट्रैम)।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐग्राफिस-न्यूटाक्स—सर्दी आदि रोग,—नाक रुक जाती है। सूजन और प्रदाह ; रोगवाली ग्रन्थिसे बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा निकलता है, कण्ठके भीतरकी बीमारी आदिकी वजहसे बहरापन। जिह्वामूलीय ग्रन्थि (Tonsils) का फूलना। सर्दी लगकर उदरामय हो जाता है और श्लेष्मा भरा मल निकलता है। ऐकोनाइटम लाइकोकटोनममें भी प्रधान लक्षण है—ग्रन्थियोंका फूलना ; रक्ताल्पता रोगमें (Anæmia) नासिका-ग्रन्थियाँ यदि तेजीसे बढ़ती जाती हों तो यह बहुत लाभदायक है। अधिककर आयोड, कैल्के फ्लू. बराई-कार्ब, बैराई-म्यूर, कैलि-आयोड, मर्क, आयोड।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम (विचूर्ण) और ३० शक्ति साधारणतः व्यवहृत होती है।

कैल्केरिया म्यूरियैटिका

(CALCAREA MURIATICA)

दूसरा नाम।—कैलसियम क्लोराइड।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—फोड़ा; ग्रन्थियोंका फूलना; गण्डमाला, वमन।

शक्ति।—६ठी या ३० शक्ति।

कैल्केरिया ओवि टेस्टि

(CALCAREA OVI TESTAE)

परिचय।—अण्डेके छिलकेके नीचेवाला पतला आवरण हटाकर, आगमें झुलसा लेने बाद विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह प्रदाह-हीन प्रदरका स्राव और कमरमें दर्दको एक बढ़िया दवा है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैल्केरिया आक्जैलिका

(CALCAREA OXALICA)

दूसरा नाम।—कैलसियम—आक्सेलेट।

उपयोगिता और आभास।—इस बातके लिये यह बहुत विख्यात है कि यह कैन्सरका दर्द दूर करता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐसे-ऐसिड, आक्सा-ऐसिड, साइट्रिक-ऐसिड, इयुफोर्बि, इयुफोर्बि-हेरारो।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैल्केरिया फास्फोरिका

(CALCAREA PHOSPHORICA)

दूसरा नाम ।—फास्फेट आफ लाइम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—क्लोराइड आव कैलसियम, फास्फेट आव सोडा और ऐमोनियाके साथ चुआया हुआ पानी मिलाकर यह तैयार होता है। विचूर्ण और अर्क ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— खूनकी कमी ; पीठ और पैरमें कमजोरी ; अस्थिका विकार ; बच्चोंकी विसूचिका ; ताण्डव ; क्षयकास ; दुर्बलता ; दाँत निकलनेमें गड़बड़ी ; बहुमूत्र ; अजीर्ण ; रेतःक्षरण ; मूत्रकृच्छ्रता ; मृगी ; मुँहासे ; नासूर ; अस्थिभङ्ग ; मेह ; प्रमेह ; सर-दर्द ; आँत उतरना ; कोरण्ड ; सर्दीसे पैदा हुआ रोग ; श्वेत-प्रदर ; कमरमें दर्द ; कामोन्माद ; वात ; कानकी हड्डीमें विकार ; नकली मैथुनकी वजहसे उपसर्ग या बीमारियाँ ; धातु जाना ; गरदनका अकड़न ; अण्डकोषकी सूजन ; गलेका जखम ; तालुमूल-ग्रन्थिकी सूजन ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; जम्हाई आना ।

उपयोगिता ।—जिन मनुष्योंके शरीरमें खून कम हो, जिनका रङ्ग काला हो, जो दुबले हों, दाँत निकलनेके समयकी बच्चोंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। डा० ऐलेन ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके द्वारा खाये हुए पदार्थोंसे उत्पन्न रस सभोंका अनियम विभाग या नियमित विभागका अभाव पैदा हुआ करता है। इसलिये यह दाँत निकलनेवाले बच्चे, यौवनमें आनेवाली बालिकाएँ और बालक तथा वृद्धोंकी—इन तीन अवस्थाओंमें यह विशेष उपयोगी है। बच्चा बहुत ही रोगी रहता है, मांसहीन, आँख और गाल गड़हेमें धँसे, पेटका निचला भाग शिथिल ; गांठोंका और हड्डियोंकी बीमारीका उपक्रम, माथा बड़ा, माथेके सामने और पीछेवाले दोनों ही अस्थि-फलकोंके जोड़ खुले हुए और ये हड्डियाँ सब पतली और टूट जानेवाली, बहुत धीरे-धीरे और देरसे दाँत निकलता है, बच्चा बहुत देरसे बोलना और चलना सीखता है।

है। गर्दन इतनी पतली और कमजोर रहती है कि माथेका बोझा नहीं सम्हाल सकती,—माथा ढुलका करता है। बच्चा दूध पीनेके साथ ही कै कर देता है। प्रत्येक बार भोजन करने बाद उसके पेटमें ऐंठन हुआ करती है। मल साधारणत: हरा लसदार और अजीर्ण पदार्थ मिला होता है। कभी-कभी मल पतला पानीकी तरह, गर्म और परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है, उसका छोटा मुँह रक्तहीन और उतरा हुआ दिखाई देता है और शरीरके उठे हुए अंश सब (कान, नाक इत्यादि) बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं, उनकी बुद्धि भी अस्थि आदिकी तरह जड़-भावकी हो जाती है। सहजमें कोई भी बात समझमें नहीं आती और हमेशा वह बिना फुर्त्तीका—सुस्त दिखाई देता है। उम्र बढ़नेके साथ-ही-साथ (यद्यपि शरीरका आयतन नहीं बढ़ता), सर्दी सहन नहीं होती, किसी तरह जरा भी सर्दी लग जानेपर, समूची देहमें हवा आदि लगते ही उत्ताप पैदा हो जाता है और अस्थि-वेष्टन (Periosteum) और सभी सन्धियोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है—यह सिर्फ बालास्थि-विकृति (Ricket) का लक्षण है। इसके सिवा और कुछ भी नहीं है। टूटी हुई हड्डी जल्दी नहीं जुड़ती। नवजात बच्चेकी नाभिसे खून मिला रस निकलता है। यौवनोद्गम-मुखी बालक बालिकाओंके मुँहमें मुँहासे पैदा हो जाते हैं; मूर्द्धा-देशमें सर-दर्द और आध्मान वायुकी वजहसे अजीर्ण रोग पैदा हो जाता है। भोजनके बाद घटना। शोक या प्रणय भंगकी वजहसे बीमारियाँ, रोगकी बात सोचते ही ऐसा मालूम होता है, कि रोग फिर पैदा हो जायगा। अनजानमें बार-बार ठण्डी साँस लेता छोड़ता है। बढ़नेवाली दशामें बालक-बालिकाओंका सर-दर्द। भगन्दर; छातीमें दर्द पर्यायक्रमसे पैदा होता है।

मन।—बच्चा बहुत चिड़चिड़ा। असंतोष पैदा करनेवाले समाचारसे उत्तेजित हो उठता है, बुद्धिकी जड़ताकी वजहसे उदासी, शारीरिक या मानसिक परिश्रमसे विरक्ति, बुद्धि लड़ाकर काम करना एक महान् विपत्ति-सी मालूम होती है। या तो भूल लिखता है या उसी बातको दुबारा लिख डालता है। विस्मृति,—इस समय उसने जो कुछ भी किया; क्षणभर बाद ही उसे वह याद नहीं रहता। शोक और प्रणय भंगकी वजहसे बीमारियाँ (अरम, इग्ने, ऐसिड-फास, ऐक्रिया, हायो, लैके), रोगकी बात सोचते ही मनमें बहुत अधिक तकलीफ़ होती है (बेराई, कास्टि, हेलोन, मिडोराई, ऐसिड-आक्स,

पिक्रोल)। रोगी घरमें रहनेपर बाहर जाना चाहता है, इधर-उधर घूमा करता है। अनजानमें ठण्डी लम्बी साँसें निकलती हैं (इग्ने, नेट्र-फास)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ;—बैठे-बैठे उठनेपर लुढ़क पड़ता है (ऐको, आर्स, ब्राई, पिक्री, सैबाड, सल्फ़)। बढ़ना—वायु सेवनार्थ टहलनेके समय (ऐनाक, आर्स, ऐस, लाइको, नेट्र-म्यू, स्पाई, वायोला-ट्राई); अन्धड़ पानीके दिनोंमें कब्जियतके साथ और बड़ी उमरवाले तथा पढ़नेवाले बालक-बालिकाओंके सरमें दर्द (नेट्र-म्यूर, सोराइन)। सरमें दद,—माथेकी हड्डीके संयोग-स्थलपर—जाड़ा-गर्मीके परिवर्त्तनकी वजहसे, ऐसा मालूम होता है मानो माथेके पिछले स्थानपर एक टुकड़ा बरफका रखा हुआ है। बहुत दिनोंतक मस्तकका संयोगस्थल नहीं जुड़ता, दरार-सी रहती है (कैल्के, कैल्के-फ्लू); मस्तकका अस्थि-फलक सब पतला और लचीला—दबानेसे पटपट करता है। श्रवण-शक्तिमें विकार, बालिकाओंके यौवनोद्गमके समय मूर्द्धदेशमें सर-दर्द और आध्मान (पेट फूलना) मिला अजीर्ण रोग,—खानेपर घटना। माथा गर्म ; केशकी जड़में कुटकुटी होती। गर्दन इतनी कमजोर कि माथेका भार सहन नहीं कर सकती—चलनेके साथ डगमगाया करता है (ऐब्रोट, आयोड)। ऐसा दबाव मालूम होना, मानो मस्तिष्क करोटीके गात्रसे पिसा जा रहा है। वृद्धि—सोनेपर, बैठने आदिकी अवस्थाके परिवत्तनसे। घटना—स्थिर होकर सोये रहनेपर। धूम्रपानके आग्रहके साथ सरमें दर्द—धूम्रपानसे घटना ; निर्मल वायु लगने और झुकनेपर सरका दर्द बढ़ जाता है। कानसे त्वचा क्षय करनेवाले पीवका स्राव।

आँख ।—आँखोंमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ गिर गया है। कोई इस सम्बन्धमें इसके सामने यदि उससे बात कहता है, तो उसे मालूम होता है मानो उसकी आँखमें कुछ गिर गया है। दीयेकी रोशनी सहन नहीं होती ; पढ़ नहीं सकता।

मुख-विवर ।—जीभके अगले भागकी खाल उधड़ जाती है, उसमें जलन और छोटे-छोटे छाले हो जाते हैं। सवेरे सरमें दर्दके साथ मुँहका स्वाद तीता हो जाता है। जिह्वामूलकी दोनों ग्रन्थियाँ (Tonsils) फूल जाती हैं, मुँह फाड़नेमें दर्द होता है ; दाँत निकलनेके समय कितनी ही तरहसे स्वास्थ्यमें विकार हो जाता है, दाँत बहुत धीरे-धीरे और देरसे निकलते

हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंपर गांठों-जैसी सूजन पैदा हो जाती है (ऐग्राफिस, ऐको, लाइको); दाँत धीरे-धीरे निकलते हैं, पर जल्दी-जल्दी क्षय हो जाते हैं—कीड़ाओं द्वारा (स्टैफ, क्रियो)। ऊपरी ओंठ फूल जाते हैं, कड़े हो जाते हैं, उनमें दर्द और जलन होती है. ऊपरी हनुके दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैलनेवाली दर्दकी अनुभूति होना, दर्द शरीरके दूसरे अंशसे मुँहमें और मुँहसे दूसरे अंशमें फैलता है। मुँहके ऊपर मसे (कास्टि, थूजा); चेहरेपर फुन्सियाँ या व्रणकी तरह उद्भेद; तांबेकी तरह मुँहासे (Acne in the face) या व्रण; लाल, पीली आभा लिये और पीव-भरे; छूनेपर सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है।

नाक।—सर्दी (Coryza)—ठण्डे कमरेमें रहनेपर पानीकी तरह सर्दीका स्राव, घरके बाहर जानेपर या गर्म-गर्म वायु लगनेपर सर्दीका स्राव बन्द हो जाता है। जिनकी ग्रन्थियाँ बढ़ा करती है (Scrofulous) या श्लेष्मा-प्रधान धातुवाले बच्चोंकी नाक फूली और नासा-रन्ध्रका मुँह जखमसे भरा हो जाता है। मांसार्बुद (Polypi—थूजा, टियुक्रि, सैङ्गियु)। नाकसे तीसरे पहरके समय खूनका स्राव होता है, नाकसे पतली सर्दी (Mucus) का प्रवाह और मुँहसे लार बहनेके साथ-ही-साथ बार-बार छींक (सिपि, आर्स, मर्क)। नाक झाड़नेपर उसके भीतरसे खून निकल आता है।

पाकाशय।—तीसरे पहर ४ बजनेके समय बहुत भूख लगती है। पाकाशय खाली मालूम होता है; पेटमें जलन होती है और मुँहमें पानी भर आता है। ऐसा मालूम होता है, मानो पेट बड़ा हो गया है (मैङ्गनम), बच्चा बराबर स्तनसे दूध पीना चाहता है—दूध पीना नहीं छोड़ता और बहुत सहजमें ही उसे कै हो जाती है। बहुत पेट फूलना—खट्टी डकार आनेपर कुछ देरके लिये आराम मिलता है। छातीमें जलन (नक्स, पल्स, सल्फर, फास, रियुम, कैलि-नाई), बच्चा लगातार दूध वमन करता है।

अंत्राशय।—जितनी ही बार खानेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार पेटमें दर्द होता है (वेराट्र, नाइट्रम, सिपि)। पेट थैलेकी तरह और शिथिल। नाभिके चारों ओर दर्द और जलन मालूम होती है (डूय्य, ऐल्यू, ऐण्टिम-क्रू, आर्स, वेराट्र, कैम्फो, कास्टि, इग्ने, कैलि-कार्ब, नक्स-मस, ओलिऐनि, ष्ट्रैम, रेवे, स्टेन)। बच्चेकी नाभीसे खून-मिला रस-स्राव होता है

(ऐब्रोट ; पेशाब निकलता है—हायो), कतरने या चिकोटी काटनेकी तरह तेज़ शूल-वेदना और इसके बाद ही पतला पाखाना होना ।

मलान्त्र और मल ।—मलद्वारमें जखम और सुई बेधनेकी तरह जलन पैदा करनेवाला और टपककी तरह दर्द मालूम होना । कड़ा पाखाना होनेके बाद खून गिरता है । रसीले फल खानेकी वजहसे और दाँत निकलनेके समय उदरामय । मल हरा, लसदार, गर्म, अजीर्ण पदार्थ मिला और बदबूदार वायु निकलनेके साथ छिटककर निकलता है (ऐलो, क्रोटन, गेम्बो, ग्रे टि, जैट्रो, नेट्र-सल्फ, पोडो, सल्फ) मलद्वारमें नासूर, भगन्दर और फुसफुस आदिके रोगोंमें पर्यायक्रमसे प्रकट होता है अर्थात् जब भगन्दर आराम होता है, तब फेफड़ेकी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं और जब वक्षस्थलकी कोई बीमारी नहीं रहती, उस समय भगन्दर पैदा हो जाता है (कार्ब) और उससे पीब बहना आरम्भ हो जाता है ; सवेरे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला मल निकलता है ; बच्चेका मलद्वार साफ़ कर देनेके बाद ही फिर वेग होता है और थोड़ा-सा मल निकल जाता है । सन्ध्याके समय बहुत थोड़ा पाखाना होता है और उसके साथ ही बहुत अधिक वायु निकलती है ।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब और इसके बाद ही कमजोरी मालूम होती है, कोई भारी चीज़ उठानेके समय और नाक छिड़कनेके समय मसाना या मूत्रग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बालिकाओंको बहुत जल्दी ऋतुका आविर्भाव होता है । स्राव—बहुत ज्यादा परिमाणमें और लाल चमकीला ; पर अवस्था-प्राप्त स्त्रियोंको बहुत समयका अन्तर देकर ऋतु होता है—खून गाढ़ा, लाल या पहले चमकीला लाल, इसके बाद गाढ़ा लाल । ऋतुके समय कमरमें बहुत दर्द मालूम होता है (ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, बार्ब, कैस्टोर, क्रियो, लाई, नेट्र-कार्ब, नाइट्रम, ओलि-ऐन, फास, पल्स, कैलि-नाई, सल्फ ; ऋतुके बाद—पल्स) । बच्चेको स्तन पिलानेके समय कामोद्रेक, स्त्रियोंका कामोन्माद (Nymphomania), जरायु-प्रदेशमें दर्द या कमजोरी मालूम होना (प्लैट) । बच्चोंको बहुत दिनोंतक स्तन आदि पिलानेकी वजहसे क्षीणता आदि पैदा होकर माताका स्वास्थ्य बिगड़ जाना । प्रदर,—दिन रात अण्डलालकी तरह स्राव (बोरैक्स, बोवि, ऐमोन-म्यूर, मेजिर, पेट्रोल, प्लैट) ; सवेरे वृद्धि (रमणके बाद—नेट्र-कार्ब ; टहलनेके समय—मैग-कार्ब, मैग-

सल्फ, टोङ्गा ; रातमें—ऐम्ब्रा, कास्टि ; पेशाबके समय—ऐमोन-मूरर, कैल्के, साइलि), बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता ; स्तनका दूध नमकीन मालूम होता है। दुबली-पतली स्त्रियोंका जरायु (आरम-मूर, नेट्र, पोडो) पाखाना-पेशाबके समय बढ़ना। स्तन-वृन्तमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है।

श्वास-यंत्र।—अनजानमें लम्बी साँस निकल जाना (इग्ने)। दिन-रात स्वरभङ्ग और खाँसी ; बच्चेको पालनेसे उठाते समय श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है ; खाँसी—पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है, सवेरे अधिक ज्वर, पसीना न होना और प्यास ; सवेरे ६ बजेसे सन्ध्या ६ बजेतक कितनी ही तरहकी बीमारी पैदा करनेवाला ; दाँत निकलनेके समयकी बीमारी, खाँसनेके समय वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और वक्षस्थलके निचले अंशमें और दोनों बाहुओंके ऊपरी अंशमें गर्मी पैदा हो जाती है। वक्षमें संकोचनकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता ; सन्ध्यासे १० बजेतक सोनेसे घटना और चढ़नेसे बढ़ना।

गर्दन और पीठ।—मेरुदण्ड बलहीनकी तरह मालूम होता है ; टेढ़ापन (सिलि, सल्फ), खासकर बाईं ओर ; देहका भार सहन नहीं कर सकता ; गर्दन पतली और क्षीण ; माथेका भार सहन नहीं कर सकती ; बच्चा माथा सीधा नहीं रख सकता ; चलनेके समय ढलमलाया करता है (ऐब्रोट, आयोड)। ठण्डी हवा लगकर दर्द पैदा हो जाता है, पीठ अकड़ी हुई और शिराओंमें धीमा-धीमा दर्द मालूम होता है। नितम्बमें बहुत दर्द रहता है, मानो टूट गया है (इस्क्यु-हिप)।

प्रत्यङ्ग।—पानीमें भींजनेके बाद नितम्बसे दोनों पैरतक दर्द चक्कर लगाया करता है (रास)। दुर्बलताके साथ हाथ-पैर आदिमें दर्द। पैर, तलपेट और कमरमें ऐसा मालूम होता है, मानो वे सब सुन्न हो गये हों—बैठकर उठ नहीं सकता, बच्चा दुबला, कंकालसार, खड़ा नहीं हो सकता, बहुत देरसे चलना सीखता है (ऐगार, कैल्के, साइलिसिया, कास्टि, सल्फर ; चलते-चलते डगमगा जाता है—बेल, ब्राई, कास्टि, हायो, लोरो, ऐसिड-मूरर, नक्स, ओलि-ऐन, ओपि, प्रुनस, रास, सिकेलि, स्ट्रैमो, सल्फ)। जवानीका समय आनेपर बालिकाएँ बहुत जल्दी-जल्दी बढ़ जाती हैं, उनकी हड्डियाँ लचीली रहती हैं और उनके टेढ़े पड़ जानेकी सम्भावना रहती है (सिलि, थिरिड)। शीतकालमें वातका

दर्द; वसन्त ऋतुमें अच्छा हो जाता है और हेमन्त ऋतुमें फिर पैदा हो जाता है।

सार्वाङ्गिक।—सीढ़ी चढ़नेके समय खींचन मालूम होना (ऐनाक, कैल्के-आस्ट), बैठा रहना चाहता है—आर्जेण्ट, ऐरिस-कार्ब, नेट्र-कार्ब, बेलिस, सोरिनम)। बैठना छोड़कर उठना बहुत बुरा मालम होता है। सर्दी लगनेपर सन्धि-प्रदेशमें और अस्थि-संयोग स्थलपर दर्द होता है।

वृद्धि।—ठण्डी जलोय वायु लगनेपर, तेज़ जल्दी-जल्दी बदलनेवाले जलवायुमें, पूर्वी हवामें और मानसिक परिश्रमसे।

घटना।—ग्रीष्म और वसन्त ऋतुमें, जब हवा गर्म और सूखी रहती है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—रियुटा, कार्बो-ऐन (ये सब गुणवाली दवाएँ हैं)।

सदृश।—कैल्के-आस्ट्र, ऐसिड फ्लुओ, कैलि-फास, कैल-सिलिकेटा (बच्चोंके अस्थि क्षय करनेवाले रोगमें) कैल्केरिया फास्फोरिकाके सदृश। कठिन रोगादिके बाद बलकारक औषधिके रूपमें सोरिनमकी तरह प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। कम्बोयोला इनमें हड्डियोंके जोड़के स्थानपर अस्थिमय अर्बुद पैदा हो जानेपर यह दवा बड़ी उपयोगी है। (थाइरायडिनम—डा० क्लार्क)। आयोडम, सोराइन, सैनिक्युला और सलफर वगैरह कैल्केरिया-फासके बाद अच्छा फायदा दिखाते हैं।

शक्ति।—निम्नक्रम विचूर्णसे लेकर ६ठा और ३०वाँ तथा २०० क्रमतक।

कैल्केरिया पाइक्रिका

(CALCAREA PICRICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण इसके बाद अर्क ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—कानमें बार-बार फोड़ा होना ।

शक्ति ।—निम्न-क्रमका चूर्ण और ३० वाँ क्रम ।

कैल्केरिया साइलिसिया

(CALCAREA SILICIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग । नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— आँखोंके सफेद अंशमें जखम ; गण्डमाला ; जखम ।

शक्ति ।—निम्न-क्रमका विचूर्ण और ३० ।

कैल्केरिया सल्फ्युरिका

(CALCAREA SULPHURICA)

दूसरा नाम ।—सलफेट आफ कैलसियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—प्लैस्टर आफ पेरिससे विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— गुह्यद्वारके पास फोड़ा ; व्रण ; छालोंका घाव ; आँखमें जखम ; खाँसी ; दूधिया पपड़ी ; रक्तामाशय ; खसड़ा ; नासूर ; प्रमेह ; ग्रन्थियोंका फूलना ; रक्तस्राव ; फेफड़ेका प्रदाह ; नासार्बुद उपदंश ; शुक्रतारल्य ।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी क्रिया बहुत कुछ अंशोंमें साइलिसिया और कैलेण्डुलाकी तरह है, फोड़े आदिसे पीव निकलता है, ऐसी अवस्थामें कैल्केरिया सल्फ्युरिका प्रयोग करनेपर जल्द आराम हो जाता है। मलद्वारके नासूर रोगमें यह साइलिसियाकी अपेक्षा किसी अंशमें कम नहीं है। अकौता खसड़ा (Eczema) और दुरारोग्य ग्रन्थि स्फीति और कोषमय तथा सूत्रमय अर्बुद रोगमें यह बहुत फायदा करता है। इससे पैदा पीव गाढ़ा पीला और जमा हुआ होता है।

लक्षणावली

मन और मस्तक ।—अस्थिर मति, घण्टे-घण्टेमें मत परिवर्त्तित होता है, बच्चोंको दुग्ध-चिपिटिका (Lactea) पीव-भरा रस निकलता है या माथेपर पीली पपड़ी जमा फोड़ा पैदा (वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, सिपि) हुआ करता है।

आँख ।—आँखोंका प्रदाह,—गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है (पल्स, मर्क-कोर, आर्जेण्ट-नाई)। चीजोंका आधा अंश ही दिखाई देता है—लिथिया-कार्ब ; दाहिना आधा भाग—लाई ; ऊपरी आधा और निचला आधा—ऐसिड-म्यूर ; निचला आधा—अरम), आँखोंका प्रदाह (Conjunctivitis), गाढ़ा पीले रङ्गका पीव निकलता है।

कान ।—बहरापन,—बिचले कानसे पीवका स्राव, खून भी कभी-कभी पीवमें मिलकर निकलता है। कर्ण-विवर (कानका छेद) के चारों ओर फुन्सियाँ निकल आती हैं (कर्ण-विवरमें बार-बार छोटे फोड़े निकलते हैं—कैल्केरिया-पिकरेटा)।

नाक ।—सर्दी,—गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा-स्राव, कभी-कभी खून और पीव निकला करता है (क्रियो, लाइ, नेट्र-कार्ब, फास, पल्स, सिपि), कभी-कभी केवल एक रन्ध्रसे श्लेष्मा निकलता है। नासा-पश्चान्नली (Posterior Nares) से पीले रङ्गका श्लेष्मा-स्राव ; रन्ध्रमुख जखम-भरे (ऐण्टि-क्रूड, सिपा, कैलि-कार्ब, लेके, मैग-म्यू, फास, जिङ्कम)।

मुखमण्डल ।—मुख-दूषिका या फुन्सियाँ, उनमें पीव सञ्चय होनेपर विसर्पिका या दादकी तरह उद्भेद पैदा हो जाते हैं।

मुख-विवर।—ओंठके भीतरकी ओर जखम। जीभ शिथिल—ऐसा मालूम होता है, मानो उसपर कीचड़का एक स्तर जम गया है। मुँह खट्टा और कसैला स्वाद। जीभकी जड़ पीले रङ्गको लेप चढ़ी (मर्क-आयोड); बाकी अंशपर कीचड़की तरह लेप। जिह्वाके प्रदाहमें पीव इकट्ठा हो जानेकी सम्भावना।

गलेके भीतर।—जिह्वा-मूलीय-ग्रन्थि-प्रदाहकी अन्तिम अवस्थामें गाढ़े पीले रङ्गके पीवका स्राव। गलक्षत रोगमें पीले रङ्गका पीव-स्राव।

उदर।—सुस्ती, मिचली और पाकस्थलीमें दर्दके साथ दाहिने कोख और यकृतके भीतर दर्द मालूम होना। उदरामय—रक्त और पीव मिला पाखाना होता है; शीत उत्तापके परिवर्त्तनसे बढ़ जाना। मलद्वारके नासूरकी बीमारीमें दर्द-भरे फोड़े निकलते हैं। मसानेमें बहुत दर्दके साथ पेशाबके साथ पीव निकलना (डा० नैश); मलान्त्रसे पीवकी तरह और लेईकी तरह स्राव होना।

जननेन्द्रिय।—प्रमेह (Gonorrhœa)—पीव-भरा रस निकलता है। ज्वर—देरसे, बहुत दिनोंतक लगा रहनेवाला; सरमें दर्द, पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना और इसके साथ ही बहुत कमजोरी।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी; पीवकी तरह रस निकलनेके साथ श्लेष्माका स्राव; विलेपी ज्वर (Hectic) के साथ फेफड़े और वायुनलीमें और फेफड़ेके कोषमें पीव-सञ्चय, पीवकी तरह रसमय पीव निकलता रहता है। सर्दी (Catarrah) रोगमें—गाढ़ा जमा हुआ सफेद पीले रङ्गके श्लेष्माका स्राव।

प्रत्यङ्गादि।—पैरके तलवेमें जलन और खुजली। अंगुलहाड़ा, मानो पीव-सञ्चय होना आरम्भ हो गया है। चोटवाली जगहमें पीव पैदा होना।

ज्वर।—पीव सञ्चय होनेकी वजहसे विलेपी ज्वर, इसके साथ ही खाँसी और तलवेमें जलन (चिनिन-आर्स, सेप्टिसिमिन)।

त्वचा।—कटे, जले या चोटकी वजहसे फटने या कुचलनेके कारण जखम हुए अंशसे पीवका स्राव होता रहता है और वह सहजमें आराम नहीं होता। गाढ़ा पीले रङ्गका पीव निकलनेवाले फोड़े या जखम आदि। पीली आभा लिये पपड़ी जमनेवाले चर्म-रोग। केशके भीतर फुन्सियाँ—खुजलानेपर खून गिरता है। फोड़ा।

तन्तु ।—खाँसी, प्रदर, प्रमेह प्रभृति रोगोंमें गाढ़ा पीला जमा हुआ पीवका स्राव ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—हिपर, साइलिसिया, कैलेण्डुला । जहाँ पीव-सञ्चय हुआ करता है अथवा फोड़ा बैठता नहीं है या फटता नहीं है, ऐसे स्थानमें कैल्केरिया-हाइपोफास्फोरिकके प्रयोगसे सञ्चित पीव सूखकर फोड़े अच्छे हो जाते हैं । हिपरकी अपेक्षा कैल्केरिया-सल्फकी क्रिया गहरी होती है । हिपरके बाद साइलिसियाका प्रयोग कर यदि फायदा न हो तो कैल्केरिया-सल्फ्युरिकाका प्रयोग करना चाहिये ।

शक्ति ।—२रे दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण या ३० क्रमका प्रयोग करना चाहिये ।

कैलेण्डुला आफिसिनैलिस

(CALENDULA OFFICINALIS)

दूसरा नाम ।—मेरी गोल्ड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गेंदेका पत्ता और फूलसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—फोड़ा ; स्तनमें पीव सञ्चय ; बाघी ; दूषित फोड़ा ; जले हुए जखम ; बहरापन ; आँखोंका प्रदाह ; ज्वर ; नासूर ; ग्रन्थियोंका विकार ; कामला ; प्रसव-वेदना ; स्तनमें जखम ; धनुष्टङ्कार ; जखम ; कर्कटका जखम ; शिराओंका प्रदाह या सूजन । अंगुलहाड़ा ; ताजे जखम या कटे घाव ।

उपयोगिता और आभास ।—जखम आदिमें इसका बाहरी प्रयोग करनेपर आर्निकाकी तरह लाभदायक है । चोट या कुचलनेके कारण जहाँ त्वचा फट जाय, वहाँके तन्तु ध्वंस हों या न हों, वहाँ इसका प्रयोग करनेपर बहुत जल्द मांसांकुर पैदा होकर जखम आदि आराम हो जाते हैं । इस औषधिके रोगी सर्दी लगते हो, खासकर तर हवामें उन्हें तुरन्त ही सर्दी लग जाती है । साथ ही उन्हें फैलनेवाला विसर्प रोग हो जाया करता है । जखमके परिमाणकी अपेक्षा दर्द अधिक रहता है । दाँतमें दर्द, बहरापन, सहज या चोटकी वजहसे

स्नायुका अर्बुद, त्वचा या तन्तुओंके फट जानेके कारण स्नायु-प्रदाह (Neuritis—हाइपर), बहुत अधिक खूनका क्षय और तेज़ दर्द। इसीकी वजहसे सुस्ती, संन्यास (Apoplexy) के बाद पक्षाघात और बहुत दिनोंका पुराना जरायुका या अन्तर्वेष्ट प्रदाह वगैरह रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मन।—सहजमें ही डर जाना ; उत्तेजना ; सुस्ती इत्यादि।

मस्तक।—स्नायविक उत्तेजना-प्रवण-चित्त;—थोड़ेमें ही डर जाता है और कातर हो पड़ता है, थोड़ी ही आवाज़से चौंक उठता है, सरमें दर्द;—छेदने या फाड़नेकी तरह दर्द (बेल, कोना, लाई, नक्स, ओलि-ऐन, पल्स, साइलिसिया); मस्तिष्ककी जड़ता, मानो गत रात्रिमें शराब आदि पी थी (एगार, बेल, नक्स, ओपि); भोजनके बाद ललाट-देशीय अर्थात् कपालमें होनेवाला सर-दर्द और उसमें उत्ताप मालूम होना (ऐको, आर्स)।

नाक।—जलीय हवा या ठण्डी हवा लगते ही सर्दी होती है और नाकसे (कैल्के-सल्फ) हरे रंगका श्लेष्मा-स्राव होता है।

आँख।—चोटवाली जगहमें पीव पैदा हो जाना, नश्तर लगवाने बाद अश्रु-स्थलीसे श्लेष्मा-स्राव। आँखोंमें धुआँ प्रवेश कर जानेके कारण उत्तेजना।

कान।—बहरापन—कानके भीतरवाली चक्रनालीकी (Labyrinth) विकारकी वजहसे (पाइलो-कार्प),—जलीय वायु लगनेकी वजहसे बढ़ना। रेलगाड़ीमें या दूरसे आई हुई आवाज़ अच्छी तरह सुन पड़ती है (ग्रैफ, ऐसिड-नाई); श्रवण-शक्ति बहुत तेज़,—सामान्य शब्दसे ही चौंक उठता है (आर्नि, बेल, काफि, कैमो, कोना, ऐसेरम, नक्स, फेर, टैरेण्ट)। (डा० कूपर कहते हैं, कि चौदह बरसके बच्चेके बहरापनमें कैल्केरिया आस्ट्रियेरम और पन्द्रहसे ४५ वर्षके मनुष्योंको बधिरतामें कैलेण्डुला उपकारी और लाभदायक है।)

मुँह और गलेके भीतर।—ओंठसे आँख और कपालतक ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गया है और उसमें जलन तथा डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। निम्न हनुकी नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और उनमें इतना दर्द मालूम होता है, कि उन्हें छूना सहन नहीं होता और ऐसा मालूम होता है, कि उनमें पीव संचय हो गया है या होनेकी सम्भावना है।

पाकस्थली ।—बच्चेने स्तनका दूध पिया है, पर तुरन्त ही उसे भूख मालूम होने लगती है ; राक्षसी भूख (बोवि, कैल्के, कास्टि, चिनिनम-सल्फ, सिना, आयोड, मार्क, फास, स्ट्रैमो) ; रोयेँ खड़े हो जानेके साथ-ही-साथ छातीमें जलन (आर्जेण्ट-नाई, कैल्के-कार्ब, नक्स) । वक्षमें मिचली मालूम होती है, (मार्क, ओलि-एन) । वमन, पेट खाली मालूम होता है, (इग्ने, काकु, नेट्र-म्यूर, टियुक्रि, लैके) । ऊपरी पेट फूला हुआ (युजिनिया, नेट्र-म्यू, पेरिस, सिपि, एण्टि-टार्ट) । शरीर हिलानेके समय उदरके बाईं ओर खिंच-खिंचकर दर्द मालूम होता है, स्थिर रहनेपर दर्द मालूम होता है ।

पेशाब ।—बार-बार पेशाबका वेग और बार-बार जलनके साथ, फीके रंगका, निर्मल पानीकी तरह पेशाब होना । बहुत शीत या कम्पनकी अवस्थामें मूत्रनालीके भीतर फटनेकी तरह दर्द ; मसाना या वृक्ककी क्रियामें विकारकी वजहसे ज्वरका भाव या बेचैनी ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनिके बाहरकी ओर मसे निकलते हैं (थूजा) । खाँसीके साथ रजोलोप । जरायु-ग्रीवाके पुराने अन्तर्वेष्ट (Internal lining) का प्रदाह, प्रतिश्याय या सर्दी (Catarrah), प्रदर आदिके स्रावकी वजहसे जरायु ग्रीवामें जखम आदि पैदा हो जाते हैं (कैलेण्डुला लोशनका बाहरी प्रयोग और आर्स, मार्क-सोल और मार्क-कोरका भीतरी प्रयोग ; जरूरत दिखाई देनेपर एसिड-नाई या लाइकोपोडियमका प्रयोग करना चाहिये । कोई-कोई हाइड्रेस्टिस लोशनका भी बाहरी प्रयोग किया करते हैं) । स्तनकी ग्रन्थियाँ सबमें दर्द हो जाता है और वे फूल उठती हैं (कोना, स्क्रोफ्युलेरियानोडोसा) ।

श्वास-यंत्र ।—खाँसी,—हरे रंगका श्लेष्मामय बलगम (आर्स, कैमो; इग्ने, कार्बो-वेज, फेर, कैलि-बाई, लाइको, पल्स, स्ट्रैन) ; स्वरभङ्ग (फास, कार्बो-वेज, कास्टि) और इसके साथ ही वंक्षण प्रदेशीय या पुट्ठेके छिद्रका फैलना ।

त्वचा ।—पीले रंगकी और रुखड़ी । जखम आदि जल्दी आराम हो जाते हैं और उनमें पीव आदि नहीं जमा हो पाता । चोटकी वजहसे कटी हुई त्वचा, नश्तर लगवानेका जखम वगैरहके तन्तु ध्वंस हों तो यह बहुत जल्द स्वस्थ मासाङ्कुर पैदाकर रोगवाली जगहको आरोग्य कर देता है ।

ज्वर ।—शीतार्त्तता—जाड़ा लगना—जोरकी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती ; पीठमें सिहरावन पैदा हो जाता है या काँप उठती है ; पर हाथ रखनेपर त्वचा गर्म मालूम होती है, असन्तोष, क्रोध आ जाना और विकारके साथ औंघाई । रातमें रोगी छटपटाता रहता है ; बार-बार नींद खुल जाती है, बार-बार पेशाब लगता है और पानी पीनेकी इच्छा होती है और किसी अवस्थामें भी उसे आराम नहीं मालूम होता । सन्ध्याके आरम्भमें उत्ताप पैदा हो जाता है, बार-बार प्यास, जाड़ा लगना और कम्पन, विशेषकर पानी पीनेके बाद (कैप्सि), माथा और हाथ बरफकी तरह शीतावस्थामें रहते हैं। सन्ध्याके समय उत्ताप पैदा हो जाना और बीच-बीचमें कम्पन तथा पानी पीनेकी इच्छा, शीतके समय मूत्रनालीके भीतरकी त्वचामें रगड़की तरह तकलीफ़ ।

वृद्धि ।—मेघसे घिरे और अन्धड़ पानीके दिनोंमें तथा अंधेरेमें ।

सम्बन्ध—सदृश ।—हैमा ; आर्नि, हाइपर, सिम्फिट और हाइड्रैस्टिसके बाहरी प्रयोगके सम्बन्धमें सदृश है । बहरापनके सम्बन्धमें—मार्क, चिनिन-सल्फ, कैल्के-कार्ब, पाइलोकार्पाइन, फेरम, पाइक्रिकम, कैलि-आयोड, नैट्र-कार्ब, ग्रैफ और ऐसिड-नाइट्रिक इसके सदृश गुण-विशिष्ट हैं ।

दोषघ्न ।—आर्निका, कैम्फरके साथ इसका विसदृश सम्बन्ध है । हिपर अनुपूरक है ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे तृतीय दशमिक क्रम तथा बाहरी प्रयोगके लिये मूल अरिष्ट चुआये हुए पानीमें मिलाकर और समयपर गर्म पानीमें प्रयोग किया जाता है ।

कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया

(CALOTROPIS GIGANTEA)

दूसरा नाम ।—मैडर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकाके मतसे कन्द समेत छालसे मदर टिञ्चर तैयार किया जाता है ; परन्तु डाक्टर क्लार्कका कथन है, कि कन्द समेत जड़की छालके रससे भी मदर टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—पैरमें दर्द ; ज्वर ; हाथमें दर्द ; सफेद जखम ; उपदंश प्रभृतिमें यह लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इसकी जड़, छाल और रस कै करानेवाला है, पसीना लाता है, धातुमें परिवर्त्तन कर देता है और विरेचक दवाके रूपमें बहुत दिनोंसे इस देशमें काममें लाया जाता है। इसके सोकड़की छालको चूरकर दूधकी चीनीके साथ आमाशय रोगमें इपिकाकुआन्हाके बदले यदि व्यवहार किया जाये और कुष्ट-व्याधि, फील-पाँव (गोद—Elephantitis) और उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बीमारियोंमें विशेष-लाभ हुआ करता है। उपदंशकी वजहसे यदि रक्तहीनता पैदा हो जाये तो ज्यादा फायदेमन्द है या पाकाशयमें गर्म मालूम होना—इसका एक विशेष निर्णायक लक्षण है। आगे लिखे हुए कई इसके क्रियाफल हैं—कमजोरी, थकन मालूम होना, माथा खाली मालूम होना, भीं-भीं आवाज़, सरमें दर्द और जड़ता, शीतार्त्तता (जाड़ा मालूम होना), मिचली और पित्तका वमन, बार-बार पेशाब, उरुदेशमें दर्द, स्पर्शका सहन न होना और लाल हो जाना ; दोनो पैरोंमें दर्द ; दोनों जंघाएँ फूल जाती हैं। दोनों पैर अकड़ जाते हैं और चल नहीं सकता ; हाथ और पैरमें दर्द, पहले बायें फिर दाहिने पैरमें दर्द होता है। दर्दका बढ़ना—रोगवाली जगह हिलाने या उसपर भार देनेसे ; उपदंश (जब मर्क्यूरियसका प्रयोग अनुचित नहीं होता) ; उपदंश रोग आराम हो जानेके बाद शरीर खूनसे रहित हो जाना ; गौण (Secondary) उपदंश।

स्थूलकायत्व।—(Obesity—फाइटोलैक्का-बेरि) रोगमें इसके सेवनसे माँस घट जाता है, पर भारीपन नहीं घटता।

त्वक रोग।—(Lupus) इस रोगमें भी इससे बहुत फायदा होता है। प्रथम दशमिक क्रमके व्यवहारसे एक युवकके गलेका त्वक या सफेद रंगका जखम आराम हो गया था। इस चिकित्साके चौदह दिन पहलेसे इस युवकका पैर मिट्टीसे न लगा था।

सम्बन्ध।—सदृश—मार्क-सोल, सार्सा, कैलि-आयोड, ऐसिड-नाई, इपिकाक, बार्बेरिस, ऐकुई, हिपर, वेसिलाइनम।

दोषघ्न ।—कैम्फर और काफिया ।

शक्ति ।—मूल अर्क एकसे ५ बून्द नित्य ३ घण्टेके अन्तरसे ।

कैल्था पैलस्ट्रिस

(CALTHA PALUSTRIS OR ARCTICA)

दूसरा नाम ।—एक तरहका गेंदा जातीय पुष्प ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कन्सर और जल-भरे छाले या अकौत रोगमें यह लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें चक्कर आना और कानमें भों-भों आवाज़ । मुँह फूलकर सफेद आभा लिये कोमल हो जाता है । जीभ मोटी, मल भरी, सफेद लेप चढ़ी । पेट फूला हुआ और ऐसा मालूम होना, मानो पेटका ऊपरी अंश और आँतें मरोड़ खा रही हैं । वायु जोरसे निकलता है, इसके साथ ही बहुत ज्यादा पाखाना होता है । पेशाब थोड़ा, गाढ़ा, लाल रङ्गका और पेशाबके समय जलन होती है । हाथ-पैरोंमें भार और सुन्नपन मालूम होता है । सन्धि-समूहोंमें मानों अकड़न और खींचन मालूम होती है, चलता-चलता ढुलक पड़ता है, समूची देह काँपती रहती है ।

त्वचा ।—उरुदेश और पैरोंमें लाल दाग । उरुदेशका भीतरी अंश सूखा, गुटिकावृत्त, बहुत खुजलानेवाला और चलनेके समय बहुत ज्यादा खींचन मालूम होती है । शरीरके कितने ही स्थानोंमें अकौता, लाल रङ्गसे घिरा हुआ और बहुत खुजलानेवाला । इसके अलावा रस-भरे छालोंकी तरह रस-भरे दाने निकलते हैं (नया—रस-टक्स ; बहुत दिनोंका—आर्स ; उपदंश—मर्क-कोर) ।

शक्ति ।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम ।

कैम्फोरा आफिसिनेरम

(CAMPHORA OFFICINARUM)

दूसरा नाम।—कपूर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कपूरके साथ सुरासार मिलाकर मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृद्शूल ; शय्याक्षत ; कालेरा या विसूचिका ; सर्दी ; आक्षेप ; मृगी ; उद्भेदका गायब हो जाना ; विसर्प ; प्रमेह ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; सर्दी ; स्मरण-शक्तिकी कमजोरी ; आमवात ; इन्द्रिय-शक्तिकी प्रवलता ; कम्पन ; अनिद्रा ; साँप काटना ; मूत्रकृच्छ्रता ; सूर्यावात या सर्दी-गर्मी ; धनुष्टङ्कार ; तम्बाकूका अभ्यास ; मूत्रनलीका संकोचन ; पेशाब रुकना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोगके विषयमें सोचनेसे घटना ; जिनका शरीर और मन कमजोर है और जिन्हें सर्दी सहन नहीं होती, ऐसे मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है (डा० ऐलेन)। इसके लक्षण शारीरिक क्रियाका ह्रास या हिमाङ्ग अवस्था (Collapse) बताते हैं और खासकर विसूचिका रोगमें। सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा अथवा रोगी शरीरका कपड़ा या ओढ़ना दूर उतार फेंकता है (मिडोरिन, सिकेल)। सर्दीकी पहली अवस्थामें रोगीको बहुत शीत मालूम होता है और उसे बार-बार छींक आती है। इसका एक अनन्य साधारण लक्षण यह है, कि रोगी जब अपने रोगके विषयमें सोचता है, तो रोग घट जाते हैं (हेलिबोरस ; सोचनेपर तकलीफ़ बढ़ती है—कैल्के-फास, हेलोन, ऐसिड-आक्, कास्टि, बेराइ, पेट्रोल, मेडोरिन ; रोगके विषयमें सोचते ही तुरन्त रोग पैदा हो जाता है—ऐसिड-आक, आक्साइड्रोपिस ; अनमना रहनेपर अच्छा रहता है—हेलोन, पाइपर-मिथि)। सारी देहमें दर्द और स्पर्श सहन नहीं होता (एपिस, आर्नि, बेल, कैलि-कार्ब, लेके, नक्स, मस, टेलरि), रोगी शीत बिलकुल ही सहन नहीं कर पाता (हिप, कैलमि, सोरिन)। आगे लिखे लक्षण कैम्फोराके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं—शरीरकी त्वचा बरफकी तरह ठण्डी हो जाती है और रोगी एकाएक

शय्यागत हो जाता है, हाथ-पैरोंमें अकड़न। धनुष्टङ्कारकी तरह आक्षेप रोगमें बार-बार ओंठ हिलानेकी वजहसे दाँत निकल आना (नक्स-वोम, फाइटो)। भीतर तो ताप रहता है, पर बाहर जाड़ा मालूम होता है, जीभ बरफकी तरह ठण्डी, स्वर बहुत तेज़ और ऊँचा या विकृत और कर्कश, शरीर बरफकी तरह ठण्डा, पर रोगी शरीरपर कपड़ा नहीं रखना चाहता। ऊपरी ओंठके संकोचनकी वजहसे दाँत निकलनेके साथ-ही-साथ मिचली, धामनिक आक्षेप, श्वास-कृच्छ्रता और शरीरकी त्वचा शीतल और नीलिमा लिये, मूत्र-कृच्छ्रता और बार-बार लिङ्गोच्छ्वास, शरीरमें कोई तेज़ विष या शक्ति प्रवेश करनेकी वजहसे एकाएक हिमाङ्ग (Collapse); जीवनी शक्तिका क्रमशः क्षय, बार-बार मूर्च्छा पैदा होकर रोगीकी अवस्था धीरे-धीरे सङ्कटापन्न हो जाती है। शरीर बरफकी तरह ठण्डे पसीनेसे भरा तथा हिमवत शीतल, दोनों पैरोंमें बार-बार अकड़न, अपनी अवस्थाकी चिन्तामें अन्यमनस्क हो जाना चाहता है; याददाश्त गायब हो जाती है। अकेले रहनेमें डरता है। शीत और ठण्डी हवाका स्पर्श सहन न होना; मस्तकका आक्षिप्त भाव,—दाहिना पार्श्व अकड़ जाता है या टेढ़ा हो जाता है और शरीरका बाकी अंश शिथिल हो पड़ता है; फैलनेवाला विसर्प क्रमसे अन्तरतम प्रदेशमें फैल जाता है; रुका हुआ उद्भेद (क्यूप्रम); शरीरकी त्वचा दर्द भरी और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता।

लक्षणावली

मन।—बेचैनी; अत्यन्त अस्वाच्छन्द्य। मानसिक यंत्रणाओंसे छटपटाया करता है। अकेले अंधेरेमें रहने से डरता है। वर्त्तमान तकलीफ़के विषयमें सोचनेपर तकलीफ़ घट जाती है (हेलिबोरस)। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह हवाकी अपेक्षा भी हलका और शून्यमें पड़ा है (ऐसे, कैनाब-इन, हाइपिर, युगलेन्स, रिजि, लैक-कैन, स्टिक्टा, वैलि)। अनुभव शक्ति, दर्शन, श्रवण और स्पर्श और ज्ञान-शक्ति वगैरहका लोप—विलुप्त स्मृति, यहाँतक कि किसीके छूनेपर भी समझ नहीं सकता।

मस्तक।—प्रतिश्याय या सर्दीकी वजहसे छींकके साथ सरमें दर्द (कैमो, कार्बो-वे, नक्स), पश्चात्-मस्तिष्क (Cerebellum) में टपककी तरह दर्द; सरमें चक्कर आनेके साथ माथेमें भार मालूम होना,—विशेषकर माथा झुकानेपर (बेल, ब्राई, लाइ, नक्स, पेट्रोल, सल्फ़)। सरमें चक्कर आनेके साथ

माथेमें भार मालूम होना, माथा पोछेकी ओर ढ़लक पड़ता है। चलनेके समय मतवालोंकी तरह ढुलका करता है। मस्तकका आक्षिप्त भाव,—दाहिनी ओर खिंचा करता है।

आँख।—चीजें बहुत चमकीली और उज्वल दिखाई देती है। दृष्टि-पथपर (आँखके सामने) आगकी चिनगारियाँ और आगके समान गोलाकार पदार्थ सब उड़े फिरते हैं और कभी-कभी अन्धकार या तिमिरमय पदार्थ दिखाई देते हैं। दृष्टि स्थिर, एक ओर बँधी हुई, एक पुतली ऊपरकी ओर और दूसरी बाहरकी ओर खिंची रहती है।

नाक।—दोनों नासापुट बन्द और बार-बार छींक। एकाएक शीत, उत्तापके परिवर्त्तनसे पानीकी तरह श्लेष्मामय सर्दीका स्राव होने लगता है। नाक बरफकी तरह ठण्डी और संकुचित। निश्वास अत्यन्त शीतल (वेरेट, जेट्रोफा)।

मुखमण्डल।—चेहरा रक्तशून्य; गाल, आँख वगैरह गड़हेमें धँसी; बिगड़ी हुई चेहरेकी भङ्गी; नीले रङ्गकी और बरफकी तरह ठण्डी, शिथिल, काँपती हुई।

पाकस्थली।—उदरके उपरी प्रदेशमें दबावकी तरह मालूम होना। एकाएक वमन, पाकाशयमें पहले ठण्ड और इसके बाद ही उसमें जलन मालूम होना। प्यास बहुत ज्यादा, पानी पीनेपर भी तृप्ति नहीं होती।

मल।—विसूचिका रोगाधिकारमें मिचली, वमन वगैरह स्रावका रुक जाना; शरीर बरफकी तरह ठण्डा। सांघातिक विसूचिका,—पेटकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन, शरीर बहुत ठण्डा, मानसिक यन्त्रणा; बहुत सुस्ती; जीभ और मुख-विवर बरफकी तरह ठण्डे; चावलके धोअनकी तरह मल, हठात् दैहिक क्रियाकी हिमाङ्ग अवस्था, दस्त और कै तो नहीं आती, पर एकाएक शारीरिक क्रियाका पतन हो जाता है, रोगी शय्यागत हो जाता है और शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है।

मूत्र।—पेशाबमें जलन और पेशाब रुक जाना, मूत्रस्थलीकी ग्रीवामें संकोचन मालूम होता। मूत्रस्थली भरी रहती है; पर पेशाब नहीं होता; (ओपि) धीरे-धीरे और खूब पतली धारसे पेशाब होता है। पेशाब पीली आभा लिये हरा, लाल इत्यादि।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रमेह रोगाधिकारमें बार-बार मूत्रनालीका मुँह घिर जाता है। प्रबल रमणेच्छा। तकलीफ़ देनेवाला लिङ्गोच्छ्वास। अस्वाभाविक उपायोंसे रमणेच्छाकी तृप्ति करना। प्रति रात्रिमें रेतस्खलन हो जाता है (डिजिटेलिन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—उत्तेजना ; प्रसवकी तरह दर्द, आर्त्तवकी अधिकता।

श्वास-यंत्र। — हृद्-प्रदेशमें दर्द मालूम होना ;—खासकर यदि कोई रोगीसे जोरसे बात करता है। छातीमें बहुत ठण्डक मालूम होना और लगातार औंघाई आते रहना। हृत्पिण्डसे दूरके अंशमें खूनके दौरानकी कमीकी वजहसे हाथ-पैर पहले ठण्डे होने लगते हैं। श्वास-रोधक दबाव मालूम होना। दमा,—शारीरिक परिश्रमसे वृद्धि। भयानक यन्त्रणाजनक, शरीरको हिला देनेवाली सूखी खाँसी। साँस ठण्डी। श्वास-प्रश्वास रुकी हुई। कलेजा धड़कना ;—इसके साथ ही श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी। चेहरा, हाथ, पैर और सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा ; चेहरा रक्तशून्य ;—इसके साथ ही भोजनके बाद और जागनेपर पेशियोंमें सङ्कोचन मालूम होना।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि।—चोटकी वजहसे शरीरमें आक्षेप, शरीरका बाहरी भाग बरफकी तरह ठण्डा, मुँह रक्त-शून्य और नीला ; बदरंग ; गहरी सुस्ती। समूची देहमें स्पर्श सहन न होना। त्वचा सूखी, बिना पसीनेवाली। हाथ,—गोटियाँ अच्छी तरह नहीं निकलतीं ; पर चेहरा बरफकी तरह, नीली आँखें और गाल गड़हेमें धँसे ; नाक सिकुड़ी और उठी हुई। रोगी किसी तरह भी शरीरपर वस्त्र नहीं रखना चाहता (सिकेल)। खसड़ा-रोगकी वजहसे पैदा हुए उपसर्ग। पैरकी पोटलीकी पेशीमें बार-बार ऐंठन। अंगुलियाँ सब अकड़ी हुईं, फैली और आकारमें टेढ़ी, अंगूठा तलहत्थीके भीतरकी तरफ अकड़ जाता है। वंक्षण या पुट्ठेके स्थानपर, जानु और गुल्फ-सन्धिमें कड़कड़ाहट, खड़े होनेपर जानुदेश अवश और सुन्न-सा हो जाता है।

ज्वराधिकारमें।—समूची-देह बरफकी तरह ठण्डी (लेकेसा-ऐक्युटेङ्गियुला) और चेहरा मुर्देकी तरह। शरीरका ऊपरी भाग बहुत ठण्डा अथवा शरीरपर ओढ़ना सहन नहीं होता, दूर फेंक देता है (मिडोराइन, सिकेलि), शीतसे कष्ट ; विष दूषित सविराम ज्वर (वेरेट) वगैरहमें इससे बहुत लाभ होता है। नाड़ी क्षीण, सूक्ष्म और प्रायः गतिशून्य।

निद्रा।—हाथ-पैर ठण्डे हो जानेके साथ ही नींद न आना। पेशियोंका फड़कना, संकोचन और अस्थिरता। स्नायवीय उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना। नींदमें नाक बोलना और बार-बार करवट बदलना; नींदमें प्रेत आदि डरावनी चीजें देखना।

वायु।—भीतरी यन्त्रोंका काँपना। जाग्रत अवस्थामें सहजमें ही चौंक उठता है और उसे छातीमें धड़कन मालूम होती है। मोहभावके साथ बच्चोंका आक्षेप,—भरपूर न निकलने या रुके हुए उद्भेदकी वजहसे (क्यूप्रम, ब्राई) अनुभव शक्तिकी कमी हो जाना, उसे छूनेपर भी स्पर्श अनुभव नहीं कर पाता।

दोषघ्न।—ओपियम, डालकैमारा, फास्फोरस।

तुलनीय।—ओपियम (मादकता), लाइकोपो (माथा खिंचा हुआ) इत्यादि।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—समूची देह बरफकी तरह ठण्डी, मानसिक और शारीरिक अस्थिरता और जलनभरी प्यास—इस लक्षणके सम्बन्धमें लैकेफा-ऐक्युटैङ्गियुला (कोषातकी या झीयाँका अरिष्ट) ठीक कैम्फोराके सदृश या अनुरूप है। अधिककर—कार्बो-वेज; उद्भेद लोप और हिमाङ्ग—सिकेलि (शरीरपर वस्त्र रखनेसे अनिच्छा); ओपि, वेरेट्रम, वगैरह भी आंशिक रूपसे इसके अनुरूप हैं। यह ताम्रकूट (तम्बाकू) विषनाशक है। प्रायः समस्त उद्भिदसे बनी दवाओंका ही प्रतिषेधक है।

शक्ति।—स्पिरिट कैम्फर १ बूंदसे ५ बूंदतक विसूचिका रोग पैदा होते ही चीनीके साथ प्रयोग करना चाहिये। सर्दी और प्रतिश्याय रोगमें १म दशमिक क्रम और पैरकी पोटलीकी पेशीमें अकड़न होनेपर ३० क्रम अव्यर्थ फलदायक है। डा० सैलजरके मतसे स्पिरिट आफ कैम्फरकी अपेक्षा दूधकी चीनीके साथ मिलाया कपूरका विचूर्ण अधिक लाभदायक है।

कैम्फोरा मोनोब्रोमेटा

(CAMPHORA MONOBROMATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—बच्चोंकी विसूचिका; पाकाशयकी सर्दी; सर्दी; अकौता; स्नायविक उत्तेजना; नींदमें व्याघात; शुक्रक्षरण (धातु जाना) या शुक्रका पतलापन; ध्वजभङ्ग।

उपयोगिता और आभास।—स्नायवीय उत्तेजना और पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना इसका प्रधान क्रिया-फल है और इसी कारणसे बच्चोंकी अकड़न और कम्पन तथा पक्षाघात आदिमें उपयोगी है। यह रमणियोंकी स्तन-ग्रन्थिपर आक्रमणकर स्तनका दूध सूखा देता है और शुक्रस्रावी नाड़ीको उत्तेजित कर बार-बार रातके समय रेतस्खलन पैदा कर देता है। इन सभी लक्षणोंसे मालूम होता है कि इस दवाका स्नायुमण्डलपर आधिपत्य है और इसी क्षमताकी वजहसे यह स्नायु-मण्डलोंके उत्पत्ति स्थान मस्तिष्कको विकृत कर देता है और इसीलिये इसके क्रियाधीन मनुष्य दिग्-भ्रम और दूसरी-दूसरी तरहके विकारोंमें ग्रस्त रहते हैं।

लक्षणावली

मन।—चेहरा लाल होनेके साथ-ही-साथ घोर विकारयुक्त, यहाँतक कि धनुष्टङ्कार आदि होनेका उपक्रम; गुल्मवायु या मूर्च्छावायु रोगमें कभी हँसता है, कभी रोता है; दिक्-भ्रम हो जाता है, उत्तर दिशाको दक्षिण दिशा समझता है और पूर्व दिशा उसे पश्चिम मालूम होती है। मोह-प्राप्त अवस्था।

मस्तक।—मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता, इसके साथ ही बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजनाकी वजहसे सरमें दर्द, मानसिक उत्तेजना—बहुत पढ़नेकी वजहसे (ऐसिट, अरम, लैके, नक्स, ओलि-ऐन, पल्स, सिलि, सलफर), अनिद्राके साथ रक्तहीनताकी वजहसे सरमें दर्द (सिङ्कोना, ऐसिड-फास)।

जननेन्द्रिय।—कमजोरी और शीत मालूम होनेके साथ-ही-साथ जननेन्द्रियकी शिथिलता; रमणेच्छा या रमण-शक्तिका न रहना (कैलेड, ऐग्न,

कैक्ट, कैलि-ब्रोम, सेलिन, ब्युफो सेहाइटियेन्सिस)। काम-प्रवृत्तिका उद्दीपन और बार-बार लिङ्गमें कड़ापन होनेके साथ ही रातमें रेतःपात हो जाना (कैलि-ब्रोम, डिजि-टेलिन, सिङ्कोना, ऐसिड-फाइ ; रमणियोंको होनेपर—कोना) ; जननेन्द्रियमें खुजलाहटकी वजहसे कामोन्माद (ओरिगेनम, कैलि-ब्रोम, प्लैटिना, ऐसिड-नाइ, कैन्थरिस) और गुल्मवायुकी वजहसे उत्पन्नकी तरह आक्षेप।

पेशाब ।—रातमें अनजानमें पेशाब हो जाना या पेशाब (गाढ़ा, निद्रा-वस्थामें—बेल ; पहली नींदमें—सिपि ; तेज़ गन्धवाला पेशाब—ऐसिड-बेन ; कृमिकी खुजलाहटकी वजहसे—सिना ; जिन बच्चोंको जल्दी नींद नहीं खुलती—क्रियो ; बहुत गहरी नींदकी वजहसे—कैलि-ब्रोम)।

सार्वाङ्गिक ।—अपस्मार या मृगी, गुल्मवायु रोग या मूर्च्छावायु और ताण्डव (Chorea) रोग आदिकी तरह अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें आक्षेप और विक्षेप। शरीरका बरफकी तरह ठण्डा हो जानेके साथ पेशियोंमें ऐंठन और जी घबड़ाना।

सम्बन्ध ।—कैलि ब्रोमेटम, ब्युफो-सेहाइटियेन्सिस।

शक्ति ।—३रा दशमिक विचूर्ण (डा० कूपर)। हमलोग उच्चक्रमके पक्षपाती हैं।

कैन्चैलैगुया

(CANCHALAGUA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है। जब फूल लगे तब संग्रह कर लेना उचित है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएञ्जा) ; सविराम ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—कैलिफोर्निया देशमें और ग्रीष्म-प्रधान देशके सविराम ज्वरमें विशेषकर और एक तरहकी बहुव्यापक सर्दी (Influenza) रोगमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

माथा।—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कड़ा और भरा हुआ हो रहा है (ऐको, बेल, ब्राई, डैफनो, रास रैड ; खाली मालूम होना—काक्यु, कूप्रम, पल्स); आँखोंमें जलन और कानमें बहुत अधिक सों-सों भों-भों शब्द।

मल।—सवेरे कड़ा गांठ गांठ (ओपि, ब्रायो)।

ज्वर।—समूची देहमें विशेषकर पीठमें (पोलिपो, युपेट-पर्फो, नेट्रम-मूर, सल्फ) शीत मालूम होता है ; रातमें सोनेके समय बढ़ना (शय्या त्यागने बाद बढ़ना—कैल्य, नक्स, साइलिसिया), सारे शरीरमें दर्द मालूम होना (आर्नि, युपेट) और स्पर्शका सहन न होना ; मिचली (युपेट, नेट्र-मूर, सैबाड) और ओकाई, पसीना निकलनेके समय चेहरा (लैके, नक्स) और दोनों बाँह बरफकी तरह ठण्डे और अंगुलियाँ सब धोबियोंकी अंगुलियोंकी तरह सिकुड़ जाती हैं (मर्क, वेरेट)।

सम्बन्ध।—सदृश। – युपेटो-पर्फोलियेटम, युपेटोरियम-पर्पुरियम, आर्निका, नक्स-वोम।

शक्ति।—१ले से ६ठे दशमिक क्रमतक।

कैनाबिस इण्डिका

(CANNABIS INDICA)

दूसरा नाम।—भांग इत्यादि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—कच्चे पल्लव और पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है। उद्भिदके विचारसे सैटाइवा भी एक ही जातीय है, परन्तु दूसरे स्थानमें पैदा होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निस्पन्द वायु ; मदात्यय ; भ्रम या न होनेवाली चीजें देखना ; मृगी ; प्रमेह ; सरमें दर्द ; उन्माद ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; पक्षाघात ; कामोन्माद ; तोतलाना ; मूत्र-विकार।

उपयोगिता और आभास।—मस्तिष्क और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया है। इसमें बहुत अधिक नशा होता है। इसके सेवनके समय

दूरीका ज्ञान गड़बड़ हो जाता है—एक घण्टा समय एक युग और पासवाला मकान एक मील दूर मालूम होता है। मनके भीतर नये भाव, भाव-पर-भाव असंख्य भाव उदय होते हैं; बोलना आरम्भ करनेपर बोलता ही जाता है, बात किसी तरह ख़तम ही नहीं होती; उसमें अलङ्कार बहुत भरा रहता है—बोलते-बोलते वह भूल जाता है, कि वह क्या कह गया। कोई कहानी पाँच मिनटतक कहते-कहते एकाएक रुक जाता है और ऐसा समझता है, मानो वह दिन-रात बोलता ही रहता है। इसी तरहकी विकृत बुद्धि कितने ही भावोंसे प्रकट होती है। इसकी क्रियाधीन स्नायुमण्डली सातवें में बँधी रहती है—उत्तेजना चरम सीमापर पहुँची रहती है; इसीलिये अपस्मार, उन्माद और उन्मत्तता वगैरह स्नायवीय विकारसे पैदा हुए रोगोंमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है।

लक्षणावली

मन।—बहुत बोलना; चित्तका उच्छ्वास; समय बहुत दीर्घ मालूम होता है—एक सेकेण्ड एक युगकी तरह मालूम होता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, आरम, कैमो, मिडोरिन, नक्स, ऐनहेल; समय बहुत जल्दी-जल्दी बीतता है—काक्यु, थिरिड); थोड़ी दूरी या अन्तर भी बहुत अधिक मालूम होता है। दस हाथ दूरकी जगह दस मील मालूम होती है। बहुत भूलनेवाला, बात बोलता-बोलता अन्तिम बात, चिन्ता-सूत्र भूल जाता है; बोलना चाहता है और बोलना आरम्भ करता है, पर क्या कहना चाहता था, यह भूल जाता है। भाव-पर-भाव इस ढङ्गसे पैदा होते हैं, कि कोई भी विषय स्मरण नहीं कर सकता (ऐनाक, लैक-कैन)। अनवरत ऐसी ही बातें सोचा करता है, जो होनेकी नहीं है। सामान्य बातमें भी ठहाका मारकर हँसने लगता है, अभी खूब आनन्द मना रहा है, पर क्षणभर बाद ही दुःख प्रकाश करने लगता है। मृत्युको निकट समझकर बहुत डरने लगता है। ऐसा समझता है, कि कोई उसे पुकार रहा है, मानो वह गाने-बजानेकी आवाज़ सुन रहा है; क्षणभरतक आँख बन्दकर कितने सुख-स्वप्न देखता है, कितने स्वर्गीय सुखोंकी कल्पनाएँ किया करता है, इसका कोई ठिकाना नहीं है। समझता है, कि वह क्रमशः फूलता जाता है और उसकी देह बड़ीसे और भी बड़ी होती चली जाती है। शरीर बहुत थोड़ा मालूम होता है, मानो वह भूमिको स्पर्श नहीं किये हुए है और अनायास ही उड़ जा सकता है (ऐसे, क्रैम्फो, स्टिक्टा, सिपा)।

मस्तक ।—रोगीको ऐसा अनुमान होता है, मानो उसके माथेकी हड्डी क्रमसे एक बार जुड़ती है और फिर खुलती है। एक बार जुड़ जाती है और फिर अलग हो जाती है (ऐक्टिया); मानो उसकी हड्डी ऊँचे उठ गई है (बैप, कैमो, कोबाल्ट, नेट्र-म्यो, विक्का)। उसे कभी-कभी माथेमें ऐसा मालूम होता है, कि एकाएक "धम" कर उठता है (ऐलो, कोका); ललाटकी त्वचा मानो खिंचकर फैल गई है (ऐडोनिस-वा, ऐसे, बैप, ऐसिड-कार्ब, काफि, कैल्के लेगुया); मस्तिष्कके भीतरसे धीमा भारजनक टपक-जैसा दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और गर्दनके पिछले भागमें कोई जोरसे आघात कर रहा है। पेशाब रुकनेकी वजहसे सरमें दर्द। पेट फूलनेके साथ सरमें दर्द। अनजानमें माथा काँप उठना। सरमें चक्कर आना—उठनेके समय, मानो माथेके पिछले भागमें बेहोश करनेवाली चोट लग गयी—ऐसे ही अनुभवके साथ गिर जाना।

आँख ।—स्थिर दृष्टि, दोनों आँखोंकी कैशिक शिराएँ सब लाल हो जाती हैं। पढ़नेके समय एक अक्षर दूसरेसे सट जाता है। भविष्यत और अन्तर-दर्शन शक्ति। आँखके सामने चकचौंधी और झिलमिलाहट मालूम होती है।

कान ।—दोनों कानोंमें बराबर दर्द रहना; कानमें टपक (कैल्के, मैग-म्यूर, फास) और पूर्णता मालूम होना। कानमें इस तरहका शब्द होना, मानो पानी खौल रहा है। कानमें सों-सों भों-भों शब्द।

मुखमण्डल ।—निद्रालु और जड़बुद्धिकी तरह मुखका भाव। दोनों ओंठ मानो गोंदसे जुड़ गये हैं।

मुख-विवर ।—निद्रितावस्थामें दाँत कड़कड़ाना और कटकट शब्द करना। मुँह और ओंठ सूखे। सफेद आभा लिये फेन-भरे, गाढ़ी और लसदार लार। बोली अस्पष्ट और तोतलानेकी तरह। गला सूख जाता है और ठण्डा पानी पीनेकी बहुत प्यास रहती है।

पाकस्थली ।—अधिक भूख लगना। भोजनसे पेटपर इतना दबाव मालूम होता है और श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है, कि रोगीको वाध्य होकर कमर ढीली कर देनी पड़ती है। अन्ननलीके निम्न-द्वारमें दर्द मालूम होता है; दबाने या रगड़नेसे आराम मिलता है।

मलनाली।—मूत्रनलीकी मुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना और कड़ापन (Prostatic Hypertrophy)—मलद्वार या विटप और उसका ऊपरी भाग (Perineum) में ऐसा मालूम होता है, मानो रोगी एक सामनेवाले गोलेपर बैठा हुआ है।

पेशाब।—हँसनेपर मूत्रग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है; मसानेमें दर्दकी वजहसे रोगी रातमें सो नहीं सकता। लिङ्गमुण्डको दबानेपर लारकी तरह श्लेष्माकी भाँति एक तरहका स्राव होता है। पेशाबके पहले, पेशाबके समय और पेशाब करनेके बाद मूत्रनालीके भीतर भयानक जलन और दाहकी तरह तकलीफ़। मूत्रनालीके भीतर सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द। पेशाबके समय बहुत देरतक बैठे रहनेपर पेशाब होता है (आर्निका)। अन्तके पेशाबकी कई बूंदें अंगुलीसे लिङ्ग-मुख उठाकर निकालना पड़ता है। पेशाब लसदार और श्लेष्मामय; बूंद-बूंद निकलता है (कैन्थ, क्लिमेट, कोना, कोपेवा, डालका, युफोर्बि, नक्स, पल्स, स्टैफ, कास्टि)। पेशाबकी धार मानो विभक्त होकर निकलती है (कैन्थ, रास)। जलन और यन्त्रणाके साथ गड़बड़ी मालूम होना और बार-बार पेशाबका वेग होना।

पुं-जननेन्द्रिय।—रमणके बाद कमरमें दर्द। लसदार लार-भरा श्लेष्मा निकलना। कामोन्माद (ऐसिड-पाई, हाइड्रोफोब, फास)। रमणके बाद बहुत देरतक लिङ्गके भीतर कनकनी हुआ करती है; यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्वास (Chordee—कैलि-ब्रोम, थूजा)। विटप-प्रदेशमें (Perineum) या मलद्वारके सामनेवाले ऊपरी भागमें सूजन मालूम होना; ऐसा अनुभव होना, मानो एक गोलेपर बैठा हुआ है (पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें लसदार मूत्रमय श्लेष्मा-स्रावके साथ—सिङ्कोना)। बार-बार लिङ्गोद्गमके साथ प्रबल रमणेच्छा।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजःस्राव—गाढ़ा, यन्त्रणा पैदा करनेवाला और बहुत ज्यादा होता है. परन्तु खून जमा हुआ नहीं होता। जरायु-शूल—इसके साथ ही अत्यन्त स्नायवीय अस्वाच्छन्द्य और अनिद्रा; बन्ध्यात्व (बोर, आरम-मूर-नैट)।

श्वासयन्त्र।—तरल श्लेष्माके साथ दमा रोग। छातीमें दबाव मालूम होनेके साथ श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी; सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना। खाँसी,—इसके

साथ ही ऐसा मालूम होना, मानो वक्षदेशके मध्यकी हड्डीकी नली खरोंची जा रही है। बहुत जोर लगाकर दीर्घ-निश्वास ग्रहण करना पड़ता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक रही है और पंखेसे हवा करनेको कहता है (कार्बो-वेज, लैके)।

हृत्पिण्ड।—ऐसा मालूम होता है, मानो बूंद-बूंद पानी गिर रहा है (माथेपर गिर रहा है या मलद्वार या हृत्पिण्डसे गिर रहा है—कैन-सैट), हृद्‌स्पन्दनकी वजहसे नींद खुल जाती है, हृत्पिण्डमें फाड़नेकी तरह तकलीफ़ और दबाव; नाड़ी बहुत धीमी रहती है (डिजि, कैलमिया, एपिस)।

प्रत्यङ्गादि।—एक कन्धेसे दूसरे कन्धेतक और मेरुदण्डमें दर्द मालूम होता है और इसी वजहसे रोगीको वाध्य होकर माथा झुकाये रहना पड़ता है—सीधा चल नहीं सकता। बाँहके ऊपरसे नीचेतक और जानुदेशसे नीचेकी ओर बराबर चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है। निचले अङ्गका पूरा-पूरा पक्षाघात। तलवे और टांगकी पोटली (Calves) में दर्द, कुछ दूर चलनेसे थक जाता है। दिनमें सोये रहनेकी प्रबल इच्छा।

त्वचा।—शीतसे तकलीफ़ मालूम होती है; शरीरके स्वाभाविक उत्तापका घट जाना। खानेके बाद हाथ, चेहरा और नाक ठण्डी मालूम होती है। बहुत ज्यादा परिमाणमें ठण्ढा पसीना और वह ललाटके किनारे बूंद-बूंदके आकारमें दिखाई देता है।

निद्रा।—बहुत औंघाई आती है, पर सो नहीं सकता। आकाशकी ओर हाथ उठाकर सोता है। दुरारोग्य अनिद्रा रोग। निद्रावस्थामें बात करता है और सोते-सोते हाथ-पैर पटकने लगता है और उससे नींद खुल जाती है। प्रत्येक बार निद्रावस्थामें श्वासरोध होनेका उपक्रम (Nightimare—ऐको, नक्स, ओपि, फास, पल्स, सिङ्को-रियुटा, साइलिसिया, सल्फ, वैलि)। कामोद्दीपक सपने (ओलियेन, ऐसिड-आक्स, थूजा, वायोला-ट्राई); लिङ्गमें उत्तेजना होना और बहुत ज्यादा वीर्य-क्षय होना। सपनेमें मुर्दा देखना (जखमी देहके सपने—आर्नि, कोना, नक्स)।

सम्बन्ध।—सदृश।—शब्दसे चेतनाकी अधिकता—ऐसिड-नाइट्रिक, काफिया (सब तरहके शब्दोंसे); बोरैक्स (सामान्य शब्दसे); मानो स्वप्न-

राज्यमें—ऐम्ब्रा, ऐनाकार्ड, कोना, कूप्रम, थेडा, स्ट्रैमो, जिङ्कम ; अन्धेरेमें डर—बेराइटा, कार्बो-ऐनि, कैल्के, फास, स्ट्रैम इत्यादि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम । डा० नैश, ऐलेन वगैरह विज्ञ चिकित्सकोंने २०० शततमिक क्रमतक व्यवहारकर विशेष लाभ उठाया है ।

कैनाबिस सैटाइवा

(CANNABIS SATIVA)

दूसरा नाम ।—गांजा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—युरोप या अमेरिकाका गांजा ; स्त्री और पुरुष दोनों जातियोंकी कलीसे मदर-टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उदरी ; दमा ; मोतियाबिन्द ; मूत्राधारका प्रदाह ; आँखमें सफेद दाग ; प्रमेह ; सरमें दर्द ; मूर्च्छावायु ; बालिकाओंका श्वेत-प्रदर ; नाकसे खून गिरना ; हृद्कम्पन ; पार्श्वमें दर्द ; फुसफुस-प्रदाह ; तोतलाना ; पेशाबके बाद रक्त-स्राव ; धनुष्टङ्कार ; स्वरनलीकी सर्दी ; मूत्रनलीका दूषित जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मूत्रयन्त्र, जननेन्द्रिय, फेफड़ा, हृत्-पिण्ड और स्नायुमण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया होती है ; इन सब यन्त्रोंपर इसकी असीम क्षमता प्रकट हुआ करती हैं । इसलिये प्रमेह, दमा, हृद्स्पन्दन वगैरह रोगोंमें इसका आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है । भोजनके बाद परिश्रम या बातचीत करने (स्टैन) या लिखनेपर रोगी बहुत सुस्त हो जाता है । उसे ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने उसपर गर्म पानी ढाल दिया है, मानो माथेके ऊपर और मलद्वार, पाकाशय और हृद्पिण्डसे (कैनाबिस-इन) बूंद-बूंद पानी गिर रहा है । भोजन आदिकी सामग्री निगलनेपर वह दूसरी राहसे चली जाती है (ऐनाक) । श्वास-रोगाधिकारमें केवल खड़े होकर श्वास-प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन करनी पड़ती है । मूत्रनलीसे मूत्राशयतक तेज़ जलन ; मूत्रनालीमें बेहद दर्द ; रोगी पैर फैलाकर चलता है ; मूत्रनालीसे पीवकी तरह स्राव और उद्दीपना ।

लक्षणावली

मन ।— विषाद-भरा । हमेशा चित्तमें उद्वेग और आशङ्का बनी रहती है । कहना कुछ चाहता है, मुँहसे कुछ दूसरा ही निकल जाता है । दोपहरको पहले तो उदास रहता है, पर तीसरे पहर आनन्दमें रहता है (ओपि) । लिखनेमें भूल करता है ।

मस्तक ।—खड़े होनेपर सरमें चक्कर आना (क्रोटन, साइक्लेम, ओलियेन, एसिड-फास, रियुम, स्क्रोफु, स्पाइजि) । इसके साथ ही चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, कि बगलमें गिर जायगा (कैन, कोना, ड्रोसेरा, युफोर, मेजि, रियुम, ऐसेट, स्क्रियुला, जिङ्कम) । शराब पीनेकी तरह उत्तेजना मालूम होना, मानो ढुलक पड़ेगा (आर्जेण्ट-नाई, बेल, कैम्फो, कैप्सि, चिनिन-सल्फ, जेल्सि, नक्स, ओपि, पल्स, रास) । माथेके ऊपरी भागमें भार मालूम होना और ऐसा मालूम होना मानो माथेपर ठण्डे पानीकी बूंदें गिर रही हैं (मानो बरफ है—कैल्के, वेरेट), ऐसा मालूम होना, मानो माथेकी त्वचामें सुरसुरी हो रही है ।

आँख ।—आँखका सफेद रङ्ग अस्वच्छ रहना (Opacity)—मोतियाबिन्द (फास, कोमल मोतियाबिन्द—कोलचि, युफ्रेशिया ; शेषावस्थामें—साइलिसिया ; सक्कस सिनेरेरिया मैरिटिमा ; आँखोंमें बूंद-बूंद डालनेसे बहुत फायदा होता है) । अन्धेरा देखना या अन्धकार दिखाई देना (बेल, साइक्लेम, युयोनिमस, मर्क, प्लम्ब) । आँखके गोलेमें पीछेकी ओरसे सामनेकी ओर दबाव मालूम होना । ठण्ड लग जानेके कारण आँखकी बीमारियाँ आदि (कैल्के-सल्फ), प्रमेह होना । विषकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (मर्क-कोर, हिप) ।

अन्त्राशय ।—तलपेटमें दर्द पैदा करनेवाला सङ्कोचन, मानो रह-रहकर पेटमें झटका दे देता है ; एक जगहसे दूसरी ओर हट जाता है, मानो कोई सजीव पदार्थ पेटमें हिल रहा है (ऐराण्डो, कैल्के-फास, क्रोकस, सैबाइना, सल्फ, थूजा ; माथेमें सजीव पदार्थ मालूम होना—पेट्रोल, साइलिसिया ; वक्षमें—क्रोकस, लिडम) । दुर्दमनीय कब्जियतकी वजहसे पेशाबमें रुकावट पैदा हो जाती है । मलद्वारमें सङ्कोचन ।

मूत्र-यन्त्र ।—प्रमेह,—नयी प्रदाह अवस्था—गौणावस्था,—पेशाबके बाद जलन ; स्राव गाढ़ा पीली आभा लिये और पीबकी तरह (कूबेब, नेट्रम-

सल्फ़, आर्जेण्ट-नाई)। मूत्रनलीके मुँहसे जलन पैदा करनेवाला काटनेकी तरह दर्द, यह पीछेकी ओरसे फैल जाती है, इसके बाद पीछेकी ओरके अंशमें पेशाब करनेके समय तेज़ सुई बेधनेकी तरह यन्त्रणा मालूम होती है। बीचमें फटनेकी तरह मालूम होना; दर्द टेढ़ी-मेढ़ी गतिसे चलता है। मसानेकी जगहकी खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द मालूम होना (जलन पैदा करनेवाला और डङ्क मारनेकी तरह—कैन्थ ; टपक-जैसा दर्द—रक्त और बहुत ज्यादा परिमाणमें लार मिला पेशाब—बार्बा, ओसिम ; शर्करा-मिला—युरेनियम-नाई)। मूत्रकृच्छ्रता—तकलीफ़ देनेवाला पेशाबका वेग और सिर्फ कई बूंद खून-मिला जलन-भरा पेशाब (कैन्थ, नक्स)। पेशाबके समय जलन, खासकर पेशाबके अन्तमें (कैन्थ, कैप्सि, ऐसिड-नाई); प्रमेह—पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव (मठाकी तरह सफेद आभा लिये स्राव—कैप्सि ; पीले रङ्गके पीबकी तरह—ऐग्नस ; हरा-पीला रङ्ग मिला स्राव—मर्क ; पतले हरे रङ्गका—थूजा)। मूत्रनली जखम-भरी मालूम होना (खून-मिला स्रावके साथ—कैन्थ)। लिङ्गमुण्ड और मेढ्रत्वक (Prepuce) का रङ्ग गहरा लाल दिखाई देता है। मेढ्रत्वक बहुत फूला हुआ ; मुद्रा (उलटी चमड़ी होनेका उपक्रम (थूजा, मर्क)। शिश्न (Penis) ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें जखम हो गया है—मानो जल रहा है ; चलनेमें बहुत दर्द मालूम होता है, इसीलिये रोगी पैर फैलाकर चलता है। अत्यन्त यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्वास (कैन्थर, ऐसिड-नाई, थूजा) ; रमणेच्छा बहुत प्रबल रहती है। मूत्राधारकी मुखशायी-ग्रन्थिका बढ़ना और कड़ापन (Hypertrophy of prostate—कैनाब-इन)। श्लेष्मा और पीब सञ्चय होनेके कारण मूत्रनलीका रोध हो जाना।

श्वास-यंत्र।—दमा या श्वास-रोग ; सीधे खड़े होकर सरल भावसे श्वास-प्रश्वास लिया करता है (केवल खड़े रहनेपर कलेजेमें कम्पन होता है—ऐगार ; सोनेपर श्वास-प्रश्वासमें सुविधा होती है—सोरिनम ; खड़े होनेपर श्वास-प्रश्वासमें व्याघात या तकलीफ़ होती है—फेलेन, सिपि ; बैठनेपर श्वासकृच्छ्रता—ऐल्यू, युफ्रे, डिजि, ड्रोसे, लैके, फास, सैम्बियु, वेरेट) ; सोनेवाली अवस्थामें श्वासकृच्छ्रता अर्थात् शयन किये रहनेपर श्वास-क्लेश (कैल्के, डिजि, लैके, नक्स, फेलेन, फास, सैम्बियु, सिपि) ; कोई चीज़ निगलनेके समय श्वास-नली रुकने या श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है ; निगलनेपर चीज़

दूसरी राहसे चली जाती है (ऐनाक) अर्थात् नासिका या श्वासनलीके बीचमें घुस जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है (पानीय द्रव नाककी राहसे बाहर निकल आता है—अरम, बेल, लैके, मर्क, पेड्डोल ; खाद्य आदि ऊपर चढ़कर नासागह्वरमें प्रवेश कर जानेका उपक्रम हो जाता है—साइलिसिया)। खाँसी—सूखी या लसदार हरे रङ्गके कफके साथ (कार्बो-वे, ड्रोसे, कैलि-बाई, लाई, मैग-कार्ब, नेट्र-कार्ब, पैरिस, फास,, पल्स, सिपि, स्टैन)। बार-बार सूखी और तेज़ खाँसी खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षस्थल टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है (ब्राई, मर्क)। बहुत जोरका भयङ्कर हृत्स्पन्दन (कैक, डिजि, स्पाइजि, वेरेट)। हृद्प्रदेशमें संघात या झटका मालूम होना (कास्टि, नक्स ; सुई बेधनेकी तरह मालूम होना—कैम्फि, कास्टि, क्रियो)। ऐसा मालम होना कि हृत्पिण्डसे बून्द-बून्द पानी गिर रहा है (जलन मालूम होना—ओपि, पल्स, वेरेट)। सवेरे वायुनलीके निचले भागमें ऐसा अनुभव हो, मानो गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा अड़ा हुआ है और बहुत चेष्टा करनेपर वह सरल होकर निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—मोच खा जाने बाद अंगुलियोंका संकोचन। सीढ़ी चढ़नेके समय जानु-फलकास्थि (Patella) अपनी जगहसे हट जाती है और दोनों पैर भारी हो जाते हैं। एँड़ीके नीचे और पैरकी अंगुलियोंकी तलीमें दर्द होता है या जखम हो जाते हैं।

सार्वाङ्गिक।—रातमें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो हजारों तेज़ सुइयाँ उसके शरीरमें सब जगह बिध रही हैं, असह्य कुटकुटाहट मालूम होना ; वृद्धि—गर्म ओढ़नेकी वजहसे पसीना निकलना ; घटना—ओढ़ना उतार देनेपर। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके शरीरपर किसीने गर्म पानी ढाल दिया।

वृद्धि।—सोने और सीढ़ी चढ़नेके समय।

सम्बन्ध।—सदृश।—दमाके सम्बन्धमें कैलि-नाइट्रिकम—सीधा होकर सो नहीं सकता ; प्रमेहके सम्बन्धमें—एपिस, कैन्थरिस, कोपैबा, क्यूबेब, नेट्र-सल्फ, थूजा और हिडाइ-सेरम।

शक्ति।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम। परन्तु इसके द्वारा प्रकृत होमियोपैथिक फल या लाभ प्राप्त करनेके लिये उच्च शततमिक क्रम व्यवहार करना चाहिये। २०० क्रमके व्यवहारसे भी खूब फायदा होता है।

क्रियाका स्थायित्व।—एकसे दस दिन।

कैन्थरिस वेसिकैटोरिया

(CANTHARIS VESICATORIA)

दूसरा नाम।—स्पेन देशकी एक तरहकी मक्खी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित कीड़ेसे मदर-टिञ्चर और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—लक्षणके अनुसार व्यवहार करनेपर यह नीचे लिखी बीमारियोंमें फायदा करता है:—मूत्राधारकी बीमारी; दाह या जले हुए घाव; उपझिल्ली प्रदाह; रक्तामाशय; अकौता रोग; शुक्रक्षय होना; उन्माद या प्रचण्ड प्रलाप; विसर्प; आँखोंका प्रदाह; पाकाशयका प्रदाह; प्रमेह; दादकी तरह उद्भेद या छाले; जलातङ्क; मसानेकी बहुत-सी बीमारियाँ; स्नायुशूल; कामोन्माद; डिम्बाधारका प्रदाह; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह; फुसफुसावरण प्रदाह; गर्भावस्थाकी बीमारियाँ; फूल अटक जाना; आरक्त-ज्वर; धातुका पतलापन; प्यास; गलेका जखम; जिह्वाका प्रदाह; मूत्रमें विकार; त्वचापर छाले पड़ जाना।

उपयोगिता और आभास।—जिनके किसी भी अङ्गमें स्पर्श सहन नहीं होता (चैतन्याधिक्य); जिनके नाक, मुँह, आँत या मूत्रयन्त्र आदिसे हमेशा रक्त-स्राव हुआ करता है, जिनके खाने-पीनेकी इच्छा नहीं रहती, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। मस्तिष्क, मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। शरीरके गह्वरमें तेज़ जलन पैदा हो जाना—यह सभी लक्षणोंका भित्ति-स्थान है। मूत्रनली और जननेन्द्रियके भीतर भयानक असह्य प्रदाह, जलन पैदा कर उनकी क्रियामें यह विकार पैदा कर देता है और मस्तिष्कमें इतना प्रचण्ड प्रदाह पैदा कर देता है कि रोगी एकदम भयानक उन्मत्त और ज्ञानसे रहित हो जाता है। इसके साथ ही पानी या कोई चमकीली चीज़ देखनेपर उसकी उन्मत्तता बढ़ जाया करती है तथा जलातङ्कके लक्षण आदि पैदा हो जाते हैं। पेशाबका वेग बार-बार होता है, पर पेशाब कई बून्दभर होता है और वे कई बून्दें भी खून मिली होती हैं। मूत्रनलीमें कतरनेकी तरह दर्द और यन्त्रणा तथा तेज़ जलन इसका निर्देशक लक्षण है।

इससे शरीरकी त्वचापर छोटी-छोटी, छालेकी तरह रस-भरी गोटियाँ या दाने पैदा हो जाते हैं और इसी गुणकी वजहसे इसे छाले पैदा करनेवाला कहते हैं। इसके द्वारा शरीरके दाहिने पार्श्वपर रोगका आक्रमण विशेष हुआ करता है (बैप्टि, बेल, आइरिस ; वाम पार्श्वमें—लैके)। आँतोंके निचले अंशके ऊपर भी इसका प्रचण्ड प्रकोप दिखाई दिया करता है। समूची देहमें छूना सहन नहीं होता। मुँह, नाक, आँतोंका पथ, जननेन्द्रिय और मूत्रनलीसे रक्तस्राव होता है। आगे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रधान निर्णायक लक्षणोंमें गिने जाते हैं :—(१) प्रचण्ड प्रलाप और उन्मत्तताकी वजहसे कभी रोगी चिल्ला उठता है और कभी कुत्तेकी तरह ऊँचे स्वरसे पुकारा करता है। (२) किसी चीज़के निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है। (३) कण्ठके भीतर खासकर उसके पिछले अंशमें इतनी जलन हुआ करती है मानो आग छू गयी है। (४) कण्ठद्वारके पिछले भागमें, विशेषकर दाहिनी गलग्रन्थिमें उपक्षत। यह सफेद रंगका और पपड़ीसे ढँका रहता है। (५) स्वरनालीमें आक्षेपिक सङ्कोचन—छूते ही सङ्कोचन पैदा हो जाता है। (६) ज्वालामयी तृष्णा, परन्तु सभी जलीय पदार्थोंकी इच्छा न होना। (७) ज्वालामयी तृष्णा, तेज़ ओकाई और खून मिले श्लेष्मामय वमनके साथ पाकस्थली और अन्ननालीके भीतर तेज़ जलन। (८) आमातिसार,—मल आँतके भीतरकी खरोंचकी तरह आँव मिला, खून-मिला, पाखाना हो जाने बाद सिहरावन और कम्पन मालूम होना, साथ ही काँखना पड़ता है। (९) मानो मूत्रकोषके गलेसे आरम्भ होता है, विटप या मलद्वारके पासवाले स्थानमें इसी तरहके दर्दके साथ आँतकी बीमारी। (१०) पेशाब खून मिला,—कभी माँड़की तरह या लसदार या सूत्रमय। (११) सारे-शरीरमें जलन। (१२) बार-बार पेशाबके वेगकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। (१३) भीतरी जलन और बाहरसे शरीर ठण्डा तथा चेहरा खूनसे रहित, उतरा हुआ। बार-बार पेशाबका वेग, पर पेशाब बूँद-बूँद निकलता है या प्रत्येक बार बहुत थोड़े परिमाणमें पेशाब होता है,—इसके साथ ही मूत्रनालीमें कतरनेकी तरह या जलन पैदा करनेवाली तकलीफ़, इसके साथ पेशाबके समय और पेशाब हो जाने बाद मूत्रनलीमें प्रबल सङ्कोचनकी वजहसे वृथा वेग।

लक्षणावली

मन।—बहुत बेचैनी, दाँत निकलनेके समय चेहरा लाल हो जानेके साथ एकाएक बेहोशी पैदा हो जाना ; प्रचण्ड विकार और उन्मत्तता पैदा हो

जाती है और क्षण-क्षणमें भयानक क्रोध प्रकट करता है, कुत्तेकी तरह शब्द किया करता है और सुश्रूषा करनेवालोंको मारना चाहता है; कोई चमकीली चीज़ देखने, कण्ठ-देशको छूने या पानी पीनेकी चेष्टा करनेपर उन्मत्तताका भाव फिरसे प्रकट हो जाता है। नाना प्रकारके कार्योंमें हस्तक्षेप करता है, पर पूरा किसीको भी नहीं करना चाहता। कामोन्माद; प्रेम विकार (हायो, ऐसिड-नाई)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—इसके साथ ही अँधेरा देखना या अन्धकार देखना (बेल, कैल्के, साइक्लाम, युयोनियस, मार्क, प्लम),—वायु-सेवनके लिये टहलनेके समय बढ़ जाना, सरके पिछले भागमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना (ललाटमें—डिजि, साइलिसिया, सल्फ, मूर्द्धादेशमें—इपिका; कनपटीमें—कैलि-कार्ब)। मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेशमें तेज दर्द; मुँदी हुई आँखोंके साथ भृकुटी चढ़ी रहती है, मानो बहुत तकलीफ़ हो रही है। मूर्द्धादेशमें छेदनेकी तरह दर्द, मानो कोई केशोंकी लट पकड़कर ऊपरकी ओर खींच रहा है (ऐको, ऐल्यू, सिङ्को, इण्डिगो, कैल्के, कास्टि, रास, सेलिन), केश झाड़नेके समय केश उड़ जाते हैं।

आँख।—आँख बाहर निकलने जैसी—मानो बाहर निकल पड़नेकी तैयारी हो रही है; मानो आँखसे आगकी चिनगारियाँ निकल रही हैं,—आँखोंमें बहुत ज्योति और टकटकी लगाकर देखना। सभी चीजें पीली मालूम होती हैं (सैण्टोनाइनम)। आँखोंमें जलन। हवा लगते ही आँखसे आँसू बहने लगना, इसलिये रोगी आँख बन्द किये रहता है और खोलनेपर पलकोंकी बगलके भागमें खाल उधड़ जानेकी भाँति दर्द होता है और स्पर्श सहन नहीं होता।

नाक।—नाकके ऊपरी भागमें विसर्प हो जानेकी तरह सूजन और प्रदाह, सूजन दोनों पार्श्वमें,—विशेषकर दाहिने गालमें फैल जाती है और अन्तमें खाल उधड़ने लगती है, नासारन्ध्रसे बहुत ज्यादा लसदार श्लेष्मा निकला करता है, छींक नहीं आती। स्वरभंगके साथ छातीसे यंत्रणादायक खाँसी पैदा हो जाती है और उसके साथ ही लसदार कफ़ निकलता है (बोर्वि, कैलि-बाई) और रातमें वायुनलीके बाहरी भागमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

कान।—ऐसा मालूम होता है मानो कर्ण-विवरसे वायु या गर्म हवा निकल रही है (मानो कानकी पश्चान्नलीमें हवा घुसनेकी आवाज़ आ रही है—ग्रफ)। कानके पीछेकी हड्डियोंमें दर्द (कैप्सि)।

मुखमण्डल।—चेहरा मलिन, यन्त्रणा प्रकट करनेवाला और मुर्देकी तरह रक्तहीन। मुँहके ऊपरके रसभरे दाने सब खुजलाया करते हैं और छू जानेपर उनमें जलन पैदा हो जाती है। विसर्प (Erysipelas), इसके साथ ही ज्वालामय विद्रकारी उत्ताप और पेशाबमें विकार पैदा हो जानेके लक्षण सब प्रकट हो जाते हैं। चेहरा गर्म रहता है और लाल हो जाता है। जबड़े अटक जाते हैं या दाँती लग जाती है (Lock-jaw); इसके साथ ही दाँत-पर-दाँत रगड़ता है।

मुँह और गलेके भीतर।—मुख-विवर, तालुमूल, अन्ननाली और पाकस्थलीमें बहुत जलन मालूम होती है (आर्स, आइरिस, नक्स; शीत मालूम होना—एसिड-हाइ, वेरेट-एल)। मुँह और तालुमूलका दाह और पतले जलीय पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (बेल, हायो; जलीय पदार्थके सिवा और कुछ भी नहीं निगल सकता—बैप, बेराइ, साइलिसिया; एक बून्द पानी भी नहीं निगल सकता—एपिस; जलीय पदार्थ निगलनेमें तकलीफ़ होती है और कड़ी चीज़ निगलनेमें तकलीफ़ नहीं होती—इग्ने)। फेनभरी और खूनभरी लार बहना (खूनभरी—आर्जेण्ट, आर्स, क्लिमेट, हायो, इग्डिगो, कैलि-हाइ, मैग-कार्ब, नक्स, रास, स्टैफ, सल्फ, थूजा; फेनभरा—बार्बा, ब्राइ, इयुजि, फेलैन, प्लम्ब, रैनान-क्लि, सैबाइ, स्पाइ, सल्फ; लसदार—आर्जेण्ट, बेल, बार्बा, कैफो, कैनाब, लोबेल; पानीकी तरह या रसकी तरह—ऐसे, क्रियो, लोबेल, मैग-मूर, पल्स, थेया; सफेद रङ्ग—ओलि-एन, रैनान-वाल, सैबाइ, स्पाइजि; पीला रङ्ग—रास); मुँहके भीतर रस-भरे दाने निकल आना (Vesicles—एमब्रा, बेराइ, कैल्के, कैप्सि, कार्बो-एन, कैमो, कैलि-कार्ब, मैग-कार्ब, मर्क, मेजेर, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, नक्स, रोडो, स्पंजि, स्टैफ, सल्फ)। गाढ़ा लसदार श्लेष्मा (बोवि, हाइ, कैलि-बाइ, कक्कस-कैक)। तेज़ अकड़न (Spasm), कण्ठको छूनेसे दुबारा आक्रमण हो जाता है। गलेमें प्रदाह होनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो जल रहा है। गलनलीका सङ्कोचन; मुँहमें जखम (हाइड्रैस्टिस-मूर, एसिड-मूर, एसिड-नाइ)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—आहारसे अरुचि। जलनभरी प्यास अथवा कोई भी जलीय पदार्थ खानेकी इच्छा नहीं रहती अर्थात् सभी जलीय पदार्थोंसे विराग पैदा हो जाता है। खाने-पीने अथवा तम्बाकू खाने—किसी बातपर भी रुचि नहीं रहती। पाकस्थलीका प्रदाह, उसके साथ ही ज्वालाजनक

असह्य यन्त्रणा (आर्स, नक्स, फास), पाकाशयमें बहुत दर्द और स्पर्श सहन न होना (ब्राई, मर्क, नक्स)। बहुत मिचलीके साथ भयानक वमन। रक्त और श्लेष्मा-वमन (ऐको, हिप, हायो, लैके, नाइट्रम)। यकृत-प्रदाह (ब्राई, मर्क-सोल), पाकस्थलीके अन्त्रद्वारमें प्रचण्ड जलन अनुभव होना। पेटके दर्दसे रोगी छटपटाया करता है। अन्त्रावरक झिल्लीका प्रदाह—भयानक जलन, इसके साथ ही अन्त्राशयको छुआ नहीं जा सकता और मूत्रस्थलीका संकोचन।

मल।—कब्जियत, इसके साथ पेशाब रुक जाता है (कैन-सैट) या बार-बार जलन और कतरनेकी तरह दर्द और दर्द होकर ही पेशाब होना; परन्तु पेशाब थोड़ा निकलता है। आरक्त (लाल)—सफेद आभा लिये या फीका लाल रङ्ग, लसदार आम-भरा मल, मानो आँतोंकी छाल या खरोंच मिला हुआ और खून-मिला (ऐसिड-कार्ब, कोलचि)। पाखाना होनेके समय आँतोंका शूल और मलद्वारमें जलन या कतरनेकी तरह तकलीफ़, इसी वजहसे रोगी चिल्ला उठता है, पाखाना होनेके बाद काटनेकी तरह आँतोंमें शूल और जलन, काटने या डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा और शीतका आवेग होना, मानो उसके शरीरपर कोई ठण्डा पानी ढाल रहा है। मलद्वार और मूत्रनलीसे केवल खूनका स्राव होना।

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग, परन्तु प्रति बार कई बून्दमात्र पेशाब होता है—वह भी खून मिला (कैनाब, कैप्सि; एकाएक पेशाबका वेग और मूत्रनलीमें खुजली—पेट्रो, सेल)। पेशाबके पहले, पेशाबके समय और पेशाब हो जानेपर (कैप्सि, ऐसिड-नाई); असह्य वेग और मूत्रस्थलीमें तेज़ दर्द। पेशाबके समय मूत्रनलीमें भयानक संकोचन और मूत्रकृच्छ्रता। मसाना या मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह, इसके साथ ही मसानेमें जलन, डङ्क मारनेकी तरह और छेदनेकी तरह दर्द (टेरिब; मूत्रवाहिनी शिराके भीतरसे पुट्ठे तक खींचनेवाला या तेजीसे फैलनेवाला तेज़ दर्द—कैनाब-इन; मसानेवाले प्रदेशमें कतरने या छेदनेकी तरह और टपकका दर्द—झुकनेपर बढ़ना—बार्बे)। प्रमेह—मूत्रनलीमें स्पर्श सहन न हो और खूनका स्राव होता हो (मठेकी तरह स्राव—कैप्सि; पीला, हरा या पीवकी तरह—मर्क, थूजा), पेशाब गदला और थोड़ा; रातमें काली आभा लिये और चावल धोये पानीकी तरह और सफेद रङ्गकी तली जमना; कभी-कभी मूत्रनालीमें शल्क, श्लेष्मा वगैरह मिला और अण्डलालमय; मलकी तरह; मूत्रनाली रोगमें पेशाबके साथ बहुत ज्यादा

परिमाणमें पीव मिला रहा करता है। खड़े होनेपर पेशाबका वेग बढ़ जाता है और चलनेके समय बहुत ही ज्यादा बढ़ जाता है, बैठ जानेपर घट जाता है (डिजि)। पेशाबकी धार दो भागोंमें विभक्त होकर और बहुत धीर वेगसे निकलती है। बहते हुए पानीकी आवाज़से पेशाबका वेग (कैरिका-पेपाया, लिसिन, सल्फ़)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातके समय खून-मिला शुक्र या रेतःपात हो जाता है (लेडम, मर्क, पेट्रोल, कास्टि ; जलकी तरह—सल्फ़)। स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही प्रबल रमणेच्छा रहती है और इसी वजहसे रातमें नींद नहीं आती है ; बहुत दर्दके साथ लिङ्गोच्छ्वास (ऐसिड-पाइ, क्रियो, फास, पल्स, सैबाइ)। शिश्नमुण्डमें दर्द (प्रूनस, पैरिरा) ; प्रमेह—बहुत ही तकलीफ़ देनेवाला लिङ्गोच्छ्वास और रमणेच्छाके साथ रेतोरज्जुमें खींचनकी तरह दर्द। अण्डकोषका ऊपरकी ओर खिंच जाना या ऊपर उठना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधार-प्रदेशमें श्वास-रोध करनेवाली सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना ; डिम्बाधार-प्रदाह,—कतरने या जलनकी तरह मालूम होना। मूत्रकृच्छ्रताके साथ फूल अड़ जाना (पल्स, सिकेल, सिपि) ; जरायुसे मरा हुआ भ्रूण ; परिस्रवके टुकड़े वगैरह बाहर निकाल देता है। कामोन्माद (ओरिगिन, हायो, प्लैट, टैरेन, कैल्के, फास, ग्रैटि)। प्रसवके बादका जरायु-प्रदाह,—मूत्रस्थलीके प्रदाहके साथ (ब्राइ, सिकेल, वेरेट-विरिड, हायो, सैबाइ)। ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी प्रकट होता है, बहुत ज्यादा और काले रङ्गका स्राव होता है (ब्राइ, कैम, इग्ने, नाइट्रम, प्लैट) ; योनिका बाहरी स्थान फूला रहता है और खुजलाया करता है। जरायुसे लगातार खूनका स्राव हुआ करता है ; ऊँचे-नीचे पैर पड़नेपर बढ़ जाता है (ऐम्ब्रा) ; मेरुपुच्छ (पीठकी रीढ़के नीचेवाला स्थान) में अस्त्रकी चोट या छेदनेकी तरह दर्द (साइक्यूटा ; बैठनेके समय दर्द मालूम होता है और चलने या छूनेके समय दर्द बढ़ जाता है—कैलि-बाइ)। प्रसवके बाद आक्षेप, मूत्रकृच्छ्रता और जलातङ्ककी तरह लक्षण होना (हायो, साइक्यू-विरोसा, ऐसिड-हाइड्रो)।

श्वास-यंत्र।—वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना, दाहिने पार्श्वमें (ऐमोन-कार्ब, आर्नि, बोर, कोलो) बढ़ना या पहले दाहिने या उसके बाद बाईं ओर (लाइ ; बाएँसे दाहिने पार्श्वमें—लैके) सञ्चारित होता है ;

दाहिने वक्षके नीचेसे वक्षोस्थिके मध्यस्थल और कुक्षिदेश (कोख) तक दर्द फैल जाता है। वक्षमें जलन (आर्स, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, इयुफोर्ब, ओलियैन, रास-रैड, सेनेगा, स्पञ्जि, सल्फ)। फेफड़ेको ढँकनेवाली झिल्लीके भीतर रसका क्षरण होना ; श्वासकृच्छ्रता या कलेजा धड़कना ; पेशाब परिमाणमें थोड़ा और मूर्च्छा आ जानेकी तरह हो जाना (कैमो, कैम्फो, सिङ्को, कोना, डिजि, जेल्सि, लैके, मस्कस, नक्स-वोम, वेरेट)। हृत्पिण्डके भीतर चींटी चलनेकी तरह दर्दके बाद सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। रसक्षरणके (Exudation) साथ हृत्पिण्डको वेष्टक झिल्लीका प्रदाह और जोर-जोरसे कलेजा धड़कना ; सिरस (Serous) झिल्लीका हो प्रदाह। फेफड़ेका प्रदाह (Pleuritis) और उनमें रस-क्षरण (ऐकोनाइटम, ब्रायोनियाके प्रयोगके बाद) हृदय-विदारक (कलेजा फाड़नेवाली) खाँसी और खून-मिला गाढ़ा लसदार श्लेष्मा-भरा कफ (डा० गार्नसी कहते हैं:—वायुनलीके रोगमें गाढ़ा लसदार श्लेष्माका निकलना लक्षण रहनेपर कैन्थरिस निर्देशक है (बोविस्टा, कक्कस-कैक, हाइड्रैस, कैलि-बाई)।

त्वचा।—जले हुए स्थानपर छाले उठनेके पहले लगा देना चाहिये। जखमोंका सड़ना (आर्स, सिङ्को, एचिनि, लैके, सिकेल, कार्बो-वेज)। जलन और खुजलीके साथ रसभरे दाने या छालेकी तरह उद्भेद (रास देखिये); विसर्प—रसभरी फुन्सियाँ (Vesicular) जातीय। (एपिसके विसर्पमें सूजन ज्यादा रहती है और कैन्थरिसके विसर्पमें रसभरे दाने ज्यादा रहते हैं ; मुँहका विसर्प आँख, कनपटी या मुँहसे आरम्भ होता है ; यदि छाला रहता है तो वह बहुत छोटा होता है—एपिस ; मुँहका विसर्प नाकसे आरम्भ होता है, आग छू जानेकी तरह जलन रहती है और बड़ी रस-भरी गोटियोंसे भरा रहता है—कैन्थरिस)। रातमें तलवेमें जलन होती है (ऐम्ब्रा, ऐनाक, कैल्के, एसिड-फास, सल्फ ; पैरकी अंगुलियोंमें जलन—ऐगार, ऐण्टि-क्रू, आर्नि, बोर, कैलि-कार्ब, ऐसिड-मूर, स्टैफ)।

ज्वर।—सविराम,—प्रत्येक बार प्रकोपके समय मूत्रकृच्छ्रता मौजूद रहती है ; दुर्दमनीय प्यास, हाथ और पैर बरफकी तरह ठण्डे ; परन्तु पैरके तलवेमें तेज़ जलन, पसीना ठण्डा। रातमें जलन करनेवाले उत्तापका प्रकोप, शीतावस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने शरीरपर बरफ ढाल दिया है ; बदन सिहर उठता है।

प्रत्यङ्गादि ।—बार-बार पेशाबका वेग, इसके साथ ही कमरमें दर्द। हाथ-पैरोंमें टूटनेकी तरह दर्द मालूम होना, पैरके तलवेकी त्वचाका क्षय हो जाना या ऐसा दर्द मानो जखम हो गया हो ; पैर पसार नहीं सकता।

दोषघ्न ।—कैम्फर, एपिस, कैलि-नाइट, एकोन, पल्स इत्यादि।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कक्कस कैक्टाई, एपिस, बेलेडो, ब्रायो, कैनाबिस, पेट्रो (एकाएक वेग) ; कैम्फ, पल्स (फूल अटकना), आर्स, थूजा, मर्क, सार्सा, अरम, आर्निका, रास इत्यादि।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे २०० शततमिक क्रम साधारणतः व्यवहृत होता है।

कैप्सिकम ऐनियुयम

(CAPSICUM ANNIUUM)

दूसरा नाम ।—मिर्चा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे बीज और और छालसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन या दृष्टिहीनता ; दमा ; मस्तिष्ककी उत्तेजना ; शराब पीनेकी वजहसे बीमारियाँ ; खाँसी ; अतिसार ; उपझिल्ली प्रदाह ; रक्तामाशय ; कानकी बीमारी ; ग्रन्थियोंकी सूजन ; फेफड़ेकी बीमारी ; सर-दर्द ; छातीमें जलन ; अन्त्र-वृद्धि (आँत उतरना); विदेशमें जाना या रहना अच्छा न मालूम होना; सविराम ज्वर; खसड़ा ; मुँहका जखम ; स्नायुशूल ; नाककी बीमारियाँ ; मोटापन ; अन्ननलीका सङ्कोचन ; पक्षाघात ; फेफड़ा और फुसफुसवेष्टका प्रदाह ; गर्भिणीकी बीमारियाँ ; मलान्त्रकी बीमारी ; आमवातिक रोग ; वात ; सन्धिवात ; गृध्रसी या पैरकी झुनझुनीका वात ; गण्डमाला ; पाकाशयका प्रदाह ; गलेका जखम ; जिह्वाका पक्षाघात ; स्वरनालीमें सुरसुरी ; पेशाबमें विकार ; क्रुप खाँसी।

उपयोगिता और आभास ।—भूरे केश, नीली आँखें, थोड़ेमें ही कातर हो जानेवाला, मोटे, पर शिथिल मांस-पेशीवाले मनुष्य, जिनके शरीरमें

रोगवाली अवस्थाओंमें दवाओंकी प्रतिक्रिया जल्द नहीं होती, जिनकी पाचन-शक्ति बिगड़ी रहती है, उनका कैप्सिकम परम बन्धु है। इन सब व्यक्तियोंकी पाचन-शक्तिमें गड़बड़ी रहती है या पाकाशय कमजोर रहता है, इसी वजहसे समूची देहमें कमजोरी मालूम होती है। बहुत अधिक क्रोधी स्वभाव, बिना कारणके ही इसके रोगीको क्रोध आ जाता है। बहती हुई हवा, वह गर्म हो या ठण्डी, शरीरमें स्पर्श करते ही अस्वस्थता मालूम होने लगती है। बहुत आलसी, परिश्रम नहीं करना चाहता। रोज़ गृहस्थी चलानेके लिये जो कुछ किया करता है, उससे बाहर किसी तरह भी जाना नहीं चाहता। ये सब मनुष्य प्रायः ही शीत और उत्तापके वशवर्ती रहा करते हैं। प्यास बहुत रहती है, पर पानी पीनेसे ही शीत बढ़ जाता है। सभी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें जलन और उसके साथ ही संकोचन पैदा हो जाया करता है। गलेके भीतर, अन्नपथ, मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रियपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। दूर-देशको जाना नहीं चाहता। आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षणके रूपमें गिने जाते हैं। चिड़चिड़ा, दुःखित, विदेशमें रहनेसे कष्ट मालूम होता है। (२) कानके पीछेकी हड्डीमें स्पर्श-असहिष्णु मालूम होती है। (३) कण्ठके भीतर गर्मी और जलन रहती है, मानो किसीने मिर्चा पीसकर लगा दिया है। अलिजिह्वा शिथिल और कण्ठ सूखा हुआ। बड़े जोरोंकी खाँसी—खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा और वक्ष टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। खाँसनेपर जांघ, नितम्ब, पैर और कान वगैरह कण्ठसे बहुत दूरके अंशमें झटका मालूम हुआ करता है। (४) ज्वराधिकारमें तीसरे पहर ४ से ६ बजनेके भीतर पीठ या दोनों कन्धोंके बीचके स्थानमें ठण्ड पैदा हो जाना; शीतावस्थाके पहले प्यास अधिक रहा करती है और पीठमें गर्म प्रयोगसे शीत घट जाया करता है।

लक्षणावली

मन।—दिल्लगीबाज, परन्तु सहजमें ही क्रोधित हो जाता है। गृह छोड़नेमें अत्यन्त कातर (आरम, मिनियैन, ऐसिड-फास, साइलिसिया, ब्राई, कैल्के-फास, युपेट, ओपि), इसके साथ ही अनिद्रा और आत्महत्याकी इच्छा। बच्चा कहना एकदम नहीं सुनता और शासन नहीं मानता तथा न तो कोई काम किया चाहता है, न कुछ सोचना चाहता है। अकेला रहना चाहता है (आर्नि, कार्बो-एन, ऐक्टिया, कोका, साइक्लैम, जेल्स, हेलिबो, इग्ने, लेडम,

मैग-मूर, आक्साइटो, रास, थूजा) ; अकेले रहनेमें बहुत डरता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, विस, क्लिम, कोना, केलि-कार्ब, लैक-कैन, लिलि-टिग, लाई, सिपि, स्ट्रैम, वेरेट, इलैप्स ; अकेला शय्यापर सोना चाहता है—कास्टि) ; हमेशा सोया रहना चाहता है और नींदमें पड़ा रहना चाहता है (ऐबिस-कैन, आर्जेण्ट, वेलिस-पे, नेट्र-कार्ब) ; मानो नशा खाया हुआ है, ऐसा मालूम होना (कैनाब, जेल्सि)। देखने, सुनने, छूने वगैरहकी शक्तिकी प्रखरता (तेजी न रहना—हेलिबो)। बहुत क्रोधी स्वभाव (कैम, काफि, नक्स)। शराब आदि पीनेकी उन्मत्तता (Delirium Tremens—नक्स, बेल, हायो, स्ट्रैमो)।

मस्तक।—सरमें दर्द, मानो माथा दो हो जायगा ; माथा हिलानेपर, घूमने या टहलनेके समय और खाँसनेपर वृद्धि। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाइट्रिकम देखिये)। सरमें तेज़ सलाई बेधनेकी तरह दर्द, स्थिर रहनेपर बढ़ना और हिलाने-डोलानेपर घटना। किसी तरहका मानसिक आवेग पैदा हो जानेपर चेहरा गर्म और लाल हो जाता है। खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा (खाँसनेपर सरमें दर्द हो जाता है—नेट्र-मूर ; सरके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है—सल्फ ; माथा हिलानेपर दर्द मालूम होता है—हिप)।

आँख।—आँखोंपर दबाव पड़ना ; सब चीजें काली दिखाई देती हैं—बेल ; पीली दिखाई देती है—कैन्थ, सैण्टो ; बहुत चमकीली और कितने ही रङ्गोंसे रंगी दिखाई देती हैं—ऐन-हेलो)। आँखोंमें जलन (आर्स, फास) ; आँख लाल और आँसुओंसे भरी (सिपि, युफ्रे)। क्षीण दृष्टि।

कान।—कानमें जलन (अरम, सल्फ) और डङ्क मारनेकी तरह तकलीफ़। कानके पीछेवाली हड्डीका प्रदाह और उसमें दर्द। कर्ण-विवरान्तर्गत (कानके छेदके भीतरवाली—Petrous-bone) हड्डीमें दर्द और खाल उधड़ जानेकी तरह स्पर्श सहन न होना। सर्दीकी वजहसे बहरापन (आर्स, कैल्के, कार्बो-वे, लिड, मर्क, पल्स)।

नाक।—सर्दी और बहुव्यापक सर्दी, इसके साथ ही बार-बार छींक और पतला श्लेष्माका स्राव (आर्स, सिपा, युफ्रे, साइक्लैम) ; नासारन्ध्रमें जलन (आर्स, केलि-कार्ब, मैन, ऐसिड-नाई, स्ट्रैम और खुजली (ऐमोन-कार्ब, ऐरम-ट्राई, ग्रैनेट, सैबाड, स्पाइजि) और रुखड़ापन मालूम होना, नासारन्ध्र और कण्ठमें गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चित होता है

गलेके भीतर ।—जिह्वामूलीय ग्रन्थिका प्रदाह, जलन और कुटकुटाहट, बहुत दर्द ; जलनके साथ कण्ठनलीमें संकोचन, गलेके भीतर प्रदाह, गाढ़ा लाल रङ्ग और सूजन ; घूंट लेनेके पहले और बाद गलेके भीतर जलन और सङ्कोचन मालूम होना बढ़ जाता है (इग्ने)। गलकोषमें उत्ताप मालूम होता है। गलेके भीतरसे कर्ण-पश्चान्नालीतक सूखापन और दर्द। तम्बाकू पीनेवाले और शराबियोंके गलेका जखम। अलिजिह्वा शिथिल मालूम होती है।

मुखमण्डल और मुख-विवर ।—स्नायुके भीतरसे दर्द सूतकी तरह चारों ओर फैल जाता है; जीभका जखम—जीभपर छोटी-छोटी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद, छूनेपर उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है (एपिस, कैल्के-फास, हेलिबो ; जलन-भरा—बेलेडो, कैलि-नाइ, टैराक्स ; दर्द-भरा—कैलि-कार्ब, लाई, मेन्सि, नक्स ; बोलनेपर सन्ध्याके समय दर्दका बढ़ जाना--प्लम्ब); मुँहका जखम (नेट्र-म्य), मुँहमें असह्य बदबू ; सड़ी गन्ध (ऐनाक, आर्स, अरम, कार्बो-वे, ब्राई, कैम्फोरा, डालका, आयोड, लाई, मर्क, नक्स, ऐसिड-फास, सिपि, सल्फ) ; ज्वरके शीताविर्भावके समय मुँहके भीतर बहुत ज्यादा दुर्गन्ध और कड़वी लार बहना ; खाँसनेपर फेफड़ेसे निकली हुई हवा मुँहका स्वाद एकदम कड़वा बना देती है।

पाकस्थली ।—पाकाशयमें श्लेष्मा और अम्लका सञ्चय होना, पाकाशय बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है, इसके बाद ही पाकाशयके भीतर कम्पन या जलन मालूम होती है और बीच-बीचमें तेज़ गन्धवाली डकार आती है। ज्वराधिकारमें पाकाशयमें गड़बड़ी या विकार पैदा हो जाता है। बहुत अधिक आध्मान वायु (Flatus) सञ्चय होता है, प्यास ज्यादा, परन्तु पानी पीने बाद शीतकी वजहसे कम्पन पैदा हो जाता है (आर्स, सिङ्को, ऐण्टि-टार्ट, वेरेट) ; पाकाशयमें शिथिलता पैदा हो जाती है—ऐसिड-सल्फ ; मिचली पैदा हो जाती है—नेट्रम-म्यूर, नक्स, पल्स, रास, टियुक्रि ; वमन उत्पन्न हो जाता है—आर्स, आर्नि, ब्राई, सिना, फेर, मेजिर, साइलिसिया, वेरेट ; उदरामय पैदा हो जाता है—आर्स, सिना, आर्जेण्ट-नाइट, ड्राम्बिड)।

अन्त्राशय ।—नाभीके चारों ओर शूल-वेदनाके साथ आम-भरा मल, कभी-कभी खून-मिला ; प्रति बार पाखाना हो आनेपर प्यास लग आती है और प्रत्येक बार पानी पीने बाद सिहरावन या कम्पन पैदा हो जाता है, प्रत्येक

बार पानी पीने बाद पाखाना लग आता है, परन्तु कुछ थोड़ी-सी आमभर निकलती है, आमरक्त। बवासीर, जलन-भरा, मानो मिर्चका चूर छिड़क दिया गया है; मलान्त्र या मूत्रस्थलीमें तेज संकोचन; गाढ़ा जमा हुआ रक्त मिला आम; पाखाना होनेके पहले काटनेकी तरह दर्द; पाखाना फिरनेके समय काँखना और अन्त्रावर्त्तन (मरोड़—पेचिश); पाखाना होने बाद काँखना, जलन, प्यास और कमरमें खींचनेकी तरह दर्द; बवासीर—फूला, खुजली और टपक जैसा दर्द-भरा; मलद्वारमें मानो जखम हो गया-सा मालूम होता है; मस्सेसे खून निकलता है या उसका रङ्ग नीला होता है और उससे श्लेष्मा निकला करता है; खून-भरा आम-मिला मल; कमरमें खींचनकी तरह और अन्त्राशयमें काटनेकी तरह तकलीफ़।

पेशाब।—मूत्रकृच्छ्रता—मूत्रस्थलीका संकोचन। मूत्रस्थलीके मुँहका आक्षेपिक संकोचन (कैंक)। पेशाबके समय जलन (कान्थि)। पेशाबके समय मूत्रनलीसे बहुत ही तकलीफ़के साथ खूनका स्राव होना (कैन्थरिस, टेरिब; किसी तरहका अस्वाच्छन्द्य या यन्त्रणा न रहनेपर—चिनिन-सल्फ; मसानेके स्थानपर धीमे दर्दके साथ—हैमा; चोटकी वजहसे होनेपर—आर्निका)।

पुं-जननेन्द्रिय।—ध्वजभङ्ग रोगाधिकारमें मुष्क (Scrotum) बहुत ही ठण्डा मालूम होता है। अण्डकोषमें जखम (Atrophy—आयोड)। यन्त्रणाजनक लिङ्गोच्छ्रास (Chordee) के साथ प्रमेह; मूत्रस्थलीकी मुखशायी ग्रन्थि (Prostate gland) में बहुत जलन; पीबकी तरह (ऐग) और खून-मिला, कभी-कभी मठेकी तरह स्राव, मूत्रनलीमें स्पर्श सहन न होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वयःसन्धिके समय (at Climaxis) जरायुसे रक्तस्राव और मिचली, बायें डिम्बाधार-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द।

श्वास-यंत्र।—हरेक बार तेज़ खाँसीके समय मुँहसे थोड़ा तेज़ बदबूदार वायु निकल जाता है; बलगम निकलता है, वह भी बहुत बदबूदार होता है। खाँसनेपर शरीरके दूर-दूरवाले अंशमें भी चोट पहुँचती है या दर्द होता है अर्थात् माथा, कान, मूत्रस्थली, जानु, पैर आदिमें दर्द होने लगता है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो साँस लेनेपर उसे तृप्ति नहीं होती, मानो फेफड़ेमें तृप्त करनेवाली हवा खींच नहीं सकता, बाध्य होकर लम्बी साँस लेनी पड़ती है; क्योंकि रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि मानो उससे

उसकी तकलीफ़ घट जायगी। बच्चा खाँसने बाद रोने लगता है (बेल, खाँसनेके पहले रोता है—आर्नि, ऐण्टि-टार्ट)। एकाएक खाँसी पैदा हो जाती है और खाँसनेके समय देह हिलने लगती है और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा। साथ ही ऐसा बोध होता है, मानो वक्षस्थल संकुचित होकर श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा कर रहा है। छातीमें टपककी तरह दर्द। सन्ध्याके समय, रातमें, सोनेके समय, गर्म पतली चीजें पीनेपर, सूखी, परन्तु ठण्डी हवामें या तेज़ हवा लगनेपर खाँसी बढ़ जाती है। नाक रुकनेके साथ स्वरभङ्ग और गलेमें रुखड़ापन मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—ज्वरमें शीत आरम्भ होनेके समय कमरमें भयानक यन्त्रणाजनक छेदनेकी तरह दर्द,—इतनी तकलीफ़ होती है, कि रोगी रोने लगता है और सामनेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है। दाहिने ऊरुके शिखरदेशमें या पुट्ठेमें अस्थिक्षय रोग और बायाँ पैर पतला होता जाता है। उसमें दर्द मालूम होता है। चलनेके समय ढलमलाया करता है। लेटकर सो जानेकी बहुत इच्छा; जरा भी परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं होती। ऊरुदेशसे जानु और जानुसे पैरतक तेज़ चलनेवाला तथा तीक्ष्ण छेदनेकी तरह दर्द; खाँसनेपर दर्द होता है। शरीरकी त्वचाके ऊपर कुटकुटी या जलन पैदा करनेवाली खुजलाहट मालूम होना।

ज्वराधिकारमें।—नाड़ीकी विषम गति और क्षणभरतक लोप हो जानेवाली या सविराम—रुक-रुककर। पीठमें जाड़ा और सिहरावन मालूम होना। सविराम ज्वर—पीठमें पहले शीत पैदा होता है, इसके बाद चारों ओर फैल जाता है (युपेटो, मर्क)। शीतावस्थामें प्यासकी अधिकता और प्रत्येक बार पानी पीनेके बाद शीतका बढ़ जाना और सिहरावन, इसके बाद ही बोखार या उत्तापका आविर्भाव, प्यास रह भी सकती है और नहीं भी रह सकती है। पानी पी लेने बाद शीतका बढ़ जाना (आर्स, सिङ्को, नक्स, टेरेक्स, वेरेट)। शीतकी वजहसे सिहरावन या कम्पन (ऐको, आर्स, ब्राई, कैमो, सिङ्को, इग्ने, इपिक, क्रियो, नक्स, रास, सैबाड, वेरेट)। शरीर जगह-जगहपर मानो सुन्न हो पड़ता है। जाड़ा लगनेपर पीठमें गर्म प्रयोग करनेपर घट जाता है।

निद्रा।—स्वप्न-भरी नींद। आधी रातके बाद नींद नहीं आती है। निद्रावस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसी ऊँची जगहसे गिर रहा है और इसी वजहसे चौंक उठता है।

वृद्धि ।—खाने-पीने बाद, घरके बाहरकी हवामें और शरीर खोल रखनेपर ; रातमें विश्रामके अन्तमें, पहली बार शरीर हिलानेपर ।

घटना ।—भोजनके साथ, गर्म प्रयोगसे और लगातार बहुत देरतक शरीरको हिलाते रहनेपर ।

सम्बन्ध ।—क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे या व्यवहारके बाद ज्वर आदिमें विशेष उपयोगी है। सविराम ज्वरमें इसके बाद सिना विशेष लाभदायक है। कैप्सिकमका **प्रतिविष**—सिना, कैलेडियम, सिङ्कोना, कैम्फोरा, सल्फ़-ऐसिड ।

तुलनीय ।—एपिस, आर्निका, बेलेडोना (सर-दर्द); ब्रायोनिया (खाँसी इत्यादि), कैलेडियम, कैन्थ, पल्सेटिला । एपिस और बेलेडोनामें, पर कैप्सिकमकी तरह संकोचन पैदा करनेवाली और जलन करनेवाली तथा कुट-कुटानेवाली तकलीफ़ नहीं होती । सोरिनम, लैकेसिस, नेट्रम, साइलिसिया, फास-ऐसिड, प्लैटिना, हेलिबो, रास इत्यादि ।

शक्ति ।—तृतीय दशमिकसे ३० शततमिक क्रमतक । कोई-कोई कहता है—शराब पीनेके कारण उन्मत्ततामें (Delirium Tremens) दूधके साथ कई बून्द मूल अर्क मिलाकर पीना उचित है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—७ दिन ।

कार्बो ऐनिमेलिस

(CARBO ANIMALIS)

दूसरा नाम ।—जान्तव अङ्गार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ६x और इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; रक्तार्बुद ; क्षुधामें विकार ; वक्ष या स्तनका कर्कटोया जखम ; मोतियाबिन्द ; कब्जियत ; खाँसी ; मुँहके फोड़े ; सड़नेवाले जखम ; ग्रन्थियोंका बढ़ना

और कठिनता ; बवासीर ; सरका दर्द ; कड़ापन ; स्तन पिलानेका दुष्परिणाम ; प्रदर ; कमरका दर्द ; नाककी बीमारियाँ ; कानका स्राव ; क्लोम-ग्रन्थि ; पैन्क्रियाकी बीमारी या कड़ापन ; पसीनेका परिवर्त्तन ; पार्श्व वेदना या फेफड़ेको ढँकनेवाली झिल्लीका प्रदाह ; पालिपस या बहुपाद रोग ; आँखोंका स्नायुशूल ; जीभकी बीमारियाँ ; गलनालीकी बीमारी ; जखम ; जरायुका कैन्सर या कर्कटीया क्षत ; दृष्टि-शक्तिमें विकार इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—वृद्ध और बहुत तरहका रोग भोगनेकी वजहसे जो जीर्ण-शीर्ण हो गये हों, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है, खासकर यदि उनकी शिरामें (Veins) ज्यादा खून सञ्चय होनेका लक्षण रहें, ऐसे रोगियोंकी त्वचा प्रायः नीला रङ्ग लिये हो जाती है ; सामान्य कारणसे भी उनके हाथ-पैर नीले हो जाते हैं और त्वचाके भीतरसे नीले रङ्गकी फूली हुई शिराएँ दिखाई दिया करती हैं । बहुत सामान्य कारण होनेपर भी वे बीमार पड़ जाया करते हैं । उनके दोनों गाल नीले हो जाते हैं । परिपाक यन्त्रके विकारमें और स्तनमें दूध सञ्चय होनेकी अवस्थामें जीवनी रसके क्षय हो जानेके कारण पैदा हुई बीमारियोंमें भी यह उपयोगी है । जिनकी गांठें फूल जाती हैं, ऐसे धातुओंमें भी यह विशेष लाभदायक है । बगल और पुट्ठेकी गांठें सब फूल जाती हैं और लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं, खासकर जिनके शरीरमें प्रमेह या उपदंशका विष मौजूद है । फेफड़ेका अन्तर्वेष्ट-प्रदाह आराम हो जानेपर वक्षमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना—यह लक्षण मौजूद रहनेपर इससे बहुत फायदा दिखाई दिया करता है (कैलि-कार्ब)। सन्धियाँ सब बहुत कमजोर, सामान्य परिश्रमसे ही उनमें दर्द पैदा हो जाता है । सूखी ठण्डी हवा अच्छी न लगना भी इसका एक निर्देशक लक्षण है ।

लक्षणावली

मन ।—सवेरे नींद खुलनेपर रोगी स्थिर नहीं कर सकता कि वह सोया है या जागा । उसमें पर्यायक्रमसे आनन्द और विषाद पैदा होता है, अकेले एकान्तमें रहनेकी इच्छा (आर्नि, कैप्स, ऐक्टि, कोक, साइक्लोम, जेल्सि, हेलिबो, इग्ने, लेडम, सैग-मूर, हायो, आक्साइ-ड्रोप, रास, थूजा), हमेशा कुछ सोचा करना ; बोलनेसे चिढ़ ; रातमें मानसिक उद्वेग और रमणेच्छाकी प्रबलता,—इतनी अधिक रहती है कि रोगीको शय्यासे उठकर बैठ जाना पड़ता है ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना और मस्तिष्ककी जड़ता,—उठ बैठनेपर अर्द्ध-शायित लेटी हुई अवस्थामें आराम मालूम होना, इसके साथ ही मिचली, सरमें दर्द, मानो शिरमें बवण्डर जैसी हवा बह रही है, (शिरके भीतर मानो आँख घूम रही है—चिनिन-सल्फ़ ; मानो हवा बहती है—अरम, कोरैल, पल्स)। मानो माथेमें कुछ हिल रहा है (ऐको, बेल, नक्स-मस, नक्स-वोम) ; मानो माथा फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया है (इथ्यू)। रोगीको रातमें उठकर माथा पकड़कर बैठ जाना पड़ता है। ऐसा मालूम होता है, मानो भवोंकी जगहपर कुछ लगा हुआ है, इसी वजहसे ऊपरकी ओर देख नहीं सकता। सरमें चक्कर आने बाद नाकसे खूनका स्राव (सल्फ़),—नित्य सवेरे दो चार दिन ऐसा ही होता है। नाकके अगले भागमें मसे (थूजा)। श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी—कह नहीं सकता, कि किस ओरसे आवाज़ आ रही है (बड़े कष्टसे मनुष्यकी आवाज़ सुन सकता है—आर्स, फास, साइलिसिया, सल्फ़)।

पाकाशय ।—गलेमें जलन मालूम होना। ऐसा मालूम होना, कि समूचे गलेके भीतर और अन्ननालीसे उदरके ऊपरी प्रदेशतक खाल उधड़ गयी है ; निगलनेपर बढ़ता नहीं है। लगातार एक-पर-एक बहुत देर पहले खाई हुई चीज़की डकार आती रहती है, अम्लकी वजहसे छातीमें जलन,—पाकाशयसे ऊपरकी ओर उठती है, रोगी भोजन करता-करता क्लान्त हो पड़ता है पाकाशय खाली मालूम होता है। मेदमय या चर्ब्बी मिली चीजें खानेकी रुचि नहीं रहती। मुँहसे खट्टी लारका स्राव ; मुँहमें पानी भर आना। पेट फूलना, उदरमें वायु-संचय होना और इसी वजहसे व्याकुलता मालूम होना।

सरलान्त्र और मल ।—बवासीर,—बहुत सूजन पैदा हो जाती है और चलनेके समय जलन और डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। मलद्वारमें जखम हो जाता है और उससे गन्धहीन लसदार स्राव निकलता है। स्पर्श सहन नहीं होता ; मलद्वारमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होता है,—ऐसा मालूम होता है मानो मलद्वारमें जखम हो गया है। मलद्वारका फटना (Fissure ani—पियोनिया, एनाई, रैटेन)—इसीके कारण असह्य जलन।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु होने बाद रोगिनी इतनी कमजोर हो जाती है, कि बात नहीं कर पाती या बोलनेमें उसे बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (ऐल्यू, काक्यु) ; केवल सवेरेके समय ऋतु-स्राव होता है (बोवि, सिपि,

केवल रातमें या सिर्फ सवेरे—बोवि ; केवल दिनमें,—सोनेपर बन्द हो जाता है—कैक, कास्टि, लिलि-टिग ; केवल रातमें या सो जानेपर—चलनेके समय बन्द हो जाता है—मैग-कार्ब ; रातमें बन्द रहता है, दिनमें स्राव होता है—कास्टि ; दिनमें अधिक स्राव—पल्स ; सिर्फ सोनेपर स्राव होता है, बैठने या चलनेपर बन्द हो जाता है—क्रियो ; केवल शरीर हिलानेके समय स्राव होता है—लिलि-टिग)। बहुत सुस्त करनेवाला प्रदर, कपड़ेमें पीले रङ्गका दाग पड़ता है (नक्स, प्रूनस ; आर्त्तव-स्राव—पहले दिन थोड़ा, दूसरे दिन बहुत ज्यादा, रक्त गाढ़ा लाल—ब्राई, कैप, फेर, इग्ने, नाइट्रम, प्लैट, पल्स)। गर्भावस्थामें मिचली, रातमें बढ़ना (ऐपोमार्फिया, क्रियो, ऐसिड-कार्बो)। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव, बहुत बदबूदार (बेल, क्रियो, रास, सिकेल)। स्तनमें कर्कट, अर्बुद बहुत कड़ा असमतल ; आवरक त्वचा शिथिल ; जलन-भरी, उसपर मैल-भरे नीले दाग सब दिखाई देते हैं। कक्ष या बगलकी ओर खींचन मालूम होना ; रातमें पसीना और विमर्ष भाव ; दाहिने स्तनकी बीमारी। जरायुका कर्कट रोग ; उरु-देशके पथसे जलन नीचेकी ओर फैलती है।

श्वास-यन्त्र।—फेफड़ेका प्रदाह—पीब सञ्चय होना ; कफका रङ्ग हरा, फुसफुस-वेष्ट-झिल्लीका प्रदाह (Pleurisy), बहुत दिनोंतक रहनेवाला, शरीरकी त्वचा पीली, दुबलापन, मांस-क्षय, इसके साथ ही विलेपी ज्वर (साथ ही मोहका लक्षण मिला ; आराम हो जानेपर तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द ; बाकी रहनेपर—कैलि-कार्ब, रैनान)। स्वरभङ्ग और गलेके भीतर खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होना, सवेरे सोकर उठनेपर स्वरभङ्ग (बोविस्टा, कार्बो-वेज, नक्स); सन्ध्याके समय बढ़ना (कार्बो-वेज, फास) और रातमें एकदम गला बैठ जाना ; सूखी खाँसी,—केवल रातमें, दाहिनी करवट सोनेपर, छातीमें घड़घड़ आवाज़ होती है ; जबतक खाँसकर थोड़ा श्लेष्मा न निकाल दिया जाये। सवेरे उठनेपर तेज़ खाँसी—प्रायः समस्त दिन रहती है ; खाँसनेपर पेट हिल उठता है और ऐसा मालूम होता है, मानो पेटके सब यन्त्र आदि बाहर निकल पड़ेंगी। इसीलिये रोगिनी खाँसनेके समय बैठकर दोनों हाथोंसे तलपेट पकड़कर दबा रखती है। फेफड़ेमें जखम पैदा हो जाता है और शीत मालूम होता है। हरे रङ्गका बलगम (कैनाब, कार्बो-वेज, कैलि-आई, लाई, पल्स, स्टैन)। खानेके बाद या सवेरे शय्यासे उठनेपर कलेजा धड़कना, इसी कारणसे आँख बन्दकर चुपचाप बैठ जाना पड़ता है।

ग्रन्थि-मण्डली।—गला, बगल और पुट्ठे तथा स्तनकी ग्रन्थियाँ कड़ी, फूली और दर्द-भरी हो जाती हैं, इसमें अस्त्रकी चोटकी तरह या जलन करनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है (कोना, मर्क-प्रोटो, आयोड, बेडियेगा), बिना विषका पीव भी विषैला या क्लेद-भरा हो जाता है। व्रध्न या बाघी बहुत फूल जाती है और कड़ी हो जाती है (बैडि)। बाघी फूटकर जखमका मुँह खुल जाता है और थोड़ा-सा आराम होकर, बाकी अंश लोहेकी तरह कड़ा तथा नीली आभा लिये हो जाता है (लैक, टैरेण्ट, कूरंब)।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ-पैरकी सन्धियाँ सब साधारण-सा भारी पदार्थ उठानेके समय भी दर्द करने लगती हैं या मोच खा जाती हैं (लेडम); जरासेमें ही गुल्फ-सन्धिमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है या हड्डी खिसक जाती है (नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, फास, रियुटा)। गुल्फ-सन्धि बहुत क्षीण, चलनेके समय घूम जाती है (ऐङ्गस, सिङ्को, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यू, ओलि-ऐन, साइलिसिया, रास-रैड)। ज्यादा परिश्रम करने या भारी चीज़ उठानेपर बहुत सुस्ती मालूम होने लगती है। मेरुदण्डका अन्तिम सिरा (मेरुपुच्छ) कमरके पिछले तलदेशसे छू जानेपर जलने लगता है, चलनेके समय पैरकी पीटली (Calves) में बहुत खींचन मालूम होती है। सवेरे ८ बजेतक दोनों पैर बरफकी तरह ठण्डे रहते हैं।

त्वचा।—भूरे रङ्गका व्रण, चेहरेपर लाल बिन्दुकी तरह उद्भेद (हाइड्रोकोट, आर्स, आयोड, रास)। रातके समय बहुत ज्यादा और बदबूदार पसीना (बेप्ट, सिङ्को); रक्त-सञ्चालनकी क्रियामें बाधा पड़ती है और सञ्चालन क्षीण भावसे होता है; जहाँतक सम्भव होता है, शरीरका उत्ताप घट जाया करता है, समूचे शरीरका रङ्ग नीला हो जाया करता है (ऐण्टि-टार्ट, कार्बो-वेज)। जखमसे सहजमें ही खून निकलने लगता है तथा ताँबेके रङ्गके दाने निकल आते हैं। पसीना लगनेपर वस्त्र आदिमें पीला दाग पड़ जाता है (फेर, ग्रैफ, मर्क, थूजा, वेरेट; रक्तमय दाग पड़ जाता है—लैके, नक्स, लाल दाग पड़ता है—आर्नि, डालका, नक्स; कपड़ेमें पसीना सूख जानेपर कड़कड़ाता है—मर्क, सेलिन)।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—(विशेषकर ग्रन्थि रोगके सम्बन्धमें) कैल्केरिया-फास।

सदृश।—कड़ापन और पीब पैदा होनेमें—बैडि, ब्रोम; रस-रक्त क्षय—चायना, कार्बो-वेज, कोना, मर्क-प्रोटो, आयोड, फास, सिपिया, सलफर।

सड़ी मछली वगैरह खानेके कारण बीमारीमें—कार्बो-वेज, सिपा—इसके सदृश है। काक्युलसकी तरह कमजोरी ; सरमें चक्कर आना—पल्स और साइलि ; नाकसे खून गिरना—सलफर ; जलनमें—कैप्सिकम ; सवेरेके समय भूख—ऐण्टि-क्रूड, कैल्के।

दोषघ्न।—आर्स, कैम्फर, नक्स-वोम।

शक्ति।—तृतीय दशमिकसे ६ठीं, ३०, २०० शततमिक।

क्रियाका स्थायित्व।—६० दिन।

कार्बो वेजिटेबिलिस

(CARBO VEGETABILIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—उद्भिद अङ्गारसे विचूर्ण ६x तक, इसके बाद अर्क।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अम्ल-रोग ; मुँहासा ; हृत्शूल ; स्वरभङ्ग ; क्षीण-दृष्टि ; दमा ; स्तनमें कर्कटका जखम ; श्वासनली-प्रदाह ; दाह ; दूषित फोड़ा ; सर्दी ; हैजा या कालरा ; कब्जियत ; खाँसी ; बहरापन ; कमजोरी ; अतिसार ; डकार ; आध्मान ; सड़नेवाले जखम ; रक्त-स्राव ; अर्श (बवासीर) ; केश झड़ जाना ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएञ्जा) ; सविराम ज्वर ; स्वरनलीका प्रदाह ; फेफड़ेमें रक्त-सञ्चय ; छोटी माता ; कर्णमूल-प्रदाह ; नाकसे रक्तस्राव ; अन्ननली और अण्डकोषका प्रदाह ; कर्ण-स्राव ; गर्भावस्थाकी बहुत-सी बीमारियाँ ; कच्छू या खसड़ा ; शीताद (Scurvy) ; कम्प ; नींदमें गड़बड़ी ; पाकस्थलीकी बीमारी ; पाकाशयका प्रदाह ; मुँहका जखम ; गलनालीका सूखापन ; उदराध्मान (पेट फूलना) ; टाइफस या मोह ज्वर ; पीत-ज्वर ; बहुत तरहके जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बहुत दिनोंतक नाना प्रकारके रोग भोगनेके कारण जिनका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है (सिङ्कोना, कैल्के-फास, फास, सोरिनम), जीवनी-शक्तिका मानो ह्रास हो गया हो। जो पहले रोगसे

आरोग्य होने बाद एक दिनके लिये भी अच्छे नहीं रहते ; बचपनमें छोटी माता या क्रुप खाँसी आदिके बादसे अबतक जो दमाकी बीमारी भोग रहे हैं ; कभी किसी दिन शराब पीकर आनन्द मनाया था, पर आजतक उसके परिणाम-स्वरूप मन्दाग्नि रोग भोग रहे हैं ; कभी बचपनमें शरीरके किसी अंशमें चोट लग गयी थी ; पर अबतक स्वास्थ्यमें विकार या गड़बड़ी भोगनेमें आती है और आंत्रिक ज्वर (Typhoid) हुआ था ; पर आजतक पहले जैसा स्वास्थ्य न हुआ—ऐसे रोगियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। विसूचिका इत्यादि रोगोंकी सुस्ती-वाली अवस्थामें जब दस्त कै आदि बन्द हो जाते हैं और हाथ-पैरोंमें ऐंठन शुरू हो जाती है और रोगी मुर्देकी तरह पड़ा रहता है,—प्रतिक्रियाका चिन्हतक नहीं दिखाई देता ; रोगीका चेहरा रक्त-हीन, दोनों ओंठ नीले, देह बरफकी तरह ठण्डी, यहाँतक कि श्वास भी ठण्डी हो जाती है, परन्तु माथा गर्म, नाड़ी प्रायः नहीं मिलती या सूतकी तरह क्षीण रहती है और रोगी बराबर पंखा झलनेके लिये कहता है और कमरेकी खिड़कियाँ आदि खोल देनेकी इच्छा प्रकट करता है, उस अवस्थामें यह संजीवनी सुधाकी तरह रोगीको फिरसे जिला देता है। इसके द्वारा सभी श्लैष्मिक झिल्लीमय द्वारोंसे रक्तस्राव होता है (सिंको, फास) ; क्विनाइनके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारियोंमें और क्विनाइनसे रुके हुए सविराम ज्वरमें, पारा, नमक और नमकीन मछली-मांस आदि तथा सड़ी मछली, मांस खाने तथा बहुत गर्मी लग जानेकी वजहसे जो बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं (ऐसिड-क्रूड), उनमें यह बहुत ही उत्कृष्ट लाभ दिखाता है। लक्षणके अनुसार चुनी हुई दवाएँ सब बार-बार प्रयोग करनेपर भी यदि रोगीके शरीरमें प्रतिक्रियाकी कमी दिखाई दे तो यह एक उत्कृष्ट दवा है। इसके कुछ प्रधान निर्णायक लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं—अग्निमान्द्य, पेट फूलना, श्वासकृच्छ्रता, वायु छूटनेपर आराम मिलना, पाकाशयमें जलन, पीठ और मेरुदण्डतक यह जलन फैल जाती है। पेटसे पीठतक मानो चिपक जाता है, इसके साथ ही पेट फूलना। सड़ी या बदबूदार डकार ; मुँहमें पानी भर आना। खाया हुआ पदार्थ पचनेके पहले ही सड़ने लगता है। पेटमें वायुके कारण आँतोंमें शूलका दर्द ; मलका पतलापन, अनजानमें ही पाखाना हो जाना ; मलमें सड़ी गन्ध ; पाखाना होने बाद मलान्त्रमें जलन और बहुत कमजोरीकी वजहसे देह कुछ काँपा करती है। सन्ध्याके समय स्वरभङ्ग ; छातीमें खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होता है ; इसके साथ ही छातीमें जलन ; वृद्ध

मनुष्योंका दमा ; छोड़ी हुई साँस शीतल और रोगी पंखेसे हवा करनेके लिये कहता है। फेफड़ेके प्रदाहकी कुचिकित्साके बाद बहुत ही बदबूदार बलगम निकलना। आर्त्तव-स्रावके पहले गाढ़ा हरे रङ्गका प्रदर-स्राव। शरीरकी त्वचाकी खुजली ; पुराने जखम सब आराम नहीं होना चाहते और उनमें जलन हुआ करती है, साथ ही उनसे रस बहा करता है ; पीठका फोड़ा।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्तिकी क्षीणता ; जड़-बुद्धि। रातमें भूतका भय। सभी विषयोंमें उदासीनता ; बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव, अन्धकारमें बहुत डर मालूम होता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—बिना कुछ पकड़े खड़ा नहीं हो सकता और न बैठ ही सकता है ; माथा झुकानेपर (बेल, नक्स, पल्स, सल्फ़, ब्राई, लाई, पेट्रोल) बढ़ना ; पेटमें वायु सञ्चय होनेकी वजहसे (कैलि-कार्ब) सरमें चक्कर आना ; सरमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे ; शराब पीनेके कारण (ऐगार) सरमें चक्कर आना ; माथेमें बहुत भार मालूम होना, मानो माथेमें सीसा भरा हुआ है। माथेकी ओर खूनका दौरान होना, नाकसे खून गिरना। मूर्द्धदेशमें दबाव मालूम होना और केशोंके छूनेपर दर्द मालूम होता है, माथेके पिछले भागमें तेज़ दर्द। केश झड़ जाता है। माथेपर टोपी रहनेसे बहुत भार मालूम होता है और टोपी उतार देनेपर भी ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कपड़ेसे बँधा हुआ है (ऐसिड-नाई, कैल्के-फास, नेट्र-कार्ब)।

नाक।—दो सप्ताहतक रोज़ दो-तीन बार रक्तस्राव होता है, रक्तस्रावके पहले और बाद चेहरा उतर जाता है और बदरङ्ग हो जाता है (चेहरा लाल हो जाता है—मिलिलोट) ; नासारन्ध्रमें बार-बार खुजली ; सुरसुरीके साथ लगातार छींकें आते रहना।

मुखमण्डल।—चेहरा एकदम उतरा हुआ या पीला ; आँख और गाल गड़हेमें धँसे, नाक उठी और नुकीली ; ठण्डा, पसीना ; मुँह ठण्डा, जीभ ठण्डी और संकुचित। मुँह और हनुकी अस्थियोंमें दर्द।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—दाँतोंकी जड़ बहुत शिथिल रहती है, मसूढ़े सब दाँतका जड़से अलग हो जाते हैं और कभी-कभी मसूढ़े से

खून निकला करता है। जीभ सफेद आभा लिये; पीली-भूरी श्लेष्मा-भरे लेपसे चढ़ी; सीसेका रङ्ग या नीला रङ्ग, लसदार और तर; इसके अलावा कहीं सूखी और फटी-फटी; मुँह सूखा, पर उसमें प्यास नहीं रहती (बेल, नक्स-मस)। गाढ़ी लसदार लेईकी तरह बहुत ज्यादा लार बहना, गलेमें संकोचन मालूम होता है (बेल, हायो); गलेमें बहुत शीतलता मालूम होना (लोरो; जलन मालूम होना—आर्स, कैन्थ)। गलेमें कर्कशता और पानी लग जानेकी तरह मालूम होना।

पाकाशय। - रोगी वही खाना चाहता है, जिससे बीमार हो जायेगा। बूढ़े शराबी शराब पीनेकी इच्छा प्रकट करते हैं, कमरका कपड़ा ढीला या अलग कर देते हैं (लाई, नक्स); अग्निमान्द्य; बहुत हलकी चीजें भी नहीं पचतीं; पाकस्थली और अन्त्राशयमें बहुत अधिक परिमाणमें वायु-सञ्चय होता है; सोनेसे बढ़ जाता है; खाने-पीने बाद ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली फूल जायगी; बहुत ज्यादा खाने-पीनेपर, देरसे खाने या पकी चीजें आदि खानेकी वजहसे बीमारियाँ; डकार आनेपर थोड़ी देरके लिये घट जाता है। भूख-प्यासका ज्यादा रहना। मांस और चर्बी मिला या मेदमय पदार्थोंसे अनिच्छा (इच्छा बनी रहे—ऐसिड-नाई, नक्स)। मुँहका स्वाद तीता या नमकीन, खाई हुई चीजें बहुत नमक मिली मालूम होती हैं (सिपिया)। सड़ी गन्ध मिली डकार, खाने बाद फिर भूख मालूम होना (फास, स्टैफ); यकृतमें चोट लगनेकी तरह दर्द, मानो किसीने कसकर पकड़ लिया है (लाई); स्तन पिलानेवाली माताकी छातीमें जलन (Incarcerated flatus); ऊपर मुँह उठाकर सोनेके समय और चलनेके समय पाकाशयमें खट्टापन मालूम होता है। पाकाशयमें बहुत भार मालूम होता है, मानो फूल गया है (ऐगार, ड्रपिका, स्टैफ, टैब)। मुँहमें पानी भर आना। आध्मान वायु सञ्चय होनेकी वजहसे दमाकी तरह श्वास-प्रश्वास; पाकाशयमें ऐंठनकी तरह दर्दके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है, पाचन-क्रिया बहुत देरसे होती है, अतएव खाये हुए पदार्थ पच जानेके पहले ही सड़ जाते हैं।

अन्त्राशय।—पेट फूलनेकी वजहसे शूलका दर्द। ऐसा मालूम होना, कि अन्त्राशय फट जायगा। मूत्रस्थलीके स्थानपर या उदरके ऊपरी प्रदेशमें बाईं ओर ज्यादा दर्द मालूम होना; थोड़ा भी खानेसे दर्दका बढ़ जाना, वायु त्याग

होनेपर या कड़ा मल निकलनेपर आराम मालूम होता है। आध्मानकी वजहसे पेटमें गड़गड़ाहट होती है, बदबूदार या बिना किसी गन्धकी डकार आती है। पेटमें दर्द रहता है, मानो भारी चीज़ उठानेकी वजहसे दर्द हो गया हो; बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार वायु निकलता है।

सरलांत्र, मलांत्र और मल।—अनजानमें बार-बार बहुत ज्यादा और बदबूदार पाखाना होता है और उसके बाद ही जलन होती है; कोमल मल भी बड़ी कठिनतासे निकलता है (ऐल्यू, हिपर)। मलमें कड़ापन—मल बहुत कड़ा, लसदार और परिमाणमें थोड़ा निकलता है। अर्श—स्पर्श सहन नहीं होता, खुजलानेवाला और रस-स्रावी; मसा बाहर निकल आता है, नीलापन लिये रहता है; पीन पैदा होनेवाला और बदबूदार; जलन, मलान्त्रमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। पाखाना होनेके समयके अलावा और समय भी मलान्त्रमें दर्द हुआ करता है। यह दर्द चबाने-जैसा दर्द मालूम होता है; खुजलाहट, मानो क्रमि हो गई है, ऐसा उदरामय—कड़ी या बहुत दिनोंकी बीमारियोंके बाद; शरीरकी बहुत ही उष्णावस्थामें कुलफी बरफ या बरफका पानी पीनेके कारण पाकाशयमें ठण्ड पैदा होकर पतले दस्त आने लगना या सड़ी मछली, मांस आदि खानेकी वजहसे उदरामय; मल भूरा, पानी-जैसा और लसदार; क्षय रोगके रोगी या वृद्ध मनुष्योंकी बीमारी।

पुं-जननेन्द्रिय।—कर्णमूल संचालित होकर अण्डकोषमें सूजन (पल्स)। अनजानमें रेतस्खलन हो जाना—कोई भी सुख नहीं मालूम होता। पाखाना होनेके समय प्रोस्टेटिक ग्रन्थिसे रस-स्राव (इस्कुई, ऐल्यू, कास्टि, ऐनाक, हिप, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, साइलिसिया, सल्फ, थूजा); मुष्कके पार्श्वके उरुदेशमें स्वेदका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत ज्यादा होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है; खून गाढ़ा, कषायगुण-विशिष्ट और उसमें तेज़ गन्ध होती है (एमोन-कार्ब, नेट्रम-सल्फ, सल्फ, बहुत देरसे, बहुत थोड़ा स्राव, उनका गुण कसैला, उरुदेशको त्वचाको क्षय करनेवाला—कैलि-कार्ब, सार्स, सल्फ); प्रदर—स्राव सबेरेके समय होता है, स्राव बहुत कषाय, योनिपथकी त्वचा मानो क्षय हो जाती है (आर्स, कोना, क्रियो; सबेरे स्राव होता है—बोवि, सिपि, कार्बो-ऐनिम)।

श्वास-यंत्र।—स्वरभङ्ग, सन्ध्याके समय (कार्बो-ऐन, फास); वृद्धि—जलीय तर सन्ध्याकी हवामें, ऊँचे स्वरसे गाने या पढ़नेके समय स्वरलोप (Aphonia); (सवेरे वृद्धि—कास्टि, युपेट); बहुत देरतक स्थायी। हिचकीके साथ क्षुद्र आक्षेपिक खाँसी (खाई हुई चीज़ वमन करनेके साथ—डिजि, फेरम, रास)। केवल सवेरेके समय कफ़ निकलता है; निकलनेवाला श्लेष्मा हरा बदबूदार पीबकी तरह (साइलिसि, स्टैन); खून-मिला कफ़ और वक्षमें आग छू जानेकी तरह जलन और उसके साथ ही खाँसी। खाने-पीने बाद या बात करनेपर खाँसीका बढ़ना (एक घूंट ठण्डा पानी पीनेपर घटना—कास्टि, कूप्रम; ठण्डा पानी पीनेपर वृद्धि—ऐसिड-सल्फ़, डिजि, वेरेट, ऐमोन-म्यूर, साइलिसि, स्क्वियुला; किसी तरहका पानीय पीनेपर खाँसी—आर्स, ब्राई, ड्रोसे, लैके, सिङ्को, मिफाई-पियुटी; भोजनके बाद खाँसी—ऐनाक, बेल, ब्राई, कैम, सिङ्को, डिजि, नक्स-वोम, ओपि; बोलनेपर—ऐनाक, कास्टि, लैके, मैङ्ग, मिफाई, मर्क, फास, स्टैन, वेराई, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-म्यूर; वक्ष और वायुनली-भुजमें श्लेष्माका शब्द या घड़घड़ साँयसाँय शब्द (इपिका, ऐण्टि-टार्ट, नेट्र-म्यूर)। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचवाले प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह मालूम होना। रोगी निर्मल हवाके लिये हमेशा लालायित रहता है और जोरसे पंखा झलनेके लिये कहता है (धीरे और दूरसे हवा करनेके लिये कहता है—लैके); फेफड़ेके प्रदाहकी (Pneumonia) भी सांघातिक अवस्था, जब ऐण्टि-टार्टके प्रयोगसे भी रोगीके फेफड़ेमें जमा हुआ पतला श्लेष्मा निकल नहीं सकता और रोगीका शरीर नीला हो जाता है और फेफड़ेका पक्षाघात होनेकी सम्भावना हो जाती है, उस समय कार्बो वेजिटेबिलिसके प्रयोगसे आश्चर्यजनक फल दिखाई देता है।

प्रत्यङ्ग।—कमरके पीछेवाले स्थानमें बहुत तेज़ दर्द, इसी वजहसे रोगिनी बैठ नहीं सकती। उसे ऐसा बोध होता है, मानो कमरमें कोई खील ठोकी हुई है और कमरके नीचे तकिया रखे बिना सो नहीं सकती। कोहनी (Elbow) में बहुत दर्द, मानो मोच खा गई है (मानो सन्धि भ्रष्ट हो गई है—ब्राई, रियुटा), निचली बाँह और कलाईमें संकोचन या उत्पाटन (उखाड़ने) की तरह दर्द। हाथ-पैरोंमें ज्यादा शीत मालूम हो जानेकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है और जानुदेश इतना ठण्डा हो जाता है कि उसे अच्छा नहीं मालूम होता (एपिस, डैफनी, मर्क, रैफिनस; ऊरुदेशमें ठण्डक मालूम

होना—मर्क, नक्स ; पैरको अंगुली ठण्डी—ऐको, सल्फ)। प्रत्यङ्गोंमें भार, अकड़न और सुन्नपन मालूम होता है। तलवा अकड़ जाता है (कैल्के, आस्टि, सिकेल, सल्फ)। पैरका सुन्न मालूम होना (आर्नि, लैके, नक्स, पल्स और बदबूदार—कैल्के, लाई, मर्क, ऐसिड-नाई, सल्फ)।

त्वचा।—खुजली ; वृद्धि—सन्ध्याके वक्त शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म होनेपर। वार्द्धक्य-सुलभ पूति-जनन-प्रवणता (Tendency to Gangrene), पैरको अंगुलीसे आरम्भ होता है, शय्याक्षत (आर्नि, हाइपेरि, पाइरोजिन)। सहजमें ही खून निकलने लगता है (फास)। शरीरकी क्षीणताकी वजहसे केश उड़ जाना। दुरारोग्य जलन-भरा जखम। बदबूदार और रस-भरा पीबका स्राव। शिराके फूलनेकी वजहसे जखम आदि। विषैले फोड़े (Carbuncles—आर्स, ऐन्थ्रैक्सिनम)।

ज्वर।—शीतावस्थामें प्रायः प्यास मौजूद रहती है ; साधारणतः संध्याके समय शीतका आविर्भाव होता है और कभी-कभी शीत केवल बाएँ पार्श्वमें मालूम होता है (कास्टि, लैके, रास, थूजा ; दाहिने पार्श्वमें—ब्राई, पैरिस)। शीतावस्थामें शरीर बरफकी तरह ठण्डा। उत्ताप ज्वालामय—सन्ध्याके समय और बिना प्यासका। विलेपी ज्वर (Hectic) उत्ताप और पसीना मिला। रातमें पसीना या सवेरे पसीना—बहुत सुस्त करनेवाला, थोड़े भी परिश्रमसे बहुत ज्यादा पसीना हो जाता है, विशेषकर माथे और मुखमण्डलमें। पसीना बहुत ज्यादा, बदबूदार और खट्टी गन्ध-मिला।

सम्बन्ध।—**अनुपूरक**।—कैलि-कार्ब, फास्फोरस, चायना, ड्रोसे।

दोषघ्न।—आर्स, कैम्फ, काफिया, लैकेसिस, डाल्का, फेरम।

तुलनीय।—लाइकोपोडियम, कार्बो-ऐनिमेलिस, लैके सिकेलि, नक्स-वोम, सिपिया, रस टक्स, रियुमेक्स, ग्रैफाइटिस और रैफिनस।

सदृश।—तुच्छीकृत और पुराने शराबियोंके फेफड़ेके प्रदाहमें (सिङ्कोना और प्लम्बम) पतला श्लेष्मा निकलनेके अभावमें और पक्षाघातका उपक्रम होनेपर ऐण्टि-टार्टके बाद कार्बो-वेज आश्चर्यजनक लाभ दिखाता है। जिन फोड़ोंसे सामान्य कारणसे भी खून निकलने लगता है, वैसे जखमोंमें कार्बो-वेजके बाद फास्फोरसका व्यवहार करना चाहिये और तेज़ गन्धवाले आर्त्तव-स्रावमें

सलफर उपयोगी है। सड़ी मछली खानेकी वजहसे यदि बीमारी पैदा हो जाये तो सिङ्कोना, लैकेसिस, मर्क्युरियस, कार्बो-वेजिटेबिलिस सदृश दवाएँ हैं।

वृद्धि। — पनीर, मेदभरी मछली आदि और सड़ी मछली आदि खानेसे, क्विनाइन, सिङ्कोना और पाराके अपव्यवहारसे; ऊँचे स्वरसे गानेपर, पढ़ने या वक्तृता देनेके समय; गर्म अथवा जलीय वायुमें।

उपशम।—डकारसे, तेजीसे पंखेसे हवा करनेपर और निर्मल वायु सेवन करनेपर।

शक्ति।—१२वींसे २०० शक्ति पर्यन्त। पाकस्थलीकी स्थानिक बीमारीमें निम्नतम क्रम व्यवहार करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व।—६० दिन।

कार्बोनियम

(CARBONEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लेमनकी चिमनीसे संग्रह किये हुए झोलसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आक्षेप, गलेका जखम, कब्जियत, धनुष्टङ्कार, जीभमें खींचन वगैरहमें उपयोगी है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—कार्बो-ऐनि, कार्बो-वेज, कार्बो-हाइड्रो, कार्बो-आक्सि, नक्स, इथूजा और इग्नेन्शि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति विचूर्ण।

कार्बोनियम हाइड्रोजेनिसेटम

(CARBONEUM HYDROGENISATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारसे अर्क या तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—संन्यास ; आँखमें अकड़न ; धनुष्टङ्कार ; हूप खाँसी ।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें चक्कर आनेके साथ कानमें नाना प्रकारकी भ्रम-भरी आवाज़ सुन पड़ना (Auditory Vertigo), अपस्मार या मृगी, धनुष्टङ्कार और विसूचिकाकी तरह पाखाना-पेशाबके लक्षण पैदा करता है । यह मानव-देहमें प्रवेश करनेपर बेहोशी और बहुत सुस्ती पैदा करता है और सारे अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें अकड़न पैदा कर देता है ।

लक्षणावली

मन ।—सभी विषयोंमें बहुत अधिक सन्तोषका भाव और अपने जीवनको बहुत सुखमय और उन्नत समझता है । सवाल करनेपर धीरे-धीरे उपयुक्त भावसे उत्तर देता है (धीरे-धीरे उत्तर देता है—हेलिबो, मर्क, फास, ऐसिड-फास ; संबद्ध ठीक-ठीक उत्तर देता है—आर्नि, ऐसिड-फास ; जल्दीसे उत्तर देता है—ऐक्टिया, सिना, रास) । एकदम बेहोश ; प्रगाढ़ मोह ।

मस्तक ।—सरमें बहुत चक्कर आना । ललाट और दोनों आँखोंके भीतरी प्रदेशमें असह्य तकलीफ़ । सरमें चक्कर आना, घरके बाहरकी हवा लगनेसे आराम मिलता है ।

आँख ।—गड़हेमें धँसी ; अधमुँदी ; एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक आँखें घूमा करती हैं । आँखकी पुतली फैली हुई रहती है या संकुचित रहती है और आँखसे दिखाई नहीं देता ; ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके सामने काली-काली चीजें उड़ रही हैं । टकटकी लगाकर देखना ।

मुखमण्डल ।—कानमें भों-भों सों-सों शब्द । चेहरा या तो गहरा लाल या मैला हो जाता है, नीला रङ्ग, रक्तहीन, आँखें गड़हेमें धँसी और पलक तथा दोनों ओंठ नीले । मुँहकी भावभंगी बिगड़ी हुई । दोनों जबड़े कसकर सट

जाते हैं या दाँती लग जाती है (Trismus)। मुँहसे फेन निकलता है, कभी-कभी खून-मिला फेन निकलता है (फेन—ऐग, बेल, कैम्फो, साइक्यु, कुप्रम, हायो, लोरो, स्ट्रैम, विरेट ; खून-मिला फेन—सिकेल, स्ट्रैम)।

मल ।—पतला, चावल सिझाये पानीको तरह। पाखाना और पेशाब अनजानमें निकल जाता है। बार-बार पतला पाखाना होता है और गाढ़े रङ्गका श्लेष्मा मिला बाहर निकलता है।

श्वास-यन्त्र ।—फेफड़ेके नीचेवाले अंशमें श्लेष्माके बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज़ निकलती है। श्वास-प्रश्वास लेनेके समय छातीमें घड़घड़ शब्द होता है। फेफड़ेमें अधिक रक्त-सञ्चय होना। छातीमें दबाव मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हाथ-पैरका सुन्न मालूम होना ; हाथ-पैर एकाएक फैल (Stretched) जाते हैं और काँपा करते हैं और एकाएक कोहनीके नीचेका हाथ मुड़कर पैरपर आ गिरता है और ताक़त लगाये बिना फैलाया नहीं जा सकता। शरीरकी त्वचाका रङ्ग सफेद हो जाता है और शिरा सब काली मालूम होती हैं। हाथ-पैरोंके नीचेवाला अंश बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है। शरीर लसदार और बहुत ज्यादा पसीनेसे भरा, बड़ी-बड़ी पसीनेकी बून्दें शरीरके कितने ही स्थानोंमें विशेषकर माथेमें पैदा हो जाती हैं।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—क्लोरोफ, ईथर, ऐमिल-नाइट।

सदृश ।—साइक्युटा, सिकेल, स्ट्रैम।

शक्ति ।—प्रथम दशमिकसे ३रा दशमिक क्रम।

कार्बोनियम आक्सिजेनिसेटम

(CARBONEUM OXYGENISATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पानीमें गलाकर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अकड़न ; सरमें दर्द ; दादकी तरह विसर्प ; पक्षाघात ; गृध्रसी ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना।

उपयोगिता और आभास।—धनुष्टङ्कार, अपस्मार या मृगी वगैरह आक्षेपिक रोगोंपर इसकी उत्कृष्ट क्रिया होती है। शीत लगना, निद्रालुता और बेहोशी वगैरह इसके क्रियाफल हैं। शरीरकी त्वचापर भी इसकी क्रिया दिखाई देती है; गोल आकारका विसर्प (Herpes Zoster) या (Shingles) और पोड़ा नारङ्गा (Pemphigus) इससे उत्पन्न हुआ करता है।

लक्षणावली

मन।—रोगी एकदम अचैतन्य अवस्थामें रहता है और यन्त्रणा-सूचक शब्द (कराहना) किया करता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—चक्कर खानेकी तरह घूमनेकी इच्छा। सरमें चक्कर आना। हमेशा और लगातार सरका दर्द, बहुत दर्द, ललाट और कनपटीमें टपकका दर्द।

आँख।— दृष्टि स्थिर और चेतना-रहित। अधखुली (कैमो, इपिक) और टकटकी लगी दृष्टि, सरमें चक्कर आनेके साथ धुँधली दृष्टि; दृष्टिके सामनेके पदार्थ सब मानो काँपा करते हैं।

कान।—ढं-ढं और नाना प्रकारकी भ्रमपूर्ण आवाजें सुन पड़ना। कानमें अस्वाच्छन्द्यजनक भों-भों सों-सों आवाज़।

मुख।—रक्तहीन और छूनेपर गर्म मालूम होता है। लाल और फूला हुआ। हनुस्तम्भ (जबड़े अटकना), जीभ सुन्न। रातमें भोजनके बाद मुँहके भीतर इतना लसदार श्लेष्मा इकट्ठा होता है, कि थूकनेके समय वह ओठमें चिपक जाता है। सभी चीजें बेस्वाद मालूम होती हैं।

पाकाशय।—कण-भर खानेपर भी कै हो जाती है (आर्स); पेशाबमें चीनी मौजूद रहती है।

श्वासयन्त्र।— वायुनलीभुजसे (Bronchi) खूनभरा श्लेष्मा निकलता है। श्वास-प्रश्वास आवाज़के साथ—घड़घड़ साँय-साँय शब्द। किसी तरहका भी परिश्रम करनेपर भयानक हृत्स्पन्दन पैदा हो जाता है। हृत्पिण्डकी क्रिया बहुत धीरगति और क्षीण।

प्रत्यङ्गादि।—ऐसा मालूम होता है मानो हाथ-पैर आदि सुन्न हो गये हैं और हिला-डोला नहीं जाता। सभी सन्धियाँ अकड़ी-सी मालूम होती हैं

और हाथ-पैरोंमें अकड़न पैदा हो जाती है और वे खिंचते और फैलते हैं। हाथ-पैरोंमें दर्द और इसके बादका पक्षाघात। दोनों पैर इतने क्षीण हो जाते हैं, कि शरीरका भार वहन नहीं कर सकते।

त्वचा।—शरीरकी त्वचामें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता, परन्तु गर्म लौह-शलाका द्वारा कुछ भी स्पर्श करनेसे यह शक्ति फिरसे पैदा हो जाती है। समूची देहकी त्वचा नीलिमा लिये या नीले दाग रहते हैं, विशेषकर मुखमण्डल, गर्दन और हाथका पिछला अंश। गात्र-त्वचाकी स्थिति-स्थापकता घट जाती है (सिङ्की, आयोड, सिकेलि, वेरेट),—इसीलिये, शरीरके किसी भी अंशका मांस चुटकीसे उठाकर छोड़ देनेपर बहुत देरतक ऊँचा बना रहता है और फिर धीरे-धीरे मिलकर पूर्वावस्थाको प्राप्त हो जाता है। शिराकी राहसे रस-भरे दाने निकलते हैं (कैन्थरिस); कटिबन्ध या गोलाकार विशिष्ट विसर्पिका रोग, पीड़ा नारङ्गा (नयी अवस्थामें—रास-टक्स; पुराना होनेपर—आर्स; उपदंश दोषकी वजहसे उत्पन्न होनेपर—मार्क-कोर)—छोटे बड़े सब तरहके छाले निकलते हैं, दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं।

निद्रा।—गम्भीर निद्रा।

सार्वाङ्गिक।— चेतनाके साथ ही आक्षेप (इपिका, कैलि-कार्ब नैट्र-म्यू,—बेहोशीके साथ—बेल, साइक्यू, क्यूप्रम, हायो, इग्ने, इपिका, लैके, ओपि, स्ट्रैम, स्ट्रान, वेरेट)। प्रति पाँच मिनटका अन्तर देकर आक्षेप पैदा हो जाना, बेहोशी और बोल न सकना (क्यूप्र, प्लैट), इसके साथ ही माथा पीछेकी ओर खिंच जाता है अर्थात् बहिरायाम आक्षेप (Opisthotonos—ऐङ्गस, बेल, हैम, साइकि, क्यूप्रम, इग्ने, इपिका, मस्क, स्ट्रैन, ओपि, रास); दोनों बाँह अकड़े और फैले (ऐङ्गस, ब्राई, कैम्फो, इपिका, मस्क, ओपि, प्लैट, सिकेल, स्ट्रैम); मृगीकी तरह आक्षेप—बेल, कास्टि, कैम, साइक्यू, इग्ने, नक्स, प्लैट); रोगीको छूनेपर (ऐङ्गस, बेल, कक्कु, स्ट्रैम) या उससे बोलनेपर आक्षेप फिर पैदा हो जाता है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, वेरेट), यद्यपि रोगी उस समय स्थिर भावसे रहता है और बाहरसे बेहोशकी तरह मालूम होता है। सारे शरीरका अवसाद।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बेल, कैन्थ, साइक्यूटा, सिकेल, हायोसा, स्ट्रैम, आर्स ।

तुलनीय ।—कार्बो, हाइड्रो ।

शक्ति ।—पहलेसे तीसरा दशमिक क्रम ।

कार्बोनियम सल्फ्युरेटम

(CARBONEUM SULPHURATUM)

दूसरा नाम ।—ऐलकोहल सल्फ्युरिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अर्क, सुरासारमें गलाया जाता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे; क्षीण-दृष्टि; रक्ताल्पता; संन्यास; दाह; ग्रन्थियोंका फूलना; गलगण्ड; वात; छातीमें जलन; अर्द्धाङ्ग पक्षाघात; आँतका बढ़ना या आँत उतरना; दादकी तरह उद्भेद; नाना प्रकारके चर्म्म रोग; कच्छु; यकृतकी बीमारी; स्मरण-शक्तिका गायब हो जाना; कर्णनाद रोग; मस्तकके भीतर नाना प्रकारकी आवाज़ मालूम होना; बढ़नेवाली पेशियोंका सूखापन; आमवात; कटिवात; इसके बाद झुनझुनीवाला वात; धनुष्टंकार इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायु-प्रान्तका प्रदाह (Peripheral Neuritis—अर्थात् स्नायु सबके अन्तिम भागमें प्रदाह रहनेपर) और आँखके लक्षण सब भी अतीव प्रयोजनीय हैं । श्रवण-शक्ति पैदा करनेवाले स्नायु-प्रान्तके प्रदाहकी वजहसे सरमें चक्कर आना और उसके साथ ही कानमें नाना प्रकारकी भ्रम-भरी आवाजें सुन पड़ना और दर्शन स्नायुके प्रान्त भागके प्रदाहकी वजहसे नाना प्रकारकी भ्रमपूर्ण चीजें दिखाई दिया करती हैं । इसके अलावा भिन्न-भिन्न इन्द्रियोंकी स्नायु क्रियाके विकारकी वजहसे ध्वजभङ्ग; हाथ-पैरोंमें संवेद या स्पर्श-शक्तिका घट जाना; गृध्रसी या कटि स्नायु-शूल वगैरह रोग भी इससे पैदा हो जाया करते हैं ।

लक्षणावली

मन ।—स्मृतिका क्षीण हो जाना, यह स्थिर नहीं कर सकता कि क्या कहना होगा। बहुत बकवाद करना। बहुत अनमना और पढ़े हुए विषय सहजमें ही समझ नहीं सकता। नाना प्रकारकी भ्रमभरी चीजें देखना (कैम्फो, डिजि, हायो, स्ट्रैम, लप्यूलस) और भ्रम-भरी बातें सुना करता है तथा सुननेमें भी भ्रम हो जाया करता है। चित्त अत्यन्त परिवर्त्तनशील, जो सामने रखा है, उसे ही खोजा करता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके सामने एक गड़हा है और उसमें गिर जायगा।

मस्तक ।—बैठनेके समय बार-बार सरमें चक्कर आना (ऐमोन-कार्ब, क्रोटोन, युरोन, हेरैक्लो, लैके, मर्क, पल्स, रियुटा, स्टैन, ऐसिड-सल्फ, वायोला-ओडो)। सरमें दर्द, मानो माथेमें टोपी कसी हुई है (मानो माथा कसकर बाँधा हुआ है—इथ्यूजा, लोबे, मर्क, सल्फ)।

कान ।—रातमें बायें कानमें तेज़ संकोचन और सुई बेधनेकी तरह यन्त्रणा (बेल, कैमो, नाइट्रम, ऐसिड-नाई, नक्स, पल्स, स्टैफ)। बहुत दिनोंका कर्णनाद (कैलि-हाइड्रो)। खन-खन ठन-ठन शब्द, बहरापन और उसके साथ ही सरमें चक्कर आना ; ऐसा मालूम होता है, मानो श्रवण-पथ (कानका छेद) बन्द हो गया हो (नैट, सैलि-साई, सिङ्को, चिनिन-सल्फ, थिरिडियन)।

आँख ।—गड़हेमें धँसी और चारों ओर भूरा दाग। पलकोंका फड़कना (ऐगार, कैल्के, रैनान, ओलियेन-ऐन, नेट्र-सल्फ)। सभी चीजें अन्धेरेमें ढँकी मालूम होती हैं (बेल, कैल्के, साइक्ले, युयोम, मर्क, प्लम्ब ; आँखको अंगुलीसे रगड़नेपर यह भाव दूर हो जाता है—क्रोक, प्लम्ब, पल्स); दृष्टि-शक्तिका घटना। वर्ण-भ्रम (बेनजिन-डाइनाइट्रिक ; सब चीजें लाल दिखाई देती है—कोना, बेल ; पीली दिखाई देती है—कैन्थ, सैण्टो, डिजि ; हरी दिखाई देती हैं—डिजि ; नीली—स्टैन ; पढ़नेके समय अक्षर लाल दिखाई देते हैं—फास)। रेटिना या आँखके चित्रपटकी केशिका शिराएँ सब (Retinaj Veins) खूनसे भर जाती हैं और फूली मालूम होती हैं ; सबेरे हज़ामत बनवाने बाद गाल और नाकके ऊपर लाल व्रणकी तरह उद्भेद निकलते हैं ; बहुत शराब पीनेवालोंकी नाकपर पीले व्रण हुआ करते हैं (ऐण्टिम-क्रूड)।

उदर ।—ऊँची आवाज़के साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें डकारके रूपमें वायु निकलना और बहुत ही बदबूदार अधोवायु निकलना (ऐसिड-कार्ब, कार्बो-वेज)। वायु छूटनेपर उपशम (कार्बो-वेज, आर्जेण्टम, नक्स-मस)। तलपेटमें मरोड़की तरह दर्द और कलकल हड़हड़ शब्द, मानो पतला मल निकलेगा। उदरमें भार और आध्मान।

मल ।—काँखनेके साथ माँड़की तरह थलथला मल ; पाखाना हो जाने बाद शरीर बहुत कमजोर और काँपता हुआ मालूम होता है ; थलथल मलके साथ कभी-कभी खून मिला रहता है। पाखानेके वेगकी वजहसे सवेरे ५॥ बजे नींद खुल जाती है और बहुत ज्यादा परिमाणमें पीली आभा लिये मल निकलता है और मलद्वारमें खट्टी चीज लग जानेकी तरह जलन होती है।

मूत्र और जननेन्द्रिय ।—पेशाबके समय जलन होती है (आर्स, कैल्के, कैम्फो, कैनाब, कैन्थ, वे.स्पि, कोलचि, डिजि, कैलि-कार्ब, लैके, मर्क, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, नक्स, ओलियेन, फास, ऐसिड-फास, सैबाड, सार्सा, सेनेगा, स्टैफ, सल्फ, थूजा, वेरेट, जिङ्क), लिङ्गमें कड़ापन और रमणेच्छाका सम्पूर्ण अभाव ; सङ्गमकी शक्तिका न रहना (कैलेड, कोना, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, सेलिन)। इसके साथ पूर्ण क्लीवता, अण्डकोषमें सूखापन (ऐण्टि-क्रूड, कैम्प, कैलि-हाइड्रो)। बायाँ अण्डकोष और शुक्र उत्पन्न करनेवाली नाड़ी फूली हुई और नमनीय। रातमें अकसर लिङ्गमें कड़ापन होनेके साथ ही वीर्यपात हो जाता है (डिजिटेलिन)।

प्रत्यङ्ग ।—हमेशा धीमा-धीमा दर्द (कार्बो-वेज, कास्टि, ग्रैफ, लाई, मिनो, पल्स, रोडो, रास-टक्स, रास-रैड)। बायें ऊरुमें प्रदाहके साथ गृध्रसी वात या कटि-स्नायुशूल (Sciatica)—यह सर्दीसे उत्पन्न हुआ हो, रोगी बिलकुल चल नहीं सकता, चिलक मारनेकी तरह दर्द, सुई बेधनेकी तरह या तोड़नेकी तरह और स्थान बदलनेवाला दर्द—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है (दाहिने पार्श्वमें—कोलोसिन्थ, लाई, नेफिलियम ; बायें पार्श्वमें—आर्स, सल्फ, आर्स-सल्फि-रूब्रम)। बिजलीकी गतिकी तरह शूलका दर्द—यह दर्द एक स्थानसे दूसरे स्थानतक फैलता है (मैग-फास)। निम्नाङ्गका और विशेषकर ऊरुमें और जानुमें बहुत सर्दी लग जानेसे वातका दर्द ; रोगवाली जगह थोड़ी भी हिलानेसे तेज़ और असह्य जलन मालूम होती है,

रोगवाला पैर लाल हो जाता है और फूल जाता है। यकृतमें विकारकी वजहसे दोनों पैरोंमें शोथ (एपिस, कार्डियु-मेरी), कन्धेसे लेकर कोहनीतक सुई बेधनेकी तरह दर्द, बिचली रातके समय और तर तथा ठण्डी हवामें वृद्धि हो जाती है।

निद्रा।—दिनभर औंघाई और रातमें निद्रावस्थामें छटपटाता है। शय्यापर लोटता रहता है। असम्बद्ध या टूटे-फूटे सपने देखता है; अनिद्रा; इस तरह चौंक उठता है, मानो डर गया हो; दिनमें आलस्य और उद्यम-रहित।

ज्वर।—सरमें तेज़ दर्द, इसके साथ ही शरीर गर्म हो उठता है। इसके बाद ही बहुत कमजोरी, इसके बाद ही नींद आना; जाड़ा मालूम होना और इसके बाद ही शरीरमें जलन। दोनों पैर ठण्डे और उर्द्धांङ्ग कुछ गर्म रहता है। मुखमण्डल और हाथ-पैर आदि ठण्डे। चलनेमें ढुलक पड़ता है (कास्टि, लैकियुका, मैग-कार्ब, नेट्र-कार्ब, ओलियेन, फास, स्ट्रैम, सल्फ; बच्चा देरसे चलना सीखता है—कैल्के, कास्टि, सल्फ); अन्धकारमें अधिक।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, आर्स, कार्बो-वेज, कास्टि, नैट-सैलि, साइलिसिया, बेञ्जिनम।

तुलनीय।—कास्टिक, नेट्रम, चायना (कर्ण-रोग); कार्बो-वेज (आध्मान); सलफर (उदरका स्पर्शानुभव); ऐनाकार्ड (शब्द सुनना); कैलि-बाई, साइलि, सल्फ (गलेमें केश मालूम होना)।

शक्ति।—पहलीसे तीसरी दशमिकतक।

कार्डियुअस बेनिडिक्टस

(CARDUUS BENEDICTUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—खिले हुए गाछसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन; अतिसार; आँखकी बीमारियाँ; ज्वर; सरका दर्द; सन्धियोंमें आवाज़; अन्तनलीका संकोचन; शिराओंका फूलना; दृष्टि-दोष।

उपयोगिता और आभास।—आँखोंका सिकुड़ना और फैलना, दृष्टिमें विकार, दृष्टिके सामने अन्धकार पैदा हो जाना, इससे आँख-सम्बन्धी बहुत तरहके लक्षण प्रकट होते हैं। पाकस्थलीमें जलन, हाथमें पसीना होनेके बाद जलन और दोनों बाँह हिलाने बाद उनमें जलन; जम्हाई आना, हिचकी, उदरमें कतरनेकी तरह दर्द, वमन और उदरामय; स्वरभङ्गके साथ वायुनलीमें दर्द और सिकुड़न मालूम होना; नाकमें साँसके साथ खींची हुई हवा शीतल मालूम होना; गलेके भीतर मानो सिकुड़न पैदा हो गई है; कण्डरा या पेशीके अगले भागोंमें खींचन मालूम होना; सन्धियोंमें दर्द और कड़कड़ आवाज़। शिराका फूलना; शरीरमें जगह-जगह लाल पीले रङ्गके दाग इत्यादि कई परिचायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—उद्वेग, डर, कोई भी आवाज़ सुनते ही चौंक पड़ता है (बेल, बोर, इग्ने, हियुरा, कैलि-आयोड, मैग-म्यूर, नक्स, थिरिड, मिडोरिन, नक्स-मस, साइलि, जिङ्क)। रह-रहकर मानो पसीनेसे नहा जाता है।

माथा।—सर उठानेपर सरमें चक्कर आता है (आर्नि, सिङ्को, कोलो, मार्क); झुकनेपर सरमें चक्कर आना बढ़ जाता है (बेल, ऐनाक, ब्राई, नक्स, लाई, पेट्रोल, पल्स, सल्फ)। माथा और हाथ-पैरमें भार मालूम होता है (मस्तक—ऐको, आर्नि, कार्बो-वेज, डाल्का, हेलिबो, लैके, नेट्र-म्यूर, ओलियेन, स्टैन, फेलैन; हाथ-पैर आदि—ऐगार, ऐम्ब्रा, मर्क, नेट्र-कार्ब, रास, स्टैन, फेर, ऐसेट, सल्फ), मानो पक्षाघात रोग हो गया है; ज्वरके समय अधिक।

आँख।—पलकोंका फड़कना (ऐगार, कैल्के, कार्बोन-सल्फ, रेटान, ओलियेन, प्लैट, सल्फ)। भूरे रङ्गके बिन्दु सब आँखके आगे उड़ा करते हैं—सिङ्को, ऐसिड-नाई; बहुत इन्द्रिय सेवनकी वजहसे—फास; शराब पीनेके कारण—नक्स-वोम); दृष्टि अस्पष्ट (ऐम्ब्रा, आर्जेण्ट, नाई, ऐसिर, बेल, चिन-सल्फ, स्ट्रैमो, कैलि-हाइ, कैमो, कोचलिया, कूप्रम, डिजि, लैके, ओलि-ऐन, सिकेल, स्क्वियुला); विकृत। आँखके सामने क्षणस्थायी अँधेरा दिखाई देता है (कैक्ट, क्रोटन, लैक्टियुका, ओलि-ऐन, सैग्राई, कैलमिया; एकाएक आँखके सामनेकी चीजें घोर अन्धकारमय हो जाती हैं—लैक-कैन, लाइको, पल्स)।

कान ।—ऐसा मालूम होता है, मानो कानकी जड़में कुछ है ; कभी-कभी बुलबुला फटनेकी तरह आवाज़ होती है और कानमें भों-भों सों-सों शब्द होने लगता है ।

मुँहके भीतर ।—लगातार ऐसा मालूम होता है, कि मुख-विवर संकुचित होता जाता है, कभी संकोचन क्रिया बढ़ती है और कभी घट जाती है । मुँहमें हमेशा लार सञ्चय रहती है ।

पाकाशय ।—असाधारण राक्षसी भूख । थोड़ा भी खानेसे डकार आया करती है । वमन, पाकस्थली भरी रहनेपर भी ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत दिनोंतक कुछ खाया नहीं है ।

श्वास-यंत्र ।—कण्ठनाली या वायुनालीका मुँह रुखड़ा मालूम होता है । स्वरभङ्ग ; स्वर कर्कश । खाँसनेके समय वायुनालीमें साँय-साँय शब्द ; लगातार तकलीफ़ देनेवाली सूखी खाँसी ।

प्रत्यङ्ग ।—प्रत्यंग आदिका कोई भी अंश छूनेपर उसमें बहुत दर्द होता है । अंगुलीमें पहले लाल दाग पैदा होता है, कुछ दिन रहकर पीला हो जाता है, फिर कुछ दिनोंतक वैसा ही रहता है । ऐसा मालूम होता है कि पैरके तलवेमें जखम हो गया है । हाथ-पैर फैलानेके बाद दर्द होता है (ऐसिड-फ्लूड, बेराई, कैल्के, साइमेक्स, थूजा) ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कार्डि-मेरि, बेलेडो, ऐट्रोफि (दृष्टि) ; चायना (कानमें शब्द), ऐगरिकस (पलकोंका संकोचन) ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठें शततमिक क्रमतक ।

कार्डियुअस मेरियेनस

(CARDUUS MARIANUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे अर्क और विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—श्वासनली-प्रदाह ; शोथ ; नाकसे खून गिरना ; ज्वर ; पित्त-पथरी ; फेफड़ेसे

रक्त-स्राव ; अर्श ; कितने ही स्थानोंसे रक्तस्राव ; बहुव्यापक सर्दी ; सविराम ज्वर ; कामला ; यकृतकी बीमारी ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; स्नायुशूल ; यक्ष्मा ; प्लुरिसि या फुसफुस-आवरक झिल्ली-प्रदाह ; वात ; प्लीहाकी बीमारी ; पैरका झुनझुनीवाला वात रोग (गृध्रसी) ; आँतोंका प्रदाह ; शिराओंका फूलना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी क्रियाका प्रधान क्षेत्र यकृत है। यकृत-प्रदेशमें बहुत दर्द और दाहिना कुक्षिदेश (कोख) भरा मालूम होना ; यकृतमें खून इकट्ठा होना या द्वादश-अंगुली अन्त्र (Deodenum) में सर्दीकी वजहसे ऐसा हुआ करता है। मल—पित्तशून्य और बदरङ्ग । पेशाबमें भी पित्तका रङ्ग भरा रहता है। पित्ताश्मरीकी वजहसे शूल-वेदना भी इसका लक्षण है। इसके यकृत विकारमें शोथ हो जाया करता है (कार्बोनियम-सल), शिराका फूलना (Varicosis) और इसी वजहसे जखम आदि भी इसके अन्यतम क्रियाफल हैं।

लक्षणावली

मन ।—हमेशा दुःखित ; विस्मृतिशील ; सभी विषयोंमें उदासीन और निस्पृह रहता है (एपिस, बैप, साइक्लि, सिङ्को, कैलि-ब्राई, मर्क, फास, ऐसिड-फास, सिपि, वेरेट ; बन्धुओंके प्रति भी श्रद्धाहीन—माइरिका ; विषय-कार्यके सम्बन्धमें उदासीन—ऐसिड-फास, फाइटो, स्ट्रैम ; अपनी सन्तानोंके प्रति भी उदासी—फास ; दूसरोंको क्या हुआ और क्या न हुआ सम्बन्धमें उदासीन—सल्फ ; पड़ोसियोंके प्रति उदासीन—फास, सिपि)।

मस्तक ।—सरमें गड़बड़ी मालूम होना, इसके साथ ही जीभ बेस्वाद । दोनों भौंओंके ऊपरी अंशमें सङ्कोचन मालूम होना। सरमें चक्कर आना—सामने गिर जानेका उपक्रम हो जाता है (आर्नि, फेरम-ऐसेट, नेट्रम-म्यूर, पोडो, रैनान, रास ; पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम—लीडम, रास ; बगलमें गिरनेका—कैनाब, कोना, ड्रोसे, युफोर्बि, मेजि, रियुम, स्क्वियुला, जिङ्कम)। आँखोंमें जलन (ऐमोन-कार्ब, आर्स, बेराइ, कैन्थ, कैप्स, कोलो, मैंगे, मर्क, नक्स-वोम, फास, पल्स, सल्फ, थूजा, कैल्के, कास्टि) और दबाव मालूम होना (ऐल्यू, ऐङ्गस, बोर, कास्टि, ग्रैफ, लिड, लाइ, नेट्र-सल्फ, फास, पल्स, रैनान, रियुटा, स्पाइजि, स्पञ्जिया, ऐण्टि-टार्ट, थूजा, वेरेट, ऐसिड-म्यूर, लोबे)।

मुख-विवर ।—जीभका बिचला भाग सफेद लेपसे ढँका हुआ, अगला भाग और अगल-बगलके दोनों किनारे लाल (बिचका भाग लाल, दोनों पार्श्व सफेद—कैमो ; जीभ सफेद या पीली और दोनों पार्श्व-स्थान लाल—चेलिडो, जेल्सि ; बीचका स्थान सफेद –ब्राई, फास ; मोटी और मैलभरी सफेद या पीली लेप-चढ़ी—माइरिका ; बीचका स्थान या जड़ सफेद और दोनों पार्श्व-स्थान अत्यन्त लाल—रास ; बीचका स्थान सफेद लेप चढ़ा और अगला भाग लाल तथा पार्श्व स्थान भी लाल—कैप्सिकम, जिजिया)। दूध या काफी पीने बाद मुँहमें लार सञ्चय हो जाती है।

पाकस्थली ।—मुँहका स्वाद बहुत तीता (ऐङ्गस, ऐण्टि-क्रूड, बैराइ, ब्राई, कैल्के, कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, कैमो, चेल, सिङ्को, डिजि, लाइ, नेट्र-कार्ब, पल्स, सैबाइ, साइलि, कैलेन, वेरेट)। वमनकी बहुत इच्छा, पर वमन नहीं होता। नमकीन मांस-मछलीसे अरुचि (कैल्के, कार्बो-वेज, कोरैल, मिफाइ-टिस), भोजनकी इच्छा या रुचि बहुत थोड़ी (पर भोजन करने बैठनेपर रुचि पैदा हो जाती है—सिङ्को ; मांससे अरुचि—कैल्के ; खाद्य, पेय और तम्बाकू सबसे ही अरुचि—इग्ने ; सभी तरहकी भोजन-सामग्रियोंसे अरुचि—रास ; कई ग्रास खाते ही पेट भर जाता है, मानो न जाने कितना खाया है—लाइको ; साधारण भूख न लगना—जेण्टियाना-लुटिया)। हरे रङ्गका खट्टापन लिये वमन (हरे रङ्गका वमन—ऐको, आर्स, कैनाब, इपिक, क्रोटेल, प्लम्ब, पल्स, वेरेट ; अम्लाक्त—बोर, कैल्के, कास्टि, फेरम, नेट्र-सल्फ, नक्स, फास, पल्स, कैल्के, कास्टि, सल्फ)। पाकस्थलीके बाएँ पार्श्वमें अर्थात् प्लीहाके पास सुई बेधनेकी तरह दर्द (ऐमोन-म्यूर, आर्नि, सिङ्को, हिप, सियानोथस, लैके, नेट्र-म्यूर, रोडो, सल्फ, जिङ्क) ; श्वास लेनेपर बढ़ना।

अन्त्राशय ।—बाईं करवट सोनेपर यकृतमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है और इसी वजहसे स्पर्श सहन नहीं होता (ब्राई, कार्बो-ऐन, डिजि, आयोड, मर्क, नेट्र-सल्फ, नक्स, फास, साइलिसिया, पोडो, रैनान, माइरिका) और पूर्णता (भरापन) मालूम होना (ऐकोन, चिनिन-सल्फ, इयुपेट, लोरो, पोडो, माइरिक)। पित्ताश्मरीकी वजहसे शूलका दर्द (Gall-stone-colic)—तेज़ और असहनीय यन्त्रणा (कैल्के, आर्स, चेलि, बार्बा, डायस्को), इसके साथ ही थोड़ा-थोड़ा पसीना। मल पित्त-शून्य, बदरङ्ग फीके

रङ्गका (माइरिका, डिजि, कैलि-कार्ब, मर्क-बाई, नेट्र-मूर, पोडो, बेल, ब्राई, सिङ्को, नेट्र-मूर)। पेशाब सुनहला (चेलि, चिनापोड)। कब्जियत—मल कड़ा, गांठ-गांठ और निकलनेके समय कष्ट पैदा करनेवाला (ऐब्रोट, आयोड, लैके, नक्स, रास, ऐण्टि-टार्ट); यकृतमें रक्त अधिक सञ्चय होनेके साथ ही पिलई या कामला रोग (नक्स, ब्राई)। यकृतका संकोचन (अर्थात् यकृतका कड़ा और छोटा हो जाना—Cirrhosis—फास, आर्स, आयोड, सिङ्को, आरम-मूर), इसके साथ ही प्रत्यङ्गोंका शोथ (फास, आरम-मूर, कार्बोनियम-सल्फ)।

श्वास-यंत्र।—दाहिने पार्श्वके निचले पंजरेके नीचे और सामने सुई बेधनेकी तरह मालूम होना; शरीर हिलानेपर बढ़ना (बेल)। छातीका दर्द कन्धा, पीठ, कमर और तलपेटमें फैल जाता है, इसके साथ ही पेशाबका वेग होता है। छातीके पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्दके साथ खाँसी; खून-भरा कफ।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि।—रातमें सोनेपर शरीरमें खुजली पैदा हो जाती है। फूली शिराएँ फटकर जखम पैदा हो जाता है (Varicose ulcer—हैमा, ऐसिड-फ्लु)। पुट्ठेकी सन्धिके स्थानपर दर्द—नितम्ब देशतक फैल जाता है; शरीर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है। उठकर खड़े होनेमें तकलीफ होती है।

ज्वर।—बहुत दिनोंतक मध्यान्हसे सन्ध्यातक ज्वर आती है। प्यास नहीं रहती।

सम्बन्ध।—सदृश।—ब्राई (नाकसे रक्त-स्राव); चेलिडो, मर्क, पोडो, कार्बोनियम-सल्फ्युरेटम।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

कैरिका पेपेया

(CARICA PAPAYA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कच्चे पपीतेके दूधके रससे तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—वक्षस्थल, फेफड़ा और मूत्रग्रन्थि-प्रदेशपर इसका सबसे अधिक आक्रमण होता है । मूत्रग्रन्थि (किडनी) के प्रदाहकी भी यह एक उत्कृष्ट दवा है और फेफड़ेकी बीमारीमें भी इसके लक्षण सब दिखाई देते हैं । शरीरके बायें पार्श्वपर ही इसकी विशेष क्रिया होती है । अजीर्ण रोगी जो कुछ खाता है, वही कै करता है । ऐसे लक्षणमें यह बहुत ही अधिक फायदा करता है । रोगी धीरे-धीरे दुबला होता जाता है ; ऋतुके पहले और ऋतुके समय रोगिनी सामान्य कारणसे ही कातर हो पड़ती है ; दर्द सन्ध्याके समय बढ़ जाता है और रगड़नेसे घट जाता है । सवेरे नींद खुलनेपर जड़ता मालम होती है ।

लक्षणावली

मन ।—मनोवृत्तियाँ सब बहुत प्रखर हो जाती हैं ; बहुत देरतक लिखना-पढ़ना करनेपर थकावट मालूम होती है । पढ़ना बहुत पसन्द करता है ; अकेला रहना चाहता है । जड़ बुद्धि-सम्पन्न ; सहजमें बुद्धिमें जड़ता पैदा हो जाती है । जल्दी ही कोई विषय सोचकर निकाल नहीं सकता । कोई उसके साथ बात करता है, तो वह चिढ़ उठता है (ऐण्टिम-क्रूड, कैमो, आर्स, नेट्रम-म्यूर, नेट्र-सल्फ, आयोड, साइलिसिया), पूछनेपर उत्तर नहीं देना चाहता (ऐगार, सैबाड, ऐसिड-सल्फ)। आर्त्तव-स्रावके समय किसी कार्यमें रोगिनी हाथ नहीं लगाना चाहती, कहीं गलती न हो जाये ।

मस्तक ।—वमनेच्छाके साथ सरमें चक्कर आना (ऐको, ऐण्टिम-क्रूड, बैराइ, काकूर, लैके, फास, साइलिसिया, सल्फ, थिरिड) और ललाटमें टपक पैदा करनेवाला दर्द (ऐको, काकूर, ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, ब्राइ, कोलो, युजि, इयुपेट, इपिक, कैलि-कार्ब, लैके, मस्क, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाइ, नक्स, सैङ्गियु, सिपि, वेरेट), मस्तिष्ककी जड़ता । बाईं ओर चोट लगनेकी तरह दर्द । सन्ध्याके समय मस्तक भरा मालूम होता है । मिठाइयाँ या लाई खाने बाद

यंत्रणादायक सर-दर्द—सन्ध्याके समय बढ़ना ; ठण्डी हवामें और नींदके बाद घटना ; सरमें दर्द,—हाथसे मलनेपर घटना ।

नाक ।—बायीं नाकका छेद रुका हुआ । सर्दी,—बहुत ज्यादा पानीकी तरह और बिना रंगका श्लेष्मा-स्राव होता है (इयुफ्रे) । नाकसे गाढ़े रङ्गका श्लेष्मा-स्राव ।

मुख ।—मुँहका स्नायुशूल,—बाईं ओर बीमारीका अधिक हमला होता है (स्पाइजि, कोलो, मेर्ज ; दाहिने पार्श्व पर—कैल्मिया, मैग फास) । तीन-चार दिनोंतक यन्त्रणा स्थायी बनी रहती है,—यंत्रणा बहुत ही तेज़ होती है । मुँह बेस्वाद, जीभ रातमें सूख जाती है । दाँतमें दर्द,—बाईं ओरके मसूढ़ेमें (कैमो, नक्स-मस, सल्फ) ; मुँहमें ठण्डा पानी डालनेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है (ब्राई, फास, लैके, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, पल्स, स्टैफ) ।

पाकाशय आदि ।—सवेरे भूख बहुत कम रहती है, बिना स्वादकी डकार आया करती है । नहीं खाता है तो बहुत ही सुस्त हो जाता है, परन्तु खाद्य पदार्थ पेटमें जानेपर बीमारी या क्लेद पैदा कर देता है, दाँतका दर्द बढ़ जानेके भयसे बहुत प्यास रहनेपर भी पानी नहीं पीना चाहता । मध्यान्ह भोजनके बाद मिचली या ओकाई आती है (एमोन-कार्ब, कैमो, कैलि-कार्ब, लैके, मार्क, नक्स-वोम, ओलि-ऐन, फास, पल्स, रास, सिपि, साइलि, स्टैफ) ; तलपेटके चारों ओर दर्द । मल,—कोमल और रुखड़ा ; पहला अंश कड़ा और बड़ी गांठ जैसा—इसके बाद ही वायु निकलनेके साथ रुखा मल निकलता है । सरलान्त्रकी क्रिया अनियमित होती है ।

पेशाब ।—पेशाब करनेके समय और बाद मूत्रनालीमें जलन,—लगातार पेशाबका वेग, सवेरे पहली बार पेशाब करनेके समय बहुत वेग देना पड़ता है, मानो मूत्रनालीमें कुछ अटका हुआ है, उसके हट जानेपर खुलासा पेशाब होता है । मूत्र वेगके साथ मूत्रस्थलीके भीतर छेदनेवाला दर्द ; बहते हुए पानीकी आवाज़ सुनते ही इतने जोरसे पेशाब लग आता है, कि रोका नहीं जाता (कैन्थरिस, साइलि, सल्फ) । बाएँ मसानेमें या उस स्थानपर लगानेपर तेज़ दर्द ।

पुं-जननेन्द्रिय ।—कामोत्तेजक सपना देखे बिना ही वीर्यपात हो जाता है (कामोद्दीपक सपनेके साथ -ऐसिड-फास, सेलिनि, सिपि, सल्फ) ।

लिङ्गोद्गम होता है, पर वीर्यपात नहीं होता ; सवेरे लिङ्गोद्गम और रमणेच्छा बहुत प्रबल होती है, मलद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानसे लेकर लिङ्गेन्द्रियके मध्यस्थलतक भयानक तकलीफ़, मानो कोई रुखड़ा या खसखसा पदार्थ मूत्रनालीके भीतरसे बड़े वेगसे बाहर निकलता है। बाएँ अण्डकोषमें दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रोगिनी ऋतुके पहले और समय बहुत उत्तेजित रहती है और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ती है (क्रियो, नेट्र-म्यूर)। ऋतुके समय सामान्य कारणसे ही सर्दी लग जाती है। इन्द्रियाँ आदि बहुत शिथिल और उत्तेजनाहीन हो जाती हैं। ऋतुके समय किसी काममें हाथ नहीं लगाना चाहती। ऐसा न हो कि कहीं भूल हो जाये। जननेन्द्रिय और गुह्यदेशके बीचकी जगहपर खुजली।

श्वास-यंत्र।—स्वरभङ्ग—सन्ध्याके समय (कार्बो-वेज, फास), स्वरनलीमें दर्द मालूम होता है। बायें फेफड़ेके ऊपरी अंशके गभीरतम प्रदेशमें दर्द (माइरिका, सल्फ, मार्टस-कम, पिक्स-लिक्वियु, थिरिड ; दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशमें—कैल्के, आर्स)। बाएँ फेफड़ेमें धीमा पीसनेकी तरह दर्द—वक्षस्थलके बीचसे पीठतक दर्द फैल जाता है और धीरे-धीरे तेज़ अस्त्राघातकी तरह दर्दमें परिणत होता है, कभी-कभी समूचे बाएँ फेफड़ेमें दर्द होता है। दोनों फेफड़ोंमें और हृत्पिण्ड प्रदेशमें बेधनेकी तरह दर्द ; खाँसी—खाँसीकी वजहसे रातमें सो नहीं सकता (आर्स, ऐसिड-बेन, नाइट्रम, मैगनेटिस-आर्कटस, पैलारिस), खाँसनेपर सहजमें श्लेष्मा निकलता है और बाएँ फेफड़ेमें दर्द होता है। एकाएक बहुत जोरकी शरीरको हिला देनेवाली खाँसीका वेग पैदा हो जाता है।

पीठ।—बायाँ मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें बहुत तेज़ दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो दर्द कमरमें घूम जाता है (बेल, बार्बेरिस, कैनाब, कैन्थ, डायस्को, पैरिरा-ब्रेवा)। मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें समभावसे बहुत देरतक रहनेवाला दर्द ; बाएँ पृष्ठफलकके नीचे जखम पैदा हो जानेकी तरह दर्द या स्पर्श सहन नहीं होना (मार्टस-कम, माइरिका, पिक्स-थिरिड, सलफर)।

प्रत्यङ्ग।—बायें कन्धेमें आमवातकी तरह दर्द (बोर, कैल्के-फास, ग्रैफ, आयोड, ओलियेन, सैबाडि, टियुक्रि)। हाथ-पैरोंमें जल्दी ही झुनझुनी पैदा हो जाती है, हाथ-पैर ठण्डे, बायाँ हाथ सुन्न और अकड़ जाता है। दाहिने

हाथकी मध्यमा अंगुली सुन्न हो जाती है। दोनों पैर दुर्बल और काँपते रहते हैं। लिखनेके समय दाहिने पैरमें झुनझुनी पैदा हो जाती है। असहनीय बेधनेकी तरह दर्द। विद्युत गतिसे मस्तकके दाहिनी ओरसे पैरके दाहिने पार्श्व तक दौड़ जाता है या सञ्चारित होता है, पेशियोंकी अत्यन्त दुर्बलता—आलस्ययुक्त, उद्यम और उत्साह-शून्य। वक्षस्थलकी बाईं ओरसे बाएँ ऊरु-देशमें और जानुतक दर्द मालूम होता है; सवेरे शय्यासे उठनेपर शरीर बहुत ज्वर भावापन्न मालूम होता है। बाएँ पैरके अंगूठेके ऊपरी भागमें विसर्प हो जानेकी तरह लाल रङ्गकी सूजन हो जाती है और उसमें असह्य खुजलाहट होती है। दाहिने पैरकी कनिष्ठिकाकी जड़में दर्द और सूजन हो जाती है और उसमें उत्ताप पैदा हो जाता है और यह पैरकी अन्यान्य अंगुलियोंमें फैल जाता है।

त्वचा।—समूची देह बहुत खुजलाती है। ऊरुदेशमें व्रणकी तरह ऊँचा, लाल और दर्द-भरा उद्भेद। मुखमण्डल और देहमें छोटे-छोटे दाने निकलते हैं, वंक्षण या पुट्ठेमें; जानु या पुट्ठेके गासेमें उद्भेद; दाहिने हाथके अगले भागमें और पेटमें भी ऐसा ही होता है। अनगिनती लाल-लाल उद्भेद जो बहुत ज्यादा खुजलाते हैं। सन्ध्याके समय और शय्याके उत्तापसे खुजलाहटका बढ़ जाना; खूब खुजलानेपर घट जाता है। बायें कानके पिछले अंशमें लगातार खुजलाहट, खुजलानेपर आमवातकी तरह उद्भेद पैदा हो जाते हैं (एपिस, आर्टिका-इयु, नेट्रम-म्यूर)।

निद्रा।—बार-बार नींद खुल जाती है। बहुत गाढ़ी निद्रा, जागना कठिन होता है। जहाज़ डूबने, आग, पानीमें नहाने, बन्दूककी गोली लगने वगैरहके भयानक सपने—सब सच्ची घटनाकी तरह देखता है।

शीतोत्ताप।—वायु-सेवनके समय जाड़ा मालूम होता है या ठण्डसे तकलीफ़ होती है। घुड़सवारीमें बाहर घूमनेके समय ठण्डी हवा लगते ही सर्दी हो जाती है। रोगीको इतना जाड़ा मालूम होता है, कि चूल्हा या आगके पास बैठनेके अलावा उसे आराम नहीं मिलता। रातमें भी जाड़ा लगा करता है, तेज़ प्यास, पर पानी नहीं पी सकता, दाँतका दर्द बढ़ जाता है।

वृद्धि।—ठण्डे पानीसे (दन्तशूल), भोजनसे (मिचली), शय्याके उत्तापसे (खुजली) और सन्ध्याके समय (दर्द, सर्दी लगना आदि)।

उपशम ।—मलने या घर्षण करनेपर (दर्द), खुजलानेपर (खुजली), चलनेपर (दोनों पैर सुन्न हो जाना) और गर्म घरमें (शीतार्त्तता)।

सम्बन्ध । — सदृश ।—माइरिका ; मार्टस-कम्यूनिस ; थिरीडियन ; बार्बेरिस ; कैन्थरिस ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे तीसरा दशमिक क्रम ।

कार्ल्सबाड

(CARLSBAD)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—किसी खास झरनेके पानीसे क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— खानेके बाद मुँहका लाल हो जाना ; कब्जियत ; सारे शरीरकी कमजोरी ; बहुमूत्र ; वात ; गृध्रसी वात ; मूत्ररोग ; यकृतकी बीमारियाँ ; अधिक कै होना ।

उपयोगिता और आभास ।—सारे शरीरका अवसाद, शरीरकी स्थूलताका बढ़ जाना, बहुमूत्र, हृद्रोग, मलका कड़ापन और शीतका आक्रमण मालूम होनेका लक्षण वगैरह इसकी प्रधान क्रिया है। रोगी मानो हमेशा थका-सा रहता है, उसे ऐसी ही सुस्ती मालूम होती है, उसका शरीर काँपा करता है और वह कोई भी पदार्थ मुट्ठीमें कसकर पकड़ नहीं सकता। दृष्टि-शक्तिपर भी इसके द्वारा आश्चर्यजनक लक्षण पैदा हो जाते हैं। कभी-कभी इसके द्वारा उदर और मलान्त्रपर भी आक्रमण हो जाया करता है। पीछे लिखे कई लक्षण भी इसके प्रधान परिचायक लक्षण हैं—प्रबल स्पन्दनकी वजहसे रोगी बेचैन हो पड़ता है। वागिन्द्रिय, मूत्रस्थली, मलान्त्र वगैरह सभी इन्द्रियाँ दुर्बल रहती हैं; पेशाबकी धार बहुत क्षीण और धीमी होती है; उदर-प्रदेशकी पेशीकी सहायताके बिना पेशाब नहीं निकलता ; मल दूरवर्त्ती अन्त्रकी सहायता बिना नहीं निकलता और वह भी बहुत धीरे-धीरे निकलता है। बहिर्मुखी गतिके बदले ऐसा ही मालूम होता है, कि मल पीछेकी ओर खिंच रहा है (साइलिसिया, थूजा)। मानो धमनीके भीतर खूनकी गति स्थिर हो जायगी, ऐसे अनुमानकी वजहसे रोगी उद्विग्न हो पड़ता है (शोणितकी गति स्थिर हो

जानेकी आशङ्का—कार्बो-ऐन ; मानो गति स्थिर हो गई—जेल्सि, लाई, सेबाड, वैराइटा-कार्ब) ; गड़बड़ी और जो अच्छा नहीं मालूम होता और रह-रहकर उसके शरीरमें उत्ताप पैदा हो जाता है। सन्धि-विश्लेषण या हड्डी खिसक जाना (Dislocation) ; मोच खाने, खिंचने, टूटने, सुई बेधने और ज्वालाजनक दर्द ; चिलक मारनेकी तरह दर्द ; सवेरे शय्यासे उठनेके समय कमर अकड़ी और सुन्न मालूम होती है, परन्तु कुछ देरतक घूमने बाद और कुछ दिन चढ़नेपर फिर यह दर्द नहीं रहता (फेरम-आयोड, डायस्को ; उठकर घूमनेपर दर्द घट जाता है—नक्स-वोम ; बढ़े हुए यकृतके साथ सोनेके समय कमरमें दर्द बढ़ जाता है—फेरम ; सीढ़ी चढ़नेपर बढ़ना—कार्बो-ऐन)। शरीरकी त्वचापर जगह-जगह आग छू जानेकी तरह जलन, लाल दाग या रेखा बाहर निकल पड़ती है ; छोटी-छोटी पीब-भरी फुन्सियाँ (Pustules) निकल आती हैं ; शरीरमें जगह-जगह सुरसुरी और कुटकुटाहट होकर पसीना निकलना आरम्भ हो जाता है ; जननेन्द्रिय-प्रदेशमें तेज़ खुजलाहट और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। शरीरकी त्वचामें स्पर्श-ज्ञानकी अधिकता और शीत या शीतल वायु सहन नहीं होती ; थोड़ी भी सर्दी लग जानेकी वजहसे सर्दी हो जाती है। ज्वराधिकारमें कभी-कभी सिहरावन, कभी सर्दी मालूम होना या कभी-कभी गर्मी मालूम होना, ऐसा पर्यायक्रमसे बार-बार हुआ करता है। विशेषकर मुखमण्डलमें, रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना और ललाटमें पसीना, माथा गर्म, चेहरा लाल और कभी-कभी शरीरकी त्वचापर सिहरावन पैदा हो जाता है। सामान्य कारणसे पसीना हो जाता है और कपड़ेमें पसीनेका पीला दाग पड़ता है। अधिकांश लक्षण ही, यहाँतक कि सरमें दर्द भी शरीरको हिलानेपर बन्द हो जाता है।

लक्षणावली

मन ।—आत्म-सन्तोष-भरा चित्त, बोलना बहुत अच्छा मालूम होता है और बोलनेमें बहुत आनन्द मिलता है। कभी-कभी अत्यन्त विषादयुक्त और स्वार्थ-पूर्ण हो जाता है। अपने विषय और कामके सम्बन्धमें उद्यम-शून्य और चिन्तायुक्त हो जाता है। पढ़ने या किसी तरहका मानसिक परिश्रमसे कातर हो पड़ता है। हमेशा अन्यमनस्क रहता है।

मस्तक ।—ऐसा मालूम होता है, मानो सरके भीतर कुछ फट गया है ; सन्ध्याके समय, सोनेके समय बढ़ना (ऐलो) ; भोजनके बाद मस्तिष्कमें जड़ता

और भार मालूम होना ; निर्मल वायुमें और शरीर हिलानेपर घटना। सरमें चक्कर आना, मानो वह वृत्ताकार घूम रहा है (कोना); निर्मल वायुके सेवनसे घटना (ऐमोन-म्यूर, मैग-सल्फ, फिलैन, ऐसिड-सल्फ)। माथेमें बहुत भार रहता है, भरा और ऐसा मालूम होता है, मानो इसमें बोध-शक्ति न हो या आच्छन्न-भाव रहता है (कार्बो-ऐन, लोरो, ओलि-ऐन, ओपि, प्लम्ब, काक्युलस, सिकेल), इसके साथ ही तेज़ रूसी होना ; वृद्धि—माथा झुकानेपर, माथा घुमाकर हिलानेपर और माथा फिरानेपर (ऐको, कार्बो-ऐन, मैग-सल्फ, नेट्रम-म्यूर, नक्स-मस, सल्फ)। माथेमें उत्ताप मालम होना ; गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर बढ़ना। सरमें दर्द, कटने जैसा दर्द, कभी दाहिनी ओर और कभी बाईं ओर, शङ्खदेश या कनपटीमें या कपालके पिछले भागमें दर्द मालूम होता है ; माथा हिलानेपर दर्द घटता है। आँखके गोलेके बीचमें भार मालूम होनेके साथ सरमें शराब पीनेकी वजहसे उन्मत्तताकी तरह मालूम होना, विशेषकर ललाटदेशमें, ललाट और कनपटीमें बहुत दर्द मालूम होना, इसके साथ ही शिराओंका फूलना (बेल, सैङ्गियु, थूजा)। केश झाड़नेपर बहुत दर्द होता है (ऐल्यू, ऐम्ब्रा, ऐसे, कैप्स, कैल्के-कास्टि. फेर, पेरिल, थूजा, वेरेट)।

आँख।—आँखमें जलन और रगड़नेसे ऐसा मालूम होता है, मानो आँखसे आगकी लौ निकल रही है (कैन्थ); आँखके सामने ऐसा मालूम होता है, मानो काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं (ऐगार, ऐमोन-म्यूर, ऐनाक, आरम, बेराइट, इयोनिमिन, कैलि-कार्ब, कार्बोनि-हाइड्रो, मैग-कार्ब, मर्क, ऐसिड-नाइट्र, ऐसिड-फ्लू, फास, सिकेलि, साइलिसिया, टेरिब)। सन्ध्याके समय पलकोंका फूलना, शोथ-जैसी हो जाना और सवेरे सट जाना (युफ्रे, चेल, कैलि-कार्ब, मैङ्ग); ऊपरी पलकका लगातार एक बार संकुचित होना और एक बार फैल जाना, इसलिये रोगी हमेशा आँख बन्द रखनेके लिये वाध्य होता है (क्रोक, प्लम्ब, पल्स); मानो आँखमें कोई चीज़ गिर गई है (ऐगार, कोडाया, बेल, कैली, इपिक, ओपि, फाइजस, रैटान, सलफर); सिलाई करनेके समय आँखोंमें पानी भर आता है (पढ़नेके समय आँखमें पानी भर आता है—क्रोक, क्रोटेल, ग्रैटियो, ऐसिड-नाइट्र, ऐसिड-सल्फ); आँखके कोये मानो दोनों चक्षु-गह्वरमें नहीं अटते (पेरिस); टकटकी लगाकर बहुत देरतक देखते रहनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आँखका कोना किसी ढकनेसे ढँक गया (कैल्के, फिलेन ; मानो किसी आवरणके भीतरसे देख रहा है—क्रोक, हिमैटाक्स, लैके, नेट्र-म्यूर,

पेट्रोल, रास, साइलिसिया, सल्फ, टैबाक, वार्बस)। मानो सब चीजें आँखके सामने उड़ रही हैं।

कान।—कर्ण-पश्चान्नलीसे पटहतक सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होना—अंगुली घुसाकर हिला देनेपर आराम हो जाना।

नाक।—बार-बार छींकके साथ रन्ध्रके भीतर सुई वेधनेकी तरह मालूम होना और रजोनिवृत्तिके समय (ब्राई, हैमा) नाक छिड़कनेपर खून निकलता है।

मुखमण्डल।—पीला, उतरा हुआ, कभी लाल और कभी गर्म, गण्डास्थि-प्रदेशमें दर्द और उसपर सूत या मकड़ेका जाल होनेकी तरह मालूम होना; रोगी बार-बार हाथसे उसे हटानेकी चेष्टा करता है (बेराई, बोर, ब्रोमि, ग्रैफ, रैनान, रिक्टिस)। जीभ सफेद लेप-चढ़ी और मुँहमें बदबू, सभी चीजोंका स्वाद नमकीन मालूम होता है (कार्बो-वेज)।

पाक और आमाशय।—भूख-प्यासका अधिक रहना, नाभिके ऊपरी प्रदेशमें क्षणभरके लिये संकोचन मालूम होना; झुकने या बैठनेपर घट जाता है। समूचे तलपेटमें हुड़हुड़ शब्द। हिचकी और जम्हाई दोनों साथ-ही-साथ आती है। पेट फूला या वायुसे भरा हुआ है और खींचन मालूम होती है। लम्बी साँस लेनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उदर दृढ़भावसे कसा हुआ है, अकसर छातीमें जलन होती है और मुँहमें पानी भर आया करता है (रोबिन, ऐ-सल्फ)। पाकस्थलीमें पहले खालीपन मालूम होता है, इसके बाद सर्वग्रासी भूख पैदा हो जाती है। प्लीहामें जलन, रक्तस्रावी अर्श (खूनी बवासीर), मलद्वारमें हमेशा दबाव मालूम होनेके साथ जलन; काँखनेकी वजहसे मलान्त्र या सरलान्त्र हमेशा बाहर निकल पड़ता है। सरलान्त्र और मलद्वारमें सुई वेधनेकी तरह दर्द। यह दर्द लिङ्गमें भी फैल जाता है। बड़ी-बड़ी गांठें सब मलद्वारमें अड़ जाती हैं; पाखाना होनेके बाद जलन और चलनेके समय रुकावट पैदा हो जाती है। मलान्त्रसे आम निकलना और मलद्वारसे मलान्त्रतक फैलनेवाली जलन और खुजली। आमातिसार—मल गाढ़ा और पीले रङ्गका (इपिक, पालिनसर)। मलका कड़ापन—तीन-चार दिनोंतक पाखाना नहीं होता; कड़ी गांठें बड़ी तकलीफसे निकलती हैं। मल बहुत धीरे-धीरे निकलता है।

पेशाब ।—गुह्यद्वार और जननेन्द्रिय प्रदेशमें दबाव मालूम होना ; पेशाबका स्राव बहुत पतली धारमें होता है और मूत्रनलीमें कुछ जलन होती है। बार-बार पेशाबके वेगके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पाखाना होना। दिनभर बार-बार पेशाबका वेग होता है। रातमें भी पेशाब लगनेके कारण बार-बार नींद खुल जाती है ; पेशाब साफ़ और निर्मल होता है (कोडेइन, स्क्रियुला)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु हो जानेके तीन दिन बाद गाढ़ा लसदार गोंदकी तरह जमा हुआ रक्त-स्राव होता है और उसके बाद ही भयानक प्रदरका स्राव होता है।

त्वचा ।—लाल दाग और रेखा—बहुत जलन। जगह-जगह बहुत खुजली और सुरसुरी पैदा हो जाती है। पसीना होनेके पहले शरीरकी त्वचा कुटकुटाने लगती है।

निद्रा ।—निद्रावेशके साथ बार-बार जम्हाई आना, भोजन आदिके बाद बहुत औंघाई, परन्तु आध घण्टेतक सोते ही चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और सरमें दर्द पैदा हो जाता है। बहुत देरतक छटपटाते रहनेपर नींद आती है। भयंकर सपने।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—कोडिइनम, नेट्र-सल्फ (शीत लग जानेका भय), ब्राई, ओपि, कार्बो-ऐन, लाई, बेराई-कार्ब, सिपा (अश्रु-स्राव) ; नक्स (खानेपर बढ़ना) ; पल्स, कार्बो (बाहरी वायुसे घटना) ; बेलाडो, ग्लोन, (सरमें दर्द) ; एपिस, ऐनाक, फास-ऐसिड (अन्यमनस्क) इत्यादि।

शक्ति ।—साधारणतः निम्न-क्रमका ही व्यवहार होता है, कोई-कोई उच्च क्रमका ही व्यवहार करते हैं।

कैरिया ऐल्बा

(CAREYA ALBA)

दूसरा नाम ।—सेलवार्क ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गुठलीसे अरिष्टके रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—जुग्लेन्स रिजिया और जुग्लेन्स सिनारेरियाकी तरह यह भी एक शीताङ्ग या स्रावोंको प्रतिषेधक दवा है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—आर्निका, कार्बो-वेज, फास्फोरस, मर्क्युरियस, हैमा, ब्राइयो, रस-टक्स, साइक्लम-लिमोनम ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

कैस्केरा सैगरेडा

(CASCARA SAGRADA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—त्वचाका सारांश या निर्याससे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—कब्जियत ; वात ; वमन ; रक्तस्राव ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथगण इसे विरेचकके रूपमें व्यवहार करते हैं । वे इसका सत (Extract) १५ बून्दतक व्यवहार किया करते हैं । स्वस्थ शरीरमें सदृश-विधानके अनुसार जितनी परीक्षा हुई है, उससे मालूम होता है, कि मलान्त्रके सिवा शरीरके अन्यान्य अंशोंपर भी इसकी क्रिया होती है । पेशियोंके वातके दर्दमें कितनी ही जगह इससे बहुत आश्चर्यजनक लाभ दिखाई दिया है । डा॰ क्लार्कने लिखा है, कि दो स्थानोंमें उन्हें हैजाकी तरह लक्षण मिले हैं ।

अग्निमान्द्यकी वजहसे और पाकाशयके अन्य विकारोंके साथ सरमें दर्द (नक्स) ; जीभ फैली हुई और शिथिल । मुँहमें बदबू । मलमें कड़ापनके साथ

अर्श ; पेट फूलता है। कब्जियतके साथ पेशियोंमें और सन्धि-स्थानोंमें वातका दर्द (ब्राई, हिपर, कैल्के, कास्टि)।

सम्बन्ध—सदृश।—हाइड्रैस्टिस, नक्स-वोमिका, ब्राई, हिपर।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे तृतीय दशमिक।

कैस्कैरिला

(CASCARILLA)

दूसरा नाम।—क्रोटन इल्युटेरिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युफोर्बिया जातीय गाछकी छालसे मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—खूनकी कमी; गुह्यद्वारसे रक्तस्राव; कब्जियत; खाँसी; अतिसार; शोथ; खून-भरी खाँसी; सविराम ज्वर।

उपयोगिता और आभास।—उदराध्मान, कब्जियत, बार-बार डकार आना, धूम्रपानसे अनिच्छा वगैरहपर इसकी प्रधान क्रिया है। गर्म पानी पीनेकी इच्छा और उससे पाकाशयके लक्षणोंका घटना, इसका एक सिद्धिप्रद लक्षण है। इसके प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—कण्ठनालीके बहुत ही निम्न-प्रदेशमें सूजन मालम होना; गलेमें श्लेष्मा सञ्चय। खानेके बाद भूख और पाकाशयका खाली मालूम होना। तम्बाकूकी गन्धसे बहुत चिढ़ मालूम होती है। प्रत्येक कदम चलनेपर पाकस्थलीमें धक्का लगनेकी तरह मालूम होता है (ऐको)। सवेरे पाखाना होनेके पहले पेटमें मरोड़ हुआ करता है। अंताशयका दर्द आदि गर्म पानी पीनेसे घट जाता है (क्रोट)। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें गर्म पानीकी तरंगें उठ रही हैं। पुट्ठेमें फोड़ा (कार्बो-ऐन)। कमरमें दर्द और आलस्य होनेके साथ पतले दस्त आना। हमेशा आलस्य और पेशियोंमें कमजोरी। मलान्त्रके ऊपरी अंशमें चबानेकी तरह दर्द। मलमें कड़ापन,—मल कड़ा और आमसे ढँका, खण्ड-खण्ड होकर निकलता है; मलके साथ और दूसरे समय भी मलद्वारसे बहुत ज्यादा परिमाणमें चमकीला लाल रङ्गका खून निकलता है और रोगी क्षीण हो जाता है। वायुनलीके भीतर

खुजलानेवाली सूखी खाँसी। रक्तकास ; वक्षमें वाम पार्श्वमें ऊपरकी ओर चढ़नेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द। कमरमें दर्द और कमजोरी मालूम होना। हमेशा सोये रहनेकी इच्छा। सम्पूर्ण सज्ञान निद्रा। सविराम ज्वरकी उत्तापावस्थामें गर्म पानी पीना चाहता है।

लक्षणावली

उदर।—आध्मान-वायु मानो पेटमें घूमा करता है ; ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें गर्म पानी खौल रहा है। बार-बार खाली डकार आना (ऐगार, आर्स-हाइड्रो, कैल्के-कास्टि, ग्रैनेट, मर्क, ओलि-ऐन, फास, सैबाई, ऐण्टि-टार्ट, वेरेट, ऐसिड-नक्स)। खाकर उठते ही भूख लग जाती है (बोवि, कैल्के, कैल्के-कास्टि, चिनिन-सल्फ, साइना, लैके, मर्क, फास, प्लम्ब, स्टान)। ज्वरकी उत्तापावस्थामें गर्म पानी पीनेकी बहुत आकांक्षा (कास्टोनिया-वेस्का) ; तम्बाकूकी गन्धसे भी चिढ़ मालूम होती है (कैल्के, काक्यु, इग्ने, नक्स-युग, नक्स-वोम)।

मलान्त्र और मल।—कब्जियत,—मल कड़ा और गांठ-गांठ तथा आँव-मिला (ग्रैफ, हाइड्रैस)। मलके साथ बहुत ज्यादा खून निकलता है (मिलिफो, मर्क, इपिक, कोलो, ऐसिड-नाई, नक्स, रैटान, रास, ऐण्टि-टार्ट)। पर्यायक्रमसे पतला मल और थक्का-थक्का कड़ा मल निकलता है (ऐण्ट, ब्राई, आयोड, लैके, नक्स, रास, रियुटा, ऐब्रोट), इसके साथ ही कमरमें दर्द और सुस्ती ; रोज़ सवेरे पाखाना होनेके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं। मलान्त्रके सबसे उच्च प्रदेशमें चिबानेकी तरह दर्द मालूम होनेके साथ हमेशा थोड़ा पाखाना होना।

शीत, उत्ताप।—अस्वाच्छन्द्यके साथ उत्ताप पैदा हो जाना और इसके बाद थोड़ा-सा पसीना निकलकर औंघाई आने लगती है। हवा खानेके लिये टहलनेके समय पीठमें थोड़ा पसीना होता है और थोड़ा जाड़ा मालूम होता है, परन्तु चुपचाप शान्त होकर खड़े हो जानेपर फिर पसीना नहीं होता ; फिर चलनेके समय पसीना होता है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।--ग्रैफ, हाइड्रैस्ट, कोलोसि, चायना, क्रोटीन।

शक्ति।—पहले दशमिकसे तीसरे दशमिक क्रम।

कैस्टेनिया वेस्का

(CASTANEA VESCA)

दूसरा नाम ।—चेस्ट-नट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्मीके दिनोंमें संग्रह किये हुए पत्तेसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—हूप खाँसी, अतिसार ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० हटनने स्वस्थ शरीरपर इसकी परीक्षा की है । गलेमें सुरसुरी खाँसी इत्यादि इसके लक्षण हैं ।

लक्षणावली

गलेके भीतर ।—गलेमें कसैला स्वाद मालूम होता है ।

पाकाशय ।—गर्म पानी पीनेकी आकांक्षा (कैस्केरिला, क्रोटोन-टिग) ।

अन्त्राशय ।—ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें झूल पड़ती हैं (लैक्टियुका, फास, रास) ; चित्त सो जानेपर आराम मिलता है । पेटमें स्पर्श सहन नहीं होता ।

मलान्त्र और मल ।—एकाएक मलका दुर्दमनीय वेग ; तलपेटमें बहुत दर्दके साथ हुड़हुड़ गड़गड़ शब्द, मल उजला हलका पीले रङ्गका, छोटे-छोटे फीतेके टुकड़ेकी तरह निकलता है ।

श्वासयन्त्र ।—दिनके समय दाहिने फेफड़ेके बीचमें दर्द मालूम होता है । हूप खाँसी,—सूखे कांसेकी आवाज़की तरह ठनठन आवाज़ करनेवाली खाँसी ; तेज़ और यन्त्रणादायक खाँसी ।

पसीना ।—पानी पीने बाद लगातार पसीना होता है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, ड्रोसेरा, एमोन-ब्रोम, मिफाइटिस, नेपथेलिन ।

शक्ति ।—मूल अर्क और १ला दशमिक क्रम ।

कैस्टर एकुई

(CASTOR EQUI)

दूसरा नाम ।—कैस्टर इक्यूरम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—घोड़ेके पैरका एक तरहका उपमांस या बतौड़ी सुखाकर विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभ करता है:—मृगी ; पश्चात् कटि-शूल ; स्तनमें जखम ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० हेरिङ्गने इसकी परीक्षा की थी । डा० बार्नेटने इसके द्वारा कपालके मसे रोग आराम किया था ।

लक्षणावली

मस्तक ।—सवेरे सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द, मिचली, ललाटमें अर्बुद, मसे ।

मल ।—उदरामय, प्रबल वेगसे, पहले अन्त्रशूलकी तरह दर्द (कोलो, डायस्को, कैमो, रियुम, वेरेट) और पाखाना होनेके समय बड़े जोरसे वायु निकलना (ऐलो, आर्जेण्ट-नाई, इग्ने, नेट्र-सल्फ, कैल्के, फास, ऐसिड-फास) ; पतला पानीकी तरह और जलन करनेवाला पाखाना ।

वक्ष ।—स्तन पिलानेवाली बच्चोंवाली स्त्रीका स्तन-वृन्त कटकर जखम हो जाता है और उसमें बहुत दर्द होता है (आर्नि, कैल्के, कैमो, ग्रैफ, इग्ने, पल्स, सलफर), स्तनका फूलना (बेल, ब्राई, कोना, फास), स्तन बहुत खुजलाते हैं और स्तनके चारों ओर लाल रेखा दिखाई देती है ।

प्रत्यङ्ग ।—दाहिने निचले पैरकी दाहिनी हड्डीमें बार-बार दर्द मालूम होता है (ऐमोनियेक, चिनोपोड, ऐसिड-फास, सिपि, स्टैफ) । बायें पुट्ठेमें दर्द । तम्बाकूकी इच्छा ।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—आर्जेण्ट-नाई, ग्रैफ, लाइकोपो, सलफर ।

तुलनीय ।—हिपर (स्तनके दर्दका घटना) ; थूजा (मसे) ; कैल्के-आक्ज, कैस्टोरियम, मस्कस ।

शक्ति ।—६ठीसे १२वीं शततमिक शक्ति ।

कैस्टोरियम

(CASTOREUM)

दूसरा नाम ।—दि बीवर (Beaver)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीवर नामक जन्तुकी मेढ्र-त्वचामें सञ्चित सूखे रससे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—मस्क या मृग-नाभिकी तरह स्नायवीयता, उत्तेजना पैदा होना, पेशी और अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका सिकुड़ना और फैलना और आर्त्तवमें विकार पैदा हो जाया करता है ; परन्तु कस्तूरी जिस तरह पूर्ण-विकाश प्राप्त मूर्च्छागत वायु रोगमें विशेष उपयोगी है, यह वैसी नहीं है। गुल्मवायु पूर्ण आकारमें पैदा होनेके आरम्भमें जो सब स्नायवीय लक्षण पैदा हो जाया करते हैं, कैस्टोरियम उन सभी अवस्थाओंमें उपयोगी है। रजोरोध, दिनौंधी, उदरामय वगैरह इसके निर्देशक लक्षण हैं। डा० ट्रूसोने मानसिक आवेगमें या ठण्डा पानी पैरमें लगनेकी वजहसे व्रणकी मलिनता, ठण्डा पसीनाके कारण एकाएक दुर्बलतासे उत्पन्न स्नायविक-विकारकी वजहसे शूल-वेदनामें व्यवहार किया है।

लक्षणावली

मन ।—रोगिनी सामान्य कारणसे अत्यन्त कातरता प्रकट करती है, हमेशा शंकामें भरी रहती है, विषादयुक्त रहती है और आर्त्तव-स्रावके समय अत्यन्त अव्यवस्थित चित्तता प्रकट करती है। वे रोगसे अच्छी तरह आरोग्य नहीं हो सकतीं और हमेशा ही चिड़चिड़े स्वभावकी बनी रहती हैं। इतना पसीना होता है, कि उस वजहसे वह बहुत कमजोर हो पड़ती हैं।

मस्तक ।—सरमें दर्दके समय माथा ढलमलाया करता है और उसे बहुत सुस्ती मालूम होती है। सरका दर्द आराम हो जाने बाद माथा एकदम छुआ नहीं जाता। मूर्द्धदेशमें दर्द और सरमें टपक, मानो माथेमें जखम हो गया है ; दूसरी चीज़ छू जाने और रगड़नेसे बढ़ना। माथा भरा और भारी मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा।

आँख।— प्रायः रातभर पलकें जुड़ी रहती हैं। दिनौंधी (Nyctalopia—ऐको, मर्क, साइलिसिया, सल्फ़, कोना, नेट्रम, फास, स्ट्रैम), सूर्यकी रोशनी सहन नहीं होती (आर्स, बेल, कोना, इयुफ्रे, हेलिबो, हायो, नाइट्रम, सल्फ़); लगातार आँसुओंका स्राव होता है (ऐल्यू, युफोर्बि, इयुफ्रे, पल्स, साइलिसिया, सल्फ़); दूरकी चीजें टकटकी लगाकर देखनेपर आँखमें दबाव मालूम होता है और दृष्टिके सामने अन्धकारकी तरह दिखाई देता है।

कान।—कानमें मिटमिट भुटभुट शब्द होता है, मानो पानी खौल रहा है (कास्टि, ग्रैफ, पल्स); अंगुली प्रवेश कर हिलानेपर घटता है (कार्लसबाड)।

नाक।—छींक इतनी प्रबल रहती है, कि समूचा शरीर हिल जाता है (कार्बो-वेज, सिना, साइक्ले, रास, रास-रैड, सेबाड), नासारन्ध्रसे लगातार निर्मल त्वचाको क्षय करनेवाला पानी निकला करता है। इससे नाककी छेदके मुँहपरकी खाल उधड़ जाती है (ऐमोन-म्यूर, आर्स, कैमो, लेके, सिपा, मर्क, ऐसिड़-नाई, नक्स, साइलिसिया)।

गलेके भीतर।—गलेमें पीले रङ्गका श्लेष्मा सञ्चित होनेके कारण खाँसकर निकाल देनेकी चेष्टा करता है (हाइड्रेस, ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, फास, लाइको, नेट्र-कार्ब)। घूंट लेनेके समय और घूंट लेनेके पहले और बाद गलेमें जलन होती है (बेल, कार्बो-वे, कास्टि, युफोर्बि, मर्क, ऐसिड-नाई, रास-रैड); कोई भी चीज़ निगलनेके समय गलेमें दर्द, मानो जखम हो गया है (बेल, कार्बो-वेज, कास्टि, लैके, मर्क, फास, पल्स)।

पाकाशय। – मुँहमें बदबू;—रोगी स्वयं भी मालूम कर सकता है। जीभ फूली हुई (मेनिस्पर्मम बैप) और ऐसा मालूम होता है, मानो रह-रहकर पीछेकी ओर खींचन पड़ रही है; जीभके ऊपरी भागमें जलन; छाले-भरा (ऐमोन-कार्ब, बेल, बार्बा, कार्बो-वेज, ग्रैफ, हेलि, मर्क, नेट्रम-म्यूर, स्क्वियुला, स्पाइजि, थूजा, जिङ्कम)। जीभके बीचमें एक मटरकी तरह गोलाकार सूजन पैदा हो जाती है और यह सूजन जीभको पीछेकी ओर खिंचती है (मर्क-प्रोटो-आयोड)। मध्याह्न भोजनके अन्तमें इतनी प्यास पैदा हो जाती है, कि बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी पीता है तब भी प्यास शान्त नहीं होती है। प्रत्येक बार खाने बाद खाये हुए पदार्थकी डकार आती है (ऐलो, ऐगार, ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रूड, कार्बो-ऐन, कास्टि, चेलिडो, कोक, लैके, कार्बो-वे, नेट्र-म्यूर, फास,

पल्स, ऐसि-आक्सैल, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा)। तीता स्वाद मिली डकार (ब्राइ, सिङ्को, ग्रैटि, नक्स, पल्स, सिपि, स्ट्रैन, आर्स-आयोड, पुप्यलस, ऐसिड-सल्फ, थूजा), लगातार मिचली ; डकार आनेपर घटना (रोडोड, ऐण्टि-टार्ट)। पाकस्थलीमें ठण्डक मालूम होना ; ठण्डक (आर्स, बोर, कैम्फि, बेल, कोलचि, इग्ने, कैल्के-फलो, लेक्टियु, लोरो, मैग-सल्फ (सवेरे), ओलियेन, फास, ऐसिड-सल्फ, टैबाक)।

अन्त्राशय ।—आध्मानयुक्त और सूजन ; पुट्ठेके प्रदेशमें संकोचन मालूम होना। वायु निकलना या वातकर्म बिलकुल ही नहीं होता (रैफेना-सैटाइवा), गर्म कपड़ेसे पेट ढँक लेनेपर घटता है। उदरमें बहुत ज्यादा दर्द, गर्म प्रयोगसे (मैग-फास), रगड़नेपर या शरीर झुका लेनेपर (कोलो) घटता है ; नाभि-प्रदेशमें कतरनेकी तरह दर्द (इण्डिगो, इपिका, क्रियो, मैंगे, नक्स, ओलि-ऐन, रियुम, साइलि)।

मल ।—उदरामय, जाड़ा मालूम होना और इसके साथ ही बार-बार जम्हाई आना ; सन्ध्याके समय बढ़ जाना (बोवि, कास्टि, लिलि-टाइग्रि, मर्क-बाइ, ऐसिड-पाइ, टेरिब)। मलका पहला अंश सहज और कड़ा, शेषका अंश पतला (नक्स-वोम); मल रक्त-मिला आमसय (कैम्फि, इग्ने, मर्क-सोल, मर्क-कोर, नक्स, पेट्रोल, कोलो, पल्स ; काला अलकतरेकी तरह—इपिका, लैके, लेप्टान, कैलि-ब्रोम, मर्क, नक्स) या सफेद पानीकी तरह (बेल, सिना, डिजि, डालका, हेलिबो, हिप, फास, ऐसिड-फास); इसके साथ ही मलद्वारमें जलन (ऐलो, लैके, मर्क, पल्स, गैम्बो)। हरे रङ्गका आममय मल—निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्रको दग्ध कर रहो है (आइरिस-वार्सि); कोमल प्रकृतिवाले स्नायु-प्रधान और रोगियल धातुवाले और जो दाँत निकलनेके समय या गर्मीके दिनोंमें बहुत क्षीण हो पड़ते हैं, ऐसे बच्चोंको यदि पानीकी तरह पाखाना हो या अतिसार हो (जब साधारण दवाओंसे लाभ नहीं होता)। रोगिनीको सवेरे दौड़कर पाखाना जाना पड़ता है, वस्त्र आदि सम्हालनेका भी अवसर नहीं मिलता। पाखाना होनेके पहले कतरनेकी तरह शूलका दर्द होता है, रगड़ने या सामनेकी ओर शरीर झुकानेपर यन्त्रणा घट जाती है (कोलो, आर्जेण्ट-नाइ, बेल, पोडो, ऐलो); गर्म कपड़ेसे पेट ढँकनेपर भी नहीं घटना (आर्स, सल्फ, मैग-फास ; परन्तु सोनेपर घटना—ऐलो, ऐल्यू,

कैल्के, कोलो, फास, रास ; सोनेपर—मर्क-वाई, सैबाड ; चित्त सोनेपर—ब्राई ; एक करवट सोनेपर—पोडो ; दाहिनी करवट सोनेपर—फास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—रजोरोध, इसके साथ बहुत तकलीफ़ देनेवाला पेट फूलना ; जरायु-ग्रीवाके संकोचनकी वजहसे बून्द-बून्द खूनका स्राव होता है। ऋतुके समय वंक्षण-सन्धिके स्थानपर या पुट्ठेमें दबाव मालूम होना, इसके साथ ही बार-बार पाखानेका वेग ; ऋतुके समय उदर और शरीरमें स्थान-स्थानपर फटनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; रगड़ने या घसनेसे तकलीफ़ घट जाती है। बाधक—प्रदर—पानीकी तरह और बहुत ज्यादा स्राव (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-ऐन, सिनकोना, ग्रैफ, कैलि-आयोड, नाइट्रम ; रक्तात्त—कैन्थ, सिङ्को, काकूय, कोपेवा, क्रियो, ऐसिड-नाई ; दूधकी तरह—कैल्के, पल्स, सिपि, साइलि)।

श्वास-यंत्र ।—सवेरे स्वरभङ्ग (कास्टि, बोवि, नक्स, युपेटो) ; दिन चढ़नेपर फिर नहीं रहता। रातमें खाँसी होती है और खाँसनेके समय वायु-नलीके मुँहपर जलन होने लगती है (ऐसिड-फास, युफोर्बि ; खाँसनेके समय स्वरनलीमें जलन—ऐको, मैग-सल्फ, फास, स्पञ्जिया ; छातीमें जलन—कास्टि, आयोड फास, स्पञ्जिया)। श्वासका अभाव, चलनेके समय (फास, पल्स, स्टैन), विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (आर्स, कैल्के, पल्स, आयोड, मर्क, नक्स, स्टैन, सिपि)। बार-बार जम्हाई आना या जृम्हण (इग्ने, सल्फ) ; सन्ध्याके समय वृद्धि (इग्ने, प्लैट)।

प्रत्यङ्ग ।—बाँह, पैर, तलवा, निम्न पैर वगैरह अंशोंमें जगह-जगह पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ; मूर्च्छावायु रोग हो जानेके पहले-जैसे स्नायवीय लक्षण सब प्रकट होते हैं।

नींद और स्वप्न ।—पिता-माताकी मृत्युके सपने देखकर पुत्र, कन्या आदि बहुत कातर हो पड़ते हैं। ऐसे सपने देखते हैं, कि चोर और डाकुओंने उनकी मातापर आक्रमण किया है।

वृद्धि ।—सन्ध्याके समय, चलनेके समय, सवेरे।

घटना ।—पट सोनेपर, मलनेपर, सामनेकी ओर झुकनेपर और गर्म वस्त्रसे शरीर ढँक लेनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐन्थ्रा, कास्टि, पल्स, वेलेरियाना, मस्कस ।

तुलनीय ।—ऐम्ब्रा, मस्कस, नक्स-वोमिका । प्रतिक्रियाका अभाव (सोरिनम); थूजा (मस्से) ।

दोषघ्न ।—कोलचिकम) ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम ।

कालोफाइलम थैलिक्ट्राइडिस

(CAULOPHYLLUM THALICTROIDES)

दूसरा नाम ।—ब्लू कोहस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मदर-टिंचर या विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— गर्भ-स्रावकी आशङ्का ; प्रसवके बादका दर्द ; रज रुकना ; बन्ध्यत्व ; ताण्डव ; वाधक ; हैज़ा ; नकली गर्भ ; प्रमेह ; स्तनके नीचे प्रदाह ; प्रसव वेदनाका असीम कष्ट ; नकली दर्द ; प्रदर ; रजो-विकार ; डिम्बाधारका स्नायु-शूल ; गर्भिणीके नाना प्रकारके उपसर्ग ; वात या सन्धिवात ; जरायुका आक्षेप ; जरायुकी संकोचन शक्तिकी दुर्बलता इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह स्त्रियोंके लिये विशेष उपयोगी है । गर्भावस्थामें, प्रसवके समय और प्रसवके बाद जबतक शिशु स्तन पीता रहता है, प्रसूतिको इन सभी अवस्थाओंमें कोई-न-कोई बीमारी या स्वास्थ्यमें विकार पैदा हो जा सकता है, जिसमें इसकी जरूरत पड़ सकती है । औरतोंकी हाथ-पैरकी सन्धियोंके वातके दर्दमें यह बहुत फायदा करता है । वाधक रोगकी यह एक प्रधान दवा समझी जाती हैं । इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—जरायु विकारकी प्रतिक्षिप्त क्रियाकी वजहसे अन्यान्य अङ्गोंकी बीमारी, सरमें दर्द, वमन, स्वरभङ्ग, वातकी वेदना, ऐंठन और अकड़न । जरायु आदिका बाहरकी ओर खिंच आना अर्थात् ऐसा मालूम होना, मानो बाहर निकल पड़ेगा । जरायु विकारकी वजहसे निम्नाङ्गका (अर्द्धाङ्गका) पक्षाघात । बायें डिम्बाधारमें या

बायें स्तनके नीचेवाले स्थानमें दर्द (ऐक्टिया-रेस) ; कम उम्रकी बालिकाओंका प्रदर। दर्द, क्षत, विलोपी—रह-रहकर प्रबल वेगसे पैदा हो जाता है और एक जगहसे दूसरी जगहपर घूमा करता है ; रातमें बहुत बढ़ जाता है, बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजना ; आन्तरिक कम्पनकी वजहसे कमजोरी, जैसा कि कमजोर होनेपर रोगीको मालूम होता है कि वह काँप रहा है। बोलनेकी शक्ति भी नहीं मालूम होती। निद्राहीनता, अस्थिरता और थोड़ेमें ही कातर हो पड़ना। छोटी सन्धियों और पेशियोंका वातका दर्द। प्रसव वेदना—अनियमित प्रकोप ; रोगीके क्लान्त हो पड़नेपर दर्द बन्द हो जाता है ; बहुत तकलीफ़ देनेवाला दर्द।

लक्षणावली

मस्तक।—वातकी वजहसे सरमें दर्द, खासकर औरतोंका। सर-दर्द, आँखके गोलेके पीछेकी ओर दबाव मालूम होता है और धुँधली दृष्टि, जरायुमें विकारकी वजहसे शङ्खदेश या कनपटीमें रह-रहकर भयानक पीसनेकी तरह दर्द, मानो दोनों पार्श्व भयङ्कर रूपसे पिस जानेके कारण एक हो जायँगे। अक्षिगोलक (आँखका गोला) के पीछेकी ओर दबाव जैसे दर्दके साथ आँखसे आँसू गिरना।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—प्रदरके स्रावके साथ ललाटदेशमें 'मातृ-चिन्ह' या पीले रङ्गका जन्मगत चिन्ह (लहसन), सब दाँतोंमें दर्द रहता है और वे लम्बे मालूम होते हैं (ब्राइ, कास्टि, सल्फ ; दर्द-भरे मालूम होते हैं—इग्ने, पल्स, रास)। जीभ सफ़ेद लेप चढ़ी ; मुँह बहुत सूखा और गर्म। गलकोषके भीतर दर्दकी वजहसे बार-बार निगलनेकी चेष्टा करना।

उदर।—सरमें चक्कर आनेके साथ बार-बार खट्टा या तीता स्वादयुक्त मुँहमें पानी भर आना। रह-रहकर वमन, पाकाशयमें शूलका दर्द और बहुत अधिक मिचली ; जरायुमें खुजलानेकी वजहसे पाकाशयिक पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना। पाकाशयमें उत्ताप या भरापन मालूम होना। पाकस्थली और तलपेटमें गड़बड़ी मालूम होना और दाहिने कोखमें बहुत संकोचनकी तरह दर्द मालूम होना। नाभि-प्रदेशमें बार-बार शूलका दर्द ; वायु निकलनेपर घटना।

मल।—मलमें कड़ापन और एक दिनका नागा देकर पाखाना हो जाना। दिनके १ बजनेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना हो जाना—किसी तरहका दर्द नहीं रहता ; मल कोमल और सफ़ेद आभा लिये।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव-स्रावके पहले ताण्डव रोग, मूर्च्छागत वायु, मृगी वगैरह रोगका पैदा हो जाना (ऐक्टि)। प्रदर—स्राव बहुत ज्यादा और श्लेष्मा-भरा (ग्रैफ, डिक्टैम्नस, नाइट्रम, ओलियेन), कषायगुणवाला और त्वचाका क्षय करनेवाला (ऐल्यू, आर्स, बोर, बोवि, कोना, मर्क, क्रियो, नेट्रम-म्यूर, कैमो, पल्स, साइलि); अवसाद (कार्बो-ऐन, स्ट्रैन); ऊपरी पलक इतनी भारी मालूम होती है, कि अंगुलीसे उठाकर देखना पड़ता है (जेल्सि, ग्रैफ, कैल्के-कास्टि); ललाटपर मातृचिन्ह या पीले रङ्गका लहसन जैसा दाग दिखाई देता है (सिपि); छोटी उमरकी बालिकाओंको प्रदरका स्राव (कैल्के); बन्ध्यत्व पैदा कर देनेवाला प्रदर (बोर, कास्टि, ऐगर, ग्रैफ, नेट्रम-म्यूर, आरम-म्यूर-नेट)। जरायुकी पेशियोंकी शिथिलताकी वजहसे प्रत्येक बार गर्भ-स्राव (वाइबर्नम-ओप्यु, वाइबर्नम-प्रुनिफो ; रक्तहीनता और गहरे विषादके साथ—हेलोनि)। प्रसवके समय जरायुका मुँह चौड़ा नहीं हो जाता है ; बहुत देरतक प्रसवका दर्द होता है, जरायु-ग्रीवामें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। प्रसवके समय दर्द क्षणभर रहनेवाला, क्षणभरतक प्रकाशित होनेवाला रहता है और उसका वेग समान नहीं रहता ; कष्टदायक और प्रथम अवस्थामें निष्फल वेदना (ऐक्टिया)। प्रसवके बाद रक्त-स्राव ; जरायुकी पेशियोंका शिथिल भाव ; गर्भ-स्रावके अन्तमें शिराओंसे गौण रक्त-स्राव (सिकेल, थ्लैस्पि)। प्रसवके बादका दर्द या प्रसवान्तिक वेदना ; प्रसवके दर्दके बाद यह बहुत देरतक स्थायी रहता है ; रह-रहकर तलपेटके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्ततक दर्द मालूम होता है ; दर्द वंक्षणप्रदेश या कूल्हा (Hip-joint) तक फैल जाता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia), बहुत दिनोंतक जरायुकी स्थिति-स्थापकताकी कमीकी वजहसे शिथिल आधारसे लगातार क्लेदका स्राव हुआ करता है (सिकेलि ; बहुत बदबूदार—बेल, कार्बो-ऐन, सिकेलि ; बहुत झाल गन्ध-मिला—क्रोक, हिप, पल्स, रास, सिकेल, वेरेट)। आक्षेपिक प्रदरका बाधक,—मूत्रस्थली, पाकस्थली, जरायुकी वृहत् बन्धनी, पुट्ठे या वंक्षण-सन्धि, यहाँतक कि वक्षस्थल और दोनों पैरोंतक रह-रहकर दर्द मालूम होता है ; जरायुमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे भी विकार पदा हो जाता है और आर्त्तव-स्राव बहुत थोड़ा हुआ करता है (जैन्थक्सिलम ; वाइबर्नम)। स्थान-च्युत ; जरायु पीछेकी ओर उलट जाता है (आरम-म्यूर-नेट)।

प्रत्यङ्गादि।—मणिबन्ध (कलाई) और अंगुलीमें तेज़ संकोचन मालूम होना। वात-वेदना, मणिबन्ध और अंगुलीकी सन्धियोंमें सूजन, मुट्ठी बाँधनेपर इन सब सन्धियोंमें कतरनेकी तरह दर्द मालम होता है ; दर्द गर्दनकी ओर फैलकर गर्दनमें अकड़न पैदा कर देता है (पल्स)। वातकी वजहसे गर्दनकी अकड़न और इसी वजहसे माथा बाईं ओर घूम जाता है—घुमाया नहीं जा सकता (ऐक्टिया, डाल्का)। चलनेके समय या घूमते समय भी सन्धियोंमें मटमट आवाज़ होती है, मानो कुछ टूटा करता है (कमरमें फूटन—सल्फ ; गर्दनमें फूटन—काक्यु, निकोल, पल्स, स्टैन ; वायु-सन्धि मैली—चिनिन-सल्फ, मर्क, ऐण्टि-टार्ट, थूजा ; चलनेके समय या शरीर सञ्चालन करनेपर जानु और निचले पैरकी सन्धियाँ कड़कड़ करती हैं—काक्यु, नक्स, लेडम, टैबाक)। हाथ-पैर आदिमें लगातार उड्डीयमान दर्द, एक जगहपर कई मुहूर्त्ततक रहता है (पल्स, कैलि-बाई, लैक्टियुका)। छोटी सन्धियोंपर रोगका हमला होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐक्टिया, बेलेडोना, लिलियम-टाइ, पल्स, सिकेलि, लैसि-वार्स, बाइवर्नम-ओप्युलस और बाइवर्नम-प्रुनिफोलियम।

तुलनीय।—जेल्स (बाधक); पल्स (प्रसव-वेदना); सिमिसि, बेलेडोना (रह-रहकर दर्द); कैल्के (श्वेत-प्रदर); लैके, सल्फ, आस्टिलेगो (डिम्बाधारमें दर्द); मैग्नेशिया (जरायुका आक्षेप); ब्रायो (वातमें); सिकेल।

शक्ति।—१म दशमिकसे ३ और उच्चतर क्रम।

कास्टिकम

(CAUSTICUM)

दूसरा नाम।—पोटैसियम हाइड्रेड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—हैनिमैनके मतसे ताजा तैयार किया हुआ चूना ; थोड़ी देरके लिये पानीमें भिगोकर उसे बुराकर बाइसलफेट आफ पोटासके साथ बुझाये हुए पानीमें भिजा लेना पड़ता है। इसके बाद स्पिरिट मिलानेपर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
मुँहासा; स्तनका छोटापन; अन्धापन; संन्यास; सन्धिवात; मूत्राधारकी बीमारियाँ; श्वासनलीका प्रदाह; दाह; मोतियाबिन्द; ताण्डव; कब्जियत; आक्षेप; कास; बहरापन; दाँत निकलना; उपझिल्लीकी बीमारियोंके बादवाला पक्षाघात; कर्णस्राव (कानसे पीब बहना); दुबलापन; शय्यामें पेशाब हो जाना; मृगी; आँखकी बीमारियाँ; मुँहका पक्षाघात; नाली; दाँतका नासूर; गलगण्ड; अर्श (बवासीर); सरमें दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; दादकी तरह उद्भेद; वंक्षण-सन्धिकी बीमारी; रसवात धातु; ध्वजभङ्ग; बहुव्यापक सर्दी; सविराम ज्वर; स्वरनलीका प्रदाह; सीसेका विष फैलना; श्वेत-प्रदर; आर्त्तवमें विकार; पेशियोंका शूल; स्नायुशूल; नाककी बीमारियाँ; पक्षाघात; गर्भावस्थाकी बीमारी; मूत्रद्वारशायी ग्रन्थिकी बीमारी; वात; कच्छु; गण्डमाला; चर्म-रोग; चेचक; तोतलाना; उपदंश; पेशियोंके अगले भागका संकोचन; गलेमें नाना प्रकारके जखम; जीभकी बीमारियाँ; जीभका पक्षाघात; नाना प्रकारके जखम; मूत्रनालीका प्रदाह; मूत्रका विकार; शिराओंका फूलना; स्वरभङ्ग; मसे; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—काले केश, दृढ़-तन्तु या क्षीणकाय, रोगी देह, कच्छु-विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंकी बीमारी और जिनका गाढ़ा पीला या उतरा हुआ चेहरा रहता हो और जो प्रायः श्वासयन्त्र और मूत्रयन्त्रके रोगोंको भोगा करते हैं, उनकी बीमारीमें यह उपयोगी है। जिन बच्चोंके केश गहरे काले रहते हैं और जिनकी आँखें गहरी काली होती हैं, जिन्हें थोड़ेसे कारणसे ही बीमारी पैदा हो जाती है, जिन्हें दाँत निकलनेके समय पुट्ठा, गर्दन वगैरह अंशोंकी खाल उधड़ जाती है या जिन्हें दाँत निकलनेके समय अकड़न आदिकी बीमारी हो जाती है, कास्टिकम उनकी प्रधान दवा है। मूर्धाकी त्वचा, गलेके भीतरवाली श्वासनाली, मलान्त्र, मलद्वार, मूत्रनाली, अपत्य पथ, जरायु वगैरहमें जखम हो जाना या खाल उधड़ जाना। गहरे शोक और बहुत दिनोंतक रोग भोगनेकी वजहसे मस्तिष्क या मेरुमज्जाकी क्रियाके विकारमें भी यह लाभदायक है। इसका एक और भी प्रधान लक्षण है:—ठण्ड लगनेकी वजहसे शरीरके किसी अंश-विशेषमें पक्षाघात हो जाना, जिस अंशपर यह आक्रमण करता है, उसी अंशमें रुका रहता है। पास या दूरके किसी अंशमें नहीं चला या फैल जाता है। जैसे स्वरयन्त्र, जीभ, पलक, मुँह, प्रत्यङ्ग, मूत्रस्थली

और शरीरके दाहिने पार्श्वपर ही इसका विशेष आक्रमण होता है। रोगी आरोग्य लाभ करता-करता रुक जाता है, सब रोग एकदम दूर नहीं हो जाता, एकदम आरोग्य नहीं होता (सोराइन, सल्फ)। नीचे इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण लिखे जाते हैं:—स्वरभङ्गके साथ नासा-रोग ; सर्दी ; ऐसा मालूम होना, मानो नाकमें जखम पैदा हो गया है ; स्वरतन्तुके पक्षाघातकी वजहसे एकाएक स्वरलोप हो जाना। मुँहमें मेदमय तेलकी तरह स्वाद। मल डोरीकी तरह कड़ा या लेईकी तरह गाढ़ा। देखनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो तेल और चर्बीसे ढँका हुआ है। खड़े होनेपर मल सहजमें ही निकल आता है। खाँसी,—वक्षमें खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द और स्पर्शका सहन न होना ; थोड़ा-सा बलगम गलेमें पैदा होकर फिर गलेमें ही विलीन हो जाता है। ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; गर्म शय्यापर सोनेसे बढ़ना। खाँसने, छींकने या मन उत्तेजित होनेपर अनजानमें पेशाव हो जाता है। शरीरकी त्वचा, वृहत् असम-पृष्ठ रहती है और थोड़ेमें ही खून निकलनेकी सम्भावना रहती है तथा मसोंसे भरी रहती है, खासकर अंगुलीका अगला भाग और नाकका ऊपरी भाग। प्रत्यङ्गोंके गांसेमें त्वचा क्षय या खाल उधड़ना ; वातके दर्दकी वजहसे रोगी-अङ्गोंकी अकड़न और आवर्त्तक पेशी (Flexers) का संकोचन और सन्धियोंमें लचीलापन न रहना। बच्चा चलता-चलता डगमगाया करता है और सामान्य कारणसे भी गिर जाता है। असमयमें ऋतु प्रकाश हो जाता है और स्राव थोड़ा होता है ; केवल दिनमें ऋतुस्राव होता है, सोनेपर रुक जाता है। बहुत दिनोंतक शोक या दुःख भोग करना (ऐसिड-फास, कोलचि, लैके, नेट्रम-म्यूर, फास, प्लेट, स्टैफ), अनिद्रा या रातमें जागरण (ऐसिड-नाई, काक्यु, इग्ने) ; भय, डर, आनन्द वगैरह एकाएक मानसिक आवेग (काफि, जेलसि, क्रियो, लैके, लाइको, सैम्बु, लाइड्रोफोब, हाइपिर) ; क्रोध चिढ़ और रुके हुए उद्भेद (Suppressed eruptions—ब्राई, फास, ऐसिड-फास, सल्फ, ओपि, बेल) वगैरहसे उत्पन्न बीमारीमें उपयोगी है।

लक्षणावली

मन।—दुःखित,—चिन्ता, शोक या दुःखकी वजहसे ; विषाद और निराशासे भरा ; इसके साथ ही रोना, सामान्य कारणसे ही बच्चा रोना आरम्भ कर देता है। दूसरोंकी तकलीफ़में बहुत ही समवेदना प्रकाश करता है (काक्यु, कोलो)। रोगके विषयमें सोचनेपर (खासकर अर्श) रोग बढ़ जाता है

(बैराई, कैल्के-फास, हेलोन, मिडोरिन, ऐसिड-आक्स, पेट्रोल)। ऋतुके पहले अत्यन्त विमर्ष भाव (लाइको, नेट्र-म्यूर, स्टैन ; ऋतुके समय—सिपि)। चिन्ता, भय और उद्वेगसे भरा हुआ। रोगी हमेशा अपनी या दूसरेकी विपत्तिकी आशङ्का करता है (ऐमोन-कार्ब, ऐमिलेनन, चिनिन-सल्फ, सिमिफ्यु, क्लिमेट, कूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लौरो, लिलि-टाइग्रि, मैग-कार्ब, स्कूटेलारिया, सिपि, वैलि, वेरेट-विरि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; पार्श्व या सामनेकी ओर गिर जानेका उपक्रम होता है (सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम—आर्नि, फेर, फेरम-ऐसेट, नेट्र-म्यूर, पोडो, रैनान, रास ; बाईं ओर गिरना चाहता है—कैनाब, कोना, ड्रोसे, युफोर्ब, फेरम-ऐसेट, मेजेर, रियुम, स्कियुला, जिङ्कम) ; रातमें शय्यापर शायितावस्थामें (कोना, मर्क, नक्स, सल्फ) ; शय्यासे उठनेके समय (बेल, क्रोक, ग्रैफ, ओलि-यैन, पेट्रोल, पल्स, रास, साइलि) और फिर सोनेके समय (कैलेड, कोना, रेडोड, स्टैफ, थूजा) या दिनके ११ बजनेके समय और किसी चीज़की ओर बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखते रहनेपर (सार्सा) ; मस्तिष्ककी दुर्बलता और उद्वेगके साथ निर्मल वायुमें घट जाता है (ऐमोन-म्यूर, मैग-सल्फ, फेलैन, ऐसिड-सल्फ)। मस्तिष्क और ललाटका मध्यवर्त्ती अंश शून्य मालूम होता है। ललाटके बायें शृङ्ग-देशमें, बाईं ओरके उच्च देशमें दर्द मालूम होता है।

आँख।—ठण्ड लगनेकी वजहसे दाहिनी आँखकी पेशीका पक्षाघात। पलकें मुँदी रहती हैं—खोलकर रखी नहीं जातीं, आप-से-आप गिर जाती हैं (कोलो-फाइ, जेल्सि, ग्रैफ, कैल्के, कास्टि ; दोनों पलकोंका—सिपिया)। मोतियाबिन्द रोगमें चीज़ोंका ऊपरी अंश या केवल निचला अंश दिखाई देता है (ऐसिड-म्यूर ; केवल निचला अंश दिखाई देता है—अरम), ऐसा मालूम होता है, मानो आँखमें धूल या कण गिर गया है ; दृष्टि-पथ या आँखके सामने मानो आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (ऐगार, ऐमोन-म्यूर, बेल, सिङ्को, काक्यु, कोना, मर्क, ऐसिड-नाइ, फास, सिपि, साइलिसिया)। आँखके सामने मानो एक पतला आवरण है (ऐल्यू, बेल, कैल्के, क्रोक, फास, ऐसिड-फास, रियुटा, सल्फ) दो देखना—सब चीजें दो दिखाई देती हैं (बेल, साइक्यूटा, डिजि, हायो, लाइ, नेट्र-म्यूर, ओलियेन, पल्स, सिकेल, वेरेट) ; रातमें आँख सट जाती हैं। आँसुओंका स्राव कसैला (ऐल्यू, युफोर्ब, इयुफ्रे, ग्रैफ, क्रियो, लैके, मर्क, ऐसिड-

नाई, पल्स, साइलिसिया, सल्फ), इसके साथ ही माथेतक फैलनेवाला तेज़ दर्द। वातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह।

कान।—कानमें हू-हू, ढं-ढं, गुन-गुन शब्द, रोगीका अपना कण्ठ स्वर उसके भीतर प्रतिध्वनित होता है। कर्ण-विवरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना (सिङ्को, ऐसिड-नाई)।

नाक।—स्वरभङ्गके साथ सर्दी, नाकके ऊपरसे शल्क या खाल उधड़ना; नाकके छेदका मुँह जखम भरा; बार-बार छींक; नाकके ऊपर दाने या छोटे-छोटे मसे निकलते हैं (थूजा)।

मुखमण्डल।—पीला रङ्ग (कैल्के, कैन्थ, ग्रैफ, लाई, मैग-म्यूर, मर्क, नेट्र-म्यूर, नक्स, पल्स)। मुँहकी दाहिनी ओरका स्नायुशूल; रातमें बढ़ना; रोगी शीत-कातर रहता है और प्यास नहीं रहती; गलेसे कानतक फैलनेवाला संकोचनकी तरह दर्द मालूम होता है; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना. इसके साथ ही थोड़ा आर्त्तव-स्राव। खाँसनेके समय पेशाब हो जाता है, इसके साथ ही पक्षाघात। दोनों हनु अकड़ जाते हैं, मुँह खोल नहीं सकता।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—चबानेके समय गाल काट डालता है (जीभ काट देता है—इग्ने)। जीभके पक्षाघातके साथ अस्पष्ट बात (हायोसा; जीभमें भार, सुन्न-जैसी—कैलि-कार्ब)। निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठमें अर्बुद या मांसपिण्ड अड़ा है। निगलनेके समय गलेमें कड़ाक आवाज़ होती है; मानो गलेमें कोई ठण्डी चीज़ उठ रही है। वायुनलीके मुँहपर दर्दके साथ श्लेष्मा निकलना। सूखी खाँसीके साथ गलेकी भीतरकी खाल उधड़ जाना और खुजली मालूम होना। बहुत देरतक खाँसनेके बाद कहीं थोड़ा-सा कफ़ निकलता है। गलेमें जलन मालूम होती है,—घूंट निगलनेपर भी नहीं घटती; दर्द ऐसा मालूम होता है, मानो छातीसे उठ रहा है।

पाकाशय आदि।—मुँहका स्वाद मेदमय (चर्बीकी तरह—ऐसेर, मैङ्ग, ऐसिड म्यूर, ओलियेन, सैबाइ)। मिष्टान्नसे अरुचि (ग्रैफ, सलफर)। मानो पाकाशयमें चूना दग्ध हो रहा है (क्रीक)। माथेके भीतर उत्ताप मालूम होनेके साथ आँतोंका शूल; समूची देह बहुत ठण्डी मालूम होती है; सोनेपर घटना। प्यास रहती है, परन्तु पानी पीना नहीं चाहता (ऐङ्गस, ग्रैफ,

साइलिसिया देखिये); पेट बहुत फूला मालूम होता है और उसमें हुड़हुड़ गुड़गुड़ शब्द होता है।

मलान्त्र और मल।—मलमें कड़ापन; बार-बार वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता (ऐनाक, नक्स); खड़े होकर पाखाना फिरनेपर सहजमें ही पाखाना हो जाता है; अर्शकी बलि पाखाना होनेमें गड़बड़ी पैदा कर देती है; मल गांठ-गांठ चर्बीसे ढका और चमकीला; जो बच्चे रातमें अनजानमें पाखाना-पेशाब कर देते हैं, उनकी कब्जियत। मल कड़ा और आँवसे लिपटा हुआ (ग्रैफ, हाइड्रैस) और बहुत छोटी-छोटी गांठभरा जलनके साथ रक्त-मिला पाखाना होता है। मलद्वारमें नासूर (Fistula) अर्श—मसा बहुत कड़ा और छूनेपर, चलनेपर, खड़े होने या बैठनेपर बहुत तकलीफ़ होती है; पाखाना होने बाद घटना; खुजलानेवाला सुई बेधनेकी तरह यन्त्रणादायक; रस-स्राव करनेवाला, शूल बेधनेकी तरह यन्त्रणा और जलन—यह विषय सोचनेपर और भी दर्द बढ़ जाता है। छूने या जोरसे बात करनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है। मलद्वारके चारों ओर बड़े-बड़े दर्द-भरे मसेकी तरह उद्भेद निकलते हैं, उससे पीव, खून और रसका स्राव होता है (थूजा, ऐसिड-नाई, सिनाबेर, युफ्रे)।

पेशाब।—खाँसने, छींकने या नाक साफ़ करनेके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (पल्स, स्क्रियुला, वेरेट ; खाँसनेपर अनजानमें मल निकल जाता है—फास, स्क्रियुला)। मूत्रनालीमें खुजली, बार-बार और वृथा ही पेशाबका वेग होता है, प्रायः कई बून्द पेशाब ही निकलता है; मलद्वारकी अवरोधक पेशीका फैलना और उसके साथ ही मलका कड़ापन। पेशाब रुकना; इसके साथ-साथ प्रबल वेग, कभी-कभी कई बून्दभर निकलता है। पहली नींदके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (सिपि)। मूत्रद्वारकी मुखशायिका ग्रन्थिसे लगातार रस निकलकर स्मरण-शक्ति घटा देता है। शिश्नमुण्डके चारों ओर अधिक परिमाणमें सफेद रङ्गका निकला हुआ रस जम जाता है। नश्तर लगवाने बाद पेशाब रुकना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु,—बहुत विलम्बसे होता है (कोना, ग्रैफ, कलि-कार्ब, पल्स, सल्फ), पर स्राव बहुत ज्यादा हुआ करता है (बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत ज्यादा स्राव—बेल, कैल्के); रुककर, फिर कई दिनोंतक थोड़ा-थोड़ा स्राव हुआ करता है। बहुत बदबूदार, केवल दिनमें स्राव होता है

(कैक्टस, लिलियम ; केवल रातमें होता है—बोवि, मैग-कार्ब ; रातमें ज्यादा परिमाणमें—ऐमोन-म्यूर, ऐमोन-कार्ब ; सोनेपर रुक जाता है—कैक्ट, लिलियम ; सोनेपर निकलता है—मैग-कार्ब ; चलनेपर रुक जाता है—मैग-कार्ब ; बैठनेपर बहुत ज्यादा स्राव होता है—ऐमोन-कार्ब, जिङ्कम । सोनेके समय बहुत ज्यादा स्राव—क्रियो) ; कमर और तलपेटमें भयानक दर्द मालूम होता और कभी-कभी थक्का-थक्का रक्त निकलता है । पहला रजःस्राव बहुत तकलीफ़ देनेवाला । प्रदर,—स्राव सिर्फ रातमें (ऐम्ब्रा), इसके साथ ही बहुत अवसन्नता (क्रियो, कार्बो-ऐन ; सवेरे प्रदर-स्राव—नेट्रम-म्यूर ; चलनेके समय स्राव—बोवि), बहुत ज्यादा परिश्रम, रात-जागरण वगैरह कारणोंसे स्तनका दूध प्रायः रुक जाता है । स्तन-वृन्तकी खाल उधड़ जाती है और फटा-फटा हो जाता है तथा उसके चारों ओर फुन्सियाँ हो जाती हैं (कैस्टोर, इथ्यु), यौवन आनेके समय और पूर्णिमाके दिन अपस्मार या मृगीका दौरा होता है ।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्ग और स्वरलोप (बेल, मर्क, फास) ; गलेके भीतरी स्थानकी खाल उधड़ जाना (डा० क्लार्क कहते हैं, कि वायुनलीमें जखम भरा दर्द, वक्षमें नहीं) मालूम होनेके साथ सवेरे बढ़ना (युपिट ; सन्ध्याके समय बढ़नेपर—कार्बो-वेज, फास) । खाँसी—वक्षमें खाल उधड़ती है और जखमकी तरह दर्द ; कफ़ निकालनेकी शक्ति न रहनेकी वजहसे निगलना पड़ता है (आर्निका, कैलि-कार्ब) ; ठण्डा पानी पीनेसे घटता है (ठण्डा पानी पीनेसे बढ़ना—ऐमोन-म्यूर, कार्बो-वेज, सिलि, स्क्वियुला ; ठण्डे पानीसे शरीर धोनेपर घटना—बोवि) ; साँस छोड़नेके समय (ऐको, लैके ; साँस लेनेके समय—सिना, मिनि, ओपि, स्क्वियुला ; लम्बी साँस लेनेके समय—ऐमोन-म्यूर, सिङ्को, साइना, कोना, क्यूप्रम, डाल्का, ग्रैफ, लाइको, नेट्र-म्यूर, स्क्वियुला) ; कफ़ (Sputa) रातमें ही ज्यादा निकला करता है (कैल्के, ऐण्टि-टार्ट, स्टैफ ; दिन-रात समभावसे—विस्मथ ; सोनेके समय—कैल्के, ग्रैफ, नाइट्रम ; सन्ध्याके समय—क्रोटन, कैलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-कार्ब, नाइट्रम, फास, रियुटा, सिपि, सल्फ) ; खाँसनेके समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (पल्स, स्क्वियुला, वेरेट) ; बोलनेपर खाँसी आती है (ऐनाक, बेराइ, कैमो, सिङ्को, डिजि, हिप, मैङ्गो, सिफाइट, मर्क, ऐसिड-म्यूर, फास, साइलि, स्टैन, सल्फ) । दमा—विशेषकर बैठने या सोनेके समय (सोनेपर घटना—सोराइन ; केवल खड़े होनेपर श्वास-प्रश्वास चला करता है—कैन-सेट) ; खाँसनेपर नितम्बमें दर्द मालूम होता है

(बेल)। साँस लेनेके समय वक्षस्थलके गभीरतम प्रदेशमें सुई या शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। हृत्पिण्ड प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्दके साथ हृद्कम्पन; रोगी सो नहीं सकता (सोनेसे बढ़ना—नेट्र-कार्ब, टैबैकम; चित्त होकर और दाहिनी करवट सोनेपर—कैलि-नाई; चित्त होकर सोनेपर—आर्स; खड़े होनेपर—ऐगार; झुकनेपर—ऐङ्गस, कैनाब, स्पाइजि; चलनेके समय—ऐल्यू, ऐम्ब्रा, आरम, सिपि, स्टैफ); रातमें सोना आरम्भ करनेके समयसे शय्यासे उठनेके समयतक कई दिनोंतक रातके पिछले पहरमें और शरीर हिलानेपर कुछ घट जाता है; परन्तु फिर सोते ही पैदा हो जाता है।

पीठ और कटि-देश।—पृष्ठ-फलकके भीतरके अंशमें बहुत दर्द और पकड़न मालूम होती है। गर्दनके पीछे चोट लग जानेकी तरह दर्द (मोच खानेकी तरह दर्द—कोना); गलगण्डकी तरह कण्ठदेशमें सूजन (संकोचन मालूम होनेके साथ—आयोड)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बच्चा बहुत देरसे चलना सीखता है (कैल्के-फास)। बच्चा चलनेके समय डगमगाया करता है और सहजमें ही गिर पड़ता है। रोगी रातभर छटपटाता है, जरा-सा सोकर उठ बैठता है और बहुत बेचैन हो पड़ता है, उसे किसी तरह भी आराम नहीं मिलता। बैठकर माथा हिलाया करता है और अन्तमें थककर सो जाता है (युपिट, रास)। लगातार शरीर हिलाया करता है, पर उससे भी आराम नहीं मिलता। बहुत सुस्ती मालूम होती है और शरीर काँपा करता है। हाथ या पैरका पक्षाघात; सर्दी लगने या पानीमें नहानेकी वजहसे या आन्त्रिक ज्वर अथवा गलेके भीतरकी झिल्लीके प्रदाहके बादका पक्षाघात, यह क्रमशः पैदा होता है। आकुञ्चक पेशीके संकोचन और सन्धियोंके अकड़नके साथ वातका दर्द, सब पेशियाँ संकुचित हो जाती हैं (ऐमोन-म्यूर, साइमिक्स, गुयेकम, नेट्र-कार्ब; सुन्न मालूम होनेके साथ बायें पार्श्वका कटि-स्नायु-शूल (दाहिने पार्श्वका—कोलो, मैग-फास)। बाँह और हाथमें धीमा छेदनेकी तरह दर्द। दोनों पैरोंमें सुरसुरी, मानो त्वचाके नीचे कोई कीड़ा रेंग रहा है। रातमें दोनों पैरोंमें स्पन्दन हुआ करता है (जिङ्कम, वेलि)। आक्षेप या धनुष्टङ्कार—चिल्लाना, दाँत कड़कड़ाना, हाथ-पैरोंका बहुत ही तेज़ सिकुड़ना और फैलना। ज्वरकी तरह उत्ताप और इसके साथ-ही-साथ पैरोंमें शीतलता। रोगी हमेशा हिलता रहता है, परन्तु शरीर हिलानेपर तकलीफ़ कुछ भी नहीं घटती।

त्वचा ।—जखमके चिन्ह सब खासकर जलने और झुलसनेकी वजहसे पड़े हुए चिन्ह सबपर फिर जखम पैदा हो जाता है (ऐसिड-फ्लु, ग्रैफ)। पुरानी चोटकी जगहपर दुबारा दर्द होने लगता है ; रोगी कहा करता है, कि बचपनमें अमुक अङ्ग जल जानेके बादसे आजतक फिर किसी दिन भी स्वास्थ्य अच्छा न रहा अथवा यह अङ्ग कभी एकदम आरोग्य न हुआ। मसे—ऊँचे-नीचे पीठवाले, बहुत बड़े (थूजा, ऐसिड-नाई, कैल्के ; जखम पैदा होनेकी सम्भावना और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता—नेट्र-कार्ब ; गुच्छे-के-गुच्छे पैदा होते हैं—फेरम-पिक ; कड़े और टपककी तरह दर्दसे भरे—सल्फ ; लिङ्गमुण्डकी पीठपर—ऐण्टि-टार्ट ; हाथमें—कैल-म्यूर ; तलहत्थीमें—नेट्र-म्यूर ; शिश्नावरक त्वचाके ऊपर और शिश्न-गात्रपर—सिपि) ; सहजमें ही उनसे खून जाता है (ऐसिड-नाई, कैल्के ; ओठमें—नाइट्रिक-ऐसिड और रस-स्रावी—युफ्रे) ; तली कोमल और उसका ऊपरी भाग गट्टेकी तरह कड़ा ; बाँहमें, हाथमें, पलकोंमें, चेहरेपर और नाकके ऊपर ; जिन बच्चोंका दाँत निकल रहा हो, उनके पुट्ठेमें, गलेमें, बगलमें वगैरह अंशोंमें खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है (बच्चेके दोनों चूतड़ोंके बीचवाले अंशमें—कैमो ; बार-बार होनेपर—लाई ; रोगवाली जगहमें बहुत दर्द होनेपर—मर्क-सोल ; रातमें घूमनेकी वजहसे दोनों ऊरुमें होनेपर—इथूजा)। जिस करवट सोता है, उसी ओर दर्द होता है ; इसीलिये बार-बार करवट बदलना पड़ता है (रास, बैप)।

ज्वराधिकारमें ।—शीतावस्था—बहुत शीत-कातरता और जाड़ा मालूम होना ; रजाई-पर-रजाई ओढ़ता जाता है, परन्तु गर्मी नहीं मालूम होती (लैके) ; परन्तु गर्मीसे आराम नहीं मिलता। समूचे वाम पार्श्वमें शीत मालूम होनेके साथ बहुत जाड़ा मालूम होता है ; भीतर शीतवाली अवस्थामें ही पसीना होने लगता है। गर्मी फिर नहीं मालूम होती है, आधी रातमें बहुत ही भीतरी जाड़ा मालूम होता है। मुँहसे कँपकँपी आरम्भ हो जाती है। सोने (कैलि-कार्ब) और पानी पीनेपर घटता है (ग्रैफ, इपिक)। सन्ध्या ६ बजेसे ८ बजेतक उत्ताप ऊपरकी ओरसे नीचेकी ओर फैलता है। उत्ताप पैदा हो जानेके साथ-ही-साथ जाड़ा भी मालूम होता है। वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ब्राई, सिङ्कोना) और शरीर सञ्चालनसे पसीना बढ़ जाना (कार्बो-ऐन, सिङ्को, काक्कु, हिप, कैलि-कार्ब, मर्क, नेट्र-म्यूर, फास, सोरिनम, सिपि, साइलि, सल्फ, वेरेट)। खट्टी गन्ध लिये रातके समय होनेवाला पसीना (हिप, मैग-कार्ब,

ऐसिड-नाइ, सिपि, साइलि, सल्फ)। सवेरेके समय पसीना—अन्तिम रातमें ४ बजनेके समय।

निद्रा।—रातमें निद्रितावस्थामें मृगी या अपस्मार रोग पैदा हो जाता है (कैल्के-कार्ब, कूप्रम, बूफो, लेके, ओपि)।

वृद्धि।—आकाश निर्मल रहनेपर, बाहरसे गर्म घरमें प्रवेश करनेपर; ठण्डी हवा, खासकर बहती हुई ठण्डी हवा लगने; शरीर ठण्डा होनेपर; भींज जाने या स्नान करनेपर (रास, ऐसिट-क्रूड)।

घटना।—जलीय ठण्डी हवामें; गर्म हवामें; आधी रातमें।

सम्बन्ध।—सदृश।—अनुपूरक—कार्बो-वेज, पेट्रोसेलिन, फास्फोरस, इसके बाद या पहले व्यवहारमें नहीं लाया जाता।

तुलना।—आर्निका (वाध्य होकर श्लेष्मा निगल जाना पड़ता है); जेलिस, ग्रैफि और सिपिया (असम्पूर्ण पक्षाघात रोगमें); रियुमेक्स और कार्बो-वेज (स्वरभङ्ग—सन्ध्याके समय बढ़नेपर); सलफर (बहुत दिनोंतक स्वरलोप रोगमें); सीसेके विषसे उत्पन्न रोग आदिमें (पक्षाघातमें) यह प्रतिविषके रूपमें कार्य करता है और कच्छु, रोगमें मर्क्युरियस और सलफरके अपव्यवहारमें भी विष-नाशक रूपमें काम करता है।

दोषघ्न।—ऐसाफि, काफिया, कोलोसि, नक्स-वोम।

शक्ति।—तीसरे दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—५० दिन।

सियानोथस अमेरिकानस

(CEANOTHUS AMERICANUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अमेरिकन न्यू-जर्सी देशीय चायसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—अतिसार; हृत्पिण्डकी बीमारी; कामला रोग; श्वेत-प्रदर; प्लीहामें दर्द; प्लीहाका बढ़ना और कड़ापन; रजोबन्ध।

उपयोगिता और आभास।—यदि एकमात्र प्लीहा रोगमें ही इसकी उपकारिता सीमावद्ध रहती, तो मैलेरियासे पीड़ित बङ्गदेशका बहुत बड़ा उपकार होता और यह एक अमूल्य निधिकी तरह समझा जाता। जो हो, यह एक अमूल्य निधिकी तरह समझे जाने योग्य है। प्लीहा चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, इसे मन्त्रकी तरह सियानोथस स्वाभाविक अवस्थामें ला देता है; खासकर यदि प्लीहामें दर्द होता हो। वाम पार्श्व (जिस तरह चेलिडोनियममें दाहिना पार्श्व) इसका सर्वश्रेष्ठ क्रियाक्षेत्र है।

लक्षणावली

मन।—अवसाद; स्नायविक भावापन्न।

मस्तक।—सरमें दर्द, आँख बड़ी मालूम होना।

मुख-विवर।—ज्वरादिके बाद मुँहका जखम। आरक्त ज्वरान्तिक क्षतयुक्त गलेका दर्द।

उदर।—कम्प-ज्वर और क्विनाइनके अपव्यवहारको वजहसे बहुत ज्यादा बढ़ी हुई आकारकी प्लीहा। प्लीहामें दर्द, इसके साथ ही प्रबल वमन। समूचे बाएँ पार्श्वमें दर्द पैदा हो जाता है; बहुत अधिक श्वासकृच्छ्रता; बलगम निकलनेके साथ खाँसी, ज्वर और बहुत ज्यादा पसीना। प्लीहा-प्रदेशमें तेज़ दर्द। कभी-कभी यकृतमें भी दर्द मालूम होता है। प्लीहाके दर्दकी वजहसे रोगी बाईं करवट सो नहीं सकता।

मलान्त्र।—उदरामय, इसके साथ ही आमाशयके भीतर और मलांत्रमें बहुत दबाव मालूम होना।

मूत्र।—हरी आभा लिये फेनभरा पेशाब होना, पेशाबके साथ पित्त, शर्करा वगैरह निकलता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—निर्दिष्ट समयके दस दिन पहले ऋतु-स्राव हो जाता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है। प्रदर, स्राव पीले रङ्गका (ग्रेनेट), इसके साथ ही बायें कोषमें बहुत अधिक दर्द; दर्द इतना अधिक होता है, कि रोगिनी बाईं करवट सो नहीं सकती।

सार्वाङ्गिक।—बहुत अधिक स्नायवीय उत्तेजनाके साथ जाड़ा मालूम होना और भूख न लगना। शीतसे काँपता रहता है।

निद्रा ।—समूची रात जागते रहना ।

ज्वर ।—दिनके चार बजनेके समय बोखार, कम्प, प्लीहाका बढ़ना ।

वृद्धि ।—देह हिलाने और बाईं करवट सोनेपर ।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—नेट्रम । यह बार्बेरिस, कोनायम वगैरहके बाद लाभदायक है ।

तुलनीय ।—सीड्रन, ऐगारि, चायना, नेट्रम, कैम्फोरा (अतिसार) ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम ।

सीड्रन

(CEDRON)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारमें बीज मिलाकर मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—सरमें दर्द ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; ताण्डव ; सङ्गमके बादके उपसर्ग ; मृगी ; अस्थापन ; जलातङ्क ; मूर्च्छावायु ; सविराम ज्वर ; स्नायुशूल ; वात ; साँप काटनेकी वजहसे विष ; दाँतका दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—कोई भी बीमारी क्यों न हो, सीड्रन सदृश होनेपर ठीक एक ही समय (दिनके ३ बजे) रोगका आविर्भाव होगा । यह इस दवाका एक प्रधान और सिद्धिप्रद लक्षण है । मलेरियाकी वजहसे बोखारमें और स्नायुशूलमें, यदि रोज़ ठीक एक ही समय बीमारी पैदा हो जाती हो, खासकर दिनके ३ बजनेके समय, तो सीड्रन एक अव्यर्थ दवा है । कीड़े, साँप, बिच्छू आदि काटनेमें भी इससे विशेष लाभ होता है ।

लक्षणावली

मन ।—सभी मनोवृत्तियोंकी जड़ता और गड़बड़ी मालूम होना । अपने रिश्तेदार तथा बन्धु-बान्धवोंको भी पहचान नहीं सकता (एलेन, कूप्रम, कैलि-बाई-क्रोम) ।

माथा, आँख और कान।—माथा फूला हुआ मालूम होता है (बेल, रैनान, रैना, स्क्विरेटस, थिरिड), मूर्द्धदेशमें क्रमशः बढ़नेवाला भार मालूम होना। एक कनपटी या शंखदेशसे आँखके भीतरवाली राहसे दूसरी कनपटीतक तेज़ दर्द। बायीं आँखके ऊपरी भागमें बहुत तेज़ दर्द मालूम होता है। चेहरेके समूचे दाहिने अंशमें स्नायु-शूलकी तरह दर्द, यह दर्द रोज़ सवेरे ८ बजनेके समय पैदा हो जाता है। आँखके गोलेमें तेज़ दर्द,—चारों ओर यहाँतक कि नाकके भीतरतक बहुत तेजीसे फैल जाता है। ललाटके एक प्रान्तसे अन्य प्रान्ततक दर्दकी वजहसे बुद्धि लोप हो जानेका उपक्रम हो जाता है। काले कपड़ेपर शिल्प-कार्य करनेसे बढ़ जाता है। आँखोंसे कड़वे (Acrid) आँसुओंका स्राव होता है—मानो गाल जला जाता है। सब चीजें घोर अन्धकारमें ढँकी दिखाई देती हैं (बेल, कैल्के, साइक्ला, युनिमिन, मर्क, प्लम्ब); आँख रगड़नेपर दूर हो जाता है (क्रोक, प्लम्ब, पल्स)। सभी चीजें ही लाल दिखाई देती हैं (बेल, कीना, क्रोक, हायो, सार्स, स्ट्रैन ; हरा—डिजि, सिपि ; पीला रङ्ग—कैन्थ, डिजि, सेण्टो ; कितने ही-रङ्गोंसे रँगा हुआ—एनहैलो, साइकूय, नाइट्रम, स्ट्रैम)। एक या दोनों गालोंमें छेदनेकी तरह दर्द,—कभी-कभी आँखके बीचवाले प्रदेशमें तेजीसे फैल जाता है ; मुँहका पुराना सविराम स्नायुशूल, नित्य ठीक ३ से ८ बजेतक (सन्ध्यामें) के बीचमें पैदा होकर दोसे चार घण्टेतक स्थायी रहता है। क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे कानमें लगातार झिनझिन शब्द हुआ करता है।

मुख-विवर।—जीभ,—अगले भागतक पीले रङ्गका लेप ; सवेरे जीभ कुटकुटाती है और खाने बाद अच्छी हो जाती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ सुन्न हो गई है (जीभ कुटकुटाती है, पर कुल्ला करनेपर दूर हो जाता है—हेलिबो ; जीभ और ऊपर तालुदेशमें कुटकुट करता है—सेङ्गिविन ; जीभका समूचा ऊपरी भाग पिट-पिट करता है—टिलिया) ; मुँह सूखा और लसदार लेईकी तरह लारसे भरा। मुँहके भीतर, गलकोष, अन्ननाली और पाकस्थलीमें जलन, मानो इन सब अंशोंकी झिल्ली क्षय हो गई है ; मुँहका भीतरी भाग और जीभ बहुत सूखी ; बोलनेमें तकलीफ़ होती है ; रोगीको लगातार बहुत प्यास मालूम होती है। मुँहमें बहुत ज्यादा धातुके जङ्गकी तरहवाली स्वाद-भरी लार सञ्चित होती है, मुँह बहुत कड़ुआ या खट्टे स्वादसे भरा रहता है। कण्ठनाली इतनी संकुचित हो जाती है कि रोगी लारतक निगल नहीं सकता।

पाकस्थली-अंत्राशय।—क्षुधा और रुचिका न रहना। प्यासकी वजहसे मध्याह्नमें ठण्ढा और रातमें गर्म पानी पीनेका आग्रह प्रकाश करता है; सवेरे शय्यासे उठनेपर जरा कड़वा स्वाद मिली डकार आती है और कनपटीमें तेज़ दर्द मालूम होता है। पाकस्थलीमें उत्ताप और पूर्णता मालूम होना। तलपेटमें सन्ध्याके समय वायु भर जाता है, शय्याके उत्तापसे शरीर गर्म हो जानेपर, बड़े दाँत, यकृत और प्लीहामें दर्द पैदा हो जाता है। इसी वजहसे रोगी प्रायः रातभर सो नहीं सकता।

मल।—बहुत कूथनके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पाखाना होना। थोड़ा-सा दर्द होनेके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें दही या जमे हुए दूधकी तरह मल निकलता है (गेम्बो)।

पेशाब।—मसाना या मूत्रग्रन्थि (Kidney) से मूत्र निकालनेवाली शिरा (Ureters) तक बहुत जलन और दर्द मालूम होता है, मानो उसमेंसे गर्म पानी प्रवाहित हो रहा है। शरीरमें शीत्कार या सुरसुरी मालूम होनेके साथ-ही-साथ ऐसा मालूम होना मानो चींटी रेंग रही है। मूत्रनालीसे दिन-रात रस या लार बहा करती है। बार-बार वृथा पेशाबका वेग। बहुत ज्यादा और फीके रंगका पेशाब होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रोगिनी उत्तेजना प्रवण और कामातुरा रहती है, संगमके बाद स्नायवीय सुस्ती और ताण्डव रोगके कारण हाथ-पैरोंका अस्वाभाविक आक्षेप (पुरुषोंको सुस्ती मालूम होती है)। आर्त्तव-स्रावके समय मुँह और जीभ बहुत सूखी मालूम होती है और बहुत तेज़ प्यास मालूम होती है; मृगीकी तरह आक्षेप; जिस दिवस रजःस्राव आरम्भ होता हैं, ठीक उसी दिवस आर्त्तवके आविर्भावके लक्षण सब पैदा हो जाते हैं। प्रत्येक ऋतुके समय धनुष्टंकारकी तरह आक्षेप पैदा हो जाया करता है। प्रतिमास ऋतुके पाँच या छः दिन पहले नियमित भावसे प्रदरका स्राव हुआ करता है (काकुलस)। ऋतुके बाद मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चय हुआ करती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—रातके दस बजनेके समय प्रत्येक सन्धि-स्थानोंमें तेज़ वातका दर्द। कोहनी और दाहिनी बाँहके निचले आधे अंशमें चोटकी तरह दर्द मालूम होना। दाहिनी बाँह और हाथ सुन्न और निष्क्रिय मालूम होता है, रोगी कलम नहीं पकड़ सकता। दाहिना पैर सुन्न मालूम होता है। जानु-

सन्धियोंका शोथ। निचला पैर फूलनेके साथ प्रत्येक सन्धिमें तेज़ दर्द मालूम होना। दाहिने हाथके बड़े अंगूठेकी पोरमें या अग्रभागमें सूजनके साथ प्रत्येक सन्धिमें तेज़ दर्द मालूम होना और उस दर्दका कन्धे तक फैल जाना। दाहिने तलवेके बगलमें (एँड़ीमें) दर्द पैदा होकर जानुतक फैल जाता है। चकत्तेकी तरह दादसे दर्द चारों ओर फैल जाता है।

ज्वर।—रोज़ रातमें २ बजे या तीन बजनेके समय (थूजा) शीत या कम्प, इसके पहले ही मानसिक अवसाद या उत्तेजना प्रकाशित हुआ करती है। शीतावस्थामें प्यास बिलकुल नहीं रहती; शीतावस्था ही इसका प्रधान लक्षण है। उत्तापावस्थामें गर्म पानी पीनेका आग्रह (कैल्केरिला, चेलिडो, युपेटो, पार्पि, सैबाई); दोनों पैर सुन्न, निष्क्रिय और बड़े मालूम होते हैं (अंगुली सुन्न—सिपि)। बहुत ज्यादा पसीना इसके साथ ही प्यास और हाथ-पैरमें छेदनेकी तरह दर्द। विरामावस्थामें सारे शरीरमें गड़बड़ी मालूम होना और कमजोरी मालूम होना। उत्तापावस्थामें हाथ-पैर आदि मानो बढ़ गये हैं, ऐसा मालूम होता है, मानो समूचा शरार सुन्न हो गया है।

सम्बन्ध—सदृश।—ऐरेनिया-डायाडेमा—जिस तरह गीली भूमि और जलीय वायुकी वजहसे ज्वरमें उपयोगी है, सीड्रन उसी तरह गर्म देशके बोखारमें उपयोगी है।

दोषघ्न।—लैकेसिस, बेलेडोना।

तुलनीय।—चायना, आर्स, ऐरेलि, बेलेडो, सैबाडिला, आर्स (यथा-समय आक्रमण), ऐरेलि (सविराम ज्वर); ऐगारि, ऐकेसिस, स्ट्रैमो, रूटा, हायोसा इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रे दशमिकतक साधारण व्यवहार होता है; परन्तु ३० शततमिक क्रम व्यवहार करनेपर ही ज्वर आदिमें विशेष फायदा होता है।

सेन्क्रिस काण्टार्ट्रिक्स

(CENCHRIS CONTORTRIX)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकाके एक तरहके साँपका विष ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन ; सर्दी ; अतिसार ; आँख फली ; सरका दर्द ; हृत्पिण्डका दर्द ; प्रदर ; रजसाधिक्य ; डिम्बाधारका दर्द ; गलेमें दर्द ; योनिद्वारके उद्भेद ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० क्लार्क कहते हैं, कि सब तरहके सर्प-विष लक्षणोंका प्रधान गुण इसमें वर्त्तमान है । स्त्रियोंके जननेन्द्रियकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें श्वासयन्त्रके प्रदाह आदिमें और सवेरेके समयके उदरामयमें यह उपकारी है । वक्षस्थलकी दाहिने और स्त्री-जननेन्द्रियके बाएँ पार्श्वमें सन्ध्या और रातके समय और शयनावस्थामें इसके अधिकांश लक्षण प्रकट हुआ करते हैं । इसके कई प्रधान लक्षण हैं :—आच्छन्न भाव ; अर्द्ध चैतन्य ; आँखोंके सफेद अंशमें चेतना न रहना ; ऊपरी ओठकी सूजन ; सारे अङ्गकी सूजन ; पक्षाघात ; शीतल लसदार पसीना ; हर्ष और विषादका पर्यायक्रमसे पैदा होना ; जाग्रत अवस्थामें सपनेकी अवस्थाकी तरह अनमना भाव ; डरावने सच्चेकी तरह सपने ; जागनेपर भी जो देखता था "वह स्वप्न था" यह विश्वास लौटाया नहीं जा सकता । कामोद्दीपक सपने ; भौंओं और आँखोंके बीचका स्थान फूल जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो आँखपर पानीकी एक थैली झूल रही है । उदरामय—मल रूखा, ठण्डा पाखाना होनेके पहले यन्त्रणा ; पीले रङ्गके प्रदरका स्राव ; दाहिने डिम्बाधारमें दर्द ; योनिद्वारके ऊपर दादकी तरह उद्भेद निकलना ; प्रचण्ड, सूखी और वायुनलीके भीतर खुजलीकी वजहसे खाँसी ; दिनके २ बजनेके समय बढ़ जाती है ; बेचैनी और श्वास-रोध होनेका उपक्रम होना ; कलेजा धड़कना और ऐसा मालूम होना कि मृत्यु अति निकट है ; इस तरह श्वासका अभाव कि रोगिनी पीछेकी ओर माथा झुकाकर सोती है, वस्त्र आदि कसकर पहन नहीं सकती ; सहन नहीं होता और तीसरे पहरके समय शीत या ज्वरका आविर्भाव हो जाता है । समूची देह इतनी फूल उठती है और ऐसा मालूम होता है कि फटकर दो हो जायगी । हृत्पिण्ड प्रदेशमें, योनिके बाहरी देशसे और मलद्वारमें टपककी वजहसे रोगिनीकी नींद खुल

जाती है और इसके बाद ही त्रिकास्थि प्रदेशमें धीमा-धीमा दर्द पैदा हो जाता है ; घूमनेपर वह शान्त होता है ।

लक्षणावली

मन ।—स्मरण-शक्तिकी कमजोरी ; मानसिक उद्वेग और रोगिनी अपने मनमें सदा यही समझती है कि एकाएक उसकी मृत्यु हो जायगी (सोचती है, कि वह जल्दी ही मर जायगी—ऐको, ऐग, कैस्ट, एपिस, आर्स, लैक-डि, कैनाब, हाइड्रैस, पेट्रोल, फाइटो, पोडो, साइलिसि), सभीका अविश्वास करती हैं (ऐनाक, ऐनजोला, साइकि, हायो, मर्क)। अकेला रहना अच्छा समझती है (आर्नि, कैम्फ, ऐक्टिया, साइक्ला, हेलिबो, आक्साइड्रोप, थूजा)। उसके दैनिक कार्य आनन्दजनक होनेपर भी उसके सम्पादनसे विराग प्रकाश करती है (ऐनाक, ऐगार, गुयायेक, आक्साइड्रोप, ऐसिड-नाई, सिपि, टैराक्स, जिङ्कम)। शय्यापर स्थिर होकर सो नहीं सकती ; मनको सन्तुष्ट करनेके लिये घरमें टहला करती है। लगातार रोती है और ठण्डी साँस लिया करती है, मानो न जाने कितने विषादमें वह भरी है ; उसे ऐसा मालूम होता है कि समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा है, मानो समय अब नहीं कटता (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, आरम, कैनाब, कैमो, मिडोरिन, नक्स-वोम ; फिर ऐसा मालूम होता है, कि समय बहुत तेजीसे बीत रहा है—काक्यु, थिरिड) ; चित्त परिवर्त्तनशील, कभी बहुत प्रसन्न रहता है, फिर तुरन्त ही विषन्न हो जाता है (ऐल्यू, बैसिलिन, कार्बो-ऐन, कार्बोनि-सल्फ, क्रोकस, हाइपिर, इग्ने, प्लैट, स्ट्रैम, टैरेण्ट, थ्रूस्पियम, वैलेरि)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, तीसरे पहर ४ बजेसे सन्ध्याके ७ बजेतक ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरका सब रक्त सरकी ओर दौड़ता चला जाता है। दोपहरमें दोनों कनपटियोंमें भयानक दर्द मालूम होता है ; घरके भीतर थोड़ा भी उत्ताप सहन नहीं कर सकता। ओठ सूखे और फटे-फटे हो जाते हैं। शय्यासे उठनेपर (सवेरे) दोनों कनपटियोंमें तेज़ दर्द होता है, पहली बार भोजनके बाद दूर हो जाता है। सरका दर्द आराम होनेके बाद मूर्द्धाकी त्वचा बहुत दर्द-भरी हो जाती है।

आँख ।—आँखोंमें दर्द और दृष्टि अस्पष्ट रहती है, बाईं पलक फड़का करती हैं ; भौंओंको तली फूल जाती है, मानो आँखपर एक पानी-भरी थैली लटक रही है।

नाक ।—रन्ध्रके भीतर बहुत जलन मालूम होती है, मानो मिर्चका चूर लगा है (कैप्सि); नासारन्ध्रमें कटे घाव; नासारन्ध्रके भीतर सूखा श्लेष्मा सञ्चय होनेकी वजहसे नाकसे साँस नहीं छोड़ सकता (नक्स, सैम्बु)।

मुखमण्डल ।—मुँह और माथेमें कभी-कभी उत्तापका आविर्भाव होता है। आँखोंके भौंओंके नीचे थैलीकी तरह सूजन (आँखके नीचे—एपिस, केलि-कार्ब)। आँखके कोनेमें नीलापन दिखाई देता है।

मुँहके भीतर और गलेके भीतर ।—दाँतका दर्द, गर्म या ठण्डा पानी पीनेपर निद्रावस्थामें बहुत ज्यादा परिमाणमें लार बहा करती है और उससे तकिया भींज जाती है। बार-बार गाढ़ा सफेद रङ्गका डोरीकी तरह श्लेष्मा भरा कफ़, जो सहजमें नहीं निकलता।

उदर ।—मिचली; बरफ खानेपर घटना और पानी पीनेपर बढ़ना और वमन या ओकाई पैदा हो जाना। सब तरहके खाद्योंसे अरुचि; सभी खाद्य-दोष बताते हैं। तलपेटमें चारों ओर मानो किसी तरहका दृढ़ बन्धन बँधा हुआ रहनेकी तरह मालूम होना (कोना, लाई); कमरका बन्धन असह्य।

मलान्त्र और मल ।—मलद्वारमें खुजलाहट और खाल उधड़ जाना, अर्श—खुजली और जखम-भरा। सवेरे ही बाध्य होकर शय्या त्यागकर पाखाना जाना पड़ता है (लाई, साल, ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स)। मल काला, पानीकी तरह और काली तली जमनेवाला (आर्स, सोरिन, लेप्टैन, प्लम्ब)। मल बहुत देरतक थोड़ा-थोड़ा निकला करता है, फिर रुक जाता है। मल पानीकी तरह और वेगसे निकलता है, पहले यन्त्रणा नहीं रहती; परन्तु कई घण्टे बाद ही पाखाना होनेके पहले बहुत दर्द हुआ करता है।

पेशाब ।—खाँसते-खाँसते पेशाब हो जाना (कास्टि, स्क्वियुला, स्ट्रैन, वेरेट)। रातमें शय्यापर सोनेके थोड़ी ही देर बाद पेशाबका वेग होता है; रोगीको उसी समय बाध्य होकर उठ बैठना पड़ता है और बहुत देरतक वेग होने बाद कई बूंद पेशाब होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रदर; पीले रङ्गका स्राव (ग्रैनेट, सिपा, सियानोथस)। प्रबल रमणेच्छा। ऋतुके समय बैठे रहनेपर कमरमें बहुत दर्द होता है; रोगिनीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है (ऋतुके समय बैठनेपर कमरमें दर्द—ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, बेल, कास्टि, लाई, फास)। हिलने-डोलनेपर

बाएँ डिम्बाधारमें तेज़ दर्द मालूम होता है (ग्रैफ, लैके); दाहिने डिम्बाधारमें दर्द (ऐपिस, बेल)। पीले रङ्गका प्रदर स्राव। योनि-द्वारपर दादकी तरह उद्भेद।

श्वास-यंत्र। नींद आनेपर श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है (क्लोरम, जेल्सि, ग्रिण्ड, लैकं, कैन, लैके, ओपि)। सोते ही श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है (आर्स, ऐसेट कैल्के, डिजि, हिपर, लैके, नक्स. फेलैन, फास, पल्स, सैम्बु, सिपि, ऐण्टि-टार्ट, सल्फ; चित्त होकर सोनेपर—ओलि-ऐन, फास, साइलि; माथा झुकाकर सोनेपर—सिङ्को, कोलचि, हिपर, नाइट्रम, पल्स; करवट सोनेपर—कार्बो-ऐन, पल्स); सोनेकी बात मनमें आते ही एक विषम भावना पैदा हो जाती है। बोलनेके लिये उपयोगी ताक़त नहीं मिलती (कास्टि, ड्रोसे, मेजि. स्पाइजि, सल्फ)। छातीको फाड़ देनेवाली सूखी खाँसी,—तीसरे पहर तीन बजनेके समय आरम्भ होकर सन्ध्याके समय तलपेटमें दर्द होता है (आर्स, बेल, कोलो, कोना, फास, स्ट्राम, सल्फ, वेरेट)। तेजीसे चलनेके समय (फेर, हिप, सिना, लैके, नेट्र-म्यूर, स्ट्रैम) या ऊँचे चढ़नेके समय खाँसी आती है (नाइट्रम)। विषम लगनेकी तरह श्वासनलीमें दम रोक देनेवाली खाँसी; खाँसनेपर बाईं आँखमें पानी भर आता है (स्क्वियुला)। गाढ़ा खून-भरा कफ़, सफेद रङ्गका फेन-फेन बलगम तथा सवेरे कुछ पीले रङ्गका कफ़ गहरा पीला होता हुआ निकलता है। सवेरे तर श्लेष्मा मिली घड़घड़ करनेवाली खाँसी (आर्स, लैके, ओपि, फास, पल्स, साइलि)।

वक्षस्थल।—कलेजेकी धड़कनके साथ छातीके भीतर छूँ-छूँ आवाज़ होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो समूचा वक्षस्थल फैल गया है (मर्क, वाइपेरा) और हृत्पिण्डमें बहुत दर्द होता है। हृत्पिण्डमें रातभर गड़बड़ी मालूम होना। हृत्पिण्डके शिखर-देशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, सन्ध्याके समय इस दर्दका बढ़ जाना। वक्षके दाहिने पार्श्वमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द (ब्राई, ऐको, ऐण्टि-टार्ट, रैनान-बल्बो, ऐमोन-कार्ब, कोना, क्रियो, वै.लि-आयोड)।

गर्दन और पीठ।—दिनमें ऐसा मालूम होता है, मानो गला दब गया है; गलेपर कपड़ा रखनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है, मानो श्वास रुकी आती है (लैके, ऐसिड-सल्फ)। सोनेपर गलेकी धमनीमें टपकका दर्द होता है।

प्रत्यङ्गादि ।—सन्ध्याके समय तलहत्थीमें जलन होती है या गर्मी मालूम होती है (लैके, सेङ्गियु, सिकेलि, स्टैन, युपेट, नक्स, सिपि)। बाँह कभी सुखे और उत्तापयुक्त, इसके क्षणभर बाद ही ठण्डे हो जाते हैं; ठण्डी हवा लगते ही हाथ लाल हो जाता है, मानो फटकर बून्द-बून्द रक्त निकला आयेगा।

नींद ।—रातमें बहुत छटपटाता है। समस्त रात सपने देखता है,—मतवालोंका सपना, मृत व्यक्तिका स्वप्न, नङ्गे मनुष्य, डाकू और नर-नारीके अश्लील व्यवहार।

सार्वाङ्गिक ।—समूचो देह इतनो फूल गयो-सो मालूम होती है, कि फट जाना चाहती है।

ज्वर ।—तीसरे पहर शीत या ज्वर।

वृद्धि ।—रातमें सोनेके समय; सोने बाद; तीसरे पहर और नींद खुलनेपर।

उपशम ।—सवेरे और चलनेके समय।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—एपिस, लैके, हायो, ब्राई, सिपि, क्रोटेलस।

दोषघ्न ।—कैमो, ऐमोन-कार्व।

तुलनीय ।—लैकेसिस बहुत-कुछ सदृश है; परन्तु बाएँ डिम्बाधारपर लैकेसिसकी क्रिया अधिक होती है। पतली चीजें खा नहीं सकता—यह लक्षण इसमें नहीं है (क्रोटेलस) क्रोकस, कैलि-फास (पलकें)।

प्रतिविष ।—कैमो, ऐमोन-कार्व।

शक्ति ।—६ठे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

सेण्टोरिया टैगाना

(CENTAUREA TAGANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—डाक्टर क्लार्कने लिखा है :—सर्दी, अतिसार, आँखोंमें दाह, ज्वर, बहुव्यापक सर्दी, सविराम ज्वर वगैरह रोगोंमें लाभदायक है।

सदृश ।—बेलेडोना, सिड्रन, कार्डुमम।

शक्ति ।—निम्न-क्रम।

सिरेसस वर्जिनियाना

(CERASUS VIRGINIANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकन फार्मा-कोपियाके अनुसार ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत दिनोंतक रोग भोगनेके बाद कमजोरी दूर करनेके लिये खासकर हृत्पिण्डकी बीमारीके बाद इसका व्यवहार बहुत लाभदायक हुआ करता है (कैल्के-फास, ऐसिड-फास, सोरिनम, लोरो-सिरेसस)। इसका एक और भी सिद्धप्रद लक्षण है, कि रोगी जो कुछ खाता है, वही अम्लमें परिणत हो जाता है (कैल्के-कार्ब)।

लक्षणावली

पाकस्थली ।—अजीर्ण रोगमें खाई हुई चीज़ अम्लमें परिणत हो जानेका लक्षण (कैल्के-सल्फ, रोबिनिया)। क्षीण और सविराम गतिवाली नाड़ीके साथ भूख न लगना।

जननेन्द्रिय ।—शुक्रक्षय हो जानेकी वजहसे सुस्ती और कमजोरी।

वक्षस्थल।—हृत्पिण्डकी गति क्षीण और विषम और नाड़ी सविराम; द्रुत; क्षीण और विषम; ज्वर आदि बहुतसे सुस्त और कमजोर करनेवाले रोगोंमें; खासकर हृत्पिण्डके दर्द आदिमें आराम होनेके बाद यह बहुत ताक़त देता है (कैल्के-फास, सोरिन, आर्स-आयोड)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

सिरियस बानप्लैण्डियाई

(CEREUS BONPLANDII)

दूसरा नाम।—कैक्टस जातिका एक वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—डण्ठलके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभ करता है:—खसड़ा; अजीर्ण; हृत्पिण्डकी बीमारी; उन्माद; स्नायुशूल।

उपयोगिता और आभास।—इसे हृत्पिण्ड और वक्षस्थलकी बीमारीवाले रोगियोंके लिये कैक्टसके सदृश कहा जा सकता है। सर्वसाधारणका उपकार हो, ऐसी कोई कीर्त्ति स्थापित करनेकी इच्छा लगातार बनी रहना।

लक्षणावली

मन।—लगातार काम करनेकी इच्छा बनी रहना। रोगी हमेशा वही काम करना चाहता है, जिससे जगतका उपकार हो। लोगोंको गाली देनेकी इच्छा (ऐनाक)। समय बहुत धीरे-धीरे बीतता है (आर्जेण्ट-नाई, कैनाबइन, कैमो, मिडोरिन)। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसने ईश्वरके आगे कोई अमार्जनीय अपराध किया है।

मस्तक और आँख।—सरके पीछेकी ओर दर्द, माथेके पीछे कुछ बाएँ हटकर ऐसा मालूम हो, मानो एक टुकड़ा काष्ठ-फलक अड़ा हुआ है। सरके पिछले भागसे तेज़ दर्द मस्तिष्कमें सञ्चालित होता है। चलने और सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ जाता है। अक्षि-गह्वर (आँखका गड़हा) और आँखके

गोलेके भीतरसे तेज़ दर्द मालूम होता है। मुँहमें बराबर लार सञ्चित होती रहती है और मुँहका स्वाद पानीकी तरह रहता है, सभी चीजें पानीकी तरह स्वादहीन मालूम होती हैं।

वक्षस्थल।—बाएँ पार्श्व में हृत्पिण्डके भीतरसे दर्द मालूम होता है। वक्षस्थलमें बाईं ओर वृहत् पेशीमें तेज़ दर्द; ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षपर एक भारी पदार्थ दबाया हुआ है; कभी-कभी सुई बेधनेकी तरह मालूम होता है। वक्षस्थलसे लेकर हृत्पिण्डके भीतरसे दर्द प्लीहामें फैल जाता है; हृत्पिण्डमें तेज़ दर्द अनुभवमें आता है; ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्डमें अस्त्र बेधा जा रहा है। श्वास-प्रश्वास बहुत देरसे चलता है—बहुत लम्बे समयकी तरह।

त्वचा।—शरीरपर पीब-भरे दाने।

निद्रा।—औंघाई, जम्हाई आना इत्यादि।

सम्बन्ध।—सदृश।—सिरियस-सर्पेण्टियस—पक्षाघात पैदा होनेकी तरह सुन्नपन मालूम होना; हृत्पिण्डमें दर्द; जननेन्द्रियकी शक्तिका घट जाना या शक्तिहीनता (ऐग, कैलेडियम, बार्बा, रोडो, थिरिड, जिङ्क); रेतस्खलनके बाद अण्डकोषमें दर्द मालूम होना, अधिककर स्पाइजि, कैल्मिया, नेट्र, लिलि-टाइ, कैलि-कार्ब।

शक्ति।—३री दशमिकसे ३० शततमिक शक्ति।

सिरियस सर्पेण्टिनस

(CEREUS SERPENTINUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह कैक्टस जातिकी दवा है। इसके डण्ठलसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— क्रोधावेश; शय्यामें पेशाब; नाकसे खून गिरना; हृदयमें दर्द; ध्वजभङ्ग।

सम्बन्ध।—कैक्टस, कोनायम, सोरिनम और ऐनाकार्डके साथ तुलनीय।

शक्ति।—निम्न-क्रम।

सिरियम आक्जैलिकम

(CERIUM OXALICUM)

दूसरा नाम ।—आक्सैलेट आव लाइम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग । – नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है :—खाँसी ; वाधक ; गर्भिणीका वमन इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्री-जननेन्द्रियके साथ इसका जितना निकट सम्बन्ध है, मानो शरीरके और किसी अंशके साथ इसका उतना सम्बन्ध नहीं है । जरायुमें खुजलीकी वजहसे प्रतिक्षिप्त वमन और क्षणभरके लिये आनेवाली तेज़ खाँसी, इसका निर्दिष्ट लक्षण है (ऐपोमार्फिया, क्रियोजोटम, सिम्फोरिकार्पस, ऐसिड-कार्बोलिक)। गर्भावस्थामें वमन (टैबेकम, सिम्फोरिकार्पस, ऐसिड-कार्बोलिक, क्रियोजोट, इपिक, पल्स, नक्स) और आधी पची चीज़ोंका वमन हो जाना (फेरम-म्यूर, क्रियो ; पाकस्थलीकी झिल्लीपर दाने निकलकर तेज़ वमन पैदा हो जाता है । स्थूलकाया (मोटी-ताजी) औरतोंको वाधक या रजःकृच्छ्रता ; स्थूलकाया स्त्रियोंके वयःसन्धिके समयकी बीमारी और कलेजा धड़कना—कैल्के, आर्स) ; स्राव आरम्भ होनेपर यन्त्रणा घट जाती है (लैके, सञ्जिया)।

श्वासयन्त्र ।—हूप खाँसी, वमन (तीता—सिपि ; खाये हुए पदार्थ—ब्राई, ड्रोसे, इपिक, मिफाइटिस, ऐसिड-फास, पल्स, ऐण्टिम-टार्ट ; श्लेष्मा—साइलि ; श्वास-रोधक—बेल, सिङ्को, ड्रोसे, हिप, क्रियो, लाइको, मर्क, मेजे, नक्स, सिना, स्कियुला) और इसके साथ ही रक्तस्रावके साथ (मुँहकी राहसे—आर्नि, ड्रोसे, इपिक, मर्क, नक्स ; नाकके छेदसे—बेल, ड्रोसेरा, मर्क, नक्स)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐसिड-कार्बोलिक, ऐसिड-लैक्टि, ऐमिग्डैल्स, क्रियो, सिम्फोरिकार्पस, ऐपोमार्फिया, आर्निका, मिफाइटिस, बेल, लैकेसिस ।

शक्ति ।—३रा दशमिक विचूर्णसे ६ठा शततमिक क्रम ।

सर्वस

(CERVUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके हरिनके चमड़ेसे इसका विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; स्वाद और जीभमें विकार।

सम्बन्ध ।—कार्बो-ऐनिमिलिसके साथ तुलनीय।

शक्ति ।—निम्न-क्रम।

सिट्रेरिया आइलैण्डिका

(CETRARIA ISLANDICA)

दूसरा नाम ।—आइसलैण्ड मस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके शैवालसे मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— दुबलापन ; सर्दी ; अतिसार ; यक्ष्मा ; शीताद ; जखम।

सम्बन्ध ।—स्टिका-पल्मो सदृश।

शक्ति ।—निम्न-क्रम।

कैमोमिला मैट्रिकेरिया

(CHAMOMILLA MATRICARIA)

दूसरा नाम।—कार्न-फीवर-फ्यू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे खिले हुए गाछसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अम्ल-रोग; क्रोधका दुष्परिणाम; दमा; सर्दी; काफीके सेवनका दुष्परिणाम; शूल-वेदना; आक्षेप; खाँसी; अकड़न; घुंड़ी; दाँत निकलनेके समयकी बीमारी; अतिसार; वाधक; अजीर्ण; कर्णमूल; आँखकी बीमारी; डकार आना; विसर्प; खाल उधड़ जाना; मूर्च्छा; ज्वर; आध्मान; वात; सर-दर्द; आँत उतरना; बहुव्यापक सर्दी; कामला; प्रसवका दर्द; नकली दर्द; स्तन-प्रदाह या ठुनका; रजो-विकार; दुग्ध ज्वर; गर्भ-स्राव; कर्णमूल-प्रदाह; स्नायु-शूल; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह; गर्भके समयके उपसर्ग; वात; लार बहना; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; चिल्लाना; चेतनाकी अधिकता; आक्षेप; दाँतका दर्द; जखम; जरायुकी बीमारी; जागकर चिल्लाना और रोना; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जिन सब व्यक्तियोंके स्नायु बहुत ही अधिक उत्तेजना-प्रवण रहते हैं, जिनकी चेतना शक्ति बहुत प्रखर और तीक्ष्ण रहती है, सामान्य यन्त्रणासे भी या साधारण कारणसे भी जो उन्मत्त हो उठते हैं, उनके लिये कैमोमिला मैट्रिकेरिया बहुत ही उत्तम फल देनेवाली दवा है। इसका रोगी सामान्य मानसिक उद्वेगकी वजहसे बेचैन हो पड़ता है, दर्द सहन नहीं कर पाता, फूलकी चोटसे मूर्च्छित हो जाता है (वेलि-हिप, वेरेट, काफि, इग्ने, ऐको)। बहुत दिनोंतक नशीले पदार्थ आदि व्यवहार करनेकी वजहसे स्वास्थ्य खराब हो जानेपर भी यह बहुत काम करता है। कैमोमिला जिन रोगोंमें प्रयोग किया जा सकता है, ऊपर बतायी हुई उत्तेजना प्रवणतामें उनमें मौजूद रहती है और यह स्पष्ट दिखाई दिया करती है। रोगी बच्चा हो या जवान युवक ही हो अथवा प्रसव-वेदनावाली या दाँतमें दर्दवाली रोगिनी हो, सबमें ही इसी ढङ्गका भाव और स्नायवीयता मौजूद रहती है। जहाँ ये लक्षण न हों, उस

स्थानपर यदि दवासे लाभ न दिखाई दे तो निराशा मिलेगी ही। क्रोधकी वजहसे पाण्डु-रोग, क्रोधके कारण शूलका दर्द (ब्राई, स्टैफि, कोलोसिन्थ) वगैरहमें इससे विशेष लाभ हुआ करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:— चित्तकी प्रसन्नता इसका विरुद्ध लक्षण है। निद्राका आवेश रहनेपर भी नींद नहीं आती। क्रोध पैदा करनेवाला आँतोंका शूल। दाँतमें दर्द,—गर्म चीज़ मुँहमें रखनेसे ही दर्द बढ़ जाता है। तीती और खट्टी कैके साथ पाकाशयका शूल; बच्चेको गोदमें लेकर घूमनेपर तब कहीं शान्त होता है। उदरामय—मल हरे रङ्गका पानीकी तरह, गर्म, त्वचाको क्षय करनेवाला, सफेद रङ्गकी बालू-मिला, सड़े अण्डेकी तरह गन्धवाला। वायुनलीके निचले अंशमें खुजली पैदा करनेवाला, सूखापन, छाती फाड़नेवाली खाँसी, बहुत थोड़ा कफ़ निकलता है; एक गाल लाल और दूसरा गाल मलिन; रातमें खाँसी, कफ़ गाढ़ा लसदार और कड़वे स्वादवाला; पशु का या पँजरेके नीचे नोकदार शलाका वेधनेकी तरह दर्द; ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा, थक्का-थक्का काला और खून-मिला—आक्षेपिक और प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द पैदा करनेवाला—बाधक।

लक्षणावली

मन।—बच्चा जो चाहता है, वह न मिलनेपर भी रिरियाया (रोया) करता है; कुछ देनेपर लेना नहीं चाहता या फेंक देता है (ब्राई, स्टैफ; कोई बात कहनेसे रोता है—साइलिसिया; शरीरपर हाथ लगानेसे रोता है—सिना, ऐण्टि-टार्ट और उसकी ओर देखता है या घूरता है, तो जल उठता है—ऐण्टि-क्रूड); केवल गोदमें लेकर घूमनेपर चुप रहता है (ऐण्टिम-टार्ट, ऐसिड-बेन; बच्चा गोदमें रहना चाहता है, परन्तु उसमें उसकी तकलीफ़ नहीं घटती—सिना)। अधीर, सभी विषयोंमें जल्दबाजी—सभी विषयोंमें घबड़ाया-सा (बूफो, क्रोटल-होर, इग्ने, मिडोरिन, नक्स, फ्यूलेक्स, पल्स, रियुम, ऐसिड-सल्फ़, ग्रैफ), बहुत बौखलाया या एकतरफा क्रोधित; दर्द आदि असह्य मालूम करता है; थोड़े-से दर्दमें भी पागलकी तरह हो जाता है (काफि, ऐको); एकाएक क्रोधित हो जाता है; मीठी बात तो बोलना ही नहीं जानता। रातमें उसे ऐसा मालूम होता है, मानो वह अनुपस्थित या मृत व्यक्तिकी आवाज़ सुन रहा है (ऐनाक, इलैप्स, स्ट्रान)। यदि कोई उसके पास जाता है या बैठता है, तो उसे असह्य मालूम होता है। बहुत चिड़चिड़ा,—कोई उससे

बात करता है तो चिढ़ उठता है (ऐण्टि-क्रूड, आयोड, नेट्र-सल्फ, साइलिसिया)। बोलना पसन्द नहीं करता (ऐमोन-म्यूर, ऐण्टि-क्रू, आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, इग्ने, मैग-कार्ब, आक्साइट्रोप, स्ट्रैन, वेरेट); ऋतुके समय चिड़चिड़ा, जिद्दी और कलहप्रिय, दूसरा कोई जो कुछ कहता है, उसे वही बुरा मालूम होता है मानो कोई उसे सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा न करे। सभी विषयोंमें उसे क्रोध रहता है (ब्राई, हिप, कैलि-कार्ब, लाइकोपो)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—भोजनके बाद (कोराल, लैके, नक्स, पल्स), इसके साथ ही मूर्च्छा होनेका उपक्रम (क्रोक, लैके, मस्कस, नक्स)। सवेरे शय्यासे उठनेपर मतवालोंकी तरह ढलमलाया करता है (आर्ज-नाई, जेल्सि, पल्स, नक्स)। सोनेके बाद सरमें चक्कर आना (सोनेके समय—कैलेड, कोना)। टपक जैसा सर-दर्द,—साधारणतः एक पार्श्वमें (ग्लोन)—ऐसा मालूम होता है, मानो रोगवाला अंश कोई अंगुलीसे दबा रहा है; रोगी अकसर माथा पीछेकी ओर झुकाये रहता है (माथा पीछेकी ओर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है—ग्लोन)। गर्म वस्त्र आदिसे माथा ढके रहनेपर और टहलते समय घटना। निद्रावस्थामें भी दर्द मालूम होता है। काफी या चाय पीनेकी वजहसे सरमें दर्द। माथेमें गर्म लसदार पसीना होता है (ललाटमें ठण्डा पसीना—ऐण्टि-टार्ट, वेरेट)। मूर्द्धदेशमें तेज़ दर्द,—ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भीतरसे ऊपरकी ओर धक्का दे रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो खोपड़ी उड़ जायगी (ऐक्टिया, बैप, कोबाल्ट, नेट्र-क्लो, इयुका);—पहले दर्द थोड़ा होता है, पर इस विषयको सोचनेसे ही दर्द बढ़ जाता है (बैराइ, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोन, मिडोराइन, ऐसिड-आक्सैलिक, पेट्रोल): दर्दका विषय सोचनेपर घटना (साइक्लेम)। एकाएक माथा झुकानेपर, पर पढ़ने या अन्य मानसिक परिश्रम करनेपर भी बढ़ जाता है।

आँख।—आँखोंका प्रदाह,—सवेरे दोनों आँखें सट जाती हैं (ग्रैफ, युफ्रे), जलीय तर हवा लगनेकी वजहसे या एकाएक हवा ठण्डी हो जानेपर। आँखके भीतर पीला रङ्ग (चेलिडोन, कैल्के-कार्ब, कैन्थ)। आँखमें जलन करनेवाला उत्ताप मालूम होता है (करकराता है, मानो बालूके कण गिर गये हों—कास्टि, युफ्रे; मानो नमक गिर गया है—नक्स)। पलकोंका फड़कना (ओपि, ऐगार)। आँखसे खून जाना (कार्बो-वेज)।

कान ।—कानमें दर्द,—इसके साथ ही सुई बेधने और छेदनेकी तरह दर्द—मर्क, नेट्र-मूर ; तीव्र दर्द—पल्स ; कड़ाकसे आवाज़ होती है—कैलि-कार्ब ; चबानेके समय कड़ाकसे आवाज़ होती है—ग्रैफ, नेट्र-मूर)। कर्णमूल ग्रन्थिकी सूजन और कानमें उत्ताप मालूम होना वगैरह ; कानका दर्द—दर्दसे रोगी पागल हो उठता है (काफि, ऐको)। कानका छेद रुका मालूम होता है, कानमें ठण्डी हवा सहन नहीं होती।

मुख-मण्डल और मुख-विवर ।—एक गाल लाल और गर्म और दूसरा गाल मलिन और ठण्डा। मुँहका स्नायु-शूल, हनुमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, यह उरु और दाँततक फैल जाता है और यन्त्रणाके कारण माथेसे गर्म पसीना निकला करता है तथा तकलीफ़से रोगी चिल्लाया करता है। दाँतमें दर्द,—कोई गर्म चीज़ मुँहमें लेते ही दन्तशूल या दाँतका दर्द बढ़ जाता है (बिस्मथ, ब्राई, काफि ; गर्म घरमें प्रवेश करनेपर—फास ; शय्यापर सोनेके समय—ऐण्टि-क्रूड, मर्क, पल्स) ; काफी पीनेपर (बेल, काक्यु, इग्ने, नक्स ; चाय पीनेपर—सिङ्को, काफि, इग्ने, लैके) ; ऋतुके समय (कैल्के, कार्बो-वेज, नेट्र-मूर, लैके, फास या गर्भावस्थामें—ऐपिस, ब्राई, बेल, कैल्के, हायो, मर्क, नक्स-मस, नक्स-वोम, पल्स, रास, स्टैफ)। बाईं ओरकी निचली दाँतोंकी पाटीमें दर्द अधिक मालूम होता है (आर्नि, कार्बो-वेज, कास्टि, सिङ्को, हायो, मर्क, रास, साइलि, सल्फ)। दर्दवाले दाँत बड़े मालूम होते हैं (ब्राई, कास्टि, सल्फ, लैके, नेट्र-मूर)। मुँहसे बदबू निकलती है। प्यासके साथ मुँहका भीतरी भाग और जीभ सूखी (ऐसिड-नाई, रास ; मुँह और जीभ सूखी, पर प्यासकी कमी—बेल, नक्स-मस) ; जीभ सफेद या पीला लेप या बीचका स्थान लाल, दोनों किनारे सफेद या लाल और कटे-फटे (बेल, रास) या बीचमें लाल सीमाबद्ध दाग-दाग जैसा सफेद रंगका लेप (लैक, नैट्र-मूर, टैरेक्स, रैनान) ; कोमल तालु और दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ गाढ़ी लाल रंगकी और प्रदाह-भरी (ऐको, बेल,)। कण्ठनालीमें मानो एक बतौड़ी निकल आयी है, ऐसा मालूम होना (इग्ने, नक्स)। मानो एक गर्म लोहेका गोला गलेके भीतर है (फाइटो ; गलेके भीतर मानो एक काठकी सलाई बिध रही है—आर्जेण्ट-नाइ, डलिकस, हिप, ऐसिड-नाइट्रि) ; कानकी जड़की और हनुकी तलीकी ग्रन्थियोंका सूजना (ऐमोन-कार्ब, बैराई, कैमो, कैलि-कार्ब, मर्क, ऐसिड-नाई, रास, साइलिसिया)। रातमें मुँहसे लार बहना (नक्स, रास)।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—आहारसे अरुचि (रास, जेण्टियाना-लूटिया)। ठण्डा पानी पीनेका बहुत अधिक आग्रह। सवेरे मुँहका स्वाद तीता (पल्स)। तीता पित्तमय वमन (हरे रङ्गका मांड़की तरह श्लेष्मा के करना—इपिक ; काला पित्त और रक्त-वमन—वेरेट)। बच्चोंका अन्त्र-शूल, इसके साथ ही क्रोध ; इसके साथ ही गाल गर्म और माथेमें गर्म पसीना (स्टैफि, कोलो) ; उदर वायुसे फूला, थोड़ा-थोड़ा वायु निकलता है, पर उससे आराम नहीं मिलता ; पेटपर गर्म कपड़ा रखनेपर घटता है, परन्तु बच्चा तकलीफ़से छटपटाया करता है, पर कोलोसिन्थकी तरह सामनेकी ओर झुक नहीं जाता या टेढ़ा नहीं पड़ जाता ; यदि कैमो और कोलो दोनों ही से लाभ न हो तो मैग्नेशिया-फासका प्रयोग करना चाहिये। नाभीके कुछ ऊपर और उदरके दाहिने पार्श्वसे लेकर बाएँ पार्श्वतक दर्द फैल जाता है (लाइको ; बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलता है—लैके)। पाकस्थलीमें दबाव मालूम होता है, मानो वहाँ पत्थरका एक टुकड़ा दबा है (ब्राई, आर्स, पल्स, नक्स ; मानो एक अधसिझा अण्डा वहाँ अड़ा हुआ है—ऐबिज-नाइग्रा)। पाकस्थलीमें ठण्डक मालूम होना (कोलचि, सल्फ़)। पुट्ठेमें बहुत दबाव मालूम होना, मानो आँत उतर आयगी (लाइकोपो, नक्स देखिये) ; गलेमें अम्ल चढ़ आता है और खायी हुई चीजें भी डकारके साथ चली आती हैं।

मलांत्र।—सर्दी लग जानेके कारण, क्रोध या चिड़चिड़ापनके कारण अथवा दाँत निकलनेके समय पतले दस्त आना (कैल्के, कोलो, डाल्का, मर्क, पोडो, सलफर, एरण्डो) ; तम्बाकू खानेसे ; प्रसवके बाद और ऊँची जगहसे उतरनेके कारण उदरामय पैदा हो जाना (बोरेक्स, सैनिकुला)। मल हरे रङ्गका, पानीकी तरह, त्वचाको क्षय करनेवाला, तरकारीके चूर, अण्डेके रसकी तरह गर्म बहुत बदबूदार, सड़े अण्डेकी तरह गन्ध—सोरिन ; पीले रङ्गका आलू-भरा और सड़ी गन्धभरा—पोडो ; सड़ी तलैयाकी काईकी तरह—मैग-कार्ब) ; इसके साथ ही पेटमें दर्द (आर्स, मर्क, सल्फ़)। अर्शके साथ मलद्वार फटना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर ; स्राव पीले रङ्गका, जलन पैदा करनेवाला ; योनिमें जलन और चारों ओरकी खाल उधड़ जाना (सल्फ़र)। बाधक ; प्रसवके दर्दकी तरह दर्द ; काला थक्का-थक्का खून-मिला स्राव, इसके साथ ही पैरमें छेदनेकी तरह दर्द (ऐक्टिया, ऐलो) ; जरायुसे खूनका स्राव—थक्का-थक्का

बदबूदार खून निकला करता है। बहुत जोरका नकली दर्द, रोगिनीको यह दर्द असह्य मालूम होता है। स्तन फूले और कड़े हो जाते हैं (स्तन सूख जाते हैं—आयोड, सैबाल-सेरूलेटा); बहुत दिनोंतक स्थायी प्रसवका दर्द,—दर्द ऊपरकी ओर फैलता है (जेल्स)। प्रसवके बादका अन्त्रावरण प्रदाह (ऐको, बेल, ब्राई), इसके साथ ही अत्यन्त उत्ताप, मानसिक अस्थिरता और मूर्च्छित हो जानेका उपक्रम हो जाता है, गाल लाल या एक गाल लाल और दूसरा मलिन और प्रदाह-भरा ; झिल्लियोंमें पीब पैदा हो जानेका लक्षण (एकिनेशिया, मर्क-सोल, लैके, पाइरोजिन)। स्तन पिलानेवाली बच्चोंकी माताओंके स्तनमें दर्द हो जाता है (हेलोन, फाइटो); बच्चोंके स्तन प्रदेशमें दर्द। स्तनका दूध मोतीकी तरह निकलता है (बच्चेको स्तन छुड़ा देने बाद ही ऐसा होनेपर—कोना)। जननी या धात्री अथवा किसीपर भी अत्यन्त क्रोध करनेके बाद दाँत निकलते हुए बच्चेको अकड़न हो जाती है (नक्स ; माताके डर जाने बाद बच्चेको स्तन पिलानेपर बच्चेको अकड़न होती है—ओपि); बच्चा दोनों पैर ऊपर-नीचे फेंका करता है, अपने छोटे हाथोंसे कुछ पकड़नेकी चेष्टा करता है, मुँह एक ओरसे दूसरी ओरतक खिंचा करता है और आँखोंमें टकटकी लगी रहती है।

श्वास-यंत्र ।—सर्दीकी वजहसे स्वरभङ्ग। वायुनलीमें श्लेष्मा घड़घड़ शब्द किया करता है, इसके साथ ही खाँसी और स्वरभङ्ग (इपिका देखिये)। बच्चोंकी सूखी और खुजलानेवाली खाँसी ; रातके समय, यहाँतक कि निद्रितावस्थामें ही खाँसी आती है। छातीमें जलन (लैके ; सर्दी मालूम होना—आर्स, सल्फ), वक्षमें सुई या तेज़ शलाका बेधनेकी तरह तकलीफ़ ; रोगी तकलीफ़से चिल्ला उठता है ; श्वासकृच्छ्रता—स्वर और श्वास-रोध होनेका उपक्रम। वक्षमें श्लेष्मा रहनेकी वजहसे घड़घड़ शब्द (वायुनलीभुजके भीतर—इपिक ; वक्षके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो श्लेष्मा भरा हुआ है—इपिक, ऐण्टिम-टार्ट)। दिनमें स्वादमें तीता बलगम निकलता है, रातमें शायद ही कभी निकलता है।

प्रत्यङ्गादि ।—रातमें भयानक वात-वेदनाकी वजहसे रोगी शय्यासे उठकर टहलने लगता है (रास)। दर्द असह्य हो जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो पागल हो जायगा। गर्म प्रयोगसे और सन्ध्यासे आधी रातके पहलेतक दर्द बढ़ता है। ज्वर, प्यास और उसके साथ-ही-साथ सुस्ती ; रोगवाला अंश सुन्न हो जाता है। डकार आनेपर बढ़ना। रातमें तलवेमें जलन

होती है, आराम मिलनेकी आशामें रोगी अपना पैर शय्यासे बाहर निकाल देता है (मिडोरिन, पल्स, सल्फ़)।

ज्वर।—बहुत शीत मालूम होना, मानो शरीरपर किसीने बरफका पानी ढाल दिया है और दाँत कड़कड़ाते हैं। उत्तापावस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है; बहुत प्यास और निद्रित अवस्थामें बार-बार चौंक उठता है। शीतकी वजहसे कम्पन और उत्ताप मिला हुआ भाव प्रकट करता है और ज्वरकी अवस्थामें एक गाल लाल और दूसरा म्लान या उतरा हुआ रङ्ग दिखाई देता है। शरीर ठण्डा और चेहरेमें जलन और गर्मी रहती है (आर्नि)। माथा और मुखमण्डलपर गर्म पसीना हुआ करता है और शरीरके ढँके हुए अंशमें बहुत पसीना होता है (चायना)।

निद्रा।—निद्राका आवेश होता है, पर नींद नहीं आती (बेल, कास्टि, ओपि)। निद्रित अवस्थामें लगातार कष्टसूचक शब्द (कराहना) या रोयाकरता है। सोते समय आँखें अधमुँदी रहती हैं और डरावने सपने देखा करता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—बच्चोंकी बीमारीमें अफ़ीम और उसके सतसे तैयार की हुई दवाओंका अपव्यवहार होनेपर कैमोमिला विशेष रूपसे फायदा करता है। चोटकी वजहसे जखम हो जाये और उसमें पीव पैदा होनेका लक्षण दिखाई दे तो कैमोमिलाके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे बहुत लाभ होता है। सदृश गुणवाली और अनुपूरक—बेलेडोना। करोटीके अन्तर्गत स्नायुके रोगमें जिस तरह बेलेडोना लाभदायक है, उदरमें स्नायु विकार हो जानेपर उसी तरह कैमोमिला उपयोगी है।

तुलनीय।—दाँत निकलनेके समय—बेलेडोना, कैल्के; चेतनाकी अधिकता—ऐकोन, काफिया; दाँतके दर्दमें—मर्क्यु; अम्लमें—नक्स; उदर-आध्मानमें—चायना; लारके स्रावमें—नक्स, फास।

दोषघ्न।—ऐकोन, ऐलो, बोरेक्स, काक्यु, काफि, कोलो, कोनायम, इग्ने, नक्स, पल्स।

शक्ति।—३रा दशमिकसे १२वाँ और ३० शततमिक क्रम। डाक्टर सरकार और मेडमके मतसे बच्चोंकी बीमारीमें १२ शततमिक क्रम विशेष उपयोगी है।

चैपारो ऐमार्गोजो

(CHAPARRO AMORGOSO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—डण्टलसे टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
अतिसार ; रक्तामाशय इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।— इसकी क्रिया नेट्रम सल्फ्युरिकमकी तरह है । पुराने उदरामय और आमरक्त रोगमें, यकृत प्रदेशमें दर्द और स्पर्श सहन न हो सकना, मौजूद रहता है—इन लक्षणोंमें यह बहुत उपकारी है । पाखाना होनेके समय विशेष दर्द आदि नहीं रहता ; परन्तु मलके साथ ज्यादा आम निकला करती है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ओलिटस, नेट्रम-सल्फ, सोइन, मर्क-कोर, ऐसिड-नाई, कैप्सि, नक्स ।

शक्ति ।—मूल अर्क या १ला दशमिक क्रम ।

चेइरैन्थस चेइरि

(CHEIRANTHUS CHAERI)

दूसरा नाम ।—कामन वाल-फ्लावर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया और आभास ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता ।—बुद्धि-दन्त निकलनेके समय बहरापन, रातमें पीब प्रभृति उपसर्गकी एक उत्कृष्ट दवा है । बुद्धि-दन्त निकलनेके समय यन्त्रणा, नींदमें नाक बन्द हो जाना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—मैग-कार्ब, ऐग्ना, सिनापिस, रैफेनस, ब्रैसिको, फेरम-पिक्रि ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

चेलिडोनियम मेजस

(CAELIDONIUM MAJUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़के साथ समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण भी बन सकता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गण्डास्थि (गालकी हड्डी) के भीतरी प्रदेशमें प्रदाह ; कर्कटका जखम ; वक्षकी बीमारियाँ ; ताण्डव ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; अजीर्ण ; पित्ताश्मरी (पित्त-पथरी) ; प्रमेह ; खून-मिली खाँसी (रक्तोत्कास) ; अर्श ; सरमें चक्कर आना ; बहुव्यापक सर्दी ; कामला ; आँखके किनारेका नासूर ; यकृतकी बीमारियाँ ; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह ; स्नायुशूल ; नाकसे रक्तस्राव ; फेफड़ेके आवरणका प्रदाह ; वात ; ग्रन्थिवात ; गर्दनकी अकड़न ; स्वादका विकार ; अर्बुद ; मसे ; हूप खाँसी ; जम्हाई आना इत्यादि।

उपयोगिता ।—डा० ऐलेन कहते हैं—सफेद, पतले, क्रोधी मनुष्यकी बीमारीमें, यकृत और पाकाशयकी बीमारीमें उपयोगी है।

उपयोगिता और आभास ।—यकृत, फेफड़ा और मूत्र-ग्रन्थिपर इसकी सबसे अधिक क्रिया होती है और इन सब यन्त्रोंकी बीमारियोंमें लाभके लिये ही चेलिडोनियम एक अमूल्य पदार्थ है। यह यकृतमें असह्य दर्द पैदा करता है और दर्द सामनेकी ओर दाहिने कन्धे तक और पीछे पृष्ठफलकके निचले कोनेतक फैल जाया करता है (कैलि-कार्ब ; और भी नीचे और मेरुदण्डके पास—चिनोपोड ; बायें पृष्ठफलकके नीचे—चिनोपोड, ग्लोकम, सैङ्गियु)। वायु-परिवर्त्तनकी वजहसे या फिरसे हो जानेवाली बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है (मर्क) ; मध्याह्न भोजनके बाद सभी लक्षण घट जाया करते हैं। रोगीकी समूची देह पीले रङ्गकी, आँखें पीली और जीभ तथा तलहथीतक पीले रङ्गकी हो जाती है (सिपि) ; दाहिनी आँख, दाहिना फेफड़ा, दाहिना कोष और दोनों ही पार्श्व ; दाहिना उरु और दाहिना पैर वगैरह शरीरके दाहिने अंशोंपर इसका प्रधान आक्रमण हुआ करता है। दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा, पर बायें पैरका उत्ताप स्वाभाविक अवस्थामें रहता है।

(लाइकोपो)। यहाँ इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण संक्षेपमें लिखे जाते हैं:—(१) जीभका रङ्ग पीला, जीभ बड़ी, झूलती हुई और उसपर दाँतके दाग उठे रहते हैं ; मुँहका स्वाद कड़वा ; गर्म चीजें आदि खाना-पीना अच्छा समझता है। (२) सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही सामनेकी ओर गिर जानेका लक्षण। (३) चेहरेके आँखके गोलेके ऊपरी भागमें स्नायुशूल, यह कभी-कभी पैदा हो जाता है। आँखसे बहुत ज्यादा आँसू बहा करता है, दर्द काटनेकी तरह होता है। (४) शरीरकी त्वचा गहरे पीले रङ्गकी नहीं रहती, विशेषकर नाक और दोनों गाल। (५) दाहिने अंशफलकके (Scapula) नीचे आभ्यन्तरिक (अर्थात् मेरुदण्डके पासके) कोनेमें बराबर दर्द बना रहता है। पाकस्थलीसे दाहिने अंशफलकतक दर्द, भोजनके बाद घटना। (६) कामला या पीत पाण्ड्-रोगाधिकारमें दाहिने कन्धेमें दर्द। (७) पित्ताश्मरी, इसके साथ ही दाहिने कन्धेके नीचे दर्द। (८) मलका पतलापन,—मल सोनेकी तरह पीला, लसदार पानीकी तरह; सफेद या भूरे रङ्गका। (९) मलमें कड़ापन, छोटे-छोटे काले रङ्गके गांठ-गांठ गोल मल भेंड़के मलकी तरह या कब्जियत और अतिसार पर्यायक्रमसे पैदा हो जाते हैं। तेज़ और छोटा श्वास-प्रश्वास, दीर्घ श्वास-प्रश्वासमें वक्षमें दर्द होता है। वक्षके दाहिने पार्श्वमें दर्द मालूम होता है। (१०) खाँसी तरल श्लेष्माव्यञ्जक, घड़घड़ शब्द करनेवाली और दीर्घ प्रकोपयुक्त। क्रूप खाँसी। (११) शरीरकी त्वचा सिकुड़ी ; बहुत दिनोंतक फैलनेवाले बदबूदार जखम आदि ; छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलना ; यकृतके विकारके साथ पुराने जखम। (१२) वायुके परिवर्त्तनसे पैदा हुई बीमारियाँ, सन्ध्याके भोजनके बाद सभी यन्त्रणाएँ घट जाती हैं।

लक्षणावली

मन।—रोगी, विमर्ष ; रोना (ऐक्टिया, साइक्लेम, इग्ने, लैक-कैन, लिलि-टाइ, लाई, नेट्र-मूर, पल्स, सिपि, स्टैन) ; परन्तु वह क्यों इतना दुःखित है और रूलाई आ रही है, यह वह नहीं जानता। बहुत अनमना (ऐमोन-कार्ब, बोविस्टा, कास्टि, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, नक्स-मस, साइलिसिया)। अब क्या करना होगा या इसके पहले क्या करता था, यह वह स्मरण नहीं कर सकता। डरता है कि कहीं उसकी बुद्धिमें विकार न पैदा हो जाये—ऐम्ब्रा, कैल्के, ऐक्टिया, लैक-कैन, मिडोरिन, नक्स, सिफिलिनम)। शङ्कान्वित चित्त

(सन्देही), मानो उसने न जाने कितना अपराध किया है (आर्स, सिना, नक्स, रियुटा, वेरेट, जिङ्कम) ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही पित्त वमन और यकृतमें दर्द ; मस्तिष्कको आच्छन्नावस्था, शरीर ढलमलाया करता है, मानो सामनेकी ओर गिर जानेका उपक्रम (आर्निका, कार्डुअस, कास्टि, लाइको, फेरम, ऐसेट, माई, नेट्र-म्यूर, रैनान, रास, साइलिसिया) । ललाटमें और दाहिनी ओर पीसनेकी तरह दर्द ; दोनों आँखोंका ऊपरी अंश, ललाट या कनपटीमें मानो एक बन्धन है, ऐसा मालूम होना (ऐनाक, ऐण्टि-टार्ट, बार्बा, ऐकुई, बैप, कंक, ऐसिड-कार्ब, इथ्यू, मार्क, सल्फ, थिरिडि), आँख बन्द करनेपर घट जाता है। माथेके पिछले भागमें इतना भार होता है, कि रातमें तकियेसे सर नहीं उठा सकता या उठानेमें कष्ट होता है (ऐगार, एपिस, कैनाब-सैट) । गर्दनके पीछेसे लेकर सरके पिछले भागतक बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना । सारा शरीर सुन्न मालूम होना, इसके साथ ही आलस्य और औंघाई । दाहिने पार्श्वमें सरमें दर्द,—दर्द कानके पीछेसे दाहिने पृष्ठ-फलकतक फैल जाता है । दाहिनी ओरके अक्षिगोलकके ऊपरी भागमें स्नायुशूल,—गण्डास्थि और कानतक यह दर्द फैला हुआ मालूम होता है और बहुत ज्यादा आँसू बहा करता है (रास) ; दर्द आरम्भ होनेके पहले यकृत प्रदेशमें दर्द मालूम होता है (आँसू गिरनेके साथ बाएँ पार्श्वगत स्नायुशूल— स्पाइजि, ललाट पीले रंगका) ।

आँख ।—आँखके सफेद अंशका गाढ़ा पीला रंग । दृष्टिके सामनेकी सब चीजें मानो काँपती रहती हैं और कभी-कभी आँखके सामने चमकीले उड़ते हुए बिन्दु सब दिखाई देते हैं । आँख हिलाने या ऊपरकी ओर देखनेसे आँखमें दर्द मालूम होता है। आँखके उपरी भागमें स्नायुशूलको वजहसे आँखसे बड़े वेगसे आँसू निकलता है (रास) ; जाड़ा मालूम होनेके-साथ-ही-साथ आँख या उसके ऊपरी भागके स्नायुशूलमें यदि वह शूल प्रत्येक बार एक ही समय पैदा होता है तो चिनिनम-म्यूरियेटिकमका प्रयोग करना चाहिये ।

कान ।—दाहिनी गण्डास्थिसे कानतक छेदनेकी तरह दर्द । ऐसा मालूम होता है मानो दोनों कानोंसे बड़े वेगसे वायु निकलता है (स्ट्रैमों)— रोगी अपनी बेचैनी मिटानेके लिये बार-बार कानमें अंगुली डालकर पथ-रोध किया करता है । कानमें गरजकी ऊँची आवाज़, मानो कहीं दूरसे वज्रपात आदिकी आवाज़ आ रही है ।

नाक।—दोनो नासा-पुट लगातार सिकुड़ते और फैलते रहते हैं (ऐण्टि-टार्ट)। नाक पीली आभा लिये (सिपि)।

मुखमण्डल।—चेहरा बहुत पीला, विशेषकर ललाटदेश, दोनों गाल और नाक, चेहरेकी स्वाभाविक लाली गाढ़े पीले रंगकी मालूम होती है।

मुख-विवर।—जीभका रङ्ग गाढ़ा पीला और उसपर दाँतके दाग रहते हैं (पोडो, ऐट्रोप, ग्लोन, हाइड्रेस, मर्क-प्रोटो-आयोड, रोडो, रास, सैङ्गियु, बाइवर्न); मुँहका स्वाद तीता (आर्नि, ब्राई, कैलि-कार्ब, पल्स) और लसदार, कभी अम्लाक्त (खट्टा) (कैल्के, सिङ्को, नक्स, सिपि)। मुँहसे बहुत बदबू निकलती है (आयोड, कैलि-नाइट्रि, मर्क-वाई, पल्स, सिपि; पेयाजकी गन्ध (पेट्रोल)।

पाकाशय।—गर्म चीज़ पीने और खानेकी इच्छा (कैस्कैरिला, क्यप्रम); खब गर्म हुए बिना पानी पेटमें नहीं रहता (आर्स, कैस्कारि); खट्टी चीजें खानेकी बहुत रुचि (ऐण्टि-क्रूड, आर्स, ब्राई, कैमो, हिप, फास, पल्स, स्क्वियुला, स्ट्रैम, सल्फ़, वेरेट)। मिचली और तीता वमन; गर्म पानी पीनेपर बन्द हो जाता है। पेटके ऊपरी प्रदेशमें या पेटके ऊपरकी ओर तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द, शरीरको भेदकर पीठ और दाहिने कन्धे तक फैल जाता है, मुँहका स्वाद तीता रहता है परन्तु खाने, पीनेके समय स्वाद स्वाभाविक मालूम होता है। यकृतके विकारके साथ शूलका दर्द,—भोजनके बाद कुछ घट जाना (ऐनाक, ग्राफ, पेट्रोल)।

अन्त्राशय।—नाभिके भीतरसे उदरके पार्श्व-भागसे दूसरे पार्श्व भागतक तेज़ दर्द, ऐसा मालूम होना मानो पेट चिपक गया है। ऐसा मालूम होता है, मानो नाभी एकाएक भीतरकी ओर खिंच रही है। बेल, (प्लम्बम, वार्बस्क), यकृतका आकार बढ़ा हुआ और उसमें थोड़ा या बहुत तेज़ दर्द, यकृतमें स्पर्श सहन नहीं होता; यकृत प्रदेशमें दर्दके साथ दाहिने पार्श्वके पंजरेमें और दाहिने पृष्ठ-फलकके भीतर नीचेकी ओरके कोनेमें लगातार दर्द मालूम होना। (कैलि-कार्ब, मार्क; वाम पृष्ठफलकके नीचे—चिनपोडियाई ग्लौकाई सैङ्गियु); दाहिने मसाने—मूत्रग्रन्थि या यकृतमें तेज़ दर्द; दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक बढ़ना। पित्ताश्मरीकी वजहसे शूलका दर्द (कार्डुयस-मेरि, कैल्के-कार्ब, और हाइड्रेस देखिये)। पेट फूला हुआ। नेबा या पाण्डुरोग (मर्क, कैमो)।

मलांत्र ।—कब्जियत, मल कड़ा, गोल गांठ-गांठ, भेंड़की मलकी तरह (ओपि, प्लम्ब) ; पर्यायक्रमसे पतला और कड़ा मल निकला करता है (एब्रोट, एण्टि-क्रूड, ब्राई, आयोड, लैके, लैक्टियुका, कैलि-बाई, नक्स, रास, रियुटा, एण्टि-टार्ट)। उदरामय—रातके समय, ल्हेईकी तरह रङ्ग फीका, कभी-कभी कीचका तरह (कैल्के-आयोड, हिप)। कभी गाढ़ा चमकीला पीले रङ्गका (एपिस, एसिड-फ्लू, सिङ्को, क्रोटे, हिप, पोडो ; भूरा या सफेद रङ्ग, पानीकी तरह और मांड़ जैसा लसदार ; अनजानमें निकलता है ; कभी-कभी खूब सफेद रङ्गका पाखाना होता है।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा सफेद आभा लिये फेन-फेन निकलता है। पेशाब निकलनेके समय गदला और फीके रङ्गका होता है ; मूत्रके बर्त्तनके किनारे-किनारे फेन (चिनोपोड) जमा रहता। मूत्रका रङ्ग सोनेकी तरह (डेफनी, चिनोपोड, हायो) और बिछावनकी चादरमें पीले रङ्गका दाग पड़ता है।

श्वास-यंत्र ।—बार-बार जम्हाई लेता है और प्रत्यङ्गोंको फैलाता है (अङ्गड़ाई लेता है), मानो कितनी ही रातें उसने जागकर बितायी हैं। वक्षोस्थिके बिचले भागके तलदेशमें क्षणभरके लिये दर्द पैदा हो जाता है और इसी कारणसे रोगी रातमें जाग पड़ता है। यह दर्द दोनों वायुनलीभुजतक फैल जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो वायुनली सब संकुचित हो गई हैं। बहुत तेजीसे अथवा सावधानीसे श्वास लेता है, लम्बी साँस खींचनेपर छातीके दाहिने पार्श्वमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। श्वासकृच्छ्रता। हूप खाँसी, सूखी और रह-रहकर शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, खाँसनेपर मुँहके भीतरसे छोटे-छोटे श्लेष्माके टुकड़े बड़े वेगसे बाहर निकलते हैं (बेडि, कैलि-कार्ब) ; भोजनके बाद शय्यामें बैठे रहनेके समय बढ़ जाता है। वायुनलीमें श्लेष्मा घड़घड़ाता है, परन्तु सहजमें निकलता नहीं है। बाधा-प्राप्त श्वास-प्रश्वासके साथ दाहिने वक्ष और दाहिने कन्धेमें दर्दका बढ़ जाना। दाहिने फेफड़ेके प्रदाहके साथ यकृतकी बीमारी (मर्क), चलनेके समय और ऊँचेपर चढ़नेके समय हाँफने लगता है। यकृतका बढ़ना।

प्रत्यङ्ग आदि ।—दाहिने हाथकी कलाई अकड़ी मालूम होती है। दाहिने कन्धेमें दर्द। अंगुलीके अगले भागमें छेदनेकी तरह दर्द। पुट्ठा, उरु और निचले पैरमें मानो खींचन मालूम होती है,—दाहिने अङ्गमें अधिक।

दाहिने जानुमें जलन और अकड़न, हिलानेसे बढ़ना। गुल्फ़-सन्धि अकड़ी मालूम होती है। हाथ-पैरोंमें भार, अकड़न और सुन्नपन मालूम होता है, मानो पक्षाघात हो गया है; बहुत सर्दी मालूम होती है। प्रत्यङ्गोंमें वातकी दर्द होता है, जरा छू देनेसे ही तेज़ दर्द मालूम होता है। पसीना होता है, परन्तु उससे घटता नहीं है। निचले प्रत्यङ्ग आदि प्रायः पक्षाघातग्रस्त रहते हैं, इसके साथ ही पेशियोंकी अकड़न। गुल्फ़-स्थानमें बहुत दर्द, जूता मानो बहुत संकीर्ण हो गया है और एँड़ीमें छेद हो रहा है।

शरीरकी त्वचा।—रङ्ग सफेद, हलकी पीली रङ्गकी और सिकुड़ी हुई; तलहत्थी पीली और त्वचा सिकुड़ी हुई (सिपि)। चेहरा, ललाट-देश, नाक और गाल पीले। यकृतमें विकार या क्षय रोग प्रधान धातुकी वजहसे बहुत दिनोंके सड़नेवाले और फैलनेवाले जखम इत्यादि।

निद्रा।—औंघाई, हमेशा सोये रहनेकी इच्छा और सोया रहना पसन्द करता है, पर नींद नहीं आती। मृत देह (ऐनाक, आर्स, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, मैग-फास, ऐसिड-फास, थूजा) और मुर्दा फूँकनेका सपना देखता है।

वृद्धि।—दाहिने अङ्गमें; सवेरे सीढ़ी चढ़नेके समय।

उपशम।—भोजन करनेके समय; सन्ध्याके बाद; गर्म पतली चीजें पीनेपर और रोगवाली जगह दबाने या मलनेपर।

दोषघ्न।—ऐकोन, काफिया, कैम्फर, खट्टी चीजें और शराब।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐको, आर्स, ब्राई, लाइको, मर्क, नक्स, पोडो, सेङ्गियु, सिपि, सलफर।

तुलनीय।—स्कन्ध-फलकके दर्दमें—जुगलेन्स, चिनोपो, रैनानक्युलस, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम।

अनुपूरक।—मर्क्यु; पित्त-विकारयुक्त फेफड़ेका प्रदाह—कैलि-कार्ब, कार्बो-ऐनि (प्रदर इत्यादि)। **अनुपूरक**—ब्राई, लाई, सलफर। यकृतके विकारके रोगमें ब्रायोनियाका अपव्यवहार या अतिव्यवहार होनेपर चेलिडोनियम उसका दोष नष्ट कर देता है। चेलिडोनियमसे उत्पन्न लक्षण आदिकी वृद्धि होनेपर वह ऐकोनाइटसे दूर हो जाता है। वात-वेदनामें लेडमके व्यवहारके बाद चेलिडोनियमके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है। यकृतके विकारमें चेलिडो-

नियमके बाद आर्स उपयोगी है। चेलिडोनियमसे फायदा होनेपर, पूरी तरह आरोग्य कर देनेके लिये प्राय: लाइकोपोडियम और सलफर, इन दोनोंमेंसे एक दूसरेकी जरूरत पड़ा करती है।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम साधारणत: व्यवहृत हुआ करता है। १२ और ३० शततमिक क्रमसे भी अच्छा फायदा दिखाई देता है।

चिलोन ग्लैब्रा

(CHELONE GLABRA)

दूसरा नाम।—स्नेक हेड।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—दुर्बलता; धीमा बोखार; कामला; यकृतकी बीमारी; कुईनाइनका अपव्यवहार; क्रमि।

उपयोगिता और आभास।—यह भी यकृत रोगकी एक नयी आविष्कार की हुई दवा है; इसकी क्रिया बहुत कुछ चेलिडोनियमकी तरह है; क्योंकि इसके द्वारा भी यकृतके बाएँ पार्श्वमें दर्द उत्पन्न होकर नीचेकी ओर फैल जाता है। शरीरमें बहुत दर्द मालूम होता है, मानो रोगवाली जगहकी छाल उधड़ गयी है। बहुत कमजोरी। कम्पहीन ज्वर।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—चायना; सिना; हाइड्रैस्टिस; कार्डुयस इत्यादि। डा० बार्नेट इसके पक्षपाती हैं।

शक्ति।—मूल अर्क।

चिनोपोडियम ऐन्थेल्मिण्टिकम

(CHENOPODIUM ANTHELMINTICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— संन्यास ; दमा ; बहरापन ; आक्षेप ; शोथ ; मृगी ; सर-दर्द ; इसके साथ ही पक्षाघात ; प्रदर ; ऋतु-रोध ; पक्षाघात ; कर्ण-पटहका प्रदाह ; कर्णमूल ।

उपयोगिता और आभास ।—"दाहिने पृष्ठ-फलकके निचले कोनेमें और मेरुदण्डके पास दर्द, यह शरीरको भेदकर वक्षमें पैदा हो जाता है"—यही चिनोपोडियमका प्रधान सिद्धप्रद लक्षण है । मध्यकर्णकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें भी यह लाभदायक है । विशेषकर पुराने प्रदाहमें, संन्यास (Apoplexy), स्वरलोप और दाहिने पार्श्वका पक्षघातपर (घड़घड़ शब्द करनेवाले श्वास-प्रश्वासके साथ) इसका विशेष अधिकार है ।

लक्षणावली

मन इत्यादि ।—रोना स्वभाव । स्मरण-शक्तिकी कमजोरी, सरमें-चक्कर आना ।

कान ।—कानकी भीतरवाली प्रणालीमें खूनके रक्ताम्बु (Serum) निकलना या जमा होना ; मध्यकर्णका पुराना प्रदाह ; धीरे-धीरे बढ़नेवाला बहरापन—मानव-स्वरके सम्बन्धमें (फास, सल्फ) ; ऊँचे स्वरसे बोलनेपर अच्छी तरह सुन पाता है और चलती हुई गाड़ीकी आवाज़ बहुत कष्टकर मालूम होती है ; कानमें झिन-झिन आवाज़ (कास्टि, ग्रैफ, कोना, नैट्र-मूर, पल्स) ; अपने कानका अस्तित्व स्पष्ट अनुभव हो (जरायुका अस्तित्व ज्ञान—हेलोन ; हृत्पिण्डका अस्तित्व स्थान—पाइरोजेन) । श्रवण विधायक स्नायुकी निष्क्रियता ; जिह्वा-मूलीय ग्रन्थिके बढ़ जानेकी वजहसे बहरापन (आयोड, कैल्के-फास, ऐसिड-नाई) ।

पीठ और वक्षस्थल ।—दाहिने पृष्ठ-फलकके बिचले कोनेमें और मेरुदण्डके पास तेज़ दर्द ; शरीरको भेदकर वक्षस्थलतक फैल जाता है (बाएँ पृष्ठ-फलकके भीतरी कोनेसे वक्षस्थलतक दर्द—चिनो-ग्लौकाई । बाएँ वक्षके ऊपरी स्थानसे पृष्ठफलकतक वेदना संचारित होता है—मार्टास-कम, पिक्स-

लिक्, थिरिडि, सल्फ । दाहिने निम्न-प्रदेशके भीतरकी राहसे दर्द--चेलिडो, मर्क-बाई, कैलि-कार्ब ; दाहिने वक्षके ऊपरी अंशके भीतरकी राहसे दर्द—कैल्के-आर्स ; बाएँ कक्षके निचले स्थानपर—नेट्र-सल्फ ; बाएँ स्तनके नीचे दर्द—ऐक्टिया, आस्टिलेगो ; बच्चा यदि स्तन पीता हो तो स्तन-वृन्तसे पीठतक दर्द—क्रोटोन, सिलिका)। (रैनानकुलस बालबोससमें बाएँ पृष्ठ-फलकके भीतरी पार्श्वमें दर्द कभी-कभी उसके नीचेवाले कोनेतक फैल जाता है और शरीरको भेदकर बाएँ वक्षमें आ जाता है। ऐङ्गस्टयुरामें दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचेसे दर्द दाहिने स्तनके निकट आ पहुँचता है)।

पेशाब ।—पेशाब बहुत ज्यादा और पीला, उसमें फेन पैदा हो जाता है। ऐसा अनुभव होता है, कि भीतरकी त्वचा क्षय हो गयी हैं। पीले रंगकी तली जमती है (चेलिडो)।

सार्वाङ्गिक ।—संन्यासकी वजहसे दाहिने अर्द्धाङ्गका पक्षाघात और बोलनेकी शक्तिका न रहना (ऐबाक, ऐसिड-आक्जेलिक ; श्रवण-शक्ति न रहनेकी वज़हसे वाक्-शक्तिका लोप हो जाना—लाई)।

त्वचा ।—कामला या नेबा।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—चेलिडो, ओपि, ऐसिड आक्जेलिक।

तुलनीय ।—एपिस, चेलिडो, (संन्यास) चायना, ओपिया, लाइकोपो ; बहरापरमें—चायना, सल्फ इत्यादि।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ऐफिस चिनापोडियाई ग्लौकाई

(APHIS CHENOPODII GLAUCI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।— ताजे पौधेसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें फायदा करता है ;—शूल ; सर्दी, खाँसी ; अतिसार ; सरमें दर्द ; दातमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान और उत्कृष्ट लक्षण है, बाएँ पृष्ठफलकके भीतरकी ओर निचले कोनेमें दर्द पैदा होकर वक्षःस्थलतक फैल जाना (सैङ्ग्वियुनेरिया ; दाहिने पार्श्वमें—चेलिडो, कैलि-कार्ब, मर्क-बाई ; दाहिने पृष्ठफलक और मेरुदण्डके मध्यके स्थानमें दर्द—चिनो-ऐन्थेल)। आगे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण माने जाते हैं:—नाककी सर्दी, प्रान्त भागमें, विशेषकर उसकी बीचवाली भेदकास्थिके भीतर अत्यन्त जलन और कुटकुटी हुआ करती है ; शय्यापर सोनेसे दाँतका दर्द बहुत बढ़ जाता है ; उदरमें कतरनेकी तरह दर्द और आँतोंमें वायु संचालनकी वजहसे हड़-हड़ कल-कल शब्द ; मूत्राशय और मलान्त्रमें सङ्कोचनकी वजहसे वृथा वेग ; सवेरे शय्यासे उठनेपर दो-तीन बार ढीला पाखाना होता है और मलद्वारमें जलन और नख गड़नेकी तरह दर्द होता है। साथ ही कुन्थन (काँखना) मालूम पड़ता है। पाखाना होनेके समय जोरकी आवाज़के साथ वायु निकलता है ; मल पतला ; लसदार और खून मिला होता है।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—विमर्ष ; सरमें दर्द ;—शरीर हिलानेसे ही दर्दका बढ़ जाना (ब्राई, कैल्के, क्रोकस, नेट्र-मूर, नक्स-युग, सल्फ ; देह सञ्चालनसे घटना—ऐसिड-म्यूर) ; ऐसा मालूम होता है, मानो शिरके भीतर मस्तिष्क डोल रहा है (ऐको, बेल, सिङ्को, साइक्यू, नक्स-मस, नक्स-वोम, रास, सिपि, ऐसिड-सल्फ)।

मुखमण्डल।—पीला (कैल्के, कैन्थ, कैमो, कास्टि, चेलिडो, ग्राफ, लाई, मैग-म्यू, मर्क, नेट्र-मूर, नक्स-वोम, पल्स, सिकेलि, सिपि)। सर्दी,—नासारन्ध्रमें जलन (कैन्थ, आर्स) या कुटकुटाता हैं। कानके छेदमें तोप गरजनेकी तरह आवाज़ (कास्टि, ग्रैफ, लैके, मैग, प्लैट)। दाहिनी आँखमें स्नायुशूल और बराबर आँसू निकलते रहना (बेल, चेलिडो, रास)।

मुख-विवर।—जीभके अगले भागमें पानी-भरी फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं, उनमें बहुत दर्द होता है (आर्स, बेराई, रास, ऐमोन-म्यू, मर्क-कोर, सिक्लेम, इग्नि, कैलि-आयोड, लाई, नेट्र-मूर, नाइट्रम)। मुँह और गलेमें सूखापन और मुँहमें लगातार श्लेष्मा संचय रहना। कण्ठका सूखापन और बहुत प्यास (ऐको, ब्राई, कैन्थ, चेलिडो, क्रियो, नेट्र-सल्फ, ओपि, रास, सल्फ ;

मुख और गलेका भीतरी भाग सूखा, पर प्यासका न रहना—बेल, कार्बो-वेज, काक्यु, लाई, नक्स-मस, सैबाड)। दाँतमें दर्द ; बिछावनपर सोनेसे बहुत बढ़ जाता है और गर्म पसीना निकलनेपर तकलीफ़ घट जाती है ; दर्द कान, कनपटी और गण्डास्थितक फैल जाता है (प्लैण्टेगो ; बाईं ओर—कोलो)।

पाकस्थली।—खाई हुई चीज़की डकार आती है (ऐलो, ऐम्ब्रा, ऐण्टि-क्रू, कार्बो-वे, कैमो, सिङ्को, फास, पल्स, ऐसिड-आक्सेल, थूजा) ; मांस और रोटीसे अरुचि (मांससे अरुचि—कैल्के, कार्बो-वे, लाई, मर्क, ओलि-ऐन, पेट्रोल, कैलि-बाई, रास, सैबाड, सिपि, सल्फ ; रोटीसे अरुचि—लैक्टियुका)।

मल।—उदरामय ; सवेरे शय्यासे उठनेके कुछ ही देर बाद पाखाना लग आना (बोवि, ब्राई, कैलि-बाई, इथ्यू, ऐगार, आर्स, ऐसिड-फ्लू, नेट्रम-सल्फ, सोरिनम ; शय्यासे उठकर कुछ देरतक इधर-उधर करनेपर वेग—ब्राई, लेप्टैन, नेट्र-सल्फ ; शय्यासे उठते ही—लाई, सल्फर ; शय्या त्यागनेके पहले ही—ऐलो, सोरिनम, रियुमेक्स, सल्फ ; सवेरे ६ बजे—आर्जेण्ट-नाई ; सवेरे ४ से ६ बजेके बीचमें—नूफर-लूटिया)। मल पतला मांड़की तरह (ऐलो, बेराई, ब्राई, चेलिडो, साइक्लाम, ग्रैफ, हिपर, क्रियो, लेप्टैन, पोडो, वेलि) ; मलद्वारमें जलन होती है (मल निकलनेके समय—ऐलो, लैके, मर्क, पल्स, इग्ने, रैटान ; पाखाना हो जाने बाद—गैम्बो, इग्ने, ऐसिड-नाई) ; मलान्त्रमें और मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होना (मलान्त्रके भीतर—ऐमोनियैक, आर्नि, सिङ्को, क्रोटन, नक्स-वोम, फास, ऐङ्गस, सेना ; मूत्रस्थलीमें—ऐङ्गस)। कब्जियत—मल कड़ा और गांठ-गांठ (कास्टि, चेलिडो, आयोड, मैग-म्यूर, पेट्रोल, प्लम्ब, प्रूनस, साइलि, स्टैन)।

पेशाब।—मूत्रनलीमें जलन (कैनाब, कैन्थ, कोलचि, मर्क, सल्फ, थूजा)। बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है (बेराई, कास्टि, डैफनी, कैलि-कार्ब, क्रियो, मर्क, नक्स, रास-रैड, स्क्वियुला, स्टैफ, सल्फ) ; पेशाब गाढ़ा पीले रङ्गका (ऐगार, कैमो, क्रोटोन, जिनसेङ्ग, चेलिडो, नेट्र-कार्ब, प्रूनस, रैफे, सैम्बियु, हायो, लैके-नाइट्रम) और कुछ परिमाणमें फेन-मिला (चिनन-सल्फ, क्रोटोन, कैमो, लोरो, सेना, स्पञ्जिया)। कभी-कभी पेशाब फेन भरा हो जाता है, फीका लाल रङ्ग और उसमें पीली आभा लिये तली जमती है (कैमो, किनिन-सल्फ, कूप्रम, ऐसेट, लाई, नेट्र-सल्फ, साइलि, स्पञ्जिया, टेरिब)।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभग्न और कर्कश, खासकर गला साफ करनेपर स्वर परिष्कार हो जाता है। स्वरनालीमें सुरसुरी होता है, खाँसी आती हैं—तीसरे पहर ४ बजेसे ६ बजेतक बढ़ना।

पीठ।—बायें पृष्ठ-फलकके भीतरकी तरफके निचले कोनेमें तेज़ दर्द मालूम होता है (सैङ्गियु ; दाहिने पार्श्वमें—चेलिडो, कैलि-कार्ब, मर्क-बाई, चिनोपोड-ऐन्थेल) और यह दर्द छातीतक फैल जाता है।

ज्वर।—जाड़ा पीठके ऊपरसे नीचे और नीचेसे ऊपरकी ओर तेजीसे संचारित होता है (जेल्स) और इसी वजहसे शरीर काँपा करता है ; तलहत्थीमें जलन होती है ; शय्यामें सोनेके समय गर्म पसीना निकलता है (कैमो, ओपि, फास, स्टैन, स्ट्राम)।

निद्रा और स्वप्न।—कामोद्दीपक सपनोंके साथ रेतःस्खलन।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—किनिन-सल्फ, चेलिडोनि, नेट्रम-सल्फ, ब्राई, कैल्के, आस्ट्रि।

तुलनीय।—इथूजा (उठनेपर पाखाना होना); नेट्रम-सल्फ (उठकर घूमनेपर वायु छूटनेके साथ ही उदरामय); नक्स-वोम (बार-बार निष्फल मल वेग); जेल्स (शीत, पीठपर बराबर)।

शक्ति।—६ठेसे २०० शततमिक क्रम।

चिनापोडियम वलवेरिया

(CHENOPODIUM VULVARIA)

दूसरा नाम।—स्टिङ्किङ्ग ग्रेन्सिकम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कब्जियत, पृष्ठफलकके नीचे दर्द, प्लीहामें दर्द, पीठके मेरुदण्डकी हड्डीमें दर्द और कमजोरी, अनजानमें पेशाब वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐमोन-कार्ब, ड्रिमैन्थ, चिनोपोडिय-ऐन्थेल, आफिस-चिनो ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

चिमाफिला मैकुलेटा

(CHIMAPHILLA MACULATA)

दूसरा नाम ।—स्पाटेड-वाटर-ग्रिन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़ और पत्तेसे अथवा खिले हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अदम्य क्षुधा, भूखसे पेटमें काटनेकी तरह दर्द—इसका निर्देशक लक्षण है। ज्वर और ज्वरके साथ शरीरमें जलन, ऐसा मालूम हो कि खून गर्म हो गया है, गला और गलग्रन्थिमें दद, सोनेपर सर-दर्द बढ़ना और सूखे घरमें सब लक्षणोंका घटना—इन लक्षणोंमें यह लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—पल्स, चिमाफि-ऐमब्रा, चिमाफि-रोटण्डि ।

शक्ति ।—२x—६x ।

चिमाफिला अम्बेलेटा

(CHIMAPHILLA UMBELLATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछमें फूल होनेपर उसकी जड़ और पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; स्तनकी शीर्णता ; कर्कटीया जखम और अर्बुद ; मूत्राधार-प्रदाह ; बहुमूत्र ; शोथ ; ज्वर ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; मेह ; प्रमेह ; सविराम ज्वर ; कामला ; मसानेकी बीमारी ; मूत्रग्रन्थि-प्रदाह ; मूत्रनलीकी मुखशायी-ग्रन्थि-

प्रदाह ; टेरिजियम ; दद्रु ; गण्डमाला ; मूत्रद्वारका रुकना ; उपदंश ; दाँतका दर्द ; दूषित जखम ; मूत्रका विकार ; अंगुलहाड़ा इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मूत्रस्थलीके सर्दी रोगमें विशेषकर यह पुराना हो जानेपर और किसी भी दवासे फायदा न दिखाई देनेपर, इससे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसके कई प्रधान लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं :—मूत्रस्थलीकी सर्दी, पेशाबके साथ श्लेष्मा मिश्रित पीब और खून-मिला रहता है। सारे शरीरका उत्ताप और तेज़ नाड़ीके साथ कभी-कभी दोनों गाल लाल हो जाते हैं। दाँतमें दर्द, आहार और दैनिक परिश्रमसे बढ़ना ; ठण्डा पानी पीनेपर घटना। रातमें रोगी मुँह बन्द नहीं कर सकता, अकड़ जाया करता है। रोगी मुँह फाड़कर सोता है। तालुमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गई है, मानो गर्म पानीय या भोजनके पदार्थके स्पर्शसे बहुत तकलीफ़ होती है। उदरी रोगाधिकारमें यकृतका प्रदाह ; उदर, मूत्र-ग्रन्थि या मसानेमें शोथ ; मध्यान्त्रिक (Mesenteric) ग्रन्थियाँ सब बढ़ जाती हैं। गहरी कब्जियत या दुरारोग्य अर्श रोग। मलद्वारके बाएँ पार्श्वके गभीरतम प्रदेशमें बेधनेवाला दर्द, बैठनेपर विटपके भीतर और गुह्यद्वार और जननेन्द्रियके बीचके स्थानमें मानो कुछ फूल गया है। ऐसा मालूम होना, मानो उसपर एक गोला दबाकर रखा हुआ है (मूत्रनालीकी मुखशायिका ग्रन्थिके बढ़नेकी वजहसे ऐसा मालूम होता है)। उस ग्रन्थिसे रसस्राव ; मसानेके स्थानपर लगातार दर्द मालूम होते रहना, मानो पानीके बुलबुले उठ रहे हैं (बार्बा, मिडोरिनम), मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होना। मूत्रनलीमें प्रबल आकुञ्चनकी वजहसे वृथा वेग और मूत्र-कृच्छ्रता। लगातार पेशाबका वेग—रातमें ५-७ बार जाना पड़ता है। मूत्राशयके मुँहपरसे समूचे मूत्रमार्गमें उत्तेजना। अण्डकोषमें तेज़ दर्द, प्रदर। स्तनका अर्बुद और स्तनका तेजीसे क्षय होते जाना। कन्धेका नया वात ; दाहिने बाँहकी सूजन। आन्तरिक कम्पन मालूम होना (ऐसि-सल्फ़)।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा परिमाणमें खूनकी तरह पीब निकलता है और पीब तथा श्लेष्मा मिला पेशाब होता है। पेशाबके वेगकी वजहसे बार-बार नींद खुल जाती है (ऐसिड-फास, म्यूरेक्स, इयुया)। मूत्र गदला गाढ़ा बदबूदार, खूनकी तरह और ईंटके रङ्ग जैसा और उसमें बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तमय तली जमती है, इसके साथ ही विलेपी ज्वर और रातमें पसीना होता

है। शिश्नके अगले भागसे लेकर मूत्रस्थली-ग्रीवातक मूत्रनलीमें असह्य उत्तेजना रहती है और सुरसुरी होती है (पेट्रोसेल)। मूत्रद्वार और मुखशायी-ग्रन्थिका तरुण प्रदाह,—दबाकर बैठनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उक्त मलद्वारके ऊपरी भागमें और अण्डकोषके नीचे एक कड़ा गोलाकार पदार्थका दबाव पड़ रहा है (कैनाब-इन)। मुखशायी-ग्रन्थिसे लगातार लारकी तरह पदार्थ निकला करता है (इस्क्युलस-हिप, ऐल्यू, ऐग, ऐनाक, हिप, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन-सिपि, स्पाइलि, सल्फ, थूजा)। पेशाब करनेके समय मूत्रनलीमें तेज़ जलन मालूम होना और पेशाब होनेपर मूत्रस्थलीके सङ्कोचनकी वजहसे भयानक वृथा पेशाबका वेग होता है अथवा पेशाब नहीं होता। मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें चिड़ियेका पर फड़फड़ानेकी तरह या बुलबुले फूटनेकी तरह मालूम होना (बार्बा, मियुराइन)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्तन सूखकर जल्दी क्षीण हो जाते हैं (सैबाल-सेरुलेटा, कोना, आयोड, ऐसिड-नाइ)। स्तनमें अर्बुद निकलना (कोना, फाइटो) और इसी वजहसे स्तनमें बहुत ज्यादा दुग्ध-सञ्चय हो जाता है। योनिका बाहरी भाग फूला, प्रदाहयुक्त और योनिमें दर्द।

गर्दन और पीठ।—मसाना या मूत्रग्रन्थिके पासके प्रदेशमें मानो कुछ फड़फड़ा रहा है, ऐसा मालूम होना ; परन्तु उसकी वजहसे किसी तरहका दर्द या गड़बड़ी नहीं मालूम होती।

ज्वर और शीतोत्ताप।—नाड़ी तेज़ रहनेके साथ सारे शरीरमें उत्तापका आविर्भाव और गण्डदेश (गाल) में क्षय-प्राप्त लालीका भाव रहता है। क्षय ज्वर ; रातमें पसीना और उत्ताप।

त्वचा।—लसिका ग्रन्थियाँ सब फूल उठती हैं। वातकी वजहसे जखम आदि।

सम्बन्ध।—सदृश।— सैबाल सेरुलेटा, आयोड, युवा-उर्सी, ऐग्नस-कैस्टस।

तुलनीय।—चिमा-मल, एपिस (शोथ), ऐग्नस (प्रमेह), काफिया (दाँतका दर्द), कैल्के, जिङ्कम (टिरिजियम), सैण्टोलम (मसानेका शूल)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

चायना बोलिवियाना

(CHINA BOLIVIANA)

दूसरा नाम।—सिनकोना बोलिवियाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सिनकोना आफिसिनेलिसके साथ यह प्रायः समलक्षण-सम्पन्न है। चायना-आफि और चायना-बोलिवियाना—इन दोनों दवाओंमें ही उदरमें वायु-सञ्चय, स्वप्न-भरी नींद, स्पर्शका सहन न होना—ये लक्षण दिखाई देते हैं। इन उल्लिखित लक्षणोंके साथ मुख-गह्वरका जखम, खाँसनेके समय दाहिने फेफड़ेके निचले भागमें छुरी मारनेकी तरह दर्द, गर्दनका पिछला भाग अकड़ जाना, मलद्वारके पास लसदार पसीना वगैरह लक्षणोंमें चायना बोलिवियानासे अधिक लाभकी सम्भावना रहती है।

शक्ति।—३x—३०।

किनिनम आर्सेनिकोसम

(CHININUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम।—आर्सेनिट आफ क्विनाइन (Arseniate of quinine)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल ; दमा ; अतिसार ; डिफ्थीरिया या उपझिल्ली प्रदाह ; मृगी ; पाकाशयका शूल ; अधकपारीका दर्द ; सविराम ज्वर ; आँखोंका प्रदाह ; गलेका जखम ; उपदंश ; क्षयकास ; तम्बाकूका अपव्यवहार।

उपयोगिता और आभास।—सदृश-विधानकी चिकित्साके अनुसार यदि बलकारक दवाके रूपमें किसी दवाका व्यवहार करना सम्भव होता है

तो उनमें किनिनम आर्सेनिकोसम अन्यतम है। स्नायुशूल, दमा, मलेरियाकी वजहसे रोग; डिफ्थीरिया (या गलेके भीतरकी) झिल्लीका प्रदाह वगैरह सुस्त करनेवाली बीमारीमें रोगी जब बहुत देरतक रोग भोग करता हुआ जीर्ण-शीर्ण हो जाता है, हमेशा ही बहुत सुस्ती और दुर्बलता अनुभव करता है, उस अवस्थामें प्रायः किनिनम आर्सेनिकोसम द्वारा केवल रोगीकी प्राण रक्षा ही नहीं होती, बल्कि नियमित भावसे इसका सेवन करनेपर रोगी जल्द ही आरोग्य हो जाता है और दिनोंदिन उसकी जीर्ण देहमें बलका संचार हो जाया करता है। रोगी नवीन जीवन प्राप्तकर फिर संसार-क्षेत्रमें अवतीर्ण होने योग्य हो जाता है। उदरके शूलके दर्दमें जब हृत्पिण्डसे निकली हुई वृहत्तम धमनी और पाकस्थलीके भीतरकी स्नायु-ग्रन्थिके प्रदेशमें पीसनेकी तरह मालूम होता है और उसके ठीक पीछे मेरुदण्डमें दर्द मालूम होता है, तो उस समय इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—हमेशा ही मानों चिन्तित रहता है। उत्तेजना-प्रवण। सरमें टपकका दर्द (बेल, किनिन-सल्फ, युपेट, क्रियो, पेट्रोल, सिपि, साइलि, सल्फ, वेरेट); वृद्धि—मानसिक या शारीरिक परिश्रमसे सरमें चक्कर आना, ऊपरकी ओर दृष्टि करनेसे ही बढ़ जाता है (पल्स, साइलि; आँख बन्द करनेपर—लैके, थिरिड, थूजा; आँख खोलनेपर—टैबेकम)। माथेमें मानो बिलकुल ही स्थान नहीं है, भरापन मालूम होना (ऐको, बेल, ब्राई, डेफनी, रास-रेड); मस्तिष्कका अवसाद या क्लान्ति (ऐसिड-फास, ऐसिड-पिक्रि, केल्के-फास, इथ्यूजा)।

मुख-विवर।—जीभपर मोटा पीले रङ्गका लेप, छीलनेपर भी यह साफ़ नहीं होता (किनिन-सल्फ; पतला पीले रंगका लेप—कार्ना-सार्सि)। मुँहका स्वाद बहुत कड़वा या तीता (कोलिन)। क्षुधा या रुचिका न रहना (प्रूनस-स्पाई, जेण्टियाना-लुट)।

पाकस्थली।—शूल-वेदना हृत्पिण्डसे निकलनेवाली महाधमनी (Aorta) और पाकस्थलीकी बीचमें स्थित (Solar plexus) का स्नायुशूल, इसी अंशमें दबाव मालम होना और इसके विपरीत ओर मेरुदण्डमें दर्द। जो कुछ खाता है, वही अम्लमें परिणत हो जाता है (आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-सल्फ,

कैल्के-आस्ट, रोबिनिया); ठण्डे पानीकी बहुत प्यास रहती है, पर पानी पीनेपर पेटमें बीमारी पैदा हो जाती है। पुराना उदरामय। मिचली और वमनके बाद रोगी सो जाता है (इथूजा)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय; जोरका वेग देनेपर मल प्रबल वेगसे निकलकर तलपेटको खाली कर देता है (पोडो)। दर्द नहीं होता। सवेरेके वक्तका उदरामय, इतना वेग कि कपड़ा पहिननेका समय नहीं मिलता, मल भूरे रंगका, पानीकी तरह, आँव मिला; बाएँ कोखमें दर्द, चलनेके समय बहुत दर्द मालम होता है। आमातिसार, मल आम और खून मिला; पाखाना होनेके पहले और बाद काँखना (मर्क-कोर)।

हृत्पिण्ड।—शय्या या कुर्सीपर पीठ लटकाकर बैठनेपर कलेजेमें धड़कन मालूम होती है। कभी-कभी ऐसा भी मालूम होता है, कि हृत्पिण्डकी गति स्थिर हो जाती है (अरम, सिपि)। नाड़ीकी गतिकी वजहसे टपक मालूम होती है। दमा, प्रति बार एक ही समय आरम्भ होता है। रोगी निर्मल हवाके लिये बहुत ही आग्रह प्रकट करता है (सिस्टस-कैन, इपिक, ओपि, ऐको, साइलिसिया)। रोगके आक्रमणके बाद रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है। रोज़ सवेरेसे दोपहरतक दमाका जोर रहता है, रोगी खुली हुई खिड़कीके सामने मुँह फाड़कर खड़ा रहता है; घुटने टेककर बैठ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेमें, कोहनीमें और जानु, उरु वग़ैरहमें बहुत दर्द होता है और ये अङ्ग बलहीन मालूम होते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो स्कन्ध-सन्धि अपनी जगहसे हट गयी है (निकोल)।

ज्वर।—बहुत दिनोंतक ज्वर भोगनेके कारण रोगी जीर्ण-शीर्ण हो पड़ता है, शरीर मानो रक्त-शून्य हो जाता है। कम्प,—कम्पके समय खाँसी, सामान्य उत्ताप, पसीना।

सम्बन्ध—सदृश।—किनिन-सल्फ, किनिन-भूरर, अरम, आर्स।

तुलनीय।—ऐपिस (डिफ्थीरिया), इथूजा, (कम्प ज्वरके बाद नींद)। कैक्टस (संकोचन)।

शक्ति।—२री और ३री दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक। पुरानी बीमारीमें उच्च क्रमसे बहुत लाभ होता है।

किनिनम म्यूरियैटिकम

(CHININUM MURIATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण या तरल क्रम बना करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लक्षणके अनुसार लाभदायक प्रमाणित हुआ है :—मदात्यय ; आँखोंका स्नायुशूल ; पाकाशयका प्रदाह ; सर-दर्द ; सविराम ज्वर ; प्रदाह इत्यादि।

किनिनम सैलिसिलिकम

(CHININUM SALICYLICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पूर्व रूप।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—बहरापन, कर्ण-प्रदाह इत्यादि।

किनिनम सल्फ्युरिकम

(CHININUM SULPHURICUM)

(QUINIA SULPHATE)

दूसरा नाम।—क्विनिया सलफेट या सलफेट आफ क्विनाइन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और अर्क हो सकता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखी बीमारियोंमें लाभदायक हुआ है :—हृत्शूल ; दमा ; स्नायुशूल ; कर्कटीया जखम ; हैजा या कालरा। पित्ताश्मरी ; प्रलाप ; अतिसार ; शोथ ; बाधक ; कानकी बीमारियाँ ; सड़नेवाले जखम ; खूनका पेशाब ; रक्तस्राव ; सर-दर्द ; सविराम-ज्वर ; कर्ण-मूल, योनिद्वारमें खुजली ; सूतिकाक्षेप ; रक्तदोष या विषाक्तता ; स्वल्प-विराम ज्वर ; वात ; कशेरुकाकी उत्तेजना ; प्लीहाका बढ़ना ; शीत-पित्त ; शिराओंका फूलना ; चेचक इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नये बोखार आदिमें ऐलोपैथीके मतसे, चिकित्सा करते समय बहुत बड़ी मात्रामें क्विनाइन व्यवहार करनेपर जो नहीं होता, सदृश-विधानके नियमके अनुसार इसका प्रयोग होने पर और इस दवाके उच्चतम क्रमकी एक दो मात्राका व्यवहार होनेपर उससे सौगुना अधिक फायदा होता है और कुछ दिनोंतक रोगीको उसका दुःष्परिणाम नहीं भोगना पड़ता। स्नायु-शूल, मेरुदण्डकी बीमारियाँ, सरका दर्द वगैरह रोगोंमें इससे बहुत अधिक लाभ हुआ करता है। नये होमियोपैथिक चिकित्सकोंको यह जान रखना चाहिये कि पुराने मलेरिया रोगमें यह पहले प्रयोग करनेपर प्रायः धातुगत ज्वरका पूर्ण वेग और पूर्ण-विकास हो जाया करता है अर्थात् भीतरका बोखार जोरसे बाहर निकल आता है और ऐसा होनेपर इस दवाके उच्चतम क्रमकी दो मात्रा प्रयोग करनेपर रोगी एकदम आरोग्य हो जाता है। (काले केश, काली आँखें और पित्त-प्रधान धातुवाले मनुष्य और जो बहुत ज्यादा रक्त-क्षयकी वजहसे दुबले और जीर्ण-शीर्ण हो गये हों तथा जिनका स्वास्थ्य भग्न हो गया हो, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है)। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं, कि माथेके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो कलकी चक्की घूम रही है। कानमें शब्द, विशेषकर बाएँ कानमें (दाहिने कानमें—चायना) ; थोड़ी देरके लिये होनेवाला स्नायुशूल, अवसाद ग्रस्त, जरा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर हृत्स्पन्दन पैदा हो जाता है। मेरुदण्डमें बहुत स्पर्श, कातरता खासकर गर्दन और पीठके बीचवाले अंशमें। बहुत कमजोरी मालूम होना, खासकर निचले अङ्गोंमें। माथेके पीछेसे ललाटतक फैला हुआ सर-दर्द ; बाईं आँखका फड़कना, विशेषकर सन्ध्याके समय, रोगसे जीर्ण मनुष्योंके मुँहमें जखम। दाँतके ऊपर फटा स्थान पैदा हो जाता है। रक्त-स्राव, ज्वरकी शीतावस्थामें शिराएँ सब फूल जाती हैं और उनमें दर्द हुआ करता है। सुस्त करनेवाला स्राव ; स्थिर होकर बैठनेके समय माथेसे बहुत पसीना निकला करता है। रोगी इतना सुस्त हो पड़ता है, कि उसे ऐसा मालम होता है कि वह शय्या भेदकर नीचे गिर जायगा (आर्स, बेल, डालका, रास, लैके)।

[मलेरिया ज्वरमें, प्लीहा बढ़ जानेपर और किनिनम-सल्फके प्रयोगसे ज्वर बन्द होनेपर हिलियोनेन्थस नामक नयी आविष्कृत दवाका मूल अर्क या १म

दशमिक क्रम ३-४ मात्रा प्रयोग करनेपर बोखार एकदम अच्छा हो जाता है और कुछ दिन और भी व्यवहार करनेपर प्लीहा स्वाभाविक अवस्थामें आ जाती है]।

लक्षणावली

मन।—स्फूर्त्ति-पूर्ण; उत्तेजना-पूर्ण चित्त; इसके अलावा कभी-कभी बिलकुल विषादग्रस्त दिखाई देती है। हमेशा आसन्न-विपत्तिकी आशंक (ऐमोन-कार्ब, ऐमिल-नाइ, ऐक्टिया, क्लिमेट, कूप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, लिलियम-टाइ, मैग-कार्ब, स्कुटेलारिया-लेटार, सिपि, वैलि, वेरेट, डिजि)। स्मरण-शक्तिकी कमजोरी।

मस्तक।—सर-दर्द; ऐसा मालूम होता है, मानो सरके भीतर कलकी चक्की घूम रही है (ऐसा मालूम होता है, मानो सरमें ववण्डर बह रहा है—कार्बो-ऐनिम; अधिककर—आर्नि, बेल, साइक्यूटा, नक्स; वैलि देखिये)। अत्यन्त तीव्र और यन्त्रणादायक सर-दर्द (पूति-वाष्पज), दिनके दोपहरके समय धीरे-धीरे बढ़कर सन्ध्याके समय बहुत तकलीफ़-भरा हो जाता है (स्टैनम); माथेकी सब धमनियोंमें टपक हुआ करती है, मानो माथा खण्ड-खण्ड हो जायगा (कार्बो-ऐन, नेट्र-सल्फ, फेरम-ऐसेट); मुँहमें बहुत उत्ताप मालूम होता है, सरमें चक्कर आता है और कभी-कभी कर्ण-विवरमें सों-सां शब्द हुआ करता है (ऐम्ब्रा, कैल्के, कोना, लिडम, मैङ्गो, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल, साइलि), सरमें चक्कर आनेकी वजहसे चलता-चलता गिर जाता है या गिर जानेका उपक्रम होता है (ऐको, ऐगार, बेल, साइक्यू, युफोर्ब, फेलेन, रास, स्पाइजि, स्पञ्जिया); खड़ा नहीं रह सकता (सल्फर, कैनाब, क्रोटोन, ओलियेन, ऐसिड-फास, रियुम, स्क्रोफ्यूलारिया-नेडो, स्पाइजि); सविराम मस्तिष्क-मेरुमज्जावरणी-प्रदाह—रोगी इतनी कमजोरी मालूम करता है, कि इसी वजहसे इच्छा न रहनेपर भी आँख बन्द कर लेता है; माथेमें अधिक यन्त्रणा (स्पाइजि)।

आँख।—आँखके गोलेके ऊपर या भौंहोंका स्नायुशूल (आर्जेण्ट-नाइ)। नित्य ठीक एक ही समय दर्द पैदा हो जाता है, इसके साथ ही बालू-भरा पेशाब (सीड्रन); बाएँ पार्श्वमें दर्दका बढ़ना (कोलोसिन्थ, स्पाइजि); दबाव डालने या टीपनेपर घटता है (स्पाइजि, सिङ्कोना; पाकस्थलीकी बीमारी आदिकी वजहसे आँखोंके ऊपरका स्नायु-शूल—कैलि-बाई)। आँखके नीचे स्नायु-शूल

आरम्भ होकर आँखके भीतर और आँखके चारों ओर फैल जाता है। आँख एकदम रक्तशून्य और उजली दिखाई देती है। अस्पष्ट दृष्टि, मानो पतले जालके भीतरसे देख रहा है (कैल्के, क्रोक, ड्रोसेरा, क्रियो, नेट्र-मूर, पेट्रोल, फास, सिकेल, सल्फ) ; केवल पार्श्वकी ओर या आड़े भावसे दृष्टि करनेपर द्रव्य आदि देख सकता है। आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती। रोशनीकी ओर देखनेसे आँखसे पानी गिरता है (डिजि, क्रियो, पल्स), आँखके सामने चमकीली रोशनी (बेल, हायो, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर, पल्स, स्पाइजि) और आगकी तरह चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (अरम, आर्स, बेल, कास्टि, आयोड, कैलि-कार्ब, लैके, लाइको, नेट्र-मूर, नक्स, ओपि, फास, कूप्रम-आर्स, स्टैफ, वैलि)।

कान।—कर्ण-विवरमें लगातार झिनझिन वगैरह आवाज़ हुआ करती है ("मस्तक" देखिये)। चोट खा जानेके कारण बहरापन (आर्नि)।

मुखमण्डल।—उद्दीप्त और उत्तापयुक्त, उजला और उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि तकलीफ़ है। सन्ध्याके समय गाल आदि और हनुकी अस्थिमें दर्द।

पाकस्थली।—भोजन कर लेनेपर पाकस्थलीमें भार मालूम होना और उसके कुछ ही देर बाद उसके बीचवाले स्थानमें ऊपरकी ओर अर्थात् अर्द्धदेशमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। बहुत थोड़ा भोजन करनेपर भी पेटमें भार मालूम होता है और सब लक्षण फिरसे पैदा हो जाते हैं।

अन्त्राशय।—सोनेके कुछ ही पहले यकृत-प्रदेशमें थोड़ा-थोड़ा दर्द आरम्भ होता है। प्लीहा-प्रदेशमें दर्द (सियैनो)। दबाने या टीपनेसे घटना। छोटे-छोटे पंजरके निचले स्थानमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना।

पेशाब।—पेशाबके साथ बहुत ज्यादा खून निकलता है ; परन्तु उसमें दर्द नहीं रहता। गदला, लसदार कीचकी तरह तली जमती है।

पीठ।—मेरुदण्डके बीचकी कशेरुका दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है, गलेके पिछले भागके मेरुदण्डकी अन्तिम कशेरुकामें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता (टेल्यू), दर्द माथा और गर्दनतक फैल जाता है। श्वासकृच्छ्रताकी वजहसे कुर्सीपर ठेस लगाकर बैठ नहीं सकता।

प्रत्यङ्ग आदि।—वात रोगकी वजहसे सन्धियोंकी क्षीणता। हाथ-पैर आदि कमजोर, काँपते हुए, हाथ-पैर आदि इच्छाकी अधीनतामें नहीं रहते,

बोखार घटने या विच्छेद होनेपर नयी प्रादाह्निक वात-वेदना, सन्धि सब बहुत स्पर्श-असहनीय हो पड़ती हैं। बहुत जाड़ा मालूम होता है, पीव पैदा होता है और बहुत ज्यादा पसीना होता है। मलेरियाकी वजहसे बीमारी, प्लीहा और यकृतका बढ़ना और हाथ-पैरमें सूजन।

त्वचा।—आरक्त ज्वरके उद्भेदकी तरह अरुणिका (Erythema), आपसमें मिल जानेवाली रस-भरी गोटियाँ,—ये आपसमें मिलकर बहुत बड़ा जखम पैदा कर देती हैं और इस जखमसे रस निकलकर पपड़ी जमती है। पीड़ा-नारङ्गा (Pemphigus—कैन्थ, कास्टि, रास, रैनान-स्क्लिरेटस)।

ज्वर।—शीतावस्था ; दिनके १०-११ बजेके बीचमें और तीसरे पहर २ बजेसे १० बजेके बीचमें,—बँधे समयका अन्तर देकर पैदा हो जाता है, समय पीछे जानेवाला—पश्चाद्गामी अर्थात् पहले दिन ११ बजनेके समय शीत पैदा होनेपर, दूसरे दिन १०॥ बजनेके समय या १० बजनेके समय पैदा होता है। एक दिनका अन्तर। शीतके समय सब शिराएँ फूल जाती हैं। हाथ-पैर काँपा करते हैं, प्लीहा और मेरुदण्डमें दर्द होता है, चेहरा म्लान, उजला हो जाता है, प्यास, दोनों ओठ नीले, कानमें झिनझिन आवाज़। हाथ, पैर, नाक, चिबुक आदि ठण्डे। उत्ताप—बहुत अधिक, माथा भरा और भारी मालूम होता है। चेहरा लाल, बहुत प्यास, शय्यामें शयन करनेपर उत्तापकी अधिकता, बार-बार जम्हाई आती है और रोगी छींका करता है ; कभी-कभी प्रलाप भी बकता है। हाथ-पैरकी शिराएँ सब फूल उठती हैं। त्वचा गर्म और सूखी ; दबानेपर मेरुदण्डमें बहुत दर्द मालूम होता है ; दिनके ४ बजनेके समय बहुत गर्मी और प्यास मालूम होती है। पसीना, इसके साथ ही प्यास ; स्थिर होकर बैठने और उत्तापके बादसे धीरे-धीरे बहुत ज्यादा पसीना निकलना शुरू होता है ; शरीर हिलानेके साथ ही पसीना ; सवेरे शय्यापर सोनेकी अवस्थामें रोगी पसीनेसे भर जाता है, इसके साथ ही सुस्ती लानेवाला रातके समयका उदरामय, नींदकी अवस्थामें बहुत अधिक पसीना होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—सिङ्कोना ; सीड्रन ; लैके ; आर्निका ; नक्स ; पल्स इत्यादि।

दोषघ्न।—आर्निका, आर्स, कार्बो, फेरम, हिपर, लैके, नेट्रम, पल्स।

शक्ति।—१म दशमिक विचूर्ण, परन्तु नव-ज्वर या नये पूतिवाष्पज स्नायुशूलमें २०० या १००० शततमिक क्रमकी १ मात्रा १म दशमिक क्रमके सौ मात्राओंकी अपेक्षा भी अधिक लाभदायक होती है।

चियोनैन्थस वर्जिनिका

(CHIONANTHUS VIRGINICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—छालसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— कब्जियत ; दुर्बलता ; यकृतकी बीमारी ; पित्ताश्मरी ; सर-दर्द ; कामला ; यकृतका कड़ापन ; मलेरिया ; स्तन पिलानेवालियोंकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—यकृतपर इसकी असीम क्रिया प्रकट होती है। यकृतका बढ़ना, पित्त-प्रवाह रुकना वगैरह यकृतके नाना प्रकारके रोगमें इसकी उपकारिता दिखाई देती है। इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं :— (१) बहुत बढ़ा हुआ यकृत, कब्जियत, कीचड़की तरह मल। पाण्डु-रोग या गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। (२) यकृत-प्रदेशको छूनेसे बहुत दर्द मालूम होता है। (३) समय-समयपर होनेवाला पाण्डु या कामला रोग ; प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतुमें पाण्डु रोग फिरसे पैदा हो जाता है। (४) पाकस्थली चिपक जाती— ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें कोई जीव हिल रहा है (मानो उदरमें कुछ हिल-डोल रहा है—ऐरोण्डोमोरिट, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, कान्वैलेरिया, कुरारी, सिक्लेम, क्रोकस, सैबाडिना, सल्फ, थूजा), इसके साथ ही प्लीहा और यकृतमें गड़बड़ी मालूम होना। (५) बायाँ गुल्फ और अंगुलीके जड़की ओर पैरकी हड्डीके भीतर वातकी वजहसे दर्द। (६) रजोरोधके साथ पीत-पाण्डु रोग। स्तनका दूध गायब हो जाना।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें दर्द ; अवसादकी वजहसे स्नायविक वेदना ; नियमित समयपर पैदा हो जाती हैं ; ऋतु-विकार या पित्तकी अधिकताकी वजहसे कपालमें दर्द, बाएँ भौंके ऊपरी भागमें दर्दका बढ़ जाना (स्पाइजि)। पेटमें

दर्द, मिचली और गाढ़े भूरे रङ्गका, पित्त-वमनके साथ (अन्धेरे घरमें स्थिर होकर रहनेपर उपशम—सैङ्गियु); बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रमकी वजहसे--एपिजिया ; स्थिर होकर बैठे रहनेपर दर्दका बढ़ जाना, मलने, दबाने या रगड़नेपर या शरीरको हिलानेसे घटना, इण्डिगो (Stet) माथेके पिछले भागसे आरम्भ होता है और सामनेकी ओर आगे बढ़कर दाहिनी आँखके ऊपर ठहर जाता है—सैंगुइनेरिया ; वयःसन्धिके समय प्रति ७ दिनका अन्तर देकर—सैबाड. सैङ्गियु, साइलि, सल्फ ; प्रत्येक आठ दिनोंका अन्तर—आइरिस ; मिचली और वमनके साथ दाहिने पार्श्वमें—आइरिस ; वाम पार्श्वमें—नक्स ; दाहिने पार्श्वगत—पल्स, सैङ्गियु)। आँखके गोलेमें अत्यन्त दर्द होता है और नाककी जड़में दबाव मालूम होता है ; हिलने, खाँसने या हँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा। माथा, पीठ और पेटमें दर्दकी वजहसे बार-बार नींद खुल जाती है। सरमें दर्द, माथा हिलाने, खाँसने, हँसने, टहलने और नींद खुलनेपर बढ़ना (लेके) ; सोनेपर, स्थिर और बैठे रहनेपर और दबानेपर घटना। ललाट गर्म, विशेषकर ज्वरकी उत्तापावस्थामें, ज्वराधिकारमें नींदवाली अवस्थामें माथेमें पसीना हुआ करता है। रमणके बाद या पाखाना फिरनेपर ललाटके ऊपर ठण्डे पसीनेकी बूंद सब मोतीकी तरह दिखाई देती है।

पाकस्थली।—पाकस्थली रह-रहकर चिपक जाती है, उसमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई जीव हिल रहा है (उदरमें सजीव पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना—कैन-सैट, कैल्के-फास, एराण्डो, क्रोक, थूजा, सैबाई, सल्फ ; शिरामें—पेट्रोल, साइलि)। जीभके बीचका अंश नीले लेपसे ढँका (लेपटेन, पल्स-नुटैलिना, वेरेट्र-विर)। रुचिका न रहना, कोई भी पदार्द खानेकी इच्छा नहीं होती। पाखानेका वेग और मिचली तथा बार-बार ओकाई, गाढ़ा हरा रङ्ग जमे गोंदकी तरह पदार्थ वेगसे वमन हो जाता है।

अन्त्राशय।—यकृतमें दर्द रहता है और वह बढ़ जाता है, साथ ही कब्जियतके साथ पाण्डु या कामला रोग। सोनेके समय काला-काला अलकतरेकी तरह पाखाना होता है (आर्स, सिङ्को, मर्क, लेप्टेन)। कभी-कभी कीचड़की तरह मलत्याग होता है (कैल्के, हिप, आयोड); प्लीहा खूब बड़ा (सियानो); पित्त-पथरी (Gall-stone—कार्डुयस-मे, हाइड्रेस, कैल्के)। ऋतु-रोधके साथ मृत्पाण्डु रोग (कैमो, फेरम, केलि-कार्ब, लाइकोपो, नेट्रम-मूरर, पोडो, पल्स,

सल्फर)। पित्तशूल (कैलो, इपिक, नक्स)। विरेचक दवा सेवन करनेपर जैसा पाखानेका वेग होता है, कभी-कभी मिचलीके साथ ठीक उसी तरह वेग होता है; ऐसा मालम होता है, मानो पाखाना जाते ही पाखाना होगा, परन्तु बिलकुल ही नहीं होता।

पीठ।—मेरुदण्डके मध्य भागमें बहुत दर्द।

सम्बन्ध।—सदृश।—ब्रायो, सिङ्कोना, सियानोथस, मर्क्यूरियस, चेलिडोनियम, कार्ड्यस-मेरि, लेप्टैन, पोडोफाइलम, नेट्र-मूर, स्पाइजि।

तुलनीय।—पित्त-वमन—ब्रायो, युपि, नक्स, आइरिस; हरा फेन-भरा मल—ग्रैटि, कैलि-कार्ब, मैग-कार्ब, मर्क-बाई; चोट लगनेकी तरह दर्दमें—आर्निका, बैपट, जेल्स, नक्स; कोई जीवित पदार्थ रहनेकी तरह मालम होना—क्रोक, थूजा।

शक्ति।—मूल अर्क और १ले दशमिक क्रम ही साधारणतः व्यवहार हुआ करते हैं।

क्लोरैलम

(CHLORALUM)

दूसरा नाम।—क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सुरासारके साथ मूल अरिष्ट।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—खूनकी कमी; कलेजेका दर्द; संन्यास; दमा; शय्याका जखम; श्वासनली-प्रदाह; ताण्डव; आँखोंका प्रदाह; शोथ; अनजानमें पेशाब होना; बदरङ्ग; रक्त-स्रावी धातु; हृत्पिण्डकी बीमारी; जलातङ्क; श्वेत-प्रदर; सूतिका रोग; आक्षेप; आमवात इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान क्रिया-स्थल मस्तिष्क और हृत्पिण्ड तथा शरीरकी त्वचा है। मस्तिष्कपर क्रिया करनेके कारण इससे निद्रालुता पैदा होती है। यह एक तेज़ नींद लानेवाली और हृत्पिण्डमें सुस्ती

लानेवाली दवा है। सरमें दर्द, नाना प्रकारके भ्रमपूर्ण पदार्थ देखना वगैरह भी इसका क्रिया-फल है। चर्म्म रोगपर लाभ दिखानेके लिये यह बहुत ही प्रसिद्ध है। इसके द्वारा लाल घेरेसे घिरे छोटे-छोटे छाले पैदा हो जाया करते हैं, इसी लिये इसके द्वारा बच्चोंके जल चेचक (पनसाहा माता) में लाभ होता है।

लक्षणावली

मन।—मोह-प्राप्त होकर कई दिनोंतक एक ही भावसे रहता है; होश नहीं आता, लगातार ऐसा मालूम होता है, मानो किसीका कण्ठ स्वर सुन रहा है। घरमें तेजीसे जल्दी जल्दी चलता है और न दिखाई देनेवाले अदृश्य मनुष्योंके साथ बातें किया करता है।

मस्तक।—माथेमें इतना भार मालूम होता है, कि रोगी माथा उठा नहीं सकता (माथा इतना भारी मालूम होता है, मानो रोगी तकियेसे सर नहीं उठा सकता—चेलिडोन)। सवेरे सरमें दर्द (कैल्के, कैमो, नैट्र-म्यू, फास, ऐसिड-फास, पल्स, सिपि, साइलि, स्क्वियुला, ब्रोम, कैलि-बाई, पोडो)। ललाटमें दर्दकी अधिकता (ऐको, ऐमोन-कार्ब, नैट्र-म्यू, नक्स, ओलियेन, पल्स, रियुटा, सिपि, साइलि, वैलि), सर हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है (कैप्सि, लैके, लाई, नैट्र-म्यू, पल्स, पोडो, सिपि) और निर्मल वायु लगनेपर घटता है (ऐको, ऐण्टि-क्रूड, आर्स, कोलो, क्रोटन, डायडेमा, मैंङ्ग, नाइट्रम, फैलेन, सिना, टैबाक, थूजा, वायोला-ट्राई, जिङ्कम)। ऐसा मालूम होता है, मानो एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक, गर्म बन्धनसे बँधा हुआ है; बच्चोंको रातमें डर लगा करता है (ऐको, अरम, ब्रोमिटम, फास, ऐण्टि-टार्ट, जिङ्कम, ब्राई, साइक्यूटा); बच्चा सोया-सोया चिल्ला उठता है।

आँख।—लगातार आँख पोंछते रहनेकी वजहसे आँखें लाल हो जाती है। अस्पष्ट दृष्टि, आँख और पलक दोनोंमें ही जलन (आर्स, ऐसेरम, बेल, कैन्थ, कैप्सि, क्रोम, युजि, क्रियो, मैंग-म्यूर, मैंङ्ग, मिफाइटिस, मार्क, निकोल, नाइट्रम, फास, पल्स, रोडो, सल्फ, थूजा)। आँखके भीतरी कोनेमें और पलकोंके पार्श्व भागमें बहुत खुजली होती है (ऐसिड-फ्ल गैम्बो, नक्स, स्टैफ, सल्फ); पलकोंमें सूजन,—फूली हुई। आँखका गोला बहुत बड़ा मालूम होता है (लैक्टियुका-वाई)। भ्रम देखना,—ऐसा मालूम होता है मानो रोशनीका घेरा देख रहा है (पल्स); ऐसा मालूम होता है मानो दृष्टि-पथपर

काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं (ऐगार, ऐमोन-म्यू, बेल, कैल्के, सिङ्को, काक्य, कोना, मार्क, ऐसिड-नाई, फास, सल्फ)।

पेशाब।—बच्चोंका रातमें शय्यामें पेशाब कर देना (गहरी निद्रावस्थामें—बेल ; पहली नींदके समय—सिपि ; उग्र गन्धकी पेशाब—ऐसिड-बेञ्जोयिक ; कृमिकी वजहसे खुजली पैदा होकर—सिना, जिन सभी बच्चोंकी सहजमें नींद नहीं खुल जाती है—क्रियो ; बहुत गहरी नींदवाली अवस्थामें—कैलि-ब्रोम)।

श्वास-यंत्र।—बहुत श्वास-कृच्छ्रता, ऐसा मालूम होता है, मानो श्वास रोध हुआ चाहता है ; छातीमें दबाव मालूम होना (आर्स, ब्राई, कैमो, क्रोटेलस, डालका, ग्रैफ, इग्ने, क्रियो, लैके, नक्स-मस, रास, स्टैन) ; ऐसा श्वास-प्रश्वास मानो हाँफ रहा है (ऐसिड-हाइड्रो, मार्क, ऐसिड-नाई, ऐसिड-फास, पल्स)।

प्रत्यङ्गादि।—हाथ-पैरोंको स्थिर नहीं रख सकता, पेशियाँ सब बिलकुल सख्त मालूम होती हैं। चोटकी वजहसे धनुष्टंकार (हाइपिर, एसिड-हाइड्रो)।

त्वचा।—त्वचाके नीचे खून जमा होनेके कारण शरीरमें जगह-जगह लाल आभा दिखाई देती है (फास, रास-वेन, हैम, कैलि-आयोड, लैके, क्रोटेलस)। पनसाहा माताकी तरह गोटियाँ। आमवात,—शराब या गर्म चीज़ पीनेकी वजहसे। हृत्पिण्डके साथ लाल रंगके उद्भेद,—शराब पीनेसे बढ़ जाता है। शरीरकी त्वचापर जगह-जगह खसड़ेकी तरह लाल आभा लिये चकत्ते निकलते हैं (ऐका, पल्स) ; शरीर बहुत खुजलाता है। त्वचा पत्थरकी तरह ठण्डी। सर्दी लगनेसे शरीरमें जगह-जगह गोल बिन्दु निकलते हैं, गर्म प्रयोगसे घटना।

द्रष्टव्य।—अन्यान्य दवाओंकी अपेक्षा इसके चर्म्म लक्षणमें एक विशेष प्रभेद है और वह यह है कि बहुत थोड़ा नशा होनेवाला पानीय पी लेनेपर भी शरीरकी त्वचापर ये लाल रङ्गके चकत्ते निकल आते हैं और बहुत बढ़ जाते हैं। इसके साथ ही यंत्रणादायक हृत्कम्प भी मौजूद रहता है।

दोषघ्न।—डिजिटेलिस, मस्कस, एमोनियम।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—-एसिड-हाइड्रो, साइक्यूटा, पल्स, कैन्थ, ओपि, एपिस, एट्रोपिनम, बेलेडोना, अरम, ब्रोमिटम ।

शक्ति ।—चर्म-रोगमें ३रो दशमिक ; सरके दर्द आदिमें ६ से ३० शततमिक क्रम ।

क्लोरम

(CHLORUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—क्लोरिनको भाफ़के पानीमें मिलाना ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहमें जखम ; दमा ; सर्दी ; मृत्पाण्डु ; आक्षेप ; क्रूप खाँसी ; दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ ; डिफ्थीरिया ; पाकाशयका प्रदाह ; खून-मिली खाँसी ; ध्वजभङ्ग ; क्षयकास ; सान्निपातिक ज्वर ; जखम ।

उपयोगिता और आभास ।—इससे आक्षेप, सर्दी वगैरह लक्षण उत्पन्न होते हैं ।

लक्षणावली

मन ।—उत्कण्ठा, उत्तेजना, बेहोशी ।

मस्तक ।—मस्तिष्कके बाएँ पार्श्वमें तकलीफ़ देनेवाली सुस्ती मालूम होती है ; रोगी लगातार पड़ा रहना चाहता है । खाँसनेके समय माथेमें गर्म पसीना होता है ।

श्वासयन्त्र ।—श्वासनलीके द्वार (Glottis) का आक्षेप ; श्वासकृच्छ्रताके साथ बच्चेके गलेके भीतर कों-कों शब्द हुआ करता है (ऐण्टिम-टार्ट, आर्स, बेल, ब्रोमम, कैल्के, फास, कूप्रम, जेलसिमियम, इपिकाकुआन्हा, लैकेसिस, फास्फोरस, सैम्बुकस)। स्वर-तन्तु रह-रहकर काँपा करते हैं, श्वासनलीमें संकोचन मालूम होना,—मानो कस गयी है और श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (आर्स, कैन्थ, हेलि, इपिक, लैके, मस्कस, नक्स-वोम, स्पञ्जिया)। श्वास अनायास ही और स्वाभाविक रूपसे ले सकता है, पर किसी

तरह भी साँस छोड़ नहीं सकता। श्वास लेना कष्टजनक और श्वास छोड़ना एकदम असम्भव—मिफाइटिस ; श्वास लेना बहुत कष्टदायक—आयोड), चेहरा नीला, हाथ-पैरका आक्षेप ; रोगी हमेशा मानो आच्छन्न-भावापन्न रहता है और उसका शरीर ठण्डे पसीनेसे भरा रहता है ; ऐमोनियम सूँघनेसे घटता है। एकाएक स्वरतन्तुका काँपना और इसी वजहसे श्वास रोध होनेका लक्षण। श्वास सरलता-पूर्वक ले सकता है और किसी तरहकी आवाज़ नहीं होती। श्वास छोड़नेके समय साँय-साँय और फड़फड़ शब्द हुआ करता है। रोगीको बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। रोगीके सोनेकी चेष्टा करते ही श्वास रुकनेकी तैयारी हो जाती है (जेल्स, ग्रण्डेलिया, रोब, लैकेसिस, लैक-कैन, ओपि); सर्दी लगते ही स्वरलोप हो जाता है (डालका, ऐकोन); उपजिह्वा (Epiglottis), स्वरनली और दोनों वायुनलीमें बहुत खुजली मालूम होती है (ब्रोम, कैमो, आयोड, कैलि-ब्राइ, स्पञ्जिया, स्टैन, सल्फ)। जीभ सूख जाती है।

ज्वर।—कम्प, दाह, पसीना।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐण्टि-टार्ट ; ब्रोमम ; आयोडम ; स्पञ्जिया ; ग्रण्डेलिया ; लैके ; लैक-कैन ; ओपि ; कूप्रम ; इपिकाकुआन्हा ; सैम्बुकस ; मस्कस।

तुलनीय।—मिफाइटिस (वायु त्याग नहीं कर सकता); ब्रोमिन ; आयोडिन ; नैट्रम इत्यादि।

दोषघ्न।—ऐल्बुमेन, लाइकोप (ध्वजभङ्ग), प्लम्बम।

शक्ति।—३रा दशमिक क्रमसे ६ठा दशमिक क्रम।

क्लोरोफार्मम

(CHLOROFORMUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—द्रव या अर्क ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—आक्षेप ; मदात्यय ; पित्ताश्मरी ; दर्द ; आघ्राण शक्ति या स्वाद शक्तिका गायब होना ; धनुष्टङ्कार ; सान्निपातिक ज्वर ; सरमें चक्कर आना ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—क्लोरैलम ।

दोषघ्न ।—ऐमिल-नाइट्रेट, इपिकाक, ब्रांण्डि ।

शक्ति ।—निम्न क्रम ।

कोलेस्टेरिनम

(CHOLESTERINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—पित्ताश्मरी ; कामला ; यकृतमें कर्कट रोग ; आँखके रोग ।

शक्ति ।—डा० बार्नेट और क्लार्कको २x विचूर्ण व्यवहार कर बहुत लाभ मालूम हुआ है ।

क्रोमिकम आक्सिडेटम

(CHROMICUM OXYDATUM)

दूसरा नाम ।—क्रोमिक-आक्साइड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रोमिक-ऐसिड और क्रोमिकम-आक्सिडेटम प्रायः समलक्षण-सम्पन्न दवाएँ हैं। इसलिये इनके लक्षण अलग-अलग नहीं लिखे गये। "ऐसिड-आक्सिडेटम" देखिये।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

सिकोरियम

(CICHORIUM)

दूसरा नाम ।—चिकोरि—एनडिव् ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी छालसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक प्रकारका साग है। रतौंधी, सर-दर्द, कब्जियत, मानसिक और शारीरिक सुस्ती वगैरह लक्षणमें लाभदायक है। इसका काढ़ा हलके विरेचकका काम करता है।

शक्ति ।—मूल अर्क, निम्न-शक्ति और क्वाथ।

साइक्यूटा-मेकुलेटा

(CICUTA-MACULATA)

दूसरा नाम ।—वाटर हेमेलाक ; स्पाटेड-काउबेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—गर्मीके दिनोंमें संग्रह की हुई जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—साइकूटा विरोसा और साइक्यूटा मेकुलेटा प्रायः सम-लक्षण-सम्पन्न दवाएँ हैं ; परन्तु धनुष्टङ्कार, अकड़न, मूर्च्छा वगैरहमें इसका ही व्यवहार अधिक है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—साइकूटा-विरोसा, कोनायम, नक्स, स्ट्रिकनिया।

शक्ति।—१२—६।

साइक्यूटा वाइरोसा

(CICUTA VIROSA)

दूसरा नाम।—वाटर हेमलक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मूलाधारका पक्षाघात ; केन्सर या कर्कटीया जखम ; निस्पन्द वायु ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाका संघात या प्रदाह ; आक्षेप ; मृगी ; आँखकी बीमारी ; मुँहासा ; हिचकी ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; सुन्न-जैसा भाव ; अन्ननलीका अवरोध ; सूतिकाक्षेप ; चिल्लाना ; धनुष्टङ्कार ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना ; कृमिके उपसर्ग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—अपस्मार या मृगी ; कृमि या दाँत निकलनेकी वजहसे धनुष्टङ्कार या अकड़न ; ताण्डव रोग या प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार वगैरह इसके प्रधान क्रियाफल हैं। आक्षेपके समय रोगी पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है ; देह भयङ्कर रूपसे घूमा करती है ; रोगीको छूते ही उसे अकड़न पैदा हो जाती है (कार्बोनि, आक्सि-जैनिसेटम) ; एकाएक बेहोश हो जाता है और एकाएक श्वास-प्रश्वासकी क्रिया बिलकुल बन्द हो जाती है और रोगी मुर्देकी तरह दिखाई देता है। पाकाशयिक लक्षणोंमें अनपचवाली चीजें (जैसे--कोयला, टिकिया, खड़िया) खानेकी बहुत इच्छा होती है और यही सबसे बढ़िया भोजन मालूम होता है। बच्चा बड़े आनन्दसे ये सब सुखाद्य खाया करता है। इससे पैदा हुआ विकार ही एक विचित्र लक्षणसे भरा रहता

है। रह-रहकर रोगीका माथा, पाकाशय, बाँह, पैर वगैरह एकाएक हिल उठते हैं। मस्तिष्क और मेरुदण्डके आघातकी वजहसे आक्षेपिक रोग और उद्भेदोंका पूरी तरहसे न निकलना या एकाएक गायब हो जानेके कारण मस्तिष्कके विकारमें भी यह बहुत लाभदायक हैं। शरीरकी त्वचाके ऊपर भी इसकी शक्ति प्रकाशित हुआ करती है, दाढ़ी या चिबुकके क्षौर-क्षत (दूषित क्षुरेकी वजहसे हज़ामत बनवानेके जखम आदि)—खसड़ा (Eczema) वगैरहमें भी यह विशेष लाभदायक है। यह रोगीको बहुत ही सुस्त कर डालता है (डाक्टर फैरिङ्गटन कहते हैं, कि किनिनम आर्सेनिकोसमके दैहिक अवसादके साथ साइक्यूटासे पैदा हुई सुस्तीकी तुलना हो सकती है)। यह दृष्टि-शक्तिमें भी विकार पैदा कर दिया करता है। पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो अक्षर सब कभी-कभी घूमते हैं, कभी ऊर्द्धगामी और कभी निम्नगामी होते हैं, कभी-कभी आँखोंसे दिखाई नहीं देता।

लक्षणावली

मन।—मानसिक विकारकी वजहसे रोगी कभी-कभी अद्भुत हँसानेवाले काम किया करता है, कभी गाता है, कभी नाचता है और कभी भाव बताता है। चिल्लाकर घरमें आफ़त मचा देता है। इसके अलावा किसी समय बाल सुलभ आनन्दके साथ शय्यासे उछल पड़ता है; विकारके समय रोता है या अस्पष्ट भावसे यन्त्रणासूचक शब्द किया करता है। स्थिर, प्रशान्त चित्त,—अपनी अवस्थासे अत्यन्त असन्तोष प्रकट किया करता है और ऐसा भाव दिखाता है, मानो न जाने कितना सुख उपभोग कर रहा है। शङ्कान्वित चित्त, दुःखकी कहानी सुनकर बहुत कातर हो पड़ता है। घरकी रखी सभी चीजें उसे नवीन और डरावनी मालूम होती हैं। उदासीनता और विमर्ष भाव। सभी आदमियोंपर सन्देह या अविश्वास करता है, किसीके पास जाना नहीं चाहता। अतीत और वर्त्तमानके प्रभेदका ज्ञान उसे नहीं रहता। भाव लोप। ज्ञान-राहित्य या बेहोश हो जाना; अज्ञान-सा हो पड़ता है और हाथ-पैर ऐंठा करते हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; सरमें चक्कर आया करता है (आर्निं, बेल, ब्राई, लाई, नेट्रम-म्यूर, नक्स, फास, वेलि, वेरेट) और गिर पड़ता है (ऐको, बेल, फेलेन, रास, स्पंजिया; ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जायगा—मस्कस), रह-रहकर माथा हिल उठता है। मलनेकी तरह यन्त्रणा पैदा करने

वाला और बेहोश करनेवाला। ललाटमें सर-दर्द; स्थिर होकर बैठनेपर बढ़ जाना; सरमें दर्दका विषय सोचनेपर घट जाता है (सरमें दर्दका विषय सोचनेपर दर्द बढ़ जाता है—कैमो)। एकाएक गांटियाँ या उद्भेद बैठ जानेकी वजहसे मस्तिष्कमें विकार या रोग पैदा हो जाना (कूप्रम, सल्फर, जिङ्कम)। मस्तिष्क और मेरुमज्जावरक झिल्लीका प्रदाह (डा० नैश कहते हैं, कि न्यूयार्कके अन्तर्गत मोरेविया शहरके सुप्रसिद्ध चिकित्सक डा० बेकरके मतसे साइकूटा वाइरोसा इस रोगको एक अमोघ दवा है), धनुष्टङ्कार आदि आक्षेपिक रोगमें मस्तक घूमकर एक ओर टेढ़ा हो जाता है। छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलकर आपसमें मिल जाती हैं और उससे रस निकलकर सूखी पपड़ी जम जाती है (वायोला-ट्राई, विङ्कामाइनर); वायु निकलनेपर सरका दर्द घट जाता है। मस्तिष्कमें चोट लग जानेके कारण धनुष्टंकार (आर्निका)।

आँख।—रोगी टकटकी लगाकर एक चीज़की ओर देखा करता है (बोवि, गुयाइयेक, हेलिबो, क्रियो, मर्क-कोर, मस्कस, मानो डर गया है); किसी तरह भी अपनी नज़र फेर नहीं सकता। पुतली फैली रहती है या चैतन्य लोप रहता है। यदि खड़े होनेकी इच्छा हो तो बिना किसी चीज़का सहारा लिये रोगी खड़ा नहीं रह सकता; क्योंकि सभी चीजें ऐसी मालूम होती है, मानो एक बार उसके पास आती हैं और फिर दूर हट जाती हैं (ऐगार)। चीजें दूनी बड़ी (उससे बड़ी दिखाई देती हैं—होयो, लोरो; छोटी मालूम होती है—मस्कस) और काली दिखाई देती हैं (सभी चीजें गाढ़े अन्धकारमें ढँकी मालूम होती हैं—लैक-कैन, लाई, पल्स), पढ़नेके समय अक्षर सब कभी घूमते हैं, कभी नीचे उतरते हैं और कभी चढ़ते हैं और कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, कि अदृश्य हो गये (काक्यु): पुस्तकके अक्षर इन्द्रधनुषकी तरह कितने ही रङ्गोंमें रँगे दिखाई देते हैं।

कान।—जोरसे बोले बिना बात सुन नहीं सकता। वृद्ध व्यक्तियोंका बहरापन; कर्ण-विवरमें नाना प्रकारके धमककी आवाज़ (चिनोपोड, ग्लीकाई, मैङ्गो, सैबाड, साइलि, सल्फ), विशेषकर निगलनेके समय कर्ण-विवरसे खूनका स्राव होना (क्रोटेलस-होर)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल (ऐकोन, बेल, काक्यु, कूप्रम, फेरम, हायो, नक्स, प्लेट, स्ट्रैन)। मस्तक (वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, रास, विन),

मुखमण्डलमें (आर्नि, कैल्के-फास, क्रियो, ऐसिड-नाई, टैरेक्स) ; चिबुकके ऊपर (क्लिमेट, क्रियो, मर्क) और दोनों ओठोंके संयोग-स्थलपर छोटे-छोटे दाने एकत्र होकर पपड़ीसे ढँके जखममें परिणत होते जा रहे हैं (काक्यु, टैरेक्स)। दाँत निकलनेके समय मसूढ़े-से-मसूढ़ा या दाँत-पर-दाँत रगड़ता है ; खूब कसकर दाँती लग जाती है—दोनों हनु खूब कसकर सट जाते हैं। मुँह खोल नहीं सकता।

गलेके भीतर।—सूखा (आर्स, चिनोपोड, नक्स-मस, ओलि-यैन)। मछली या मांस खानेके समय तेज़ अस्थि खण्ड निकलते ही अन्नवहानली रुक जाती है और श्वास रोधका उपक्रम हो जाता है। अन्ननाली हमेशा सिकुड़ती और फैला करती है। कोई चीज़ निगल नहीं सकता (कास्टि, आर्नि, आर्स, बेल, कैन्थ, कार्बो-वेज, हायो, कूप्रम, लैके, लौरो, स्ट्रैमो)।

पाकस्थली।—कोयला, टिकिया, खड़िया वगैरह खानेकी बहुत अधिक इच्छा (ऐल्यू, सोरिनम)। बहुत प्यास। हिचकी, इसके साथ ही पाकाशयमें सिकुड़न, फैलना और वायु निकलना (इथूजा, साइक्लेम, मस्कस, नेट्र-मूर, ऐसिड-हाइड्रो, ऐसिड-सल्फ)। पाकाशयके भीतर जलन (कैन्थ, कैप्स, कार्बो-वेज, मर्क, नाइट्रम, फास, सिकेल, आर्स)। पेटके ऊपरी प्रदेशमें टपकका दर्द होता है और भीतरसे हाथकी मुट्ठीकी तरह कुछ ऊँचा हो जाता है (ऐमोन, कास्टि, अरम, हिप, जैङ्कस, इफ़्रसस, नेट्रम-मूर, पेट्रोल)। पाकाशयमें जलन और दबाव मालूम होना या भार मालूम होना। पेट फूल उठता है। अन्त्रशूलके बाद धनुष्टङ्कार, विसूचिका ; ऊँची आवाज़के साथ सांघातिक हिचकी ; पर्यायक्रमसे वमन और वक्षके पार्श्ववाली पेशीका सिकुड़ना और फैलना और पीछेकी ओर माथा टेढ़ा हो जाता है या दस्त बन्द हो जाने बाद, जब मस्तिष्क और वक्षमें बहुत अधिक रक्त-सञ्चय होता है, उस समय आँखें घूमा करती हैं और श्वासकष्ट तथा अन्यान्य आक्षेपिक लक्षण प्रकट हो जाते हैं। क्रिमिकी वजहसे धनुष्टंकार (सिनासे लाभ न होनेपर)। दुर्दमनीय पेशाबके वेगके साथ सवेरेके समय उदरामय। मलान्त्रके भीतर खुजली (सिना, सैण्टो, टियुक्रि, इग्ने, कैल्के, स्टैन, स्पाइजि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार, आक्षेप, आँख, हाथ-पैर आदि और समूची देह भयङ्कर रूपसे चक्कर खाया करती है ; चैतन्य लोप हो जाता है ; देह

पीछेकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ी हो जाती है (ऐङ्गस्टियुरा, बेल, कार्बोनि-आक्सि, क्युप्रम, इग्ने, इपिक, नक्स, स्टैन, स्ट्रिकनिन, स्ट्रैम, ओपि, रास) और रोगीका शरीर स्पर्श करते ही (कार्बोनि, आक्सिजेन, स्ट्रिकनिनम) या थोड़ा भी शब्दसे या हिलाने-डुलानेपर फिरसे अकड़न पैदा हो जाती है। प्रसवके बादका धनुष्टंकार, रह-रहकर श्वास-प्रश्वास लोप हो जाता है और रोगिनी मुर्देकी तरह मालूम होती है ; शरीरका ऊपरी अंश अधिक मरोड़ खाता है। सन्तान पैदा होनेके पहलेसे बादतक आक्षेप हुआ करता है। अपस्मार या मृगी, श्वास-यन्त्र आदिसे विभेद करनेवाली (उदर विभाजक झिल्ली) के सङ्कोचन और प्रसारणकी वजहसे पाकस्थली फूल उठती है ; रोगी चिल्लाया करता है ; चेहरा लाल या नीला हो जाता है ; दाँती लगना, बेहोशी और प्रत्यंगोंमें भयानक चक्कर खाया करते हैं। रातमें रोगका बार-बार आक्रमण होता है और पहले जल्दी-जल्दी होता है, क्रमसे बहुत दिनोंका अन्तर देकर हुआ करता है ; आक्षेप आदिके बाद रोगी एकदम मुर्झा पड़ता है (चिनिन-आर्स, कार्बोनि-आक्सिजेनिसेटम), मेरुपुच्छ या मेरुदण्डके अन्तिम अंशमें चिलक मारनेकी तरह और छेदनेकी तरह यन्त्रणा होती है, विशेषकर ऋतुके समय (चोटसे पैदा हुएकी तरह दर्द—कास्टि ; मानो इसी अंशसे एक भारी चीज़ झूल रही है—एण्टिम-टार्ट ; दबानेपर दर्द मालूम होता है—साइलि ; बैठनेमें दर्द होता है और चलनेके साथ या छूनेपर दर्द बढ़ जाता है—कैलि-बाई)।

त्वचा।—समूचे चेहरेमें मटरकी तरह दाने निकलते हैं और अन्तमें आपसमें मिलकर पीले रङ्गकी पपड़ी जमा हुआ जखम पैदा हो जाता है (मेजेर, वायोला-ट्राई, विङ्का-माइ, रास-वेन)। दाहिने पृष्ठफलक (Scapula) के ऊपर लाल रसभरी फुन्सियाँ निकलती हैं और उनको छूनेसे बहुत दर्द मालूम होता है। चर्मोद्भेद (Eruption) बैठ जानेकी वजहसे मस्तिष्कमें प्रदाह पैदा हो जाता है। शरीरमें काठकी सींक या कांटा गड़नेकी वजहसे धनुष्टङ्कार और हनुस्तम्भ पैदा हो जाता है (हाइपिर, स्ट्रिकनिन)। दूषित छूरेसे हज़ामत बनवानेकी वजहसे चिबुकमें दाद हो जाना (वेसिलिन, कैल्के, ग्रास्ट्रि)। कर्कट-रोग—स्नायु-प्रवण, अस्थिरमति रोगियोंका,—अर्बुद दबानेपर दर्द अधिक मालूम नहीं होता ; परन्तु बाँहमें बहुत दर्द, अकड़न रहती है और शक्ति नहीं रहती।

निद्रा ।—बच्चा रातमें नींदमें चिल्लाकर रो उठता है (ऐकोन, आरम, ब्रोमिटम, क्लोरेलम) ।

वृद्धि ।—छूनेपर (कार्बोनि-आक्सि, स्ट्रिकनिन) । बहुत सामान्य शब्दसे (रोगीसे बोलनेपर—कार्बोनि-आक्सिजेन) । शरीर हिलाते ही (दूसरी जगह जानेकी चेष्टा करनेपर—स्ट्रिकनिन) और तम्बाकूके धूएँसे (इग्नेशिया) ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐसिड-हाइड्रो, हाइपिरिक, कार्बोनि-आक्सि, स्ट्रिकनिन, इग्ने, नक्स-वोमिका । प्रतिविष या दोषघ्न—आर्नि, ओपि ।

तुलनीय ।—कोनायम, इथ्यूजा, हाइपिरिक (मेरुदण्डीय संघात); हायोसा (सङ्कोचन); हेलिबो (शरीरकी वक्रगति और आक्षेप); नक्स (धनुष्टंकार) इत्यादि ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिक और ६ठीसे ३०, २०० शततमिक क्रमतक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३५ से ४० दिन ।

साइमेक्स लेक्टियुलारियस

(CIMEX LECTULARIUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जीवित खटमलका विचूर्ण या तरल क्रम ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कब्जियत ; खाँसी ; अर्श ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारियाँ ; रेतःक्षरण ; चर्म-रोग ; खुजली ।

उपयोगिता और आभास ।—सविराम ज्वरमें लाभके लिये यह प्रसिद्ध है और इसका विशेष लक्षण यह है, कि जाड़ा लगनेके कुछ ही पहले रोगीका क्रोध बहुत बढ़ जाता है और हाथ-पैर आदि लगातार फैलाया या हिलाया करता है (हाथ—ऐमोन-कार्ब, ऐमिल, बेल, सैबाड, टैबाक, बार्बेस ; पैर—ऐसिड-सल्फ) और दोनों पैरकी कण्डरा और पेशियाँ सभी ऐसा मालूम होता है कि छोटी और संकुचित हो गई हैं (डा० नैशने भी इसका उल्लेख किया है) (ऐमोन-म्यूर, ऐमोन-कार्ब, कास्टि, गुयाइक, नेट्र-कार्ब) । इसके कई प्रधान लक्षण ये हैं:—(१) दाहिनी ओर रोगका अधिक आक्रमण होता है ।

(२) बोखारकी शीतावस्थामें बहुत तेज़ सर-दर्द होता है; तकलीफ़से रोगीकी चिन्ता-शक्ति एकदम गायब हो जाती है। पानी आदि पीनेसे तकलीफ़ बढ़ जाया करती है। (३) ऐसा मालूम होना, मानो यकृत मोच खा गया है, छूने और खाँसनेपर बहुत दर्द होता है। (४) मलका कड़ापन—मल सूखा, सुपारीकी गांठ-जैसा और प्रत्येक वेगमें एक-एक गांठ-सी निकलती है (चेलिडो, ओपि, प्लम्ब, थूजा)। (५) खाँसी—गलरोध, वायु निकलने और वमनके साथ (ब्राई, ड्रोसेरा, केलि-कार्ब); बलगम पीवकी तरह; रोज़ बोखारकी प्रकोपावस्थामें खाँसी पैदा हो जाती है। (६) दुर्दमनीय निद्रालुता और तन्द्राका भाव (ऐण्टि-टार्ट, नक्स-मस)।

लक्षणावली

मन।—ज्वराधिकारमें जाड़ा लगनेके पहले रोगी बहुत मानसिक बेचैनी और असन्तोष प्रकट करता है और क्रोध आ जानेकी वजहसे सभी चीजें तोड़-फोड़ करनेकी चेष्टा करता है।

मस्तक।—ललाटमें होनेवाला सर-दर्द; ऐसा मालूम होता है, मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है (बेल, ब्राई, कैल्के, कैल्के-कास्टि, ऐसिड-फ्लुओ, नक्स-वोम, साइलि)। पानी और लेमोनेड आदि पीनेकी वजहसे—ऐकोन; दूध आदि पीनेकी वजहसे—ब्रोमम; शराब पीनेकी वजहसे—ऐगार, कार्बो-वे, नक्स; धूम्रपानकी वजहसे—ऐको, ऐण्टि-क्रूड, इग्ने। सर-दर्दकी तेजीकी वजहसे चिन्ता-शक्ति गायब हो जाती हैं। ठण्डी चीज़ द्वारा दबानेसे आराम मालूम होता है।

नाक।—आधे घण्टेतक लगातार छींक आया करती है, लगातार पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है और ललाटके नीचे दबाव या भार मालूम होता है।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—जीभ मैली, सफेद लेप-चढ़ी और ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ फूल गई है और जल गई है। स्वर-नालीमें पिट-पिट करनेके कारण लगातार सूखी खाँसी आया करती है. ज्वरकी उत्तापावस्थाके अन्ततक खाँसी आती है और पानी पीनेपर बढ़ जाती है (आर्स, ब्राई, ड्रोसेरा, लेके, सिङ्को, मिफाइटिस, फास)। गलेके भीतर बहुत ज्यादा

परिमाणमें स्वादहीन श्लेष्मा सञ्चित हुआ करता है और सवेरे अनायास ही निकलता है।

मलांत्र।—कब्जियत; मल सुपारीकी तरह गांठ-गांठ, बहुत कष्टसे गांठ निकलती है और मलद्वार रुक जाता है।

श्वास-यंत्र।—सवेरे खुसखुसी खाँसीके साथ वक्षोस्थिके नीचे ऐसा मालूम होना, मानो कोई खरोंच रहा है।

ज्वर।—बोखारमें, जाड़ा लगनेके समय रोगी मुट्ठी बाँध लेता है और बहुत क्रोध प्रकट किया करता है। समूची देहमें जाड़ा मालूम होता है और जानुदेशपर बहुत ठण्डा मालूम होता है, मानो जानुके ऊपर ठण्डी हवा लगती है (ऐसिड-वेन); जानुमें अत्यन्त दर्द होता है (पोडो); सभी सन्धियोंमें बहुत दर्द, मानो कण्डार (मांस-पेशीका अगला भाग) बहुत छोटा हो गया है (ऐमोन-कार्ब, ऐमोन-म्यूर, कास्टि, गुइयाक, नेट्र-कार्ब), विशेषकर जानुके नीचेकी दोनों कण्डरामें। सोनेपर जाड़ा बढ़ जाता है (सोनेपर जाड़ा घटता है—कैलि-कार्ब)। उत्तापावस्थामें अन्ततक स्वरनालीमें पिट-पिटकर सूखी खाँसी आया करती है (ऐको, इपिक; शीतावस्थामें खाँसी—ब्राई, सोरि, रास, सैबाड, सैम्बियु; पसीनेवाली अवस्थामें खाँसी—ड्रोसेरा; निज्वरावस्थामें खाँसी—सिना, ड्रोसेरा, युपेट, पल्स)। पानी पीनेपर खाँसी बढ़ जाती है (आर्स, ब्राई, ड्रोसे, लैके, सिङ्को, मिफाई)। प्यास अत्यन्त, परन्तु तकलीफ़ बढ़ जानेके डरसे रोगी पानी पीनेके लिये शरीर हिलाना नहीं चाहता। निज्वरावस्थामें प्यास (डालका); शीतावस्थामें थोड़ी (एपिस, आर्नि, कैप्स, इग्ने, वेरेट); उत्तापावस्थामें और भी कम प्यास रहती है (आर्स, नेट्र-म्यूर) और पसीनेवाली अवस्थामें बिलकुल ही नहीं रहती (एपिस, कैल्के, कैप्स, सिना, इग्ने, नक्स, सैम्बियु, वेरेट); पसीना बहुत बदबूदार (आर्नि, बैराइ, कार्बो-ऐन, डालका, ग्रैफ, लैके, मर्क्यु, ऐसिड-नाइ, नक्स, रास, सिपि, साइलि; प्याजकी गन्ध—बोवि, लैके, लाइ; पूतिगन्धयुक्त—स्टैफ)। उत्तापके बाद ही रोगी बहुत भूखा हो जाता है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐमोन-म्यूर, कास्टि, एपिस, डालका, युपेटो-पर्फोलि।

तुलनीय ।—नेट्रम (सरमें दर्द पसीनेवाली अवस्थामें घटता है); आर्सेनिक (पसीनेवाली अवस्थामें बढ़ जाता है); बेल (टपक); आर्स और ब्रायो ।

शक्ति ।—६ठासे ५०० क्रम ।

सिना

(CINA)

दूसरा नाम ।—इसको वर्म सीड (Worm seed) कहते हैं ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—आर्टिमिसिया जातिके वृक्षसे मदर टिञ्चर तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—गहरे काले केशवाला बालक, प्रकृति उग्र ; बच्चा केवल गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है, परन्तु उसे आराम नहीं मिलता । उसकी यह इच्छा नहीं होती, कि कोई उसे छुए ; किसीको पास नहीं आने देता ; राक्षसकी तरह भूख ; पेशाब गदला इत्यादिमें उपयोगी है । आँतोंमें महीन क्रमिके रोगकी यह एक अद्वितीय दवा है । रोग या तकलीफ़ बतानेवाला चेहरा, आँखके नीचे फैला हुआ नीला या काला दाग, दाँत कड़मड़ाना और राक्षसी भूख—ये क्रमिग्रस्त रोगियोंके प्रधान लक्षण हैं । हाथ-पैरोंकी जोरकी ऐंठन, चेहरा मलिन, नींदमें दाँत कड़मड़ाना इसका एक और भी लक्षण है । इसके सेवनसे रोगीकी आँतोंकी रोगी ग्रन्थियाँ और स्नायु सब स्वाभाविक अवस्थामें आ जाती हैं ; इसलिये आँतोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीसे जो रस निकला करता है, वह क्रमिके भोजनके उपयुक्त नहीं होता । इसी वजहसे क्रमि सब भूखों मर जाती हैं और कितनी ही बार मलके साथ निकल जाती हैं ; परन्तु सूत्र क्रिमिमें इससे कोई लाभ नहीं होता । उसमें स्पाइजिलिया, स्टैनम, इग्ने, इण्डिगो, कोयासिया प्रभृतिकी सहायता लेनी पड़ती है । नीचे लिखे कई इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं :—(१) बच्चा बहुत क्रोधी और चिड़चिड़ा रहता है । (२) रातमें नींदमें इस तरह रो उठता है, मानो डर गया हो ; फिर उसको सहजमें सुलाया नहीं जा सकता । (३) यदि कोई उसे छूता है, गोदमें उठाता

है या प्यार करता है, तो अत्यन्त असन्तोष प्रकट करता है। (४) मीठा अत्यन्त प्रिय मालूम होता है। (५) पेट गर्म रहता है; नाभीके ऊपरी अंशमें हाथ नहीं लगाने देता; शूलकी तरह दर्द मालूम होता है; हाथसे दबानेपर उसे आराम मिलता है। (६) मलद्वारमें असह्य सुरसुरी, ठण्डे जलके प्रयोगसे आराम मालूम होना। (७) पेशाब गदला, सफेद और रखनेपर दूधकी तरह मालूम होता है। (८) अनजानमें पेशाब हो जाना; शय्यामें पेशाब कर देना। (९) ज्वराधिकारमें चेहरा ठण्डा और हाथ गर्म मालूम होता है। (१०) मुँहकी पेशियाँ सब संकुचित रहा करती हैं।

लक्षणावली

मन।—सन्ध्याके समय और आधी रातके समय रोगी इस तरहसे शय्यासे घबड़ाकर उठ बैठता है, मानो डर गया हो; कल्पनाके कारण नाना प्रकारकी भ्रम-भरी चीजें देखता है, चिल्लाता है और रोता है, तेजीसे बोलता है और सदा शङ्कित चित्त रहता है। बच्चेको किसीका स्पर्श सहन नहीं होता (ऐसिट-क्रूड, एपिस, आर्निका, बेल, लैके, नक्स-मस, नक्स-वोम, सैनिक, टेल्यूरियम, थूजा); कोई उसके पास जाता है, तो नाराज़ हो जाता है; कितनी ही चीजोंकी प्रार्थना करता है, परन्तु देनेपर नहीं लेता (ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, कैमो, डालका, रियुम, स्टैफि); किसी तरह सन्तुष्ट नहीं रहता, हमेशा ही मानो दुःखी रहता है। दुर्विनीत चित्त; गोदमें लेकर घूमने कहता है, परन्तु इससे उसे आराम नहीं मिलता; प्यार करनेपर चिढ़ उठता है। हमेशा चिन्तायुक्त मानो न जाने कितना अपराध किया है (आर्स, चेलिडो, नक्स, रियुटा, जिङ्कम)। बच्चा हमेशा रेंरियाया या रोया करता है।

मस्तक।—ऐसा सर-दर्द मानो बेहोश हो जायगा, विशेषकर ललाटमें, इसके बाद सरके पीछेकी ओर भी दर्द मालूम होता है। सिलाई वगैरह कामोंमें बहुत देरतक टकटकी लगाकर देखते रहनेपर वक्षस्थल और पीठमें दर्दके साथ सरमें दर्द (रियुटा देखिये)। दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। बच्चा हमेशा एक ओर माथा लटका दिया करता है। सरका दर्द बन्द होनेपर पेटमें दर्द आरम्भ होता है। माथा झुकानेपर कुछ देरके लिये आराम मिलता है (मेजेर)। मूर्द्धादेशमें बहुत दबाव मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने जोरसे दबा रखा है—दबानेपर दर्द बढ़ जाता है।

आँख ।—तिर्यक (टेढ़ा) देखना ; अन्त्राशयमें क्रमिकी वजहसे खुजली (स्पाइजि)। टकटकी लगाकर बहुत देरतक देखते रहनेपर दृष्टि धुँधली हो जाती है ; पर आँख मलनेपर यह अस्पष्टता दूर हो जाती है (कैप्सि, क्रोक, पल्स, फास)। सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं (कैन्थ, डिजि, सैण्टोनाइन)। आँखकी पुतली फैली रहती है (संकुचित—साइकूटा)। अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय परितृप्तिके कारण क्षीण दृष्टि।

नाक ।—हूप खाँसी रोगमें बार-बार छींक (बेल)। लगातार नाक खोंटा करता है और मला करता है (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, टियुक्रि, ग्रैनेट, सैबाड, स्पाई); यहाँतक कि कभी-कभी खोंट-खोटकर खून निकाल देता है (अरम)।

मुखमण्डल ।—मुख पीला ; दोनों ओठोंके चारों ओर तकलीफ़ बतानेवाली एक फैली हुई सफेद और नीले रङ्गकी रेखा दिखाई देती हैं (इथ्यू देखिये)। दोनों आँखोंके चारों ओर नीलापन या काला दाग ; एक गाल लाल और दूसरा मलिन और सफेद (कैमो)। चेहरा मलिन और ठण्डा और ठण्डे पसीनेसे भरा।

मुँहके भीतर ।—दाँत कड़मड़ाता है, खासकर नींदवाली अवस्थामें (आर्स, साइकूटा, पोडो, ह्यायो, स्ट्रैमो) लगातार ऐसा मालूम होता है, कि गलेके भीतर कुछ है, बार-बार घूंट लेता है और खाँसा करता है। ऐसा अनुभव होता है मानो गलेमें कुछ भरा हुआ है (बेराई, बेल, कैमो, ग्रैफ, हिप, इग्ने, लैके, लोबे, मर्क, नेट्र-मूर, नक्स, प्लम्ब, सैबाड, सिपि, स्पाइजि, सल्फ)। जीभपर बहुत पतला सफेद लेप-चढ़ा रहता है, जीभके कांटे सब उठे रहते हैं और दोनों पार्श्व लाल रहते हैं।

पाकस्थली ।—बार-बार भूख लगना ; भोजनके कुछ ही देर बाद फिर भूख लग आती है (बोवि, कैल्के, कास्टि, किनिन-सल्फ, लैके, मर्क, फास, प्लम्ब, स्टैफ, स्टैन); मिठाई (कैलि-कार्ब, लाइको) और बहुतसे अखाद्य-पदार्थ खानेकी इच्छा ; बच्चा स्तन नहीं पीना चाहता (मर्क, साइलि, स्टैन); उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द ; सवेरे नींद खुलनेके कुछ ही देर बाद और भोजनके बाद बढ़ जाता है। खाने-पीनेके कुछ ही देर बाद पाखाना लग आता है (पोडो, इथ्यू ; भोजनके बाद—आर्स, सिङ्को ; भोजन करना आरम्भ करनेपर—फेरम)। खाने-पीने बाद वमन और उदरामय ; क्रिमि, खाये हुए पदार्थ,

श्लेष्मा और पित्तकी कै होती है। कृमिकी वजहसे नाभि-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है (स्पाइजि)। बच्चोंका पेट फूला और कड़ा रहता है। भूखके समय उदरमें बहुत ही अस्वाच्छन्द मालूम होता है (खाली रहनेपर—पल्स)। ज्वरके समय बार-बार वमन होता है; जीभ मैली नहीं रहती (इपिक)।

मल।—सफेद रङ्गका और श्लेष्मा मिला; आवाज़के साथ एकाएक सब पदार्थ बाहर निकल जाते हैं; कभी-कभी लाल रङ्गका श्लेष्मामय मल निकलता है; बच्चोंको दाँत निकलनेके समय कब्जियत और उदरामय पर्याय-क्रमसे पैदा हो जाते हैं। मलके साथ मलिनता या केचुआ कृमि निकलता है। मलद्वारमें बहुत सुरसुरी होती है (साइकूटा, सैण्टोनाइन, टियुक्रि, स्पाइ, स्टैन, इग्ने, कैल्के, इण्डिगो, कोयाशिया)। सफेद रङ्गका पानीकी तरह मल (सिङ्को, ऐसिड-फास, रास)।

पेशाब।—रातमें निद्रितावस्थामें अनजानमें पेशाब हो जाता है। पेशाब पहले गदला और कुछ देर बाद दूधकी तरह गाढ़ा और सफेद हो जाता है; कभी सफेद रङ्गका गाढ़ा पेशाब भी होता है; सफेद रङ्गका लारकी तरह पेशाब (मठाकी तरह—फास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी प्रकट होता है और बहुत ज्यादा स्राव होता है। यौवनोद्गमके पहले जरायुसे रक्त-स्राव।

श्वास-यंत्र।—सूखी खाँसी और छींक (ऐस्पैरेग, बेल, हेराक्लियम), रह-रहकर खाँसी आती है और कण्ठ रोध होनेका उपक्रम हो जाता है; प्रत्येक बसन्त और हेमन्त ऋतुमें नियमित रूपसे खाँसी आती है; बच्चा बोलना या हिलना नहीं चाहता, कि कहीं खाँसी न आने लगे (ब्राई)। खाँसी आनेके पहले बच्चेका शरीर कड़ा हो जाता है और अकड़ जाता है। क्रुप खाँसी; सवेरे उसका प्रकोप अधिक रहता है; पर कफ नहीं निकलता। सन्ध्याके समय बड़े कष्टसे सफेद आभा लिये, कभी-कभी खून-मिला कफ निकलता है; सवेरे और सन्ध्याके समय खाँसी बढ़ जाती है, रातके समय घटती है। पानी आदि पीनेसे खाँसी बढ़ जाती है (आर्स, ड्रोसेरा, लैके, सिङ्को, मिफाइटिस; ठण्डे पानीसे वृद्धि—ऐमोन-म्यूर, कार्बो-वे, सिलि, स्क्विला); निर्मल वायुमें टहलनेपर (हिप, नेट्र-म्यूर, स्टैन, लैके, ऐसिड-सल्फ, ऐल्यु, सल्फ, स्पाइ) और कण्ठदेशमें सेंकनेपर खाँसी बढ़ जाया करती है (लैके)। ठण्डी हवा आदि लगनेकी वजहसे स्वर-

लोप (ऐको, फास, स्पञ्जिया) और ऐसा मालूम होना, मानो गलेमें पर अड़ा हुआ है (ऐमोन-कार्ब, कैल्के, इग्ने)। इस खाँसीमें—खाँसनेके बाद गलेसे लेकर पाकस्थलीतक गड़गड़ शब्द, खड़े होने और बोलने (ऐनाक, कास्टि, कैमो, सिङ्को, डिजि, लेके, मैङ्ग, मिफाइट, मर्क, फास, साइलि, स्टैन, बेराइटा, हिपर, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-म्यूर, सल्फ); हँसने (सिङ्कोना, ड्रोसे, फास, स्टैनम) वगैरह कारणोंसे भी खाँसी बढ़ जाती है ; खाँसीके बाद शिशु हाँफा करता है (ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-सल्फ) और उसका चेहरा सफेद या रक्तहीन हो जाता है (नीला हो जाता है—क्लोरैल, ड्रोसे, इपिक, ओपि, वेरेट ; लाल हो जाता है—बेल, कोना)।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार—प्रसारक (Extensor) पेशियाँ सब सिकुड़ा और फूला करती हैं ; बच्चा एकाएक अकड़ जाता है और इसके गलेके भीतरसे पेटके नीचेतक कलकल शब्द हुआ करता है, मानो किसीने बोतलसे पानी ढाल दिया है। मृगीकी तरह आक्षेप, अधिकांश स्थानोंमें रातमें रोगी चिल्ला उठता है (साइक्यूटा) और हाथ-पैर आदि जोरसे और बड़े वेगसे सिकोड़ा और फैलाया करता है। सभी प्रत्यङ्गोंमें बिजलीकी तरह दर्द एकाएक फैल जाता है और उस अङ्गको सुन्न कर देता है, रोगी एकाएक उछल पड़ता है, मानो भयानक दर्द हुआ है।

निद्रा।—क्रिमिग्रस्त बच्चा पट सोना पसन्द करता है। बच्चा सोया-सोया जोरसे रो उठता है, मानो बहुत डर गया है (ऐको, अरम-ब्रोम, ब्राई, कैमो, साइक्यू, ऐण्टि-टार्ट, फास, जिङ्कम, क्लोरैलम)। निद्रितावस्थामें दाँत कड़मड़ाता है (साइक्यूटा, स्पाइजि, पोडो, हायो, स्ट्रैम, सैण्टो)।

ज्वर।—शीतावस्था,—शीतल रक्तहीन मुखमण्डल और गर्म हाथोंके साथ शीतका पैदा हो जाना ; अधिकांश स्थानोंमें सन्ध्याके समय होता है ; बाहरी उत्ताप (सेंकना आदि) से जाड़ा नहीं घटता (बाहरी उत्तापसे घटता है—इग्ने ; बढ़ता है—इपिक)। उत्तापावस्था—मुखमण्डलमें और माथेमें ज्यादा गर्मी मालूम होना। पसीनेवाली अवस्था—साधारणतः पसीना बहुत ठण्ढा होता है ; ललाटमें, नाकके चारों ओर और हाथमें पसीना होता है। ज्वरके समय कै होती है और भूख ज्यादा रहती है। प्यास—केवल शीतावस्थामें (इग्ने) या उत्तापावस्थामें। हृत्पिण्डकी काँपने-जैसी गति।

वृद्धि।—रातमें, पानी पीनेपर, एक दृष्टिसे सुईके काम करनेपर (रियुटा), बोलने या हँसनेपर।

सम्बन्ध।—हूप खाँसीमें ड्रोसेराके प्रयोगसे रोगका प्रकोप घट जानेपर सिनाका प्रयोग करना चाहिये। सर्दी लग जानेके कारण यदि स्वर लोप हो जाये—ऐकोनाइटम ; फास्फोरस और स्पञ्जियासे विशेष लाभ न होनेपर सिनासे फायदा होता है। क्रिमि रोगमें सिनासे लाभ न होनेपर प्रायः देखा जाता है, कि सैण्टोनिनम, टियुक्रियम, मेरम-विरम और स्पाइजिलियासे और कभी-कभी स्टैनमसे भी विशेष लाभ हुआ करता है; परन्तु छोटी क्रिमिमें इण्डिगो, कीयाशिया वगैरहका प्रयोग करना चाहिये।

सदृश।—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, कैमो, क्रियो, साइलि, स्टैफ, इग्ने, स्पाइजि, स्टैन।

दोषघ्न।—कैप्सि ; चायना ; कैम्फर।

शक्ति।—निम्न-क्रमसे २०० क्रम (शततमिक); परन्तु सैण्टोनिनम १मसे ३रा दशमिक विचूर्ण।

क्रियाका स्थायित्व।—१४ से २० दिन।

सिनकोना आफिसिनैलिस या चायना

(CINCHONA OFFICINALIS OR CHINA)

दूसरा नाम।—पेरुवियन बार्क।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखी छालसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—फोड़ा ; मदात्यय ; चीण दृष्टि ; खूनकी कमी ; मुँहका जखम ; संन्यास ; क्षुधामें गड़बड़ी ; दमा ; पित्त-विकार ; सर्दीकी बीमारी ; बेहोशी ; कब्जियत ; खाँसी ; कमजोरी ; प्रलाप ; अतिसार ; शोथ ; अजीर्णता ; कानकी बीमारी ; बहरापन ; स्वप्नदोष ; विसर्प ; चेहरेका स्नायुशूल ; पित्त-शिला (पित्त-पथरी) का शूलका दर्द ; खूनी बवासीर ; सर-दर्द ; क्षय ज्वर ; वंक्षण-सन्धिकी

बीमारी ; ध्वजभङ्ग ; बहुव्यापक सर्दी ; सविराम ज्वर ; कामला ; प्रसव-वेदना ; स्तनके दूधकी बीमारी ; प्रदर ; यकृतकी बीमारी ; रजोविकार ; पारेका दोष ; आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ ; स्नायुशूल ; अन्त्रावर्तन-प्रदाह ; बहुत पसीना ; फुसफुसवेष्ट-प्रदाह ; मुँहका स्नायविक दर्द ; विचर्चिका ; वात ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ; नींदमें गड़बड़ी ; चाय पीनेका दुष्परिणाम ; प्यास ; कर्ण-पटहका प्रदाह ; आभिघातिक ज्वर ; उदराध्मान (पेटमें वायु) ; शिराओंका फूलना ; सरमें चक्कर आना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बलिष्ठ काले मनुष्य या जो किसी समय तो बलिष्ठ थे, इस समय नाना प्रकारके दुर्बल करनेवाले स्रावकी वजहसे जीर्ण-शीर्ण हो पड़े हैं, उनके लिये सिनकोना बहुत लाभदायक है। सभी विषयोंमें उदासी, बातचीतमें बहुत चिढ़ उठता है, विषादयुक्त बना रहता है, जीवनमें कोई मजा नहीं आता, पर आत्महत्याकर अपनी तकलीफोंका अन्त नहीं कर डालना चाहता, साहस ही नहीं होता ; मनुष्य शरीरके सार-भूत रस सबकी स्रावकी अधिकता, विशेषकर खूनका स्राव, बहुत दिनोंतक स्तनका दूध क्षय होना, बहुत दिनोंतक रहनेवाला उदरामय, शरीरके कितने ही स्थानोंसे बहुत ज्यादा पीव क्षय हो जानेकी वजहसे होनेवाले रोगमें और पूतिवाष्पज (मलेरियासे उत्पन्न) रोज़ आनेवाला बोखार आदिमें यह बहुत उपयोगी है। रमणियोंके वयःसन्धिके समय बहुत ज्यादा शोणित स्रावमें और जिन सब नये रोगोंमें शोथ अर्थात् सूजन आ जाती है, उनपर भी इसकी अद्भुत और अतुलनीय शक्ति दिखाई देती है। इससे पैदा हुआ दर्द, संकोचन और छेदन (सिकुड़ने और छेदने) की तरह होता है। प्रत्येक सन्धिमें और हरेक हड्डीमें ऐसा ही दर्द मालूम होता है। समस्त अस्थि-वेष्ठिनियोंमें बहुत दर्द होता है, मानो उनमें गहरी चोट लग गई हो ; रोगी बीमारीवाली जगह हमेशा हिलाया करता है ; क्योंकि उससे तकलीफ़ बहुत कुछ घट जाती है। छूते ही यह सब दर्द फिरसे पैदा हो जाता है और धीरे-धीरे बढ़ जाता है ; परन्तु जोरसे दबानेपर आराम मिलता है (प्लम्बम और कैप्सिकममें भी इसी ढङ्गकी स्पर्श असहनीयता मौजूद रहती है। रोगी छुरेका स्पर्श सहन नहीं कर सकता। बहुत सुस्ती, कँपकँपी, शारीरिक परिश्रम करनेकी इच्छा न होना ; बहुत ज्यादा स्पर्श-ज्ञान बना रहता है। जोरकी हवा, दर्द आदि असह्य मालूम होते हैं। मुख, नासारन्ध्र (नाकका छेद), अन्त्र-मण्डली (आँतें) और जरायु

(गर्भाशय) वगैरहसे रक्त-स्राव प्रभृति सिनकोनाके कई प्रकृतिगत लक्षण हैं। आगे लिखे कई लक्षण इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—रोगी किसी तरह भी सन्तोष नहीं प्रकट करता ; दुःखित ; उसे सन्तुष्ट करनेके लिये कोई चाहे जो कुछ करे ; उसे अच्छा नहीं लगता। उसकी चिन्ता-शक्ति प्रायः गायब रहती है ; मनमें उदय हुए भावोंका सामञ्जस्य नहीं रह सकता। चेहरा पीला या भूरा हो जाता है। हमेशा निद्राका आवेश बना रहता है ; परन्तु सो जाने या सो लेनेपर भी उसे आराम नहीं मिलता। रात तीन बजनेके समय उसकी तकलीफें बढ़ जाती हैं ; बहुत तड़के शय्यासे उठ बैठता है। स्तन पिलानेवाली माताके दाँतका दर्द। कानमें लगातार आवाज़ आया करती है। सर-दर्द,—मानो माथा फट जायगा ; मस्तिष्क मानो खोपड़ीमें एक ओरसे दूसरी ओर जाकर टक्कर खाता है ऐसा मालूम होना ; घरके बाहरकी निर्मल हवा लगनेसे बीमारी बढ़ जाती है। गर्म कमरेमें घट जाती है। नाकसे सर्दीका स्राव, तरल श्लेष्माका स्राव होता है और नाकके दोनों छेद रुक जाते हैं। श्वास-रोध करनेवाला वायुनलीगत सर्दीका स्राव, छातीमें घड़घड़ शब्द होता है ; भोजनके बाद बार-बार खाँसकर कफ़ निकालना पड़ता है। यन्त्रणाजनक आँतोंमें आबद्ध आध्मानवायु—डकार आनेपर घटता नहीं है (घट जाता है—कार्बो-वेज)। अन्त्र-शूल—निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है ; वृद्धि—रातमें और भोजनके बाद ; शरीरको सामनेकी ओर टेढ़ा करनेपर घटता है ; पित्ताश्मरीका शूल ; उदरामय—मल पानीकी तरह, कोमल, बड़े कष्टसे निकलता है या बिना तकलीफका अजीर्ण, पतला मल निकलता है ; मलमें सड़ी गन्ध ; बहुत वायुके साथ और सुस्त करनेवाला उदरामय।

लक्षणावली

मन ।—उदास भाव (मर्क, ओपि, ऐसिड-फास, बैप्ट, लिलि-टाई, माइरि, कैलि-बाई) ; स्पृहा-शून्य ; बोलना अच्छा नहीं लगता (आर्जेण्ट-नाई, बेल, बार्ब, कैस्ट, हेलिबो, इग्ने, कैलि-फास, मैन्सिनेला, मैङ्गे-ऐसेट, स्टैन, आक्साइ-ड्रोप, नैजा, वेरेट-ऐल्ब, जिङ्क) ; दुःखित चित्त (ऐग-कैस्ट, कैस्टो, कास्टि, हिप, इग्ने, लैके, मैग-कार्ब, माइगेल, नेट्र-म्यूर, नेट्र-सल्फ, ओलि-ऐन, सोरिन, सिपि, स्टैन ; ऋतुके पहले—कास्टि, ऐसिड-नाई)। जीवनसे स्पृहा-शून्य, जीवनकी इच्छा न रहना, पर आत्महत्या करनेका साहस नहीं होता।

उसे यह दृढ़ विश्वास रहता है, कि वह अत्यन्त दुःखी है (हेलिबो, दुर्भाग्य—वेरेट-ऐल्ब ; उसके परिवारवाले उसे नहीं मानते—आर्जेण्ट-नाई ; मानो एकाएक उसकी बहुत कीर्त्ति हो गई है—वैलि, वेरेट-ऐल ; मानो एकाएक दौड़ रहा है—बेल, पाइरोज, सल्फ ; मानो उसके जीवन धारण करनेकी सङ्गति नहीं है—ब्राई) ; उसे यह भी स्थिर विश्वास रहता है, कि उसके शत्रुगण बराबर उसे तङ्ग करते हैं (कैलि-ब्रोम, लैके)। कल्पना-शक्ति अत्यन्त तीक्ष्ण, मनमें विचार-पर-विचार उदय होकर उसे सोने नहीं देते (एपिस, कोरैल, काफिया)। दूसरेके मनपर कष्ट पहुँचानेमें अत्यन्त पटु। एकाएक रो उठता है और छटपटाता है। मानसिक परिश्रम करनेमें अत्यन्त अनिच्छुक (ऐलो, ऐसिड-कार्बोलिक, कोरैल, कोना, युपस, टियेन)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, सर उठानेपर (आर्नि, कोलो, मर्क ; ऊपर देखनेपर—पल्स, साइलि)। सरमें दर्द, मानो माथा दो हो जायगा (ऐमोन-कार्ब, बेल, नेट्रम-मूर, नक्स, साइलि, किनिन-सल्फ)। सरके भीतर मस्तिष्क तरङ्गकी तरह हिलता रहता है (सल्फ, ऐ-सल्फ), सरके भीतर और गर्दनके दोनों ओरकी धमनीमें टपक हुआ करती है (आर्स, बेल, कैनाब, कैमो, लैके, लाई) ; सरके भीतर पिछले भागसे लेकर दर्द समूचे माथेमें फैल जाता है ; बैठने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है (बैठनेसे बढ़ना—ऐगार, रियुटा ; बैठनेसे घटना—पोथस-फिटिड) ; रोगी टहला करता है (कैन्थ) या खड़ा रहता है। रक्तस्राव या अधिक इन्द्रिय सेवनके कारण (ऐसिड-फास) कमजोरी, माथेमें बहुत भार मालूम होता है और ढलमलाया करता है। माथेमें बहुत दर्द, मानो चोट लग गई है ; छूने या मानसिक परिश्रमसे दर्द बढ़ जाता है। प्रबल वायुमें और थोड़ा भी छूनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है, पर जोरसे दबानेपर घट जाता है। मूर्द्धाकी त्वचामें स्पर्श बिलकुल सहन नहीं होता, कंघीका छू जाना भी सहन नहीं होता।

आँख ।—दोनों आँखें लाल, गर्म और जलनभरी हो जाती है, आँखोंमें मानो बालूके कण पड़ गये हैं—ऐसा मालूम होना (कास्टि, युफ्रे) ; दृष्टि-पथमें ऐसा मालूम होता है, मानों आगकी चिनगारियाँ या काले-काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं (अरम, बेल, क्रोक, ऐगार, काक्यु) ; आँखका सफेद अंश पीला हो जाता है (आर्स, बेल, कैन्थ, कैमो, आयोड, लैके, मर्क, सिपि)

पढ़नेके समय अक्षर सब आपसमें सट जाते हैं। आँखोंके चारों ओर नीला घेरा रहता है और वे गड़हेमें धँसी-सी रहती हैं। पलकोंका सविराम (रह-रहकर) स्नायु-शूल।

कान।—कानमें भों-भों सों-सों शब्द (कैल्के, ग्रैफ, नक्स; हुङ्कार शब्द—बेल, लाई, ऐ-नाई; सङ्गीत शब्द—कैल्के; कानमें रह-रहकर कड़ाकसे आवाज़ हो उठती है या बुलबुला फूटने-जैसा शब्द होता है—बैराई, कैलि-कार्ब, मैगे, ऐ-नाई); कानमें पतली सलाई गड़नेकी तरह मालूम होना (कैलि-कार्ब, पल्स, ऐसिड-नाई; कानमें टपक—कैल्के, फास, रास; झुनझुन शब्द—फास, सल्फ)। बहरापन, पर ऊँची आवाज़से तकलीफ होती है। कानका बाहरी अंश लाल।

नाक।—अकसर रक्तस्राव हुआ करता है, खासकर शय्यासे उठने बाद और ऋतुके परिवर्त्तनसे (ब्राई, हैमा)। सर्दी,—नासारन्ध्रसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है (कड़वा या त्वचाको क्षय करनेवाला पानीका स्राव—आर्स, अरम, सिपि) और इसके साथ ही बार-बार छींक आती है, ऐसा मालूम होता है, कि दोनों रन्ध्र मानो रुक गये हैं।

मुखमण्डल।—चेहरा उतरा हुआ, रक्त-शून्य, गाल और दोनों आँखें गड़हेमें धसी और नाक नुकीली और उठी हुई (आर्स, कैम्फ, वेरेट); आँखके कोनेमें कालापन; सफेद, सूखा और रोगियल चेहरा,—बहुत इन्द्रिय सेवाके कारण और रातमें जागरणकी वजहसे; बच्चेको स्तनसे दूध पिलानेके समय माताके दाँतोंमें दर्द। चेहरेका (Facial) स्नायुशूल; आँखके नीचेके और दोनों हनुके स्नायुपर ही अधिकांश स्थानोंमें अधिक आक्रमण होता है। जरा भी छूनेसे या रातके समय सोनेवाली अवस्थामें दर्द बढ़ जाता है; रोगवाली जगह थोड़ा भी हिलाने और तकलीफ़ घटने बाद छूनेसे ही तुरन्त फिर दर्द पैदा हो जाता है और थोड़ी ही देरमें असह्य हो जाता है, जोरसे दबानेपर घटता है। खून आदिका स्राव होनेकी वजहसे सुस्त हो जानेवाले रोगियोंके मुँहका स्नायुशूल।

मुख-विवर।—जीभ सफेद और पीली; गाढ़ा लेप चढ़ी। काली या क्षय हुई त्वचाकी तरह लाल, मानो जल गई है; जीभका अगला भाग जलन-भरा और उसमेंसे लार बहती है; दोनों ओठ सूखे और फटे-फटे (ब्राई); ओंठ काले, टपक-जैसा दाँतका दर्द,—दाँतमें दाँत लगनेसे असह्य यन्त्रणा, परन्तु

जोरसे दाँत-पर-दाँत रगड़नेसे आराम मालूम होता है। बहुत ज्यादा लार बहना ; पारेके दोषकी वजहसे लार बहना (बेल, बेराई, हिप, कैलि-कार्ब, लेके, मर्क, फास, पल्स)।

पाकाशय। – स्पर्श सहन नहीं होता और ठण्डा। अजीर्ण अवस्थामें खाये हुए पदार्थ आदि वमन हो जाते हैं (ऐब्रोट, फेरम, ओलियेन); पाचन-क्रिया बहुत देरसे होती है। दूध पीनेपर प्रायः पेटकी बीमारी हो जाया करती है (सल्फ, कैल्के, नेट्र-कार्ब, निकोलम ; आगसे जला दूध पीनेकी वजहसे उदरामय—सिपि)। चाय पीनेकी वजहसे बीमारियाँ (फेरम, थूजा, काफि, नक्स); भूख रहती है, पर रुचि नहीं रहती (ऐगार, ऐल्यू, ब्राई, फेरम, लाई, मैग-म्यूर, नेट्र-म्यूर, ओलियेन, पल्स, रास, साइलि, ऐ-सल्फ)। अजीर्ण खाये हुए पदार्थ आदिकी गन्ध मिली डकार आती है (कैल्के, कोना, पल्स); भोजनके बाद तीता स्वाद मिली डकार (खट्टी डकार—कैलि-कार्ब, नक्स)।

अन्त्राशय।—बार-बार डकार आनेकी इच्छाके साथ बहुत ही अस्वाच्छन्द पैदा करनेवाला उदराध्मान या रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका पेट बहुत भरा हुआ है; परन्तु डकार या वायु नहीं निकलनेपर कुछ घटता नहीं है (वायु निकलनेसे घटना—कार्बो-वेज); पेटमें मानो पानी खौल रहा है (ऐङ्गस, ग्रैनेट, रास, सेना, स्ट्राम, आर्नि, लाइको); ऐसा मालूम होता है और हमेशा पेटमें भुटभाट कलकल हुआ करता है (नेट्र-सल्फ, पल्स, रियुमेक्स, क्रसस, जेट्रोफा, सिना)। अन्त्रशूल—रोज़ एक ही समय पैदा होता है, पित्त-पथरीकी वजहसे बँधे समयपर पैदा होनेवाला शूलका दर्द (कैल्के, बार्बेरिस, हाइड्रैस्ट, कार्डुयस-मेरि); वृद्धि—रातके समय और भोजनके बाद ; सामनेकी ओर झुक पड़नेपर घटता है (कार्बो ; पीछेकी ओर झुक पड़नेपर घटता है—डायस्कोरिया)। पुराना यकृत रोग—दाहिने कोखमें दर्द, पंजरेके नीचे प्रायः अंगुलीसे स्पर्श करनेपर मालूम होता है, कि वह बहुत बड़ा और कड़ा हो रहा है और हाथ लगानेसे दर्द होता है। शरीरकी त्वचा और आँखका सफेद-अंश पीला ; पेशाब गाढ़ा और मल उजला,—स्वाभाविक पीले परिमाणके ह्रासकी वजहसे क्विनाइनके अपव्यवहारसे बढ़ी हुई पीहा, बहुत ज्यादा मात्रामें चाय पीनेकी वजहसे पेट फूलना।

मलान्त्र और मल।—उदरामय—पतले दस्त आना ; मल पतला होता-होता क्रमसे पानीकी तरह हो जाता है। उजला ; कुछ लाल रङ्ग, रोगी

जल्दी-जल्दी क्षीण हो पड़ता है। बार-बार पानीकी तरह मल निकलता है और पेट मानो चिपक जाता है ; अजीर्ण रोगाधिकारमें अनपची खाई हुई चीजें मिला, फेन-भरा पीला मल निकलता है। यन्त्रणा नहीं रहती, रातके समय दस्त होता है (आर्स, नक्स-मस, पोडो, सोराइन, पल्स) ; भोजनके बाद (ऐलो, आर्स, कोलो, ट्राम्बि) ; गर्मीके दिनोंमें (ब्राइ, पोडो) ; फल खाने (कार्बो-वेज, सिस्टस, कोलो, पल्स) ; दूध पीने (कैल्के, आस्टि, नेट्र-कार्ब, निकोलम, सल्फ़) और देहको हिलानेपर (ब्राइ, कोलचि ; शरीरमें नीचेकी ओर गतिके समय—बोर, जेलोनि) बढ़ जाता है। कोमल पाखाना होनेके समय रोगीको कष्ट होता है (ऐनाक, कार्बो-वेज, डायडेमा, हिप, नक्स-मस, रोडोड)। कभी-कभी काला मल निकलता है।

पेशाब।—गाढ़ा, गदला, परिमाणमें थोड़ा (भूरा या काली आभा लिये—कोलचि, नेट्रम-म्यूर, टेरिब ; दूधकी तरह—ऐसिड-फास ; कुछ देरतक स्थिर रहनेपर दूधकी तरह हो जाता है—सिना)। मूत्रनालीके भीतर सुई बेधनेकी तरह मालूम होना, कभी-कभी खून-मिला पेशाब भी होता है (आर्नि, कैल्के, कैनाब, कोना, हिप, इपिक, लाइ, मर्क, मेजेर, मिलिफ़ो, सल्फ़)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामोद्दीपक चिन्ता बहुत प्रबल रहती है। अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय सेवनके कारण इन्द्रियमें शिथिलता आ जाती है और इसी वजहसे प्रायः रेतस्खलन हो जाया करता है और इसी वजहसे रोगी बहुत क्षीण हो जाता है (जेलस, फास, ऐसिड-फास ; लिङ्गमें कड़ापन नहीं आता और अनजानमें वीर्यस्खलन हो जाया करता है—कैन्थ, जेलस)। चलनेके समय जननेन्द्रिय बहुत भारी मालूम होती है (खड़े रहनेपर—सल्फ़)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतुके समय बहुत अधिक स्राव होता है ; स्राव—काला और जमा हुआ (प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ—ऐक्टिया और कैमो)। गर्भ-स्रावके बाद खून जाना—रक्त-स्रावके समय कानके भीतर सों-सों शब्द हुआ करता है और बेहोशी आ जाना चाहती है। देखनेकी शक्ति गायब हो जाती है और काला जमा हुआ खूनका थक्का या टुकड़े सब निकला करते हैं ; जरायु सिकुड़ता और फैलता है ; पेशियाँ और अङ्ग-प्रत्यङ्ग मरोड़ खाया करते हैं और रोगिनी बार-बार हवा करनेके लिये कहती है (तेजीसे हवा करने कहती है—कार्बो-वेज ; दूरसे धीरे-धीरे हवा करने कहती है—लेके) ; प्रदर—ऋतुके पहले प्रदरका स्राव होता है, इसके साथ ही पुट्ठेमें दबाव मालूम होता है ;

शोणितमय स्राव (काक्यु, कोपेवा, मूरेक्स, एसिड-सल्फ़, नक्स-मस, जिङ्कम)। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia),—दीर्घकाल स्थायी (सिकेल); इसके साथ ही डिम्बाधार प्रदेशमें खींचन मालूम होना या सड़ी गन्ध-भरा, पनीरकी तरह या पीवकी तरह स्राव (बेल, कार्बो-ऐन, सिकेल, सल्फ़ ; खून-भरा होनेपर—रास, सिकेल ; स्राव रुक जानेपर या बहुत थोड़ा होनेपर—कोलोसिन्थ, हायो, नक्स, सिकेल, सल्फ़ ; खून-भरा होनेपर—रास, सिकेल, वेरेट)। रक्त-स्रावके समय रोगिनी खट्टी चीजें खानेका आग्रह प्रकट करती है। बहुत ज्यादा शोणित स्राव होनेकी वजहसे कभी-कभी धनुष्टङ्कार रोगतक पैदा हो जाता है (फ़ेर-फास)। वयःसन्धिकाल बीत जानेपर प्रौढ़ा स्त्रियोंका रक्तस्राव।

श्वास-यंत्र।—खाँसी,—हँसने, बोलने या गानेपर खाँसी आ जाती है (ड्रोसे, रास, स्टैन)। कफ़ निर्मल साफ श्लेष्मामय, या खून-मिला रहता है। फेफड़ेसे खूनका स्राव (मिलिफो, फ़ेर-फास ; अधिक परिमाणमें खूनके क्षयके बाद चायना व्यवहृत होता है)। रातमें सोनेके समय छातीमें दबाव मालूम होना (सोनेपर घटता है—सोरिन), बार-बार दीर्घ श्वास लेनेकी इच्छा (ऐगार, ऐमोन, कास्टि, ऐण्टि-क्रूड, आर्नि, ब्राई, कैप्स, कार्बो-वेज, कैमो, डिजि, ऐ-हाइड्रो, लेके, लोबेलिया, नक्स, रास, स्प्ञ्जिया, थिरिड, थूजा)। हृत्पिण्डके कुछ ऊँचेपर और कभी-कभी वक्षोस्थिके नीचे सुई बेधनेकी तरह दर्द ; सर्दीकी ज्वरकी वजहसे कमजोरी। नीची तकियापर सर रखनेपर साँस लेने तथा छोड़नेमें तकलीफ़ होती है (कोलचि, हिप, नाइट्रम, पल्स ; चित्त सोनेपर श्वास-प्रश्वासमें कष्ट होता है—ओलियम-ऐन, फास, साइलि ; करवट सोनेपर—कार्बो-ऐन, पल्स)। श्वासरोधक सर्दी, वक्षके भीतर घड़घड़ आवाज़ होती है (बेल, ब्राई, कैमो, हिप, इपिक, ऐण्टि-टार्ट, पल्स, स्प्ञ्जि, स्टैन)। भोजनके बाद जोरसे खाँसी (ऐमोन-म्यूर, ऐनाक, ब्राई, नक्स, नक्स-वोम, ऐण्टि-टार्ट ;— भोजनके बाद खाँसीका घटना—फ़ेरम)।

प्रत्यङ्ग आदि।—एक हाथ बरफकी तरह ठण्डा और दूसरा हाथ गर्म (डिजि, इपिक, पल्स ; एक पैर ठण्डा और दूसरा पैर गर्म—चेलिडो, लाइको ; छेदनेकी तरह दर्दके साथ दाहिना जानु गर्म); सूजन (जानुके ऊपरी स्थानमें दर्द-भरी सूजन—रास)। हाथ-पैरोंमें और सन्धियोंमें दर्द, मानो मोच खा गया है ; धीरे-धीरे छूनेपर असहन दर्द होता है, लेकिन जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है। (कैप्स, प्लम्ब), बहुत शारीरिक अवसाद और कम्पन ; रोगी

शारीरिक परिश्रम नहीं करना चाहता ; स्पर्श सहन नहीं होता ; ठण्डी हवा सहन नहीं होती। सभी सन्धियाँ क्लान्त मालूम होती है,—सवेरे और बैठे रहनेपर बढ़ जाती हैं।

निद्रा।—नींदके बाद आराम नहीं मालूम होता ; हमेशा निद्रालु भाव बना रहता है ; बहुत तड़के नींद खुल जाती है ; सोया-सोया चौंक उठता है।

ज्वर।—सविराम ज्वर ; पहली बारके आक्रमणके दो से तीन घण्टा पहले बोखार आता है (किनिन-सल्फ, आर्स, ब्राई, नक्स, नेट्र-म्यूर ; प्रत्येक ७ दिन या १४ दिनके बाद फिर बोखार आ जाता है ; सिनकोनाका बोखार रातमें कभी नहीं आता। शरीर ढँकनेपर या निद्रितावस्थामें बहुत ज्यादा पसीना निकलता है (ढके हुए अंशमें बहुत ज्यादा पसीना—कैमो ; निद्रितावस्थामें—कोना ; निद्रितावस्थामें पसीना बन्द हो जाता है—सैङ्गियु) ; एक दिन या दो दिनोंका अन्तर देकर बोखार आता है (एक दिनका अन्तर—मेजेर, नेट्र-म्यूर, नक्स ; दो दिनका अन्तर—आर्स, हायो, आयोड, मिनियैन, पल्स, सेबाड, वेरेट) ; शीतावस्थामें पहले या बाद प्यास नहीं रहती ; रोगी गर्मी चाहता है, परन्तु गर्म प्रयोगसे शीत घटता नहीं है। पसीना बहुत ज्यादा और सुस्ती लानेवाला ; साधारणतः सवेरे ५ बजे या दिनके ५ बजेके समय बोखारका आवेश या प्रकोप होता है ; बोखार आनेके पहलेवाली रातमें रोगी बेचैन रहता है ; ज्वराधिकारमें हाथ-पैरकी सन्धियोंमें तेज़ छेदनेवाला दर्द मालूम होता है।

वृद्धि।—धीरे-धीरे छूनेपर, तेज़ ठण्डी हवा लगनेपर, एक दिनके अन्तरसे, मानसिक आवेगकी वजहसे और शरीरका सार रस आदिका क्षय हो जानेके कारण, विश्रामसे, आँखें हिलानेपर, पाखाना होते समय और बाद, धूपमें तथा पानी और धूम्रपान करनेपर।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आर्स (काले रङ्गका मल, सुस्ती) ; कार्बो-वेज (आध्मान और अतिसार) ; स्ट्रैमो, कैप्सि, कूप्रम-ऐसेट (काले रङ्गका मल) ; सोरिन (आरोग्यसे हताश) ; पल्स (मुँहका स्वाद तीता) ; फास-ऐसिड (रेतःक्षरणकी वजहसे कमजोरी) ; मर्क्यु (लार बहना) ; यकृतमें दर्द (ऐकोन, हिपर) ; किसीका भी स्पर्श सहन नहीं कर सकता (ऐण्टिम-क्रूड, कैमो) ; भोजनके बाद दस्त (आर्स, ऐलो) ; भोजनके बाद भूख (केल्के)।

अनुपूरक।—फेरम ; बहुत दिनोंतक रोग भोगने बाद बच्चोंको पतले दस्त आनेके साथ-ही-साथ मस्तिष्कादिक रोगके लक्षण आदि—अर्थात् आच्छन्ना-

वस्था प्रकाश पानेपर केल्केरिया फास्फोरिका, सिनकोनाके अनुपूरकके रूपमें काम करता है। सविराम ज्वर जब हर बार पहली बार आनेके समयसे कुछ पहले आ जाता है, उस समय किनिनम सल्फ्युरिकम सिनकोनाके सदृश हुआ करता है।

प्रतिविष या दोषघ्न।—आर्निका, आर्स, कार्बो-वेज, फेरम, युपे, नक्स, इपिकाकुआन्हा, नेट्रम-मूर, मार्क, पल्स, सिपिया, सल्फर। डिजिटेलिस और सेलिनियमके पहले या बाद लाभ नहीं करता।

सदृश।—आर्स, कैप्स, सीड्रन, कार्बो-वेज, क्यूप्रम-ऐसेट, सोरिन, पल्स, ऐ-सैलिसि, कास्टि, ऐ-फास।

घटना।—जोरसे दबानेपर और सामनेकी ओर जहाँतक सम्भव हो टेढ़े होनेपर, शरीर हिलानेपर, घरके भीतर, गर्म प्रयोगसे और शामको भोजनके समय और बाद।

शक्ति।—मूल अरिष्ट, ६ ठा ; ३० से २०० शततमिक क्रम।

सिङ्कोनियम-सल्फ्युरिकम

(CINCHONIUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम।—सल्फेट आव सिङ्कोनिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—यद्यपि सिङ्कोनियम सल्फकी यथेष्ट प्रूविङ्ग हो गयी है परन्तु इसका प्रचार चिनिनम सल्फकी तरह कभी प्रचलित नहीं हुआ। दोनों दवाओंकी लक्षणावलीमें भी कोई विशेष प्रभेद नहीं है। नींदसे जागने बाद असह्य सर-दर्द, ऐसा मालूम होता है कि माथा फट जायगा, माथेके सामनेवाले भागमें सर दर्द ; धुँधला देखना, गलनालीमें जलन पाकाशयमें ठण्डक मालूम होना, भोजनके बाद और हिलने डोलनेपर रोग लक्षणोंका बढ़ना वगैरह लक्षणोंसे, चिनिनम सल्फसे इसका प्रभेद मालूम होता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

सिनाबेरिस

(CINNABARIS)

(MERCURIUS SULPHURATUS RUBER)

दूसरा नाम ।—इसे रेड सल्फाइड आफ मर्करी कहते हैं ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नीचे लिखे रोगमें लाभदायक है :—पेशाबमें अण लाल ; बाघी ; सर्दी ; उपदंश ; आमाशय ; आँखोंका प्रदाह ; प्रमेह ; वात गृध्रसी या पैरका झुनझुनीवाला वात ; गण्डमाला ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पलकोंका स्नायुशूल, उपदंश विषसे दूषित धातु प्रधान व्यक्तियोंका जखम आदि, उपदंश और प्रमेह विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंके मसे, सर्दी वगैरहमें इसकी उपयोगिता प्रसिद्ध हो रही है। आगे लिखे कई लक्षण इसके निर्णायक लक्षण है—(१) आलस्य ; मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता ; भूल जानेवाला ; क्रोधी स्वभाव,—सहजमें ही इसके रोगीको क्रोध आ जाता है (२) नाकसे खूनका स्राव इसके साथ ही सरमें दर्द (मैग-सल्फ, मिलिलोटस)। (३) माथेकी सन्धियाँ सब, माथेको ढकनेवाली त्वचा, केशकी जड़, नासा दण्ड और मसे वगैरहमें इतना दद होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता, मसेको छूसेपर खून निकल आता है। (४) नासा दण्डके ऊपर ऐसा मालम होता है मानो कोई धातुमय पदार्थ छू रहा है या मानो उसपर चश्मा रखा हुआ है ऐसा भार मालूम होता है। (५) मेद्-त्वचाके ऊपर पंखेकी आकृतिका मसा (नींदवाली अवस्थामें लिङ्गमें चिलक मारनेकी तरह दर्द) लिङ्गमणि (सुपारी) में फाड़ने जैसा सुई बेधनेकी तरह दर्द और सुरसुरी होना। (७) प्रदर स्रावके समय योनिमें दबाव मालूम होना (८) खूनी बवासीर। (९) खूनी आँव ; दुरारोग्य कब्जियत ; मल बहुत बड़ा और कड़ा ; 'पाखाना होनेके समय मलद्वार बाहर निकल पड़ता है (काँच निकलना) ; मलद्वारमें इस ढंगकी सुरसुरी होना मानो एक बड़ा केचुआ रेंग रहा है। चारों ओर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं और उसमें जलन तथा कुटकुटी होती है (१०) शरीरकी त्वचापर जगह-जगह लाल दाग ; सब दिखाई देते हैं ; लाल रंगके जखम ; उपदंश। (१२) मुखमण्डल गर्म, लाल और काला, विशेषकर दोनों आँखोंके चारों ओर।

लक्षणावली

मस्तक।—सन्ध्याके समय, सोनेके पहले और रातमें भोजनके कुछ बाद सरमें इस तरह झिन-झिन किया करता है, कि रोगीके बेहोश हो जानेका उपक्रम हो जाता है। सरमें दर्द और उसके साथ ही उठनेपर या झुकनेपर मिचली। सरमें प्रचण्ड दर्द, रोगी तकियेसे सर नहीं उठा सकता। यदि कोई पैर दबा देता है, तो आराम मिलता है। ललाट ठण्डा रहता है और उसमें मीठा-मीठा दर्द होता है। गर्म प्रयोगसे घट जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर ललाटमें, और मूर्द्धदेशमें दर्द, बायीं करवट या चित्त होकर सोनेपर बढ़ना; दाहिनी करवट फिरनेपर घटना। उठनेपर करोटी और केश सब छूनेपर दर्द मालूम होता है।

आँख।—पलकोंका स्नायुशूल—आँखके एक कोनेसे तेज दर्द पैदा होकर भवोंके ऊपरसे घूमता हुआ, दूसरे कोनेमें जा पहुँचता है। अश्रुनाली (Lachrymal duct) से दर्द आरम्भ होकर, आँखको घेरता हुआ कनपटीमें जा पहुँचता है। समूची आँख लाल हो जाती है। दोनों आँखोंके चारों ओर सूजन आ जाती है और लाल हो उठता है।

नाक।—सर्दी—नासादण्डके मूलदेशमें (नाककी जड़में) बहुत दबाव मालूम होता है, मानो एक भारी चश्मा लगा हुआ है और यह दर्द, उसकी बगलवाली हड्डीमें फैल जाता है; नाकमें सुरसुरी हो जाती है और नाक छिड़कने पर उससे खूनका स्राव होता है।

गलेके भीतर।—नाकके पिछले छेदसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा गलेमें आ पड़ता है। कण्ठ बहुत सूखा और रातमें यह सूखापन इतना बढ़ जाता है, कि रोगीको बहुत तकलीफ मालूम होने लगती है, उसकी नींद बार-बार खुल जाती है और जितनी ही बार वह जागता है, उतनी ही बार वह ठण्डे पानीसे कुल्ला करता है। कण्ठ फूला हुआ और दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियां फूल जाती हैं और लाल हो उठती हैं। मुँह और कण्ठके भीतर आगकी चिनगारियोंकी तरह लाल रङ्गके जखम सब पैदा हो जाति हैं।

जननेन्द्रिय।—लिङ्गके अगले भागका चमड़ा या सुपारीको ढकनेवाली त्वचा फूल जाती है। उसके ऊपर मुर्गेकी पूंछकी तरह मसे पैदा हो जाति हैं।

और सामान्य कारणसे ही, उसमेंसे खूनका स्राव होने लगता है। (ओलकी तरह मसे—ऐसिड-नाइ्)। बढ़ा हुआ अण्डकोष (क्लिमि); बाघी (मार्क-सोल, वैडियेगा), लाल और खाल उधड़ा हुआ तथा मासांकुरमय गर्मीका घाव—गौण उपदंश (थूजा) पेशाबके समय मूत्रनालीमें दर्द मालूम होना, लिङ्गमुण्डमें लाल बिन्दुके साथ जलन, सुरसुरी और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणा। लिङ्गमुण्डमें दर्द बतानेवाली सुरसुरी और बदबूदार पीपका स्राव। चलनेके समय उरुके बिचले अंशमें बदबूदार पसीना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर—स्रावके समय योनिमें बहुत दबाव मालूम होना।

त्वचा।—सहजमें ही खूनका स्राव होनेवाले मुर्गेकी पूंछकी तरह छोटे अर्बुद पैदा हो जाते हैं, इसके साथ ही खुजलानेवाली सन्धि। आगकी तरह लाल। पैरके नीचेकी सामनेवाली बड़ी हड्डीके ऊपर गुटिका। बाहुका अगला भाग—कोहनीसे अंगुली तक दर्द।

सम्बन्ध।—सदृश।—मार्क-सोल, हिप, वैडियेगा, ऐसिड-नाइ्, थूजा, मार्क, प्रोटो-आयोड।

तुलनीय।—कैम्फ (लाल दाग); थूजा, सिपिया (लिङ्गके अगले भाग की त्वचापर मसे)। सर-दर्द, (सेनेगा, क्लिमेटिस)।

दोषघ्न।—हिपर, नाइट्रिक-ऐसिड, ओपियम, सलफर।

शक्ति।—३ री दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम तक।

सिनेरेरिया मेरिटिमा

(CINERARIA MARITIMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पौधेसे अर्क या सार (Succus) तैयार होता है।

प्रयोग।—मोतिया-बिन्द और आँखके सफेद अंशकी अस्वच्छता रोगमें लाभदायक है।

शक्ति।—मूल अर्क एक-एक बून्द रोगो आँखमें नित्य तीन चार बार देना चाहिये। यह दवा कई महीने लगातार व्यवहार करने पर लाभकी सम्भावना है।

सिनैमोमम जिलैनिकम

(CINAMOMUM ZELYANICUM)

दूसरा नाम।—दारु चीनी। दाल चीनी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—स्पिरिटके साथ इसका मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—उदरी; अस्थि-क्षय (हड्डियोंका क्षय हो जाना); कब्जियत; अतिसार; रक्तस्राव; सर-दर्द; मूर्च्छा-वायु; श्वेत प्रदर; रजःस्रावमें विकार; बहुत ज्यादा रजःस्राव।

उपयोगिता और आभास।—इसका प्रधान विषय है रक्तस्राव और रक्तस्रावमें इसकी शक्ति अतुलनीय है। मनुष्यके चाहे किसी द्वारसे चमकीला लाल रंगके रक्तका स्राव होता हो, या निकलता हो, सिनैमोमम उसपर मन्त्र या दैवी शक्तिकी तरह काम करेगा। नाकसे खूनका स्राव, यक्ष्मा रोगमें कफके साथ खूनका स्राव, मलान्त्रसे मलके साथ खून जाना, नितम्बमें चोट लगनेकी वजहसे या पैर फिसल जानेके कारण खूनका स्राव वगैरहमें इससे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। प्रसवके बादके शोणित-स्रावमें एलोपैथिक मतसे आर्गट दिया जाता है, पर आर्गटकी अपेक्षा यह सौ गुणा श्रेष्ठ और लाभदायक है। मूर्च्छावायुके प्रकोपमें—डकार या वमनके बाद घटना।

लक्षणावली

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें बहुत दबाव मालूम होना। ऋतु,—असमयमें हो हो जाता है। बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है,—स्राव चमकीले लाल रंगका होता है। प्रसव वेदनाके समय इसकी कई मात्राएँ प्रयोग करनेपर प्रसवका दर्द बढ़ जाता है और बहुत ज्यादा या जीवन नाश करनेवाले अनर्गल स्रावकी आशङ्का दूर हो जाती है।

पाकस्थली।—घुड़-सवारीके समय मिचली और वमन।

मलांत्र और मल।—अतिसार; रक्तस्राव इत्यादि।

त्वचा।—कर्कट रोगमें,—जब जखम नहीं उत्पन्न हो जाता या जहाँ दर्द और सड़ी गन्ध मौजूद रहती है। जरायुके कर्कट रोगकी वजहसे चमकीले लाल रंगका खूनका स्राव होता है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—बेलेडोना, चमकीले लाल रंगका खून, जल्द जम जाता है और जिस अंगके ऊपरसे निकलता है, वह स्थान गर्म मालूम होता है। ट्रिलियम, पेण्डोयुलम,—चमकीला या गाढ़ा लाल रंगका खून,—जिन स्त्रियोंकी प्रतिबार प्रसवके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्राव हुआ करता है। मिलिफोलियम,—चमकीला लाल रक्त,—बिना तकलीफ़का स्राव चोट लगनेकी वजहसे लगातार खूनका स्राव हुआ करता है। सेबाइना-चमकीला लाल रंग और जमा हुआ रक्त, शरीरको हिलानेसे ही बढ़ जाता है और इसके साथ ही विटप देशसे नितम्बास्थि या त्रिकास्थितक दर्द। सिकेलि टुवल्ली या आस्थिसार स्त्रियोंकी काली आभा लिये रक्तस्राव—हाथ पैरोंसे कनकनी पैदा हो जाती है, शरीर ठण्डा होनेपर रोगिनी लगातार ओढ़ना उतार डालना चाहती है (हवा करने कहती है—कार्बो-वेज, सिङ्कोना, लेकेसिस)। इरिजिरन कैनाडेन्सि, सेबाइनाकी तरह शोणित स्रावमें प्रयुक्त होता है,—फर्क इतना ही है, कि मूत्रस्थली और मलांत्रके भीतर तकलीफ़ और खुजली मौजूद रहती है। हैमामिलिस—काला शोणित स्राव—जिस अंशसे खूनका स्राव होता है उसी जगह ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो घाव हो गया है। ऐकालिफा इण्डि—सूखी खाँसीके साथ खून मिला कफ निकलता है। सिक्लेमेन—सरमें चक्कर और टेढ़ा देखनेके साथ बहुत ज्यादा खूनका स्राव। विङ्का माइनर—ऋतुके बाद भी खूनका स्राव हुआ करता है। बहुत ज्यादा दुर्दमनीय शोणितस्राव—थ्लैस्पि, वार्सा, पैस्टोरिस।

दोषघ्न।—ऐकोनाइट।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३री दशमिक शक्ति।

सिस्टस कैनाडेन्सिस

(CISTUS CANADENSIS)

दूसरा नाम ।—वक-रोज, आइस प्लैण्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—हड्डीकी बीमारी ; कैन्सर या कर्कट रोग ; अतिसार ; विसर्प ; श्वासनाली प्रदाह ; ग्रन्थिका बढ़ना ; सड़नेवाले जखम ; अँगुल हाड़ा ; कर्ण मूल ; गण्ड माला ; गलक्षत ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—ललाट-देश, नाकका छेद, उदर और दोनों पैरमें बहुत ठण्डक मालूम होना । लसिका ग्रन्थि और त्वचाके ऊपर इसकी प्रगाढ़ शक्ति प्रकट हुआ करती है । ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं, उनमें प्रदाह हो जाता है, तथा वे कड़ी और जखम-भरी हो जाती है । गण्डमाला, पुराना जखम, निचले हनुका जखम वगैरह इसके विषयी-भूत हैं । हाथ पैरकी पेशियोंमें खींचन और कम्पन मालूम होता है । कलाई, अँगुलि और जानु सन्धिमें दर्द पैदा कर देता है । स्वरनाली और उदरके भीतर ठण्डक मालूम होना और गलेके भीतर स्पञ्जकी तरह किसी कोमल चीज़का रहना मालूम होता है । यही इसका निर्णायक लक्षण है ।

लक्षणावली

मन ।—विरक्तिका दुष्परिणाम ।

मस्तक ।—सरमें दर्द ।

आँख ।—आँखमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ।

कान ।—रन्ध्रमें सूजनके साथ कानके छेदसे बदबूदार पानीकी तरह पीव निकला करता है । कानके ऊपर और चारों ओर दादकी तरह उद्भेद निकलते हैं और कर्णविवरके बाहरकी ओर तक फैल जाते हैं (कैल्के, पाइ-क्रोटो) । कानके पाससे आरम्भ होकर गालके ऊपरी अंशतक फूल उठता है, कर्ण मूल ग्रन्थिका फूलना ।

नाक।—छेदमें बहुत ठण्डक मालूम होना, पुराना पीनस रोग,—जब बहुत ज्यादा छींक, विशेषकर सवेरे और सन्ध्याके समय आती है। बायाँ रन्ध्र फैला और फूला। नासारन्ध्रमें दर्द। खसड़ा—कच्छु (Eczema)।

मुखमण्डल।—रह-रहकर मुखमण्डल लाल और गर्म हो उठता है। रस-भरी फुन्सियोंके साथ (Vesicular) विसर्प—मुँहकी हड्डीमें जलन और गर्मी मालूम होना। दाहिनी गण्डास्थिपर मोटे फटे घाव पैदा हो जाते हैं और उसमें बहुत दर्द होता है। बहुत खुजलाता है और ज़लन मालूम होती है।

मुँहके भीतर।—निचले हनुकी हड्डीमें जखम,—इसके साथ ही गलेकी गांठ पक जाती है। निचले ओंठसे खून गिरता है, ऐसा कर्कटका अर्बुद पैदा हो जाता है (Fungus Hematodes—फास ; थूजा ; काण्डुरैङ्गो)। मुखविवरके भीतर और नाकके ऊपर फैकनेवाला जखम, ऊपरी पाटीके क्षयप्राप्त एक दाँतमें चिड़िक मारनेकी तरह और सुई गड़नेकी तरह दर्द ; मसूढ़ेसे सहजमें ही रक्तस्राव हो जाता है और वह फूल उठता है। मसूढ़ा दाँतसे अलग हो जाता है और फूल जाता है। बहुत ही बदबूदार खून निकलता है। मुँहमें हवा खींचनेपर बहुत ठण्डी मालूम होती है। मसूढ़ा दबानेपर उससे पीब निकलता है (मार्क, क्रियो, साइलि)।

गलेके भीतर।—जिह्वा-मूलके पार्श्ववाले गह्वरमें प्रदाह हो जाता है और वह नीरस हो पड़ता है, परन्तु रोगीको सूखापन नहीं मलूम होता। प्रायः सवेरे गलेसे स्वाद हीन, गोंदकी तरह और गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है ; कण्ठमें ठण्डी हवा थोड़ी भी जानेपर गलेका जखम पैदा हो जाता है। कण्ठ-नालीका असह्य सूखापन दूर करनेकी आशामें रोगी बार-बार मुँहके भीतर लार संचितकर निगला करता है। खासकर रातमें। सोने बाद मुँहका सूखापन बढ़ जाता है। गलनालीके भीतर एक सीमाबद्ध अंश बहुत सूखा मालूम होता है (ब्राई, रास ; स्टैन) ;—नींदके बाद बढ़ना, इसे दूर करनेके लिये बार-बार पानी पीता है (सिनैबेरिस) ; भोजनके बाद घटना ; गलेका भीतरी भाग चमकीला मालूम होता है (फास) ; तालुमूलके पीछेवाले अंशमें लेईकी तरह श्लेष्मा सूतकी तरह लगा हुआ दिखाई देता है (फाइटो)। किसी तरहका मानसिक उद्वेग होनेपर, गलेके भीतर सुई बेधनेकी तरह दर्दकी वजहसे खाँसी पैदा हो जाती है। अलिजिह्वा और गलकोषका फूलना। कण्ठके भीतरकी

गाँठे सब फूलती और पक जाती है। गलगण्ड (Goitre) (थाइरायड) और बार-बार उदरामय।

मल।—उदरामय—मल पतला, सफेद, पीला रङ्ग, कोमल, छिटककर निकलता है; (सवेरे) दुर्दमनीय वेग; वृद्धि—रातके अन्तिम भागसे दिनके दोपहर तक, भोजनके बाद (थूम्बि, पोडो), फल खानेपर (कार्बो-वेज, सिनकोना, कोलो, पल्स) और काफी पीनेपर (साइक्ले, कैन्थ, ऐसिड-आक्साल); अस्थिसार, ग्रन्थियाँ जिनकी फूला करती हैं ऐसे धातुवाले (Scrofulous) बच्चोंकी बीमारी।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्तन प्रदाह युक्त और कड़े (बेल, फाइटो) और छातीमें भार मालूम होना। ठण्डी हवा बिलकुल ही सहन नहीं होती। श्लेष्मा प्रधान धातु। बदबूदार प्रदरका स्राव। फैलनेवाला विसर्प (Erysipelas) के बाद ऋतु बन्द हो जाया करता है।

श्वास-यंत्र।—छातीके भीतर ठण्डक मालूम होती है (आर्स, बार्व, लैके, रास, रियुटा, जिङ्कम) ग्रीवामें असंख्य कड़े और छोटे-छोटे अर्बुद मालूम होते हैं। सन्ध्याके समय सोनेपर और रातमें श्वास-प्रश्वास दमाकी तरह हो जाता है; गलेमें साँय-साँय शब्द हुआ करता है। रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानो वायुनली बहुत ही संकीर्ण हो गयी हो। थोड़ी और भी प्रशस्त होती तो मजेमें श्वास प्रश्वास ले सकता। दमा आरम्भ होनेके पहले समूचे शरीरमें इस ढंगकी सुरसुरी मालूम होती है, मानो चींटी रेंग रही हो।

प्रत्यङ्गादि।—पीठमें गण्डमाला दोषकी वजहसे जखम। मेरुदण्डके नीचे ज्वरयुक्त वेदना—बैठनेपर दर्द मालूम होता है (कास्टि, कैलि-बाई)। छूनेसे ही दर्द बढ़ जाता है (कैलि-बाई); बायाँ कन्धा और वक्षस्थलमें तेज दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो डकार आनेपर आराम हो जायगा। ठण्डी हवा लगनेसे अँगुलीका अगला भाग बहुत ठण्डा मालूम होता है। मणिबन्ध या कलाईमें बहुत दर्द, मानो मोच खा गया है। पैरका तलवा बहुत ठण्डा मालूम होता है, पैरमें पारा या उपदंश विषसे पैदा हुआ जखम, अनमनीय सूजन। निम्नाङ्गकी सफेद रङ्गकी सूजन (आर्स, कैल्के, आयोड, लाई, मार्क, सलफर; लाल रङ्गकी सूजन—ऐसिट-ऐक्ड, आर्नि, ब्राई, कार्बो-वे, सिङ्को, सेबाई थूजा; ऊपरकी गहरी नीले रङ्गकी सूजन—लैके; गहरे लाल रङ्गकी—बेल)।

हाथमें छोटे-छोटे छालेकी तरह उद्भेद, खुजलानेपर रस निकलता है और वह जगह फूल उठती है और गर्म मालूम होती है।

त्वचा।—किसी तरहकी खुजली नहीं रहती अथच सारा शरीर बहुत खुजलाता है (डलिकस)। विकार प्राप्त हो जानेवाला सफेद रङ्गका चर्म रोग (Lupus)। पारा और उपदंश-विष जनित अनमनीय स्फीतियुक्त क्षत, सारी ग्रन्थियाँ प्रदाहित हो उठती हैं, फूल जाती हैं और लचीली नहीं रह जाती हैं (आर्जेण्ट-नाइ, कोना)।

वृद्धि।—ठण्डी हवा लगते ही सन्ध्याके बाद सोनेपर, रातमें और सवेरे (उदरामय)।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न-प्रतिविष**।—रास, सिपि, बार-बार सिस्टस प्रयोगके बीच-बीचमें बेल, कार्बो-वेज, फास, प्रभृतिके प्रयोगसे उत्तम फल पाया जाता है।

सदृश।—आर्जेण्ट-नाइ, आर्जेण्ट-मेट, कार्बो-वेज, कोनायम, थाइरायडिन, वैसिलिनम।

शक्ति।—पहले दशमिकसे ६ ठी और ३० से २०० शततमिक क्रम।

साइट्रस लिमोनम

(CITRUS LIMONUM)

दूसरा नाम।—लेमन, नीबू।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—नीबूके रससे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—नीबूके रसमें साइट्रिक एसिड यथेष्ट परिमाणमें रहता है। नीबूका अर्क और साइट्रिक एसिड बहुत दिनोंतक समुद्रयात्रा करनेके कारण स्कर्वियां शीताङ्ग रोगकी दवा और प्रतिषेधक रूपमें व्यवहृत हुआ करता है। एक भाग साइट्रिक एसिड आठ भाग पानीके साथ बाहरी प्रयोग करनेपर कैन्सरका दर्द घट जाता है। इसके अलावा कब्जियत, आक्षेप, उदरामय, शोथ, आमाशय, दर्द-गर्मी, श्वास-कष्ट, रक्तस्राव, वात, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, वगैरह रोगमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐसेटिक-ऐसिड, रूटा, वेल, लैके ।

दोषघ्न ।—ऐकोन, ऐसाराम, इयुफोर्बिया, हिपर, सिपिया। यह ऐकोन, इयुफोर्बि, स्ट्रैमो, वेलका विष-दोष नष्ट करता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

क्लिमेटिस इरेक्टा

(CLEMATIS ERECTA)

दूसरा नाम ।—वार्जिनम वायर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्ते और डण्ठलसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—कैन्सर या कर्कटीया ज़खम ; आँखकी बीमारी ; मुखमें फोड़ा ; प्रमेह ; सर दर्द ; वात ; अण्डकोषका प्रदाह ; दाँतका दर्द ; पेशाब रुकना ।

उपयोगिता और आभास ।—रुके हुए प्रमेहकी वजहसे जितनी तरहकी बीमारियाँ हो सकती हैं ; उन सबपर क्लिमेटिसकी आश्चर्य-जनक क्षमता होती है ; पलसेटिलाके प्रयोगसे रुका हुआ स्राव फिरसे जारी हो जाता है और यन्त्रणा आदि घट जानेपर क्लिमेटिसका प्रयोग करनेसे रोगके बाकी लक्षण एकदम दूर हो जाते हैं । श्लेष्मा प्रधान, वात प्रधान और उपदंश विषसे दूषित धातुवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह बहुत लाभदायक है । दिनमें, यहां तक कि सवेरेतक रोगोंकी निद्राका आवेश बहुत ही अधिक बना रहता है । इसका प्रधान स्नायविक लक्षण यह है, कि रोगीको सोने बाद उसके सारे शरीरमें कपकपी मालूम होती है । पेशियाँ सब फड़कती हैं और रोगीको शरीर में बहुत ही गड़बड़ी मालूम होती है । इसके अलावा स्नायुशूल, अण्डकोष आदि ग्रन्थियोंका प्रदाह और कड़ापन, खसड़ा या कच्छु और चर्म्म रोग पैदा होनेवाले व्यक्तिके वातरोगमें यह बहुत लाभदायक है । नीचे लिखे कई लक्षण इसके अत्यन्त सहायक लक्षण हैं :—(१) ऐसा सर दर्द जिससे बुद्धि विलुप्त हो जाती है, मस्तिष्कमें फटनेकी तरह और माथेके अस्थि-फलकमें छेदनेकी तरह दर्द । (२) दोनों आँखें सूखी, लाल और गर्म ; कर-कर झन-झन

करती हैं—ऐसा दर्द और जलन, अक्षिगोलकके बीचवाले स्थानमें दर्द ; आँखसे पानी गिरता है, आँखमें ठण्डी हवा लगना अच्छा नहीं मालूम होता, उपदंश दोषकी वजहसे आंखोंका तारकामण्डल प्रदाह (Syphilitis)। खोपड़ी या माथेके आवरण (Scalp) में बहुत खुजली होती है; माथेके ऊपर खासकर माथेके पिछले भागमें, और हाथमें खसड़ा (Eczema) निकल आता है। शय्याके उत्तापसे बढ़ जाता है, (४) पुट्ठे प्रदेशकी ग्रन्थियां सब फूल जाती हैं और छूनेपर उनमें बहुत दर्द होता है। रेतोरज्ज् में खींचन और टान मालूम पड़ती है। (५) मूत्राशयमें उत्तेजना प्रवणता अर्थात बार-बार पेशाबका वेग होता है, पेशाब बड़े वेगसे हुआ करता है, विशेषकर पेशाबके आरम्भके समय बहुत तकलीफ होती है। मूत्रनाली रुक जानेकी वजहसे हर बार पेशाब करनेमें बहुत जोर लगाना पड़ता है और देर लगती है। (६) अण्डकोषमें चोटकी तरह दर्द ; रातमें शय्याके उत्तापसे बढ़ना। प्रमेहका स्राव रुक जानेकी वजहसे एक शिरा रोग। (अर्थात एक ओरका अण्डका बढ़ना।)

लक्षणावली

मन ।—प्रायः सोचनेकी शक्ति नहीं रहती (इथ्यू, ऐपिस, वैप, कैलि-नाई, नैट्र-कार्ब, नैट्र-सल्फ, नक्स-मस, अनसमोड, सिपि)। अकेला रहनेसे डरता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, विस्मथ, कोना, हायो, कैलि-कार्ब, लिलि-टाई, लैक-कैन, लाई, सिपि, स्ट्रेम, इलैप्स कोरेल, वेरेट); पर अपने प्रियतम बन्धुसे भी मिलना नहीं चाहता। (आर्स, कैलि-फास, सिपि, स्टैन, थूजा)। चित्त विषांद युक्त और हमेशा सोचा करता है कि विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोनका, किनिन-सल्फ, ऐक्टि, क्यूप्रम, ऐसिड हाइड्रो, लोरो, लिलि-टाई, मैग-कार्ब, स्कुटेलेरिया, सिपि, वैलि, वेरेट)।

मस्तक ।—बायीं कनपटीमें बहुत दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो गढ़ा हो रहा है, मानो सामनेवाला अंश चिपक गया है ; बैठनेवाली अवस्थाकी अपेक्षा सोनेवाली अवस्थामें और माथेको पीछेकी ओर झुका देनेपर दर्द अधिक होता है और माथेमें भार मालूम होता है। सरके पीछेकी ओरसे गर्दनके पिछले भागतक रस-भरे दाने निकल आते हैं, रस स्रावी, बहुत दर्द करने बाद उनमें सड़सड़ाहट होती है और डंक मारनेकी तरह दर्द होता है। माथा खुजलाता है। रस सूखकर प्रायः पपड़ी जम जाती है ; शय्याके

उत्तापसे खुजलाहट बढ़ जाती है; और खुजलानेपर बहुत कम और बहुत थोड़ी देरके लिये आराम मिलता है।

आँख।—आँख करकराती है (लेक्टियुका, लाई, मार्क, नक्स, पोडो,—आँख बन्द करनेपर बढ़ जाती है (क्रोकस); फिर आँख खोलनेपर भी रोशनी सहन नहीं होती (ऐको, आर्स, बेल, युफ्रे, सल्फ)। पलकोंकी बगलमें बहुत दिनोंतक स्थायी लाली और उनमें तकलीफ़ मालूम होती है। तारका मण्डल प्रदाहमें आँखसे पानी गिरनेके कारण अक्षिमुकुरके साथ तारका (पुतली) लग जानेकी आशंका पैदा हो जाती है (Plastic Iritis—मार्क सोल, मार्क-कोर, रास (नश्तर लगवाने बाद); टेरिब, थूजा)। आँखोंमें ऐसा मालूम होता है मानो खाल उधड़ गयी है,—कैशिक (Capillary) शिराएँ सब मोटी हो गयी सी मालूम होती है और आँखसे बराबर पानी गिरा करता है; बन्द करनेपर दर्द बढ़ जाता है; परन्तु निर्मल ठण्डी हवा असह्य मालम होनेके कारण आँख खोलनेका साहस नहीं होता। सभी चीजें काली दिखाई देती हैं (बेल, कैलि-कार्ब, मैंग-कार्ब, फास, सिपि, साइलि, स्ट्राम) एकाएक गहरे अन्धकारका आविर्भाव हो जाता है (लैक-कैन, लाई, पाल्स)।

नाक।—भयानक सर्दीके साथ बार-बार छींक। नासारन्ध्रसे खून मिला श्लेष्मा निकलता है। नाकके ऊपर छोटे-छोटे छाले निकल आते हैं,—मानों धूपमें जल गये हैं।

मुखमण्डल।—चेहरा रक्तहीन और दर्द प्रकट करनेवाला, मुँहके दाहिने पार्श्वमें हमेशा दर्द हुआ करता है और इस पार्श्वके छूनेपर दर्द होता है, धूम्रपान करनेसे घटता है,—पर रोगवाले पार्श्वमें हाथ लगाने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है। मुखमण्डलके दाहिनी ओरसे तेज़ दर्द ऊपरकी ओर उठकर आँख, कान और कनपटी तक फैल जाता है। हनुके नीचेकी हड्डियाँ सब फूल जाया करती हैं और उनपर कड़े दाने निकलते हैं।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द,—सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह और खींचन की तरह दर्द,—रातमें शय्याके उत्तापसे और धूम्रपान करनेपर दर्द बढ़ जाता है। मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर, कुछ देरके लिये ठण्डी हवा मुँहमें खींचनेपर और निर्मल हवा लगनेपर घटना। यदि दुखानेकी चीज़का एक कड़ा भी दाँतमें

अड़ जाये तोफिरसे दर्द पैदा होजाता है ; उपदंश रोगकी बीमारियोंमें पाराका प्रयोग करनेके कारण दाँतमें दर्द, मुँहकी गन्ध दूसरोंके लिये घृणाप्रद मालूम होती है। क्षय हुआ दाँत बहुत लम्बा मालूम होता है।

पेशाब।—मूत्रस्थलीका स्नायुशूल। पेशाबका वेग बार-बार परन्तु परिमाणमें बहुत थोड़ा होता है। पेशाब निकलना आरम्भ होनेके समय या निकलते-निकलते जब बन्द हो जाता है, तब बहुत जलन होती है। पीबकी तरह तली जमती है। प्रसवके बाद बूंद-बूंद पेशाब निकला करता है। बहुत दिनोंका मूत्रस्थलीका अवरोध (Stricture),—बड़े कष्टसे बूंद-बूंद पेशाब होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषमें सूजन और कड़ापन (स्पञ्जिया, रोडो, अरम) और उनमें बहुत दर्द। मुष्कका दाहिना भाग फूला,—अण्डकोष शिथिल झूल पड़ता है (पसस, कैन्थ)। रुके हुए प्रमेहकी वजहसे जलन और पेशाब करनेवाली इन्द्रियकी बीमारी (पल्स, मिडोरि), दाहिने पार्श्वके रेतोरज्जुमें इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता और दोनों अण्डकोष ऊपरकी ओर खिंच जाते हैं (अरम, आर्जेण्ट-नाई, स्पञ्जिया)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाएँ स्तनमें कर्कटकी तरह अर्बुद (Scirrhus—कोना, फाइटो),—इस पार्श्वकी ग्रन्थि या कन्धेमें या बाहुमें सलाई बेधनेकी तरह दर्द, ठण्डी हवामें और रातके समय और शुक्ल पक्षके अन्तिम भागमें यंत्रणा बढ़ जाती है। जखमके बगलमें काँटा गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—श्वास-प्रश्वासके समय छातीमें दबाव मालूम होना, बाएँ पार्श्वमें अधिक दर्द ; तेज़ शलाका बेधनेकी तरह, हृत्पिण्डके पास तेज़ दर्द होता है, और सलाई गड़नेकी तरह मालूम होता है ; दर्दकी गति भीतरकी ओरसे बाहरकी ओर मालूम होती है।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि।—पैरकी अँगुलियोंमें खुजलाहट होती है, सन्ध्याके समय सोनेपर ; पैरकी अँगुलियोंमें बहुत पसीना होता है। चर्मोद्भेद (Eruption),—शुक्ल पक्षमें इनमें बहुत प्रदाह पैदा हो जाता है ; रक्तमिला खसड़ा (Eczema), बहुत खुजलाता है। ठण्डे पानीसे धोनेपर शय्याके उत्तापसे और गीली पट्टी लगनेपर बढ़ता है। हनुस्थल और वंक्षण-देशीय पुट्ठेको (Inguinal) ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और प्रदाहयुक्त हो जाती हैं।

वृद्धि ।—शय्याके उत्तापसे, उज्वल रोशनीसे, रोगवाली करवट सोनेपर ; धूम्रपानसे (दन्तशूल) और ठण्डे पानीसे धोनेपर (चर्म्मरोग) ।

घटना ।—धूम्रपान (मुँहका दर्द) ; निर्मल हवामें और ठण्डे पानीका प्रयोग करनेपर (दाँतमें दर्द) ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—पल्स, मिडोरिन, अरम, स्टैफ, साइलि, कैन्थ, ऐ-फास । साइलिसियाके बाद क्लिमेटिस विशेष उपयोगी है । सरके पिछले भागके और गर्दनके पिछले भागके चर्मोद्भेदके सम्बन्धमें यह पेट्रोलियमके सदृश है । दन्तशूलके सम्बन्धमें ब्रायोनिया क्लिमेटिसका प्रतिविष या दोषघ्न है ।

तुलनीय ।—आर्स (चर्म्म) ; पल्स (प्रमेहकी वजहसे अण्डकोष प्रदाह) ; बेल, ब्रायो, कैन्थ, डलकम (उपदंशका जखम) ; प्रदाह, मार्कु इत्यादि ।

शक्ति ।—३ री दशमिकसे २०० शततमिक ।

कोबाल्टम

(COBALTUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—धातुका विचूर्ण और अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—कब्जियत ; आँखकी बीमारी ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; सर-दर्द ; यकृतका विकार ; कटिशूल ; नकली मैथुनका दुष्परिणाम ।

उपयोगिता और आभास ।—इन्द्रिय परायणताकी वजहसे सम्पूर्ण स्नायविक अवसाद, कमरमें बहुत ज्यादा दर्द, मेरुमज्जाका क्षय, वगैरहमें इसका लाभ प्रसिद्ध है । इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं, कमरमें दर्द बैठनेपर बढ़ना ; बैठे-बैठे उठनेपर, चलने या सोनेपर घटना । रेतःस्खलन होनेपर कमरमें दर्द । बार-बार रातके समय रेतःस्खलन ; इसके साथ ही कामोद्दीपक सपने देखना ; लिङ्गमें कड़ापन या तो थोड़ा होता है या बिलकुल ही नहीं होता ; पुरुषत्वहीनता । सरमें दर्द, सामनेकी ओर झुकानेपर बढ़ना (पीछेकी ओर माथा हिलानेपर बढ़ना, क्लिमेट) । माथा और गातमें छोटे-

छोटे दाने निकलते हैं ; शय्याको त्यागनेसे ही शरीरकी खुजली बढ़ जाती है। आँखोंका प्रदाह और बहुत आँसू बहना ; क्षय हुए दाँतमें दर्द और यह दाँत बड़ा मालूम होता है और स्पर्श सहन नहीं होता। जीभ गाढ़े और सफेद लेपसे ढकी रहती है ; बीचका स्थान फटा-फटा। रातमें भोजनसे अरुचि। पेशाबमें उग्र गन्ध। औंघाई ; नींदमें आराम नहीं मिलता।

लक्षणावली

मन।—मानसिक उत्तेजनासे तकलीफ बढ़ जाती है। चित्त बहुत फुर्तीला रहता है ; कल्पना-शक्ति अत्यन्त प्रबल, मनमें बड़ी तेजीसे भावपर भाव पैदा होते हैं। हमेशा विद्या-चर्चाकी स्पृहा (कैरिका-पेपाया, पेडिक्यूलस)। मानसिक या शारीरिक परिश्रम नहीं करना चाहता (लैक कैन)। अपने स्वास्थ्यकी बहुत चिन्ता किया करता है। (पल्स, सिपि)।

मस्तक।—पाखानेके समय रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो माथा बड़ा होता जाता है। सरमें दर्द, माथा झुकाते ही बढ़ जाता है, (ब्राई, कैल्के-फास, कोलो, क्रियो, इग्ने, लैके, पेट्रोल, पल्स, सिपि, साइलि, स्पाई, स्टैफि)। प्रतिबार एकाएक शरीर हिल जानेपर ऐसा मालूम होता है मानो ब्रह्मतालु उड़ जायगा। (बैप, ऐक्टा, नेट-क्लो, इयुका, कैमो)। मूर्द्धदेश, दाढ़ी और चिबुकमें बहुत खुजली होती है, खुजलानेपर जलन होती है।

चक्षु।—लिखनेके समय आँखोंमें शूलकी तरह दर्द होता है। और आँख खोलनेके समय ऐसा मालम होता है मानो दोनों पलकें सूतेके सहारे खिंची हुई हैं और वह सूत टूटता जा रहा है। पढ़नेके समय दृष्टि काँपा करती है और सारे अक्षर अंधेरेमें छिपेसे दिखते हैं। दृष्टि शक्तिके परिचालनके समय आँखोंमें कर्कराहट होती हैं और जलन हो जाती है। ठण्डी हवा लगनेपर आँखोंमें दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं।

मुख-विवर।—ओठकी छाल उधड़ जाती है और उसमें जखम हो जाता है, तथा खून निकलता है, मुँहको जोरसे दबा रखनेकी इच्छा। कीड़े खाये दांतमें बहुत दर्द (बेल, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, हायो, लैके, क्रियो, मार्क पलस, रास, स्टैफ) और ये दाँत और भी लम्बे मालूम होते हैं ; (ब्राई, कास्टि, क्लिमेट, सल्फ)। मसूढ़ा फूला, और दर्द भरा मालूम होता है ? ठण्डी हवासे बढ़ जाता है।

पाकस्थली और अन्नाशय।—भोजनके बाद हिचकी (सिक्लेमेन, हायो, इग्ने, मार्क, नक्स-युग, जिङ्कम)। इसके साथ ही ऊपरी पेटमें दर्द (टियुक्रि)। सबेरे पाखाना हो जाने बाद वायु घटना। पेटमें दर्द होता है; डकारके साथ खट्टा या तीता पानी गलेमें चढ़ आता है (ऐमोन-कार्ब, कैस्टोर; कैलके-कास्टि, ऐ-सल्फ) पाकस्थली ऐसी मालूम होती है, मानो अजीर्ण खाये हुए पदार्थसे भरी हुई हो, यकृत प्रदेशसे लेकर उरु देशतक तेज दर्द मालूम होता है। थोरा सा भी खानेसे पेट भर जाता है (ऐण्टि-क्रूड, कार्बो-वेज, कैस्टर, सिङ्को, क्रोक—लाई, नक्स-वोम, ओलि-ऐन, सल्फ)। भोजनके बाद पेटमें बहुत दर्द और गड़बड़ी मालूम होती हैं,—रोगीको बाध्य होकर टहलना या चलना फिरना पड़ता है।

मल।—चलनेके समय प्रबल वेग,—खड़े होनेपर रोग बढ़ जाता है; मल—अधिक परिमाणमें, पानीकी तरह और ऐसे वेगसे निकलता है जैसे कलसे पानी निकलता हो: (नेट्र, पोडो, थजा), कभी-कभी कोमल और बड़ा गाँठ-गाँठ निकला करता है; उसके साथ ही मलद्वारावरोधक पेशीमें दर्द; मल निकलनेके समय सिरमें चक्कर आना और मल त्यागने बाद काँखना, मल कभी कड़ा कभी पतला इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। (ऐब्रोट, ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट आयोड, लैके, नक्स, रास, रियुटा)

पुं-जननेन्द्रिय।—रातके समय बार बार वीर्य स्खलन, इसके साथ ही अश्लील कामोत्तेजक सपने, लिङ्गमें कड़ापन थोड़ा आता है या बिलकुल नहीं आता। क्लीवता, दाहिने अण्डकोषमें तेज दर्द,—पेशाबके बाद दर्द घट जाता है। जननेन्द्रिय और तलपेटमें हलके पीले विन्दु सब निकलते हैं। मूत्रनालीके अगले भागमें दर्द और हरे रंगके पीबका स्राव।

श्वास-यंत्र।—खुस-खुसी खाँसी; कफ खून मिला गाढ़ा, लसदार श्लेष्मामय, स्वरनालीमें पूर्णता और दबाव मालूम होना; गलेमें छीलने और खाल उधड़नेकी तरह जलन मालूम होती हैं; जोरसे दाँतपर दाँत रखकर दबा रखनेकी इच्छा; दबाने; खाली घूंट लेने और ठण्डा पानी पीनेपर बढ़ जाता है।

गर्दन और पीठ।—दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें, उदरके पीछेकी ओर पीठमें और कमरमें दर्द मालूम होना, रेतःस्खलनकी वजहसे कमरमें दर्द।

कटिदेश या मेरुदण्डमें लगातार दर्द बढ़ जाता है ; खड़े होनेपर चलनेके समय या सोनेपर दर्द घट जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—यकृत-प्रदेशसे मेरुदण्डतक तेज दर्द, तेजीसे फैल जाता है। वीर्यस्खलनकी वजहसे मानो जानु बहुत दुर्बल हो जाते हैं, दोनों जानु बहुत कमजोर मालूम होते हैं। दोनों पैर कांपते हैं और बैठनेपर दर्द होता है। नींद आनेके समय हाथ पैरोंमें चमक उठती है। पैरमें पसीना खट्टा या बदबूदार,—जूतेके सूपतलेकी तरह गन्ध आती है (ग्रेफ, बेराई, मिडोरिन, सेलिन)। दोनों पैरके तलवेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, (ऐगार)।

निद्रा।—कामोद्दीपक अश्लील सपनोंकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। थोड़ा या बिना लिङ्गोद्रेक हुए ही निद्रावस्थामें वीर्य-स्खलन।

वृद्धि।—माथा झुकानेपर (सरमें दर्द)। चलनेके समय और खड़े होनेपर (मल वेग)। बैठनेपर (पीठ और मेरुदण्डका दर्द), ठण्डी हवामें (आँख और दांतमें दर्द) और ठण्डा पानी पीनेपर (खांसी)।

उपशम।—चलनेपर (उदरमें दर्द) ; खड़े होनेपर चलनेपर और सोनेपर (कमर और मेरुदण्डमें दर्द)।

सम्बन्ध।—सदृश।—मिडोरिनम ; जिङ्कम ; सेलिनियम ; स्टैफ ; ऐग्नस कैस्ट ; सिपिया।

तुलनीय।—जिङ्कम (पीठमें दर्द), ऐगनस (ध्वजभङ्ग) ; नक्स-वो (कृत्रिम मैथुनका परिणाम) ; सिलिनियम इत्यादि।

शक्ति।—६ ठी से २०० शततमिक।

कोका

(COCA)

दूसरा नाम।—एरिथ्राक्सिलन कोका (Erythroxylon Coca)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—यह दक्षिण अमेरिका और बोलिवियामें मिलता है। इसके पत्तेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल ; दमा ; कब्जियत ; खाँसी ; बहरापन ; कमजोरी ; ज्वर ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; बवासीर ; वात ; गण्डमाला ; शीताद ; स्वरकी क्षीणता इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—जो मनुष्य बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रमकी वजहसे दिनोंदिन क्षीण होते जा रहे हैं और जिनका स्नायु और मस्तिष्क बहुत ज्यादा काम करनेकी वजहसे सुस्त हो पड़ता है, नियमित रूपसे कोका सेवन करनेपर उनकी वह क्लान्ति और सुस्ती एकदम घट जाती है और वे नवीन बलसे बलवान होकर, कर्मक्षेत्रमें विचरण करनेमें समर्थ रहते हैं ; कुश्ती लड़ते-लड़ते हाँफ उठते हैं, वृद्ध मनुष्य सामान्य परिश्रमसे ही बेदम हो पड़ते हैं, धूमपान और शराब आदि पीनेकी वजहसे बीमारी ; बहुत ज्यादा परिश्रमकी वजहसे कलेजा धड़कना, पहाड़पर चढ़नेकी वजहसे थकावट वगैरह अवस्थामें इसकी आश्चर्य जनक शक्ति दिखाई देती है।

लक्षणावली

मन।—स्नायविक अवसादके कारण हमेशा विमर्ष चित्त रहना, लज्जाशील, डरपोक और दस आदमियोंके सामने रहनेपर बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होना। विषाद भरा और उत्तेजना-प्रवण, निर्जनता और अन्धकार पसन्द करता है (आलोक और बन्धु-बान्धवोंका मिलना पसन्द करता है—स्ट्रैमो)। हिताहित (भलाई और बुराई) की बुद्धिका न रहना।

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ ही सरमें दर्द (ऐनाक, कास्टि, किनिन-सल्फ, लाई, ऐण्टि-टार्ट ; सरमें दर्दके साथ सरमें चक्कर आना—आर्जेण्ट-नाई, बैराई-कार्ब, लैके, ऐ-नाइट्रिक) ; सरमें चक्कर आता है और कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके पीछे आघात या चोट लग गयी है (बेल, कास्टि, नक्स, सेङ्गियुई ; सिपि, स्पाई, स्टैनम, क्रोक, ऐसिड-सल्फ)। कानमें आवाज, कानमें नाना प्रकारकी आवाज आती है। दो देखना (बेल, साइक्ल, डिजि, हायो, नेट्र-म्यू, ओलियैन, पल्स सिकेलि, वेरेट)। जीभ कोमल लेप चढ़ी ; सवेरे मुँहमें कोई भी स्वाद नहीं रहता ; नींद खुलनेपर भीतर मुँह बहुत सूख जाता है। मुँहमें मानो मिर्चा लग गया है, ऐसा मालूम होना।

पाकस्थली और अंत्राशय।—शराब आदि पीने (आर्स, लैके, नक्स, व्यूफो, पल्स, स्टैफ, सल्फ, ऐ-सल्फ) और धूम्रपानकी (डैफनी, युजि, स्टैफ, थिरिड) बहुत इच्छा, बहुत दिनोंकी अरुचि (क्लिमैंट; प्रूनस-स्पाई, जेण्टियाना-लुटिया)। पेट फूलकर वह वायु जोरसे और प्रबल वेगसे अन्ननाली (OEsophagus) में चढ़ती है, मानो उसके फट जानेका उपक्रम हो जाता है। पेटमें वायु रुकी रहनेके कारण भयंकर हृत्स्पन्दन (आर्जेण्ट-नाइ, नक्स); बहुत अधिक रसीले पदार्थ पीनेकी वजहसे बीमारी आदि, पेट बहुत फूल उठता है। मिष्टान्न (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, इपिक, कैलि-कार्ब, लाई, सैवाड, सल्फ, कैल्के) के अलावा और किसी भी पदार्थपर रुचि नहीं रहती, दाँतका दर्द, अर्थात दाँतमें कीड़े लग जानेके कारण पपड़ी उजड़ना। भूख प्यास नहीं रहती।

श्वास-यन्त्र।—श्वासका छोटापन या दमा, विशेषकर पुराने बुड्ढे पहलवान (ऐसिड-फ्लू; रास) और बहुत अधिक शराब पीनेवाले और तम्बाकू सेवन करनेवालोंको खून मिला बलगमके साथ कफ निकलता है और उसके साथ ही वक्षस्थलमें दबाव मालूम होता है और श्वासकष्ट (फेरम ऐसेट ; खुसखुसी खाँसीके साथ बार-बार रक्त निकलता है—ऐकौ ; बार-बार थोड़े परिमाणमें रक्त निकलता है—फास ; सूखी खाँसीके साथ खून मिला कफ निकलता है—ऐकालिफाइन ; सामान्य खाँसीके बाद सफेद फेन-भरा खून—मिलिफो ; वक्षोस्थिके पीछे सुरसुरी और खाँसीके साथ फेनभरा चमकीला खून—फेरम ऐसेट ; काली आभा लिये या जमा हुआ रक्त—हैमा ; वक्षोस्थिके पीछे पिट-पिट करता है और खाँसी आती है और मिचलीके साथ काली आभा लिये या जमा खून निकलता है—इपिक)। भयंकर रूपसे कलेजा धड़कना ;—पेटमें वायु (Flatus) रुके रहनेकी वजहसे (आर्जेण्ट-नाइ, नक्स) ; बहुत ज्यादा शारीरिक परिश्रम करनेकी वजहसे (ऐमोन-कार्ब, आयोड, पोडो, ऐस्पारेगस, सेल, सल्फ, नाइड्रम, थूजा, बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम करनेकी वजहसे—इग्ने ऐ-फ्लू, रास, मिफाइटिस, स्टैफ); हृत्पिण्डकी क्रियाकी अधिकताके कारण (आर्निका, बोर, कास्टि)। फुसफुस (फेफड़ा) के भीतरकी और बाहरी हवाके घनत्वके प्रभेदसे पैदा हुई श्वास-यंत्रकी बीमारियाँ, पहाड़ चढ़ने हवाई जहाजपर सफर करने वगैरहके कारण उत्पन्न हो जाती

है (आर्स; ऐस्पारेगस)। स्वर तन्तुकी कमजोरी, स्वर ऊँचा चढ़ानेसे ही कटा जाता है (आर्जेण्ट-नाइ)। स्वरभङ्ग,—बोलनेसे ही बढ़ जाता है।

पेशाब ।—क्लीबताके साथ बहुमूत्र रोग, शय्यामूत्र ।

वृद्धि ।—मानसिक और शारीरिक परिश्रमकी अधिकतासे ; बोलनेपर ; दाँत निकलनेके समय ।

निद्रा ।—औंघाई बनी ही रहती है परन्तु किसी तरह भी आराम नहीं मिलता या कहीं भी स्थिर होकर रह नहीं सकता। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय नींद न आना और बेचैनी रहना ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आर्स, ऐस्पारेगस, एसिड-फ्लू, रास, मिफाइटिस, पिउ (निम्न क्रम)

तुलनीय ।—आर्स (ऊँचे चढ़नेका दुष्परिणाम); स्ट्रैमोनियममें संग और रोशनीकी स्पृहा है पर इसमें निर्ममता और अन्धकारकी स्पृहा है।

दोषघ्न ।—जेलसिमियम ।

शक्ति ।—मूल अरिष्टसे १२ शततमिक क्रम ।

कोकेइन

(COCAINE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कोकासे उत्पन्न उपक्षार निचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० क्लार्कने लिखा है :—कोकेइन (कोकाका उपक्षार या खार भाग) किसी स्थानको सुन्न कर देता है ; इसका प्रधान लक्षण है, त्वचाके नीचे बालूके कण रहनेकी तरह मालूम होना। कभी-कभी ऐसा मालूम होता मानो कीड़ा रेंग रहा है।

लक्षणावली

मन ।—उसके मनमें हमेशा यही चिन्ता रहती है कि कोई महत् कार्य करें (सबका उपकार हो, ऐसे काम-सिरियस वेन) या कोई असीम बल बताने

वाली कीर्ति स्थापित करें। बहादुरी दिखानेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है। लगातार बका करता है (आयोड, कैनाव-इण्डि, ऐक्टि, जेलिस, ग्लोन, हायो, कैलि-आयोड, लैके, लैचनैन, ओपि, पैरिस, पोडो, पाइरोज, सेलिन स्टिक्टा स्ट्रैम, टियुक्रि, थिरिडि) हमेशा वह यही सोचता है, कि लोग उसपर अत्याचार करते हैं (बैराई, सिङ्को, कैलि-ब्रोम, लैके)। भ्रम देखना :—मानो उसके चारों ओर खटमल, कीड़े इत्यादि रेंग रहे हैं। उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसकी शरीरकी त्वचाके नीचे कोई बाहरी पदार्थ या कीड़ा चल रहा है (बैराई, लैक्टियु, सैवाड, जीव हिल रहा है, क्रोक, थजा ; सैबाई, सल्फ, कैल्के-फास ; एराण्डो ; कैनाव-सैट, माथेके भीतर—पेट्रोल, साइलि ; पाकाशयके भीतर—कियोनैन)। हिताहित बुद्धिका लोप हो जाना (कोका)। अपने शरीरकी सफाई और सौन्दर्यके सम्बन्धमें सम्पूर्ण उदासीनता। उसको विश्वास बना रहता है, कि लोग उसकी निन्दा करते हैं (बैराइटा-कार्ब)। मस्तिष्ककी क्रियाकी अधिकता। उन्मत्तकी तरह घरमें दौड़ता फिरता है। बहुत उत्तेजित, किसी विषयपर क्षण भरके लिये भी मनोयोग नहीं लगा सकता। कोई उसकी ओर देखता है या उसे छूता है तो उसे भयङ्कर क्रोध पैदा हो जाता है। सभी चीजें जला डालना चाहता है। कोई बाधा देता है तो मार पीट और शोरगुल किया करता है।

मस्तक।—माथेमें टपकका दर्द (वेल, युपेट, क्रियो, पेट्रोल, रास-रैडिक, सिपि, साइलि, टोङ्गा-वेरैट) ऐसा मालूम होता है, मानो फट जायगा (ऐमोन-कार्ब, वेल, कैम्फि, सिङ्को, डैफनी ; इग्ने, क्रियो, मार्क, नैट्र-म्य, नक्स, रैटान, साइलि, स्पिञ्जिया); श्रवण-शक्तिकी प्रखरता (आर्स, वेल, ब्राई, काफि कोना, लैके, लाई, सिपि, साइलि, थिरिड, वायोला-ओडो)। कानमें आवाज, कानके भीतर नाना प्रकारकी आवाज (ऐको, वेल, कास्टि, सिङ्को, काफि, किनिन-सल्फ, लैके, लाई; नैट्र-मूर, नक्स, सिपि, कैल्के-कास्टि)।

मुखमण्डल।—हमेशा दोनों आँखे ढकी रखता है ; आँख बन्द करने के लिये घरमें रखी किसी चीजके पीछे जाकर छिप जाता है ; किसी तरहकी रोशनी भी उसे सहन नहीं हुआ करती है और आँखमें दर्द पैदा कर देती है, दोनों हाथोंसे आँखे ढक कर घरमें मतवालेकी तरह ढलमलाया करता है। दोनों पलकें काँपा करती हैं। लगातार आँख मिटमिटाया करता है। दोनों

आँखें बहुत सूखी और पुतली फैल जाती है। नाक, दोनों कान और दोनों हाथ बरफकी तरह ठण्डे, ललाटसे लेकर ओंठके ऊपरी भागतक सफेद या रक्तहीन परन्तु निचला अंश चमका करता है।

पाकस्थली ।—केवल तरल पदार्थोंसे रुचि, कड़ी चीज मुँहमें बिलकुल ही नहीं लेना चाहता। मिठाई खानेकी बहुत इच्छा (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज़, कैल्के आस्ट्र, इपिक, सिना, लाई, सेबाड, सल्फ)। अन्त्राशय, फेफड़ा, पाकस्थली वगैरहसे खूनका स्राव (ऐकी, क्रोकस ; क्रोटेलस ; कार्बो-वेज ; फेरम, इपिक, लैके, क्रियो, मिलि-फो, फास ; थ्लैस्पाई-वार्स. विङ्का)।

श्वास-यंत्र ।—श्वास-कष्ट, पेट फुला कर गहरी सांस लिया और छोड़ा करता है। पीछेकी ओर माथा लटकाकर दीर्घ निश्वासकी तरह श्वास प्रश्वासकी क्रिया सम्पादन किया करता है। कलेजा धड़कना, रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो जरा हिलानेसे ही हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (डिजिटेलिस,—हिले बिना हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी—जेल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियाँ नाचती हैं। पेशीमें जब खींचन पड़ती है, उस समय जो सामने मिलता है, उसीको रोगिनी पकड़ लेती है, और जबतक भरपूर ताक़त नहीं लगायी जाती तबतक उसके हाथसे वह वस्तु छुड़ायी नहीं जा सकती। ताण्डव रोग (Chorea) अधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो निम्नाङ्ग छोटा हो गया है और उसकी पेशियां नाचा करती है, (Twitch—ऐक्टिया-रेसि, आर्स, क्यूप्रम-ऐस, ऐगरिकस. वेरेट, इग्ने)। बहुत दिनोंतक ज्यादा मात्रामें शराब आदि पीने और वार्द्धक्यकी वजहसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग कांपा करते हैं (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, ऐक्टिया ; थाइराइडिन) सकम्प पक्षाघात Paralysis-agitans)—पहले पेशीका प्रकम्प आरम्भ होकर लगातार पक्षाघात पैदा हो जाता है। (टेरण्टियुला—मस्तक और बाहुका पुराना कम्पन—ऐण्टिम-टार्ट ; बाएँ पार्श्वपर अधिक आक्रमण होनेपर—हेलोडर्मा ; अधिककर मार्कवाई, ब्रायो)। देखने, सुनने वगैरहके शक्ति-विधायक स्नायुका पक्षाघात। गात्र-त्वचाके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानों कीड़े आदि रेंग रहे हैं। दोनों बाहुओंका अगला भाग और तलहत्थी सुन्न मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, कि उसके भीतर चींटी आदि रेंग रही है।

सम्बन्ध—सदृश।—ऐगरिकस, टैरण्टियुला ; ऐक्टिया-रेसि, लैकेसिस डिजिटेलिस, जेल्स।

शक्ति।—१म दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम।

काक्सिओनेला सेप्टेमपङ्कटेटा

(COCCIONELLA SEPTEMPUNCTATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—स्त्री-विचिङ्गड़ाको पीसकर मदर टिञ्चर तैयार किया जाता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहका स्नायुशूल ; जलातङ्क ; दाँतका दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० क्लार्कका कथन है, कि दाँत और मुँहके स्नायुपर इसकी क्रिया विशेष होती है और जलातङ्क रोगमें यह कैन्थरिसके सदृश है।

लक्षणावली

मस्तक।—स्नायविक सर दर्द, ललाटका स्नायुशूल, बँधे समयपर बार-बार पैदा होनेवाला (किनिनम-सल्फ, सिड्रन, कैलि-बाई, जिङ्कम-फास) ; दाहिनी भौंमें दर्द (बेल, चेल, रैनान, कैल्मिया, मैग-फास) ; स्पर्श सहन नहीं होता (सिङ्को, कैप्स, प्लम्ब)। कनपटी और सरके पिछले भागमें बहुत दर्द लगातार मालूम होते रहना। सर दर्दके प्रकोपके समय आँख खोलकर देख नहीं सकता (ऐगार, बेल, नैट्र-मूर, ओलियम-ऐन, सिपि, सैङ्गियु, सल्फ)। उज्वल चमकीली चीजकी ओर देखनेपर दर्द बढ़ जाता है (बेल, कैन्थरिस, हाइड्रोफोबिनम, स्ट्रैम) नींदसे घट जाता है (हेलिबो, सैङ्गियुई)।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—दाँतमें दर्द, मसूढ़े, दाँत और मुँहके भीतर (सिस्टस), टपक जैसा दर्द (बेल, ऐको, कैमो, स्टैफ, पल्स)। रातमें मुँहके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें लार सञ्चय होनेकी वजहसे नींद खुल जाती है। अलिजिह्वा बहुत बड़ी मालम होती है। (आर्स, इग्ने, लैके,

मार्क-कोर, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ)। हिचकी और पाकस्थलीके भीतर बहुत जलन।

जलातङ्क ।—उज्वल चमकीली चीजकी ओर देखनेपर बढ़ जाता है (बेल, कैन्थ, हाइड्रोफोबिन, स्ट्रैम)।

पीठ ।—मूत्र-ग्रन्थि (किडनी) प्रदेश और कमरमें बहुत दर्द होता है (बार्ब, कैनाब-इन, क्लिमैट, नक्स, ओसिमम-कैनम ; डायस्को, पैरिइरा-ब्रेवा, टैबाक, मिडोरिन, चिमैफिला, लाई)।

हाथ-पैर आदि ।—बरफकी तरह ठण्डे।

वृद्धि ।—उज्वल चमकीली चीज देखने पर।

उपशम ।—नींदके बाद।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—स्पाइजि, थूजा। बेल, सिस्टस, कैन्थ, मैग-फास, हाइड्रो-फोब, स्ट्रैमोन।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे ६ ठा दशमिक क्रम।

काकुलस इण्डिकस

(COCCULUS INDICUS)

दूसरा नाम ।—काकमारी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसका फल काला और बड़बटीकी तरह होता है। इसका बीज विषैला होता है, इसके चूर्णसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— क्रोधका दुष्परिणाम ; अस्थिकी बीमारी ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; ताण्डव ; शूल ; आक्षेप ; दुर्बलता ; मूर्च्छाभाव ; भयका दुष्परिणाम ; अर्श ; सर-दर्द ; आँत उतरना ; सविराम ज्वर ; घुटनेमें कमजोरी ; स्मरण-शक्ति की क्षीणता ; रजो-विकारकी वजहसे सर-दर्द ; बाधक या कष्टरज ; बहुत ज्यादा शारीरिक या मानसिक परिश्रमका दुष्परिणाम ; कलेजा काँपना ; पक्षाघात ;

कर्णमूल ; वात ; सवारीपर चढ़नेका दुष्परिणाम ; जल-यान (नाव-जहाज आदि) में भ्रमण करनेकी वजहसे वमन ; अनिद्राका दुष्परिणाम ; औंघाई ; आक्षेप ; उदराध्मान ; सरमें चक्कर आना ; वमन इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जो स्त्रियाँ अविवाहिता या वन्ध्या हैं, जो शिक्षिताएँ हैं, जो रात-दिन पुस्तकें पढ़ा करती हैं, और जो ऋतु और गर्भाधानके समय नाना प्रकारके रोग भोगा करती हैं, उनके लिये काकुलस बहुत लाभदायक है। मिचली,—गाड़ी नाव या रेलगाड़ीमें चढ़कर कहीं जाते समय जिन्हें मिचली पैदा हो जाती है, यहाँतक कि चलती हुई नाव देखनेपर भी जिन्हें ओकाई आती है, शरीर बहुत क्षीण, रोगिनी खड़ी होने, यहाँतक कि बोलनेमें भी तकलीफ अनुभव करती है ; मानसिक उत्तेजना और रातमें जागरण इत्यादि कारण शरीरकी अस्वस्थता, रज-प्रकाश होनेके बदले, रक्तमय प्रदरका स्राव और ऋतुके आरम्भमें निम्नाङ्गमें (कमर और दोनों पैर) बहुत कमजोरी मालूम होना और माथा, पाकस्थली तथा अन्त्राशयका खाली मालूम होना, इत्यादि काकुलसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इसके सभी लक्षण खाने और पीनेके बाद बढ़ जाते हैं—खासकर सर-दर्द। गर्भावस्थामें मिचली, झूलेमें झुलनेपर या सवारीपर चढ़नेसे बढ़ जाती है। ऋतुकालमें और गर्भावस्थामें सभी निम्नाङ्ग क्षीण हो पड़ते हैं। तलपेटमें ऐसा मालम होता है, मानो पत्थर घसा जा रहा है। वाधक।

लक्षणावली

मन ।— प्रतिबाद सहन नहीं कर सकता (ऐनाक, ऐस्टोरि, अरम, अरम-मूर-नेट, कैमो, सिना, कोना, फेरम, हेलोनि, लाई) ; सामान्य कारणसे ही क्रोध पैदा हो जाता है (ऐनाक, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, कैप्स, सिना, हेलिवो, हिपर, लिडम, लाइकोपो, मिफाइटिस, मेजिर, नक्स, रियुम)। बहुत तेजीसे बातें करता है (सिना, हायो, लैके, स्ट्रैमो, थूजा, वैलि, वेरेट्र-ऐल्ब) ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो समय बहुत जल्दी-जल्दी बीतता जाता है (थिरिड, समय नहीं कटता है—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, अरम, कैनाब-इन, कैमो, मिडोरिन, नक्स, ऐनहेल)। दुसरेके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यत्नवान (कास्टि ; अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यत्नवान—पल्स, सिपा ; अपनी देहकी सजावटके सम्बन्धमें यत्न न करना— कोकेइन)। हमेशा चिन्ता-निमग्न (कैनाब-इन, सिक्लेमेन)।

गानेकी दुर्दमनीय इच्छा (क्रोक-सैट, स्पञ्जि, टियुक्रि)। किसी विषयको सहज में ही हृदयङ्गम नहीं कर सकता (ऐगार-कैस्ट, ऐग्नस, नैट्र-कार्ब, ओलियैन, नक्स, ऐसिड-फास, प्लम्ब)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—शय्यामें उठ बैठनेपर सरमें इतना चक्कर आता है, कि रोगी फिर सो जाता है, (शय्या त्यागकर उठना चाहनेपर —बेल, ग्रैफ, पेट्रोल, पल्स, रास) या सवारीपर चढ़नेपर सरमें चक्कर आता है, मस्तिष्ककी जड़ता या सुन्नपन, खाने पीनेसे बढ़ना, सरमें चक्कर—ऐसा मालूम होता है, मानो शराब पी है। माथा ढलमलाया करता है। सरमें दर्दके साथ मिचली और ओकाई—सर और गर्दनके पिछले भागमें दर्दकी अधिकता, दर्द मेरुदण्डतक फैल जाता है, माथेके चारों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक डोरी कसकर बाँधी हुई है (इथ्यू लोबिलिया, मार्कु, सल्फ, थेरिडि); प्रत्येक ऋतुके समय, चिन्त होकर सोनेपर और रोशनीमें दर्द बढ़ जाता है, आवाज सुननेसे ही मिचली आने लगती है। सरमें खालीपन मालूम होता है (इग्ने ऐसिड-आक्सैल, सिपि, पल्स), हवा खानेके समय और भोजनके बाद बढ़ना; शय्याकी गर्मीसे शरीर गर्म होनेपर आराम मालूम होता है। सरके पिछले भागमें और गर्दनके पिछले भागमें दर्द; ऐसा मालूम होता है, मानो माथेका पिछला भाग एक बार फटता है, फिर जुटता है, किवाड़की तरह खुलता है, फिर बन्द होता है, (मूर्द्धादेशमें इसी तरह मालूम होना—ऐक्टिया, कैनाब-इन)। गर्दनके पिछले भागकी पेशीकी क्षीणताकी वजहसे माथा रह-रहकर काँप उठता है, निर्मल वायुमें, नींदके बाद (लैके) और काफिया या धूम्रपानसे (इग्ने) बढ़ जाता है। गर्म घरमें आराम मिलता है। आँख बन्द रहनेकी अवस्थामें अक्षिगोलक बराबर घूमा करता है। कानमें पानी बहनेकी तरह सीं-सीं शब्द।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—चेहरा रक्तहीन, दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं; चेहरेपर ठण्डा पसीना। कीड़े खाये या क्षय-प्राप्त दाँतमें बहुत दर्द (बेल, ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, स्पिङ्गी, हायो, लैके, मार्क, नक्स-मस, पल्स, रास, साइलि, स्टैफि, कोबाल्ट); किसी खानेकी-चीजको खानेके समय ही केवल दर्द होता है—यहांतक कि कोमल पदार्थ चबानेपर भी दर्द होता है (स्पिङ्गी, हायो, इग्ने, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स, ऐ-फास,), मुंह जब खाली रहता है, तब दाँतसे दाँत घसनेसे भी दर्द नहीं मालूम होता। जीभपर

कर्णमूल ; वात ; सवारीपर चढ़नेका दुष्परिणाम ; जल-यान (नाव-जहाज आदि) में भ्रमण करनेकी वजहसे वमन ; अनिद्राका दुष्परिणाम ; औंघाई ; आक्षेप ; उदराध्मान ; सरमें चक्कर आना ; वमन इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जो स्त्रियाँ अविवाहिता या वन्ध्या हैं, जो शिक्षिताएँ हैं, जो रात-दिन पुस्तकें पढ़ा करती हैं, और जो ऋतु और गर्भाधानके समय नाना प्रकारके रोग भोगा करती हैं, उनके लिये ककुलस बहुत लाभदायक है। मिचली,—गाड़ी नाव या रेलगाड़ीमें चढ़कर कहीं जाते समय जिन्हें मिचली पैदा हो जाती है, यहाँतक कि चलती हुई नाव देखनेपर भी जिन्हें ओकाई आती है, शरीर बहुत क्षीण, रोगिनी खड़े होने, यहाँतक कि बोलनेमें भी तकलीफ अनुभव करती है ; मानसिक उत्तेजना और रातमें जागरण इत्यादि कारण शरीरकी अस्वस्थता, रज-प्रकाश होनेके बदले, रक्तमय प्रदरका स्राव और ऋतुके आरम्भमें निम्नाङ्गमें (कमर और दोनों पैर) बहुत कमजोरी मालूम होना और माथा, पाकस्थली तथा अन्त्राशयका खाली मालूम होना, इत्यादि काकुलसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इसके सभी लक्षण खाने और पीनेके बाद बढ़ जाते हैं—खासकर सर-दर्द। गर्भावस्थामें मिचली, झूलेमें झूलनेपर या सवारीपर चढ़नेसे बढ़ जाती है। ऋतुकालमें और गर्भावस्थामें सभी निम्नाङ्ग क्षीण हो पड़ते हैं। तलपेटमें ऐसा मालम होता है, मानो पत्थर घसा जा रहा है। वाधक।

लक्षणावली

मन ।—प्रतिवाद सहन नहीं कर सकता (ऐनाक, ऐस्टेरि, अरम, अरम-मूर-नेट, कैमो, सिना, कोना, फेरम, हेलोनि, लाई) ; सामान्य कारणसे ही क्रोध पैदा हो जाता है (ऐनाक, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, कैप्स, सिना, हेलिबो, हिपर, लिडम, लाइकोपो, मिफाइटिस, मेजेर, नक्स, रियुम)। बहुत तेजीसे बातें करता है (सिना, हायो, लैके, स्ट्रैमो, थूजा, वैलि, बेरेट्र-ऐल्व) ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो समय बहुत जल्दी-जल्दी बीतता जाता है (थिरिड, समय नहीं कटता है—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, अरम, कैनाब-इन, कैमो, मिडोरिन, नक्स, ऐनहेल)। दुसरेके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यत्नवान (कास्टि ; अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें यत्नवान—पल्स, सिपा ; अपनी देहकी सजावटके सम्बन्धमें यत्न न करना— कोकेइन)। हमेशा चिन्ता-निमग्न (कैनाब-इन, सिक्लेमेन)।

गानेकी दुर्दमनीय इच्छा (क्रोक-सैट, स्पञ्जि, टियुक्रि)। किसी विषयको सहज में ही हृदयङ्गम नहीं कर सकता (ऐगार-कैस्ट, ऐम्ब्रा, नैट्र-कार्ब, ओलियैन, नक्स, ऐसिड-फास, प्लम्ब)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना,—शय्यामें उठ बैठनेपर सरमें इतना चक्कर आता है, कि रोगी फिर सो जाता है, (शय्या त्यागकर उठना चाहनेपर —बेल, ग्रैफ, पेट्रोल, पल्स, रास) या सवारीपर चढ़नेपर सरमें चक्कर आता है, मस्तिष्क की जड़ता या सुन्नपन, खाने पीनेसे बढ़ना, सरमें चक्कर—ऐसा मालूम होता है, मानो शराब पी है। माथा ढलमलाया करता है। सरमें दर्दके साथ मिचली और ओकाई—सर और गर्दनके पिछले भागमें दर्दकी अधिकता, दर्द मेरुदण्डतक फैल जाता है, माथेके चारों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक डोरी कसकर बाँधी हुई है (इथ्यू लोबिलिया, मार्कु, सल्फ, थेरिडि); प्रत्येक ऋतुके समय, चित्त होकर सोनेपर और रोशनीमें दर्द बढ़ जाता है, आवाज सुननेसे ही मिचली आने लगती है। सरमें खालीपन मालूम होता है (इग्ने ऐसिड-आक्सैल, सिपि, पल्स), हवा खानेके समय और भोजनके बाद बढ़ना; शय्याकी गर्मीसे शरीर गर्म होनेपर आराम मालूम होता है। सरके पिछले भागमें और गर्दनके पिछले भागमें दर्द; ऐसा मालूम होता है, मानो माथेका पिछला भाग एक बार फटता है, फिर जुटता है, किवाड़की तरह खुलता है, फिर बन्द होता है, (मूर्द्धादेशमें इसी तरह मालूम होना—ऐक्टिया, कैनाब-इन)। गर्दनके पिछले भागकी पेशीकी क्षीणताकी वजहसे माथा रह-रहकर काँप उठता है, निर्मल वायुमें, नींदके बाद (लैके) और काफिया या धूम्रपानसे (इग्ने) बढ़ जाता है। गर्म घरमें आराम मिलता है। आँख बन्द रहनेकी अवस्थामें अक्षिगोलक बराबर घूमा करता है। कानमें पानी बहनेकी तरह सों-सों शब्द।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—चेहरा रक्तहीन, दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं; चेहरेपर ठण्डा पसीना। कीड़े खाये या क्षय-प्राप्त दाँतमें बहुत दर्द (बेल, ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, सिङ्को, हायो, लैके, मार्क, नक्स-मस, पल्स, रास, साइलि, स्टैफि, कोबाल्ट); किसी खानेकी-चीजको खानेके समय ही केवल दर्द होता है—यहांतक कि कोमल पदार्थ चबानेपर भी दर्द होता है (सिङ्को, हायो, इग्ने, मार्क, नेट्र-म्यू, नक्स, ऐ-फास,), मुंह जब खाली रहता है, तब दाँतसे दाँत घसनेसे भी दर्द नहीं मालूम होता। जीभपर

पीला लेप चढ़ा रहता है, भोजनसे अरुचि। खानेके पदार्थमें नमक बहुत कम मालूम होता है। तम्बाकू तीता मालूम होता है, मुख, जीभ और तालुमूलका पक्षाघात, सुन्न मालूम होना और उसके साथ ही कनकनी जैसा दर्द। चर्वन पेसीमें अकड़न पैदा हो जाती है, मुँह खोलनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, दो पहरके पहले मुँहका स्नायुशूल (स्टैन, वार्बेस्क), दर्द बहुत दूरतक फैल जाया करता है।

पाकस्थली।—ताँबेके जंगकी तरह स्वाद और अरुचि पर भूख रहता है, (नेट्र-म्य, ओपि, रास, साइलि)। खानेके समय बहुत प्यास। मिचलीकी वजहसे बेहोश हो जानेका उपक्रम। मिचली और वमन, गाड़ी नाव या भाफकी गाड़ीपर चढ़कर भ्रमण करनेके समय (आर्नि,नक्स-मस, बोर, लाई, पेट्रोल, सिपि) मिचली पैदा हो जाना ; यहांतक कि चलती हुई नावकी ओर देखनेसे भी मिचली और ओकाई आने लगती है (गाड़ी पर चढ़कर घूमनेसे मिचली घटती है—ऐ-नाइट्रि)। श्वास कष्टके साथ भोजनके समय और भोजन के बाद पाकस्थलीमें एकाएक अकड़न पैदा हो जाती है। पाकस्थलीका खाली मालूम होना (इग्ने, पेट्रोल, सिपि,—भरा मालूम होना—सिङ्को, लाई, नक्स-मस)। एकाएक सर्दी लगने या सर्दी हो जानेपर बहुत ज्यादा लारका स्राव होना और इसके साथ ही मिचली आने लगती है, हिचकी आने लगती है और जोर जोरसे जम्हाई आती है (रास, इग्ने), प्यास है , पर पानी अच्छा नहीं लगता (प्यास बहुत पर पानी पीनेसे डरता है—बेल, कैन्थ, हायो, नक्स, स्ट्राम) ठण्डा पानी पीनेकी बहुत अधिक इच्छा (ऐङ्गस, बोवि, कैमो, मार्क, ओलियैन, ऐसिड-फास, सैबाड, वेरेट)। खानेके पदार्दोंकी गन्धसे अरुचि पैदा हो जाती है (कोलचि)। धूम्रपानसे अरुचि (कैलेड, कैल्के, इग्ने, नक्स-युग, नक्स-वोम)।

अन्त्राशय।—उदर खाली मालूम होना ऐसा मानो उसमें कुछ भी नहीं है। पेट फूल उठता है और ऐसा मालूम होता है, मानो वह बदलकर पत्थर हो गया है ; हिलने डोलनेसे ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें पत्थर गड़ रहा है। करवट सोनेपर आराम मिलता है। यकृत प्रदेशमें दबावकी तरह मालूम होना, खाँसने और झुकनेपर दर्द बढ़ जाता है। तलपेटके नीचे आँतके आवरणके छेदके मुँहपर (Abdominal ring) ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ ठेलकर बाहर निकल आना चाहता है, मानो आँत उतरने की (Hernia) सम्भावना हो गयी है (नक्स, लाइको); नाभिकी आँतका

अपनी जगहसे हट जाना (Umbilical Hernia), यदि नक्स वोमिकासे कोई फायदा न हो, तो काकुलस देनेसे लाभ होता है। उदरामय,—केवल दिनमें (पेट्रोल ; केवल सवेरे—ऐपिस), मानो पेटमें पत्थर रगड़ खा रहा है इस ढंगका या कतरनेकी तरह दर्द ; आधी रातके समय पेटमें वायुकी वजहसे शूलका दर्द, डकार आनेपर भी नहीं घटना। पर वायु खुलनेसे आराम मिलता है : ऊपरी पेटमें नाभि प्रदेशमें और कोखके नीचे सबसे अधिक दर्द होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मासिक ऋतुस्राव होनेके समय रोगिनीके निम्नाङ्ग सब इतने कमजोर हो पड़ते हैं कि उसे खड़े होनेमें बहुत तकलीफ़ होती है (ऐल्यू, कार्बो-ऐन) ; प्रतिबार दर्द-भरे ऋतुके बाद अर्श रोग पैदा हो जाता है। ऋतुस्राव बहुत अधिक परिमाणमें होता है और बार-बार होता है। खड़े होनेपर सोतेकी तरह पैरतक टपक पड़ता है। बहुत ज्यादा गाढ़ा खूनका स्राव साथ ही तबियत बहुत खराब मालूम होना और शिरमें चक्कर। प्रदर-ऋतुके बदले प्रदर स्राव (नक्स, मस्कोटा) या ऋतुके बाद, और पहले, अर्थात दो ऋतुओंके समयमें, प्रदरका स्राव होता है (आयोड, जैन्थक्सा) ; स्राव कच्चे मांस धोए पानी की तरह। कभी-कभी रक्तकी तरह (सिङ्कोना, मूरेक्स ; रसकी तरह—ऐसिट-टार्ट)। गर्भावस्थामें जरायुसे खून मिला श्लेष्मा निकला करता है (कैलि-कार्ब, फास, रास)। प्रदर या ऋतुके बाद, रोगिनी इतनी क्षीण हो जाती है, कि उसे बोलनेमें तकलीफ मालूम होने लगती है (आयोड, फास, प्लैट, कार्बो-ऐन, ऋतुके पहले अवशता—आयोड, नक्स-मस, ऋतुके समय—ग्रैफ आयोड, मैग-कार्ब, मैग-मूर, ओलि-ऐन, फास)। कमरमें असह्य दर्द जरायुका डमरूकी तरह संकोचन अर्थात मध्यस्थल संकुचित होकर डमरूका आकार धारण करता है।

श्वास-यंत्र।—श्वासकृच्छ्रता, मानो गलेमें धुआँ प्रवेश कर गया है, ऐसा मालूम होकर खाँसी आती है (मानो गलेमें गन्धकका धुआँ प्रवेश कर गया है, ऐसे अनुभवके साथ—आर्स, सिङ्को, इग्ने, कैलि-क्लो, लैके, पैरिस) मानो वक्षके दाहिने पार्श्वमें बहुत अधिक कसावट और अकड़न पैदा हो गयी है (ऐमोन-मूर ; प्लैट, सल्फ, जिङ्क ; बाएँ पार्श्वमें—लाई, ऐसिड-सल्फ, जिङ्क ; हृत्पिण्ड प्रदेशमें दृढ़ बढ़ता और अकड़नका भाव—लैके, कैक्ट, आयोड,

लिलि-टाइग्र)। वक्षके भीतरसे कण्ठतक जलन, मानो जला जाता है (कैल्क. कार्बो-वेज, युफोर्ब, ओलि-एेन, रास, रैड, स्पंजिया, सल्फ ; सर्दी मालूम होना—आर्स, लैके, नेट्र-कार्ब, बार्ब)। वक्षगह्वरका शून्य मालम होना, मानो छातीके भीतर और कुछ भी नहीं है (क्रोटन-टिग, जिङ्क, मानो भरा हुआ है—कैल्के-कार्ब, फेर, नक्स-मस)।

गर्दन और पीठ।—माथा हिलानेपर गर्दनके पीछेवाली कशेरुका (Vertebral) या मेरुदण्डके अस्थि-खण्ड सब मट-मट शब्द करते हैं (निक्कोलम)। कन्धेमें और बाँहमें मानो चोट लग गयी है, इस तरहका दर्द। कमर बहुत क्षीण, मानो सुन्न हो गयी है। चलनेके समय कमर अवश हो जाती है। गर्दनके पिछले भागकी पेशियाँ सब बहुत क्षीण और भार मालम होता है मानो गला माथेका भार सहन करनेमें असमर्थ है (कैल्के-फास. वेरेट-ऐल्ब)।

प्रत्यङ्ग आदि।—चलनेके समय दोनों घूटने अवश हो जाते हैं। रोगी चलनेके समय ढलमलाया करता है और बगलमें गिर जानेका उपक्रम हो जाता है। कभी दोनों हाथ और कभी दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं। भोजनके समय हाथ काँपा करता है, और हाथ जितना ही ऊँचा उठता है, उतना ही ज्यादा काँपता है। बैठनेके समय दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं और उनमें झुनझुनी भर जाती है। पीठमें दर्द, और सारे शरीरमें पक्षाघातजनक अवसाद मालम होता है। दाहिना पैर, और दाहिना हाथ रोगीके अनजानमें हिला करता है और सोनेपर स्थिर रहता है बायाँ हाथ और बायां पैर—ब्राई, हेलिबो, एक हाथ और एक पैर—एेपोसाइनम-कैनाब)। सबेरे शय्यासे उठनेपर अपस्मार या मृगी-रोग पैदा हो जाता है :—प्रकोपके बाद बोखार आता है चलनेके समय घुटने दोनों मट मट् किया करते हैं (ऐमोन-कार्ब, ब्राई, कैम्फो, लिडम, पेट्रोल, पल्स, रैनान, सल्फ)। अर्द्धाङ्गिक पक्षाघात, नींदके बाद बढ़ना (ऐ-पिक्रिक, लैथइरस-सैट, सिकेलि, हाइपिरिक, कैलि-आयोड, रास) दोनों बाहु पर्यायक्रमसे गर्म और ठण्डे होते हैं (एक हाथ गर्म और दूसरा ठण्डा—डिजि, सिङ्को, पल्स ; दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा, बाँएँ पैरमें स्वाभाविक उत्ताप रहता है—चेलिडो, लाई); मानसिक उत्तेजना, अधिक परिश्रम या शोथकी वजहसे हाथ पैरका काँपना। (इग्ने)।

निद्रा ।—अनिद्रा, मानसिक उत्तेजना, रातमें जागरण वगैरहसे पैदा हुई बीमारी आदि (कास्टि, क्यूप्रम, इग्ने, ऐ-नाइट्रिक); थोड़े समयके लिये निद्राका अभाव होनेपर बहुत कमजोरी मालूम होती है; नींद न आनेकी वजहसे देहकी अकड़न आदिकी बीमारी।

ज्वरादि ।—शीत और उत्ताप पर्यायक्रमसे पैदा हो जाते हैं (ऐमोन-म्यूर, आर्स, बेल, इलैप्स, हायो, फास, वेरेट)। तीसरे पहर और सन्ध्याके समय शीतका आविर्भाव,—विशेषकर दोनों पैर और पीठमें उत्तापके प्रयोगसे आराम मालूम होता है (ऐरेनिया, लैके, नक्स, पीडो ; उत्तापसे घटना—इग्ने); गर्म गाल और बरफकी तरह ठण्डे दोनों पैर, रह-रहकर उत्तापकी अधिकता। सान्निपातिक या आन्त्रिक ज्वर (Typhoid fever) अधिकारमें,—बुद्धि मोटी हो जाती है, सहजमें ही कोई विषय समझमें नहीं आता। रोगी अपना मनोभाव प्रकट करनेके लिये उपयुक्त वाक्य नहीं प्राप्त कर सकता; बीती हुई घटना सब याद नहीं कर सकता और बुदबुदाकर कुछ बका करता है, सन्ध्यासे सवेरेतक पसीना हुआ करता है और चेहरेपर ठण्डा पसीना होता है। ज्वरके समय क्रोध बढ़ जाता है।

वृद्धि ।—खाने-पीने या नींदके बाद; बात करनेपर, धूम्रपानसे (सवारीपर घटना—ऐसिड-नाइट्रिकम) और गर्भावस्थामें उठकर खड़े होनेपर या शरीरकी अवस्थाका किसी तरह परिवर्त्तन करनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ताण्डव रोगके सम्बन्धमें इग्नेशिया या नक्स-वोमिका और रोगवाली जगहपर पसीना निकलनेके सम्बन्धमें ऐण्टिमोनियम टार्टरिकम, काक्युलसके सदृश है।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—(Antidotes)—क्यूप्रम, इग्ने, कैमो, स्टैफि, काफि, नक्स।

तुलनीय ।—ऐण्टिम-क्रूड (पाकाशयका शूल); ऐगार, नक्स-मस (तन्द्रा), इग्ने, पल्स (सर-दर्द); शब्दसे अचैतन्य—नक्स; हलका मालूम होना—कैनाबिस, कैल्के, पल्स; भूतका भय—आर्स, ऐकोन; हार्निया—नक्स; वमनेच्छा—इपिकाक; जरायुमें दर्द—इग्ने; बात करनेमें कमजोरी मालूम होना—सल्फ, कैल्के; गर्दनकी कमजोरी—ऐण्टिम-टार्ट इत्यादि।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० शततमिक, गर्भावस्थामें मिचली रोगमें २०० शक्तिकी एक मात्रासे जितना लाभ होता है, निम्न क्रमकी तीन-चार मात्राके प्रयोगसे भी वैसा लाभ नहीं दिखाई देता है।

कक्कस कैक्टाई

(COCCUS CACTI)

दूसरा नाम ।—काकसिनेला इण्डिका।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कोचिनियल नामक स्त्री-कीटका चूर्ण या अर्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा; पीठमें दर्द; सर्दी; प्रमेह; पथरी; रक्तस्राव; हृत्पिण्डकी बीमारी; ध्वजभंग या क्लीवता; बहुत तरहकी उत्तेजना; भगोष्ठका प्रदाह; बहुत ज्यादा रजःस्राव; मूत्रग्रन्थिका प्रदाह; यक्ष्मा; आक्षेप; कर्णपटहका प्रदाह; हूप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—श्लैष्मिक झिल्लीपर इसकी विशेष क्रिया होती है। आक्षेपिक और हूप शब्दवाली खाँसीमें और मूत्रस्थलीकी सर्दीमें यह विशेष लाभदायक है; शेषोक्त रोगमें भी इसका आक्षेप या पेशियोंका सिकुड़ना फैलना स्पष्ट मालूम हुआ करता है। रह-रहकर एकाएक मूत्राशय संकुचित होकर रोगीको तकलीफसे अस्थिर कर डालता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं;—वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और हृत्पिण्डकी क्रियामें विकार (कैक्टसकी तरह), शरीरके कितने स्थानोंमें खुजली पैदा हो जाया करती है और कुट-कुट किया करता है, लाल खुजलानेवाले दाने बाहर निकल आते हैं। कण्ठ, वायुनाली और फेफड़ेके भीतर तथा आँख और जननेन्द्रियमें प्रदाह अनुभव होता है। कानमें ऐसा मालूम होता है, मानो केशका एक टुकड़ा या खाद्य पदार्थका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है; मानो तालुमूलके पिछले अंशसे एक टुकड़ा केश निकलकर खाँसी पैदा कर रहा है। मसाना और जरायुसे काले रङ्गके जमे हुए खूनका स्राव होता है। लिङ्गमणिमें सुरसुरी मालूम होती है तथा तेज़ अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द होता है, मानो उसके भीतरसे पथरी निकली है। हूप-खाँसी,—सबेरे नींद खुलनेपर बढ़ना; नींद खुलते ही बच्चेको प्रबल

खाँसी पैदा हो जाती है और अन्तमें स्वच्छ गाढ़ा, लसदार गोंदकी तरह श्लेष्माका वमन होता है। वमन हो जाने बाद खाँसी बन्द हो जाती है। कै हुआ बलगम मुँहमें सूतकी तरह झूलता रहता है। स्वरभङ्ग—स्वरयन्त्रका अवसाद ; स्वरनालीमें असह्य सुरसुरी और प्रदाह, कण्ठास्थिके नीचे सुई बेधनेकी तरह या उसके भीतर ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो जख्म पैदा हो गया है, विशेषकर बायीं कण्ठास्थिके नीचे पाकस्थलीमें मानो एक गुल्म या पत्थरका टुकड़ा अड़ा है, ऐसा मालूम होता है, मानो कोई छोटी शिराके भीतर कोई तरल पदार्थ पिचकारीसे दिया जा रहा है ; मानो पाकस्थलीकी ओर न जाने क्या एक चीज़ उठ रही है, मानो वायुनालीमें श्लेष्मा चढ़ता और उतरता है। मानो वक्षमें एक श्लेष्मा-पिण्ड हिल रहा है। बायें कोखसे पुट्ठेमें, बाएँ पुट्ठेसे बाएँ उरुमें, मध्यांशतक भयानक यंत्रणा, मानो इन सब अङ्गोंके भीतरसे एक तरल पदार्थ बड़ी तेज़ीसे प्रवाहित हो रहा है ; कुल्ला करने या दतवन करनेके समय खाँसी और ओकाई आती है। सामान्य दैहिक परिश्रम करनेपर बहुत सुस्ती मालूम होती है और पसीना या खाँसी हुआ करती है।

लक्षणावली

मन और मस्तक ।—सवेरे शय्यासे उठनेपर या सन्ध्याके समय रोगी बहुत विमर्ष चित्त हो जाता है। सरमें दर्द ; सरके पिछले भागके निचले अंशमें (हेलिबो) अत्यन्त दर्द, यहाँतक कि छूनेपर दर्द मालूम होता है ; नींदके बाद और शारीरिक परिश्रम करनेपर दर्द बढ़ जाता है। सवेरे दाहिनी आँखके ऊपरी अंशमें थोड़ा दर्द (कैलि-बाई, ब्राई, चेलिडो ; सरके पिछले भागसे आरम्भ होकर दाहिनी आँखमें आकर ठहर जाता है—सेङ्गियु)। दाहिनी आँखसे दाहिनी कनपटीमें और वहाँसे सरके पिछले भागतकके अंशके भीतर तेज़ बिजलीके प्रवाहकी तरह दर्द, मानो रह-रहकर उस अंशकी एक छोटी शिराके भीतर कोई तरल पदार्थ बड़े वेगसे प्रवाहित हो रहा है, मानो एक कानके नीचेसे शिरके पश्चात् भागको छेदकर दूसरे कानतक एक गर्म बन्धन बँधा हुआ है।

श्वास-यन्त्र ।—उपजिह्वा बढ़ जानेके कारण गलेमें खुसखुसी खाँसी हुआ करती है। दोनों जिह्वामूलीय गह्वर (Fauces) में जलन और दर्दके साथ सर्दी ; कण्ठके भीतर गाढ़ा लेईकी तरह और रबरकी तरह श्लेष्मा संचित हुआ करता है (कैलि-बाई, हाइड्रोस, बोवि, कैन्थ, सेनेगा, सेम्बु ; स्टैन) और

बड़े कष्टसे निकलता है (आर्स, कैमो, सिङ्को, इग्ने, नक्स, पैरिस, पल्स, सिपि, स्टैन)। पहली नींदके खुलनेके बाद ही श्वासरोध करनेवाली खाँसी पैदा हो जाती है और सफ़ेद रंगका कड़ा श्लेष्मा निकलता है। हूप-खाँसी, सवेरे ६-७ बजेके भीतर नींद खुलनेके बाद यह खाँसी आरम्भ होती है और जबतक बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा लेईकी तरह स्वच्छ श्लेष्मा अण्डलालकी तरह नहीं निकल जाता है, तबतक या कै नहीं हो जाती है तबतक, बराबर खाँसी आया करती है (हरेक बार खाँसीके आक्रमणके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें नाकसे खून निकलता है—इण्डिगो ; दिनमें क्षण-क्षणभरपर ऊपर-के-ऊपर आती है और रातमें “हूप” शब्दवाली खाँसी आती है—कोरैल-रूब्रम ; एकके बाद दूसरी बहुत तेज़ीसे खाँसी आया करती है, यहाँतक कि रोगीको श्वास लेनेका समय नहीं मिलता—ड्रोसेरा)। निकला हुआ श्लेष्मा सूतेकी तरह मुँहसे झूला करता है। फेफड़ेके शिखर देशमें बहुत दर्द होती है। सर्दीमूलक यक्ष्मा ; कण्ठास्थिके (Clavicles) तलदेशमें (विशेषकर बाईं कण्ठास्थिका) तेज़ सलाई विधनेकी तरह दर्द, इसके साथ ही स्वच्छ, पर गाढ़ा लेईकी तरह या अण्डलालकी तरह कफ़ निकलता है (फास, स्टैन)। ऐसा मालूम होता है, मानो फेफड़ा वगैरह हृत्पिण्डकी ओर सरके आते हैं।

पेशाब।—रह-रहकर मूत्रस्थलीके संकोचनके साथ मूत्रग्रन्थि और मसानेके प्रदेशमें अस्त्राघातकी तरह दर्द मालूम होता है। बार-बार पेशाबमें वेग होता है। पेशाबमें ईंटके चूरकी तरह तली जमती है (कैक्ट, लाई, फास, सिपि, साइलि)। मूत्ररेणु या पथरी (बार्बा, पैरिइरा, ब्रैवा, डायस्को, ओसाइमम कैनम ; रक्तस्राव—मार्क, कैन्थ, टेरिब, किनिन-सल्फ़, हैमा, आर्नि) और मूत्राम्ल (Uric Acid—आर्टिका-इयु, लाइकोपो) या अन्य पदार्थके साथ मिला मूत्राम्ल निकलता है ; मसाना प्रदेशसे मूत्रस्थलीतक कतरनेकी तरह यंत्रणा। गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। मूत्र-कृच्छ्र (कैन्थ, कोपेवा, एपिस, क्लिमैट)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत जल्दी-जल्दी होनेवाला ऋतु—स्राव बहुत गाढ़ा और काले रङ्गका (ब्राई, कैमो, कोक, फेर, इग्ने, नाइड्रस, प्लैट, पल्स)। काला जमा रक्त निकलता है (काष्टि, सिङ्को, काक्यु, इग्ने, मैग-म्यूर, नैट्र-सल्फ, प्लैट, रास-विनि, सेबाई (इसके साथ ही मूत्रकृच्छ्रता ;

स्राव बीच-बीचमें रुक जाता है ; स्राव केवल सन्ध्याके समय और रातमें हुआ करता है (बोवि, मैग-कार्ब, काफिया ; सोनेपर निकलता है, पर चलनेके समय रुक जाता है—क्रियो, मैग-कार्ब ; केवल दिनमें निकलता है, सोनेपर रुक जाता है—कैक्ट, कास्टि, लिलि-टाइ ; दिनमें अधिक स्राव हुआ करता है—पल्स ; केवल चलनेके समय स्राव होता है, स्थिर होनेपर रुक जाता है—कास्टि, लिलि-टाइग्रि)। पेशाबके साथ बड़े-बड़े जमे रेणुखण्ड निकलते हैं। ऋतुके समय मलद्वारसे भी रक्त निकलता है (ऐमोन-म्यूर, ग्रैफ)। योनि-मुखका (Labia) प्रदाह (एपिस)।

वृद्धि।—नींद खुलनेपर, परिश्रमके बाद ; गर्म घरमें प्रवेश करनेपर, शय्याके उत्तापसे ; घरके बाहरकी आबोहवा लगनेपर, रातमें और सवेरे।

सम्बन्ध।—सदृश।—खाँसी और कफके सम्बन्धमें कैलि नाइट्रम और सेनेगा, ये दोनों कक्कस-कैक्टाईके पहले और बाद दोनों ही अवस्थामें व्यवहार किये जा सकते हैं ; अधिककर ड्रोसेरा, इपिक, कोरैल-रूब ; पेशाबके सम्बन्धमें कैक्टस, कैन्थरिस, सार्सा, पैरिइरा, आर्टिका-इयु और स्त्री-जननेन्द्रियकी बीमारीके सम्बन्धमें क्रोकस, मैग-कार्ब, प्लैट वगैरहके साथ यह तुलनीय है।

शक्ति।—निम्न-क्रमसे २०० शततमिक क्रम।

कोडेइनम

(CODEINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अफीमके उपक्षारसे तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—पलकोंका आक्षेप या स्पन्दन ; ताण्डव ; खाँसी ; बहुमूत्र ; खसड़ा ; पाकाशयका शूल ; असाड़ता ; बेचैनी ; गर्भावस्थामें वमन।

लक्षणावली

मन।—आनन्द, फुर्त्ती ; नींद खुलनेपर उसे गड़बड़ मालूम होता है।

मस्तक।—सरके पिछले भागसे लेकर गलेके पिछले भागतक दर्द मालूम होता है। स्नायुशूलके प्रकोपके बाद मुखमण्डल और माथेकी त्वचामें दर्दका भाव मालूम होना। सवेरे माथेमें बहुत थोड़ा दर्द होता है, फिर धीरे-धीरे घटकर दोपहरमें छूट जाता है। सरमें दर्द, दोनों ओठोंमें सूखापन, बार-बार ओठोंको जीभसे तर करता है।

आँख।—बाईं आँखकी पलक फड़का करती है (ऐगार, फाइजस-टिग), आँख मलनेपर घटता है। लिखने-पढ़नेकी चेष्टा करनेपर दोनों आँखोंकी पलकें फड़कने लगती हैं। नाक छिड़कनेपर आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं।

पाकस्थली।—ऊपरी पेटमें रह-रहकर बहुत दर्द होता है। बार-बार डकार आती है (आर्जेण्ट-नाई)।

पेशाब।—असली बहुमूत्र रोग, पेशाबका परिमाण बहुत ज्यादा और उसके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें चीनी निकलती है। साथ ही बेचैनी, मानसिक और शारीरिक अवसाद और शरीरकी त्वचामें खुज़लाहट और जलन बनी रहती है (इयुरेन-नाइट, सिजिजियम-जेम्बो)।

श्वास-यंत्र।—कण्ठमें पिट-पिटकर खुसखुसी खाँसी आती है, रातमें बढ़ जाती है; बहुत ज्यादा परिमाणमें पीबकी तरह कफ़ निकलता है (कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्को, कोना, हिप, कैलि-कार्ब, फास, क्रियो, लाई, कैलि-नाई, सिपि, साइलि, स्टैन, स्टैफ)। यक्ष्मा रोगियोंकी रातमें खाँसी आती है (आर्स, सिङ्को, कैलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, ओलियम, जेकोरिस, फास, पल्स, साइलि, सल्फ), अङ्ग प्रत्यङ्गका सुन्नभाव। शरीर बहुत खुजलाता है। तन्द्रा।

सम्बन्ध—सदृश।—ऐगार, फाइजसटिग, कार्बो-वेज, कैल्के, साइलि, ऐसिड-नाई, सिङ्कोना इत्यादि।

तुलनीय।—वमन और पेटके दर्दमें ओपियम; आँखोंके फड़कनेमें—हायोस और ऐगरिकस; पैरके दर्दमें—आर्स; लेकेसिस (चैतन्यकी अधिकता); रास, सल्फ़, (कम्पन)।

शक्ति।—३रे दशमिक विचूर्णसे ६ठा शततमिक क्रमतक।

काफिया क्रूडा

(COFFEA CRUDA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।*

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—संन्यास; दमा; कर्णमूल; शूल-वेदना; आक्षेप; अतिसार; मौज करनेके कारण बीमारियाँ; सरमें दर्द; स्नायविक प्रकृति; सहजमें ही क्रोध या हँसी आ जाना; हृत्पिण्डको उत्तेजना; आँत उतरना; मूर्च्छावायु; सविराम ज्वर; प्रसव-वेदना; रजसाधिक्य या स्नायुशूल; उत्तेजनाकी अधिकता; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात; अनिद्रा (नींद न आना); दाँतमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बहुत दिनोंसे दुबले, कुबड़े, काले रङ्गके मनुष्य, स्नायु और रक्त-प्रधान धातु और शारीरिक तथा मानसिक कार्यमें तत्पर मनुष्यकी बीमारी, स्वाद, स्पर्श, घ्राण और दर्शन, श्रवण वगैरहकी शक्ति बहुत ही प्रखर, हमेशा अपने काममें लगा रहता है, रातमें सोता नहीं, रोगीके लिये आँखें बन्द करना ही एक तरहसे असम्भव हो जाता है; वयःसन्धिके समय स्नायविक विकारकी वजहसे बीमारियाँ; सरमें दर्द, मानो मस्तिष्कमें लोहेकी खीलें घुस रही हैं या माथा छिन्न-भिन्न करता है या खींचकर तोड़ता है:—आनन्दोन्माद—भविष्यके सम्बन्धमें विचारोंसे पूर्ण; मनोभावोंको कार्यमें परिणत करनेमें बहुत पटु और इसी वजहसे नींद न आना और मनोवृत्तियोंके बहुत परिचालन करनेके कारण सरमें दर्द इत्यादि काफियाके सर्वश्रेष्ठ प्रकृतिगत लक्षण प्रसिद्ध हैं। इसका एक और भी प्रधान निर्णायक लक्षण है, कि थोड़ी भी तकलीफ़ रोगीको असह्य मालूम होती है, रोगी तकलीफ़से बेचैन और उन्मत्त हो पड़ता है—"इस यन्त्रणासे अब छुटकारा न मिलेगा" ऐसा ही मनमें सोचता है। एकाएक मानसिक उद्वेग, आनन्द समाचार वगैरहसे उत्पन्न बीमारियाँ—ये सब इसीके विषयीभूत हैं।

---

* अच्छी तरह भूजे हुए फलसे जो अर्क तैयार होता है उसे काफिया टोस्टा कहते हैं, यह अनेक विषोंका दोषघ्न है। प्रदरका दर्द, स्नायुशूल और सरके चक्करमें लाभदायक है। काफियाके उपक्षारको—कैफिइनम (caffeinum) कहते हैं।

लक्षणावली

मन ।—हर्षोन्माद (ऐगार, ऐण्टि-क्रूड, ओपि, फास, प्लैट, स्ट्रैम)। मनमें मानो कल्पनाका सोता बहा करता है, खासकर रातमें (सिङ्को, काफ्, लाई, नक्स, पल्स, स्टैफ); मनोभावोंको कार्यमें परिणत करनेमें विलम्ब असह्य हो जाता है, यहाँतक कि इसी वजहसे रातमें सो नहीं पाता। मादकोन्माद—मतवालेकी तरह ढलमलाता-ढलमलाता दौड़ता है; रोगी मनमें समझता है कि यह उसका मकान नहीं है (अरम, इग्ने, मिनो, ऐसिड-फास, साइलि), इसीलिये उसका हाथ काँपता है (ऐण्टि-टार्ट, नक्स, बेल, हायो, स्ट्रैम)। सामान्य कारणमें भी बहुत दुःख प्रकट करता है और रोता है; बच्चा कभी हँसता है, कभी रोता है, रोते-रोते बड़े आनन्दमें भरकर हँस पड़ता है और अन्तमें फिर रोता है; किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर काँपता-काँपता रोता है। बहुत सामान्य दर्द भी सहन नहीं होता; रोगी तकलीफ़से उन्मत्त हो उठता है और छटपटाया करता है (ऐको, कैमो)। अनिद्रा, सतर्क अवस्था; आँख बन्द करना रोगीके लिये महान कठिन हो जाता है, रोगीको मानसिक उत्तेजनामें देह (अर्थात् प्रत्यङ्ग आदि) भी साथ देते हैं। मानसिक उत्तेजना या अप्रत्याशित आनन्द सम्बादकी वजहसे स्वास्थ्य भङ्ग हो जाता है (काफि, कोना, हाइपिर, इग्ने, क्रियो, लैके, लाई, सेम्बियु; डर या मानसिक उत्तेजना पैदा करनेवाले संवादकी वजहसे—जेल्स, ओपि, हाइड्रोफोब, ऐसिड-फास); आनन्दसे आँसू बहाता है।

मस्तक ।—सरमें दर्द, अत्यन्त मानसिक परिश्रम, चिन्ता या बातचीत करनेकी वजहसे एक पार्श्वकी ओर दर्द, मानो मस्तिष्कके भीतर लोहेकी प्रेक घुसी जा रही है (एगार, आर्नि, इयोनिम, हिप, इग्ने, लाई, मस्कस, नक्स, पल्स, थूजा) या मानो मस्तिष्क छिन्न-विच्छिन्न हुआ जाता है या पीस डालता है (एगार, कार्बो-एन, युफोर्ब, युफ्रे, हेलिबो, वेरेट्र); निर्मल वायुमें यन्त्रणा बढ़ जाती है (ऐल्यू, बेल, कैल्के, कैल्के-फास, सिङ्को, सिना; कैलि-कार्ब, लैके, नक्स, स्पाई, सल्फ; निर्मल वायुमें घटना—ऐको, एण्टि-क्रूड, आर्स, कोलो, डायाडिमा, मैङ्गो, कैलि-बाई, फैलेन, टैबाक, थूजा, वायोला, जिङ्क)।

कान ।—श्रवण-शक्ति बहुत तेज़; संगीतकी ध्वनि असह्य चिल्लारकी तरह मालूम होती है। नाड़ीकी गतिके तालमें माथेके एक पार्श्वमें कड़-कड़

शब्द होता है, विशेषकर सवेरे और निर्मल वायुमें; घरमें वह घट जाता है।

मुख-विवर।—बहुत जल्दी-जल्दी खाने-पीनेका काम करता है (बेल, हिप)। दाँतमें दर्द, रह-रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द; बरफका पानी मुँहमें लेनेपर थोड़ी देरके लिये घट जाता है, पर वही जब मुँहके भीतर गर्म हो जाता है, तब फिर दर्द होने लगता है (बिस्मथ, ब्राई, कास्टि, नेट्र-सल्फ़, पल्स, सिपि), दर्दका आविर्भाव अधिकांश स्थानोंमें रातमें और भोजनके बाद होता है। वृद्धि—गर्म पतली चीजें पीनेपर, चबानेपर और रातके समय। मुँहका स्नायुशूल (Prosopalgia), मुँह और माथेके दाहिनी ओर और दाहिने आँखके गोलेतक फैल जाया करता है; प्रायः दिनके १ बजेके समय पैदा हो जाता है (कैल्मिया, मैग-फास)। कोड़े लगे दाँतकी वजहसे मुँहमें असहनीय यन्त्रणाजनक स्नायुशूल (काफिया-टोस्टा)।

उदर।—पेटमें दर्द, पाकाशय मानो बहुत भरा हुआ है, मानो पेट फट जायगा। वस्त्र कसकर पहन नहीं सकता; यंत्रणा बहुत असहनीय होती है, रोगी यंत्रणासे उन्मत्त हो उठता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत अधिक और बहुत देरतक स्थायी रजः-स्राव, केवल सन्ध्याके समय स्राव हुआ करता है (केवल रातके समय—बोवि, कक्कस-कैक्ट, मैग-कार्ब); जरायुसे रक्तस्राव, कभी-कभी बहुत काले रंगका जमा हुआ ख़ून निकला करता है (काफियासे उपकार न होनेपर कैमोमिला देना चाहिये)। प्रसवका दर्द या नकली प्रसव-वेदना इतनी भयानक होती है, कि सहन नहीं होती। प्रदर—श्लेष्मामय स्राव, पेशाबके समय बढ़ जाता है।

निद्रा।—छोटी माताके बाद खाँसी और नींद न आना। मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना; रातके समय मनमें कल्पनाका सोता बहा करता है, वह सोता किसी तरह रुकना ही नहीं चाहता है। सोता-सोता चौंक कर जाग उठता है; अनवरत सपने देखा करता है। मलद्वारमें सुरसुरीके कारण नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कटि-स्नायुशूल या जंघा-स्नायुशूल (Sciatica), तेज़ छेदनेवाला दर्द; चलनेके समय, तीसरे पहर और रातमें दर्द बढ़ जाता

है ; दबाने या टीपनेपर दर्द घट जाता है ; रातमें रोगी छटपटाता है और सो नहीं सकता ।

वृद्धि ।—एकाएक मानसिक आवेग ; हर्षकी अधिकता ; ठण्डी निर्मल हवामें ; नींद आनेवाली दवा पीनेसे, तेज गन्धसे और ऊँची आवाज़से ।

घटना ।—गर्म घरमें ; दबानेपर ; सोने और मुँहके भीतर ठण्डा पानी रखनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—प्रतिविष या दोषघ्न—ऐको, कैमो, इग्ने, नक्स, पल्स, मर्क, सल्फ, टैबाक । कैन्थ, कास्टि, काक्यु और इग्नेशियाके साथ काफियाका शत्रुता सम्बन्ध है अर्थात् उक्त चारों औषधियाँ काफियाके पहले या बाद व्यवहारमें नहीं आतीं ।

तुलनीय ।—साइप्रिपिड (बहुत प्रसन्नता) ; ब्रायो, कैमो (दाँतका दर्द) ; ऐको (मृत्युका दिन बताता है) इत्यादि ।

शक्ति ।—३रै दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—१० दिन ।

काफिया टोस्टा

(COFFEA TOSTA)

दूसरा नाम ।—काफी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—काफीके फलको अच्छी तरह आगमें झुलसकर क्राथके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—काफी पीनेपर बहुत अधिक मात्रामें अफ़ीम खानेका विष-दोष नष्ट हो जाता है ।—यह सभी जानते हैं । यह अफ़ीम और अफ़ीमसे पैदा हुई चीजोंका विष-दोष नष्ट करता है, साथ ही बेलेडोना, नक्स, विषैला कुत्ता, तम्बाकू, कोलोसिन्थ, वैलि, साइक्यूटा, कैमो, ऐण्टिमोनी मिली दवाएँ, सीसा, फास्फोरस, फास्फोरिक-ऐसिड वगैरहका भी विष-दोष नष्ट कर देता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सक समाज इसे सभी दवाओंका दोष-नाशक न समझकर भी काफियाका बहुत सावधानीसे प्रयोग किया करते हैं ; परन्तु वे जानते हैं कि काफिया टोस्टा उल्लिखित कई दवाएँ विशेषकर नक्स, लाइको, इग्ने, कोलोसिन्थ और बेलेडोना—इनके अलावा और किसी दवाका विष-दोष नहीं नष्ट करता ।

ठण्डे पानीके प्रयोगसे काफिया क्रूडाकी तरह काफिया टोस्टाका अंतशूल भी घट जाता है । बहुत देरतक ठहरनेवाला और तकलीफ़ देनेवाला प्रसवका दर्द और हृत्शूलमें मंत्रशक्तिकी तरह यह काम करता है । यह शीत और उत्ताप दोनों कारणोंसे पैदा हुई बीमारीमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—काफिया-क्रूडा, काफिन ।

दोषघ्न ।—कैम्फि ।

शक्ति ।—३ दशमिकसे १२ शततमिकतक ।

काफेइनम

(COFFEINUM)

दूसरा नाम ।—काफिन या केफिन ।

परिचय ।—काफिया ऐराविकाका उपक्षार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—माथा और कनपटीकी शिराओंमें टपक ; आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना ; कानमें गरजकी आवाज़ ; वमन होनेपर सब लक्षणोंके घट जानेके लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कोलचिसिनम

(COLCHICINUM)

परिचय ।—कोलचिकम आटमनेलका एक तरहका उपचार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, पतला पर्दा मिला मल, दाहिने हाथको अकड़न, वात ज्वर ; गठिया-वात, हृद्‌पिण्डके आवरणका प्रदाह, फेफड़ेके आवरणका प्रदाह और वातका तेज़ दर्दके लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—३य दशमिक विचूर्ण ।

कोलचिकम आटमनेल

(COLCHICUM AUTUMNALE)

दूसरा नाम ।—मेडो सैफ्रान ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बसन्त ऋतुमें उत्पन्न गोल आकारकी जड़ (Bulb) से मदर टिंचर तैयार किया जाता है, इसके उपचार या सारांशको “कोलचिसिनम्” कहते हैं ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—उपाङ्ग-प्रदाह या एपेण्डिसाइटिस ; दमा ; मोतियाबिन्द ; शूल ; खाँसी ; अकड़न ; दुर्बलता ; बहुमूत्र ; अतिसार ; आमाशय ; सन्धिवात ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; सविराम ज्वर ; कटिशूल ; पेशियोंका स्नायुशूल ; मसानेका प्रदाह ; हृत्पिण्डके आवरणका प्रदाह ; मूत्रद्वार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह ; ताण्डव ; गुह्यद्वारका निकल पड़ना ; गर्दनका कड़ापन ; अवसाद ; शक्तिका लोप होना ; सान्निपातिक ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—सन्धिवात और वात-ग्रस्त, बलिष्ठ देहवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह उपयोगी है । कोलचिकमके कई प्रधान

निर्णायक लक्षण ये हैं :—खानेकी चीजें पकनेकी गन्ध, यहाँतक कि उनकी याद आ जानेपर भी जी मिचलाने लगता है और घृणा पैदा हो जाती है। अजीर्ण रोग—पेटमें वायु भरकर वह इतना फूल जाता है कि उसके फट जानेका उपक्रम हो जाता है। शरद्‌कालके आमरक्त रोगमें माँड़की तरह आँवका दस्त होता है। जगह बदलनेवाला सन्धिवात—सन्ध्याके समय और शरीरको थोड़ा भी हिलानेपर बढ़ जाता है, सन्धिवातका हृत्पिण्डपर आक्रमण होनेकी वजहसे श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है और इसके साथ ही कलेजेमें कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है। खासकर मानसिक अवसाद, पेशियोंकी अवसन्नता और मानसिक परिश्रमसे, यहाँतक कि कुछ देरतक सोचते रहनेपर और शरीर हिलानेपर तकलीफोंका बढ़ जाना कोलचिकमका प्रकृतिगत लक्षण हैं। इससे पैदा हुआ दर्द आदि सिकुड़ने, छेदने (इग्ने, पल्स, इरिड) या पीसनेकी तरह होता है ; गर्म हवामें दर्द बहुत थोड़ा मालूम होता है, पर जब हवा तर और ठण्डी रहती है, उस समय इसका दर्द हड्डी और उसकी अपेक्षा भी अधिक गभीर प्रदेशमें हुआ करता है और बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैल जाता है (लैके ; दाहिनी ओरसे बाईं ओर—लाइ ; प्रायः बायें पार्श्वपर आक्रमण करता है—जङ्गस-एफ्यु ; प्रायः दाहिने पार्श्वपर आक्रमण करता है—साइमेक्स, क्रोटन, जिनसेङ्ग, फाइटो) और सूर्यास्तसे सूर्योदयतक दर्द बहुत ही तकलीफ देनेवाला हो जाता है (सिफिलिन)। रातमें जागरणके कारण स्वास्थ्यभङ्ग (कास्टि, काक्यु, क्यूप्रम, इग्ने, ऐसिड-नाइट्रिक)। वमन—श्लेष्मा, पित्त और अजीर्ण पदार्थ आदि मिला हुआ ; पाकाशयमें ठण्डक मालूम होती है और शरीर बहुत दुर्बल हो पड़ता है। आमातिसार—मल थोड़ा और मांड़की तरह, बहुत काँखना पड़ता है और इसके साथ ही पेट ढोलकी तरह फूल जाता है ; कितने ही स्थानोंमें इतना वेग होता है कि ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वार फट जायगा ; मलके साथ सूतकी तरह सफेद पदार्थ और आँतके भीतरवाली झिल्लीकी छाल मिली रहती है। सन्धि-स्थान और पैरकी अंगुलीका वातका दर्द—रोगवाली जगह लाल, गर्म और फूल उठती है और उसमें इतना दर्द होता है कि छूना या हिलाना असह्य हो पड़ता है। रातमें और गर्म हवा लगनेपर बढ़ जाता है। हृत्पिण्ड प्रदेशमें आशंकाजनक बेचैनी मालूम होती है, रोगी अपने हृत्‌पिण्डकी गति अनुभव नहीं कर सकता और श्वासकृच्छ्रता अनुभव करता है। पेशाबका परिमाण बहुत थोड़ा होता है, खून-मिला और बहुत

गदला रहता है। शरीरकी त्वचा स्पर्श करनेपर सूखापन मालूम होता है; किसी तरहका रस या पसीना अनुभव नहीं किया जा सकता।

लक्षणावली

मन।—वाह्य-जगतके इन्द्रिय-ग्राह्य विषय, जैसे—रोशनी, शब्द, तेज़ गन्ध, स्पर्श, अभद्र व्यवहार वगैरहसे रोगी पागलकी तरह हो जाता है (नक्स)। यन्त्रणा रोगीको असह्य मालूम होती है (ऐको, कैमो, काफिया)। शोकसे या दूसरेके खराब काम देखकर अधीर हो पड़ता है (स्टैफ)। बुद्धि जड़ता-पूर्ण रहती है, पर कोई बात पूछनेपर ठीक-ठीक या सम्बद्ध उत्तर देता है। अनुभव बिलकुल ही नहीं रहता, मानो होशमें न हो। मानसिक परिश्रम या आवेगसे तकलीफ़ बढ़ जाती है। भुलक्कड़, कोई भी बात भूल जाता है (ऐनाक, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, कैन्थ)। रोगी सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करता है (ऐसिड-क्रूड, एपिस, बिस्मथ; सिना, लियु, रियुटा, टैब, थिरिड)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, चलते-चलते या उठनेपर सरमें चक्कर आ जाता है (ब्राई, पल्स)। माथेके पीछेकी ओर बहुत दबाव मालूम होता है, मानसिक परिश्रमसे बीमारियाँ आदि—खासकर सर हिलाने या झुकानेपर दबाव मालूम होता है, रोगीको उठाकर बैठानेपर माथा पीछेकी ओर ढुलक पड़ता है और वह मुँह फाड़ देता है। छोटी माताके बाद कानमें पीब पैदा हो जाता है और उसमें छेदनेकी तरह दर्द होता है।

नाक।—घ्राणशक्ति बहुत ही तीक्ष्ण हो जाती है; भोजन आदिके पदार्थ पकानेकी गन्धसे रोगीका जी मिचलाने लगता है और ऐसा मालूम होता है, कि बेहोश हो जायगा, खासकर मछली, अण्डे और मेदमय मांस आदिकी गन्ध (आर्स, सिपि)।

मुखमण्डल।—रोगीके चेहरेपर शोक या विषादका भाव भरा रहता है; आँख और दोनों गाल गड़हेमें धँसे; प्रेतकी तरह हँसना (Risus Sardonicus) अर्थात् चेहरेपर एक तरहकी डरावनी हँसी पैदा हो जाया करती है; मुर्देकी तरह रक्तहीन और सफेद; कभी-कभी दोनों गाल लाल और गर्म हो उठते हैं तथा उनमें पसीना हो जाता है। चेहरेपर शोथकी तरह सूजन

आ जाती है। कोड़े खाये दाँतमें दर्द, मुँह फूला और जीभपर कोमल लेप चढ़ा, मुँहकी पेशियोंमें सङ्कोचन और छेदनेकी तरह दर्द, दर्द कान और माथेतक फैल जाता है।

मुँह और गलेके भीतर।—दाँत-पर-दाँत पीसनेपर (हायो, लाइ, पोडो, सिना स्ट्रैमो, वेरेट)। कण्ठ सूखा, पर मुँहसे बहुत ज्यादा परिमाणमें लार बहा करती है। कण्ठमें कुटकुटाहट होती है, मानो सर्दी हो जायगी।

पाकाशय और अन्त्राशय।—मुँहका स्वाद तीता (सभी चीजें तीती मालूम होती है—ब्राइ, सिङ्को, पल्स)। खाद्य आदि विशेषकर मछली, अण्डे और मेदमय मांस—पकानेकी गन्धसे रोगीमें मिचली पैदा हो जाती है और उसे सुस्त बना देती है (आर्स, सिपि); सभी पदार्थोंसे अरुचि। खानेकी चीजें आदि देखनेसे ही घृणा पैदा हो जाती है। अंत्राशय वायुसे भरकर बहुत बेतरह फूल उठता है—मानो फट जायगा और रोगीको इतनी खींचन मालूम होती है, कि रोगी पैर नहीं फैला सकता। ऊपरी और निचले पैरमें जलन या बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है (आर्स, बोर, कैम्फ, चेलिडो, कोडो, कोना, ऐसिड-हाइड्रो, इग्ने, कैलि-क्लो, लैक्टियु, लोरो, मैग-सल्फ, नाइट्रम, ओलि-येन, ऐ-फास, रास, ऐ-सल्फ, टैबाक, फास; बहुत जलन मालूम होना—आर्स, नक्स, सिकेल)। कण्ठ सूखा अथवा मुँहमें बहुत ज्यादा लार भरी रहना। वमन, इसके साथ ही श्लेष्मा, पित्त और खाये हुए पदार्थ आदि बाहर निकल पड़ते हैं, हिलने-डोलनेसे ही ओकाई आने लगती है (स्ट्रैमो, टैबाक, थिरिड, वेरेट, जिङ्कम)। पाकस्थलीमें तेज शलाका बेधनेकी तरह यंत्रणा मालूम होती है (ब्राइ, कार्बो-ऐन, कास्टि, नाइट्रम, सिपि)। नाना प्रकारके पदार्थ खानेकी इच्छा प्रकट करता है, पर उसकी गन्ध नाकमें जाते ही या उसको देखते ही अरुचि पैदा हो जाती है (भोजनकी बात सोचनेपर भी अरुचि पैदा होती है—सिङ्को)। जो भोजन करता है, उसका कोई स्वाद उसे नहीं मिलता (कैलि-बाइ, स्ट्रैमो)।

मलांत।—शरत्ऋतुका आमरक्त रोग; छोटे-छोटे सूत्रमय पदार्थ मिला या आँत आदिकी छाल या शल्कको तरह सफेद आम मिला पाखाना होता है (ब्रोमम, कैन्थ, ऐसिड-कार्बोलिक, कोलो)। बहुत दर्द और थोड़े परिमाणमें मल पाखानेके साथ निकलता है। उदरामय—अण्डलालकी तरह

आम मिला मल (ऐलो, हेलिबो, कैलि-बाई ; पाखाना फिरते समय ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार फट जायगा। कांच निकलना (Prolapsus Ani—प्रत्येक बार पाखाना फिरते समय—पोडो)। अनजानमें पानीकी तरह मल निकलना (वेरेट)। भातके फेनकी तरह आम मिला पाखाना होता है।

पेशाब।—पेशाबका, रंग गहरा (ऐको, वेल, डिजि, ऐण्टि-टार्ट, मार्क, सिपि); परिमाणमें बहुत थोड़ा ; बून्द-बून्द पेशाब होता है और सफेद रंगकी तली जमती है ; (लाल रंगकी तली—लाई, सिपि, पल्स, नेट्र-म्यू) ; पेशाब खून-भरा (कैन्थ, कैनाब, इपिक, टेरिब, मार्क, मिलिफो, पल्स, स्क्वियुला)। भूरे रंगका (Brown—कास्टि, ऐसि-नाई, पेट्रोल, पल्स, ऐण्टि-टार्ट) या काला ; कभी-कभी पेशाबके साथ विकार प्राप्त जमा हुआ लाल खून या चीनी निकलती है (एसिड-फास, इयुरेन-नाई, आर्जेण्ट-मेट, कोडिइनम, नेट्र-सल्फ, सिजिजी)।

हृत्पिण्ड।—छातीमें धड़कन, यह बिलकुल ही मालूम नहीं होता, कि हृत्पिण्डमें धड़कन हो रही है। हृत्पिण्डकी वहिर्वेष्टनी (Pericarditis) का प्रदाह, तेज दर्द और बहुत दवाव मालम होना और श्वास-कष्ट, नाड़ी सूतकी तरह और क्षीण या सन्धि-वातमें एक जगहसे दूसरी जगह फैल जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—सन्धिवात, रोगवाले अंगमें बहुत दर्द मालूम होता है, छूते ही रोगी चिल्ला उठता है। छोटी सन्धियोंमें वातका दर्द, कोई भी सन्धि छूनेपर या पैरकी अंगुलीमें थोड़ी भी चोट लगनेपर रोगी तकलीफ़से चिल्ला उठता है ; रोगवाली जगह लाल या सफेद फूली हुई और अकड़ी जैसी हो जाती है और दर्द तथा सूजन एक सन्धिसे दूसरी सन्धितक घूमा करती है ; जरा हिलानेसे ही दर्द बढ़ जाता है, शोथ, गहरे रङ्गका पेशाब ; पेशाबका रंग गहरा लाल, लारभरा और प्यास नहीं रहती (टेरिब, मूत्र-रोध—स्क्वियुला ; गहरा लाल रंग और थोड़ी मात्रामें पेशाब—हेलिबो), विशेषकर यदि सन्धिवात रोग उसके साथ ही मिला हो। वात रोग कभी-कभी एकाएक बढ़ जाता है।

सम्बन्ध।—वात या सन्धिवात रोगमें "कोलचिकम" का ऐलोपैथिक व्यवहार या अपव्यवहार हुआ हो तो "लेडम" का प्रयोग करना चाहिये। वात रोगमें स्पर्श असहनीयताके सम्बन्धमें "आर्निका" कोलचिकमके सदृश है, त्वचामें रस सञ्चित होता हो, ऐसे सन्धिवात रोगमें ब्रायोनिया इसका सहधर्मी है ; ब्रायोनियामें भी "उष्णवायुमें वृद्धि" निर्णायक लक्षण है। शोथ रोगमें एपिस

और आर्सेनिकके प्रयोगसे यदि लाभ न हो तो कोलचिकमके व्यवहारसे विशेष लाभ दिखाई देता है। डा० फैरिङ्गटनके मतसे—"कोलचिकमका अपव्यवहार होनेपर "स्पाइजिलिया" प्रतिषेधक रूपमें व्यवहार करना चाहिये।"

वृद्धि ।—मानसिक आवेग और सुस्ती, बहुत पढ़ना, पदार्थों के राँधनेकी गन्धसे, सन्ध्याके समय, रातमें और गर्म हवामें तथा सूर्यास्तसे सूर्योदयतकके समयके भीतर वृद्धि। दर्द आदि बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलता है (लीडमका दर्द नीचेसे ऊपरकी ओर फैलता है)।

सदृश ।—एपिस ; आर्सेनिकम ; लीडम ; आर्निका ; गुयाइयेकम ; ऐमोन-फास ; ऐण्टिमोनियम-क्रूडम ; लाइकोपोडियम ; ऐसिड-बेञ्जोयिक ; रोडोडेण्ड्रन।

प्रतिविष या दोषघ्न ।—बेलेडोना ; कैम्फ ; काक्युलस ; लीडम ; नक्स ; पल्स ; स्पाइजि ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व ।—१४ से २० दिन।

कोलिन्सोनिया कैनाडेन्सिस

(COLLINSONIA CANADENSIS)

दूसरा नाम ।—हार्स बाम ; स्टोन रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है। इसका विचूर्ण बना करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—कब्जियत ; अतिसार ; शोथ ; रक्तामाशय ; अजीर्ण ; बाधक ; ऋतुस्राव ; अर्श ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; उत्तेजना ; प्रसवका दर्द ; गर्भिणी रोग ; वात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—वस्तिगह्वर (Pelvis) और यकृतके भीतरकी शिरा (Portal vein) के भीतर ज्यादा रक्तसञ्चय हो जाना और अर्श रोगका पैदा हो जाना ; गर्भावस्थाके अन्तिम भागमें गर्भके यन्त्रोंमें खूनका ज्यादा

सञ्चय होना और बवासीरका पैदा हो जाना ; हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ रोग ; अजीर्ण और शोथ रोगग्रस्त व्यक्तियोंके कलेजेमें धड़कन ; हृत्पिण्डकी बीमारीके कुछ घटते ही पुराना अर्श या रुके हुए ऋतुका आविर्भाव हो जाता है ; पुराना दर्द पैदा करनेवाला अर्श, ऐसा मालूम होता है, मानो मलान्त्रमें कंकड़ या पतली काठियाँ बिध रही हैं ; अर्श और कुन्थनके साथ आमरक्त (खूनी आँव, पेचिश) रोग ; पर्यायक्रमसे कब्जियत होना और पतले दस्त आना और गर्भावस्थामें गुह्यदेशमें खसड़ेकी तरहका एक तरहका चर्म-रोग पैदा हो जाता है (Pruritus ani) और इसी वजहसे गर्भिणीका मलद्वार खुजलाता है और फिर बवासीर पैदा हो जाता है। यहाँतक कि रोगिनी सो नहीं सकती, ये कई कोलिन्सोनियाके विख्यात प्रकृतिगत लक्षण हैं। अर्श रोगमें इस्क्युलस, हिपो-कैस्टेनम, अनेक अंशोंमें कोलिन्सोनियाके सदृश है ; पार्थक्य यह है—(१) इस्क्युलसके बवासीरमें मलद्वारमें पूर्णताकी अनुभूति मौजूद रहती है, पर कोलिन्सोनियामें ऐसा नहीं है ; (२) इस्कुलसके अर्शमें साधारणतः खूनका स्राव नहीं होता ; पर कोलिन्सोनियाके अर्शमें लगातार खूनका स्राव होता देखा जाता है ; (३) इस्कुलसमें कमरमें बहुत दर्द और तेज दर्दकी अनुभूति मौजूद रहती है ; कोलिनसोनियामें प्रायः उतना नहीं होता ; (४) इस्कुलसमें कभी कब्जियत मौजूद रहती है, कभी नहीं भी रहती ; पर कोलिन्सोनियामें आँतोंमें शूलके दर्दके साथ बहुत गहरी कब्जियत मौजूद रहती है (डा० नैश)। बच्चे और गर्भवतियोंके निम्नान्त्रकी क्रिया न होनेकी वजहसे कब्जियत रोगमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है। अर्श-रोगाश्रित हृद्रोग (कैक्टस, डिजिट)।

लक्षणावली

मन ।—बहुत ही उदास भाव (Gloomy)।

मस्तक ।—कपालमें दर्द और उसके साथ ही दोनों पैरोंमें स्थान परिवर्त्तन करनेवाला और जानुदेशमें छेदनेकी तरह दर्द, अर्शसे एकाएक स्राव रोध होनेकी वजहसे (लैके)। पुरानी सर्दी।

मुँह ।—जीभकी जड़ और मध्यस्थल (बीचका स्थान) सफेद लेप चढ़ा और मुँहमें बहुत ही कड़वा स्वाद (ब्राई, कोलो)।

पाकाशय प्रभृति ।—मिचली, पेटमें ऐंठन, वमन और आध्मानके साथ पेटमें दर्द ।

मलान्त्र ।—दाहिने कोखमें दर्द और बेचैनी मालूम होना और सुस्तीके साथ तलपेटमें कतरनेकी तरह दर्द। बच्चे और गर्भवती स्त्रियोंकी कब्जियत, मलका रङ्ग फीका, पतला पानीकी तरह या पीला पतला मल, तलपेटमें तेज़ कूथन या काटनेकी तरह दर्द। अर्श, बादी या खूनी बवासीर। मलान्त्रमें बहुत भार मालूम होता है, खुजलाता है (टियु, रेट) और मानो तेज़ धारवाली काठकी खीलें चुभ रही हैं, ऐसा मालूम होता है (इस्कु, ऐसिड-नाई)। निम्नाङ्गमें रक्त अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे निष्क्रियताके कारण; पुराना दुरारोग्य अर्श रोग। प्रसवके बादकी कब्जियत (नक्स)। गर्भावस्थामें मलद्वारमें खुजली होती है, रोगिनी सो नहीं सकती (अन्त्रशूलमें नक्स और कोलोसिन्थसे यदि फायदा न हो तो कोलिन्सोनियाका प्रयोग करना चाहिये)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बहुत दिनोंका जरायु-प्रदाह ; जरायु कुछ पीछेकी ओर या एकदम झूल पड़ता है (Retroflexion or Retroversion—अरम-सूर, नेट, सिपिया, बोरैक्स, सैबाल-सेरुलेटा); जरायु-भ्रंश या जरायुका बाहर निकलना (Prolapsus—सिपि, लिलियम-टाइ, बेल, फ्रैक्सिनस-ऐमे), वाधक, अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, दाहिने कोखमें दर्द ज्यादा हुआ करता है, गर्भावस्थामें जरायु-भ्रंश या योनिके बाहरी भागमें खुजली ; योनिमुख गाढ़ा लाल रङ्गका हो जाता है ; बैठनेमें दर्द होता है। झिल्ली निकलनेवाला वाधकका दर्द (Membranous Dysmenorrhoea—बोरैक्स ; ऐस्क्लिपि-सिरी, बेलेडो, कैमो, जैन्थक्स, कोलो, ऐकि, मैग-फास, वाइबर्नम)।

श्वास-यंत्र ।—बवासीरका स्राव रुक जानेकी वजहसे काले रङ्गका गाढ़ा, लेईकी तरह और खून मिली श्लेष्माभरी कफ मिली खाँसी। हृत्पिण्डमें विकार हो जानेका भय, गति अनियमित और तेज़ (कानवेले), सामान्य मानसिक उत्तेजना या शरीर हिलानेपर बढ़ जाता है, कलेजा धड़कना। हृत्पिण्डका दर्द और बवासीरका स्राव पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। वक्षस्थलमें दबाव मालूम होना, श्वासकष्ट और बिलकुल सुस्ती या मूर्च्छाका उपक्रम हो जाता है (ऐको-फेराक्स)। अर्श मिले हृत्पिण्डके रोगमें कैक्टस, डिजिटेलिस वगैरहसे फायदा न होनेपर कालिन्सोनियाका प्रयोग करना चाहिये।

वृद्धि ।—थोड़े भी मानसिक आवेग या उत्तेजनासे (आर्जेण्ट-नाइ) और शरीर हिलानेसे ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—इस्कुलस, हिप, ऐलो, नक्स ।

दोषघ्न ।—नक्स-वोमिका ।

तुलनीय ।—लाइकोपस (हृत्पिण्ड); इस्क्यु, हैमा, नक्स, सल्फ़, (अर्श); पोडो (गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना); मानसिक उद्वेगसे क्लान्तिके कारण पक्षाघातमें—स्टैनम, काकुलस, फास्फोरस, नैट्रम ।

शक्ति ।—मूल अरिष्टसे ६ठा दशमिक क्रम । हृत्पिण्डके रोगमें उच्चतर क्रमका प्रयोग करना चाहिये ।

कोलोसिन्थिस वल्गैरिस

(COLOCYNTHIS CUCUMIS OR VULGARIS)

दूसरा नाम ।—बिटर ऐपिल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलके गूदेसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—मोतियाबिन्द; आँखोंका स्नायुशूल; कशेरुकाके अन्तिम भागमें स्नायुशूल; बहुमूत्र; अतिसार; रक्तामाशय; वाधक; आँखके रोग; सरमें दर्द; ध्वजभङ्ग; डिम्बाधारका स्नायुशूल; चमड़ी; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह; वात; कटि-स्नायुशूल; दन्तशूल; जखम; अर्बुद इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान मानसिक लक्षण है, क्रोध और अधीरता । गृध्रसी या कटि-स्नायुशूल (Sciatica—साधारणतः दाहिनी ओरका); दोनों पैरोंमें सिकुड़ने या छेदनेकी तरह दर्द, वंक्षण सन्धि या कुल्हे (Hip joint) और वंक्षण सन्धिके गह्वरके स्नायु सबमें बहुत ज्यादा दर्द मालूम हुआ करता है । (२) बहुत तेज अन्त्रशूल, रोगी यंत्रणासे सामनेकी ओर झुककर दोहरा हो जाता है, छटपटाता है, कराहता और रोया करता है । (३) आमरक्त रोग—मल पानीकी तरह, खून मिला और गोंदकी

तरह, पेटमें दर्द, रोगी टेढ़ा होकर दोहरा-सा जाता है। (४) रजोरोध—डिम्बाधारमें तेज़ और असह्य कष्टकी वजहसे रोगिनी सामनेकी ओर टेढ़ी पड़ जाती है। शूलका दर्द इतना तेज पैदा हो जाता है, कि रोगी या रोगिनी खाटके पावेके माथेपर या टेबिलपर पेट दबाकर आराम मिलनेकी आशासे खड़ी रहती है। इन कई अवस्थाओंकी कोलोसिन्थिस अव्यर्थ दवा है। इसके अलावा घृणाके साथ क्रोधसे पैदा हुई बीमारियाँ अर्थात् क्रोधित हो जानेके बाद दस्त आने लगना; शूलका दर्द; रजोरोध (कैमो, स्टैफ) वगैरहमें कोलोसिन्थ बहुत फायदा दिखाया करता है। ज्वराधिकारमें इसका एक प्रधान और अनन्य साधारण लक्षण यह है, कि ज्वरके अन्तमें रोगीकी देहमें जो पसीना निकलता है, उसकी गन्ध पेशाबकी तरह आती है (बार्ब, कैन्थ, ऐसिड-नाई)। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:—(१) एकाएक बायीं ओर माथा घुमानेपर सरमें चक्कर आता है और गिर जानेका लक्षण पैदा हो जाता है। (२) स्नायुशूल, हिलने-डोलनेपर घटता है और जाड़ा मालूम होता है। (३) बायीं कनपटीमें, बाईं गण्डास्थिके भीतर, बायें गाल और बायें कन्धेमें तेज दर्द होता है, दर्द खोदने या टपककी तरह होता है। (४) पुट्ठेमें अकड़नकी तरह दर्द, मानो वह यंत्र चिमटेसे कसकर पकड़ा हुआ है। रोगी रोगवाला अंश दबाकर सोता है। (५) डिम्बाधारमें ऐसा दर्द, मानो खोंचा मार रहा है, दबानेपर आराम मालूम होता है। (६) मूत्र पतला लसदार गोंदकी तरह। (७) समूचे पेटमें दर्द, मानो आँतें आदि दो पत्थरोंके बीचमें दबायी जा रही हैं, मानो पेटमें पत्थर-से-पत्थर रगड़ खा रहा है, कोमल अंशपर रोगका आक्रमण अधिक हुआ करता है। यंत्र आदिमें स्पर्श सहन नहीं होता और इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो उनपर प्रहार हो रहा है।

लक्षणावली

मन।—रोगीका स्वभाव बहुत क्रोधी और अधीर रहा करता है, कोई यदि उससे कोई बात पूछता है, तो क्रोधित हो जाता है, हाथसे चीजें दूर फेंक देता है। अपने किये हुए अपराधकी वजहसे मनःकष्ट। अपनी या किसी दूसरेकी ही घटनाको लेकर बहुत कातर हो पड़ता है (दूसरेके स्वास्थ्यकी चिन्ता—कास्टि, काकु)। ताच्छिल्यभाव मिले क्रोधकी वजहसे अन्त्रशूल, मुखका स्नायुशूल, वमन, उदरामय, रजोरोध वगैरह (कैमो, स्टैफ, ब्राई,

नेट्र-म्यू)। विकार और प्रलाप—खुली हुई आँख और भागनेकी इच्छा मौजूद रहता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—एकाएक सर घुमानेपर (कोना, केल्के, केलि-कार्ब), विशेषकर बाईं ओर ; रोगीके गिर जानेका उपक्रम हो जाता है (ऐको, आर्नि, बेल, कोना, साइक्यूटा, फेलैन, पल्स, रास, स्पञ्जि, मस्कस) ; शराब आदि पीनेकी वजहसे ; गिर जानेके भयसे बाईं ओर माथा घुमा नहीं सकता। ललाटमें पीसनेकी तरह सर-दर्द हुआ करता है ; माथा झुकाने या चित्त होकर सोनेपर बढ़ जाता है (मूर्द्धा-देशका सर-दर्द, माथा झुकाने या चित्त होकर सोनेपर बढ़ जाता है—लाई)। बाईं कनपटीमें टपककी तरह दर्द, यह दर्द, क्रमशः बढ़कर तेज कतरनेकी तरह दर्द हो जाता है, इसके साथ ही मिचली और वमन ; दबाने या गर्म प्रयोग करनेपर घट जाता है, सरमें दर्दके बाद माथा अकड़ जाता है।

मुखमण्डल।—मुँहका स्नायुशूल, बाएँ पार्श्वमें अधिक (स्पाइजि), मुँहके समस्त बाएँ आधे भागमें और बाईं आँखमें और बाएँ कानतक बहुत तेज़ फाड़ने या छेदनेकी तरह दर्द हो जाता है और यह दर्द दिन-रात सम भावसे हुआ करता है। रोगी यंत्रणासे मानो पागल या उन्मत्त जैसा हो पड़ता है ; दोनों हाथोंसे जोरसे दबा लेनेपर उसे आराम मालूम होता है। बाएँ पार्श्वका दाँतका दर्द, दर्द मुँहके समूचे बाएँ आधे भागमें फैल जाता है और यह दाँत बहुत लम्बा मालूम होता है। कानमें आवाज़ आदि प्रतिध्वनित हुआ करती है (कास्टि, मार्क, फास, ऐसिड-फास)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—जीभ—ऐसा मालूम होता है मानो झुलस गयी है (इसक्यू, सिपा, आर्स, बैप, लाई, मार्क-बिन-आयोड, पलस, रास-विन, सैङ्गियु, वेरेट-विरिडि) और सफेद और पीले रङ्गकी और रुखड़ी : पतली पीनेकी चीजें और खाये हुए पदार्थ आदिका स्वाद तीता मालूम होता है (ब्राई, पलस,)। भोजनके बाद मुँहका स्वाद तीता मालूम होता है (एमोन-कार्ब, लाइको, ऐसिड-नाई)। मिचली पैदा हुए बिना ही वमन हो जाता है (वमनरहित मिचली—इग्ने), जबतक रोगी सो नहीं जाता, तबतक लगातार मिचली हुआ करती है और नींद खुलते ही फिर जी मिचलाने लगता है। तलपेटमें मानो चोट लग गयी है, इस ढंगका दर्द होता

है (एपिस, नेट्र-सल्फ, नक्स, रियुटा ; बायें कोखमें—रैनान ; दाहिने कोखमें—लाई, रैन)। पेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें आदि पत्थरसे रगड़ खा रही हैं (पेट ऐसा मालूम होता है मानो पत्थरके टुकड़ोंसे भरा हुआ है और चलनेके समय मनमें आता है मानो पत्थर-से-पत्थर रगड़ खा रहा है—काकुलस)। प्रचण्ड अन्त्रशूल,—रोगी असह्य यंत्रणासे सामनेकी ओर टेढ़ा होकर दोहरा जाता है, छटपटाता है या रोया करता है ; कभी दौड़कर खाटके पावेके माथेपर या टेबिलके कोनेसे पेट दबा रखता है, क्योंकि पेट जोरसे दबा रखने या सामनेकी ओर टेढ़े पड़ जानेपर तकलीफ़ घट जाती है (उदरमें मानो कोई चिकोटी काट रहा है ऐसी अनुभूति और सामनेकी ओर टेढ़े होकर दोहरा जानेपर आराम मालूम होना—सिङ्कोना), उदरमें ऐसा मालूम होता है मानो कोई किसी अस्त्रसे आघात कर रहा है (कोना, वेरेट)। दर्द-भाव खाने-पीनेसे बढ़ जाता है ; पेटमें वायु-भरकर बहुत फूल उठता है और उसमें कल-कल गुड़-गुड़ आवाज़ होती है।

मलान्त्र और मल।—उदरामय और आम-रक्त रोग,—असन्तोष और क्रोधकी अधिकताकी वजहसे मल लाल और पीले रंगका, फेन-भरा और पानीकी तरह ; पहले पानीकी तरह और आममय, इसके बाद पित्तमिला और अन्तमें खून-भरा ; कभी-कभी बहुत पतला, हरा लसदार और पानीकी तरह पतला, खट्टी या सड़ी गन्ध ; खाने या पीने बाद (ड्राब्डिड) ; फल भोजन करनेपर और दाँत निकलनेके समय बढ़ना। रक्त आमाशय रोगमें मलके साथ आँत आदिके शल्ककी तरह सूत्रमय पदार्थ निकला करता है (कैन्थ, कोलचि, ऐसिड-कार्बोलिक)।

पेशाब।—बहुत थोड़े परिमाणमें और बदबूदार और गाढ़ा लसदार या गाढ़ी लारकी तरह पेशाब निकलता है। पेशाबके समय मूत्रस्थली बहुत संकुचित रहती है और तलपेटमें दर्द मालूम होता है, पेशाब करनेके अन्तमें कुछ देर बाद देखा जाता है कि बर्त्तनकी सतहमें कुछ कड़ी लाल रङ्गकी बालू सब जमी हुई है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाधक—डिम्बाधारके भीतर मानो कोई खोद रहा है या खोंचा मारता है ऐसा दर्द मालूम होता है। बाएँ पार्श्वमें दर्द अधिक होता है ; तलपेटमें अकड़नकी तरह दर्दके कारण रोगिनी तकलीफ़से

बेचैन हो पड़ती है और सामनेकी ओर टेढ़ी होकर द्वि-भाज (दोहराना) सी हो जाती है ; कभी-कभी खाने-पीनेके बाद तकलीफ़ बढ़ जाती है। डिम्बाधार-भागमें जरायुकी स्थूल बन्धनी (Broad ligament) के ऊपर कोषावृत्त अर्बुद या बतौड़ी पैदा हो जाती है। डिम्बाधार प्रदेशमें अकड़नकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो किसी बड़े चिमटेसे कसकर पकड़े हुए हैं या दबा रहा है। अजीर्ण रोगकी वजहसे जरायु-प्रदाह, शूलकी तरह दर्दकी वजहसे रोगिनीकी देह सामनेकी ओर टेढ़ी होकर दोहरा जानेकी तरह हो जाती है ; तलपेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई किसी अस्त्रसे काट रहा है ; पेट फूल उठता है और उसमें बहुत दर्द मालूम होता है, कभी-कभी ऐसा मालूम होता है मानो आँतें आदि दो पत्थरके टुकड़ोंके भीतर दब रही हैं। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia—हायो, नक्स, सिकेलि, वेरेट—क्रोध या घृणाकी वजहसे ; क्रोधसे पैदा हुआ, प्रचण्ड शूलका दर्द, बहुत पेट फूलना और उदरामय या इसके साथ ही आँतमें दर्द रहनेपर—कैमो ; यदि स्राव रुक जानेकी वजहसे विकार या मानसिक दुर्बलता पैदा हो जाये तो—बेल, हायो, स्ट्रैमो)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गृध्रसी या कटि-स्नायुशूल (Sciatica)—पुट्ठेमें अकड़नकी तरह दर्द, मानो किसी बड़े चिमटेमें दब रहा है ; रोगी पैर मोड़कर रोगवाला अंग दबाकर सोया करता है ; तेज दर्द बिजलीकी गतिकी तरह समूचे बाएँ पार्श्वमें तेजीसे फैल जाता है, बायाँ वंक्षण या कूल्हेमें, बायें उरु, बाईं जांघ वगैरहपर रोगका आक्रमण होता है। ठण्ड लग जानेकी तरुण अवस्था, छूते ही दर्द बढ़ जाता है ; दबाने या गर्म प्रयोगसे घट जाता है, केवल चलनेके समय दाहिने उरुमें दर्द और मानो उसके पीछेकी पेशियाँ छोटी हो गयी हैं, ऐसी खींचन मालूम होती है। दर्दकी वजहसे रोगवाली जगह सुन्न हो जाती हैं (नैफिलियम), दाहिने उरुके पिछले भागवाले वृहत् स्नायुमें बहुत तेज़ कतरनेकी तरह दर्द, दाहिनी वंक्षण-सन्धिसे नीचेके पैरतक बिजलीकी तरह दौड़ जाता है, सोना या रोगवाली जगह हिलाने या चलनेपर दर्द बढ़ जाता है ; बैठनेपर आराम मालूम होता है।

वृद्धि।—क्रोध और घृणाकी अधिकता ; अपने किये हुए अपराधकी वजहसे मनःकष्ट (स्टैफ, लाइकोपोडियम)। पनीर खाने (शूल-वेदना) और हिलने-डोलनेपर।

घटना ।—सामनेकी ओर झुककर दोहरा जानेपर, जोरसे दबानेपर और सामनेकी ओर सर झुकाकर सोनेपर ; उत्तापके प्रयोगसे और दबानेसे ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आमाशय रोगमें मर्क्युरियस इसका अनुपूरक है ; खासकर यदि मरोड़ और कूथन मौजूद रहे । गृध्रसी रोगमें नैफेलियम, लाइकोपोडियम, कैप्सिकम, कैलि-कार्बोनिकम, मैग्नेशिया-फास प्रभृति इसके सदृश हैं । क्रोधकी वजहसे बीमारियोंके सम्बन्धमें लाइकोपोडियम, इग्नेशिया, ब्रायोनिया, कैमोमिला और स्टैफिसैग्रिया इसकी सदृश दवाएँ हैं ।

तुलनीय ।—ब्रायो, डायस्को (पीवमें) ; स्टैफि (क्रोध) इत्यादि ।

दोषघ्न ।—कैम्फ, कास्टिकम, कैमो, काफि, ओपियम, स्टैफि ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे उच्चतम क्रमतक इसका व्यवहार हुआ करता है ।

कोलोस्ट्रम

(COLOSTRUM)

परिचय ।—प्रसवके बाद पहली बारका माताका दूध ।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी स्वस्थ शरीरपर अबतक परीक्षा नहीं हुई । कोलोस्ट्रम मिला, पहले-पहल माताका दूध पीकर साधारणतः बच्चोंको उदरामय होता देखा जाता है और पतले दस्त आने लगते हैं । इसी लक्षणपर निर्भर कर उदरामयमें इससे फायदा होनेका आभास मिलता है ।

डा० बेलके मतसे—**हरा पानीकी तरह या पीले पानीकी तरह** श्लेष्मा मिला अथवा पित्त-मिला, परिमाणमें बहुत और खट्टी गन्धसे भरा मल, शरीरकी गन्ध खट्टी, स्तन पीनेके साथ या दाँत निकलनेके समय बीमारीका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कामोक्लेडिया डेण्टाटा

(COMOCLADIA DENTATA)

दूसरा नाम ।—गुयाउ (Guao)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्ते और छालसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— स्तनकी बीमारी ; कानकी बीमारी ; खसड़ा ; विसर्प ; आँखकी बीमारियाँ ; कुष्ठ रोग ; स्नायुशूल ; दाँतकी जड़की बीमारियाँ ; जखम ; चर्म्म रोग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—यह बहुत कुछ अंशमें रास-टक्सिकोडेण्ड्रनके सदृश क्रियावाली दवा है। शरीर हिलानेपर कम मालूम होना इस तरहका दर्द दोनोंमें ही मौजूद रहता है। फैलनेवाले विसर्प रोग (Erysipelas) में दोनोंकी ही आवश्यकता पड़ती है ; दोनोंमें जलन और खुजलीके साथ रोगवाली जगह लाल हो उठती है और दोनोंमें ही शारीरिक दुर्बलता, सुन्न हो जाना, बेचैनी वगैरह देखी जाती है ; परन्तु आँखपर क्रियाके सम्बन्धमें दोनों ही दवाओंमें पार्थक्य दिखाई दिया करता है। कामोक्लेडिया सेवन करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो अक्षि-गोलक गड़हेकी अपेक्षा बड़ा है और गड़हेसे बहुत बाहर निकल जाना चाहता है, इसके अलावा जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेसे सब लक्षण बढ़ जाते हैं, पर रासटक्स इसके विपरीत है अर्थात् जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेसे घट जाते हैं, (एपिसमें आँखके लक्षण सब जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेसे बढ़ जाते हैं)। कामोक्लेडियाके चर्म्मके लक्षण सब बहुत कुछ युफोर्बियमके सदृश हैं ; दोनोंमें ही विसर्प आक्रान्त अंशसे लाल रेखा चारों ओर फैल जाती है। वक्षस्थलके विशेष दर्दमें भी यह लाभदायक है।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, उठनेपर आँखके चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है।

आँख ।—आँखोंका स्नायुशूल ; दाहिनी आँखमें बहुत दर्द, आँखके गोलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह अपेचाकृत बड़ा हो गया है (ऐक्टिया, स्पाइजि) और मानो बाहर निकल पड़नेका उपक्रम करता है। गर्म जलते हुए चूल्हेके पास बैठनेपर तकलीफ़ और भी बढ़ जाती है (एपिस, घटती है—रस-टक्स)। बायीं आँखसे बहुत थोड़ी रोशनी दिखाई देती है। चेहरा फूला और दाहिनी आँख बाईं आँखकी अपेचा बाहर निकली हुई मालूम होती है। दियेकी लौ के चारों ओर एक लाल आलोकमय गोल घेरा दिखाई देता है (रियुटा, नीला घेरा—लेके ; हरा घेरा—फास, सिपि ; बहुतसे रङ्गोंका—नाइट्रम, स्ट्रैमो)।

वच ।—बायीं स्तन-ग्रन्थिमें तेज़ दर्द मालूम होता है। वचस्थलके दाहिने पार्श्वसे लेकर दाहिने बाँह और अंगुलीतक दर्द फैल जाता है। खाँसी, खाँसनेपर बायें वचके निचले स्थानपरसे पृष्ठफलकतक दर्द चलता है और मालूम होता है (नेट्र-सल्फ, बायें वचके ऊपरी अंशसे पृष्ठफलकतक दर्द चलता है—मार्टस-कम, पिक्स-लिक्कुइडा, थिरिडि, सलफर)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बाएँ कुचिदेशके पीछे अस्थि-संयोगस्थलपर बाहरकी ओर दबावकी तरह रह-रहकर दर्द होता है ; छूनेपर दर्द और चलनेपर आराम मिलता है। दोनों जानुसे गुल्फ़तक तेज़ दर्द फैलता रहता है। प्रबल ज्वरके साथ पैर और पैरके तलवेमें प्रदाह, दर्द जितना ही घटता जाता है, सूजन उतनी ही बढ़ती जाती है ; त्वचाका रङ्ग सफेद होता जाता है और पपड़ीकी तरह होकर फट जाती है और इस फटे हुए स्थानसे रस निकला करता है।

त्वचा ।—फैलनेवाला विसर्प ; जलन और खुजलीके साथ रोगवाली जगह लाल हो उठती है और उससे लाल रेखा चारों ओर फैल जाती है (युफोर्बि-आफिसि)। पामा (Eczema)—फुन्सियाँ या पीव-भरी फुन्सियाँ ; कड़े किनारेवाले जखमसे भरी (ग्रैफ, थाइरायड, हाइड्रोकोट, वेसिलिन-वेक्सिनिन, मैलेन्ड्रिन, ऐनाकार्ड)। पैरमें विसर्प।

वृद्धि ।—विश्रामसे, गर्म प्रयोगसे और रातके समय।

घटना ।—शरीर या रोगवाला अंश हिलानेपर, दबानेपर और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐनाकार्ड, रस-टक्स, रस-वेन, इयुफोर्बियम, एपिस (चक्षु-नष्ट) ।

शक्ति ।—१मसे ३० शततमिक क्रम ।

कानचियोलिनम

(CONCHIOLINUM)

दूसरा नाम ।—मदर आव पल, सोप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता ।—सर्दी और हड्डियोंके छोरकी ओरके प्रदाहके लक्षणमें यह दवा बहुत लाभ करती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैल्के-फास ; कैल्के-कार्ब ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

काण्डियुरैङ्गो

(CONDURANGO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस लता या गाछकी छालसे मदर टिञ्चर तैयार होता है । इसकी सूखी छालका विचूर्ण भी बना करता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—बहुत तरहके कैन्सर रोगमें यह लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

लक्षणावली

पाकस्थली ।—दोनों ओठोंका संयोग-स्थल फट जाता है और वहाँ जखम हो जाता है । ऊपरी पेटकी श्लैष्मिक-झिल्लीका बहुत दिनोंतक स्थायी प्रदाह और सर्दी ; पाकाशयिक झिल्लीका जखम और कर्कट रोग ; खायी हुई

चीज़ कै हो जाती है। दबानेपर कोई-कोई जगह बहुत कड़ी और फली मालूम होती है। पाकाशयमें लगातार ऐसा मालूम होता है, मानो आग जल रही है ; लगातार और बहुत ज्यादा दर्द हुआ करता है (आर्स, हाइड्रेस्टिस, इयुरेनियम, नाइट्रिकम, बिस्मथ)। अन्ननलीका संकोचन—वक्षोस्थिके पीछे लगातार जला करता है और ऐसा मालूम होता है, मानो खाये हुए पदार्थ आदि उसी स्थानपर अड़े हुए हैं (मर्क-कोर, फास, इग्ने)।

प्रत्यङ्गादि।—डा० ई० एम० हेलके मतसे काण्डियुरेङ्गो द्वारा मानव-शरीरमें कशेरुका मज्जाके क्षयकी वजहसे प्रत्यङ्ग आदिकी सञ्चालक पेशीमें एकदम निष्क्रियता आ जाती है (कैलि-आयोड, फास, नक्स, ऐसिड-पिक्रिक, हेलोडर्मा, सिफिलिनम, आर्जेण्ट-नाई, ऐल्यूमिन, आर्स, अरम)। डा० हेलने और भी कहा है कि जब हमारी दवाओंमें ऐसी और कोई भी दवा नहीं रहती, जिसके द्वारा मेरुमज्जाके क्षयकी वजहसे चलच्छक्ति राहित्यके सब लक्षण दूर हो सकें और जब यह दिखाई देता है कि काण्डियुरेङ्गोंसे उक्त रोगका सबसे अधिक सादृश्य है, उस समय चिकित्सकोंको इस रोगकी अन्तिम दवाकी परीक्षा कर देखना उचित है।

त्वचा और उपत्वक।—दुरारोग्य दुर्गन्ध रस निकलनेवाला जखम, ओंठ और स्तनका कर्कटीया अर्बुद या स्तनका कर्कट (कोना, फाइटो, क्रियो, ग्राइफोल-प्रैट) ; ओंठका संयोग-स्थल फट जाता है और त्वचामें जखम हो जाता है। दर्द—कतरने या डङ्क मारनेकी तरह और जलन पैदा करनेवाला, कट्-कट् झन-झन और सङ्कोचनकारी। जीभपर असम टेढ़े-मेढ़े किनारेवाले जखम पैदा हो जाते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स ; हाइड्रेस्टिस ; इयुरेनियम-नाइट ; बिसम ; ऐ-पिक्रिक ; हेलोडर्मा ; नक्स।

शक्ति।—१म दशमिक विचूर्ण या क्रम।

कोनायम ब्रोमेटम

(CONIUM BROMATUM)

दूसरा नाम।—ब्रोगोहाइड्रेट आव कोनिसिन।

उपयोगिता और आभास।—माथेमें खालीपन मालूम होना; मानसिक अवसाद; अकर्मण्यता प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कोनायम मैकुलेटम

(CONIUM MACULATUM)

दूसरा नाम।—हैमलक।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल होना बन्द होना चाहता है, ऐसे ही समय जड़को छोड़कर समूचा गाछ पीस डाला जाता है और अरिष्ट तैयार होता है। इसके उपचार या सारांशको कोनायम (Conium) कहते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मूत्राधारका प्रदाह; दमा; स्तनकी बीमारी; श्वासनलीका प्रदाह; आघात; कर्कटीया जखम; मोतियाबिन्द; ताण्डव; खाँसी; उपझिल्लीका प्रदाह या डिपथीरियाके बादका पक्षाघात; वाधक; विसर्प; आँखकी बीमारी; स्तनमें दूधकी अधिकता; व्याधिशङ्का; कामला; यकृतका बढ़ना; मनोविकार; सुन्न हो जाना; डिम्बाधारकी बीमारी; पक्षाघात; अन्त्रावर्त्तन प्रदाह; यक्ष्मा; गर्भावस्थामें स्तनका दर्द; पलकोंका पक्षाघात; गण्डमाला; शुक्रक्षय; बन्ध्यत्व; पाकाशयकी बीमारी; अण्डकोषकी बीमारी; हनुस्तम्भ या जबड़े अटकना; अर्बुद; जखम; दृष्टि-विकार; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता।—स्त्री या पुरुष दोनोंकी ही बुढ़ापेकी बीमारीमें और दृढ़ पेशीवाले या निष्क्रिय भावसे दिन बितानेवाले बलिष्ठ शरीरके मनुष्योंकी बीमारीमें यह लाभदायक है। वृद्ध मनुष्योंकी दुर्बलता; चोट या गिर जानेकी

वजहसे बीमारियाँ और बहुत अधिक इन्द्रिय सेवा या इन्द्रिय परितृप्तिकी कमीकी वजहसे पैदा होनेवाली बीमारियोंमें यह उपयोगी है।

आभास।—इसका रस सेवन करनेपर क्रमशः बढ़नेवाले पक्षाघातका संचार होता है और इसका यह गुण जाननेके कारण ही जगद्विख्यात दार्शनिक सोक्रेटीसने इसे पीकर अपनेको कैद करनेवाले अत्याचारियोंके हाथसे छुड़ाया था। (१) सरमें चक्कर आता है, सोने या शय्यापर करवट बदलनेके समय; (२) स्मरणशक्तिका घटना, विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका; निष्क्रियताकी वजहसे सब ग्रन्थियोंका छोटी होते जाना; (३) खाँसी, ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठमें एक छोटा अंश बहुत सूख गया है। रह रहकर बहुत खाँसी आती है,—खासकर रातके समय; (४) ऋतुके समय दोनों स्तनोंमें बहुत दर्द होता है और वे फूल उठते हैं; (५) पेशाब करनेमें बहुत तकलीफ होती है; पेशाब होते-होते रुक जाता है, फिर निकलने लगता है; (६) स्तन और अण्डकोषमें कड़ापन—खासकर कर्कट रोगवाले धातुवालोंके लिये; (७) आँखोंमें प्रदाह या किसी तरहकी आँखकी बीमारी न हो, पर रोशनी अच्छी न मालूम होती हो और आँखसे गरम जलका स्राव,—ये सात कोनायम मैकुलेटमके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्ति बहुत क्षीण, थोड़ा भी मानसिक परिश्रम असह्य मालूम होता है, विमर्ष चित्त, सामान्य कारणसे ही असन्तुष्ट हो जाता है। सभी विषयोंमें प्रधानता प्राप्त करनेका इच्छुक, कलह-प्रिय, हमेशा चिड़चिड़ाया करता है, कोई यदि किसी बातका प्रतिवाद करता है तो उसको बहुत क्रोध पैदा हो जाता है (ऐनाक, आस्टिर, अरम, अरम-मूर-नेट्र, कैमो, सिना, काक्य, फेर, हेलो, लाई)। सब तरहकी, मानसिक उत्तेजना मात्रसे सुस्ती आ जाती है। अकेला रहनेमें डरता है (ऐण्टि-टार्ट, आर्स; विस्मथ, क्लिमेट, हायो, कैलि-कार्ब, लैक-कैन, लिलि-टाइग्रिन, लाई, सिपि, इलेप्स, स्ट्रैम, वेरेट) अथवा दस आदमियों जाना या सङ्ग रहना इच्छा नहीं मालूम होता (आर्जेण्ट-नाई, आर्नि, कोका, जेलसि, कैलि-कार्ब, लाई)। मध्याह्नमें नींद खुलनेपर, जड़ बुद्धिकी तरह भाव प्रकट करता है। बातचीत करनेके समय अपने मनोभाव प्रकट नहीं कर सकता। पढ़नेमें या कामकाजमें

बिलकुल ही इच्छा नहीं रहती ; महा आलसी और उदासीन, किसी विषयमें भी उसे आनन्द नहीं मिलता। परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं रहती (ऐनाक, लाई, ऐसिड-नाई, ऐसिड-पाई, सिपि, फास ; बोलनेमें अनिच्छुक—डिजि, फास, आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, इग्ने, नैजा, स्टैन)। रह-रहकर चौंक उठता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है और सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो शय्या शून्यमें उड़ी जा रही है। शय्यामें करवट बदलनेके समय (बायीं ओर—साइलीसिया), थोड़ा भी माथा घुमानेपर (कैल्के, कैलि-कार्ब) या आँख हिलानेपर (ब्राई) या सर हिलानेपर (ब्राई, कैल्के) और बाईं ओर माथा टेढ़ा करनेपर सरमें चक्कर आता है (कोलो) ; रोगीको बाध्य होकर अपना माथा एकदम स्थिर रखना पड़ता है, वृद्धांका और जरायु या डिम्बाधार रोगकी वजहसे सरमें चक्कर आना (ऐक्टिया ; ऊपरकी ओर देखनेपर माथा घूमा करता है—पल्स, सिलिसिया ; नीचेकी ओर देखनेपर—फास, स्पाइजि, सल्फ ; चलनेके समय—नैट्र-म्यू, नक्स, फास, पल्स ; मानो समूची देह घूम रही हैं—ब्राई, कोना, सिक्लेमैन, पल्स, वैलि ; मानो शय्या घूम रही है—कोना ; आँख बन्द करनेपर या अन्धकारमें—आर्जेण्ट-नाई, स्ट्रैमो, थिरिडि ; बैठे-बैठे उठनेपर—ब्राई, फास, सैबाड, सल्फ ; माथा झुकानेपर—बेल ; शय्यासे उठनेपर—ब्राई, चेलिडो, काक्यु ; सीढ़ी चढ़नेके समय—कैल्के ; उतरनेके समय—बोरैक्स, फेरम ; सोये रहनेके लिये बाध्य होता है—ब्राई, काक्यु, फास)। सरमें दर्द—बेहोश करनेवाला, मालूम होता है, मानो ब्रह्मतालुके नीचे कुछ चीज है। सरमें दर्द होनेपर जी मिचलाता है और श्लेष्मामय वमन होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो ब्रह्मतालु आगमें अथवा धूपमें जल रही है। ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों कनपटियाँ आपसमें कसकर बँध गयी हैं। भोजनके बाद यह भाव बढ़ जाता है (ऐन्ट्रोप, जेल्स, ग्लोन)। माथेके एक पार्श्वमें ऐसा मालम होता है, मानो चोट लग गयी है। मस्तिष्कोदक या मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (एपिस, ऐपोसिन, कैल्के-फास, हेलिबो, आयोड, साइलीशिया, सल्फ, जिङ्कम) ; नींद खुलनेपर, भोजनके बाद और निर्मल हवा लगनेसे बढ़ जाता है ; दबानेपर, सोनेपर और आँख बन्द करनेपर घटता है (सोनेपर घटना—कैल्के-फास, हेलिबो)।

आँख ।—आँखमें किसी तरहका प्रदाह न रहनेपर भी रोशनीमें तकलीफ़ होती है, तेज या बत्तीकी रोशनीमें पढ़ने-लिखनेसे बढ़ जाता है ; बहुत अधिक आलोक असहनीय (सोरिन) ; रस-बटीकी वजहसे आँखोंका प्रदाह और आँखके सफ़ेद चेत्रके प्रदाह रूपमें बाहरके जखम आदि ; सामान्य जखममें भी या खाल उधड़ जानेपर, आँखोंमें रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती ; दर्द आदि रातमें बढ़ जाता है और सामान्य रोशनीकी एक रेखा भी आँखपर पड़ जानेसे बहुत तकलीफ़ होने लगती है ; अन्धेरे कमरेमें रहने या दबा देनेपर घट जाता है। पेशियोंके पक्षाघातकी वजहसे पलकें आप-ही-आप बन्द हो जाती हैं (जेलिस, कास्टि, सिपि,)। सोनेके लिये आँख बन्द करनेपर रोगीको पसीना होना आरम्भ हो जाता है (सिङ्को, आँख बन्द करते ही पसीना सूख जाता है और उत्ताप पैदा हो जाता है—सैम्बु) ; आँखका सफ़ेद अंश पीला हो जाता है (कैमो, सिङ्को, चेलिडो)। सभी चीजोंका रङ्ग लाल दिखाई देता है (बेल, क्रोकस, हायो, सार्सा, स्ट्रैम ; पीला दिखाई देता है—कैन्थ, डिजि, सैण्टो ; विविध रङ्गोंका दिखाई देता है—साइक्लू, कैलि-कार्ब, नाइट्रम, स्ट्रैमो ; हरे रङ्गका दिखाई देता है—डिजि, सिपि, स्ट्रान ; काला दिखाई देता है—कैम्फ)।

कान ।—तेज़ सलाई बेधनेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाई ; कर्ण-विवरमें टपक—हिप, फास, रास), खासकर निर्मल हवामें घूमनेपर। कानके छेदसे सड़े कागजकी तरह पीव मिला कानका मैल निकलता है ; कभी-कभी खून मिला मैल भी निकलता है (काले रङ्गका—पल्स ; कड़ा—लैके, पल्स, सेलिन ; रसदार—साइलिसिया ; फीके सफेद रङ्गका—लैके ; रसकी तरह—जिङ्क-आक्स)। बहरापन—कानका मैल निकाल देनेपर घट जाता है ; फिर मैल जम जानेपर सुननेकी ताक़त घट जाती है। दोनों कानोंमें भों-भों सों-सों शब्द (बेल, कास्टि, सिङ्को, किनिन-सल्फ़, ग्रैफ, लैके, लाई, मार्क, नैट्र-म्यू, नक्स, सिपि, सल्फ) ; शब्द-कातर, थोड़ी भी आवाज़ बहुत बड़ी मालूम होती है (ऐको, बेल, ऐसिड-फास ; प्रायः बहरापन—आर्स, कैल्के, हिप, फास)।

नासिका ।—नाकसे पीवका स्राव होता है (हिप, मार्क, आर्जेण्ट-नाई, पेट्रोल, कैलि-आयोड)। बार-बार छींक, छींकनेपर अकसर छेदसे खून निकल पड़ता है (बोवि ; नाक साफ़ करते समय या जोरसे साँस छोड़ते समय खूनका

स्राव होता है—आर्जेण्ट, बेराई, स्पञ्जिया ; पाखाना जानेके समय—कार्बो-वेज, फास ; गानेके बाद—हिप ; निद्राके समय—ब्राई, मार्क)।

मुखमण्डल।—मुँहका स्नायुशूल, रातमें होता है ; मुँहके दाहिने पार्श्वमें छेदनेकी तरह दर्द (मुखके बायें पार्श्वमें ऐसा ही दर्द—आँख, कान और माथेतक फैल जाता है—कोलो)। ओंठके कर्कट रोगके साथ (आर्स); ज्वालामय, डंक मारनेकी तरह और मानो तीर बिध रहा है, इस तरहका दर्द। दाँतके निचले भागमें खींचनकी तरह दर्द—गण्डास्थितक फैल जाता है, वायु सेवनके लिये चलनेके समय और क्षय हुए दाँतमें ठण्डी चीजें लगनेपर तकलीफ़ होती है। कण्ठनालीका संकोचन। गलेका जखम—ऐसा मालूम होता है मानो एक गुल्मकी तरह पदार्थ पेटसे कण्ठतक उतर रहा है (Globus-Hystericus—गुल्म वायु—इग्ने, ऐसाफिटिडा)।

पाकस्थली।—खट्टी डकार और पेट या छातीमें जलन होती है (आर्जेण्ट-नाई)। खायी हुई या न पची हुई चीजोंके स्वादकी डकार (ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, सिङ्को, पल्स, कार्बो-वेज) ; खट्टी या नमकीन चीजें आदि खानेकी और काफी पीनेकी बहुत अधिक स्पृहा। मिचली—प्रति बार भोजनके बाद (ऐमोन-कार्ब, लैके, मार्क, नक्स, ओलि-ऐन, फास, पल्स, रास, सिपि, साइलि, स्टैन, सल्फ) या सन्ध्याके समय (ऐसिर, कैल्के, साइक्लामेन, कैलि-बाई, पल्स, रैनान) श्लेष्मामय वमन (आर्स, बेल, बोरे, कोना, सिङ्को, डिजि, डाल्का, इपिक, मार्क, नक्स, पल्स, सैङ्ग्वि, सल्फ, वेरैट)। रह-रहकर चिकोटी काटनेकी तरह दर्द (आर्नि, ऐसेट, कैल्के, कैनाब, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, प्लैट, पल्स, कोलो, नक्स)।

अन्त्राशय।—उदरमें कतरनेकी तरह दर्द (कोलो, वेरैट)। सुई बेधनेकी तरह दर्द, उदरसे वक्षके दाहिने पार्श्वतक दर्द फैल जाता और मालूम होता है। दूध पीनेपर उदर फूल उठता है (कार्बो-वेज)। यकृत और यकृतके चारों ओर लगातार दर्द बना रहता है (वेराई, कैलि-बाई, लाई, सिपि)। पुराने पाण्डु रोगमें लीवरमें दर्द। कोखदेश मानो कस जाता है, मानो जोरसे कसा हुआ है ऐसी खींचन मालूम होती है (ऐको, कैल्के, कैमो, लाई, ऐसिड-म्यू, नक्स, रास-रैड)। पेटमें हड़-हड़ गुड़-गुड़ शब्द या आँतोंकी गड़गड़ाहट (ऐको, ऐलो, आर्स, ऐसा ; कार्बो-वेज, कोलो, जेल्सि-लुटिया, ग्रैटि, लाई, नेट्र-सल्फ) ; उदरसे ठण्ढी हवा निकलना, वायु निकलनेके समय मलद्वारमें ठण्डक मालूम होती है।

मलांत्र और मल ।—कब्जियत, बार-बार वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता (ऐनाक, लाई, नक्स)। एक दिनका नागा देकर कड़ा पाखाना हुआ करता है। सुस्त करनेवाला उदरामय, मल पतला और गांठ-गांठ (लाई, नक्स) ; पानीकी तरह अजीर्ण मल (ऐब्रोट, सिङ्को, फेरम, आइरिस, पोडो)। पाखाना होनेके समय मलद्वारमें गर्मी और जलन मालूम होती है और ठण्डा वायु निकलता है। पाखाना हो चुकनेपर कमजोरी मालूम होती है (नक्स ; फास); कलेजा धड़कता है और शरीर कांपा करता है (सुस्ती—ड्राम्बिड, वेरेट ; हृद्स्पन्दन—आर्स)।

पेशाब ।—पेशाब करनेके समय तकलीफ़ मालूम होती है ; पेशाब होते-होते रुक जाता है, कुछ देर बाद फिर निकलना आरम्भ होता है (कास्टि, क्लिमेट, डाल्का, लिडम, ओसो, ऐसिड-फास, सल्फ़, थूजा)। वृद्ध मनुष्योंकी मुखशायिक ग्रन्थिके बढ़ जानेकी वजहसे पेशाब करनेके समय बून्द-बून्द पेशाब निकला करता है (Dribbling of urine due to hypertrophy of the Prostate in old men. Dr.—Nash कोपेवा) ; कभी-कभी रक्तमिला पेशाब निकला करता है (कैन्थ, नक्स)। पेशाबके समय मूत्रनालीके भीतर कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैनाब, कैन्थ, कैप्स, डिजि, ऐसिड-फास)।

पुं-जननेन्द्रिय ।—आघात या दब जानेके कारण अण्डकोषका फूलना (आर्नि), कोष लोहेकी तरह कड़ा मालूम होता है। रमणेच्छा बहुत ज्यादा, पर शक्ति बहुत कम रहती है, इन्द्रिय-सेवन या इन्द्रिय सेवनसे परितृप्ति न होनेकी वजहसे बीमारियाँ। बहुत जल्दी वीर्यस्खलन हो जाता है, यहाँतक कि स्त्रीको देखने या स्त्रीके पास जानेसे ही वीर्यपात हो जाता है। पाखाना फिरनेके समय सामान्य उत्तेजनासे ही मुखशायिका ग्रन्थिसे रस निकलने लगता है (इस्कु, ऐल्यू, ऐनाक, इरिञ्जियम ; सेलिन, साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु—स्राव बहुत थोड़ा या होता ही नहीं ; बहुत देरसे आरम्भ होता है, बहुत थोड़ा स्राव होकर दो-एक दिनमें बन्द हो जाता है ; ऋतुके समय शरीरपर एक तरहके लाल दाने निकलते हैं और ऋतु समाप्त होते ही वे भी गायब हो जाते हैं (डाल्का) ; सर्दी लगने या ठण्डे पानीमें हाथ डुबोनेपर रज होना रुक जाता है (लैक-डिफ्लो, ठण्डे पानीमें पैर डुबोनेपर—नेट्र-म्यू)। प्रसवके बादका स्राव रुक जाना (सिकेलि)। ऋतुके समय जरायुके भीतर डङ्क मारनेकी तरह दर्द होता है और सोनेके

समय सरमें चक्कर आता है। जरायु-प्रदेशमें लगातार दर्द और जलन बनी रहती है—मानो उसमें फोड़ा हो गया है। ऋतुके समय आँतें आदि मानो नीचेकी ओर धक्का देती हैं (ऐमोन-कार्ब, बेल, बोर, मस्कस, ऐसिड-नाई, कैलि-बाई, नक्स-मस, प्लैट, सिपि) और उक्त देशमें बहुत खींचन मालूम होती है या तलपेटमें अकड़न होती है (ग्रेफ); दोनों स्तन फूले और दर्द-भरे रहते हैं (कैल्के, कैलि-बार्ब, लैक-कैन)। प्रदर—ऋतुका स्राव ठीक दस दिनके बाद आरम्भ हो जाता है (बोर, बोवि)—स्राव कषाय (Acrid) और जखम पैदा करनेवाला होता है। कभी रक्ताक्त या लाल और कभी-कभी सफेद रङ्गका होता है। स्राव बहुत ज्यादा, गाढ़ा और बीच-बीचमें रुक जाता है, स्राव लगनेकी वजहसे अपत्य-पथमें जलन हुआ करती है (क्रियो, पल्स)। जरायु-भ्रंश। बन्ध्यत्वके साथ ऋतुस्तम्भ। स्तनमें कर्कट (Mammary Cancer)—स्तनके साथ सब बहुत कड़े मालूम होते हैं और उनमें फाड़नेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है और उसके भीतरकी ग्रन्थि सबमें बहुत दर्द होता है, उनको छुआ नहीं जा सकता (ऐस्टि-रियुब); जरायुका कर्कटार्बुद (Scirrhous Tumor—स्तनका कर्कटार्बुद हो या जरायुका हो हो वह यदि दब जाने या चोटकी वजहसे हो तो और विशेषकर यदि यह लोहेकी तरह कड़ा हो, तो कोनायमसे अवश्य ही फायदा होगा, स्तन लोहेकी तरह कड़ा—कोना, साइलि, ऐस्टि-रियूब, कैल्के, कार्बो-ऐनिम ; फाइटो ; स्तनमें तेज अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द—ऐस्टि-रियुब—डाक्टर नैश)।

श्वास-यंत्र।—रातमें सूखी और शरीरको हिला देनेवाली खाँसी ; गर्भावस्थामें खाँसी (कास्टिकम, कैलि-ब्रोम), वृद्धि—रातमें सोनेपर (आर्स, हायो, पेट्रोल, इपि, कैलि-बाई, ऐसिड-नाई ; पेरिस, फास, पल्स, सिपि, सिलि, सैबाड, टेरिब ; चित्त होकर सोनेपर—नक्स, फास ; माथा नीचाकर सोनेपर—ऐमोन-म्यू, बाईं करवट सोनेपर—इपिक, पेरिस ; दाहिनी करवट सोनेपर—ऐमोन-म्यूर, स्टैन); बोलने (ऐनाक, कास्टि, लैके, मार्क स्टैन, बेराई, हिप, ऐसिड-म्यूर, नैट्र-म्यूर) या हँसनेपर (सिङ्को, ड्रोस, फास, स्टैन ; गर्भावस्थामें वायुनलीमें पिट्-पिट् कर खाँसी—नक्स-मस, सैबाई; खाँसीकी वजहसे कर्णस्रावकी आशंका—लैके)। दौड़ते-दौड़ते हाँफ उठता है (ऐगार, आर्स बेल, कार्बो-वेज, लिड, लाई, नैट्र-सल्फ, नक्स, फेलैन, पल्स, रास, सेलिन, सिपि,

स्टैन, स्ट्रैन ; तेज़ चलनेपर हाँफ उठता है—ऐङ्गस, अरम, कास्टि, पल्स)। खाँसी—रह-रहकर खाँसीका प्रकोप पैदा हो जाता है ; वायुनलीके भीतर एक छोटेसे स्थानमें शुष्कताकी वजहसे (कण्ठनलीमें सूखेपनकी वजहसे—ऐक्ट) ; छाती और कण्ठमें पिट-पिट करता है (आयोड) और बहुत बार खाँसनेके बाद तब कहीं श्लेष्मा निकलता है (ब्राई सिङ्को, किनिन-सल्फ़, युफ्रे, कैलि-काब, लैके, बोर, बोवि, सिना, इग्ने, मैग-कार्ब, सिपि, सेनेगा, स्टैन, जिङ्कम)। पानी आदि पीने और मलत्यागके बाद हृत्स्पन्दन (आर्स)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—कलाईमें कड़कड़ाहट होती है (कोहनी—कैल्मिया ; हिलानेपर कलाईमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह सन्धिभ्रष्ट हो गयी है—ब्राई, रियुटा), चलनेके समय जानु-सन्धि मटमट करती है (कावयु ; बाईं ओरकी वंक्षण-सन्धि मटमट करती है—कावयु)। पैरका तलवा ठण्डा मालूम होता है, जानुदेशमें वातसे पैदा हुआ दर्द, मानो कुछ छेद रहा है या ऐसा दर्द, मानो कुछ सट गया है ; कुछ देरतक बैठनेके बाद पहले-पहल चलनेपर दर्द बढ़ा हुआ मालूम होता है और मनमें ऐसा अनुभव होता है, मानो पेशियोंके अगले भाग सब बहुत छोटे हो गये हैं (ऐमोन-म्यूर, ऐमोन-कार्ब, कास्टि, साइमिक्स)।

त्वचा ।—चोट लगने या दब जानेके बाद अण्डमें खींचन होती है और उनमें कनकनी पैदा हो जाती है ; उनमें तेज़ शलाका बेधनेकी तरह तकलीफ़ होती है ; कैन्सर हो जाता है, ऐसे धातुवाले व्यक्तियोंकी गाँठें सब फूल जाती हैं और लोहेकी तरह कड़ी हो जाती हैं। स्तन-ग्रन्थि और अण्डकोष दोनों ही लोहेकी तरह कड़े हो जाते हैं (ऐस्टि-रियुब)। बगलकी ग्रन्थियोंमें दर्द हो जाता है और रोगवाले पार्श्वका बाँह सुन्न हो जाता है, समूचे देहकी त्वचाकी आभा नीली हो जाती है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैम्फो, डिजि, ऐसिड-हाइड्रोसियानिक, लैके, नक्स, ओपि, प्लम्ब), काले रङ्गका जखम—रक्तभरा, सड़ी गन्धभरा रसस्राव हुआ करता है (आर्स, नीला रङ्ग—आर्स, ऐसाफि, अरम, लैके, मर्क)। रसभरे दादकी तरह उद्भेद (कैल्के, डाल्का, ग्रैफ)। अर्बुदमें शूल बेधनेकी तरह दर्द ; रातमें तकलीफ़ बढ़ जाती है। क्या दिन और क्या रात—सोते ही पसीना हो जाता है, शरीर तर हो जाता है (सिङ्को, जागनेवाली अवस्थामें लगातार पसीना बहा करता है और सोते ही पसीना सूख जाता है)। सैम्बुकस—बहुत ज्यादा व्यायाम करनेके कारण उत्पन्न आमवात।

ज्वर।—शीत—बहुत जाड़ा मालूम होता है और शीतसे कातर रहता है; सवेरे और तीसरे पहर ३ और ५ बजेके भीतर; रोगी हमेशा उत्तापकी आकांक्षा किया करता है, खासकर धूपकी गर्मीकी (ऐनाक); सवेरे भीतरी जाड़ा और तीसरे पहर कम्पन; उत्ताप—रोगीके अन्तरमें और बाहर बहुत उत्ताप मालूम होता है। पसीना—लगातार दिन-रात, रोगी सोते ही या आँख बन्द करते ही पसीनेसे नहा जाता है; पसीना बदबूदार (बैराइ, कार्बो-ऐन, डाल्का, ग्रैफ, लैके, लाइ, मर्कुरियलिस, मर्क, ऐसिड-नाइ, नक्स, रास, सिपि, साइलि; पसीनेमें प्यासकी गन्ध—बोवि, लैके, लाइ; गन्धककी गन्ध-मिला—फास; पेशाबकी गन्ध—बार्बा, कैन्थ, कोलो, ऐसिड-नाइ; घोड़ेके पेशाबकी तरह—ऐसिड-नाइ)।

वृद्धि।—रातमें सोनेके समय, शय्यामें करवट बदलने या शय्यासे उठनेके समय; अधिक इन्द्रिय सेवनकी वजहसे; इन्द्रिय परितृप्तिके अभावसे; विवाह न करनेके कारण और आर्त्तव-स्रावके पहले और समय।

सम्बन्ध—सदृश।—स्तन फूलनेके सम्बन्धमें—ऐस्टि रियुब, साइलिसिया, कैल्के-आक्सेलेट; ऋतु-स्रावकी कमी—ग्रैफ; चोट आदिकी वजहसे सूजनके सम्बन्धमें—आर्नि, रास; गांठोंका फूलना—लैक, सोरिन; प्रसवके बादका स्राव रोध होना—नक्स, हायो, पल्स, सिकेलि; ऊर्द्धगामी या क्रमशः बढ़नेवाला पक्षाघात—ऐसिड-हाइड्रो, मैंगे; निम्नगामी—मर्क; पाखाना होनेके बाद सुस्ती—नक्स, फास।

प्रतिविष या दोषघ्न (Antidotes)।—काफिया, डाल्का, ऐसिड-नाइ इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे सहस्र शततमिक क्रम। इसके उच्च क्रमसे जितना फायदा होता है, निम्नसे उतना नहीं होता।

कानवैलेरिया मेजैलिस

(CONVALLARIA MAJALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके पहाड़ी कमलसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अतिसार ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; गर्भिणीका वमन ; अपत्य-पथमें खुजली इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—रूस देशके चिकित्सक बहुत दिनोंसे हृत्पिण्डकी बीमारीमें इस दवाका व्यवहार करते आये हैं । डा० नैशने जरायु-प्रदेशमें अत्यन्त दर्द और सहानुभूतिक हृत्स्पन्दनमें इसके प्रयोगसे विशेष फल पाया है । हृत्पिण्डके शोथ रोगमें और जरायु-प्रदेशमें दर्द अधिक रहनेपर वे कानवैलेरियाका व्यवहार कर सफल हुए हैं । उदरमें मानो बच्चेकी बँधी हुई मुट्ठीकी तरह कोई चीज़ धक्का दे रही है (एरण्डा-मैरिटेनिका, कैल्के-फास, कैनाबिस सैटाइवा, क्रोकस, सैबाइना, सलफर और थूजाकी तरह)। कानवैलेरियाका एक प्रकृतिगत लक्षण यह है कि "चित्त होकर सोनेपर" ये लक्षण प्रकाशित होते हैं—यह कानवैलेरियाका एक विशेषत्व है । हृत्पिण्डके गड़हेमें जब अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे उसकी प्राचीर फैल जाती है, परन्तु उसके उपयोगी घनत्व नहीं प्राप्त होता और शिरामण्डलीमें शोणित फैलनेकी तैयारी हो जाती है, उस समय कानवैलेरियासे बहुत अधिक लाभ होता है ।

लक्षणावली

मन ।—विषन्न चित्त । पढ़नेंके समय मन दूसरी ओर खिंच जाता है । चिन्ता-शक्ति बहुत थोड़ी रहती है (ऐसिड-नाई, इथ्यू, एपिस, क्लिमेट, कैलि-नाई, मैग-फास, नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, ओलो-केष, ओन्समोड, साइलि, सल्फ, आक्साइड्रोप, टियुबर), सामान्य कारणसे ही दुःख प्रकट करता है । कोई बात पूछनेपर रञ्ज होता है (कोलो) ।

मस्तक।—सरमें धीमा-धीमा दर्द; माथेके ब्रह्मतालुमें भार मालूम होता है; सीढ़ीपर चढ़ने या खाँसकर कफ़ निकाल देते समय दर्द बढ़ जाता है और वायु सेवनसे घटता है। ज्वर मिला रहनेपर सरमें दर्द; एकाएक किसी तरह देह हिल जानेपर बढ़ जाता है और विश्रामसे घटता है। चलनेके बाद घरमें प्रवेश करनेपर घरके चारों ओर धूसर वर्णके बिन्दु सब उड़ते हुए दिखाई देते हैं।

मुखमण्डल।—मुखमण्डल और ओंठमें दर्द; ओंठ और नाकमें घमौरीकी तरह जलभरी गुटिकाएँ निकल आती हैं और जीभके अगले भागमें लाल बिन्दु सब दिखाई देते हैं। जीभ बहुत लाल और दर्द-भरी मालूम होती है, मानो कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती है। मुँहका स्वाद तांबेके जङ्गकी तरह होता है (ऐगार, ऐस्पार, काक्यु, कूप्रम, नेट्र-मूर, रास)। पानी बहुत कड़वा मालूम होता है (सिङ्को, पल्स)। सवेरे दाँत-पर-दाँत कड़मड़ाता है। साँस लेनेके समय कण्ठनालीका पिछला अंश सूखा मालूम होता है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—सवेरेके समय मिचली और वमन। आँतोंमें बहुत तेज़ शूलका दर्द; यन्त्रणा एकाएक पैदा हो जाती है और धीरे-धीरे घटती है (पल्स, एकाएक पैदा हो जाती है और गायब हो जाती है—बेल; धीरे-धीरे आती है और धीरे-धीरे जाती है—स्टैन)। तलपेटमें लगातार धीमा दर्द बना रहता है और दर्द मालूम होता है; खाँसनेपर अधिक दर्द मालूम होता है। कमरका कपड़ा बहुत ही कसा मालूम होता है (ऐमोन-मूर, अरम, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, स्पञ्जि, सल्फ), प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द मालूम होता है। उदरके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो बच्चेकी मुट्ठीकी तरह कुछ घूमता-फिरता है (एरण्डी, मेरि, केलि-फास, कैनाब-सैट, क्रोकस, सैबा, सल्फ़, थूजा)। उदरमें कुलकुल शब्द और दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेपर दर्द मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दाहिनी कोखमें प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द, मानो जरायु नीचे लटककर पीछेको झुक रहा है और मलान्त्र तथा मलद्वारपर दबाव डाल रहा है। असह्य वेदना और हृदयका धड़कना। कटि-अस्थि और मेरु-दण्डके नीचे सन्धि-स्थलके अन्तिम भागमें बहुत दर्द, उरुमें होकर दर्द पैरतक फैल जाता है। पेशाबके द्वार और अपत्य-पथमें खुजलाहट।

हृत्पिण्ड ।—व्यायाम करनेके समय छातीके भीतर धड़फड़ाहट होती है और उसके बाद मुँह लाल हो उठता है; ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी गति रुक गयी है; कुछ देर बाद फिर उसकी गति आरम्भ हो जाती है (अरम); रोगीको उसी समय बहुत सुस्ती मालूम होती है। हृत्पिण्डका अन्तर्वेष्टनी-प्रदाह और शायितावस्थामें बहुत श्वासकृच्छ्रता पैदा हो जाती है। नाड़ी पुष्ट नमनीय रहती है और उसकी गति सविराम रहती है। ये सभी लक्षण सोनेपर घट जाते हैं।

पीठ और प्रत्यङ्गादि ।—पीठमें लगातार ऐसा दर्द बना रहता है, मानो चोट लगी है, हाथका काँपना, कलाई और गुल्फ-सन्धिमें लगातार दर्द ।

ज्वर ।—शीत, उत्ताप और पसीना—एक दिन पूर्वाह्नमें और दूसरे दिन अपराह्नमें पैदा होता है। इससे पैदा हुए सविराम ज्वरमें उत्तापकी अधिकता पैदा हो जाया करती है, कारण शीतावस्था और पसीनेकी अवस्था प्रायः अस्पष्ट रहती है। बोखारके समय सरमें दर्द और पीठ तथा दोनों पैरोंमें लगातार दर्द बना रहता है।

निद्रा ।—अधिकांश लक्षणोंके साथ औंघाई मिली रहती है (नक्स-मस्केटा)।

वृद्धि ।—गर्म घरमें ।

घटना ।—घरके बाहरकी हवा लगनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐडोनिस, क्रेटिगस, डिजिटेलिस, लिलियम-टाइग्रिनम ।

शक्ति ।—३रा दशमिक क्रम। हृत्पिण्डकी अवसन्नता होनेकी सम्भावनामें मूल अर्क ५-७ बून्दतक व्यवहार किया जाता है।

कानवलवूलस आर्वेन्सिस

(CONVALVULUS ARVENSIS)

दूसरा नाम ।—कानवलवूलस ; ब्राइड-वीड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता ।—भोजनके बाद डकार, शूल, उदरामय वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कानवलवूलस डुआर्टिनस

(CONVALVULUS DUARTINUS)

दूसरा नाम ।—मार्निङ्ग ग्लोरि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूलसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—वात, सामनेकी ओर झुकनेपर कमरके बाएँ पार्श्वकी पेशियोंमें दर्द ; पेटमें बहुत वायु होना ; मूलग्रन्थिका शूल ; बाहुमूलमें दर्द ; कमरमें दर्द ; आँखोंका प्रदाह ; सर-दर्द ; सरमें चक्कर आना और सवेरेके वक्त सब लक्षणोंका बढ़ना और ठण्डे पानीसे नहानेपर घटना लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—६ और ३० शततमिक ।

कोपेवा आफिसिनेलिस

(COPAIVA OFFICINALIS)

दूसरा नाम ।—कबाब चीनी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सुरासारमें इसके बिना पके सूखे फलका सारांश या धूनाकी तरह पदार्थसे मदर टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—मुँहासे ; मलद्वारमें खुजली ; मूत्रस्थलीकी उग्रता ; श्वासनालीका प्रदाह ; सर्दी ; खाँसी ; मूत्राधारका प्रदाह ; रक्तामाशय ; नासूर ; पाकाशयका प्रदाह ; प्रमेह ; अर्श ; हाम ; नाकसे खून गिरना ; मूत्रनालीका प्रदाह ; आमवात ; योनिद्वारका प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—प्रमेह (सूजाक) रोगकी यह एक बहुत ही प्राचीन दवा है । जननेन्द्रिय, मूत्रनाली और वायुनली-भुजकी श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर ही इसकी क्रिया विशेष रूपसे प्रकट होती है । वृद्धोंकी होनेवाली मूत्रस्थलीकी बीमारीमें इससे ज्यादा फायदा होता है । मूत्रस्थलीके ग्रीवा मुखमें और मूत्रनालीमें जलन, कसैले गुणके दूधकी तरह स्राव और मूत्रनालीके मुखका प्रदाह और सूजन वगैरह, कोपिवाकी मूत्र-यंत्रपर क्रियाके फल हैं । पुराने वायुनली-भुज प्रदाहसे पैदा हुई खाँसीमें बहुत ज्यादा, कुछ हरे रङ्गका और बहुत बदबूदार कफ़ निकलनेपर कोपिवासे बहुत फायदा होता दिखाई देता है । चमड़ेके ऊपर भी इसकी क्रिया प्रकट होती है और इसके द्वारा एक तरहका आमवात उत्पन्न हो जाया करता है । मलद्वारकी खुजली, विशेषकर उसके साथ ही अर्श, इसका अन्यतम लक्षण है । आगे लिखे, कई इसके निर्णायक लक्षण हैं:—(१) वायुनलीकी ज्वाला पैदा करनेवाली खाँसी और ज्यादा परिमाणमें पीबकी तरह कफ़ निकलना । (२) खाँसी और स्वरनालीमें सूखापन और त्वचा क्षय होनेकी तरह मालूम होना ; रोगीका स्वर कर्कश हो जाता है और स्वरभङ्ग पैदा हो जाता है । सवेरे बढ़ना । (३) मूत्रनली और मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशमें जलन मालूम होती है ; बार-बार पेशाबका वेग होता है, यहाँतक कि अभी एक बार पेशाब कर आया है, पर फिर पेशाब लग आता

है; पेशाब करनेमें तकलीफ़ होती है और बून्द-बून्द कर पेशाब होता है; पेशाब गदला और कड़वा होता है। (४) मूत्रनलीका प्रदाह; मूत्रमार्गके द्वारपर मानो चोट लग गयी है—इस तरहका दर्द होता है; यह दर्द पेशाब करनेके पहले और बाद होता है; पेशाबके समय जलन होती है; पेशाब पीला और पीबकी तरह होता है। पेशाबमें एक तरहके फूलकी गन्ध हो जाती है। (५) आमवात—गर्मी मालूम होना और कुटकुटी पैदा हो जाना।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेके पश्चात्‌भागमें दर्द—पीछेकी ओर माथा लटकाकर कलर द्वारा रोगवाली जगह दबा रखनेसे और धीरे-धीरे दबानेपर आराम मालूम होता है; वृद्धि—सन्ध्यामें और रातके समय; तकियेपर माथा रहनेसे दर्द असह्य मालूम होता है; सवेरे ठण्डे पानीसे माथा धोनेपर एकाएक कनपटीमें सलाई बेधनेकी तरह दर्द होता है। केश झड़ जाते हैं (ऐण्टि-क्रूड, बेराई, कैल्के, कोना, फेर, ग्रैफ, हिप, इग्ने, क्रियो, लैके, लाई, मार्क, नैट्र-मूर, ऐ-नाई, फास, प्लम्ब, सिकेलि, सिपि)। मूर्द्धदेशके केशोंसे ढके अंशको एकदम छुआ नहीं जाता (कैल्के-कास्टि, चायना, ऐल्यू, मार्क, फाइटो) तेज आवाज़ बहुत कष्टदायक मालूम होती है। रातमें नासारन्ध्रसे बहुत ज्यादा परिमाणमें सड़ी गन्धभरा गाढ़ा श्लेष्मा गलेमें प्रवेश कर जाता है।

पाकस्थली।—सन्ध्याके बाद, सोनेपर भूख लग आती है। सभी खानेकी चीजें नमकीन मालूम होती है (आर्स, कार्बो-वेज, क्यूप्रम, आयोड, कैलि-कार्ब, मार्क, मार्क-कोर, ब्रोमम, नक्स-मस, ऐण्टि-टार्ट, जिङ्कम)। श्लेष्माके साथ खाये हुए पदार्थ अनपची अवस्थामें मुँहसे निकल जाते हैं। भोजनके बाद ऊपरी पेटमें भार मालूम होता है और वह फूलता है (बोर, कार्बो-वेज, कैमो, सिङ्को, डाल्का, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, लैके, लाई, मार्क, नैट्र-मूर, नक्स-वोम, फास, ऐसिड-फास, रास, सिपि, साइलि)। ऋतुके बाद या आमवात अच्छा हो जानेपर पेटकी बीमारी पैदा हो जाती है।

अन्त्राशय आदि।—प्लीहा प्रदेशमें दबावकी तरह दर्द, यह दर्द कभी-कभी टपक जैसे दर्दमें परिणत हो जाता है। उदरमें जलन मालूम होना, तलपेटमें आवाज़ या गड़गड़ाहट या कलकल गड़गड़ शब्द। कब्जियत, बकरीकी मींगीकी तरह छोटा-छोटा गांठमय मल, इसके साथ ही (ग्रैफ,

हाइड्रैस), अन्त्रशूल और शीत या जाड़ा अच्छा न मालूम होना। मलद्वारमें :असहनीय जलन मालूम होना ; अर्शकी वजहसे मलद्वारकी खुजलाहट (ऐसिड-म्यूर)।

पेशाब ।—बार-बार पेशाबका वेग होता है, पैर पेशाब नहीं होता ; मूत्रनालीके संकोचनकी वजहसे पेशाब बूंद-बूंद निकलता है (कैनाब, वैन्थ, क्लिमेट, कोना, डाल्का, युफोर्ब, नक्स, पल्स, स्टैफ, कैप्स, कास्टि, कैलि-कार्ब टेरिब)। पेशाबके पहले और बाद मूत्रनालीमें सुरसुरी पैदा हो जाती है। दर्द होता है और इस ढङ्गकी जलन मालूम होती है, मानो आग छू गयी है, (कैनाब, कैप्स, कैन्थ)। खूनका पेशाब (टेरिब, किनिन-सल्फ, हैमा) ; पेशाब फेन-भरा, मलिन, पीली आभा लिये और उसमें वायोलेट फूलकी तरह गन्ध आती है (लैक्टियुका, नक्स-मस, टेरिब)। प्रमेह—पीले रङ्गका पीवकी तरह स्राव—नैट्र-सल्फ)। मूत्राशय, मलान्त्र और मलद्वारमें दर्दके साथ पेशाब रुक जाना।

पुं-जननेन्द्रिय ।—अण्डकोष फूलता और कड़ा हो जाता है। मूलाधारकी सुखशायिका ग्रन्थि बहुत कड़ी हो जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—मूत्रनालीका मुँह, योनिका वहिर्देश और मलद्वारमें खुजली हो जाती है। दर्दके साथ रजःस्राव और दूधकी तरह, कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव होता है। कभी-कभी योनिसे खून मिला पीवकी तरह भी स्राव हुआ करता है।

श्वास-यन्त्र ।—वायुनलीमें सूखापनके साथ सूखी और तकलीफ़ देनेवाली खाँसी ; बहुत ज्यादा परिमाणमें धुएँके रंगका पीवकी तरह और बदबूदार कफ़ निकलता है (लाई, फास, स्टैन, सल्फ)। खून मिला कफ़, वायुनलीभूजकी सर्दी, बहुत ज्यादा परिमाणमें हरे रङ्गका श्लेष्मा निकलता है।

त्वचा ।— शरीरके कितने ही स्थानोंमें बड़े लाल-लाल दाग, इसके साथ ही मलका कड़ापन और सामान्य बोखार। विसर्पकी तरह प्रदाह, विशेषकर उदरके चारों ओर। गाढ़ा या चमकीले लाल रङ्गका मसूरकी दालके आकारका ऊँचा; परस्पर मिल-जानेवाला गुच्छेकी तरह उद्भेद, उसमें असह्य खुजली होती है। बच्चोंका पुराना आमवात रोग।

ज्वर।—ऐकाहिक ज्वर ; पैरके तलवेके ऊपर दर्दके साथ दोपहरके पहले जाड़ा लगना ; तीसरे पहर सारे शरीरमें उत्ताप और प्यास, रोगी ठण्डा पानी पीना चाहता है ; ज्वरकी शीतावस्थामें पैरके तलवेके मध्य भागमें चलनेके समय बहुत दर्द होता है, पसीनेमें बहुत तेज़ गन्ध रहती है ; रातमें खट्टी गन्ध मिला और सवेरे बिना गन्धवाला पसीना निकलता है।

सम्बन्ध—सदृश।—प्रतिविष या दोषघ्न।—बेल, मार्क सल्फ़, कैम्फ़ो, कैल्केरिया। सदृश गुणवाली दवाएँ—कैनाब, कैन्थ, क्यूबिन, इरिजि, वारोस्मा, कैलि-आयोड, सिपि, सेनेसियो। कैन्थरिसकी अपेक्षा इसकी क्रिया हलकी होती हैं। सिपियासे इसका पार्थक्य नहीं है।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम। उच्चतर क्रम भी विशेष फलदायक होता है।

* * *

कोरालियम रूब्रम

(CORALLIUM RUBRUM)

दूसरा नाम।—लाल प्रवाल ; मूंगा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इससे पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं :—दमा ; सर्दी ; उपदंश ; खाँसी ; उद्भेद ; ग्रन्थियोंका प्रदाह ; मूर्च्छा-वायु ; छोटी माता ; विचर्चिका ; बैंगनी रङ्गकी खुजली ; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—कच्छु-विष (Psora) और उपदंश विष, जिनके शरीरमें मिले हुए हैं, उनके लिये उपरोक्त औषध बहुत ही उपयोगी है। स्नायु-प्रधानता और स्नायुके विकारकी वजहसे खाँसीपर इसकी प्रधान क्रिया है। इसके द्वारा नाना प्रकारके चर्म रोग पैदा होते हैं और जितने दाने निकलते हैं, वे प्रायः लाल मूंगेके रङ्गवाले निकलते हैं। उपदंश विषके कारण तलहत्थीमें जो सब दाने या चकत्ते निकलते हैं, वे

पहले लाल, इसके बाद गहरे लाल और अन्तमें तांबेके रङ्गके हो जाते हैं। इसलिये यह उन सब उपदंशसे पैदा हुए जखमोंमें भी उपयोगी है, जिनका रङ्ग तांबेकी तरह लाल होता है। इसकी खाँसी हूप खाँसीका आकार धारण कर लेती है। खाँसी होनेके पहले श्वासकष्ट और इसके बाद बहुत सुस्ती पैदा हो जाती है; रोगी निर्जीव-सा हो पड़ता है। इसके लिये उपयोगी खाँसीका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह भी है, कि मिनट-मिनटपर खाँसी आती है अर्थात् दिनभर खुक-खुककर खाँसी लगातार आया करती है। कभी-कभी इस खाँसीका प्रकोप इस तरह लगातार पैदा होता है, कि बच्चेको सांस लेने या छोड़नेका अवसर नहीं मिलता—उसका चेहरा बैंगनी या काला हो जाता है। भिषक प्रवर गार्नसीने उससे पैदा हुए जखमोंका लक्षण इस ढङ्गसे वर्णन किया है:—"लिङ्गमुण्डमें, उसको ढकनेवाली त्वचाके नीचे लाल चिपटे जखम पैदा हो जाते हैं और उससे लगातार पीले रङ्गका स्राव पैदा हो जाता है;" माथेमें शून्य भाव, माथा बहुत बड़ा, ललाटमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह समतल हो गया है इत्यादि कोरेलियम रूब्रमके कतिपय सर्वश्रेष्ठ निर्णायक लक्षण हैं। माथा और वायुपथ आदिमें मानो ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है। शरीर खुला रहनेपर बहुत जाड़ा मालूम होना और इसकी विपरीत अवस्थामें अर्थात् ढके रहनेपर बहुत गर्मी मालूम होना वगैरह लक्षण भी इसके प्रकृतियत लक्षणमें गिने जाते हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—माथा बहुत बड़ा मालूम होता है, मानो माथेमें ठण्डी हवा प्रवाहित हो रही है। सरमें दर्द—भयानक दर्द, मानो पार्श्ववाले अस्थिफलक सब अलग हो जायँगी, मानो मस्तिष्क और समस्त ललाट बेधकर बाहर निकल जायगा; माथा झुकानेपर यन्त्रणा बढ़ जाती है (ब्राई, कैम्फो, कोलो, साइकूर, इग्ने, लैके, नक्स, प्लैट, पल्स, रास, फाइटो, रियुम, साइलिसिया, स्पाई, स्टैफ)। सिर्फ शरीर खोल देनेपर ही कुछ देरतक घटा रहता है, इसी समय शरीर आगकी तरह गर्म हो जाता है)। ललाट-देशमें दबावकी तरह दर्द,—रोगिनी आँख नहीं खोल सकती (ब्राई, चायना, जेण्टियाना)। निर्मल हवा लगनेपर घटता है; ऐसा मालूम होता है, मानो ललाट समतल या चिपटा होता जा रहा है।

आँख ।—आँख लाल और उसमें धूलके कण गिर गये हैं, इस तरहकी करकराहट होती है (ऐल्य, आर्स, ब्राई, कैप्स, कास्टि. सिना, युफ्रे, इग्ने, लैके) ; वृद्धि—सन्ध्याके समय। आँख बन्द करनेपर उनमें गर्मी मालूम होती है—ऐसा मालूम होता है मानो आँखें पानीमें तैर रही हैं, बत्तीकी रोशनीमें आँखोंमें जलन होती है।

नाक ।—सूखी सर्दी ; नाक रुकी और जखम-भरी। नाकसे खूनका स्राव, एक बार एक नाकसे स्राव होता है ; रातमें स्राव (बेल, कैल्के, कार्बो-वेज, ग्रैफ, कैलि-क्लो, मैग-सल्फ, रास, वेरेट ; निद्रितावस्थामें—ब्राई, मर्क) ; नाकके पिछले छेदसे गलेमें लगातार श्लेष्मा गिरकर रोगीमें बार-बार खाँसी पैदा कर देता है या कफ निकाला करता है।

मुखमण्डल और मुख-विवर ।—मुँहमें उत्ताप मालूम होना ; माथा झुकानेपर बढ़ जाता है (भोजनके बाद—पेट्रोल ; मानसिक परिश्रम करनेपर—ऐमोन-कार्ब ; शराब पीनेपर—सैबाड)। हनुके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब दर्द-भरी और फूली रहती हैं ; कोई पदार्थ निगलनेके समय या सामनेकी ओर माथा झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है। खानेके पदार्थ स्वादहीन मालूम होते हैं (कोलचि, कैलि-बाई, स्ट्रैमोन), करातके चूरकी तरह स्वाद मालूम होता है। बियर नामक शराब या तीती शराब मीठी लगती है (ऐसिड-मूर, पल्स ; खाद्य पदार्थ मीठे मालम होते हैं—ऐसिड-मूर, पल्स, स्क्वियुला ; रोटी मीठी मालूम होती है—मर्क, पल्स ; मक्खन मीठा—पल्स, स्क्वियुला ; दूध मीठा—पल्स ; खानेके पदाथ पानीकी तरह—कूप्रम)। रोटी सूखी घासकी तरह मालूम होती है। प्यास बहुत तेज़ (ऐको, ऐनाक. आर्स, अरम, बेल, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कैस्टी, कैमो, डाल्का, लोरो. लाई, मर्क, प्लम्ब, स्ट्रैमो, वेरेट), भोजनके बाद कितना ही पानी क्यों न पीता हो उसकी तृप्ति नहीं होती—कैक्टौरियम)।

श्वास-यंत्र ।—साँस लेनेके समय वायुनलीमें ऐसा मालम होता है, मानो ठण्डी हवा प्रवेश कर रही है (सिस्टस-कैन, हाइड्रोफोब)। प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी ; दिन-रात खुसखुस आया करती है, प्रतिबार एक बार खाककर खाँसता है। हूप खाँसी—खाँसीका प्रकोप एकके-ऊपर-एक इतना होता है, कि बीचमें अन्तर कुछ नहीं रहता, रोगी खाँसनेके बाद सुस्त और निर्जीव-सा हो पड़ता है और उसका चेहरा नीला या स्याह रङ्गका हो जाता है ; सवेरे खाँसी बढ़ जाती है ; खाँसनेके पहले रोगीकी श्वास रुक जाना चाहती है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—जननेन्द्रिय आदिके स्थानपर बहुत ज्यादा पसीना निकलता है (कैलेड, मार्क, फैगोपाई, सिपि, सल्फ, थूजा)। अप्रकृत या नकली प्रमेह—हरे पीले रङ्गका बदबूदार स्राव। उपदंशकी वजहसे जखम—लिङ्गमुण्डपर और मेढ्र-त्वचाके नीचे लाल (लाल मूंगेके रङ्गका) चिपटा जखम पैदा हो जाता है और इस जखमसे बराबर पीले रङ्गका रस निकला करता हैं ; जखमके छूनेपर दर्द मालूम होता है, निद्रावस्थामें वीर्यस्खलन और कामेन्द्रियकी शिथिलता।

त्वचा ।—तलहत्थी और अंगुलीमें (उपदंश विषकी वजहसे) जो सब चिपटे जखम पैदा हो जाते हैं, उनका रङ्ग पहले लाल प्रवालकी तरह, इसके बाद गहरा लाल और अन्तमें तांबेका रङ्ग हो जाता है, शरीरके ऊपर भी लाल और चिपटे दाने निकल आते हैं।

सम्बन्ध ।—अनुपूरक (Complementary)—सल्फर। यह मर्करीका प्रतिविष है।

सदृश या तुलनीय ।—बेल, कास्टि, कक्कस-कैक्टाई, सिस्टस-कैन, हाइड्रोफोब, मिफाइट, ट्राइफोलियम, प्लैट, ड्रोसेरा, टूपिक।

शक्ति ।—३रे दशमिक क्रमसे २०० शततमिक क्रमतक साधारणतः व्यवहृत हुआ करता है।

कोरियारिया रस्सिफोलिया

(CORIARIA RUSCIFOLIA)

दूसरा नाम ।—टूटू ; टूटू वेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलसे विचूर्ण या अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—अलकोहलकी भांति इसमें भी नशा लानेकी शक्ति है। कम्प, प्रलाप, ऐकोन्माद, स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना और वमनके लक्षणमें इससे लाभ होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

कार्नस एल्टर्निफोलिया

(CORNUS ALTERNIFOLIA)

दूसरा नाम ।—स्वैम्प-वालनट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके पत्तोंसे क्वाथ या अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कमजोरी ; सुस्ती ; हलकी नींद ; ज्वर ; अस्थिरता (बेचैनी) ; एकजिमा ; त्वचापर फटे-फटे दाग ; वक्षमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना ; खुली हवामें घूमने और रातमें भोजनके बाद रोग-लक्षणोंका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कार्नस सार्सिनेटा

(CORNUS SIRCINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी छालसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मुँहका जखम ; पित्तके कारण सर-दर्द ; अतिसार ; रक्तामाशय ; पामा ; सविराम ज्वर ; यकृतकी बीमारियाँ ; कामला ; श्लैष्मिक-झिल्लीका जखम ; शीत-पित्त ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लैष्मिक-झिल्लीके उपक्षत और जखमोंमें इसका बहुत दिनोंसे व्यवहार होता चला आता है । पुराना मलेरिया या पूतिवाष्पज (मलेरियासे उत्पन्न) ज्वर आदिमें यकृत-प्रदाह और पाण्डु-रोगमें यह विशेष लाभदायक है । आगे लिखे कार्नस फ्लोरिडाके बोखारके लक्षण आदि इससे पैदा हुए बोखारके बिलकुल ही समान हैं । शीत (जाड़ा) मालूम होनेके बहुत पहलेसे ही औंघाई मालूम होती है, बदन सब गर्म रहता है, परन्तु रोगीको जाड़ा मालूम होता रहता है । उत्तापावस्थामें निद्रालुता और इसके बाद पसीना निकलना इत्यादि इससे पैदा हुए ज्वरके निर्णायक लक्षण हैं ।

सवेरे कमजोरी मालूम होती है और पेट फूलता है और ऊपरी पेटमें दर्द मालूम होता है इत्यादि इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेमें, विशेषकर कनपटीमें धीमा-धीमा दर्द और भार मालूम होता है; काफी पीनेसे छूटता है (काफी पीनेसे बढ़ना—कैमो, इग्ने, नाइड्रम, नक्स)। सरमें दर्द (चलनेके समय—ऐलो, आर्नि, चायना, आयोड, पल्स, स्ट्रान, वायो-ड्राई), माथा झुकानेपर (ब्राई, साइक्लूर, पल्स) और सर हिलानेपर (कैप्स, कोरैल, लाई, नेट्र-मूर, पोडो, पल्स, सिपि, स्पाइजि) दर्दका बढ़ना और काफी पीनेपर घटना।

अन्त्राशय।—पुराना यकृतका प्रदाह और पित्तमय विकार। पेटमें लगातार भुटभाट, कलकल वगैरह आवाज़ हुआ करती है। पेट फूलता है—पतला पाखाना होनेपर घट जाता है। नाभि-प्रदेशमें मोच खानेकी तरह दर्द, पाखानेके समय दर्द बढ़ जाता है।

मलान्त्र और मल।—मल वेग—सवेरे शय्यासे उठनेके पहले ही (ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स, सल्फ)। उदरामय—वायु निकलनेके साथ, पतला काली आभा लिये मल—दोपहरको भोजन करनेके बाद ही मलका वेग पैदा हो जाता है (ऐल्यू, ऐमोन-मूरर, चायना, ऐसिड-नाई, नक्स, ट्राम्बिड); कभी-कभी काली आभा लिये पानीकी तरह भी होता है अथवा पित्तमय और आममय होता है। पेट कस जाता है और मलद्वारमें जलन और कांखना; माथेमें गड़बड़ी मालूम होना और सारे शरीरमें पसीना होना; चेहरा पीला या उजला, उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि कुछ तकलीफ़ है तथा दोनों आँखें और गाल गड़हेमें धँस जाते हैं।

त्वचा।—पाण्डु-रोग या पिलई, शरीरकी त्वचा पीली और मिट्टीके रङ्गकी। समूची देहमें उत्ताप मालूम होता है, बदनमें खुजली और जलन होती है तथा कुटकुटाता है; खुजलानेपर बढ़ जाता है।

ज्वर।—जाड़ा पैदा होनेके बहुत पहलेसे ही निद्रालुता रहती है, सर कुछ भारी मालम होता है और दर्द होता है तथा चिन्ता-शक्ति दुर्बल हो पड़ती है; सामान्य परिश्रमसे ही पसीना हो जाता है और थकन बढ़ जाती है।

कार्नस ऐल्टर्निफोलिया

(CORNUS ALTERNIFOLIA)

दूसरा नाम।—स्वैम्प-वालनट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके पत्तोंसे क्वाथ या अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—कमजोरी; सुस्ती; हलकी नींद; ज्वर; अस्थिरता (बेचैनी); एकजिमा; त्वचापर फटे-फटे दाग; वक्षमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना; खुली हवामें घूमने और रातमें भोजनके बाद रोग-लक्षणोंका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कार्नस सार्सिनेटा

(CORNUS SIRCINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छालसे मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मुँहका जखम; पित्तके कारण सर-दर्द; अतिसार; रक्तामाशय; पामा; सविराम ज्वर; यकृतकी बीमारियाँ; कामला; श्लैष्मिक-झिल्लीका जखम; शीत-पित्त।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक-झिल्लीके उपक्षत और जखमोंमें इसका बहुत दिनोंसे व्यवहार होता चला आता है। पुराना मलेरिया या पूतिवाष्पज (मलेरियासे उत्पन्न) ज्वर आदिमें यकृत-प्रदाह और पाण्डु-रोगमें यह विशेष लाभदायक है। आगे लिखे कार्नस फ्लोरिडाके बोखारके लक्षण आदि इससे पैदा हुए बोखारके बिल्कुल ही समान हैं। शीत (जाड़ा) मालूम होनेके बहुत पहलेसे ही औंघाई मालूम होती है, बदन सब गर्म रहता है, परन्तु रोगीको जाड़ा मालूम होता रहता है। उत्तापावस्थामें निद्रालुता और इसके बाद पसीना निकलना इत्यादि इससे पैदा हुए ज्वरके निर्णायक लक्षण हैं।

सवेरे कमजोरी मालूम होती है और पेट फूलता है और ऊपरी पेटमें दर्द मालूम होता है इत्यादि इसके प्रकृतिगत लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेमें, विशेषकर कनपटीमें धीमा-धीमा दर्द और भार मालूम होता है; काफी पीनेसे छूटता है (काफी पीनेसे बढ़ना—कैमो, इग्ने, नाइट्रम, नक्स)। सरमें दर्द (चलनेके समय—ऐलो, आर्नि, चायना, आयोड, पल्स, स्ट्रान, वायो-ट्राई), माथा झुकानेपर (ब्राई, साइक्ला, पल्स) और सर हिलानेपर (कैप्स, कोरैल, लाई, नेट्र-मूर, पोडो, पल्स, सिपि, स्पाइजि) दर्दका बढ़ना और काफी पीनेपर घटना।

अन्त्राशय।—पुराना यकृतका प्रदाह और पित्तमय विकार। पेटमें लगातार भुटभाट, कलकल वगैरह आवाज़ हुआ करती है। पेट फूलता है—पतला पाखाना होनेपर घट जाता है। नाभि-प्रदेशमें मोच खानेकी तरह दर्द, पाखानेके समय दर्द बढ़ जाता है।

मलान्त्र और मल।—मल वेग—सवेरे शय्यासे उठनेके पहले ही (ऐलो, सोरिन, रियुमेक्स, सल्फ)। उदरामय—वायु निकलनेके साथ, पतला काली आभा लिये मल—दोपहरको भोजन करनेके बाद ही मलका वेग पैदा हो जाता है (ऐल्यू, ऐमोन-म्यूर, चायना, ऐसिड-नाई, नक्स, ट्राम्बिड); कभी-कभी काली आभा लिये पानीकी तरह भी होता है अथवा पित्तमय और आममय होता है। पेट कस जाता है और मलद्वारमें जलन और कांखना; माथेमें गड़बड़ी मालूम होना और सारे शरीरमें पसीना होना; चेहरा पीला या उजला, उसे देखनेसे ही मालूम होता है, कि कुछ तकलीफ़ है तथा दोनों आँखें और गाल गड़हेमें धँस जाती हैं।

त्वचा।—पाण्डु-रोग या पिलई, शरीरकी त्वचा पीली और मिट्टीके रङ्गकी। समूची देहमें उत्ताप मालूम होता है, बदनमें खुजली और जलन होती है तथा कुटकुटाता है; खुजलानेपर बढ़ जाता है।

ज्वर।—जाड़ा पैदा होनेके बहुत पहलेसे ही निद्रालुता रहती है, सर कुछ भारी मालम होता है और दर्द होता है तथा चिन्ता-शक्ति दुर्बल हो पड़ती है; सामान्य परिश्रमसे ही पसीना हो जाता है और थकन बढ़ जाती है।

विज्वरावस्थामें कमजोरी और पेटमें दर्द होता है, दस्त पतले आते हैं। गर्मी है, पर रोगीको जाड़ा मालूम होता है (नक्स); उत्तापावस्थामें बहुत औंघाई आती है (कार्नस फ्लोरिडा)।

वृद्धि।—रातके समय, नींद खुलनेपर (लेके), शरीर हिलानेसे (ब्राई), ठण्डा लगनेपर और ग्रीष्मके उत्तापसे।

घटना।—काफी पीनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स,—मिमियैन, चेलिडो, मर्क, हाइड्रैस, चायना, युपेटोर-पर्फो, नक्स।

शक्ति।—मूल अर्कसे प्रथम दशमिक क्रमतक।

कार्नस फ्लोरिडा

(CORNUS FLORIDA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछकी जड़से मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—अजीर्ण; सविराम ज्वर; फेफड़ेका प्रदाह इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—अङ्गरेजी "नव-भेषज्य-संग्रह" के प्रणेता स्वनाम ख्यात डा० हेलके मतसे क्विनाइनके अपव्यवहारसे पैदा हुए दुरारोग्य सविराम ज्वर आदिमें "कार्नस फ्लोरिडा" बहुत लाभदायक है। भिषगश्रेष्ठ डा० फैरिङ्गटनने इसके ज्वरका इस तरह उल्लेख किया है:—"जाड़ा पैदा होनेके बहुत दिन पहलेसे ही रोगीमें बहुत निद्रालुता पैदा हो जाती है (आर्स, पल्स, थिरिड ; ज्वर आनेसे पहली रातमें बहुत औंघाई—आर्स), रोगीका शरीर गर्म और उसको शीत मालूम होती है (आर्स, बेल, काक्यु, ड्रोसे, नेट्र-मूर, थूजा ; उत्तापावस्थामें निद्रालुता (जेल्स, नक्स-मस) और इसके बाद ही पसीना निकल आना।" बोखारकी प्रकोपावस्थामें मिचली, वमन और इसके साथ कभी-कभी पानीकी तरह पतला मल या उदरामय, शीतावस्थामें त्वचा ठण्डी और लसदार रहती है ; ज्वर या उत्तापावस्थामें तेज़ सर-दर्द रहता है, टपक, आच्छन्न

भाव, बुद्धिकी जड़ता और वमन मौजूद रहते हैं, अजीर्ण रोगमें, मुँहमें ठण्डा पानी भर आता है। बाँहमें, वक्षस्थलमें और शरीरमें स्नायुशूल और ऐसा दर्द मानो कमर टूटकर दो टुकड़े हो गयी है, इस दवाके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। वृद्धोंकी सवेरेके समयकी मूत्र-कृच्छ्रता।

लक्षणावली

वक्ष।—बाएँ कण्ठास्थि-प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द और यह दर्द दाहिने—पार्श्वमें फैल जाता है; ठण्डी साँस लेनेपर या श्वास खींचनेपर दर्द बढ़ जाता है; छातीमें बराबर पिट-पिटकर खाँसी पैदा हो जाती है और बड़ी कठिनतासे कफ़ निकलता है (आर्स, बोर, बोवि, क्विनिन-सल्फ़, युफ्रे, कैलि-कार्ब, लैके, इग्ने, सिपि, स्टैन, सेनेगा, जिङ्कम); बराबर सरमें चक्कर आना, जाड़ा मालूम होना; इसके बाद ही प्यासके साथ उत्ताप और अन्तमें पसीना निकलना; बार-बार थोड़ा-थोड़ाकर पानी पीता है (आर्स); फेफड़ेके प्रदाहमें भोजन करनेके कुछ ही बाद फिर भूख लग जाती है, दाहिने वक्षमें इतना दर्द मानो छुरी बिंध रही है (ऐको, ऐमोन-कार्ब, ऐसा, ब्राई, चायना, कोना, ग्रैफ, कैलि-आयोड, क्रियो, लैक्टियु, कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाई, रैनान-स्क्लिरेटस, रास, साइलि, सिपि, जिङ्कम) और सरमें चक्कर आता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके पीछे ऐसा मालूम होता है, मानो एकाएक धक्का लग गया है (नेजा)। कमरमें इतना दर्द, मानो टूटकर दो टुकड़े हो गयी है। स्नायुशूलकी वजहसे दर्द, बाईं कोहनीसे आरम्भ होकर कन्धे तक फैल जाता है और नीचेकी ओर उतरनेवाला होता है और फिर दाहिने पार्श्वसे होकर फिर ऊपर चढ़ता है। हृत्प्रदेशमें दर्द रहनेपर बहुत दबाव मालम होता है और कलेजेमें धड़कन हुआ करती है; रोगी दर्द और सुन्न हो जानेकी वजहसे हाथ नहीं उठा सकता; शूलका धक्का या सुई वेधनेकी तरह दर्द। वृद्ध मनुष्योंकी सवेरे पेशाब करनेमें तकलीफ़ होती है।

ज्वर।—शीतावस्थामें शरीरकी त्वचा लसदार पसीनेसे भरी रहती है, इसके बाद उत्ताप, प्यास और अन्तमें पसीना होता है। जाड़ा पैदा होनेके कुछ दिन पहलेसे ही औंघाई पैदा हो जाती है; चिन्ता शक्तिमें जड़ता पैदा हो जाती है और माथेमें धीमा-धीमा दर्द मौजूद रहता है। उत्ताप अवस्थामें मिचली, वमन और कभी-कभी पानीकी तरह या पित्तमय उदरामय मौजूद

रहता है। प्रचण्ड टपकका दर्द, आच्छन्नावस्था, बुद्धिको जड़ता और वमन। रोगीको देह गर्म, पर शीत मालूम होती है (कार्नस-सर्सिनेटा देखिये)।

सम्बन्ध—सदृश।—ऐबिस-कैन, ऐल्सटोनिया ; आर्सेनिकम ; नक्स-वोमिका, युपेट-पर्फोल, चायना, कैलि-कार्ब।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम।

कोरिडैलिस फार्मोसा

(CORYDALIS FORMOSA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसमें जब फूल पैदा हो जाता है, तब कन्द या सोकड़ निकालकर मदर टिंचर तैयार किया जाता है। सूखी जड़से विचूर्ण बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—पाकाशयको सर्दी, गण्डमाला, उपदंशका जखम इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—उपदंश, विषकी वजहसे कितने ही प्रकारसे स्वास्थ्यमें गड़बड़ी पैदा हो जाना और चर्म-रोगके साथ इसका बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है ; लिङ्गमणिपर पैदा हुआ कड़ा उपदंश, इसी वजहसे अस्थिवेष्टमें अर्बुद, केश झड़ जाना, उपदंशसे पैदा हुए या श्लेष्माके कारण माथेके जखम आदि, जिह्वामूलके पार्श्वमें स्थित, दोनों गह्वरोंमें उपदंश या सामान्य जखम वगैरहमें इससे आश्चर्य-जनक लाभ दिखाई दिया करता है। श्लेष्माकी वजहसे स्वास्थ्यभङ्ग, दुरारोग्य चर्मरोग, यकृत और प्लीहा बढ़ जानेके साथ सविराम-ज्वरके अन्तका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ—इसमें भी इससे विशेष लाभ हुआ करता है। पाकाशयकी सर्दी रोगमें भी लाभदायक है। पुरानी सुस्तीकी बीमारीमें भी इसके व्यवहारसे लाभ होता है। जीभ साफ-सुथरी ; प्रशस्त और पुष्ट ; देहके तन्तुओंमें दृढ़ता नहीं रहती। वे शिथिल और उत्तापहीन रहते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-फ्लू, ऐसिड-नाई, कैलि-आयोड, मार्क-कार, मार्क-प्रोटो-आयोड, स्टिलिञ्जिया।

शक्ति।—मूल अर्कके कई बून्द।

कोटो-बार्क

(COTO-BARK)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—पुराना उदरामय; बहुत ज्यादा पाखाना होना, आमाशय; गुटिका दोष-युक्त उदरामय वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्नशक्ति ।

कोटाइलिडन

(COTYLEDON UMBILICUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसी गाछसे मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—हृत्पिण्डकी बीमारी; मूर्च्छावायु; नासूर; प्लीहा; आमवात; सन्धिवात वगैरह रोगोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि रोगी समझता है, कि उसके शरीरका कोई एक अंश वर्जित हो रहा है, शरीरके कितने ही स्थानोंमें वातका दर्द, खासकर वक्षस्थलमें शलाका या सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है । इसका दर्द सवेरे और शामके वक्त बढ़ जाता है ।

लक्षणावली

मन ।—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी देह, माथा या पैर वर्जित है (स्ट्रैम; मानो उसका निचला पैर फटा है—बैराइ)। माथा बहुत हलका मालूम होता है, मानो उसके माथेका भीतरी भाग शून्य हो गया है । चेष्टा करनेपर भी मुँहसे बोली नहीं निकलती ।

श्वास-यंत्र ।—बाएँ स्तनके नीचे (ऐक्टिया) और दाहिने वक्षमें लगातार दर्द, बाएँ स्तनके निकटसे शरीरको भेदकर दर्द पृष्ठ-फलकतक फैल जाता है (मार्टस-कम, पिक्स-लिक, थिरिड, सल्फ़, ऐमिगडेला)। हृद्‌प्रदेशमें उत्ताप मालूम होना, घोड़ेपर सवारी करनेपर खींचन या नख लग जानेकी तरह दर्द होता है ; रोगवाली जगह दबा रखनेपर आराम मिलता है।

सार्वाङ्गिक ।—दिनमें कभी-कभी बहुत सुस्ती मालूम होती है और आँखके सामने पीले रङ्गकी छाया सब दिखाई देती है। निम्न अङ्गमें चींटी चलनेकी तरह मालूम होता है और सर्दी या वात होनेकी सूचनाकी तरह लक्षण प्रकट होते हैं।

वृद्धि ।—दर्द आदि सवेरे और सन्ध्यामें बढ़ता है।

शक्ति ।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम।

क्रैटिगस आक्सियैकान्था

(CRATAEGUS OXYACANTHA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—हृत्‌शूल ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; हृत्पिण्डकी क्रियाका एकाएक लोप हो जाना ; हृत्पिण्डके कड़े पड़ जानेमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—यह हृत्पिण्डकी सुस्ती दूर करनेवाली एक बहुत बढ़िया दवा है। अत्यन्त सुस्ती मिला बहुत दिनोंका पुराना हृत्पिण्डका रोग, हृत्पिण्ड बहुत क्षीण हो जाता है, उसकी क्रिया विषम हो पड़ती है ; हृत्‌शूल और हृत्पिण्डकी क्रिया एकाएक लोप हो जानेका उपक्रम वगैरहमें क्रैटिगसको यदि एक अद्वितीय दवा कहा जाय तो भी अत्युक्ति नहीं होगी। हृत्पिण्डके अवसादकी सम्भावना होनेपर बार-बार डिजिटेलिसके प्रयोगसे उपकार हो सकता है और अपकार भी, परन्तु क्रैटिगसका प्रयोग करनेपर उपकारके सिवा अपकार होनेकी सम्भावना ही नहीं है, क्योंकि डिजिटेलिसमें जो विषाक्त गुण है, क्रैटिगसमें उसका लेश भी नहीं है। हृत्पिण्डके

विकारकी वजहसे सारे शरीरके शोथ रोगमें भी इससे बहुत उपकार हुआ करता है (आर्स, आयोड, स्ट्रोफैन्थस)। खूनकी वजहसे हो या हृत्पिण्डकी झिल्लीके विकारके कारण ही हो, हृत्पिण्डकी सब तरहकी क्षीण क्रियामें क्रैटिगसका प्रयोग करनेपर लाभ ही हुआ करता है।

लक्षणावली

मन।—क्रोधी स्वभाव, चिड़चिड़ा और विमर्ष-चित्त। हमेशा व्यस्त भाव और हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज़। माथा और गर्दनके पीछे दर्द।

हृत्पिण्ड।—अग्निमांद्य और स्नायविक अवसाद—इसके साथ ही हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होनेका उपक्रम। सुस्ती और एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया रुकनेकी वजहसे हिमाङ्ग (Collapse), हृत्पिण्डकी आकृतिका बढ़ना या द्वारावरोधक झिल्ली विकृति (Valvular disease) की वजहसे हृत्पिण्डकी क्रिया निरोध हो जानेका उपक्रम (Failure),हृत्स्पन्दन (कलेजा धड़कना)। हृत्शूल, पाकस्थलीके उर्द्ध-देश और बाईं ओर दर्द, नाड़ी प्रबल वेगवती, हृत्पिण्डका बढ़ना (Hypertrophy) का लक्षण मौजूद रहता है। मेरुदण्डका बढ़ना या शराब पीने अथवा बहुत अधिक इन्द्रिय सेवनके कारण हृत्पिण्डकी बीमारी। आन्त्रिक ज्वरमें हृत्पिण्डके सुस्त पड़ जानेका उपक्रम। हृत्पिण्डके विकारकी वजहसे सारे शरीरका शोथ (Anasarca—आर्स-आयोड, स्ट्रोफैन्थस)।

वृद्धि।—गर्म घरमें।

उपशम।—निर्मल वायु लगनेपर, निश्चिन्त भावसे रहनेपर या विश्राम करनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—एसिड-हाइड्रो, आर्स-आयोड, कैम्फो, आइबिरिस, डिजिटेलिस, फेजियोलस।

शक्ति।—मूल अर्क एकसे दस बून्दतक।

क्रोकस सैटाइवस

(CROCUS SATIVAS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी केसरसे इसका मूल अर्क तैयार होता है। डा० कूपर (Dr. Cooper) नये पत्तासे मूल अर्क तैयार करते हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्रावकी आशंका ; नकली प्रसवका दर्द ; क्षीण-दृष्टि ; मस्तिष्कमें रक्तसंचय ; ताण्डव ; वाधक ; मूर्च्छा ; रक्तस्राव ; पाकाशयमें विकार ; खून मिली खाँसी ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; मूर्च्छा-वायु ; आँखसे पानी गिरना ; हँसना ; क्रोध ; श्वेत-प्रदर ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; नाकसे खून गिरना ; आँखोंका प्रदाह ; गर्भिणीकी बहुत-सी बीमारियाँ ; अर्बुद ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—(१) मानसिक अवस्थाका बहुत तेजीसे बदलते रहना, महान आनन्द या स्फूर्तिसे एकदम घोर निरानन्द ; अभी-अभी एकदम आनन्दमें भरकर सबको चुम्बन या प्यार करता हुआ घूमता था ; पर क्षणभर बाद ही प्रचण्ड क्रोध करने लगता है ; (२) रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसका उदर, जरायु, बाँह या देहके अन्यान्य अंशोंमें सजीव पदार्थ लगातार हिल रहा है ; (३) शोणित-स्राव, शरीरके चाहे किसी द्वारसे क्यों न हो, खून काले रङ्गका गोंदकी तरह और जमा हुआ, निकलनेकी राहपर लम्बे सूतकी तरह झूलता रहता है ; (४) ताण्डव (Chorea) और मूर्च्छा-वायु रोग, आनन्द, गाना, नाचना, महा विषाद और क्रोधके साथ पर्यायक्रमसे प्रकट होता है ; (५) रजोनिवृत्तिके बाद सर-दर्द, स्वभावतः पूर्वमें जो कई दिन ऋतुस्राव होता था, उन कई दिनोंमें सरका दर्द बढ़ा करता है ; ऋतुके समय सर-दर्द ; रजःस्रावके पहले, समयपर या इसके बाद पैदा हो जाता है ; (६) आँख ऐसी मालूम होती है, मानो घरमें धुँआ भरा हुआ है या रोगिनी रो रही है अथवा उसकी आँखमें ठण्डी हवा घुस रही हो ; जोरसे आँख बन्द करनेपर आराम मिलता है ; (७) कभी-कभी देहका कोई अंश या पेशियोंका फड़क उठना—ये कई क्रोकस-सैटाइवसके सर्व-श्रेष्ठ प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—चित्तका जल्दी-जल्दी बदलते रहना—महान आनन्दमें रहकर सबका आदर और चुम्बन करता है, क्षणभर बाद ही महा क्रोध प्रकट करता है, किसीको गाना गाते सुननेपर फिर जी नहीं मानता—तुरन्त गाना आरम्भ कर देता है और क्षणभर बाद ही अपनी प्रगल्भतापर हँसने लगता है ; विपरीत इच्छा रहनेपर भी गाये बिना रह नहीं सकता। सबको चुम्बन करनेकी दुर्दमनीय इच्छा, अभी महान क्रोध प्रकट कर रहा था, पर थोड़ी ही देर बाद उसके लिये अनुत्ताप करने लगता है। एकाएक हँस उठता है (बेल, स्ट्रैमोन, देखिये)।

मस्तक ।—वय:सन्धिके समयका सर-दर्द (Climacteric Headache), माथेमें धमक या टपक हुआ करती है—पहले स्वभावत: जो कई दिन ऋतु-स्राव होता था, ऋतु निवृत्तिके बाद भी ठीक कई दिवसतक तकलीफ़ बहुत बढ़ जाती है ; स्रायवीय या आर्त्तवके समय सरमें दर्द—आर्त्तव-स्रावके पहले और समयपर और इसके बाद दर्द मालूम होना, विशेषकर सन्ध्याके समय बत्तीकी रोशनीमें, सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही मूर्च्छाका उपक्रम (लैके, मस्कस, नक्स, सैबाड)।

आँख ।—घर धुएँसे भरा मालूम होता है (सभी चीजें कुहरेसे ढँकी मालूम होती हैं—बेल, सिक्लेम, इयोन, मार्क) रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो रोते-रोते उसकी आँखें फूल गयी हैं, मानो उसकी आँखके ऊपरसे ठण्डी हवा बह रही है ; कसकर आँख बन्द करनेपर आराम मालूम होता है। पढ़ना आरम्भ करनेपर आँखसे पानी गिरा करता है (ग्रैटि, क्रोटैल, ऐसिड-नाई, ऐसिड-सल्फ)। सन्ध्याके समय दीयेकी रोशनीमें पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है (बार्बा, कास्टि, क्रियो, पेट्रोल, रास, सल्फ)। आँखके सामने चमक दिखाई देती है (ऐल्यू, कास्टि, साइक्लू, सिना, आयोड, ऐसिड-फ्लू, प्लैट, स्ट्रान)। एकाएक बिजली चमक जानेकी तरह या मानो आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं, इस तरह दिखाई देता है (अरम, बेल, कास्टि, आयोड, कैलि-कार्ब, लैके, नेट्र-मूर, ओपि, क्यूप्रम, आर्स, वेलि)।

नाक ।—नाकसे खूनका स्राव—रक्त काला, गाढ़ा लेईकी तरह नासारन्ध्रमें झूला करता है (मार्क-सोल), खींचनेपर रबड़के सूतकी तरह

बढ़ जाता है (काला रक्त—ऐसिड-नाई, क्रियो, लैके), स्रावके समय कपालमें बड़ी-बड़ी ठण्डी पसीनेकी बूंदें सब निकल पड़ती हैं (ठण्डा पसीना, पर रोगी हमेशा पंखेसे हवा करनेको कहता है और खूनका रङ्ग चमकीला लाल—कार्बो-वेज) ; तेजीसे बढ़नेवाले बच्चोंकी नाकसे खूनका स्राव (कैल्के-कार्ब, फास)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भोजनके बाद छातीमें जलन (ऐमोन-कार्ब, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, सिङ्को, कोना, लाई, कैप्स, मार्क, नक्स, साइलिसिया, ऐसिड-सल्फ़)। सवेरे कुछ खानेके पहले, ऐसा मालूम होता है, मानो कोई जीव पाकस्थली, उदर, जरायु या शरीरके अन्यान्य अंशमें घूमता-फिरता है (ऐराण्डो-मेरि, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, कान्वैल, सैबाई, सल्फ़, थूजा, चियोनैन ; मानो सरमें कुछ हिल रहा है—पेट्रोल, साइलिसिया)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रियकी तरफ रक्त उतरता है, मानो ऋतु प्रकाशित होगा। कभी-कभी आर्त्तव-स्राव हो जाता है और गाढ़ा लसदार बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव हुआ करता है ; बाधक—स्रावका रङ्ग काला, गाढ़ा गोंदकी तरह और जमा हुआ (ऐस्टिगो) ; अमावस्या और पूर्णिमाके दिन रक्त-स्राव। जरायुसे रक्तस्राव (Metrorrhagia) ; देहको जरा भी हिलानेपर स्राव आरम्भ हो जाता है—खूनका रङ्ग काला (ब्राई, कैमो, फेरम, इग्ने, क्रियो, नाइट्रम, प्लैट, पल्स)। गाढ़ा गोंदकी तरह (मैग-म्यूर), जमा हुआ और बहुत बदबूदार, इसीलिये तीसरे महीने गर्भ-स्रावका उपक्रम हो पड़ता है। बाएँ स्तनके भीतर चिलक मारनेकी तरह दर्द होना मानो इस अंशको किसीने डोरीसे खींचकर पीठके साथ कसकर बाँध दिया है (क्रोटन)। ऐसा मालूम होता है, मानो छातीकी दाहिनी ओर कोई जीव उछलता हुआ घूमता है।

श्वास-यंत्र।—प्रबल और सुस्ती लानेवाली सूखी खाँसी, उदरके ऊपरी प्रदेशमें हाथ रखने या रगड़नेपर घटता है। खाँसनेपर खून मिला कफ़ निकलता है। वक्षस्थलमें दबाव मालूम होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है और लम्बी साँस लेनेकी इच्छा रहती है, जम्हाई लेनेपर आराम मालूम होता है (स्टैफ), साँय-साँय शब्द करनेवाली खाँसी और फेनके साथ सूत्रमय बलगमके रूपमें निकलती है। श्वास-प्रश्वासमें बहुत बदबू।

प्रत्यङ्ग आदि।—ताण्डव और मूर्च्छावायु रोग; रोगी कभी बहुत आनन्दमय रहता है, गाने गाता है, नाचता है, पर दूसरे ही क्षण बहुत दुःखित या महाक्रोधी हो पड़ता है और इसके बाद जोरसे ताली बजा-बजाकर अट्टहास करने लगता है। एक-एक अंशकी पेशीमण्डली फड़कती है (ऐगार, कोडिइन, इग्ने, जिङ्कम)। रातमें निद्रावस्थामें बाँह और हाथ सुन्न हो पड़ते हैं और हिलानेकी शक्ति नहीं रहती; खड़े होनेवाली अवस्थामें, झुककर जमीनसे कोई चीज़ उठानेपर, पुट्ठे (Hip) और जानु-सन्धिमें कड़कड़ाहट होती है।

वृद्धि।— उपवास करनेपर, सन्ध्या और रात्रिके समय, अमावस्या और पूर्णिमामें, एक ओर बहुत देरतक देखते रहनेपर, पढ़नेपर, गर्भावस्थामें, गर्म घरमें, गर्म हवामें।

घटना।—जम्हाई आनेपर, निर्मल वायु सेवन करनेपर और पहली बार भोजनके अन्तमें या उपवास-भङ्गके बाद।

सम्बन्ध।—सदृश।—(काले रङ्गके रक्तके सम्बन्धमें)—प्लैट, नाइट्रम, क्रियो, लैके; (बाईं छातीके दर्दके सम्बन्धमें)—क्रोटन, ऐक्टिया, नार्टासकम, थिरिड, अधिककर कोडिनम, टैरेण्टुला, लैके, ड्रेल, आस्टि, लेगो, सैबाइना। प्रायः सभी रोगोंमें नक्स-वोम, पल्स, सल्फर और क्रोकसके बाद उपयोगी है। डा० ह्यू के मतसे "रियुटा" के साथ क्रोकसका सबसे अधिक सादृश्य है।

दोषघ्न।—ऐकोन, बेल, ओपियम।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—८ दिन।

क्रोटेलस कैस्केविला

(CROTALUS CASCAVELLA)

परिचय।—ब्रेजिल देशका एक तरहका साँप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस साँपके विषमें दूधकी चीनी मिलाकर विचूर्ण तैयार किया जाता है।

उपयोगिता और आभास ।—और-और साँपके विषोंकी तरह कैस्केविला एक प्रकारका तेज़ विष है। इसके लक्षण अन्यान्य सर्प-विषोंकी भाँति ही हैं ; परन्तु इसकी मानसिक लक्षणावली विशेष उल्लेख योग्य है।

नींदके बाद सर-दर्द (लैके), लगातार मृत्युकी चिन्ता बनी रहना और नींद लगनेपर मृत्युके सपने देखना, नाना प्रकारके काल्पनिक भ्रान्ति-पूर्ण जन्तु देखना और उनसे डरना, अर्द्ध-चेतन अवस्था वगैरह लक्षणोंमें यह लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सर्प-विषसे तैयार की हुई दवाएँ सब ।

शक्ति ।—३०—२०० ।

क्रोटेलस होरिडस

(CROTALUS HORIDUS)

दूसरा नाम ।—अमेरिकामें पैदा होनेवाले एक तरहका खड़-खड़ शब्द करनेवाले पूँछदार साँपका विष ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूध चीनीके साथ विचूर्ण (अमेरिकन मतसे) ग्लिसरिनके साथ टिञ्चर (ब्रिटिश मतसे) ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पासकी चीजें देखना (निकट दृष्टि), तिमिर दृष्टि (डेरा देखना) और संन्यास ; उपाङ्ग-प्रदाह या ऐपेण्डिसाइटिस ; पैत्तिक ज्वर ; फोड़ा ; दूषित फोड़ा ; उपदंश ; आक्षेप ; आँखका स्नायुशूल ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; बुद्धिभ्रंश ; मादात्यय ; झिल्लीका प्रदाह ; वाधक ; अजीर्ण ; काली लकीर पड़ना ; मृगी ; चक्षु-रोग ; विसर्प ; मुँहमें उद्भेद ; रक्त-मूत्र (खून-मिला पेशाब) ; रक्त-स्राव-प्रवण धातु ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; जलातङ्क रोग ; आँतोंसे रक्तस्राव ; कामला ; यकृत और फेफड़ेकी बहुत-सी बीमारियाँ । स्तन-प्रदाह ; खसड़ा ; गर्भिणियोंका पैर फूलना ; डिम्बाशय-प्रदाह ; पूतिनस्य ; हृद्कम्पन ; अन्त्रावर्त्तन-प्रदाह ; शिरा-प्रदाह ; धूम्र-वेश ; खून विषाक्त हो जाना ; स्वल्पविराम ज्वर ; आमवात ; आरक्त ज्वर ; अनिद्रा ; चेचक ; ल

लगना ; उपदंश ; आमवात ; शिराओंका फूलना और शिरा-प्रदाह ; धनुष्टङ्कार ; जिह्वा-प्रदाह और कर्कटका जखम ; शीत-पित्त ; वमन ; हूप खाँसी ; पीत-ज्वर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन रोग-जीर्ण मनुष्योंकी गाँठें फूल जाया करती हैं, खूनका स्राव हुआ करता है और जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है, ऐसे व्यक्ति और बहुव्यापक संक्रामक रोगमें, शराब पीनेका आदी और जिनकी पीठमें फोड़े या खूनी फोड़े अकसर हुआ करते हैं, ऐसे व्यक्तियोंमें और ऐसी अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है । जो बीमारी शरीरकी निस्तेज अवस्थामें फैलती है, उसमें तथा सड़नेवाली चीजोंके संस्रवसे जो उत्पन्न होती है (Septic) ऐसे ज्वरमें, अन्त्रमें विष-क्रियाकी वजहसे अर्थात् आन्त्रिक (Typhoid) ज्वरमें या पूतिवाष्पजनित (Malarious) ज्वरमें बहुत दिनोंका शराब पीनेका अभ्यास (Alcoholism) की वजहसे रोग आदिमें जीवनी-शक्तिके अवसाद इत्यादि रोगमें और अवस्थामें भी क्रोटैलस संजीवनी सुधाकी तरह कार्य करता है । संन्यास, शराबियोंका संन्यासकी तरह आक्षेप, पीत ज्वर, शरीर पीला हो जाता है, सांघातिक उपझिल्ली-प्रदाह, आरक्त ज्वर, यकृतकी सांघातिक बीमारियाँ, काला वमन और काले मलके साथ उदरामय, क्षीण स्त्रियोंकी ऋतुके बदले दूसरे स्थानसे रक्त-स्राव और वयःसन्धिके समय उत्ताप मालूम होना, जरायुसे बहुत दिनोंतक रक्त-स्राव होते रहना वगैरह रोगोंकी क्रोटैलस एक प्रधान औषधि है और उपयोगी होनेपर यह मन्त्रकी तरह काम किया करती है । लैकेसिसकी क्रिया जिस तरह शरीरके बायें अंशपर होती है क्रोटैलस और इलैप्स कोरैलिनस (सर्प-विषका विष) की क्रिया उसी तरह शरीरके दाहिने अंशपर होती है और दाहिने पार्श्वके यन्त्र आदिके साथ बहुत निकट सम्बन्ध प्रकट करती है । यकृतपर इसकी क्रिया सबसे अधिक प्रकट हुआ करती है ।

लक्षणावली

मन ।—रोना स्वभाव (ऐमोन-मूर, अरम, डिजि, हिपर, हाइपेर, इग, लाइ, नेट्र-मूर, प्लेट, पल्स, सिपि, स्ट्रैन) । अनुभव-शक्तिकी क्षीणता ; स्मरण-शक्तिमें गड़बड़ी ; बहुत बकता है (ऐगार, कैनाब, ऐक्टि, कोकेइन, जेलस, ग्लोन, हायो, कैलि-आयोड, लैके, लैच-नैन, ओपि, पैरिस, पोडो, पाइरोजेन, सेलिन, स्टिक्टा, स्ट्राम, टियुक्रि, थिरिड) । घरसे भाग जानेकी इच्छा (बेल, ब्राई, ग्लोन,

हायो, रास, स्ट्रैम)। अस्पष्ट प्रलापयुक्त विकार (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, बैप, बेल, ऐ-फास, आर्नि, आर्स, एपिस, ऐ-म्यूर, फास, रास, टैरेण्टु, टेरिब, पेसि-फ्लो, टैरेक्स), इसके साथ ही आन्त्रिक ज्वराधिकारमें या पीत ज्वरमें उन्मीलित आँखें, बहुत बेचैनी, पेशियोंका संकोचन और फैलना (Twitching—ऐगार, इग्ने, जिङ्कम, क्रोकस) और विकारके समय लगातार बुदबुदाया करता है और यंत्रणा प्रकट किया करता है, पानात्यय (Delirium Tremens—ऐण्टि-टार्ट, बेल, ऐगार, नक्स, हायो, स्ट्रैम)। अकसर हमेशा ही औंघाई आया करती है, परन्तु ठीक-ठीक सच्ची नींद नहीं आती (बेल, कैमो) ; रोग जीर्ण व्यक्तिका विकार। हमेशा दुःखित और भीत, बहुत चिन्तित ; रोना और बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव। दुःखभाराक्रान्त भाव—हमेशा ही मृत्युके विषयमें सोचा करता है (क्रोटेलस कैस्काविला) ; अपना मनोभाव प्रकट नहीं कर सकता ; किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यू, लैक-कैन, ऐसिड फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; देह बहुत सुस्त (क्रोकस, लैके, मस्क, नक्स), कमजोर (बेल, लैके) और काँपती है ; चेहरा म्लान ; बहरापन और कानमें आवाज़के साथ सरमें चक्कर आना (Auditory vertigo—चायना, किनिन-सल्फ, लैके, नेट्र-सैलिसि, पाइलोकार्प, थिरिड), माथा स्थिर रखनेपर आराम मालूम होता है। सरमें दर्द—माथेमें बहुत भार मालूम होता है और दर्द होता है और आँखके ऊपरी अंशमें और नाकके पार्श्वमें उत्ताप मालूम होना। दाहिनी आँख और ब्रह्मतालुके दाहिने पार्श्वमें तेज़ दर्द, यह दर्द गलेके पिछले भागतक फैल जाता है। सरके पिछले भागमें धीमा भार मालूम होनेकी तरह दर्द और इसी वजहसे रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है। ऐसा दर्द मानो माथेके पिछले भागपर एकाएक किसीने चोट मार दी (नेजा), ललाटके बीचवाले स्थानमें तेज़ दर्द, इसके साथ ही बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव होता है।

आँख।—भ्रम देखना ; चारों ओर नीला दिखाई देता है (बेल, लाई, स्ट्रा) ; पढ़ते-पढ़ते दृष्टि लोप हो जाना (कैल्के, ड्रोसे, हिप, मिनि, नेट्रम-म्यूर, रास-विनि, सल्फ, थूजा)। दीयेकी रोशनीमें आँखोंको तकलीफ़ होती है। आँखसे खूनका स्राव (बेल, कार्बो-वेज)। आँखें पीली हो जाती हैं (समूची देह पीली हो जाती है)। डाक्टर ऐलेन कहते हैं—शार्ङ्गत्वक या आँखके सफेद अंश (Cornea प्रदाह या शार्ङ्गत्वक और उपतारा (Iris) का

संयुक्त प्रदाह आराम होनेपर क्रोटेलस फिरसे स्वाभाविक दृष्टि पैदा कर देता है)। पलकोंका स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia), फाड़नेवाला या छेदनेकी तरह दर्द, मानो आँख चारों ओर अस्त्रसे कट रही है ; कभी-कभी उसमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; वृद्धि सन्ध्यामें।

कान।—कानकी बीमारीकी वजहसे सरमें चक्कर आता है और श्रवण-शक्ति घट जाती है ; कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आती हैं और सरमें चक्कर आता है (नेट्र-सैलिसि, क्विनिन-सल्फ)। कानके छेदसे खूनका स्राव होना (साइकूअटा, लैके, ऐ-नाई)।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव ; बहुव्यापक संक्रामक रोगाधिकारमें खून पतला, काले रङ्गका, जमता नहीं है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना या सुस्ती मालूम होना। खसड़ा, चेचक आदिकी तरहके चर्म-रोगके बाद पीनस रोग (Ozœna—अरम, ऐसिड-नाई, केड-सल्फ, सोरिनम)।

मुखमण्डल और मुख-विवर।—मुखमण्डल फूला, पीला या लाल होता है। मुर्देकी तरह रक्तहीन ; सीसेके रङ्गका ; दोनों ओठ फूले, कड़े और सुन्न। देरसे रजःस्राव होनेकी वजहसे शरीरमें बहुत-सी लाल फुन्सियाँ निकल आती हैं, खासकर चिबुकके ऊपर। निद्रितावस्थामें दाँत कड़मड़ाता है, मसूढ़े से खून निकलता है और मसूढ़ा सफेद रङ्गका दिखाई देता है। जीभ आगके रङ्गकी, चिकनी और चमकती है (पाइरोजेन); जीभसे खून निकला करता है—कर्कट रोगमें। खून-मिली या फेन-भरी लार बहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ मुँहके साथ कसकर बँधी हुई है—बोल नहीं सकती।

गलेके भीतर।—कण्ठनालीका बहुत ही दृढ़ संकोचन ; कड़ी चीज़ निगलना असम्भव हो जाता है (कड़ी चीजें निगलनेपर कण्ठनालीका दर्द घट जाता है—इग्ने)। रोहिनी रोगमें (Dephtheria) या आरक्त ज्वरादिमें जिह्वामूलीय गह्वर (Fauces) या तालुग्रन्थि (Tonsils) का फूलना या सड़ना (Gangrene) ; खाली घूंट लेनेपर बहुत दर्द मालूम होता है, वमन या पतले दस्त होनेका उपक्रम हो जाता है और कण्ठमें दर्दकी वजहसे माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है। प्रदाहयुक्त झिल्ली फूली रहती है और गहरी लाल रङ्गकी दिखाई देती है। कण्ठके भीतर मानो एक कील या खूँटी रुकी

हुई है और ऐसा मालूम होता है, मानो उसीको निगलना पड़ेगा। ऐसा मालूम होता है मानो गला बन्द होता जाता है।

पाकस्थली।—पाकाशयके ऊपर वस्त्र आदि कसे रहना असह्य मालूम होता है (ऐमोन-म्यूर, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप, क्रियो, लैके, लाई, नक्स, नेट्र-म्यूर, ओलि-ऐन, स्पञ्जि, साइलि, सल्फ)। पित्तमय वमन और इसके साथ ही उद्वेग और क्षीण नाड़ी; प्रत्येक महीने रजःस्रावके अन्तमें (पल्स, रजःस्रावके आरम्भमें—फास; रजःस्रावके समय—कार्बो-वेज, कैलि-फास, ऐमोन-म्यूर), पर दाहिनी ओर या चित्त होकर सोनेके साथ ही काली, हरी कै आरम्भ हो जाती है (दाहिनी करवट सोनेपर वमन घट जाता है—ऐण्टि-टार्ट), पीत ज्वराधिकारमें काले रङ्गकी या काफीकी तलीकी तरहके रङ्गका वमन होता है (काला वमन—आर्स, चायना, हेलिबो, नक्स, वेरेट), दुर्दमनीय ज्वालामयी तृष्णा (ऐको, ऐनाक, बेल, कार्बो-वेज, कैस्टो, लैके, स्ट्रैमो), रक्त-मिला वमन, कै हुआ रक्त पानीकी तरह होता है और जमता नहीं है।

अन्त्राशय।—लम्बी साँस लेनेपर, यकृत-प्रदेशमें तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द होता है; दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। यकृतमें दर्द और उसकी वजहसे वमन और जाड़ा मालूम होता है। मारात्मक पाण्डु रोग या नेबा—समूची देह और नाक पीले रङ्गकी हो जाती है। इसके साथ ही खूनका स्राव। समूची देह फूल उठती है।

मल।—उदरामय—मल काले रङ्गका (आर्स, कैम्फो, चायना, कूप्रम-ऐसेट, इपिक, मार्क, लेपटेन, अरम-म्यूर-नेट्र, ऐसिड-सल्फ) या बहुत तरल, काफीकी तलीकी तरह, बहुत बदबूदार मल; अस्वास्थ्यजनक वाष्प या सड़नेवाले पदार्थ मिले पदार्थ खाने या पीनेके कारण; सड़ा हुआ मांस आदि खानेकी वजहसे (पाइरोजेन); पीतज्वर, विसूचिका, आन्त्रिक (Typhoid) ज्वर या मोहज्वरके साथ उदरामय—मल पीले रङ्गका और पानीकी तरह, पेटमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द तथा मन दुःखित और उदासीसे भरा रहता है। आमरक्त रोगमें—सड़े हुए पदार्थके संस्रवसे उत्पन्न, गदला पानी पीने या बिगड़ी हुई चीज़ खानेसे उत्पन्न; गाढ़ा काले रङ्गका बहुत ज्यादा पानीकी तरह खूनका स्राव होता है या अनजानमें पाखाना हो जाया करता है। आँतोंसे खूनका स्राव; खून गाढ़ा, काले रङ्गका और पतला। वमन, पेशाब और मल

निकलना, एक साथ ही होता है। इसके साथ ही कूथन और अन्त्राशयका संकोचन वर्त्तमान रहता है।

पेशाब।—खूनका पेशाब (टेरिब, क्विनिन-सल्फ, इक्विसेट, कैलि-क्लो, मिलिफो, ऐसिड-नाई, टियुवार्क, इयुवा)। लालामूत्र (Albuminuria), पेशाब बहुत थोड़े परिमाणमें, गाढ़ा और खून मिला रहनेकी वजहसे लाल और गाढ़ा होता है, कभी-कभी पित्त मिला रहनेके कारण हरी पीली आभा लिये रंगका भी होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—निर्दिष्ट समयके एक सप्ताह पहलेसे ही ऋतु आरम्भ हो जाता है, स्राव आरम्भ होनेके पहले माथा और कानमें भार मालूम होता है, तलपेट और पीठमें दर्द होता है और दोनों पैर ठण्डे हो जाते हैं। यह दर्द दो दिन बाद गायब हो जाता है। ऋतुके पाँच दिवस पहलेसे तलपेटमें और उरु देशमें बहुत दर्द पैदा हो जाता है; कभी हृदय, कभी बाईं बाँह और पृष्ठफलकमें दर्द पैदा हो जाता है। प्रसवान्तिक (Puerperal) ज्वर या आक्षेप (Eclampsia) (एकिनेसिया; बेल, हायो, ऐको)। इसके साथ ही लालमूत्र और पूति-जनित (Septic) लक्षण आदि रहते हैं। बदबूदार प्रसवके बादका क्लेद-स्राव। प्रसवके बादवाला जंघा शिरा आदिका प्रदाह या सफेद रङ्गको सूजन, छूनेसे ही दर्द बढ़ जाता है, (बेल, ब्राई)। विकल्प (Vicarious) रजः, बहुत तरहके रोग भोगनेके कारण जिनका शरीर क्षीण हो गया है (डिजि, फास)। वयःसन्धिके समय रह-रहकर शरीरमें उत्तापका आविर्भाव हो जाता है और इतना ज्यादा पसीना होता है (ऐमिल-नाई, लेके, कैलि-बाई, सैङ्गियु, मैङ्ग), कि रोगिनी सुस्त हो पड़ती है (ऐकि, इग्ने, सल्फ); जरायुसे बहुत दिनोंका स्राव, खूनका रङ्ग काला, पतला और बदबूदार; इसके साथ ही शरीरमें खूनकी कमी। पीब सोख जानेकी वजहसे पैदा हुआ जरायुके (Septic) रोगमें प्रायः ही खूनका स्राव हुआ करता है; रक्त गाढ़ा लाल, पानीकी तरह, बदबूदार।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी—खाँसनेपर बाएँ वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालम होना और खून-मिला कफ निकलता है। स्नायविक खाँसी,—सूखी, वायुनलीके भीतर, उत्तेजनाकी वजहसे—मानो गलेमें मिर्चका तेज़ धुआँ घुस गया है या वायुनलीके भीतर एक छोटा अंश बहुत कुछ सूख जाता है; खासकर सूखी हवा लगने, लम्बी साँस लेने, बोलने या कण्ठनालीपर दबाव

पड़नेसे ही खाँसी पैदा हो जाती है। कण्ठनालीपर किसी तरहका दबाव बिलकुल ही सहन नहीं होता, नींद खुलनेपर खाँसी बढ़ जाती है (लैके)। हूप खाँसी, प्रकोपके समय चेहरा फूल जाता है, कभी-कभी नीला हो जाता है, आँख लाल हो जाती है, नाकसे खूनका स्राव और फेन-भरा गाढ़ा गोंदकी तरह और खूनके साथ कफ़ निकला करता है, इसके साथ ही फेफड़ेकी सूजन और पक्षाघात हो जानेका उपक्रम हो जाता है।

हृत्पिण्ड।—हृत्पिण्डमें बहुत दर्द और कलेजा धड़कना; ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड कलाबाजी खानेकी तरह उलट-पुलट गया है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कलेजा काँपना। बाएँ हाथसे थोड़ा भी परिश्रम करनेपर वह अवश हो जाता है। बाईं तलहत्थीमें मधुमक्खीके काटनेकी तरह या डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। नखके नीचेसे खूनका स्राव। दोनों पैर सामान्य कारणसे ही सुन्न हो जाते हैं। दाहिने अङ्गका पक्षाघात। थोड़े ही परिश्रमसे थकावट आ जाती है। रोगीकी सब पेशियाँ इच्छानुसार काम नहीं करती। आक्षेप—हाथ-पैर आदिका काँपना और मुँहसे मानो फेन निकला करता है। रोगी जोरसे चिल्ला उठता है और प्रलाप किया करता है। भीतरी कम्पन—मानो आसन्न विपत्तिकी आशंकाकी वजहसे; बैठनेके समय या पैरपर-पैर रखनेपर, दोनों पैर सुन्न हो जाते हैं।

निद्रा।—बहुत अधिक स्वाभाविक उत्तेजनाकी वजहसे नींद न आना (काफि)। औंघाई या निद्राका आवेश रहनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो)। मोह-प्राप्त या आच्छन्न अवस्था; लक्षण आदि प्रायः नींदके बाद बढ़ जाते हैं (लैके, बेल, ऐसिड-नाई, जिञ्जिबार)। भ्रमणके सपने (ब्रोम, नैट्र-कार्ब, साइलि); कलहके सपने (ऐल्यू; ऐण्टि-क्रूड, कास्टि, कोना, लैके, नैट्र-मूर, पल्स) और मृत-व्यक्तिके सपने (ऐनाक, ब्रोम, कोना, ऐसिड-हाइड्रोसियानिक, ऐसिड-फास, प्लैट, क्रोटेलस-कैस्कोवेला)।

त्वचा।—समूची देहकी त्वचा पीले रङ्गकी [रक्त-शोधनकी कमीकी वजहसे (Hæmatic) पित्त मिल जानेकी वजहसे नहीं, डा० हेरिङ्ग—कास्टि, कैमो, चेलिडो, चायना, डिजि, आयोड, लैके, मार्क, प्लम]; नैबा,—

पीव सोख जानेकी वजहसे ज्वर (Septicaemia—सेप्टिसिमिया)। जगह-जगह काले दाग पड़ना, त्वचाके नीचे रक्तस्राव होनेके कारण लाल दाग, फैलनेवाला या सूजनका भाव मिला विसर्प, त्वचा नीली, आभा लिये लाल, इसके साथ ही सुस्ती ला देनेवाला बोखार; बहुव्यापक (फैलेनवाले) रोगाधिकारमें या जीर्ण-देहवाले मनुष्यकी बीमारी। अंगुलीका फोड़ा,—पोड़ा नारंगा, रसभरी फुन्सियाँ, फोड़े, गले हुए जखम आदि, इसके साथ ही धीमा बोखार, रोगवाली जगह नीली आभा लिये मालूम होती है और स्राव बहुत थोड़ा होता है, काले रङ्गका, पतला और दूषित हुआ करता है; उदरामयके साथ सड़नेवाले जखम आदि। पुराने घावके चिन्होंपर फिरसे घाव हो जाता है (ऐसिड-फ्ल्र)। कीट पतङ्ग आदिका काटना (ऐन्थ्राक्सिन)। मुर्दा चीरनेके समय उसी अस्त्रके द्वारा अंगुली वगैरहके कट जानेपर (लैके) या गो-बीजका टीका लगवानेकी वजहसे बीमारियाँ (वैकसिन, मैलेण्ड्रिन)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—हाथ, पैर आदि ठण्डे, समूची देहमें रह-रहकर गर्मी पैदा हो जाती है। पसीना ठण्डा और लाल रंगका। पीत्त-ज्वरमें हरेक लोमकूपसे खूनका स्राव होता है और पित्त-मिला या खून-मिला दस्त तथा कै होती है। मेरुमज्जा और मस्तिष्कके आवरणका प्रदाह। सड़ी हुई चीजोंके संस्रव (Septic) या त्वचाके नीचे खूनका संचार हो जानेकी वजहसे (Purpuric) ज्वर।

वृद्धि।—सवेरे नींद खुलनेपर (लैके), सन्ध्याके समय (आँखोंमें दर्द आदि)। शरीर हिलाने और परिश्रमसे, ठण्डी हवामें (कण्ठनाली और श्वास-यंत्रके लक्षणमें)। सूखी हवामें (खाँसी), दाहिने पार्श्वमें और बसन्त ऋतुमें जब हवाका गर्म होना आरम्भ हो जाता है।

घटना।—विश्रामसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—डा० हेरिङ्गने लेकेसिस, नेजा, इलैप्स और क्रोटेलसमें सादृश्य और प्रभेदका इस तरह वर्णन किया है:—“क्रोटेलस—पतले खूनका स्राव, शरीरकी त्वचा (पित्त-ज्वरमें काले वमन आदिके साथ), डिफ्थिरिया रोगाधिकारमें नाकसे खूनका स्राव इत्यादि अवस्था क्रोटेलसका निर्णायक लक्षण है। पाण्डु-रोगमें स्नायविक लक्षण आदि मौजूद रहते हैं। लेकेसिसमें शरीरकी त्वचा ठण्डी और सूखी रहनेके बदले ठण्डी और (पसीना

होनेके कारण) लसदार हुआ करती है, जले घासकी तरह तलीवाला खूनका स्राव और शरीरके वाम पार्श्वकी बीमारीके साथ इसका बहुत ही निकट सम्बन्ध दिखाई देता है। इलैप्स कर्ण-विवरसे पीवका स्राव और दाहिने फेफड़ेकी बीमारीमें अधिक लाभदायक हुआ करता है। काले साँपके विष-द्वार (नैजा या कोब्रा)) निकला हुआ खून जमकर सूतकी तरह परिणत हो जाता है।" क्रोटेलस देहके दाहिने पार्श्वस्थित यंत्रादिके (जैसे—यकृत) ऊपर क्रिया प्रकाश किया करता है। काला रक्तमय कफ़ इलैप्सका एक और भी लक्षण है। टैरेण्टियुला-क्युबेन्सिस, आर्सेनिकम, पाइरोजन, लैकेसिस इत्यादि भी इसके सदृश हैं।

तुलनीय।—कैसाकाविला (मृत-व्यक्तिकी चिन्ता या सपने); लीरोसि (धनुष्टंकार); साइलि (टीकाका परिणाम); कैम्फर (कम्पन और शीत अनुभव); बेलेडोना (औंघाई, पर नींद नहीं आती) इत्यादि।

दोषघ्न।—लैकेसिस।

शक्ति।—३रे शततमिकसे २०० शततमिक क्रमतक साधारणतः व्यवहृत होता है। बहुत-से चिकित्सकोंने उच्चतर और उच्चतम क्रम व्यवहार कर उत्तम फल प्राप्त किया है।

क्रोटन-क्लोरेल

(CROTON CHLORAL)

दूसरा नाम।—क्रोटन-क्लोरेल—हाइड्रेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण; यह सुरासार और ग्लिसरिनमें गल जाता है।

उपयोगिता और आभास।—डा० हेलका कथन है, कि क्रोटन-क्लोरेलके प्रयोगसे केवल मस्तिष्क और मस्तिष्कके स्नायु-समूहका पक्षाघात पैदा हो जाता है; परन्तु शरीरके बाकी सभी स्नायुओंमें अपना काम करनेकी शक्ति रहती है।

. . . . . .

ऐलोपैथगण इसका जीभ, दाँत और मुखमण्डलके स्नायुशूलमें व्यवहार किया करते हैं।

शक्ति।—मूल विचूर्ण और निम्नशक्ति।

क्रोटन टिग्लियम

(CROTON TIGLIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जमालगोटेके बीज या तेलसे सुराके साथ मदर टिंचर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हैजा या उसी तरहका उदरामय ; सर्दी ; खाँसी ; अतिसार ; कर्णरोग ; खसड़ा ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; स्नायुशूल ; स्तनकी घुण्डीमें दर्द ; आँखोंका प्रदाह ; सन्धिवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—समूचा अन्त्रमण्डल (आँतें) ही इसका प्रधान आक्रमण स्थान है। अन्त्रपथके भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रत्येक कूपसे देहमें रहनेवाले खूनका जलीय अंश निकलकर बहुत ज्यादा पानीकी तरह मल और उसके साथ ही उदरामय (वेरेट्रम) पैदा कर देता है और खुजलीकी तरह त्वचापर बहुत खुजलानेवाला खसड़ा कच्छु निकल (रास) पड़ता है। क्रोटन टिग्लियमके नीचे लिखे कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं :—(१) स्तनकी घुंड़ीमें घाव, बच्चा जितनी बार स्तन खींचता है, उतनी ही बार उस स्तनसे उसी ओरके पृष्ठफलकतक तेज़ दर्द मालूम होता है (साइलिसिया)। (२) समूचे शरीरमें ऐसी फुन्सियाँ निकल आती हैं, जो बहुत खुजलाती हैं, जोरसे खुजलानेपर जलन होती है, पर बहुत सावधानीसे धीरे-धीरे खुजलानेपर आराम मिलता है। (३) बार-बार मलवेगके साथ बड़े वेगसे पानीकी तरह पीले रंगका मल निकलता है, प्रति बार स्तन पिलानेके बाद पाखाना होता है और उसके पहले पेटमें बहुत दर्द होता है। (४) पाखाना होनेके पहले उदरमें ऐसा मालूम होता है, मानो पानी हिल रहा है (कलकल होता है—ऐलो)। (५) स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रियमें रस-भरी

फुन्सियाँ या छोटे छालेकी तरह उद्भेद निकलते हैं और उनमें बहुत खुजलाहट होती है, उनमें इतना दर्द रहता है, कि खुजलानेपर बहुत तकलीफ़ होती है। (६) खाँसी—तकियेसे माथा छूते ही तेज़ खाँसी पैदा हो जाती है, रोगीको रातभर कमरेमें टहलकर या रातभर कुर्सीपर बैठकर सोनेको बाध्य होना पड़ता है। (७) कर्ण-विवरसे पीव निकलता है और बहुत खुजलाता है। (८) पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें बहुत दर्द मालूम होता है। (९) पीव बहनेवाली हड्डीमें जखम इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—शंकान्वित चित्त, मानो स्वयं उसपर कोई विपत्ति आना ही चाहती है (ऐमोन-कार्ब, ऐकि, क्लिमेट, क्यूप्रम, लिलियम, सिपि, वेलि, वेरेट)। किसी तरहका काम करनेकी इच्छा नहीं रहती। रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसकी चिन्ता-शक्ति उसके निजी स्वार्थमें ही आबद्ध हो रही है—अपना विषय छोड़कर और किसी बाहरी विषयमें उसकी सोचनेकी शक्ति नहीं है।

मस्तक।—ऐसा मालूम होता है, मानो माथा मेघाच्छन्न हो रहा है (ऐकि, आर्जेण्ट-नाई), मानो सब गड़बड़ हो रहा है, कुछ भी स्थिर नहीं कर सकता, सरमें चक्कर आना, मानों तेज़ शराब आदि पिया है : मस्तिष्कमें दुर्बलता, मुखमण्डल म्लान, देह बहुत कमजोर और मिचली ; निर्मल वायुमें वृद्धि। सरमें दर्द होता है और चक्कर आता है (आर्जेण्ट-नाई, बैराई, लैके, पल्स), माथा—भार मालूम होता है, सीधे खड़े होनेपर गिर जानेका उपक्रम होता है ; बैठा भी नहीं रह सकता, विशेषकर ऊपरकी ओर नज़र करनेपर (पल्स, साइलि)। सरमें दर्द—सवेरे बढ़ना (ब्रोम, कैल्के, कैलि-बाई, नक्स-वोम, फास, पोडो, पल्स, सिपि, स्क्विला)। कनपटीमें जलन होती है, मानो जलता हुआ अंगारा छू गया है ; टोपी पहननेपर तकलीफ़ मालूम होती है।

आँख।—मानो किसी अस्त्रसे काट रहा है—ऐसा दर्द, विशेषकर बाईं आँखमें ; बाईं आँखके कोनेमें चिलक मारनेकी तरह दर्द या शूल-वेदनाकी तरह दर्द। ऐसा मालूम होता है मानो आँखें सूतेमें बँधकर पीछेकी ओर खिंच रही हैं (हिप, ओलियेन, पैरिस)। आँखमें डङ्क मारनेकी तरह

दर्द (युफ्रे, हिप, लाई, मार्क, ऐसिड-नाई, ओलि-ऐन)। पीव बहनेवाला आँखोंका प्रदाह, पलकोंका फड़कना (बेल, कैमो, हिप, हायो, कोडिइन, लाई, स्ट्रैम)। अस्पष्ट दृष्टि—मानो बादल या अंधेरेके भीतरसे देख रहा है (ऐल्यू, बेल, कैल्के, कास्टि, क्रोक, फास, ऐसिड-फास, रियुटा, सल्फ)। बाईं आँखकी योजक त्वचा (Conjunctiva) लाल हो जाती है (सैबाड, वैलि)।

पाकस्थली।—बहुत मिचली—दृष्टि-लोप, ललाटमें पसीना और पेट फूल उठता है, ओकाई आती है और सरमें चक्कर आता है; पानी आदि पीनेपर बढ़ना (नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, पल्स, रास, टियुक्र)। मिचली और वमन—श्लेष्मा, वमनके बाद मुँहका स्वाद कड़वा हो जाता है। तेलकी गन्ध-मिला पीले रंगका जलीय (पानीकी तरह) वमन; वमनके पहले मिचली; पाकस्थलीमें भार मालूम होना और चेहरेपर पसीना हो जाना, रातके समय खट्टी कै; एकाएक पीली आभा लिये सफेद रङ्गकी फेन-भरी कै; पित्त वमन। पाकस्थलीमें ऐसा दर्द मानो खरोंच रहा है। पेटमें ऐसी जलन मानो जलता हुआ अंगारा छू गया है; उदरके ऊपरी प्रदेशमें जलन और उत्ताप; पेट गड़गड़ाता है और वक्षके ऊपरी भागमें दबाव मालूम होता है।

अन्त्राशय।—पेट भरा हुआ मालूम होता है और फूल उठता है, नाभि-प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो मोच खा रहा है। बेचैनी पैदा करनेवाला खालीपन, शून्यता और प्यास मालूम होना; उदरमें कलकल गड़गड़ शब्द। आँतोंमें हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द; मानो वह पानीसे भरी हुई है; विशेषकर उदरके बाएँ पार्श्वमें। अन्त्रशूल—गर्म दूध पीनेपर घट जाता है। पाखाना होनेके पहले ऐसा मालूम होना मानो अन्त्राशयमें पानी हिल रहा है (गैम्बो, ग्रै टि, कैलि-कार्ब, पोडो, थूजा)।

मल।—पेट फूलनेके कुछ ही बाद जोरसे पाखाना लग आता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु निकलते-निकलते एकाएक मल निकल पड़ता है। मल पीला पानीकी तरह; बार-बार वेगके साथ आम मिला, कुछ भूरे रंगका पाखाना हो जाता है या सफेद रङ्गका टुकड़े-टुकड़े आम मिला पानीकी तरह पतला पाखाना होता है; मलद्वारसे बंदूककी गोलीकी तरह बड़े वेगसे निकलता है (ऐलो, कैल्के-फास, फास, गैम्बोज, ग्रै टि, जेट्रोफा, पोडो, सल्फ; छिटककर निकलता है—नेट्र-सल्फ; पतली धारकी तरह निकलता

है—इलैट); वृद्धि—खाने-पीने या स्तनका दूध पीनेपर और गर्मीके दिनोंमें (पीनेपर बढ़ना—आर्जेण्ट-नाई, आर्स, ब्राम्बिड ; स्तनका दूध पीनेपर—ऐण्टि-क्रूड ; स्तनका दूध पीनेके समय—कोलोसिन्थ)। नाभि-प्रदेशपर दबाव डालनेसे मलद्वारतक दर्द फैल जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार बाहर निकल पड़ेगा। मलद्वारमें जलन होती है (ऐलो, आर्स, कैन्थ, कैलि-कार्ब, सल्फ़)। मलद्वारसे मानो एक कील या खूँटी बाहर निकलना चाहती है—इस ढंगका दर्द होता है।

पेशाब।—मूत्र, बहुत ज्यादा पीला और धुमैला ; कभी-कभी गदला दिखाई देता है; सफेद रङ्गके परमाणु सब उसपर तैरा करते हैं। सवेरे सफेद फेन-भरा पेशाब; दिन चढ़नेपर पेशाब सफेद होता है और उसमें सफेद तली जमती है; रातमें—कमला नीबूके रङ्गका पेशाब, उसकी तली गदली और रूईकी तरह दिखाई देती है। रातमें और सवेरे आगकी तरह गहरे लाल रङ्गका और रूईकी तरह पदार्थ-भरा पेशाब ; कभी-कभी लाल रंगका पेशाब और तलीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा रहता है—लकड़ीसे हिलानेपर वह लम्बे-लम्बे सूतके आकारमें बदल जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—मुष्क (Scrotum) बहुत खुजलाता है और इसीलिये रातमें अच्छी तरह नींद नहीं आती। खुजलानेपर बहुत आराम मालूम होता है। मुष्ककी त्वचापर रस-भरी फुन्सियाँ और खसड़ा जैसा निकल आता है और वह बहुत खुजलाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रियमें बहुत खुजली होती है, धीरे-धीरे खुजलानेपर दोनों स्तन फूले और कड़े हो जाते हैं। स्तनवृन्तसे पृष्ठ-फलकतक दर्द मालूम होता है। स्तनकी घुंडीमें स्पर्श सहन नहीं होता, बच्चेके स्तन पीनेके समय माताके स्तनवृन्तसे लेकर पृष्ठ-फलकतक तेज़ और असह्य दर्द होता है (साइलिसिया)।

श्वास-यंत्र।—वायुनलीमें घड़घड़ शब्द करनेवाला श्लेष्मा एकत्र होता है, शामके समय विशेष बढ़ जाता है। खाँसी, तकिया छूते ही तेज़ और प्रबल खाँसी आने लगती है। श्वास-रोधक खाँसी, रोगीको बाध्य होकर घरमें टहलना पड़ता है या कुर्सीपर बैठकर सोना पड़ता है। बार-बार श्लेष्मा निकालनेकी चेष्टा करता है; वायुनलीभुजके भीतरका श्लेष्मा सहजमें नहीं

निकलता ; सवेरे या सन्ध्याके समय थोड़े परिमाणमें श्लेष्मा निकला करता है और छातीमें दबाव तथा श्वास लेनेमें तकलीफ़ होती है। सीढ़ीपर चढ़नेके समय बढ़ जाता है (एमोन-कार्ब, आर्स, ऐंगस, बोर, हायो, मार्क, ऐसिड-नाई, रेटान, रियुटा)। बाएँ वक्षसे पीठतक मानो जकड़ा हुआ है—इस ढंगका दर्द (मार्टस-कम, पिक्स-लिक, थिरिड ; सल्फ़ देखिये)। हृद्स्पन्दन इतना अधिक कि ऊपरसे दिखाई देता है, स्त्री-सम्भोगके समय और भोजनके बाद सोनेके समय। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें शस्त्राघातकी तरह दर्द, खासकर साँस लेनेके समय।

त्वचा।—शरीरकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है। तलहत्थी बहुत गर्म और शिराएँ फूली हुईं, शरीर बहुत खुजलाता है, पर जोरसे खुजलानेपर जलन होती है और दर्द मालम होता है, धीरे-धीरे खुजलानेपर आराम मिलता है। विसर्पमें बहुत खुजली होती है। समूची देहमें छोटी-छोटी लाल-लाल रस-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं, जो बहुत खुजलाती हैं। पीव-भरी (Pustules) निकलती हैं। रोगवाली जगह लाल और गर्म मालम होती है और उसमें डंक मारनेकी तरह यंत्रणा होती है।

वृद्धि।—उदरामय होनेपर, शरीरको हिलानेसे, जलीय पदार्थ पीनेसे (ड्राम्बिड, पोडो); भोजन या स्तन पीनेके समय (आर्जेण्ट-नाई, आर्स); गर्मीके दिनोंमें मिष्टान्न या फल खानेपर (चायना, कार्बो-वेज, गैम्बो, आर्जेण्ट-नाई, मार्क-वाई, ड्राम्बिड, पल्स, सिस्टस-कैन) और बहुत थोड़ी मात्रामें खाने-पीनेपर। साधारणतः स्पर्शसे, मलनेपर या शरीरको हिलानेपर, बैठने या हाथ-पैर सिकोड़कर सोनेपर, निर्मल वायुमें (सरमें चक्कर आना और सुस्ती), शरीरकी गर्म अवस्थामें ठण्डा पानी पीनेपर (सम्पूर्ण स्वरलोप); गर्म दूध पीनेपर (अम्ल-शूल) और रातमें।

उपशम।—नींद आनेपर।

सम्बन्ध—सदृश।—प्रति-विष या दोषघ्न—ऐण्टि-टार्ट, यह स्वयं "रास" का प्रतिविष है, बच्चोंके पुराने उदरामयमें—कैलि-ब्रोम और फास, इसके सदृश गुणवाली दवाएँ हैं; स्तनके दर्दमें—ब्रायो, बोरैक्स, फैलेन और साइलिसिया। पाखाना होनेके बाद मूर्च्छा-भाव—नक्स।

शक्ति ।—इसका निम्न क्रम प्रयोग करनेपर यदि लाभ न हो तो निराश न होना चाहिये। कितनी ही बार ६ठा शततमिक, १२वाँ और ३० क्रमसे लाभ न होनेपर ५०० शततमिक एक मात्रा सेवन करनेपर तीन दिनके भीतर सम्पूर्ण आरोग्य हो जाता है।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन।

क्यूबेबा

(CUBEBA OR PIPER CUBEBA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बिना पकी, कच्ची कवाबचीनीको सुखाकर मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— पेशावमें अण्डलाल; मुँहमें जखम; घुंड़ी खाँसी; अतिसार; खूनी आम; शय्यामें पेशाव हो जाना; पुराना मेह-रोग; प्रमेह; आँतोंका बढ़ना; अण्डकोषका प्रदाह; वात; शीत-पित्त या आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत प्राचीन कालसे प्रमेहको नयी और पुरानी दोनों ही अवस्थाओंमें इसका व्यवहार होता आया है। डा० नैशने इसका लक्षण इस तरह बताया है:—यदि पहली अवस्थामें उपयोगी दवाका प्रयोग करनेपर नया प्रदाह घट जाये और यदि प्रसवके बाद मूत्रनालीके भीतर जलन और स्राव गाढ़ा हो, पीले रंगका या पीवकी तरह होता हो तो क्यबेबा उपयोगी है (पल्सेटिलाका स्राव इसी तरहका होता है, पर हलका होता है; मर्क्युरियसका स्राव भी ऐसा ही होता है, पर सब लक्षण रातमें बढ़ जाते हैं); परन्तु पुराने प्रमेहका पतला सफेद स्राव इन तीन दवाओंमें किसीका भी लक्षण नहीं है, यह केवल मूत्रनालीकी श्लैष्मिक झिल्लीपर ही अपनी क्रिया नहीं दिखाता, बल्कि आँतें और वायुनलीकी झिल्लीके ऊपर भी इसका वैसा ही प्रभाव है, इसके अलावा स्वस्थ शरीरमें इसका सेवन करनेपर कण्ठनालीमें जलन और सूखापन पैदा करता है; बार-बार लार निगल जानेकी इच्छा होती है; पाकाशय, अन्त्राशय और मलान्त्र वगैरहमें जलन मालूम होती है।

पाखानाका वेग और आँतोंमें शूल, रातमें सोई हुई अवस्थामें बढ़ जाता है और शय्या छोड़कर चलनेपर घटा हुआ मालूम होता है। पेशाब फेनभरा होता है तथा लार-मिला और खून-भरा होता है। छोटी बालिकाओंका प्रदर यह बहुत आश्चर्यरूपसे आराम कर देता है।

लक्षणावली

मन।—एकदम उन्माद—जो सामने पाता है, उसे तोड़ फेंकता है। आदमियोंको गाली देता है, मारने और उनपर थूक देनेकी इच्छा ; कभी-कभी उन्हें काटने दौड़ता है। बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना, सहजमें ही डर जाता है। बहुत मानसिक उत्तेजनाकी वजहसे नींद खुलनेपर उठ बैठता है और दो-चार समझमें न आनेवाली बातें कहकर फिर सो जाता है और मोह-प्राप्त अवस्थाकी भाँति पड़ा रहता है।

आँख।—ऊपरकी ओर घूमा करती है ; पुतली छोटी हो जाती है।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल और फूला हुआ ; मुँहमें छाले।

पाकस्थली।—वमन—पित्त और श्लेष्मा या भूरा बदबूदार पदार्थ वमन होता है ; पाकस्थलीमें अधिक परिमाणमें पित्त इकट्ठा हो जानेकी वजहसे बार-बार ओकाई आती है। मानो कोई जीव पाकाशयकी आवरक त्वचामें दाँतसे काटता है या नखसे आघात करता है। पाकाशयमें जलन मालूम होना।

मलान्त्र।—मलकी आँतमें सूजनकी वजहसे पाखाना होनेमें बाधा पड़ती है। मलद्वार अधिक परिमाणमें बाहर निकल पड़ता है और उसका रङ्ग गहरा लाल दिखाई देता है। मलद्वारमें बड़ा अर्बुद। बवासीर, जिससे स्राव होता है, काला खून या पीबकी तरह पीले रङ्गके रसका स्राव होता है। मलद्वारमें जलन और खुजली होती है, मलद्वारके बाहर मसा पैदा हो जाता है (युफ्रे, कास्टि, थूजा)। आम-रक्त (Dysentry) रोगमें—खून-मिली आँव अनजानमें निकल पड़ती है ; आँतोंमें बहुत अधिक मरोड़ होता है ; रातमें सोनेके समय बढ़ जाता है ; शय्या छोड़कर टहलते रहनेपर आराम मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—नासारन्ध्र और कण्ठनालीमें सर्दी अर्थात् उसमें श्लेष्मा-सञ्चय हो जाता है और नाक तथा कण्ठनालीसे बदबू निकलती है और बदबूदार कफ़ निकलता है; नाकके पिछले छेदसे गलेमें श्लेष्मा गिरता है। कण्ठमें जलन, सूखापन मालूम होना और स्वरभङ्ग हो जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय और पेशाब।—मूत्रनलीसे बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव होता है। पुराना प्रमेह (Gleet)—लिङ्गेन्द्रिय फूली और कड़ी हो जाती है; अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय परितृप्तिकी बहुत ज्यादा लालसा पैदा हो जाती है; मूत्रनलीमें कतरनेकी तरह या जलन पैदा करनेवाली तकलीफ़ पैदा हो जाती है, विशेषकर प्रसवके बाद (कैल्के, कैनाब, कैन्थ, कैप्स, कोलचिकम, डिजि, लैके, मर्क, नेट्र-कार्ब, फास, ओलियैन); स्राव—हरा पीले रङ्गका, गाढ़ा पीव (कोपेवा, मर्क, सेलिन, जथा); कपड़ेमें दाग पड़ता है। बार-बार पेशाबका वेग, पर पेशाबकी धार सूक्ष्म रहती है—थोड़े परिमाणमें (कैन्थ, कोलचि, डिजि, हेलिबो, स्टैफ), विशेषकर सन्ध्याके समय। स्त्री-सम्भोगके बाद खून-मिला पेशाब होता है, मुष्कको त्वचाके ऊपर खुजली और जलन-भरे जख्म या फटे घाव पैदा हो जाते हैं (क्रोटोन-टिग)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मूत्रनली और योनिका प्रदाह; तेज़ दर्द और बहुत ज्यादा स्रावके साथ बहुत दिनोंकी पुरानी बीमारीमें। प्रदर—स्राव बहुत ज्यादा पीला या हलके हरे रङ्गका, बहुत जखम करनेवाला और बदबूदार; योनिके बाहरी भागमें बहुत ज्यादा सुरसुरीकी वजहसे ऋतु समयके पहले ही हो जाता है और ऋतुके पहले और बाद प्रदरका स्राव हुआ करता है। छोटी बालिकाओंको कड़वा प्रदरका स्राव (कैनाब-सैट, कैल्के-कार्ब, मर्क-प्रोटो, मिलिफो, सिफिलिन, हाइड्रपिर)।

त्वचा।—आमवातकी तरहके उद्भेद; शरीर बहुत खुजलाता है; छोटी लाल-लाल कुछ ऊँची फुन्सियाँ—इनमें ऐसा दर्द होता है, मानो कोई कीड़ा डङ्क मार रहा है और कुटकुटाहट पैदा हो जाती है। दोनों ऊरुके भीतरकी ओर आमवातकी तरह उद्भेद निकलना; स्त्री-योनिके बाहरी भागमें बहुत सुरसुरी होनेकी वजहसे रोगिनीमें आलिङ्गनकी इच्छा पैदा हो जाती है। चेहरेपर खसड़ेकी तरह उद्भेद निकलते हैं और उनमें ऐसा

मालूम होता है; मानो कोई आल्पीन गड़ा रहा है। मुखमण्डलपर अनगिनती ऐसे व्रण निकल आते हैं, जिनकी नोक काले रङ्गकी रहती है। दबानेपर उसके भीतरसे खोल निकलती है। शिश्नके ऊपर पीव-भरी फुन्सियाँ निकल आती हैं, खाल उधड़ जाती है और उसमें पीव पैदा हो जाता है। शिश्नके ऊपर गड्हेकी तरह गन्दा जखम पैदा हो जाता है।

वृद्धि।—(अम्ल-शूल) रातमें सोनेवाली अवस्थामें।

घटना।—शय्या छोड़कर घूमने या टहलनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—कोपैवा, पाइपर, मिथिस, कैनाब-सैट, टेरिब, कैन्थ, कैप्सि, सैण्टेलम।

तुलनीय।—कैन्थरिस (मूत्रस्थलीकी उत्तेजना); आयोड (काली खाँसी)।

शक्ति।—२री दशमिकसे ३री शततमिक।

क्युकर्बिटा पेपो

(CUCURBITA PEPO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—देशी कोहड़ेके ताजे डण्ठलके रससे मूल अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—फीता या पट्ट क्रिमि ; गर्भावस्थामें वमन, भोजन करते ही भयङ्कर मिचली वगैरह अवस्थाओंमें यह बहुत लाभदायक है। फीता-जैसी क्रिमिमें दो आउन्सके अन्दाज बीज संग्रहकर आगपर सेंककर ऊपरवाला छिलका फेंक देना चाहिये, इसके बाद भीतरका गूदा खाना चाहिये। इसके खानेके १४-१५ घण्टा पहले कुछ न खाना चाहिये। खाली पेट सेवन करना चाहिये। इसके दो घण्टे बाद ही कैस्टर आयलका जुलाब लेना चाहिये।

शक्ति।—अन्यान्य रोगोंमें मूल अर्क या प्रथम दशमिक क्रम।

क्युलेक्स मस्का

(CULEX MUSCA)

परिचय।—एक तरहका मच्छड़।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्ट।

उपयोगिता और आभास।—नाक छिड़कते ही सरमें चक्कर आ जाना—इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कूफिया विस्कोसिसिमा

(CUPHEA VISCOSISSIMA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जुलाई या अगस्त महीनेमें संग्रहकर ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—बच्चोंका हैजा या रक्तामाशय।

उपयोतिता और आभास।—बच्चोंकी विसूचिका, रक्तामाशय और अम्ल रोगमें दहीकी तरह कै और जवानोंका अजीर्ण पदार्थ आदि वमन वगैरहमें इसका लाभ प्रधान रूपसे दिखाई देता है। दूध या खाये हुए पदार्थका अम्लमें परिणत हो जानेकी वजहसे बीमारियाँ; खाये हुए पदार्थ बिना पची अवस्थामें या दूध-दहीके आकारमें कै हो जाते हैं और बार-बार हरे रङ्गका पानीकी तरह खट्टा पाखाना होता है; बच्चा बहुत बेचैन रहता है और उसे बोखार रहता है। पेटमें कुछ भी नहीं रहता; ऐसा मालूम होता है, मानो खाये हुए पदार्थ आदि बच्चेके मुँहमें जानेके साथ ही ज्यों-के-त्यों, बिना बदली हुई अवस्थाके ही मलद्वारसे बाहर निकल जाते हैं (आर्जेण्ट-नाई)। रक्तामाशय

रोगमें—थोड़े परिमाणमें खून-मिला मल ; काँखना और बहुत तकलीफ़ ; इसके ऊपर प्रबल ज्वर, बेचैनी और अनिद्रा मौजूद रहती है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—इथ्यूजा, युफोर्ब-कोरो, सिकेलि, आर्स।

शक्ति ।—मूल अर्क ।

क्यूप्रेसस आस्ट्रैलिस

(CUPRESUS AUSTRALIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फल और पत्तोंसे अरिष्टके आकारमें यह दवा तैयार होती है।

उपयोगिता और आभास ।—छेदने या धक्का देनेकी तरह तेज़ दर्द ; सारे शरीरमें उत्ताप मालूम होना वगैरह लक्षणवाले वात और सूजाक रोगकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—एबीज, सेबाइना, थुजा ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

क्यूप्रेसस लोसोनियाना

(CUPRESUS LAUSONIANA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फल और पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—डा० बार्नेटने इसकी परीक्षा की थी। **पाकाशयमें तेज दर्द** इसका निर्देशक लक्षण है।

डा० बार्नेट इसे अर्बुद रोगमें सेबाइना और थूजाके सम-लक्षणमें व्यवहार करते थे।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

क्यूप्रम ऐसेटिकम

(CUPRUM ACETICUM)

दूसरा नाम।—ऐसिटेट आव कापर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चुआये हुए पानीमें मूल अर्क और निम्न-क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—कलेजेमें दर्द; संन्यास; मस्तिष्ककी बीमारी; भौंहोंका स्नायु-शूल; मस्तिष्क-मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह; हैज़ा; ताण्डव; घुंड़ी यानी काली खाँसी; अतिसार; कितने ही तरहके उद्भेद; विसर्प; विभ्रम या भ्रम-भरी चीजें देखना; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय; मानसिक विकार; खसड़ा; पक्षाघात; चेचक या लाल ज्वर; फीतेकी तरह क्रिमि; मूत्रक्षारकी वजहसे विषाक्तता; क्रुप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—क्यूप्रम मेटालिकम देखिये। क्यूप्रम मेटालिकमकी तरह क्यूप्रम ऐसेटिकमकी अकड़न (Cramps) या मरोड़की तरह दर्द, पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना, अपस्मार या मृगी वगैरहमें यह उपयोगी है। शरीरके उद्भेद एकाएक बैठ जाने या लोप हो जानेके कारण पैदा हुए रोगमें भी यह क्यूप्रम मेटालिकमकी तरह काम करता है। बाईं ओरके रह-रहकर होनेवाले अधकपारीके सर-दर्दमें इससे ज्यादा फायदा हुआ करता है। मृगी या अपस्मार रोगमें इसका प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि—"सरासरानुभूति" (सुरसुरी—Aura) जानुसे आरम्भ होकर तलपेटतक उठती है और इसके बाद रोगी बेहोश हो पड़ता है। शरीरमें दाह और गलेके भीतर मानो पानी उठ रहा है, ऐसा मालूम होना; श्वास रोध करनेवाली खाँसीका प्रकोप, गाढ़े गोंदकी तरह या रबरकी तरह श्लेष्माका स्राव और बहुत दिनोंकी प्रसव-वेदना वगैरहमें यह विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मन।—अन्यमनस्क (ऐगार, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, चेलिडो, केलि-ब्रोम, लैक-कैन, नक्स-मस, साइलिसिया)। उसे यह स्थिर धारणा रहती

है, कि पुलिसके आदमी उसे पकड़ने आ रहे हैं। सन्ध्याके समय सोनेके बाद आँखें बन्द करनेपर नाना प्रकारकी अद्भुत भ्रम-भरी चीजें (अलीक वस्तु) देखता है, मानो वह नाना प्रकारकी मूर्त्तियाँ और भाव-भङ्गी देख रहा है, ऐसा मालूम होता है (एब्सिन्थ, बेल, कैनाब-इन, कार्बोन-सल्फ़, कोकेइन, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन; मानो घरके भीतर अनगिनती साँप घुस रहे हैं—ओपि, स्ट्राम, वेलि)। चिल्लाया या गाली देता हुआ जाग उठता है (गाता-गाता जाग उठता है—सल्फ़)। वमन, आँतोंका शूल, प्यास, अङ्ग-प्रत्यङ्ग ठण्डे इत्यादिके साथ मानसिक उद्वेग (आर्स, कैम्फ़ो)।

मस्तक।—चैतन्य दूर करनेवाला सरमें चक्कर आना; पाखाना हो जानेके बाद आराम मालूम होना (नक्स-वोम, ब्राई; बहुत ज्यादा मल निकलनेपर सरमें दर्द—कोना); बहुत यन्त्रणादायक सर-दर्द; निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है; छुरीकी चोटकी तरह यन्त्रणा, कभी ललाटमें, कभी मूर्द्धदेशमें, कभी कनपटीमें या सरके पिछले भागमें दर्द मालम होता है; कुछ भी दबाव पड़नेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है। बाईं ओरका अधकपारीका दर्द; सविराम ज्वर (स्पाइजि, कोलो)। एकाएक शरीरका उद्भेद लोप होनेकी वजहसे मस्तिष्कका प्रदाह (जिङ्क); बहुत सुस्ती और तेज़ श्वास-प्रश्वास; मुखमण्डल फूला हुआ और उजला; पानी पीनेके समय बच्चा पानीका चम्मच या पानीका बर्त्तन पकड़ रखता है। मस्तिष्क शून्य मालूम होता है। ऊँची छतवाले मकानमें प्रवेश करनेपर रोगीके सरमें चक्कर आता है और मूर्च्छा आनेका उपक्रम हो जाता है (ऊपरकी ओर देखनेपर सरमें चक्कर आता है—पल्स, साइलि)।

मुखमण्डल।—चेहरा मुर्देकी तरह सफेद, गाल रक्त-शून्य और आँखें गड्ढेमें धँसी तथा नाक उठी और नुकीली। चेहरेका स्नायुशूल; दाहिने कानके पीछेसे गण्डास्थि और ऊपरी हनुतक हो जाता है; शरीर सञ्चालनसे, रातके समय और मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाता है; दबाने या माथा कसकर बाँधनेसे घट जाता है; मुखमण्डलका भाव बहुत यन्त्रणा-व्यञ्जक मालूम होता है। हनुस्तम्भ—दाँती लग जाती है और तालुके सिकुड़नेकी वजहसे बोलनेकी शक्ति गायब हो जाती है; रह-रहकर चौंक उठता है और इस तरह मुँह चलाता है, मानो कोई चीज़ खा रहा है या निगल रहा है (मानो चबा रहा है, इस तरह मुँह हिलाता है—ब्राई, कैमो, ऐको, लैके, मस्कस, सोलेनम-नाई, वेरेट)।

पाकाशय आदि।—मुँहका स्वाद ताँबेके जङ्गकी तरह और जीभपर धुमैला पतला लेप चढ़ा रहता है, लगातार मिचली होकर खाँसी आती है और इसके साथ ही आक्षेपिक श्वास-प्रश्वास होता है या बार-बार पेशाब हुआ करता है; आँतोंमें शूल और प्रत्यङ्गोंकी अकड़नके भावके साथ वमन, कै हुआ पदार्थ थोड़ा हरे रङ्गका सफेद आभा लिये और फेन-भरा रहता है। बार-बार नीली आभा लिये वमन और उसके बाद ओकाई आती है और श्वासमें तकलीफ़ होती है। नाड़ी अनियमित और तेज़। उदर भीतरकी ओर खिंचा करता है (प्लम्बम) और उसमें थोड़ा दर्द होता है। वमन और उदरामयके साथ आँतोंमें तेज़ दर्द; रातके समय आँतोंमें शूल। अन्त्राशय वायुसे भरा, फूला और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। मल—क्रिमि-भरा, काले रङ्गका और लाल श्लेष्मा मिला और उसके साथ ही काँखना और सारे शरीरकी सुस्ती।

श्वास-यन्त्र।—छाती एकाएक जकड़ जाती है, श्वासमें तकलीफ़ होने लगती है और रोगी बहुत उद्विग्न हो पड़ता है; बार-बार प्रचण्ड सूखी खाँसी आती है, खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा (इग्ने जा; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वक्ष फट जायगा—सल्फ़); खाँसीके बाद बहुत देरतक कलेजा काँपा करता है, वक्षस्थलमें दबाव मालूम होता है और रोगी डरता है; बैठनेपर यह भाव बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—अपस्मार या मृगी—जानुसे सुरसुरी मालूम होना आरम्भ होता है और वह तलपेटतक फैल जाता है, इसके बाद रोगी बेहोश होकर गिर जाता है। मुँहसे फेन निकला करता है और अङ्ग-प्रत्यङ्ग पटकता रहता है।

त्वचा।—खसड़ा, विसर्प या चेचक। खुजलानेवाला खसड़ा या चेचककी गोटियाँ या कोई दूसरा उद्भेद एकाएक बैठ जानेकी वजहसे विकार या किसी दूसरी तरहकी बीमारी (उद्भेद दब जाना—ब्राई, सोरिन, सल्फ़, कैम्फ़ो, जिङ्क; कच्छु या अकौताका गायब हो जाना—सैनिकूला)।

सम्बन्ध।—सदृश।—अनुपूरक—कैल्के, जेल्स (मानसिक लक्षण आदिके सम्बन्धमें सदृश), साइकूटा, सोलेनम-नाइग्रम और (मस्तिष्कोदक या शरीरके उद्भेद विलोप हो जानेकी वजहसे मस्तिष्क-प्रदाहमें सदृश) जिङ्कम।

दोषघ्न ।—बेलेडो, चायना, साइक्यूटा, हिपर, मर्क, दूपिका, नक्स-वोमिका ।

शक्ति ।—३रा दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम ।

क्यूप्रम आर्सेनिकोसम

(CUPRUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम ।—ऐर्सिनाइट आफ कापर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—हैज़ा ; विसूचिकाकी तरह उदरामय ; ताण्डव ; उदरामय ; आँतोंका शूल ; पक्षाघात ; जरायुका स्नायुशूल ; वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—मारात्मक विसूचिका रोगमें इसका फायदा करना प्रसिद्ध है । डा० हेरिङ्गके मतसे पेटमें तेज़ जलन और अकड़नकी तरह दर्दमें यह बहुत फायदेमन्द है । डा० क्लार्क कहते हैं, कि उदरमें भयानक स्नायुशूलकी तरह दर्द, ऊपरी पेटमें बहुत यन्त्रणा, अन्ननली और मूत्रनलीमें जलन, चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी और जाड़ा मालूम होना वगैरह इसके प्रधान लक्षण हैं । डा० सालजर और डा० भादुड़ीके मतसे विसूचिकामें सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा, हाथ-पैरोंमें ऐंठन और बेहद हिचकी, रह-रहकर लसदार ठण्डा पसीना इत्यादि कूप्रम आर्सेनिकोसमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं । विसूचिकाकी हिमाङ्ग अवस्थामें (शीत आ जानेपर) जब रोगीके शरीरमें रह-रहकर ठण्डा पसीना हुआ करता है और फिर सूख जाता है, उस समय कूप्रम आर्सेनिकोसमसे बहुत फायदा होता है । पेशाब रुकनेकी वजहसे विकार (Uremia) और अकड़न आदिमें भी यह बहुत उपकारी है ।

क्यूप्रम ऐसेटिकम

(CUPRUM ACETICUM)

दूसरा नाम ।—ऐसिटेट आव कापर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें मूल अर्क और निम्न-क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं :— कलेजेमें दर्द ; संन्यास ; मस्तिष्ककी बीमारी ; भौंहोंका स्नायु-शूल ; मस्तिष्क-मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; हैज़ा ; ताण्डव ; घुंड़ी यानी काली खाँसी ; अतिसार ; कितने ही तरहके उद्भेद ; विसर्प ; विभ्रम या भ्रम-भरी चीजें देखना ; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय ; मानसिक विकार ; खसड़ा ; पक्षाघात ; चेचक या लाल ज्वर ; फीतेकी तरह क्रिमि ; मूत्रक्षारकी वजहसे विषाक्तता ; हूप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—क्यूप्रम मेटालिकम देखिये । क्यूप्रम मेटालिकमकी तरह क्यूप्रम ऐसेटिकमकी अकड़न (Cramps) या मरोड़की तरह दर्द, पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना, अपस्मार या मृगी वगैरहमें यह उपयोगी है । शरीरके उद्भेद एकाएक बैठ जाने या लोप हो जानेके कारण पैदा हुए रोगमें भी यह क्यूप्रम मेटालिकमकी तरह काम करता है । बाईं ओरके रह-रहकर होनेवाले अधकपारीके सर-दर्दमें इससे ज्यादा फायदा हुआ करता है । मृगी या अपस्मार रोगमें इसका प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि— "सरासरानुभूति" (सुरसुरी—Aura) जानुसे आरम्भ होकर तलपेटतक उठती है और इसके बाद रोगी बेहोश हो पड़ता है । शरीरमें दाह और गलेके भीतर मानो पानी उठ रहा है, ऐसा मालूम होना ; श्वास रोध करनेवाली खाँसीका प्रकोप, गाढ़े गोंदकी तरह या रबरकी तरह श्लेष्माका स्राव और बहुत दिनोंकी प्रसव-वेदना वगैरहमें यह विशेष लाभदायक है ।

लक्षणावली

मन ।—अन्यमनस्क (ऐगार, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, चेलिडो, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, नक्स-मस, साइलिसिया) । उसे यह स्थिर धारणा रहती

है, कि पुलिसके आदमी उसे पकड़ने आ रहे हैं। सन्ध्याके समय सोनेके बाद आँखें बन्द करनेपर नाना प्रकारकी अद्भुत भ्रम-भरी चीजें (अलीक वस्तु) देखता है, मानो वह नाना प्रकारकी मूर्त्तियाँ और भाव-भङ्गी देख रहा है, ऐसा मालूम होता है (ऐब्सिन्थ, बेल, कैनाब-इन, कार्बोन-सल्फ़, कोकेइन, कैलि-ब्रोम, लेक-कैन ; मानो घरके भीतर अनगिनती साँप घुस रहे हैं—ओपि, स्ट्राम, वेलि)। चिल्लाया या गाली देता हुआ जाग उठता है (गाता-गाता जाग उठता है—सल्फ़)। वमन, आँतोंका शूल, प्यास, अङ्ग-प्रत्यङ्ग ठण्डे इत्यादिके साथ मानसिक उद्वेग (आर्स, कैम्फो)।

मस्तक ।—चैतन्य दूर करनेवाला सरमें चक्कर आना ; पाखाना हो जानेके बाद आराम मालूम होना (नक्स-वोम, ब्राई ; बहुत ज्यादा मल निकलनेपर सरमें दर्द—कोना); बहुत यन्त्रणादायक सर-दर्द ; निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर पैदा होता है ; छुरीकी चोटकी तरह यन्त्रणा, कभी ललाटमें, कभी मूर्द्धादेशमें, कभी कनपटीमें या सरके पिछले भागमें दर्द मालम होता है ; कुछ भी दबाव पड़नेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है। बाईं ओरका अधकपारीका दर्द ; सविराम ज्वर (स्पाइजि, कोलो)। एकाएक शरीरका उद्भेद लोप होनेकी वजहसे मस्तिष्कका प्रदाह (जिङ्क); बहुत सुस्ती और तेज़ श्वास-प्रश्वास ; मुखमण्डल फूला हुआ और उजला ; पानी पीनेके समय बच्चा पानीका चम्मच या पानीका बर्त्तन पकड़ रखता है। मस्तिष्क शून्य मालूम होता है। ऊँची छतवाले मकानमें प्रवेश करनेपर रोगीके सरमें चक्कर आता है और मूर्च्छा आनेका उपक्रम हो जाता है (ऊपरकी ओर देखनेपर सरमें चक्कर आता है—पल्स, साइलि)।

मुखमण्डल ।—चेहरा मुर्देकी तरह सफेद, गाल रक्त-शून्य और आँखें गड़हेमें धँसी तथा नाक उठी और नुकीली। चेहरेका स्नायुशूल ; दाहिने कानके पीछेसे गण्डास्थि और ऊपरी हनुतक हो जाता है ; शरीर सञ्चालनसे, रातके समय और मानसिक परिश्रमसे बढ़ जाता है ; दबाने या माथा कसकर बाँधनेसे घट जाता है ; मुखमण्डलका भाव बहुत यन्त्रणा-व्यञ्जक मालूम होता है। हनुस्तम्भ—दाँती लग जाती है और तालुके सिकुड़नेकी वजहसे बोलनेकी शक्ति गायब हो जाती है ; रह-रहकर चौंक उठता है और इस तरह मुँह चलाता है, मानो कोई चीज़ खा रहा है या निगल रहा है (मानो चबा रहा है, इस तरह मुँह हिलाता है—ब्राई, कैस्रो, ऐको, लैके, मस्कस, सोलेनम-नाई, वेरेट)।

पाकाशय आदि।—मुँहका स्वाद ताँबेके जङ्गकी तरह और जीभपर धुमैला पतला लेप चढ़ा रहता है, लगातार मिचली होकर खाँसी आती है और इसके साथ ही आक्षेपिक श्वास-प्रश्वास होता है या बार-बार पेशाब हुआ करता है; आँतोंमें शूल और प्रत्यङ्गोंकी अकड़नके भावके साथ वमन, कै हुआ पदार्थ थोड़ा हरे रङ्गका सफेद आभा लिये और फेन-भरा रहता है। बार-बार नीली आभा लिये वमन और उसके बाद ओकाई आती है और श्वासमें तकलीफ़ होती है। नाड़ी अनियमित और तेज़। उदर भीतरकी ओर खिंचा करता है (प्लम्बम) और उसमें थोड़ा दर्द होता है। वमन और उदरामयके साथ आँतोंमें तेज़ दर्द; रातके समय आँतोंमें शूल। अन्नाशय वायुसे भरा, फूला और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। मल—क्रिमि-भरा, काले रङ्गका और लाल श्लेष्मा मिला और उसके साथ ही काँखना और सारे शरीरकी सुस्ती।

श्वास-यन्त्र।—छाती एकाएक जकड़ जाती है, श्वासमें तकलीफ़ होने लगती है और रोगी बहुत उद्विग्न हो पड़ता है; बार-बार प्रचण्ड सूखी खाँसी आती है, खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा (इय्य जा; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो वक्ष फट जायगा—सल्फ); खाँसीके बाद बहुत देरतक कलेजा काँपा करता है, वक्षस्थलमें दबाव मालूम होता है और रोगी डरता है; बैठनेपर यह भाव बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—अपस्मार या मृगी—जानुसे सुरसुरी मालूम होना आरम्भ होता है और वह तलपेटतक फैल जाता है, इसके बाद रोगी बेहोश होकर गिर जाता है। मुँहसे फेन निकला करता है और अङ्ग-प्रत्यङ्ग पटकता रहता है।

त्वचा।—खसड़ा, विसर्प या चेचक। खुजलानेवाला खसड़ा या चेचककी गोटियाँ या कोई दूसरा उद्भेद एकाएक बैठ जानेकी वजहसे विकार या किसी दूसरी तरहकी बीमारी (उद्भेद दब जाना—ब्राई, सोरिन, सल्फ, कैम्फो, जिङ्क; कच्छु या अकौताका गायब हो जाना—सैनिकूयला)।

सम्बन्ध।—सदृश।—अनुपूरक—कैल्के, जेल्स (मानसिक लक्षण आदिके सम्बन्धमें सदृश), साइकूटा, सोलेनम-नाइग्रम और (मस्तिष्कोदक या शरीरके उद्भेद विलोप हो जानेकी वजहसे मस्तिष्क-प्रदाहमें सदृश) जिङ्कम।

दोषघ्न ।—बेलेडो, चायना, साइकूटा, हिपर, मर्क, इपिका, नक्स-वोमिका ।

शक्ति ।—३रा दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रम ।

क्यूप्रम आर्सेनिकोसम

(CUPRUM ARSENICOSUM)

दूसरा नाम ।—ऐसिनाइट आफ कापर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— हैज़ा ; विसूचिकाकी तरह उदरामय ; ताण्डव ; उदरामय ; आँतोंका शूल ; पक्षाघात ; जरायुका स्नायुशूल ; वमन ।

उपयोगिता और आभास ।—मारात्मक विसूचिका रोगमें इसका फायदा करना प्रसिद्ध है । डा० हेरिङ्गके मतसे पेटमें तेज़ जलन और अकड़नकी तरह दर्दमें यह बहुत फायदेमन्द है । डा० क्लार्क कहते हैं, कि उदरमें भयानक स्नायुशूलकी तरह दर्द, ऊपरी पेटमें बहुत यन्त्रणा, अन्ननली और मूत्रनलीमें जलन, चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी और जाड़ा मालूम होना वगैरह इसके प्रधान लक्षण हैं । डा० सालजर और डा० भादुड़ीके मतसे विसूचिकामें सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा, हाथ-पैरोंमें ऐंठन और बेहद हिचकी, रह-रहकर लसदार ठण्डा पसीना इत्यादि कूप्रम आर्सेनिकोसमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं । विसूचिकाकी हिमाङ्ग अवस्थामें (शीत आ जानेपर) जब रोगीके शरीरमें रह-रहकर ठण्डा पसीना हुआ करता है और फिर सूख जाता है, उस समय कूप्रम आर्सेनिकोसमसे बहुत फायदा होता है । पेशाब रुकनेकी वजहसे विकार (Uremia) और अकड़न आदिमें भी यह बहुत उपकारी है ।

लक्षणावली

मस्तक आदि ।—सरमें चक्कर आना और जड़-भाव। ऐसा मालूम होता है कि आँखके सामने मानो काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं।

पाकस्थली ।—उदरमें भयानक जलन और अकड़न ; मिचली और ऊपरी पेटमें बहुत तकलीफ़। तकलीफ़से रोगी चिल्लाया करता है ; हाथ-पैरकी अंगुलियोंमें अकड़न होती है ; प्रत्येक दो-तीन सप्ताहका अन्तर देकर आँतोंमें असह्य दर्द पैदा हो जाता है। दुर्दमनीय हिचकी।

मल ।—वमन, पानीकी तरह दस्त, रह-रहकर ठण्डा और लसदार पसीना होना और अन्ननली तथा उदरमें असह्य जलन होना। पेटमें बहुत ऐंठन होती है और हिमाङ्ग (Collapse) अवस्था पैदा हो जाती है ; बहुत कूथनके साथ लगातार आँव निकला करती है।

वक्ष और हृत्पिण्ड ।—हाथ-पैर काँपनेके साथ-ही-साथ कलेजा धड़कना ; कलेजेकी धड़कनके कारण वक्षस्थल तरङ्गकी तरह अर्थात् ऊँचा उठता है और फिर नीचा होता है। बाएँ पृष्ठफलकके भीतरका एक छोटा अंश बहुत दर्द करता है और यह दर्द बाएँ फेफड़ेमें फैलकर बाएँ वक्षमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द पैदा कर देता है ; ठण्डी या लम्बी साँस लेनेपर यह दर्द बढ़ जाता है ; पीठका बायाँ पार्श्व, बायाँ कन्धा और बाँह सुन्न हो जाता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—समूची देह ठण्डी और पसीनेसे तर, शरीरकी त्वचा मुर्देकी तरह सफेद और रक्तहीन ; शरीर बरफकी तरह ठण्डा, हाथ-पैरोंमें ऐंठन और हिचकी आया करती है। विसूचिकाकी हिमाङ्ग अवस्थामें कभी-कभी ठण्डा लसदार पसीना निकलता है और वह फिर गायब हो जाता है ; रुक-रुककर पसीना होना (डा० सैलजर)।

वृद्धि ।—दबानेपर ; ठण्डी हवामें और शरीर-सञ्चालनसे ; लम्बी साँस लेनेपर और भोजनके बाद (मिचली)।

घटना ।—स्थिर रहनेपर ; पीठमें अकड़न और कम्पन ; परन्तु शरीर हिलानेपर घट जाता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—बाएँ वक्षके दर्दके सम्बन्धमें—ऐक्टिया-रेसि, ऐको वगैरह और कूथनके साथ आम-रक्त तथा उदरामय रोगमें मर्क-कोर और विसूचिकामें आइरिस-वार्सि, कैम्फो, वेरेट, आर्स वगैरह ।

शक्ति ।—२रा दशमिक विचूर्णसे ३० शततमिक क्रमतक ।

क्यूप्रम मेटालिकम

(CUPRUM METALLICUM)

दूसरा नाम ।—तांबा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—प्रसवके बाद प्रसूतिका दर्द अर्थात् प्रसवके बादका दर्द ; कलेजेका दर्द ; दमा ; सर्दी ; मृत्पाण्डु ; विसूचिका ; ताण्डव ; अकड़न-भरी खाँसी ; ऐंठन ; विसर्प ; मूर्च्छा ; पाकाशयकी गड़बड़ी ; वात-रक्त ; रक्त-वमन ; मूर्च्छावायु ; प्रदाह ; स्वरनालीका आक्षेप ; खसड़ा ; मस्तिष्कावरण-प्रदाह ; स्नायुशूल ; हृदयमें दर्द ; पक्षाघात ; फेफड़ेका प्रदाह ; दादकी तरह उद्भेद ; अनिद्रा ; अकड़न ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; जखम ; हूप-खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना और ऐंठन—क्यूप्रमके प्रधान क्रिया-फल हैं ; और यह पेशियोंका सङ्कोचन हाथ-पैरोंकी अंगुलीसे आरम्भ होकर धीरे-धीरे समूचो देहमें फैल जाता है। गर्भावस्थामें ऐंठन, प्रसवके बाद अकड़न, डर या चिढ़ पड़नेके कारण आक्षेप या किसी रोगका अपना पहला स्थान छोड़कर मस्तिष्कपर आक्रमण कर देना और इसी वजहसे अकड़न आदि, इस पेशिक-सङ्कोचनके मुख्य फल हैं और क्यूप्रमका एक सबसे प्रधान निर्णायक लक्षण है। नीचे डा० ऐलेनके लिखे कई सिद्धिप्रद लक्षण लिखे जाते हैं। जैसे—(१) बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और रात्रि-जागरणकी वजहसे शारीरिक और मानसिक अवसाद, दुर्दमनीय मानसिक उद्वेग। (२) मुँहमें ताँबेका स्वाद और लार बहना।

(३) साँपकी तरह बार-बार जीभ बाहर निकालना और फिर भीतर खींच लेना। (४) पानी आदि पीनेपर पाकस्थलीमें गड़गड़ शब्द होता है। (५) विसूचिका—इसके साथ ही उदरमें और पैरकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है। (६) शरीरके उद्भेद आदि एकाएक बैठ जानेके कारण बीमारियाँ, जैसे—विकार, पेशियोंका सिकुड़ना-फैलना, सारे शरीरका आक्षेप और वमन। (७) पैरका पसीना रुकनेकी वजहसे बीमारियाँ आदि। (८) सारे शरीरके आक्षेपके समय चेहरा नीला हो जाता है और हाथका अंगूठा मुड़कर दूसरी-दूसरी अंगुलियोंकी जड़में आ पहुँचता है। (९) प्रत्यंग आदिके अन्तिम भागमें—तलहत्थीमें, पैरके तलवेमें और जंघाकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है; हाथ-पैर बहुत कमजोर मालूम होते हैं। (१०) जीभका पक्षाघात, वाक्‌शक्तिका घटना—उच्चारण साफ़-साफ़ और पूरा-पूरा नहीं होता। (११) अपस्मार या मृगी; जानुसे सुरसुरी चढ़कर ऊपरकी ओर जाती है; रातमें नींदवाली अवस्थामें बढ़ जाती है; अमावस्याके समय, निर्दिष्ट समयका अन्तर देकर और प्रत्येक ऋतुके समय; माथेके बल गिरने या माथेमें और किसी तरहकी चोट पहुँचनेकी वजहसे बीमारियाँ। (१२) खाँसी—खाँसनेपर ऐसी आवाज़ होती है, मानो बोतलसे पानी ढाल रहा है; पानी पीनेपर घट जाती हैं। (१३) हूप खाँसी—बहुत दिनोंसे प्रकोप, श्वासरोध करनेवाली आक्षेपिक खाँसी; प्रकोपके समय बोल नहीं सकता।—हाँफ उठता है, चेहरा नीला हो जाता है, देह कड़ी हो जाती है और अकड़ जाती है। लगातार तीन बार खाक-खाककर खाँसी आती है, फिर होशमें आ जाने बाद अर्थात् कुछ सम्हल जानेपर कड़ी खायी हुई चीज़ कै हो जाती है, प्रत्येक प्रकोपके समय मानो रोगी बेहोश-सा हो जाता है। (१४) बहुत-सी सन्तान प्रसव करनेवालियोंका प्रसवके बादका दर्द बहुत ही तकलीफ़ देनेवाला हुआ करता है। (१५) शरीरके बाएँ पार्श्वपर ही इसका विशेष आक्रमण होता है।

लक्षणावली

मन।—प्रचण्ड विकार—भयङ्कर क्रोध, किसीको भी पहचान नहीं सकता; छिप रहनेकी चेष्टा करता है (स्ट्रैमो, विरेट-विर)। नया उन्माद (Mania), रोगी सबको काटने दौड़ता है (बेल, बूफो, कैन्थ, सिकेलि, स्ट्रैम) और सामने जो कुछ पाता है, वही टुकड़े-टुकड़े कर डालता है (टैरान,

वेरेट-ऐल्ब)। मूर्ख निर्बोधोंकी तरह आचरण करता है (हायो), निर्बोधकी तरह हँसा करता है (ऐनाक, कैनाब-इण्डि, क्रोकस-सैट); निर्बोधकी तरह भाव-भङ्गी बनाता है; जवान आदमी भी बच्चेकी तरह काम करते हैं। ऊपरी पेटमें गड़बड़ी मालूम होती है (कैलि-कार्ब, प्लैट)। हमेशा सशङ्कित रहता है। कोई भी उसके पास क्यों न जाये, रोगी उससे डरता है (आर्नि, आयोड, वेरेट-विर)। गिर जानेका भय, बच्चा धायको पकड़ रखता है (बोरैक्स, जेल्सि)। साँपकी तरह बार-बार जीभ बाहर निकालता है और भीतर खींचता है—विकारावस्थामें गायके बछड़ेकी तरह आवाज़ करता है; रह-रहकर लोमहर्षक चिल्लार कर उठता है (एपिस, हेलिबो, हाइपिर); रातभर बहुत बेचैन रहता है, छटपटाता है और उसमें चेतना नहीं रहती; पूर्ण मोह, इसके साथ ही पेशियोंका सङ्कोचन (एपिस, प्लम्ब), बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम और रातमें जागरणकी वजहसे मानसिक और शारीरिक अवसाद (काक्यु, इग्ने, ऐसिड-नाइ, नक्स)। बहुत बकता है (हायो, लैके, ओपि, स्ट्रैम, वेरेट)।

मस्तक।—सरमें प्रचण्ड दर्द, बाईं आँखके ऊपर दर्द बढ़ जाता है और इसी आँखके ऊपरके स्थानपर और नाककी जड़में बहुत दबाव मालूम होता है। शरीरका सञ्चालन करनेपर बढ़ता है और स्थिर होकर सोये रहनेपर घटता है। मस्तिष्कमें ऐसा असह्य दर्द मालूम होता है, मानो एक फोड़ा निकल आया है। मस्तिष्क सुन्न जैसा मालूम होता है। भयंकर और लगातार बना रहनेवाला सर-दर्द—बँधे समयका अन्तर देकर तरङ्गकी तरह पैदा होता है, ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें कोई पानी ढाल रहा है। सरमें चक्कर आना, पढ़ने (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ग्रैटि, हेरेक्लि; ऊँचे स्वरसे पढ़नेके समय—पेरिस) और शून्यकी ओर देखनेपर (पल्स, साइलि); मानो सभी चीजें घूम रही हैं या ऐसा मालूम होता है कि रोगीकी समूची देह घूम रही है (आर्नि, ऐसा, बेल, लाइ, कैलि-बाइ, फेर-ऐसेट, नक्स, ओलि-ऐन, फास, रोडो, स्ट्रैफ, वेलि, वेरेट, वायोला-ओडो); माथा सामनेकी ओर ढुलक पड़नेका उपक्रम होता है (आर्स, फेरम-ऐसेट, नेट्र-मूर, रेनान, पोडो, रास), शरीर हिलानेपर बढ़ना और स्थिर होकर सोये रहनेपर आराम मालम होता है। ऐसा मालम होता है मानो माथा शून्य है (आर्जेण्ट, काकु, पल्स)। नीला या लाल चेहरा और माथेमें नीले रङ्गकी सूजन, कपड़ेसे माथा कसकर बाँध रखनेपर सर-दर्द घटता है (साइलिसिया)।

आँख।—आँख लाल, प्रदाह-भरी, दृष्टि चंचल और हमेशा एक चीज़से दूसरी चीज़पर चली जाती है या आँखें स्थिर, टकटकी लगाकर देखना, चमकीली और उसकी पुतली ऊपरकी ओर खिंची रहती है, दोनों आँखें गड्ढेमें धँसी।

मुखमण्डल।—मुँह और ओंठ नीले। मुखमण्डल देखते ही बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। अपस्मार रोगमें दोनों हनु आपसमें खूब जुड़ जाते हैं—कसकर दाँती लग जाती है और मुँहसे फेन निकलता है। मुँहमें तांबेका स्वाद रहता है और मुँहसे लार बहा करती है (रास)। बच्चोंकी बीमारीमें जीभ बार-बार बाहर निकलती है और भीतर घुसती है (सल्फ़), जीभका अगला भाग बहुत ठण्डा। जीभ लसदार और उसपर सफ़ेद लेप चढ़ा हुआ (लसदार—ऐसिड-फास, प्लम्ब)। जीभमें पक्षाघात (ऐब्सिन्थ, ऐको, इस्क्-ग्लैब, ऐरान, बैराई, कार्बो-सल्फ़, कास्टि, डाल्का, जेल्सि, हायो, ऐसिड-हाइड्रो, लैके, ऐसिड-म्यूर, नक्स-मस, ओपि, प्लम्ब, स्ट्रैम)। बात अस्पष्ट, पूरी-पूरी मुँहसे नहीं निकलती (कास्टि, बैराई, प्लम्ब, ओपि, डालका)।

गलेके भीतर।—निगलनेके समय कण्ठनाली संकीर्ण मालूम होती है ; कण्ठनालीमें सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे बोलनेमें गड़बड़ी होती है, हिचकी और अन्ननालीकी अकड़न ; जलीय पदार्थ निगलनेमें पानी गड़गड़ाकर नीचे उतरता है (ऐसिड-हाई, आर्स, लौरो, थूजा ; सुस्ती लानेवाले बोखारमें ऐसा ही होता है)।

पाकस्थली।—बार-बार ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा प्रकट करता है, क्योंकि उससे उसे आराम मिलता है। दूध हजम नहीं होता ; दूध पीनेपर मुँहसे लारकी तरह पानी निकला करता है। ठण्डा पानी पीनेपर वमन होना घट जाता है (फास)। उदरमें ऐंठन हो जाती है और जी मिचलाकर वमन होता है। चावलके धोअनकी तरह मल ; पेटके दर्दसे रोगी सामनेकी ओर झुक जाता है (कोलो)। छातीकी हड्डीके नीचे सङ्कोचन और अग्रभागके पीछे दर्द होता है। उदरके ऊपरी भागमें दबाव मालूम होना, छूने या दबानेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है। ऐसा मालूम होता है कि गोलेकी तरह एक पदार्थ पंजरेके नीचे घूमता-फिरता है। पैरको कसकर बाँधनेसे

घटता है। अन्त्र-मण्डल और उदर-वेष्टका सिकुड़ना फैलना, पेट कसा रखनेपर आराम मिलता है। पेट कड़ा, गर्म और उसमें दर्द ; आध्मान वायुकी वजहसे पेट फूलना ; नाभि-प्रदेशमें भयानक यंत्रणा, मानो नाभीसे पेटतक छुरीसे काट रहा है। आँतमें काटने या छुरी मारनेकी तरह तकलीफ़ और उदर भीतरकी ओर खिंचा रहता है (प्लम्ब)।

विसूचिका।—तेज़ उदरामय ; पेटमें बहुत मरोड़ होता है, इसके साथ ही अन्ननालीमें गड़गड़ शब्द। पाकस्थली और अन्त्राशयमें लगातार दर्द होकर बार-बार वमन और मठेकी तरह दस्त होता है, पेटमें लगातार अकड़न होती है और हाथ-पैरोंमें ऐंठन होती है, दोनों आँखें गड़हेमें धँसी, मुँह सूखकर छोटा हो जाता है, उठी हुई और नोकीली नाक, गहरा नीलापन लिये चेहरा ; समूची देहका रंग नीला ; जीभ ठण्डी ; स्वरलोप ; हृत्पिण्डकी गति बहुत क्षीण और नाड़ी प्रायः नहीं मिलती। पेशियाँ सब फड़का करती हैं, दाँती लग जाती है। वक्षमें तकलीफ़ देनेवाली सिकुड़न और फैलाव मालूम होता है ; पैरकी पीटलीमें खींचन और ऐंठन होती है और हाथ-पैरकी अंगुलियाँ ऐंठा करती हैं, भयानक प्यास और हिचकी और समूचे पेटमें विशेषकर ऊपरी पेटमें मिचली मालूम होना ; लगातार वमन, ठण्डा पानी पीनेपर घट जाता है (फास)। अन्त्रमण्डलीमें इतना दर्द होता है कि हाथसे छूनातक सहन नहीं होता। पेशाब बिलकुल नहीं होता या बहुत थोड़े परिमाणमें हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवके बादका धनुष्टङ्कार ; प्रसवके दर्दके समय हाथ और पैरकी अंगुलियोंमें भयानक खींचन आरम्भ होकर समूची देहमें फैल जाती है ; तलपेटमें बहुत ही यन्त्रणादायक अकड़नकी वजहसे प्रसव-वेदनामें बाधा पड़ती है ; रोगिनीको चारों ओर अन्धेरा मालूम होता है (लैक-कैन) और इसके कुछ ही देर बाद अकड़न आरम्भ हो जाती है ; चेहरा नीला हो जाता है और दोनों बड़ी अंगुलियाँ कसकर तलहत्थीकी ओर मुड़ जाती हैं। बहुत श्वास-कष्ट और छातीमें तकलीफ़ मालूम होना। रोगिनी तकलीफ़से चिल्ला उठती है। बहुत-सी सन्तान प्रसव करनेवालियोंका प्रसवके बादका दर्द। रजः प्रकट होनेके पहले धमनी आदिमें खून प्रवेश कर जाना (Ebullition—मार्क), हृद्स्पन्दन (आयोड-स्प्जि ; रजःस्रावके समय कलेजा धड़कना—ऐल्य,

दुखने, आयोड, फास ; रजःस्रावके बाद—आयोड) और सरमें दर्द (ऐल्यू, कैल्के, कार्बो-वे, नेट्र-मूर, लैके, पल्स, सल्फ़)। ऋतु बहुत देरसे होता है और बहुत दिनोंतक होता रहता है ; कई महीनेतक ऋतु-रोध (नैट्र-मूर, कैलि-कार्ब)। आर्त्तव-स्रावके पहले और समय बहुत जोरसे ऐंठन होती है (कोना, ग्रैफ, लैके, चायना) ; धनुष्टंकार हो जाता है (सिकेलि) और रोगिनी हृदय-भेदी चिल्कार किया करती है। उसे श्वास-कष्ट होता है। शरीरका पसीना बन्द होनेके कारण ऋतु होना बन्द हो जाता है (साइलि)।

श्वास-यंत्र।—हूप-खाँसी, बहुत दिनोंका श्वास-रोधक प्रकोप, रह-रहकर खाँसी पैदा हो जाती है ; रोगी बोल नहीं सकता। हाँफ उठता है (स्टैन) और देह कड़ी होकर अकड़ जाती है और चैतन्य नहीं रहता। ऊपर-के-ऊपर तीन बार खाँसी आती है (स्टैन, दो बार आती है—मर्क ; रातमें बढ़ना ; होश आनेपर खायी हुई चीजोंकी कै होती है (कैनाब) ; प्रत्येक प्रकोपके समय रोगी एकदम निस्पन्द (सुस्त) हो जाता है ; इसके साथ ही माथा हिलानेवाले आक्षेपिक दमा रोगके प्रकोपके समय खाँसीके साथ सफेद आभा लिये श्लेष्मा निकला करता है। दमा—रात तीन बजनेके समय आरम्भ होता है—शरीर पीछेकी ओर झुकाने, खाँसने या हँसनेपर (आर्स) बढ़ जाता है ; ठण्डा पानी पीनेपर खाँसी घट जाती है (कक्कस-कैक, कास्टि)। खाँसनेके समय गलेके भीतर गड़गड़ शब्द होता है मानो बोतलसे पानी ढाला जा रहा है। खाँसीके समय श्वास-प्रश्वासमें साँय-साँय शब्द होता है। सीढ़ी चढ़नेपर (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ऐङ्गस, बोर, लोड, हायो, मार्क, ऐसिड-नाइ, रैटान, रियुटा, सेनेगा) या तेजीसे चलनेपर रोगीको तकलीफ़ होती है (ऐङ्गस, अरम, कास्टि, पल्स), कलेजेका दर्द—छातीमें अकड़नके साथ साँसमें तकलीफ़। ऋतु होनेके पहले कलेजा धड़कना (आयोड, स्पञ्जि)।

प्रत्यङ्गादि।—कोहनीमें विसर्प निकलना (Herpes) और उससे रस निकलकर पीले रङ्गकी पपड़ी जमनेवाला घाव हो जाता है। इसमें संध्याके समय बहुत खुजलाहट होती है। कन्धेतक फैली हुई लसिका शिराके (Lymphatic Vessel) प्रदाहके साथ हाथ सूजना। बाँह और हाथ जगह-जगहपर नीले हो जाते हैं। धनुष्टंकार, हाथ और पैरकी अंगुलीसे आरम्भ होकर समूची देहमें फैल जाता है। रह-रहकर अकड़न पैदा होना। विश्रामके समय पैरकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन (ऐमोन-कार्ब, कैम्फो), निम्नाङ्गकी

पेशियोंका संकोचन और प्रसारण (सिकुड़ना और फैलना) (ऐगार, इग्ने, जिङ्क) ; तलवेमें जलन होती है। पैरका तलवा बरफकी तरह ठण्डा (कोलचि, कार्बो-वे, कास्टि, काक्यु, कोना, डिजि, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, नेट्र-कार्ब, ऐसिड-नाई, रोडो, सिपि, साइलि)। पैरका पसीना रुकना (ऐसिड-सैलिसाई, सिलि, जिङ्क)। जानु-सन्धि बहुत ही कमजोर मानो टूट गई है।

त्वचा।—विसूचिका और धनुष्टङ्कार रोगमें समूची देह नीली (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैम्फो, कोना, ऐसिड-हाइड्रोसा, लैके, ओपि, प्लम्ब) और बरफकी तरह ठण्डी (कैम्फो ; बाहरसे ठण्डी, पर रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका शरीर जला जाता है—नक्स-मस, सिकेलि, वेरेट)। छूनेपर दर्द बढ़ जाता है।

सार्वाङ्गिक।—अपस्मार या मृगी—आक्रमण रातमें होता है (बूफो, लैके) ; जानुसे सुरसुरी आरम्भ होकर तलपेटमें फैल जाती है ; अमावस्याके दिन और बँधे समयका अन्तर देकर बढ़ती है। प्रत्येक मासिक ऋतुस्रावके समय मृगी आती है ; निचले मस्तकके बलपर गिरना या किसी दूसरी तरहसे मस्तिष्कमें चोट पहुँचनेके कारण मृगी ; मुँहसे फेन निकला करता है ; आक्रमणके कुछ ही पहले रोगी लोमहर्षक चिल्लार कर उठता है (बूफो) और दाँत-पर-दाँत घसा करता है। लाल ज्वरके उद्भेद, खसड़ा या फैलनेवाले विसर्प वगैरह उद्भेदके रुक जानेके कारण आक्षेप आदि रोग (एपिस, ब्राई, कैम्फो, सोरिन, सल्फ)। दुरारोग्य कमजोरी और सुस्ती, अङ्ग-प्रत्यङ्ग और शरीर दुबला हो जाता है (प्लम्ब)।

निद्रा।—गहरी नींद—नींदवाली अवस्थामें हाथ-पैर फेंकना ; निद्रित अवस्थामें पेट गड़गड़ाया करता है।

वृद्धि।—ठण्डी हवामें, रातमें, अमावस्याके दिन ; उद्भेद या पैरका पसीना रुक जानेपर, छूनेपर या दबानेपर ऋतुके पहले और वमनके बाद।

घटना।—कसकर बाँधनेसे (सर-दर्द, आँतोंका शूल आदि), ठण्ढा पानी पीनेसे (मिचली, वमन और खाँसी) और स्थिर होकर रहनेपर और पसीना निकलनेपर।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—कैल्केरिया-फास्फ।

दोषघ्न ।—बेलेडो, कैमो, चायना, साइकूटा, डाल्का, हिपर, इपिकाक, मर्क, नक्स ।

सदृश ।—जेल्स, साइलि, फास, नक्स, प्लम्ब, एपिस, जिङ्क, कैम्फो, वेरेट, सिकेलि, आर्नि, लैके, स्ट्रैम ; क्रूप-खाँसी और विसूचिका रोगमें कूप्रमके बाद वेरेट्रमका प्रयोग करनेपर बहुत लाभ होता है। रुके हुए उद्भेदकी वजहसे धनुष्टंकार आदिमें एपिस और जिङ्कमका व्यवहार होता है।

तुलनीय ।—जेल्स (बहुत परिश्रमकी वजहसे मस्तिष्कका दोष), साइलिसि (माथेमें दर्द), वाचालता (लैके, हायोसा इत्यादि)। प्रतिक्रियाके अभावमें सलफर, कार्बो-वेज इत्यादि ।

शक्ति ।—६ठा दशमिक, १२, ३०, २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० से ५० दिन ।

क्यूप्रम सल्फ्युरिकम

(CUPRUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—सल्फेट आव कापर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—कूप्रम-सल्फ एक दाह पैदा करनेवाली और वमन करानेवाली दवा है। **तालुमें जलन,** विरामहीन आक्षेपिक खाँसी, रातके समय बढ़ना ; जीभ और ओठ नीले और मिचली तथा वमनके लक्षणमें लाभदायक है।

सरकोमाके जखममें यदि नश्तर लगवानेका भय होता हो तो कूप्रम-सल्फ १-२ भाग १०० भाग पानीके साथ मिलाकर धावनके रूपमें बाहरी प्रयोगसे विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैलि-बाई, मर्क ।

दोषघ्न ।—दूध, अण्डा, इयेलो-प्रूसियेट-आव पोटास ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कुरारि

(CURARE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकाके आदिम अधिवासीगण पशुपक्षियोंका नाश करनेके लिये एक तरहका विष व्यवहार करते हैं—कुरारि-अर्क उसी विषसे तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— कर्कटीया जखम ; निस्पन्द वायु ; कमजोरी ; खाँसी ; बहुमूत्र ; वाधक ; श्वास-कष्ट ; कानकी बीमारियाँ ; अकौता ; मृगी ; मुँहका पक्षाघात ; मूर्च्छा ; सर-दर्द ; जलातंक रोग ; गति-शक्तिकी बीमारी ; स्नायुओंकी कमजोरी ; स्नायुशूल ; कानका प्रदाह ; नकसीर ; यक्ष्मा ; कण्ठमाला ; पलकोंका पक्षाघात ; धनुष्टङ्कार ; बहुत तरहके जखम ; जरायुकी बीमारी ; अपत्यपथकी बीमारी ; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—इस तेज़ विषके द्वारा गति-शक्तिका एकदम विनाश हो जाता है, पर अनुभव-शक्ति भरपूर मौजूद रहती है। इसीलिये निचले हनुग्रहके साथ सिस्पन्द वायु रोगमें (Catalepsy) यह लाभदायक है। रोगी नींद खुलनेपर एक ओर टकटकी लगाकर देखा करता है। स्नायविक सुस्ती, विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका ; हनुस्तम्भ या दाँती लगना, धनुष्टंकार, बच्चोंके मुँहमें और कानके पीछे खसड़ा (Eczema) और देहमें जगह-जगह पीले भूरे दाग (Liver spots) वगैरहमें बहुत उपकारी है। प्रायः पक्षाघातकी तरह सुस्ती ; मस्तिष्कमें मानो तरल पदार्थ भरा है और उनमें फाड़ने या अस्त्राघातकी चोटकी तरह दर्द, टपक, सुन्न हो जाना वगैरह इसके प्रधान क्रिया-फल हैं और मस्तिष्कका विकार, उन्मत्तता इत्यादि इसके मानसिक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—चिन्ता या अध्ययन शक्तिका न रहना (चिन्ता-शक्ति न रहना—ऐबिस-नाइग, इथ्यू बैप, बार्बेरिस, क्लिमेट ; डालका, कैलि-नाई, मैग-फास,

नेट्र-कार्ब, नेट्र-सल्फ, नक्स-मस, ओलि-कैजू, साइलि, सल्फ, आक्साई-ड्रोप, टियुबर्क)। उत्तेजित, घबड़ाया हुआ (आर्जेण्ट-नाई, अरम, बूफो, लिलियम ; लिडोरिन, नेट्र-मूर, टिलिया, ऐसिड-सल्फ, थूजा)। अकेला रहना पसन्द करता है (कार्बो-ऐन, ऐक्टि, कोका, जेलसि, हेलिबो, इग्ने, हायो, आक्साई-ड्रोप, थूजा)। उन्माद रोगकी वृद्धि हो जानेपर रोगी अपने शरीरपर आघात करता है, खखोड़ता है और बड़े आनन्दसे उसे क्षत-विक्षत करता रहता है ; परन्तु उसे किसी तरहकी तकलीफ़ नहीं मालूम होती। रातमें इस तरह आनन्दमें मतवाला हो उठता है मानो उसने बहुत ही मधुर संगीत ध्वनि सुनी है। बहुत ज्यादा मृत्युभय (ऐको, ऐक्टि, जेल्स, लैक-कैन, लैके, लावेल, माइगेल, नक्स)। सभी बातोंमें उदासीनता प्रकट करता है (ऐपि, बैप,, साइक्यू-वाई, कैलि-बाई, ओपि, ऐसिड-फास, फास, स्टैफ, सिफिलिन)।

मस्तक।—खड़े होनेके समय या चलनेके समय एकाएक मूर्च्छा आ जाना और पतन। पासकी चीज़ और पानीकी ओर देखते रहनेपर सरमें चक्कर आता है (सार्सा)। स्नायविक बीमारियाँ, समूचे माथेमें अस्त्राघात या फाड़नेकी तरह दर्द, रोगीको बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है ; गर्दनकी अकड़नकी वजहसे माथा पीछेकी ओर टेढ़ा हो जाता है ; ऐसा मालूम होता है मानो माथेके पीछे कोई तरल पदार्थ ढलमला रहा है ; ऐसा मालूम होता है मानो सरके पिछले भागमें किसीने धमसे मार दिया (क्रोटेलस)। दाहिनी कनपटीमें या कपालमें शूल मारनेकी तरह दर्द। जोरसे माथा हिलाने या खाँसनेपर वृद्धि। खाँसनेपर-ऐसा मालूम होता है, मानो चूर्ण-विचूर्ण हो गया, ; रोगी खाँसनेके समय दोनों हाथोंसे माथेका दोनों पार्श्व कसकर पकड़ रखता है (ब्राई, कैप्स, नेट्र-मूर, कैल्के, क्रिम, फेरम, फेरम-ऐसेट, लैके, मेजे, नेट्र-मूर, ऐसि-फास), इसके साथ ही पित्त-वमन (कोलो, ग्रैफ, इपिक, लैके, नक्स-वोम, क्रोटेलस, पल्स, सिपि वेरेट)।

आँख।—दाहिनी भौंके ऊपर सलाई गड़नेकी तरह दर्द। दृष्टिके सामने काले-काले बिन्दु उड़ते फिरते हैं (ऐगार, ऐमोन-मूर, बेल, कैल्के, सिङ्को, काकु, कोना, मार्क, ऐसिड-नाई, फास, सिपि, साइलि), पढ़नेपर दर्द बढ़ जाता है। पलकें बहुत भारी मालम होती हैं, देख नहीं सकता (कोलो, जेल्सि, कास्टि, ग्रैफ ; दोनों पलकें झपी जाती हैं—सिपि) ; आँखमें ऐसा मालूम होता है मानो असंख्य छोटी-छोटी शलाकाएँ गड़ रही हैं

(आर्जेण्ट-नाई, डलिकस, हिपर, ऐसिड-नाई देखिये)। सन्ध्याके समय दृष्टि लोप हो जाती है। हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो दृष्टि-पथ अन्धकारमें ढका हुआ है।

कान।—कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आया करती हैं। कभी साँय-साँय शब्द, कभी पशुओंकी चिल्कार ध्वनि, इसके अलावा कभी ढन-ढन शब्द (कैल्के, मैङ्गो, कोना, लिडम, नेट्र-मूर ; कानमें अस्त्रके आघातकी तरहका दर्द पैदा होकर पैरके तलवेतक पहुँच जाता है, रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है। मध्य-कर्णका प्रदाह, यन्त्रणासे रोगी पागल-सा हो जाता है और कानसे पीवका स्राव हुआ करता है (बेल, बोर, कैमो, हिप, मर्क, नक्स, पल्स)।

नाक और मुखमण्डल।—पीनस-रोग—सड़ी गन्ध-भरा जमा हुआ पीव निकलता है (अरम, कैडमि-सल्फ़, हाइड्रो, सोरिन)। मुँह और गालका पक्षाघात; कभी-कभी खानेका पदार्थ निगलनेमें तकलीफ़ होती है। मुँह और जीभके दाहिने पार्श्वमें मानो खिंचाव-सा है।

पाकस्थली।—पेट भरकर खाते ही भूख लग आती है (बोवि, कैल्के, किनिन-सल्फ़, सिना, लैके, कैल्के-कास्टि, मर्क, फास, प्लम्ब, स्ट्रान)। रोटी और उद्भिज आदि पदार्थोंसे अरुचि (रोटीसे अरुचि—लैक्टियु ; उद्भिद द्रव्य आदिसे—हेलिबो, मैंग-कार्ब)। पानी और शरबत आदि पीनेकी आकाँक्षा (आर्स, ओलियैन, रास, सैबाई), लेमोनेड (कैलि-कार्ब, लाई); शराब (लैके-सल्फ़, थिरिड और दूध पीनेकी इच्छा—ब्राई, लैके, फेलेन, एपिस, चेलिडो, मर्क-बाई), पर ये सब चीजें खानेपर बीमारी पैदा होती है। तेज़ शराब आदिसे अरुचि। बार-बार तीती और जलन पैदा करनेवाली डकार आती है (तीते स्वादकी डकार—ब्राई, चायना, ग्रैटि, मर्क, लुपियु, नक्स, सल्फ़, एसिड-सल्फ़, थूजा ; जलन पैदा करनेवाली डकार—बेल, कैन्थ, हिप, आयोड, लाई, ओलि-ऐन, एसिड-फास, सल्फ़, टैबाक, वैलि)। खून, पित्त-मिले सड़े-पचे द्रव्य आदिका वमन। पाकस्थली हमेशा खाली और भूख मालूम होती है (जेल्टियाना, नेट्र-कार्ब, ओलि-ऐन, पेट्रोल, फेलैन, ब्रोम, गैम्बो, सेना, सिपि, वेरेट, सल्फ़), मिचली और यन्त्रणादायक हिचकीके साथ पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक बड़ा गुल्मकी तरह पदार्थ अड़ा हुआ है (पंजरेके नीचे ऐसा मालूम होता है, मानो एक गुल्मकी तरह पदार्थ इधर-उधर घूम रहा है—कूप्रम)।

अन्त्राशय।—सारे शरीरके शोथ रोगमें यकृतकी बहुत अधिक सूजन (मर्क, ऐको, चायना, किनिन-सल्फ़, लैक्टि, नक्स-मस, सल्फ़, कार्डियस)। यकृतमें फोड़ा और पथरी पैदा हो जानेका लक्षण; शरीर हिलानेपर यकृतमें अस्त्रके आघातकी तरह दर्द होता है (कार्बो-ऐन, लैके, नेट्र-कार्ब, नेट्रम-म्यूर, रैनान)। पेट इस तरह फूल उठता है, मानो उदरी हो गयी हो। ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें एक सजीव पदार्थ घूमता-फिरता है (ऐराण्डि-मेरि, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, क्रोकस, कानवैल, सैबाई, सल्फ़, थूजा)। तलपेटमें जलन, भयङ्कर असह्य आँतोंका शूल; रोगी सामनेकी ओर टेढ़ा होकर पेट मला करता है (कोलो, कूप्रम)। जलन पैदा करनेवाला आँतोंका शूल, मानो पेटमें एक जलता हुआ लोहा घुस रहा है, इसके साथ ही बहुत अधिक पित्त-मिला और बदबूदार मल।

पेशाब।—मसाना या मूत्र-ग्रन्थि (Kidney) में ऐसा दर्द, मानो कुछ कोंचा जा रहा है या खींचता है। बार-बार चुआये हुए पानीकी तरह पेशाब; पाकस्थलीमें तेज़ दर्द; मुँह बहुत सूखा और सन्ध्या तथा रातमें बहुत अधिक प्यास। चीनी मिला पेशाब (सिजिजियम-जैम्बो, नेट्र-सल्फ़, युरेन-नाइट)। नवीन बहुमूत्र रोगाधिकारमें दुबलापन, प्रत्येक बार बहुत ज्यादा पेशाब होता है, बहुत वेग और मूत्रस्थली फूली हुई मालूम होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय-प्रदेशमें तेज़ गन्ध (नेट्र-म्यूर, सार्सा), शिश्न लाल और फूला। शिश्नमुण्डके पीछे बहुत अधिक श्वेत-रेणुका सञ्चय होना। रमणेच्छा प्रबल, पर लिङ्गमें कड़ापन नहीं आना। शृङ्गार या आलिङ्गनके समय बहुत विलम्बसे वीर्य-पात हुआ करता है और उसमें सुख नहीं मालूम होता।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु निर्दिष्ट समयके सात दिन पहले ही हो जाता है; दाहिने डिम्बाधारमें मरोड़की तरह दर्द—ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु वगैरह नीचेकी ओर धक्का दे रहे हैं, कमरमें दर्द होता है और कमजोरी मालूम होती है, स्राव बहुत थोड़ा होता है और पाँच दिनोंके बदले कुल तीन दिन रहता है। जरायु प्रदाह-भरा और फूला, मानो चिकोटी काटता

है या जलता है या आलपीन गड़ती है—इस ढङ्गका दर्द होता है। जरायु-मुखके जखमसे कषाय स्राव (Acrid) रस निकला करता है। प्रदरका स्राव बहुत थोड़ा, गाढ़ा, पीवकी तरह और बहुत बदबूदार होता है।

श्वास-यन्त्र।—दाहिने फेफड़ेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और श्वास-कृच्छ्रता। सञ्चालन-शक्ति—पैदा करनेवाले स्नायुकी सुस्तीकी वजहसे श्वास-कृच्छ्रता। सीढ़ी चढ़नेके समय श्वासकी तकलीफ़ बढ़ जाती है (आर्स, मर्क, बोर)। हमेशा थोड़ी देरतक रहनेवाली सूखी खाँसी और छातीमें दर्द; जलीय हवा लगनेसे या हँसनेपर बढ़ जाती है; खाँसी रह-रहकर पैदा होती है और समूची देहको हिला देती है। खाँसीके बाद कै होती है, सर-दर्द करता है और चेहरा लाल हो उठता है। छातीमें बहुत दर्द, यहाँतक कि वक्ष-परीक्षा यन्त्रका दबाव या भार भी नहीं सहन होता। श्वास-प्रश्वास शक्तिके सुस्त पड़ जानेका उपक्रम।

प्रत्यङ्ग आदि।—छातीका बायाँ पार्श्व और बायाँ हाथ सुन्न। दोनों पैर बहुत कमजोर, चलनेमें अपने वशमें नहीं मालूम होते। निस्पन्दवायु रोग—नींद खुलनेपर रोगी टकटकी लगाकर एक ओर देखा करता है। इसके साथ ही निचले हनुमें अकड़न। गट्ठे निकलना बन्द करनेमें सहायता करता है।

त्वचा।—कुष्ठ-व्याधि (वैसिलिन, आर्स-आयोड, वैक्सिन, मेलाण्ड्रिन, हाइड्रो-कोट, हियुरा, ऐनाक, कोलोट्रोप)। नाकके ऊपर दाने (गुटिका) निकलना (कैलोट्रोप-जाई)। पित्त-बिन्दु या यकृत (Liver-spot)—पीले भूरे रङ्गका।

वृद्धि।—शरीर-सञ्चालनसे; चलनेके समय; सीढ़ी चढ़नेपर; शीत लगनेसे, ठण्डी हवामें और जलवायुके परिवर्त्तनसे; रातके २ बजेसे तीसरे पहर ३ बजेतक शरीरके दाहिने भागमें।

घटना।—स्थिर होकर सोये रहनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—नक्स-वोम, ऐरेनिया—डाया (ज्वर), फेरम (माथेमें दर्द), क्रोटेलस (पित्त बिन्दुके सम्बन्धमें), गुयारिया, लाइको, सिपि, नक्स, सल्फ।

दोषघ्न।—ब्रोमिन और क्लोरिन।

शक्ति।—६ठेसे ५०० शततमिक क्रम।]

साइक्लामेन युरोपियम

(CYCLAMEN EUROPAEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—वसन्त ऋतुमें संग्रह की हुई जड़से मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—खूनकी कमी ; मृत्पाण्डु ; सर्दी ; दो देखना ; अजीर्ण ; आँखकी बीमारियाँ ; सर-दर्द ; हिचकी ; आर्त्तवमें विकार ; गर्भिणी रोग ; वात ; मूत्रनली-प्रदाह ; सरमें चक्कर आना ; लिखनेवालोंका हाथ काँपना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जो मनुष्य श्लेष्मा और रस-प्रधान धातुवाले हैं और जिनके शरीरका रक्त-शून्य या नील-पाण्डु रोगग्रस्त हो रहा है (Chlorotic) ; बहुत ही आलस्य-प्रिय, जो सामान्य परिश्रमसे ही कातर हो पड़ते हैं या जिन स्त्रियोंका रङ्ग सफेद हो गया है और जो हरित्-पाण्डु रोगसे ग्रसित हो रही हैं, जिन्हें ऋतु अनियमित समयपर होता है (फेरम, पल्स, सिपि) और ऋतुके समय—सरमें चक्कर आना, सरमें दर्द और दृष्टि-हीनता प्रभृति रोग दिखाई देते हैं, उनके लिये साइक्लामेन विशेष उपयोगी है । डा० फैरिङ्गटनका कथन है कि रोगीकी नींद खुलनेपर यदि उसे परिश्रम करना पड़ता है, तो उसका जी बहुत खराब मालूम होता है ; सवेरे सोकर उठनेपर उसका शरीर इतना भारी मालूम होता है और इतना आलस्य मालूम होता है, कि वह किसी तरह दिनभरके काम-काज कर सकेगा, इसका वह निर्णय नहीं कर सकता ; परन्तु एक बार परिश्रम करना आरम्भ करनेपर, फिर उसे तकलीफ़ नहीं होती, राततक खूब मजेमें काम किया करता है, उसे कभी-कभी आँखके सामने चमक दिखाई देती है । कभी-कभी उसे सभी चीजोंका आधा भाग दिखाई देता है (चीज़ोंका केवल बायाँ आधा भाग देखता है—लिथिया-कार्ब ; केवल दाहिना आधा या नीचेवाला आधा भाग देखता है—नेट्रम-म्यूर, ऐसिड-म्यूर ; केवल निचला आधा भाग देख पाता है—अरम) । इन सब रोगियोंको जो अजीर्ण रोग होता है, उसकी विशेषता यह है कि पेटमें वायु सञ्चित होकर रातमें शूलका दर्द पैदा हो

जाता है और रोगीको बाध्य होकर शय्या त्यागकर तबतक टहलना पड़ता है, जबतक कुछ वायु निकलकर आराम न मालूम हो। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं; चुपचाप छिपाया हुआ शोक या अपने किये हुए अपराधके दण्डका भय और अपना कर्त्तव्य प्रतिपालित नहीं हुआ—इस ज्ञानकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ। रोगी बहुत दुःखित और चिड़चिड़ा बना रहता है; क्रोधी-स्वभाव, मुर्झाया हुआ और सभी विषयोंमें विरक्ति मालूम होती है। रोनेवाला, एकान्त-प्रिय, घरके बाहरकी हवा लगना अच्छा नहीं मालूम होता—सर्दी हो जानेका भय होता है। जिनमें खूनकी कमी है—उनका सर-दर्द, आँखके सामने चमक दिखाई देना और इसके साथ ही तिमिर दृष्टि, खासकर सवेरे सोकर उठनेपर रोगी देखता है कि उसकी आँखके सामने कुछ चमक रहा है या आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं या कितने ही रङ्गोंकी चमकीली सुई इत्यादि है अथवा मानो चारों ओर कुहरा छाया हुआ है, उसके भीतरसे सब चीजें धुँधली दिखाई देती हैं। कई ग्रास खाते ही भूख गायब हो जाती है। उस समय खानेकी चीज़ देखनेपर घृणा या मिचली पैदा हो जाती है। मुँहकी लार इतनी नमकीन होती है कि जो कुछ खाता है वही नमक-भरा मालूम होता है। ऋतु-स्राव बहुत अधिक, काले रङ्गका और गाढ़ी मलाईकी तरह छाल मिला हुआ। रजःस्रावके समय रोगिनी अच्छी रहती है। गुल्मके नीचे जलन और बहुत दर्द मालूम होता है, बैठने, चलने या खड़े होने—सभी अवस्थाओंमें दर्द होता है (ऐगार, कास्टि, फाइटो, वैलि)।

लक्षणावली

मन।—निर्जन और एकान्तमें बैठकर अपने भविष्यके सम्बन्धमें सोचना पसन्द करता है। क्रोधी स्वभाव, दुःखित चित्त और चिड़चिड़ा। सभी तरहके परिश्रमोंसे अनासक्ति प्रकट करता है; रोना। खुली हवामें घूमना नहीं चाहता (पल्सेटिलाके विपरीत)। रुके हुए शोक या हिताहित बुद्धिकी ताड़ना या अधूरे अथवा न किये हुए कर्त्तव्य कार्य या कुकार्य आदि करनेकी वजहसे बीमारियाँ। भ्रमज्ञान या भ्रम कल्पना, मानो वे दो आदमी शय्यापर सोये हुए हैं और दूसरे मनुष्यकी देह उसके शरीरपर पड़ी है (रोगिनी समझती है, कि तीन आदमी उसकी शय्यापर सोये हुए हैं और ओढ़नेके भीतर नहीं

अँटते—बैप ; रोगिनी समझती कि दो आदमी बीमार हुए थे, एक आदमी मर गया और एक अच्छा हो गया—सिकेलि ; मानो उसकी शय्यापर एक पुरुष सोया हुआ है—पल्स)।

मस्तक।—चक्कर आना—किसी अवलम्बनपर भार देकर खड़े होने या स्थिर रहनेपर मालूम होता है कि मस्तिष्क गतिशील हो रहा है। सरमें चक्कर आना—चीजें ऐसी मालूम होती हैं, मानो वृत्ताकारमें या उसके चारों ओर घूम रही हैं या मानो एक ओर उठती हैं और दूसरी ओर गिरती हैं ; वायु सेवनके लिये टहलते समय बढ़ जाता है और घरमें बैठे रहनेपर घटता है। सर-दर्द, सवेरे उठनेके समय—दृष्टिके सामने चमकीली चीजें देखना या अस्पष्ट दृष्टि। ललाटके बायें पार्श्वमें बहुत तेज़ सर-दर्द ; ठण्डे पानीका प्रयोग करनेपर दर्द घट जाता है। बेहोशी पैदा करनेवाला सर-दर्द और दृष्टि लोप। अध-कपारीका दर्द, उसके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं। ऐसा दिखाई देता है ; दृष्टि जितनी ही साफ़ होती जाती है, सरका दर्द भी उतना ही बढ़ता जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा।

आँख।—आँख गड्ढेमें धँसी और उसके चारों ओर नीला घेरा, दृष्टि गदली, दो देखना (Diplopia) या आधा देखना (Hemiopia) तिर्यक दृष्टि या डेरा देखना। आँखके सामने चमक, कितने ही रङ्गोंकी आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं या जलती हुई सुई दिखाई देती है ; चारों ओर कुहरा या धूएँसे ढका मालूम होता है, विशेषकर सवेरे बिछावनसे उठनेपर, पढ़नेके समय आँखोंमें जलन मालूम होना।

नाक।—सर्दीकी वजहसे स्वाद और घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना (पल्स)। नासारन्ध्रसे गाढ़े श्लेष्माका स्राव (पल्स) और बार-बार तेज़ छींक आती है।

मुँहके भीतर।—जीभपर सफ़ेद लेप चढ़ा। दोनों ओंठ सूखे ; पर प्यास नहीं रहती (नक्स-मस)। सन्ध्याके समय जीभके अगले भागमें जलन होती है। मुख-विवर और कण्ठके भीतर अपेक्षाकृत लाल दिखाई देता है।

पाकस्थली।—लार नमकीन और इसी वजहसे खानेकी सभी चीजें नमकीन मालूम होती है (आर्स, कार्बो-वे, चायना, पल्स, सल्फ)। कई ग्रास खानेपर ही पेट भर जाता है और फिर खानेकी रुचि नहीं रह जाती

(लाई, प्रूनस, रोडो) और भी खा लेनेपर जी मिचलाने लगता है, लेमोनेड पीनेकी बहुत अधिक इच्छा (सैबाई); रोटी (कुरारि ; लैक्टियु) मांस, मक्खन वगैरहसे अरुचि (कोलचि ; मक्खनसे अरुचि—आर्स, कार्बी-वे, चायना, मिनियैन, पल्स); न खाने योग्य चीजोंपर रुचि (ब्राई, ऐल्यू, ऐसिड-नाई, नक्स)। भोजनके बाद सोनेकी बहुत इच्छा। पेटमें ऐसा मालूम होता है मानो एक सजीव पदार्थ घूमता फिरता है (ऐराण्डो-मेरि, कैल्के-फास, कैनाबिस-सैट, क्रोकस, कुरारि, कानवैल, सल्फ, थूजा)। श्लेष्मामय वमनके बाद औंघाई (इथ्यूजा, देखिये)। खूनका वमन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु-स्राव बहुत ज्यादा और असमयमें ही हो जाता है; रङ्ग काला (ब्राई, कैन्थ, कैमो, क्रोकस, फेर, इग्ने, नाइट्रम, प्लैट, पल्स) और जमा हुआ (कैमो, काक्यु, फेर, इग्ने, नैट्र-सल्फ, प्लैट, पल्स, रास-वेन, सैबाई, मलाईकी तरह पदार्थ मिला; स्रावके समय रोगिनीको आराम मालूम होता है (सिरियम-आक्साल, लैके, अस्वस्थता मालूम होती है—ऐक्टा, पल्स)। ऋतु होनेके पहले रातमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है, इसके पहले दिनमें पेट वायुसे भर जाता है और फूल जाता है (क्रियो)। रजोरोध—बैठनेपर ऋतुका स्राव बढ़ जाता है और चलनेपर घटता है (कक्स-कैक ; चलनेके समय आर्त्तवका स्राव होता है और चलना बन्द करते ही रुक जाता है—लिलि-टाइग्र ; सोनेपर स्राव होता है, बैठने या चलनेपर बन्द हो जाता है—क्रियो, मैग-फास ; सोनेपर स्राव बन्द होता है—कैक्ट, कास्टि, लिलियम)। आगकी चिनगारियाँ देखना या धुँधला देखना और अधकपारीके दर्दके साथ अनियमित ऋतु ; गर्भस्रावमें हिचकी (ओपि), प्रसवके बादका खूनका स्राव, प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, सरमें चक्कर आना और धुँधली दृष्टि—मानो पृथ्वी कुहरेसे ढकी हुई है।

श्वास-यंत्र।—रातमें वायुनलीमें सुरसुरी होकर भयानक श्वासरोधक खाँसी—स्वरनालीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो खुरच रहा है। जिह्वामूलीय गह्वरके भीतर दर्द और खाँसी आती है और गाढ़ा श्लेष्मा इकट्ठा होता है। रातमें नद्रितावस्थामें बहुत तेज़ खाँसी पैदा हो जाती है, पर बच्चेकी नींद नहीं खुलती। फेफड़ेमें बहुत सुस्ती, वह मानो श्वास-प्रश्वासकी क्रिया नहीं कर सकता (बोलनेका परिश्रम भी सहन नहीं कर सकता—स्टैन)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बैठने या बाहर घूमनेके समय एँड़ोकी तलोमें जलन और मानो उसमें घाव हो गया है, इस ढङ्गका दर्द (ऐगार, कास्टि, वैलि, फाइटो)। मूत्रनलीमें एक छोटी सलाई गड़नेकी तरह दर्द, दीर्घ श्वास छोड़नेपर बढ़ जाता है। छूने या दबानेपर बाँहकी ऊपरवाली हड्डीमें मानो चोट लग गयो—इसी ढङ्गका दर्द होता है (आर्नि, चायना, लैके) या हिलाने-डोलानेपर दर्द ज्यादा मालूम होता है (ब्राई)। चलनेके समय पैरोंकी अंगुलियोंकी खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द। चलनेके बाद पैरकी अंगुलीका सुन्न हो जाना जाना और उसके प्रत्येक गासेमें पसीना होता है (बैराई, मिडोराइन)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—दो स्पन्दनशील (Dicrotic pulse) सवेरे और संध्याके समय जाड़ा लगना। सन्ध्याके समय शीतका पैदा होना ; ठण्डी हवा असह्य बोध होती है और शरीरका वस्त्र नहीं उतार सकता। शीतकी कँपकँपीके बाद उत्ताप पैदा हो जाता है, विशेषकर चेहरेमें ; चेहरा लाल हो उठता है—भोजनके बाद बढ़ना।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—रक्तहीनता या मृत्पाण्ड रोग (पल्सेटिला, सिङ्कोना, फेरम, वगैरह); तुलनीय—उदरके भीतर मानो कुछ हिल रहा है (एराण्डो-मेरि, कैल्के-फास, कैनाब-सैट, कानवेल, क्रोकस, कुरारि, सैबाडि, सल्फ़ थूजा)। सरमें दर्द और दृष्टि-शक्तिका विकार—आइरिस ; कैलि-बाइ और थोड़ा भी खानेपर अरुचिका पैदा हो जाना—लाइ, नक्स, सिपि, प्रूनस, रोडो।

वृद्धि ।—घरके बाहरकी हवामें ; ठण्डी तर जगहमें ; बैठने या सोनेके समय (ऋतुस्राव)।

उपशम ।—गर्म घरमें, घरके भीतर ; चलनेके समय (आर्त्तव स्राव)।

दोषघ्न ।—ऐमोन मूर (आर्त्तवमें विकार) ; कक्कस (श्वेत-प्रदर) ; रासटक्स (आँतोंमें शूल) ; सिनेगा (दो देखना)।

शक्ति ।—३री दशमिकसे २०० शक्तितक (डा० जार ३० शक्तिसे नीचेका क्रम व्यवहार न करते थे)।

क्रियाका स्थायित्व ।—१४ से २० दिन।

साइप्रिपीडियम प्यूबेसेन्स

(CYPRIPEDIUM PUBESCENS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें फायदेमन्द है :—मस्तिष्कको बीमारी ; ताण्डव ; आक्षेप ; दुर्बलता ; अनिद्रा ; मृगी ; मानसिक रोग ; स्नायविक दुर्बलता ; स्नायुशूल ; शुक्रक्षरण इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—जिन बच्चोंके दाँत निकल रहे हों, उनके अनिद्रा रोगमें इसका फायदा बहुत प्रसिद्ध है । "बच्चा रातमें नींद खुलनेपर बड़े आनन्दसे हँसता है और खेलना आरम्भ करता है, फिर उसके सोनेका कोई लक्षण नहीं दिखाई देता ।" डा० फेरिङ्गटन कहते हैं कि यह अवस्था बच्चेके मस्तिष्कमें विकार हो जानेका पूर्व लक्षण है । डाक्टर हेलके मतसे, उनके देशमें बहुत दिनोंकी बीमारी या चाय पीनेकी वजहसे जिन्हें बहुत अधिक मानसिक अवसाद पैदा हो जाता है, वे स्त्रियाँ प्रायः इसकी शरण लिया करती हैं । इसलिये बहुत अधिक मानसिक उत्तेजनाके कारण यदि स्नायविक विकार पैदा हो जाये या बहुव्यापक सर्दी ज्वरके बाद स्नायविक सुस्ती और कमजोरी पैदा हो गई हो तो उसे दूर करनेके लिये यह बहुत उपयोगी है । दूसरे रोगोंके प्रतिक्षेपकी वजहसे अपस्मार रोग या आन्त्रिक सान्निपातिक ज्वराधिकारमें शरीरका काँपना या बहुत फड़कना और हाथ-पैरोंके हिलनेमें भी यह विशेष लाभदायक है ।

लक्षणावली

मन ।—बहुत बकता है (ऐगार, कैनाब-इन, सिमिसि, कोकेइन, क्रोटेल, जेल्सि, ग्लोन, हायो, लैके, लैच-नैन, ओपि, पैरिस, पोडो, पाइरोजेन, स्टिका, स्ट्रैम, थिरिड) ; बहुत अधिक परिमाणमें परिश्रम करनेकी इच्छा रहती है (सिरियस-रङ्ग) । मानो मनपर एक भार दबा हुआ है या ऐसा मालूम होना, कि कोई बड़ी चिन्ताकी बात हो रही है । सभी विषयोंमें बहुत गहरी उदासी प्रकट करता है (ऐगार, एपिस, ओपि, ऐसिड-फास), पढ़ने या सोचने

अथवा वक्तृता आदिमें ध्यान लगाना उसके लिये मुश्किल हो जाता है; क्रोधी चिड़चिड़ा और सभी विषयोंमें असन्तोष प्रकट करता है।

निद्रा।—नींद न आना; लगातार बोलते रहनेकी इच्छा; शय्यापर सोकर छटपटाया करता है; हाथ, नख आदि नाँचते या काँपते हैं; गर्भस्राव होनेपर बराबर कई रात यही अवस्था रहती है। दाँत निकलनेवाले बच्चे रातमें नींद खुलनेपर अस्वाभाविक आनन्द और खेलमें मस्त रहते हैं, फिर सो जानेका कोई लक्षण नहीं दिखाई देता (यह मस्तिष्क-विकारका पूर्व लक्षण है)।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—एम्ब्रा, काफिया, कैलि-ब्रोम, स्कुटेलारिया, वैलि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रमतक।

डैमियाना

(DAMIANA)

Or

(TURNERA APHRODISIACA)

दूसरा नाम।—टर्नेरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—ऋतु बन्द हो जाना; बाधक; क्लान्ति; ध्वजभङ्ग; श्वेत-प्रदर सर-दर्द; शुक्रक्षय; बन्ध्यत्व; पेशाबका वेग रोक नहीं सकता।

उपयोगिता और आभास।—डाक्टर हेलके मतसे यह स्त्री और पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रियमें उत्तेजना पहुँचाता है। गिर जानेके कारण मेरुदण्डमें चोट पहुँचना; बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवन, उपदंश या प्रमेह, रजोरोध, बाधक और प्रदर वगैरहसे,पैदा हुई जननेन्द्रियकी शिथिलतामें यह बहुत लाभदायक है। वृद्ध मनुष्योंमें पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना, दिन-रात अपने-ही-आप बूंद-बूंद पेशाब निकला करता है। स्वप्नदोष या

आप-ही-आप वीर्य-पतन हो जाना या मूत्रस्थलीकी मुखशायिका ग्रन्थि (Prostate) से आप-ही-आप लारकी तरह रस बहना वगैरह लक्षणोंकी यह एक लाभदायक दवा है। भयंकर तकलीफ़ देनेवाला अधकपारीका दर्द भी इससे बहुत कुछ आराम हो जाता है।

सम्बन्ध—सदृश ।—आर्नि (क्लान्ति)। बेलिस, सैबाल-सेरुलेटा, कास्टि (ध्वजभंग, प्रोस्टेटकी बीमारी)। ऐपिफिगस (अधकपारीका दर्द)।

शक्ति ।—मूल अर्क १० से ३० बून्दतक।

डैफनी-इण्डिका

(DAPHNE INDICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—अन्धापन; क्षीण दृष्टि; कब्जियत; खाँसी; ज्वर; पाकाशयका शूल; प्रमेहकी वजहसे वात; कुष्ठ; पारा और उपदंश धातु; शुक्रक्षरण; प्लीहा; अनिद्रा; दाँतका दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—पेशी, हड्डी और त्वचापर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है, इसलिये, उपदंश रोगमें यह विशेष लाभदायक हुआ है। इसका दर्द स्थान बदला करता है और बिजलीकी तरह तेजीसे फैलता है। इसमें तम्बाकू सेवनकी बहुत इच्छा हुआ करती है। शरीरपर कुछ लसदार पसीना होता है; सन्ध्याके समय पैरपर लाल रंगके चकत्ते; जीभका एक पार्श्व लेप चढ़ा और बहुत बदबूदार; मुँहसे गर्म लारका स्राव, नितम्ब-देशमें जाड़ा मालूम होना; प्लीहामें एकाएक सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह दर्द; सभी दर्द एकाएक प्रकट होते हैं; साँस, पेशाब, पसीना वगैरह देहसे निकले हुए सभी पदार्थोंमें बदबू रहती है; हाथ-पैरके अन्तिम भागसे दर्द आदिका एकाएक दूसरे स्थानपर चला जाना—पैरके अंगूठेके नीचेसे दर्दका एकाएक हृत्पिण्डपर पहुँच जाना—इत्यादि कई डैफनीके प्रधान निर्णायक

लक्षण हैं। इसका एक और भी असाधारण लक्षण यह है, कि रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा, बाँह वगैरह प्रत्यङ्गका कोई एक अंश देहसे अलग हो गया है।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें दर्द, मानसिक परिश्रमसे उसका बढ़ना; ऐसा मालूम होता है मानो माथा भरा हुआ है। मानो खोपड़ी फट जायगी, खासकर शय्यासे उठनेपर ऐसा ही मालूम होता है। मूर्द्धा-देशकी हड्डीका फूलना; यह फूलन इतनी कोमल होती है कि वह जल-भरी मालूम होती है और इसमें रातमें बहुत दर्द मालम होता है, यहाँतक कि इस दर्दके कारण नींदमें गड़बड़ी हो जाती हैं और छूनेपर दर्द बढ़ जाता है। माथेके बायें पार्श्वमें कड़ी सूजन, मानो हड्डीके भीतरकी ओर हो रही है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा शरीरसे अलग है।

आँख ।—आँखमें ऐसा मालूम होता है, मानो छील रहा है। आँखमें दर्द, मानो धक्का देकर सरमें घुसा जाता है। आँखें प्रदाहयुक्त और ज्योतिहीन, मानो पानीमें तैर रही हैं (क्रोकस)। ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके सामने एक पतली झिल्ली झूल रही है (कास्टि, पल्स, रैटान)।

मुखमण्डल ।—गालमें, कानके चारों ओर और मूर्द्धादेशमें जलन और उत्ताप मालूम होना—इसके साथ ही जम्हाई लेनेकी इच्छा। जीभका केवल एक पार्श्व लेप चढ़ा (रास, लोबेलिया) और जीभसे बहुत बदबू निकलती है (जेल्स, कैलि-ब्रोम, प्लम्ब), नींदके बाद जीभ बहुत सूखी मालम होती है, मानो जल गयी है (स्ट्रान)। मुँहसे गर्म लारका स्राव। धूम्रपान करनेकी बहुत इच्छा (युजिनिया-येम्बस, स्टैफि, थिरिड)।

पाकस्थली ।—मुँहमें पानी भर आना और खट्टी कै होना (बोर, कैल्के, कास्टि, फेरम, नक्स, फास, कैल्के, ब्रोम, पल्स, सल्फ); पहली बारके भोजनके बाद मिचली और वमन (बोर); पानी पीने बाद पेटमें दर्द होता है। प्रत्येक बार भोजनके बाद, पाकाशयमें जलन और ऐसा मालूम होना मानो खाल उधड़ गयी है, इसके साथ ही बार-बार डकार आना (नेट्र-कार्ब, सार्सा); प्लीहा प्रदेशमें तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द (ऐगनस-कास,

कास, आर्स, कैप्स, सिङ्को, इग्ने, नक्स, सल्फ, सियेनोथस)। वातकी वजहसे दर्द बिजलीकी तेजीकी तरह हाथ-पैरको छोड़कर उदरमें पैदा हो जाता है।

पेशाब ।—बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होना। अकसर रातमें शय्यामें अनजानमें पेशाब हो जाता है (सिपि, ऐमोन-कार्ब, साइलि, कार्बो-वेज, सिना)। पेशाब—गदला गाढ़ा, पीली आभा लिये और उसमें सड़े अण्डेकी तरह गन्ध। तली कुछ लाल रङ्गकी जमती है—पेशाबके बर्त्तनमें सटी रहती है (लाइ, नेट्र-मूर, पल्स, सिपि, वेलि); पेशाबके समय मूत्रनालीमें ऐसा अनुभव होता है, मानो खाल उधड़ गयी है (बोवि, सिनाबे, नक्स-वोम)।

हृत्पिण्ड ।—कलेजा धड़कना और हृत्पिण्ड एकाएक धड़फड़ कर उठता है; रोगी बाईं करवट सो नहीं सकता (ऐङ्गस, नेट्र-कार्ब, नेट्रम-मूर, नक्स, पल्स, टैबाक, वायोला-ट्राइ); हृत्प्रदेशमें छेदने या फाड़नेकी तरह तकलीफ़ मालूम होना, रोगी काँपा करता है और यन्त्रणासे पागल हो पड़ता है। रातमें श्वास रुकनेका उपक्रम हो जाता है (ऐको, आर्स, कार्बो-वेज, कैमो, डिजि, कैलि-कार्ब, कैलि-क्लो, लैके, नक्स, पल्स, सैम्बि, सेनेगा, स्टैन) और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी गर्दनकी ग्रन्थियाँ सब फूल गई हैं और धमनियाँ सब खूनसे भर गई हैं (नींदका आवेश आते ही श्वास रोध होनेका उपक्रम—जेल्सि, ग्रैफि, लैके, लैक-कैन, ओपि, क्लोराज)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—रातमें साँस रुक जाना चाहती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो माथा शरीरसे अलग है (मानो उसकी देह और आत्मा अलग है—ऐनाक, थूजा)। पैरके अंगूठेके नीचे दर्द-भरी सूजन, दर्द अंगूठेसे उदरमें और हृत्पिण्डमें चला जाता है (ऐसाफि, लेकि, मैंगे, मिफाइटिस, नक्स-मस, प्लम्ब, कोलचि, कैलि-बाइ, पल्स, रोडो)। शरीरमें जगह-जगह तेज़ और जल्दीसे फैल जानेवाला दर्द; एक स्थानसे तेजीसे दूसरे स्थानपर चला जाता है; ठण्डी हवामें बढ़ जाता है। प्रमेहका स्राव रुक जानेकी वजहसे पेशी और हड्डियोंमें वातका दर्द। हड्डियोंका बढ़ना और उनमें लगातार तेज़ दर्द। रोगीको वाध्य होकर सोना पड़ता है या सोना पसन्द करता है (आर्स, बेराइ, कैलेड, कैमो, क्लिमि, साइक्लामिन, वेरे, ऐसिड-नाइ, नक्स, पल्स, स्टैफिसे, रास-रेड, ऐण्टि-टार्ट)। उरुदेशमें दर्द—चलनेके समय बढ़ जाता है (ब्राइ, पल्स)।

वृद्धि ।— निर्मल वायुमें, कृष्ण पक्षमें, सवेरे, सन्ध्याके समय, शय्यापर सोनेके समय, धूम्रपानसे (मूत्रस्थलीकी मुखशायिका-ग्रन्थिसे रस-स्राव), शय्याके उत्तापसे, ठण्डी हवामें, छूनेपर और दबानेपर, सोनेपर सन्धि-वात बढ़ जाता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—(प्रमेहके प्रतिक्षेपकी वजहसे बीमारियाँ)—थूजा, मिडोरिन (मानो उसका माथा चारों ओर छिटका हुआ है)—बैप, स्ट्रैम, (स्थान परिवर्त्तन करनेवाला दर्द) लैक्टियुका, मैंगे, कैलि-बाई, पल्स। रातमें श्वास रुकनेका उपक्रम (ऐको, आर्स, कैमो, डिजि, कैलि-क्लो, लैके, सैम्बियु, जेलसि, ग्रैफि, क्लोरम, लैके, लैक-कैन, ओपि)।

शक्ति ।—१म शततमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

डैट्यूरा आर्बोरिया

(DATURA ARBOREA)

दूसरा नाम ।—ब्रुगमेन्सिया-सूवियोलेन्स, एक तरहका धतूरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके फूलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—संबद्ध-भावसे कोई बात सोच नहीं सकता। मस्तिष्कमें कितनी ही तरहकी समस्याएँ और भाव उदय होती हैं, मानो चिन्ताएँ सब मस्तिष्कके बाहर घूमती-फिरती हैं मानो चिन्ता-शक्तिमें मस्तिष्कका कोई प्रभाव नहीं होता, मानो चलनेके समय मिट्टीमें पैर नहीं लगते, सर-दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—स्ट्रैमोनियम।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

डैटूरा-फेरोक्स

(DATURA FEROX)

दूसरा नाम ।—चीन देशका धतूरा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे विचूर्ण या फलसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—तन्द्रा, सरमें चक्कर आना, आँख बन्द किये बिना ही नींद, **पासमें कोई गाता हो तो उसकी लयपर नाचने लगना,** लक्षण तथा प्रलाप, एकोन्माद वगैरह मस्तिष्कको बीमारीमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

डैटूरा मेटेल

(DATURA METEL)

दूसरा नाम ।—भारतीय धतूरा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आत्महत्या करनेके लिये धतूराका सेवन करनेपर पहले बेहोशी आती है, इसके बाद क्रमके आँखकी पुतलीका फैलना, प्रलाप और अन्तमें अकड़न पैदा होकर मृत्यु हो जाती है। इन लक्षणवाले आक्षेप, संन्यास, प्रलाप, एकोन्माद वगैरह बीमारियोंमें उपयोगी है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

डेरिस पाइनेटा

(DERIS PINATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—कोटिन चायनामें उत्पन्न एक तरहके उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इस भावसे चलना मानो सीढ़ीसे उतर रहा है ; कोई छातीमें मुक्का मार देगा यह भय ; पेशियोंका दर्द-भरा और आक्षेपिक संकोचन ; घ्राणशक्तिकी तेज़ीके कारण साधारण सुगन्धको स्वर्गीय सुवास और साधारण दुर्गन्धको नारकीय दुर्गन्धकी तरह अनुभव करना । वातकी वजहसे माथेका स्नायुशूल वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐनाकार्ड (घ्राण-शक्तिकी तेज़ी) ; स्टिक्टा, इग्नै (हिस्टीरिया रोगमें गलेमें एक गोलाकार पदार्थ रहनेकी तरह मालूम होना) ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

डिक्टैमनस

(DICTAMNUS)

दूसरा नाम ।—फ्रैक्सिनेला ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—डिक्टैमनसके सेवनसे तेज़ प्रसव-वेदना घट जाती है । कब्जियत, उदरमें वायु-संचय, अतिरजः, श्वेत-प्रदर, सपनेमें घूमना वगैरह उपसर्गों में भी यह बढ़िया काम करता है ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

डिजिटेलिनम

(DIGITALINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—डिजिटेलिस औषधका सार भाग ।—विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—दमा ; अतिसार ; शुक्रक्षरण ; हृत्पिण्डका स्पन्दन ; स्वप्न-दोष ; सरमें चक्कर आना ; दृष्टि विभ्रम इत्यादि रोगमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—डिजिटेलिसकी तरह इसकी भी क्रिया प्रधानतः हृत्पिण्डपर होती है । हृद्रोगमें इसका निर्णायक लक्षण है—ऐसा अनुभव होना मानो हृत्पिण्ड स्थिर हो गया है । डा० हेल कहते हैं, कि जहाँ हृत्पिण्डकी क्रियाकी अधिकताकी वजहसे सुस्त पड़ जानेकी सम्भावना है, उसी रोगमें अधिक उपयोगी और लाभदायक है । पक्षाघातकी वजहसे शारीरिक अवसन्नता, सुन्न हो जाना और प्रत्यंगोंके कुछ फड़कनेका भाव—ये इसके कई प्रकृतिगत लक्षण हैं । रोगी इतना क्षीण हो पड़ता है, कि उसमें अपनी देहकी एक भी पेशीको हिलानेकी शक्ति नहीं रह जाती । इसके द्वारा हृत्पिण्डकी गति विलम्बसे या तेज़ अथवा क्षीण हुआ करती है । मिचली, पतले दस्त आना, अण्डेके भीतरवाले पीले अंशकी तरह पदार्थका कै करना, कम्प, ऊपरी पेटमें शून्यता मालूम होना, रोएँ खड़े हो जाना, कुछ पसीनेसे भरी और लसदार शरीरकी त्वचा, आँखमें रोशनी और नाकमें गन्ध सहन नहीं होती, ललाटमें होनेवाला सर-दर्द, अरुचि, पेट फूलना, पेटमें गड़गड़ाहट, बार-बार डकार आना, बहुत ज्यादा पेशाब, बहुत थकावट मालूम होना, सन्ध्याके समय उत्तापका पैदा हो जाना और प्यासका न रहना, चलनेके समय ऐसा मालूम होना मानो जमीन हटती जाती है या उतरती जाती है और नींदवाली अवस्थामें बार-बार वीर्यपात वगैरह डिजिटेलिनके निर्णायक लक्षण गिने जाते हैं (डा० क्लार्क)।

लक्षणावली

मन ।—किसी भी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यु, ऐवेना-सैट, लैक-कैन, ऐसिड-फास, स्कुटेल) या जो पढ़ता है, उसका मर्म समझ नहीं सकता (ऐग-कैस, लाई, ऐसिड-फास, सिपि)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, अस्थिर दृष्टि, दूरकी चीज़पर नज़र नहीं डाल सकता (दूरकी चीज़ पास मालूम होती है—ऐनाक, निकोल स्टैन, सल्फ़) ; सभी चीजें ऐसी मालूम होती हैं, मानो बाईं ओरसे दाहिनी ओर घूम रही हैं, आँख बन्द करनेपर घट जाती है। सर-दर्द—सवेरे आरम्भ होता है, तीसरे पहर बढ़ता है और सन्ध्याके समय प्रचण्ड अधकपारीके दर्दमें परिणत हो जाता है (सैङ्गियुनेरिया, साइलिसिया, स्पाइजिलिया देखिये), मूर्द्धादेश या सरके पिछले भागमें ऐसा मालूम होता है मानो ऊँचा उठ रहा है।

आँख ।—ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँख धीरे-धीरे बड़ीसे बहुत बड़ी होकर आँखके गड़हेसे बाहर निकलना चाहती हैं (लैक्टियु, कोमोक्लेडिया, ऐमिल, लाइकोपो, पैसिफ्लो, फास, स्पञ्जि)। नाना प्रकारकी भ्रम-पूर्ण चीजें देखना। नज़रके सामने ऐसा मालूम होना मानो धूलके कण या काले-काले बिन्दु सब उड़ रहे हैं (सिङ्को, कुरारि, लैक्टियु, ऐसिड-नाइ, नक्स, फास, थूजा)। सन्ध्याके समय नज़रके सामनेका कुछ भाग मेघसे ढका मालूम होता है। आँखके सामने चमककी झिलमिलाहट मालूम होती है। नज़रके सामने ऐसा मालूम होता है, मानो बहुतसे चक्कर उड़ रहे हैं (नाइट्रम, स्ट्रैन ; आगके चक्कर—पल्स)। घरके भीतरकी सभी चीजें ऐसा मालूम होता है, कि एकसे दूसरी मिल गयी हैं। दीपशिखा (दीयेकी लौ) के चारों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक तरहका मण्डल या शोभा (Halo) दिखाई देती है (ऐल्यू , ऐनाक, बेल, लैके, मैग-म्यूर, नाइट्रम, फास, रियुटा, सिपि, स्टैन, स्टैफाइ ; नीला रङ्ग—लैके ; पीला रंग—फास, सिपि ; लाल रंग—रियुटा ; नाना प्रकारके रङ्गोंका—नाइट्रम् ; सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं—कैन्थ, सैण्टोनिन, डिजि)।

पाकस्थली ।—नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो बहुत भूख लगी है। पानी पीनेसे मिचली और वमन बढ़ जाता है (आर्स बिस्मथ, ब्राइ) ; प्रबल वमन—अण्डेके भीतरवाले पीले अंशकी तरह, इसके साथ ही आँखमें चमकीली रोशनीसे और नाकमें सुगन्धसे तकलीफ़ मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पेट एकदम खाली हो गया है (क्रोटोन, डायाडेमा, लैकि, मैग-कार्ब, लाइ, सेबाड, सल्फ़, ऐण्टि-टार्ट, टियुक्रि, वेरेट ; भोजनके पहले—सल्फ़ ; भोजनके बाद—डिजि)। पाकस्थली भरी मालूम

होती है। जो मिचलाता है और खाये हुए पदार्थ बार-बार गलेमें चढ़ आते हैं।

अन्त्राशय।—सवेरे शय्यासे उठनेपर बार-बार बहुत अधिक परिमाणमें वायु निकलनेपर पेटमें तेज़ मरोड़के साथ गाढ़ा लेईकी तरह पाखाना होता है। बिजलीकी गतिकी तरह तेज़ शलाका बेधने जैसा दर्द। कमरसे तलपेटतक प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, मानो ऋतुस्राव होगा (ऐसाफि, कैमो, साइना ; आयोड, कैलि-कार्ब, क्रियो, नैट्र-म्यूर, पल्स, ऐसिड-सल्फ़)। उदरामय या पतला पाखाना होना या उदरामय न रहनेपर भी कोमल और धसधसा पाखाना।

श्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड।—वक्षमें वातकी वजहसे दर्द, सुई बेधनेकी तरह दर्द या छाती मानो कस गयी है, इस तरहका दर्द (आर्स, कोना, आयोड, कैक्ट, इपिक, लैकि, लोरो, लोबेल, मस्क, नक्स, ओलि-ऐन, ओपि, फास, रास, स्पाई, स्टैन, टैबाक, वेरेट)। छातीके बाएँ पार्श्वमें और बगलके नीचे वातका दर्द, केवल शरीर हिलानेपर यह दर्द मालम होता है। बायें पृष्ठफलकसे सामनेकी ओर यकृतके पासतक ऐसा दर्द मानो खोंचा मार रहा है—लम्बी साँस लेने या छोड़नेपर बढ़ना। बाएँ वक्ष और स्तन तथा बगलके बीचवाले स्थानमें महीन सलाई घुसनेकी तरह दर्द, सन्ध्याके समय सोनेवाली अवस्थामें या बाईं करवट सोनेपर यह दर्द मालूम होता है। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड स्थिर हो गया है (मानो हिलानेपर हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—जेल्सि)। बाईं करवट सोनेपर बहुत तेज़ धड़कन कलेजेमें पैदा हो जाती है (ऐङ्गस, बैराई, ब्रोम, नैट्र-कार्ब, नैट्र-म्यूर, पल्स, टैबाक)। हृत्पिण्डकी क्रिया उच्छृङ्खल और विषम। नाड़ी—विलम्बित, विषम, सविराम या बीच-बीचमें लोप हो जानेवाली ; कभी-कभी बहुत त्रस्त गति, हृत्पिण्डकी गतिके अनुसार नहीं—क्षीण, सूतकी तरह, प्रायः छूनेपर अनुभवमें नहीं आती, परन्तु हृत्पिण्डकी गति प्रबल और ऐसा मालूम होता है मानो ताड़नीकी तरह जोरसे आघात करता है (डा० जार कहते हैं, कि "डिजिटेलिसकी मुख्य क्रियामें तेज़ हृद्वेगके साथ नाड़ीकी गति बहुत धीमी और देरसे होती है"—डिजिटेलिनममें भी ऐसा ही रहता है)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ-पैरोंका धीरे-धीरे काँपना, इच्छानुसार काम नहीं कर सकना। भारयुक्त—मानो पक्षाघात हो गया है ; विश्रामके समय

दर्दका बढ़ना। उरुदेशकी जंघाकी पोटलीकी हड्डोमें ऐंठन होती है। नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो पैरके नीचेकी जमीन उतरती जा रही है।

वृद्धि।—बाईं करवट सोनेपर, विश्रामके समय, पानी आदि पीनेपर और नींद खुलनेपर।

घटना।—भोजनके बाद और निर्मल वायुमें टहलनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—डिजिटेलिस, कोनायम, कोडिइन, जेलसिमियम, टैबेकम, क्रौटिगस, ग्रैटियोला।

शक्ति।—दूसरे दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण।

डिजिटेलिस परप्युरिया

(DIGITALIS PURPUREA)

दूसरा नाम।—फाक्स-ग्लोव।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दो वर्षके गाछके पत्तोंसे मूल अर्क बनाया जाता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें फायदा करता है:—अन्धापन; कलेजेका शूल; दमा; मूत्रग्रन्थिकी बीमारी; नीलिमारोग; मदात्यय; शोथ; ज्वर; प्रमेह; सर-दर्द; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; कोरण्ड; मस्तिष्कावरणकी बीमारियाँ; ध्वजभङ्ग; कामला; फेफड़ेका प्रदाह; स्मरण-शक्तिका गायब हो जाना; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; उलटी चमड़ी रोग; मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना; लारका स्राव; शुक्रका जाना; दाँतका दर्द; दृष्टिलोप या दिखाई न देना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वयःसन्धि कालमें उत्तापका पैदा हो जाना और इसके बाद बहुत अधिक स्नायविक अवसाद और विषम तथा

सविराम नाड़ी ; शरीर हिलानेसे ही नाड़ीकी चाल बढ़ जाती है। (२) रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसके हिलते ही उसकी नाड़ीकी गति बन्द हो जायगी (कोकेइन ; न हिलनेपर उसके हृदयकी गति बन्द हो जायगी—जेल्सि), बेहोश हो जानेका उपक्रम। पाकस्थलीका एकदम खाली मालूम होना, बहुत अधिक सुस्ती, रोगी समझता है, कि उसकी मृत्यु एकदम पास है। (३) मसाना या वृक्ककी क्रियाका रुक जाना, पेशाबके साथ लाल रंगकी बालू निकलना, पेशाबके समय बहुत तकलीफ़ और जलन मालूम होना। रातमें अकसर अनजानमें वीर्यपात हो जाता है और रमणके बाद जननेन्द्रिय शिथिल पड़ जाती है। (४) हृत्पिण्डकी बहुत अधिक कमजोरी, बोलनेमें कष्ट होता है (स्टैन); श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ़ होती है और दीर्घ श्वासकी तरह (५) सोनेके समय या विश्रामके समय नाड़ीकी गति क्षीण और विषम हो जाती है। सामान्य कारणसे प्रायः हाथकी अंगुली सुन्न हो जाती है, यहाँतक कि पुस्तक पकड़नेपर भी (६) शून्य खाँसी ; गर्दनकी धमनीमें टपकका दर्द पैदा कर देता है। (७) आरक्त ज्वरके बाद या लाला मेहके बाद शोथ, इसके साथ ही पेशाबका रुक जाना और हृत्पिण्डकी बीमारी तथा मूर्च्छा (जरायुमें दर्द बना रहनेपर—कानवेलेरिया)। रोगीको उठाकर बैठानेके समय या उठानेके समय चक्कर खाकर मृत्यु हो जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है। (८) चेहरा रक्तहीन, मृत मनुष्यकी तरह ; शरीरकी त्वचा, पलकें, ओंठ, जीभ वगैरह सब नीले। (९) यकृतके बहुत बढ़ जानेकी वजहसे पाण्डु रोग या कामला पैदा हो जाना। (१०) उदरामय (यकृतके विकारके साथ), मल सफेद या भूरे रङ्गका (हिप, आयोड); बहुत देरसे निकलता है और खड़ियाकी तरह (बेल, पोडो); प्रायः सफेद रङ्गका (कैल्के ; सिङ्को); पतला गोल और लम्बा ; अनजानमें पाखाना हो जाता है। (१२) आँख, कान, ओंठ और जीभकी शिराएँ सब फूल जाती हैं और स्पष्ट दिखाई देती हैं—यही कई डिजिटेलिसके प्रधान निर्णायक और सिद्धिप्रद लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—दुःखित चित्त, रोना और हमेशा भविष्यकी चिन्ता किया करता है, ज्यादा बोलना नहीं चाहता और बहुत आलसी। चैतन्य या अनुभव शक्तिका घटना। मानसिक आवेग होते ही उदरके ऊपरी प्रदेशमें तेज़ दर्द मालूम

होता है और यह दर्द नाकके अगले भागतक फैल जाता है। माथा झुकानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क सामनेकी ओर सरकता आता है। सरमें मानो तरङ्गे उठ रही हैं—ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क पानीसे भरा है (हिप, साइक्लेमेन)। मस्तिष्कोदक रोगाधिकारमें ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्कमें पानीकी तरङ्गे, माथेके अस्थि-फलकमें आकर टक्कर देती हैं; खड़े होनेपर, बोलनेपर, सर हिलानेपर या पीछेकी ओर माथा झुकानेपर बढ़ जाता है और सोनेपर या सामनेकी ओर माथा झुका रखनेपर आराम मिलता है। दिनमें सोनेके समय माथेमें फड़फड़ाहट होती है, माथा बहुत भारी मालूम होता है और पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम हो जाता है।

आँख।—आँख और पलक लाल तथा फूली हुई; ऐसा मालूम होता है, मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं। आँखसे जलन करनेवाले आँसू गिरते रहते हैं और चमकीली रोशनी या ठण्डी हवा लगनेपर वृद्धि हो जाती है (बोर, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, कैमो, साइक्यूटा, क्रोक, युफ्रे, ऐलियम-सिपा, कैलि-कार्ब, मर्क, पल्स, रास, स्टैफाई, सल्फ)। दृष्टिकी अस्पष्टता, मानो कुहरेके भीतरसे देख रहा है (बेल, कैल्के, सिक्ले, इग्ने, मार्क, प्लम्ब)। चीजें सब कभी हरी, कभी पीली दिखाई देती हैं (हरी—सिपी, स्ट्रान; पीली—कैन्थ, सैण्टोनिन, क्युरारि, डिजिटेलिन)।

मुखमण्डल।—चेहरा मुर्देकी तरह नीला और रक्तहीन, ओंठ, जीभ और पलक सभी नीले, नीलपाण्डु रोग (Cyanosis)।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद मीठा, विशेषकर धूम्रपानके बाद, रोटी तीती मालूम होती है, जीभ साफ़ रहनेपर भी अरुचि बनी रहती है, दोनों ओंठ सूखे और लगातार प्यास बनी रहती है, खट्टा पानीय पीनेकी इच्छा (बोर, ब्राई फेर, पल्स); डकारके साथ खाये हुए पदार्थ गलेमें चढ़ आते हैं (फेरम-फास)। पेट ऐसा मालूम होता है, मानो खाली हो गया है; इसीलिये रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रहती और उसे ऐसा मालूम होता है, मानो मृत्यु निकट है। मिचली और वमन—सवेरे अजीर्ण पदार्थ और हरे पानी आदिकी कै होती है; कभी-कभी श्लेष्मा खाया हुआ पदार्थ या पित्त वमन होता है। पेटसे कण्ठतक जलन होती है, लगातार मिचली बनी रहती है, रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो मर जायगा, कै होनेपर भी मिचली नहीं घटती। खानेकी चीजोंकी

और देखने या सूँघनेतकसे मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि), हिलने-डोलनेपर जी मिचलाता है और सुस्ती मालूम होती है।

अन्त्राशय।—यकृतका बहुत अधिक बढ़ जाना, विशेषकर पिलई या पाण्डु रोग (चेलिडो, चायना, मर्क); यकृत-प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होता और ऐसा दर्द होता है मानो दबा रखा गया है। उदरी और शोथ।

मल।—मल बहुत सफेद या भूरा; मल निकलनेमें विलम्ब होता है; खड़ियाके रङ्गका (चेलिडो, पोडो, हिप, आयोड), मलका रङ्ग प्रायः सफेद (चायना, कैल्के), अनजानमें पाखाना हो जाता है। पानीकी तरह उदरामय और बहुत प्यास।

पेशाब।—मसानेकी क्रियाका रुकना; पेशाबके साथ लाल रङ्गकी बालू निकलती है। मूत्रनालीमें खोंचन और दबावकी तरह दर्द, पेशाब हो जानेपर भी नहीं घटता। मूत्रस्थलीकी ग्रीवामें प्रदाह हो जानेपर बहुत ज्यादा अदम्य पेशाबका वेग होता है,—कई बूंद पेशाब निकलते ही घटनेके बदले वेग और भी बढ़ जाता है; रोगीको चलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है। चित्त होकर सोनेपर तकलीफ़ कुछ घट जाती है। पेशाब गर्म, जलन पैदा करनेवाला और परिमाणमें बहुत थोड़ा। सोनेवाली अवस्थामें पेशाबका वेग बहुत देरतक रोक सकता है, पेशाबके पहले और बाद मूत्रनलीमें छेदनेकी तरह दर्द।

जननेन्द्रिय।—कोष-वृद्धि—बाईं ओरका; मुष्क पानी-भरी थैलीकी तरह मालूम होता है। अण्डकोषमें ऐसा दर्द और सूजन मानो चोट लग गई है; प्रमेह—लिङ्गमुण्डकी आवरक त्वचा फूली हुई और सिकुड़ नहीं सकती, रससे भरी; चमड़ी; रमणेच्छा अत्यन्त प्रबल—बार-बार लिङ्गमें कड़ापन होता है। लिङ्ग आदिमें शोथ और सूजन। जरायुसे खूनका स्राव। ऋतुके पहले तलपेट और कमरमें दर्द होता है।

श्वास-यंत्र।—कण्ठमें रुखड़ापन मालूम होनेकी वजहसे घड़घड़ खाँसी (कास्टि, कोना, ग्रैफ, कैलि-आयोड, लोरो, कैल्मिया, मैङ्गा, नक्स, स्ट्रान, पल्स); केवल सिर्फ सन्ध्याके समय पीले रङ्गका माँड़की तरह और मीठे स्वादवाला बलगम निकलता है (पीले रङ्गका—कैल्के, लैके, लाई, ऐसिड-नाई, फास, पल्स, सिपि, स्पञ्जि, स्टैन, स्टैफाई, ऐसिड-सल्फ, थूजा; मांड़की तरह—आर्जेण्ट, बोवि, कैनाब, कैमो, बेराई, सिङ्को, किनिन-सल्फ, फेर, लोरो;

मीठा स्वादवाला—फेर-फास, प्लम्ब, पल्स, रास, सिपि, स्क्वियुला, स्टैन); कण्ठनालीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा लगा रहता है और थोड़ा भी खाँसनेसे निकल आता है। बोलने (ऐनाक, ड्रैराई, लैके, मैङ्गे, एसिड-म्यूर, मिफाई, मर्क, नेट्र-म्यूर, स्टैन), चलने (फेर, हिप, लैके, नेट्र-म्यूर, स्टैन) और कभी ठण्डी चीज़ पीनेपर (ऐमोन-म्यूर, कार्बो-वेज, सिलि, स्क्वियुला) खाँसी आ जाती है। सामनेकी ओर शरीर झुकानेपर भी खाँसी आ जाती है (रास, सेनेगा)। खाँसनेपर काली आभा लिये खून-मिला कफ़ निकलता है (आर्स, ब्राई, कार्बो-वेज, सिङ्को, फेर, हिप, लैके)। रातमें सोनेपर और दिनमें चलने या बैठनेके समय श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ़ होती है (सोनेमें व्याघात—आर्स, लैके, फेलैन, रास, सैम्बु; चलनेके समय—ऐगार, कार्बो-वेज, कोना, ग्रैनेट, नक्स, फेलैन, रास, स्टैन, स्ट्रान; बैठनेवाली अवस्थामें—ऐल्यू, युफ्रे, ड्रोसे, लैके, फास, सैम्बि, वेरेट; चित्त होकर सोनेपर—ओलि-ऐन, फास, सिपि; माथा नीचाकर सोनेपर—चायना, कोलचि, हिप, नाइट्रम, पलस; करवट बदलकर सोनेपर—कार्बो-वेज, पलस; सोनेपर श्वासकष्ट घटता है—आयोड, सोरिन)। झुककर बैठनेपर वक्षस्थलमें सङ्कोचनकी तरह दर्द (रास)। वक्षमें कमजोरी मालूम होना; बोलनेमें तकलीफ़ होती है (स्टैन)।

हृत्पिण्ड।—एकाएक ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी गति स्थिर हो गई और इसीलिये बहुत अधिक मानसिक उद्वेग और तबियत अच्छी नहीं मालूम होती है और भोजनके बाद रोगीको बाध्य होकर साँस रोक लेनी पड़ती है; रोगी स्थिर होकर पड़ा रहता है, क्योंकि उसे ऐसा बोध होता है, मानो यदि वह जरा भी हिला तो हृत्पिण्डकी गति रुक जायगी (कोकेइन, नहीं हिलनेपर स्थिर हो जायगी, ऐसा मालूम होना—जेलसि)। थोड़ा भी शरीर हिलानेपर कलेजेमें भयङ्कर धड़कन पैदा हो जाती है (आयोड, भयङ्कर धड़कन, विशेषकर रातमें और सोनेके समय—आर्स; ऊपरकी ओर मुँहकर चुपचाप पड़े रहनेपर घटना—आयोड; बाईं करवट सोनेपर बढ़ना—कैक्ट, लाई)। हृत्पिण्डमें बार-बार सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना (कास्टि, इग्ने, स्पाइजि; हृत्पिण्डमें बार-बार धक्का मालूम होना—कोना, नक्स; हृत्-प्रदेशमें ठण्ड मालूम होना—नेट्र-म्यूर)। दो-एक सीढ़ी चढ़नेपर भी कलेजा धड़कना 'शुरू हो जाता है (ऐसारिग, बेल, सल्फ)। कलेजा धड़कनेके साथ-ही-साथ लगातार दर्द और गड़बड़ी मालूम होना; थोड़े भी

परिश्रम या मानसिक आवेगसे बढ़ जाता है, कलेजेकी धड़कनके समय बहुत सुस्ती मालूम होती है, चेहरा नीला हो जाता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसके सरमें चक्कर आ रहा है और कानमें नाना प्रकारके शब्द हो रहे हैं। बाएँ बन्धे और बाँहमें तेज़ दर्द होता है और हाथ तथा हाथकी अंगुलियोंमें झुनझुनी होती है। हृत्पिण्ड इतना कमजोर हो जाता है, कि शय्यापर उठकर बैठनेसे ही रोगीकी मृत्यु हो जाती है। बहुत क्षीण और धीमी नाड़ी हो जाती है; बीच-बीचमें गायब हो जाती है या रुक-रुककर चलती है। प्रत्येक तीसरे, पाँचवें या सातवें आघातपर विलुप्त हो जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—एक हाथ गर्म और दूसरा ठण्डा (सिङ्को, इपिक, पल्स; एक हाथ आगकी तरह गर्म और सफ़ेद; दूसरा हाथ ठण्डा और लाल—मस्कस; एक पैर ठण्डा दूसरा गर्म—चेलिडो, लाइ)। बाएँ हाथमें भार मालूम होता है, मानो पक्षाघात होकर सुन्न हो गया है (दाहिना हाथ—कास्टि; दोनों हाथ—डालका, नेट्र-मूर); निम्नाङ्ग बहुत कमजोर; जानुमें शोथ, दिनमें निचला पैर फूल जाता है और रातमें घट जाता है, सारे शरीरका शोथ, अण्डलाल मिला पेशाब (Albuminuria) या आरक्त ज्वरके बाद आरम्भ हो जाता है और पेशाब बन्द हो जाता है; शरीरके भीतर और बाहरके सभी यंत्र आदिमें शोथ हो जाया करता है। हृत्पिण्डके यांत्रिक रोग (Organic Lesions) मिली हुई मूर्च्छा पैदा हो जाया करती है (जरायु-प्रदेशमें दर्द मालूम होनेके साथ—कानवे)। सामान्य कारणसे और प्रायः हाथकी अंगुलियाँ सब सुन्न हो जाती हैं।

त्वचा।—चेहरा नीला, नीली आभाके साथ लाल—मुर्देकी तरह। पलक, ओंठ, जीभ और समूची देह नीली या नील-पाण्डु रोग; ओंठ, कान, पलक और जीभके ऊपरवाली नीली शिराएँ सब फूल जाती हैं और दिखाई दिया करती हैं। यकृत बहुत बढ़ जानेके कारण पिलई—कामला रोग, इसके साथ ही सामान्य कारणसे वमन।

ज्वर।—नाड़ीकी गति धीर और विषम (पुष्ट और तेज़ गति—ऐको बेल); थोड़ा भी शरीर हिलानेसे ही नाड़ीकी यह धीरता, तेज़ीमें बदल जाती हैं। भीतर शीत और बाहर उत्ताप मालूम होना (कैल्के-कार्ब, बाहरकी

और शीत और भीतर उत्ताप या उसकी विपरीत अवस्था—इग्ने), एकाएक बदन गर्म हो जाता है और बहुत सुस्ती मालूम होती है। रातमें बहुत पसीना होता है; पसीना ठण्डा और लसदार। शीतावस्थाके बाद ही पसीना होता है, उत्तापावस्था प्रकट ही नहीं होती।

वृद्धि।—रातमें या सवेरे, नींद खुलनेपर, भोजनके बाद; शरीर हिलानेपर; शय्यापर उठकर बैठनेके समय; ठण्डी पतली चीजें पीने, ठण्डी चीजें खानेके लक्षणमें तथा सङ्गीतसे बढ़ना।

घटना।—जब पेट खाली रहता है और निर्मल हवामें।

सम्बन्ध।—सदृश।—प्रतिविष कैम्फोरा, सर्पेण्टेरिया; उद्भिदकी खटाई। सिङ्कोनाके पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं हो सकता; क्योंकि सिनकोना डिजिटेलिसके मानसिक उद्वेगको बढ़ा देता है।

तुलनीय।—ऐको (उत्कण्ठा); ऐपोसाइनम, कैल्मिया; लैकेसिस (निद्रा), लोबेलिया; लाइकोपस, क्रोटेगस (हृत्पिण्ड); नैट्र-म्यूर (नाड़ी), स्पाइजि (भयङ्कर मिचली), सल्फ (प्रमेह); ऐण्टि-टार्ट (मिचली), टैबेकम, वेरेट (ठण्डा पसीना और वमन); सल्फ (जननेन्द्रिय)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—३० से ५० दिन।

डिजिटाक्सिनम

(DIGITOXINUM)

दूसरा नाम।—डिजिटाक्सिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—यह डिजिटेलिसका एक उपक्षार मात्र है। यह डिजिटेलिससे भी अधिक शक्तिशाली है। सभी चीजें गहरी पीली दिखाई देती हैं और शैम्पेन शराब, सोडा वाटर, लेमोनेड और पानी पीनेसे

बढ़ना, ऐसा मालूम होना कि बेहोश होकर गिर जायगा ; मिचली, वमनसे घटना लक्षणमें इससे विशेष लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—डिजिटेलिस (पीनेपर बढ़ना), डिजिटेलिनम, सिना, सैण्टोनाइन (पीला दिखाई देना) ।

शक्ति ।—६—३० ।

डायस्कोरिया विलोसा

(DIOSCOREA VILLOSA)

दूसरा नाम ।—कालिक रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार हो जाता है । इसका सारांश "डायस्कोरिन" विचूर्ण ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—तलपेट फूला ; कलेजेमें शूल ; विसूचिकाकी तरह उदरामय ; ताण्डव ; सर्दी ; कब्जियत ; शूल ; कास ; अकड़न ; रक्तामाशय ; वाधक ; अजीर्ण ; आध्मान ; अर्श ; सर-दर्द ; पेटमें दर्द ; यकृतकी बीमारी ; कमरका दर्द ; स्नायु-शूल ; कर्णमूल रोग ; पेशाबमें बालू (पथरी) की वजहसे दर्द ; वात ; गृध्रसी ; शुक्रक्षरण ; अंगुलहाड़ा ।

उपयोगिता और आभास ।—जो वृद्ध तथा युवक मनुष्य मन्दाग्निके कारण नाना प्रकारके रोग भोगा करते हैं और भोजनके बाद जिनका पेट फूलता है, खासकर चाय पीनेके कारण जिनकी आँतोंमें शूलका दर्द हुआ करता है, उनके लिये डायस्कोरिया बहुत ही लाभदायक है। इसकी आँतोंके शूलकी प्रकृति इस ढङ्गकी होती है—तलपेट और नाभि-प्रदेशमें मोच खानेकी तरह दर्द, बराबर समयका अन्तर देकर पैदा होता है ; ऐसा मालूम होता है, मानो कोई बलवान पुरुष रोगीकी आँतोंको अपनी मुट्ठीमें कसकर पकड़कर बड़े जोरसे मरोड़ रहा है। यह दर्द सामनेकी ओर झुकने या सोनेपर बढ़ जाता है और सीधे होकर खड़े होनेपर या शरीर पीछेकी ओर झुकानेपर घट जाता है

(कोलोसिन्थके ठीक विपरीत लक्षणमें) ; निद्रित अवस्थामें वीर्यपात हो जाना ; सारी रात स्त्रियोंके सम्बन्धमें सपने देखना ; इन्द्रिय आदि बहुत शिथिल, चित्त हमेशा विमर्ष रहता है और दोनों जाँघें बहुत क्षीण हो जाती हैं । अंगुलहाड़ाकी पहली अवस्थामें जब दर्द बहुत तेज़ और यन्त्रणादायक हो जाता है तथा पहले सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; नख सहजमें ही टूट जाते हैं, जिन्हें अकसर अंगुलहाड़ा हो जाया करता है, उनके लिये यह अत्यन्त उपकारी है (हिप, नेट्र-सल्फ)।

लक्षणावली

मन ।—किसी चीज़को देखनेके समय या किसी व्यक्तिको पुकारनेके समय उसका जो नाम है, वह न पुकारकर दूसरा ही नाम पुकार बैठता है ; पथरी मांगनेके बदले बक्स मांगता है । अपने बन्धु-बान्धवोंसे मिलनेकी इच्छा नहीं करता—अकेला रहना पसन्द करता है (अरम, आर्जेण्ट-नाई, आर्नि, कोका, कोना, जेल्सि, साइकूप्र, कैलि-बाई, कैलि-नाई, सिपि, स्टैन)। वीर्यपतन हो जाने बाद विषन्न चित्त (स्टैफाई)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; चलनेके समय दाहिने पार्श्वमें लुढ़क पड़ता है ; पीछेकी ओर गिर जाना चाहता है (लिडम, रास)। सुस्ती—शय्यापर उठकर बैठनेपर बढ़ जाती है (डिजि) ; अस्वाभाविक इन्द्रिय-सेवनकी वजहसे सरमें चक्कर आना । ऐसा मालूम होता है मानो ब्रह्मतालु उठता जा रहा है, मानो खोपड़ी उड़ जायगी (बैप, ऐकि, कोबाल्ट, नेट्र-म्यूर, कैमो) ; मानो दोनों कनपटियाँ चिमटेसे कसकर पकड़ी हुई हैं (साइकूप्र, साइक्लामिन, मैग-सल्फ, प्लैट, पल्स, स्टैन, सल्फ)। कनपटीमें धीमा-धीमा दर्द होता है, दबानेपर कुछ देरके लिये घट जाता है, परन्तु फिर बढ़ जाता है ; भोजनके बाद बढ़ता है ।

आँख ।—सन्ध्याके समय ऐसा मालूम होता है, मानो आँखोंसे गर्म हवा या गर्म भाफ़ निकल रही है (बेल, डायाडेमा, लैके, मिफाइटिस, मर्क, टैबाक, स्पाई, वेरेट)। आँखमें ऐसा मालूम होता है, मानो छोटी-छोटी खीलोंसे भरी हैं ; सवेरे आँखें सट जाती हैं (युफ्रे, पल्स)।

नाक ।—नासा-रन्ध्रमें बहुत सुरसुरी होती है और बार-बार छींक आती है ; नासारन्ध्र सूख जाता है या उससे पानी गिरा करता है । बैठकर

लिखते-लिखते बाईं नाकसे चमकीले लाल रंगका और इसके बाद काला जमा रक्त-स्राव होता है। नाकमें हमेशा बदबू मालूम होती है। नाकमें बदबू लगातार बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है।

मुख-विवर।—सवेरे जीभ सूखी और अकड़ी हुई। जीभ मोटी भूरी लेप चढ़ी रहती है (बेल, हायो, फास, सैबाई, साइलि, सल्फ़, बार्बेस) और उसके दोनों किनारोंपर जखम हो जाते हैं; भोजनके समय जीभके अगले भागमें जखम मालूम होता है, दोनों पार्श्व ऐसे मालूम होते हैं मानो दग्ध हो गये हैं। जीभको दाँतसे काटता है (इग्ने; चबानेके समय गालके भीतर काट लेता है—कास्टि)। निद्रावस्थामें मुँहसे लार बहा करती है (कैमो)। मुख सूखा और लसदार श्लेष्मासे भरा; प्यासका न रहना (नक्स-मस)। कण्ठके भीतर कुटकुटी और जलन होती है, कण्ठमें सङ्कोचन मालूम होना, मानो गर्दनके चारों ओर कसकर बँधा हुआ है। बार-बार घूंट निगलनेकी इच्छा (अरम, बेल, कास्टि, हिमैटक्स, लैके, मर्क, सैबाड, स्टैफाई), दोनों ही कानकी जड़की गांठोंमें तेज़ दर्द; दर्द बराबर बना रहता है।

पाकस्थली।—खट्टी या तीती डकार। बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु निकलनेपर पेटमें दर्द कुछ देरके लिये घट जाता है। भोजनके बाद जी मिचलाता है, सुस्ती (ऐसिड-फास, सल्फ़, नक्स) और बेचैनी मालूम होना, पाकस्थलीमें जोरकी अकड़न होती है और इसके बाद बराबर डकार आया करती है। बहुत-सा वायु बाहर निकल जाता है; हिचकी आती है और निम्न-द्वारसे भी वायु निकलता है; बार-बार तेज़ दर्दके साथ पाकाशयमें यन्त्रणा; रोगीको बाध्य होकर कमरका कपड़ा ढीला कर देना पड़ता है (ऐमोन-म्यूर, कार्बो-वे, कास्टि, काफि, लैके, लाई, नक्स, स्पिञ्जि)।

अन्त्राशय।—आँतोंमें भयङ्कर शूल, मानो कोई बलवान जीव बड़ी ताक़तके साथ आँतोंको मरोड़ रहा है; ठीक बराबर समयका अन्तर देकर दर्द पैदा होता है; यकृत-प्रदेशमें तीव्र वेदना, ऊपरकी ओरकी दाहिनी स्तन-ग्रन्थितक बड़ी तेजीसे दर्द फैल जाता है, दर्द पित्तकोषसे वक्ष, पीठ और बाँहतक बड़े वेग और असह्य यन्त्रणाजनक भावसे फैलता है। पथरी या मसानेका शूल, ऐंठनकी तरह दर्द (भयानक यन्त्रणा देनेवाला दर्द, रोगीकी देह अकड़ा करती है और रोगी तकलीफ़से गों-गों करता है और चिल्लाया करता है; पेशाबके साथ ईंटके चूरकी तरह बालू मिली रहती है—ओसिमम कैनम; मसानेमें छोटी

सलाइयाँ गड़नेकी तरह दर्द, यह दर्द मूत्रनालीतक फैल जाता है और बार-बार पेशाबका वेग होता है—बार्बेरिस ; रोगी जबतक ठेहुनियाँ टेककर नहीं बैठता, तबतक पेशाब नहीं होता ; पेशाबके साथ गोंदकी तरह श्लेष्मा मिला रहता है और दर्द नीचेकी ओर आकर उरुतक फैल जाता है—पैराइरा-ब्रेवा)। सामनेकी ओर टेढ़े होने या सोनेपर दर्द बढ़ जाता है ; सीधे होकर खड़े होने या पीछेकी ओर टेढ़े होनेपर या चलनेके समय घटता है (कोलोसिन्थके विपरीत)। नाभी-प्रदेशमें ऐसा दर्द, मानो मोच खा गया है। पित्त-पथरी शूलके साथ ऊपर बताये ढङ्गका दर्द (हाइड्रैस, बार्बा, कार्डुयस-मेरी, चायना, कैल्के)। पेटमें कुलकुल-हुड़हुड़ शब्द होता है (ऐलो, ऐण्टि-टार्ट, एपिस, कार्बो-वेज, ग्रैटि, कार्ब, लेपटेन, नेट्र-सल्फ, कैलि, पल्स, सिकेलि, वेरेट) और बहुत अधिक परिमाणमें वायु निकलता है (ऐसिड-कार्ब, कार्बो-वेज, लाई, लेके, आर्जेण्ट-नाई, नक्स-मस, कैल्के-आयोड, कैमो); तलपेट दबानेपर दर्द होता है (एपिस, बेल, कैमो, कूप्रम, हिमैटेक्स, हायो, मर्क, नक्स, पल्स, स्क्वियुला, सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—बवासीर—देखनेमें लाल अंगूरके गुच्छेकी तरह (ऐलो); यकृतमें शूल बेधनेकी तरह तेज़ दर्द। पाखाना होनेके बाद मसा बाहर निकल आता है और मलद्वारमें बहुत तकलीफ़ होती है। पाखाना हो जाने बाद काँच निकलना (Prolapsus ani—बच्चोंकी—फेरम-फास ; उदरामय, उसके साथ ही खूनका स्राव और कूथन—ऐलो ; पाखाना फिरनेके समय थोड़ा भी वेग देनेपर मलद्वार बाहर निकल पड़ता है—इग्ने ; सवेरेके समयके उदरामयके साथ प्रत्येक बार पाखानेका वेग ; जरा भी शरीर हिलाने अथवा छींकनेपर मलद्वार बाहर निकल आता है—पोडो ; पेशाबके समय—ऐसिड-मूरर ; जलन करनेवाला हरे या पीले रङ्गका पतला मल या थोड़ा कड़ा मल और उसके साथ ही बहुत वेग—गैम्बोज)। पाखाना हो जानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो पेट खाली हो गया है और उसमें शूलका दर्द। बहुत बदबूदार वायु निकलना। उदरामय—सवेरे शय्या त्यागकर दौड़ जाना पड़ता है (ऐलो, पोडो, सल्फ)। मलान्त्रमें सुरसुरी होती है (इस्क्वियु, कोलिन)। निकली हुई हवा और वायु गर्म मालूम होती है (कैल्के-फास, कैमो, सिस्टस, मर्क-बाई, फास, पोडो, स्टैफाई, सल्फ, ऐलो, काक्यु)। पाखाना होनेके पहले और पाखाना होनेके समय तलपेट और चूतड़में ऐसा

दर्द, मानो भयङ्कर मरोड़ हो रहा है—यह दर्द ऊपर-नीचे दोनों ओर फैलकर धीरे-धीरे समूची देह यहाँतक कि हाथ-पैरकी अंगुलीतकमें अकड़नकी तरह दर्द पैदा कर देता है और दर्द इतना असह्य हो जाता है कि रोगीको वाध्य होकर चिल्लाना पड़ता है। सवेरे बहुत ज्यादा परिमाणमें पतला और पीले रङ्गका दस्त होनेके बाद रोगी सुस्त हो पड़ता है; परन्तु दर्द कुछ भी नहीं घटता। गर्भावस्थामें पर्यायक्रमसे कब्जियत और पतला पाखाना होता रहता है।

पेशाब।—दाहिनी मूत्रवाहिनी शिराके (Ureter) भीतरसे मूत्र-पथरी निकलनेके समय रोगीको पसीना नहीं होता और खींचनकी तरह दर्दके कारण वह पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाता है। मूत्रनालीका आक्षेपिक संकोचन, इसके साथ ही नाभि-प्रदेशमें दर्द, दबा देनेपर आराम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—जननेन्द्रिय शिथिल और ठण्डी। मसानेमेंसे दर्द बड़े वेगसे अण्डकोषमें फैल जाता है। बार-बार कामकी उत्तेजना और लिङ्गोच्छ्वास होता है। निद्रित अवस्थामें युवतीसे सहवासके सपने देखता है और अनजानमें वीर्यस्खलन हो जाता है (स्टैफि), मानो जानु क्षीण, लिङ्ग आदि शीतल और मानसिक सुस्ती (स्टैफाई)। मुष्कके ऊपर और विटप-देशमें तेज़ गन्ध पैदा हो जाती है (फैगो-पाई, कैलेड, डैफनी, थूजा, साइलि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वाधक या कष्टरजः—जरायुमें रह-रहकर तेज़ दर्द मालूम होता है और दर्द एकाएक शरीरके दूरवर्ती अंशमें दौड़ पड़ता है।

श्वास-यंत्र।—कण्ठनालीके निम्नतम प्रदेशमें सुरसुरी होकर तकलीफ़ देनेवाली खाँसी आती है (लैके, फास; ऊँचे प्रदेशमें—हिप)। नाभि और कपालमें दर्द पैदा करनेवाली खाँसी, इसके साथ ही भूरे रङ्गकी जीभ और जानु क्षीण। हृत्शूल—वक्षोस्थिके पीछेसे बाँहतक दर्द, श्वासकृच्छ्रता और इसके साथ ही हृत्पिण्डकी गतिकी क्षीणता।

प्रत्यङ्ग आदि।—सवेरे कमरमें दर्द होता है और रोगी सुन्न हो जाता है। यकृत-प्रदेशके पीछे इतना दर्द होता है, कि रोगी शय्यापर करवट नहीं बदल सकता; शरीरको हिलानेपर घटना। कमरमें दर्द। बाएँ पृष्ठफलकके नीचे और दाहिने फेफड़ेके बीचमें दर्द। अंगुलहाड़ा—पहली अवस्थामें दर्द सुई बेधनेकी तरह और असह्य तकलीफ़ रहती है; नख सब टूट जाते हैं।

अकसर अंगुलहाड़ा हो जाता है (हिप, नेट्र-सल्फ)। गृध्रसी या पैरके झुनझुनीवाले वातमें (Sciatica) अर्थात् कटिस्नायुके बाहर निकलनेके स्थानसे लेकर समूचे दाहिने पैरमें तेज़ दर्द (कोलोसिन्थ, मैग-फास, नैफिल); केवल यही पैर फैलानेके समय या उठ बैठनेके समय दर्द मालूम होता है।

वृद्धि ।—सामनेकी ओर टेढ़े पड़नेपर, सोनेपर, बैठनेके समय।

घटना ।—शरीर या रोगवाला अङ्ग हिलाने ; पीछेकी ओर टेढ़ा करने ; सीधे होकर खड़े होने या चलनेपर ; बहुत थका रहनेपर भी दर्दको दूर करनेके लिये उसे वाध्य होकर चलना पड़ता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कोलो, मैग-फास, ओसिमम-कैनम, पैरियेरा-ब्रेवा, बार्बेरिस, फास, पोडो, रास, साइलि, स्टैफाई।

तुलनीय ।—नक्स (पाकस्थली); सलफर (तलपेट और मल); सार्सा (पेशाबका लक्षण); नक्स, सलफर (जननेन्द्रियके); साइलिसिया (अंगुलहाड़ा) इत्यादि।

दोषघ्न ।—कैम्फो, कैमोमिला।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रमतक।

डर्का पैलास्ट्रस

(DIRCA PALUSTRIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—शाखाके भीतरकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— शूलका दर्द ; कब्जियत ; खाँसी ; सुस्ती ; अतिसार ; आध्मान ; सर-दर्द ; हृत्शूल ; स्नायुशूल ; वात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—शारीरिक अवसाद, मस्तिष्कमें, देहमें और हाथ-पैरमें स्नायविक दर्द पैदा कर देता है। महात्मा हनिमैनने कच्छु विष नाश करनेवाली (Antipsoric) जितनी दवाएँ गिनायी हैं, उनका अन्यान्य दवाओंसे यही प्रभेद है, कि उनकी क्रिया शरीरके भीतरसे बाहरकी ओर प्रकट होती है ; पर डर्कामें इसके विपरीत होता है अर्थात् इसकी क्रिया बाहरसे भीतरकी ओर होती है। अग्निमान्द्य, पाकाशयमें भार मालूम होना, जीभपर सफेद लेप चढ़ा, वह चिकनी और रससे तर रहती है वगैरह इसके क्रियाफल हैं। उदरमें आध्मान वायुके हिलनेकी वजहसे हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ शब्द होना, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर शूलका दर्द घटना ; उदरामय, कूथन और अन्तमें कब्जियत। छातीमें दबाव मालूम होनेकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी और दर्द मीठा स्वाद मिला कफ़ और हिलने-डोलनेपर हृत्पिण्डमें उत्तेजना मालूम होना। रोगीको रातमें उत्ताप मालूम होना, नींद न आनेके कारण छटपटाना और लगातार मुर्दके सपने देखना (क्रोटेलस-कैन्थ और क्रोटेलस-होरिड), इत्यादि अवस्थायें इस दवाके निर्णायक लक्षण हैं (डा० क्लार्क)।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—रोगी बहुत अन्यमनस्क रहता है (ऐग-कैस्ट, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, चेलिडो, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, नक्स-मस, साइलि) ; बहुत व्यस्त भाव ; उसे ऐसा मालूम होता है, मानो समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा है ; किसी तरह समय नहीं कटता (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाइ, अरम, कैन-इन, कैमो, मिडोरिन, नक्स-वोम, ऐनहैलो ; समय बहुत धीरे-धीरे बीतता है—काक्यु, थिरिड), सरमें चक्कर आना—चलनेके समय (ऐनाक ; आर्नि, ऐसेर, कैनाब-इन, साइक्लूय, नेट्र-म्यूर, ऐसिड-फास, स्पाई, वायोला-ट्राई) रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह बाईं करवट गिर जायगा (बगलमें कतरनेकी सम्भावना—कैनाब-इन, कोना, ड्रोसे, युफोर्बि, मेजेर, रियुम, स्क्युला, जिङ्क)। कनपटीमें दर्द होता है, मानो दर्द भीतरकी ओर जा रहा है, जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है (सिङ्को)। बाईं ओरका सर-दर्द या शिरार्द्ध-शूल—खाँसने या सर हिलानेपर बढ़ जाता है ; ब्रह्मतालु सूखा और उसमें खींचन मालम होती है (ऐगनस, ऐङ्गस, आर्नि, कास्टि, ऐसेर, लैके, मार्क, ओलियैन, रियुटा, स्पाई, क्रोटेल्स)।

पाकाशय और अन्त्राशय।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसी भारी चीज़से दबा हुआ है (एबीज-नाइग्रा, नक्स, ब्राई, पल्स); पेट फूल उठता है और बाएँ कोखमें तेज़ अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है। पेटमें वायु चलनेकी वजहसे इड़-इड़ गुड़-गुड़ शब्द होता है, आँतोंमें दर्द ; सामनेकी ओर झुकनेपर (कोलोसिन्थ, कैस्टर, पोडो, रियुम, कूप्रम) पाखाना होनेके बाद दर्द घट जाता है (कोलो, गैम्बो, नक्स, रास), पर रातमें मलद्वारमें जलन होती है (कैन्थ, लिलियम-टाइग्रि, न्यूफर, साइलि)। तलपेटके नीचे हमेशा गड़बड़ी मालम होनेकी तरह दर्द और दबाव मालूम होता है ; बैठने या सोनेपर घटता नहीं है, सरके दर्दके शान्त होनेपर तलपेटका दर्द भी घट जाता है। मलद्वारमें टपक (लेके) या सुई बेधनेकी तरह दर्द। ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारकी खाल उधड़ गयी है और वहाँ करकराहट होती है। पाखाना हो जाने बाद बढ़ जाता है (कैन्थ, मार्क-बाई, एसिड-म्यूर)। उदरामय कूथन और वेग पैदा करनेवाला। एकाएक (फेरम) पानीकी तरह या पतला पीली आभा लिये पाखाना बड़े वेगसे निकलता है।

श्वास-यन्त्र।—कण्ठनालीमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (एपिस); दर्द बाहरसे भीतरकी ओर फैलता है। खाँसी—सवेरे वृद्धि (एल्यू, कैल्के, युफ्रे, लैके, पल्स, एमोन-कार्ब, क्रोटन ; सेनेगा); कफ़का स्वाद मीठा (फास, प्लम्ब, पल्स, रास, सिपि, स्क्विला, स्टैन) और बदबूदार श्लेष्मामय (कैल्के, कार्बो-वेज, कोना, ड्रोसे, गुयाई, लाई, नेट्रम-कार्ब, सिपि, स्टैन, सल्फ़)। परिश्रम करनेपर बहुत ही अधिक श्वास-कष्ट होता है। दो-एक क़दम ऊपर चढ़नेपर हाँफने लगता है (आर्स, कैल्के-आयोड, मार्क, नक्स, सिपि, स्टैन), थोड़ा भी शरीर हिलानेपर हृत्पिण्डकी गति बढ़ जाती है (ग्रैफ, नैट्र-म्यूर, स्टैफाई) ; थोड़ा भी ऊपर चढ़नेपर कलेजा धड़कना आरम्भ हो जाता है (नैट्रम-कार्ब, बेल, सल्फ़, थूजा)।

निद्रा।—औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती (बेल, कैमो)। लगातार मुर्देके सपने देखा करता है।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर, चलनेपर।

घटना।—दबानेसे, पाखाना होनेके बाद और सामनेकी ओर झुक पड़नेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कैनाबिस इण्डिका (समय नहीं कटता); ऐण्टिम-क्रूड (जीभ); लाइकोपो (कब्जियत); स्टैनम (मीठा कफ़)। आर्जेण्ट-नाई, कैनाब-इन, ऐण्टि-क्रूड, लाई, ऐबिज-नाइग्रा, कोलोसिन्थ, कैस्टोरियम, रियुम, फास, सिपि, स्टैन ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठाँ दशमिक क्रम ।

डालिकस प्रूरियेन्स

(DOLICHOS PRURIENS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अमेरिकामें पैदा हुआ एक तरहका आलकुसी ; इसके समूचे बीजके बाहरी भागसे टिञ्चर या विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— खाँसी ; खुजली ; दाँत निकलना ; दाँतका दर्द ; कामला ; दादकी तरह उद्भेद ; स्नायुशूल ; गलेका जखम ; योनिदेशमें खुजली इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके दाहिनी पार्श्वके साथ इसका बहुत अधिक सम्बन्ध है (चेलिडो, लाई, ब्राई, क्रोटेलस), इसलिये यकृतपर इसकी बहुत अधिक क्रिया होती है । इससे पाण्डु-रोग हुआ करता है, पित्तसञ्चयकी क्रियाके ऊपर इसका अधिकार अधिक रहनेकी वजहसे शरीरकी त्वचापर पित्तविकारके कारण असह्य खुजली पैदा हो जाया करती है, इसपर किसी तरहके दाने या फुन्सियाँ नहीं दिखाई देतीं ; डलिकसका यह एक प्रधान निर्णायक लक्षण है । हनुमें दर्द या कण्ठके स्नायुशूल रोगोंपर इसका एक और भी उत्कृष्ट और अव्यर्थ लक्षण यह है कि कण्ठनालीके मुँहके दाहिनी ओर ऐसा मालूम होता है, मानो एक सीधा कांटा या छोटी खील गड़ रही है । दाँत निकलनेके समय स्नायविक उत्तेजना पैदा हो जाना, थोड़ेमें ही कातर, मसूढ़ा बहुत दर्द-भरा और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता तथा पेटमें भी वायु भरा रहता है ।

मुँहके भीतर ।—ऊपरका मसूढ़ा फूला हुआ और उसमें इतना दर्द होता है कि मुँहमें कोई चबाने और पीनेका पदार्थ रख नहीं सकता । दर्दकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती । दाँत निकलनेके समय बच्चेका मसूढ़ा फूल

उठता है और उसमें शूलकी तरह दर्द होता है, रातमें वृद्धि। गलेके भीतर निचले हनुके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक कांटा या सूक्ष्म शलाका सीधे भावसे गड़ रही है (आर्जेण्ट-नाई, हिप, ऐसिड-नाई); कोई पदार्थ निगलनेके समय यह दर्द बढ़ जाता है।

अन्त्राशय।—मलमें कड़ापनके साथ पेट वायुसे भरा और फूला; वायु-सञ्चालनकी वजहसे पेटमें गड़गड़ाहटकी आवाज़ होती है। दाँत निकलनेवाले बच्चे या गर्भवाली स्त्रीका मलका कड़ापन (कोलिन्सोनिया)। पाण्डु रोगमें मलका रङ्ग सफेद (ऐसिड-बेञ्जो; चेलिडो, सिना, डिजि, डालका, हेलिबो, हिप, आयोड, मार्क, फास, ऐसिड-फास)। यकृतका फूलना (सिङ्को, लोरो, नक्स-मस, कार्डियु-मेरी।

श्वास-यंत्र।—रातमें सोनेपर खाँसी, गलेमें साँय-साँय आवाज़ और श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है।

त्वचा।—समूची त्वचामें भयानक खुजली होती है, रातमें बढ़ जाती है और नींदमें व्याघात होता है; जितना ही खुजलाता है खुजली भी उतनी ही बढ़ती जाती है (ऐनाक, मेजेर, पल्स, खुजलानेके बाद जलन—इयोनिमिन, ग्रैट, क्रियो, लिड, नेट्र-सल्फ); परन्तु किसी तरहकी फुन्सी नहीं दिखाई देती। पित्त पाण्डु रोगमें शरीर बहुत अधिक खुजलाता है और आँखें पीले रङ्गकी दिखाई देती हैं (आर्स, कैन्थ, कैमो, जिङ्क, मैग-म्यूर, फास, मार्क, क्रोटेल, कैलि-बाई)। दद्रु पेटिका या वृत्त (चक्कर) के आकारका विसर्प—चकत्ते (Herpes zoster)—कमरबन्दकी तरह विसर्प, अंग-प्रत्यङ्गको घेरकर निकलता है, विशेषकर हाथ और पैरमें (रासके बाद व्यवहार करना चाहिये), रातमें खुजली असह्य हो उठती है।

सार्वाङ्गिक।—विसर्प आराम हो जाने बाद स्नायुशूल पैदा हो जाता है (जिङ्क, सलफर, प्लैण्टेगो, कैम्फो, एपिस); पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना (ऐगार, इग्ने, जिङ्क, कोडाया)। रह-रहकर—हाथ-पैर जैसे विच्छिप्त हो रहे हों, बेहोशी, आँख खुली और दृष्टि स्थिर रहा करती है (साइक्स), दाँत निकलनेवाले बच्चोंका (बेल, कैमो, सिना, इग्ने, स्ट्रैन)।

सतर्कता।—डा० हेरिङ्ग कहते हैं, कि दाँत निकलनेके समय ज्वरका लक्षण मौजूद रहनेपर, इलिकसका प्रयोग करनेके पहले एक मात्रा

ऐकोनाइट देना न भूलना चाहिये। पूर्वमें यह सतर्कता न रहनेपर यह देखा जाता है कि इसका उच्चतम क्रम प्रयोग करनेपर धनुष्टङ्कार आदि हो जाता है।

वृद्धि।—रातमें सोनेपर, खुजलाने और उत्तापसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—सिना, चेलिडोन, रास, आर्जेण्ट-नाई, हिप, ऐसिड-नाई, कैन्थ, मैग-म्यूर।

दोषघ्न।—ऐकोनाइट।

तुलनीय।—बेलेडोना (दन्तोद्गम); हिपर, ऐसिड-नाइट्रि (गलेमें दर्द)।

शक्ति।—६ठे दशमिकसे २०० शततमिकतक।

डोरिफोरा

(DORYPHORA)

दूसरा नाम।—पोटाटो बग।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—एक तरहका कीड़ा; इससे मूल अर्क और विचूर्ण तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अतिसार; डिफ्थीरिया या उपझिल्लीका प्रदाह; रक्तामाशय; विसर्प; ज्वर; पाकाशयका विकार; प्रमेह; कर्णमूल प्रदाह; सान्निपातिक ज्वर; जखम; मूत्रनालीका प्रदाह; प्लीहामें दर्द।

उपयोगिता और आभास।—कैन्थरिसकी भाँति मूत्रनालीपर ही इसका खास आक्रमण होता है। बच्चोंका मूत्रनाली-प्रदाह (Urethritis) और नये तथा पुराने प्रमेह आदि रोगोंमें इसके द्वारा विशेष लाभ दिखाई देता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—मूर्च्छा आ जानेका उपक्रम, कमजोरी; उठनेकी शक्तिका न रहना, हिमाङ्ग अवस्था (शीत आ जाना); यान्त्रिक क्रियासे अच्छी तरह सुस्ती और हाथ-पैर आदिका काँपना; बोलनेपर

रोगीकी कमजोरी बढ़ जाती है; रक्तकणिकाका बिगड़ना, देहसे निकला हुआ रक्त जमता नहीं है अर्थात् घनीभूत नहीं होता; समूची देह बहुत फूल जाती है और जलनके साथ पैरोंमें सूजन वगैरह। इसके साथ मुँह और गलेके भीतर, अन्ननाली, पाकाशय, उदर, मलान्त्र और मूत्रनालीमें जलन पैदा हो जाया करती है।

लक्षणावली

मन।—तन्द्रालुता और प्रलाप।

आँख।—लाल; कनीनिका फैली।

मुँह और कण्ठ।—जीभ सूखी और भूरा मैल चढ़ी; मुँहका स्वाद बहुत कड़वा; मुँहमें बहुत उत्ताप मालूम होना; चेहरा लाल और फूला मसानेसे मसानेके अन्दरतक तेज़ दर्द, पेशाब रुकने और मलमें कड़ापनके साथ कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह। कण्ठ सूखा मालूम होता है और बार-बार निगलनेकी इच्छा होती है। कण्ठनालीसे लेकर अन्ननलीतक जलन होती है, पेटमें दर्द होता है और खाँसी आती है।

पाकस्थली।—अरुचि और प्यासकी अधिकता; खट्टी चीज़ खानेकी इच्छा; धूम्रपानसे सब लक्षणोंकी वृद्धि होती है। मिचली और वमन—काली आभा लिये, गाढ़ा, जमे हुए गोंदकी तरह कसैले स्वाद मिले पदार्थकी कै होती है। प्लीहामें दर्द मालूम होता है (सियैनो)। तलपेटमें दर्द होता है; खाने-पीने और दीर्घ निश्वास लेनेपर दर्द बढ़ जाता है। तलपेटमें बहुत भार मालूम होता है और दर्द होता है। तलपेटमें दर्द और इसके साथ ही मलान्त्रमें जलन। सवेरेके समय उदरामय। मल खून-मिला और गोंदकी तरह। पेशाब रुकना। मूत्रकृच्छ्रता और मूत्रनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गमुण्ड फूला, नीली आभा लिये लाल और उसमें सुरसुरी तथा जलन होती है; असह्य दर्दके साथ मूत्रनालीका प्रदाह, विशेषकर पेशाबके समय।

वृद्धि।—शरीर सञ्चालनसे, धूम्रपान करनेपर और गर्म घरमें।

उपशम।—निर्मल वायु सेवनसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐगार, एपिस, कैन्थ, लेके इत्यादि।

दोषघ्न।—ष्ट्रैमो—उद्भिदकी खटाई।

शक्ति।—६ठे शततमिकसे ३० शततमिकतक।

ड्रोसेरा रोटण्डिफोलिया।

(DROSERA ROTUNDIFOLIA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—क्षीण-दृष्टि; दमा; श्वासनालीका प्रदाह; सर्दी; क्षयकास; मृगी; रक्तस्राव; सर-दर्द; स्वरनालीका प्रदाह; खसड़ा; मिचली; गठिया; वमन; हूप खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—(१) हूप खाँसी—आधी रातके बाद बढ़ना; वायुनलीके भीतर वक्षमें और कोखमें सङ्कोचन मालूम होना, इसके साथ ही पानी आदि पीनेपर खाँसीका बढ़ जाना; खाँसते-खाँसते पहले खाई हुई चीज़, इसके बाद श्लेष्माकी कै हो जाती है। (२) वक्ताओंके गलेका जखम, इसके साथ ही वायुनलीमें सङ्कोचन और चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होती है; उत्तापसे और सोनेके बाद खाँसी बढ़ जाती है। (३) प्रायः प्रति चार घण्टेके बाद खाँसीका भयङ्कर प्रकोप पैदा हो जाता है। गहरी टूटी हुई आवाज़ और घड़घड़ शब्द करनेवाली श्वास-रोधक खाँसी। (४) बच्चोंकी वायुनलीमें बराबर सुरसुरी होकर खाँसी आती है—रातमें बच्चेका माथा तकियेसे छू जाते ही खाँसी आरम्भ हो जाती है (बेल, क्रोटन, हायो, रियुमेक्स)। (५) यक्ष्मा-रोगग्रस्त रोगियोंकी रातमें आनेवाली खाँसी। इसके साथ ही खून या पीब-मिला कफ़ निकलना। (६) सेंकने, पानी आदि पीने, गाने, रोने तथा सोनेपर और आधी रातके बाद खाँसी बढ़ जाती है। (७) वायुनलीमें मानो पर फँसा है, ऐसा अनुभव होनेके साथ खाँसी। [८) हूप खाँसीके बाद वायुनलीगत क्षय-कास (Laryngeal

Phthisis—बहुव्यापी खाँसीके बाद वायुनलीभुजके भीतर प्रवेश की हुई सर्दी—कक्कस-कैक)। (९) खाँसते-खाँसते पानीकी तरह या श्लेष्मामय वमन और कभी-कभी नाक या मुँहसे चमकीला खून या खून-मिला स्राव होता है (कूप्रम)। (१०) गृध्रसी या उरुके पीछेका स्नायुशूल (Sciatica)—दबाने या शरीरको सामनेकी ओर झुकानेपर या दर्दवाला अंश दबाकर सोनेपर दर्द बढ़ जाता है और शय्यासे उठनेपर घट जाता है। (११) बहुव्यापी हूप खाँसीके समय खसड़ा निकलता है—कुटकुटी होती है, जलन होती है, सुरसुरी होती है और शरीरका वस्त्र उतारनेपर खुजली बढ़ जाती है ; खुजलानेपर घटती है।

लक्षणावली

मन।—मानसिक अस्थिरता, इसीलिये किसी एक विषयपर अधिक देरतक मनोयोग नहीं लगा सकता (रास)। उत्ताप पैदा हो जानेके साथ ही मानसिक उद्वेग, विशेषकर सन्ध्याके समय अकेले रहनेपर या रातमें नींद खुलनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो उसका मन उसे पानीमें डूबकर आत्महत्या करनेके लिये उकसा रहा है (ऐण्टि-क्रूड, बेल, रास, सिकेलि, साइलि)। अपना संकल्प पूर्ण करनेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञा ; सामान्य कारणसे ही रोगी बहुत विचलित हो पड़ता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ऐम्ब्रा, ऐङ्गस, आर्स, कैल्के, मर्क, नक्स, रियुटा, पल्स, सिपि, सल्फ, साइक्लामिन) और बाईं ओर गिर जानेकी सम्भावना हो जाती है (बेल, डार्का)। ललाटमें मानो भीतरसे बाहरकी ओर कोई छोटी हथौड़ीसे आघात कर रहा है।

आँख।—दूर-दृष्टि (Presbyopia—साइलि, सल्फ) ; दूरकी चीज़ देखता है, पर किताब नहीं पढ़ सकता या पासकी चीज़ धुँधली दिखाई देती हैं। क्षीण दृष्टि—छोटी चीजें नहीं देख सकता ; आँखके सामने मानो पतला पर्दा पड़ा है—रोगीको ऐसा ही मालूम होता है (क्रोकस, हिमैटक्स, पेट्रोल, फास, सल्फ) ; पढ़नेके समय अक्षर-से-अक्षर मिल जाते हैं (डेफना, जिनसेङ्ग, लैके, लाई, मिफाइटिस, नेट्र-म्यूर, साइलि)।

कान ।—निगलनेके समय कानमें तेज़ दर्द (ऐनाक, बोवि, मैङ्ग)। कानमें भों-भों सों-सों शब्द और श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी (बेल, कास्टि, कैमो, डैफनी, ऐसिड-नाई, ग्रैफ, कैल्के, कास्टि, फास, सिङ्को)।

मुखमण्डल ।—चेहरा फूला और नीला (फेरम-ऐसेट, रैफेनस), गाल और दोनों आँखें गड़हेमें धँसी (सिङ्को, किनन-सल्फ, रैफेनस, ओपि, स्टैन)। दाहिने आधे स्थानमें गर्मी और डङ्क मारनेकी तरह दर्द और बाएँ आधे भागमें शीत मालूम होना (एक गाल गर्म और लाल, दूसरा मलिन और ठण्डा—कैमो)। मुँह गर्म, पर दोनों हाथ ठण्डे। सुई बेधनेकी तरह दर्द पैदा करनेवाली पीव-भरी फुन्सियाँ (Pustules—आर्नि, बेल, कैल्के-फास, क्रियो, ऐसिड-नाई, क्रोटेल)। जीभके अगले भागमें सफेद आभा लिये जखम (ऐपिस, ऐमोन-कास्टि, ऐमोन-मूर, कैलि-आयोड, लाई, चायना, इग्नि)। खाँसते-खाँसते मुँहसे खून-भरी लार या केवल खून ही निकल पड़ता है (आर्नि, बेल, कार्बो-वे, फेरम, इपिक, लेके, मार्क, नक्स, ओपि, रास)।

गलेके भीतर ।—वक्ताओंके कण्ठका जखम—जिह्वामूलके दोनों ओरके गह्वरके गभीरतम-प्रदेशमें रुखड़ापन, सूखापन और त्वचा खरोंच लेनेकी तरह मालूम होना (Scraping —ऐमोन-कार्ब, आर्स, कार्बो-वेज, हिप, नक्स, ओलि-यैन, फास, पल्स, स्टैन) ; स्वर-भङ्ग, बात मानो किसी हाँड़ीके भीतरसे निकल रही है। स्वर-रहित, बोलनेमें परिश्रम मालूम होता है (अरम, स्टैन)। चबानेके पदार्थ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है मानो गलनाली पतली हो गयी है, मानो गलेमें रोटीका टुकड़ा अटक गया है। खाँसनेपर पीला या कुछ हरी आभा लिये कफ़ निकलता है।

पाकस्थली आदि ।—डकारका स्वाद तीता (ब्राई)। मुँहमें पानी आना (ऐम्ब्रा, ऐमोन-कार्ब, कैप्स, क्रोक, डैफनी, आयोड, लाई, नैट्र-मूर, नक्स-वोम, सैबाड, सल्फ); खाँसते-खाँसते गोंदकी तरह पदार्थ या खाये हुए पदार्थ आदिका वमन हो जाता है। खाँसनेके समय कोखमें दर्द होता है ; रोगी दर्द न हो इसलिये दोनों कोखोंको दोनों हाथोंसे दबा रखता है।

श्वास-यन्त्र ।—हूप खाँसी—बहुत, प्रचण्ड प्रकोप या वेग, ऊपरके ऊपर इतनी जल्दी-जल्दी प्रकोपका आविर्भाव होता है कि रोगिनीको श्वास

लेने या छोड़नेका समय नहीं मिलता (खाँसते-खाँसते सवेरे ६ से ७ बजेके भीतर जाग उठता है और जबतक बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा नहीं निकल जाता, तबतक लगातार खाँसा ही करता है—कक्कस-कैक ; प्रत्येक प्रकोपके समय नाकसे खून निकलता है—इण्डिगो ; दिनमें थोड़े समयका अन्तर देकर ऊपरके ऊपर खुसखुसी खाँसी आया करती है और रातमें क्रुप शब्द करनेवाली खाँसी होती है—कोरैल-रूब)। भग्न-स्वरवाली घड़घड़ाहट मिली खाँसी (बार्बस), आधी रातके बाद या खसड़ा निकलनेके समय या पहले बढ़ जाती है—रह-रहकर उसका प्रकोप पैदा हो जाता है। खाँसते-खाँसते मानो गला रुक जाता है, हिचकी आती है और फिर कै हो जाती है (ब्राई, कैलि-कार्ब)। बच्चोंके गलेमें या वायुनलीमें सुरसुरी होकर लगातार खाँसी आया करती है—बच्चेका माथा तकियेसे लगते ही खाँसी आने लगती है (बेल, क्रोटन, हायो, रियुमिक्स)। क्षयकास रोगग्रस्त युवकोंको रातमें खाँसी आती है—खून मिली रहती है (ऐको, आर्नि, बेल, ब्राई, कार्बो-वेज, चायना, डालका, फेर, इपिक, लैके, नक्स, ओपि, रास, पल्स, ऐकालिफा, साइलि, सल्फ) या पीबकी तरह (कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, चायना, कैलि-कार्ब, लाई, ऐसिड-नाई, फास, प्लम्ब, साइलि, सिपि)। कफ निकलता है। खाँसीका बढ़ना—उत्तापसे, पानी आदि पीनेपर (आर्नि, ब्राई, हिप, मिफाइट, लैके, लाई, फास, चायना)। गानेपर (स्टैन); हँसनेपर (चायना, फास, स्टैन); रोनेपर, सोनेपर (आर्स, कैलि-बाई, ऐ-नाई पैरिस, फास, सिपि, साइलि, टैरिव); आधी रातके बाद (ऐको, बेल, ब्राई, कैमो, हायो, ऐण्टि-टार्ट, रास-रैड)। खाँसीके प्रकोपके समय पानी, श्लेष्मा या खाया हुआ पदार्थ आदिका वमन और कभी नाक या मुँहसे खून निकला करता है (आर्नि, क्युप्रम)। कण्ठके भीतर कोमल परका एक टुकड़ा अड़ा रहनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे खाँसी आना (ऐमोन-कार्ब, कैल्के, इग्ने)। क्रुप खाँसी अच्छी होनेपर स्वरनालीमें क्षयकास (वायुनली-भुज-गत सर्दी—कक्कस-कैक)।

प्रत्यङ्ग आदि।—रातमें दोनों बाहुओंकी हड्डीमें दर्द होता है और दिनमें हाथ हिलानेपर दर्द घटता है। पुट्ठेमें दर्द और गृध्रसी या कटि-स्नायुशूल, दर्द दबावकी तरह ; दबाने, झुकने या रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर बढ़ जाता है और शय्यासे उठनेके बाद घट जाता है।

सम्बन्ध।—अनुपूरक—नक्स-वोमिका। सैम्बुकस, सलफर और वेरेटके बाद व्यवहार करनेपर खासा फायदा होता है। ड्रोसेराके बाद कैल्केरिया, पलसेटिला और सलफर बहुत लाभदायक हैं।

सदृश।—कोरैल-रूब, सिना, क्यूप्रम, कक्कस-कैक, मिफाइटिस, ड्राइफोलियम, प्लैट, इपिका, सैम्बियु।

दोषघ्न।—कैम्फर।

सतर्कता।—ड्रोसेराका ऊँचा क्रम बार-बार प्रयोग करनेपर फायदा होनेके बदले नुकसान होता है। डा० हेरिङ्ग कहते हैं कि ड्रोसेरा प्रयोगके अन्तरके समयमें सलफर और विरेट्रमका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है। यक्ष्मा-कास रोगमें रातमें आनेवाली खाँसीमें ड्रोसेराके बाद कोनायमका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

शक्ति।—१ले दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—२० से ३० दिन।

ड्यूबोइसिनम

(DUBOISINUM)

दूसरा नाम।—कार्क-उड-ट्री।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके पत्तेके रसके सारांशसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—प्रलाप; औंघाई; आँखकी पुतलीका फैलना; गति-शक्तिका पक्षाघात; दूर-दृष्टि; गलेमें सूखापन; सरमें चक्कर आना; दृष्टि-विभ्रम।

उपयोगिता और आभास।—आँखोंपर इसकी प्रधान क्रिया है। यह आँखकी पुतलीको फैला देता है, मुँहमें सूखापन उत्पन्न करता है और पसीना रुकना, सर-दर्द और निद्रालुता उत्पन्न कर दिया करता है। ऐट्रोपाइनकी

अपेक्षा आँखोंपर इसकी क्रिया अधिक दिखाई देती है। आँखकी पुतली फैलनेके सम्बन्धमें ऐट्रोपाइनकी अपेक्षा इसकी शक्ति अधिक है। गाढ़े गोंदकी तरह काली आभा लिये श्लेष्मा निकलनेके साथ-ही-साथ शुष्क गलकोष-प्रदाह (Pharyngitis) में यह बहुत लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं—"नज़रोंके सामने मानो एक लाल बिन्दु उड़ रहा है" "आँखोंमें शीतलता मालूम होना" "मानो शून्यमें पैर रख रहा है"—दोनों आँखें और जीभ बड़ी हो गयी है ऐसा ही मालूम होता है और आँखें बन्दकर खड़ा नहीं रह सकता।

लक्षणावली

मन।—शय्यासे उठकर चले जानेकी चेष्टा करता है (ऐगार, रास, वेरेट-विर)। मोहाच्छन्न भाव, प्रश्न करनेपर जवाब तो देता है, पर बड़े कष्टसे (प्रश्नका उत्तर पूरा करता-न-करता सो जाता है—बैप ; बुद्धि जड़ता-भरी, परन्तु प्रश्न करनेपर सम्बद्ध उत्तर देता है—कोलचि, कानवे, काक्यु, आइरिस-वार्स, प्लम्ब, टिलिया-ट्रिफोल ; अचेतन्य अवस्था, प्रश्न करनेपर पूरा-पूरा जवाब देनेके बाद फिर बेहोश-सा हो जाता है—ऐसिड-फास, आर्नि)। रोगी अपने चारों ओरके पदार्थ पकड़नेकी चेष्टा करता है ; शय्या नोचा करता है (आर्नि, बेल, हेलिबो, हायो, जिङ्कम-मूर), पीछेकी ओर और शय्याके नीचे सन्दिग्ध भावसे देखता है, अकेला रहनेपर क्षणभरमें घरकी सारी चीजें इधर-उधर फेंककर विशृंखल बना देता है। अदृश्य व्यक्तिकी ओर हाथ बढ़ा देता है। किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यु, ऐवेना-सैट, लैक-कैन, मिलिलोट, ऐसिड-फास, स्कूटेल)। अपने मनोभाव प्रकट नहीं कर सकता (कोना)।

मस्तक।—माथा बहुत छोटा मालम होता है (स्ट्रैमो)। सरमें चक्कर आना, उठकर खड़े होनेपर (ऐको, ऐसेर, ब्राई, लोरो, पेट्रोल, पल्स, सैबाड, कैलि-बाई, थूजा) या चलनेके समय (ऐनाक, ऐसेर, कैनाब, कार्बो-वेज, साइक्यू, नेट्र-मूर, ऐसिड-फास, स्पाई); पीछेकी ओर गिर जानेकी अत्यन्त सम्भावना पैदा हो जाती है (लिडम, रास), विशेषकर सीढ़ी चढ़नेके समय (कैल्के, सल्फ); आँख बन्दकर बिलकुल ही खड़ा नहीं रह सकता—आँख बन्दकर एक क़दम भी चल नहीं सकता (ऐल्यूमिना, आर्जेण्ट-नाई, फाइजस)।

आँख।—आँखकी पुतली बहुत फैली। आँखमें ठण्डक मालूम होना (ऐमोन-कार्ब, ऐसाफ, कैल्के, कोना, लाई, प्लैट), पढ़नेके समय जितनी ही बार पुस्तकसे आँख हटाता है, उतनी ही बार आँखके ऊपरी अंशसे ललाटतक सर-दर्दकी तरह दर्द पैदा हो जाता है; ऐसा मालूम होता है कि आँखका आयतन बढ़ गया है और आँख बाहर निकल पड़ती है। अपने चारों ओरके मनुष्योंका गाल गड्ढेमें धँसा मालूम होता है। भ्रम देखना—यह समझता है, कि कुर्सीपर बैठ रहे हैं, पर जमीनमें बैठ जाता है। यह समझकर कि टेबिलपर गिलास रख रहा हूँ, शून्यमें छोड़ देता है, दिनमें चारों ओर अंधेरा समझता है। दो फीट दूरके छपे अक्षर पढ़ नहीं सकता और वे अक्षर कितने ही रङ्गके दिखाई देते हैं। ऐसा मालूम होता है, कि नज़रके सामने एक लाल बिन्दु दृष्टि-सञ्चालनके साथ ही उड़ा फिरता है। पुस्तक आदि चाहे कितनी ही पास और दूर क्यों न हो, रोगी उसे पढ़ नहीं सकता या खानेकी चीज़की ओर देख नहीं सकता, क्योंकि इससे आँखमें दर्द होता है। आँखोंका मुकुर या चित्र-पत्र (Retina) में रक्त अधिक एकत्र हो जानेकी वजहसे आँखोंका प्रदाह—यह नया हो पुराना—अक्षिगोलकके नीचेका भाग लाल, शिराएँ खून-भरी और टेढ़ी-मेढ़ी, आँखकी पुतली फैली और दृष्टि अस्पष्ट। आँखके ऊपर अर्थात् चक्षु-गोलक और भौंहोंके बीचमें बहुत दर्द होता है।

मुँह और गलेके भीतर।—जीभ इतनी फूली रहती है, कि ऐसा मालूम होता है, मानो वह मुँहमें नहीं अँटती (क्रोटेल, हेरिड) और बोलनेमें गड़बड़ी पैदा कर देती है (डाल्का)। मुँह और कण्ठ इतना सूख जाता है कि रोगीको बोलनेमें तकलीफ़ होती है। गलकोष-प्रदाह—कण्ठ सूखा, लाल और शिराएँ सब खूनसे भरीं; बहुत अधिक सूखेपनकी वजहसे कोषाणु (Follicles) सब उठ जाते हैं और स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं; उपजिह्वा भी रक्तसे भरी रहती है, स्वरनलीका मुँह सूखा और जगह-जगह गाढ़े गोंदकी तरह या काले रङ्गका आधा साफ़ श्लेष्मा लगा रहता है। बार-बार गला साफ़ करनेकी इच्छा; निगलनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। दोनों वायुनलीभुजके सङ्गम-स्थानपर सुरसुरी होकर तर खाँसी आती है।

श्वास-यन्त्र।—श्वास-कृच्छ्रताकी वजहसे भयानक यन्त्रणा और ऐसा मालूम होता है, कि मृत्यु पास आ गई (ऐकी, लैके, कैक्ट)। उठ बैठनेपर नाड़ीकी गति धीर हो जाती है और सोनेपर तेज़।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बायाँ पैर सुन्न और दाहिना अकड़ा हुआ। रह-रहकर दोनों बाँह शरीरसे दूर जा गिरते हैं। निम्नाङ्ग बहुत कमजोर, उसे हिला-डुला नहीं सकता; रोगी चलनेके समय मतवालेकी तरह ढलमलाया करता है (ऐगार, कास्टि, आयोड, ऐसिड-म्यूर, ऐल्थ, रियुटा, सिकेलि, स्ट्रैमो, सल्फ, एसिड-पिक, एसिड-फ्लु, हेलोडर्मा, ऐल्यूमिन, लाई, अरम, इग्ने)। सीढ़ी उतरनेके समय प्रत्येक क़दमपर कमरमें धक्का लगता है, मानो बहुत ऊँची जगहसे उतर रहा है या मानो शून्यमें चल रहा है (मानो रूईपर पैर रखता है—ऐल्यूमिना)। अङ्ग-प्रत्यङ्ग काँपते हैं। आँख बन्दकर बिलकुल ही खड़ा नहीं रह सकता (आँखें बन्दकर या अन्धकारमें एक कदम भी नहीं चल सकता, ढुलक पड़ता है—ऐल्यमिना, आर्जेण्ट-नाई)। मेरुमज्जाके क्षय हो जानेकी वजहसे चलनेकी शक्ति न रहना (Locomotor Ataxia)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐनहैलोनियम (वर्ण-विभ्रम), ऐल्यमिन, आर्जेण्ट-नाई, ऐट्रोपिनम, डाल्का, स्टैनम।

दोषघ्न ।—काफिया।

शक्ति ।—३रे दशमिक क्रमसे ६ठाँ दशमिक क्रमतक।

डल्कामारा

(DULCAMARA FLEXUOSA)

दूसरा नाम ।—बिटर स्वीट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल निकलनेके पहले नयी पत्तियोंसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—ग्रन्थि-प्रदाह; गलकोषका प्रदाह; स्वरभङ्ग; मूत्रस्थलीकी बीमारियाँ; सर्दी; विसूचिका; दुधिया पपड़ी जमना; अतिसार; शोथ; रक्तामाशय; दुबलापन; रक्तस्राव; बवासीर; सर-दर्द; दादकी तरह उद्भेद; उत्तेजना; व्रण या नाना प्रकारकी खुजलानेवाली फुन्सियाँ निकलना; कटिवात; खसड़ा; मस्तिष्कावरण-

प्रदाह ; पक्षाघात ; वात ; आरक्त ज्वर ; गण्डमाला ; तोतलाना ; गर्दन अकड़ना ; प्यास ; जीभकी बीमारियाँ ; कर्णमूल-प्रदाह ; अर्बुद ; सान्निपातिक ज्वर ; पेशाब रोकनेमें तकलीफ़ ; मसे ; हूप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—श्लेष्मा-प्रधान और जिनकी गांठें बढ़ जाती हैं, ऐसी धातुवाली, बेचैन और उग्र प्रकृति ; ठण्डसे जिनकी बीमारी बढ़ जाती है वगैरह मनुष्योंके लिये उपयोगी है। इसके और भी कई निर्णायक लक्षण नीचे लिखे जाते हैं :—(१) सभी श्लैष्मिक-झिल्लियाँ रक्तसे परिपूर्ण रहा करती हैं, बहुत सर्दी लग जानेपर ऐसा हो जाता है ; तर सीड़भरी नीची जमीनमें रहनेकी वजहसे सर्दीसे उत्पन्न बीमारियाँ, नाकसे बहुत अधिक पानीकी तरह स्राव होता है, विश्रामसे घटता है। (२) गीली मिट्टी या जलीय वायु लगनेकी वजहसे उदरामय। (३) आमवात—बहुत खुजली होती है और खुजलानेके बाद जलन पैदा हो जाती है (क्रोटन), यह गर्मीसे पैदा होता है और ठण्डेसे गायब हो जाता है ; इसके साथ ही पाकाशयिक और आन्त्रिक ज्वर (Enteric fever)। मानसिक जड़ता ; बातचीत करनेके समय मनोभाव प्रकट करने योग्य शब्द नहीं मिलते। (५) ठण्डा लगनेपर पेटमें दर्द होता है और मानो उदरामय होनेका उपक्रम हो जाता है। (६) ऋतुके पहले शरीरसे आमवात निकल आता है (कोना)। जो सब साधारणतः पानीसे तर, नीची भूमिमें, मकानके निचले तलेमें या गोशालामें वास करते हैं या जिन्हें कामकी वजहसे ऐसे ही स्थानपर रहना पड़ता है, उनकी बीमारीमें डलकामारा मन्त्रकी तरह काम किया करता है। सविराम ज्वर, वातका दर्द या विशेषकर आरक्त ज्वरमें सारे शरीरमें शोथ या पसीना रुकना, उद्भेद बैठ जाना या ठण्ड लगकर उदरी रोग हो जानेपर भी यह लाभ किया करता है। खुले पैर पानीमें घूमनेकी वजहसे वयस्क बालक-बालिकाओंके दूधकी तरह पेशाब और सर्दीसे उत्पन्न मूत्रकृच्छ्रता या मूत्ररोध रोगमें भी डलकामाराका प्रयोग होता है।

लक्षणावली

मन ।—अव्यवस्थित चित्त ; बोलनेके समय मनोभाव प्रकट करने योग्य वाक्य याद नहीं आते (ऐगार, ऐल्य, कैल्के, आर्जेण्ट-नाई, कैमो, लाई, नक्स-मस, ऐसिड-फास, सल्फ़, थूजा ; लिखनेके समय समूचा वाक्य छोड़ देता है—ऐसिड-बेन, रोडो ; असम्बद्ध वाक्य व्यवहार करता है—ऐल्य, चायना,

बोलता-बोलता भूल जाता है, कि वह क्या कर रहा था—बैराई-कार्ब ; राम लिखना होता है, तो श्याम लिखता है—कैल्के-कार्ब), किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यू, ऐनाक, ऐसिड-फास)। रोगका कारण न होनेपर भी तिरस्कार करता या गाली देना पसन्द करता है (ऐनाक)। कितनी ही चीजें मांगता है, परन्तु देनेपर लेना नहीं चाहता, फेंक देता है (ऐण्टि-टार्ट, ब्राई, कैमो, सिना, रियुम)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सवेरे नींद खुलनेपर (कोना, ग्रैफ, लैके) या शय्यासे उठनेके समय (बेल, कैमो, ग्रैनेट, ग्राफ, मैग-म्यूर, निकोल, फास, कैलि-बाई, पल्स, रास, रियुटा, सिपि) और इसीलिये रोगी अपने चारों ओर अन्धकार देखता है (ऐको, आर्जेण्ट, कार्बो-वे, कैमो, हायो, लारो, मार्क, नक्स-वोम, फाइटो, स्ट्रैमोन, जिङ्कम)। माथेमें हलका दबाव मालूम होता है, मानो ललाटपर एक मोटा काठका टुकड़ा कसा हुआ है—काकु-इन, रास, नक्स)। सरमें दर्द, मानो ललाट और कनपटीमें कोई छेद या खोद रहा है—इस ढंगका दर्द (दाहिने पार्श्वमें—बेल), आधी रातके पहले और स्थिर होकर सोये रहनेपर यह दर्द बढ़ जाता है और बात करनेपर घटता है। ललाटमें मानो भीतरसे गड़हा खोदा जा रहा है—इस तरहका दर्द और ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क बहुत बड़ा हो गया है (मानो माथा बहुत बड़ा—आर्जेण्ट-नाई, ग्लोन, लैक्टियु, नक्स); 'सन्ध्यासे लेकर दोपहरतक और शरीर ठण्डा होनेपर बढ़ जाता है और सोनेके समय घट जाता है, सरके पिछले भागमें बेहोश कर देनेवाला दर्द, दर्द गर्दनके पीछेवाले भागसे आरम्भ होता है। सरके पिछले भागमें अस्वाच्छन्द्य पैदा करनेवाली ठण्डक मालूम होती है और इस स्थानके केश अब सिहरावनके कारण उठ खड़े होते हैं, ऐसा मालूम होना। बच्चोंके माथेमें दूधिया फोड़े पैदा हो जाते हैं, खोपड़ी, ललाट, मुख, कनपटी और चिबुकके ऊपर मोटा पीले रङ्गका पीला भूरा फटा घाव और उसके चारों ओर लाली पैदा हो जाती है। खुजलानेपर खून निकलता है।

आँख।—पढ़नेके समय आँखमें दर्द होता है (ऐसिट, बार्बा, कैल्के, सिना, सैण्टोनिन, कोना, क्रोकस, कैलि-कार्ब, नैट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, सेनेगा, ऐसिड-सल्फ, रियुटा), घरमें रहने या धूपमें चलनेके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो आँखसे आग निकल रही है। सर्दी लग जानेकी वजहसे आँखका प्रदाह ;

दृष्टिके सामने उड़ती हुई आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं (अरम, बेल, कास्टि, डिजि, कैलि-क्लो, लैके, मार्क, क्युप्रम, आर्स, नेट्र-मूर, नक्स, ओपि, फास, स्टैफि, वैलि, वेरेट)। तिमिर दृष्टि, मानो सभी चीजें अंधकारमें ढकी हुई हैं ऐसा दिखाई देता है (बेल, कैल्के, डिजि, हायोस, इग्ने, मार्क, फेलैन, प्लम्ब, रियुटा, सिकेलि)।

मुख और गलेके भीतर।—मुँहका स्नायुशूल, गालमें छेदनेकी तरह दर्द (कास्टि); अक्षिगह्वर और हनुतक यह दर्द फैल जाता है, दर्दके पहले रोगवाली जगह ठण्डी मालूम होती है। लार बहना (बेल, कैल्के, कैन्थ, सिनाबेरिस, कोलचि, युफोर्ब, लैके, मार्क-कोर, ऐसिड-नाई, पल्स, पोडो, सल्फ, ऐसिड-सल्फ, वेरेट); लार गोंद या साबुनके फेनकी तरह (ब्राई)। जीभ सूखी और रुखड़ी, बहुत लार गिरती है और प्यास बहुत अधिक रहती है। जीभ गाढ़ी श्लेष्मासे ढकी। जीभ बहुत फूली, बोलने और श्वास-प्रश्वासमें व्याघात पैदा करनेवाली (ड्युबोसिन)। मसूढ़े सब दाँतसे अलग हो जाते हैं और उनपर सफेद लेप चढ़ी रहती है। जीभ सुन्न (बैराई, हायो), खासकर सर्दी लग जानेपर (कास्टि, जेल्स देखिये)। निचले हनुकी नीचेवाली ग्रन्थियोंका फूलना। मुख-भङ्गी बिगड़ी हुई, एक ओर खिंची रहती है। सर्दी लगनेकी वजहसे गलेका जखम (कैमो, मार्क), ऐसा मालूम होता है मानो अलिजिह्वा फूल गयी है। मुखका जखम और पारेका अपव्यवहार तथा श्लेष्मासे पैदा हुई लारका स्राव और गलेकी ग्रन्थिका फूलना। मुँहका स्नायुशूल, ठण्ड लगनेसे ही पैदा हो जाता है।

पाकाशय।—मुँहका स्वाद तीता; ज्वरकी उत्तापावस्थामें भूख लगना (चायना, सिना, फास)। क्षुधा बहुत अधिक, परन्तु अरुचि (नेट्र-मूर, ओपि, रास, साइलि, ऐसिड-सल्फ)। मिचली और गाढ़े गोंदकी तरह सफेद रङ्गका श्लेष्मा वमन होता है। थोड़ा खानेपर भी पेट फूलने लगता है (लाई)। छातीमें जलन होती है (आर्जेण्ट-नाई, नक्स); मुँहके स्नायुशूलके बाद भयंकर भूख पैदा हो जाती है। ठण्डा पानी पीनेके लिये ज्वालामयी तृष्णा। ऊपरी पेटका संकोचन और उसमें तेज़ जलन मालूम होना। वमनके समय जाड़ा लगना, ऊपरी पेटमें भार और निचला पेट खाली मालूम होना। पाखानेका वेग होनेपर जी मिचलाने लगता है।

अन्त्राशय।—रातमें नाभीके पास सलाई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द या छेदनेकी तरह दर्द। सर्दी लग जानेकी वजहसे आँतोंका शूल, ऐसा मालूम होता है, मानो पतले दस्त आयेंगे। पुट्ठेकी गांठें (Iugunial glands) फूल उठती हैं (मार्क)। उदरी ; पसीना रुकना, उद्भेद बैठ जाना या सर्दी लगनेकी वजहसे उदरमें शोथ।

मल।—उदरामय—भींजी जमीनमें रहनेकी वजहसे ठण्ढ लगकर या तर तूफानी हवा या एकाएक ठण्डी हवा (ब्राई) लग जानेके कारण उदरामय, मल आँव मिला पानीकी तरह या सफेद आभा लिये (डरकी वजहसे उत्पन्न—जेल्सि, ओपि ; मैला पानी पीनेके कारण—जिङ्कि ; चूना मिला पानी पीनेके कारण—कैम्फो) ; पेटमें दर्द और उदरामय—मल पानीकी तरह, विशेषकर गर्मीके दिनोंमें जब हवा एकाएक ठण्डी हो जाती है (ग्रीष्म-कालमें ठण्डा पानी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आने लगना—ब्राई)। उद्भेद बैठ जाना (ब्राई) या सर्दी लगनेके कारण और दाँत निकलनेके समय उदरामय। पुराना उदरामय, मल खून-मिला और मलद्वारमें जलन।

पेशाब।—सर्दी लगनेके कारण पेशाब रुक जाना (Ischuria), नङ्गे पैरोंसे पानीमें चलनेपर पेशाब बन्द हो जाता है। शरीर ठण्डा हो जाते ही पेशाब लग आता है। पेशाब गदला और सफेद आभा लिये। उसमें कभी लाल और कभी सफेद रंगकी तली जमती है ; पेशाबमें तेज़ गन्ध रहती है। मूत्रकृच्छ्र—पेशाबमें तकलीफ़ होती है और बूंद-बूंद पेशाब होता है ; मूत्रनालीसे श्लेष्मा निकला करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—शीत और तर हवा लगनेकी वजहसे रज, स्तनका दूध (पल्स) और प्रसवके बादवाला क्लेद स्राव रुक जाता है (मार्क, पोडो, सल्फ़, पैरमें पानी लगनेकी वजहसे ऋतु-रोध—पल्स), ऋतु आरम्भ होनेके पहले शरीरपर आमवातकी तरह उद्भेद निकल आते हैं (कोना—बहुत ज्यादा स्रावके समय—बेल, ग्रैफ)। स्तन पिलानेवाली माताओंके वक्षस्थलमें दादकी तरह उद्भेद।

श्वास-यंत्र।—सर्दी लगने या छातीमें सर्दी जम जानेके कारण श्वास-प्रश्वासमें व्याघात। गलेकी आवाज़ उखड़ी हुई हो जाती है और सर्दी हो जाती है, मानो ठण्ढ लगनेकी वजहसे। खाँसी—स्वरभङ्ग मिली, लगातार पतला श्लेष्मा

निकलता है और स्वरनालीमें सुरसुरी होती है ; कभी-कभी चमकीला खून-भरा कफ़ निकलता है (फेरम, इपिक, फास, पल्स), क्रुप-खाँसीकी तरह खाँसी, दीर्घ निश्वास लेनेपर खाँसी आने लगती है और वायु तथा स्वरनालीके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा रहता है, प्रत्येक बार खाँसी आनेपर स्वाद-हीन सरल श्लेष्मा निकला करता है (ब्राई, चायना, इग्ने, लाई, पेरिस, स्टैन, स्टैफाई)। कफ़में अधिकांश समय रक्त मिला रहता है (आर्स, ब्राई, चायना, डिजि, ड्रोसे, फेरम-ऐसेट, इपिक, लेके, लाई, फास, ऐकालिफा, सेनेगा, सिपि)। श्वास-प्रश्वासके समय वक्षपर बहुत दबाव मालूम होता है। छातीके भीतर और बाहर इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो कोई ठोंक रहा है। बाएँ वक्षमें तरंगके प्रभावकी तरह दर्द, फेफड़ेका आसन्न पक्षाघात।

गर्दन और पीठ।—कमरमें दर्द, मानो बहुत देरतक झुके रहनेके कारण यह दर्द पैदा हो गया है। सर्दी लग जानेके कारण पीठमें दर्द। पानीमें भींजने या सर्दी लग जानेकी वजहसे गर्दन और कन्धेमें दर्द, अकड़न या सुन्न हो जाना। रातमें विश्रामके समय नितम्ब और पुट्ठेकी सन्धिके ऊपर तेज़ शलाका बेधनेकी तरह या खींचनकी तरह दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—मुँह, हाथकी पीठ (करभ) और अंगुलीके मांसमें मसे हो जाते हैं (कैल्के, ऐसिड-नाई, रास, थूजा)—मसे कड़े और चिकने। संन्यास रोगकी तरह दोनों बाँह सुन्न और बरफकी तरह ठण्डे, विशेषकर विश्रामके समय, तलहथीमें पसीना (ऐको, ऐनाक, कोना, लिड, मार्क, नक्स)। सर्दीकी वजहसे वातका दर्द, ठण्डी तर हवा, वृष्टि या उत्ताप लगकर या वायुके हठात् परिवर्त्तनकी वजहसे बढ़ जाता है (ब्राई)। सारे शरीरमें शोथ और वातका दर्द—सविराम ज्वर या आरक्त ज्वरके बाद पसीना रुकने, उद्भेद लोप होने, सर्दी लगने या तर नीची जमीनमें, मकानके निचले अंशमें या गोशालामें रहनेकी वजहसे उपसर्ग (ऐरेनिया, आर्स, नेट्र-सल्फ)।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा बहुत ही रोग-प्रवण, सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती, अकसर आमवातकी तरह फुन्सियाँ निकला करती हैं, खासकर जभी सर्दी लगती है या तर हवामें रहना पड़ता है, तभी पित्ती निकल आती है। सर्दी लगकर पसीना रुकने या आमवात आदि लोप हो जानेकी वजहसे बीमारियाँ। कितनी ही ग्रन्थियोंका प्रदाह (Adenitis—बेराई, बेल, मार्क, ऐसिड-नाई, फास, रास, सार्सा, सिपि, सल्फ)। रजःस्राव आरम्भ होनेके पहले

शरीरपर आमवातकी तरह खुजली निकल आती है (कोना)। शरीरपर नाना प्रकारकी फुन्सियाँ निकलती हैं। खून बहनेवाले जखम आदिमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। आमवात, समूचे देहमें उद्भेद, पर ज्वर नहीं रहता। बहुत खुजलाता है—खुजलाने बाद जलन होती है; उत्तापसे बढ़ता है और सर्दीसे घटता है, सर्दी लगनेसे ही अदृश्य हो जाता है। मूर्द्धदेश, मुँह, ललाट, कनपटी और चिबुकपर गाढ़ी पीली भूरी पपड़ी जमा घाव निकलता है; उसके किनारे लाल रहते हैं—खुजलानेपर खून निकल आता है—बच्चोंका घाव (ग्रैफ, बायोला-ट्राइ, जिङ्क, मार्क, सिपि)। शरीरपर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल-लाल चकत्ते या दाग दिखाई देते हैं। मुँहपर, हाथकी पीठपर और अंगुली आदिके ऊपर बड़े, माँस-भरे और चिकने मसे निकलते हैं (कैल्के, कैल्के-कास्टि, ऐसिड-नाई, रास, कैलि-म्यूर, कास्टि; सारे शरीरका शोथ—एपोसिन)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीत, पीठसे आरम्भ होता है या पीठके चारों ओर फैल जाता है—उत्तापसे शीत नहीं घटता (एरेनिया, कैम्फो, सैके, मिनो, नक्स, पोडो; शीत प्रायः सन्ध्याके समय पैदा हो जाता है—ऐरेनिया, आर्नि, बोवि, कैलेड, सिना, इग्ने, कैलि-कार्ब, लैके, जेलिस, पल्स, रास, सिपो); दर्द और तेज़ प्यासके साथ जाड़ा मालूम होना। उत्ताप—सारे शरीरमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप। पसीना—बदबूदार पसीना निकलता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें साफ़ पेशाब होता है (ऐको, एण्टि-टार्ट, फास; गाढ़ा लाल पेशाब—सोइन; दूधकी तरह—फास; थोड़ा—सोइन; गदला—इपिक) रातमें और सवेरे बदबूदार पसीना होता है, दिनमें पीठमें, बगलमें और तलहत्थीमें पसीना होता है। अकसर पसीना नहीं होता (ऐरेनिया, आर्स, युपेट, लाई) उत्ताप पैदा होनेके बाद भूख लग आती है (साइमेक्स, युपेट-पर्फ्यु)।

वृद्धि।—चित्त होकर सोनेपर, झुकनेपर, रोगवाला अंग पीछेकी ओर झुकानेपर, विश्रामके समय, ठण्डी हवामें, गर्म वायु एकाएक ठण्डी हो जानेपर, जलीय तर हवामें, पानीमें भींजने या पानीका व्यवहार करनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर और ऋतुस्राव होनेपर, शरीरके दाने या पसीना रुकने या उद्भेद बैठ जानेपर।

घटना।—घूमते-फिरते रहनेपर (फेरम, रास); उत्तापसे (परन्तु खाँसी और आमवात, उत्तापमें बढ़ जाती है), सीधे होकर बैठने या खड़े होनेपर, करवट दबाकर सोनेपर और दबा देनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अनुपूरक—बैराइटा-कार्ब, कैलि-सल्फ। ऐसेटिक-एसिड, बेलेडोना और लैकेसिसके पहले या बाद इसका व्यवहार निषिद्ध है। कैल्केरिया-कार्ब, ब्राई, लाइकोपोड, रास और सिपियाके बाद डाल्कामारा बहुत फायदा करता है। पारेके अपव्यवहारको वजहसे पैदा हुए रोगोंमें यह बहुत लाभदायक है। लार बहना, गांठोंका फूलना, वायुनलीभुज-प्रदाह और उदरामयमें यह मर्क्युरियसके सदृश है, विशेषकर वायु परिवर्त्तनके कारण रोग होना और रातमें वृद्धिके सम्बन्धमें।

दोषघ्न ।—क्यूप्रम और मर्क्युरियस।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन।

एकिनेशिया ऐङ्गस्टिफोलिया

(ECHINACEA ANGUSTIFOLIA)

मन्तव्य ।—एकिनेशिया पर्प्युरिया दवा ज्वर और डिफ्थोरिया रोगमें व्यवहृत होती है।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—उपाङ्ग-प्रदाह ; खूनका विषैलापन ; दूषित फोड़ा ; उपझिल्लीका प्रदाह ; सड़े घाव ; सान्निपातिक ज्वर ; दूषित जखम ; रास्टक्सकी विषाक्तता ; साँप काटना ; उपदंश ; जखम ; गो-बीजका टीका लगानेका दुष्परिणाम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—मानव शरीरके रक्तके साथ पीव मिलना या कोई दूसरा विषैला पदार्थ मिल जानेकी वजहसे रोग आदि होनेपर बहुत लाभदायक प्रमाणित हुआ है। इसलिये प्रसवके बादका बोखार, सड़ जानेवाले जखम आदि, गले हुए घाव, उपाङ्ग (Appendix) प्रदाहमें, विषैले फोड़े और मस्तिष्क तथा मेरुमज्जाके आवरणके प्रदाहमें (Cerebro-spinal Meningitis) इसका व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव ; मल, साँस वगैरह इसके सभी स्रावोंमें बदबू रहती है (बैप्टी, सोरिन, पाइरोजेन, कार्बोलिक-ऐसिड, ऐन्थ्राक्सिन)।

लक्षणावली

मन ।—उत्तेजना-प्रवण चित्त। मानसिक अवसाद। तीसरे पहर बार-बार जम्हाई आकर औंघाई आती है (चेलिडोन); दुर्बलता और सारे शरीरकी अवसन्नता : बहुत आलस्य मालम होना और नींद आना ; किसी विषयमें भी मन नहीं लगा सकता, सोचने या जी लगाकर पढ़नेसे अनिच्छुक। नींद खुल जाती है। निद्रित अवस्थामें लगातार सपने देखा करता है। मरे सम्बन्धियोंको सपनेमें देखता है (ऐनाक)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—सर घुमानेपर (कोना, कैल्के, कैलि-कार्ब ; माथा हिलानेपर—ब्राई, कैल्के, कोना) माथा बहुत बड़ा मालूम होता है ; माथेमें धीमा-धीमा दर्द होता है। ललाट-देशका सर-दर्द, विशेषकर बाईं आँखके ऊपर ; निर्मल वायुके सेवनसे घट जाता है। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (आर्जेण्ट-नाई, ऐपियोल, बेल, डैफनो, इग्ने, नक्स, फेलेन, साइलि, स्पाइजि)। कनपटीमें लगातार तेज़ दर्द ; विश्रामके समय और दबा देनेपर आराम मालूम होता है।

आँख ।—अध्ययनके समय आँखमें दर्द होता है (सैण्टोनिन, कैलि-बाई, कोना), हाथमें किताब लेकर पढ़नेपर बहुत थकन मालूम होती हैं। किसी चीज़की ओर देखनेपर आँखमें दर्द होता है और आँखसे पानी गिरने लगता है (दर्द—कार्बो-वेज, सेब्राड ; पानी गिरता है—सिनाबेरिस); आँख बन्द करनेपर घटता है। आँख बन्द करनेपर उसमें उत्ताप मालूम होता है (कोरैल-रूब्र), ऐसा मालूम होता है कि नींदसे आँखें बन्द हुई जाती हैं, पर नींद नहीं आती।

नाक ।—नाक भरी मालूम होती है और नाक झाड़कर साफ़ कर डालनेकी इच्छा होती है, परन्तु उससे आराम नहीं मिलता। साँसमें बहुत बदबू और नाकसे बदबूदार श्लेष्मा निकलता है (ऐन्थ्राक्सिन, कार्बोलिक-ऐसिड, सोरिन); नासारन्ध्रसे श्लैष्मिक-झिल्लीभरा अर्बुद बाहर निकल पड़ता है।

मुख-विवर।—सड़नेवाला मुँहका जखम,—मसूढ़े सब दाँतसे अलग हो जाते हैं और सामान्य कारणसे ही उनसे खून निकलता है (मर्क-कोर); दोनों ओठोंका संयोगस्थल और दोनों ओठ फट जाते हैं (कार्ब्डियुरेङ्गो)। जीभ सूखी और फूली; दाँतोंपर मैल चढ़ी। जीभ, ओठ और जिह्वामूलीय दोनों गह्वरोंमें कुटकुटाहट और चुनचुनी हुआ करती हैं और हृत्पिण्डमें दर्द होता है; तमतमाया हुआ चेहरा, जीभके दोनों किनारे लाल और उसके बीचमें सफेद लेप चढ़ा, कभी-कभी जीभ कच्चे माँसकी तरह दिखाई देती है। मुँहमें गोंदकी तरह श्लेष्मा जमा होना।

गलेके भीतर।—कण्ठ गहरी लाल और काली आभा लिये (एकिनेशिया पर्प्युरिया)। कण्ठसे लेकर वायुनली और नाकके पिछले छेदतकका स्थान धुमैले रङ्गके लेपसे ढँका रहता है। खट्टा श्लेष्मा वमन करनेके बाद गलेमें जलन मालूम होती है।

पाकस्थली।—सोनेके पहले मिचली; सोनेके बाद घट जाती है, भोजनके बाद पाकाशय और अन्त्राशय वायुसे भर जाता है। खानेके बाद खाये हुए पदार्थोंका स्वाद मिली डकार। ऊपरी पेट फूल उठता है और वायु निकलनेपर भी नहीं घटता। खट्टी डकार आने बाद गलेमें जलन होती है। डकार अधोवायु दोनों ही हुआ करता है। अम्ल हो जाता है। छातीमें जलन होती है और डकार आया करती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीमें कोई एक पदार्थ है (ऐबिज-नाई, ब्राई, पल्स)।

अन्त्राशय।—दाहिने कोखमें दर्द होता है। तलपेट भरा मालूम होता है और उसमें हड़हड़-गड़गड़ शब्द हुआ करता है। नाभि-प्रदेशमें दर्द, सामनेकी ओर झुक पड़नेपर आराम होता है (कोलो, कूप्रम)। पेटमें मरोड़ होकर वायु निकलता है या पतला पीली आभा लिये पाखाना होता है और उससे रोगी सुन्न हो पड़ता है।

पेशाब।—रोगी कितना भी सावधान क्यों न रहे, उसे अनजानमें पेशाब हो जाता है। पेशाबके समय जलन और दर्द होता है। तलपेटके नीचे (Pubes) में दर्द और इस स्थानकी त्वचामें बहुत खोंचन मालूम होती है। दाहिने शुक्ररज्जुमें दर्द (रीडो)। अण्डकोष ऊपरकी ओर खींचा और उसमें दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रसवके बाद खूनके साथ पीव मिल जानेके कारण बोखार; स्राव आदि रुक जाता है; अन्त्राशयमें बहुत दर्द होता है। स्पर्श सहन नहीं होता और वायुसे फूल उठता है (कोलो, हायो, बेल), सन्ध्याके समय योनिसे श्लेष्माका स्राव।

त्वचा ।—बार-बार फोड़े निकलना। दुष्ट-व्रण (ऐन्थ्राक्सिन)। कीड़े आदि काटना (ऐन्थ्राक्सिन)। लसिका नाड़ियाँ सब फूल उठती हैं।

ज्वर ।—मिचलीके साथ जाड़ा मालूम होना। आन्त्रिक ज्वर, मसूढ़े और दोनों ओठ जखमसे भरे और उनसे खून निकलता है; गलेमें गाढ़ा लाल या काला रङ्ग; जीभ कच्चे मांसकी तरह; श्वास-प्रश्वास और मल-मूत्र आदिमें बहुत बदबू; उठनेकी शक्तिका न रहना।

सम्बन्ध—सदृश और तुलनीय ।—ऐन्थ्राक्सिन (फोड़े); पाइरोजेन, कार्बो-एसिड, लैकेसिस, बैप्टीशिया; साँप काटनेपर—लोबेलिया, कैलेण्डुला और वेलिस।

शक्ति ।—मूल अर्क १ से १० बून्दतक।

एकिनेशिया पर्प्युरिया

(ECHINACEA PURPUREA)

दूसरा नाम ।—ब्लैक सैमसन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी संग्रह की हुई जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—इस दवाकी अभी उपयुक्त प्रूविङ्ग नहीं हुई। एकिनेशिया ऐङ्गाके लक्षणसे इसका कोई विशेष प्रभेद नहीं है। डिफ्थीरिया और विषाक्त ज्वरमें विशेषकर जीभमें काला दाग रहनेपर यह आशातीत फायदा करती है।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

इलिईस

(ELAEIS GUINEENSIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फलका विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—अतिसार ; गोद ; पाकाशयका विकार ; कुष्ट व्याधि ; चर्म रोग इत्यादिमें लाभदायक हैं ।

उपयोगिता और आभास ।—कुष्ट व्याधि ; स्थूल त्वचा, श्लीपद या फीलपाया वगैरह चर्म रोगमें इससे विशेष लाभ दिखाई देता है । काले रङ्गका मल मिला उदरामय भी इसके विषयके अन्तर्गत है ।

लक्षणावली

मन ।—बहुत ही फुर्त्ती-भरा चित्त, अकेला रहनेपर भी आनन्दसे हँसा करता है । कभी-कभी विमर्ष भाव भी प्रकट करता है ।

आँख ।—आँख फूली (ऐको, आर्स, कैलि-कार्ब, रास, स्ट्रैम) । दीयेकी रोशनीमें धुँधला देखता है (क्रोक, हिप) । किसी चीज़की ओर टकटकी लगाकर देख नहीं सकता (कैल्के, फिलैन, कार्बो-वेज, सेबाड) ।

मुँह और गलेके भीतर ।—निगलनेके समय कण्ठमें छुरी मारनेकी तरह दर्द । मुँहसे बदबू निकला करती है । जीभमें इतनी जलन होती कि खाना बन्द कर देना पड़ता है ।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि ।—सीढ़ी चढ़नेके समय शरीरके नाना स्थानोंपर अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है । बदनका चमड़ा मोटा हो जाता है, उदरके ऊपरी प्रदेशमें दोनों ओर ऐसा मालूम होता है, मानो चमड़ा मोटा हो गया है और निचले पंजरेमें मानो खील गड़ गयी है—त्वचा फूली और लचीली नहीं रहा करती है । बाएँ पैरकी त्वचा फूली, रुखड़ी और खुजलाती है ; समूचे शरीरमें खुजली होती है ; खुजलानेके कारण नींदमें व्याघात होता है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—वैसिलिनम, हाइड्रोकोटाइल, ऐनाकार्डियम, रासटक्स प्रभृति ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे २रा और ३रा क्रम ।

इलैप्स कोरैलिनस

(ELAPS CORALLINUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ब्रेजिल देशके विषैले साँपके दाँतसे विष लेकर, दुग्ध शर्कराके साथ विचूर्ण तैयार किया जाता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अन्धापन ; कैन्सर या कर्कटोया जखम ; बहरापन ; नाकसे खून गिरना ; रक्तस्राव ; सरमें दर्द ; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; जरायुसे रक्त-स्राव ; फेफड़ेका प्रदाह ; नकसीर ; यक्ष्मा ; गलेका जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रोटेलस,, लैकेसिस और इलैप्स—इन तीनों सर्प विषोंका आपसमें बहुत सादृश्य है, पर इलैप्सका एक विशेष लक्षण यह है, कि इसके सभी स्राव काले होते हैं—यहाँतक कि कानका मैल भी काला निकलता है । इसका एक और भी प्रकृतिगत लक्षण यह है, कि—(१) फल या ठण्डी पीनेकी चीजें, पेटमें जानेपर ऐसा मालूम होता है, कि बरफके टुकड़ेकी तरह पड़ी हैं और इसी वजहसे छातीमें ठण्डक मालूम होती है । (२) खाई हुई चीजें ऐसी मालूम होती हैं कि स्क्रू के चक्करकी तरह घूम-घूमकर प्रवेश कर रही है । (३) मानो शरीरका सब खून माथेमें इकट्ठा हो गया है । (४) पानी आदि पीनेके बाद बहुत अधिक जाड़ा मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो बाएँ फेफड़ेके बीचके एक गोल छेदकी राहसे पानी चढ़ रहा है और गिर रहा है (डा० शेनन) । (५) अंत्रमण्डली मानो डोरीसे बाँधकर एक गोलेकी तरह बन गयी है । मिचली और वमन ; सुस्तीके साथ पाकस्थलीमें अम्ल पैदा हो जाना, सिकुड़ना और फैलना, तालुमूलका सङ्कोचन इत्यादि अवस्थाओंमें भी इलैप्ससे फायदा हुआ करता है । शरीरके दाहिने पार्श्वके साथ इस दवाका घनिष्ट सम्बन्ध है (लैकेसिस—वाम पार्श्वके साथ) ।

लक्षणावली

मन ।—विषन्न चित्त ; ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसीकी बात सुन रहा है । दृष्टिसे भय (अन्धड़का भय—रोडो) । इस भयसे हमेशा सशंकित रहता है, कि उसे कोई सांघातिक रोग हो जायगा (रोगी सोचता है, कि

उसकी बीमारी अब आराम न होगी—आर्स, कैक, इग्ने, लैक-कैन, लिलि-टाइग, मिडोरिन, नेट्र-म्यूर, सोरिन ; रोगी मनमें समझता है कि उसके गलेमें सांघातिक रोग हो गया है (सेबाड)। अकेला नहीं रहना चाहता, डरता है, कि कोई भयङ्कर घटना न घट जाये (अकेला नहीं रहता, कहीं उसको मृत्यु न हो जाय या कोई शायद उसकी जान मार देनेकी चेष्टा करे—आर्स)। संन्यास रोग हो जानेका भय (आर्जेण्ट, एपिस ; चेचक रोग होनेका भय—वैरियोलिन ; विसूचिका होनेका भय—आर्स, एसिड-नाई)। अपने ऊपर भयङ्कर क्रोध ; कोई उससे बात करता है, तो चिढ़ उठता है। सामान्य प्रतिवाद भी उसके शरीरको कँपा देता है और वह एकदम गर्म हो उठता है (अरम, काक्यु, कोना, फेरम)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—सामनेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना होती है (आर्नि, फेरम-ऐसेट, नेट्र-म्यूर, रैनान, पोडो, रास ; पीछेकी ओर—लिड, रास)। सरमें दर्द—भूख लगते ही यदि खानेको न मिल जाय (लाई) ; भोजनके बाद घट जाता है (भोजनके समय घटना—ऐनाक)। कभी बाईं ओर कभी दाहिनी ओर अस्त्रके आघातकी तरह दर्द ; मानसिक परिश्रमके बाद सरके पिछले भागमें दर्द ; नींद न आना, माथा भरा और भारी मालूम होना, मानो शरीरका सब खून माथेमें एकत्र हो गया है। दोनों हाथ ठण्डे और संन्यास रोगके आक्रमणका भय (आर्जेण्ट, एपिस), ललाटमें भार मालूम होना और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना ; कानमें वज्रकी तरह आवाज़। सुननेकी ताक़तका गायब हो जाना (डल्का, कूप्रम) और आँसू बहना (युजिनी, इग्ने, पल्स, स्पाइ्ज)। ब्रह्मतालुमें तेज़ दर्द, सन्ध्याके समय ऐसा मालूम होता है मानो मस्तिष्क हिल रहा है ; मिचली वर्तमान रहनेकी वजहसे रोगी माथा स्थिर नहीं रख सकता।

आँख ।—बायीं आँखके ऊपर गुहौरी और उसमें छुरी मारनेकी तरह दर्द। दृष्टिके सामने लाल जलते हुए बिन्दु सब दिखाई देते हैं (ब्रूओइसिस)। नींद खुलनेपर आँखमें सूखापनका भाव और जलन मालूम होती है ; सवेरे आँखके चारों ओर सूजन दिखाई देती है (बेराई-कार्ब) ; रातमें भी सब चीजें सफेद दीख पड़ती हैं, आँखके सामने ऐसा मालूम होता है मानो एक धुमैला आवरण फैला हुआ है। तिमिर दृष्टि—उजेला है या अंधेरा, यह सहजमें स्थिर नहीं कर पाता।

कान ।—कानमें काला मैल इकट्ठा होता है और रोगीको सुन नहीं पड़ता (पल्स, सेलिन ; लाल रङ्ग कोना ; सफेद—लैके) या सवेरे बायें कानसे रसकी तरह हरे रङ्गका और बदबूदार स्राव और कानमें भों-भों आवाज़ आती है। कानमें नाना प्रकारकी आवाजें आती हैं। एकाएक रातके समय कान बहरे हो जाते हैं और कानमें सों-सों आवाज़ होती है और कुटकुटाया करता है। खाने या निगलनेके समय कानमें कड़ाक-सी आवाज़ हो उठती हैं (कैल्के, ग्रैफ, ऐल्यू, कार्बो-वेज, बेराई-कार्ब, युपेट-पर्पु, कैलि-आयोड, मैंङ्ग) ; रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह किसीकी बात सुन रहा है (ऐसा मालूम हो कि दूर देशमें रहनेवाले व्यक्तिकी आवाज़ सुनता है—ऐनाक, कैमो, स्ट्रैम), कानमें असह्य सुरसुरी।

नाक ।—घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना। नाक साफ़ करनेके समय बहुत ज्यादा परिमाणमें एक अविच्छिन्न सोतेकी तरह लाल रङ्गका खून निकलता है (क्रोटन, हैमा, ऐसिड-नाई, सिकेल, ऐसिड-सल्फ)। पीनस—इसके साथ ही नाकसे नमक लगी मछलीके रसकी तरह बदबूदार रसका स्राव होता है (ऐसा, एरम, ग्रैफ, लाई, मर्क, आर्स—इसके साथ तुलनीय है)। जरा भी ठण्डी हवा लगनेपर सर्दी हो जाती है (डालका) और सफेद रङ्गका पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है।

मुँह ।—चेहरा घोर लाल और गहरा आरक्तिम, जीभ काली (ऐन्थ्राक्सिन, ब्रूफो, ऐकिनेशिया, लैके, रास) या गाढ़ा लाला रङ्ग ; सवेरे सफेदी लिये और फूला हुआ रहता है ; जीभके अगले भागमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई बेधी जा रही है।

गलेके भीतर ।—कण्ठमें जखम-भरा—बाएँ पार्श्वमें अधिक ; कोई खानेकी चीज़ निगलनेमें बहुत तकलीफ़ होती है ; इसी तरह वर्षमें पाँच-छः बार हुआ करता है और प्रत्येक बार दो-तीन सप्ताहतक स्थायी रहता है ; हवा या पानी लगकर ऐसा बार-बार हुआ करता है (डालका) ; रोगीके गलेमें जखम हो या न हो, वह तर जलीय हवामें बाहर नहीं निकलना चाहता। क्या तरल, क्या कड़े पदार्थ—रोगीको दोनों ही निगलनेमें तकलीफ़ होती है। उसके कण्ठके भीतर बहुत अधिक स्पर्श असहनीयता रहती है ; दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ इतनी फूली रहती हैं, कि ऐसा नहीं मालूम होता है, कि

गलेमें छेद है, कोई पदार्थ निगलनेके समय नासारन्ध्रसे लेकर कानतक दर्द मालूम होता है। जिह्वामूलके गह्वरके ऊपरी अंशसे अनगिनत गहरे लाल रङ्गके बिन्दु दिखाई देते हैं और वे बिन्दु सब रस-भरी फुन्सियोंकी पूर्वावस्थाकी तरह मालूम होते हैं। अन्ननालीके संकोचनकी वजहसे वह जो कुछ खाता है, वह उसमें पहले अटक जाता है, इसके बाद भारी चीज़की तरह पाकस्थलीमें गिर पड़ता है; अन्ननालीमें ऐसा मालूम होता है, कि स्पञ्जका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भोजनके बाद पाकाशयमें भार मालूम होना। बहुत ज्यादा भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता। भूरे रङ्गका पित्त वमन होनेके बाद पतले दस्त आया करते हैं। अम्ल रोग, इसके साथ ही मिचली और शारीरिक अवसन्नता; खट्टी डकार, भयानक प्यास, परन्तु पानी आदि पीनेसे ही छातीमें ठण्डक मालूम होती हैं। भूखकी वजहसे सर-दर्द (लाई), खासकर खानेमें देर होनेपर (भोजनके समय सर-दर्द आराम हो जाना—ऐनाक)। श्लेष्मा वमन करनेके बाद मूर्च्छा या वैसा ही कुछ और हो जाता है (आर्स, ग्रे न-इपिक, लेमियम, वेरेट); एकाएक पेटमें ऐसा दर्द पैदा हो जाता है, मानो रोगी बैठ जाना चाहता है; परन्तु बैठनेसे बढ़ता है और चलते रहनेपर घटता है (बैठनेसे बढ़ना—ह्रिप, पल्स, सल्फ); अन्त्र-मण्डलीमें ऐसा मालूम होता है मानो आँतें डोरीसे बँधकर एक गोला जैसी हो गयी हैं (स्पञ्जि देखिये)। निगली हुई चीजें आदि मालूम होती हैं कि मानो चक्करकी तरह घूम-घूमकर पेटमें घुसती हैं।

मल।—उदरामय—पेटमें गड़गड़ शब्दकर कुछ काला या कुछ पीला पानीकी तरह आम-मिला मल निकलता है और कभी पित्तमय मल या कभी केवल खून-मिली आँव निकला करती है। आँतोंका शूल—मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं, इस तरह मालूम होनेके साथ-ही-साथ मलान्त्रसे पानीकी तरह काले रंगका खून (ऐल्टि-ऐसे, मर्क-कोर) निकलता है। मलद्वारमें क्रिमि चलनेकी तरह सुरसुरी अनुभूति होती है (कोलचि, ग्रे नेट, इग्ने, स्पाइजि, टेरिब, टियुक्रि, जिङ्क)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बन्द होनेके समय काला रक्त-स्राव हुआ करता है (ऐसेर, कैमो, क्रोक, इग्ने, नाइट्रम, प्लेट)। जरायुसे खूनका स्राव—

खूनका रङ्ग काला, पानीकी तरह या जमा हुआ (Clotted) अधिकांश स्थानोंमें पतला; दिन-रातमें एक पावसे डेढ़ पावतक खून निकल जाता है। रोगिनी मुर्देकी तरह सफेद दिखाई देती है। इसके समूचे तलपेटमें बहुत दर्द रहता है, दोनों कनपटियोंमें खींचनकी तरह दर्द और कभी-कभी बाएँ फुसफुसावरणी (Pleura) में भी कुछ दर्द मालूम हुआ करता है; एक छोटा-सा कपूरका टुकड़ा खाते ही आराम हो जाता है। जरायुमें कर्कटीया जखम ऐसा मालूम होता है, मानो जरायुमें कुछ टूट गया, इसके बाद पेशाब करनेकी चेष्टा करते ही धार बाँधकर गाढ़ा लाल या काले रङ्गके खूनका स्राव हुआ करता है; स्राव बहुत ज्यादा और उसमें दो-एक जमे हुए टुकड़े भी रहते हैं। पन्द्रह दिन बाद ही ऋतु-स्राव होने लगता है।

श्वास-यन्त्र ।—पानी पीनेके बाद वक्षमें ठण्डक मालूम होना और ऐसा बोध होता है, मानो बाएँ फेफड़ेके भीतरवाले एक नलकी तरहके छिद्रके भीतरसे बरफकी तरह ठण्डा पानी ऊपर चढ़ता है और नीचे उतरता है (डा० ग्रैनन)। प्रबल खाँसीके बाद खून मिला कफ़ निकलता है। फेफड़ेसे खून निकलनेके पहले मुँहमें रक्तका स्वाद आ जाता है (बिस्मथ, साइलिसिया)। माथा या देह झुकानेपर मूर्च्छाका उपक्रम हो जाता है। लगातार खाँसी और समूचे फेफड़ेमें फाड़नेकी तरह तेज़ दर्द, दाहिने फेफड़ेके शिखरदेशमें दर्द ज्यादा होता है। दोनों फेफड़ोंके ऊपरी अंशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द; टहलनेपर दर्द घट जाता है। सन्ध्याके समय श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है; सीढ़ी चढ़नेके समय बढ़ना (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ऐङ्गस, बोर, लिड, हायो, मर्क, ऐसिड-नाई, रैटान, रियुटा, सेनेगा)।

प्रत्यङ्ग ।—बगलमें फुन्सी हो जाती है और बहुत खुजलाती है (कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, लाई, पेट्रोल, फास)। बगलकी गांठें सब प्रदाह भरी होती हैं और उनके पक जानेकी सम्भावना होती है (बेराई, हिप)। अंगुली वगैरहके अग्र भागकी खाल उधड़ जाती है। कोहनीसे लेकर हाथतक सूजन होकर चरचराता है, मानो बहुत भारी चीज़ उठाये हुए हैं। पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है (कैम्फो, वेरेट)। दाहिना पैर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। हाथ और अंगुलीमें पीले रङ्गके बिन्दु दिखाई देते हैं।

निद्रा ।—छुरी मारनेकी तरह यन्त्रणा देनेवाला सर-दर्द और इसी वजहसे नींद न आना। लगातार काम-काज (ब्राई, साइक्लू, लाई, ऐसिड-नाई,

नक्स-वोम, फास, रास, कैप्सि) और मृत व्यक्तिके सम्बन्धमें (क्रोटल-होरिड, क्रोटल-कैस्का, एकिने) सपने देखा करता है।

ज्वर।—शीतावस्था—प्यास न रहना ; चेहरा लाल।—रात आठ बजनेके समय शीत और उत्ताप पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। रोगी शीतसे कांपा करता है—मानो हड्डी छेदकर शीत भीतर घुस रहा है। ठण्डा पानी पीनेसे जाड़ा और भी बढ़ जाता है (कैप्सि)। दाहिने घुटनेतक बरफकी तरह ठण्डे, पानीमें हाथ डुबोनेपर शीतसे हाथ कांपा करता है। उत्तापावस्था—प्यास मिली, सन्ध्यामें ७ बजेसे ८ बजेतक सूखा और बिना पसीनेका उत्ताप, पर इसके बाद रातमें १० बजेतक जाड़ा मालूम होता है। रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाता है और इसके बाद रातके १० बजेतक जाड़ा लगता है। रह-रहकर उत्तापका आविर्भाव होता है और चेहरा तथा कान लाल हो उठते हैं—समूचे शरीरमें पसीना होता है—पसीना परिमाणमें बहुत ज्यादा और ठण्डा।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स, कार्बो-वेज, क्रोटेलस, लेके, ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-नाई, रास, डालका।

तुलनीय।—डियुबोइसिनम (दृष्टिके सामने लाल बिन्दु), डालका-मारा (सर्दी लगना)।

दोषघ्न।—शराब या आर्सेनिक।

शक्ति।—६ठे शततमिकसे २० शततमिक क्रम।

इलैटिरियम

(ELATERIUM)

दूसरा नाम।—जंगली कद्दू या कोहड़ा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बिना पके फलसे मूल अर्क तैयार होता है। सार भागके विचूर्णको इलैटेरिनम कहते हैं।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—फोड़ा; पैत्तिक ज्वर; हैजा; शूल उठना; अतिसार; शोथ; रक्तामाशय;

पकौता ; पाला ज्वर ; कामला ; खसड़ा ; आमवात ; स्नायुशूल ; वात ; कटि-स्नायुशूल ; वमन ; जम्हाई ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत ज्यादा पानीकी तरह दस्त और वमन मिली विसूचिका, बच्चोंका उदरामय वगैरह रोगमें यह विशेष लाभदायक है। सूक्ष्म मात्रामें इसका प्रयोग करनेपर श्लैष्मिक झिल्लीका जलीय भाग सूख जाता है, इसीलिये शोथ, उदरी वगैरह रोगमें भी इससे लाभ दिखाई देता है, इससे पैदा हुआ ज्वर, विसूचिका आदि बीमारियोंमें बार-बार जम्हाई लेना, हाथ-पैर फैलाना—इलैटेरियमका सबसे बढ़िया निर्णायक लक्षण है। नये पैदा हुए बच्चोंका कामला रोग और पित्त मिला दस्त, इससे अच्छा हो जानेकी बहुत अधिक सम्भावना है और कितने ही स्थानोंमें केवल इसीके सहारे वे आरोग्य हुए हैं। कुछ हरा दस्त और कै और फेनभरा मल इसका अत्यन्त निर्णायक लक्षण है। मलेरिया या पूतिवाष्पज ज्वर आदिके एकाएक गायब हो जानेकी वजहसे मानसिक विकार और आमवात रोगमें भी यह आश्चर्यजनक फायदा दिखाता है। बाईं आँखमें मानो काँटा या पतली सलाई गड़ गयी है और मानो नाकके पिछली छेद और अन्ननालीका ऊपरी मुँह बड़ा हो गया है ऐसा मालूम होना इसका प्रकृतिगत लक्षण है।

लक्षणावली

मन ।—(रातके समय) घर छोड़कर दूर या जङ्गलमें घूमनेका दुर्दमनीय आग्रह (ऐक्टिया और वेरेट्रम-ऐलबम देखिये)। हमेशा ऐसी आशङ्का किया करता है कि विपत्ति पासमें है (ऐक्टिया, किनन-सल्फ, क्युप्रम, ऐसिड-हाइड्रो, लोरो, सिपि, लिलि-टाइग्रि)।

गलेके भीतर ।—रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी नाकका पिछला छेद (Posterior Nares) और अन्ननालीका ऊपरी अंश बड़ा हो गया है।

पाकस्थली और अन्त्राशय ।—बहुत सुस्तीके साथ मिचली और वमन ; तलपेटको खूब कसकर पकड़ रखता है। भार मालूम होना, अन्ननालीका संकोचन, उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और श्वास-कष्ट, अन्त्र-शूल—छेदनेकी तरह दर्द। दुरारोग्य उदरामयमें—पतला पाखाना होनेके बाद पेट

भयानक रूपसे फूल उठता है और दर्द होता है। मुँहका स्वाद तीता और लार बहा करती है ; मिचली, खाई हुई चीज़ मिला गाढ़े भूरे रंगका पानीकी तरह वमन, इसके साथ ही बहुत सुस्ती।

मल।—मल पानीकी तरह बहुत ज्यादा और उसके साथ ही वेग रहता है। कुछ हरे रङ्गका और फेन-भरा मल चारों ओर छिटक कर निकलता है (आर्जेण्ट-नाई) ; बार-बार ज्यादा पानीकी तरह दस्त होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गृध्रसी कटि-स्नायुशूल (Sciatica)—बाएँ कटि-स्नायुकी गतिके अनुसार तलवेके बीचके स्थानतक तेज़ और जल्दीसे फैलनेवाला दर्द मालूम हुआ करता है (ब्राई, कोलो)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—जाड़ा लगनेके साथ कँपकँपी होती है और बार-बार जम्हाई आती है, मानो बोखार आनेकी सूचना हो। जाड़ा आनेके पहले जम्हाई आने लगती है। शीतावस्थामें माथा और हाथ-पैर दर्द करते हैं। उत्तापावस्थामें समूचे माथेमें फाड़नेकी तरह दर्द तथा तलपेट और हाथ-पैरमें बहुत अधिक दर्द होता है, दर्द तेज़ीसे पैरके नखतक फैल जाता है और फिर ऊपरकी ओर दौड़ पड़ता है। पसीनेवाली अवस्था, पसीनेके बाद सभी तकलीफें घट जाती हैं (ब्राई, जेल्स, लेके, नेट्र-म्यूर, सोरिन, रास)। कभी-कभी सविराम ज्वर रुका कि शरीरपर पित्ती निकल आयी (ज्वरके समय पित्ती निकलना—एपिस, हिप, इग्ने रास)।

सम्बन्ध।—सदृश।—कोलो, क्रोटन-टिग, वेरेट्रम, सिकेलि-एपिस, हिपर, इग्ने, रास।

तुलनीय।—ब्रायो, कोलोसिन्थ (कटि-स्नायुशूल) ; वेरेट्रम, कोलचिकम, क्रोटोन (विसूचिका) ; कैन्थ (मूत्रकष्ट और दस्त) ; एपिस, रासटक्स (आमवात और शीतज्वर)।

शक्ति।—३२ दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

इलेक्ट्रिसिटस

(ELECTRICITAS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—दूधकी चीनीमें वायुमण्डलका विद्युत्-प्रवाह सञ्चालनकर विचर्णोंके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—अन्धड़-पानी और वज्रपात होनेकी सम्भावना होनेपर डर लगता है, अङ्ग-प्रत्यंग भारी मालूम होते हैं, उद्वेग, स्नायविक कम्पन, अस्थिरता, कलेजा धड़कना, कलेजा काँपना वगैरह लक्षणोंमें उपयोगी है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—मार्फि-ऐन्सि, यह मर्क्यूरियसका दोष नष्ट करता है।

तुलनीय।—गैलवैनिसमम, मैगनेरिसमम; फास्फोरस (अंधड़-पानी होनेकी सम्भावना होनेपर सभी लक्षणोंका बढ़ना)।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

एपिजिया रेपेन्स

(EPIGEA REPENS)

दूसरा नाम।—ग्राउण्ड लारेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इस फूलके वृक्षके ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मूत्रकृच्छ्रता, पथरी इत्यादिमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—थकावटकी वजहसे सर-दर्दके अलावा एपिजियाकी प्रधान क्रिया मूत्रयन्त्रके ऊपर पैदा हो जाया करती है। मूत्राशय-प्रदाह, मूत्रकृच्छ्रता, पेशाबके बाद यंत्रणादायक संकोचनकी वजहसे

व्यथा वेग वगैरह इसकी क्रियाके लक्षण हैं, पेशाबके साथ श्लेष्मा और पीव, भूरे रङ्गकी पेशाबमें बालू और मूत्र-पथरी और मूत्राम्ल (Uric acid) मिला रहता है और इसीकी तली जमती है।

थकावटकी वजहसे सर-दर्द।—बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक परिश्रमकी वजहसे मिचली, वमन, दिखाई न देना और इसके साथ ही दुर्दमनीय कब्जियत (लैक-डिफ्लोरेटम, सैङ्गियुनेरिया, आइरिस)। (डा० एच० सी० ऐलेन)।

सदृश।—युवा-उर्सी, चिमाफिला, पैरिरा-ब्रेवा, मिचेला—रिपेन्स, आर्टिका-युरेन्स ; सर-दर्द—सैङ्गियु, लैक-डिफ्लो।

शक्ति।—मूल अरिष्ट १० से २० बून्द।

एफिड्रा वल्गेरिस

(EPHIDRA VULGARIS)

परिचय।—टिमस्टकस-टो।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—शाखा और फूलसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—आँखका गोला अकड़कर बाहर निकल पड़ेगा, ऐसा मालूम होना, तेजीसे कलेजा धड़कना लक्षणकी एक लाभदायक दवा (लाइको, वार्जि) है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—फेरम, आयोड, लाइकोपो—वार्जि, स्पञ्जि, थाइरायडिन (ऐसा मालूम होना कि चक्षुगोलक बाहर निकल पड़ेगा)।

शक्ति।—मूल अर्क स्थूलतर मात्रामें।

एपिलोबियम पैलस्टर

(EPILOBEUM PALUSTRE)

दूसरा नाम ।—एपिलोबियम-लाइनियर ; विलो-हार्ब ।

उपयोगिता और आभास ।—अम्लशूल और श्लेष्मा-मिले मलके लक्षणवाले पुराने उदरामय रोगमें यह मर्क्युरियसके साथ तुलनीय है। ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ निगलनेमें तकलीफ़, मुखसे लार बहना, गलेका जखम, ज्वर वगैरह लक्षणोंकी यह एक विशेष उपकारक दवा मानी जाती है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

एपिफिगस वर्जिनियाना

(EPIPHEGUS VERGINIANA)

दूसरा नाम ।—कैन्सर रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल होनेके बाद इस लतासे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— अतिसार ; कैन्सर या कर्कट रोग ; प्रमेह ; सर-दर्द ; हृद्कम्पन ; बहुत ज्यादा लारका स्राव ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायविक अवसाद (Neurasthenia) की वजहसे सर-दर्दमें इससे बहुत फायदा हुआ करता है। मानसिक या शारीरिक किसी तरहका परिश्रम करनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है या सर-दर्द पैदा हो जाता है। सर-दर्दके प्रकोपके समय मुँहमें गोंदकी तरह लार सञ्चित होती हैं और रोगीको बार-बार थूकनेकी इच्छा होती है। दाहिनी कनपटीमें अधिक दर्द होता है ; बाहरसे भीतरकी ओर पीसनेकी तरह दर्द ; दर्द एकाएक पैदा होता है। सर-दर्दके समय माथेकी त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको यह दर्द ज्यादा हुआ करता है। घरके बाहर

परिश्रम करनेपर, दूकानमें चीज़ आदि खरीदनेके समय घूमनेपर या शय्यासे उठकर बैठनेपर दर्द बढ़ जाता है और अच्छी तरह नींद आनेपर आराम हो जाता है।

इसके लक्षण कोना-कोनी भावसे दाहिनी ओरसे बाईं ओर फैलते हैं। ऊर्द्धाङ्गके दाहिने पार्श्वसे अथवा निम्नाङ्गके बाएँ पार्श्वमें लक्षण आदि पैदा हुआ करते हैं (ऐग्ना, ब्रोम, मिडोरिन, फास, ऐ-सल्फ ; बाएँ पार्श्वमें और निचले अङ्गके दाहिने पार्श्वमें—ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, स्टैन)।

इसके द्वारा बहुत हृत्स्पन्दन हुआ करता है ; कलेजा धड़कनके समय रोगिनीको बहुत कमजोरी मालूम होती है और वह बराबर यही समझती है, कि इसी कलेजेकी धड़कनेके कारण उसकी मृत्यु होगी (डा० क्लार्क)।

शक्ति।—डा० क्लार्क कहते हैं—इसका ३रा दशमिक क्रम ही साधारणतः व्यवहारमें लाया जाता है।

एक्विसिटम हायमेल

(EQUISETUM HYEMALE)

दूसरा नाम।—हार्स टेल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मूत्रस्थलीका प्रदाह ; शोथ ; अनजानमें पेशाब होना ; पक्षाघात ; प्रमेह ; पथरी ; रक्त मिला पेशाब ; पेशाब रुकना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—इपिजियाकी तरह एक्विसिटमकी अधिकांश क्रिया मूत्र-यंत्रपर प्रकट हुआ करती है। (१) क्या दिन, क्या रात, सभी समय अनजानमें पेशाब हो जाता है (अभ्यास दोषके अलावा दूसरा कोई कारण प्रत्यक्ष न होनेपर) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पेशाब होता है। (२) इस ढङ्गका दर्द मानो मसाना फूल गया है—पेशाब हो जानेपर भी नहीं घटता। (३) पेशाब रुकना और मूत्रकृच्छ्रता, विशेषकर स्त्रियोंकी गर्भावस्थामें और प्रसवके बाद। (४) बार-बार दुर्दमनीय पेशाब और पेशाबके

बाद बहुत तकलीफ़। (५) बार-बार पेशाबके वेगके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें निर्मल स्वच्छ पानीकी तरह पेशाब निकलता है, परन्तु उससे भी तकलीफ़ नहीं घटती। (६) पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें तेज़ जलन और काटनेकी तरह दर्द। (७) वृद्ध मनुष्योंका पक्षाघात वगैरह एक्विसिटमके उत्कृष्ट निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें दर्द—आँखके ऊपरी अंशमें या अक्षिगह्वरकी जड़में तेज़ दर्द। चेहरा गर्म हो उठता है। (पर लाल नहीं होता); जगह बदलनेवाला शूलकी चोटकी तरह दर्द; माथेकी समूची त्वचामें बहुत खींचन मालूम होती है और ललाटकी त्वचाको हमेशा संकुचित करनेकी इच्छा होती है। कनपटीमें दर्द, भोजनके बाद घटना (इलेप्स देखिये)।

मूत्रयंत्र।—मूत्रस्थलीमें बहुत दर्द, मानो बहुत फूल गयी है—पेशाब हो जानेपर भी यह भाव घट नहीं जाता। बार-बार दुर्दमनीय पेशाबका वेग, पेशाबके बाद भयंकर यंत्रणा (वार्बा, सार्सा, थूजा)। लगातार पेशाबका वेग होता है और प्रत्येक-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें निर्मल पानीकी तरह पेशाब निकलता है, पर उससे भी तकलीफ़ नहीं घटती (प्रति बार कई बून्द पेशाब होता है—एपिस, कैन्थ, कैप्स, डिजि, रियुटा, स्टैफाई)। पेशाबके समय तेज़ जलन जैसी (कैनाब, कैप्स, लैके, नेट्र-कार्ब) और छेदनेकी तरह यन्त्रणा (कैन्थ, कोना, डिजि, ऐ-फास)। दिन और रात सभी समय अनजानमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पेशाब होता है (जहाँ बुरे अभ्यासके सिवा और कोई कारण नहीं मालूम होता—कास्टि, नेट्र-म्यू, पल्स, रास, सल्फ)। वृद्धाओंकी मूत्रस्थलीका पक्षाघात (आर्स, साइक्यू, डेलका, हायो, लैके, लोरी, फास)। मूत्रस्थलीके मुँहके कुछ पीछे ऐसा मालूम होना मानो सुई बेधी जा रही है। रातमें पेशाब करनेके लिये बार-बार शय्यासे उठना पड़ता है (ऐ-फास, स्क्वियुला)। मूत्रनालीके मुँहपर सुई बेधनेकी तरह दर्द और इस दर्दके साथ पेशाबका प्रवल वेग; छूने या दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा मिला रहता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—तीसरे पहर प्रबल लिङ्गोद्गम होता है, अण्डकोष और कोषरज्जुमें बहुत दर्द होता है, विशेषकर बायें पार्श्वमें।

वक्षस्थल ।—बाएँ स्तन-वृन्तके कुछ ऊपर और बाएँ, तेज़ दर्द मालूम होता है। हृदयके स्थानपर तीव्र दर्द, साँस लेनेके समय दर्द बढ़ जाता है।

पीठ और प्रत्यङ्ग आदि ।—कमरमें दर्द, खासकर बैठनेके समय ; चित्त होकर सोने या चलनेके समय आराम मालूम होता है। नींद खुलनेपर बाएँ जानुके पोछेको ओर तेज़ दर्द मालूम होता है और कुछ देरतक चलते रहनेपर यह दर्द घट जाता है। सामान्य परिश्रमसे घुटने चोण या बेकार सुन्न-जैसे हो पड़ते हैं।

वृद्धि ।—दबाने या छूनेपर, बैठने और परिश्रमसे।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, कैनाबिस, फेरम-फास, पल्स, स्क्रियुला, डिजि, डालका, कास्टि, इसमें कैन्थरिसकी अपेक्षा श्लेष्माकी तरह पदार्थ अधिक निकलता है।

शक्ति ।—३रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रमतक।

इरेक्थाइस्टिस

(ERECHTHISTES)

दूसरा नाम ।—फायर वीड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये हुए समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—रक्त और रक्तसञ्चालन यंत्रपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। नाकसे चमकीले लाल रक्तका स्राव, शरीरके किसी भी स्थान, विशेषकर फेफड़ेसे रक्त-स्राव, चेहरेमें उत्तापकी झलक, अतिरजः, थोड़ा पेशाब और हाथ-पैरोंमें शोथ वगैरह लक्षणोंमें विशेष लाभदायक दवा है।

डाक्टर हेलको सूजाक और अण्ड-प्रदाहमें इससे विशेष फायदा दिखाई दिया है।

त्वचापर भी इसकी क्रिया होती है। छालेकी तरह उद्भेदके लक्षणमें इसका बहुत फायदा दिखाई देता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सेनिसियो, इरिजिरन, हैमामेलिस, मिलिफोलियम, कैल्के, कैन्थरिस, पल्स, क्लिमेटिस ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

अर्गोटिनम

(ERGOTINUM)

दूसरा नाम ।—अर्गोटिना, सिकेलि कार्नुटमका एक तरहका क्षार है ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—यह भी सिकेलिकी तरह जरायु और फेफड़ेका स्राव रोकनेकी एक आवश्यक दवा है ; परन्तु सिकेलिका लक्षण जहाँ मौजूद हो, वहाँ सिकेलिका ही प्रयोग करना चाहिये ; सिकेलिसे जब फायदा न हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये ।

इसके अलावा तेजीसे बढ़नेवाली शिराओंकी भंगुरता, खूनका दबाव बढ़ना, शोथ, सड़नेवाले जखम, मलद्वारकी क्रिया-लोपकी वजहसे वेग रोकनेकी सामर्थ्य न रहना (फास्फोरस, ऐलोज) वगैरह लक्षणोंमें भी इससे बहुत लाभ होता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इरिजिरन कैनाडेन्सि

(ERIGERON CANADENSE)

दूसरा नाम ।—फ्लिरेन ; हार्स-वीड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है:—चोटकी वजहसे काला दाग पड़ना ; खाँसी और पेशाबमें तकलीफ़ ; प्रमेह ; अण्डकोषका प्रदाह ; रक्त-स्राव ; अर्श ; शुक्रक्षरण ; जखम ; गर्भावस्थामें रक्त-स्राव इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके प्राय: सभी अंशोंमें खूनकी अधिकता और प्राय: सभी द्वारोंसे शोणित स्राव—यह इरिजिरनका प्रधान क्रियाफल है । मूत्रस्थलीसे लगातार खून बहना, मूत्रकृच्छ्रताके साथ जरायुसे खूनका स्राव ; बाएँ पुट्ठेमें दर्द, पुराना प्रमेह और जलन करनेवाला पेशाब, बार-बार बूंद-बूंद पेशाब होना और भयानक तकलीफ़ देनेवाले आमरक्त रोगोंमें यह मंत्रकी तरह काम करता है । डा० मैसि कहते हैं कि "मलके साथ जितना ही अधिक खून मिला रहेगा और मूत्रयंत्रमें जितनी ही ज्यादा तकलीफ़ मौजूद रहेगी, इरिजिरन उतना ही ज्यादा फायदा करेगा" आर्निका और कैलेण्डियुलाकी तरह "इरिजिरन" एक चोटका जखम आराम करनेवाली और भी दवा है ।

लक्षणावली

मन ।—बहुत सुस्ती या विमर्ष भाव ।

मस्तक ।—माथेमें खूनकी अधिकताकी वजहसे चेहरा लाल हो जाता है और नाकसे चमकीला लाल रङ्गका खून निकला करता है (मिलिलोट) और कुछ थोड़ा बोखार भी रहता है । ललाटमें बहुत तकलीफ़ देनेवाला सर-दर्द और आँखमें जलन रहती है ।

गलेके भीतर ।—दोपहरके पहलेके सब समय नासारन्ध्रमें श्लेष्मा संचित रहता है, तालुमूलमें रुखड़ापन मालूम होता है और ऐसा मालूम

होता है मानो अन्ननालीके ऊपरी भागमें कुछ अटका हुआ है और उसीको हटानेके लिये बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा होती है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—बहुत जी मिचलाता है, पेटमें जलन होती है और चमकीले लाल रङ्गके खूनकी कै हुआ करती है। खाली डकार। ऊपरी पेटमें प्रत्येक कई मिनटोंका अन्तर देकर तेज़ कतरनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बार-बार नाभी-प्रदेशमें थोड़ा दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार फट गया है। उदरकी पेशीमें वायुसे पैदा हुआ दर्द। एकाएक तलपेटमें दर्द होकर धसधसा पाखाना होता है।

मलान्त्र और मल।—मल थोड़ा और रक्त-मिला, पेटमें बहुत ऐंठन या मरोड़ होती है ऐसा दर्द होता है मानो आँतें मरोड़ खा रही हैं तथा तलपेट और मलान्त्रमें बहुत जलन होकर रक्तके साथ कड़ा जमा हुआ मल मिलकर निकलता है, मलान्त्रसे खूनका स्राव, खून गर्म और लाल रङ्गका। खूनी बवासीर—खूनके साथ कड़ा मल निकलता है, मलद्वारके चारों ओर जलन होती है और ऐसा मालूम होता मानो मलद्वार फट गया है।

पेशाब।—पेशाब करनेमें तकलीफ़ होती है; मूत्र-रोध। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय मूत्र-कृच्छ्र, बार-बार पेशाबका वेग; पेशाब करनेके समय बच्चा रोया करता है (लाई; पेशाब करने बाद रोता है—सार्सा; पेशाब बहुत ज्यादा और उसमें झालदार गन्ध)। स्त्रियोंकी योनिका बाहरी भाग प्रदाह-भरा और जलन मिला हो जाया करता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुसे खूनका स्राव और मलान्त्र तथा मूत्राशयके भीतर भयानक यंत्रणा, गर्भ-स्रावके बाद मूत्र-कृच्छ्र और इसके साथ ही कभी-कभी जरायु-भ्रंश रोग भी मौजूद रहता है। झोंक-झोंकसे खून निकला करता है। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर स्राव बढ़ जाता है; रोगिनीकी देह रक्त-शून्य और उजली तथा रोगिनी कमजोर हो पड़ती है। प्रदरका स्राव बहुत होता है; रह-रहकर दर्द पैदा हो जाता है और मूत्राशय और मलान्त्रमें दर्द और तकलीफ़ हुआ करती है। प्रसवके बादका स्राव—थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर खून मिला स्राव आरम्भ हो जाता है। स्थिर

रहनेपर स्राव होना बढ़ता है। कभी-कभी ऋतुके बदले नाकसे खून निकला करता है—विकल्प रजः (Vicarious Menses)।

खाँसी।—क्षय-कासकी पहली अवस्थामें खून-मिला बलगम निकलता है।

वृद्धि।—विश्रामसे, थोड़ा भी शरीर हिलानेपर, बरसाती हवामें और बाएँ पार्श्वमें।

सम्बन्ध।—सदृश।—इपिक, ऐकालिफा, टेरिबि, कैन्य, ऐके (प्रसवके बादका स्राव फिरसे पैदा हो जाना), आर्नि, हैमा इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे २ शततमिक क्रम।

इरियोडिक्टियोन कैलिफार्निकम

(ERIODICTYON CALIFORNICUM)

दूसरा नाम।—यर्बा सैण्टा (Yerba santa)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा; श्वासनलीका प्रदाह; सर्दी; बहुव्यापक सर्दी; यक्ष्मा इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—हाँफनी-खाँसी वगैरह वायुनलीके रोगमें यह विशेष उपयोगी है। वायुनलीभुजगत यक्ष्मा-रोग (Bronchial Phthisis) इसके साथ ही दुबलापन और रातमें पसीना; दमा रोग—बहुत श्लेष्मा निकलनेपर घटना और बहुव्यापक सर्दी (Influenza) या खाँसी वगैरह रोगमें इसका फायदा प्रमाणित हुआ है।

लक्षणावली

मस्तक।—रोगीको सरमें चक्कर आना और ऐसा मालूम होना, मानो वह मतवाला हो गया है। माथेमें सब जगह भीतरसे बाहरकी ओर पीसनेकी तरह अनुभव होना; माथेके पिछले भागमें दर्द अधिक मालूम होता है। माथेके पिछले भागमें और आँखके ऊपर बहुत भारकी तरह दर्द। सरके पिछले

भागमें जलन ; भार ऐसा मालूम होना मानो पिछला माथा धक्का देकर बाहर निकल आना चाहता है।

कान।—बीच-बीचमें दाहिने कानमें तेज़ दर्द या एकाएक दाहिनी ओरसे बाईं ओर माथा घुमानेपर दर्द।

नाक।—बार-बार छींक (साइक्ले)। सर्दी—जो श्लेष्मा निकलता है, वह हरा और पीला मिला रहता है, जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर (Fauces) और कण्ठमें जलन मालूम होती है।

पाकस्थली।—बहुत भूख और सभी पदार्थोंसे रुचि। भयानक मिचली—दौड़नेपर बढ़ जाती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषमें बहुत दर्द और खींचन मालूम होना, विशेषकर बाएँ अण्डकोषमें ; किसी तरहका दबाव सहन नहीं होता ; रोगी हिलना नहीं चाहता कि कहीं दर्द न हो ; किसी तरहकी कोमल चीज़पर रखनेसे आराम मिलता है।

श्वास-यन्त्र।—गला साँय-साँय करता है (बेल, कास्टि, फास)। दमा—इसके साथ ही नाकसे पतली सर्दी निकलती है और वायुनलीके भीतर बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा हो जाता है। यह जमा हुआ श्लेष्मा निकलनेपर दमामें आराम मिलता है। दाहिने फेफड़ेमें थोड़ा-थोड़ा दर्द और गलकोषमें जलन मालूम होना।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कास्टि, ड्रोसेरा, ऐरेलिया-रेसि, स्पञ्जि, पिक्स-लिक, बालसम-पेरु, लाइकोपस, रटिण्ड, फास, स्टैन।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम तथा द्वितीय दशमिक क्रम।

इरोडियम

(ERODIUM)

दूसरा नाम ।—इरोडियम साइकोटेरियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—रूसके जनसाधारण इसे एक रक्त-शोधक औषधिके रूपमें व्यवहार करते हैं, पर जरायुके ऊपर ही इसकी क्रिया विशेष दिखाई देती है । सिकेलि और अर्गोटिनमकी तरह इसको भी बहुत ज्यादा ऋतुस्राव रोकनेकी शक्ति है । जरायुका पोलिपस अर्बुद भी इससे आराम होता देखा गया है (हाइड्रैस्टिस) ।

शक्ति ।—मूल अर्क, निम्न-शक्ति और क्वाथ ।

इरिञ्जियम एक्वेटिकम

(ERYNGIUM AQUATICUM)

दूसरा नाम ।—बटन स्नेक-रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हट जाना ; आँखोंका प्रदाह ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; शोथ ; प्रमेह ; अर्श ; श्वेत-प्रदर ; शुक्र-क्षरण ; जखम ; मूत्र-पथरीका दर्द ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरकी सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंपर इसकी क्रिया है । इसके द्वारा आँख, कान, नाक, मुख-विवर, अन्त्राशय, मूत्र-नाली और स्त्री-योनिके भीतरकी झिल्लीकी उत्तेजनाकी वजहसे इन सभी द्वारोंसे गाढ़े पीले रङ्गके श्लेष्माका स्राव होता है और पाकाशय तथा अन्त्राशयसे खूनका

स्राव हुआ करता है। आर्निका, कैलेण्डुला, हैमामिलिस, इरिजिरन वगैरहकी तरह यह भी एक चोटकी वजहसे पैदा हुए जखमको आराम करनेवाली दवा है। ऐसे अनुभवके साथ सरमें दर्द कि माथा मानो फैल रहा है, किन्तु पेशाबके यन्त्रोंकी बीमारीमें ही सबसे अधिक फायदा दिखाई दिया करता है, स्नायविक उत्तेजनाके साथ-साथ पेशाब रुकना, मूत्र-पथरीकी वजहसे शूलका दर्द, सामान्य कारणसे ही वीर्य-पात हो जाना या मूत्राशय-मुखशायी-(Prostate) ग्रन्थिसे रस-स्राव वगैरह रोगोंमें इससे विशेष लाभ होता है। बहुव्यापक सर्दी रोगमें गले और स्वरनालीके मुँहपर जलन, वायुनलीमें बराबर सुरसुराहट होकर खाँसी आया करती है और गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है—इस लक्षणमें भी यह लाभदायक है। शरीरके बायें पार्श्वके साथ इसकी बहुत अधिक घनिष्टता प्रकट हुआ करती है और इसके लक्षण शरीरके एक अंशसे दूसरे अंशमें फैल जाया करते हैं।

लक्षणावली

मन और मस्तक।—किसी विषयमें भी मन नहीं लगा सकता (इथ्यु, ऐइलैन-ग्लैन, ऐवेना-सैट, लैक-कैन, ऐसिड-फास, सार्सा, जेरोफिल)। मन लगानेकी चेष्टा करनेपर सरमें भार पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होना कि भौं धीरे-धीरे फैल रही है—माथा झुकानेपर यह अनुभूति बढ़ जाती है। बाईं आँखके ऊपर तेज़ दर्द, माथा झुकानेपर यह अनुभूति बढ़ जाती है। बाईं आँखके ऊपर तीव्र वेदना, माथा झुकानेपर यह दर्द आँख छोड़कर गर्दन और कन्धेकी पेशीमें चला जाता है और पृष्ठ-फलकके नीचे मालूम होने लगता है। मूर्द्धादेश और मुखमण्डलके बायीं ओरकी आँखसे दाँततक बेधने जैसा तेज़ दर्द मालूम होता है। माथेकी त्वचामें बहुत दर्द, केश झाड़नेपर बहुत दर्द मालूम होता है (ऐल्यु, ऐम्ब्रा, ऐसेर, बैराई, बोवि, कैप्स, कार्बो-वे, चायना, लैके, मार्क, नाइट्रा, सैलिन, साइलिसिया, स्पञ्जि, थूजा, कैल्के, कास्टि, फाइटो)।

आँख।—आँखोंमें जलन, रोशनी सहन न होना; आँखकी बाहरी त्वचाका प्रदाह (Scierotitis)—इससे पानीकी तरह या पीबकी तरह श्लेष्मा निकलता है (कैल्मी-लैट, आर्स, मार्क-प्रोटो-आयोड, अरम-म्यु, थूजा, नक्स-मस, साइलि)। बाईं आँखका पीब पैदा करनेवाला प्रदाह (Purulent

Inflammation)—लसदार पीब-भरा श्लेष्मा निकलकर पलकें सट जाती हैं और योजक त्वचा मांसांकुर-भरी और रुखड़ी मालूम होती है (आर्जेण्ट-नाई, ऐको, रास, मर्क-कोर, पल्स, हिप)। पेशियाँ सब अकड़ी मालूम होती हैं और आँख हिलानेसे दर्द मालूम हुआ करता है।

कान ।—छेदनेकी तरह दर्द, मानो कोई कानके भीतर खींचकर फाड़ रहा है। कर्णपथनालीका (Eustachian Tube) प्रदाह, बाएँ कानके भीतर और बाहर सूजन, स्पर्श सहन न होना, लगातार दर्द बना रहना और उसमेंसे सामान्य कारणसे रक्तस्राव होना ; रोगी कानसे गाढ़ा सफेद रङ्गका, खून-मिला बदबूदार पीबका स्राव होता है (ऐसाफिट, बोर, बोवि, कैल्के, कास्टि, सिस्टस-कैन, कैलि-कार्ब, लैके, हिप, मर्क, ऐसिड-नाई, पेट्रोल, पल्स, साइलि) ; बायें कानमें लगातार सों-सों भों-भों और कभी-कभी कटकट शब्द होता है (बैराई, मस्कस, ऐसिड-नाई)।

नाक ।—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा निकला करता है (कैल्के, क्रियो, लाई, नेट्र-कार्ब, फास, पल्स, सिपि, स्टैन, थूजा)।

पाकस्थली ।—पाकाशयमें खालीपन मालूम होना, मानो उसमें कुछ भी नहीं है (कैमो, इग्ने, इपिक, काक्यु, मैग-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल, रियुटा, टियुक्रि) अथवा पेटमें भार और ऐसा मालूम होता है कि नीचेकी ओर ठेल रहा है। पाकाशयके ऊपर चोट लगनेकी वजहसे ऊपरी पेटमें जलन होती है और थक्केके साथ गाढ़ा खून मिला चमकीले लाल रङ्गका खून निकला करता है (आर्नि, इरिजिरन, चायना, फेरम, लिडम)।

मलान्त्र और मल ।—छोटी आँतोंमें शूलकी तरह या ऐंठनकी भाँति दर्द। बच्चोंके आमातिसारमें (पोडो, मर्क-सोल, ऐलो)। कब्जियत—सूखा, कड़ा और सीसेके रङ्गका मल, पाखाना फिरनेके समय बहुत काँखना और ऐसा मालूम होता है मानो मलद्वार फट गया (ऐसिड-नाई)।

पेशाब ।—बार-बार पेशाबका वेग और पेशाबके समय लिङ्गमुण्डके कुछ पीछे मूत्रनालीके भीतर जलन और डङ्क मारनेकी तरह दर्द हुआ करता है (कैन्थ, कैनाब, कैप्स)। प्रत्येक पाँच मिनटके अन्तरसे बाध्य होकर पेशाब करना पड़ता है ; लगातार बून्द-बून्द पेशाब हुआ करता है (पेट्रोल) और

मूत्रनालीके भीतर ऐसी जलन होती है, मानो जला जाता है (ऐको, कैनाब-इन, कैन्थ, नक्स-वोम, टेरिब)। मूत्र-पथरीकी वजहसे शूलका दर्द (Renal-colic—ओसिमम-कैन, पैरिइरा, बार्बा, डायस्को, लाइको, सार्सा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अश्लील सपने देखना और वीर्यपातके साथ रमणेच्छाकी प्रबलता। मूत्राधारके मुखाशयिकसे सामान्य कारणसे ही रस बहना (ऐग्नस, ऐल्यू, इस्क्यि, ऐनाक, कैल्के, हिप, नेट्रम-कार्ब, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सल्फ, थूजा)। शुक्रमेह या स्वप्नदोष—अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय परितृप्ति (सिङ्को, नक्स, डिजिटेलिन, ऐसिड-फास, स्टैफाइ, सल्फ) या बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवनका दुष्परिणाम, रातमें लिङ्गमें कड़ापन होनेके साथ शुक्रक्षय होनेके बाद आलस्य और सुस्ती मालूम होना। अण्डकोषमें चोटकी वजहसे (या किसी दूसरे कारणसे) लिङ्गमें कड़ापन होनेपर दिन-रात शुक्रक्षरण हुआ करता है और आलस्य मालूम होता है (बेराइ, कैलेड, आर्स्टि, चायना, कोना, क्लिमेट, कैलि-कार्ब, लाइ, फास, ऐ-फास, सेलिन, सिपि, स्टैफि, सल्फ)। दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन, इसके साथ ही नया या पुराना प्रमेह।

श्वास-यंत्र।—बहुव्यापक सर्दीके बाद वायुनलीमें बार-बार सुरसुरी होकर खाँसी आती है और गाढ़ा पीले रङ्गका श्लेष्मा-भरा कफ निकलता है और गलेमें तथा स्वरनलीमें लगातार जलन और कुटकुटी होती है (डा० हेल)।

सम्बन्ध।—**तुलनीय।**—मन:संयोगमें समर्थ न रहना (इथ्यूजा); सामान्य कारणसे ही प्रोस्टेट ग्रन्थिसे रस बहना (कोनायम); स्वप्नदोषमें—(चायना, जेलस), मूत्रयन्त्रमें (कैन्थ, कैनाबिस), कब्जियतमें (नाइट्रिक, ऐसिड), सर्दीमें (जेलस)।

सदृश।—इथ्यूजा, ऐवेना-सैट, कोना, जेलसि, चायना, ऐसिड-फास, कैन्थ, कैनाब-सैट, पेरिरा, ओसिमम, डायस्को, ऐसिड-नाइ, स्टिक्टा-पाल।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

इरिञ्जियम मेरिटिमम

(ERYNGIUM MARITIMUM)

दूसरा नाम ।—सी-होलि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलके साथ समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आँख, पुट्ठा, कण्ठदेश और गलेके पिछले भागमें दर्द, पाकाशय-प्रदेशमें खाला मालूम होना, खाँसी, ज्वर, त्वचापर छालेकी तरह उद्भेद प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है । स्नायविक दुर्बलता और पुं-जननेन्द्रियकी दुर्बलतामें यह कोनायमसे तुलनीय है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

एरिथ्रिनस

(ERYTHRINUS)

दूसरा नाम ।—रेड-मूलेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दक्षिण अमेरिकाकी एक तरहकी मछलीसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उपदंश रोगमें लाल रङ्गके उद्भेदके लक्षणमें लाभदायक है । अरम मूरियेटिकमका यह अनुपूरक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

एसिरिनम

(ESERINUM)

दूसरा नाम।—एसिरिन ; फाइसोस्टिग्मिन। फाइसोस्टिग्माका क्षार विशेष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—चक्षु-चिकित्सकगण ग्लोकोमा रोगमें आँखकी पुतलीके संकोचनके लिये इसकी स्थानिक व्यवस्था किया करते हैं। आँखकी पुतलीका सङ्कोचन, पलकोंका पक्ता हिलना, आँखके गोलेमें जखमकी तरह मालूम होना, किसी तरह आँखसे काम लेनेपर अस्पष्ट दृष्टि, आँखके चारों ओर और माथेमें दर्द, ताण्डव, हृत्पिण्डकी कमजोरी वगैरह होमियोपैथीके मतसे इसका निर्देशक लक्षण है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—फाइसोस्टिग्मा, जेल्स, ऐङ्गोपिस।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इथिरम

(ETHYRUM)

दूसरा नाम।—इथिल आक्साइड, इथिलिक ईथर।

उपयोगिता और आभास।—यह एक बेहोश करनेवाली दवा है। मिचली, वमन, ब्राङ्काइटिस, खाँसी, प्रलाप, हिचकी, सन्धि-आवरणका प्रदाह वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इथिलम नाइट्रिकम

(ETHYLUM NITRICUM)

दूसरा नाम ।—नाईट्रेट-ईथर ।

उपयोगिता और आभास ।—यह भी एक बेहोश करनेवाली दवा है। हृत्पिण्डका बढ़ना और सरमें चक्कर आना लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुकैलिप्टस ग्लोब्यूलस

(EUCALYPTUS GLOBULUS)

दूसरा नाम ।—फीवर ट्री ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—धमनीका अर्बुद ; दमा ; मूत्राधारकी बीमारियाँ ; श्वासनालीका प्रदाह ; अतिसार ; आमाशय ; अजीर्ण ; पेशाबमें तकलीफ़ ; नासूर ; प्रमेह ; वात ; प्लीहा ; उपदंश ; सान्निपातिक ज्वर ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत लार बहना ; बहुत स्फूर्तिमय चित्त, इधर-उधर घूमनेकी बहुत इच्छा ; बहुत उल्लास और ताक़त मालूम होना ; रक्तहीन मनुष्योंके माथेमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे पैदा हुए सर-दर्दको युकेलिप्टस कम कर देता है और नींद लाता है। स्त्री-मूत्रनालीका शिरामय अर्बुद और बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रक्षार निकलनेके साथ पेशाब अधिक होना इत्यादि कई युकेलिप्टसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—बहुत प्रसन्न चित्त ; शरीरमें बहुत फुर्ती और ताक़त मालूम होना ; हमेशा इधर-उधर घूमते रहनेकी इच्छा ; शारीरिक व्यायाम करनेका बहुत आग्रह (रास देखिये) ।

माथा।—जिन व्यक्तियोंमें खून कम रहता है, उनके माथेमें खून ज्यादा सञ्चय होनेकी वजहसे सर-दर्द—यह दर्द घटाकर नींद लाता है। आँखोंमें जलन और करकराहट होती है। सर्दी और प्रमेहकी वजहसे आँखोंका प्रदाह।

नाक।—नासा-दण्डके बीचका अंश चिपक जाता है, मानो नाकसे खून जानेका यह पूर्व लक्षण है। ऐसा मालूम हो, मानो नाकका छेद रुक गया है। नयी सर्दी, पतला पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है। पुरानी सर्दी, बदबूदार पीबकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (ग्रैफ, कैलि-कार्ब)।

चेहरा।—मुखमण्डल प्रदीप्त और लाल। मुँहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें लार जमा हो जाया करती है। प्यासके साथ मुँहके भीतरसे कण्ठ और अन्ननालीतक कुछ जलन, निगलनेके समय गलेमें भरापन और दर्द मालूम होता है। मानो गलेमें बराबर श्लेष्मा जमा रहता है और थोड़ा-सा गाढ़ा सफेद फेन-भरा श्लेष्मा निकलता है।

पाकस्थली।—भूख और रुचि बहुत ज्यादा; बहुत अधिक प्यासके कारण रोगी बेचैन हो पड़ता है। जलन करनेवाली तेज़ डकार; पाकस्थली भरी और भारी मालूम होती है, मानो न जाने कितना खा लिया है। नाड़ीकी गति थिरकती हुई, पाकाशयमें टपक (नक्स, आर्स, कर्णास, केल्के, कैलि-कार्ब)। अग्निमान्द्य—पाचन कार्य बहुत विलम्बसे होता है (टैरेण्टि, नूफर-लूट)। बार-बार डकार आती है और पेट फूला रहता है।

अन्त्राशय।—नाभि और ऊपरी पेटमें जलन। नाभि-प्रदेश और समूचे अंत्राशयमें गड़बड़ी मालूम होना; रह-रहकर दर्द होता है, मानो उसे पतले दस्त आना चाहते हैं (रैनान-सिलिरेट, ऐपिस, ऐङ्गस, ऐण्टि-क्रूड)। सन्ध्याके बाद भोजन करनेपर तलपेटमें तेज़ दर्द। पेट फूलता है।

मल।—तलपेटमें तेज़ दर्द और सोकर उठनेपर पानीकी तरह पतला और पीला पाखाना होता है (इथ्य, ऐगार, ऐसिड-फ्लु, आर्स, नेट्र-सल्फ, सोरिन; सवेरे शय्यासे उठनेपर, जरा इधर-उधर करनेसे ही पाखाना लग आता है—ब्राई, लेप्टेन, नेट्र-सल्फ; शय्यासे उठते ही—लाई, सल्फ; उठनेके पहले—ऐलो, बेल, बोवि, चायना, नूफर, सोरि, रियुमेक्स, सल्फ)। पुराना आम भरा और रक्त-मिला उदरामय। रक्तामाशय—मलांत्रके भीतर उत्ताप

मालूम होना, कूथन, आम-भरा दस्त और सुस्ती ; मलांत्रसे खूनका स्राव, ज्वर-विकार (Typhoid) में उदरामय ; मल तथा निकली हुई भाफ़ बहुत ही बदबूदार।

पेशाब।—पुराना शल्क-मोचक वृक्कक-प्रदाह (Chronic Desquamative Nephritis) अर्थात् एक प्रकारका मूत्र-ग्रन्थिका प्रदाह, नया—कक्कस, भ्रम); मसानेमें मांसांकुर पैदा होनेका लक्षण, पीव पैदा होनेवाला मसानेका प्रदाह, मसानेमें पानी अधिक जमा हो जानेकी वजहसे उसका फूलना और प्रदाह (Hydronephritis) वगैरह मसानेकी बीमारीमें भी यह काम करता है (डा० क्लार्क)। मूत्राशयका प्रतिश्याय या सर्दी (Catarrh of the bladder), ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्राशयसे पेशाब निकालनेकी शक्ति गायब हो गयी है (हिपर, सार्सा, कैमो)। पेशाबके समय दर्द तथा वेग और जलन। पेशाबकी अधिकता ; पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना (लाई, रास, सिपि, स्टैफ) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें मूत्रक्षार (Urea) पैदा होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—मूत्रनालीका शिरामय (Vascular) अर्बुद (थूजा)। प्रदर—स्राव जखम पैदा करनेवाला और सड़ी गन्ध भरा ; मूत्र-नाली द्वारके चारों ओर जखम भरा रहना। दाहिने स्तन-वृन्तके नीचे छुरी मारनेकी तरह यंत्रणाजनक अर्बुद (फाइटो)।

श्वास-यंत्र।—बुड्ढे या रोग जीर्ण मनुष्योंका वायुनालीभुज-प्रदाह (Bronchitis); वायुनलीसे बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है। श्वासरोग—रोगसे दुबला, खूनसे रहित मनुष्यका, भयंकर तकलीफ़ देनेवाला श्वासकष्ट, इसके साथ ही हृत्पिण्डकी सहानुभूतिक यंत्रणा। कफ़ सफ़ेद रङ्गका, गाढ़ा और फेन-भरा (फास, कैलि-आयोड)।

प्रत्यङ्ग आदि।—वातका दर्द—रातमें (पल्स, सिफिलिन, मार्क-सोल, कैलि-आयोड, कोलचि)। चलनेसे (ब्राई, कैल्के, स्टेलारिया-मिड) या कोई चीज़ उठानेपर दर्द बढ़ जाता है ; रोगवाला अङ्ग अकड़ा और क्लान्त मालूम होता है ; ऐसी अनुभूति मानो सुई बेधी जा रही है। इसके बाद ही दर्द हुआ करता है। हाथकी कलाई (Metacarpal और पैरकी अंगुलीके पोरोंकी हड्डीकी सन्धिमें अर्थात् तलहत्थी और पैरके पीछे तलवाकी पीठपर

गुल्मकी तरह (Nodular) अर्बुद निकल आते हैं (हेक्ला, केलि-बाइ, केलि-आयोड, कैल्के-फ्लु, साइलि)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—बार-बार आक्रमण करनेवाला दुरारोग्य मलेरिया (Malarial Fever) ज्वर; इसके साथ ही बढ़ी हुई प्लीहा, फूली हुई और स्पर्श सहन नहीं होता और अन्तमें उसका ऊपरी भाग सिकुड़ा (Cirrbotic) और कड़ा हो जाता है। शीत, उत्ताप और पसीना—सभी अवस्थाओंमें सरमें चक्कर आता रहता है, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चयकी वजहसे सर-दर्द, अच्छा न मालूम होना और अङ्ग-प्रत्यङ्गमें थोड़ी देरके लिये पैदा होनेवाला, फाड़ने या सूक्ष्म शलाका वेधनेकी तरह वातका दर्द मालूम होता है—रातमें वृद्धि। पसीना बहुत ज्यादा बदबूदार और कमजोर करनेवाला, (मलेरिया या पूतिवाष्पज ज्वर आदि या बहुत अधिक क्विनाइन सेवनकी वजहसे शारीरिक अस्वस्थताको दूरकर अच्छी तरह स्वास्थ्य प्राप्त करनेमें सहायता नहीं करता है)।

त्वचा।—दादकी तरह खुजली निकलना; ग्रन्थियोंका बढ़ना; दुरारोग्य सड़नेवाला जखम आदि या शोथ (साइलि)।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—तुलनीय, ऐण्टि-क्रूड (श्लैष्मिक त्वचा); ऐण्टि-टार्ट (दमा और श्वासनालीका प्रदाह); आर्स, चायना (सविराम ज्वरमें); साइलि, (नासूर); टेरिब (मूत्र-यंत्रमें); फाइटो, हाइड्रैस, सल्फ (अर्बुदमें)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठी शततमिक शक्ति; ज्वर आदिमें २०० शततमिक क्रमतक व्यवहृत हुआ करता है।

इयुजिनिया जैम्बस

(EUGENIA JAMBOS)

दूसरा नाम।—रोज ऐपेल (मालव देशकी बेर)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे; सर्दी या बोखार; कब्जियत; खाँसी; अतिसार; दो देखना; हिचकी; आँत उतरना; ध्वजभङ्ग; कर्ण-प्रदाह; गलेका जखम।

उपयोगिता और आभास।—चेहरेपर मुँहासे निकलते हैं और उसके चारों ओर दर्द मालूम होता है; धूम्रपानके बाद मिचली घट जाती है; रातमें पैरके तलवेमें ऐंठन होती है; पैरकी अंगुलीकी नीचेवाली त्वचा फट जाती है। मतवालापन—क्षणभर पहले एक चीज़ आनन्ददायक और चमकीली मालूम देती थी, पर क्षणभर बाद ही वह सब अन्धकारमय और दुःखका आगार मालूम होने लगती है, माथेमें सब चक्कर खाया करता है। पासके मकान ऐसे मालूम होते हैं, मानो उलट गये हों; दो देखना—सभी चीजें दो दिखाई देती हैं और कुछ ध्यान देकर देखनेसे भ्रम दूर हो जाता है; आँखोंसे ऐसा मालूम होता है मानो आगकी लपट निकल रही हैं; सन्ध्या तथा रातके समय धार बांधकर आँसू बहा करते हैं; धूपकी ओर देखनेपर आँखमें पानी भर आता है; आँख बन्द करनेपर जलन होने लगती है, उसी वजहसे रातमें नींद नहीं आती; कमर और पेटकी पोटली स्थित पेशीमें और नितम्बास्थि तथा जानु-प्रदेशमें दर्द होता है; मेरुदण्डके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ गड़ रहा है और पीछेकी ओर टेढ़ी करनेपर वह घट जाया करता है; माथेके दाहिने पार्श्वमें मानो भारी काठका टुकड़ा रखा हुआ है; जगह बदलनेवाला वातका दर्द वगैरह लक्षण सब युजिनियाके प्रधान क्रियाफल और निर्णायक हैं। पेशाबके बाद एक मानसिक लक्षणोंका परिवर्त्तन—युजिनियाका एक और अनन्य साधारणतः लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—हमेशा एकान्तमें रहकर सोचनेकी इच्छा (इग्ने, वेरेट)। शराब आदि पीनेकी वजहसे मतवालापन—बहुत आलस्य प्रकट करता है और बकता है; सभी अवस्थाओंमें उसका जी अच्छा नहीं मालूम होता; बैठे रहनेपर सोनेकी इच्छा करता है (बिस्मथ, लेमियम)। प्रसवके बाद एकाएक अद्भुत मानसिक परिवर्त्तन हो जाया करता है—सभी चीजें बहुत अधिक सुन्दर

और चमकीली दिखाई देती हैं, पर फिर कुछ देर बाद ही सब अन्धकारमय और दुःखित करनेवाली मालूम होती हैं।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सब चीजें उल्टी दिखाई देती हैं। सन्ध्याके समय अधकपारीका दर्द आरम्भ होता है—माथेके भीतर मानो मस्तिष्क हिलोरें ले रहा है और जलन होती है तथा ऐसा मालम होता है, मानो आँखकी ओर मस्तक धक्का दे रहा है; आँखसे पानी गिरा करता है, जी मिचलाता है और वमन होता है, उस समय सब यन्त्रणाएँ बढ़ जाती हैं। मानो एक भारी काठका टुकड़ा माथेके दाहिने पार्श्वमें बँधा हुआ-सा मालम होता है (मानो ललाटमें काठका टुकड़ा बँधा हुआ है—कक्युराइन, रस-टक्स); रातमें माथेमें दर्द होता है, आँखोंमें बहुत जलन होती है, भयानक प्यास रहती हैं और बहुत ज्यादा पेशाब होता है।

आँख।—आँखमें जलन होती है, ऐसा दर्द होता है मानो उसके भीतर चबा रहा है और आँसू बहा करता है। पासके मकान ऐसे मालम होते हैं मानो उलट गये हैं, चारों ओर अन्धेरा दिखाई देता है और द्वित्व-दर्शन अर्थात् प्रत्येक पदार्थ दो मालम होते हैं, परन्तु ध्यानसे देखनेपर यह द्वित्व-दर्शन दूर हो जाता है; दाहिनी आँखके सामनेकी सब चीजें मानो घूमती-सी मालम होती हैं, मानो तुरन्त ही सब अंधेरेमें ढँक जायगा। ऐसा मालम होता है मानो आँखसे आगकी चिनगारियाँ निकल रही हैं (आँखमें गर्मी मालम होती है—बेल, डायाडेमा, क्रियो, लेके, लाई, मिफाइट, मर्क, रास-रैड, स्पाई, टेबाक, वेरेट)। आँखमें जलन, आँख बन्द करनेपर जलन बढ़ जाती है और इसीलिये रातमें सो नहीं सकता (आँख बन्द करनेपर दर्दका बढ़ना—क्लिमेट, क्रोकस; आँख बन्द करनेपर उत्तापका बढ़ना—कोरैल)। सूर्यकी ओर देखनेपर और आँखमें धूप लगनेपर आँसू निकलने लगना (ब्राई, इग्ने)।

मुखमण्डल।—मुँहासे—व्रणके चारों ओर दर्द (डा० एच० सि० ऐलेनके मतसे मुँहासा रोगमें युजिनियाके बाद कैलि-ब्रोम प्रयोग करनेपर वह एकदम अच्छा हो जाता है), मुँहमें बहुत ज्यादा लार पैदा होती है (इयुकेल, ब्रोम, किनिन-सल्फ, नक्स-युग, नक्स-मस, प्लम, रास, सैबाड), विशेषकर भोजनके पहले और बोलनेके समय।

पाकाशय ।—धूम्रपानकी बहुत इच्छा (डैफनो, स्टैफ, थिरिड)। पाकस्थलीके द्वार-देशमें अकड़नकी तरह दर्द और इसी वजहसे मिचली ; धूम्रपानसे घटती है (धूम्रपानके कारण मिचली—कार्बो-ऐन, क्लिम, युफ्रे, इग्ने, फास)। गिर पड़नेके कारण पुट्ठेकी आँतोंका उतरना (Inguinal)।

पेशाब ।—गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। प्रसवके बाद शरीरमें सिहरावन होना (प्लेट) या आँखके सामने एकाएक चमकीली रोशनी झलक उठती है और उसी रोशनीमें सब चीजें साफ़ दिखाई देती हैं।

पुं-जननेन्द्रिय ।—नपुन्सकता, रमणके बाद वीर्यपात मृदु-भावसे हुआ करता है या बिलकुल ही नहीं होता (कैलेड, ग्रैफ, लैके, लाई)। रमणके बाद पसीना होता है (नेट्र-कार्ब) और प्यास बढ़ जाती है (रमणके बाद उत्ताप मालूम होना—नक्स ; क्रोधी चित्त—साइलि ; मुँह सूख जाता है—नक्स ; दाँतमें दर्द—डैफनो ; स्वप्नदोष—नेट्र-म्यूर ; अस्पष्ट दृष्टि—कैलि-कार्ब ; मूत्र-नालीमें यन्त्रणा—कैन्थ ; सरमें चक्कर आना—बोवि ; वमन—मस्कस ; सुस्ती—ऐगार, कैल्के, कोना, कैलि-कार्ब, लाई, पेट्रोल, सेलिन, सिपि)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—हरेक रातमें तलवेमें ऐंठन होती है (कैल्के, चेलिडो, काफि, फेर, हिप, पेट्रोल, प्लम्ब, सिकेलि, साइलि, स्टैफाई, सल्फ)। अंगूठेके चारों ओरकी खाल उधड़ जाती है और पककर उसमें पीब हो जाता है (मर्क)। सर्दीकी वजहसे (Catarrhal) वातका दर्द—दर्द जगह बदला करता है (पल्स, कैलि-बाई)। कमर, जंघाकी पीटलीकी पेशीमें (Calves), त्रिकास्थि-प्रदेशमें और जानुमें दर्द मालूम होता है। पीठमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है, मानो मेरुदण्डमें कुछ गड़ रहा है ; पीछेकी ओर शरीर झुकानेपर आराम मालूम होता है।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—पल्स (बदलनेवाला आमवातका दर्द) ; कैलि-बाई, युकैलिप्टस, लोरोसिरेसस (सर्दीमें)।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

इयोनिमिनम

(EUONYMINUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इयोनिमनस वृक्षका सत।

उपयोगिता और आभास।—एकलेक्टिक चिकित्सकगण टाइफायड ज्वर, कब्जियत और अग्निमान्द्य रोगमें इसका व्यवहार किया करते हैं। होमियोपैथीके मतसे यह कालेरा, उदरामय, शोथ, यकृत-दोष, आमाशय, अण्डलाल मिला पेशाब वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इयोनिमस एट्रोपर्प्युरिया

(EUONYMUS ATROPURPURIA)

दूसरा नाम।—वाहो, टार्निंङ्ग बूष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी छाल और जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—एकलेक्टिकगण इनिमिन और इयोनियम युरोपियाकी तरह इसे भी एक यकृत रोगकी विशेष औषधिके रूपमें व्यवहार करते हैं। होमियोपैथीके मतसे पित्त-ज्वर, यकृतके बहुतसे उपसर्ग, हैजा और मिचलीके लक्षणमें इसका व्यवहार प्रचलित है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इयोनिमस युरोपिया

(EUONYMUS EUROPÆA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखे बीजसे विचूर्ण और तर बीजसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—निम्न-लिखित रोगोंमें लाभदायक है :—ताण्डव ; आक्षेप ; अतिसार ; पथरी ; सर-दर्द ; यकृतका विकार।

उपयोगिता और आभास।—इससे तैयार किये हुए उपचारका नाम "इयोनिमिनम" है। लाला मूत्रसे पैदा हुए सार्वाङ्गिक शोथ-रोगमें यह विशेष लाभदायक है, यहाँतक कि गर्भावस्थामें लाला मूत्र (Albuminuria) भी इससे आराम हो जाता है। यकृतमें खूनकी अधिकताकी वजहसे यकृतका फूलना। पैत्तिकता (Biliousness); पित्तज सर-दर्द, लेप चढ़ी जीभ, मुँहका कड़वा स्वाद, कब्जियत, बवासीर, कटिवातकी तरह कमरमें भयानक दर्द, इसके साथ ही कितने ही रंगोंका बहुत ज्यादा पतला दस्त ; लालामूत्रके साथ पाकाशयकी बीमारी ; सरमें दर्द, कमजोरी, सरमें चक्कर आना, तिमिर दृष्टि वगैरह इयोनिमसके द्वारा आराम होता है। इसके द्वारा शरीरके बाएँ पार्श्व पर ही अधिक आक्रमण हुआ करता है। इसका दर्द कतरनेकी तरह, सूक्ष्म शलाका बेधनेकी तरह या खींचनकी तरह होता है। गण्डास्थि और जीभमें कतरनेकी तरह दर्द ; मूत्रनालीसे मूत्राशयतक यह दर्द फैल जाता है। दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है और सोने बाद दर्द घट जाता है या दूसरी जगह पैदा हो जाता है। माथा, वक्ष और उदरमें दर्द—भोजनके बाद बढ़ना, ज्वराधिकारमें शीतकी वजहसे समूची देह काँपा करती है। शरीरके कितने ही स्थानोंमें सूखी फुन्सियाँ निकलती हैं और वह खुजलाया करती हैं।

लक्षणावली

मन।—चिड़चिड़ा, असन्तुष्ट चित्त, परिश्रम करनेकी इच्छा न होना (ऐनाक, ऐगार, ग्रैफ, गुयाई, लाई, आक्साई, ऐ-पाई, सैबाई सिपि, सल्फ, टैराक्स, जिङ्क)। किसी विषयमें भी मन लगाकर सोच नहीं सकता, सोचनेपर

सब भाव गायब हो जाते हैं (क्रियो, मैन्सि, नक्स-मस, रेनान-बल्ब)। हमेशा अमनोयोगी (ऐग-कैस्ट, ऐमोन-कार्ब, बोवि, कास्टि, चेलिडो, कैलि-ब्रोम, लेक-कैन, नक्स-मस, साइलि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, मानो सब चीजें चक्कर खा रही हैं (आर्नि, बेल, ब्राई, साइक्यु, कोना, सिक्लेम, नेट्र-मूर, नक्स, फास, पल्स, वेलि, वेरेट) और इसके साथ धुँधली दृष्टि (ऐको, कार्बो-वे, कैमो, हायो, लोरो, मार्क, नक्स, पल्स)। ब्रह्मतालुके पार्श्वमें मानो एक खोल घुस रही है ऐसा मालूम होना (काफि, हिप, इग्ने, नक्स, स्टैफ, थूजा, मैग-कार्ब)। कँपानेवाली सरकी वेदना (बार्बा, हेलिबो, लैके, मैग-सल्फ, मेजेर, नक्स, साइलि, थूजा)। भोजनके बाद सरमें दर्द (कैलि-कार्ब, लैके, नक्स-मस, नक्स-वोम, पियो, फास, कैलेण्डियु, सल्फ)।

आँख।—तिमिर दृष्टि, सब चीजें मानो बादलमें ढँकी हुई हैं ऐसा मालूम होना (ऐल्य, बेल, कैल्के, कास्टि, क्रोक, सिक्लेम, हिमैट, इग्ने, मार्क, प्लम, रियुटा); मानो नज़रके सामने काले बिन्दु उड़ते फिरते हैं (ऐसिड-फ्लु, ऐगार, ऐमोन-मूर, बेल, कैल्के, चायना, काकु, कोना, मार्क, ऐ-नाई, फास, सिपि, साइलि)।

अन्त्राशय।—उदरमें सङ्कोचन (बेल, कोलो, हिप, हायो, ऐसिड-मूर, नक्स, पोडो, प्रूनस-स्पाई) और छेदनेकी तरह यंत्रणा (आर्स, कोलो, कोना, ऐसिड-नाई), ऐसा मालूम होता है मानो पंजरेके नीचे किसी अस्त्रके द्वारा पेट चीरा जा रहा है। तलपेटकी यंत्रणा आदिका भोजनके बाद बढ़ जाना (आर्स, ब्राई, कार्बो-वे, कैस्टोर, चेलिडो, चायना, साइक्यूट, कोलो, इग्ने, आयोड, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स, क्रोटल, क्यूप्रम-आर्स, सल्फ)। अर्श और तेज़ कमरके दर्दके साथ कब्जियत। उदरामय, मल पित्त-रहित। यकृतकी निष्क्रियताकी वजहसे हृत्पिण्डकी बीमारियाँ। नाभि-प्रदेशमें दर्द।

श्वास-यन्त्र।—छातीमें पूर्णता मालूम होना और श्वास-कष्टकी वजहसे लम्बी साँस लेनेकी इच्छा (ऐमोन-कास्टि, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, कार्बो-वेज; डिजि, ऐसिड-हाइड्रो, नक्स, रेनान-बाल्बो, रास, स्पञ्जि, थिरिडि)। स्तनवृन्तमें रह-रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द (ऐको, ऐङ्गस, आर्नि, ऐसेट, कैन्थ, डाल्का, ग्रुयाई, लाई, नेट्र-मूर, पियो, फास, रास, स्पाई, स्क्रियुला, थूजा, वेलि,

इथ्य, कैलि-बाई, कैल्मो)। समूचा वक्षस्थल मानो जोरसे कसा हुआ है (कैक्ट, ऐगार, कोलो, जेल्टिया, कैलि-कार्ब, ओपि, प्लैट, ओलि-ऐन, स्टैन)। छातीमें त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना (Excoriation—कार्बो-वेज, कोलचि, मार्क, स्टैन) और ऐसा मालूम होना मानो चोट लग गयी है (आर्नि, कास्टि, क्रियो, रैनान-सिलिरेट, रोडो, स्टैन, ऐसिड-सल्फ, थूजा, टोङ्गा)। वक्षस्थलका दर्द आदि भोजनके बाद बढ़ जाता है (आर्नि, चायना, लैके, फास, थूजा, वेरेट)। हृत्प्रदेशमें गड़बड़ी मालूम होती है—प्राण मानो अकुलाता है (आर्स, कास्टि, काफि, डिजि, मस्कस, नक्स, पल्स, वेरेट)।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठमें बाईं ओर और मेरुदण्डके मध्य भागके पास तेज़ दर्द। बाएँ कन्धे और बाँहके सन्धि-स्थलपर तेज़ छेदनेकी तरह दर्द। बैठे रहनेपर पैर सुन्न हो जाते हैं, इसलिये रोगीका उठकर खड़ा होना या घूमना मुश्किल हो जाता है। हाथ-पैरमें दर्दकी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है, सोनेपर या तो दर्द आराम हो जाता है या हटकर दूसरी जगह चला जाता है और वहाँ फिर पैदा हो जाता है (पल्स, कैलि-बाई, देखिये)।

वृद्धि।—वक्षस्थल, मस्तक और अम्लाशयका दर्द आदि भोजनके बाद बढ़ जाता है।

उपशम।—सोनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—पोडो (अतिसार); रैनान-बल्बो, क्रियो, आइरिस, ऐल्यू, कास्टि, चेलिडो, ऐमोन-पिक इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रमतक। गर्भवती रमणियोंके लालामूत्र और उदरी रोगमें **इयोनिमिन** १मसे ३य दशमिक विचूर्ण व्यवहार करना चाहिये।

इयुपेटोरियम ऐरोमैटिकम

(EUPATORIUM AROMATICUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे मदर-टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—शीत ज्वर ; मुँहका जखम ; पथरी ; स्नायविक उत्तेजना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्नायविक उत्तेजना (बेचैनी) मालूम होना ; बेचैनी और स्वास्थ्यको नष्ट करनेवाली अनिद्रा, मुँहका जखम, बच्चोंके मुँहका जखम वगैरहमें इसकी उपकारिता प्रसिद्ध है । स्त्रियोंके प्रसवके पहले और बादवाले मुँहके जखम रोगमें यह बहुत शीघ्र जलन दूर कर देता है । गुल्मवायु, ताण्डव रोग और हाथ-पैर आदिका कष्ट देनेवाला कम्पन, मुँहमें थूक भर आना वगैरहमें इसका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ दिखाई दिया करता है । ज्वराधिकारमें, पित्त, वमन, पेटमें और माथेमें दर्द रहनेपर इसके द्वारा लाभ हुआ करता है, मुखक्षत (मुँहके छाले) रोगमें इसका बाहरी और भीतरी दोनों ही तरहसे प्रयोग होता है । यह एक उत्कृष्ट बलकारक दवा मानी जाती है । फुस्फुस-वेष्ट प्रदाह (Pleurisy) और बहुत बेचैनीके साथ सुस्त करनेवाला (Adynamic) ज्वरादिमें भी इसका प्रयोग होता है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—साइप्रिपिड, स्कुटेलेरिया, हायो, पैसिफ्लो, हाइड्रैस्टिन-म्यूर ।

शक्ति ।—मूल अर्कका बाहरी प्रयोग । सेवनके लिये मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रमतक ।

इयुपेटोरियम पर्फोलियेटम

(EUPATORIUM PERFOLIATUM)

दूसरा नाम।—बोन-सेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— पीठमें दर्द ; पैत्तिक ज्वर ; दर्द ; खाँसी ; डेंगू ; अतिसार ; वात ; ध्वजभङ्ग ; अजीर्ण ; सर्दी ; सविराम ज्वर ; कामला ; यकृतमें दर्द ; खसड़ा ; आँखोंका प्रदाह ; स्वल्पविराम ज्वर ; दाद ; उपदंशसे पैदा हुआ दर्द ; जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—बुड्ढे मनुष्योंकी बीमारीमें यह अधिक उपयोगी है। (१) सारे शरीरमें तेज़ दर्द, मानो समूची देह चूर्ण-विचूर्ण हो गई है (आर्नि, लैक-कैन, पाइरोज, रास)। (२) हड्डीमें दर्द— पीठ, माथा, वक्ष, हाथ-पैर आदि और कलाईकी सन्धि मानो खुल गई है ; आँखके गोलेमें बहुत दर्द ; सर्दीकी वजहसे हरेक हड्डीमें दर्द ; बहुव्यापक सर्दी रोगमें उठनेकी शक्तिका न रहना (लैक-कैन)। (३) दर्दका बहुत तेजीसे पैदा होना और गायब हो जाना (बेल, मैग-फास, युपि-पर्फ्यु)। (४) सरमें चक्कर आकर बायीं ओर गिर जानेका उपक्रम। (५) तरल श्लेष्मा मिली पुरानी खाँसी ; विलेपी ज्वरके साथ वक्षस्थलमें दर्द, खाँसनेके समय हाथसे छाती दबा रखनी पड़ती है, रातमें बढ़ना ; छोटी माता या सविराम ज्वर एकाएक बन्द हो जानेपर—इसी कारणसे खाँसी। (६) ज्वराधिकारमें पहले दिन सवेरे ७ से ९ बजेके भीतर और इसके दूसरे दिन मध्याह्नमें पैदा हो जाना ; शीतावस्थाके अन्तमें पित्तवमन—पानी पीने बाद जाड़ा लगकर कँपकँपी होती है और वमन होना बढ़ जाता है ; जाड़ेके पहले और जाड़ेके समय हड्डियोंमें तेज़ दर्द— जाड़ा लगनेके पहले, समय और उत्तापावस्थामें दुर्दमनीय प्यास, पानी पीनेपर तृप्ति न होनेसे ही रोगी समझ जाता है कि बोखार आना चाहता है। ज्वरके समय सरका दर्द बढ़ जाता है और रोगी "आह-आह" कर अपनी यन्त्रणा प्रकट करता है ; विज्वरावस्थामें शरीर पीला हो जाता है और बहुत सुस्ती आ जाती

है ; थोड़ा-सा भी जाड़ा आ जाने बाद बहुत ज्यादा पसीना होता है या कँपानेवाले शीतके बाद बहुत थोड़ा पसीना होता है अथवा बिलकुल ही नहीं होता ।

लक्षणावली

मन ।—रातमें रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका ज्ञान और बुद्धि लोप हो जाना चाहती है (ऐल्यू, ऐन्थ्रा, कैनाब-इन, सिपि, ऐकि, हाइड्रोफोब, आयोड, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, लिलि-टाइग्रि, मैन्सि, मिडोरिन)। दर्दकी वजहसे उह-उहकर अपनी तकलीफ़ प्रकट करता है (कैलि-ब्रोम, मैङ्गो-ऐसेट, ऐसिड-म्यूर); तकलीफ़ प्रकट करनेवाला चेहरा ; ज्वरके समय निराशा और विषाद ।

मस्तक ।—ऐसी आशङ्का होती है, कि सरमें चक्कर आकर बाईं ओर गिर जायगा (बाईं ओर माथा फिरा नहीं सकता, कहीं गिर न जाये—कोलो, कोना)। माथेके भीतर दर्द मालूम होता है। घरमें रहनेके समय और बातचीतमें लगे रहनेपर दर्द घट जाता है और घरसे बाहर निकलनेपर ही बढ़ जाता है। कुछ देरतक सोनेपर माथेके पीछे भार मालूम होता है और दर्द होता है—हाथसे पकड़े बिना सर उठा नहीं सकता। सरके पिछले भागमें दर्द और टपक ; ब्रह्मतालुमें गर्मी मालूम होती है। सरमें दर्द—जाड़ा लगनेके पहले ही प्रकट हो जाता है और उत्ताप तथा पसीना सभी अवस्थाओंमें बना रहता है, पसीना होनेके समय सभी लक्षण बढ़ जाते हैं (ऐण्टि-क्रूड, आर्नि, फेरम, नेट्र-म्यूर, रास, थूजा); आँखके गोलेमें बहुत दर्द होता है, बार-बार छींक और सर्दी होती है, इसके साथ ही सभी हड्डियोंमें दर्द होता है।

मुख-विवर ।—मुँहके भीतर और श्लैष्मिक-झिल्ली रक्तहीन-सी मालूम होती है ; जीभ सफेद लेप-चढ़ी और दोनों ओठोंके जोड़की जगहपर जखम हो जाता है (नेट्र-म्यूर, ऐसिड-नाइ)।

पाकाशय ।—खानेकी चीज़ोंकी गन्ध या रसोईकी गन्धसे मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि, आर्स, सिपि)। ज्वराधिकारमें शीतावस्थाके पहले और ज्वरके समय दुर्दमनीय प्यास रहती है ; पानी पीते ही वमन हो जाता है (आर्स, आर्नि, नक्स) और वमनके पहले प्यास रहती है। मिचली और भुक्त द्रव्य आदिका वमन हो जाता है (ब्राइ, आर्स, काक्यु, कोलचि,

ग्रैफ, हायो, इपिक, कैलि-कार्ब, लेके, नेट्र-मूर, पल्स, रास, वेरेट, पोडो, नक्स)। कम्प और मिचलीके साथ पित्त-वमन (कोलचि, इपिक)। बहुत कमजोरी और सुस्ती मालूम होना (ऐसिड-नाई, ऐसिड-सल्फ)।

अन्नाशय।—यकृत-प्रदेशमें बहुत दर्द मालूम होता है—हिलने या खाँसनेपर दर्द होता है (खाँसनेपर दर्द मालूम होना—ब्राई, आर्स, काक्यु ; हिलनेपर दर्द मालूम होना—ऐङ्गस, मार्क, नक्स)। कपड़ा कसकर नहीं पहन सकता (ऐमोन-मूर, अरम, कार्बो-वेज, कास्टि, लेके, नक्स, स्पञ्जि, सल्फ)। अन्नाशयकी सर्दीके साथ कब्जियत और यकृतमें दर्द।

पेशाब।—पेशाब गाढ़ा, लाल रङ्गका और स्वच्छ। गाढ़ा भूरे रङ्गका, थोड़ी मात्रामें पेशाब, उसमें सफेद आभा लिये कीचड़की तरह तली जमती है (ऐनाक, सार्सा, जिङ्क, ओलि-ऐन)। कामाद्रि (योनि या जननेन्द्रियसे ऊपरका रोएँ-भरा ऊँचा स्थान) खुजलाता है।

श्वास-यंत्र।—पुरानी खाँसीके साथ पतला श्लेष्मा निकला करना ; विलेपी या क्षय ज्वर (Hectic) (बोर, नक्स, फास, पल्स, साइलि, स्टैन); वक्षस्थलमें बहुत दर्द मालूम होता है, खाँसीके समय दोनों हाथोंसे वक्षस्थलको दबा रखता है (ब्राई, नेट्र-कार्ब, स्क्वियुला, फास); रातमें वृद्धि हो जाती है (ऐमोन-कार्ब, आर्स, कैल्के, कैमो, हायो, लेके, नक्स, पल्स); छोटी माताके बाद या एकाएक सविराम ज्वर बन्द होनेके कारण खाँसी। स्वरभङ्ग—स्वरनली, वायुनली और वायुनलीभुजके भीतर दर्द और इसके साथ ही समूची देहमें दर्द होता है, सवेरे बढ़ता है (कास्टि, सन्ध्याके समय वृद्धि—कार्बो-वेज, फास)। सर्दी लगनेकी वजहसे खाँसी (Cold)—रातमें २ से ४ बजेतक बढ़ना, वक्षमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है ; ऐसा अनुभव होता है, मानो वक्ष कसकर बँधा हुआ है। चित्त होकर सोनेपर (नक्स-वोम), खाँसनेसे बढ़ना और जांघ और हाथपर भार देकर तथा तकियेपर माथा रखकर सोनेपर घटता है (चित्त सोनेपर खाँसीका बढ़ना—नक्स, फास ; माथा नीचाकर सोनेपर बढ़ना—ऐमोन-मूर ; बाएँ पार्श्वमें सोनेपर—इपिक, पेरिस : दाहिने पार्श्वमें सोनेपर—ऐमोन-मूर, स्टैन)। पसीना निकलनेके साथ श्वासकृच्छ्रता (आर्स, लेक, नक्स-वोम); चिन्ता भरा चेहरा और अनिद्रा। बाईं करवट सो नहीं सकता (बाईं करवट सोनेसे ही खाँसी बढ़ जाती है—इपिक, पेरिस)। दीर्घ

निश्वास लेनेपर दाहिनी छातीमें तेज़ दर्द, रातमें रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो उसकी बुद्धि-भ्रष्ट हो गयी है, श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़की वजहसे उसे चिन्ता हो जाती है। बहुव्यापक सर्दी—प्रत्येक हड्डीमें दर्द और सारे शरीरमें दर्द, उठनेकी शक्तिका न रहना या सारे शरीरका अवसाद (लेक-कैन, पाइरोज)।

प्रत्यङ्ग आदि।—दर्द बहुत तेजीसे पैदा होता है और तेजीसे ही गायब हो जाता है (बेल, मैग-फास, इयुपेट-पर्प ; क्रमसे वृद्धि हो जाती है और क्रमसे बन्द हो जाता है—स्टैन)। सारे शरीरमें मानो कोई हथौड़ीसे आघात करता है, ऐसा दर्द (आर्नि, रास, वेलिस, लेक-कैन, पाइरोजिन) ; ज्वरके समय पीठ काँपा करती है (जेल्स)। कलाईमें बहुत दर्द, मानो कलाईकी सन्धि खिसक गयी है (ऐमोनियेक, ड्रोसे, रियुटा)। तलहत्थी और तलवा गर्म और उसमें कभी-कभी पसीना होता है (ऐको, काकु, फेर, लिड, लाई, स्यूरेक्स, नक्स, फास, रोडो, स्टैन, स्टैफाई)। पैरका तलवा और गुल्फ-सन्धि (एँड़ी) में मानो शोथ हो गया है, इस ढंगकी सूजन हो जाती है (आर्नि, ऐसाफि, कैल्के, एपिस, फेर, ऐसिड-बेन, लाई, सल्फ)। सवेरे तलवा बहुत गर्म मालूम होता है (क्रोटेल, लिड, सैनिक, पेट्रोल, फास, पल्स, स्टैन, स्टैफाई)। पाण्डु रोग, शरीरकी त्वचा पीली या हल्दीके रङ्गकी (चेलिडो, मार्क, कैमो)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—उत्ताप और पसीना। शीतका आविर्भाव। एक दिन सवेरे ७ से ८ बजेके भीतर और दूसरे दिन १२ बजनेके समय। शीतावस्था—सर्दीके साथ बहुत प्यास ; शीत पीठसे आरम्भ होता है और रोगी बार-बार जम्हाई और अँगड़ाई लेता है ; उसकी हरेक हड्डीमें दर्द होता है और वह गर्म ओढ़ना ओढ़ लेना चाहता है (नक्स-वोम) ; शीतावस्थाके अन्तमें बहुत ज्यादा पित्त वमन होता है ; शीतकी अपेक्षा कम्प अधिक रहता है। उत्तापावस्था—बहुत कमजोरी मालूम होती है ; जबतक उत्ताप होता रहता है, तबतक सर नहीं उठा सकता। प्रायः प्यास नहीं रहती है (आर्स—उत्तापावस्थामें अदम्य प्यास) ; टपकके जैसा सर-दर्द ; थोड़ा-सा भी पानी पीते ही जाड़ा और कम्पन पैदा हो जाता है। माथेसे पैरतक दर्द रहता है। पसीनेवाली अवस्था,—पसीना बहुत थोड़ा या बिलकुल नहीं होता। यदि पसीना होता है तो रातमें बहुत ज्यादा हुआ

करता है और पसीना होते ही जाड़ा मालूम होता है; पसीना होते ही सब तकलीफ़ें घट जाती हैं, पर सरका दर्द बढ़ जाता है। विराम काल—एकदम बिलकुल ही नहीं छूटता; शरीरकी त्वचा और आँखका सफ़ेद अंश पीला हो जाता है, कामला रोगीकी तरह; तरल श्लेष्मा मिली खाँसी मौजूद रहती है। गर्दनके पीछेवाले भागमें और माथेके पीछे टपककी तरह दर्द—उठनेके बाद घटना।

वृद्धि।—चित्त होकर सोनेपर (खाँसी), घरसे बाहर जानेपर; शरीर संचालनसे; पानी-पीने और कपड़े उतारनेपर।

घटना।—तकियेपर पट होकर सोनेपर (खाँसी); घरके भीतर और उठनेपर (सर-दर्द)।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्निं, ब्रायो (ज्वर और दर्द); वेलिस, कैप्सिकम, लैक-कैन, पाइरोजिन, चेलिडो, पोडो, लाई, कोलचि (खाद्यकी गन्धसे मिचली)। इसके बाद नेट्रम-म्यूर और सिपियाका व्यवहार करनेपर विशेष लाभ होता है।

शक्ति।—मूल अर्कसे २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—एकसे सात दिन।

इयुपेटोरियम पर्प्युरियम

(EUPATORIUM PURPUREUM)

दूसरा नाम।—ग्रैवेल रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सोकड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अण्डलाल-मिला पेशाब; पथरी; मूत्रस्थलीका प्रदाह; बहुमूत्र; शोथ; शय्यापर पेशाब; सरमें दर्द; मूर्च्छा-वायु; ध्वजभङ्ग; अजीर्ण; सविराम-ज्वर; मूत्र-पथरीका शूल; वात; पैरमें झुनझुनीवाला वात; पेशाबमें तकलीफ़; गलेमें जखम; पेशाब रुकना; वमन।

उपयोगिता और आभास।—इसके सभी लक्षण बाएँ अङ्गमें अधिक परिमाणमें प्रकट होते हैं। बराबर ऐसा मालूम हुआ करता है कि बाईं ओर गिर जायगा ; किसी तरह भी वह अपना यह विश्वास छोड़ नहीं सकता। देहके सभी अंशोंमें कमजोरी और सुस्ती मालूम होती है—बहुत चेष्टा किये बिना हिल नहीं सकता। वात-वेदना—निचले अंगसे ऊपरी अंगमें फैल जाती है (लिडम, नीचेकी ओर फैलता है—केल्मिया) और बार-बार जगह बदला करती है (केलि-बाई, लैके-कैन, पल्स)। नींदमें बहुत व्याघात होता है, भयानक सपने देखा करता है। चोट या दबावकी वजहसे मूत्र-कृच्छ्रता, जरायुका अपने स्थानसे हट जाना या गर्भावस्थामें ऊँचा-नीचा रास्ता, गाड़ी या घुड़सवारी करनेपर बार-बार पेशाबका वेग होता है, जितनी ही बार पेशाब हो जाता है उतनी ही बार मूत्रस्थली परिपूर्ण हो जाती है, बच्चोंको पेशाबका वेग रोकनेकी शक्ति नहीं रहती, अनजानमें पेशाब हो जाता है। मूत्रस्थलीकी पुरानी सर्दी ; गभीर प्रदेशमें बराबर दर्द ; मूत्रस्थलीमें जलन और त्वचाको क्षय करनेकी तरह दर्द।

लक्षणावली

मन।—बुद्धिकी जड़ता ; बार-बार दीर्घ श्वास (इग्ने) छोड़ना ; चित्त विषादयुक्त ; औंघाई। मनमें नाना प्रकारकी भ्रान्त कल्पना। निर्वासन-कातरता अर्थात् पीड़ितावस्थामें अपने घरमें रहनेपर भी रोगिनी समझती है कि वह किसी दूसरी जगह है और अपने घरमें जानेके लिये लालायित रहती है (अरम, ब्राई, कैम्प, इग्ने, सिनियैन, ऐसिड-फास, साइलि)। रोगी इस भयसे हमेशा कातर रहता है कि उसे कोई बीमारी न हो जाय।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना और माथा बहुत हलका मालूम होना, ऐसा मालूम होता है मानो माथा घूमता हुआ उड़ता है ; रोगीको ऐसा मालूम होता है कि वह बाईं ओर गिर जायगा, सवेरे बढ़ता है और मध्याह्नमें घट जाता है। सर-दर्द—सुई बेधनेकी तरह या माथा मानो हथौड़ीसे ठोंका जा रहा है, ऐसा दर्द मालूम होता है—बाईं ओर ज्यादा दर्द होता है। माथेके दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वमें चला जानेवाला पीसनेकी तरह दर्द, सवेरे आरम्भ होता है, तीसरे पहर और सन्ध्याके समय बहुत बढ़ जाता है (सवेरे आरम्भ होता है, दिनमें बढ़ता है और संध्यातक रहता है—सैंगुनेरिया) ;

ठण्डी हवामें दर्द बढ़ता है ; निर्मल हवामें धीरे-धीरे टहलनेपर घटता है। ज्वराधिकारमें जाड़ा आरम्भ होनेके पहले सरमें प्रचण्ड दर्द होता है, माथा विशेषकर ललाटमें पसीना होता है। आँख—मानो टकटकी लगी, लाल और फूली, इसके साथ ही सर-दर्द। कुछ निगलनेके समय कानमें कड़ाक-जैसी आवाज़ हो जाती है (मैंगे)। जाड़ा मालूम होनेके साथ आँखका सफेद अंश पीला हो जाता है। बोखारके समय चेहरा गर्म मालूम होता है।

गलेके भीतर।—गला मानो बन्द हुआ जाता है और श्वास-रोध होनेका उपक्रम हो जाता है, बार-बार निगलने या घूंट लेनेकी इच्छा, गलेमें इस तरहकी जलन होती है मानो कोई गर्म चीज़ निगल ली है, निगलनेके समय दर्द बढ़ जाता है। गलेके भीतरके बाईं ओर दर्द अधिक रहता है, जाड़ा आरम्भ होनेके पहले और निगलनेके समय दर्द होता है।

पाकाशय।—ज्वराधिकारमें या शोथ रोगाधिकारमें जाड़ा आरम्भ होनेके पहले प्यास ; शीतावस्थामें प्यास बिलकुल ही नहीं रह जाती। गर्म पतली चीजें पीनेकी इच्छा (ज्वरके समय गर्म पानीय पीनेकी इच्छा—कैस्केरिला ; ज्वरके पहले—सैबाडिला)। पाकस्थलीमें (अधिक परिमाणमें) वायु (Flatus) इकट्ठा होता है और बार-बार डकार आती है (कीना, कूप्रम) ; खानेकी चीजोंकी गन्धसे या रसोईकी तरफ देखते ही मिचली पैदा हो जाती है (कोलचि, इयुपेट-पर्फोल, आर्स, सिपिया); बहुत मिचली रहनेपर भी शीतावस्थामें वमन नहीं होता ; उत्तापावस्थामें वमन होता है (ऐकी, ऐनाक, आर्स, बैराई, कार्बो-वेज, नक्स, पल्स)। इसके साथ ही सर-दर्द ; अन्त्राशयमें हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द होता है और मरोड़की तरह दर्द मालूम होता है। पेशाबके बाद तेज़ अन्त्रशूल, अन्त्राशयमें दर्द और स्पर्श नहीं सहन किया जाता, बाईं ओर बहुत अधिक। तलपेट फूला और गर्म।

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग ; रोगीके पेशाब कर आते ही तुरन्त उसकी मूत्रस्थली फिर पेशाबसे भर जाती है। बच्चोंको अनजानमें पेशाब होना, पुराना मूत्राशय-प्रदाह या मूत्राशयकी सर्दी—रोगीको हमेशा गड़बड़ी मालूम हुआ करती है। गभीरतम प्रदेशमें दर्द होता है ; मूत्राशयमें दर्द और स्पर्श सहन न होना ; पेशाब कर आने बाद मूत्राशय और मूत्रनालीमें जलन, पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा और मूत्ररेणु (Lithates)

निकलता है। मूत्रकृच्छ्र, जरायुका अपने स्थानसे हटना या गर्भावस्थामें ऊँची-नीची राहसे गाड़ीमें घूमनेकी वजहसे मसाना (Kidney) का प्रदाह। मूत्रमेह ; सविराम ज्वरमें बार-बार पेशाबका वेग इसके साथ ही मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशय और मसानेमें दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाएँ डिम्बाधारमें चिलक मारनेकी तरह दर्द। दिनमें बाएँ डिम्बाधारके ऊपरी अंशमें दबाव मालूम होना। डिम्बाधारकी निष्क्रियताकी वजहसे बन्ध्यत्व (हेलोनि, सिमिसि, अरम-म्यूर-नेट)। जरायुसे प्रदरका स्राव—जरायुकी सुस्ती और बहुत दिनोंके जरायु-प्रदाहकी वजहसे बहुत ज्यादा स्राव होना, पर वस्त्रमें दाग न लगना। योनिका बाहरी स्थान हमेशा तर रहता है (खासकर वैसा नहीं होता)। गर्भावस्थामें तीसरे या चौथे महीने प्रायः गर्भ-स्राव हो जाया करता है (सेबाई)। गर्भ-स्राव होनेका उपक्रम हो जाता है (सेबाई, सिकेलि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठ और कमरमें बहुत भार मालूम होता है। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें शीत मालूम होता है। कमरमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है। दर्द—ऊपरकी ओर चढ़ता है, दर्द त्रिकास्थिसे मसाना या मूत्रस्थलीमें फैल जाता है। बाईं ओर दर्द अधिक रहता है। देहके सभी अङ्गोंमें सुस्ती और थकन मालूम होती है; बहुत चेष्टा करनेपर कहीं थोड़ा हिल सकता है। वातका दर्द—निम्नाङ्गसे ऊर्द्धाङ्गकी ओर फैल जाता है (लिड ; निम्न ओर चलता है—कैलमिया); दर्द बार-बार जगह बदलता है (कैलि-बाई, लैक-कैन, पल्स)। दाहिने कन्धे और घुटनेका स्नायुशूल—बाईं ओर चलता है। हड्डीमें बहुत दर्द मालूम होता है; दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही गायब हो जाता है, रोगी बहुत छटपटाता है, पर शरीरको हिलानेपर भी दर्द घटता नहीं है। बाएँ नितम्बके स्नायुमें तेज़ बिजलीकी गतिकी तरह दर्दकी वजहसे यह अंश सुन्न हो जाता है ; हिलानेपर बढ़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था—एक दिनका अन्तर देकर भिन्न-भिन्न समयपर जाड़ा पैदा होता है। जाड़ा लगनेके पहले हाथ-पैरकी हड्डियोंमें बहुत दर्द होता है। शीतावस्थामें प्यास न रहना या लेमोनेडकी तरह खट्टा पानीय पीनेकी इच्छा ; पीठके निम्नांशसे शीत आरम्भ होकर ऊर्द्धगामी हो जाया करता है ; शीतावस्थाके घटनेपर पैदा होता है। उत्तापावस्था—

दीर्घकाल स्थायी—बहुत प्यास और हड्डियोंमें दर्द ; ज्वर घटनेके समय बहुत भूख मालूम होती है (सिना, सिङ्को, फास)। पसीनेवाली अवस्थामें जरा-सा हिलनेपर भी जाड़ा मालूम होने लगता है ; विज्वरावस्थामें सरमें चक्कर आता है ; ऐसा मालूम होता है मानो बाईं ओर गिर जायगा (कोलो, युपेट-पर्फोल)। कपालमें ही अधिक पसीना हुआ करता है। शीतावस्थामें नख सब नीले हो जाते हैं (किनिन-सल्फ, नेट्र-म्यूर, नक्स), रातमें पसीना, विलेपी या क्षय ज्वर (Hectic Fever)।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर ; करवट बदलनेपर ; जोरकी हवामें।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐपोसिनम (शोथ); एपिस, कैनाब-सैट, कैन्थ, शैनेशियो, वेस्पा, कैम्स (पेशाबका लक्षण); ऐसिड-फास ; गृह-विरह-कातरता (हेलोनियस, कोलचि); खानेके पदार्थ देखने या गन्धसे मिचली ; (युपेटोर-पर्फोल, अरम-म्यूर-नेट्र)।

शक्ति।—१ले दशमिकसे ६ठे शततमिक क्रम। डा० एच० सी० ऐलेन वगैरह प्रमुख चिकित्सकगण उच्चक्रम व्यवहार करनेके पक्षपाती हैं, खासकर ज्वरकी चिकित्सामें।

इयुफोर्बिया ऐमिग्डैलोइडिस

(EUPHORBIA AMYGDALOIDES)

दूसरा नाम।—एक तरहका मनसा वृक्ष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—नाकके बगलके हड्डीवाले गह्वरमें दर्द ; मलान्त्रका आक्षेप ; गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हट जाना ; कमजोरी ; अतिसार ; पेचिश ; बवासीर ; चर्म रोग ; गन्धमें गड़बड़ी ; प्लीहाकी बीमारी ; गलेका जखम।

उपयोगिता और आभास।—नाकके पार्श्वके अस्थिमय गह्वरमें दर्द, कितनी ही तरहकी काल्पनिक गन्ध आना ; छछुन्दरकी तरह गन्ध आना ;

उदरामय—पाखानेमें तकलीफ़ और मलद्वारका तकलीफ़ देनेवाला सिकुड़ना और फैलना वगैरहपर प्रधानतः इसकी क्रिया है। आँतोंमें जलन और वमनके साथ उदरामय, माथे और उरुमें ऐसा मालूम होना मानो खून खौल रहा है। शरीरकी उत्तापावस्थामें वातका दर्द पैदा हो जाना; तालुके पीछे जलन, ठण्डा पानी पीनेपर घटना (पानीसे बढ़ना—कैप्सि); ठण्ड आदि लक्षण दाहिनी ओरसे बाईं ओर जाते हैं (लाइ); शरीर गड़बड़ मालूम होना, चलने-फिरनेपर रोगीको बहुत थकावट मालूम होती है; रातमें रोगी बहुत बेचैन हो जाता है, अधजगी और अर्द्ध-निद्रित अवस्थामें करवट बदला करता है, पर किसी तरह भी आराम नहीं मिलता है।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेमें बहुत अधिक उत्ताप मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो यह उत्ताप पीठसे नीचे उतर रहा है; निद्रित अवस्थामें नहीं रहता।

नाक।—नाकमें छछुन्दरकी तेज़ गन्ध आती है।

मुखमण्डल।—बाईं ओर जलन; अक्षिगह्वरतक दर्द फैल जाता है।

पाकाशय आदि।—तालुके पीछे और कण्ठमें जलन मालूम होती है, ठण्डा पानी पीनेपर और पहली बार उपवास भंग करनेपर घट जाता है। मिचली, घरमें टहलनेपर बढ़ती है और स्थिर होकर बैठे रहनेपर या रातमें भोजनके बाद घट जाता है। सीढ़ी चढ़नेके समय यकृतमें तेज़ दर्द। प्लीहा-प्रदेशमें कसावटका भाव (ऐको, किनिन-सल्फ़, लाइ, नेट्र-म्यू) और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना (मैंग-म्यू, कार्बो-वेज, नेट्र-कार्ब, सिपि, साइलि)। ऐसा मालूम होता है मानो दाहिनी ओरसे बाईं ओरतक सम रेखा भावसे फैले हुए वृहदन्त्रमें एक बड़ी लम्बी कृमि तकलीफ़से लोट रही है। वंक्षण-प्रदेशमें या पुट्ठेमें टपकका दर्द (सल्फ़)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय, मलद्वारके तकलीफ़ देनेवाले सिकुड़ने और फैलनेके कारण पाखाना होनेमें बहुत बाधा पहुँचती है, पाखाना हो जाने बाद भी मलद्वारका सिकुड़ना-फैलना बन्द नहीं होता; मल परिमाणमें थोड़ा, रूखड़ा और गोंदकी तरह लसदार; गुह्यभ्रंश—दिनके ४ बजेसे रातके

१० बजेतक बढ़ना, सार मल मिश्रित, कभी-कभी गाढ़ा भूरे रङ्गका पानीकी तरह पतला और आँव-मिला मल निकलता है।

मूत्रयंत्र।— पेशाबके समय पेशाब गर्म मालूम होता है।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभङ्ग ; छातीमें गर्मी मालूम होती है।

प्रत्यङ्गादि।—शरीर गर्म और पसीना होनपर दाहिने बाँहकी स्कन्धास्थिके ठीक ऊपरी स्थानपर वातका दर्द। दाहिने पैरकी लसिका शिरामें उत्क्षेचन या खौलते हुए जल-प्रवाहकी तरह मालूम होता है, कभी-कभी पुट्ठे तक इसी तरहका दर्द मालूम हुआ करता है, विशेषकर बैठनेके समय पैरसे जानुतक। सन्ध्याके समय बढ़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—रात ग्यारह बजनेके समय शीत पैदा हो जाना (कैक्टस); सोनेके लिये कपड़े-लत्ते उतारनेके समय यह शीत बदलकर कम्प हो जाता है और दूसरे दिन सवेरेतक कम्प हुआ करता है ; परन्तु उत्ताप या पसीना नहीं होता (ऐरेन-डाया, बोवि, लाई, मैग-कार्ब, ऐसिड-फास, रास, स्टैफाई, सल्फ)।

वृद्धि।—सन्ध्याके समय ; चलनेपर।

घटना।—ठण्डा पानी पीनेपर और भोजनके बाद।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—इलैट, लाइकोपोड, ऐरेनिया-डायो, कैक्टस।

शक्ति।—३रा दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम।

इयुफोर्बिया कोरोलेटा

(EUPHORBIA COROLLATA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़से विचूर्ण और तरल आकारमें मूल अरिष्ट तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— हैज़ा या बच्चोंकी विसूचिका ; विसूचिकाकी तरह पतले दस्त आना ; पाकाशयका प्रदाह ; समुद्रमें जहाज़पर चढ़नेपर वमन।

उपयोगिता और आभास।—प्राणान्तक मिचली या ओकाई, खाये हुए पदार्थ, पानी या श्लेष्माका वमन और बहुत ज्यादा पतला पाखाना होना वगैरह पाकाशय और आँतोंकी बीमारियोंमें यह विशेष उपयोगी है और मूल्यवान दवा है। विसूचिका रोगकी अवस्था-विशेषमें इसकी अकसर ही जरूरत पड़ा करती है। दस्त-कैका वेग कुछ समयका अन्तर देकर पैदा हुआ करता है। डा० मैसिने अपने संक्षिप्त नवौषधि-तत्वमें उल्लेख किया है, कि बच्चेके जो लक्षण देखकर यह मालूम होता है कि क्रिमि है, इससे वे सभी लक्षण आराम हो जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—बहुत अधिक मानसिक उद्वेग। केवल मृत्युकी कामना करता है (ऐसिट-क्रूड, अरम-मूर-नेट्र, बेल; बार्बा, हाइड्रेस, नेट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, फास, स्पञ्जि, सिफिलिन)।

पाकाशय आदि।—प्राणान्तक मिचली; पहले एकाएक खाई हुई चीज़ आदिका प्रबल वमन होता है; इसके बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा-मिला पानीकी तरह वमन; अन्तमें चावलके धोवनकी तरह वमन (कैम्फो, कोलचि, वेरेट, आर्स); मलान्त्रसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पतला दस्त होता है, पेट गड़गड़ाकर दस्त लग आता है (ऐलो, एपिस, आर्स, कोलचि, आइरिस, लेके, ऐसिड-मूर, नेट्र-सल्फ, पल्स), मलद्वारमें असह्य सुरसुरी, मानो असंख्य क्रिमियाँ रेंग रही हैं (टियुक्रि, कैल्के, इग्ने, इपिकाको, कोयाशिया)।

ज्वर।—त्वचा शीतल; माथेमें पसीना और नाक तथा हाथ-पैर ठण्डे।

त्वचा।—शरीरकी त्वचा शीतल और तलहत्थी, नाक आदि बरफकी तरह ठण्डे (कैम्फो)।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स, कैम्फो, कोलचि, वेरेट्रम, जेट्रोफा, गैम्बोजिया, कैल्के-कार्ब, टियुक्रियम।

शक्ति।—२रा दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रम।

इयुफोर्बिया साइपेरिसियस

(EUPHORBIA CYPARISSIAS)

दूसरा नाम ।—साइप्रेस-स्पार्ज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे संग्रह किये हुए उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—विसर्प, अमौरी, छालेकी तरह उद्भेद वगैरह चर्म-रोगमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफोर्बिया हिटरोडोक्सा

(EUPHORBIA HETERODOXA)

दूसरा नाम ।—एल् वेलोज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह कैन्सर रोगकी एक बढ़िया दवा है । कैन्सर रोगमें असह्य जलन करनेवाला दर्द इसका निर्देशक है ।

शक्ति ।—६ठे शततमिकसे ३० शततमिकतक ।

इयुफोर्बिया हाइपेरिसिफोलिया

(EUPHORBIA HYPERICEFOLIA)

दूसरा नाम ।—लार्ज स्पाईड-स्पार्ज । गार्डेन-स्पार्ज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कब्जियत और सर-दर्दके लक्षणमें लाभदायक है। श्वास-यन्त्र, पाकस्थली और आँतोंकी बहुत-सी बीमारियोंमें इपिकाकके साथ इसका विशेष सादृश्य है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफोर्बिया इपिकाकुआन्हा

(EUPHORBIA IPECACUANHÆ)

दूसरा नाम ।—इपिकाकुअन स्पार्ज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे विचूर्ण तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह इपिकाककी अपेक्षा अधिकतर शक्तिशाली औषधि है। बहुत देरतक स्थायी वमन और उसके साथ ही सरमें चक्कर आना, अस्पष्ट दृष्टि, सुस्ती, उत्ताप मालूम होना वगैरह इसके निर्वाचक लक्षण है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफोर्बिया लेथिरिस

(EUPHORBIA LATHYRIS)

दूसरा नाम ।—सेपर-स्पार्ज ; गोफर प्लैण्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—यह हैज़ा, उदरामय और आमाशयकी बीमारीकी एक उत्कृष्ट दवा है।

मिचली और वमन, रक्तमिला पाखाना, पेट चिपक जाना, बेचैनी, सारा शरीर कड़ा और बरफकी तरह ठण्डा, पर चेहरा और आँखें चमकीली इसका निर्देशक लक्षण है।

इसके अलावा विसर्प, सड़नेवाला जखम, ग्रन्थियोंके सुन्न हो जानेकी तरह कमजोरीके लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध।—रासटक्स इसका दोषघ्न है।

तुलनीय।—विरेट्रम एल्बम (दस्त, कै, खाँसी और गहरी तन्द्रा—Coma)।

शक्ति।—६ठे शततमिकसे ३० शततमिकतक।

इयुफोर्बियम आफिसिनेरम

(EUPHORBIUM OFFICINARUM)

दूसरा नाम।—इयुफोर्बियम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—युफोर्बियमके सार भाग या गोंदसे यह तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हड्डियोंमें नाना प्रकारके विकार; कर्कटीया रोग; मोतियाबिन्द; खाँसी; माथेमें पपड़ी जमे जखम; विसर्प; आँखोंका प्रदाह; सड़नेवाले जखम; सरमें दर्द; छातीमें जलन; सर्दी; अन्त्रावर्तन-प्रदाह; गृध्रसी; उपदंश; दाँतकी बीमारियाँ; जखम; देखने या सुननेमें गड़बड़ी; मसे।

उपयोगिता और आभास।—कर्कट रोग, विषाक्त या दुष्ट-व्रण और विसर्प रोगमें भयानक असह्य जलन, मानो रोगवाली जगहपर जलता हुआ अंगारा रखा हुआ है (जब आर्स या ऐन्थ्राक्सिनमसे लाभ नहीं होता), अस्थिक्षय (Caries) या हड्डीका सड़ना (Necrosis)। रोगकी जलन भी इससे आराम हो जाती है। छाले-भरा विसर्प—छाले मटरकी तरह और पीले रससे भरे; वृद्धोंके गले हुए जखम आदि, दाँतसे काटने, अस्त्र लग जाने या फाड़नेकी तरह दर्द; सवेरे आगके पास बैठनेके कारण शरीर गर्म होनेपर, सोनेके बाद करवट बदलनेपर, पहली बार हिलना आरम्भ करते समय और छूनेपर दर्द बढ़ जाता है और इधर-उधर हिलते-डोलते रहनेपर घटता है, इन

सभी अवस्थाओंमें युफोर्बियमके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है; अधिककर मेरुपुच्छ (पीठकी रीढ़का नीचेवाला अन्तिम भाग) में दर्द, यह बैठे-बैठे उठनेपर बढ़ जाता है। मानो सब चीजें आपसमें स्क्रू से कस दी गयी हैं; दाँतमें चिलक मारनेकी तरह दर्द, मानो दाँत उखाड़ा जा रहा है, मुँहमें लसदार भाव, मानो मुख और मुख-विवरसे आगकी लपट निकल रही है, मानो बहुत गर्म भोजन निगल गया है—वक्षस्थलमें ऐसा ही मालूम होता है; शय्याका स्पर्श होते ही खाँसी आने लगती है, जबतक सोया रहता है बराबर खाँसी आया करती है; मानो बिजली छू जानेके कारण एकाएक शय्यासे उठ बैठता है और ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरकी त्वचाके नीचे एक लम्बी डोरी लटकी हुई है इत्यादि कई इयुफोर्बियमके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। कभी अंगड़ाई लेना या बदन तोड़ना; लेखकोंकी अंगुलियोंका अकड़ना (Writer's Cramp) और चेतना गायब हो जानेके साथ धनुष्टंकार वगैरहके आक्षेपमें भी इससे लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली

मन।—हमेशा सशंकित भाव। गम्भीर स्वभाव; बातचीत करनेकी इच्छा न रहना; धीर, चिन्ताशील, निर्जनता-प्रिय, पर परिश्रम करनेसे नहीं हटना चाहता।

मस्तक।—सरमें चक्कर आकर बगलमें गिर जानेका उपक्रम होता है (कैनाब, कोना, ड्रोसे, मेजे, रियुम, फेरम, एसेट, स्क्रियुला, जिङ्क); खड़े होनेवाली अवस्थामें (कैनाब, क्रोटन, सिक्ले, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, रियुम, स्क्रोफ्युलेरिया, स्पाई) या वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ऐगार, ऐम्ब्रा, ऐङ्गस, कैल्के, ड्रोसे, रैनान, रियुटा, पोडो, सिपि, सल्फ), सरमें तेज़ बेचैनी पैदा करनेवाला दर्द, सरके पिछले भागमें चोटकी वजहसे पैदा हुए दर्दकी तरह दर्द; वृद्धि—सवेरे सोनेके समय (बेल, कैम्फो, कोलो, इयुफ्रे, लाइ, मैग-कार्ब) और उत्तापसे (ऐको, ब्राई, कार्बो-वेज, कैप्स, इग्ने, इपिक); घटता है शरीर हिलानेपर (ऐसिड-म्यू) और माथा ठण्डा करने या माथेमें ठण्डी हवा लगनेपर (ठण्डे प्रयोगसे सर-दर्दका बढ़ना—अरम)। समूचा मस्तिष्क मानो स्क्रू से कसकर बाँधा हुआ है (कोलो, इग्ने, प्लैट)।

आँख।—आँखोंका प्रदाह, पलकोंके कोने सूखे और खुजलाते हैं (आर्जेण्ट, बेल, ऐसिड-बेन, ऐ-फ्लू, गेम्बो)। आँखकी बहुत दिनोंतक ठहरनेवाली लाली (बेल, ब्राई, क्यूप्रम, इयुफ्रे, इग्ने, मार्क, लैके रास, थूजा)। जखम करनेवाले आँसू आँखसे गिर पड़ते हैं (युफ्रे, क्लिमेट, डिजि) और रातमें आँख सट जाती हैं (बैराई, कैल्के, कार्बो-वेज, इयुफ्रे, कैमो, साइक्ल, क्रोक, इग्ने, कैलि-कार्ब, पल्स, मार्क, रास, स्टैफाई)। आँखके कोनेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पपड़ी जमती है (बैराई-म्यू, कैल्के, कैमो, डिजि, इयुफ्रे, ग्रैफ, लैक्टियु, पल्स, सल्फ)। आँखके सफेद अंशका मैलापन या अस्वच्छता (Opacity—कैनाब, इयुफ्रे, कैड-सल्फ, कैल्के-फ्लू, सिनारेरि-मेरि, हिप, कैलि-बाई, मैग-कार्ब, सेनेगा, टैरेण्ट-हिस, जिङ्क-सल्फ)। तिमिर दृष्टि (बेल, हिप, कास्टि, डेफनो, फास, प्लम्ब, टैबाक)। दूसरी चीज़ देखनेकी शक्तिका गायब हो जाना (Myopia—ऐगार, ऐसिड-नाई, फाइजस ; पाइलो, ऐसिड-सल्फ, सिफलिन, थूजा)। दो देखना—सामनेका मनुष्य मानो पीछे है, ऐसा मालूम होना।

मुखमण्डल।—गालमें विसर्प, प्रदाहके साथ सूजन और उसके ऊपर रस-भरे पीले रङ्गके मटरकी तरह छाले निकल आते हैं (टैरिब, आर्निका, रास, कैन्थ), बेधने और खोदनेकी तरह दर्द। मुखमण्डल ज्वालासे भरा।

मुख-विवर।—मुँह सूखा, पर प्यास नहीं रहती (ऐङ्गस, बेल, कैनाब, काक्यु, लाई, नक्स-मस, नक्स-वोम, ऐसिड-फास, सेबाड)। सिहरावन, मिचली और पाकस्थलीमें नख गड़ जानेकी तरह दर्द, इसके साथ ही मुँहसे लार जाना (आर्जेण्ट)। लार नमकीन मालूम होती है (हायो, मार्क-सल्फ, फास, सिपि, वेरैट, बार्बेस्क)। दाँतमें दर्द—पीसने और तेज़ बेधनेकी तरह दर्द, दाँतमें कोई चीज लगने या चबानेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है या भोजनके बाद कम्पन और इसके साथ ही माथा और गण्डास्थिमें दर्द, दाँत टूट जानेवाले (क्रियो, मेजिर, प्लम, सेबाड, सिपि, सल्फ)। ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थलीसे आगकी लपट निकल रही है और गलेसे लेकर पाकाशयतक जलन होती है, मानो जलता हुआ अंगारा लग गया है, मानसिक उद्वेग, कम्पन और मुँहमें पानी भर आता है (Waterbrase)।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद कड़वा, झालदार (ऐम्ब्रा, ऐसाफिट, कैलि-आयोड, ऐसिड-म्यू) और तीता। ठण्डी पानीय पीनेकी बहुत अधिक स्पृहा (ऐङ्गस, बोवि, कैमो, मार्क, ओलि-ऐन, ऐसिड-फास, सैबाड, वेरेट)। शून्य उद्गार (ऐगार, कास्टि, ग्रेनेट, मार्क, ओलि-ऐन, सैबाडि, कैल्के-कास्टि, गैम्बो, हाइपिर, कैलि-बाइ, ऐसिड-आक्स, पोडो)। दस्त और कै, पाकाशयमें चोट लगनेकी तरह दर्द, ऊपरी पेट मानो झूल पड़ता है (इपिक, मार्क, स्पञ्जि, टैबाक, थीया और निचले पेटमें ऐसा दर्द होता है मानो भीतरकी ओर खिंच रहा है—क्यूप्रम, प्लम्बम, पल्स) पाकस्थलीमें सङ्कोचनकी वजहसे अकड़नकी तरह (बेल, कार्बो-ऐन, नाइट्रम, नक्स-वोम, फास, प्लैट, ब्रोम, कैलि-बाइ, फाइटो)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ मरोड़ खा रहा है (कार्बो-ऐन, काक्यु, नेट्र-म्यू, नक्स-वोम, ऐसिड-सल्फ, साइलि)। पाकाशय और उदरोर्द्ध प्रदेशमें भारी जलन मालूम होती है (आर्स, कैन्थ, कैप्स, कार्बो-वेज, लोरो, मार्क, नाइट्रस ; ब्रोम, ऐसिड-म्यू, ऐसिड-आक्स, नक्स-युग, फास, सैबाड)।

अन्त्राशय।—पेट मानो चपक जाता है (बेल, कोलो, प्लम, सैबाड)। पेट फूल उठता है और रह-रहकर पेटमें भयानक दर्द होता है, मानो उसके तन्तु सब छिन्न-विच्छिन्न हो रहे हैं या इस ढङ्गका दर्द मानो ऊपरकी ओर धक्का दे रहा है, जानु और कोहनी एकत्रकर उसपर माथा रखनेसे (अधिकांश स्थानोंमें) लाभ मालूम होना। सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो जुलाब देकर पेट खाली कर दिया गया है (लैके, सिपि, आर्नि, सिना, ऐसिड-फ्लू, हिप, मेजिर, पल्स, स्क्वियुला)। पेटमें जलन होती है (लैके, लोरो, सैबाड, सिकेल, सिपि, आर्नि)।

मल।—कड़ा मल भी बड़ी तकलीफ़से निकलता है। कूथनके साथ बार-बार पानीकी तरह पाखाना। मल पहले पतला फिर गांठ-गांठ पैदा हो आता है (रियुम, सैबाडि ; पहला अंश काला और कड़ा, इसके बाद दूधकी तरह सफेद रङ्गका—इस्क्यु—पहला अंश कोमल मलमय, इसके बाद बाकी अंश पतला पानीकी तरह—बोवि)। पाखानेका बहुत अधिक वेग और गोंदकी तरह दस्त होता है और मलान्त्रमें सुरसुरी होती है (ऐसिड-कार्बोलिक, इस्क्यु)। ऐसा मालूम होता है, मानो तलपेटमें जखम हो गया है और

मलद्वारमें जलन होती है, कभी-कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें फेन-भरा कीचड़की तरह दस्त हुआ करता है (कैल्के, आयोड, हिप, पेट्रोसेलिन, चेलिडो)।

श्वास-यंत्र।—वायुनली और छातीके भीतर जलन और सुरसुरी होकर बार-बार सूखी खाँसी होती है। वक्ष स्थानमें दबावकी वजहसे दिन-रात खुसखुसी खाँसी आया करती है और सवेरे बार-बार श्लेष्मा निकलता है। तकियेमें माथा लगते ही बहुत जोरकी खाँसी आरम्भ हो जाती है और जबतक रोगी सोया रहता है, तबतक खाँसी नहीं जाती। श्वास-प्रश्वासमें गड़बड़ी मानो वक्षस्थल पूरी तरह नहीं फैलता, त्यग करनेवाली साँस लेनेके समय बाईं ओरकी पेशीमें खींचन मालूम होती है, खासकर दाहिनी करवट लेटनेपर। ऐसा मालूम है, मानो रह-रहकर एकाएक वक्षस्थल फैल जाता है (थूजा)। ऐसा मालूम होता है, मानो यकृतका कोई खास अंश वक्षके भीतरी भागसे मिल गया है, विश्रामके समय वक्षस्थलके बाएँ पार्श्वमें छुरी मारनेकी तरह दर्द (कैलि-कार्ब, स्पाइजि); इधर-उधर करवट बदलनेपर आराम मिलता है। वक्षके बीचके स्थानमें उत्ताप मालूम होता है, मानो कोई गर्म पदार्थ निगला जा रहा है। छातीमें जलन मालूम होती है (आर्स, कार्बो-वेज, सल्फ, कोना, कैन्थ)।

प्रत्यङ्ग आदि।—सवेरे शय्यामें सोनेके समय मेरुदण्डके मध्य भागमें अकड़नकी तरह दर्द होता है। कन्धेकी सन्धिके स्थानपर पक्षाघातसे पैदा हुई अकड़न मालूम होना, स्थिर रहनेपर बढ़ना और घूमनेपर घटना। बहुत देरतक लिखनेके बाद बाँहके अगले भागमें अकड़नकी तरह मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो वंक्षण-सन्धि अपने स्थानसे हट गयी है। रातमें उरुमें जलन मालूम होती है। सवेरे दोनों पैरोंमें ठण्डा पसीना होता है (कार्बो-ऐन), निम्न बाँहमें लाल रेखा निकल आती है और उस रेखाको छूनेपर खुजली आरम्भ हो जाती है। वायु सेवनके लिये चलनेके समय दाहिनी एँड़ीमें बहुत दर्द होता है। बैठनेके समय प्रायः पैरका निचला अंश सुन्न हो जाता है। हाथ-पैरोंमें दर्द या वातका दर्द, विश्रामके समय बढ़ जाता है और शरीर हिलानेपर घटता है।

त्वचा।—छाले-भरे विसर्प—पीले रससे भरा मटरकी तरह छाला निकलता है और उसमें बहुत जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो कुछ गड़ गया है। वृद्धोंके गले हुए जखम आदि—उनमें दाँतसे काटने, कतरने

या फाड़नेकी तरह दर्द होता है ; वृद्धि—सवेरे, आगके पास बैठनेपर शरीर गर्म होनेपर ; सोनेपर, करवट बदलनेपर, पहली बार हिलना आरम्भ करनेपर और छूनेपर ; घटना—शरीरको हिलाने और चलने-फिरनेपर। कर्कट, विषैला फोड़ा या दूषित फोड़ा और विसर्प आदि रोगमें तेज़ जलन, मानो रोगवाली जगहपर जलता हुआ अङ्गारा रखा हुआ है (आर्स और ऐन्थ्राक्सिनके प्रयोगसे यदि जलन न घटती हो तो युफोर्बिया हेटेरोडाक्स)। मेरुदण्डको अन्तिम हड्डी या पिक-चंचु-अस्थि प्रदेशमें दर्द, बैठनेवाली अवस्था त्यागकर उठनेपर दर्द बढ़ जाता है (बैठनेवाली अवस्थामें दर्द, चलने या छूनेपर दर्दका बढ़ना—कैलि-बाई)।

वृद्धि।—शरीर गर्म होनेपर, सोनेके बाद हिलना आरम्भ करनेपर, करवट बदलनेपर, छूनेपर और विश्राम करनेके समय।

घटना।—शरीर हिलाने और ठण्डा प्रयोग करनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐकालिफा, क्रोटन-टिग, मैन्सि, कोलचि, ऐण्टि-टार्ट, वेरेट, ग्रैफाई, लैके, पल्स, सिपिया और सलफरके बाद उपयोगी है।

दोषघ्न या प्रतिविष।—कैम्फो ; ओपि।

शक्ति।—३रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—५० दिन।

इयुफोर्बिया पेप्लस

(EUPHORBIA PEPLUS)

दूसरा नाम।—पेटि-स्पार्ज।

उपयोगिता और आभास।—गलेका जखम, विसर्प आदि लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—उद्भिद रस और निम्न शक्ति ३x—६x।

इयुफोर्बिया पिल्यूलिफेरा

(EUPHORBIA PILULIFERA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, ब्राङ्काइटिस, जखम करने बाद प्रदरका स्राव, प्रमेह ; सर्द-गर्मी ; श्वास-कृच्छ्रता ; मूत्रनाली प्रदाह ; पेशाब करनेके समय काँखना और असह्य यन्त्रणा ; चोटकी वजहसे रक्तस्राव वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इयुफ्रेशिया आफिसिनेलिस

(EUPHRASIA OFFICINALIS)

दूसरा नाम ।—आइ ब्राइट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— पलकोंका प्रदाह ; मोतियाबिन्द ; सर्दी ; शूल ; आँखोंका प्रदाह ; चक्षुरोग ; ग्रन्थियोंका बढ़ना ; आँसू बहना ; खसड़ा ; कर्ण-शूल ; व्रण ; पलकका गिरना ; मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना ; गण्डमाला ; माषक-धातु ; तारका-प्रदाह और बहुत-सी आँखकी बीमारियोंमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—गिरने, चोट खाने या रगड़ खा जानेके कारण बीमारियाँ या किसी बाहरी अंगकी क्षति ; श्लैष्मिक झिल्लियोंका प्रतिश्याय या सर्दी, विशेषकर आँख और नाककी ; आँखसे बहुत ज्यादा जखम कर देनेवाला आँसू बहना और नाकसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, आँखसे लगातार पानी बहा करता है और सवेरे आँखें जुड़ी हुई दिखाई देती हैं ; पलकोंका फूलना, लाल होना और उनमें जलन ; सवेरे जोरसे खाँसी आया करती है और बहुत ज्यादा मात्रामें कफ़ निकलता है । इसके साथ ही नाकसे

बहुत ज्यादा पानीकी तरह सर्दीका स्राव हुआ करता है। गर्म दक्षिणी हवा लगनेसे स्राव होना बढ़ जाता है, सवेरे पहली बार भोजन कर लेनेपर गलेसे बदबूदार श्लेष्मा साफ़ करनेकी चेष्टा करनेपर गला रुक जाता है और अन्तमें सब खायी हुई चीजें कै हो जाती हैं; इच्छा-पूर्वक खाँसनेपर भी बहुत ज्यादा मात्रामें बलगम निकलता है, सवेरे शय्यासे उठनेपर बढ़ जाता है; आँख, नाकके सर्दीके साथ ही रजोलोप, आँखसे बहुत ज्यादा परिमाणमें त्वचाको क्षय करनेवाला आँसूओंका स्राव होना; ऋतु नियमित समयपर होता है, पर बहुत तकलीफ़ हुआ करती है और स्राव केवल एक घण्टेके लिये होता रहता है या कई दिनोंके विलम्बसे होता है; स्राव बहुत थोड़ा और केवल एक दिन ही होता है; हूप खाँसी,—खाँसनेके समय बहुत ज्यादा आँसू निकलते हैं (स्क्विला); सिर्फ दिनके समय खाँसी आया करती है; नाकके दाहिने ।पार्श्वमें चिपटा कर्कटका अर्बुद; बवासीर, मलद्वारके चारों ओर एक तरहकी गोटी या खोल बाहर निकलती है, मानो आँखमें धूलके कण गिर गये हैं, आँखपर मानो एक केशका टुकड़ा लम्बा लटक रहा है, ऐसा मालूम होता है मानो ऊपरी ओंठ काठका बना हुआ है; निर्मल वायु सेवनके लिये चलनेके समय बार-बार जम्हाई इत्यादि आया करती है इत्यादि इयुफ्रेशियाके कई प्रकृतिगत निर्णायक लक्षण प्रसिद्ध हैं।

लक्षणावली

मन।—स्मरण-शक्तिका बिगड़ना; मस्तिष्कमें मैलापन; चारों ओर क्या हो रहा है, यह उसकी समझमें कुछ भी नहीं आता। आलसी, जड़ भावापन्न और अवसाद-वायु-ग्रस्त चित्त; सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है (बैप, कैलि-बाई, लिलियम-टाई, नक्स-मस, ओपि, फास, ऐ-फास, सिपि, स्टैफाई)। बातचीतसे अनासक्ति (ऐमोन-म्यू, आर्जेण्ट-नाई, सिङ्को, इग्ने, मैग-कार्ब, मैन्सि, आक्साई, फास, स्टैन)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, माथेमें भार मालूम होता है और गिरना ही चाहता है। सर्दीके साथ सन्ध्याके समय मस्तिष्ककी जड़ता (सिपि, फास) और माथेमें चोटकी तरह जैसा दर्द (इयुफोर्ब, वेरेट, हेलिबो)—सोनेपर बढ़ना (बेल, कैम्फो, कोलो, लाई, मैग-कार्ब; सोनेपर घटना—ऐथा-मेण्टा, कैल्के-फास, कूप्रम, हेलिबो, इग्ने, ओलियैन)। पीसनेकी तरह सर-दर्द, आलोकातङ्क

(Photophobia—कैलि-कार्ब, पल्स) और ललाटमें उत्ताप मालूम होना ; ऐसा मालूम होता है मानो माथा फट जायगा (कैप्स, नेट्र-म्यूर, नक्स)। सरका काँपना देखकर माथेकी टपक बाहरसे ही स्पष्ट दिखाई देती है (आर्नि, बेल, कैम्फो, कैल्के, काक्यु, लैके, कैल्के-कास्टि, डिजि, कैल्मि, टैङ्गो, वेरेट, जिङ्क)।

आँख ।—आँखका प्रदाह—बहुत ज्यादा त्वचाको क्षय करनेवाला आँसू निकलता है और नासारन्ध्रसे थोड़ा पानी गिरता है (सिपाके विपरीत) : आँखोंमें लगातार आँसू सञ्चित हुआ करते हैं और सवेरे ऐसा दिखाई देता है मानो आँखें जुड़ गई हैं (आर्जेण्ट-नाई, पल्स, कैलि-कार्ब, कैल्के, क्लिमेट, सल्फ, रास) ; आँखकी पलकें फूली, लाल और जलन-भरी (कैल्के, इग्ने, क्रियो, लैके, मर्क, नक्स, सल्फ, थूजा)। चोट लगनेकी वजहसे आँखोंमें प्रदाह पैदा हो जाता है और वह लाल हो जाती है। सर-दर्दके साथ पलकोंके किनारे जख्म-भरे और प्रदाहयुक्त हो जाते हैं। हवा लगनेपर आँसुओंका स्राव बढ़ जाता है (क्लिमेट, क्लोरम)। आँखमें करकराहट होती है, मानो उसमें बालूके कण प्रवेश कर गये हैं (ऐल्यू, आर्से, कास्टि, डिजि, इग्ने, क्रियो, लैके, मर्क, ओलियेन, फास, फाइटो, सल्फ)। ऐसा दर्द मानो आँखोंमें छुरी गड़ा रहा है। बहुत चमकीली रोशनीकी ओर देखनेपर यह दर्द बढ़ जाता है (ऐग्नस, आर्से, कैलि-कार्ब, नेट्र-सल्फ, पल्स, रोडो, रियुटा, सल्फ, टैङ्गो)। आँख और पलकोंसे बहुत ज्यादा परिमाणमें स्लेष्मा निकलता है, कभी-कभी खून-मिला स्लेष्मा भी निकला करता है (सफेद आभा लिये स्लेष्मा इकट्ठा होता है और बाहर निकलता है—बैराई-म्यूर, कैल्के, कैमो, डिजि, इयुफोर्ब, ग्रैफ, लैप्सियु, पल्स, सल्फ)। आलोकातङ्क अर्थात् रोशनीका सहन न होना, खासकर दिनकी रोशनी और धूपमें (दिनकी रोशनी—ऐमोनियैक, ऐसिट-ऐसिड, ग्रैफ, हेलिबो, हिप, नक्स, फास, ऐ-फास, सिपि, साइलि ; धूपमें—बार्बा, कैस्टोर ; दीयेकी रोशनीमें—बोर, कैस्टोर, हिप)। ऐसा मालूम होता है मानो केशका एक टुकड़ा आँखपर झूल रहा है और उसे हाथसे हटाना होगा।

कान ।—कानमें दर्द—कर्ण-पटहमें बेधनेकी तरह दर्द (ऐमोन-म्यूर, बेल, हेलिबो, ऐसिड-हाइड्रो, लैकि, मैग-म्यूर, ओलि-ऐन, फिलैन, प्लम्ब, रैनान, रोडो, साइलि)।

नाक।—सर्दी (Coryza)—जोरसे खाँसी और बहुत ज्यादा परिमाणमें कफ़ निकला करता है और सवेरे लगातार पानीकी तरह श्लेष्मा निकला करता है (बेराई-आयोड, डिजि, प्लम्ब, फास, रैनान-स्किलि, रोडो, सेबाड, ब्रोम, मर्क-कोर, स्पाइजि); गर्म दक्षिणी हवा लगनेपर बढ़ना। दिनमें लगातार पानीकी तरह श्लेष्मा बहा करता है और रातमें श्लेष्मा सूखकर नाकका छेद बन्द हो जाता है (नक्स-वोम)। नासापुटके ऊपर पीव-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं (ऐमोन-कार्ब, ऐसिट्-क्रूड, बोर, क्लिमेट, कैलि-कार्ब, रास)। आंशिक पक्षाघात (जेल्सि, कास्टि)।

मुखमण्डल।—उत्ताप और जलनके साथ बोलने या चबानेके समय ऐसा मालूम होता है मानो गाल अकड़े हुए हैं (सर्दीमें)। चेहरा लाल, चेहरेपर खसड़ेकी तरह (Miliary) दाने निकल आते हैं और उनमें पानी लगनेपर वे लाल हो उठते हैं और उनमें जलन होती है (जिन्सेङ्ग) तथा गर्म प्रयोग करनेपर उनमें खुजली होती है। ऊपरी ओंठ ऐसा मालूम होता है, मानो काठका बना हो। तोतलाना (ऐको, बेल, बोवि, स्ट्रैमो, वेरेट) और बोलते-बोलते बार-बार अटक जाता है (कैनाब, कास्टि, मेजेर, ओपि, रियुटा)। जीभ अकड़ी हुई (निकोल, सिपि, लाई, लोरो) और गाल अकड़ा रहनेकी वजहसे बोलनेमें तकलीफ़ होती है। पानी आदि पीनेके समय गलेमें "कोंक-कोंक" शब्द होता है। सवेरेके भोजनके बाद कण्ठसे कड़वा श्लेष्मा निकलनेके समय गला रुक जाता है और खायी हुई चीज़ सब कै हो जाती हैं (ब्राई); धूम्रपानके बाद मुँहका स्वाद कड़वा हो जाता है और मिचली पैदा हो जाती है।

मलद्वार और मल।—बैठनेके समय मलद्वारमें बहुत दबाव मालूम होता है। बवासीर—मलद्वारके चारों ओर बहुत दिनोंकी समतल पीठवाली गुटिकाएँ—रातमें इन दोनोंमें तेज़ जलन होती है (ऐसिड-नाई, थूजा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—सन्ध्याके बाद, शय्यापर सोनेपर एकाएक जननेन्द्रिय आदि भीतरकी ओर जोरसे खिंचती मालूम होती है (बार्बा, प्रूनस) और तलपेटकी हड्डीपर बहुत दबाव मालूम होता है। लिङ्गमुण्ड और मेढ्र त्वचाके आवरणमें दुर्दमनीय खुजली और छुरीकी चोटकी तरह दर्द। मेह रोगकी

वजहसे मसे, खुजली और उनमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द ; छूनेपर जलन होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है (ऐण्टि-टार्ट, अरम-मूर-नेट, कैलि-आयोड, थूजा, स्ट्रैन-कार्ब)। अण्डकोषके ऊपर खींचन (बेल, बार्बा, क्रोटन, नक्स, ओलियेन, प्लम्ब, रोडो, थूजा, जिङ्क)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयपर होता है, परन्तु इस समय दर्द बहुत तेज़ होता है ; प्रायः एक घण्टा रहता है या कई दिन बाद विलम्बसे फिर होने लगता है ; स्राव बहुत थोड़ा और कुल एक दिन होता है (बेराई) ; ऋतुरोधके साथ आँख और नाकसे सर्दी बहा करती है ; बहुत ज्यादा त्वचाको क्षय करनेवाला आँसूका स्राव होता है। चलनेके समय जननेन्द्रिय-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और खुजली पैदा हो जाती है।

श्वास-यंत्र।—गला साफ़ करनेके लिये खाँसते समय बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकला करता है ; सवेरे शय्यासे उठनेपर बढ़ता है (ऐल्यू, कैल्के, लैके, पल्स, ऐमोन-कार्ब, हिप, इपिक, मर्क, नेट्र-कार्ब, सेनेगा, साइलि ; रातमें सोनेके समय—ऐमोन-कार्ब, अरम, मर्क, नाइट्रम, रास)। हूप खाँसी—खाँसनेके समय बहुत ज्यादा आँसू बहते हैं (स्क्वियुला, नेट्र-मूर) ; केवल दिनमें खाँसी आती है (ऐमोन-कार्ब, आर्जेण्ट, कैल्के, नाइट्रम, फेरम, नेट्र-मूर, फास, स्टैन)। खाँसी—सवेरे सोकर उठनेके समयसे आरम्भ होकर जबतक फिर नहीं सो जाता, तबतक खाँसी आया करती है ; दिनमें श्लेष्मा निकलता है, रातमें सूखी खाँसी आती है ; रोगी बहुत हाँफ उठता है, वायुनलीमें सुरसुरी होती है, धूम्रपानसे बढ़ती है ; भोजन करनेके समय या श्लेष्मा या पानीकी तरह वमन होनेपर घटता है ; एकाएक बवासीर रुक जानेपर खाँसी पैदा हो जाती है, इसके साथ ही बहुत सर्दी रहती है ; दिनमें बड़ी तकलीफ़से श्लेष्मा निकलता है और आँखसे पानी निकला करता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गिरने, दबने या किसी दूसरी तरहसे चोटके कारण वाह्य वहिरङ्गमें जखम आदि (आर्नि, कैलेन, हाइपिर, सिम्फिट)। चलनेके समय उरुके पीछे और एँड़ीकी कण्डरा या पेशीमें बहुत खींचन होती है (ऐमोन-मूर, कास्टि)। किसी एक अङ्ग या प्रत्यङ्गके नीचेसे ऊपरकी ओर ऐसी सुरसुरी मालूम होती है, मानो चींटी रेंग रही है और वह अङ्ग सुन्न हो जाता है (आर्नि, साइकूट, कोलचि, इग्ने, ओलि-ऐन, ऐ-फास, प्लैट, प्लम्ब, रास, सिकेलि, सोलेनम-नाई, स्टैफाइ, स्ट्रैम, टैबाक)।

निद्रा ।—वायु सेवनके लिये टहलनेके समय बार-बार जम्हाई आती है (इयुफोर्ब, रात २ बजेके बादसे ६ बजेतक) और मानो डरकर बार-बार नींद खुल जाती है। डरावने सपने देखता है और बार-बार चौंक उठता है और नींद खुल जाती है।

वृद्धि ।—सन्ध्याके समय, सोनेके समय, घरमें रहनेके समय, उत्तापसे, सर्दी लगनेपर और दक्षिणी हवा लगनेपर, छूनेपर। सोनेपर सर्दी बढ़ती है और खाँसी कम हो जाती है। सोनेके बाद सभी लक्षण बढ़ जाते हैं (लैके) और शय्यासे उठनेपर बहुतसे लक्षण घटते हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—प्रतिविष या दोषघ्न—कैम्फो, पल्स ; आँखकी बीमारीके सम्बन्धमें—युफ्रेशिया पल्सेटिलाके सदृश गुणवाली है। आँखकी बीमारीके सम्बन्धमें एलियम-सिपा ठीक इसके विपरीत है अर्थात् आँखसे तो अनुग्र जलका स्राव होता है और नाकसे जखम पैदा कर देनेवाला कषाय-गुण-विशिष्ट श्लेष्माका स्राव होता है, पर हाइड्रोफिलम सम्पूर्ण रूपसे सदृश गुणयुक्त है, अधिककर इथ्यू, आर्जेण्ट-नाई, आर्स, हिप, कैलि-आयोड, मर्क-कोर, पल्स, डिजि, टैबाक वगैरह इसके साथ तुलनीय हैं।

शक्ति ।—३ रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० से ३० दिन।

इयुपियोनम

(EUPIONUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—काठसे तैयार हुए अलकतरेको चुआनेपर दो तरहका तेल तैयार होता है—एक भारी और दूसरा बहुत हलका ; इस भारी तेलसे क्रियोजोटम और हलके तेलसे इयुपियोनम तैयार हुआ करता है। डा० क्लार्क।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— रजःस्वल्पता ; दमा ; ऐंठन ; स्वप्न ; नाकसे रक्त-स्राव ; ग्रन्थियोंका फूलना ;

रक्तस्राव ; श्वेत-प्रदर ; रजसाधिक्य या जरायुसे रक्तस्राव : सर-दर्द ; स्नायुशूल ; रातमें पसीना ; क्षय-कास ; दन्तशूल ; अर्बुद ; अनुकल्परजः ।

उपयोगिता और आभास ।—स्त्री-जननेन्द्रिय ही इसकी क्रियाका केन्द्रस्थल है और जरायु-भ्रंश, पीली आभा लिये प्रदरके स्रावके साथ कमरमें दर्द ; दोनों योनि-द्वारोंमें दर्दके साथ बार-बार पेशाब होना ; किसी अवलम्बनपर झुककर बैठनेपर कमरका दर्द घट जाता है ; ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी प्रकट होता है और स्राव बहुत ज्यादा या पतला हो जाता है ; थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बहुत ज्यादा पसीना होता है। अश्लील सपने देखना, ऐसा मालूम होता है मानो समूची देह मांड़ जैसे पदार्थसे बनी है वगैरह कई ड्युपियोनमके प्रकृतिगत निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—शरीरका ऊपरी अंश दाहिनी ओरसे बाईं ओर घुमानेपर सब अन्धकारमय (लैक-कैन, लाई, पल्स) हो जाता है। शय्यापर उठकर बैठ जानेसे ऐसा मालूम होता है मानो समूचा सर चक्कर खा रहा है (बेल, ग्रैफ, पेट्रोल, रास)। ललाटमें टपककी तरह दर्द, सोनेपर दर्द घट जाता है (ऐथिमैन, कैल्के-फास, कूप्रम, हेलिबो, इग्ने, ओलि-ऐन)। ब्रह्मतालुमें उत्ताप मालूम होता है। सर-दर्दके समय ऐसा मालूम होता है मानो कोई सरके केश खींच रहा है (ऐको, ऐल्य, कैन्थ चायना, कैल्के-कास्टि, इण्डिगो, रास, सेलिन) ; ऐसा मालूम होता है, मानो गर्दनके पीछेवाले भागकी पेशी कोई खींच रहा है (आर्जेण्ट, ग्रैफ, लैके, मैग-कार्ब, नाइट्रम, स्पाई, वेरेट) और आँसू बहने लगते हैं (ड्युजि, इग्ने, पल्स, स्पञ्जि) ; ब्रह्मतालुसे प्रत्यङ्गोंके भीतर होकर उदर और जननेन्द्रियतक सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना। माथेमें जगह-जगह दर्द मालूम होता है मानो इन सभी अंशोंमें फोड़े हो रहे हैं।

आँख ।—ऐसा मालूम होता है मानो आँखके ऊपर कुछ लगा हुआ है और इसीलिये बार-बार हाथसे आँख रगड़नी पड़ती है, आँसू बहना, निर्मल हवामें बढ़ जाता है और घरके भीतर घट जाता है (कैल्के, फेलैन, फास, पल्स, रियुम, रियुटा, सैबाड, सेनेगा, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा)। सभी चीजें

मलिन मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है मानो घूंघटके भीतरसे देख रहा है (बार्बा, कास्टि, क्रोक, क्रियो, मार्क-कोर, पेट्रोल, फास, रास, सल्फ)।

नाक।—बार-बार छींक, जितनी ही बार नाक छिड़कता है उतनी ही बार छींक आती है। सवेरे पतली सर्दी निकलती है और बार-बार छींक आती है (सिक्लमेन, आर्स, कैलेड, ड्रोसे, क्रियो, स्क्विला, स्टैफि)। नाक छिड़कनेपर नाकसे पतला तरल खून निकलता है (आर्जेण्ट, बेराई, स्पञ्जि)। ऋतु बंद हो जानेपर नाकसे खून गिरता है (ब्राई)।

मुँहके भीतर।—दोनों हनु संयुक्त करनेपर दाँत-पर-दाँत जुड़ जाते हैं। सवेरे ऐसा मालूम होता है मानो दाँत सब किसी कोमल पदार्थमें सन्निविष्ट हैं—भोजन कर लेने बाद यह अनुभव घट जाता है। दाँत सब उठे और मसूढ़े फूले मालूम होते हैं। समूची जीभ लाल और ऊँचे काँटोंसे भरी, मानो जीभपर मछलीके अण्डे छिड़के हैं। सवेरे गलेमें कड़वा स्वाद भरा श्लेष्मा संचित रहता है और कितनी ही बार खाँसनेपर निकलता है।

पाकाशय।—डकार, खायी हुई चीज़का स्वाद-मिला (ऐलो, ऐमोन-कार्ब, ब्राई, कैल्के, कास्टि, कैमो, इयुफ्रे, लैके, लौरो, फास, पल्स, ऐसिड-आक्साल, रास, सिपि, साइलि, सल्फ, थूजा,)। मिचली, सीधे होकर बैठने, प्यास, बहुत ज्यादा ऋतुस्राव और इसके साथ ही हाथ पैर काँपते हैं, दाहिने स्तनके नीचे छुरी मारनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है; (लैक-कैन, हाइड्रास्ट)। भीतरी शीत या कम्पनके साथ पाकस्थली आध्मान (फूलना) और भारयुक्त मालूम होती है।

अन्त्राशय।—बार-बार आँतोंमें गड़गड़ आवाज़—हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ शब्द (ऐनाक, ऐग्नस, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, कार्बो-ऐन, कार्बो-वेज, सिक्लेम; हिमेटक्स, लाई, नेट्र-म्यू; नक्स-वोम, ओलियेन, प्लम्ब, पल्स, सिपि, साइलि एसिड-सल्फ, कास्टि, साइक्य, ऐल्यू, ऐलो; इयुफोर्ब, इयुफ्रे, ग्रैटो, नक्स-वोम, स्टैन)। वायु निकलनेपर दर्द घट जाता है (नेट्र-कार्ब, नाइट्रम), अन्त्राशयमें दर्द, खाँसनेपर (आर्स, ऐनाक, बेल, कैल्के, कैन्थ, काक्यु, नक्स-वोम); छींक आनेपर (बेल, कैन्थ, कैमो) और नाक झाड़नेपर (कैन्थ) बढ़ जाता है। ऋतु होनेके एक दिन पहले अन्त्राशयमें संकोचन और मोच खानेकी तरह दर्द—सामनेकी ओर झुकनेपर दर्द घट जाता है (कैस्टोर, इयुफोर्ब, सल्फ)।

ऋतुके समय अन्त्राशयमें काटनेकी तरह दर्द; दर्द घटनेपर बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव आरम्भ हो जाता है (सिरियन-आक्सेल, लैके), खूनका रंग लाल और वह बहुत पतला रहता है। चलनेके समय, बाँह उठानेपर या खाँसनेपर एकाएक अन्त्राशयके बाएँ पार्श्वमें दर्द होकर साँस रुक जानेका उपक्रम हो जाता है; विश्रामके समय दर्द नहीं रहता; कुछ देर बाद अन्त्राशयकी वेदना और कुछ निम्न-गामी होकर गायब हो जाती है।

मलान्त्र और मल।—मलद्वारके कई अंगुल ऊपरसे एक तेज़ दर्द चारों ओर फैलकर योनिद्वारतक भी पहुँच जाता है, दर्द इतना अधिक होता है, कि रोगिनी बैठ नहीं सकती। नींद आने बाद दर्द घट जाता है, पर सर-दर्द और मिचली पैदा हो जाती है। कूथन—खून निकलने बाद यह दर्द घटता है, पर रोगिनी कमजोर हो पड़ती है। दिनमें तीन-चार बार खून-मिला पाखाना होता है। कब्जियत—तीन-चार दिनोंके अन्तरसे पाखाना होता है और जरायु अपने स्थानसे हट जाता है।

पेशाब।—बार-बार पेशाबका वेग होता है, पर पेशाब थोड़ा निकलता है (ऐमोन-कार्ब, क्युप्रम, डिजि, इयुफोर्ब)—बैठनेकी अपेक्षा खड़े होनेकी अवस्थामें बढ़ जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयके बहुत पहले ऋतु प्रकट होता है। स्राव बहुत ज्यादा और पतला होता है, बहुत जल्दी अपर्याप्त स्राव होता है (बेल, बोर, बोवि, कैल्के, कार्बो-वेज, क्रोक, मार्क, नेट्र-म्यूर, फास, सिपि); ऋतुके समय अत्यन्त सर-दर्द, शीतार्तता और क्रोधका स्वभाव मौजूद रहता है (क्रोध-प्रवणता—क्रियोजोट, नेट्र-म्यूर, सर-दर्द—कार्बो-वेज, लाई, नक्स, ह्यायो, मैग-कार्ब, सल्फ ; जाड़ा लगना—कैस्टोर, क्रियो, मैग-कार्ब, पल्स)। शरीरका ऊपरी अंश ढलमलाया करता है और चारों ओर अन्धकार दिखाई देता है (लैके-कैन, लाई, पल्स, देखिये), ऋतुस्राव रुकते ही नाकसे खूनका स्राव होने लगता है (ब्राई, लैके)। ऋतुके ८ दिन बाद प्रदर आरम्भ हो जाता है (क्रियो, फास, पल्स, रियुटा), स्राव पीले रंगका ; कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है (आर्स, ग्रैनेट, केलि-बाई, केलि-कार्ब, क्रियो, ऐसिड-फास, सिपि, प्रूनस, स्टैन, नक्स), इसके साथ ही कमरमें प्रचण्ड दर्द (केलि-कार्ब, मैग-सल्फ, नाइट्रम), पीछेवाले किसी अवलम्बनपर कमर कसकर झूल पड़नेपर घटता

है। कमरमें दर्द घटते ही बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव हुआ करता है (सिरियम-आक्स, लेके देखिये); स्राव संध्याके समय बन्द हो जाता है और सवेरे फिर प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है। ऋतुस्राव बन्द होते ही पेटमें मरोड़की तरह दर्द पैदा हो जाता है और यह दर्द बन्द होनेपर फिर बहुत ज्यादा परिमाणमें ऋतुस्राव आरम्भ हो जाता है। प्रदर-स्रावके कारण रोगिनी परिश्रम नहीं कर पाती और दुबली हो पड़ती है; प्रदरके समय चलनेपर तलवेमें तेज़ दर्द होता है और बैठनेके समय देह इस तरह थर-थर काँपा करती है मानो पतले मांड़ जैसे पदार्थसे बनी हो। दाहिने डिम्बाधारमें जलन (एपिस, पैलेड)।

श्वास-यन्त्र।—क्षण-स्थायी हलकी खाँसीके साथ ऐसा मालूम होता है मानो स्वरनालीके सबसे नीचेवाले प्रदेशमें कुछ गड़ा हुआ है। वायुनलीके दाहिनी ओर पिट-पिट होकर बार-बार खाँसी आती है और रोगी हाँफने लगता है; जब स्वाद-रहित सफेद श्लेष्मा निकल जाता है, तब श्वास-कष्ट कुछ घटता है। बहुत तेज़ सूखी और श्वास-रोध करनेवाली खाँसी, प्रतिवर्ष जाड़ेके दिनोंमें यह खाँसी आने लगती है (सोरिनम)। गर्म पानीय पीनेपर, शय्यापर उठ बैठनेपर और पसीना होना आरम्भ होनेपर यह खाँसी घट जाती है। गाढ़ा, पीला, हरा या धुमैले रङ्गका और कभी-कभी कड़वा स्वाद मिला बलगम निकलता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऋतु होनेके एक दिन पहले कमरमें दर्द आरम्भ हो जाता है और ऋतुके समस्त पहले दिन दिनभर ऐसा ही रहता है; पीछेकी ओर झुकने या किसी चीज़पर पीठ अड़ाकर बैठनेपर कमरका दर्द घट जाता है। कमरका दर्द और प्रदरका स्राव पर्यायक्रमसे प्रकट होता है। यह दर्द कमरसे आरम्भ होकर वस्तिगह्वरतक फैल जाता है, रोगिनीको झुककर उठनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है; त्रिकास्थि (Sacrum) प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो वह स्थान टूट गया है। ऊरुके पीछेका मांस आदि, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डीसे काटा जाता है, या उखाड़ लिया जाता है (खरोंचता है—रास, ऐसिड-फास, ऐसा, सेबाड, स्पाइजि)। सीढ़ी चढ़ने, माथा झुकाने, बैठने और छूनेसे दर्द बढ़ता है। जङ्घाकी पोटलीकी पेशीमें अकड़न हो जाती है (कैम्फो, ऐनाक, हायो, लाई, ऐसिड-नाई, नक्स, सिपि सोलेन-

नाई)। दाहिना गाल, जीभका अगला भाग, शरीरका समूचा दाहिना अंश बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है।

निद्रा।—अश्लील सपने देखना, मानो नङ्गे आदमियोंको देख रहा है। ऐसे शङ्काजनक सपने मानो उसकी सन्तान पानीमें गिर गयी है मानो एक साँढ़ उसे खदेड़ रहा है, पसीनेमें तर होकर नींद खुल जाती है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सरमें दर्द और माथेमें सुई बेधनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है; जाड़ा, गर्म पानी पीनेपर घटता है (पानी पीनेपर घटना—कास्टि, ग्रैफा, इपिक)। मध्याह्नके समय सूखा और स्वेद-रहित उत्ताप। थोड़ा-सा परिश्रम करनेपर भी बदबूदार पसीना निकलने लगता है; सामान्य परिश्रमसे भोजनके समय या रातभर सुस्त करनेवाला पसीना होता है, रातके अन्तिम प्रहरमें बहुत ज्यादा पसीना।

वृद्धि।—सवेरे, सन्ध्याके समय और रातमें, नाक छिड़कनेपर, खाँसने, छींकने और विश्रामके समय (सरमें दर्द और अन्त्राशयमें दर्दके अलावा); गर्म पानीय पीनेपर दाँतका दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, कैमो, लैके, रास, साइलि), परन्तु जाड़ा लगना बन्द हो जाया करता है।

घटना।—विश्रामसे (सर-दर्द और आँतोंका शूल)। सामनेकी ओर देह झुकाने और पीछेकी ओर टेबुलके किनारे कमर अड़ाकर झुक पड़नेपर (कमरमें दर्द)।

सम्बन्ध।—सदृश।—क्रियोजोट, कैलि-कार्ब, ग्रैफ, लैके (स्राव आरम्भ होनेपर दर्द घटता है) सिरियम-आक्स, कैलि-बाई, नाइट्रम।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

फैगोपाइरम इस्क्यूलेण्टम

(FAGOPYRUM ESCULENTUM)

दूसरा नाम ।—वाक हुइट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—परिपुष्ट गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखी बीमारियोंमें फायदेमन्द है :—धमनीका स्पन्दन ; अतिसार ; उकौत ; आँखकी बीमारियाँ ; हाथमें पसीना ; माथेमें दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; छातीमें जलन ; नाना प्रकारके चर्म्मरोग ; खुजली ; यकृतकी बीमारी ; कर्णमूल ; मिचली ; नाकका जखम ; कलेजा धड़कना ; वात ; मसे ; गलेका जखम ; स्वाद बिगड़ा हुआ ।

उपयोगिता और आभास ।—'नीला या गर्दनकी दोनों ओरकी धमनियों (Carotids) का स्पन्दन बाहरसे दिखाई देता है—यही फैगोपाइरमका एक प्रधान निर्णायक और सिद्धि-प्रद लक्षण है । चर्म्मरोगोंमें यह विशेष उपयोगी है । उकौत (Eczema), अरुणिका (मच्छड़ोंके काटनेके कारण दाने—Erythema) और प्रत्यङ्गोंके गांसोंके भीतर त्वचाका क्षय (Intertrigo कैमो, लाई, मार्क-सोल, इथ्यू) इससे आराम हो जाया करता है । सरमें दर्दके समय आँख, नाककी जड़ और गलेके पिछले भागतक दर्द फैल जाया करता है, सामनेकी ओर माथा झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है और पीछेकी ओर झुकानेपर घटता है और गर्दन सुन्न जैसी मालूम होती है । माथेकी त्वचा, आँख, पलकोंका किनारा ; कान और नाक वगैरहमें भयानक खुजली होती है । नाकमें जखम हो जाता है और वह सूखे श्लेष्मासे भरा रहता है ; दोनों ओंठ सूखे और फटे-फटे ; गलेमें जखम ; शरीर हिलानेपर वातका दर्द घट जाता है ; विश्रामके समय उत्ताप और बेचैनी मालूम होती है, बदबूदार पसीना निकलता है वगैरह कई फैगोपाइरमके प्रकृतिगत लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—न तो किसीसे कुछ बोलता है और न उसकी यही इच्छा होती है कि किसीसे कुछ बात करें । सन्ध्याके समय बहुत दुःखित हो

जाता है और ऐसा मालूम होता है मानो मनके ऊपर कोई भार दब रहा है (मानो चित्त मेघाच्छन्न हो रहा हो— आर्जेण्ट-नाई, ऐक्टि), किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता (इथ्यू, ऐवेना, लैक कैन, ऐसिड-आक्साल, ऐसिड-फास, सार्सा, वाइवर्नन-ओप्यु, जेरोफिल)।

मस्तक।—सरमें दर्द—माथा गर्म और गर्दन थकी या अवश, सन्ध्याके समय समूचे माथेमें अस्पष्ट दर्द। ऐसा सर-दर्द मानो माथा दो हो जायगा। भीतरसे बाहरकी ओर कुचलनेकी तरह (बेल, ब्राई, कैल्के, कास्टि, इग्ने, नक्स, ऐसिड-फ्लु, साइमेक्स, साइलि); पीछेकी ओरसे दवावके कारण मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ेगा, ऐसा मालूम होता है; नींद खुलनेपर सरमें दर्द और खा लेनेपर घट जाना; सन्ध्याके समय विश्राम करनेपर और सामनेकी ओर सर झुकानेपर सर-दर्द बढ़ जाता है (ऐको, ऐसेर, ब्राई, साइक्लम, क्रोटेल, लैके, फाइटो, रास, स्पाई) और पीछेकी ओर सर झुकानेपर घट जाता है (बेल, म्यूरेक्स, सेनेगा, थूजा); घरके बाहरी भागमें चलनेपर घट जाता है (ऐण्टि-क्रूड, कोलो, थूजा)। माथेकी त्वचा खुजलाती है—गर्म कमरेमें स्थिर भावसे बैठे रहनेपर बढ़ता है (रास)। ब्रह्मतालुमें तेज़ सूतकी तरह दर्द (सीसा)।

आँख।—आँख फूली और लाल और उसमें बहुत खुजलाहट होती है, मानो आँखमें लकड़ीके धूलकण गिर गये हैं (ऐल्यु, आर्स, कैप्स, कास्टि, इयुफ्रे, क्रियो, फाइटो)। आँखसे पानी गिरता है, पढ़नेके समय बढ़ जाता है (क्रोक, क्रोटेल, ग्रैटि, ऐसिड-सल्फ)।

मुखमण्डल।—चेहरेके बाएँ पार्श्वमें स्नायु-शूल। दाँत-पर-दाँत लगे रहनेपर दर्द होता है (इग्ने), दोनों सूखे ओंठ और फटे (ब्राई, चायना, वेरेट, मर्क-कोर)। नाक जखमसे भरी और सूखे श्लेष्माके टुकड़ोंसे भरी (ब्रोम, इयुफ्रे, केलि-बाई)। सब मसूढ़ोंमें जखम हो जाता है और सामान्य कारणसे उनसे खून बहता है। मध्याह्न भोजनके बाद डकारके साथ अजीर्ण खाद्य-पदार्थोंका स्वाद-भरी डकार आती है (ऐसिड-अक्साल, पल्स, सल्फ, थूजा)। सवेरे उठनेपर गलेमें गाढ़ा श्लेष्मा सञ्चित रहा करता है (ऐल्यू, लेमियम-आल, मैग कार्ब, मर्क, निकोलम, सल्फ, नक्स-मस, स्क्रैफुला)। गलेका भीतरी भाग जखम-भरा, सूखा, प्रदाहान्वित और उसमें बराबर दर्द हुआ करता है।

ऐसा मालूम होता है मानो अन्ननालीके भीतर गोलेकी तरह कोई एक चीज़ अड़ी हुई है (ऐल्य, बेराई, बेल, कैमो, कार्बो-वेज, ग्रैफ, हिप, इग्ने, लैके, लोबे, मर्क, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, प्लम्ब, सैबाड, सल्फ, सिपि); लार निगलनेके समय गलेमें दर्द होता है (आर्स, बेल, लैके, मर्क, नक्स, पल्स, रास, बेराई)। जिह्वामूलीय दोनों ग्रन्थियाँ फूलीं (बेराई, बेल, कैल्के, कैमो, कैन्थ, हिप, इग्ने, लैके, मर्क, ऐसिड-नाई, नक्स, स्टैफाई, सिपि, सल्फ, थूजा), खाँसनेपर बदबूदार बलगम निकलता है (कास्टि, मैग-म्यूर, पल्स, फास)। गलेकी दोनों धमनियाँ फूली, बहुत दर्द-भरी रहती हैं और उनमें स्पर्श सहन नहीं होता (एरम-ट्राई, आयोड, कैलि-आयोड, कैल्के-आयोड, वैसिलिन, मर्क-सल्फ)।

पाकस्थली।—दिनमें कभी-कभी जलन करनेवाला, खट्टे पानीकी तरह डकार, डकारके साथ आया हुआ पानी इतना गर्म रहता है, कि गला रुक जानेका उपक्रम हो जाता है; काफी पीनेपर घटता है (कार्बो-ऐन, ऐसिड-कार्ब)। मिचली; भोजनके बाद घटना (लोबेल)।

अन्त्राशय।—सामनेकी ओर झुकनेपर यकृत-प्रदेशमें दर्द होता है और दिनके दस बजनेके समय ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गई है और स्पर्श सहन नहीं होता—दाहिनी करवट सोनेपर अधिक दर्द होता है (मर्क, बेल)। यकृतमें सामनेसे पीछेकी ओर तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द पैदा हो जाता है। पेट फूल उठता है और बहुत कड़ा हो जाता है—पहननेके कपड़ोंके दबावसे दर्दकी वृद्धि होती है (कार्बो-वेज, कैल्के)।

पेशाब।—मूत्रनालीमें छेदनेकी तरह दर्द। अन्तवाली कई बूँदें निकलनेमें बहुत तकलीफ होती है (क्लिमेट, आर्जेण्ट-नाई); यह समझनेके बाद भी कि पेशाब होना ख़तम हो गया है, फिर कई बूँदें निकल पड़ती हैं। जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बदबूदार पसीना (कैलेड, कोरैल, मर्क, सिपि, सल्फ, थूजा), मुष्कत्वकके ऊपर पसीना होता है—डैफनी, इग्ने, नेट्र-सल्फ, सिपि, थूजा; दोनों ऊरुके बीचवाले प्रदेशमें पसीना होता है—सिना बेरिस)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—दाहिने डिम्बाधारमें दर्द होता है (इयुपियोन, एपिस, पैलेड)—सन्ध्याके पहले घूमनेके समय। योनिमें खुजली होती है; ठण्डे पानीका प्रयोग करनेपर घटती है (ऐम्ब्रा, क्रियो, प्लैट)। प्रदर—

स्रावका दाग वस्त्रमें पीला पड़ता है (इयुपियोन, कार्बो-ऐन, नक्स, प्रूनस), विश्रामसे बढ़ना।

श्वास-यंत्र।—शय्यामें सोनेपर स्तन-वृन्तसे सुई वेधनेकी तरह तेज़ दर्द पीछेकी ओर सञ्चारित हो जाता है, दबानेपर घटता है। साँस लेनेके समय छातीमें तेज़ सुई वेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्डके चारों ओर तेज़ दर्द और यह दर्द बाएँ कन्धे तक और बाँहतक फैल जाता है, चित्त होकर सोनेपर घटता है (बोर)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गला कमजोर—मानो माथेका भार सहन नहीं कर सकता। गर्दनका पिछला भाग और सरके पिछले भागके नीचेके स्थानमें तेज़ दर्द; पीछेकी ओर सर झुकानेपर घटता है। दाहिने मूत्रग्रन्थि प्रदेशमें सुई वेधनेकी तरह दर्द (लाई; बाएँ मसानेके स्थानपर—कार्ब, टैबाक)। दिनके ५ बजेसे ६ बजेतक, दर्द बगलसे बाँहके ऊपरवाली द्विमूल पेशी और वक्षके बगलवाली पेशीमें फैलता है। बाँहमें दर्द, मानो हाड़के भीतरसे दर्द उठता है; ठण्डे टेबुलपर हाथ रखनेसे यह दर्द बढ़ जाता है; बीचमें टपक होती है, यह ऊपरसे ही दिखाई देता है। केशसे ढँके अंश सब बहुत खुजलाते हैं, तीसरे पहर बढ़ना। तलवा, मस्तक और तलहत्थीमें तीसरे पहर बहुत जलन होती है।

ज्वर।—तीसरे पहर पीठकी ओरसे कम्प होता है; ताप और बेचैनी पैदा होती है; हाथ-पैरमें पसीना होता है; बगलमें बदबूदार गन्ध आती है।

निद्रा।—हमेशा जम्हाई आती है, नींद आती है।

वृद्धि।—सामनेकी ओर माथा झुकानेपर, तीसरे पहर ३ बजेसे ६ बजेके बीचमें (कोलो, हेलिबो, मैग-फास, लाई); रात्रिके ११ बजनेके समय (कैक्टस); विश्रामके समय (रास), उत्तापके प्रयोग और शरीर हिलानेपर (शरीर हिलानेपर वातका दर्द घटता है)।

घटना।—शरीर हिलाने (वात-वेदना), पीछेकी ओर सर झुकानेपर, ठण्डे प्रयोगसे और दवा देनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—रास, सेनेगा, कार्बो-ऐन, नक्स।

शक्ति।—प्रथम से ६ठा शततमिक क्रम।

फैगस सिल्वैटिका

(FAGUS SYLVATICA)

प्रस्तुति ।— पके बीजसे मूल अर्क और विचूर्ण होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मृगी ; सर-दर्द ; जलातङ्क ; सरमें चक्कर इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके द्वारा जलातङ्क (Hydrophobia) के अधिकांश लक्षण प्रकट हुआ करते हैं, जैसे—बहुत ज्यादा लारका स्राव, पानी देखनेसे ही डर पैदा हो जाता है ; धनुष्टङ्कार आदि आक्षेपिक रोग, शरीरका अकड़ना और ठण्डापन, मुख फूल उठता है और सरमें दर्द पैदा हो जाया करता है ।

लक्षणावली

मन, मस्तक इत्यादि ।—पानी देखनेसे ही डरसे बेचैन हो जाता है (हाइड्रोफोब, स्ट्रैम, कैन्थ, बेल, हायो)। भीत और चकित भाव ; हमेशा मृत्युका भय (ऐको, आर्स, लैक-कैन, लोबेल)। सरमें चक्कर आना, सारी रात बेहोशीका भाव ; मतवालेकी तरह ढलमलाया करता है। ललाटदेशीय (Frontal) सर-दर्द, बहुत देरतक स्थायी रहा करता है ; सरमें दर्दके साथ मुख-विवरका फूलना। मुँहसे लगातार फेन-भरी लार बहा करती है।’

पाकस्थली ।—मुँहसे बहुत ज्यादा परिमाणमें फेनभरी लार बहा करती है (लिसिन या हाइड्रोफोबिन) ; दुर्दमनीय प्यास ; पानी देनेके लिये आरज्-मिन्नत करता है; पर पानी देखते ही काँप उठता है, पेशाबका रंग आगकी तरह और गदली सफेद रङ्गकी बालू तलीमें बैठती है ।

ज्वर ।—शरीरकी त्वचा आग छू जानेकी तरह जला करती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—बेल, कैन्थ, हायोसा, हाइड्रोफोबि या लिसिन, स्ट्रैमोन, एपिफिगस (सर-दर्द और लार बहना)।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण ।

फैल टारि

(FEL TAURI)

दूसरा नाम ।—आक्स-गाल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—साँढ़के पित्तसे पहले विचूर्ण और पीछे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—दमा ; कब्जियत ; अतिसार ; पित्ताश्मरी ; सर-दर्द ; अजीर्ण ; वात इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—बुकनरकी परीक्षासे मालूम हुआ है कि परिपाक-शक्तिका विकार, उदरामय, सरमें दर्द, गर्दनके पिछले भागकी अकड़न, सन्धि-प्रदेशमें दर्द और अकड़न या ऐंठन (Cramps) इसके कई एक प्रधान क्रियाफल हैं ।

लक्षणावली

मस्तक ।—चिड़चिड़ा, क्रोधी स्वभाव । नाना प्रकारके काम-काज करनेकी इच्छा, मस्तिष्ककी जड़ता ; सवेरे सरमें प्रचण्ड दर्द, दाहिनी कनपटीको दबा रखनेपर दर्द बढ़ता है । दर्द सरके पिछले भागमें और गर्दनके पीछे फैल जाता है ।

पाकाशय आदि ।—प्यासकी अधिकता । गन्ध और स्वादहीन डकार आती है । पाकस्थली और उदरके ऊपरी प्रदेशमें कलकल शब्द होता है (कार्बो-ऐन, क्रोटोन, ओलि-ऐन, टियुक्रि, मैग-मूर) । पेटमें गुड़गुड़ शब्द होता है और ऐसा मालूम होता है मानो कुछ हिल रहा है । आँत आदिकी सङ्कोचन क्रियाकी अधिकता । भोजनके बाद औंघाई आना ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ओलियम-ऐनिमेलिस ; कोलेस्टोरिनम ; मार्क-डालसिस ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण ।

फेरम

(FERRUM)

दूसरा नाम ।—आयरन ; लोहा ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—"मेटालिकम"—लोहेका विचूर्ण । पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम या अर्क तैयार होता है । "ऐसिटिक" लोहेके साथ ऐसिटिक ऐसिड, पहले जलीय द्रव, इसके बाद सुरासारमें ; "कार्बो-नेट" पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है । डा० क्लार्कने एक साथ ही तीनोंका ही लक्षण सन्निवेशित किया है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—खूनकी कमी ; स्वरभङ्ग ; दमा ; निस्पन्द वायु (Catalepsy) ; मृत्पाण्डु ; ताण्डव ; खाँसी ; दुर्बलता ; ऐंठन ; क्षय-कास ; अतिसार ; अनजानमें पेशाब हो जाना ; सविराम ज्वर ; गलगण्ड ; प्रमेह ; रक्तस्राव ; हृत्पिण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ ; हृद्कम्पन ; विलेपी या क्षयज्वर ; मस्तिष्कमें जल-संचय ; मूत्रनाली या मसानेकी बीमारी ; आर्त्तव या रजो-विकार ; स्नायुशूल ; बहुतसे भीतरी यन्त्रोंका पक्षाघात ; गर्भिणीके बहुतसे उपसर्ग ; मलांत्र या गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हट जाना ; सन्धिवात ; स्कन्धसन्धि-सम्बन्धी बीमारी ; आक्षेप ; उपदंश, दाँतका दर्द ; कब्जियत या अतिसार ; मूत्र-धारणकी अक्षमता ; सरमें चक्कर आना इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—फेरमके नीचे लिखे कई प्रकृतिगत लक्षण हैं :—(१) ऋतुस्राव बहुत जल्दी-जल्दी होता है ; स्राव बहुत ज्यादा, ऋतुके समय कितनी ही तरहकी आवाजें कानमें आती है ; चेहरा आगके रङ्गका ; स्राव रह-रहकर बन्द हो जाता है और उसका रङ्ग फीका रहता है । (२) अतिशय उत्तेजना-प्रवणता, रोगिनी सामान्य कारणसे ही कातर हो पड़ती है ; यहाँतक कि कागजका खड़-खड़ शब्द या किसी तरहका सामान्य शब्दसे भी उन्मत्त हो उठती है (ऐसेरम) । (३) उदरामय, सवेरे बढ़ना ; आधी रातके पहले नींद अच्छी तरह नहीं आती । (४) चेहरा भूरा या हरी आभा लिये, थोड़ा परिश्रम या किसी तरहका भी दर्द मालूम होनेपर चेहरा

लाल हो उठता है। लज्जा या अभिमानका कोई कारण पैदा हो जानेपर गाल लाल हो उठते हैं। (५) खूनका स्राव होनेवाली धातुवाले मनुष्योंके सभी द्वारोंसे चमकीले लाल खूनका स्राव होता है। (६) सरमें चक्कर आना—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह पानीमें तैर रहा है। जल-प्रवाहकी ओर देखने और सीढ़ीसे उतरनेके समय सरमें चक्कर आ जाता है। (७) प्रति दो या तीन सप्ताहका अन्तर देकर दो, तीन या चार दिनोंतक स्थायी सरका दर्द, ऐसा अनुभव होता है, मानो माथेमें कोई हथौड़ेसे मार रहा है। (८) बहुत कमजोरीकी वजहसे रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है, परन्तु धीरे-धीरे टहलनेपर अच्छा रहता है। (९) खाँसी—केवल दिनमें और घूमने-फिरनेपर, सोनेपर बढ़ जाती है और भोजनके बाद घटती है। (१०) वमन, आधी रातके कुछ बाद ही और भोजन करते ही खाये हुए पदार्थका वमन, भोजन करते-करते एकाएक उठकर खाये हुए पदार्थ सब कै कर देता है और फिर तुरन्त खानेके लिये बैठ जाता है।

लक्षणावली

मन ।—चिड़चिड़ा स्वभाव, कलह-प्रिय, बहुत तर्क-वितर्क करता है, सामान्य कारणसे ही उत्तेजित हो जाता है, जरा-सा भी प्रतिवाद करनेपर चिढ़ उठता है (ऐनाक, अरम, कैमो, काक्यु, इग्ने, लाई); मानसिक परिश्रमसे थक जाता है। उत्तेजना-प्रवणता—कागजकी खड़-खड़ आवाज़से उन्मत्त हो उठता है (ऐसिर, बेल, काफि, टेरेण्टु)। मानो न जाने कितना अपराध किया है—ऐसी चिन्ता (आर्स, चेलिडो, सिना, नक्स, रियुटा, वेरेट, जिङ्क)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्क पानीमें उतरा रहा है (लैक्टियु); पानीके प्रवाहकी ओर देखने और पुलके ऊपरसे जाते समय (लिसिन) और सीढ़ीसे उतरनेके समय सरमें चक्कर आता है (बोर, सैनिक); ऐसी सम्भावना हो जाती है, मानो सामनेकी ओर गिर जायगा (आर्नि, बेल, चायना, नेट्र-म्यूर, ग्लोन, रैनान, पोडो, रास)। सरमें दर्द, टपक जैसा या हथौड़ेसे मारनेकी तरह दर्द (ऐमोन-म्यूर, कैल्के, लैके, नेट्र-म्यूर); रोगी सोनेके लिये वाध्य होता है (सोनेसे घटना—ऐथा-मैन, कैल्के-फास, क्युप्रम, हेलिबो, इग्ने, ओलि-यैन; सोया नहीं रह सकता—कोलो);

इसके साथ ही खाने-पीनेसे अरुचि—काक्यु, सेलिन ; प्यासके साथ—कूप्रम-एसेट); प्रति दो-तीन सप्ताहका अन्तर देकर सर-दर्द होता है और वह दो, तीन या चार दिनोंतक स्थायी रहता है। दर्द दाँततक फैल जाता है और हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं, सरमें अधिक रक्तका सञ्चय होना ; शिराएँ सब फूल उठती हैं और माथेमें स्पर्श सहन नहीं होता ; आधी रातके बाद और अन्तिम रातमें दर्द बढ़ जाता है। खाँसनेपर सरके पिछले भागमें दर्द होता है। केशमें स्पर्श सहन नहीं होता और वे गुच्छे-के-गुच्छे उड़ जाते हैं (चायना, ऐसिड-सल्फ़ ; कड़ी बीमारीके बाद केश झड़ जाना—कैल्के, कार्बो-वेज, लाई, नेट्र म्यूर, ऐसिड-फास ; प्रसवके बाद—कैल्के, लाई, नेट्र-म्यूर, सल्फ़, मर्क ; बहुत दिनोंतक रहनेवाले शोकके बाद—ऐसिड-फास, स्टैफाई, कास्टि, इग्ने, लैके)। सन्ध्याके समय एक नाकके छेदसे खूनका स्राव होता है, इसी छेदमें प्रायः खून जमा रहता है।

कान।—कानमें भों-भों शब्द, टेबिलपर सर रख देनेपर घटता है। ऋतुके समय कानके भीतर दूरसे आती हुई घण्टेकी आवाज़की तरह ध्वनि निकलती हुई सुन पड़ती है।

मुखमण्डल।—चेहरा, दोनों ओंठ, मुँह और नाकके मध्य भागकी श्लैष्मिक-झिल्लीका रङ्ग सफेद और रक्तहीन-सा हो जाता है ; पर सामान्य दर्द मानसिक आवेग या परिश्रमसे लाल और प्रदीप्त हो उठती है। लज्जा या अभिमानकी वजहसे गाल लाल हो जाना (Blushing—ऐमिल, कोका)। लाल अंश सब, माथा, मुखमण्डल, ओंठ, जीभ और मुँहके भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्ली ये सब सफेद हो जाते हैं। ऋतुके समय चेहरेका रङ्ग आगकी तरह हो जाता है। दोनों आँखोंके चारों ओर सूजन मालूम होती है ; दाँतका दर्द बरफकी तरह ठण्डा पानी मुँहमें लेनेपर घटता है ; चेहरेपर जगह-जगह पीले बिन्दु सब निकलते हैं (घोड़ेकी जीनकी तरह नासा-दण्डपर दोनों ओर फैले हुए पीले रङ्गका दाग—सिपि, सल्फ़)।

पाकाशय।—आधी रातके बाद ही वमन आरम्भ हो जाता है ; बिना पची हुई चीज़ोंकी कै, खाते ही कै हो जाती है, खाते-खाते एकदम उठ जाता है ; जो खाया था, वह कै कर फिर आकर खानेके लिये बैठ जाता है ; कै हुआ पदार्थ खट्टा (लाई, ऐसिड-सल्फ़)। मांस (नेट्रम-म्यूर, इसके

विपरीत है)। अम्ल वगैरहसे अरुचि या यह सब खानेकी वजहसे बीमारियाँ आदि (खट्टी चीजोंकी इच्छा—चायना, वेरेट ; मद्य या चाय पीनेकी इच्छा—ऐसिड-नाई, नक्स ; नमकीन पदार्थों की—कैल्के-कार्ब)। गर्म चीज़ खा या पी नहीं सकता (ठण्डी चीजें खानेपर, पीनेपर बीमारीका बढ़ना—आर्स)। सभी खाद्य-पदार्थ तीते मालूम होते हैं (ब्राई, चायना, पल्स)। मेदमय पदार्थ खाने बाद तीती डकार। खाते ही खाये हुए पदार्थ के हो जाते हैं (आर्स, ब्राई); खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें दस्त और कैकी राहसे निकल जाते हैं (ऐन्टीम, चायना, ओलियेन); वमन किये हुए पदार्थ खट्टे मालूम होते हैं। थोड़ा भी खाने-पीने बाद पेटमें बहुत भार मालूम होता है (ऐको, ऐगार, ऐनाक, कैल्के कार्बो-वे, चायना, ग्रैफ, आयोड, फास, सिपि); दो-चार ग्रास खाते ही कण्ठ भरा मालूम होता है (लाई, मानो पाकस्थली भर गयी है, अब जगह नहीं है—चायना)। मिचली न रहनेपर भी डकारके साथ मुँहभर खाये हुए पदार्थ उठ आते हैं (फेरम-फास, इपिक)। बहुत ज्यादा भूख मालूम होती है या भूख बिलकुल ही नहीं रहती। सभी पदार्थोंसे अरुचि।

अन्त्राशय।—पेट फूल उठता है और कड़ा हो जाता है। प्लीहा और यकृत बढ़ जाते हैं और उनमें दर्द होता है। झुकनेपर या किसी तरहका शारीरिक परिश्रम करनेके समय पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द होता है, झुकनेपर फिर जल्दी सीधा नहीं हो सकता। टहलनेके समय पेटमें बहुत भार मालूम होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो पेट झूल पड़ेगा (इग्ने, इपिक, स्टैफाई)। छूने या खाँसनेपर, तलपेटमें मानो चोट लग गयी है, इसी ढंगका दर्द होता है (बेल, कैमो, क्युप्रम, सिक्लैम, हायो, मार्क, नक्स, प्लम, पल्स, वेरेट)। चाय पीनेपर बीमार हो जाता है (सेलिन, थूजा)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय, मल पानीकी तरह, जलन करनेवाला और कषायगुणविशिष्ट अर्थात् त्वचाकी क्षय करनेवाला (आइरिस-वार्स)। बिना दर्दवाला उदरामय—न पची हुई चीजें मलद्वारसे बाहर निकल पड़ती हैं (Linteria—ऐन्टीम, चायना, ओलियैन, फास, ऐसिड-फास, पोडो)। बार-बार पतले दस्त आते हैं और इस मलके साथ लसदार आम और सूतकी तरह कृमि निकलती है (ऐन्टीम, ऐसेर, ऐस-क्लिप, कैल्के, आस्ट्रि, सिना, इग्ने,

इण्डिगो, इयुफोर्ब, कोरोल, स्क्वाई, सल्फ़, स्टैन, टियुक्रि) ; कभी-कभी खून और आम मिला दस्त भी होता है। उदरामय—रातमें या खाने-पीनेके समय (क्रोटन-टिग) ; अजीर्ण पदार्थके दस्त होते हैं, उदरामयमें कोई दर्द नहीं होता और भूख और रुचि भरपूर बनी रहती है। यक्ष्मावाले रोगियोंका उदरामय। कब्जियत—अन्त्रमण्डलीकी क्रिया न होनेकी वजहसे कब्जियत (ऐल्यू) ; वृथा वेग ; मल कड़ा और तकलीफ़ देनेवाला और पाखाना हो जाने बाद कमरमें दर्द या मलान्त्रमें ऐंठनकी तरह दर्द ; बच्चोंकी काँच निकलना (ऐण्टि-क्रूड, साइक्यू, क्रोटन-टिग, इग्ने, आइरिस, मार्क-वाई, मेजेर) और रातमें मलद्वारमें खुजली होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—क्लीवता (अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय परिचालनके कारण हो तो—फास ; प्रमेह रोगके बाद होनेपर—थूजा)। रातमें वीर्य-स्खलन (बहुत सुस्ती लानेवाला—ऐसिड-फास, चायना)। मूत्रनालीसे श्लेष्मा-स्राव (ऐण्टि-क्रूड, कैल्के, मार्क, नक्स, पल्स)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—नियमित समयके बहुत पहले ही ऋतु हो जाता है, यह बहुत ज्यादा और बहुत दिनोंतक स्थायी रहता है (बेल, कैल्के, इग्ने), इसके साथ ही चेहरा आगके रङ्गका हो जाता है ; कानमें दूरसे आई हुए घण्टेकी आवाज़की तरह सुन पड़ता है ; स्राव होते-होते एकाएक दो-तीन दिनोंके लिये बन्द हो जाता है ; इसके बाद फिर आरम्भ होता है ; खूनका रङ्ग फीका पानीकी तरह ; रोगिनी बहुत कमजोर हो जाती है। ऋतु होनेके कुछ पहले ही डङ्क मारनेकी तरह सरमें दर्द होता है (कार्बो-वे, लैके, सिरियम, आक्सेल, नेट्र-कार्ब, नेट्र-म्यूर, नक्स-मस, सल्फ़) और जरायुसे बड़े-बड़े श्लेष्मा खण्ड सब निकलते हैं ; क्षीणा स्त्रियोंके जरायुसे खूनका स्राव—खून चमकीला लाल होता है और तुरन्त जम जाता है (फेरम-फास ; इपिक ; फास ; सेबाइ)। प्रदर—पानी मिले दूधकी तरह और जलन तथा त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव (कोना, लाई, पल्स, सिपि, सिलि, ऐसिड-सल्फ़)। रमणके समय योनिमें जलन, ऐसा मालूम होता है, कि त्वचा क्षय हो रही है और सुख नहीं मालूम होता (बार्वा, क्रियो)। योनि-भ्रंश (Prolapsus Vaginae) ; सोनेपर जरायुमें दर्द होता है। चेहरा आगकी तरह ; बहुत

खूनका स्राव होता है ; कभी पतला और कभी जमा ; इसके साथ ही प्रसवके दर्दकी तरह कमरमें दर्द (ऐलेट्रिस-फेरि, बेल, कैमो, केलि-कार्ब, प्लैट)।

श्वास-यन्त्र।—आक्षेपिक खाँसी, बलगम गाढ़ा और गोंदकी तरह साफ (चायना, सिलि)। सवेरे खाँसी आती है, भोजनके बाद आराम (पीनेपर बन्द होना—कास्टि, स्पञ्जि ; ठण्डी चीज़ आदि पीने या भोजनके बाद खाँसीका प्रकोप होता है—हिप)। खाँसनेके समय वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना और उसमें स्पर्श सहन न होना। भोजनके बाद खाँसी पैदा हो जाती है और अजीर्ण पदार्थ आदि कै हो जाते हैं (डिजि, रास)। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचमें दर्दके साथ रक्त-कास, धीरे-धीरे टहलनेपर अच्छा रहता है (थोड़ा भी परिश्रम करनेपर बढ़ना—इपिका)। छातीमें भरापन और कसावट मालूम होना (केल्के-फा, पल्स, स्टैफाई, खाली मालूम होना—काकूल, ग्रैफ); केवल दिनमें खाँसी आती है (इयुफ्रे); सोनेपर या भोजनके बाद (स्पञ्जि) घटती है। सन्ध्या या रातके समय श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है—ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरी पेटमें बाधा प्राप्त हो रही है—स्थिर रहनेपर बढ़ता है, मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे घटता है। श्वास-रोग—आधी रातके बाद बढ़ता है—रोगीको बाध्य होकर उठकर बैठ जाना पड़ता है ; लेटे रहनेकी अवस्थामें या कोई काम न कर स्थिर होकर बैठे रहनेपर बहुत तकलीफ़ हुआ करती है ; टहलने या बातचीत करते समय अच्छा रहता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाईं स्कन्ध-सन्धिमें सुन्न कर देनेवाले दर्दकी वजहसे हाथ हिला नहीं सकता (दाहिनी स्कन्ध-सन्धिमें दर्द—सैङ्गियु); स्कन्ध-सन्धिमें पतली सलाई घुसने और छेदनेकी तरह दर्द ; पुट्ठेसे ऊरुतक रातमें डङ्क मारने और छेदनेकी तरह दर्द होता है। धीरे-धीरे टहलनेपर यह दर्द घट जाता है (रास-टक्स)। विश्रामके समय जंघाकी पोटलीकी पेशीमें (Calves) ऐंठन होती है। दोनों पैरोंमें शोथ हो जाता है (एपिस, कार्बो-ऐन, कास्टि, चायना, काक्यु, डिजि, लेके, लाई, फास)। धीरे-धीरे टहलनेपर सभी लक्षण घटते हैं, तथापि रोगी इतना कमजोर रहता है कि उसे बाध्य होकर सोये रहना पड़ता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—विलेपी या क्षय ज्वर—प्रत्येक दिन सन्ध्याके समय शीत मालूम होता है ; बीच-बीचमें क्षण-स्थायी जाड़ा

मालूम होता है और शरीरमें कँपकँपी होती है। शीतावस्थामें चेहरा गर्म और लाल हो जाता है; प्यास बहुत ज्यादा लगती है। जाड़ा लगते रहना—शारीरिक उत्तापकी कमी। शीतावस्थामें प्यास। बिना पसीनेका और सूखा उत्ताप, सन्ध्याके समय बढ़ना, शरीरपर ओढ़ना नहीं रखना चाहता; चेहरा लाल; शरीरको हिलाने या बोलते रहनेपर अच्छा रहता है; भोजनके बाद भी आराम मालूम होता है। दिनमें, शरीर हिलानेपर और रातमें तथा ऊषा कालके समय सोये रहनेपर बहुत देरतक और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है। पसीना लसदार और सुस्त करनेवाला होता है। प्रत्येक तीसरे दिवस सवेरेसे मध्याह्नतक पसीना होता है। तेज़ गन्धवाला रातका पसीना। कपड़ेमें पसीना लगनेपर पीला दाग पड़ता है और निद्रित अवस्थामें बदबूदार पसीना होता है; पसीना होनेके समय तकलीफें बढ़ जाती हैं। क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे सविराम ज्वर, माथेमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे शिराएँ सब फूल जाती हैं, अजीर्ण पदार्थोंका वमन होता है; और इसके साथ ही सूजन तथा बढ़े हुए आकारमें प्लीहा मौजूद रहती है।

शोथ।—रक्त आदिका क्षय, क्विनाइनका अपव्यवहार या सविराम ज्वर आदिके एकाएक गायब हो जाने या रुक जानेकी वजहसे शोथ रोग (कार्बोवेज, चायना)।

वृद्धि।—एकाएक शरीर सञ्चालन करनेपर या तेजीसे चलनेपर अथवा सोये रहनेपर (दमा); एकाएक खड़े हो जानेपर; जल प्रवाहकी ओर देखनेपर पुलके ऊपरसे जाने आनेके समय, सीढ़ीसे उतरनेके समय और ठण्डी हवामें।

घटना।—धीरे-धीरे चलनेके समय, सोनेपर (खाँसी); गर्म हवामें वक्षस्थल खोल देनेपर (दमा), निर्मल वायुके सेवनसे।

सम्बन्ध।—अनुपूरक।—(Complementary)—ऐल्यूमिना और चायना। क्या नये क्या पुराने सभी रोगोंमें फेरमके बाद सिङ्कोनाके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है। उपदंश रोगमें इसका प्रयोग मना है।

प्रतिविष-दोषघ्न।—आर्सेनिकम, सिङ्कोना, हिपर, इपिकाकुआन्हा और पल्सेटिला।

सदृश ।—मैंगे, स्पञ्जि (खाँसी); आर्स, चायना (सविराम ज्वर); रास, ऐन्नोट, ओलियेण्डर इत्यादि । कैम्फर (विसूचिका), ग्रैफाई (उत्तापावेश); रस-टक्स (हिलानेसे घटना); कास्टिकम (पक्षाघात)।

तुलनीय ।—(बोरैक्स—सरमें चक्कर)।

शक्ति ।—१म दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—५० दिन ।

फेरम आर्सेनिसिकम

(FERRUM ARSENICICUM)

दूसरा नाम ।—आर्सेनियेट आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण, तरल क्रम या अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—खून गिरना ; मृत्पाण्डु ; प्लीहा और यकृतकी बीमारी ।

उपयोगिता और आभास ।—माननीय स्वर्गीय डाक्टर प्रतापचन्द्र मजुमदारने बढ़ी हुई प्लीहा और यकृत मिले सविराम ज्वरमें इसका व्यवहारकर बहुत ही अधिक फायदा देखा है । उन्होंने आगे लिखे इसके कई निर्णायक लक्षण बताये हैं :—प्रबल सविराम ज्वरके साथ बढ़ी प्लीहा, ज्वराधिकारमें चेहरा तमतमाया हुआ और उसपर थोड़ा-थोड़ा पसीना ; ज्वरके छूटे रहनेके समय चेहरा रक्तहीन और उतरा हुआ ; काम-काजकी इच्छा न रहना, किसी तरहका परिश्रम नहीं करना चाहता, यहाँतक कि शय्यासे उठना नहीं चाहता ; शीत, उत्ताप और पसीना, किसी भी अवस्थामें प्यास नहीं रहती, ज्वराधिकारमें प्रायः कब्जियत मौजूद रहती है या कभी-कभी क्षय करनेवाले और सुस्ती लानेवाले पतले दस्त आया करते हैं । मल अजीर्ण, खाया हुआ पदार्थ तथा आम-मिला ; उत्ताप बहुत तेज़, बहुत दिनोंतक स्थायी और गात्र-दाह (शरीरमें जलन) बहुत थोड़ा रहता है ; रोगी बहुत कमजोर और दुबला हो जाता है ।

प्लीहा आदि बढ़नेके साथ ज्वर न रहनेपर फेरम आयोडेटम बहुत लाभ करता है (डा० क्लार्क)।

सम्बन्ध ।—**सदृश ।**—आर्स, कैल्के-आर्स, चायना ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ३० शततमिक क्रम ।

फेरम ब्रोमेटम

(FERRUM BROMATUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आफ आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम या अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सर-दर्द ; श्वेत-प्रदर ; शुक्रक्षरण ; जरायुका अपने स्थानसे हट जाना ।

उपयोगिता और आभास ।—इसके कई प्रधान लक्षण संक्षेपमें लिखे जाते हैं :—मूर्द्धा-देश मानो सुन्न और चैतन्य-रहित-सा मालूम होता है । माथेके पिछले भागसे ब्रह्मतालुतक ऐसा ही सुन्नपन मालूम होता है । रोगीकी नींद रातके दो बजनेके समय खुल जाती है और उसे ऐसा मालूम होता है, मानो मृत्यु बहुत ही पास है, माथा मानो चारों ओर फैल गया है (ऐपियोल, आर्जेण्ट-नाई) और दोनों कान मानो ऊँचे हो रहे हैं । ऊपरी पलकमें इतना भार मालूम होता है, कि वह आँख खोलकर देख नहीं सकता (कालीफाइलम, कास्टि, जेल्सि, ग्रैफ ; दोनों पलकें बहुत भारी—सिपि)। ऐसा अनुभव होनेके साथ पतले दस्त आना, कि मानो निचली आँतें सब बाहर निकल पड़ेंगी, मल खून-भरा, आँव-भरा और कूथनके साथ ; मल त्वचाको क्षय करनेवाला और बार-बार दस्त आते हैं । पाखाना होने बाद रोगीके कण्ठसे अनजानमें गों-गों शब्द निकल पड़ता है । पेशाबके समय मूत्रनलीमें जलन और त्वचामें रगड़ खा जानेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है (कैनाब-सैट, कैन्थ, कैप्स, कौलचि, लैके, मर्क, नेट्र-सल्फ, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम) ; खून न रहना, कमजोरी और मानसिक अवसादके साथ शुक्रमेह या शुक्रक्षरण (ऐ-फास)। उदरामयके

कुछ घटनेके बाद कषाय-गुण-विशिष्ट त्वचाको क्षय करनेवाले और गोंदकी तरह लसदार प्रदरका स्राव आरम्भ हो जाता है; जरायुमें बहुत भार मालूम होता है और वह नीचेकी ओर खिंचता हुआ जैसा मालूम होता है :(ऐसिड-नाई, डिक्टेम्नस, क्रियो, ऐसिड-फास)।

सम्बन्ध।—सदृश।—आँखें खोलकर नहीं रह सकता—कोलोफिल, कास्टि, जेल्सि, ग्रैफ; शुक्रमेह—ऐसिड-फास; मृत्यु-आसन्न—ऐग्नस-कैस, कैम्फ, कोबाल्टम, सिफिलिन; पेशाबके समय जलन—कैनाब-सैट, कैन्थ, नैट्र-सल्फ; त्वचाको क्षय करनेवाले मलके साथ उदरामय—आर्स, ग्रैफ, मार्क-बाई, सल्फ; त्वचाको क्षय करनेवाले प्रदरका स्राव—क्रियोजोटम, ऐसिड-नाई।

शक्ति।—१म दशमिकसे ६ठी शततमिक क्रमतक।

फेरम आयोडेटम

(FERRUM IODATUM)

दूसरा नाम।—फेरि-आयोडाइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—पेशाबमें अण्डलाल; खूनकी कमी; स्तनमें अर्बुद या कर्कट रोग; सर्दी; बहुमूत्र; छातीमें जलन; मसानेकी बीमारी; श्वेत-प्रदर; यकृतकी बीमारी; गण्डमाला दोष; जरायु या डिम्बकोष और फेफड़ेका प्रदाह; प्लीहा; गुटिका रोग; जरायु-भ्रंश।

उपयोगिता और आभास।—मलेरिया ज्वरके बाद बढ़ी हुई प्लीहा और यकृतवाले रोगियोंको इससे बहुत फायदा हुआ करता है (ज्वर रहनेपर 'फेरम-आर्स')। इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं :—भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है, कि इतना खा लिया है कि वह ऊपरकी ओर ठेल रहा है, मानो कण्ठतक ठूंस-ठूंसकर खा लिया है। पेट इतना भरा मालम होता है, कि

रोगी सामनेकी ओर झुक नहीं सकता। इसके और भी कई प्रकृतिगत सिद्धिप्रद लक्षण ये हैं—मलद्वारमें पीसनेकी तरह मालूम होना ; मलद्वारमें कृमि चलनेकी तरह सुरसुरी मालम होना ; मानो मलद्वारमें कोई गोलाकार पदार्थ अड़ा हुआ है ; मानो मलद्वार और नाभि आपसमें एक सूतसे बँधे हुए हैं ; मानो मलद्वारमें स्क्रू घुस रहा है। आँख, कान और नासा-मूलसे सरके पिछले भागतक छेदनेकी तरह तकलीफ़ मालूम होती है। पेशाबकी गन्ध मीठी (खट्टी गन्ध—ऐम्ब्रा, ग्रैफ, मार्क, नेट्र-कार्ब) ; श्लेष्माकी अधिकताके कारण नाककी ग्रन्थि फूली और अर्बुद आदिमें विशेष लाभदायक है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें दर्द,—माथेमें भारके साथ बुद्धिकी जड़ता ; गर्म घरमें (आर्नि, लैकिपु, सेनेगा ; स्पञ्जि) ; धूम्रपान करनेपर (ऐको, ऐसिट-क्रूड ; इग्ने, नेट्र-सल्फ)। पढ़ने या लिखनेके समय (बोर, कैल्के, जेल्सियाना, नैट-म्यूर, थिरिडि) बढ़ जाता है। निर्मल वायुमें (एको, एसिट-क्रूड, आर्स, डायाडेमा, सेङ्गो, फेलैन, टैबेक) और जलीय वायुमें बैठने या खड़े होनेपर घटना। नासामूलसे माथेके भीतर होकर सरके पिछले भागतक छेदनेकी तरह दर्द। ऋतु बन्द रहनेपर आँखके गोलेका बाहर निकलना (Exophthalmos—थाइराइड) ; आँख और कानमें छेदनेकी तरह यंत्रणा। कानमें भों-भों शब्द।

नाक।—सर्दी,—नाक, स्वरनाली और वायुनालीसे बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्माका स्राव। नाक बन्द हो जाती है ; मध्याह्नमें यह रुद्धभाव कुछ बढ़ जाता है। नासा-रन्ध्रमें जखम और सूखे श्लेष्मा-खण्डकी अधिकताकी वजहसे नाक फूल उठती है। पुरानी सर्दी पहली अवस्थामें साधारणतः सवेरे, इसके बाद दिन-भर श्लेष्मा निकला करता है। श्लेष्मा गाढ़ा, पीला या हरा होता है ; नाक झाड़नेपर भी नहीं घटता।

मलान्त्र और मल।—एक हफ़्ते तक कब्जियत रहनेके बाद पतला पाखाना होता है। पाखाना होनेके पहले पेटमें ऐसा दर्द होता है, मानो पेट

अकड़ गया है। मलान्त्र और मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, मानो दबा रखा है; मानो मलद्वारमें कृमि है; मलद्वारमें मानो कुछ अड़कर चक्राकार घूम रहा है। मानो बून्द-बून्द पानी टपक रहा है; मानो एक स्क्रू मलद्वारमें घूम-घूमकर घुस रहा है—ऐसा ही अनुभव होता है।

पेशाब।—मूत्रनलीको जड़में ऐसा मालूम होता है, मानो पेशाब अड़ा हुआ है और वेग देनेपर भी आगे नहीं बढ़ता, खासकर सवेरे। पेशाब गहरे लाल रङ्गका; मोटी और सफेद रङ्गकी तली जमा करती है; पेशाब करनेके समय मूत्रनली मानो जल जाती है। बार-बार फीके रङ्गका और मीठी गन्ध-वाला पेशाब निकलता है; कुछ दूधकी तरह रङ्गवाली तली जमती है। लाला मूत्र-रोगमें हाथ-पैरोंमें शोथ। मूत्रनली और मलान्त्रमें चींटी रेंगनेकी तरह अनुभव होता है। सहजमें ही पेशाबका वेग रोक नहीं सकता।

पुं-जननेन्द्रिय।—मूत्रनलीमें भयानक यन्त्रणा और जलनके साथ रातमें लिङ्गमें कड़ापन होना (Chordee—कैनाब-सैट, कैन्थ, मर्क, नेट्र-कार्ब, पल्स, थूजा)। मूत्रस्थलीको ग्रीवाके स्थानपर तकलीफ देनेवाला वृथा वेग (Tenesmus—कैन्थ, कोपेबा, क्लिमेट)। मूत्रनली और मलान्त्रमें सुरसुरी होती है, मानो चींटी रेंग रही है, ऐसा मालूम होना (जैल्स-ऐफ्रा, पेट्रो-सेलिन)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु आरम्भ होनेके पहले दाहिने वक्षमें और स्तनमें बहुत दर्द होता है (कैल्के, कोना)। जरायु लगातार नीचे झुक जाना चाहता है, परन्तु बैठनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरको ओर धक्का दे रहा है (नेट्र-क्लोर); जरायु इतना उतर जाता है, कि रोगिनी स्वयं जरायु-ग्रीवाको छू सकती है, जरायुका पश्चादावर्त्तन (Retroversion)। प्रदर—सिझाये हुए आरारोटकी तरह स्राव (कालीफाइल, हाइड्रेस, केलि-बाई); मल सरल होनेपर भी स्राव गाढ़े गोंदकी तरह लसदार हुआ करता है; योनि और योनिका बाहरी भाग जखम-भरा और उसमें खुजलाहट होती हैं (लेक-कैन) और ये सब अंश बहुत फूल जाते हैं।

श्वास-यंत्र।—सामान्य कष्ट देनेवाली खुसखुसी खाँसी; कभी-कभी वक्षमें दर्द मालूम होता है और फीके रङ्गका पीला गाढ़ा श्लेष्मा निकला करता है; कभी-कभी कुछ धुमैला या धुमैला सफेद गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता

है—खींचनेपर सूतकी तरह बढ़ता है (कैलि-बाई, पैरिस, सेनेगा, स्टैन, ऐसेर, बोवि, मैग-म्यूर)। रक्त-कास (Hæmoptysis)। दाहिने स्तन-वृन्तके पास कर्कटार्बुद (Scirrhus)—पहले छोटा और बिना दर्दवाला, पर धीरे-धीरे बढ़ता है और क्रमसे वक्षस्थलसे बगल (Axilla) तक अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द मालूम होता है। उसे छूना सहन नहीं होता (कोना देखिये)। तेजीसे सीढ़ी चढ़नेपर जोर-जोरसे कलेजा धड़कने लगता है (थाइराइडिन) और ब्रह्म-तालुमें दर्द होता है। सारे शरीरकी धमनियोंमें टपक हुआ करती है। हृत्-पिण्डकी टपक इतनी अधिक होती है कि रातमें नींद खुल जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी बगलमें बहुत दर्द, माथा घुमाने या फेरनेपर या गर्दनकी बगलमें छूनेपर दर्द होता है। कमरमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो टूट गई है; केवल रातमें ही ऐसा मालूम हुआ करता है कि बहुत ही संकीर्ण शय्यामें गेंड़री मारकर अर्थात् अङ्ग-प्रत्यङ्गोंको सिकोड़कर सोया हुआ है ऐसा अनुभव होता है। सारे शरीरमें दर्दकी वजहसे शरीर हिलानेकी इच्छा नहीं होती, दाहिने बाँहके ऊपरी अंशमें, कन्धेमें और बाएँ पैरके पीछेसे वस्तिगह्वरतक वातकी तरह दर्द मालूम होता है।

निद्रा।—प्रायः नींद खुल जाया करती है; बहुत दिन पहलेकी घटनाएँ सब स्वप्नमें दिखाई देती हैं। बार-बार नींद खुलनेपर पाखाना लग आता है और पेशाब करनेके समय तकलीफ़ होती है। चोर और उनके साथ लड़ाईके सपने; सपनेमें ऐसा मालूम होता है मानो उसका आकार बहुत ही दीर्घ हो गया है और चारों ओरके मनुष्य आदि बहुत छोटे हैं। शय्या मानो बहुत छोटी और संकीर्ण हो रही है।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, चलने, रातके समय, उत्तापसे और छूनेपर।

घटना।—निर्मल वायुके सेवनसे।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—ऐल्यूमिना, कालोफाइलम, हेलोनियस, हाइड्रेस्टिस, ग्रैफ, आयोड, थाइराइडिन, फेरम, आर्स।

शक्ति।—३रे दशमिक विचूर्णसे ६ठे शततमिक क्रमतक।

फेरम मैग्नेटिकम

(FERRUM MAGNETICUM)

दूसरा नाम ।—लोब-ष्टोन। ब्लैक आक्साइड आव आयरन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—अन्यान्य लौह-घटित औषधियोंकी तरह इसमें भी सुस्त कर देनेवाली कमजोरी, उदर-प्रदेशमें कमजोरीका आरम्भ होकर चारों ओर फैल जाना तथा फेरम मेटालिकमकी तरह भोजनके समय रोग-लक्षणोंका बढ़ना लक्षण दिखाई देता है।

इसके आलावा उदरामय, पेट फूलना, अस्पष्ट दृष्टि, वात, हाथमें मसे, अंगुलहाड़ा वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक हैं।

सम्बन्ध ।—फेरम-मेट, मैग्ने-आस्टि।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

फेरम म्यूरियैटिकम

(FERRUM MURIATICUM)

दूसरा नाम ।—फेरम-क्लोरेटम ; स्टिल ड्राप्स।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—एलोपैथिक रक्ताल्पता रोगमें इसके प्रचलनकी बात प्रायः सभी जानते हैं। होमियोपैथिक स्नायुशूल, सर-दर्द, वात प्रभृति रोगमें विशेषकर दाहिने अङ्गकी बीमारीमें यह अधिक काममें लाया जाता है। दूसरी-दूसरी लौह-घटित दवाओंकी तरह यह भी रक्तकी बीमारी, विशेषकर रक्तस्रावमें विशेष लाभदायक है।

ऋतु-रोध, यौवन आनेके समय शुक्रका पतलापन और बहुत पेशाब होना, काला और पानीकी तरह रक्तस्राव, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, संगमके समय दर्द, दाहिने बाँह और कोहनीमें दर्द, क्रिमि, पेशाबमें चमकीला दानाकी तरह पदार्थ वगैरह इसके निर्णायक लक्षण हैं।

सम्बन्ध।—ह्रास-वृद्धि।—भोजनके बाद, विशेषकर अण्डा खानेपर, हिलने-डोलने, रातमें और सवेरे **बढ़ना**; भोजनके समय खाँसीका **घटना**।

तुलनीय।—चायना, नैट्रम-म्यू, सैङ्गुइनेरिया, फेरम-पिक्रि और लौह-घटित अन्यान्य दवाएँ।

शक्ति।—साधारणतः निम्न-शक्ति, खूनकी कमीमें भोजनके बाद ३x और मूत्रग्रन्थि-प्रदाहमें मूल अर्क १ से ५ बून्दकी मात्रामें दिनमें तीन बार सेवन करना चाहिये।

फेरम परनाइट्रिक्रम

(FERRUM PERNITRICUM)

दूसरा नाम।—परनाइट्रेट आव आयरन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बदहजमीकी वजहसे उदरामय, यक्ष्मा रोगीका उदरामय। दुर्बलता और स्नायु-प्रधान स्त्रियोंका उदरामय, गण्डमाला धातुवाले बच्चोंकी गाँठें फूलना और आँखोंमें प्रदाह होनेपर लाभदायक है।

जहाँ फेरम और नाइट्रिक एसिडका सम्मिलित लक्षण दिखाई देता है, उन सब जगहोंमें इससे आशातीत लाभ दिखाई देता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

फेरम फास्फोरिकम

(FERRUM PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम।—फेरम फास्फेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मलान्त्रका अपने स्थानसे हटना; मूत्रस्थलीका पक्षाघात; श्वासनलीका प्रदाह; शूल; खाँसी; घुंड़ी खाँसी; मूत्राधारका प्रदाह; मदात्यय; बहुमूत्र; अतिसार; अजीर्ण; आमाशय; कानकी बीमारी; विसर्प; ज्वर; शीत-कालके फोड़े; पाकाशयका प्रदाह; प्रमेह; रक्त-वमन; रक्तोल्कास; शरीरके किसी भी द्वारसे रक्त-स्राव; हाथका फूलना; हृत्पिण्डकी बीमारी; कलेजा धड़कना; प्रदाह; चोट; सविराम ज्वर; मसानेकी बीमारी; खसड़ा; कर्णमूल; स्नायुशूल; नाकसे रक्त-स्राव; यक्ष्मा; फेफड़ेका प्रदाह; वात; गुहौरी; पेशाबका वेग रोकनेकी शक्तिका न रहना; शिराओंका फूलना; वमन; हूप-खाँसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० सुसलरके तन्तुजायु (Bio-chemistry) शास्त्रके चिकित्साके अनुसार फेरम-फास हमारे एकोनाइटम और जेलसिमियमके मध्यवर्त्ती भेषजके रूपमें व्यवहृत और प्रयुक्त हुआ करता है। डा० फेरिङ्गटन कहते हैं:—"हैमामेलिसकी तरह यह जीव देहकी रक्त-सञ्चालनकी क्रियाके ऊपर आधिपत्य प्रकट करता है। प्रदाहकी जिस अवस्थामें "धमनी आदिका प्रसारण" हुआ करता है, फेरम-फास उसी अवस्थाकी दवा है। ऐसे अवसरपर इसका प्रयोग होनेपर रोग (प्रदाह) फिर आगे बढ़ नहीं सकता; जिस तरह फेफड़ेमें रक्त-सञ्चयकी अधिकता होनेपर, यदि इसका प्रयोग किया जाये तो फिर फेफड़ेका प्रदाह (Pneumonia) नहीं हो सकता; वक्षस्थलमें बहुत दर्द और इस ढङ्गका दर्द, मानो चोट लग गई है; नाड़ी पुष्ट, और घूमती हुई, परन्तु एकोनाइटकी तरह डोरीकी तरह अनमनीय नहीं रहती। बलगम परिमाणमें बहुत थोड़ा निकलता है और खून-मिला रहता है; स्राव आदि खून मिले रहते हैं और एकोनाइटकी तरह सन्तापजनक ज्वर

होनेपर फेरम-फासपर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है। कभी-कभी ऐसा दिखाई देता है कि बच्चोंके ग्रीष्मातिसार रोगमें उनकी धमनी आदि (Abdominal blood vessels) फैल गई हैं और मल पानीकी तरह, आँव और खून-मिला रहता है ; पाखानेका वेग कुछ रह सकता है, परन्तु कूथन (Tenesmus) बिलकुल ही नहीं रहता। कूथन पैदा होते ही समझना चाहिये कि इस अतिसारपर फेरम-फासको और कोई अधिकार नहीं है। यद्यपि इस रोगमें पीव या पीवकी तरह आँवका दस्त भी होता हो, तो भी समझना चाहिये कि फेरम-फाससे अब लाभ न होगा। मस्तिष्कोदकके साथ अतिसारकी (Hydrocephaloid—हाइड्रोकेफालायड) पहली अवस्थामें जब रोगीको बहुत वेगका अतिसार रोग हुआ करता है और रोगी तन्द्रालु और शिथिल हो पड़ता है, दोनों आँखें लाल हो जाती हैं और नाड़ी पुष्ट और कोमल मालूम होती है, उस समय फेरम-फाससे विशेष लाभ हुआ करता है। ऐकोनाइट या बेलेडोनाकी तरह फेरम-फासकी नाड़ी कभी डोरीकी तरह कड़ी और अनमनीय नहीं रहती है। शरीरके दाहिने अङ्गके साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध है ; सवेरे बढ़ना इसका एक प्रकृतिगत लक्षण है। रक्तस्रावमें भी यह बहुत फायदेमन्द हैं ; पर रक्त-प्रधान प्रकृतिवाले मनुष्योंके रक्त-स्रावमें नहीं। रक्तहीन, उजले, दुबले मनुष्यके रक्त-स्रावमें भी इसका भरपूर फायदा दिखाई देता है। इसके अलावा शारीरिक और मानसिक अवसाद ; शारीरिक परिश्रमसे कातरता, सुस्ती और वातकी वजहसे दर्द और पक्षाघात वगैरह इसके कई प्रधान क्रियाफल हैं। गर्मीके दिनोंमें एकाएक पसीना रुकनेके कारण बीमारियाँ।

लक्षणावली

मन।—बहुत बाचाल और प्रफुल्ल। मदात्यय या बहुत शराब आदि पीनेकी वजहसे प्रलाप (Delirium Tremens—बेल, नक्स, हायो, स्ट्रैमोन, ऐण्टि-टार्ट)। न तो किसी विषयमें मन लगा सकता है और न अपने भावोंको रोक सकता है (इथ्यू, ऐवेना, लैक-कैन, लाइकोपस, ऐसिड-आक्सैल, ऐसिड-फास, सार्सा, स्कुटेलारी, जेरोफिल)। स्मरण-शक्तिका घटना (ऐनाक, बेराइ, युफ्रे, लैक-कैन, मिडोराइन, ऐसिड-फास, स्टैफाइ) ; नाम याद नहीं रहता (लिथि-कार्ब) औंघाई और मनमें भाव-स्रोतोंका प्रबल प्रवाह (ऐपिस,

चायना, काफि, कोबाल्ट)। आशा और भरोसाका न रहना। सामान्य वाधा भी पहाड़की तरह न पार करने योग्य मालूम होती है; सरमें ज्यादा खून संचय हो जानेके कारण प्रलाप।

माथा।—सरमें चक्कर आना, एकाएक ऐसा मालूम होता है मानो सामनेकी ओर धक्का दे दिया। मानो सभी चीजें उसके चारों ओर घूम रही हैं (आर्नि, बेल, साइक्यू, नेट्र-म्यूर, नक्स, फास)। ललाट और कनपटीमें (Temples) ऐसा दर्द मानो कोई हथौड़ीसे मार रहा है (नेट्र-म्यूर) और संन्यास रोग (Apoplexy) हो जानेका भय (आर्जेण्ट, एपिस)। दाहिने अक्षिगोलकके ऊपर (Supra orbital) स्नायुशूल (Neuralgia—चेलिडो, रैनान-बल्ब, मैग-फास), सवेरे बढ़ जाना। ललाटमें सर-दर्द, नाकसे खूनका स्राव होनेपर घटना (ब्यूफो, मैग-सल्फ, रैफेन्स, मिलिलोट-ऐल्बा)। बहुत ज्यादा स्राव होनेवाले ऋतुके समय ब्रह्मतालुमें असह्य दर्द और भार मालूम होना (रजःस्रावके समय सर-दर्द—ऐल्यु, कार्बो-वेज, कैस्टोर, क्रियो, लाई, नक्स-वोम, बोवि, हायो, कैलि-कार्ब, सल्फ)। माथा झुकानेपर सरके पिछले भागसे ललाट देशतक तेज़ दर्द मालम होना; कभी-कभी ऐसा मालम होता है मानो पीछेसे माथेमें धक्का दे रहा है, इसीलिये, गिर जानेकी सम्भावना हो जाती है। जरायुमें नीचेकी ओर दबाव मालूम होता है और अण्डाधारमें दर्द और सरमें दर्दकी वजहसे बाध्य होकर आँखें बन्द कर लेनी पड़ती हैं (ऐगार, बेल, नैट-म्यूर, ओलियैन, सिपि, सल्फ)। सरमें दर्द—चेहरा गर्म और लाल; खाये हुए पदार्थ आदि कै हो जाते हैं और मूर्द्धदेशमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। कोई अगर केश छूता है तो दर्द मालूम होता है (ऐम्ब्रा, सिङ्को, सिनेबार, मेजिर, सल्फ)। सरमें चक्कर आनेके साथ खून माथेकी ओर बहने लगता है।

आँख।—आँखें लाल, प्रदाह-भरी, और जलन-भरी; ऐसा मालूम होता है मानो पलकोंके भीतर धूलिके कण गिर गये हैं। आँखमें ज्यादा रक्तसञ्चयकी वजहसे धुंधली दृष्टि (रैफेनस)। आँखको फिरानेपर दर्द मालूम होता है। रोशनीका सहन न होना, दीये आदिकी रोशनीमें बढ़ जाता है। बायीं आँखकी निचली पलकपर अंजनी। माथा झुकानेपर कुछ भी दिखाई नहीं देता। ऐसा मालूम होता है कि सब रक्त आँखोंमें इकट्ठा हो गया है।

कान।—कानमें बहुत प्रदाह; रोगवाली जगह कच्चे मांसकी तरह दिखाई देती है; रक्तस्राव प्रवणताके साथ पीव-भरा श्लेष्मा बहता है; पीव बहना आरम्भ होते ही प्रदाह शान्त हो जाता है। कानमें आवाज़ आती है। कर्णमूल ग्रन्थि (Parotids) में दर्द पैदा करनेवाली लाल रंगकी सूजन। नया कर्ण-प्रदाह, कर्ण-पटह लाल और बाहरकी ओरसे फूला रहता है (बेलके प्रयोगसे लाभ न होनेपर—फेरम-फास, पीव पैदा होनेमें बाधा डालता है)।

नाक।—सर्दीकी पहली अवस्था, सर्दी-प्रवण धातु। बच्चोंकी नाकसे चमकीले लाल रङ्गके खुनका स्राव होता है। नाकसे खूनका स्राव हो जाने बाद सरका दर्द घट जाता है (ब्यूफो, मिलिलोट, मैग-सल्फ, रैफिनस)। नासाग्रकी तलीकी खाल उधड़ जाती है और इसीलिये विसर्प हो जाता है (Erysipelas)।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा मिट्टीके रङ्गका, उजला और मलिन; चेहरा तमतमाया हुआ और दोनों गालोंमें दर्द। वे गर्म तथा लाल रहते हैं। चेहरेके दाहिनी ओरका स्नायुशूल, सर झुकाने या हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है। चिबुक और ललाटमें व्रण पैदा हो जाता है। दन्तशूल, प्रत्येक बार भोजनके बाद (ब्राई, कैमो), गर्म पानीय पीनेसे बढ़ जाता है (ब्राई. पल्स, कैमो, काफि, नक्स)। बच्चोंके दाँत निकलनेके समय बोखारके साथ नाना प्रकारके उपसर्ग।

गलेके भीतर।—मुँहके भीतर गर्मी; जिह्वामूलकी बगलके दोनों गह्वर प्रदाह भरे और लाल। जखम भरा कण्ठका दर्द (Ulecerated sore throat), दोनों गलकोष (Tonsils) लाल और फूले। नया उपझिल्लीका प्रदाह या रोहिनी (Diphtheria)। गवैयोंके गलेका जखम नींद खुलनेपर कण्ठ अकड़ जाता है, फूल जाता और दर्द-भरा मालूम होता है; खाली घूंट लेनेपर दर्द बढ़ता है। निगलनेके समय गलेमें (दाहिनी ओर) ऐसा मालूम होता है मानो कुछ अड़ गया है (लैक-कैन, ऐसिट-क्रूड, एरम, बेल, लैके, रास, रेड, स्पञ्जि)। दाहिने गलकोषके ऊपर एक पर्दा पड़ता है और यह पर्दा बाईं ओर फैलता है (लैक-कैन)।

पाकस्थली।—मांस और दूधसे अरुचि (मांससे अरुचि—कैल्के, कार्बो-वेज, इग्ने, लाई, मार्क, ओलियैन, कैलि-बाई, पेट्रोल, रास, सेबाड,

सिपि ;—दूधसे अरुचि—ऐमोन-कार्ब, सिना ; गुयाई, इग्ने, नेट-कार्ब, नक्स, पल्स, सिपि) ; खट्टी डकार (ब्राई, कैल्के, पल्स, कैलि-बाई) पाकस्थलीमें दर्द, भोजनके बाद बढ़ना (आर्स, नक्स, प्लैट, पल्स, सिपि)। अजीर्ण पदार्थोंकी कै।

अन्त्राशय।—उदरके अन्तर्वेष्टका नया प्रदाहमें (Acute peritonitis बेल, ऐको) ; पाकाशय और छाती वायुसे भरकर फूल उठती है (कैमो, इग्ने)। छातीके ऊपर और उदरकी आँतोंका भार असह्य मालूम होता है, रातमें कपड़े आदि दूर फेंक देता है (आरम, कार्बो-वेज, कास्टि, वेरेट)। अन्त्र-वृद्धि (आँत उतरना—Hernia)—प्रदाहान्वित और कड़े गोलेके आकारमें हो जाती है (नक्स, ऐको, लाई)।

मल।—बच्चोंका गर्मीके दिनोंका अतिसार, मल हरा, पानीकी तरह, आम-भरा और खून मिला ; पाखानेके समय वेग देना पड़ता है (कूथन नहीं रहती—"आभास" देखिये), ओकाई (retching) के साथ मोहयुक्त अतिसार, बहुत दिनोंतक अतिसार भोगता-भोगता बच्चा निद्रालु और उसके सारे अङ्ग शिथिल हो जाते हैं। माथा हिलाया करता है कराहा करता है और अधमुंदी आँखोंसे पड़ा रहता है (ऐसिड-हाइड्रो, कैल्के फास, हेलिबो, पोडो, लाई, सल्फ) ; केवल खूनभरा मल, खून मिली आँव और रस-मिली ; आधी रातसे सवेरेतक बढ़ना। अर्श—प्रायः कड़ा पाखाना होता है। गुह्यद्वारका अपने स्थानसे हटना।

पेशाब।—मूत्राशयकी ग्रीवा और मूत्रनालीके अगले भागमें दर्दके साथ बार-बार पेशाबका वेग होता है, वेग आते ही तुरन्त बाध्य होकर पेशाब करना पड़ता है ; यदि वेग आते ही बच्चा पेशाब नहीं कर पाता तो उछलने-कूदने लगता है (पेट्रो-सेलिन), प्रसव हो जानेके बाद तकलीफ घट जाती है ; दिनमें और खड़े होनेवाली अवस्थामें बढ़ जाती है। प्रत्येक बार खाँसी आनेके साथ पेशाब निकल पड़ता है (कास्टि, वेरेट, स्क्विला, डालका)। मूत्रस्थली ग्रीवा वेष्टक पेशीकी शिथिलताकी वजहसे रातमें अनजानमें पेशाब होता है। मूत्राशय या मूत्रस्थलीसे खूनका स्राव (टेरिब, कैन्थ)। प्रमेह, प्रदाहिक या प्रथम अवस्था (ऐको, जेल्स, कैनाब-सैट), रमणेच्छाका अभाव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधारमें लगातार डंक मारनेकी तरह दर्द और जरायुका नीचेकी ओर आकर्षण। योनिका काँपना। रमणके समय योनिमें दर्द; योनि-परीक्षा असहनीय; अपत्य-पथ सूखा हुआ। प्रत्येक तीन सप्ताहके अन्तरसे ऋतुस्राव होता है, स्राव बहुत ज्यादा होता है और उदर तथा कमरमें दर्द होता है; ऋतुके समय ब्रह्मतालुमें दर्द होना, गर्भावस्थामें खाँसी आती है और खाँसनेपर पेशाब होता है (स्क्विला; कास्टि देखिये); गर्भिणीको तीसरे महीने सरमें दर्द होता है।

श्वास-यंत्र।—गवैयोंके स्वरनाली-मुखका प्रदाह (Laryngitis) गला रुखड़ा हो जाता है, ऊँचे स्वरसे गाने या वक्तृता देनेके कारण स्वरभङ्ग, इसके साथ ही बड़ा-सा हरे रङ्गका जमा हुआ श्लेष्मा संचय होता है और वक्षमें फुसफुस वेष्टका प्रदाहमें जैसा होता है, उसी तरह सुई वेधने की भाँति दर्द मालूम होता है। (कैलि-कार्ब, ब्राई, रैनान-बाल्बो, सेनेगा, रियुमेक्स, ऐक्टि)। क्षुद्र आक्षेपिक और यंत्रणादायक खाँसी। सामनेकी ओर झुकानेपर या कण्ठ छूनेपर शरीरको हिला देनेवाली और यंत्रणादायक खाँसी आया करती है; हूप-खाँसी, इसके साथ ही ओकाई आ जाती है और कै होने लगती है। चोट लगने या गिरनेपर बलगमके साथ खून निकलता है (इपिक, आर्निका)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और पीठमें धीमा-धीमा दर्द। वातका दर्द या वात व्याधि, शरीरकी एक सन्धिके बाद दूसरीपर आक्रमण होता है; रोग-वाली सन्धि शोथ मिली और फूली रहती है और प्रायः लाल नहीं रहती; इसके साथ ही प्रबल ज्वर; जरा भी हिलने-डोलनेपर दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, आर्नि, गुयाई, मार्क, केलमिया, नैट्र-मूर, शरीर संचालनसे घटना (ऐसा, डलका, कैलि-आयोड, पल्स, रास, रियुटा)। मणिबन्ध (कैल्के, कास्टि, ऐक्टि-स्पाई, कैलि-बाई लैके)। और जानु-सन्धिका वात (ऐक्टि-स्पाई, कैलिबाई) दाहिने कन्धे और बाहुके ऊपरी अंशमें भयङ्कर खींचने और छेदनेकी तरह दर्द—जोरसे हाथ हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है (निकोलम); धीरे-धीरे हिलानेपर घटता है, इसीलिये यह बाहु प्रायः स्थिर नहीं रखता, दाहिना हाथ अवशकी तरह। दाहिनी सन्धिके त्रिकोण (Delloid) पेशीका नया वात, चपकन पहन नहीं सकता। कलाईमें दर्दकी वजहसे हाथसे कोई चीज़ पकड़

नहीं सकता। पैर तथा गुल्फ-सन्धिमें इतना दर्द होता है, कि रोगी चिल्लाया करता है। उरु-शिखर या कूल्हा (Hip) प्रदेशमें दर्द और वहाँ स्पर्श सहन नहीं होता (कैल्के-सल्फ)। गुल्फ-सन्धिका बाहरी भाग भूरे रङ्गका ; निचला पैर बहुत फूला और दर्द-भरा।

वृद्धि।—हवा खाने, गर्म पानीय पीने, भोजनके बाद, मांस खानेपर, चाय पीनेपर, जोरसे शरीर हिलानेपर, रातके समय और रातके अन्तिम भागमें (४ से ६ बजेके बीचमें)।

घटना।—शीत लगने, ठण्डा पानी पीने, विश्रामसे और धीरे-धीरे देह या अङ्गको हिलानेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐको, जेल्स, कास्टि, स्कियुला, कैल्के-सल्फ, ऐण्टि-टार्ट।

तुलनीय।—ऐकोन (अधिक पूर्ण नाड़ी); जेल्स (नाड़ी तरङ्गकी तरह); कास्टिकम ; पल्स (खाँसी) इत्यादि।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रमतक व्यवहार हुआ करता है।

फेरम-फास्फोरिकम-हाइड्रिकम

(FERRUM PHOSPHORICUM HYDRICUM)

दूसरा नाम।—फेरम-हाइड्रोफास्फेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—उपतारा-प्रदाह और बहुत ज्यादा लिखनेकी वजहसे लिखनेवालोंका हाथ फड़कना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

फेरम पिक्रिकम

(FERRUM PICRICUM)

दूसरा नाम।—पाइक्रेट आव आयरन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अण्डलाल मिला पेशाब ; गट्ठे ; कानकी बीमारियाँ ; बहरापन ; कामला ; यकृतकी बीमारी ; नाकसे रक्त-स्राव ; सन्धिवात या वात ; कर्ण-प्रदाह ; स्वरभङ्ग ; मसे।

उपयोगिता और आभास।—काले केश, काली आँखें, खूनकी अधिकतावाले और पीले रङ्गके मनुष्योंकी बीमारीमें यह अत्यन्त उपयोगी है, खासकर यदि उनमें यकृतकी बीमारी मौजूद हो। इसका एक उत्कृष्ट निर्णायक लक्षण यह है:—पित्तके रङ्गकी अधिकताके कारण सभी सन्धियाँ बहुत मलिन मालूम होती हैं (ऐसिड-पिक—अंगुलीकी गाँठें सब मलिन)। यकृतका बढ़ना और उसमें स्पर्श सहन न होना, यकृतकी बीमारीके साथ बहरापन ; खील-भरे मसे, विशेषकर यदि वे बहुतसे एकत्र ही निकलते हों। वक्तृता देने बाद स्वर-लोप हो जाना या किसी दूसरे यन्त्रकी क्रियाकी अधिकताकी वजहसे सुस्ती ; बुद्धि-दन्त (अक्ल-दाँत) निकलनेके समय श्रवण-शक्तिका घट जाना और कानमें कितनी ही तरहकी आवाजें आना ; अग्निमान्द्य ; सरमें दर्द या शारीरिक और मानसिक श्रमके बाद बहुत थकावट मालूम होना इत्यादि लक्षणवाले पूति-वाष्पज (मलेरिया) ज्वर आदिमें यह आश्चर्यजनक कार्य करता है। चर्मके लक्षणोंमें एक असाधारण उल्लेख योग्य लक्षण हैं—"हाथके अंगूठेके पास ऐसा अनुभव होता है, कि मसा निकल रहा है।" वृद्धोंकी मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि (Prostate gland) का बढ़ना। नाकसे रक्तस्राव।

लक्षणावली

कान।—ऋतुके पहले श्रवण-शक्तिका घट जाना। कानमें फुट-फाट शब्द। कानके भीतरकी केशिक (Capillary) धमनी आदिके विस्तृत

प्रदाहकी वजहसे बहरापन (Vascular deafness)। दाँतका (Dental) स्नायु-शूल—दर्द आँख और कानतक फैल जाता है। बुद्धि-दन्त निकलनेके समय श्रवण-शक्तिका लोप हो जाना।

पाकाशय आदि।—अग्निमान्द्य, इसके साथ ही जीभपर मैल। भोजन कर लेने बाद सरमें दर्द, विशेषकर काले केश और पित्त-प्रधान मनुष्योंकी बीमारी। यकृतमें इतना दर्द रहता है, कि हाथ नहीं लगाया जा सकता।

मूत्रयंत्र।—रातमें मानो मूत्राशय पेशाबसे भरा रहता है—ऐसा मालूम होता है और मलान्त्रमें दबाव मालूम होनेके साथ बार-बार पेशाब होता है; मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि (Prostate gland) का बढ़ना (सैबाल-सेरु, थूजा, चिमैफि, सोलिडेगो, आयोड), विशेषकर वृद्ध मनुष्योंका (आर्जेण्ट-नाई; बैठनेवाली अवस्थामें ऐसा मालूम होता है मानो गोलेपर बैठा हुआ है—कैनाब-इण्डि, चिमैफि)। मूत्राशय-ग्रीवा और मूत्रनालीके मुँहपर जलन और दर्द (फेरम-फास, बैरोस्मा, पप्युलस-ट्रि—मूत्ररोध)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके दाहिने पार्श्वसे समूचे बाँहमें दर्द होता है। कशेरुका-मज्जाके क्षयकी वजहसे इन्द्रिय आदिकी क्रियाका न होना; जब रोग दर्शनेन्द्रियमें अड़ा रहता है और दूसरे अङ्ग या इन्द्रिय आदिपर बीमारीका हमला नहीं होता (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, जेल्स)।

त्वचा।—चेहरेपर मसे। खोलवाले या एक साथ ही बहुतसे निकल आते हैं; हाथके अंगूठेमें ऐसा मालूम होता है, मानो मसा निकल रहा है।

वृद्धि।—किसी इन्द्रिय या अङ्गकी क्रियाकी अधिकता और शारीरिक या मानसिक क्लान्तिकी वजहसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐसिड-पाई, ऐसिड-नाई, थूजा, आर्जेण्ट-नाई, ऐल्यू, जेल्स, कैल्के, पिक, सैबाल-सेरु, चिमैफि।

शक्ति।—डा० क्लार्क (जे० एच०) कहते हैं—अत्यन्त निम्नक्रमके प्रयोगसे लक्षण आदि बढ़ जाते हैं। इसलिये तृतीय दशमिक क्रम (विचूर्ण) से द्वादश (१२वाँ) शततमिक क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

फेरम पाइरोफास्फोरिकम

(FERRUM PYROPHOSPHORICUM)

दूसरा नाम ।—पाइरो फास्फेट आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और अरिष्ट ।

उपयोगिता और आभास ।—माथेमें रक्त-सञ्चय और उसी वजहसे सर-दर्दमें इसकी निम्न-शक्ति विशेष लाभदायक है। किसी-किसीके मतसे पलकोंमें खोल-भरे अर्बुद (Cystes) में यदि फेरम-फाससे फायदा न हो तो फेरम-पाइरो-फास लाभदायक होता है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फेरम सल्फ्युरिकम

(FERRUM SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—सलफेट आव आयरन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—यद्यपि अन्यान्य लौह-घटित औषधियोंकी तरह रक्तकी बीमारियोंमें ही इसका व्यवहार होता है, परन्तु सलफरका चरित्रगत लक्षण ही इसका निरूपण करता है। फेरम सल्फ्युरिकमका रोग-लक्षण उत्तापसे और गर्म कमरेमें बढ़ जाता है और ठण्डी हवा और बरफके प्रयोगसे घट जाता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—फास्फोरस, सिना, बैप्टी, अन्यान्य लौह-घटित दवाएँ ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फेरम टार्टारिकम

(FERRUM TARTARICUM)

दूसरा नाम।—टार्टर आव आयरन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—हृत्शूल, पाकाशय और गलनलीके संयोग स्थलपर उत्ताप और दर्द और सर-दर्दके लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

फेरुला ग्लौका

(FERULA GLAUCA)

दूसरा नाम।—बोनाफा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—औरतोंकी बहुत अधिक संगमेच्छा, योनिमें खुजली, शरीरके किसी-किसी अंशमें उत्ताप और जलन और किसी-किसी अंशमें शीत मालम होना लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—औरिगेनम, प्लैटि, कैन्थरिस।

शक्ति।—३x—६।

फिलिक्स-मास

(FILIX MAS)

दूसरा नाम।—मेल फार्न।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताज़ी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचेलिखे रोगोंमें लाभदायक है:—तलपेटका फूलना; गर्भ-स्राव; अन्धापन; बन्ध्यात्व; फीतेकी तरह क्रिमि।

उपयोगिता और आभास ।—यह क्रिमि रोगमें व्यवहारके लिये प्रसिद्ध है ; पर इसके और भी कई उत्कृष्ट व्यवहार हैं :—पेट फूलना, वमन, उदरामय, योनिभ्रंश, बन्ध्यात्व, गर्भ-स्राव, मिठाई आदि खाने बाद पेटमें दर्द वगैरहमें भी यह लाभदायक हैं। खाँसी न रहनेपर यदि हृत्पिण्ड प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्दके साथ श्वासकृच्छ्र मौजूद हो तो इससे आराम हो जाता है।

लक्षणावली

मन ।—उत्तेजनाशील ; चिड़चिड़ा। जड़ता, तन्द्रा, बेहोशी।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना।

नाक ।—खुजलाती है ; चेहरा पीला।

आँख ।—पुतली फैली और अस्पष्ट या डेरा देखना—टेढ़ी दृष्टि होकर धीरे-धीरे दर्शन स्नायुका क्षय हो जाता है और अन्धापन आ जाता है।

उदर ।—पेट फूलता है। तलपेटमें ऐसा दर्द होता है, मानो काटता या खोंचा मारता है, मिठाई खानेपर बढ़ जाता है। उदरामय और बार-बार वमनके साथ पेटमें बहुत दर्द। क्रमि-शूल—नाक खुजलाती है, चेहरा उतरा रहता है और आँखके चारों ओर नीला घेरा रहता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु एक सप्ताहतक बन्द रहकर फिर होने लगता है और तीन सप्ताहतक रहता है। योनि-भ्रंश ; मूत्रस्थलीमें दर्द और यन्त्रणादायक वृथा वेग तथा भीतरी दर्दके साथ बार-बार पेशाब होना (चिमैफि)। गर्भ-स्राव, बन्ध्यात्व (बोर, अरम-म्यूर-नैट, प्लैट)।

निद्रा ।—बहुत औंघाई।

ज्वर ।—प्रबल ज्वर, कम्प, पेटमें दर्द, अतिसार इत्यादि।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ग्रैनेट, कूसो ; क्युकार्बिट (पट्ट-क्रमि); जेलस, कार्बोन-सल्फ (जाल दृष्टि) ; ऐसिट-क्र्ड, ड्रपिक, ऐपोसिनम।

शक्ति ।—१म से ३य दशमिक। पट्ट क्रिमिके लिये आधेसे १ ड्रामतक मूल अर्कका प्रयोग होता है।

फार्मिका रियुफा

(FORMICA RUFA)

दूसरा नाम।—दि-ऐएट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जीवित लाल दीमकसे तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— संन्यास; मस्तिष्कका विकार; चोट आदि; काला दाग पड़ना; ताण्डव; खाँसी; अतिसार; अस्थि खिसकना; शोथ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ; मुँहका पक्षाघात; पैरका पसीना बन्द होकर बहुतसे उपसर्ग; छोटी सन्धिकी बहुत-सी बीमारियाँ; छोटी सन्धियोंका वात; केश झड़ना या टाक पड़ जाना; सर-दर्द; जोरसे कोई चीज़ उठानेके कारण किसी स्थानमें दर्द; पक्षाघात; वात; दृष्टिमें विकार; मेरुदण्डकी बहुत-सी बीमारियाँ; प्लीहामें दर्द; गलेमें जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—छोटी सन्धियोंका वात (Gout) और सन्धिवात रोगकी यह उत्कृष्ट दवा है। इसके दर्दका ह्रास और वृद्धि ठीक ब्रायोनियाकी तरह होती है अर्थात् रोगवाला अङ्ग हिलानेपर रोग बढ़ जाता है और रगड़ने तथा दबानेपर रोग घटता है। शरीरके दाहिने अङ्गमें ही इसके लक्षण आदि अधिक प्रकट होते हैं और दर्दकी अधिकता मालूम होती है। दर्द आदि एकाएक पैदा हो जाता है और तेजीसे एक जगहसे दूसरी जगह हट जाता है; पहले दाहिने अङ्गमें और फिर बाएँ अङ्गमें प्रकट होता है। मेरुदण्डके ऊपर क्रियाकी वजहसे इसके द्वारा पक्षाघात और पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना आरम्भ हो जाता है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं—"माथा बहुत भारी और बढ़ा हुआ मालूम होता है", "ललाटमें बुलबुले फटनेकी तरह मालूम होता है", "पसीना निकलने बाद तकलीफ़ घट जाती है"; कितने ही स्थानोंमें जलन मालम होती है,—ठण्डे पानीसे धोनेपर जलन बढ़ती है" और "केश झाड़नेपर सर-दर्द घट जाता है।"

लक्षणावली

मन।—बहुत प्रसन्न चित्त और मानसिक उत्तेजना, स्मरण-शक्तिका अभाव।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना ; ऐसा मालूम होता है मानो सभी चीजें काँप रही हैं (ऐगार) और शरीर मानो चक्कर खा रहा है (सल्फ); शय्यामें सोनेके समय सरमें चक्कर आनेके साथ-साथ बाईं आँखके ऊपर दर्द होता है ; आँखके सामने अंधेरा दिखाई देता है (ऐगार, जेल्स, कैलि-कार्ब)। बैठनेपर घटना। मस्तिष्क भारी और बड़ा मालूम होता है। ललाटमें बुलबुले टटनेकी तरह मालूम होना ; सरमें दर्द,— शय्यापर उठ बैठनेसे बढ़ जाता है और केश झाड़नेसे घटता है (केश झाड़नेपर घटना—नाइट्रम)। केश झड़ना बन्द हो जाता है। कानके भीतरी गभीरतम प्रदेशमें सुरसुरी मालम होती है। कानमें नाना प्रकारकी आवाज़ (घण्टा बजनेकी तरह आवाज़—ऐम्ब्रा, कैल्के, कोना, मैंगे, नेट्रम-म्यूर)।

आँख।—आँख खुलनेपर आँखमें दर्द होता है,—धोनेपर घटता है (ऐसेरम)। आँखपर ऐसी ठण्डक मालम होती है, मानो आँखपर बरफ रखी हो ; आँखमें बहुत अधिक सुरसुरी होती है। तिमिर दृष्टि—सभी चीजें मानो अन्धकारमें ढँकी मालूम होती हैं (ऐल्यू, बेल, कैल्के, इयोन, हिमैट, मर्क, प्लम्ब); ऐसा मालूम होता है मानो दृष्टिके सामने सब अंधेरा हो गया और सरमें चक्कर आना। कुछ देरतक बैठे बिना चला नहीं जाता (चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है—ऐगार, कैलि-कार्ब, जेल्स, लैक-कैन)। आमवातकी वजहसे आँखोंका प्रदाह (बेल, ब्राई, ऐको, स्पाइजि, नक्स)।

मुखमण्डल।—चेहरेका समूचा बायाँ भाग और बायाँ गाल ऐसा मालूम होता है मानो अवश हो गया है और फूल पड़ा है। चर्बी-भरे पदार्थ खाने बाद ऐसा स्वाद मुँहमें आता है, मानो मुँह सड़ गया है (ऐसा मालूम होता है, कि मुँह खट्टा हो गया है—ऐम्ब्रा, कार्बो-वेज, लाई, सल्फ)। बराबर समयका अन्तर देकर अर्थात् रह-रहकर दाँतमें दर्द होता है। पिपरमिण्ट खानेपर जैसा अनुभव होता है, उसी तरह मानो गलेमें ठण्डक मालूम होती है। सवेरे गलेमें श्लेष्मा भर जाता है और मुँह जखमसे भरा मालम होता है।

पाकस्थली।—पाकाशयमें जलन या उत्तापकी अधिकता मालम होती है (आर्स, ब्राई, कैन्थ, लोरो, मर्क-कोर)। अन्ननाली और पाकस्थलीके संयोग स्थानपर हमेशा एक तरहका दबाव मालूम होता है और जलन होती है, मानो एक आधा सिझाया हुआ अण्डा अन्ननली और पाकस्थलीके संयोग स्थलपर अड़ा हुआ है (एबियैज-नाइग्रा)। सरमें चक्कर आता है और जी मिचलाता

है (ऐस्टिर, क्रियो, नैट-सल्फ, कैल्मो, फाइटो, मार्क, ऐण्टि-टार्ट) और पीली आभा लिये तीता श्लेष्मा कै हो जाता है (आर्स-आयोड, ओलियैन, प्लम्ब)। खासकर गला साफ़ करते समय या कुल्ला करते समय, खाने-पीनेके समय, विशेषकर दोनों हनु मिलानेपर गलेमें दर्द मालूम होता है। प्लीहामें धीमा-धीमा दर्द होता है, तलपेटमें बहुत दर्द मालूम होता है। पैर फूलता है, सवेरे थोड़ा-थोड़ा वायु निकलता है (कैल्के-फास, हिप) और इसके बाद पतला पाखाना लग आता है। जाड़ा मालूम होनेकी वजहसे सिहरावन, इसके साथ ही तलपेटमें बहुत दर्द (कोलो)।

मलान्त्र और मल ।—मलद्वारमें संकोचन (नैट्र-म्यूर, नक्स-वोम, थूजा)। उदरामय--मल पतला, तलपेटमें कमजोरी, मलद्वारमें जलन और सुरसुरी, भोजन आदिके बाद या केवल दिनमें या आधी रातके बाद पतले दस्त आते हैं और पेट गड़गड़ाता है। पाखाना होनेके पहले तलपेटमें दर्द होता है। मलान्त्र (Rectum) में दबाव मालूम होता है, संध्याके समय और सोनेपर बढ़ता है। दर्द-भरा वेग होनेपर भी पाखाना नहीं होता।

पेशाब ।—मूत्रस्थलीका पक्षाघात (ऐको, आर्स, बेल, कैन्थ, ओपी, सिकेलि, साइक्यू, डालका, हायो, लेके, लोरो), बून्द-बून्द पेशाब निकलता है (कैन्थ, क्लिमेट, कोना, कोपेवा, डालका, युफोर्ब, ऐगार, कास्टि, फास, टेरिब)। दूने परिमाणमें पेशाब होता है, यहाँतक कि रातमें भी होता है (स्किला, ऐसिड-फास), बल्कि रातमें बढ़ जाता है (म्यूरेक्स-प, युरेन-नाइ)। पेशाबका रङ्ग केसरकी तरह होता है या गहरा पीला ; बार-बार पेशाब होता है। पेशाब लार-भरा और खून-मिला तथा पेशाबका वेग भी खूब ज्यादा होता है (एपिस, कैन्थ, आर्स, फेर-फास)।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—प्रबल उत्तेजना। सीढ़ी चढ़नेके समय जननेन्द्रिय आदि अवश मालूम होती है। ऋतुस्राव, परिमाणमें थोड़ा और फीका ; तीसरे दिन जरायुका नीचेकी ओर खिंचाव ; कुचकी (Hip-joint) और वस्ति-गह्वरमें ऐंठनकी तरह दर्द। नियमित समयके आठ दिन पहले ही ऋतु आरम्भ हो जाता है (सात दिन पहले—कुरारि ; दो दिन—डिजिटेलिन ; डाल्का)। प्रसूताओंके स्तनमें दूधका अभाव (आर्टिका, ऐसाफि, रिसिनस, ऐग्नस-कैस्ट)।

श्वास-यंत्र।—कण्ठमें छोटे-छोटे श्लेष्मा खण्ड अड़े रहते हैं, खाँसनेपर नहीं निकलते। बहुत दिनोंकी सुस्त करनेवाली और क्लान्तिजनक खाँसी, रातमें और हिलने-डोलनेपर बढ़ती है। ललाटमें दर्द और छातीमें ऐसी कसावटका भाव मानो जकड़ गया है। खाँसीका प्रचण्ड प्रकोप और दिन-रात वमन। बाएँ फेफड़ेमें एकाएक तेज़ दर्द पैदा हो जाता है और ऐसा हो जाता है, मानो रोगी गिर जायगा। वक्षमें ऐसा अनुभव होनेके साथ स्पन्दन होता है, कि किसी चिड़ियेका पर हिल रहा है। दाहिने स्तन-वृन्तमें बेधनेकी तरह तेज़ दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—पीठसे बाँह और उरुतक बेधनेकी तरह तेज़ दर्द, रोगवाली जगहपर सुरसुरी होती है। गाड़ीपर चढ़कर भ्रमण करनेके समय बाँह और हाथ सुन्न जैसे मालूम होते हैं। हाथकी अंगुलीके नखके नीचे पीव इकट्ठा होता है और नख उड़ जाते हैं। निचले अङ्ग आदिमें वातका दर्द; दर्द एक जगहसे दूसरी जगह सरक जाता है (पल्स, कैलि-बाई) और रोगी बेचैनी प्रकट करता है। रातमें तलवे और पैरकी अंगुलीमें ऐंठन होती है। विसर्पकी तरह समतल सूजन, उसमें खुजली होती है। बहुत आलस्य मालूम होनेकी वजहसे रोगी हमेशा जम्हाई लिया करता है और हाथ-पैर आदि फैलाता है (ऐमिल-नाई)। शरीरके कितने ही स्थानोंपर कुटकुटी होती है, मानो बिछुआ लग गया है। कितने ही स्थानोंमें जलन पैदा करनेवाली खुजली, खुजलानेपर घटना, ठण्डे पानीसे धोनेपर बढ़ना (कैम्फ)। इससे पैदा हुआ दर्द धीरे-धीरे मलनेपर घटता है; परन्तु चबानेपर गर्दनका बायाँ भाग बहुत दर्द करता है। गर्दनके बायें पार्श्वसे बायें बाँहतक अकड़ जाता है, थोड़ा हिलाने या घुमानेपर दर्द बढ़ जाता है और गर्म लोहेसे सेंकनेपर घटता है।

निद्रालुता।—औंघाई या पर्यायक्रमसे जागरण और निद्रालुता; अश्लील सपने देखना। पसीना होनेपर भी तकलीफ़ घटती नहीं है। इच्छानुसार भावसे सोनेपर मानो खूब सो सकता।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर; ठण्डे पानीके प्रयोगसे।

घटना।—धीरे-धीरे मलनेपर; केश झाड़नेपर, गर्म लोहेसे सेंकनेपर और आधी रातके बाद।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—प्रतिविष या दोषघ्न—मार्क-कोर, आर्टिका-इयु (पसीना, स्तनका दूध, पेशाब बढ़ जाता है); मेडुसा (स्तनका दूध और

पेशाब)। पाइनस सिल, वायुनलीमें श्लेष्मा संचय होना और पेशाब); फ्रैगे-वेस्का (स्तनमें दूधका घटना); (कैस; ठण्डे पानीके प्रयोगसे जलनका बढ़ना); (शीतार्त्तता) पाइनस-सिल, आर्टिका-ड्यु, (उत्ताप मालूम होना)—ऐपिस, वेस्पा, क्लोरैल, (परन्तु पसीना होनेपर घटना)। (तलपेटमें स्पर्श-असहनीयता)—एपिस; आर्टिका-युरेन्स। (वातकी वजहसे दर्द)—ब्राई, डालका; (आमवात)—आर्टिका-युरेन्स।

शक्ति।—६ठे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

फ्रैगेरिया वेस्का

(FRAGARIA VESCA)

दूसरा नाम।—स्ट्रा-बेरि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पके हुए स्ट्रा-बेरी नामक फलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—शोथ; पैत्तिक भाव; जाड़ेके दिनोंके फोड़े; आक्षेप; विसर्प; प्रमेह; पट्ट-कृमि; जीभ काँटोंसे भरा; सूजन; आमवात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—"जीभ फूली, लाल और उठे हुए काँटोंसे भरी—ये इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। प्रसूताओंके स्तनके आकारका बिगड़ जाना और दूधका परिमाण घटना या सूख जाना, बहुत ज्यादा गाढ़े गोंदकी तरह पसीना निकलना, जाड़ेके दिनोंके फोड़े या बिवाई—गर्मीके दिनोंमें बढ़ना वगैरह कई इसके प्रधान क्रियाफल हैं। संन्यासकी तरह श्वासरोध होनेका उपक्रम, सुस्ती, प्रमेहका फिरसे पैदा हो जाना, सारी देहमें सूजन, आमवात वगैरह इससे आराम हो जाते हैं।

लक्षणावली

मुखमण्डल।—चेहरा नीला, जीभ फूली, इतनी बड़ी हो जाती है, मानो बाहर निकल पड़ेगी (स्ट्रैमो, वेसिलि, इनैन्थि-क्रोकेटा) और लाल तथा उठे हुए काँटोंसे भरी (बेल, मार्क-कोर; स्तन—ऐण्टि-टार्ट, एपिस, रस-टक्स)।

पाकाशय आदि।—वमन, पाकाशय और उदर तथा पेटमें भयानक दर्द ; पेट फूल उठता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रमेह—बहुत दिनोंतक बन्द रहनेपर एकाएक पैदा हो जाना (ऐग्नस-कैस्ट, क्लिमेट)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्तन छोटे और उनका दूध सूख जाता है (फार्मिका)। (जिनके बच्चे मर गये हों, उनका दूध सोख लेनेके लिये यह बहुत उपयोगी है)।

श्वास-यंत्र, हृत्पिण्ड इत्यादि।—संन्यासके आक्रमणके पहले जैसा हो जाता है, उसी तरह एकाएक श्वास-रोध हो जानेका उपक्रम। एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया रुक जानेकी वजहसे रोगी बहुत चीण और सुस्त हो पड़ता है, नाड़ी सूक्ष्म और सविराम।

सार्वाङ्गिक।—समूची देह फूल उठती है (आर्स, चायना, हेलिबो) और बहुत सुस्त हो पड़ता है, यहाँतक कि उठनेकी शक्ति नहीं रहती। आम-वात। विसर्प या सान्निपातिक ज्वरमें पैदा हुई बैंगनी रङ्गकी छोटी-छोटी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद।

ज्वर।—बहुत ज्यादा गाढ़ा गोंदकी तरह लसदार पसीना होता है (ऐन्थ्रा, डैफनी, कैलि-ब्रोम, प्लम्ब)।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, आर्टिका-इयु, ऐसिड-हाइड्रो।

शक्ति।—मूल अर्क और प्रथम दशमिक क्रम।

फ्रान्सिसिया इयुनिफ्लोरा

(FRANCISCEA UNIFLORA)

दूसरा नाम ।—ब्रेजेलियन मनाक्का रूट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सरमें दर्द ; उपदंश ; वात ; सन्धिवात ; हृत्पिण्डके आवरणका प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—वात-व्याधि—नया या पुराना—तेज़ या धीमा,—हृद्वेस्ट-प्रदाह और सर-दर्द वगैरह रोगमें लाभदायक है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—बहुत यन्त्रणादायक, मानो माथा एक बन्धनीसे कसकर बँधा हुआ है (इथ्यू, मर्क, सल्फ, ऐनाक, ऐण्टि-टार्ट, बार्बा, ऐकूर, वेस्टि, कैक्ट, ऐसिड-कार्बोलिक, चेलिडो) ; सरके पिछले भागमें, गर्दनके पीछे और मेरुदण्डमें अस्त्रकी चोटकी तरह या पतली सलाई गड़नेकी तरह दर्द, सारे शरीरमें बहुत उत्ताप मालूम होना और अन्तमें बहुत ज्यादा पसीना होकर सब तकलीफें घट जाती हैं ।

शक्ति ।—नयी अवस्थामें १ ड्राम मूल अर्क १० आउन्स पानी मिलाकर जवान रोगियोंकी प्रति एक या दो घण्टेका अन्तर देकर एक चम्मचकी मात्रासे सेवन करना चाहिये । पुरानी अवस्थामें, रोगवाले अङ्गमें बहुत अकड़न, सुस्ती और एकाएक या लगातार शरीरको हिलाते रहनेपर बढ़ना लक्षण रहनेपर प्रति तीन घण्टेका अन्तर देकर मूल अर्क या १म दशमिक क्रमका ५ बून्द सेवन करना चाहिये ।

फ्रेञ्जैन्स बेड

(FRANZENS BED)

परिचय ।—वोहिमियाका फ्रेञ्जेन्स बेड प्रपातका जल ।

उपयोगिता और आभास ।—कब्जियत ; उदरामय ; अनपच ; स्नायविक दुर्बलता वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—-**तुलनीय** ।—नेट्रम-सल्फ, कैलि-आयोड ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

फ्रैक्सिनस अमेरिकानस

(FRAXINUS AMERICANUS)

दूसरा नाम ।—ह्वाइट ऐश ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालसे मूल अर्क तयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—जरायुकी बीमारी, जरायुका अपने स्थानसे हटना, जरायुका अर्बुद इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० बार्नेटके मतसे जरायुका बढ़ना, सामनेकी ओर घूम जाना (Retroversion or Antiversion) ; जरायुका अपने स्थानसे हटना ; जरायुका बाहर निकल पड़ना (Prolapse) और जरायुका बहुत भारी हो जाना वगैरहकी यह अव्यर्थ महौषधि है । इसके सेवनसे जरायुकी बन्धनियोंमें बहुत ताक़त आ जाती है (Ligaments) और वह अपने स्थानसे हटे हुए जरायुको अपनी जगहपर खींच लेती हैं । नीचेकी ओर आकर्षणके साथ यदि जरायुमें सूतकी तरह तन्तुमय अर्बुद हो जायें तो उसमें भी लाभ होता है । ज्वरके बादवाला ओठका जखम, फैलनेवाला या इधर-उधर हटनेवाला शीत और कभी-कभी उत्ताप पैदा हो जाना वगैरह भी इससे दूर हो जाता है ।

लक्षणावली

मन ।—स्नायविक अस्थिरता और विषन्नता तथा उद्वेग ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आता है और दर्द होता है। इसके बाद बोखार आ जाता है। सरके पीछे और गलेमें टपकका दर्द होता है, ज्वरके बादवाला ओंठोंका जखम ।

अन्नाशय ।—बाएँ पुट्ठेमें इतना दर्द कि हाथ नहीं लगाने देता ; आँत आदिकी नीचेकी ओर खींचन उरूमें मालूम होती है। कब्जियत (ऐलेट्रिस)। पेशाब परिमाणमें थोड़ा और उसका रङ्ग धुमैला ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायुका आयतन बढ़ जाना, अपनी जगहसे हटना, सामने या पीछेकी ओर झूल पड़ना, बाहर निकल पड़ना और बहुत भारी मालूम होना (मैक्रोटिन, ऐलेट्रिस-फेरि)। जरायुका सूतकी तरह तन्तुमय अर्बुद ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—हेलोनियस ; ऐलोट्रिस-फेरि, मैक्रोटिन, लिलियम-टाइ, थ्लैस्पाइ-बार्सा, सिपिया ।

शक्ति ।—मूल अर्क ५ से २० बून्दतक (रोज़ तीन-चार बार सेवन करना चाहिये)।

फ्यूकस वेसिक्युलोसस

(FUCUS VESICULOSUS)

दूसरा नाम ।—सि-केल्प ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखे पौधेसे विचूर्ण या मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— स्थूलता ; अजीर्ण ; गलगण्ड इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—यह मोटेपनकी एक उत्कृष्ट दवा है, क्योंकि यह शरीरके बहुत ज्यादा मेदकी शोषणकी क्रियामें सहायता पहुँचाता है ; पाचन-क्रियामें सहायता करता है और पेटमें वायु पैदा होना

रोकता और घटाता है। अक्षिगोलकके बाहर निकल आनेके (Exophthalmos) साथ गलगण्ड रोग इसके द्वारा आराम हो जाया करता है (थाइराइडिन; स्पञ्जि, आयोड)। इसके कई निर्णायक लक्षण ये हैं:—सरमें असह्य दर्द; ललाटमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक लोहेके बंधनसे कसकर बँधा हुआ है, मानो ललाट दो हो जायगा। (ऐमोनकार्ब, बेल, ग्लोन, सिङ्को ; मानो एक कनपटीसे दूसरे शङ्खदेश या कनपट्टीतक एक गर्म धमनीसे बँधा हुआ है—क्लोरल ; मानो ललाटके एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वतक एक काष्ठफलक अड़ा हुआ है—काक्य, रास)। भूख और पाचन-शक्तिका घटना। वायु पैदा होना, या लक्षण घटना। गहरी और दुरारोग्य कब्जियत। ऐसा अनुभव होना मानो ऋतुके समय श्वास-रोध होनेकी तैयारी हो रही है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—वैसिलिन, बैडियेगा, आयोडम, फाइटो, थाइरायड।

शक्ति।—मूल अर्क १० बून्दके हिसाबसे दो-तीन बार सेवन करना चाहिये।

गेडस माहुँआ

(GADUS MORRHUA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—काड मछलीकी सबसे ऊपरवाली कशेरुकाका (Vertebra)—चूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—दमा; मूलाधारकी बीमारी; अस्थि-सम्बन्धी बीमारी; खाँसी; क्षयकास इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—"ओलियम, जेकोरिस-ऐसेलाई" की तरह यह भी श्वास, क्षय-कास वगैरह फेफड़ेकी बीमारियोंमें विशेष लाभदायक हुआ करता है। लाइकोपोडियम और ऐण्टिम-टार्टारिकमकी तरह इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण "पंखा हिलानेकी तरह दोनों नासापुटोंका सिकुड़ना और फैलना।" आरोग्यके सम्बन्धमें निराशा और मृत्यु-कामना यह

लक्षण बहुत ही प्रत्यक्ष दिखाई देता है। तलहत्थीमें जलन और हड्डीमें दर्द आदिमें भी इससे लाभ होता है।

लक्षणावली

मन।—गहरा विषाद, आरोग्यके सम्बन्धमें निराशा (आर्स, कैंक, लैंक-कैन, लिल्-टाई, मिडोरिन, पल्स); मृत्युकी कामना किये बिना रह नहीं सकता (ऐण्टि-क्रूड, अरम ; अरम-म्यू-नैट, बेल, हाइड्रैस, नैट-सल्फ, ऐसिड-नाई, फास, प्लैट, स्पञ्जि, सिफिलिन, क्रोटेल-होरिडो, क्रोटेल-कैस्का, ग्रैफ)।

नाक।—नींद खुलनेके बादसे समस्त दिन इस तरह तेजीसे श्वास-प्रश्वास चलने लगता है मानो न जाने कितना परिश्रम किया है और पंखा हिलानेकी तरह दोनों नासापुट सिकुड़ते और फैला करते हैं।

अन्त्राशय।—पेटमें वायु इकट्ठा होकर बहुत फूल उठता है। समूची तलपेटमें जलन करनेवाला उत्ताप मालूम होता है (ऐसिड-फास, कैम्फो)। वक्षस्थलमें दर्दके साथ उदरके दाहिने पार्श्वमें, पुट्ठे और मसानेमें तेज दर्द मालूम हुआ करता है। पतले दस्त या उदरामय।

पेशाब।—मूत्राशय मानो फूल और भर गया है—इस तरह अनुभव होना (कैलेड, पल्स); मूत्रस्थलीमें सुई गड़नेकी तरह मालूम होता है (बार्बा, कैन्थ, लाई); पेशाब करना प्रायः असम्भव हो जाता है (कैन्थ, कोना, युफोर्ब)।

श्वास-यन्त्र।—स्वर इतना क्षीण मानो बहुत चेष्टा करनेपर कहीं मुँहसे बात निकलती है (ऐमोन-कास्टि, कास्टि, चिनोपोड, इग्ने, फास, पल्स, ऊँचे स्वरसे बात नहीं कर सकता—ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, ग्रैफ, हिप, नैट-कार्ब, ऐसिड-नाई, पैरिस, फास, पल्स, सिपि)। खाँसी सरल और बलगम फेन-भरा (आर्स, डैफ, ओपि)। वक्षगह्वरके अन्तरतम प्रदेशमें दर्द और साँय-साँय शब्द करनेवाली खाँसीका प्रकोप (ब्राई, इपिक, ऐण्टि-टार्ट, पल्स, सैम्बियु, स्पञ्जिया, स्क्वियुला)। श्वास-प्रश्वास बहुत ही कष्टकर—मानो सभी वायुनलियाँ रुकी हुई हैं (आर्स, कार्बो-वेज, इपिक, ऐण्टि-टार्ट, सैम्बु)। छातीमें तेजीसे चलनेवाला तेज़ दर्द—पहली बार हिलनेसे ही दर्द बढ़ जाता है, पर टहलनेपर समभावसे रहता है। सन्ध्याके समय दोनों फेफड़ोंमें तेज़ दर्द। खाँसने, लम्बी साँस लेने और शरीरको हिलानेपर वक्ष-वेष्टमें रगड़ खानेकी तरह दर्द मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पीठके मध्य भागको कशेरुकामें (Dorsal Vertebræ) तेज़ अस्त्राघातकी तरह चोट मालूम होती है। बाएँ जानुमें कुछ छेदनेकी तरह दर्द मालम होता है; खड़े होनेवाली अवस्थामें जानु आप-ही-आप मुड़ जाता है। उरुकी अस्थिके (Femur) शिरोदेशसे जानुसन्धितक ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है।

ज्वर (शीत, उत्ताप और पसीना) ।—कमरसे पैरतक बहुत ठण्डा (मिनियन, सिकेलि, स्ट्रैम)। दोनों बाँह बहुत सूखे और गर्म (लिडम, मैग-कार्ब, एसिड-नाई, नक्स, पल्स, सल्फ, एक हाथ गर्म और दूसरा हाथ ठण्डा—डिजि ; पर्यायक्रमसे एक बार बायाँ हाथ ठण्डा और एक बार दाहिना हाथ ठण्डा—काक्यु)। तलहत्थी बहुत सूखी, गर्म (फेर, पोलिपो, सल्फ); सन्ध्याके समय असह्य मालूम होता है (फेर); शीतावस्था-रहित ज्वर (ऐनाक, आर्स, ऐङ्गस, नैट-म्यूर)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ओलियम-जेकोरिस-ऐसेलाई : काञ्चियोलिन, लैके-कार्ब, ग्रैफ, स्पञ्जि, ओलियम-ऐन, मिनियन, फेर, पोलिपो।

शक्ति ।—१लेसे ३रा दशमिक विचूर्ण।

गैलेगा

(GALEGA)

दूसरा नाम ।—गोट्स राय।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे ताजे पौधेके रससे अर्क तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—पीठमें दर्द ; सुस्ती ; खूनकी कमी ; परिपोषणकी कमी ; मूलग्रन्थिमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

इसकी निम्न-शक्तिके सेवनसे स्तन पिलानेवालियोंकी भूख और स्तनका दूध बढ़ जाया करता है।

तुलनीय ।—ऐग्नस, कैल्केरिया-कार्ब, ऐसि-सेपटेल।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

गैलियम

(GALIUM)

दूसरा नाम ।—क्लिव्स, गुज-ग्रास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह एक प्रकारकी पेशाब लानेवाली दवा है। शोथ-रोगमें इसका मूल अर्क आधा ड्राम मात्रामें सेवन करनेपर शोथ घटता है । इसके सेवनसे मूत्र-पथरी गल जाती है, इसीलिये मूत्र-पथरी रोगमें भी इसका व्यवहार हुआ करता है ।

यह कैन्सर और इसी तरहके दूषित जखमकी भी उत्कृष्ट दवा है । कैन्सरके जखममें इसके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे तुरन्त नया तन्तु पैदा हो जाता है और क्रमसे रोग आरोग्य पथपर आ जाता है ।

शक्ति ।—मूल अर्क आधा ड्राम मात्रामें, एक प्याला दूध या पानीके साथ दिनमें तीन बार सेवन करना चाहिये ।

गैम्बोजिया

(GAMBOGIA)

दूसरा नाम ।—गमि गुटी (Gummi Gutti) ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चीन देशके एक तरहके गोंद या लेईकी तरह पदार्थसे मूल अर्क तैयार किया जाता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मलद्वारकी बीमारियाँ ; पीठमें दर्द ; शूल ; कमरके पीछेका दर्द ; अतिसार ; आँखका उठना ; गलेका जखम ; आँतोंका प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय या किसी दूसरी तरहके दस्त के आदिमें लाभके लिये गमि गुटि या गैम्बोजिया बहुत प्रसिद्ध है ।

मल बहुत पतला और पीला या बहुत बदबूदार ; गाढ़ा आम-भरा, बहुत दिनोंकी बीमारीके बाद एक बार समस्त मल बड़े वेगसे बाहर निकलता है ; पाखाना हो जाने बाद ऐसा मालूम होता है मानो उदरमें भीतरसे एक महान बीमार करनेवाला पदार्थ निकल गया ; मलद्वारमें इतनी जलन होती है मानो मलद्वारमें घाव हो गया है । मानसिक अवसाद, विमर्ष-भाव, तीता स्वाद, जीभमें जलन ; भूखकी कमी, खाँसी भूख रहनेपर भी थोड़ा-सा खाते ही वह बन्द हो जाती है ; पलक और आँखका कोना बहुत खुजलाता है, बच्चा लगातार यह सब अंश खुजलाया करता है । उपक्षत (Aphthæ), मुँहके भीतर और ओंठ और गालके भीतरी प्रदेशमें गहरा जखम पैदा हो जाता है । खाने-पीने बाद जी मिचलाता है और वमन होता है । पेशाबमें प्याजकी गन्ध आती है, समूचा घर इस गन्धसे भरा रहता है । सारे शरीरमें दर्द और दुबलापन, बहुत आलस्य और कमजोरी, ये कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना—क्या विश्राम और क्या शरीरकी हिलाने-डुलानेके समय और सवेरे उठनेपर सरमें चक्कर आया करता है (सवेरे सोकर उठनेपर सरमें चक्कर—नेट्र-मूर)। दोपहरके पहले ब्रह्मतालुमें चोटकी तरह दर्द, निर्मल वायुके सेवनसे यह दर्द घट जाता है । औंधाई और पीठमें दर्दके साथ सरमें बहुत भार मालूम होना । सरमें गर्मी चढ़कर पसीना हुआ करता है ।

आँख ।—आँखका भीतरी कोना बहुत खुजलाता है (ऐल्यु, एपिस, अरम), मलनेपर त्वचाको क्षय करनेवाला पानी गिरा करता है ; निर्मल वायुमें आराम मिलता है । रातमें आँखें सट जाती हैं ; सवेरे बहुत जलन होती है । शामको आँखमें बहुत खुजली होती है (सलफर)। तीसरे पहर और सन्ध्याके समय आँखमें भयङ्कर जलन और रोशनी सहन नहीं होती, निर्मल हवामें टहलनेके समय घट जाती है और सवेरे फिर पैदा हो जाती है । पलक और आँखके भीतरी कोनेमें बहुत खुजली रहती है—बच्चा हमेशा यह सब अंश रगड़ा करता है ।

गलेके भीतर।—कण्ठके दाहिने पार्श्वमें डङ्क मारनेकी तरह भयङ्कर दर्द होता है; निगलनेके समय, पहले और बाद (ऐपिस, ऐल्यू, पल्स, कैलि-आयोड)। कण्ठ छूनेपर भी उसमें बहुत दर्द मालूम होता है (लैके)। कण्ठके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गया है (बेल, हिपर, फाइटो, लैके)।

पाकस्थली।—मुँहका स्वाद बहुत तीता (ब्राई, चायना, मर्क, नेट्रम-सल्फ, नक्स-वोम, पल्स)। जी मिचलाता है, डकारके साथ मुँहमें खट्टा पानी भर आता है (कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज, चायना, लाई, नेट्र-म्यूर, नक्स-वोम, फास, पल्स, रोबिन, सल्फ)। बार-बार दस्त और कै होता है और इसी वजहसे सुस्ती आ जाती है। सन्ध्याके समय भयङ्कर प्यास (नेट्र-म्यूर, सिपिया)। भूख खूब रहनेपर भी जहाँ थोड़ा-सा खाया कि पेट भरा हुआ मालूम होने लगा (ऐमोन-कार्ब, बेराई, ब्राई, साइक्लेम, कोलचि, सिक्लेम, लाई, प्रूनस-स्पाई, रियुम, रोडो)।

अन्त्राशय।—पाकाशय और अन्त्राशय खाली मालूम होता है (इग्ने, फास, जिङ्कम)। नाभि-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और पेट फूलकर कड़ा हो जाता है। यकृत-प्रदेशमें बहुत जलन (ऐको, ऐगार, कैलि-कार्ब)। उदरमें हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द होता है (ऐलो, एपिस, नेट्र-सल्फ, पल्स) और पाखाना होनेके पहले नाभिके चारों ओर काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—उदरामय—मल बहुत पतला और पीले रङ्गका या गाढ़ा, हरा आँवमय, बदबूदार और जखम पैदा कर देनेवाला; प्रवल और बहुत देरतक रहनेवाले वेगके बाद एक साथ ही सब मल बड़े वेगसे बाहर निकल जाता है—वृद्ध मनुष्योंको अधिक होता है; सन्ध्याके समय, रातमें या ठण्ड लगनेपर बढ़ जाता है। पाखाना होनेके पहले एकाएक वेग और समूचे उदरमें उत्ताप तथा नखके आघातकी तरह और नाभि-प्रदेशमें तेज़ छेदनेकी तरह दर्द मालूम होता है; भयानक यन्त्रणाकी वजहसे रोगी हाथ-पैर सिकोड़कर चिल्लाया करता है। पाखाना हो जाने बाद बहुत आराम मालूम होता है (नक्स); मानो एक अत्यन्त सुखकर पदार्थ उदरसे बाहर निकल रहा है; मलद्वारमें बहुत जलन होती है और ऐसा मालूम होता है, कि वहाँ जखम हो गया है। कभी-कभी पाखाना होने बाद तलपेटमें भयानक दर्द होता है। कब्जियत—मल कड़ा और थोड़ा, पर वेग अधिक होता है, मलान्त्रमें पोसने-जैसा

दर्द और जलन, मलान्त्र बाहर निकल पड़ता है (कैल्के, ग्रैनेट, इग्ने, लैके, मेजेर, रियुटा)।

पेशाब।—बहुत देरका अन्तर देकर पेशाब होता है पेशाबमें प्याजकी गन्ध—सारा घर उस गन्धसे भर जाता है। पहले कई बून्द निकलकर फिर पेशाब होना रुक जाता है और फिर मूत्रनालीके मुँहपर बहुत जलन होनेके साथ पेशाब होना आरम्भ होता है।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी—उठ बैठनेपर आराम मालूम होता है (हायोसायमस)। वक्षोस्थि (Sternum) प्रदेशमें बार-बार असह्य सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कमरके अन्तिम भागमें बहुत दर्द, मानो चोट लग गई है। कमरके पीछेके अन्तिम भाग—पिकचंचु-अस्थि (Coccyx) में ऐसा दर्द मानो चबा रहा है (युफोर्ब)। दाहिने कन्धेके शिखरदेशतक सुई बेधनेकी तरह दर्द। दाहिने हाथके अंगूठेमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होना मानो सुन्न हो गया है। शरीरके कितने ही स्थानोंमें खुजली होती है और चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी हुआ करती है।

वृद्धि।—वृद्ध व्यक्तियोंकी, बच्चोंकी, सर्दी लग जानेपर और सन्ध्या तथा रातके समय।

घटना।—उठ बैठनेपर, निर्मल वायुके सेवन और शरीरको हिलानेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कैम्फो, कैलि-कार्ब, क्रोटन-टिग, ऐलो, पोडो, पल्स, वेरेट, ऐपोसिन-कैन।

दोषघ्न।—कैम्फर, काफिया, कोलोसि, केलि-कार्ब, ओपियम।

तुलनीय।—पल्स (खाँसी); ऐपोसाइ (अतिसार); क्रोटोन (अतिसार)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रमतक।

गैस्टेन

(GASTEIN)

परिचय ।—आस्ट्रियाके गैस्टेन प्रपातका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके बाहरी स्रावका घट जाना ; रक्त-सञ्चालनकी अधिकता ; अवसाद ; कमजोरी । सोनेकी इच्छा और आंधी-पानीमें सब लक्षणोंका बढ़ना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—लेपिस-ऐल्बा, ऐसिड-फ्लोरिक, फास्फोरस, साइलि, कैन्थरिस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

गालथीरिया प्रोकुबेन्स

(GAULTHERIA PROCUBENS)

दूसरा नाम ।—विंटर ग्रीन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—पाकाशयका प्रदाह ; स्नायुशूल ; पार्श्वशूल ; वात ; गृध्रसी या पैरोंमें झुन-झुनीवाला वात ।

उपयोगिता और आभास ।—नया और प्रबल पाकाशयका प्रदाह (Gastritis) पर इसकी प्रधान क्रिया है । कै होना आरम्भ होनेपर जल्दी रुकता नहीं है—कोई भी चीज़ क्यों न हो, यहाँतक कि पानीतक, पाकस्थलीमें प्रवेश करते ही कै आरम्भ हो जाती है । इसके साथ ही प्रादाहिक वातका दर्द, छातीकी बगलमें दर्द (Pleurodynia), कटिस्नायुशूल (Sciatica) वगैरह बहुत तरहके स्नायुशूलकी अवस्था विशेषमें यह बहुत फायदा करता है ।

लक्षणावली

पाकस्थली ।—पेट खराब और अकसर पेटकी बीमारी लगी रहनेपर भी दुर्दमनीय भूख, बहुत देरतक वमन हुआ करता है; जो कुछ खाता है, यहाँतक कि ठण्डा पानीतक पीनेपर उसी समय कै हो जाती है; ऊपरी पेटमें तेज़ दर्द, अंगुलीसे दबानेपर दर्द बढ़ जाता है। श्वास-कष्ट—श्वास-प्रश्वास धीरे-धीरे चला करता है, रोगी बेहोश हो जाता है और उसका शरीर गर्म मालूम होता है। जीभ सूखी, चिकनी और कुछ-कुछ फूली, इसीलिये मुँहसे साफ़-साफ़ बात नहीं निकलती (डाल्का, लाई)।

श्वास-यन्त्र ।—पेटके ऊपरी प्रदेशमें दर्द और श्वास-प्रश्वास क्रियामें बाधा तथा धीरे-धीरे होती है। छातीके बगलमें दर्द होता है और दोनों फेफड़ोंके बीचकी झिल्लीके सामनेवाले अंशमें तेज़ दर्द हुआ करता है (डाक्टर फेरिङ्गटन)।

स्नायु-मण्डली ।—पलक, मुँह, पाकाशय, डिम्बाधार, जरायु और ऋतु-सम्बन्धी स्नायुशूल, कटिस्नायुशूल और नवीन प्रादाहिक वातकी बीमारियाँ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एसिड-सैलिसिलिक, ब्राई, आर्स, रास, सैलल, कैल्मिया, लिडम।

शक्ति ।—मूल अर्क और १म दशमिक क्रम।

गैलवैनिस्मस

(GALVANISMUS)

दूसरा नाम ।—गैल वेनिकम्।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दूधकी चीनीमें चुम्बुक चुलाकर विचूर्ण तैयार करना पड़ता है।

उपयोगिता और आभास ।—पेशियोंका सङ्कोचन। त्वचाका काँपना, सिहरावन, ऐसा अनुभव होना कि कोई ठण्डा पानी ढाल रहा है।

अथवा इसके बदले जलन, दृष्टि, स्मरण और बोधशक्तिमें गड़बड़ी, सर-दर्द वगैरह लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—कैलि-ब्रोम, जेल्स, इलेक्ट्रि-सिटस, मैग्ने-पो-आष्ट्रि।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जेलसिमियम

(GELSIMIUM SEMPERVIRENS)

दूसरा नाम।—इयोला जेस-मिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़की छालसे मदर टिञ्चर या मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—अन्धापन ; स्वरभङ्ग ; पैत्तिक ज्वर ; स्नायुशूल ; मस्तिष्कका विकार ; मस्तिष्क-मेरुमज्जाकी-झिल्लीका प्रदाह ; आँखकी बीमारी ; सर्दी ; कब्जियत ; आक्षेप ; बहरापन ; डेंगूज्वर ; अतिसार ; उपझिल्ली-प्रदाह ; रक्तामाशय ; बाधक ; मानसिक उद्वेगकी वजहसे उपसर्ग ; मृगी ; ज्वर ; भय ; प्रमेह ; दमा ; सर-दर्द ; उत्तापकी वजहसे उपसर्ग ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; मूर्च्छा-वायु ; सविराम ज्वर ; कामला ; प्रसवका दर्द ; यकृतकी बीमारी ; गति-शक्ति देनेवाली पेशी और स्नायुकी बीमारी ; उन्माद ; खसड़ा ; मस्तिष्कावरक-झिल्ली-प्रदाह ; रजकी कमी या रजोबन्ध ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; पेशियोंका शूल ; आँखकी पलकोंका फड़कना ; अन्ननालीका सङ्कोचन या पक्षाघात ; पक्षाघात ; अर्द्धाङ्गका पक्षाघात या एकाङ्गका पक्षाघात ; गर्भिणीका अण्डलाल मिला मूत्र-रोग ; पलकोंका गिरना ; सूतिकाक्षेप ; स्वल्प-विराम ज्वर ; पलकोंकी विच्छिन्नता ; आमवात ; बहुत ज्यादा इन्द्रियपरायणताका दुष्परिणाम : नींदमें गड़बड़ी ; आक्षेप ; सूर्योदयके साथ सर-दर्द ; सूर्याघात (लू लगना) ; दाँत निकलनेके समयकी बीमारी ; चेहरेका स्नायुशूल ; तम्बाकूका अपव्यवहार ; जीभकी बीमारी ; दाँतका दर्द ; कम्पन ; जरायुका माथा घूम जाना ; स्वर-लोप ; लिखनेवालोंका हाथ काँपना या अकड़न आदि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—यह बच्चे, युवा और स्नायु-प्रधाना तथा जल्दी-जल्दी बदलनेवाले स्वभावकी स्त्रियोंके लिये विशेष उपयोगी है। (१) स्थिर होकर रहनेकी इच्छा, उसे यह इच्छा होती है, कि कोई उसे विरक्त न करे ; बोलना नहीं चाहता या ऐसी भी इच्छा नहीं करता कि कोई उसके पास रहे ; हमेशा मृत्यु-भय और हमेशा साहसहीन बना रहता है, गिर जानेके भयसे धात्रीको या खाटकी पाटीको पकड़ रखता है ; क्रोध या उत्तेजना-प्रवण और अभिमानी और जो स्त्री या पुरुष अस्वाभाविक उपायोंसे इन्द्रिय-परितृप्त करते हैं ; डर, आशंका या उत्तेजक समाचार आदिकी वजहसे बीमारियाँ। नित्यके कामके अलावा जब कभी कोई नया काम करना पड़ता है, जैसे—किसी दोस्तसे मिलना, स्त्रियोंको यह मालूम होती हो कि ससुराल जाना होगा या दस आदमियोंके सामने जाना होगा—बार-बार पाखाना लगने लगता है। (२) धूप या गर्मीके उत्तापसे मानसिक या शारीरिक अवसाद। (३) मस्तिष्क मेरुमज्जावरणका प्रदाह (Cerebro-spinal meningitis), माथा एक ओर झूल पड़ता है। सरमें चक्कर आना, अस्पष्ट दृष्टि, दो देखना या दृष्टि-हीनताके साथ जीभ मोटी और अपने वशमें न रहनेवाली मालूम होती है ; चलता-चलता मतवालेकी तरह ढुलक पड़ा करता है। दाहिने पार्श्वका सरका दर्द, इसके साथ ही दाहिनी आँखके गोलेके ऊपरी अंशमें दर्द, तमतमाया हुआ चेहरा और दोनों आँखें लाल ; बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होने बाद सर दर्द शान्त हो जाता है और मानसिक परिश्रम, धूम्रपान, धूप या लू लगने और सर नीचाकर सोनेपर बढ़ जाता है, ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखोंके ऊपरसे माथेको छेदकर एक बन्धन बँधा हुआ है। (४) पेशियोंकी क्रियाके पारस्पर्यकी कमी (Wanted co-ordination of the muscles) अर्थात् रोगीकी पेशियाँ सब उसकी इच्छाके अनुसार काम नहीं करती। सभी पेशी-मण्डली शिथिल हो जाती है और गति शक्ति विधायक स्नायुमण्डलका सम्पूर्ण पक्षाघात हो जाता है। जीभ, बाँह, पैर और समूची देह क्षीण हो जाती है और काँपती रहती है। (५) आँखकी ऊपरी पलक बहुत भारी मालूम होती है और खोलकर देखता हुआ रह नहीं सकता। (६) रोगीको ऐसा मालूम होता है कि यदि वह हिलता-डोलता न रहेगा तो हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा (हिलने-डोलनेपर हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा—कोकेइन, डिजिटेलिस)। बिना प्यासका बोखार, स्थिर होकर सोया रहना चाहता

है, शीतावस्थामें भयानक कम्प होता है—दबा रखनेके लिये कहता है। जाड़ेकी वजहसे सारे शरीरमें सिहरावन हो जाता है।

लक्षणावली

मन।—मृत्युभय (आर्स, लैक-कैन, ऐको, ऐक्टी, नक्स)। स्थिर भावसे सोया रहना चाहता है: ऐसी इच्छा रहती है कि कोई उसे तंग न करें; किसीसे बोलना नहीं चाहता या ऐसी भी इच्छा नहीं करता कि कोई उसके पास रहे। बच्चा गिर जानेके भयसे धात्री या खाटकी पाटीको पकड़ रखता है (बोरैक्स, सैनिक)। उत्तेजना या क्रोधी स्वभाव या बहुत अभिमानी स्वभाव; अस्वाभाविक उपायसे अपनी इन्द्रिय-परितृप्ति करता है (कैलि-फास)। डर, आशंका या एकाएक उत्तेजनाजनक समाचार आदि प्राप्त करनेकी वजहसे बीमारी (इग्ने, अप्रत्याशित आनन्द संवादकी वजहसे—काफिया)। सोते ही विकारग्रस्त हो जाता है, अर्द्ध-जाग्रत अवस्थामें असम्बद्ध बातें बका करता है; बहुत बकता है, चमकीली आँखें, एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक तेज दर्द। बिलकुल ही साहस नहीं रहता। रोज़के कामके अलावा अन्य कोई असाधारण काम करना पड़ता है या उसमें शामिल होना पड़ता है, जैसे—बालिकाओंकी ससुराल जाना होगा इत्यादि मालूम होनेसे पाखाना होने लगता है; दस आदमियोंके सामने निकलनेसे ही लज्जा और भय मालूम होना (आर्जेण्ट-नाई)। ऊँचे स्थानसे गिरकर आत्महत्या करनेकी दुर्दमनीय इच्छा (आर्जेण्ट-नाई, ग्लोन)। अपनी बीमारीके विषयमें सोचनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है (बैराइ, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोन, मिडोराइन, ऐसिड-आक्सेल, पेट्रोल)। रोगीको किसी आत्मीयके विरहकी बात याद दिला देनेपर उसकी बीमारी बढ़ जाती है, तूफान आनेके पहले बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (रोडो)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, यह दर्द सरके पिछले भागसे पैदा होता है (साइलि), इसके साथ ही दो देखना या धुँधली दृष्टि और अन्धापन, चलनेके समय मतवालेकी तरह डगमगाया करता है। सरमें दर्द—दर्द पैदा होनेके पहले आँखसे दिखाई नहीं देता (कैलि-बाई), बहुत ज्यादा पेशाब होनेपर घटना, गर्दनके पीछेवाले मेरुदण्डसे दर्द चलता है और माथेके ऊपरसे सामने या ललाटमें जाकर ठहर जाता है और ऐसा मालूम होता है, मानो

ललाट या अस्थिगोलक फट जायगा (सैङ्गुई, साइलि)। वृद्धि—मानसिक परिश्रमसे (ऐसेर, अरम, लैक, नक्स, पल्स, साइलि, सल्फ); धूम्रपानसे घटना, डायाडेमा), धूपकी गर्मीसे (लैके, नैट-कार्ब, नक्स, ग्लोन) और नीची तकियेपर माथा रखकर सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके ऊपरसे माथेके चारों ओर एक बन्धन बँधा हुआ है (ऐनाक, ऐण्टि-टार्ट, बार्बा, ऐकूय, बैप, कैक्ट, ऐसिड-कार्बोलिक, चेलिडो, सल्फ); माथेकी त्वचा छूनेपर दर्द मालूम होता है (ऐम्ब्रा, कार्बो-ऐन, सिङ्को, फेर, क्रियो)। (लैक डिफ्लोरेटममें भी सरमें दर्दके समय बहुत ज्यादा पेशाब होता है, पर उससे दर्दमें कुछ ज्यादा फायदा नहीं होता—डा० नैश)। सर-दर्द, दाहिनी कनपटीमें अधिक दर्द होता है, सवेरे आरम्भ होकर मध्याह्नमें चरम वृद्धि हो जाती है और हिलने-डोलनेपर तथा रोशनीमें वह दर्द बढ़ता है (लैक डिफ्लो, मैंग-म्यूर, साइलि)। घटना—सोने बाद (ब्राई, ओलियैन) और निद्रा तथा वमन होनेपर—सैङ्गिविन); चेहरा तमतमाया और आँखें लाल हो जाती हैं। मस्तिष्क-मेरुमज्जावरणका प्रदाह, माथा बगलकी ओर घूम जाता है। उठनेकी शक्तिका न रहना, सुन्न हो जाना, कम्पन और इसके साथ ही भयंकर जाड़ा मालूम होना तथा पुतली फैली रहती है।

आँख।—पीली; हलदी जैसे रङ्गकी। पलकोंमें बहुत भार मालूम होता है (रास, सिपि, आँख खुली और टकटकी लगी—लोरो, स्ट्रैमो); देखता रह नहीं सकता (कास्टि, कोलोफिल, ग्रैफ, सिपि), दोनों पलकोंका पक्षाघात। दो देखना अर्थात् एक चीज़ दो दिखाई देती है; केवल बगलकी ओर देखनेपर ऐसा दिखाई देता है; सामनेकी ओर समरेखा भावसे देखनेपर ऐसा नहीं होता; यह नहीं बता सकता कि राहमें किस ओर खड़ा है। आँखका कृष्णावरक प्रदाह, उससे रस बहता है; सरके पिछले भागमें दर्द, गर्म प्रयोगसे दर्द घट जाता है। आँखसे तिरछा देखना (ऐल्यु, केवल दाहिनी आँखकी—ऐल्युमेन), आँखकी पुतली नाककी जड़के पास सरक आती है, रोहिनी या डिफ्थीरिया रोगके बाद दोनों आँखोंकी पेशियोंका पक्षाघात (सैण्टोनिन, कास्टि, डिफ्थिरिन)। गर्भावस्थामें दो देखना या अन्धभाव, हस्तमैथुनके कारण तिमिर दृष्टि (फास, टैब)। आँखके ऊपरी अंशमें दर्द और चारों ओर धुआँ-धुआँ दिखाई देना (कैस्टोर, क्रोटोन, लैकी, ओलियैन, कैल्मी, सैबाडि, सिक्लेम, फास)।

कान।—एकाएक कान बन्द हो जाता है, मानो ताला लग गया और कुछ देरतक सुन नहीं पड़ता (ऐसेर, मैंङ्गे, साइलि, स्पाई, फाइटो, क्रोटोन, कानमें "धम" से आवाज़ होने बाद बहरापन अच्छा हो जाता है—साइलि ; नाक साफ़ करनेके समय ऐसी आवाज़ होकर बहरापन दूर हो जाता है—मैङ्गे, मर्क, साइलि ; निगलनेके समय ऐसी आवाज़ होकर बहरापन हट जाता है—मर्क) ; कानमें सों-सों आवाज़ हुआ करती है (बेल, बैराई, चायना, कैमो, काफि, लेके, नैट्रम-म्यूर, नक्स, फास)। गलेके भीतरसे कानके मध्य भागतक दर्दके साथ सर्दीसे पैदा हुआ बहरापन (आर्स, कैल्के, कार्बो-वेज, लिड, मर्क, पल्स)। क्विनिनके अपव्यवहार या ज्यादा व्यवहारके कारण बहरापन (आर्स, कैल्के कार्बो-वेज, ऐसिड-फास, पल्स) और वाक्शक्तिका लोप हो जाना। सर्दीको वजहसे कानमें दर्द (कैल्के-मार्क)।

नाक।—नाकमें सड़-सड़ और पूर्णता मालूम होना (लोरो, पैरिस) और बार-बार छींक आती है (सिक्लेम, कैलि-बाई, प्लैटि, टियुक्रि)। सवेरे बार-बार छींक आती है (कास्टि, क्रियो, पल्स) ; नाकसे पानी गिरता है (आर्स, सिपा, युफ्रे, डालका, लेके, पल्स, मर्क, मेजेर)। पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है और बार-बार छींक आती है (साइक्लेम, ऐलियम-सिपा, इयुफ्रे, आर्स) ; श्लेष्मा त्वचा क्षय करनेवाला और नासारन्ध्रमें जखम हो जाता है (सिपा, आर्स, आर्स-आयोड, मर्क) ; नासामूलसे ग्रीवा और कण्ठास्थितक दर्द होता है और भारीपन मालूम होता है (ऐग्नस, हायो, मिनियेन, पेट्रोल, पल्स, रियुटा)।

मुखमण्डल।—रोगीका चेहरा गर्म, फूला-फूला और मतवालेकी तरह (बैप्टोशियाकी भाँति इतना नशा बतानेवाला नहीं ; ओपि) ; दोनों ओंठ सूखे ; गर्म और पपड़ी जमे ; बहुत देरतक बातें करने बाद ऊपरी ओंठ सुन्न हो जाते हैं। चेहरा पीला। चक्षु-गह्वरका स्नायुशूल (Orbital Neuralgia), रोगवाले पार्श्वकी पेशियाँ संकुचित हो जाती हैं और फड़का करती हैं। दोनों हनु और जबड़ा अटक जाता है और आपसमें जुड़ जाता है (रासटक्स, लेके, मर्क-कोर) निचला जबड़ा झूल पड़ता है (ओपि, लेके, लाई)।

मुख-विवर।—जीभ, काँपती हुई और रोगी बहुत कष्टसे बाहर निकाल सकता है (लेके, परन्तु जेलसिमियमकी जीभ लेकेसिसकी तरह सूखी

नहीं रहती। डा० नैश कहते हैं—"जीभका काँपना बहुत सुस्तीका लक्षण है ; रोगकी पहली अवस्थामें ऐसा होनेपर—जेलसिमियम ; अन्तिम भागमें—लेकेसिस)।" जीभ बाहर निकालनेपर काँपा करती है (हायो, लैके,, मर्क, सिकेलि, काँपती हुई जीभ—आर्स. जेल्स, लैके, लाई, सिकेलि, बाहर निकालनेके समय काँपा करती है—लैके, स्ट्रैमो)। बदबूदार श्वास और जीभपर पीला सफेद लेप चढ़ा (आर्स, हाइड्रैस, कैलि-बाई)। जीभ—साफ़-सुथरी, पर पतला मैल चढ़ी (पर उसमें बैप्टीशियाकी तरह काली रेखा नहीं रहती)। ज्वरकी शीतावस्थामें जीभपर मोटा लेप चढ़ा रहता है। जीभ सुन्न और इतनी मोटी या फूली मालूम होती है कि रोगी स्पष्ट बोल नहीं सकता, जीभका आंशिक पक्षाघात (कास्टि, कोना, हायो)। मस्तिष्ककी जड़में रक्त अधिक सञ्चय होनेकी वजहसे जीभ और श्वासनलीकी आवरक-झिल्ली (Glottis) में आंशिक पक्षाघात हो जाता है और मतवालेकी तरह लटपटायी बोली निकलती है (कास्टि, सिकेलि); मुखकी लार पीली, मानो खून मिल जानेकी वजहसे ऐसा हुआ है। मुँहका स्वाद बहुत सड़ा जैसा और वायु बदबूदार निकलता है (कार्बो-वेज, मर्क)। मुख-विवर लसदार—इसके साथ ही प्यास और भूख न रहना। दोनों ओंठ सूखे और काले श्लेष्मासे ढँके।

गलेके भीतर।—गलेके भीतर ऐसा मालूम होता है मानो वायुसे भरा हुआ है (सिलिका); जिह्वामूलकी दोनों ग्रन्थियाँ (Tonsils) में प्रदाह हो जाता है और वे फूल जाती हैं, अधिककर दाहिनी ओरकी गाँठपर ही रोगका विशेष हमला होता है या प्रदाह दाहिनी ओरसे आरम्भ हो जाता है (लाई, दाईं ओरसे आरम्भ होता—लैके ; पार्श्व बदला करता है—लैक-कैन)। गलेमें सूखापन (लैके, मर्क-सल्फ, नक्स-मस, फास, स्टिक्टा) और जलन (कैप्स, कास्टि, मेजेर, आर्स, कैन्थ, लैके, रेनान)। ऐसा मालूम होता है मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है (ग्रैफ, हिप, इग्ने, लैके, मर्क, नेट्रम-म्यूर, नक्स), निगलनेकी चेष्टा करनेपर वह अपनी जगहसे हटता नहीं है। कोई पदार्थ सहज ही निगलनेके समय कानमें तेज़ दर्द मालूम होता है—मैङ्ग, हिप, नक्स)। कोई चीज़ सहज ही निगल नहीं सकता, निगलनेमें सहायता करनेवाली पेशियोंका पक्षाघात, ऐसा मालम होता है कि कण्ठसे नासारन्ध्रके भीतरतक बहुत गर्म पानी प्रवेश कर रहा है।

पाकस्थली ।—प्यास—केवल पसीना निकलनेके समय। भूख भरपूर, परन्तु थोड़ा भी भोजन करनेपर तृप्ति हो जाती है। खट्टी डकार (कार्बो-वेज, सिङ्को, इग्ने, सल्फ, नक्स, फास)। मिचलीके साथ माथेमें दर्द और सरमें चक्कर आना (सरमें दर्दके साथ मिचली—ऐण्टि-क्रूड, कास्टि, काक्यु, इपिक, सैङ्ग्वि ; सरमें चक्करके साथ मिचली—कैलेड, काक्यु, कैलि-बाई, पल्स)। पाकस्थली भरी और भारी मालम होती है। कपड़े आदिके दबावसे बढ़ जाती है (ऐमोन-कार्ब, कार्बो-वेज, ब्राई, लैके)। पाकस्थली खाली मालूम होती है (सिपा, गैम्बो, इग्ने, फास, जिङ्क ; भोजनके बाद—लाई, सैङ्ग्वि, सार्सा ; भोजनके बाद पाकाशय एकदम भरा मालूम होता है—चायना, लाई, नक्स, ब्राई, पल्स)।

अन्त्राशय ।—एकाएक उदरके ऊपरी प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी चिल्ला उठता है और इसके बाद ऐसा मालूम होता है कि पेट चपक गया है। उदरकी आवरक झिल्लीमें (In peritoneum) बहुत दर्द मालम होता है (एपिस, ब्राई)। दाहिने कोखमें इतना दर्द रहता है कि हाथ नहीं लगाया जाता। उदरमें हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ शब्द होता है और ऊपर तथा नीचे—दोनों ही पथोंसे वायु निकलता है। नियमित समयका अन्तर देकर अन्त्रशूल होता है और सन्ध्याके समय पीला दस्त होता है।

मलान्त्र और मल ।—सविराम ज्वरके साथ उदरामय (सिना, रास)। एकाएक शोक, डर या दुःसम्वादके कारण पतले दस्त आने लगते हैं। बहुत मल भी सहजमें ही नहीं निकलता, मानो मलद्वारावरोधक पेशीके संकोचनकी वजहसे गड़बड़ी पैदा हो रही है (हिप, ऐनाक, कार्बो-वेज, चायना, डायाडेमा, नक्स-मस, रोडो)। मलद्वारावरोधक पेशीका पक्षाघात (बेल, हायो) और मलद्वार बाहर निकल पड़ता है (कैल्के, पोडो, रियुटा, इग्ने, थिरिड)। मल पीला और पतला और पित्तमय ; कभी जमा हुआ दूधकी तरह या कीचकी तरह या कभी-कभी हरा आमरक्त रोग, खून मिला और लसदार मल।

पेशाब ।—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होने बाद सर-दर्दका आराम होना (कैलमिया, लेक-डिफ्लोरेटम)। मूत्रस्थलीके द्वारावरोधिनी-पेशीके पक्षाघातके कारण अनजानमें पेशाब होता है, विशेषकर स्नायु-प्रधान

बच्चोंका (आर्स, कास्टि, रास, डालका, नक्स-वोम)। मूत्रस्थलीके संकोचनकी वजहसे वृथा वेग। स्त्रियोंकी मूत्रस्थलीका मुँह खुजलाता है इसीलिये बार-बार पेशाब होता है। मूत्रकृच्छ्रता ; अनजानमें पेशाब हो जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय ।—इन्द्रिय आदि उत्ताप रहित और शिथिल (डायस्को, आइरिस, स्टैफ), शिश्नकी शिथिल अवस्थामें और पाखाना होनेके समय अनजानमें वीर्य निकल जाना या शुक्रक्षरण (Spermatorrhea—डिजिटेलिन, डायस्को, कोबाल्ट, नेट-कार्ब, ओपि) ; सामान्य उत्तेजनासे ही वीर्यपात हो जाता है (सार्सा, कोना)। प्रमेह, प्रथमावस्था—स्राव थोड़ा और त्वचाको क्षय करनेवाला, यन्त्रणा बहुत थोड़ी, परन्तु उत्ताप बहुत। मूत्रनालीके मुखपर जलन, गौण (Secondary) प्रमेह अर्थात् एक बार अदृश्य होनेके बाद फिरसे पैदा होनेवाला प्रमेह।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—बाधक (Dysmenorrhœa), पहले सरमें दर्द, वमन, मस्तकमें खून अधिक सञ्चय होना, चेहरा गहरा लाल, इसके साथ ही आँतोंका नीचेकी ओर खोंचन ; ऐसा मालूम होता है मानो जरायु एक कड़े बन्धनसे कसकर बँधा हुआ है ; प्रसवके दर्दकी तरह तेज़ दर्द—यह दर्द कमर और पुट्ठे तक फैल जाता है। प्रसव-वेदना—जरायु-द्वारका न फैलना (Rigidity) या लचीलापन न रहनेकी वजहसे दर्द बहुत देरतक स्थायी रहता है (ऐको, कोलोफिड, ऐक्टि) या सामनेकी ओरसे पीठकी ओर दर्द फैल जाता है और ऐसा मालूम होनेके साथ प्रसवका दर्द होता है कि जरायु ऊपरकी ओर उठ रहा है। यह दर्द बहुत देरतक स्थायी रहता है ; दर्द जरायु छोड़कर चारों ओर फैल जाता है। प्रदर—स्राव सफ़ेद रङ्गका और रह-रहकर होता है और एक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें वेगसे स्राव होता है, इसके साथ ही कमरमें दर्द। डर जानेकी वजहसे अकालमें प्रसवके समान दर्द पैदा हो जाता है, जरायुमें प्रचण्ड दर्द होता है। सरमें दर्द होता है ; नींद आती है, एक चीज़ दो दिखाई देती है। धुँधला देखता है, शरीर ढलमलाया करता है। गलेकी दोनों धमनियोंमें टपक होती है और नाड़ीकी गति सूक्ष्म और धीर होती है। जरायुसे स्राव—लगातार खूनका स्राव हुआ करता है, पर किसी तरहका दर्द नहीं होता ; क्विनाइनके कारण सविराम ज्वर बन्द होनेपर ही ऐसा होता है। जरायु बहुत भारी मालूम होता है (नक्स-वोम, पूर्णता मालूम होती है—चाय १.)। रजोरोधकी वजहसे धनुष्टंकार

(काक्यु, नक्स-मस—अधकपारीके साथ—पल्स)। अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्तिके कारण बीमारियाँ (केलि-फास)।

श्वास-यंत्र।—श्वासनलीकी द्वारावरोधक झिल्ली या जिह्वा-मूलके सुन्न हो जानेकी वजहसे निगलनेमें तकलीफ़ होती है। श्वासनाली-द्वारकी रोकनेवाली झिल्लीके सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे भयानक श्वास-रोध होनेकी सम्भावना हो जाती है और कण्ठमें कों-कों शब्द होता है तथा बहुत ज्यादा पसीना होकर चेहरा तमतमा उठता है (सेम्बियु, ब्रोम, इपिक, लैके, डा० एम० ए० कास्टिस कहते हैं कि आक्रमणावस्थामें पर्यायक्रमसे स्वरनालीके ऊपर ठण्डा और गर्म प्रयोग करना चाहिये ; मस्कस, क्लोरोफार्म या ऐमिल-नाइट्राइट सुँघाना चाहिये और शरीरका नीलापन यदि बढ़ जाये तो अम्लजान वाष्प (Oxygen gas) का प्रयोग करना चाहिये। गलेमें रुखड़ापन और क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठ-नालीमें जखम हो गया है। वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis), वक्षमें दर्द, पतली सर्दी और सूखी खाँसी (बेल, इयुफ्रे, कास्टि, इग्ने, नैट-कार्ब, रास)। हृत्पिण्डकी गति अनियमित ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो यदि वह इधर-उधर घूमेगा तो उसका हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा (शरीर हिलाते ही हृत्पिण्ड स्थिर हो जायगा ऐसा भय—कोकेइन, डिजि)। बैठे-बैठे उठनेपर हृत्पिण्डमें दर्द होता है, हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है (ब्राई, कैलि-कार्ब, स्पाई)। छातीका निचला भाग मानो जकड़ गया है ऐसा मालूम होता है (कैक्ट, पल्स, वेरेट)।

गर्दन और पीठ।—गर्भावस्थामें गलेके बगलवाली दोनों धमनियाँ (Carotids) में टपक-सी होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेका दाहिना पार्श्व जकड़ गया है—कभी-कभी गर्दन दाहिनी ओर टेढ़ी हो जाती है, और उसके साथ ही मस्तिष्क मेरुमज्जाका प्रदाह पैदा हो जाता है। ग्रीवामें पैशिक शूलकी तरह दर्द होता है, विशेषकर वक्षोस्थि (Sternum) से कण्ठास्थि और कण्ठास्थिसे सरके नीचेवाले भागतक फैली हुई पेशीके (Sternocleido mastoideus) ऊपरी अंशमें और कर्ण-ग्रन्थि (Parotids) के पीछे बहुत दर्द मालूम होता है। मेरुदण्डसे मस्तक और कन्धेमें दर्द होता है। मेरुदण्डके भीतर ज्यादा खून इकट्ठा हो जाना ; सुस्ती या

आलस्य ; पेशियोंमें दर्द मालूम होता है और वे अपनी इच्छाके अनुसार कार्य नहीं करतीं ; कमर तथा उसके ऊपरी प्रदेशमें धीमा-धीमा दर्द होता है। टहल नहीं सकता, क्योंकि रोगीकी पेशियाँ सब उसके मन मुताबिक काम नहीं करतीं। समस्त पेशीमण्डल शिथिल और सुस्त हो जाता है। गति-विधायक स्नायुमण्डलका पूरा-पूरा पक्षाघात।

प्रत्यङ्ग आदि।—पेशियोंमें परस्परताका (सामंजस्यका) अभाव अर्थात् जिस पेशीके बाद जिस पेशीका काम होनेपर, अङ्ग-प्रत्यङ्ग संचालित होते हैं उनका अभाव, पेशियाँ सब रोगीकी इच्छाके अनुसार काम नहीं करतीं (कुरारी देखिये)। जीभ, बाँह, पैर, यहाँतक कि समूची देहतक सुस्त और काँपनेवाली (कुरारी, इग्ने, ऐसिट-टार्ट, मर्क-सोल, ऐकि, ऐगार, थाइरायड)। कशेरुका मज्जाका क्षय या अंग-प्रत्यङ्ग आदिमें संचालन शक्तिका न रहना (Locomotor Ataxia—सिकेल, फास, ऐसिड-पिक, आर्जेण्ट-नाइ, ऐल्यु, इग्ने)। कटि-स्नायुशूल (Sciatica)—वेदना बढ़ना, घटनेके समय और पहली बार हिलने-डोलनेके समय ; दर्द जलन पैदा करनेवाला, रातमें बढ़ता है और नींदमें गड़बड़ी पैदा हो जाती है, किरानियोंका अंगग्रह या हाथ अकड़ जाता है, लिखनेकी चेष्टा करनेपर बाँहके अगले भागमें ऐंठन पैदा हो जाती है। दाहिनी कलाईमें ऐसा मालूम होता है, मानो मोच खा गयी है। बाँह ऊँचा करनेपर काँपता है। चलनेके समय ढलमलाया करता है (ऐगार, कास्टि, आयोड, केनाब-सेट, नैट-म्यूर, ऐसिड-फास, रियुटा, स्ट्रैमो, सल्फ, टियुक्रि)। थोड़ा भी परिश्रम करनेपर थकावट आ जाती है। ऊरुमें अस्त्रकी चोटकी तरह भयङ्कर दर्द होता है। दोनों पैरोंकी पेशियोंके गंभीर प्रदेशमें दर्द मालूम होता है, हिलने-डोलनेपर घटता है। ऊरु-देशमें ऐसा दर्द मालम होता है, मानो फोड़ा हो गया है ; पसीनेके समय सब तकलीफें घट जाती हैं। सवेरे भोजनके समय एकाएक जानु-फलक (Kneepan or patella) स्थान भ्रष्ट हो पड़ता है। जंघाडिम्बास्थिकी—परकी पोटली (Calves) में दर्द और रातमें ऊरुमें दर्द मालूम हाता है। रातमें हड्डी और सन्धियोंमें स्थान बदलनेवाला दर्द।

शीत, उत्ताप और पसीना।—नाड़ीकी गति धीर, शरीर हिलाते ही गति बढ़ जाती है (केवल सन्ध्याके समय नाड़ीकी गति बढ़ती है—कास्टि, सवेरे तेज़ और संध्याके समय धीर गति—आर्स)। रोज़ तीसरे पहर ४ से ५

बजेके भीतर शीत या कम्प आरम्भ होता है। कमर, हाथ-पैरोंमें आलस्यजनक दर्द और सुस्ती मालूम होती है; रोगी अपना बहुत अधिक काँपना दूर करनेके लिये सेवा करनेवालोंसे दबा रखनेको कहता है (लैके); शीत पीठमें एक बार ऊपरसे नीचे फिर नीचेसे ऊपर दौड़ जाता है; हाथ-पैर ठण्डे। पैरका तलवा इतना ठण्डा रहता है, मानो पानीमें डुबाया हुआ था (मानो पैरमें भींजा हुआ मोजा था—कैल्के)। स्नायविक शीत अर्थात् शरीर खब गर्म होनेपर भी भीतर बहुत शीत मालूम होता है और दाँत-पर-दाँत लगनेसे वे कटकटाने लगते हैं। माथा और चेहरा बहुत गर्म हो जाता है। बहुत ज्यादा पसीना होता है और तब सब तकलीफें घट जाती हैं (आर्स, कैलेड, इस्क्यु, साइलिक्स, इलैट, नैट-म्यूर, सोरिन, सैब्बि, सिकेलि; पसीना होनेपर तकलीफ़ बढ़ती है—फेर, इपिक, मैक्यु, ओपि); उत्तापावस्थामें रोगी सो जाया करता है; केवल पसीनेवाली अवस्थामें प्यास रहती है; अर्द्ध-जाग्रत अवस्थामें बुदबुदाया करता है। शीत, उत्ताप और पसीना, सभी अवस्थाओंमें शरीरपर कपड़ा रखना चाहता है ("ऐसा मालूम होना मानो गिर जायगा"—यह बच्चोंके बोखारका जेलसिमियमका एक प्रधान लक्षण है)। जब सविराम-ज्वर अविराममें परिणत होता है या अविराम ज्वर सविराममें बदल जाता है, सभी बोखारोंका आंत्रिक ज्वर या सान्निपातिक ज्वरमें परिणत होनेका लक्षण। क्विनिन द्वारा रुका हुआ सविराम ज्वरका दूसरा आकार धारण कर लेना (Masked Intermittents)।

वृद्धि।—अधिकांश लक्षण शरीर हिलानेपर; धूप या गर्मीका उत्ताप; ठण्डी जलीय वायुमें; कुहरे-भरे दिनोंमें; अन्धड़ पानी मिले जलवायुके आरम्भमें; मानसिक आवेशकी वजहसे; बुरी खबरसे; धूम्रपानसे; अपनी बीमारीके विषयमें सोचनेपर (बैराइ, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोनि, मिडोरिन, ऐसिड-आक्सैल, पेट्रोल; घटता है—कैम्फो-हेलिबो); अपने आदमियोंके विरहकी बात कह देनेपर।

घटना।—शरीर सञ्चालनसे (दर्द आदि); गर्म-प्रयोगसे; निर्मल ठण्डी हवा सेवन करनेपर; उत्तेजक दवाओंके सेवनसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—बैप्टीशिया (सविराम या अविराम ज्वरके आंत्रिक ज्वरमें परिणत हो जानेकी आशंका होनेपर; इपिकाक, क्विनिन द्वारा एकाएक गायब हो जानेके कारण सविराम ज्वरका दूसरा आकार

धारण कर लेनेपर); बेल, कोलोफिल ; प्रसवके दर्दके समय जरायुका न फैलना—कड़ापन rigidity of os—कुरारी (पक्षाघात) काक्यु, कोना, कास्टि, आर्जेण्ट-नाई, बोरैक्स (गिरनेका भय) ; आर्स, लैके, लाई, सिकेलि (जीभका काँपना) ; सिफिलिन (प्रदर) ; वेरेट्रम (सरमें चक्कर) ।

दोषघ्न या प्रतिविष ।—ऐट्रोप, सिङ्को, काफि, डिजि, नक्स-मस ।

शक्ति ।—मूल अर्क १म दशमिक और ३० से १००० शततमिक शक्ति-तक । बच्चोंके अविराम ज्वरमें एक स्थानपर ऐसा देखा गया है कि ३० शततमिक पर्यन्त प्रयोग करनेसे दो-तीन सप्ताहतक बोखार नहीं आता । इस अवस्थामें २०० क्रमकी एक मात्राका प्रयोग करनेपर २४ घण्टेमें वही ज्वर आ गया है । (डा० केण्ट और एच० सी० ऐलेन वगैरह चिकित्सकगणोंने साधारणत: हज़ार आदि क्रम व्यवहार कर आश्चर्य-जनक लाभ दिखाया है ।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिन ।

जेनिस्टा

(GENISTA)

दूसरा नाम ।—जेनिस्टा टिङ्कटोरिया ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मस्तिष्क और कानमें इधर-उधर तेज़ दर्द ; सर-दर्द और माथेमें चक्कर आना ; हिलने-डोलनेसे बढ़ना और खा लेने तथा खुली हवामें घटना इसका निर्देशक लक्षण है ।

एकाएक पाखाना लगना और होना, हाथ-पैर और घुटनेमें खुजलानेवाले उद्भेद और शोथके लक्षणमें इससे फायदा होनेकी आशा की जाती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—साइक्युटा-विरोजा, नेट्रम-सल्फ, बेराइटा-कार्ब, रास ।

शक्ति ।—३x—३० ।

जेण्टियाना क्रूसियेटा

(GENTIANA CRUCIATA)

दूसरा नाम।—जेनसियाना माइनोरा (Gentiana Minora)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़से मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः— अतिसार; अजीर्ण; निगलनेमें तकलीफ़; आँत उतरना; स्वरभङ्ग; गर्दनका कड़ापन; गलेका जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—वायुनली और पाकाशय आदिके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया प्रकट हुआ करती है। गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित हुआ करता है, निगलनेमें तकलीफ़; दाहिनी ओरकी आँत उतरना (Right Inguinal Hernia); शरीरकी त्वचापर कोड़े रेंगनेकी तरह और पाकाशय तथा अन्त्राशयमें कोई जीव चलनेकी तरह मालूम होना इत्यादि कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—रोना स्वभाव (ऐकोी, सिक्लेम, इग्ने, लैक-कैन, नैट-मूर, पैलेड, पल्स, सिपि, स्टैन); बोलनेकी इच्छा न होना (ऐमोन-मूर, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-फास, मैंङ्ग, ऐसेट, आक्साई-ड्राप, फास, स्टैन)। पढ़नेके समय अक्षर सब धुँधले दिखाई देते हैं, मानो पतले कपड़ेसे ढँके हों (पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है मानो सब अक्षर घूम-फिर रहे हैं, कभी ऊपर कभी नीचे जाते हैं और अन्तमें अदृश्य हो जाते हैं—साइक्लूर; कुछ देर पढ़ने बाद ऐसा मालूम होता है मानो अक्षर सब धुआँ भरे हो गये—काक्यु; पढ़ते-पढ़ते मालूम होता है मानो अक्षर सब आपसमें मिलकर अस्पष्ट हो गये—ब्राई, डेफनो, जिन्सेङ्ग, लाई, नैट-मूर, साइलि, स्ट्रैम)।

मुँहके भीतर।—गलेके भीतर कुछ लाली और उसमें सङ्कोचनकी वजहसे कोई चीज़ निगलना बहुत कष्टकर (ऐल्यू, बेल, किनिन-सल्फ, क्रोटोन, इग्ने, कैल्के-कास्टि, एसिड-फ्लु, फेरम-ऐसेट)। गलेके भीतरसे बार-बार

गाढ़ा लेईकी तरह श्लेष्मा खाँसकर निकालना पड़ता है (कैलि-बाई, हाइड्रेस्ट, ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई (सवेरे); नेट-कार्ब, लैके (दिनकी नींदके बाद)।

पाकाशय।—भूख बढ़ना या भूख न रहना (जेण्टि-लूटि); खट्टी डकार (ऐल्यू, ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, सिङ्कोम, जिनसेङ्ग, नक्स-वोम, पेट्रोल, फास, ऐसिड-सल्फ, बोरिन); बहुत मिचलीके साथ सोनेकी इच्छा (कोना, नेट्र-सल्फ, प्लैट, सल्फ; बाध्य होकर सो जाना पड़ता है—आर्स, ऐसेट, काक्यु, मस्कस, ऐसिड-फास); पानीकी तरह वमन (आर्स, कैम्फो, कास्टि, क्यूप्रम; क्रियो, स्टैन, ऐसिड-सल्फ, टैबैक)। बड़े कष्टसे थोड़ा खट्टा और बहुत तीता स्वादका श्लेष्मा वमन होने बाद, गलेमें रुखड़ापन और खाल उधड़ जानेकी तरह मालूम होता है—मानो गला फट गया है। पहले पाकस्थलीमें और इसके बाद उदरमें ऐसा मालूम होता है कि कुछ हिल रहा है (कैल्के-फास, क्रोकस, एरण्डो-मेरि, कुरारि, सिङ्कोम, कानवैले, थूजा, सैबाई); चलनेपर यह अनुभूति दूर हो जाती है। पाकाशयमें कोई ऐसा भारी चीज़ मालूम होती है, जो पत्थरकी तरह पड़ी है (ऐको, एबियेज-नाई, आर्नि, आर्स, ब्राई, कैमो, पल्स, सिपि, स्पाई)। पाकाशय और अन्ननालीमें मालूम होता है, मानो बहुत गर्म चीज़ खाकर ठण्डा पानी पी लिया है; भोजनके बाद इस भावका बढ़ जाना और निर्मल पानी पीनेपर घटना। पाकाशयके लक्षण आदि गर्म मांसका शोरवा पीनेपर घट जाते हैं (लाई)।

अन्त्राशय।—नाभि-स्थलमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो ऐंठन हो रही है; मध्याह्न भोजनके बाद खड़े होनेवाली अवस्थामें, चलने और धम्रपान करनेपर (बोर, इग्ने) बढ़ना; रोगीको बाध्य होकर सामनेकी ओर झुक जाना पड़ता है (सल्फ); बैठने और सोनेपर घटता है (बाईं करवट सोनेपर घटना—नेट-सल्फ)। दाहिने पुट्ठे (Right Inguina) में ऐसा मालम होता है, मानो नीचेकी ओर धक्का दे रहा है और मानो आँतें आदि छेदकी राहसे नीचेकी ओर जा रही हैं (इस्कु-हिप, प्र नस-स्पाई, लाई, काक्यु, बैठने या सोनेपर घटता है; जोरकी छींक आनेपर पुट्ठेके पासके छिद्रकी राहसे आँतें आदि बाहर निकल पड़ती हैं और इस स्थानपर इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता।

मल।—हमेशा वेगके साथ पानीकी तरह मल।

वृद्धि ।—भोजनके बाद, शरीर हिलानेपर, धूम्रपानसे और खड़े होनेपर ।

घटना ।—मांसका गर्म शोरबा पीनेपर, बैठने और सोनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐल्यूमिना, लैक-कैन, एबिज-नाई, ब्राई, जेण्टियाना-लूटिया, प्रनस-स्पाई, लाई (गर्म पानी पीनेपर घटना), काक्यु, साइक्लाम, कैलि-बाई (गलेमें लसदार श्लेष्मा), हाइड्रैस्ट ।

शक्ति ।—१म दशमिकसे तृतीय दशमिक क्रम ।

जेण्टियाना लूटिया

(GENTIANA LUTEA)

दूसरा नाम ।—जेण्टियाना मैजोरा (Gentiana Majora) ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—भूख न लगना ; पैत्तिक लक्षण ; शूल ; कमजोरी ; अतिसार ; अजीर्ण ; ज्वर ; क्षुद्र-सन्धिवात ; सर-दर्द ; पाकस्थलीका विकार ; गलेमें सङ्कोचन इत्यादिमें लाभदायक है ।

उपयोगिता और आभास ।—परिपाक-यन्त्रपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है । खट्टी डकार, राक्षसी भूख, मिचली, पाकस्थलीमें भार मालूम होना और परिपाक और अन्त्राशयका फूल उठना तथा कड़ापन, पीले मलके साथ उदरामय वगैरह कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं । "पूर्ण स्वस्थ रहनेपर भी मन्दाग्नि" ऐसी अवस्थामें दोनों समय भोजनके पहले सेवन करनेपर भूख अच्छी तरह बढ़ जाया करती है । इसके अलावा वात-मिला दर्द, सुस्ती, अस्वाच्छन्द्य और आलस्य मालूम होनेके साथ विषन्न चित्त, ज्वरयुक्त अवस्था इत्यादि भी इसके क्रियाफल हैं ।

लक्षणावली

मस्तक ।—लिखनेके समय मस्तिष्ककी जड़ता और धुँधलापन या दबाव और कसावटका भाव । प्रभेदका ज्ञान न रहना (Confusion—ऐकी,

आर्जेण्ट-नाई, बेल, नक्स, ओपि, साइक्लूर) और माथेमें और गालमें गर्मी मालूम होना (ऐको, ऐम्ब्रा, बेल, कैन्थ, हायो, लोरो, सिपि, सल्फ)। मस्तिष्कका धुँधलापन —शराब आदि पीनेपर जैसा हो जाता है (ऐको, ऐथामिन, बेल, आर्जेण्ट-नाई, फेलैन, साइक्लूर, नक्स, ओपि, पल्स)। माथेके भीतर शून्यता मालूम होना (काक्यु, कूप्रम, ग्रैनेट, पल्सेटिला) और ललाटके भीतरसे बाहरकी ओर दबाव मालूम होता है। ऐसा भ्रम होता है मानो माथा बड़ा हो गया है (ऐपियोल, आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, कास्टि, साइमिक्स, ऐसिड-फ्लु)। आँख खोलकर देखनेपर सर-दर्द बढ़ जाता है (ब्राई, चायना)।

आँख ।—आँखके गोलेमें दबाव मालूम होना। आँख लाल (कैलि-बाई, हिमैटक्स, मर्क, मिफाइट, नक्स, सल्फ)। कभी-कभी कुछ देरतक सब अंधेरा दिखाई देता है (आर्जेण्ट-नाई, ऐसेर, कैम्फर, ग्रैनेट, लैक्टो, ओलियेन, ओपि) और सामनेकी चीजें भी स्पष्ट नहीं दिखाई देतीं, यहाँतक कि जिसके साथ बोलता है, कुछ देरतक वह भी दिखाई नहीं देता।

मुख-विवर ।—मुँह और कण्ठ सूखा ; लार बहुत गाढ़ी (बेल, बिस्मथ, एपिफिगस, नक्स-मस)। कण्ठनलीके गात्रमें सटा हुआ श्लेष्मा बार-बार खाँसकर निकाल देनेकी चेष्टा करता है। गलेमें रूखड़ापन (ऐमोन-कार्ब, आर्स, ऐल्यू, युफ्रे, गैम्बो, हायो, कैलि-बाई, लेमियम, पोडो) और खाल उधड़नेकी तरह मालूम होना (ऐल्यू, कैस्टोर, फाइटो), मुँहमें मिट्टी-जैसा स्वाद मालूम होता है (ऐलो, किनिन-सल्फ, हिप, नक्स-मस, पल्स, स्ट्रान)।

पाकस्थली ।—पेट गड़गड़ाता है और डकार आती है, हिचकी आती है और खट्टी डकार आती है। जी मिचलाता है ; कै होनेका उपक्रम होता है ; डकार ; मिचलीकी वजहसे कै होनेकी सम्भावना और आँखमें पानी भर आता है। पाकाशय शून्य मालूम होता है (फास, जिङ्क, सैङ्गियु, सार्सा)। सन्ध्याके समय भयङ्कर भूख (ऐसिड-फ्लुओ) पैदा हो जाती है ; अरुचि। मानसिक अस्थिरता, जी मिचलाता है, कै होती है और पाकस्थलीमें दर्द और भारकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है, ऊपर और निचले पेटमें वायु जमकर फूल उठता है और कड़ा हो जाता है।

अन्त्राशय ।—नाभिके स्थानमें इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता और ऐसा मालूम होता है कि जोरसे दबा रखा है और

नाभि भीतरकी ओर खिंच रही है (प्लम्ब); तेजीसे चलनेपर तलपेटमें दर्द होता है और मलद्वारमें दबाव मालूम होता है। श्वासकष्ट और तलपेटका न फैलना; सन्ध्याके समय बढ़ता है। ऊर्द्ध और अधोमुखसे लगातार वायु निकला करता है, पर उससे आराम नहीं मालूम होता है।

मलान्त्र और मल।—कूथन और आँतें आदि सभी मलद्वारकी ओर धक्का दे रही हैं, ऐसा मालूम होता है। तीसरे पहर पित्तमय दस्त। मल कोमल और पीला, पाखाना होनेके पहले शूलकी तरह दर्द; पाखाना होनेपर यह दर्द इतना बढ़ जाता है कि रोगी सामनेकी ओर झुककर दोहरा जाता है (कोलो, कूप्रम)। एकाएक दर्द होनेपर बहुत कुछ पसीना निकलता है और शय्यासे उठते ही पतले दस्त आते हैं।

निद्रा।—बार-बार जम्हाई आती है। औंघाई आनेपर भी नींद नहीं आती, अन्त्रशूलकी वजहसे रोगी सो नहीं सकता और दर्दकी वजहसे वह करवट बदला करता है—रातके दो बजेतक स्थिर नहीं रह सकता।

वृद्धि।—शरीर हिलानेपर, भोजनके बाद, तीसरे पहर।

सम्बन्ध।—सदृश।—जेण्टियाना-क्र, हाइड्रैस्ट, बिस्मथ, नक्स-वोम, ऐल्यू।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम (स्वस्थ देहमें क्षुधावर्द्धक रूपमें सेवन करनेपर ३रा दशमिक क्रम भोजनके आध घण्टा पहले सेवन करना चाहिये)।

जेण्टियाना क्विनक्विफोलिया

(GFNTIANA QUINQUIFOLIA)

दूसरा नाम।—गाल आव दी अर्थ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूले हुए उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—पुराना सविराम ज्वर, अग्निमान्द्य, बच्चोंका हैजा और कमजोरीमें इसका मूल अर्क या निम्न-शक्ति कई बून्दकी मात्रामें व्यवहार करनेपर कभी-कभी हुआ करता है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

गेटिस्बर्ग

(GETTISBURG)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—गेटिस-बर्ग प्रपातके पानीसे तैयार किये हुए नमकसे विचूर्णके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—साइलिसियाके साथ बहुतसे लक्षणोंमें इसका सादृश्य है। मेरुदण्ड या वस्ति-देशकी अस्थिका क्षय या भङ्गुरता, सन्धि-समूहमें जखम और इस जखमसे जलन करनेवाला पीब स्राव, लक्षणमें गण्डमाला धातुवाले बच्चोंकी बीमारीकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जिरेनियम मैकुलेटम

(GERANIUM MACULATUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़का टिंचर और विचूर्ण तैयार होता है। समूचे पौधेका काढ़ा तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— अतिसार; दो देखना; रक्तामाशय; रक्तस्राव; श्वेत-प्रदर; मलत्यागकी वृथा चेष्टा; गलेमें जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नाक, पाकस्थली, फेफड़ा वगैरहसे खूनका स्राव इसका प्रधान क्रियाफल है। सर-दर्द, पाकस्थलीमें जखम पैदा हो जाना। खूनकी कै वगैरहमें इससे विशेष लाभ हुआ करता है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आनेके साथ दो देखना (जेल्स), आँख बन्दकर सोनेपर आराम मालूम होता है। आँख बन्दकर चल सकता है (आँख बन्दकर एक क़दम भी नहीं चल सकता—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई)।

मुँहके भीतर।—जीभका अगला भाग सूखा और उसमें जलन होती है (आर्जेण्ट-नाई, कार्बो-वेज, नेट-मूर)।

पाकस्थली।—रक्तकी कै होती है (हैमा, इपिक, आर्निं)। पाकस्थलीमें जखम पैदा कर देता है (आर्जेण्ट-नाई, आर्स, कैलि-बाई)।

मलान्त्र और मल।—बार-बार पाखानेका वेग होता है, पर कुछ देरतक मल बिलकुल ही नहीं निकलता; कुछ देर बाद अनायास ही मल निकल जाता है। पुराना उदरामय—बदबूदार आँव निकलती है। बच्चोंका उदरामय।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ज्यादा ऋतु-स्राव। प्रसवके बाद रक्तका स्राव (कैनाब-सैट, सिकेलि, ट्रिल-पैण्डियु)। स्तनवृन्तमें जखम (इयुपैट-ऐरोमैट)।

फेफड़ा।—फेफड़ेसे खूनका स्राव (ऐकालिफा, फेरम-फास, मिलिफोल)।

सम्बन्ध।—सदृश।—हैमामिलिस, मिलिफो, ट्रीलियम-पैण्डियु, हिमैटाक्स (इरोडियम-साइकूटेरियम—जरायुसे स्राव और बहुत ज्यादा ऋतु-स्रावकी एक बहुत बढ़िया दवा है; रूसमें इसीलिये इसका बहुत आदर है। जरायुके अर्बुद रोगमें भी इसका व्यवहार हुआ करता है); हाइड्रैस्टिनिनम, कैलि-बाई, आर्जेण्ट-नाई।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक (पाकस्थलीके जखमवाले रोगमें मदर टिंचर आधा ड्राम प्रयोग करना चाहिये। डा० विलियम बोरिक)।

जियम राइवेल

(GIUM RIVALE)

दूसरा नाम।—वाटर एडेन्स।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल खिले हुए उद्भिदसे अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—एकाएक उदरसे तेज़ जलन आरम्भ होकर मूत्रद्वारतक फैल जाती है, भोजनसे बढ़ना, बिजलीके प्रवाहकी तरह दर्द और एकके बाद दूसरी बार—इस तरह लगातार दो बार दर्द होनेके लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जिनसेङ्ग

(GINSENG)

दूसरा नाम ।—ऐरेलिया क्विनक्विफोलिया (Aralia Quinquefolia)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—कमजोरी; सर-दर्द; कटिवात; पैरका झुनझुनीवाला वात; इन्द्रियकी उत्तेजना; ऐपेण्डिसाइटिस या उपाङ्ग-प्रदाह ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान क्रिया-क्षेत्र मेरु-मज्जाका निचला अंश है। आगे लिखे कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं:—शय्यासे उठनेके समय कमर और उरुदेशमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो चोट लग गयी है। शरीरकी शिथिलता; निम्नाङ्गमें वाताश्रित और सुन्न पैदा कर देनेवाला दर्द; वातके कारण निचला पैर फूलता है और पैरके अंगूठेमें बेहद दर्द होता है। दाहिने पुट्ठेकी जगहसे लेकर दाहिने पैरके अंगूठेतक रोज़ रातमें बेधने और अकड़नेकी तरह दर्द होता है। गुल्फ-सन्धिमें छेदनेकी तरह तेज़ दर्द। इसके अलावा बार-बार पेशाब होनेके साथ कमरमें वात, गृध्रसी या कटि-स्नायु-शूल और पुरानी वात-व्याधि वगैरहका लक्षण मिलनेपर बहुतोंके मतसे यह एक अव्यर्थ दवा है। एक ओर जिस तरह इससे शरीरमें फुर्ती, बल और तेजीसे चलनेकी शक्ति आती है, दूसरी ओर उसी तरह गड़बड़ी मालूम होना, बार-बार जम्हाई आना, सरमें दर्दके साथ नींद आना, कभी बहुत उत्ताप, कभी बहुत जाड़ा, शरीरमें ठण्डी हवा लगानेकी

बहुत इच्छा और तलपेटमें दाहिनी ओरसे बाएँ पुट्ठे तक दर्द हुआ करता है। दाहिने अङ्गपर ही इसकी विशेष क्रिया होती है। बैठे रहनेकी अवस्थामें रोगीको ऐसा मालूम होता है, "मानो पीछेकी ओर गिर जायगा।" यही लक्षण इसका प्रकृतिगत और सिद्धिप्रद है।

लक्षणावली

मन।—शान्त; सन्तुष्ट चित्त। दुर्घटनाकी आशङ्का (कार्बो-वेज)। सोचनेकी शक्ति (बैप, नैट्र-कार्ब)। स्मरण-शक्तिकी खर्वता (ऐनाक, बैराइ-कार्ब, लैके, कोलचि, नाम याद नहीं रहता—सिडोरिन, सल्फ)। रोना स्वभाव (ऐक्टि, एपिस, कास्टि, साइकूर, ग्रैफ, लिलियम-टाइग्रि, नैट-मूर, पल्स, सिपि)। यही सोचकर व्याकुल रहता है कि भविष्यमें न जाने क्या होगा (ऐसिड-मूर, साइकूर, फास)।

मस्तक।—चक्करदार सीढ़ीसे उतरनेपर सरमें चक्कर आ जाता है; अस्पष्ट दृष्टि और शरीर ढलमलाया करता है। खड़े होनेवाली अवस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो पैरके नीचेकी जमीन खिसकी जाती है (कैलि-ब्रोम); माथेका पिछला भाग मानो ढलमलाया करता है और दृष्टिके सामने मानो धुमैले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (काले बिन्दु दिखाई देते हैं—ग्लोन, नैट-मूर, सिपि, सिलि)। कभी-कभी ऐसा मालूम होता है, कि सर खूब बड़ा हो गया है और एक ओर झूल रहा है। बैठनेवाली अवस्थामें रोगीके अनजानमें उसका माथा पीछेकी ओर खिंच जाता है और उसे ऐसा मालूम होता है कि वह पीछेकी ओर गिर जायगा। अधकपारीका दर्द, ललाटके दाहिने पार्श्वसे अक्षि-गह्वरतक ऐसी तकलीफ़ होती है, मानो अस्त्रसे काट रहा है। पलक भारी मालूम होती है (ग्रैफ); बहुत ही ज्यादा औंघाई, इसके साथ ही माथेमें उत्ताप और कपालमें भार मालूम होना।

आँख।—दोनों आँखोंके ऊपर दबाव मालूम होना, मानो ये आँखें बाहरसे भीतरकी ओर धक्का दे रही हैं; पलक आप-से-आप गिर जाती है (कास्टि, विशेषकर दाहिनी ओरकी पलक) देखना बहुत कठिन हो जाता है (कोलो-फिल, कास्टि, जेल्स, ग्रैफ, नैट्र-मूर, जिङ्कम)। ऊपरी पलक खुजलाती है (क्रोटोन-टिग, हिप, कैलि-बाई, पेट्रोल, रास)। आँखके गोलेके ऊपरी भागमें तकलीफ़ देनेवाली ठण्डक मालूम होना। किसी चीज़की ओर नज़र

गड़ाकर देखते रहनेपर वह दो मालूम होती है, पढ़नेके समय अक्षर सब धुँधले दिखाई देते हैं (अरम, डैफ, लैके, लाई, नेट्र-म्यूर)।

मुखमण्डल।—चेहरा पर्यायक्रमसे लाल और रक्त-शून्य तथा उतरा हुआ दिखाई देता है (ऐको, ऐमिल, क्रोकस, इग्ने, लिडम, पल्स, रास)। दाहिना गाल, नासापुट और चिबुक फट जाने बाद लाल हो जाता है, इसके बाद ही इसके स्थानपर घमौरीकी तरह फुन्सियाँ निकलती हैं और वे बहुत पिटपिट करती हैं। इसके बाद घमौरीकी तरहका यह उद्भेद दादकी भाँतिके चर्मरोगमें परिणत हो जाता है और इस रोगवाले अंशसे कई दिवस बाद सूखी रूसी या छाल निकला करती है। दोनों ओंठ सूखे, लाल और फटे-फटे हो जाते हैं—बाहरी हवामें या बोलनेपर उससे खून निकला करता है (अरम-ट्रि, कैलि-कार्ब, नेट-म्यूर)। मुँहकी हड्डियाँ सब और दोनों हनु ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़ गये हैं।

मुख-विवर।—जीभ सफेद आभा लिये और एकदम सूखी तथा बड़े-बड़े चमकीले काँटोंसे भरी। भीतरी भागमें ओंठ और दाँत सब बहुत सूखे। सूखेपनकी वजहसे सहजमें ही लार निगल नहीं सकता। पानी पीनेपर सिर्फ कुछ मिनटोंके लिये मुख-विवर तर रहता है और फिर जैसा था वैसा ही हो जाता है। प्यासके साथ जीभ लाल और उसमें खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द, अन्तमें दोनों ही पार्श्व लाल हो जाते हैं और बीचमें सादी रेखा निकल आती है (ऐण्टि-टार्ट, एपिस)।

पाकस्थली।—असमयमें बहुत भूख लगना। पेटमें वायु इकट्ठा होता है और फूल उठता है, कड़ा हो जाता है, इसके बाद यह वायु निकला करता है तथा बहुत ही तकलीफ़ मालूम होती है, बार-बार जम्हाई आती है। पाकाशयमें अधिक भार मालूम होता है तथा उसपर वस्त्र आदिका दबाव सहन नहीं होता (ऐमोन-म्यूर, कार्बो-वेज, कास्टि, काफि, हिप, क्रियो, लैके, लाई, नक्स)। पाकस्थलीमें भूखसे उत्पन्न हुआ हृदयके अगले प्रदेशमें छुरी मारनेकी तरह दर्द। सम्पूर्ण पेटमें शूल जैसा दर्द मालूम होता है। पेट अकड़ जाता है और श्वासमें तकलीफ़ होने लगती है।

अन्त्राशय।—तलपेटके दाहिनी ओरसे बायीं ओरतक (लाई), शूलका दर्द ऊर्द्धमुखी होकर हृद्प्रदेशमें (Precordail region) फैल

जाता है और उदरमें वायु इकट्ठा होकर वह फूल जाता है; वायु निकलनेपर घटता है (आर्नि, सिपा, जिङ्कम-ऐफयु, कार्बो-वेज, नेट्रम-मूरर)। दाहिने कोखके पीछेकी ओर तेज़ दर्द होनेके कारण रोगीको देह तकलीफ़से मोच खाया करती है (नाइट्रम, नक्स-युग)। शूल-वेदना ऊपरी पेटतक फैल जाती है; ऊपरी भागमें दबानेपर बहुत दर्द मालूम होता है; उदरके दाहिने पार्श्वमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है (फाइटो); यह दर्द पुट्ठा और पाकस्थलीतक फैल जाता है और तलपेटमें इस तरहका दर्द होता है मानो काट रहा है; दाहिने पार्श्वके पंजरेके नीचेतक पेट फूलना—हृद्-प्रदेशमें दर्द होता है और बार-बार आराम देनेवाली डकार आती है; पेट फूला, कड़ा और दर्द-भरा (जेल्सि, जिङ्क); हवा छूटनेपर घटना। उपाङ्ग-प्रदाह (Appendicites), ऐसा दर्द मानो बड़ी और छोटी आँतके संयोगस्थलपर चोट लग गई है और दबानेपर दर्द बढ़ जाता है; जोरका कलकल गड़गड़ शब्द सुन पड़ता है (लैके, आइरिस, टेनाक्स, ऐमोनियेकम, एकिनेशिया, लैक-डिफ्लो)। अन्धान्त्र वहिरावरण-प्रदाह (Peri-typhlitis—आर्स, क्रोटेल-होरिड, आइरिस-टेन, लैकेसिस)।

मलान्त्र और मल।—मल कड़ा न होनेपर भी सहजमें नहीं निकलता (ऐनाक, डायाडेमा, हिप, नक्स-मस, रोडो); कठिन मल बड़े कष्टसे निकलता है और मलद्वारमें जलन पैदा हो जाती है। मलान्त्रमें तेज़ कूथन और शस्त्रकी चोटकी तरह दर्द।

पुं-जननेन्द्रिय।—बार-बार वीर्यपातकी वजहसे शरीरके स्थान-स्थानपर वातका दर्द (रेतस्खलनकी वजहसे कमरमें दर्द—कोबाल्ट)। रातमें लिङ्गमें कड़ापन होता है, परन्तु रेतःस्खलन नहीं होता। खूब जी लगाकर कोई काम करनेके समय तकलीफ़ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन। मूत्रनालीके अन्तिम भागमें बहुत सुखजनक सुरसुरी। अण्डकोषमें ऐसा दर्द मानो किसीने दबा रखा है।

श्वास-यंत्र।—स्वरभङ्ग और रुखड़ापन। रह-रहकर सूखी खाँसी आया करती है। श्वास-प्रश्वासमें कष्ट और उद्वेग; सामान्य परिश्रमसे भी दमाकी तरह बड़े कष्टसे श्वास-प्रश्वासकी क्रिया करता है। छाती ऐसी मालूम होती है मानो कस गई है और रोगी बार-बार लम्बी साँसें लेता है, मानो छातीमें यथेष्ट वायु नहीं घुस रही है (प्रूनस-स्पाइ)। चलनेपर घट जाता है।

हृत्पिण्ड-प्रदेशमें भयङ्कर दर्द और ऊपरी पेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो छुरी बिध रही है (कैलि-कार्ब, ऐग्नस)।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सर हिलानेपर गर्दनके पीछेकी कशेरुका कड़कड़ाती है (नेट्र-कार्ब, निकोल)। गर्दन अकड़ी-सी मालूम होती है। कमरके चारों ओर अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द—कटिवात (Lumbago)। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचवाले अंशमें अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, यह दर्द दाहिने कन्धेमें फैल जाता है और खड़े होनेपर यह दर्द मेरुदण्डके बिचले भागमें त्रिकास्थि-प्रदेश (Sacrum) तक मालूम होता है, इस दर्दकी वजहसे श्वास-प्रश्वासमें बहुत कष्ट हो जाया करता है। हाथ-पैर हिलानेपर सन्धियोंमें कड़कड़ाहट होती है (कैप्स, कार्बो-ऐन, काक्यु, पेट्रोल, रास)। हाथसे सहजमें ही चीजें गिर जाती हैं ; सभी विषयोंमें व्यस्त (एपिस, बोवि)। मुट्ठी बांधनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो हाथ फूल गया है और उसके ऊपरवाली त्वचा चरचराती है। गुल्फ-सन्धि (Ankle-joint) में मानो छुरी मारी जा रही है, ऐसा दर्द होता है। पैरका तलवा भारी मालूम होता है और बाएँ पैरकी पेशीमें बहुत खींचन होती है और पुट्ठेके पीछे बहुत दर्द मालूम होता है। उरुसे पैरके तलवेतक अकड़न मालूम होती है और उसमें कनकनी होती है। इसीलिये सहज ही चल नहीं सकता।

वृद्धि ।—निर्मल वायु लगने, बोलने, रातके समय, माथा झुकाने या घुमाने, चक्करदार सीढ़ीसे उतरने और बैठनेपर।

घटना ।—मध्याह्न भोजनके बाद।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐङ्गस, ऐरेलिया, एपिस, जेल्स, ब्राई, नक्स-मस, हेराक्लि, कोका।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रमतक।

ग्लोनोइनम

(GLONOINUM)

दूसरा नाम।—नाइट्रो ग्लिसिरिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ग्लिसरिनके साथ नाइट्रिक-एसिड और सल्फ्युरिक एसिड मिलाकर यह तैयार होता है। इसके बाद अलकोहलमें क्रम तैयार हुआ करता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है :—हृत्शूल ; स्वरभङ्ग ; संन्यास ; मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता ; मूत्रस्थलीकी बीमारी ; आक्षेप ; मृगी ; नाकसे खून गिरना ; डर जानेका दुष्परिणाम ; गलगण्ड ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी बीमारी और कम्पन ; रोगी यह निर्णय नहीं कर सकता या उसे मालूम नहीं होता कि वह किस जगहपर है ; उन्माद ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; रजोलोप ; स्नायुशूल ; पक्षाघात ; वात ; कटिवात ; पैरकी झुनझुनीवाला वात ; सर्दी लग जाने बाद सर-दर्द ; लू लगना ; दाँतका दर्द ; चोट आदिका दुष्परिणाम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—मस्तक, मस्तिष्क और हृत्पिण्डपर इसका प्रधान आक्रमण होता है। इसके द्वारा संन्यासके अधिकांश लक्षण पैदा हो जाया करते हैं—एकाएक मूर्च्छा और बेहोशी आ जाना ; मस्तिष्ककी उत्तेजनाकी वजहसे जो मिचलाना और वमन होना। ऐसे शूलके दर्दकी वजहसे रोगी पागल जैसा हो जाता है मानो कोई छुरी मार रहा है और वह भागनेकी चेष्टा करता है या खिड़कीसे कूद पड़ना चाहता है। डरकी वजहसे बीमारियाँ ; बहुत ज्यादा आशङ्का ; ऐसा डर मालूम होता है, कि कोई उसे विष खिला देगा (हायो, कैलि-कार्ब, रास-टक्स)। गैसकी रोशनीमें काम करनेकी वजहसे बीमारियाँ। माथेमें किसी तरहका उत्ताप सहन नहीं कर सकता ; छातेके बिना धूपमें जा नहीं सकता। मानसिक उत्तेजना, मस्तिष्कमें आघात या केश कटवानेकी वजहसे बीमारियाँ (बेल, फास)। माथेका आकार बड़ा मालूम होता है, मानो माथेमें मस्तिष्कके ठहरनेकी जगह नहीं है ; लू लग जाना या सर्दी-गर्मी (Sun-stroke) और धूप लग जानेके कारण सर-दर्द ; सूर्यके उदय-अस्तके अनुसार सर-दर्द घटा-बढ़ा करता

है। नाड़ीकी धमकके अनुसार ही ठीक तालमें सरमें भी धमधम होता है। सरमें टपकका दर्द। रोगी दोनों हाथोंसे मस्तक पकड़ लेता है; सो नहीं सकता, शायद तकियेमें उसका सर न लग जाये। मस्तिष्क बहुत बड़ा मालूम होता है, ऐसा मालूम होता है कि मानो माथेकी खोल फटकर मस्तिष्क बाहर निकल पड़ेगा; रक्त झोंक देकर माथेकी ओर जाता है। समयपर ऋतु न होना या रजोरोधकी वजहसे मस्तिष्कमें अधिक रक्त-संचय होना; ऋतुके बदले सरमें दर्द; जरायुसे बहुत ज्यादा स्राव (Metorrbagia) होनेपर सरमें दर्द; गर्भवती रमणियोंका माथेकी ओर रक्तका दौड़ना; गर्भावस्थामें धनुष्टंकारादि अकड़नवाली बीमारियाँ। गर्दनकी दोनों धमनियोंमें टपक और जोरसे कलेजा धड़कना, मानो हृत्पिण्डकी क्रिया बड़े कष्टसे हो रही है, ऐसा मालूम होता है मानो खून हृत्पिण्ड और मस्तककी ओर तेजीसे दौड़ रहा है, हृत्पिण्ड प्रदेशमें फड़फड़ शब्द (सोयी हुई बिल्लीको कण्ठ-ध्वनिकी तरह); सन्ध्याके समय आगके पास रहने या सो जानेके कारण बच्चा बीमार हो जाता है (दाँत निकलनेके समय)। मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय अधिक होनेकी वजहसे बच्चोंको धनुष्टंकार रोग, मस्तिष्कावरण-प्रदाह (Inflammation of, to the meninges), वयःसन्धिके समय (at climaxis) रह-रहकर उत्ताप पैदा हो जाना; ऋतुस्रावके समय उत्तापका पैदा होना।

लक्षणावली

मन।—एकाएक चैतन्य लोप, मूर्च्छा और गिरना। पर्यायक्रमसे मस्तक और हृत्पिण्डमें अधिक रक्तसञ्चय हुआ करता है। जाने-बूझे रास्ते सब अपरिचित मालूम होते हैं; वह यह नहीं बता सकता, कि रास्तेके किस पार्श्वमें उसका मकान है। बुद्धि-विकार, भाग जानेकी चेष्टा करता है; खिड़कीसे कूद पड़ना चाहता है (आर्जेण्ट-नाई, जेल्स); मस्तिष्कमें तेज़ दर्दकी वजहसे रह-रहकर लोमहर्षक चीत्कार कर उठता है (एपिस, हेलिबो, क्यूप्रम, हाइपिर); गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो फूल गया है; चिबुक बढ़ा हुआ मालूम होता है। हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है मानो स्क्रूसे कसकर कसा हुआ है। मृत्यु निकट मालूम होती है (एपिस, ग्रैफ, लैक-डिफलो, नक्स)। ऐसी आशंका होती है, कि किसीने उसे विष खिला दिया है (हायो, एपिस, कैलि-ब्रोम, लैके, रास)। बहुत बकता है और उसके

मनपर एकके बाद दूसरे भाव आया करते हैं (चायना, काफि, लैके, ओपि, नक्स, फास)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, सीधे होकर बैठने, शय्यापर उठ बैठने या आसनसे उठ जानेपर ; माथा झुकानेपर (ऐनाक, लाई, नक्स, वैल्मो, कैलि-बाई, पल्स ; ऊपरकी ओर देखनेपर—पल्स, साइलि) या माथा झुकानेपर (ब्राई, कोना, हिपर, फास)। सरमें दर्द—गैसकी रोशनीमें बहुत देरतक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करनेपर माथेमें उत्ताप बिलकुल हो सहन नहीं कर सकता—क्या चूल्हेकी गर्मी क्या धूपमें घूमना—सभी सहन नहीं होते (ब्रूसिया, लैके, ऐण्टि-क्रूड, ब्राई, नैट-कार्ब, नक्स-वोम, पल्स)। माथा बहुत बड़ा मालूम होता है : मानो सरमें मस्तिष्कका स्थान नहीं है, मानो मस्तिष्क खोपड़ी फाड़कर बाहर निकलना चाहता है, पेटसे थक्के-का-थक्का खून माथेकी ओर दौड़ता है ; प्रत्येक कदम चलनेपर या थोड़ा भी शरीर हिलानेपर, माथेमें धक्केकी तरह मालूम होता है और टपक आरम्भ हो जाती है। रोगी दोनों हाथोंसे माथा पकड़ कर चुप बैठ जाता है। लू लगना (Sun-stroke या Heat apoplexy) और धूप लगनेकी वजहसे सर-दर्द ; सूर्यके उदय-अस्तके अनुसार सर-दर्दका घटना-बढ़ना (स्पाइजि ; विलम्बसे—ग्रैफ, लैक-डिफ्लो ; रुकनेपर—ग्रैफ, लैके, सैङ्गियु)। ऋतुस्रावके आरम्भ होनेमें विलम्ब या ऋतुरोध होनेकी वजहसे सरमें बहुत ज्यादा रक्तका संचय हो जाना (विलम्बसे—ग्रैफ, लैक-डिफ्लो, रुकना—ग्रैफ, लैके) ; ऋतुके बदले सरमें दर्द ; जरायुसे अधिक स्राव होनेके बाद भयानक सर-दर्द हो जाता है। गर्भवती स्त्रियोंके माथेमें रक्त चढ़ा करता है ; नाड़ीकी गतिके लयके अनुसार माथेमें भयानक आघात पहुँचता है ; सर-दर्द होनेपर उसमें टपक होती है ; प्रत्येक आघातके बाद रोगी दोनों हाथोंसे माथा पकड़ लेता है, कहीं माथा फट न जाये ; बिलकुल ही सो नहीं सकता, तकियेसे माथा लगते ही मानो झटका लग जाता है, माथेमें रक्त चढ़ जानेके कारण बच्चोंको धनुष्टङ्कार रोग पैदा हो जाता है ; दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कावरण प्रदाह (Meningitis) ; बच्चे सन्ध्याके समय बहुत देरतक चूल्हा या अग्निकुण्डके पास अधिक समयतक रहनेके कारण बीमार हो जाते हैं। सर-दर्दका बढ़ना—सर हिलाने या हिलने-डोलनेपर सरमें जो झटका लगता है उससे माथा झुकाने या पीछेकी ओर सर लटकानेपर (पीछेकी ओर झुका देनेपर घटना—बेल, मूरेक्स,

थूजा); सोनेपर (बेल, कार्बो-वेज, कोलो, लाई ; घटना—कैक्ट, कैल्के-कार्ब, चायना, हेलिबो, नेट्र-मूर, नक्स); सीढ़ी चढ़नेके समय (बेल, ब्राई, कैल्के, स्पिञ्जि)। जलीय वायुमें (कार्बो-ऐन, फेर, नेट-मूर); धूपमें (ब्रूसि, लैके, नेट-कार्ब, नक्स); गैसकी रोशनीमें परिश्रम करनेपर और शरीर बहुत गर्म और पसीना-भरा रहनेपर टोपीका स्पर्श असह्य मालूम होता है; ठण्डे पानीमें सर-दर्द बहुत बढ़ जाता है, यहाँतक कि धनुष्टंकारतक पैदा हो जाता है; पढ़ने, लिखने और शराब पीनेपर बढ़ता है (ग्लोनोयनसे माथा खोलनेपर घटता है और पीछेकी ओर झुकानेपर आराम मालूम होता है। सर-दर्दके समय दोनों कनपटियोंकी शिराएँ डोरीकी तरह मोटी और ऊँची हो जाती हैं और उनमें टपक हुआ करती है। ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्कमें तरङ्गें उठ रही हैं। अधकपारीका दर्द होनेपर सब चीजें आधी उजली और आधी अन्धकारमय दिखाई देती हैं।

आँख।—आँख ज्योतिहीन, टकटकी लगी (बेल, हायो, आयोड, लाई, लोरो, ओपि, स्ट्रैम) और आँखका सफेद अंश लाल; आँखका गोला मानो बाहर निकल पड़ता है और नज़र पागलोंकी तरह दिखाई देती है। चक्षु-गोलकमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालम होता है; सङ्कोचन या प्रसारण (सिकुड़ने या फैलने) से बहुत दर्द होता है और उसमें दबाव मालूम होता है। पुतली फैली और आँख ऊपरकी ओर चढ़ी। आँखके सामने ऐसा मालूम होता है, कि आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं (बेल, कास्टि, चायना, सिक्लेम, कैलि-कार्ब, लैके, ओपि, सोरिन)। सब चीजें आधी रोशनीमें और आधी अंधेरेमें ढँकी मालम होती हैं। मूर्च्छा हो जानेपर आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते दिखाई देते हैं (बैराई-कार्ब, कैलि-कार्ब, नेट्र-मूर, सोरिन, सिपि) और चारों ओर अंधेरेसे ढँका मालूम होता है। अक्षर सब छोटे मालूम होते हैं (सिपा, कैलि-मूर)।

कान।—कानमें घण्टेकी आवाज़की तरह आवाज़ आती है; नाड़ीकी चालकी आवाज़ कानमें सुन पड़ती है। कानमें टपक और ऐसी तकलीफ़ होती है मानो भीतरसे बाहरकी ओर कुछ गड़ रहा है, विशेषकर दाहिने कानमें अधिक होता है।

नाक।—नासा-मूलमें दर्द। धूपमें घूमनेपर चेहरा लाल और गर्म हो उठता है और नाकसे खून गिरा करता है (थूजा)।

मुखमण्डल।—माथा और छातीके भीतर रक्त जमकर चेहरा गर्म और उजला हो जाता है (चेहरा लाल—बेल)। सरमें दर्दके कारण रोगीका चेहरा तमतमाया और गर्म हो उठता है, खासकर आँखके चारों ओर और ललाटमें या एक बार तमतमाया लाल और फिर सफेद उतरा हुआ चेहरा। सर्दी-गर्मी हो जानेपर जबतक शरीर गर्म रहता है तबतक चेहरा सफेद रहता है। मुँहपर पसीना होता है। कीड़े लगे दाँतकी वजहसे एकाएक समूचे मुँहमें बहुत दर्द पैदा हो जाता है और सब दर्द कनपटीमें जाकर रुक जाता है। माथेमें भार मालूम होता है, पर तकियेपर सर रख नहीं सकता; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका निचला ओंठ फूल गया है (निम्नोष्ठकी असली सूजन—ऐल्यू, बोर, ऐसिड-म्यूर, पल्स); चिबुक बहुत बड़ा मालूम होता है।

मुखके भीतर।—दाँतमें टपक जैसा दर्द—दाँत सब बहुत लम्बे मालूम होते हैं; सभी दाँतोंमें मानो कीड़े लग गये। मसूढ़ेमें ऐसा दर्द मानो उसमें छुरी मारी जा रही है; सेंकने या गर्म प्रयोगसे बढ़ना और ठण्डे प्रयोगसे घटना (सिपा, काफि, पल्स)। जीभका ऊपरी भाग साफ़ और दूधकी तरह सफेद (दूधकी तरह सफेद लेप चढ़ी—एण्टि-क्रूड, ब्राई, आर्निका, आर्स, नक्स, सिपिया) और जीभकी तलीकी जगह लेप चढ़ी हुई (कैलि-बाई, नक्स, फाइटो); जीभ सुन्न, मानो जल गयी है; मानो जीभमें काँटा गड़ रहा है (ऐको, एपिस), जीभ फूल जाती है और ऐसा मालूम होता है, मानो सुई गड़ गयी है। धनुष्टंकार आदि आक्षेपके समय मुँहसे फेन निकलता है (इथ्यू, ऐगार, बेल, कैम्फ, कैन्थ, साइक्यू, हायो, लोरो, स्ट्रैम)। कण्ठमें सुरसुरी होती है। ऐसा मालूम होता है मानो वह गरम है और मानो घाव हो गया है; ऐसा मालूम होता है मानो कण्ठनली फूल गयी है (बेल, सिस्टस, हिपर, नक्स, फाइटो)। ऐसा मालूम होता है मानो गला रुक गया है (बेल, लाइको, फास)। इतना दबाव मालूम होता है कि कपड़ेका कालर बाध्य होकर खोल देना पड़ता है (एपिस, बेल, लैके, निकोलम)।

पाकस्थली।—ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा, कण्ठ बहुत सूखा मालूम होता है या सूख जाता है (ब्राई, कैन्थ, कास्टि, कैलि-बाई, लाइ, मार्क, नेट-म्यूर, सेबाड, रास, वेरेट)। धूम्रपान करनेकी बहुत इच्छा (डैफ, इयुजि, स्टैफाइ, थिरिडि)। शराब पीनेपर लक्षण बढ़ जाते हैं, जो मिचलाकर

पसीना होता है (लोबेल); सरमें दर्द और जो मिचलाता है (ऐसिट-ऐसिड, काकूल, ग्रैफ, सैङ्गियु)। माथेके भीतर खून जमकर या सर्दी-गर्मी होकर जी खब मिचलाता है और पसीना होता है। ऊपरी पेट मानो शून्य और खाली मालूम होता है (क्रोकस, इग्ने, कैलि-कार्ब, सिपि, सल्फ)। उदरके ऊपरी भागमें खालीपन मालूम होना और सामनेकी ओर देह झुकानेपर दर्द मालूम होता है। पसीना होने बाद मिचलीका घट जाना।

अन्त्राशय आदि।—पतले दस्त आनेके पहले और बाद नाभीके नीचे छेदनेकी तरह दर्दकी वजहसे सवेरे नींद खुल जाती है। पित्त-पथरीका शूल (Gall-stone colic—बार्बा, डायस्को, कोलो, कैल्के, कार्डियुअस-मेरी, हाइड्रैस्ट)। कड़ा दस्त होनेपर बवासोरमें दर्द होता है और उसमें खुजली पैदा हो जाती है। उदरामय—बहुत ज्यादा, कुछ काला, धँसधसा मल; पेट गड़गड़ाता है और वायु निकलता है। बाईं करवट सोनेपर पेटका गड़गड़ाना बढ़ जाता है; सवेरे पतला पाखाना आरम्भ होकर दिनभर हुआ करता है।

पेशाब।—अधिक परिमाणमें सफेद और लार-भरा पेशाब होता है; रातमें बार-बार उठकर ज्यादा परिमाणमें लारमय पेशाब करता है (फेरम-फास, एपिस)। मसानेका प्रदाह (Nephritis—ऐवेन, ऐपिस, टैब, मर्क-साया, रास, कैन्थ)। रोगमें धूपमें घूमनेपर सरमें चक्कर आता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—देरसे ऋतु-स्राव होने या ऋतु-रोध होनेकी वजहसे सर-दर्द; ऋतु न होनेपर भी सरमें दर्द होता है। जरायुसे ज्यादा स्राव होनेपर सरमें दर्द होता है। गर्भवती स्त्रियोंके सरमें रक्त एकत्र होता है। वयःसन्धिके समय (at climaxis) देह रह-रहकर गर्म हो उठती है, माथेमें दबाव मालूम होता है, जो मिचलाता है, बेहोशी आ जाती है, सरमें चक्कर आता है और पैर फूल जाते हैं। गर्भावस्थामें धनुष्टंकार आदि आक्षेपिक रोग होकर बेहोशी आ जाती है, चेहरा और मुँह लाल और फूल उठता है; नाड़ी पुष्ट और कड़ी तथा पेशाब बहुत ज्यादा तथा लारमय होता है।

श्वास-यंत्र।—पर्यायक्रमसे मस्तक और हृत्पिण्डमें रक्तका अधिक एकत्र होना। बहुत भयङ्कर रूपसे कलेजा धड़कना और गर्दनकी दोनों ओरके धमनियोंमें टपक होती है, हृत्पिण्डकी क्रिया बड़े कष्टसे होना। रक्त हृत्पिण्डके भीतरसे बड़ी तेजीसे माथेमें चढ़ता है। नाड़ीकी गति धीमी और

रुक-रुककर चलनेवाली, सोये रहनेपर हृत्पिण्डमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है; ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डसे दर्द तेजीसे कपालमें चढ़ जाता है। कलेजेमें दर्द और जोर-जोरसे कलेजा धड़कना। ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षस्थल फटकर हृत्पिण्ड बाहर निकल पड़ेगा; श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ़ हुआ करती है; दर्द चारों ओर फैलकर बाएँ बाँहमें चला जाता है और वह बहुत कमजोर मालूम होने लगता है (स्पाइजि)। हृत्पिण्डके भीतरसे वेधनेकी तरह दर्द, देह भेदकर पीठतक फैल जाता है। शरीरमें सब जगह नाड़ीकी टपक मालूम होती है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनमें बहुत कसावटका भाव; गर्दन बहुत कमजोर और क्लान्त मालूम होती है; ऐसा मालूम होता है मानो माथेका भार वहन नहीं कर सकती (ऐब्रोट, इथ्यू, आयोड; प्रकृत दुर्बलताकी वजहसे), अकड़न—गुलबन्द, कालर आदिका दवाब सहन नहीं होता (एपिस, बेल, लैके निकोल)। दोनों पृष्ठफलकोंके बीचका स्थान बहुत जलन पैदा करनेवाला और गर्म मालूम होता है (लाई, फास; दोनों पृष्ठफलकोंमें बहुत शीत मालूम होता है—ऐमोन-म्यूर, लैकनैन)। समूचे मेरुदण्डमें बहुत दर्द—मस्तिष्क-मेरुमज्जावरण प्रदाह (Meningitis) रोगमें बायाँ हाथ बहुत क्षीण और सुन्न। समूची देहमें यहाँतक कि अंगुलीकी नोकतक नाड़ीकी धमक मालूम होती है। सरमें दर्दके समय पैर, जानु और दोनों गुल्फ़ बहुत कमजोर हो जाते हैं। सर्दी-गर्मी (Sun-stroke) रोगमें हाथ, पैर वगैरह शिथिल हो जाते हैं और उनमें हिलनेकी शक्ति नहीं रहती। हिलानेपर बाएँ घुटनेमें तेज़ दर्द मालूम होता है, परन्तु वह गर्म नहीं होता और फूलता भी नहीं है; स्थिर रहनेपर, रह-रहकर चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है। इसी वजहसे रोगी इस पैरको लम्बा फैलाकर ही रखना चाहता है; गृध्रसी या कटि-स्नायुशूल; रोगी एकाएक बेहोश होकर गिर जाता है। मस्तिष्कमें अधिक रक्त-सञ्चय होनेके कारण धनुष्टङ्कार आदि अकड़नवाली बीमारियोंमें हाथकी अंगुलियाँ सब आपसमें अलग-अलग होकर सीधी हो जाती हैं (सिकेलि)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—जाड़ा मालूम होना, देह गर्म होनेके पहले ऐसा मालूम होता है, मानो माथा स्क्रूसे कसा हुआ है। शीत, उत्ताप या वमन पर्यायक्रमसे प्रकट होता है। मुखमण्डलमें उत्तापकी अधिकता,—उत्ताप ऊपरी पेटसे सरमें चढ़ता है; तरङ्गकी तरह धक्का देता हुआ

ऊपर चढ़ता है। नींदके बाद पसीना होता है, विशेषकर मुँह और कपालमें पसीना होनेपर मिचली पैदा हो जाती है (इयुपेट)।

वृद्धि।—धूप लगनेपर, गैसकी रोशनीमें परिश्रम करनेपर, शरीर अत्यन्त गर्म होने और धक्का लगनेपर, सर झुकानेपर, सीढ़ीसे ऊपर चढ़नेके समय, टोपीके दबावसे, केश कँटवानेपर, पीठकी ओर सर झुका लेनेपर (बेल—उपशम), स्थिर रहनेपर (जानुमें दर्द)। शराब पीने और माथा ढँक लेनेपर।

घटना।—स्थिर भावसे बैठने या सोनेपर, ठण्डे प्रयोगसे और ठण्डी हवाके सेवनसे (पर माथेपर ठण्डा पानी ढालनेसे सरका दर्द तो बढ़ ही जाता है। इसके अलावा धनुष्टंकार आदि अकड़नकी बीमारियाँ भी पैदा हो जाती हैं) और दबा देनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—ऐमिल-नाई, बेलेडोना, एपिस, हायो, जेल्स, आर्जेण्ट-नाई, कैलि-कार्ब, सेङ्गियु, मिलिलोट, डिजि, डायस्को, सिकेल, इयुपेट-पर्फोल।

दोषघ्न।—ऐकोन, कैम्फो, काफिया, नक्स-वोम।

तुलनीय।—ऐकिया (मस्तिष्क हिलना); क्रोटेलस (स्थान-भ्रम)। बेलेडोना (चिल्लाना); एपिस, हायोस (विष-पान करनेका भय); जेल्स (खिड़कीसे कूदनेको तैयार); लाइको और फास (दोनों कन्धोंके बीचमें जलन); सिकेल (अंगुली सब अलग कर फैला रखता है)।

शक्ति।—२रे दशमिकसे ६ठे, ३० से २०० शततमिक क्रमतक हमेशा व्यवहारमें आता है।

नैफेलियम पोलिसिफेलम

(GNAPHALIUM POLYCEPHALUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे पौधेसे मदर टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पैरका स्नायुशूल; दस्त-कै; अतिसार; वाधक; सन्धिवात; कटिवात; गृध्रसी इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—ऊरुके पीछेके स्नायुशूल (Sciatica) रोगमें जब रोगवाली जगहमें या अङ्गमें पर्यायक्रमसे एक बार दर्द और एक बार सुन्न होना मौजूद रहता है, उस समय नैफेलियम अव्यर्थ लाभ दिखाता है। इसके अलावा आँतोंमें गड़गड़ाहटके साथ पानीकी तरह पतले दस्त, बहुत थोड़ा स्राव होनेवाला वाधकका दर्द, वात-वेदना, मसानेमें दर्द और मूलाधारकी मुखशायी-ग्रन्थिमें उत्तेजना वगैरह भी इसके विषयीभूत हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—शय्या त्यागकर उठ बैठते ही सरमें चक्कर आरम्भ हो जाता है (ब्राई, चेलिडो, कूप्रम, सिङ्कोना)। सरके पिछले भागमें लगातार थोड़ा-थोड़ा दर्द होता है और आँखके गोलेमें तेज़ दर्द मालूम होता है। तीसरे पहर ४-५ बजनेके समय या नींद खुलनेपर सरमें भार मालूम होता है और दर्द होता है—ठण्डा पानी डालनेपर आराम मालूम होता है (लैकेसिस)।

मुखमण्डल।—ऊपरी जबड़ेकी दोनों हड्डियोंमें शूलका दर्द, बीच-बीचमें पसीना होता है, फिर दर्द होता है; मुँहका स्वाद मीठा-मीठा और वमन पैदा करनेवाला, जीभपर गाढ़ा सफेद लेप—ठण्डे पानीसे अच्छी तरह धोनेपर यह मैल उठ जाता है। मुँहके भीतर बहुत सूखापन मालूम होता है।

पाकाशय आदि।—पेट गड़गड़ाकर (Borborygmus) बहुत वायु निकल जाता है। मलका पतलापन—पानीकी तरह मल, बहुत बदबूदार, सवेरे आरम्भ होकर दिनभर दस्त आया करते हैं; पेटमें कलकल गड़गड़ शब्द होता है, पेटमें दर्द होता है, रोगी चिड़चिड़ा हो जाता है और सामान्य

कारणसे ही चिढ़ उठता है। पेशाब बहुत थोड़ा होता है और भूखकी रुचि या मुँहका स्वाद आदि कुछ भी नहीं रहता। बच्चोंके ग्रीष्मातिसारकी पहली अवस्था ; दस्त और कै—रातमें आरम्भ होकर दिनभर दस्त आया करते हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वाधक—ऋतुके पहले दिन दिखाई देता है ; पेटमें बहुत दर्द होता है और स्राव बहुत थोड़ा होता है (कोलोफिल, सल्फ़)। तलपेटमें बहुत भार मालूम होता है ;

प्रत्यङ्ग आदि।—उरुके पिछले भागका स्नायु-शूल—दाहिने पुट्ठेसे (Hip-joint) उरुके पिछले भाग होकर (प्लम्ब) ऐसा तेज़ दर्द होता है, मानो काट रहा है और यह दर्द नीचे पैरतक उतर आता है (कोलो); कभी-कभी दर्द दाहिने अण्डकोषतक फैल जाता है और तकलीफ़की वजहसे रोगी यह पैर मोड़कर पेटपर रख लेता है ; रोगवाली जगहमें कभी दर्द होता है और कभी-कभी वह सुन्न हो जाती है ; यह दर्द रातमें बढ़ता है और बार-बार दर्द पैदा होता है ; तकलीफ़की वजहसे रोगी शय्यापर लोटता है (पल्स) और चिल्लाया करता है ; सोनेपर देह या रोगवाला पैर मोड़ रखनेपर घटता है (कैलि-बाई)। रातमें सोनेके समय पैरकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है (Cramp ; कैम्फ़ो, नक्स, कूप्रम)। उरुके सामनेवाले भागका स्नायुशूल (Crural neuralgia—स्टैफिसे, जैन्थक्स)।

वृद्धि।—रातमें सोनेके समय, रोगी अङ्गको हिलानेपर और पैर फैलानेपर।

घटना।—ठण्डे पानीके प्रयोगसे या ठण्डे पानीसे धोनेपर, कुर्सीपर बैठे रहनेपर और रोगवाला पैर मोड़कर पेटके ऊपर रख देनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—कोलोसिन्थ, जेलिस, प्लम्ब, इपिक, कोलोफिल, जैन्थक्स, स्टैफि, लाइकोपोड।

शक्ति।—१म शततमिकसे ३० शततमिक क्रम।

गासिपियम

(GOSSYPIUM HERBACEUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—मूलके बीचकी छालसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—गर्भ-स्राव; रजःस्वल्पता; बाधक; योनि-कपाटमें फोड़ा; डिम्बाधारमें दर्द; गर्भावस्थामें वमन; अर्बुद; जरायुमें एक तरहका दर्द।

उपयोगिता और आभास।—इसका सबसे प्रधान आक्रमण-स्थान स्त्री-जननेन्द्रिय है। पहले इसका व्यवहार एक तीव्र रजःआकर्षक और गर्भ-स्राव उत्पादक औषधके रूपमें होता था; इस समय भी ऐलोपैथिक मतसे इसका इसी भावसे प्रयोग हुआ करता है। डिम्बाधारमें क्षणभरके लिये होनेवाला दर्द; योनिके बाहरी भागमें सूजन; प्रसवके बाद फूल न गिरना; बगलकी ग्रन्थि फूलकर स्तनमें अर्बुद या आब पैदा हो जाता है (Mammary Tumor); जरायुमें स्पर्श सहन नहीं होता। गर्भवतियोंको रोज़ सवेरे मिचली होती है और वमन होता है; ऋतु-रोध; पानीकी तरह ऋतु-स्राव वगैरह जरायुके लक्षण और उसके प्रतिक्षेपसे उत्पन्न हुए पाकाशय आदिके लक्षण इसके प्रधान क्रिया-स्थल हैं। इसका दर्द डंक मारने, छेदने और खींचनकी तरह होता है और कभी-कभी जलन पैदा करनेवाला—रह-रहकर एक स्थानसे दूसरी जगहपर आक्रमण करता है।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेमें जलन होती है; नाक फूल उठती है।

पाकाशय।—जी मिचलाना और मुँहमें लगातार लार इकट्ठा होना; सवेरेके भोजनके पहले कै होनेकी तरह हो जाता है (नक्स, ऐनाक, सिरियम-आक, सिम्फोरि, नेट-फास, ऐसिड-कार्ब, ऐक्टि-रेस)। अच्छी तरह हज़म नहीं होता; ऋतुके समय ऊपरी पेटमें तकलीफ़ और कमजोरी मालूम होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—योनिके भीतरसे पानीकी तरह स्राव होता है; यह स्राव लगकर योनि-मुख और उरुदेशका बिचला अंश खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है; उरुके बीचमें क्रमशः बढ़नेवाला कोमल अर्बुद पैदा हो जाता है और उससे पानीकी तरह रस बहता है साथ ही उसके भीतर तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है—रातमें यह दर्द बहुत बढ़ता है। बायाँ या दाहिना योनिद्वार फूल जाता है और उसमें भयानक खुजली होती है। ऋतु बहुत देरसे होता है। स्राव एकदम पानीकी तरह और परिमाणमें बहुत थोड़ा हुआ करता है। दोनों डिम्बाधारमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और दोनों ही डिम्बाधार मानो जोरसे जरायुकी ओर खिंच रहे हैं—ऐसा मालूम होता है। ऋतुरोध—प्रसवके अन्तमें जरायुमें फूल अटक जाया करता है (बेल, कालोफिल, कैन्थ, पल्स, सिकेल)। जरायुकी निष्क्रियताके कारण बाँझपन (एलेट्रिस-फै)। गर्भावस्थामें सवेरेके वक्त वमन (नक्स, ऐनाक, इपिका, सिरियम-आक्स, ऐसिड-कार्बोलिक, सिम्फोरि; वमनके बाद पेट सुन्न हो पड़ता है, उठनेकी शक्ति नहीं रहती। बगलकी गांठ फूलती है, स्तनमें अर्बुद या आव पैदा हो जाता है; वस्तिगह्वरमें बहुत भार मालूम होता है और नीचेकी ओर आकर्षणके साथ कमरमें दर्द हुआ करता है (बहुत ज्यादा खूनके स्रावके साथ—ऐलेट्रिस-फैरि, कैलि-कार्ब)। दोनों बाहुओंमें बहुत भार मालूम होता है और लटका रखनेपर यह भार घट जाता है और शय्याके उत्तापसे वृद्धि मालूम होती है।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—जैबोरैण्ड, ऐक्टिया-रेसि, कौलोफिल, पल्स, लिलियम-टाइ, एपिस, ऐसेरम, सिकेलि, आस्टिलेगो, सिम्फोरि, सिरियम-आक्जाल, ऐसिड-कार्बोल, ऐनाक, नक्स-वोम।

शक्ति ।—दूसरे दशमिकसे ६ठा शततमिक क्रम।

ग्रैनेटम

(GRANATUM)

दूसरा नाम ।—अनारकी जड़ (Punica Granatum) ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़की छालसे मदर-टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—छोटी सूतकी तरह क्रिमि ; पाकाशयका शूल ; आँतोंका बढ़ना ; श्वेत-प्रदर ; पट्ट-कृमि ; दाँतका दर्द इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—अनारकी छालको सिझाकर उसका पानी पट्ट-क्रिमिके लिये बहुत लाभदायक है । सदृश-विधानके अनुसार स्वस्थ शरीरपर इसकी परीक्षा करनेपर पट्ट-क्रिमिके अनेकों लक्षण पाये गये हैं । जैसे—आँखके कोनेमें कालापन, नाककी नोकमें खुजलाहट, सर्वग्रासी भूख, खूब खानेकी इच्छा होती है, जी मिचलाता है, मुँहमें लगातार पानी भर आता है और रोगीको हड्डी-ही-हड्डी रह जाता है ; अरुचि ; खट्टी और रसीली चीजें खानेकी इच्छा, मिचली, मुँहमें लार सञ्चय होना और दुबलापन । इसके अलावा पुट्ठेमें बहुत दबाव मालूम होना, मानो आँत उतरना चाहती है ; नाभीका फूलना या बढ़ना ; तलहत्थी खुजलाती है ; शरीरके कितने ही स्थानोंमें दाने या खुजली निकल पड़ेगी—ऐसी सुरसुराहट होती है ; अङ्ग आदिका काँपना वगैरह अनारकी जड़के काढ़ाके कई प्रधान निर्णायक लक्षण माने जाते हैं ।

लक्षणावली

मन ।—अभिमानी, आत्मश्लाघी, बहुत कृपण (आर्स, लाई, सिपि) और कलह-प्रिय (अरम-म्यूर-नेट, कोना, चायना, लाई) । कहीं बीमारी न हो जाये इसीलिये बहुत सतर्क रहता है (पल्स, सिपि) ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आता है—मानसिक परिश्रमकी वजहसे (नेट्र-कार्ब, नक्स-वोम, पिक्रिक-ए) । सवेरे सोकर उठनेपर (कैलि-मैग-म्यूर, नेट्र-म्यूर) । चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है (ओपियम) या जी मिचलाता है (नक्स, फेरम, पेट्रोल) और पेटमें दर्द होकर कै होनेकी तरह हो जाता

है (ऐको); माथा खाली मालूम होता है (कार्बो-वेज, कोरैल-रूब्र)। ललाटके भीतर बेहोश कर देनेवाला दर्द और भार मालूम होना (ऐमोन-म्यूर, बेल, हिमेटक्स, लैके ओलियैन, फिलैन)।

आँख।—आँख गड्ढेमें धँसी और उसके कोनेमें कालापन; आँख सूखी, उसमें जलन और खुजली होती है। आँखका सफेद अंश पीला पड़ जाता है (चेलिडो, मर्क, कैमो, लैके, प्लम, सिपि, कैलि-बाई)। चारों ओर अन्धकारमय दिखाई देता है (कैक्टस, सिक्लेमैन, रास-टक्स)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल, रोगीकी तरह, पीला या मिट्टीकी तरह रङ्गका। रह-रहकर चेहरा बहुत गर्म हो जाता है और उसमें जलन होती है; दोनों ओंठ सूखे और जलन-भरे। जबड़े अकड़ेसे और खींचनकी तरह दर्द, चबानेके समय कड़ाकसे आवाज़ होती है। दाँतमें तेज़ दर्द, रातमें सोनेके समयतक दर्द बहुत ही भीषण मालूम होता है; दाँत खूब लम्बे मालूम होते हैं। बहुत ज्यादा लार पैदा होती है और कभी-कभी मीठी हो जाती है (ऐल्यू, डाल्का, फास, प्लम, पल्स, स्पञ्जि, स्टैनम, सल्फ)। जीभ रसभरी और सफेद रङ्गकी।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख (सिना, मर्क, सिङ्को, ग्रैफ, आयोड) यहाँतक कि भोजन करते ही फिर भूख लग आती है (फास, लाई, स्टैफि, सिना)। बहुत अधिक आलस्य मालूम होता है और मुँहमें अत्यधिक लार भर जाती है और जी मिचलाता है (इपिका, कैम्फो, सिङ्को, लैक, जैबोरैण्डो); ऊपरी और निचले पेटमें दर्द। बार-बार पाखाना पेशाबका वेग होता है, पर होता कुछ भी नहीं है और शरीरमें सिहरावन हुआ करता है। रातमें भी वमन होता है, आलस्य मालूम होता है, शरीर काँपता है, पसीना होता है और सरमें चक्कर आता है। सवेरे जब अच्छा रहता है तब पेटमें ऐंठन होती है (ऐण्टि-क्रूड, बिस्मथ, कार्बो-वेज, ग्रैफ, लाई, नेट्र-म्यूर, नक्स)। बराबर भूख, पर खाई हुई चीज़ अच्छी तरह हज़म नहीं होती और रोगी दिनों-दिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, सिना, नेट्र-म्यूर, सार्सा, आयोड)। खट्टी या रस-भरी चीजें खाना चाहता है।

अन्त्राशय।—उदरमें दर्द, सवेरे उपवासवाली अवस्थामें या प्रत्येक बार भोजनके बाद—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे (आर्स, कैमो, मैग-फास, नक्स-

मस, नक्स-वोम, साइलि); सोनेपर (बाईं करवट—पलेड) और ठण्डा पानी पीनेपर घट जाता है। नाभीके पास बहुत दर्द होता है। नाभी फूलकर ऊँची हो जाती है (Umbilical Hernia—आँतें उतरना)। वंक्षणमें (Groins) दर्द पैदा करनेवाला दबाव मालूम होना, मानो आँत उतरेगी (नक्स, लाई, जेल्सि-क्र)। पाखानेका वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता।

मलान्त्र और मल।—उदरामय—बार-बार कोमल गाढ़ा पीले रङ्गका और आम-भरा दस्त होता है; पाखाना होनेके समय मलान्त्रसे बाहर निकल पड़ता है और मलान्त्रमें भयानक खुजली और सुरसुरी होती है (टियुक्रि, फेरम, सिना, कैल्के-कार्ब, इग्निगो, क्युकर्बिटा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—पुं-मूत्रनालीका प्रदाह और सूजन; प्रमेहके स्रावकी तरह पुं०-मूत्रनालीसे लगातार रस निकला करता है और उसमें जलन करनेवाली खींचन मालूम होती है। प्रदर, पीला स्राव (आर्स, सिपि, कैलि-बाई, क्रियो, स्टैन)।

श्वास-यन्त्र।—श्वास-प्रश्वासमें बाधा और रोगी बार-बार कष्ट-जनक दीर्घ निश्वास त्यागा करता है; चलनेके समय छातीमें भयानक दर्द होता है। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें इतना दर्द होता है कि वस्त्र आदिका भारतक कष्ट-जनक मालूम होता है। जरा भी हिलने-डोलनेसे कलेजा धड़कने लगता है।

त्वचा।—हाथकी तलहत्थी खुजलाती है (ऐनाक, बार्बा, लैके, ऐसिड-नाई, प्लैट, रैनान, सेलिन); शरीरके कितने ही स्थानोंमें और मुखमण्डलमें बहुत खुजली होती है, मानो फुन्सियाँ निकलना चाहती हैं; ऐसी शकल हो जाना, मानो कामला हो गया है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेके चारों ओर बहुत दर्द, मानो कन्धेपर बहुत बहुत भारी चीज़ रखी हुई है। अंगुलीकी हरेक सन्धिमें दर्द। जानुसन्धिमें छेदनेकी तरह दर्द। हाथ-पैर एकाएक फैल और सिकुड़ जाते हैं। उरु बहुत अकड़ा मालूम होता है। तलवेमें दर्द-भरे गट्ठे (ऐमोन-कार्ब, ऐण्टि-क्रूड, बैराइ, लाई, नैट-म्यू, पेट्रोल, फास, ऐसिड-फास)। शरीरमें बहुत शिथिलता और आलस्य, विशेषकर दोनों पैरोंमें—खड़े होनेमें रोगीको तकलीफ़ मालम होती है और रोगी सोया रहना चाहता है। दुबलापन।

वृद्धि ।—सवेरे उपवासकी अवस्थामें ; प्रत्येक बार भोजनके बाद ।

घटना ।—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे ; सोने बाद और ठण्डा पानी पीनेपर ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सिना ; फिलिक्स ; मैस्क्यूलिनस ; कूसो ; आर्स, ऐब्रोट, नैट-म्यूर, आयोड, फास, सार्सा, टियुक्रि, चायना ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिकसे १२ दशमिक क्रमतक ! कृमि लक्षणमें १म दशमिकसे ३रा दशमिक प्रयोग करना चाहिये ।

ग्रैफाइटिस

(GRAPHITES)

दूसरा नाम ।—ब्लैक लेड् (काला सीसा) ; प्लम्बेगी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चित्रकारकी पेन्सिलसे सीसा लेकर उसका विचूर्ण तैयार किया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; स्वल्परजः ; गुह्यद्वारकी बीमारियाँ ; आँखकी बीमारी ; स्तनका कर्कटीया जखम ; सर्दी ; मुत्राण्ड् ; शूलका दर्द ; कब्जियत ; बहरापन ; शोथ ; वाधक ; कानकी बीमारी ; अजीर्ण ; नाकसे खून गिरना ; विसर्प ; फटना ; पाकाशयका शूल ; ग्रन्थियोंका फूलना ; प्रमेह ; मूत्राश्मरी (पथरी) ; अर्श ; सरमें दर्द ; कोरण्ड ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएञ्जा) ; श्वेत-प्रदर ; यकृतका कड़ापन ; आर्त्तवमें विकार ; माथेमें आवाज़ ; स्थूलता ; डिम्बाधारकी बीमारी ; कर्णमूल ; योनिमें खुजली ; विचर्चिका ; जखमके बादवाले चिन्हका प्रदाह ; गण्डमाला ; रेतःस्खलन ; त्वचाका फटना और बहुत-सी बीमारियाँ ; आघ्राण शक्तिकी गड़बड़ी ; पाकस्थलीमें ऐंठन ; उपदंश या प्रमेह दोष ; जखम ; अर्बुद ; पेशाबकी बहुत-सी बीमारियाँ ; जरायुका कैन्सर ; गो-बीजका टीका दिलवानेका दुष्परिणाम ; हूप खाँसी ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मोटी-ताजी और कब्जियत धातुवाली स्त्रियाँ (खासकर जिन्हें देरसे ऋतु होता है), उनकी बीमारीमें यह विशेष

उपयोगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—रोगी सभी विषयोंमें विशेष सतर्क, डरपोक, सभी कामोंमें आनाकानी करनेवाला और उसे गुरुतर विषयोंमें कर्त्तव्य स्थिर करना कठिन मालूम होता है; किसी काममें लगे रहनेपर बहुत बेचैनी दिखाता है; विमर्ष और सुस्त चित्त; संगीतकी आवाज़ सुनकर रो देता है। हमेशा ही मृत्युकी इच्छा किया करता है; बच्चा बहुत निर्लज्ज, हमेशा बहुत ही विरक्ति-जनक आचरण करता है, तिरस्कार करनेपर हँसकर उड़ा देता है। ब्रह्मतालुके एक गोलाकार अंशमें बहुत जलन होती है। निस्पन्द वायु रोग हो जानेकी तरह अवस्था, पूरा-पूरा ज्ञान रहनेपर भी बोल या हिल-डोल नहीं सकता। उसे सहजमें ही सर्दी लग जाती है, ठण्डी हवा लगते ही रोगीको बीमारी हो जाती है। सुननेकी ताकतका घटना, गड़बड़ीमें अच्छी तरह सुन सकता है; ऐसा मालूम होता है, मानो कपालमें मकड़ेका जाल लगा हुआ है; रोगी हाथसे बार-बार उसे हटानेकी चेष्टा करता है। मुँहपर विसर्प रोग (Erysipelas) वह जल्दीसे चारों ओर फैल जाता है और उसमें पीव हो जाता है; उसमें कभी जलन होती है और कभी ऐसा दर्द होता है, कि डंक मार रहा है। यह विसर्प दाहिनी ओरसे आरम्भ होकर बाईं ओर फैलता है। आँखकी पलकपर प्ररोहिका (एकज़िमा), इस घावसे रस गिरता है और वह फटाफटा दिखाई देता है, पलकें लाल और कड़ी छाल (Scales) से ढँकी रहती हैं। रोगीका शरीर खराब, थोड़ी-सी खरोंच लगनेपर भी उसमें पीव और घाव हो जाता है। पुराने जखमके चिन्हपर फिरसे घाव हो जाता है; देहमें जगह-जगह और हाथ तथा पैरके अंगूठेमें फुन्सियाँ हो जाती हैं और उससे गाढ़ा गोंदकी तरह रस बहता है या स्वच्छ मधुकी तरह रस बहता है। नख टूट जाते हैं, टेढ़े पड़ जाते हैं और थोड़ा-थोड़ाकर निकल जाते हैं। स्तनपर जखमके चिन्ह बन जाते हैं और इस वजहसे दूधके निकलनेमें गड़बड़ी होती है। बार-बार स्तनमें फोड़ा होकर वह कर्कटमें परिणत हो जाता है। उदरामय, मल पतला, धुमैला, अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला और बदबूदार। मरहम आदि लगाकर चर्म-रोग अच्छा करनेकी वजहसे प्रायः कब्जियत रहती है, मल बहुत कड़ा, गाँठ-गाँठ; ये सब सूत्रमय आमसे लिपटी रहती हैं; गाँठें सब बहुत बड़ी और कष्टसे निकलती हैं। पाखाना होनेपर ऐसा मालूम होता है कि मलद्वार फट गया है। स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न रहना। इन्द्रियके बहुत व्यवहारके

वृद्धि ।—सवेरे उपवासकी अवस्थामें ; प्रत्येक बार भोजनके बाद ।

घटना ।—बाहरी उत्तापके प्रयोगसे ; सोने बाद और ठण्डा पानी पीनेपर ।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—सिना ; फिलिक्स ; मैरक्यूलिनस ; कूसो ; आर्स, ऐब्रोट, नैट-मूर, आयोड, फास, सार्सा, टियुक्रि, चायना ।

शक्ति ।—प्रथम दशमिकसे १२ दशमिक क्रमतक । कृमि लक्षणमें १म दशमिकसे ३रा दशमिक प्रयोग करना चाहिये ।

ग्रैफाइटिस

(GRAPHITES)

दूसरा नाम ।—ब्लैक लेड् (काला सीसा) ; प्लम्बेगो ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चित्रकारकी पेन्सिलसे सीसा लेकर उसका विचूर्ण तैयार किया जाता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासे ; स्वल्परजः ; गुह्यद्वारकी बीमारियाँ ; आँखकी बीमारी ; स्तनका कर्कटीया जखम ; सर्दी ; मृत्पाण्ड् ; शूलका दर्द ; कब्जियत ; बहरापन ; शोथ ; वाधक ; कानकी बीमारी ; अकौता ; नाकसे खून गिरना ; विसर्प ; फटना ; पाकाशयका शूल ; ग्रन्थियांका फूलना ; प्रमेह ; मूत्राश्मरी (पथरी) ; अर्श ; सरमें दर्द ; कोरण्ड ; बहुव्यापक सर्दी (इन्फ्लुएञ्जा) ; श्वेत-प्रदर ; यकृतका कड़ापन ; आर्त्तवमें विकार ; माथेमें आवाज़ ; स्थूलता ; डिम्बाधारकी बीमारी ; कर्णमूल ; योनिमें खुजली ; विचर्चिका ; जखमके बादवाले चिन्हका प्रदाह ; गण्डमाला ; रेतःस्खलन ; त्वचाका फटना और बहुत-सी बीमारियाँ ; आघ्राण शक्तिकी गड़बड़ी ; पाकस्थलीमें ऐंठन ; उपदंश या प्रमेह दोष ; जखम ; अर्बुद ; पेशाबकी बहुत-सी बीमारियाँ ; जरायुका कैन्सर ; गो-वीजका टीका दिलवानेका दुष्परिणाम ; हूप खाँसी ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मोटी-ताजी और कब्जियत धातुवाली स्त्रियाँ (खासकर जिन्हें देरसे ऋतु होता है), उनकी बीमारीमें यह विशेष

उपयोगी है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—रोगी सभी विषयोंमें विशेष सतर्क, डरपोक, सभी कामोंमें आनाकानी करनेवाला और उसे गुरुतर विषयोंमें कर्त्तव्य स्थिर करना कठिन मालूम होता है; किसी काममें लगे रहनेपर बहुत बेचैनी दिखाता है; विमर्ष और सुस्त चित्त; संगीतकी आवाज़ सुनकर रो देता है। हमेशा ही मृत्युकी इच्छा किया करता है; बच्चा बहुत निर्लज्ज, हमेशा बहुत ही विरक्ति-जनक आचरण करता है, तिरस्कार करनेपर हँसकर उड़ा देता है। ब्रह्मतालुके एक गोलाकार अंशमें बहुत जलन होती है। निस्पन्द वायु रोग हो जानेकी तरह अवस्था, पूरा-पूरा ज्ञान रहनेपर भी बोल या हिल-डोल नहीं सकता। उसे सहजमें ही सर्दी लग जाती है, ठण्डी हवा लगते ही रोगीको बीमारी हो जाती है। सुननेकी ताकतका घटना, गड़बड़ीमें अच्छी तरह सुन सकता है; ऐसा मालूम होता है, मानो कपालमें मकड़ेका जाल लगा हुआ है; रोगी हाथसे बार-बार उसे हटानेकी चेष्टा करता है। मुँहपर विसर्प रोग (Erysipelas) वह जल्दीसे चारों ओर फैल जाता है और उसमें पीब हो जाता है; उसमें कभी जलन होती है और कभी ऐसा दर्द होता है, कि डंक मार रहा है। यह विसर्प दाहिनी ओरसे आरम्भ होकर बाईं ओर फैलता है। आँखकी पलकपर प्ररोहिका (एकज़िमा), इस घावसे रस गिरता है और वह फटाफटा दिखाई देता है, पलकें लाल और कड़ी छाल (Scales) से ढँकी रहती हैं। रोगीका शरीर खराब, थोड़ी-सी खरोंच लगनेपर भी उसमें पीब और घाव हो जाता है। पुराने जखमके चिन्हपर फिरसे घाव हो जाता है; देहमें जगह-जगह और हाथ तथा पैरके अंगूठेमें फुन्सियाँ हो जाती हैं और उससे गाढ़ा गोंदकी तरह रस बहता है या स्वच्छ मधुकी तरह रस बहता है। नख टूट जाते हैं, टेढ़े पड़ जाते हैं और थोड़ा-थोड़ाकर निकल जाते हैं। स्तनपर जखमके चिन्ह बन जाते हैं और इस वजहसे दूधके निकलनेमें गड़बड़ी होती है। बार-बार स्तनमें फोड़ा होकर वह कर्कटमें परिणत हो जाता है। उदरामय, मल पतला, धुमैला, अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला और बदबूदार। मरहम आदि लगाकर चर्म-रोग अच्छा करनेकी वजहसे प्राय: कब्जियत रहती है, मल बहुत कड़ा, गाँठ-गाँठ; ये सब सूत्रमय आमसे लिपटी रहती हैं; गाँठें सब बहुत बड़ी और कष्टसे निकलती हैं। पाखाना होनेपर ऐसा मालूम होता है कि मलद्वार फट गया है। स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न रहना। इन्द्रियके बहुत व्यवहारके

कारण जननेन्द्रियमें सुस्ती और शिथिलता। ऋतुस्राव बहुत थोड़ा और काला होता है, बहुत दर्दके साथ देरसे होता है; अनियमित होता है; ठण्डा पानी या सर्दी लग जानेके कारण ऋतु देरसे होना, ऋतुके समय सवेरे मिचली और वमन होता है; रोगिनी बहुत कमजोर और सुस्त हो पड़ती है। प्रदरका स्राव जखम पैदा करनेवाला (Acrid); दिनरात प्रबल वेगसे स्राव होता है। ऋतुके पहले और बाद प्रदर हो जाया करता है।

लक्षणावली

मन।—बच्चा बहुत निर्लज्ज और विरक्तिकर स्वभाववाला, तिरस्कार करनेपर हँसकर उड़ा देना चाहता है (बच्चोंको जो कहा जाता है, वही दोहराता है—जिङ्कम; अवाध्य—बेल, सिङ्को)। सभी विषयोंमें बहुत सतर्कता दिखाता है (थूजा, कास्टि); भीरु स्वभाव; सभी कामोंमें आनाकानी करता है (आर्जेण्ट-नाई, आर्नि); किसी विषयमें भी कर्त्तव्य स्थिर नहीं कर सकता (पल्स)। किसी काममें लगे रहनेपर हमेशा हाथ-पैर हिलाया करता है (जिङ्क, जिङ्क-वेलि); विमर्ष चित्त; संगीत ध्वनि सुनकर रोया करता है (क्रियो, संगीत ध्वनि असह्य—ऐको, बेल, सेबाई, नैट-कार्ब, थूजा, नैक्स-सल्फ, नक्स; संगीत ध्वनि सुननेपर उत्तेजित हो उठता है—टरेण्टु—क्यूब) बराबर मृत्यु चिन्तामें लगा रहता है (क्रोटेलस, कोना, लैके, सोरिन, पल्स)। परिश्रमसे बहुत डरना, रह-रहकर चौंक उठता है।

मस्तक।—सरमें दर्द होता है, सवेरे नींद खुलनेपर, साधारणतः माथेके एक पार्श्व पर रोगका हमला होता है, जो मिचलाता है और खट्टी कै होती है। माथेमें ऐसा मालूम होता है, मानो नशा हो गया है (नक्स, पल्स)। ऋतुके समय सरमें दर्द होता है, डकार आती है और जी मिचलाता है। ऋतु बन्द होने और पाखाना न होनेपर कभी-कभी अधकपारीका दर्द हो जाता है। माथेमें ऐसा मालूम होता है, मानो सुन्न और पतला हो गया है। सरका जो अंश तकियेमें लगा रहता है उसीमें दर्द होता है। गाड़ीके झटकेसे अथवा भोजनके बाद सरमें दर्द होता है। वातकी वजहसे अधकपारीका दर्द, दर्द गर्दन और दाँततक (गर्म प्रयोगसे घटना) होता है। ब्रह्मतालुके एक छोटेसे गोलाकार अंशमें बहुत जलन होती है (नैट-म्यूर, सल्फ; बहुत ठण्डा मालूम होता है—कैल्के, सिपि, वेरेट)। माथेके केशसे ढँके अंशमें फुन्सियाँ

हो जाती हैं, उससे रस निकलता है और खुजलाता है और बदबू या सड़ी गन्ध निकला करती है (लाई, रास, सिपि, सोरिन, विङ्का-माइ, वायोला-ट्राई, रास-विनि)। माथेमें बहुत ज्यादा रूसी पैदा हो जाती है (ऐमोन-मूर, आर्स, कैन्थ, मिडोराइन, नेट्रम-म्यूर, फास, सल्फ, थूजा)। सरमें चक्कर आता है और चारों ओरसे मेघसे घिरा मालूम होता है (ऐकि-स्पाई, डालका, ओपि)। माथेमें पसीना होता है—पसीनेमें खट्टी गन्ध और बहुत बदबू और कपड़े वगैरहमें लगनेपर पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, फेर, मर्क, थूजा, वेरेट) ; थोड़े भी परिश्रमसे, यहाँतक कि बोलनेपर भी ज्यादा पसीना होता है। खुली हवामें घूमनेपर घटना। केश धुमैले हो जाते हैं (लाई, ऐसिड-फास, ऐसिड-सल्फ)। कपाल और मुँहपर मानो मकड़ेका जाल लगा है—ऐसा मालूम होता है।

आँख।—पलकोंमें भार और सुन्नता तथा पक्षाघात हो जानेकी तरह, आँख आप-से-आप बन्द हो जाती हैं (कास्टि, कोलोफिल, जेल्स, सिपि)। प्रदाह—दीये आदिकी रोशनी बिलकुल सहन नहीं होती (बेल, कैल्के, इयुफ्रे, हिप, इग्ने, मार्क, नक्स, केलि-बाई, फाइटो, फास, पल्स, रास, वेरेट)। पलकोंपर लाल फुन्सियाँ, देखनेमें फटी-फटी और उससे रस निकलता है, पलकें लाल हो जाती हैं, फूलती हैं और उससे कड़ी छाल निकलती हैं ; सवेरे आँखें सट जाती हैं (ब्राई, कैल्के, इयुफोर्ब, इयुफ्रे, साइक्ल, क्रोकस, इग्ने, लाई, पल्स, सिपि)। माथा झुकाते ही दृष्टि धुँधली हो जाती है (नेट्रम-म्यूर)। आँखके सामने चकचकाहट (Sparkling—ऐसिड-फ्लु, ऐल्यू, कास्टि, सिकेल, स्टैफिस, टैबाक)। अञ्जनी—पलक फूलती है और गुहौरी निकलती है (पल्स, रास, स्टैन, स्टैफिस, मर्क)। लिखनेके मसय प्रत्येक अक्षर दो मालूम होते हैं और पढ़नेके समय ऐसा मालूम होता है, कि अक्षर-से-अक्षर सट जाते हैं।

कान।—कानके भीतर बहुत सूखापन (कार्बो-वेज, लैके, बहुत मैल जमता है—कोना, साइलि)। कानके पीछे पपड़ी जमे घाव होते हैं और उससे रस निकलता है (बेराइ, कैल्के, हिप)। श्रवण-शक्तिका ह्रास (कर्ण-रन्ध्र बन्द हो जाने जैसा मालूम होनेके साथ बहरापन—कैल्के, पल्स, सल्फ), गड़बड़ीमें अच्छी तरह सुनता है ; गाड़ी या ट्रेनमें जानेके समय बहुत अच्छी

तरह सुन पाता है (ऐसिड-नाई, पल्स)। ऐसा मालूम होता है, मानो कानके छेदका मुँह एक पतली सफ़ेद छालसे ढँका रहता है। कर्ण-पश्चान्नाली (Eustachean tube) में वायु अटका हुआ है ऐसा मालूम होता है। कानमें साँय-साँय शब्द (कास्टि, पेट्रोसेल, पल्स)। कानमें कभी-कभी दमदम शब्द होता है (मेङ्ग, मस्कस, साइलि), विशेषकर सन्ध्याके बाद; चबानेके समय; प्रत्येक बार डकार आनेपर कानमें कड़ाकसे आवाज़ होती है।

नाक।—नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह बदबूदार श्लेष्मा निकलता और नाक बन्द हो जाती है। सर्दी होनेपर नासारन्ध्रमें संचित श्लेष्मा सूखकर पपड़ी (Crusts) के रूपमें परिवर्तित हो जाता है (कैलि-बाई)। नाकके भीतर सूखापन, नासापुट फटा-फटा और किनारोंकी खाल उधड़ जाती है। माथेमें खून जमता है, मुँह गर्म हो उठता है और इसके बाद, सन्ध्याके बाद और रातमें (रात १० बजे—हैनिमैन) नाकसे खून गिरता है (फेर, मिलिलोट)।

मुखमण्डल।—मुखमण्डलमें ऐसा मालूम होता है, मानो मकड़ेका जाल लगा हुआ है (बेराई-कार्ब, बोर, ब्रोम, रैनान-सिलिरेटस)। चेहरा मलिन और पीला और आँखके कोनेमें नीलिमा लिये कालापन। मुँहके ऊपर विसर्प रोग, शीघ्र चारों ओर फैल जाता है। भीतर पीव पैदा हो जाता है और उसमें जलन पैदा हो जाती है तथा उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है; जर्णा दाहिने पार्श्वसे आरम्भ होकर बाईं ओर फैल जाता है (एपिस; बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैल जाता है—रास-टक्स)। मुँहके एक पार्श्वके पक्षाघातकी वजहसे मुखमण्डलकी पेशी टेढ़ी पड़ जाती है और मुँहसे साफ़-साफ़ बात नहीं निकलती। मूँछें उड़ जाती हैं (कैप्स, कास्टि, नेट्र-मूर, सेलिन और हजामतके कारण पैदा हुए घावकी वजहसे—नेट्र-मूर; शोकके बाद—ऐसिड-फास)। दोनों ओंठ फटे और ओठके संयोग स्थानपर जखम हो जाता है (कार्बिडयुरैंगो)।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द—रातमें या सन्ध्याके बाद शय्यापर सोनेके समय, कभी-कभी मुखमण्डल दाँतमें दर्दके कारण गर्म हो उठता है और गाल फूल जाते हैं; उत्तापसे बढ़ता है; कोई ठण्डी चीज़ पीनेपर दाँतमें दर्द हुआ करता है। मुँह, मसूढ़ा और नाकके भीतरसे पेशाबकी गन्ध निकलती है। सबेरे मानो मुँह सड़ जाता है। मुँहमें बहुत ज्यादा लार जमती है

और तालु तथा गलेके भीतर श्लेष्मा भरा रहता है। मुँहकी पेशियोंके पक्षाघातकी वजहसे बोलनेमें व्याघात होता है।

पाकाशय।—सवेरे और भोजनके बाद बहुत प्यास। पेटमें केवल अम्ल होता है और भूख खूब लगती है। गर्म पदार्थ पेटमें सहन नहीं होते (साइलि)। मुँह तीता और खट्टी डकार आती है। जो खाता है वही अम्लमें परिणत होता है और गलेमें चढ़ता है (कैल्के, कार्बो-वेज, कार्ब, लाई, मैंगि, ऐण्टिम-टार्ट); प्रत्येक बार भोजनके बाद जी मिचलाता है और वमन होता है (सोने या कुछ खाने बाद—आर्स, वेरेट, ब्राई)। ऋतुके समय सवेरेका वमन, रोगिनी बहुत कमजोर और सुस्त हो पड़ती है (ऐल्यू, कार्बो-ऐन, काक्यु)। डकार खट्टी या खाये हुए पदार्थके स्वादसे भरी; डकार आनेपर पेटका भार कम हो जाता है; मध्याह्न भोजनके बाद बदबूदार सड़ी डकार आया करती है और कलेजेमें जलन होती है। बराबर समयका अन्तर देकर कभी-कभी पाकाशयमें शूलकी भाँति दर्द होता है। पाकस्थलीमें शूलका दर्द। पाकस्थलीमें शूलका दर्द होता है और बहुत दबाव मालूम होता है और कभी-कभी दर्दके समय वमन होता है। अधलेटी अवस्थामें और शय्याके उत्तापसे शूलका दर्द घट जाता है। पेटमें ऐसा मालूम होता है, कि गुल्मकी तरह एक पदार्थ अड़ा हुआ है (कार्बो-ऐन, कैस्टोर, डिजि, कैलि-कार्ब, लेके, लोबेल)। ऊपरी पेटके तेज़ दर्दको दबानेके लिये रोगी कुछ खानेके लिये घबड़ा उठता है; विशेषकर मध्याह्न और रातमें। पाकस्थलीमें जलनकी वजहसे रोगी कुछ खाये बिना रह नहीं सकता। पाकाशयमें ऐंठन होती है, फिर खा लेनेपर अच्छा हो जाता है।

अन्त्राशय।—सवेरेके भोजनके बाद ही यकृतमें दर्द आरम्भ हो जाता है और इसी वजहसे रोगीको वाध्य होकर सो जाना पड़ता है—तलपेटमें ऐसा मालूम होता है, मानो अब कै हो जायगी। पेट बहुत फूला और कड़ा रहता है—मानो उसमें वायु भरा हुआ है (लाई, रैफेनस)। उदरमें बेंगकी बोलीकी तरह कर-कर शब्द होता है (आर्जेण्ट, कोलो)। माथेका खून जमकर भार मालम होता है, सरमें चक्कर आता है और पेट फूल उठता है। दाहिनी करवट सोनेपर उदरके वाम पार्श्वमें दर्द और बाईं करवट सोनेपर उदरके दाहिने पार्श्वमें दर्द होता है। पुट्ठे (Inguinal) ग्रन्थियोंमें दर्द और सूजन। पुट्ठेके छेदके मुँहपर वायु इकट्ठा होकर बहुत दबाव मालूम

होता है, प्रायः कब्जियतके साथ नाभि-प्रदेशमें महीन सलाई गड़नेकी तरह दर्द उत्पन्न होकर पीठमें और कोखमें फैल जाता है—सन्ध्याके समय बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—प्रायः स्वभाविक कब्जियत बनी ही रहती है; मल बड़ा, कड़ा और गांठ-गांठ तथा आपसमें सूत्रमय आँवसे मिला रहता है (हाइड्रैस्ट्र)। गाँठें बहुत बड़ी और बहुत तकलीफ़से निकला करती हैं (सल्फ़); पाखाना होने बाद मलद्वार क्षतविक्षत और दर्द भरा हो जाता है (मल कड़ा और खड़ियेकी तरह सफ़ेद—पैलेड; गोल, कड़ी और काली गांठें—ओपि, चेलि, प्लम्ब, थूजा; मेषके मलकी तरह—चेलिडो, प्लम्ब, रियुटा, बार्बा; कुत्तेके मलकी तरह लम्बा, पतला और कड़ा—कास्टि, फास, प्रूनस-स्पाई; बहुत बड़ी कड़ी, गांठें बड़ी तकलीफ़से निकलती हैं—ब्राई, कैलि-कार्ब, नक्स-वोम, वेरेट)। उदरामय—मल धुमैला और पतला; अजीर्ण अवस्थामें खाये हुए पदार्थ मिला, उसमें असह्य बदबू, प्रलेप (मरहम) आदिसे घाव अच्छे कर देनेपर प्रायः ऐसा ही हो जाया करता है। कब्जियत रोगमें यकृत बहुत कड़ा मालूम होता है। कभी-कभी केचुएकी तरह या सूत्र क्रिमी निकला करती है (ऐब्सिन्थ, कार्बो-वेज, सिना, फ़ेरम, टियुक्रि, मर्क्यु, साइलि, सल्फ़, टेरिब)। मलद्वारमें अर्शकी तरह मसा हो जाता है और पाखाना होने बाद मलद्वारमें जखम हो जानेकी तरह हो जाता है।

पेशाब।—प्रबल (कास्टि, ऐसिड-फास, पल्स, स्क्वियुला, स्टैफिस) और तकलीफ़ देनेवाला पेशाबका वेग—बून्द-बून्द पेशाव होता है (कैम्फ़ो, आर्नि, कैन्थ, क्लिमैट, कोपेवा, इयुफोर्ब, सल्फ़) और पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है (कैन्थ, ग्रैनेट, लैके, मार्क, जिङ्क)। बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ी लारका पेशाव होता है और इसके बाद ही गदला (Turbid) हो जाता है और सफ़ेद आभा लिये कुछ लाल रङ्गकी तली जमती है (सफ़ेद तली—Sediment—कैल्के, कोलो, कोना, ऐसिड-नाइ, फास, जिङ्क; हल्का लाल रङ्ग—कैलि-बाइ, लाइ, नैट-मूर, पल्स, सिपि)। शय्यामें पेशाब—पेशाब करनेके समय त्रिकास्थि (Sacrum) के भीतर और पीठकी रीढ़के सबसे निचले भागमें दर्द मालूम होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न होना (ऐग्नस, कैनाब, क्लिमैट, कैलि-कार्ब, लाइ, रोडो)। शिश्न और लिङ्गावरकके ऊपर दाने

यां फुन्सियाँ निकलती हैं। रमण और आलिङ्गनके समय जंघाकी पोटलीकी पेशीमें ऐंठन होती है। आलिङ्गनके बाद दोनों पैर ठण्डे, सुस्त, देह गर्म और पसीना हो जाया करता है। रमणके बाद वीर्यस्खलन नहीं होता (कैलेड, इयुजिनिया, लैके, लाई; बहुत थोड़ा वीर्यस्खलन—ऐगार, प्लम्ब)। रमण-आलिङ्गनमें बहुत थोड़ा आराम मालूम होता है (ऐनाक, कैलेड, प्लैट)। कामके अतिरिक्त व्यवहार (बहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचालन) के कारण जननेन्द्रिय कमजोर और शिथिल हो पड़ती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमण और आलिङ्गनकी इच्छा न होना (कास्टि, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पेट्रोल)। योनिके बाहरी भागमें रस और पीब-भरे दाने (Pustules) निकलते हैं (मर्क, ऐण्टि-टार्ट); योनिमें जखम मालूम होता है। ठण्ड लगते ही रोगिनीका डिम्बाधार फूल उठता है, खासकर बाईं ओरका (लैके; दाहिनी ओरका—एपिस, बेल)। ऋतुके बाद डिम्बाधार फूलता है और कड़ा हो जाता है। ऋतुके पहले और ऋतुके समय दाहिने डिम्बाशयमें छेदने, दबाने और फूटनकी तरह दर्द मालूम होता है (ओपि, पैलेड); ऋतुका स्राव बहुत फीके रङ्गका (पल्स); ऋतु देरसे होता है और बहुत दर्द होता है; ठण्डे पानीसे पैर धोनेके कारण ऋतु देरसे होता है (पल्स, नेट्रम-म्यूर)। ऋतुके समय ऊपरी पेटमें ऐसी तकलीफ़ होती है, मानो कुछ फट रहा है (यकृतके भीतर—ऐसिड-फास)। ऋतुरोध होनेकी वजहसे हाथ-पैर बहुत भारी मालूम होता है। प्रदर—तलपेट जकड़ जाता है और कमरमें बहुत कमजोरी मालूम होती है; स्राव सफ़ेद पानीकी तरह होता है (ग्रैफ, सिपि, सिलिका; अण्डेकी लारकी तरह—ऐमोन-म्यूर, बोर, बोवि, प्लैट); कषाय (Acrid) और त्वचाको क्षय करनेवाला (Excoriating—ऐल्यू, आर्स, बोर, कोना, क्रियो, मर्क, नेट्र-म्यूर, नाई-ए, सिपि); स्राव दिन-रात झटकेसे निकला करता है (कैल्के, काक्यु, ग्रैफ, लाई); ऋतु होनेके पहले और बाद प्रदरका स्राव दिखाई देता है (ऐल्यू, बोरैक्स, बोविस्टा, काक्यु; स्तनके ऊपर फोड़ा हो जानेपर जो सिकुड़ी हुई मोटी त्वचा है, उसका दूधवाली शिरापर दबाव पड़नेके कारण दूध निकलनेमें व्याघात पहुँचता है; स्तनमें बार-बार फोड़ा होकर फिर कर्कट (Cancer) रोगमें परिणत हो जाता है (कोनायम देखिये)। ऋतुके पहले और बाद सुस्त करनेवाली खाँसी (पहले—सल्फ); ऋतुके समय बायें स्तनके नीचे तेज़ दर्दकी वजहसे रोगिनीकी नींद खुल जाती है (ऐक्टि);

स्तनकी ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं (बेल, कार्बो-ऐन, कोना ; सूख जाती हैं और उनमें जखम बन जाता है—आयोड, ऐसिड-नाई, सेबाल-सेरुल)। स्तनकी घुंडीमें घाव हो जाता है और फटा-फटा-सा हो जाता है (सल्फ़, कैलेण्डु, कास्टि, फाइटो, ऐसिड-फ्लु)।

श्वास-यंत्र ।—वायुनलीके भीतर मानो खरोंचता है और रुखड़ापन मालूम होता है। श्वास रुकनेकी सम्भावनाकी वजहसे रोगीकी नींद खुल जाती है और वह घबड़ाकर शय्यासे उतर पड़ता है, सामने जो कुछ अवलम्बन दिखाई देता है, उसे ही पकड़ लेता है और तुरन्त ही कुछ खा लेनेपर तकलीफ़ घट जाती है। आधी रातके बाद तकलीफ़ बढ़ जाती है। सीढ़ीपर चढ़ने या घोड़ेपर चढ़ने, जम्हाई लेने या छातीपर हाथ रखनेसे छातीमें दर्द मालूम होता है ; थोड़ा हिलनेसे ही कलेजा धड़कता है ; विषन्नताके साथ वक्षमें साँय-साँय शब्द (स्पञ्जि, हिप, कैलि-कार्ब, सैम्बु, स्टैन)।

प्रत्यङ्गादि ।—सर झुकानेपर या हाथ उठानेपर गर्दनके पिछले भागमें तेज़ दर्द मालूम होता है, मानो अस्त्रसे काट रहा है। गलेकी गांठ फल जाती है। पीठमें ऐसा मालम होता है, मानो चींटी रेंग रही है। अंगुलीकी गाँठें सब मानो मरोड़ खा गई हैं, इस ढङ्गका दर्द होता है (मानो सन्धि भ्रष्ट हो गई है—ब्राई, रियुटा)। अंगुलीकी गाँठें सब वातकी वजहसे मोटी हो जाती हैं (कैल्के, डिजि, लिड, स्टैफाई)। उरु और पैरकी अंगुलियाँ सब सुन्न और अकड़ी मालूम होती हैं ; जानु टेढ़ा करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो अकड़ गया है। दोनों पैरके बीचकी खाल उधड़ जाती है। जानुके भीतरकी ओर पुट्ठेमें दादकी तरह हो जाता है। पैरपर घाव होकर उससे गाढ़ा गोंदकी तरह रसस्राव होता है। हाथके नख सब टूटनेवाले, टुकड़े-टुकड़े होकर टूट जाते हैं और टेढ़े-मेढ़े निकलते हैं (ऐण्टिम-क्रूड)। नखमें दर्द और घाव हो जाता है ; नख सब बहुत मोटे और व्यवहार न करने योग्य हो जाते हैं।

त्वचा ।—रोगीका शरीर बहुत खराब, सामान्य जखममें भी पीव पैदा हो जाता है (हिप, बोर), पुराने जखमके चिन्ह सबपर फिरसे जखम हो जाता है (ऐसिड-फ्लु, कास्टि, लेके) ; कानके ऊपर जखम (कैल्के-पाई देखिये) और पीछे हाथ-पैरकी अंगुलियोंके गाखेमें और शरीरके कितने ही स्थानोंमें फुन्सियाँ

पैदा हो जाती है और उनमें घाव होता है और उससे स्वच्छ गाढ़ा गोंदकी तरह रस निकलता है ; शरीरकी त्वचा बहुत सूखी और बिना पसीनेकी लसिका ग्रन्थियाँ फूली (बैराई, कैल्के)। हाथ-पैरके गासेमें, पुट्ठे में, गलेमें और कानके पीछे खाल उधड़नेकी तरह हो जाता है, विशेषकर बच्चोंमें ऐसा अधिक दिखाई देता है (लाई, कैल्के, कैलि-म्यूर)।

निद्रा ।—दिनमें और सन्ध्याके बाद बहुत नींद आती है। रातमें अच्छी तरह नींद नहीं आती ; गुरुतर विषयोंकी चिन्ताकी वजहसे आधी रातके पहले नींद नहीं आती। मृत्यु और आग लगनेके सपने देखता है। नींदमें माथेसे पसीना निकलता है। रातमें नाकसे खून गिरता है। श्वास-रोध होनेका उपक्रम होनेपर नींद खुल जाती है। निद्रित अवस्थामें अनवरत बका करता है। निद्रितावस्थामें शय्यामें पेशाब कर देता है (सिना, सिपि)।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—सवेरे और सन्ध्याके समय कम्प होता है (उत्ताप हो या न हो), इसके बाद ही पसीना होता है। गाड़ीपर चढ़कर घूमनेके समय शरीर गर्म हो उठता है। पसीना खट्टा, अम्लाक्त, कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है और बहुत बदबू रहती है। रोज़ आनेवाला प्रात्यहिक ज्वर, सन्ध्याके समय कम्प, उसके एक घण्टा पहले मुँह गर्म और पैरका तलवा ठण्डा हो जाता है। पसीना बिलकुल ही नहीं होता।

वृद्धि ।—रातमें, ऋतु-स्रावके समय और बाद, शरीर हिलानेपर, गाड़ीपर चढ़नेपर (बहरापनका घटना), बाईं करवट सोनेपर, उत्ताप, स्नान और वायु-सेवनसे।

उपशम ।—विश्रामसे, भोजनके बाद और गर्म दूध पीनेपर।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अनुपूरक—कास्टि, हिप, लाई। लाइको-पोडियम पल्सेटिलाके बाद उपयोगी है। मोटापन घटानेके लिये कैल्केरिया कार्बके बाद, चर्म्मरोगमें सलफरके बाद और बहुत अधिक प्रदर-स्रावके सम्बन्धमें सिपियाके बाद इसका व्यवहार लाभदायक है। इसके अलावा ऐसिड-नाई, ऐण्टि-क्रूड, कार्बो-ऐन, लैके, पेट्रोल, पियोन, रैटान।

दोषघ्न ।—ऐकोन, आर्स, चायना, नक्स-वोमिका।

तुलनीय ।—रास-टक्स (विसर्प) ; दाहिना डिम्बाधार (पैलेड, ओपियम) ; हँसना और रोना (अरम, पल्स, लाइको इत्यादि)। स्थूलता

(कैल्केरिया); जलन (आरम)। स्त्रियोंका आर्त्तव आरम्भ होनेके समय पल्स जिस तरह लाभदायक है, आर्त्तव बन्द होनेके समय उसी तरह ग्रैफाइटिससे लाभ होता है—डा० एच, सी, ऐलेन। पल्समें दूध पीनेसे वृद्धि और ग्रैफाइटिसमें दूध पीनेपर घटना।

शक्ति।—६ठे दशमिक विचूर्णसे २०० शततमिक क्रम। मलद्वार और स्तनके जखम रोगमें ३रे दशमिक विचूर्णके साथ सिटेसियन मलहम मिलाकर प्रयोग करनेपर लाभ होता है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ५० दिन।

ग्रैटियोला आफिसिनैलिस

(GRATIOLA OFFICINALIS)

दूसरा नाम।—हेज हिसप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फूल खिलनेके पहले ही पौधेसे मूल अर्क तैयार करना पड़ता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हैजा; कब्जियत; ऐंठन; अतिसार; शोथ; आँखकी बीमारी; पाकाशयका शूल; वात; बवासीर; सर-दर्द; मस्तिष्कमें जल-सञ्चय; व्याधि-शङ्का; मूर्च्छा-वायु; उन्माद; कृत्रिम मैथुन; स्नायुशूल; कामोन्माद; धनुष्टङ्कार।

उपयोगिता और आभास।—पाकाशय और अन्त्राशयपर ही इसकी क्रिया विशेषकर प्रकट हुआ करती है। आँतोंका शूल; गर्मीके दिनोंमें बहुत अधिक पानी पी लेनेके कारण उदरामय, खून मिला मल, पाण्डुरोग, हाथ-पैरोंका काँपना, धनुष्टङ्कार आदि अकड़नकी बीमारियाँ, ऐंठन वगैरह इसके प्रधान क्रिया-फल हैं। बहुत अधिक ईर्षा और अहङ्कार आदिकी वजहसे मानसिक बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है। भोजनके बाद सरमें चक्कर आना, भोजनके बाद भी पाकस्थलीका खाली मालूम होना और साथ ही फिर भूख मालूम होना वगैरह ग्रैटियोलाके कई निर्णायक लक्षण हैं। शारीरिक परिश्रमके बाद पाखाना होनेपर बवासीरका मसा बाहर निकल पड़ता है।

पाकस्थली क्रमसे अधिकतर खाली मालूम होती है, पर भोजन नहीं कर सकता। पाकस्थलीके पीछेवाली स्नायुग्रन्थि (Solar Plexus) की उत्तेजनाकी वजहसे ऊपरी पेटमें ऐंठन होती है और यह दर्द चारों ओर फैल जाता है ; मानसिक उद्वेग, चबानेकी तरह दर्द, पाकस्थलीका खाली मालूम होना और ऐसा मालूम होना कि ऊपरी पेटमें कुछ लोटता फिरता है। कमरमें पीछेकी ओर बहुत तेज़ मरोड़की तरह दर्द, गर्म घरमें प्रवेश करनेपर शरीर काँप उठता है ; चेहरा लाल और गर्म हो उठता है, मानो मस्तिष्क संकुचित हो गया है। मस्तककी ओर खूनका दौरान और माथेमें रक्त चढ़ता है और आँखसे कुछ दिखाई नहीं देता। स्त्रियोंका कामोन्माद और अस्वाभाविक उपायसे उसकी परितृप्ति यह इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है (डा० कम्टन नार्नेट)।

लक्षणावली

मन।—गहरी चिन्तामें निमग्न, स्वार्थ-सिद्धिके सिवा दूसरी बात ही नहीं जानता (आर्स, सल्फ, प्लैट, पल्स)। बहुत अहंकारके कारण मानसिक बीमारियाँ, चिड़चिड़ा स्वभाव ; जीवनसे वितृष्णा (ऐसिट-क्रूड, अरम, चायना, नैट्र-म्यूर, ऐसिड-म्यूर, साइकूर, फास, स्पाइजि, स्पञ्जि)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, ऐसा मालूम होना, कि सारी देह चक्कर खा रही है (आर्नि, बेल, ब्राई, साइक्यू, सिक्लेमेन, नक्स, पल्स); बैठने और पढ़नेके समय ऐसा मालूम होना है मानो माथा सामनेसे पीछेकी ओर और पीछेसे सामनेकी ओर डोल रहा है। माथेमें बहुत तेजीसे खून चढ़नेके कारण कपालमें टपक होती है और ऐसा मालूम होता है, कि चारों ओर काला हो गया है (बेल, जेलसि, साइक्यू, लैक-कैन, लाई, पल्स); हिलने-डोलनेपर बढ़ता है ; बहुत यंत्रणाकी वजहसे रोगी कभी-कभी बेहोश हो पड़ता है, दीर्घ निद्राके बाद कहीं लक्षण आदि घटते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो मस्तिष्कके सङ्कोचनकी वजहसे मस्तक संकुचित होकर और भी छोटा हो गया है। सर-दर्दका बढ़ना—आसन छोड़कर उठनेपर (लेमियम-ऐल, सल्फ)। हिलने-डोलनेपर (ब्राई, काक्यु, क्रोकस, ग्लोन) और वायु सेवनके लिये चलनेके समय (ऐल्यू, बेल, ब्राई, ग्लोन, लाई ; घटता है—सिक्लेम, गुयाई, हायो, ऐ-म्यूर)। ललाट देशकी त्वचा सिकुड़कर बहुत खींचन मालूम होती है। मुँह गर्म और लाल हो उठता है।

आँख ।—दोनों आँखें सूखी, मानो उनमें धूलके कण गिर गये हैं (आर्स, ब्राई, कार्बो-वेज, इयुफ्रे, फाइटो)। पढ़नेके समय आँखमें पानी भर आता है और अच्छी तरह दिखाई नहीं देता—सब गदला दिखाई देता है (ड्रोसेरा, सिनियेन, नेट्र-म्यूर, रास-वेन)। पढ़नेके समय दूरकी चीज़ दिखाई नहीं देती (Myopia)। पासकी चीजकी अपेक्षा दूरकी चीज साफ़ दिखाई देती है (ड्रोसेरा, साइलि, कैल्के, आर्जेण्ट-नाई)। कभी-कभी एकाएक दृष्टि लोप हो जाती है। पहले-पहल आँख खोलनेके समय वृक्ष आदि सभी सफेद दिखाई देते हैं।

गलेके भीतर ।—कण्ठमें ऐसा दबाव मालूम होता है कि न जाने कितना श्लेष्मा इकट्ठा हो गया है (एरम-ट्रि, आयोड, ऐल्यू, कोना, कास्टि)। गलेमें दर्दकी वजहसे बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा होती है (बेराई, बेल, कैन्थ, मर्क); कोई भी चीज निगलनेमें बहुत कष्ट होता है, मानो कण्ठनाली संकुचित हो गयी है ; खाली घूंट लेनेके समय दर्द बढ़ जाता है (कोई पदार्थ निगलनेपर नाकके छेदसे बाहर निकल आता है—एरम-ट्रि, लैके, मर्क, फाइटो)।

पाकस्थली ।—मुँहमें साफ़ पानीकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा होता है और बार-बार थूकना पड़ता है। रोटीके सिवा और किसी चीज़में रुचि नहीं रहती, धूम्रपानकी इच्छा नहीं होती। प्रबल प्यास, खानेके समय और बाद सरमें चक्कर आता है। तीता या मीठा स्वाद मिली डकार आती है, पाकस्थली शून्य या ठण्डी मालूम होती है (शून्य मालूम होना—हाइड्रेस्ट, मर्क, सल्फ़, इग्ने ; ठण्डी मालूम होना—आर्स, कैम्फ, चायना, कोलचि)। नाक रुकनेके साथ-साथ वमन, पित्तमय खट्टा या तीता पदार्थ वमन। भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरी पेटमें एक टुकड़ा पत्थर इधर-से-उधर लोट रहा है। भोजनके बाद पाकस्थलीका खाली मालूम होना और फिर भूख लग आना (कैल्के, कास्टि, किनन-सल्फ़, सिना)। पेट खूब खाली मालूम होता है, इतनेपर भी खा नहीं सकता। रह-रहकर प्रबल मिचली आती है, डकार आनेपर ही आराम मिलता है। ऊपरी पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द आरम्भ होकर क्रमसे चारों ओर फैल जाता है। माथेमें दर्दके साथ प्रबल वमन, पहले हरी, फिर सिर्फ़ पानीकी तरह कै होती है। पाकस्थली ठण्डी मालूम होती है, मानो पानीसे भरी हो।

अन्त्राशय ।—उदरमें दबाव मालूम होता और नाभिके पास जकड़ जानेके कारण रोगी सामनेकी ओर झुक पड़ता है, हवा छूटनेपर आराम मिलता है। वायु इकट्ठा होकर पेटमें दबाव मालूम होता है, जी मिचलाता है और गलेमें कड़वी डकार आती है। शामको भोजनके बाद और रातमें पानीकी तरह दस्त होता है। चलनेके समय पेटमें बहुत भार मालूम होता है, बैठनेपर फिर नहीं रहता। उदरमें मरोड़की तरह तेज़ दर्द, यह दर्द समूची देहमें फैल जाता है (क्यूप्रम देखिये)।

मलांत्र और मल ।—गर्मीके दिनोंमें बार-बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आना या सांघातिक विसूचिका (Cholera Mobrus)। मल पानीकी तरह पीला या हरा, फेन-भरा ; दस्त वेगसे होता है ; भोजनके बाद डकार आनेपर या वायु छूटनेपर घट जाता है। पाखाना होनेके पहले कलकल शब्द होता है और नाभि-प्रदेशमें काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; पाखाना होनेके समय जी मिचलाता है, मलान्त्रमें जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो मलद्वारमें जख्म हो गया हो। पाखाना हो जाने बाद कमरके पीछे ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो जोरसे मरोड़ा जा रहा है। कभी-कभी अनजानमें पाखाना हो जाता है। मलके साथ सूत्रकृमि निकलती है। पाखाना होनेके साथ मलनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणादायक छोटे-छोटे अर्बुद (Tumors) निकल आते हैं। पाखाना होने बाद जाड़ा लगता है और सिहरावन होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु, बँधे समयके बहुत पहले होता है, स्राव बहुत ज्यादा होता है और बहुत दिनोंतक हुआ करता है। कामोन्माद (ओरिगेनम, कैन्थरिस) और अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्ति। दाहिने स्तनमें तेज़ दर्द, ऋतुके समय उठनेपर बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने उसका गला जोरसे धर दबाया है। पीठकी ओर कमरमें जकड़ जानेकी तरह दर्द (कैलि-बाई, साइक्यू, कास्टि, ऐण्टि-टार्ट) ; पाखाना होने बाद इसी कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने जोरसे मरोड़ दिया है। कन्धा, हाथ और हाथकी अंगुलियोंमें वातका दर्द, विशेषकर कोहनी और कलाईमें (ऐक्टी-स्पाई) ; दाहिनी तलहथी खुजलाती है। घूमनेपर उदरमें दर्द होता है। बैठनेपर

आँख ।—दोनों आँखें सूखी, मानो उनमें धूलके कण गिर गये हैं (आर्स, ब्राई, कार्बो-वेज, इयुफ्रे, फाइटो)। पढ़नेके समय आँखमें पानी भर आता है और अच्छी तरह दिखाई नहीं देता—सब गदला दिखाई देता है (ड्रोसेरा, सिनियेन, नेट्र-म्यूर, रास-वेन)। पढ़नेके समय दूरकी चीज़ दिखाई नहीं देती (Myopia)। पासकी चीजकी अपेक्षा दूरकी चीज साफ़ दिखाई देती है (ड्रोसेरा, साइलि, कैल्के, आर्जेण्ट-नाई)। कभी-कभी एकाएक दृष्टि लोप हो जाती है। पहले-पहल आँख खोलनेके समय वृक्ष आदि सभी सफेद दिखाई देते हैं।

गलेके भीतर ।—कण्ठमें ऐसा दबाव मालूम होता है कि न जाने कितना श्लेष्मा इकट्ठा हो गया है (एरम-ट्रि, आयोड, ऐल्यू, कोना, कास्टि)। गलेमें दर्दकी वजहसे बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा होती है (बेराई, बेल, कैन्थ, मर्क); कोई भी चीज निगलनेमें बहुत कष्ट होता है, मानो कण्ठनाली संकुचित हो गयी है ; खाली घूंट लेनेके समय दर्द बढ़ जाता है (कोई पदार्थ निगलनेपर नाकके छेदसे बाहर निकल आता है—एरम-ट्रि, लैके, मर्क, फाइटो)।

पाकस्थली ।—मुँहमें साफ़ पानीकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा होता है और बार-बार थूकना पड़ता है। रोटीके सिवा और किसी चीज़में रुचि नहीं रहती, धूम्रपानकी इच्छा नहीं होती। प्रबल प्यास, खानेके समय और बाद सरमें चक्कर आता है। तीता या मीठा स्वाद मिली डकार आती है, पाकस्थली शून्य या ठण्डी मालूम होती है (शून्य मालूम होना—हाइड्रेस्ट, मर्क, सल्फ़, इग्ने ; ठण्डी मालूम होना—आर्स, कैप्स, चायना, कोलचि)। नाक रुकनेके साथ-साथ वमन, पित्तमय खट्टा या तीता पदार्थ वमन। भोजनके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो ऊपरी पेटमें एक टुकड़ा पत्थर इधर-से-उधर लोट रहा है। भोजनके बाद पाकस्थलीका खाली मालूम होना और फिर भूख लग आना (कैल्के, कास्टि, किनन-सल्फ़, सिना)। पेट खूब खाली मालूम होता है, इतनेपर भी खा नहीं सकता। रह-रहकर प्रबल मिचली आती है, डकार आनेपर ही आराम मिलता है। ऊपरी पेटमें ऐंठनकी तरह दर्द आरम्भ होकर क्रमसे चारों ओर फैल जाता है। माथेमें दर्दके साथ प्रबल वमन, पहले हरी, फिर सिर्फ पानीकी तरह कै होती है। पाकस्थली ठण्डी मालूम होती है, मानो पानीसे भरी हो।

अन्त्राशय।—उदरमें दबाव मालूम होता और नाभिके पास जकड़ जानेके कारण रोगी सामनेको ओर झुक पड़ता है, हवा छूटनेपर आराम मिलता है। वायु इकट्ठा होकर पेटमें दबाव मालूम होता है, जो मिचलाता है और गलेमें कड़वी डकार आती है। शामको भोजनके बाद और रातमें पानीकी तरह दस्त होता है। चलनेके समय पेटमें बहुत भार मालूम होता है, बैठनेपर फिर नहीं रहता। उदरमें मरोड़की तरह तेज़ दर्द, यह दर्द समूची देहमें फैल जाता है (क्यूप्रम देखिये)।

मलांत्र और मल।—गर्मीके दिनोंमें बार-बार अधिक परिमाणमें पानी पीनेकी वजहसे पतले दस्त आना या सांघातिक विसूचिका (Cholera Mobrus)। मल पानीकी तरह पीला या हरा, फेन-भरा ; दस्त वेगसे होता है ; भोजनके बाद डकार आनेपर या वायु छूटनेपर घट जाता है। पाखाना होनेके पहले कलकल शब्द होता है और नाभि-प्रदेशमें काटनेकी तरह दर्द मालूम होता है ; पाखाना होनेके समय जी मिचलाता है, मलान्त्रमें जलन होती है और ऐसा दर्द होता है मानो मलद्वारमें जखम हो गया हो। पाखाना हो जाने बाद कमरके पीछे ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो जोरसे मरोड़ा जा रहा है। कभी-कभी अनजानमें पाखाना हो जाता है। मलके साथ सूत्रकृमि निकलती है। पाखाना होनेके साथ मलनालीमें जलन और डङ्क मारनेकी तरह यन्त्रणादायक छोटे-छोटे अर्बुद (Tumors) निकल आते हैं। पाखाना होने बाद जाड़ा लगता है और सिहरावन होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु, बँधे समयके बहुत पहले होता है, स्राव बहुत ज्यादा होता है और बहुत दिनोंतक हुआ करता है। कामोन्माद (ओरिगेनम, कैन्थरिस) और अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-परितृप्ति। दाहिने स्तनमें तेज़ दर्द, ऋतुके समय उठनेपर बढ़ जाता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने उसका गला जोरसे धर दबाया है। पीठकी ओर कमरमें जकड़ जानेकी तरह दर्द (कैलि-बाई, साइक्यू, कास्टि, ऐण्टि-टार्ट) ; पाखाना होने बाद इसी कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने जोरसे मरोड़ दिया है। कन्धा, हाथ और हाथकी अंगुलियोंमें वातका दर्द, विशेषकर कोहनी और कलाईमें (ऐकोन-साई) ; दाहिनी तलहथ्थी खुजलाती है। घूमनेपर उदरमें दर्द होता है। बैठनेपर

उसके सामनेकी हड्डीमें अस्त्राघात या छेदनेकी तरह दर्द, टहलनेपर अच्छा रहता है। खानेके बाद सोनेपर एकदम चैतन्य रहनेके साथ धनुष्टंकार, इसके बाद गहरी नींद और रेतःस्खलन : नींद खुलनेपर शरीरके बाएँ हाथ और पीठमें दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरसे भाफ़की तरह पदार्थ निकलता है।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—एपिस, बेल, नक्स, लोरो, कैल्के रिला, जेल्स, युफ्रे।

दोषघ्न ।—कास्टिक, बेल, युफ्रे, नक्स-वोम।

तुलनीय ।—भोजनके बाद भूख—लोरोसि, कैल्के, चायना, सिना। पाखाना होने बाद पेट खाली मालूम होना—पेट्रोल। दृष्टि-लोप या सर-दर्द—जेल्स।

शक्ति ।—२रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

ग्रण्डेलिया रोबस्टा

(GRINDELIA ROBUSTA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्ते और बिना खिले फूलका अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायम हुआ है:—दमा ; श्वास-नाली प्रदाह ; चक्षु-प्रदाह ; शरीरपर लाल रङ्गकी खुजलीके दाने ; आँखकी बहुत-सी कड़ी बीमारियाँ ; तारका-प्रदाह ; खुजली ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; योनि-कपाटमें खुजली ; प्लीहामें दर्द ; बहुतसे जखम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—दमा, वायुनाली प्रदाह (Bronchitis) वगैरह रोगोंमें यह विशेष उपयोगी है और इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि रोगीके सोते ही उसकी साँस रुक जाती है और इसीसे उसकी नींद खुल जाती है। उसके बाद श्वास-प्रश्वासकी क्रिया नियमित भावसे हुआ करती है। इसके द्वारा आँखमें भी नाना प्रकारकी तकलीफें पैदा हो जाया करती हैं और अधिक मात्रामें क्विनाइन सेवन करनेपर माथेमें जैसी

पूर्णता और भार मालूम होता है, इसके सेवनसे भी वैसा ही मालूम हुआ करता है। बहुत तरहके चर्म-रोगोंमें भी इसकी उपयोगिता प्रमाणित हुई है।

लक्षणावली

मस्तक और आँख।—सरमें ऐसी पूर्णता मालूम होती है, मानो न जाने कितना क्विनाइन खा लिया है; आँखें लाल, मानो मस्तिष्कमें बहुत प्रदाह हो गया है। आँखके गोलेमें तेज़ दर्द, यह दर्द तेजीसे मस्तिष्ककी ओर दौड़ जाता है; आँख घुमाने-फिरानेसे बढ़ता है। आँखमें वातका दर्द फैलनेकी वजहसे उपताराका प्रदाह (Iritis); इसके साथ ही असह्य यन्त्रणा और प्रबल ज्वर। अन्धकारमें लक्षण आदि बढ़ जाते हैं और रोगीको अंधेरा अच्छा नहीं लगता (स्ट्रैमो)।

अन्त्राशय।—प्लीहा-प्रदेशसे तेज़ दर्द उरुतक फैल जाता है; प्लीहा बड़ी (सियैनोथस, कार्डुअस) हो जाती है। प्लीहा और यकृतके भीतर तेज़ दर्दकी वजहसे रोगी मुहूर्त्तभर भी स्थिर नहीं रह सकता; उसमें नयी वात-व्याधिकी तरह बहुत दर्द मालूम होता है।

श्वास-यंत्र।—रोगीके सोते ही उसका श्वास-प्रश्वास बन्द होनेका उपक्रम होकर नींद खुल जाती है और उस समय नियमित भावसे श्वास-प्रश्वासकी क्रिया होने लगती है (क्लोरम, जेलसि, लैक-कैन, लैके, ओपि, मर्क, प्रिसिपिट-रूबर)। दमा—बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह कफ़ निकल जानेके बाद श्वास-कष्ट घट जाता है; श्वास-कृच्छ्रताकी वजहसे रोगीको उठ बैठना पड़ता है। हूप खाँसीके साथ बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलता है (कक्कस-कैक्ट)।

त्वचा।—शरीरमें घमौरीकी तरह लाल-लाल दाने सब निकल आते हैं; मुखमण्डल, गर्दन और कभी-कभी समूची देह मानो ढँक जाती है और बहुत जलन होती है और खुजलाती है। पैरमें घाव—त्वचा फूलती है और भूरी हो जाती है और उससे बदबूदार रस निकलता है।

वृद्धि।—रोगवाला अङ्ग हिलाने, अन्धकारमें रहने और सोनेपर।

सम्बन्ध।—सदृश।—नींदके बाद वृद्धि—लैके; अन्धकारमें भय—स्ट्रैमो; सोनेमें भय—कार्बो-ऐनि इत्यादि। क्लोरम, जेलसि, लैक-कैन, ओपि,

कक्कस-कैक्ट, इरिडिक, मर्क-प्रिसिपिट-रूबर, ऐमोन-कार्ब, एरम-ट्रि, बैडियेगा, कैडमो-सल्फ, ग्रैफ।

दोषघ्न।—रास-टक्स।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम.

गुयैको

(GUACO)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—हैज़ा; अतिसार; जलातङ्क; श्वेत-प्रदर; पक्षाघात; वात; कशेरुकाकी बीमारी; जीभका पक्षाघात इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—यह सर्प-विषघ्न औषधके रूपमें विख्यात है। सदृश-विधानके अनुसार परीक्षा करनेपर इसकी क्षमता मेरु-दण्डपर प्रकाशित हुआ करती है और इससे पक्षाघात उत्पन्न होता है; इसलिये जीभ, ओठ और तालुमूल सुन्न हो पड़ता है। रोगी कोई भी चीज़ निगल नहीं सकता, जीभ हिलानेकी शक्ति नहीं रहती और कभी-कभी इस पक्षाघातके प्रतिक्षेपकी वजहसे (Reflex action) इसके द्वारा बहरापन भी पैदा हो जाया करता है। मेरुदण्डका उपदाह भी इसका अन्यतम क्रिया-फल है। प्रदरका स्राव गर्म, कर्कट रोग, उपदंश, विसूचिका प्रभृति इसके विषयीभूत हैं।

लक्षणावली

गलेके भीतर।—जीभ प्रायः सुन्न हो जाती है और भारी मालूम होती है और हिला नहीं सकता; स्वर और वायुनाली मानो पतली हो गयी ऐसा मालूम होता है; कोई चीज़ निगलना बहुत कष्टकर हो जाता है (जलातङ्क रोगाधिकारमें), इसके साथ ही बहरापन।

पेशाब।—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है और उसके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें फास्फेट नामक पदार्थ मिला रहता है (ऐ-फास);

मूत्रस्थलीसे कुछ ऊपरके स्थानमें दर्द और कमर तथा उरु बहुत भारी और चीण मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर—स्राव बहुत ज्यादा, जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड़ जाती है और रोगिनी कमजोर हो पड़ती है; उरुमें स्राव लगनेके कारण वह जगह धुमैले रङ्गको हो जाती है और वस्त्र आदिमें पीला दाग पड़ता है (कार्बो-ऐन, नक्स, प्रूनस); रातमें योनिमें खुजली और जलन होती है और रोगिनीको ऐसा मालूम होता है मानो योनिके भीतरसे आग निकल रही है (ऋतुस्राव गर्म मालम होता है—ऐल्य, बेलेड)।

गर्दन और पीठ।—मेरुमज्जामें उत्तेजना (Spinal Irritation), मेरुदण्डके ऊपरी अंशमें लगातार जलन और दर्द (ऐसिड-पिक, ऐक्टि-रेसि); निगलनेमें तकलीफ़ और स्वरनली ऐसी मालम होती है, मानो पतली होती जाती है; सामनेकी ओर देह झुक पड़नेपर दर्द बढ़ जाता है। पेटकी बीमारीमें पतला दस्त होनेके बाद कमरके पिछले भागके बीचमें और पीठमें दर्द होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—पैरके तलवेमें जलन होती है (ऐम्ब्रा, ऐसिड-फास) और ऐसा दर्द, मानो काट रहा है। दर्द आदि ऊपरसे नीचेकी ओर उतर आता है। बाँहकी पेशीमें, कन्धेमें, कोहनीमें और बाँह तथा हाथकी अंगुलीमें दर्द मालूम होता है। वंक्षण-प्रदेशमें दर्द मालूम होता है। दोनों पैर बहुत भारी मालूम होते हैं; निम्नाङ्गका पक्षाघात; गुल्फ-सन्धिमें छेदनेकी तरह दर्द। बाँह और कन्धेके सन्धि-स्थानपर इस ढङ्गका दर्द मालूम होता है, मानो सन्धि खिसक गयी है (ऐसेर, ऐसिड-मूरर, रियुटा, सेबाइ, टेरिब)। कन्धेमें जलन होती है (कार्बो-वेज, रास, टैबाक) इसका दर्द रातमें हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐल्यू, ऐसिड-फास, टिलिया, कैलि-ब्रोम, रैफेनस, कार्बो-ऐन, प्रूनस, कास्टि, जेल्स, ऐक्टि-रेसि, ऐसिड-पिक।

दोषघ्न।—क्रियोज, सलफर (श्वेत-प्रदर)।

तुलनीय।—बेलेडो (ऋतु-स्राव गर्म); फास्फोरिक-ऐसिड (श्वेत-प्रदर); (पीली आभा लिये स्राव) कार्बो-ऐनिम, नाइट्रिक-ऐसिड।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

गुयायेकम

(GUAIACUM OFFICINALE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इस वृक्षके गोंद या रससे तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—फोड़ा ; रजःस्वल्पता ; हड्डीकी बीमारी ; श्वासनलीका प्रदाह ; हड्डियोंका क्षय ; बच्चोंका दस्त-कै ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; गलनालीकी उपझिल्लीका प्रदाह ; वाधक ; कानका दर्द ; दुबलापन ; ज्वर ; छोटी सन्धियोंका वात ; सर-दर्द ; आँत उतरना ; वाधक ; पारेका विकार ; स्नायुशूल ; कर्ण-प्रदाह ; डिम्बाधार-प्रदाह ; क्षयकास ; पार्श्व-वेदना ; वात ; गृध्रसी ; पाकस्थलीकी बीमारी ; उपदंश ; गलेका जखम ; दाँतका दर्द ; वमन इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—स्मरण-शक्तिकी गड़बड़ी, काममें जी न लगना, विमर्ष और असन्तुष्ट-चित्तता और अपने मतकी प्रधानता दिखानेका स्वभाव ; मस्तिष्कमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द । ऐसा मालूम होना मानो मस्तिष्क माथेके भीतर अलग होकर पड़ा है ; चेहरे और मस्तिष्कके बाईं ओरका स्नायुशूल, प्रत्येक दिन सन्ध्यासे रातके अन्तिम भागतक यह दर्द हुआ करता है ; ऐसी अनुभूतिके साथ कि धमनियाँ सब खूनसे भर गयी हैं, माथेमें दर्द । ऐसा मालूम होता है कि आँखें मानो फूल गयी हैं और ठिकराकर बाहर निकलना चाहती हैं ; सामान्य वातके कारण नया गल-ग्रन्थि-प्रदाह ; कण्ठमें तेज़ जलनके साथ उपदंश दोषसे पैदा हुआ गलेका जखम, मुख-विवर, कण्ठ, पाकस्थली और हृत्पिण्डके शिखर-देशमें जलन मालूम होना ; शरीर हिलाने और लम्बी साँस लेनेपर बढ़ना ; फुसफुसावरण वगैरहसे पैदा हुआ छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, दाहिने स्तनके नीचेसे कन्धे तक फैल जानेवाला तेज़ दर्द (ऐक्टिया-रेसि, चेलिडो, मर्क-वाई, कैलि-कार्ब देखिये) । दोनों हनु कसकर मिलानेपर दाँतमें दर्द आरम्भ हो जाता है ; प्रत्येक दिन तीसरे पहर बहुत भूख मालूम होती है, प्रति दिवस सवेरे पानीकी तरह श्लेष्मा निकलता है ; गलेके भीतर श्लेष्मा अटक जाता है और जी मिचलाया करता है, जाड़ा मालूम होना और पसीना न होनेके साथ सवेरेके वक्तका उदरामय ; गर्मीके दिनोंके अतिसार रोगमें बच्चेका चेहरा वृद्धोंकी तरह दिखाई देता है ; इसके स्राव बहुत बदबूदार

होती हैं (बैप्टो, सोरिन, पाइरोज, सुस्त करनेवाला—कार्बो-ऐन) ; बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पेशाब होते ही फिर पेशाबका वेग, वृथा ही पेशाबका वेग होनेपर मूत्रस्थली ग्रीवामें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; पेशाबके समय मूत्रस्थलीमें फाड़नेकी तरह दर्द ; कलेजा धड़कनेके साथ वायु और स्वरनालीके प्रदाहकी वजहसे रोगीमें शरीर सञ्चालन शक्तिका घट जाना और सहायता माँगनेकी शक्तिका न रह जाना ; श्वास रोध होनेका उपक्रम ; सूखी खाँसी अथवा खाँसनेपर खून मिला और पीवकी तरह कफ निकलता है ; जम्हाई आनेपर और हाथ-पैर फैलानेपर शरीरके अस्वाच्छन्द्य भावका घट जाना ; सर्दी लगते ही हाथ-पैरोंमें दर्द होता है ; पहने हुए कपड़े गीले मालूम होते हैं ; पाकस्थलीकी बीमारी प्रति वर्ष ग्रीष्म या वर्षा ऋतुमें फिरसे आरम्भ हो जाती है इत्यादि कई गुयेकमके प्रकृतिगत लक्षण हैं । वात-व्याधि और छोटी सन्धियोंके वात रोगमें ही इसका प्रधान लाभ दिखाई देता है, रोगवाले अङ्गमें इतना दर्द होता है, कि स्पर्श सहन नहीं होता और गर्मीसे दर्द बढ़ जाता है—यह इसका अन्यतम निर्णायक लक्षण है । उपदंश या पारा-विष दूषित मनुष्योंकी वात-व्याधिमें यह विशेष लाभदायक हुआ करता है ।

लक्षणावली

मन ।—विस्मृति ; नाम याद नहीं रहता (क्रोटेलस, ओलियम), अपने मतकी प्रधानता रखनेवाला स्वभाव, दूसरेके दोष देखनेमें बहुत ही पटु (कास्टि, इपिका, लैके, नक्स-वोम, प्लैट, सल्फ, वेरेट), सभी विषयोंमें आना-कानी प्रकट करता है । मूर्खोंकी तरह एक ओर देखा करता है (हेलिबो), विशेषकर सवेरे ।

मस्तक ।—उठते ही सरमें चक्कर आता है (ब्राई, फेरम, नैट-मूर, फास, रासटक्स ; कुर्सीसे उठनेपर—फेरम, नक्स, पल्स ; शय्यासे—चेलिडो, नैट-मूर, काक्यु) । एक पार्श्वका वातका सर-दर्द, दर्द उसी ओरके गालतक फैल जाता है । अधकपारीका दर्द । माथेमें वात (Gout) ; माथा और चेहरेके बाईं ओरका स्नायुशूल, दर्द गलेके पिछले भागतक उतर आता है । बाहरी सर-दर्द, ऐसा मालूम होता है कि धमनी आदिमें बहुत ज्यादा खून चढ़ गया है, चेहरा और गर्दनतक दर्द हो जाया करता है । माथेके बाहरी प्रदेशमें टपक और कनपटीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (कैमो, क्युप्र, ग्लोन, पल्स),

मलने और चलनेपर आराम मालूम होता है, किन्तु स्थिर होकर खड़े रहने या बैठनेपर बढ़ जाता है; वायु सेवनके लिये टहलनेपर माथे और कपालमें पसीना होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो दिमाग माथेकी खोपड़ीके भीतर अलग होकर पड़ा है (नक्स-मस, कार्बो-ऐन, ऐमोन-कार्ब, लोरो कास्टि, रास)।

आँख।—आँख सचमुच ही फूल जाती है या ऐसा मालूम होता है मानो फूल गयी है (क्रोकस, पैरिस) मानो आँख बाहर निकल पड़ना चाहती है (Protruding—बेल, ग्लोन, आयोड, मिडोरिन ; रोगीको ऐसा अनुभव होता है मानो पलक बहुत छोटी हो गयी है और उससे आँख पूरी-पूरी नहीं ढँकती (चेलिडो), भौंहोंमें फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं (ऐसिड-फ्लू, सेलिन, थूजा)।

कान।—बाएँ कानमें खींचन और छेदनेकी तरह दर्द, बहुत तेज़ कर्णशूल (कानका दर्द)—बायें कानमें ऐसा दर्द मालूम होता है मानो फाड़े डालता है, रह-रहकर भयानक दर्द होने लगता है।

मुखमण्डल।—गालकी पेशी और हड्डीमें अस्त्रकी चोट और तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द। चेहरा लाल होकर फूल उठता है और उसमें दर्द होता है। आँख, नाक और गाल फूल उठते हैं, बच्चेका चेहरा बुड्ढोंकी तरह दिखाई देता है। मुँहके बाईं ओरका स्नायुशूल—दर्द माथा और गलेतक आक्रमण करता है, नित्य संध्याके ६ बजेसे अन्तिम रातके ४ बजेतक तकलीफ़ रहती है। दाँतका दर्द, ऊपर और नीचेका जबड़ा कसकर दबा रखनेपर बहुत दर्द हुआ करता है।

गलेके भीतर।—कण्ठनालीमें भयंकर जलन (ऐमोन-कास्टि, आर्स, कैन्थ, इयुफोर्ब, लैके, लोरो)। नया गल-ग्रन्थि प्रदाह, दाहिनी ग्रन्थि बहुत फूलती है और लाल हो जाती है। बराबर दर्द हुआ करता है और निगलनेके समय तेज़ सुई बेधनेका तरह दर्द मालूम होता है (बेराइ, बेल, हिप, कैन्थ, ऐसिड-नाइ, सिफिलिन)। कण्ठका भीतरी भाग सूखा, कण्ठनालीको भिगोये बिना कोई चीज़ निगल नहीं सकता। कण्ठमें मानो श्लेष्मा अटका हुआ है, ऐसा अनुभव होता है और जी मिचलाता है।

पाकस्थली।—प्रति दिन तीसरे पहर बहुत भूख मालूम होना (ऐगार, मेजेर, टियुक्रि); रोज़ सवेरे बड़े कष्टसे बहुत ज्यादा परिमाणमें

श्लेष्मा वमन हो जाता है। सभी प्रकारके खाद्य पदार्थोंसे अरुचि (रास, प्रूनस-स्पाई, डालका, ग्रैटि, कैन्थ)। सेव अच्छे लगते हैं; सेव खानेपर पेटकी बीमारी घट जाती है; दूधसे अरुचि (सिना, इग्ने, पल्स, सिपि); ऊपरी पेट और तलपेटमें बहुत जलन होती है। प्रति वर्ष गर्मीके दिनोंमें तेज़ बीमारी और खूनकी कै होती है। पेटकी पेशियाँ सब जकड़ जाती हैं और श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ़ होती है।

अन्त्राशय।—पेट फूल उठता है; आँतोंमें वायु अटककर उनमें ऐसा दर्द होता है, मानो कोई खोंचा मार रहा है। हवा छूटनेके बाद दर्द घट जाता है। वंक्षण प्रदेश (Groins) में मानो आँत उतर आयगी—इस ढंगका दर्द मालूम होता है (जेट्रि-क्रू, ग्रैनेट, नक्स, लाई)। उदरकी पेशियाँ फड़कती हैं।

मलान्त्र और मल।—उदरामय, सवेरे दस्त होने लगते हैं। रोगीको जाड़ा लगता है और पसीना नहीं होता। बाल-विसूचिका या बच्चोंके ग्रीष्मातिसारके कारण रोगी दुबला हो पड़ता है और चेहरा बुड्ढोंकी तरह हो जाता है (ऐब्रोट); कब्जियत—मल कड़ा और चूर-चूर होकर निकलता है (ऐमोन-म्यूर, मैग-म्यूर); मलमें बहुत बदबू।

पेशाब।—बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पेशाब करते ही फिर पेशाब लग आता है। वृथा पेशाबका वेग होनेपर मूत्रस्थलीकी ग्रीवामें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। पेशाब करनेके समय मूत्रनालीमें फाड़नेकी तरह तकलीफ़, मानो मूत्रनालीके माथेकी राहसे कोई तीक्ष्ण पदार्थ निकल रहा है (कैनाब-सैट, कैन्थ)।

पुं-जननेन्द्रिय।—किसी तरहका सपना दिखाई दिये बिना ही निद्रावस्थामें वीर्य निकल जाता है (नेट्रम-फास, हैमा)। प्रमेहका स्राव। उपदंश—मुख्य या प्राथमिक (Primary), पहला जखम आराम होनेमें बहुत दिन लगते हैं, शिश्नावरणी (चमड़ी—Prepuce) फूलती और कड़ी हो जाती है; यह सूजन बहुत दिनोंतक रहती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वात-प्रधान धातुवाली स्त्रियोंका थोड़ा या बहुत पुराना डिम्बाधार प्रदाह—इसके साथ ही अनियमित ऋतु, बाधक और मूत्रस्थलीमें संकोचन होनेका लक्षण।

श्वास-यन्त्र।—वायु और स्वरनालीका तेज़ और आक्षेपिक प्रदाह, रोगीके कलेजेमें धड़कन होनेकी वजहसे शय्यासे उतर या किसीको भी सहायताके लिये बुला नहीं सकता, उसको ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जाना चाहती हैं। सूखी खाँसी—थोड़ा-सा श्लेष्मा निकल जानेपर आराम मिलता है (क्लोरम, कार्बो-वेज)। कभी-कभी खून मिला या बहुत सड़ी गन्ध और पीवकी तरह बलगम (Sputa) निकलता है (कार्बो-वेज, लाइ, क्रियो, ऐ-नाइ); बाएँ फुसफुसावरण (Pleura) में सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है (ऐको), लम्बी साँस लेनेपर बढ़ना, विशेषकर फेफड़ेका क्षय-कास (Pthisis Pulmonalis) रोगमें। माथा हिलानेपर वक्षके ऊपरी अंशमें तेज़ दर्द और बदबूदार पीवका स्राव (Expectoration) निकलता है। हृदयके अगले भागमें एकाएक पूर्णता मालूम होती है और साँस रुकने-जैसा हो जाता है, निद्रावस्थामें ऐसा ही होकर सूखी खाँसी आया करती है।

गर्दन और पीठ।—पीठमें अकड़न—खासकर बाईं ओर, गर्दनसे कमर और कमरके पिछला भाग (Sacrum) या नितम्बतक—जरा भी हिलने या कमर घुमानेपर असह्य दर्द मालूम होता है; पर वहाँ हाथ लगाने या स्थिर होकर बैठे रहनेपर दर्द नहीं होता। तीसरे पहर पीठमें शीत मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—दाहिने कन्धेके शिखर-देशमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। बायाँ हाथ, कन्धा और कोहनीसे कलाईतक वातका दर्द। दाहिने हाथके अंगूठेमें मानो सुई गड़ गयी है—इस ढङ्गका दर्द मालूम होता है। बाएँ हाथकी कलाईमें वातका दर्द। वातकी वजहसे पैदा हुए प्रदाहके कारण घुटनेमें फोड़ा हो जाता है और वह फोड़ा इतना दर्द किया करता है, कि रोगी सो नहीं सकता। त्रिकास्थिके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, मानो आलपीनपर बैठा हुआ है। चलनेके समय दाहिने ऊरुके पेशीमें बहुत खींचन मालूम होती है और रोगीको सुस्ती मालूम होती हैं; बैठनेपर आराम मिलता है। दाहिना पैर फूलता है, खींचन होती है, अकड़न मालूम होती है और हिल नहीं सकता, पैर मुड़ जाते हैं और उसके साथ मिल जाते हैं। दाहिने पैरकी पोटली (Calf) में बाहरसे गुल्फतक ऐसा दर्द होता है, मानो तेज़ सलाई गड़ रही है। नीचेवाली सम्मुखास्थि छिद्र

भरी हो जाती है। रोगी अंश अकड़ा और कड़ा हो जाता है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो तेज़ सलाई बिंध रही है या काटा जा रहा है। साथ ही खींचन होती है—जरा भी हिलनेपर इस अंशमें दर्द ज्यादा मालूम होता है (ऐमोन-मूर, कास्टि, साइमेक्स, नेट्र-कार्ब)। रोगवाला अङ्ग बहुत गर्म मालूम होता है, सन्धियाँ सब फूलती हैं और उनमें दर्द होता है, दबाव या गर्मी बिलकुल ही सहन नहीं होती। हड्डीमें दर्द, शरीरसे पसीना आदि जो कुछ निकलता है सब बदबूदार रहता है (बेप्टी, सोरिन, पाइरोज, बहुत सुस्त करनेवाला—कार्बो-ऐन)। दर्द आदि एक दिन बाएँ अङ्गमें दूसरे दिन दाहिने अङ्गमें मालूम होता है, हड्डियाँ सब ठोस हो जाती हैं। सारे शरीरमें तकलीफ़की वजहसे बार-बार जम्हाई आती है और पैर मोड़नेकी इच्छा होती है और उससे कुछ आराम भी मिलता है। रातमें बहुत बदबूदार पानीसे तर कर देनेकी तरह पसीना।

निद्रा।—रोगी रातमें सो नहीं पाता, छटपटाया करता है। ऐसा मालूम होता है मानो गिर गया है, इसी वजहसे बार-बार उसकी नींद खुल जाती है। चित्त सोनेपर गला रुक जानेकी तैयारी हो जाती है और वह चिल्लाकर जाग उठता है। नींदके बाद रोगी लगातार क्लान्ति अनुभव करता है और उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसके सभी अङ्ग कसकर बँधे हुए हैं और मानो उसके कपड़े-लत्ते भींग गये हैं।

वृद्धि।— हिलने या हिलते ही, गर्मीसे, खड़े होनेपर, सवेरे, बिछावनसे उठने बाद, सन्ध्यामें सोनेके पहले और ठण्डी तर हवामें; जहाँ दर्द रहता है वहाँ छूना या रगड़ना बिलकुल ही सहन नहीं होता। कभी-कभी दबानेपर घट जाता है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—नक्स-वोमिका। वात रोगवाला शरीर टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है और हिलते ही उसमें बहुत दर्द मालूम होता है, खासकर इस सन्धि-स्थानमें वात गुटिकाएँ पैदा होनेपर **कास्टिकम**की अपेक्षा **गुयायेकम** ज्यादा फायदा किया करता है। ऐसे स्थलपर **कास्टिकम**के बाद **गुयायेकम**के प्रयोगसे बहुत लाभ दिखाई देता है।

सदृश।—मार्क, रास, ब्राई, मेजिर, रोडो, कोलो, केलि-आयोड, स्टिलिङ्ग, फाइटो, केलि-कार्ब, सेङ्गु, ऐमोन-मूर, बेप्टी, सोरिन, पाइरो-

जेन (शिशु विसूचिकामें सलफरके बाद इसका प्रयोग करना चाहिये)। उपदंश और वातमें मार्क-सोल और बादमें—गर्दन अकड़नेमें या गलेके अकड़न रोगमें **कास्टिकम**के बाद इसका व्यवहार करना चाहिये।

तुलनीय।—फास-एसिड (दर्द); सिमिसि (पार्श्व-वेदना); ब्रायो (पुराना वात)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रमतक। निम्न क्रम ही व्यवहारमें आता है।

गुयाराना

(GUARANA)

दूसरा नाम।—ब्रेजिल देशका ककुया, पालिनिया-सर्बिलिस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—फलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—स्नायविक अवसाद, बहुत ज्यादा चाय या काफी पीना और शराब पीनेके कारण सर-दर्द, उदरामय, शीत-पित्त, अदम्य निद्रालुताके लक्षणमें लाभदायक है।

लगातार पलकोंका हिलना (ऐगारि) इसका एक निर्देशक लक्षण हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐगारिकस, इग्ने, नक्स, काफिया, कोका, थिया।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

गुयारिया

(GUARIA)

दूसरा नाम ।—रेड-उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—छालसे टिंचर और विचूर्ण तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—संन्यास ; दमा ; हड्डी और आँखकी बीमारियाँ ; निगलनेमें तकलीफ़ ; आँत उतरना ; सविराम ज्वर ; पलकोंका पक्षाघात ; जीभकी बीमारी ; सरमें चक्कर आना ; हूप खाँसी ।

उपयोगिता और आभास ।—आँखें ही इसका प्रधान आक्रमण-स्थान है और इसी इन्द्रियके ऊपर इसके नाना प्रकारके लक्षण उत्पन्न हुआ करते हैं । आँखकी योजकत्वचा (Conjunctiva) की शोथकी तरह सूजन (Chemosis) और अनुपक्ष रोगमें (Pterygium)—तारकाकी और शिखर और भीतरी कोनेकी ओरकी भूमि या तलदेशमें इसी तरहकी एक लाल शिरामय तिकोनिया सूजनमें इसका विशेष लाभ दिखाई देता है । बहरापन और आँखके लक्षण सब पर्यायक्रमसे प्रकट हुआ करते हैं और आँखकी बीमारी अच्छी होनेपर बहरापन पैदा हो जाता है और बहरापन दूर होनेपर आँखकी बीमारी पैदा हो जाती है । सरमें चक्कर आना, रजोनिवृत्तिके समय रक्त स्राव, सुगन्धित पसीना वगैरह कई इसके क्रियाफल हैं ।

लक्षणावली

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, झुकनेपर (ऐनाक, कैम्फो, कास्टि, नक्स-वोम, पल्स, स्टेफि) ; सभी चीजें उलटी दिखाई देती हैं । ऐसा मालूम होता है मानो माथा सामनेकी ओर ढुलक पड़ता है (कार्बो-ऐन ; नाक रुकनेके साथ—ग्रे टि) । ऐसा मालूम होता है कि किसीने जोरसे माथेमें आघात किया है इसीलिये माथा सुन्न हो गया है और सोचनेकी शक्ति घट गयी है, सर्दी-गर्मी होनेपर ऐसा हुआ करता है ।

आँख ।—आँखका कोना फूल जाता है (एपिस) ; अश्रु-ग्रन्थि (Lachrymal gland) फूलती है (बेल, साइलि) । भौंहें नाचती हैं

(Twitching—फाइजस, रियुटा)। पलक सुन्न हो जाती है (जेल्स, कास्टि, ग्रैफ, सिपि, स्पाई, वेरेट)। आँखकी योजक त्वचा फूल उठती है (ब्राई, नक्स, ऐपिस, सल्फ), आँखमें ऐसा दर्द होता है कि न जाने कितना रोया है (क्रोकस-सैट, टैबाक, टियुक्रि)। आँखके गोलेमें ऐसा दर्द मानो किसीने नोच फेंका है (लाई, मर्क, पल्स), मानो आँख बाहर निकल जाना चाहती है (ऐसेर, डेफ, लैके, गुयायेक, मेजेर)। सभी चीजें धुमैली मालूम होती है (फास, स्टेम)। बहरापन दूर होनेपर आँखकी बीमारी आरम्भ हो जाती है और आँखकी बीमारी आराम होनेपर बहरापन पैदा हो जाता है।

मुख-विवर।—गलेकी ऊँची हड्डी (Zygoma) में दर्द मालूम होता है और दाँतमें कनकनी होती है—ठण्डी हवा लगने या जीभका धक्का लग जानेपर दर्द होता है; जिस पार्श्वमें दर्द रहता है उसी करवट सोने या गर्म चीजें खाने (कैमो, नक्स, फास, साइलि) और टहलनेपर (फास) दर्द बढ़ जाता है; ज्वराधिकारमें जीभपर मैल चढ़ा रहता है; यह लेप या मैल हरे रङ्गका होता है। फूलन, सुन्न जीभ और उससे खून गिरता है; ठण्डी और सूखी मालूम होती है; जीभमें ऐसा दर्द होता है मानो छुरीसे काटा जाता है। जो कुछ खाता है उसका स्वाद नहीं मिलता (हेलिबो, नैट-मूर, पल्स)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रसवका दर्द बन्द या रुक जाता है। प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia) बहुत थोड़ा हुआ करता है (नक्स, पल्स, सिकेलि, सल्फ); ऋतु बन्द होनेपर—प्रदर स्राव होता है (ऐसिड-नाई, सिपि)। ऋतुके पहले और बाद रक्त-स्राव होता है (ऐम्ब्रा, ऐक्टिया, नैट-मूर, बेल, कैमो, सिलिका, सैबाई)।

प्रत्यङ्ग आदि।—शरीरमें जगह-जगह ऐसा मालूम होता है मानो किसीने चोट पहुँचा दी है। अस्थि-वेष्टनीमें दर्द (कैल्मो, कैलि-आयोड)। हाथ-पैरकी सन्धियोंमें मटमट आवाज़ होती है। रातके समय हड्डीमें दर्द (ऐसिड-नाई, मार्क, सिफिलिन, कैलि-आयोड, मेजेर, ऐसाफि, अरम, फाइटो), हड्डीमें जखम। हड्डीमें दर्द मानो किसीने मारा है (आर्नि, रियुटा); हड्डीका जखम, मेदमय कोषावृत्त अर्बुद (बेराई, फास, कैल्के, हिप, सिलि); कितनी ही जगह फूल जाती है और गर्म हो जाती है। शरीरमें जगह-जगह पित्त-बिन्दु (Liver-spots) दिखाई देते हैं। बाहरी हवामें नींद

आती है; बदबूदार पसीना होता है (रोडो)। रोगवाली जगहपर गर्म वस्त्र बाँधनेसे दर्द घटता है।

वृद्धि।—रातके समय, रोगवाली करवट सोनेपर, गर्म चीजें खानेपर और खट्टे या ठण्डे पानीय पीनेपर।

घटना।—गर्म कपड़ेसे दर्दवाला अंश बाँधनेपर और बिना दर्दवाली करवट सोनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—एपिस, ऐम्ब्रा, साइलि, फास, ऐसाफि, मेजेर, अरम, बोवि, ऐसिड-नाई, काक्यु, जेलिस, ग्रैफ, कोलोफिल।

तुलनीय।—बोविस्टा (ऋतुके बीचके समयमें ही ऋतु-स्राव); जेल्सि (सरमें चक्कर आना); एपिस (दमा); आर्निका (आघात); इग्ने (स्नायु); मर्क (हड्डीमें शोथ)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठे दशमिक क्रमतक।

जिम्निमा-सिल्वेस्टर

(GYMNEMA-SYLVESTRE)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—इस उद्भिदकी जड़को चूरकर, साँप काटे हुए मनुष्यको खिलानेपर सर्प-विष नष्ट हो जाता है। इसका पत्ता चबाने या निम्न-शक्ति सेवन करनेपर कुछ देरके लिये मुँहका स्वाद गायब हो जाता है। यहाँतक कि क्विनाइन भी खड़ियाकी तरह स्वादहीन मालूम होता है।

जिम्नोक्लेडस

(GYMNOCLADUS CANADENSIS)

दूसरा नाम ।—अमेरिकन काफी ट्री ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी ढेंडीसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।— नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— विसर्प ; ज्वर ; सर-दर्द ; प्लीहाका दर्द ; दाँतका दर्द इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—"सफेद और नीला लेप चढ़ी जीभ" इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण है,—विशेषकर सर-दर्द, गलेका जखम, जिह्वामूलके पार्श्वके दोनों गह्वर गहरे लाल रङ्गके, चेहरेपर विसर्पकी तरह सूजन, उत्ताप और एकान्तमें रहनेकी आकांक्षा, पाकस्थलीके गोल आकारके जखम वगैरह अवस्थाओंमें इसका लाभ दिखाई देता है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथेके सामनेवाले भागमें लगातार दर्द, विशेषकर दोनों भौंहोंके नीचे और नासा-मूलके ऊपर ; आँखके गड्ढेमें बहुत दर्द, मानो दोनों आँखें बाहर निकल पड़ेंगी—ऐसा मालूम होता है । इसके साथ ही माथेमें खूब कसावटका भाव, तलपेटमें और कभी-कभी नाभि-प्रदेशमें महीन सलाई घुसानेकी तरह मालूम होना, इसके साथ ही सरमें तेज़ दर्द । सर्दीकी वजहसे सर-दर्द ; प्रारम्भिक अवस्था ; माथा भरा और भारयुक्त, ललाट और कनपटीमें टपकके साथ सरमें चक्कर आना, चेहरेपर गर्मी मालूम होना, माथा सुन्नकी तरह और शरीरमें सुस्ती । किसी चीज़के सहारे माथा रखनेकी इच्छा होती है ।

आँख ।—आँखोंमें जलन करनेवाला उत्ताप और दर्द ; सवेरे आँखमें बहुत दर्द होता है । दोनों आँखोंको बार-बार रगड़नेकी इच्छा होती है । बाईं आँखके ऊपरी भागमें टपककी तरह दर्द ।

मुखमण्डल ।—मुँहके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है, मानो मक्खी घूम रही है (आर्स, जिनसेङ्ग) । मुखमण्डल और माथा इस तरह फूल उठता है, मानो उसमें विसर्प हो गया है ; मुखमण्डल गर्म और फला हुआ

मालूम होता है ; रोगी बार-बार दोनों आँखें रगड़ना चाहता है (क्रोकस, प्लम, पल्स) ; गण्डास्थि (गालकी हड्डी) में बहुत दर्द होता है ।

मुख-विवर ।—दाँतमें हाथ लग जानेसे दर्द होता है, विशेषकर बाईं ओरके और ऊपरवाले दाँतमें दर्द होता है ; मामूली ठण्डी हवा लगते ही दर्द पैदा हो जाता है (ऐल्यू, कैमो, कास्टि) ; ठण्डे पानीय बहुत दर्द पैदा करनेवाले रहते हैं (नक्स-वोम, ऐण्टि-क्रूड, आर्स, कैमो, चिमै, हिप, कैल्के, मर्क, प्लैटि, स्टैफ, ऐसिड-फ्लु) ; जीभ—सफेद नीला लेप चढ़ी (नीली—ऐसि-म्यूर, ऐसिड-बेन, आर्स, ओपि, टैबाक) । सारे मुख-विवरमें जलन । कोई पदार्थ भी मुँहमें अच्छा नहीं लगता ।

गलेके भीतर ।—गलेका जखम—जीभकी जड़के बगलवाला गह्वर ग्रन्थिमय गाढ़ा नीली आभा लिये लाल रङ्गका दिखाई देता है ; दाहिनी गलग्रन्थिमें प्रदाह हो जाता है और वह बैंगनी रङ्गकी मालूम होती है, गलेमें सुई वेधनेकी तरह तेज़ दर्द मालूम होना (कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, ऐसिड-नाई, नक्स-वोम) ।

पाकस्थली ।—डकार आनेपर गलेमें खट्टा पानी आ जाता है । खानेके बाद जी मिचलाने लगता है ; पेट भारी मालूम होता है और बार-बार डकार आती है । अन्ननाली और पाकाशयमें जलन होती है । पेटके भीतर एक मुद्राकार (रुपयेकी तरह) अंशमें बहुत जलन होती है ; पाकाशयका गोलाकार जखम (कैलि-बाई, ऐट्रोपिन, फास) । मानो प्लीहा फूल उठी है या कोखमें इसी तरहका दर्द (ऐगार, लैक-नैन) । तलपेटमें इतना दर्द होता है कि हाथ लगाते ही दर्द होने लगता है (एपिस), तलपेट और नाभि-प्रदेशमें तेज़ शूल मारनेकी तरह दर्द ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—बाएँ हाथकी कोहनीके नीचेका अंश बहुत दर्द करता है, मानो हड्डी चूर्ण-विचूर्ण हो गई है । बाएँ हाथकी तर्जनीमें (Index finger) तेज़ दर्द ; ऐसा मालूम होता है, मानो अंगुलहाड़ा हो गया है ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐलेन, रास, लैक-नैन, लैके, इथ्यू, ऐगार, क्रोकस, पल्स, कैलि-बाई ।

शक्ति ।—मूल अरिष्टसे ६ठा दशमिक क्रम ।

हाल

(HALL)

परिचय ।—अस्ट्रियाके हाल प्रपातका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल क्रम ।

उपयोगिता और आभास ।—ग्रन्थियोंका फूलना, गलगण्ड, चक्षु-तारकाका ठिकराकर बाहर निकल आने जैसा मालूम होना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—नेट्रम-मूर, सिलिका-मेरि, एलियम-ऐनि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिमैटाक्सिलन

(HÆMATOXYLON CAMPEACHIANUM)

दूसरा नाम ।—लाग उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पदार्थसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—हृत्शूल ; शूल ; अतिसार ; बाधक ; सर-दर्द ; अजीर्ण ; गलेका जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कैक्टस, लिलियम टाइग्रिनम इत्यादिकी तरह इसके द्वारा कितने ही स्थानोंमें कसावट भाव और संकोचनका भाव शरीरमें पैदा हो जाया करता है। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें यह लक्षण परिपुष्ट हुआ करता है और इसीलिये यह हृत्शूल (कलेजेका दर्द) रोग (Angina pectoris) में बहुत फायदेमन्द है। "मानो हृत्पिण्डके पाससे वक्षस्थलके दाहिने पार्श्व तक एक शलाका है"—यह इसका एक निर्णायक लक्षण है। आगे लिखे विषय एक होमियोपैथिक चिकित्सकसे प्राप्त हुए हैं :—एक

वर्ष पहले उन्हें प्रायः कभी-कभी कलेजेमें धड़कन होती थी और उस समय बहुत मृत्यु-भय पैदा हो जाया करता था, ऐसा मालूम होता था, कि वे उसी दम मर जायँगे और इसी समय उनकी समस्त देह और हाथ-पैर आदि थर-थर काँपने लगते थे ; वे सुन्न हो जाते और ऐसा मालूम होता था, कि वे गिर जायँगे। बहुत तरहकी दवाएँ खाईं, पर कोई लाभ नहीं हुआ, अन्तमें उन्होंने सब दवाएँ खाना बन्द कर दिया। एक दिन वे बैठे थे कि उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि एक अर्गल (सिटकिनी) धीरे-धीरे उनके दाहिने कन्धेके सामनेवाले कोनेसे हृत्पिण्डकी ओर फैल रहा है और वही श्वासमें रुकावट पैदा करता है, उन्होंने तुरन्त हिमैटाक्सिलन ३रा दशमिक क्रम दो बून्दकी मात्रामें सेवन करना आरम्भ कर दिया ; क्योंकि इसके लक्षणके साथ उनके लक्षणमें बहुत सादृश्य था ; परन्तु विपरीत भाव यह था कि—"हृत्पिण्डकी ओरसे दाहिनी ओर" न होकर "दाहिने कन्धेसे हृत्पिण्डकी ओर" होता था, पर इतनेपर भी उन्हें बहुत लाभ हुआ और फिर एक वर्षसे भी अधिक समयतक उन्हें किसी तरहका दर्द या कलेजेमें धड़कन नहीं हुई। भूख न लगना और पाचन-शक्तिमें गड़बड़ी प्रायः इससे पैदा हुए सभी लक्षणोंकी सहकारिणी है। रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है ; परन्तु खुली हवामें उसे आराम मिलता है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है—गिर जानेका उपक्रम होता है (ऐको, साइक्यू, बेल, फेलेन, रास) ; बुद्धि गड़बड़ा जाती है, समझ नहीं सकता। रातमें सरमें दर्द होता है और खानेके पदार्थ न पचनेके कारण, ऊपरी और निचला पेट फूलता है, मन उद्विग्न हो जाता है, जी मिचलाता है और डकारके साथ गलेमें खट्टी चीजें चढ़ आती हैं। कपालमें दर्द होता है और सर झुकानेपर वमन होनेकी तैयारी हो जाती है। ललाटके बाएँ पार्श्वसे चेहरेके बाएँ पार्श्वमें और बाईं ओरके दाँततक दर्द उतर आता है (कोलो, स्पाइजि)। दाहिने कानमें तेज़ दर्द होता है और गलेके भीतरतक उतर आता है।

आँख।—आँखें लाल और अश्रुनालीके ऊपर लाल-लाल छोटे-छोटे मांसांकुर पैदा हो जाते हैं। आँखमें ऐसी करकराहट होती है, मानो बालू

हाल

(HALL)

परिचय ।—अस्ट्रियाके हाल प्रपातका पानी ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल क्रम ।

उपयोगिता और आभास ।—ग्रन्थियोंका फूलना, गलगण्ड, चक्षु-तारकाका ठिकराकर बाहर निकल आने जैसा मालूम होना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—नेट्रम-मूर, सिलिका-मेरि, एलियम-ऐनि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिमैटाक्सिलन

(HÆMATOXYLON CAMPEACHIANUM)

दूसरा नाम ।—लाग उड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पदार्थसे मदर टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— हृत्शूल ; शूल ; अतिसार ; बाधक ; सर-दर्द ; अजीर्ण ; गलेका जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—कैक्टस, लिलियम टाइग्रिनम इत्यादिकी तरह इसके द्वारा कितने ही स्थानोंमें कसावट भाव और संकोचनका भाव शरीरमें पैदा हो जाया करता है । हृत्पिण्ड-प्रदेशमें यह लक्षण परिपुष्ट हुआ करता है और इसीलिये यह हृत्शूल (कलेजेका दर्द) रोग (Angina pectoris) में बहुत फायदेमन्द है । "मानो हृत्पिण्डके पाससे वक्षस्थलके दाहिने पार्श्व तक एक शलाका है"—यह इसका एक निर्णायक लक्षण है । आगे लिखे विषय एक होमियोपैथिक चिकित्सकसे प्राप्त हुए हैं :—एक

वर्ष पहले उन्हें प्रायः कभी-कभी कलेजेमें धड़कन होती थी और उस समय बहुत मृत्यु-भय पैदा हो जाया करता था, ऐसा मालूम होता था, कि वे उसी दम मर जायँगे और इसी समय उनकी समस्त देह और हाथ-पैर आदि थर-थर काँपने लगते थे; वे सुन्न हो जाते और ऐसा मालूम होता था, कि वे गिर जायँगे। बहुत तरहकी दवाएँ खाईं, पर कोई लाभ नहीं हुआ, अन्तमें उन्होंने सब दवाएँ खाना बन्द कर दिया। एक दिन वे बैठे थे कि उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि एक अर्गल (सिटकिनी) धीरे-धीरे उनके दाहिने कन्धेके सामनेवाले कोनेसे हृत्पिण्डकी ओर फैल रहा है और वही श्वासमें रुकावट पैदा करता है, उन्होंने तुरन्त हिमैटाक्सिलन ३रा दशमिक क्रम दो बून्दकी मात्रामें सेवन करना आरम्भ कर दिया ; क्योंकि इसके लक्षणके साथ उनके लक्षणमें बहुत सादृश्य था ; परन्तु विपरीत भाव यह था कि—"हृत्पिण्डकी ओरसे दाहिनी ओर" न होकर "दाहिने कन्धेसे हृत्पिण्डकी ओर" होता था, पर इतनेपर भी उन्हें बहुत लाभ हुआ और फिर एक वर्षसे भी अधिक समयतक उन्हें किसी तरहका दर्द या कलेजेमें धड़कन नहीं हुई। भूख न लगना और पाचन-शक्तिमें गड़बड़ी प्रायः इससे पैदा हुए सभी लक्षणोंकी सहकारिणी है। रोगीको बहुत जाड़ा मालूम होता है ; परन्तु खुली हवामें उसे आराम मिलता है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है—गिर जानेका उपक्रम होता है (ऐको, साइकूर, बेल, फेलैन, रास); बुद्धि गड़बड़ा जाती है, समझ नहीं सकता। रातमें सरमें दर्द होता है और खानेके पदार्थ न पचनेके कारण, ऊपरी और निचला पेट फूलता है, मन उद्विग्न हो जाता है, जो मिचलाता है और डकारके साथ गलेमें खट्टी चीजें चढ़ आती हैं। कपालमें दर्द होता है और सर झुकानेपर वमन होनेकी तैयारी हो जाती है। ललाटके बाएँ पार्श्वसे चेहरेके बाएँ पार्श्वमें और बाईं ओरके दाँततक दर्द उतर आता है (कोलो, स्पाइजि)। दाहिने कानमें तेज़ दर्द होता है और गलेके भीतरतक उतर आता है।

आँख।—आँखें लाल और अश्रुनालीके ऊपर लाल-लाल छोटे-छोटे मांसांकुर पैदा हो जाते हैं। आँखमें ऐसी करकराहट होती है, मानो बालू

गिर गयी है (एल्यू, कैम्फि, कास्टि, जेल्स, ग्रैफ, गुयारिया, सिपि)। ऐसा मालूम होता है, मानो घूंघटके भीतरसे सब चीजें अस्पष्ट देख रहा है (कास्टि, क्रोक, सिक्लेम, जेल्सि, पेट्रोल, फास, मार्क, सल्फ)। सभी चीजें अंधेरेसे ढँकी मालूम होती हैं; पढ़नेके समय अक्षर सब अदृश्य हो जाते हैं। हवा लगनेपर आँखकी बीमारी घटती है (ठण्डी हवामें घटना—ऐसेर)।

गलेके भीतर।—गलेमें जखम, निगलनेमें तकलीफ़ होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनाली पतली हो गयी है; बार-बार जम्हाई आती है और अंगड़ाई लेता है। साथ ही उसे ऐसा मालूम होता है मानो गलेमें कुछ अटका हुआ है (ऐमोनियेक, बेराई, बेल, ग्रैफ, लेके, नेट-म्यूर, फाइटो, सैबाड, सिपि)।

पाकाशय आदि।—ऊपरी पेटमें दबाव मालूम होता है, डकार आती है और पेट फूलता है तथा दर्द करता है (ऐमोन-कास्टि, लाई, हिप, जिङ्कम)। पेटमें दर्द होनेपर बार-बार जम्हाई आती है (कैस्टोर) और अंगड़ाई लिया करता है (ऐमिल)। आँतोंके शूलमें (in colic) पेटमें इतना दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। पेट फूलता और कड़ा हो जाता है और ऐसा दर्द होता है, मानो कुछ गड़ गया है। पेट गड़गड़ाता है, दस्त पतले आते हैं, मलद्वारमें काटनेकी तरह दर्द होता है। हाथ-पैर कमजोर हो उठते हैं, छातीमें धड़कन होती है। समूची देहमें गड़बड़ी मालूम होती है और जी छटपटाता है। जब शूलका दर्द घट जाता है, तब सारे शरीरमें जाड़ा मालूम होने लगता है और हाथकी तलहत्थीमें जलन होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—तलपेटमें दर्द, मानो अब ऋतु होगा (क्रोकस, टेरिब) और योनिसे सफेद आभा लिये लसदार स्राव होता है। ऋतुके समय रोगिनी बहुत कमजोर हो पड़ती है और तलपेटमें दबाव मालूम होता है (काक्यु)।

श्वास-यंत्र।—छातीसे लेकर ऊपरी पेटतक मानो जकड़ गया है ऐसा मालूम होता है और जलन होती है। हृत्प्रदेशके दर्दमें ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्डके पाससे दाहिने पार्श्वतक एक शलाका (नेजा) ठेलती हुई जाती है। हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज, उसमें बहुत दर्द और नाड़ी क्षीण, सारे शरीरमें जाड़ा मालम होता है और तलहत्थीमें जलन होती है (स्रेलिङ्ग)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—अरम, कैक्टस, लिलियम-टाइग्रिनम, नैजा (गर्म लोहेकी सलाई घुसनेकी तरह मालूम होना) ; कोलोसिन्थ, अरम (मानो पंजरेके नीचे एक खूंटो-सी खोल गड़ रही है)।

दोषघ्न ।—कैम्फर ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रमतक ।

हैमामेलिस

(HAMAMELIS VIRGINICA)

दूसरा नाम ।—विच हैज़ेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूल और पल्लवकी छालसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—गर्भ-स्रावकी आशंका ; आँखका काला हो जाना ; चोट लगना या काला दाग पड़ना ; दाह ; कर्कटका जखम ; क्षय-कास या यक्ष्मा ; सान्निपातिक ज्वर ; पाकाशयका जखम ; रक्तका पेशाब ; रक्तमय वमन ; रक्तका स्राव ; बवासीर ; प्रदर ; यकृतसे रक्तस्राव ; आर्त्तवमें विकार ; अनुकल्प रजः ; स्तनमें जखम ; नाकसे रक्तस्राव ; वात ; शीताद ; चेचक ; अण्डकोषका प्रदाह ; जरायुकी बीमारी ; शिराका फूलना ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—शरीरके कितने ही स्थानोंसे शैरिक (Venous) खूनके स्राव ही में यह विशेष उपयोगी है। जैसे—नाक, फेफड़ा, अन्त्राशय, जरायु, मसाना, खूनका रङ्ग भी ठीक हैमामेलिसके मूल अर्ककी तरह गहरा लाल रङ्गका और काली आभा लिये रहता है। आर्निकाकी तरह रोगवाले अंशमें ऐसा दर्द होता है, मानो चोट लग गयी है ; पेशी या सन्धिके वातका दर्द ; चोटकी वजहसे किसी अंशकी त्वचाके फटने या विदीर्ण हो जानेपर और बहुत दिन पहले किसी स्थानपर चोट लगने बाद फिरसे उसी स्थानसे खून जाने लगना—इस दवासे आराम हो जाया करता है। चोटकी वजहसे आँखकी योजकत्वचामें प्रदाह, चोट लगने या जोरसे खाँसनेके कारण

आँखें लाल हो जाती हैं और उनमें बहुत दर्द होता है, यह भी इसीके विषयीभूत है। शरीरके जिस किसी अंश या द्वारसे, चाहे किसी भी कारणसे गाढ़ा या काला खून निकलता हो, हैमामिलिसका प्रयोग करना चाहिये।

लक्षणावली

मन।—विस्मृतिशील; परिश्रम करने या पढ़नेकी इच्छा न होना (बिना थके बहुत देरतक अध्ययन कर सकता है—केरिका-पेपिया; अध्ययनसे अनुराग—पेडिक्यूलस)। वीर्यस्खलनके बाद मन दुःखित और अनुतप्त हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; सर झुकानेपर, खड़े होनेपर मानो माथेमें चक्कर आया करता है (मैग-कार्ब); जो मिचलाया करता है और सरमें चक्कर आता है, इसीलिये सोनेकी इच्छा होती है। ऐसा मालूम होता है मानो एक कनपटीसे दूसरी कनपटीतक पेंचसे खूब कसा हुआ है; नाकसे रक्तस्रावके पहले माथेमें भार मालूम होता है (नाकसे खूनका स्राव होनेके पहले चेहरा लाल हो उठता है—बेल, मिलिलोट)। नाकसे खूनका स्राव होने बाद सर-दर्द घट जाता है (ब्यूफो, फेर-फास, मिलिलोट, मैग-सल्फ)।

आँख।—ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों आँखें माथेसे बाहर निकल पड़ेंगी, अंगुलीसे दबानेपर कुछ देरके लिये आराम होता है और तुरन्त ही फिर दर्द पैदा हो जाता है, चोट लगनेके कारण या जोरसे खाँसीके कारण आँखकी आवरक झिल्लीके भीतर खूनका स्राव होकर आँखमें बहुत दर्द होने लगता है (आर्नि, कैलेण्डु, लिडम), प्रदाह-युक्त कैशिकाएँ (Capillaries) सब लाल हो उठती हैं।

नाक।—नाकसे खूनका स्राव। बहुत दिनोंसे ऐसा ही होता है; खून शैरिक (Venous) अर्थात् घोर लाल और कालिमा लिये,—जमा हुआ नहीं रहता—(क्रोटेलस); नाकसे खून गिरने बाद, सर-दर्द घट जाता है (ब्यूफो, फेरम-फास, मैग-सल्फ, मिलिलोट)। अकारण, चोटकी वजहसे या कोई दूसरा स्राव रुकनेके कारण (Vicarious—विकल्प रक्तस्राव—ब्राई) सर-दर्द। नासारन्ध्रसे बदबू निकलती है। बार-बार छींकके साथ नासारन्ध्रसे पानीकी तरह त्वचाको क्षय करनेवाले और जलन पैदा करनेवाले श्लेष्माका स्राव हुआ करता है (सिपा)।

मुख-विवर।—दाँतका दर्द, चबानेके समय दाँतमें किसी अस्त्रकी चोट लगनेकी तरह तेज़ दर्द मालूम होता है और वह दर्द गण्डास्थितक फैल जाता है। रोगी दाँतमें कीड़ा न लगा रहनेपर भी दर्दकी वजहसे रातमें नींद नहीं आती। खाँसनेके समय अलि-जिह्वामें डङ्क मारनेकी तरह तेज़ दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो वह टूट जायगी। मुख-विवर और कण्ठ बहुत सूखा, निगलनेके समय ज्यादा परिमाणमें पानी पीना पड़ता है (गुयायेक)। गलेका जखम—दाहिनी ओरका, दाहिनी गलग्रन्थि ज्यादातर फूल जाती है और लाल हो जाती है; गर्म तर हवा लगनेपर बढ़ता है; गलेके भीतरकी कैशिक शिरायें सब फूल जाती हैं।

पाकस्थली।—सवेरे खानेकी इच्छा नहीं होती। बहुत प्यास, पर थोड़ा पानी पीनेसे भी तृप्ति हो जाती है (आर्स), पानीसे वितृष्णा, पानीकी बात याद आते ही जी मिचलाने लगता है; खानेके बाद जो डकार आती है उसमें खाये हुए पदार्थका स्वाद आता है (ऐसिड-आक्स, फास, पल्स, सल्फ, थूजा), जो मिचलाता है और सरमें चक्कर आता है। यदि स्थिर होकर सो न जाय तो कै होना चाहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो जीभ जल गयी है (डैफ, हायो, प्लैट, सैबाड, सैङ्गियु, सिपि)। पाकस्थलीमें भयानक टपक (ऐसाफि, बेल, चेलिडो, साइक्य, गैम्बोज, पल्स, रियुम)। भोजनके बाद पेटमें ऐंठन होती है (बिस्मथ, कार्बो-ऐन, कास्टि, ग्रैफ, हायो, लाई, नैट्र-म्य, पल्स)। ऊपरी पेट और नाभि-प्रदेशमें जलन होती है (ऊपरी पेट जलता है—कैलेड, कैम्फो, रैफेनस; नाभि-प्रदेशमें—ऐको, रैफेनस, बोवि, कैन्थ, क्रोटेलस, मैग-सल्फ, ऐसिड-सल्फ)।

मलान्त्र और मल।—रक्तामाशय—खूनका परिमाण बहुत अधिक—आमके साथ गाढ़ा लाल रङ्गका खूनका जमा हुआ टुकड़ा निकलता है। आन्त्रिक ज्वराधिकारमें मलद्वारसे बहुत ज्यादा परिमाणमें अलकतरेकी तरह खून निकला करता है (क्रोटेलस)। अर्शसे बहुत ज्यादा खून निकलता है; खून काला; गहरे लाल रंगका मसा; उसमें जलन होती है और ऐसा दिखाई देता है, मानो उसकी खाल उधड़ गयी है। कमरमें बहुत दर्द मानो टूट जायगी; मलद्वारमें जखम या त्वचाका क्षय होनेकी तरह मालूम होना; मसा नीले रङ्गका।

श्वास-यन्त्र।—रक्त-कास (Hœmoptysis), कण्ठमें या वक्षमें पिट-पिट कर खाँसी आती है और मुँहमें खून या गन्धकका स्वाद आता है ; शिरासे रक्त निकलकर कण्ठमें जमा होता है और प्रायः आप-से-आप और सहजमें ही निकल जाता है ; प्रति मास इसी तरह खून-भरा कफ़ निकलता है और कभी-कभी दो-चार वर्षतक ऐसा ही हुआ करता है। बवासीरसे बहुत थोड़ी मात्रामें खूनका स्राव होनेपर भी रोगी बहुत सुस्त हो पड़ता है, मानो बहुत ज्यादा खून निकल गया है (हाइड्रेस्ट)।

पेशाब।—बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब। खूनका पेशाब, मूत्रग्रन्थि या दोनों मसानोंकी शिरायें खनसे भर जाती हैं और उनमें बाहरकी ओर दर्द होता है। मूत्रनालीमें उत्तेजनाके कारण खून निकला करता है और पेशाबके समय जलन होती है (कैनाब, कैन्थ, कैप्स)।

पुं-जननेन्द्रिय।—रातमें अनजानमें वीर्यपात होकर (सिङ्को, ऐसिड-फास, सेलिन, सिपि, सल्फ) ; माथेमें दर्द पैदा हो जाता है और मन खराब हो जाता है। लिङ्गमें कड़ापन और बहुत अधिक आलिङ्गनकी इच्छा, अण्डकोषमें तेज़ स्नायुशूल, दर्द एकाएक अण्डकोषसे तलपेटमें चला आता है और इसी वजहसे जी मिचलाता है और रोगीकी कमजोरी मालूम होती है। दर्द रेतोरज्जु (शुक्ररज्जु) से अण्डकोषमें उतर जाता है (पल्स, रास)। अण्डकोष-प्रदाह या एकशिरा ; रोगी अण्डकोषमें बहुत दर्द होता है और फूल जाता है (अरम, क्लिमेट, कोना, नक्स-वोम, पल्स, ऐको, स्पञ्जि)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—डिम्बाधार-प्रदाह (Ovaritis), चोट आदिकी वजहसे समूचा तलपेट इतना अकड़ जाता है कि रोगिनी उसमें हाथ नहीं लगाने देती और ऋतुके समय यह दर्द बढ़ जाता है (ऐक्टि, पल्स); ऋतुस्राव, गहरे लाल रङ्गका कालिमा लिये और बहुत ज्यादा (ब्राई, कैमो, क्रोकस, फेरम, इग्ने, नाइट्रिकम, प्लैट, पल्स)। जरायु-स्राव (Metrorrhagia), शैरिक या धामनिक, ऊँचे-नीचे रास्तेपर गाड़ीमें घूमनेकी वजहसे ; त्रिकास्थिमें ऐसा मालूम होता है, मानो नीचेकी ओर खींचता है—इस ढङ्गका दर्द होता है। बाधक—पीठके पीछे और तलपेटमें प्रचण्ड दर्द और यह दर्द पैरतक उतर आता है। माथा और पेट भरा हुआ या भारी मालूम होता है ; समूचे माथेमें तेज़ दर्दकी वजहसे घोर निद्रा या आच्छन्नावस्था पैदा हो जाती है और

शिराएँ सब फूल उठती हैं (Varicose Veins) (ऐम्ब्रा), ऋतु बन्द होकर नाक या पेटसे रक्तस्राव, विकल्प रज: (Vicarious Menses—ब्राई, इपियोन)। प्रदर—योनिपथ दर्द-भरा ; स्राव रक्तभरा और बहुत ज्यादा (ऐण्टि-टार्ट, सिङ्को, काक्यु, मूरेक्स, ऐसिड-सल्फ)। योनि छूने नहीं देती और छूते ही योनि-पथ संकुचित हो जाता है (Vaginisim—इग्ने, प्लम, साइलि)। स्तनकी घुंड़ीमें घाव। सूतिका-स्तम्भ अर्थात् गर्भावस्थामें या प्रसवके बाद जंघाकी शिराएँ फूली और प्रदाह-भरी हो जाती हैं (ऐको, पल्स, बिस्मथ)। शिराओंका फैलना (Varices—ऐसिड-फ्लू, पल्स, फेरम-फास, प्लम्ब), प्रसवके बाद पेटमें दर्द (ऐण्टिम, हैमामेलिसका बाहरी प्रयोग बहुत लाभदायक है)।

श्वास-यंत्र ।—नींद खुलनेपर स्वर-भङ्ग (बोवि, कार्बो-वेज, नक्स-वोम), सोनेके समय साँस रुकनेका उपक्रम (डिजि, फास, सेम्बु)। स्वर-नालीमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है ; नींद खुलनेपर मुँहमें रक्तका स्वाद आता है (बिस्मथ, ऐल्यू, ऐमोन-कार्ब, ऐस्पार) ; सूखी खाँसी, खाँसनेके समय अलि-जिह्वामें सुई बेधनेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होना, मानो अलिजिह्वा फट जायगी ; कफ गाढ़ा पीली आभा लिये या फीका हरा और सड़ा (Putrid) स्वाद पैदा कर देनेवाला, रक्त-कास। गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है ; मुँहमें खून या गन्धकका स्वाद आता है। वक्षस्थलमें कसावटका भाव, फिफड़ेमें रक्त इकट्ठा होकर श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है और इसी वजहसे रोगी सो नहीं सकता। माथेमें भार मालूम होता है ; चित्त स्थिर और उद्वेग शून्य हो जाता है। दोनों फिफड़ेके नीचे ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी हो, लम्बी साँस खींचनेपर मालूम होता है मानो छाती जकड़ गयी है और हृद्-प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो काँटा गड़ गया है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—गर्दनकी कशेरुकामें जखमकी तरह दर्द, ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो घाव हो गया है। कमरमें इतना दर्द हुआ करता है, मानो टूट जायगी (ऐल्यू, केलि-कार्ब, वेरियोल)। बायें पखुरेके कोनेमें लगातार दर्द हुआ करता है (कूप्रम, आर्स, रैनान-बल्ब)। दोनों पैरोंके सन्धिस्थानमें भार मालूम होता है और कमरमें ऐसा दर्द होता है, मानो काट रहा है (बार्बा, सिङ्को, कास्टि, ऐसिड-फास, रोडोड) ; प्रत्यङ्गोंमें कमजोरी

और थकावट मालूम होती है (आर्नि, ब्राई, ग्रेफ, आयोड)। वातकी वजहसे पेशियोंमें बहुत दर्द होता है। दोनों बाहुओंके ऊपरी अंशमें और कन्धेमें इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो चोट लगी है ; हिलने-डोलनेपर बढ़ना ; बायें कन्धेके शिखर-देशमें, दाहिने पखुरेके नीचे और दाहिने बगलके नीचे भयानक दर्द मालूम होता है ; दिनके समय और विश्रामके अवसरपर बढ़ जाता है (कूप्रम, युफ्रे, पल्स, रोडो), रातमें बिलकुल ही नहीं रहता। वात-वेदना—बाएँ बाँहमें लगातार दर्द होता रहता है। बाईं कलाईमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो छुरीसे काटता है (ऐल्यू, बोवि, हेलिबो, वियुटा, सेबाई, ऐसिड-आक्सेल, सिपि, सल्फ)। तलहत्थी फटी-फटी। उरुकी हड्डी और उरुकी पेशीमें मानो घाव हो गया है या चोट लग रही है—ऐसा दर्द होता है। तीसरे पहर जानु-सन्धि क्षीण मालूम होती है :—फूली हुई शिराके भीतर ऐसा दबाव मालूम होता है, मानो फट जायगी और उसमें हाथ लगानेसे दर्द होता है।

त्वचा।—शीत स्फोट (जाड़ेके दिनके फोड़े या फूली हुई शिरा या उसीको वजहसे जखममें इस ढङ्गका दर्द होता है मानो काँटा गड़ रहा है। काला दाग (फास, रास, क्रोटेलस)। आगमें जल जानेके कारण शरीरकी बाहरी त्वचाका ध्वंस हो जाना (टेरिब, कैन्थरिस)। शिरा-प्रदाह (Phlebitis), उसमें इतना दर्द होता है कि छूनेसे ही दर्द होने लगता है (प्रसवके बाद—पल्स)।

वृद्धि।—हिलने-डोलने तथा मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे ; निर्मल हवा लगनेपर ; बर्सातके दिनोंमें और गर्म तर हवामें ; गर्म घरमें (दाँतका दर्द) और छूते ही ; दर्द दिन और विश्रामके समय बढ़ जाता है ; रातमें बिलकुल ही नहीं रहता।

सम्बन्ध।—(खूनका स्राव और खूनके स्रावकी प्रवणताके सम्बन्धमें) अनुपूरक—फेरम।

दोषघ्न।—आर्निका ; चायना ; पल्स (दाँतका दर्द)।

सदृश।—आर्नि, कैलेण्डियुला (आँखका भीतरी स्राव बन्द करनेके सम्बन्धमें हैमामेलिस—आर्निका और कैलेण्डुलाकी अपेक्षा उत्कृष्ट है); ऐसिड-फ्लु, फास, सिकेलि, लेके, ऐसिड-नाई, ऐक्टिया-रेसि। (रक्त-स्रावसे

पैदा हुई बीमारी आदिके सम्बन्धमें) सिङ्कोना। (खूनका स्राव कितना ही क्यों न हो, रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती) हाइड्रैस्टिस, ऐसिड-सल्फ, वेलिस-पेरेन, ट्रिलियम-पेन)। (अर्शके सम्बन्धमें) ऐसिड-म्यूर, कैल्के-फ्लुओ, एलो।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—एकसे ७ दिन।

हेक्ला-लावा

(HECLA-LAVA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—"हेक्ला" नामक ज्वालामुखीकी आगसे निकली हुई राखसे यह दवा तैयार की जाती है। पहले विचूर्ण।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— हड्डीकी बहुत-सी बीमारियाँ ; स्तनका छोटा होना ; स्नायुशूल ; अंगुलहाड़ा।

उपयोगिता और आभास।—अस्थि और दोनों हनु, इनपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। हनु-अस्थिका बढ़ना (Exostosis) ; दाँतका दर्द, मसूढ़ेका फोड़ा और बच्चोंके दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ आदिमें विशेष लाभदायक है ; अधिककर हड्डीका प्रदाह (Osteitis), अस्थिवेष्टनी-प्रदाह (Periostitis), अस्थि कर्कट (Osteo Sarcoma) वगैरह अस्थि-रोगमें यह आश्चर्यजनक कार्य करता है। हड्डीके अन्तिम भागका प्रदाह। बच्चोंकी हड्डीमें क्षीणता (Rachitis) रोगमें भी यह विशेष हितकर है।

लक्षणावली

मस्तक आदि।—सरमें चक्कर आता है और सभी चीजें ऐसी मालूम होती हैं, कि कभी ऊपर उठती हैं, कभी नीचे उतरती हैं, कभी बायीं बगलकी ओर बढ़ती जाती हैं। उपदंश दोषकी वजहसे नाककी हड्डीका जखम। कीड़े लगी दाँत या दाँतकी जड़वाले खुले हुए स्नायुमें उत्तेजनाकी वजहसे मुखका

स्नायुशूल या सर-दर्द। दन्तशूल—दाँतमें इतना दर्द कि उसमें स्पर्श सहन नहीं होता और हनुके चारों ओर फूल उठता है। मसूढ़ेका फोड़ा (Gum abscess—मर्क-सोल। दाँत उखड़वाने बाद बाकी बढ़ी हुई हड्डी। दाहिने नासापुटके नीचे मटरकी तरह सूजन और कड़ा अर्बुद, उसमें हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सामान्य कारणसे ही गाँठें फूल जाती हैं। इसी तरहकी धातुवाला और शीर्णास्थि (Rachitic) बच्चोंको दाँत निकलनेके समय नाना प्रकारकी बीमारियाँ (कैल्के-फास, साइलि)।

निम्नाङ्ग।—स्तनके दूधका घट जाना (ऐग्नस, ऐसाफिटिडा)। वक्षस्थलकी पेशीका शूल, विशेषकर पंजरेकी भीतरकी पेशीका (ब्राई, रैनान, चेलिडो, ऐकि)। गर्दनके चारों ओरकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं और कड़ी हो जाती हैं (कैल्के-आयोड, कैलि-आयोड, कोना)। नीचे पैरकी सामनेवाली हड्डीका बढ़ना (Exostosis), लगातार दर्दकी वजहसे रोगी अकर्मण्य हो जाता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—काञ्जियोलिन, ऐम्फिसबिना, सिम्फिट, साइलि, कैलि-आयोड, कैल्के-आयोड, स्टिलिङ्ग, रियुटा।

शक्ति।—१म दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण।

हिडियोमा

(HEDEOMA PULEGIOIDES)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— रजःस्वल्पता ; बाधक ; श्वेत-प्रदर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—स्त्री-जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। दोनों पैरोंमें बहुत कमजोरी, आँतें और जरायुका नीचेकी ओर तेज़ आकर्षण ; पेशियोंका संकोचन और स्पन्दन आदि स्नायविक लक्षण इसके प्रधान क्रिया-फल हैं। रोगी बहुत क्षीण और कमजोर हो पड़ता है

और सोना पसन्द करता है ; सोधा बैठ नहीं सकता ; खानेके बाद रोगोके उदरमें दर्द पैदा हो जाता है ।

लक्षणावली

मस्तक ।—सवेरे माथेमें भार मालूम होता है, दिन चढ़नेपर फिर नहीं रहता । बाईं कनपटीमें ऐसा मालूम होता है मानो जखम हो गया है, मानो कट गया है । रोगीको बहुत सुस्ती मालूम होती है, सोधा बैठ नहीं सकता ; सोये रहनेपर अच्छा रहता है ।

गलेके भीतर ।—मानो न जाने क्या चढ़कर गलेमें आ रहा है (चेलिडो ; मानो एक गोला गलेमें चढ़ रहा है—इग्ने, कैलि-फास, कैल्मो, फाइजस, ऐसाफि, कैलि-आर्स, लिसिन, प्लम्ब)। रोगिनीको ऐसा मालम होता है मानो उसका फेफड़ा आदि मुँहमें चढ़ा आता है। कोई पदार्थ निगलनेमें दम रुकनेकी सम्भावना हो जाती है (ऐनान्थि, डिजि, मिफाइटिस, ऐनाक, बेल)।

पेशाब ।—बार-बार पेशाब होता है। प्रत्येक बार बहुत थोड़े परिमाणमें पेशाब निकलता है। मूत्रवाही नली या पेशीके (Ureters) भीतर तेज़ दर्द (लाइ, टैबाक, ओसिमम)। पेशाब लाल बालू मिला (लाइ)। पेशाब करनेके समय कतरनेकी तरह और जलन करनेवाला दर्द पैदा होता है और मूत्रस्थलीको ग्रीवा-वेष्टनकारी (Sphincter Vesicœ) पेशी संकुचित हो जाती है ।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—कमरमें असह्य दर्द, समूचे तलपेटकी नाड़ियां और जरायु आदि मानो बहुत जोरसे नीचेकी ओर धक्का देते हैं और योनिमुखसे मानो बाहर निकल जाना चाहते हैं ; यह दर्द पेट और पाकस्थलीतक फैल जाता है ; प्रकृत प्रसव-वेदनाकी तरह दर्द (बेल, सिक्को, इपिक, प्लैट, सिपि, लिलियम-टाइग्रि, सेबाई)—हिलने-डोलने या कुछ पीने या भोजन करनेपर वृद्धि होती है। प्रदर—उसके साथ ही बहुत सुरसुरी और जलन, प्रत्येक बार कई सप्ताहतक स्थायी रहता है ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—कमरमें असह्य दर्द, कमरके पीछे मेरुदण्डके ऊपरी अंशसे जरायुतक खींचनकी तरह बहुत दर्द मालूम होना ; हाथ-पैर

पक्षाघातकी तरह प्रायः सुन्न हो पड़ते हैं, रोगिनी न खड़ी हो सकती है और न हिल-डोल सकती हैं, जरा भी हिलनेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है। शरीरकी सभी पेशी-मण्डलियाँ फड़का करती हैं (ऐगार, ऐम्ब्रा, हायो, ओपि, पेट्रोल, प्लम, इग्ने, जिङ्कम)।

वृद्धि ।—शरीर हिलाने, खाने-पीने बाद और छूने या दबानेपर।

घटना ।—सोनेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—ऐगार, बेल, सिपि, लिलियम-टाई मेन्था-पिपरे, प्लैट, टैबाक ओलियम।

शक्ति ।—१म दशमिकसे ६ठे दशमिक क्रमतक।

हेडेरा हेलिक्स

(HEDERA HELIX)

दूसरा नाम ।—आयन आइवि।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—नये डिंगसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—**मस्तिष्कमें जल-सञ्चयकी** पुरानी बीमारीकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है। आँखका मोतियाबिन्द, विषन्नता प्रभृति लक्षणमें इसका व्यवहार होता है।

सम्बन्ध ।—ऐरेलिया-ऐसि, जिनसेङ्ग, सिलिका, नेट्रम-मूर।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

हेडिसेरम इल्डिफोनसियैनम

(HEDYSARUM ILDIFONSIANUM)

दूसरा नाम ।—हेडिसेरम-डेस्मोडियम, केरापिको ।

उपयोगिता और आभास ।—पुं-जननेन्द्रियका प्रदाह, प्रमेह, प्रमेहसे पैदा हुआ आँखोंका प्रदाह वगैरह लक्षणोंमें इससे विशेष सुफलकी आशा की जा सकती है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—ऐपिस, कैन्थरिस, कोपिबा, थूजा ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिलियैन्थस

(HELIANTHUS ANNUS)

दूसरा नाम ।—सन फ्लावर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समस्त फूल और बीजसे मदर टिंचर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— सर्दी ; कब्जियत ; नाकसे खून गिरना ; अर्श ; प्लीहाकी बीमारी ; गलेका जखम ; आमवात ; वमन ; जखम आदि ।

उपयोगिता और आभास ।—प्लीहा बढ़नेकी यह एक बहुत बढ़िया दवा है । पुराने सविराम ज्वराधिकारमें किनिनम-सल्फसे बोखार बन्द होनेके बाद हिलियैन्थसका प्रयोग करनेपर फिर बोखार आनेकी सम्भावना नहीं रहती । मिचली और वमनके साथ पाकस्थलीकी बीमारी, अर्श, काले रङ्गका मल वगैरह इसके क्रियाफल या लक्षण हैं, पेटके दर्द आदिका वमनके बाद घट जाना, आमवात आदिकी तरह उद्भेद आदि भी इसके क्रियाफल हैं ।

लक्षणावली

पाकाशय आदि ।—जीभ और जिह्वामूलके पार्श्वके दोनों गह्वर (Fauces) लाल और शुष्क हो जाते हैं। खानेके समय पदार्थ बहुत गर्म मालूम होते हैं। गलेमें अकड़न और सूखापन। खाते ही पाकस्थली और कण्ठनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो वे आगसे जल गये हैं। जिह्वामूल पार्श्व-स्थित दोनों गह्वर, अन्ननाली और ऊपरी पेटमें बहुत जलन होती है। पेटका दर्द आदि वमन होनेपर घट जाता है (फेरम, कैलि-बाई, नक्स-वोम ; रोगी कहता है—"यदि एक बार कै हो जाये तो मेरी सब तकलीफें घट जायें"—नक्स-वोम)। प्लीहा बड़ी और उसमें दर्द (सियेनोथस)। अर्श, वीर्यस्खलनके साथ काले रङ्गका पतला दस्त, एक दिनका अन्तर देकर कड़ा काला दस्त (लेप्टेण्ड्रा)।

श्वास-यंत्र ।—तीसरे पहर खाँसी आती है और टुकड़ा-टुकड़ा खून-भरा कफ़ निकलता है (किनिन-सल्फ़, लोरोसि)। श्वास-प्रश्वास तेज और उसमें तकलीफ़ होती है।

त्वचा और प्रत्यङ्ग आदि ।—बाएँ घुटनेमें वातका दर्द (कैलि-बाई)—सीढ़ीसे उतरनेमें दर्द होता है (कैनाब, वेरेट ; चढ़नेके समय दर्द होता है—ऐल्यू, प्लम)। समूची देह लाल और गर्म हो उठती है। घुटनेके भीतरकी ओर एक साथ ही कितनी ही लाल छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं, जिनमें बहुत खुजली होती है (ऐनाक, ऐण्टि-क्रुड, लैके, मर्क, एसिड-फास, थूजा)। बाँहकी कोहनीके भीतरकी ओर कितने ही आमवात जैसे चकत्ते निकलते हैं। नाभिके दाहिनी ओर छोटी-छोटी दादकी तरह लाल फुन्सियाँ दिखाई देती हैं। शरीरपर जगह-जगह चुनचुनी होती है (ऐको, क्रोकस, कोलचि, एसिड-सल्फ़, मिडोरिन)। बाहरी उत्ताप लगनेपर चर्मरोग बढ़ जाता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—सियेनोथस ऐमेर (प्लीहा) ; लेपटैन (काले रङ्गका मल) ; आर्निका, हाइपिर (जखम)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम।

हेलियो ट्रोपियम

(HELIO TROPIUM)

दूसरा नाम ।—चेरि-पाई ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका निर्देशक लक्षण है, **स्वरभङ्ग और गलेका जखम** । **जरायुका अपने स्थानसे हटना**, श्वेत-प्रदर, कमरमें दर्द वगैरह लक्षणोंमें नेट्रम-क्लोरेटमके साथ इसका विशेष सादृश्य है ; परन्तु ऐसे स्थानपर इनमें यह प्रभेद है, कि नेट्रम-क्लोरेटममें जरायुकी स्थूलता और गुरुत्वके कारण ऐसा मालूम होता है कि जरायु बाहर निकल पड़ेगा और हेलियो ट्रोपियममें जरायु वास्तवमें बाहर निकल पड़ता है ।

कष्टरजः, ऋतुके रक्तके साथ झिल्लीकी तरह पदार्थका स्राव (बोरैक्स) लक्षणमें भी यह लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय** ।—बोरैक्स, सिफिलिनम, नेट्रम-क्लोरेटम ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हेलिक्स टोस्टा

(HELIX TOSTA)

दूसरा नाम ।—रोस्टेड स्नेल ; ताजी सीप ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—बहुत प्राचीन कालसे सीप यक्ष्मा रोगकी एक बहुत बढ़िया दवा मानी जाती है । होमिओपैथिक मतसे यक्ष्मा और खाँसीके साथ रक्तस्रावके लक्षणमें इसकी निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर बहुत जल्दी रक्तस्राव बन्द हो जाता है और यक्ष्मा रोगके अन्यान्य लक्षण भी अच्छे हो जाते हैं ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हेलिबोरस फेटिडस

(HELLEBORUS FŒTIDUS)

दूसरा नाम ।—वियर्स फुट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलसे अरिष्ट बनता है ।

उपयोगिता और आभास ।—हैजा, केश और नख गिर जाना, चर्म उधड़ जाना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—हेलिबो-नाइग्रा, हेलिबोरस वाइरि, विरेट्रम-ऐल्ब, कोलचि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हेलिबोरस नाइजर

(HELLEBORUS NIGER)

दूसरा नाम ।—ब्लैक हेलिबोर ; क्रिस्मस रोज़ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—डा० एलेन कहते हैं—"दुर्बल, सोराग्रस्त बच्चोंकी बीमारियाँ, जिन्हें सहज ही मस्तिष्ककी बीमारी हो जाती है ; क्रोधपरायण ; विषन्न, हताश मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है ।" अण्डलाल मिला पेशाब ; अतिसार ; शोथ ; मृगी ; सर-दर्द ; आँत उतरना ; कोरण्ड ; मस्तिष्कोदक रोग ; मसानेमें खूनकी अधिकता ; विषादोन्माद ; रातके समयका अन्धापन ; रतौन्धी ; सूतिकाक्षेप ; आरक्त ज्वर ; सान्निपातिक ज्वर ; जख़म ; धनुष्टंकार इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान आक्रमणस्थल मस्तिष्क और मस्तिष्कावरक झिल्ली है । मस्तिष्कोदक, मस्तिष्ककी आवरक झिल्लीका प्रदाह और बच्चोंके दाँत निकलनेके समयके मस्तिष्कके प्रदाहके समान लक्षण

सब इसमें प्रकट होते हैं। डा० नैशकी पुस्तकमें लिखा है—"रोगी बीच-बीचमें चिल्ला उठता है और तकियेके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सर हिलाया करता है; मोहमें पड़े रहनेकी तरह नींद; चारों ओर क्या हो रहा है यह जाननेकी शक्तिका न रहना; पानी देनेपर बड़े आग्रहके साथ पिया करता है; ललाटकी त्वचा सिकुड़ी और ठण्डे पसीनेसे भरी। मानो कुछ खा रहा है इस तरह मुँह चलाता रहता है; आँखकी पुतली फैली और अधिक समयतक सुनने या समझनेकी शक्ति नहीं रहती; एक हाथ और एक पैर हमेशा हिलाया करता है और दूसरा हाथ तथा पैर सुन्नकी तरह पड़ा रहता है; पेशाब या तो बहुत थोड़ा होता है या बिलकुल होता ही नहीं है और काफीकी तलीकी तरह तली पड़ती है। नीचे लिखे कई इसके निर्णायक लक्षण हैं:—रोगी बेहोश और ज्ञान-शक्तिसे रहित होता है; कोई बात पूछनेपर धीरे-धीरे उत्तर देता है। बेहोशीवाली अवस्थामें ओठ, वस्त्र और नासारन्ध्र नोंचा करता है। मस्तिष्कोदक रोगमें गर्भावस्थामें या दाँत निकलनेके समय उदरामय।

लक्षणावली

मन।—विमर्ष, दुःखित, निराश चित्त; चुपचाप बैठा रहता है (आन्त्रिक ज्वरके बाद या पहली जवानीमें जब एक बार ऋतु होकर फिर बन्द हो जाता है)। चिड़चिड़ा स्वभाव या सामान्य कारणसे ही क्रोधित हो जाना; समझाने या सान्त्वना देनेपर क्रोध आ जाता है (इग्ने, नेट्रम-कार्ब, सिपि, साइलि)। यदि कोई उसकी शान्ति भङ्ग करता है, तो चिढ़ उठता है (जेल्स, नेट्रम-कार्ब)। जड़-बुद्धि, बोध-शक्तिका न रहना; कोई बात पूछनेपर धीरे-धीरे उत्तर देता है (जवाब देता-देता सो जाता है—बैप्टी; उत्तर नहीं देता—ऐगार, ऐसिड-सल्फ, सैबाड; जल्दी-जल्दी उत्तर देता है—ऐक्टिया, साइना, रास; सवाल पूछनेपर चिढ़ जाता है—कोलो; धीरे-धीरे उत्तर देता है—हेलिबो, मर्क, फास, ऐसिड-फास; असम्बद्ध उत्तर देता है—हायो, नक्स-मस, बैलि; अनिच्छाके साथ उत्तर देता है—कैरिका-पेपिया, रास, ऐसिड-सल्फ; कर्कश भावसे उत्तर देता है—कैमो; उत्तर सम्बद्ध देता है, परन्तु बात समाप्त होते ही फिर मोहवाली अवस्थामें हो जाता है—आर्नि, ऐसिड-फास; मस्तिष्कमें गड़बड़ी रहनेपर भी सम्बद्ध उत्तर देता है—कोलचि, कानबैल, काक्यु, आइरिस, प्लम्ब, टिलिया)। मूर्खोंकी तरह एक ओर देखता रहता है।

विशेष मनोयोग दिये बिना किसी प्रत्यङ्गकी क्रिया कर नहीं सकता। बराबर ओंठ, वस्त्र और नाक खोंटा करता है (सज्ञान अवस्थामें—अरम); भागना या पानीमें कूद पड़ना चाहता है। धनुष्टङ्कार आदिके समय कोई आवाज़ होनेपर प्रकोपका समय घट जाता है।

मस्तक ।—मिचली ; पानीकी तरह दस्त और के होनेसे माथेमें चक्कर, सर झुकानेपर बढ़ता है ; सीधे होकर बैठने और खड़े होनेपर फिर दर्द नहीं रहता। सरमें दर्द—ऐसा दर्द मानो भीतरसे बाहरकी ओर धक्का दे रहा है ; बुद्धिकी जड़ता और माथेमें भार मालूम होना ; सर हिलाने या मानसिक परिश्रमसे बढ़ना। खुली हवा लगनेपर और अन्यमनस्क होनेपर घट जाता है। बच्चोंका दाँत निकलनेके समय मस्तिष्कका उत्तेजित भाव (बेल, पोडो) ; मस्तिष्कके भीतर रस-स्रावकी आशङ्का (एपिस, टियुबरक्युलिनम)। मस्तिष्कावरण-प्रदाह (Meningitis),—मस्तिष्कमें रस-स्रावकी वजहसे एक अङ्गका पक्षाघात ; रोगी रह-रहकर लोमहर्षण चिल्लार कर उठता है (एपिस, कूप्रम, हाइपिरिक) ; मूर्खकी तरह एक ओर देखा करता है। रोगीका ध्यान नहीं रहता, पुतली फैली और संकुचित हुआ करती है। रोगी मोहाच्छन्नकी तरह सोया करता है। मस्तिष्कमें जल-सञ्चय—आरक्त ज्वरके बाद मस्तिष्कमें गुटिका पैदा हो जाना और इसी वजहसे टियुबरक्युलर (Tubercular) ; रोग तेजीसे बढ़ जाता है (एपिस, सल्फ़, टियुबर्क) ; एक हाथ और एक पैर आप-से-आप चला करता है (ऐपोसिन, बायाँ हाथ और बायाँ पैर—ब्राई)। तकियेमें माथा गड़ाया या हिलाया करता है (एपिस, पोडो) और माथेमें हाथसे आघात करता है (टियुबरक्युलिन) ; शरीर ठण्डा ; सर झुकानेपर दर्द बढ़ता है। मस्तिष्क-प्रदाह (Encephalitis) ; रोगी बेहोश हो जाया करता है। माथा भारी और गर्म मालूम होता है ; दर्दके विषयमें सोचनेपर दर्द बढ़ जाता है (कैम्फ़ो, हेलोन, पाइपरमिथ ; अनमना रहनेपर अच्छा रहता है)। नयी सर्दी मिला बेहोश करनेवाला सर-दर्द ; तीसरे पहर ४ बजेसे रातके ८ बजेतक प्रकोपकी वृद्धि ; माथा नीचा करनेपर बढ़ता है और विश्राम तथा निर्मल वायु लगनेसे घटता है। माथा बहुत भारी, उसमें इतना उत्ताप मानो माथा जला जाता है, अंगुलियाँ सब ठण्डी और चेहरा मलिन। सरके पिछले भागमें दर्द, मानो किसीने घूंसा मार दिया है।

हाथ लगानेसे ही दर्द होने लगता है और सर झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है। रोगी सर पीछेकी ओर झुका दिया करता है और बार-बार एक ओरसे दूसरी ओर हिलाया करता है। इस ढङ्गका दर्द मानो माथेका पिछला भाग कोई बराबर दबाता है और दर्द गर्दनके पिछले भागतक उतर आता है। माथा हिलाने, झुकाने या सीढ़ीपर चढ़नेके समय मस्तिष्कके आवरणमें चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है। माथेके और जहाँ केश रहते हैं अन्यान्य उन स्थानोंके केश उड़ जाते हैं और ब्रह्मतालु तथा माथेके पिछले भागमें इस तरहका दर्द होता है, मानो आलपीन गड़ गयी है। मुँह तथा देह फूल जाती है, मानो शोथ हो गया है। मस्तकके ऊपर बहुत रूसी होती है। शोथ—मस्तिष्क, वक्ष और अन्त्राशयका शोथ, सविराम ज्वरके बाद (कच्छु विषवाले दोष आदिके बाद—सल्फ; दाँत निकलनेके समय—पोडो; पाकाशय और अन्त्राशयके प्रदाहके बाद—जिङ्कम)।

आँख।—माथेमें पानी जमा होना (In Hydrocephalus), रोशनीका ज्ञान लोप हो जाता है (कार्बोन-सल्फ, बेराई-म्यूर, कार्बो-वेज, कैम्फो, चायना, इयुफ्रे, डिजि, ऐसिड-हाइड्रो, स्ट्रैमोन)। पुतली फैली या संकुचित या एक संकुचित और दूसरी फैली। दिनौन्धी (Hemeralopia—ऐको, मर्क, साइलि; रतौन्धी—Nyctalopia—हायो, पल्स); सूर्यकी रोशनी सहन न होना। रोगी निर्बोधकी तरह मुँह फाड़कर टकटकी लगाकर देखा करता है (कैम्फो, ऐ-हाइड्रो, हाइपि, कैलि-ब्रोम, स्ट्रैम)। आँखमें दर्द, मानो आँखके गोलेकी बगलसे एक सूक्ष्मशलाका बेधी जा रही है (आर्स)। शिवनेत्र—आँखकी पुतली ऊपर उल्टी रहती है (एपिस, ऐसिड-हाइड्रो, कार्बो-वेज, स्ट्रैमो)।

मुखमण्डल।—चेहरा लाल, गर्म, पर मलिन; फूला हुआ और बिगड़ी हुई भाव-भङ्गी; म्लान, आँखें और दोनों गाल गड़हेमें धँसे और बरफकी तरह ठण्डे; इसके अलावा कभी-कभी नीले रङ्गके और ठण्डे पसीनेसे तर। ललाट या मुखमण्डलकी त्वचा सिकुड़ी हुई (ऐब्रोट, सार्सा)। मोटी बुद्धि बतानेवाला चेहरा, चेहरेके बाएँ पार्श्वका स्नायुशूल, रोगवाले अंशमें इतना दर्द होता है, कि कोई पदार्थ चबा नहीं सकता। दोनों नासापुट सूखे, मैल-भरे और फूले (विशेषकर बोखारमें)। निश्वास-वायु बहुत बदबूदार।

मुख-विवर।—बराबर इस ढङ्गका मुँह बनाया करता है मानो कुछ चबा रहा है (ब्राई, बच्चोंको निद्रावस्थामें—इग्ने ; यकृत रोगमें—निद्रावस्थामें—कैल्के)। दोनों ओंठोंके संयोग-स्थानपर घाव हो जाता है और वह फट जाता है (काक्यु, ग्रैफ); लगातार लार बहा करती है, ओंठ सूखे और फटे। जीभ—दोनों किनारे लाल और बीचका स्थान पीला। फूले हुए ओंठके ऊपर सफेद रङ्गका छाला हो जाता है। निचला जबड़ा फूल जाता है (आर्नि, आर्स, कार्बो-वेज, लेके, ओपि, स्ट्रैम, जिङ्क)। दाँत-पर-दाँत बराबर रगड़ा करता है (सिना, पोडो, हायो, स्ट्रैमो, लाई, बेल, सिकेलि)। मुँहके भीतर और जीभके ऊपर रसभरी फुन्सियाँ या घाव हो जाता है। जीभ फूली और सुन्न। जीभके अगले भागमें फुन्सियाँ हो जाती हैं और उनको छूनेपर डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। कण्ठमें बहुत कड़ुवा स्वाद मालूम होता है, खानेपर बढ़ता है।

पाकस्थली।—बच्चा बड़े आग्रहसे स्तन पीता है, पर दूसरी चीजोंसे अरुचि दिखाता है (ऐङ्गस, डालका, ग्रैटि, नक्स, ओपि, रियुम)। ठण्डा पानी देनेपर बड़े आग्रहसे बहुत पी जाता है ; रोगी बेहोश रहता है, पर चम्मच दाँतोंसे पकड़ रखता है (मस्तिष्कमें जल-सञ्चय रोगाधिकारमें)। जलसे अरुचि फिर भी अत्यधिक प्यासका होना, जो मिचलाता है, इसलिये भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता : पेटमें बहुत दर्द होता है, काला हरा पदार्थ वमन होता है। पाकाशयसे अन्ननालीतक भयानक जलन होती है ; ऊपरी पेट फूला और पूर्ण। ऊपरी पेट पीठकी ओर खींचता है और खाँसने या टहलनेपर पेटमें दर्द होता है। पानी पीनेपर वह गड़गड़ाकर पेटमें उतरता है (लोरो, ऐसिड-हाइड्रो)।

अन्त्राशय।—पेटमें गड़गड़ आवाज़ होती है, मानो पेटमें पानी हिलता है; पेट फूलता है और उसमें इतना दर्द होता है कि हाथ लगनेसे ही दर्द मालूम होता है। उदरी—आरक्त ज्वरके बाद पेटमें पानी इकट्ठा होता है और शोथ हो जाता है ; जिस धातुके बच्चोंकी गाँठें फूल जाया करती हैं। पेटमें भयानक दर्द, रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है, उसकी आँखें और गाल चिपक जाते हैं, मुँह सफेद हो जाता है और चेहरेपर ठण्डा और लसदार पसीना होता है ; नाड़ी सूतकी तरह सूक्ष्म और मल पानीकी तरह पतला। दाहिने पुट्ठेमें ऐसा दर्द मानो सुई गड़ रही है और दबाव मालूम

होता है, मानो आँतें उतरना चाहती हैं (जेरिट-क्रू, लाई, गुयायेक, गुयारिया, नक्स)।

मलांत और मल ।—नये मस्तिष्कोदक रोगमें (in acute hydrocephalus), दाँत निकलनेके समय और गर्भवतियोंका पतला दस्त ; मल पानीकी तरह पतला, साफ़, गाढ़े गोंदकी तरह और बिना रङ्गका, आँव अथवा सफेद रङ्गका थक्का-थक्का आँव। मेढ़कके अण्डेकी तरह पदार्थ मिला और अनजानमें निकल जाता है। पतला पाखाना भी कष्टसे निकलता है, ऐसा मालूम होता है मानो आँतोंमें इतना बल नहीं है, कि कोमल मलको भी बाहर निकाल फेंके (ऐनाक और हिप)। पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें जलन और कर्कराहट होती है।

पेशाब ।—पेशाब घोर लाल या काले रङ्गका और उसमें काफीकी तलीकी तरह तली जमती है (एपिस, आरक्त ज्वरके बाद शोथ रोगमें—ऐमन्न), आरक्त ज्वरके बाद बहुत थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है और उसका स्रोत बहुत चीण रहता है ; मस्तिष्कको बीमारीमें और शोथ रोगमें पेशाबका रुक जाना ; कभी-कभी पेशाब अण्डलाल मिला। बहुत चेष्टा और तकलीफ़के बाद कई बून्द पेशाब होता है।

श्वास-यन्त्र ।—श्वास-प्रश्वास दीर्घ। वक्षोदक या वक्षमें जल-सञ्चय रोगमें छाती जकड़ जाती है ; रोगी मुँह फाड़कर हाँफता रहता है ; शय्यापर तकिये-पर-तकिया रखकर ठेस लगाकर रोगीको बैठा रखना पड़ता है। प्रति दिन सन्ध्याके समय श्वास-कृच्छ्रता और मानसिक उद्वेग ; रोगीको बाध्य होकर सीधे बैठ जाना पड़ता है। खाँसी—सूखी और लगातार खाक-खाककर आया करती है—खाँसनेके समय गला रुकनेका उपक्रम हो जाता है। खाँसी रातमें बढ़ती है ; तम्बाकू पीता-पीता एकाएक खाँसने लगता है। सोनेपर साँसकी तकलीफ़ घट जाती है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सर हिलानेपर गर्दन अकड़ी और दर्द-भरी मालूम होती है। गलेकी गाँठें सब फूल उठती हैं। शोथ, भीतरी और बाहरी शोथ, साधारणतः सफेद अंश सब लाल हो जाते हैं (लाल अंश सब सफेद हो जाते हैं—फेरम) ; प्यास बिलकुल नहीं रहती (प्यासकी अधिकता—ऐसिड-ऐसेट, ऐपोसिन), जाड़ा लगना, गर्मीसे पसीना होता है ; सन्धि और हड्डीमें

तेज दर्द। उरुके ऊपरी अंशमें अस्त्र गड़नेकी तरह भयानक दर्द और जलन। दोनों पैर स्थिर नहीं रख सकता, खड़े होनेपर घुटने हिल जाते हैं। शरीरके कितने ही अंशमें और अस्थि-वेष्टनी (Periosteum) के भीतर तेज़ दर्द, निर्मल वायु लगने, शारीरिक परिश्रम करने और खाने-पीनेके बाद बढ़ना। अन्यमनस्क होनेपर हाथमें पकड़ी हुई चीज़ गिर जाती है, विशेष मनोयोग दिये बिना कोई भी प्रत्यंग अपना काम नहीं करता। केश और नख आदि झड़ जाते हैं। जखमसे बहुत ज्यादा रस-स्राव होता है।

ज्वर।—ज्वराधिकारमें नासापुट और दोनों छेद बहुत मैले और काले हो जाते हैं; जीभ सूखी और पीली और उसके दोनों किनारे लाल, श्वास-प्रश्वासमें बदबू; पानी पीनेपर वह गड़गड़ शब्दके साथ पेटमें उतर जाता है। दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक बोखारका बढ़ना; चेहरा सफेद और ठण्डा; नाड़ी बहुत क्षीण; ओंठ और कपड़े नोंचा करता है। शीतके समय शरीरमें सिहरावन मालूम होती है और सन्धियोंमें दर्द हुआ करता है। चेहरा गर्म, रोगीको नींद नहीं आती; बिछावनसे उठने या हिलने-डोलनेपर बढ़ता है। ज्वर बढ़कर घट जाने बाद फिर शीत और दर्द पैदा हो जाता है; पानी अच्छा नहीं लगता; प्रतिक्षण थोड़ी मात्रामें पानी पीता है (आर्स) ज्वर या पसीनेके समय रोगी शरीरका वस्त्र नहीं उतारना चाहता (नक्स-वोम, आर्जेण्ट-नाई, हिप, सेम्बियु, स्ट्रैमो, स्ट्रैम)। पसीना ठण्डा लसदार, सोनेके बाद बहुत सामान्य पसीना होता है। पसीनेके बाद यन्त्रणा घट जाती है; पसीना होनेपर भी उत्ताप नहीं घटता।

वृद्धि।—तीसरे पहर ४ बजेसे रातके ८ बजेके भीतर, निर्मल ठण्डी हवामें शरीरका वस्त्र उतार डालनेपर; शारीरिक परिश्रमसे, हिलने-डोलनेपर, माथा झुकाने और रोगके सम्बन्धमें याद आ जानेपर।

उपशम।—गर्म हवामें, अच्छी तरह देह ढँक लेनेपर, सोनेपर श्वास-कृच्छ्रता घट जाती है और स्थिर होकर सोनेपर सर-दर्दमें आराम मालूम होता है; अन्यमनस्क होनेपर भी तकलीफ़ें घट जाती हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—एपिस, एपोसिन, आर्स, बेल, ब्राई, डिजि, लैके, सल्फ, टियुबर्क, जिङ्क, कैलि-ब्रोम, कैम्फो, सिङ्कोना, ओपि, लैके;

रोगका विषय याद आने या सोचनेपर वृद्धि होती है—वैराई, कैल्के-फास, कास्टि, हेलोन, मिडोरिन, ऐसिड-आक्जैल, पेट्रोल, पाइपर-मिथ ।

तुलनीय ।—(एपिसमें तलपेटमें अत्यधिक स्पर्श-अनुभव होना ; उत्तापसे अधिकता) ; डिजिट (नाड़ीकी धीमी गति) ; फास ऐसिड (तन्द्रालुता, आच्छन्न भाव), ओपियम (प्रगाढ़ तन्द्रा) ; जिङ्कम (उद्भेद रुकना) ; लैकेसिस (पेशाबमें काफीकी चूरकी तरह तली) इत्यादि ।

क्रियाका स्थायित्व ।—२० दिनसे ३० दिन ।

शक्ति ।—निम्न-क्रमसे ३० शततमिक ।

हेलिबोरस ओरियेण्टेलिस

(HELLEBORUS ORIENTALIS)

दूसरा नाम ।—लेम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, बदहजमी, मुँहसे लार बहना और काफी पीनेपर घटनेके लक्षणमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हेलिबोरस-विरिडिस

(HELLEBORUS VIRIDIS)

दूसरा नाम ।—ग्रीन हेलिबोर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़ या नयी फुनगियोंसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—शूल ; संन्यास ; गलेका जखम ; उदरामय ; जखम वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हेलोडर्मा

(HELODERMA HORRIDUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहके गिर्गिटके विषसे विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मस्तिष्कके तलदेशकी बीमारियाँ ; मस्तिष्क-मेरुमज्जाके आवरणका प्रदाह ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डकी क्रियाका लोप हो जाना ; स्नायुशूल ; सुन्न हो जाना ; कम्पके साथ पक्षाघात ; पक्षाघात ।

उपयोगिता और आभास ।—इस गिर्गिटके काटनेपर कम्पके साथ पक्षाघात (Paralysis agitans) या मेरुमज्जाके क्षय (Locomotor ataxia) की वजहसे चलनेकी शक्ति न रहनेकी तरह लक्षण पैदा हो जाते हैं । इसका विष बिजलीकी तरह तेजीसे मानव शरीरके चारों ओर दौड़ जाता है और रोगीके शरीरमें बेहद दर्द होता है । अङ्ग-प्रत्यङ्गमें पक्षाघात होनेपर भी दर्द अनुभव होनेकी शक्तिमें बिलकुल ही कमी नहीं होती ; रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा फटा जाता है । देहके भीतरी अंशमें मालूम होता है, कि बहुत अधिक सर्दीके कारण खून जम गया है । ऐसा अनुभव होता है, मानो सारा शरीर जकड़ गया है । चलनेके समय थप-थपकर पैर रखता है, उसे मालूम होता है, कि उसके पैरका तलवा रूईकी तरह कोमल है, बहुत ऊँचाईपर पैर उठाकर जोरसे पटककर रखता है, मानो रास्ता ऊँचा समझकर पैर रखता था, जोरसे गिर गया, कमर और हाथ-पैरमें तेज़ दर्द, दोनों पैरोंमें कीड़ा रेंगनेकी तरह सुरसुरी मालूम होना, सोनेके समय बढ़ना ; दोनों हाथ सुन्न ; जीभ सूखी और फटी-फटी ; कोई पदार्थ निगलनेमें कष्ट होना वगैरह कई इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—किसी तरहका परिश्रम करनेकी इच्छा नहीं रहती (ऐगार, गुयायेक, आर्क्रि-ड्रोप, ऐ-पिक, ज़िङ्क) ; किसी विषयमें मन नहीं लगा सकता

(ऐलेट-फेरि, ऐवेन, लैक-कैन, इथ्यूजा, लाइकोपस, मिलिलोट)। रोगके भयङ्कर आकार धारण करनेपर भी रोगी डरता नहीं है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—पीछेकी ओर गिर जानेकी सम्भावना (ऐनान्थि, ब्रोम, कैल्के, कास्टि, सिलि, स्पञ्जि ; खड़े होनेपर पीछेकी ओर गिर जानेका उपक्रम—सिङ्को)। माथा शून्य मालूम होता है और भीतर खूब ठण्डा तथा बाहरकी ओर ऐसा मालूम होता है कि कोई धक्का दे रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो दाहिनी ओर गिर जायगा (कैम्फो, इयुपेट-पर्प्य, सिलि)। सर-दर्द, रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसका माथा फट जायगा (ब्राई, कैल्के, ऐमोन-म्यूर, सिमिसि, रियुटा, बेराई, कक्कस-कैक्ट)। दाहिनी भौंके ऊपर दर्द। बाईं आँखके ऊपर प्रचण्ड दर्द—आँखके भीतरसे दर्द मस्तिष्कके नीचे और वहाँसे पीठमें उतर आता है। दाहिने कानके ऊपरवाली शंखास्थि (Temporal bone) में तेज दर्द, मानो इस हड्डीके नीचे एक अर्बुद पैदा होकर अस्थि-फलककी भीतरकी ओर दबा रहा है। माथेके सम्पूर्ण दाहिने अंशमें भयानक दर्द होता है (प्रूनस-स्पाइजि, स्पञ्जि) और बाईं ओर सुन्न हो जाता है। माथेके भीतर जलन होती है (फास, ग्लोन) ; माथा गर्म और भरा मालूम होता है, मानो माथेके भीतर मस्तिष्कको स्थान ही नहीं मिलेगा (ग्लोन, क्रियो, कैल्के-फास)। मूर्द्धादेशमें टपक (हाइपिर, लाई, स्ट्रैमो, टेरिब, सल्फ), माथेमें बहुत दर्द होता है, मानो समूचे माथेमें कुछ बँधा है (सिपा, काक्यु, सिल्केमेन, जेलिस, जिम्नोक्लैड, हिप, आयोड, ऐसिड-नाई, सल्फ, टेरिब) ; माथेके चमड़ेमें खींचन मालूम होती है (एपिस, ऐसिड-लैक्टिक, कास्टि, कैनाब-इन, जिङ्क)। रोगी बैठनेपर माथा गड़ाया करता है (हेलिबो, एपिस, बेल, स्ट्रैमो, वेरेट-विर, डिजि, क्रोटोन-टिग)। रोगी माथेमें चिलक मारनेकी तरह दर्दकी वजहसे जाग उठता है। पलक बहुत भारी, आँख आप-से-आप बन्द हो जाती है (कास्टि, जेल्सि, ग्रैफ, सिपि)। दर्द दाहिने कानसे माथेके पीछे घूमकर बायें कानमें पहुँच जाता है।

मुखमण्डल।—मुँह गर्म मालूम होता है ; रह-रहकर गर्म हो उठता है। मुँहपर मानो बरफकी सुई गड़ रही है—ऐसा मालूम होता है (ऐगार)।

मुख-विवर।—जीभ ठण्डी, सूखी और उसमें दर्द। बहुत प्यास; जीभ फूली, बहुत दिनोंतक ऐसी ही रहती है। गलेमें सूखापन, नीरसता, गलेके दाहिनी ओरकी गाँठमें ऐसा दर्द होता है मानो डंक मारता है, कोई भी पदार्थ बड़े कष्टके साथ निगल सकता है। कण्ठमें ऐसा दर्द मानो खाल उधड़ गयी है या पानी लग गया है।

पेशाब।—बैठनेपर दाहिने मसाने या मूत्रग्रन्थिमें ऐसा दर्द मानो सुई गड़ रही है। ऐसा स्वप्न देखकर रोगीकी नींद खुल जाती है, कि उसने बिछावनमें पेशाब कर दिया है। उसी समय पर्याप्त पेशाब होता है। पेशाब होते-होते रुक जाता है मानो मूत्रस्थलीमें पथरी अटक गयी है। हरा पीला मिला रङ्ग और बदबूदार पेशाब।

श्वास-यंत्र।—दाहिने स्तनकी घुंडीसे लेकर दाहिनी बगलतक मानो एक शलाका गड़नेकी तरह दर्द होता है, दाहिने फेफड़ेमें ठण्डक मालूम होती है (ऐमोन-ब्रोम, आयोड); हृत्पिण्डमें बहुत सर्दी मालूम होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डकी गति रुककर उसकी मृत्यु हो जायगी (नेट्र-म्यूर, पेट्रोल)। हृत्पिण्डकी धमक सारे शरीरमें मालूम होती है (ग्रैफ)। हृत्पिण्ड मानो उछलता रहता है, मानो वक्षमें उसे जगह नहीं मिलती, सारा शरीर काँपा करता है (ग्रैटियोला)। हृत्पिण्ड मानो बाईं ओरसे दाहिनी ओर बेधा जा रहा है, ऐसा तेज दर्द (स्पाइ)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन अकड़ जाती है (ऐकी, ऐकि, ऐण्टि-टार्ट, कोलचि, डालका, रोडो—दाहिने पार्श्वमें—चेलिडो)। माथेके पीछेसे कमरके पिछले भाग त्रिकास्थितक जाड़ा मालूम होता है। दाहिने मसाने या मूत्रग्रन्थिमें ऐसा दर्द मानो सुई बेधी जा रही है। कँपकँपीके साथ पक्षाघात; माथा और हाथ काँपता है और सुन्न तथा ठण्डा हो जाता है। बाएँ पार्श्वपर ही अधिक आक्रमण हुआ करता है (ऐण्टि-टार्ट)। चलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो रूईके ढेरपर पैर रख रहा है, मानो पैरका तलवा फूल गया है; चलनेके समय डगमगाया करता है (कास्टि)। चलनेके समय पैर ऊँचा उठाकर जोरसे जमीनपर रखता है, तलवा बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है (डिजि, ग्रैफ, ऐसिड-म्यूर, नेट्र-म्यूर, फास, साइलि) अथवा उसमें जलन होती है (ग्रैफ, ऐसिड-फास, सेङ्गियु, सिपि, साइलि, स्टैन)। अंगड़ाई लेनेपर पेशियोंका दर्द घट जाता है (ऐमिल, ग्रैफ,

कार्बो-वेज, ऐमोन-म्यूर), दर्दका बोध बहुत ज्यादा रहनेपर भी अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुन्न हो जाते हैं और दर्द एक अङ्गसे दूसरे अङ्गतक तेजीसे फैल जाता है। दर्द वगैरह रातमें पैदा होता है और इसी वजहसे रोगीकी नींद खुल जाती है। ऐसी सुरसुरी होती है मानो दोनों पैरोंसे चल रहा है; रातमें सोनेपर ज्यादा सुरसुरी होती है; दोनों हाथ सुन्न। पैरके तलवेमें जलन होनेके कारण रातमें नींद खुल जाती है और आराम मिलनेकी आशासे रोगी बिछावनके बाहर पैर निकाल देता है (सैङ्गियु, सैनिक्यु, सल्फ, मिडोरिन)।

ज्वर।—शरीरके भीतर शीत मालूम होता है, मानो भीतरकी सब चीजें जमती जा रही हैं। निचले पैरसे तरङ्गकी तरह शीत ऊपरकी ओर चढ़ता है। पीठकी राहसे मानो भयानक शीत निचले पैरकी ओर उतर रहा है। माथा और मुँहमें उत्ताप मालूम होता है और दाहिनी भौंके ऊपर थोड़ा-थोड़ा दर्द होता है। निचला पैर बहुत गर्म; सारे शरीरमें उत्ताप। थोड़े ही समयमें उत्ताप चला जाता है और इसके बदले सारा शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। सर्द लसदार पसीना होता है।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—ऐण्टि-टार्ट, ऐल्यू (मेरु-मज्जाका क्षय); आर्जेण्ट-नाई, क्रोटेलस, मर्क-बाई (कम्पके साथ पक्षाघात); लैके, जेल्स, कोना, लिसि, कैम्फो (कम्प या शीतलता), नेट्र-म्यूर, ग्रैफ।

शक्ति।—३०से १००० शततमिक क्रमतक।

हेलोनियस

(HELLONIAS DIOICA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है। इसके सत या सार भागसे "हीलोनिन" विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पेशाबमें अण्डलाल; रजोलोप; मृत्पाण्डु; ऋतु होनेमें विलम्ब और कमजोरी; बहुमूत्र; बाधक; ध्वजभङ्ग; श्वेत-प्रदर; प्रसवके बादका स्राव बहुत दिनोंतक होता रहता है; ज्यादा रजःस्राव; जरायुसे खूनका स्राव; वात; बाँझपन; जरायुकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—जिन स्त्रियोंका सुख, ऐश्वर्य और विलासिताके साथ लालन-पालन हुआ है और इसी वजहसे जिनका शरीर क्षीण हो गया है और सदा जरायु-भ्रंश (गर्भाशयका अपनी जगहसे हटना) रोग भोगा करती हैं या जो बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक परिश्रम कर जीर्ण-शीर्ण तथा सुस्त हो गई हैं, जिनकी पेशियोंमें बराबर जलन और दर्द हुआ करता है और जो बहुत अधिक सुस्तीके कारण रातमें सो नहीं सकतीं, उनके लिये हेलोनियस सञ्जीवनी सुधाकी तरह लाभदायक है और परम-बन्धुकी तरह काम किया करता है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं—"जरायुका अस्तित्व ज्ञान" वह स्पष्ट समझ सकती हैं, कि उसका वस्तिगह्वर (Pelvis) में जरायु है—"रोगिनीके हिलानेपर जरायु भी हिलता है" रोगिनीको ऐसा ही मालूम होता है। जरायु-प्रदेशमें इतना दर्द होता है कि रोगिनी किसीको भी हाथ नहीं लगाने देती; रोगिनी अन्यमनस्क रहनेपर या रोगके विषयमें न सोचनेपर अच्छी रहती है; बहुत बेचैनी—एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकती; क्रोधी स्वभाव; सभीके कामोंमें दोष देखा करती है; बात काटना बिलकुल ही सहन नहीं कर सकती; गहरा विषाद; बहुमूत्र—नयी अवस्था, दिनोंदिन रोगी दुबला होता जाता है; बहुत प्यास; लाला मूत्र—नया या पुराना; गर्भ-धारणके समय; ऋतु नियमित समयसे बहुत पहले हो जाता है और स्राव भी बहुत ज्यादा होता है। योनिमें असह्य खुजली; लारकी तरह स्राव होनेवाला प्रदर; शरीरके कितने ही स्थानोंमें जलन मालूम होना; कमरमें प्रचण्ड दर्द—कमर अवश और थकी मालूम होती है; पहली बार देह-सञ्चालनके समय बहुत दर्द मालूम होता है, पर थोड़ा इधर-उधर करनेपर फिर दर्द नहीं मालूम होता।

लक्षणावली

मन।—अन्यमनस्क रहने या किसी काममें लगी रहनेपर अच्छी रहती है (पाइपर-मिथ, ऐसिड-आक्सैल, हेलिबोरस, कैल्के-फास, आक्सि-ड्रोप, कास्टि, पेट्रोल)। बहुत बेचैन—एक क्षणभर भी स्थिर नहीं रह सकता (पाइपर-मिथ, लिलियम, सिपि)। क्रोधी प्रकृति, सबके ही कामोंमें दोष देखना; प्रतिवाद बिलकुल ही सहन न होता (ऐनाक, ऐस्टिर, अरम-मूर-नेट्र, फेरम, इग्ने, लाई) या किसीका उपदेश ग्रहण नहीं कर सकती। घोर

विषादपूर्ण चित्त (सिक्लेमेन, इग्ने, कैलि-ब्रोम, ऐक, अरम-म्यूर-नेट)। अकेले रहना पसन्द करती है (ऐक्टी, सिक्लेमेन, इग्ने, आक्सिड्रोप)।

मस्तक ।—ब्रह्मतालुमें जलन मालूम होती है (ब्राई, हाइपिर, नेट्र-म्यूर, सल्फ); सर हिलानेपर और मानसिक परिश्रमसे आराम मालूम होता है। सरमें दर्द होता है, झुकनेपर बढ़ता है और सर-दर्दके कारण सरका चक्कर और भी बढ़ जाता है। कपालमें या ब्रह्मतालुमें दबाव और भार मालूम होता है—इस विषयको सोचनेसे रोग बढ़ जाता है।

मुँहके भीतर ।—रोज़ सवेरे बिछावनसे उठनेके समय मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है। बहुमूत्र रोगमें जीभ सफेद, गर्भवती स्त्रियों और दाँत निकलनेवाले बच्चोंके मुँहमें लार अधिक पैदा हो जाना।

पेशाब ।—लगातार दर्द होता है और मसाना या मूत्रग्रन्थिमें, विशेषकर दाहिनी ओर दर्द मालूम होना। मसानेमें जलन होती है। बहुमूत्र—नयी या पहली अवस्था, पेशाबका परिमाण बहुत अधिक और वह साफ़ पानीकी तरह चीनी मिला, दोनों ओंठ सूखे, लसदार, आपसमें सट जाते हैं; प्यासकी अधिकता; रोगी स्थिर नहीं रह सकता और दिनों-दिन दुबला होता जाता है; रोगी चिड़चिड़ा और हमेशा दुःखित रहता है। गर्भवती रमणियोंका पेशाब अण्डलाल मिला (Albuminuria); रोगिनी बहुत कमजोर हो पड़ती है, आलसिन हो जाती है और उसे हरदम नींद आती है। रोगिनीको बहुत थकावट मालूम होती है, पर वह समझ नहीं सकती कि किस कारणसे ऐसा हो रहा है। ऐसा मालूम होनेपर भी कि मूत्राशय खाली हो गया है, उसे अनजानमें पेशाब हो जाया करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—वस्ति-गह्वर (Pelvis) में बहुत भार मालूम होता है (एलेट, बेल, कोलो) और हाथ लगानेपर दर्द होता है (कैल्के, कोना, लेप्पा, ट्रिलियम पेन); "जरायुका अस्तित्व मालूम होना या उपलब्धि" (लिसिन, म्यूरेक्स); अपनी देह हिलानेपर जरायु भी हिलता है—यह वह अच्छी तरह समझ सकती है; क्योंकि उसके जरायुमें बहुत दर्द रहता है। जो स्त्रियाँ बार-बार जरायुसे रक्तस्राव होनेके कारण जीर्ण-शीर्ण हो गयी हैं, उन्हें बहुत जल्दी-जल्दी ऋतु होता है और स्राव परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और काला थक्का-थक्का तथा बदबूदार होता है; एक ऋतुसे दूसरे ऋतुके

बीचके समयमें, शरीरमें जितना रक्त पैदा होता है, बादवाले ऋतु-स्रावमें उससे अधिक निकल जाता है। स्तन इतने फूल उठते हैं और उनमें ऐसा दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता (कोना, लैक-कैन); जरायु-भ्रंश (Prolapsus uteri) और जरायु-ग्रीवाका जखम, स्राव लगातार काली आभा लिये और बदबूदार; भारी चीज़ उठाने या किसी तरहका परिश्रम करनेपर बहुत ज्यादा रक्तस्राव हुआ करता है; चेहरा सफ़ेद और बीमारोंकी तरह; योनिमें बहुत अधिक सुरसुरी और कमरमें बहुत दर्द मालूम होता है। प्रायः गर्भावस्थामें गर्भ-स्रावकी आशंका हो जाती है (सिकेलि, सैबाइ, अरम-मूर-नेट, सैबाल, प्लैट, ऐक्टि-रेसि, कोलोफिल)। किसी तरहका परिश्रम करनेसे ही रोगिनी सुस्त हो जाती है। लगातार श्रोणि-देश या नितम्बसे दोनों पैरोंतक दर्द हुआ करता है। परिश्रम करनेपर किसी तरहका दर्द नहीं रहता (रास, सिक्कामिन, बार्बे, कैलि-कार्ब, स्टैफिस; गर्भ-स्रावके बाद कमरमें दर्द होता है—कैलि-कार्ब)। प्रदर—जरायुके अवसाद और शिथिलताके कारण, स्राव पतला मांसके धोअनकी तरह (प्लैट, हाइड्रैस्ट, ऐल्यू, पेट्रोल, बोवि, ऐमोन-मूर)। परिपाक-शक्तिका विकार और रक्तहीनताकी वजहसे ऋतु-स्राव बन्द होना (Anemia—नैट-मूर); काम-प्रवृत्तिका गायब हो जाना। योनिद्वार गर्म, लाल और फूल उठता है। जलन और भयानक खुजली होती है। जो सब स्त्रियाँ जरायु-भ्रंशके कारण रोग भोग रही हैं, आलस्य और विलासिताके कारण क्षीण हो पड़ी हैं, जो अन्यमनस्क रहनेपर अच्छी रहती हैं, इसलिये जब डाक्टर आता है, तब वे अच्छी रहती हैं; कठिन परिश्रमकर जो सुस्त हो पड़ती हैं, सोनेकी इच्छा न रहना और बहुत थकी तथा अतिरिक्त परिश्रमके कारण जिनकी पेशियाँ सब बहुत दर्द-भरी और जलन-भरी हो जाती हैं, **हेलोनियस** उनका परमबन्धु है।

पीठ।—कमरमें लगातार दर्द, क्लान्ति और दुर्बलता मालूम होती है; कमर और उसके पिछले भागमें (त्रिकास्थिके स्थानमें) जलन और थकन मालूम होती है, बैठनेपर बढ़ जाती है।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—ऐलेकट्रिस और लिलियम इसके विशेष सदृश हैं। पल्स; साधारण भावसे सदृश। ऐक्टिया-रेसि, सैबाल, प्लैट, अरस-मूर-नेट, कोलोफिल, नेट्र-मूर, कास्टि, पाइपर-मिथ, ऐसिड-आक्सैल, लिसिन, म्यूरेक्स, हाइड्रैस्ट।

तुलनीय ।—सिपिया, पिक-ऐसिड (क्लान्तिजनक ऐंठन); प्लेटिना (जरायुका कड़ापन); कास्टिकम (सङ्गमसे अनिच्छा); (जरायु रोगमें); पाइपर-मिथ (अन्यमनस्क होनेपर अच्छी रहती है)।

शक्ति ।—मूल अरिष्ट १म क्रमसे ३० शततमिक क्रम ।

हिपर सल्फ्युरिस कैल्केरियम

(HEPAR SULPHURIS CALCAREUM)

साधारण नाम ।—हिपर सल्फर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, पीछे तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— फोड़ा ; अन्धापन ; हृत्शूल ; भूखमें गड़बड़ी ; दमा ; दाढ़ीमें फुन्सियाँ ; पलकोंका प्रदाह ; स्तनकी बीमारी ; श्वासनालीका प्रदाह ; बाघी ; दाह ; दुष्टव्रण (Carbuncle) ; बिवाई ; हड्डियोंका क्षय ; मृत्पाण्डु ; घुँड़ी ; सर्दी ; कब्जियत ; क्षयकास ; खाँसी ; अतिसार ; कानकी बहुत-सी बीमारियाँ ; आँखकी बीमारियाँ ; खसड़ा ; विसर्प ; सन्धियोंका प्रदाह और पीव पैदा होना ; खून-मिली खाँसी ; अर्श ; सर-दर्द ; क्षय-ज्वर ; वंक्षण-सन्धिकी बीमारी ; स्वरभङ्ग ; कामला ; स्वरनालीका प्रदाह ; श्वेत-प्रदर ; सन्धिके रोग ; ओठका फूलना ; यकृतकी बीमारी ; फेफड़ेकी बीमारी ; श्वित्र या धवल रोग ; दुबलापन ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; मुँहका जखम ; स्तन-वृन्तमें जखम ; डिम्बाधार प्रदाह ; पार्श्व-वेदना ; फेफड़ेका प्रदाह ; गर्भावस्थामें अरुचि और वमन ; कर्णमूल ; वात ; गण्डमाला ; चर्म-रोग ; मेरुमज्जाकी उत्तेजना ; मसे ; उपदंश ; वेग या कूथन ; गलेका जखम ; आमवात ; अंगुलहाड़ा ; क्रुप खाँसी ।

उपयोगिता और आभास ।—अवशाङ्ग लसिका-प्रधान धातु, पतले केश, गोरा रङ्ग और जिनकी पेशियाँ शिथिल हैं, जिनके शरीरमें थोड़ेमें ही पीव पैदा हो जाता है, जिनका शरीर और मन दुर्बल है और जो थोड़ेमें ही कातर हो पड़ते हैं, जो जल्दी-जल्दी बोलते और पीते हैं; खाम-खयाली, शङ्कित और हमेशा

रोगका भय लगा रहता और सर्दी बिलकुल सहन नहीं होती, उनके लिये यह दवा उपयोगी है। उदरामय—पतला और बदबूदार दस्त होता है; बच्चेके सारे शरीरसे खट्टी गन्ध निकलती है; सामान्य कारणसे ही पेटकी बीमारी हो जाती है। खट्टी या कड़वे स्वादवाली चीज़ खानेकी प्रबल इच्छा; थोड़ी भी ठण्ड लगनेपर जोरकी खाँसी आने लगती है; पश्चिमी सूखी हवा लगनेपर श्वास-रोध करनेवाली सूखी खाँसी पैदा हो जाती है; जखम आदिमें खून-मिला पीब पैदा होता है और वह सड़े पनीरकी तरह बदबू करता है; कण्ठमें ऐसा मालूम होता है मानो मछलीका काँटा गड़ गया है; शरीरका वस्त्र उतार नहीं सकता—शरीरका कोई भी अंश खोलनेपर खाँसी आने लगती है। दिन-रात पसीना होता है, पर लक्षण आदि घटते नहीं हैं; श्वास और घुंड़ी मिली गलरोधक खाँसी; शरीरकी त्वचा बहुत जखम पैदा करनेवाली; जरा भी खरोंच लगनेपर उस जगह पीब पैदा हो जाता है और बड़ा-सा जखम हो जाता है; पाराके दोषकी वजहसे बीमारियाँ; शरीरकी त्वचाकी तरह रोगीका मन भी उत्तेजना-प्रवण रहता है। सामान्य कारणसे क्रोधान्ध हो जाता है, विलम्ब सहन नहीं होता। बहुत चिड़चिड़ा, अवसाद-वायुग्रस्त और बिना किसी कारणके ही चिन्तित रहता है वगैरह इसके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—अपने किये हुए या दूसरेके सभी विषयोंमें असन्तुष्ट—हमेशा गहरे विषादमें पड़ा रहता है मानो बिना कारण ही किसीको मार डालनेतकको तैयार है। सामान्य कारणसे ही क्रोधसे अन्धा हो जाता है; बोल-चाल (बेल, कैन्थ), खाना-पीना, सभी विषयोंमें जल्दबाज और तत्पर; चिड़चिड़ा; अवसाद-वायुग्रस्त (Hypochondriacal); अकारण शङ्कायुक्त। असन्तुष्ट चित्त; दोस्तोंसे मिलनेकी इच्छा नहीं होती। विमर्ष भाव—रोना स्वभाव, (डिजि, ग्रैफ)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है—सर हिलानेपर (कास्टि, कोना, ब्राई, फास; तेजीसे हिलाने—कैल्के-कार्ब, कार्बो-वेज); गाड़ीपर चढ़कर घूमनेके समय (साइलि) या सन्ध्याके समय जी मिचलाकर, सरमें चक्कर आकर बुद्धि गड़बड़ हो जाती है और रोगीको धुँधला दिखाई देने लगता है (साइक्लामेन, जेलिस, कैलि-बाई, फाइटो)। माथेमें ऐसा मालम होता है,

मानो पानी हिल रहा है। सरमें दर्द होता है खासकर रातमें ; आँख हिलानेपर बढ़ता है (ऐक्टिया-रेसि, कोलोसिन्थ, म्यूर-ऐ, सिपिया, सिलिका), ऐसा मालूम होता है, मानो कपाल फटा जाता है। सर-दर्द, इस तरहका दर्द मानो माथेमें एक काँटी गड़ायी जा रही है, मानो उसमें एक कील ठोंक दी गयी है (इग्ने, काफि)। दाहिनी कनपटीमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक गड्ढा खोदा जा रहा है। रातके समय और सवेरे नींद खुलनेपर माथेके एक पार्श्वमें मानो मोटी सलाई गड़ गयी है, ऐसा मालूम होता है ; आँख घूमाने-फिराने या माथा झुकानेपर दर्द बढ़ जाता है ; खड़े होने या माथेमें कपड़ा कस रखनेपर आराम मालूम होता है (आर्स, लैके, थूजा ; गर्म कपड़ेसे बाँधनेपर घटना—आर्स ; माथा खुला नहीं रखना चाहता, गर्मीके दिनोंमें भी गर्म वस्त्रसे ढँक रखता है—सोरिन ; माथा खोलते ही सर्दी लग जाती है—साइलि सोरिन)। नासा-मूल मानो जकड़ गया है, इस ढङ्गका सर-दर्द ग्लोनोइनम)। माथा खुला रखनेसे अनिच्छा, इसके साथ ही माथा और मुँहपर ठण्डा लसदार खट्टा पसीना होता है ; थोड़ा-सा परिश्रम करनेपर भी रातमें पसीना बहुत ज्यादा होता है ; विश्रामके समय और उत्तापसे घट जाता है। माथेपर लसदार फोड़े या दुधिया पपड़ी जमनेवाले फोड़े होते हैं, उसमें बहुत बदबू रहती है और नींद खुलनेपर बहुत खुजली होती है (क्रोटन-टिग, विङ्कामाइ, वायोला-ट्राइ, रास-विनि, ग्रैफ, सोरिन), खुजलाने बाद इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता (जलन होती है—क्रोटन-टिग)।

आँख।—आँखके गोलेमें इतना दर्द होता है, कि स्पर्श सहन नहीं होता और ऐसी तकलीफ़ होती है, मानो माथेकी तरफ जोरसे खिंचा जा रहा है (क्रोटन-टिग, ग्रैफ, लैके, मेजेर, पैरिस)। रोज सन्ध्याके बाद चक्षु-गोलकके ठीक ऊपर ऐसा दर्द होता है, मानो फोड़ा हो गया है। सब चीजें लाल रङ्गकी दिखाई देती हैं (बेल, कोना, डिजि, हाय, नक्स-मस ; नीली दिखाई देती हैं—सिना ; काली—साइक्यू ; पीली—सिना, सैण्टोनिन, सिक्लैमेन)। रातमें आँखसे पानी गिरता है और आँखें सट जाती हैं (ऐल्यू, ग्रैफ, सिपिया)।

कान।—नाक छिड़कनेपर, कानके भीतर तेज दर्द और धम-धम आवाज़ होती है। कानके ऊपर और पीछे पपड़ी जमे फोड़े होते हैं (ग्रैफ), कानसे बदबूदार पीब निकलता है (कार्बो-वेज, मार्क, सल्फ ; खून-मिला

पीव—रास)। बहरापनके साथ कानमें साँय-साँय शब्द और टपक (कैल्के, कैनाब, मैग-म्यू, फास, रियुम, ग्रैफो)।

मुखमण्डल।—रस-वटी-युक्त विसर्प (Vesicular Erysipelas), मुखमण्डल प्रदाह भरा, मुँह और गाल फूल जाता है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है; चेहरेकी अस्थियाँ सब छूनेपर दर्द होता है (सिङ्को, कोलोसिन्थ); दोनों ओठोंके संयोगस्थलपर जखम (कैल्के, कैलेण्डियु, ग्रैफ, सिलि)। निचला ओंठ फट जाता है (ऐमोन-कार्ब, नैट्र-मूर), मुँह फाड़नेपर हनु-सन्धिमें तेज दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—दाँतका दर्द, खींचने और चिलक मारनेकी तरह दर्द, दाँत-पर-दाँत लगने, खाने और गर्म कमरेमें दर्द बढ़ जाता है। कीड़ा लगा दाँत दूसरे दाँतसे बड़ा मालूम होता है; दाँतके मसूढ़े और मुँहके भीतर इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता और सामान्य कारणसे भी मसूढ़ेसे खून गिरने लगता है। कोई पदार्थ निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनालीमें एक काग लगाकर बन्द कर दी गई है या उसमें एक मछलीका कांटा गड़ गया है या फूल गयी है (आर्जेण्ट-नाई, डलिकस, ऐसिड-नाई)। गल-ग्रन्थि प्रदाह (Tonsilitis)—पीव पैदा होनेवाली अवस्थामें (मर्क, ऐसिड-मूर, साइलि); पुरानी गल-ग्रन्थिकी वृद्धिकी वजहसे श्रवण-शक्तिका घट जाना (बैराई, लाई, प्लम्ब, सोरिन); कण्ठमें रुखड़ापन और ऐसा मालूम होना मानो छाल खरोंची जा रही है (क्रियो); कोई पदार्थ निगलनेके समय कण्ठसे कानतक सुई बेधनेकी तरह यन्त्रणा।

पाकाशय आदि।—खट्टी चीज और तीती तथा तेज स्वादवाली चीजें खाना पसन्द करता है (ब्राई, सिङ्कोना, नक्स ; तीते पदार्थसे रुचि—डिजि, नैट्र-मूर, खड़ियेका चूर वगैरहसे रुचि—ऐसिड-नाई, नक्स ; मेदमय द्रव्योंसे अरुचि—ऐसिड-नाई ; दूधसे—मार्क, नक्स ; स्निग्ध रसभरी चीजोंसे—ऐसिड-फास, वेरेट)। मेदमय पदार्थों से अरुचि (पेट्रोल, पल्स ; रोटी और काफीसे—लाई, नक्स ; मांस और दूधसे—इग्ने, सिपि, सल्फ ; मिष्टान्नसे अरुचि—कास्टि, ग्रैफ, ऐसिड-नाई)। बार-बार स्वाद और गन्ध-रहित डकार (सड़े अण्डेकी तरह गन्धवाली डकार या धुँध डकार—आर्नि, मार्क, सिपि, सल्फ ; अजीर्ण

खाये हुए पदार्थोंकी डकार—चायना, कोना, पल्स ; लहसनकी गन्धकी डकार—मस्कस)। पेट फूल उठता है—रोगी कपड़ेसे अलग कर देना चाहता है (चायना, लाई, नक्स)। पेटमें जलन होती है (आर्स, नक्स, पल्स)। थोड़ा भी खानेपर पेट भारी हो जाता है (मानो पाकस्थलीमें एक टुकड़ा पत्थर रखा हुआ है—आर्स, ब्राई, कैमो, नक्स, पल्स)। टहलने, खाँसने, साँस छोड़ने या छूनेपर यकृतमें ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है (ब्राई, मर्क, नक्स); पुट्ठेकी गांठ फूल उठती है और उसमें पीव पैदा हो जाता है (मर्क, ऐसिड-नाई)।

मलान्त्र और मल।—नरम मल भी बड़े कष्टसे निकलता है (ग्रैफ, ऐल्यू, कैल्के-फास, सिलिका, सोरिन)। बच्चोंका उदरामय—रोगीके शरीरसे खट्टी गन्ध आती है (कैल्के, रियुम); मलका रङ्ग काला (लेप्टैन, वेरेट, हिलियैन, मर्क)। कोमल मलका पाखाना होनेपर भी खून निकलता है। मलद्वारकी फूली हुई शिरा बाहर निकल पड़ती है (ऐसिड-म्यूर)।

पेशाब।—पेशाब बहुत धीरे और दोण भावसे और बड़े कष्टसे होता है। कभी-कभी तो टपटपकर सीधे भावसे गिरता है। ऐसा मालूम होता है, कि थोड़ा पेशाब बाहर निकल गया ; पेशाबके बाद मूत्रनालीसे खून निकलता है। पेशाबके समय मूत्रनालीमें जलन मालूम होती है और दूसरे समय ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ गयी है। मूत्रनालीका मुँह प्रदाहयुक्त और लाल ; मूत्रनालीसे श्लेष्माकी तरह पदार्थ निकलता है (आर्जेण्ट-नाई, सिपि, सिलिका)।

पुं-जननेन्द्रिय।—लिङ्गाग्रचर्म (चमड़ी—Prepuce) के ऊपर उपदंशकी तरह जखम होते हैं (ऐसिड-नाई ; जखमके भीतरवाली जमीन पनीरकी तरह लेप चढ़ी रहती है—मर्क)। मूत्राधारकी मुखशायिका ग्रन्थिसे रस-स्राव होता है—प्रसवके बाद और कड़ा पाखाना होनेके समय यह रस-स्राव बढ़ जाता है (ऐल्यू, कास्टि, सेलिन)। मुष्क और उरुके स्थानपर रस लगकर पानी लगने-सा हो जाता है और उसमें कुटकुटाहट होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—योनिके बाहरी भागमें और उसके बीचके स्थानकी खाल उधड़ जाना। बाएँ डिम्बाधारमें सुरसुरी (Irritation), वह फूल उठती है और उसमें बहुत दर्द हो जाता है और रक्तस्राव होने लगता है।

ऋतु बहुत देरसे होता है (कास्टि, कैमो, डालका, ग्रैफ, कैलि-कार्ब, नेट्र-म्यूर, पल्स, सल्फ) और स्राव बहुत थोड़ा होता है (कोना, फेरम, कैलि-कार्ब, सार्सा, नेट्र-म्यूर, सिपि)। प्रदर-स्रावमें योनिके बाहरी भागमें कुटकुटी होती है।

श्वास-यन्त्र।—खाँसी; शरीरका कोई अंग खुला रहनेपर खाँसी आने लगती है (रियुम, रास)। घुंड़ी खाँसीकी तरह श्वास-रोध करनेवाली खाँसी; सूखी पश्चिमी हवा लगकर खाँसी आती है (ऐको); वायु खींचनेमें साँयसाँय शब्द, सवेरे खूनमिला और पीवकी तरह कफ़ निकलता है; साधारणतः खट्टा या मीठे स्वादका बलगम; सन्ध्यासे आधी राततक खाँसी बढ़ जाया करती है—कोई अंग ठण्डा होने या ठण्डी चीजें खाने या भोजन करनेपर, ठण्डी हवा लगनेपर, सोनेपर और बात करने तथा रोनेपर, खाँसी बढ़ जाती है; खाँसीके समय माथेमें दर्द और एक तरहकी तकलीफ़ और आवाज़ होती है, मानो माथा फट जायगा; खाँसनेके बाद छींक आती है (बेल), घुंड़ी (काली खाँसी)—सूखी ठण्डी हवा लगकर हो जाती है और बढ़ती है, सूखी और घड़-घड़ आवाज़के साथ खाँसी आती है, स्वरभङ्ग और गलनालीमें घड़-घड़ आवाज़ होती है (ब्रोम, स्पञ्जिया), खाँसी बढ़ती है—सूखी ठण्डी हवामें (आर्स, लैके, फास); ठण्डी चीजें खानेपर (कार्बो-वेज, कूप्रम, लाई, स्क्वियुला), आधी रातके पहले या रातके अन्तिम भागमें (ब्राई, कैल्के, कार्बो-वेज, सिपि, सल्फ, पल्स)। दमा—रोगी बहुत चिन्तामें रहता है, उसकी छातीमें साँय-साँय और घड़-घड़ शब्द होता है; श्वास-प्रश्वास तेज़ और गहरा, श्वास-रोध होनेका उपक्रम, रोगीको बाध्य होकर पीछेकी ओर सर झुकाकर सीधे बैठना पड़ता है। एकाएक कोई चर्म-रोग गायब हो जानेपर (सोरिन) खाँसी बढ़ जाती है। रोगीको ऐसा मालूम होता है कि उसके वक्षपर बून्द-बून्द पानी गिर रहा है (मानो हृत्पिण्डसे ठण्डे पानीकी बून्दें गिरती हैं—कैनाब-इन)। कलेजा बहुत कमजोर मालूम होता है, यहाँतक कि बोलनेमें भी तकलीफ़ होती है (स्टैन)। बहुत कलेजा धड़कना, हृत्पिण्ड और बाएँ वक्षमें मानो एक पतली शलाका बेधनेकी तरह दर्द, प्रायः हृत्पिण्डकी बीमारी हो जाती है (कैक्ट, फास, स्पाइजि)।

प्रत्यंग।—अंगुलहाड़ा—पहली अवस्था, रोगवाली अंगुलीमें भयंकर यंत्रणा और टपक (मर्क, साइलि)। हाथकी तलहत्थी रुखड़ी और फटी-

फटी, बगलकी गाँठें फूलती हैं और वहाँ पककर पीब हो जाता है (साइलि, युगारी); दाहिने बगलकी गांठमें दर्द होता है और वह समस्त बाँहमें फैल जाता है (युग-स्निार); वंक्षण-प्रदेशकी गांठ फूल जाती है और उसमें भयङ्कर जलन होती है, पककर उससे पीब हो जाता है (बेल, मार्क, रास), एँड़ी और निचला पैर फूल उठता है। बैठनेपर कमरके पीछे दर्द होता है।

त्वचा।—शरीरमें सहज ही और सामान्य कारणसे घाव हो जाता है, खरोंच लगते ही पीब पैदा हो जाता है और वह एक बड़े घावमें परिणत हो जाता है (ग्रैफ, मर्क, सोरिन, टैरैण्ट, सार्सा, सल्फ)। रोगीका शरीर रातमें ठण्डी हवा बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता, बगलके कमरेका दरवाजा खुलनेपर भी रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसके शरीरमें ठण्डी हवा लग रही है, गर्मीके दिनोंमें भी सारी देह ढँककर सोता है (सोरिन); शरीरका कपड़ा बिलकुल ही उतार नहीं सकता, खुली हवा लगते ही सर्दी लग जाती है (टियुबर्क), रोगीके शरीरमें स्पर्श सहन नहीं होता, रोगवाली जगहपर पहननेके कपड़ेकी रगड़तक सहन नहीं होती (लैके—धीरेसे स्पर्श सहन नहीं होता, पर जोरसे दबानेपर आराम मिलता है और सहन हो जाता है—सिङ्को)। रोगवाली जगहपर हाथ लगानेसे रोगीको बेहोशी आ जाती है। घावके चारों ओर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं और वे आपसमें मिलकर एक बड़े घावमें परिणत हो जाती हैं। नेजा और पाण्डु रोग, सारा शरीर और आँखके सफेद अंशतक पीले हो जाते हैं और पेशाब खूनकी तरह लाल होता है और शरीर बहुत खुजलाया करता है। पारा आदिके दोषसे पैदा हुए चर्मरोग आदि—बच्चा शरीर धोनेसे बहुत चिढ़ उठता है (ऐण्टि-क्रूड, क्लिमैट, रास, सल्फ)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतका आरम्भ—सन्ध्या ६ बजेसे ७ बजेके समय, बाहरी हवामें बहुत जाड़ा मालूम होता है, शीतावस्थामें पित्ती निकल आती है; शय्यामें सोनेके समय शीत और अन्य सब तकलीफें बढ़ जाती हैं; ज्वर ऊपर आते ही आमवात अच्छा हो जाता है (शीतावस्था जितनी ही घटती है, उतना ही आमवात निकलता है—एपिस; ज्वरके समय आमवात निकलता है—इग्ने; पसीनाके समय आमवात निकलता है—रास)। शीतके बाद बोखार आता है, साथ-ही-साथ ज्वालामयी प्यास आरम्भ हो जाती है; सरमें बहुत दर्द होता है; बोखार ४ बजे दिनसे लेकर रातभर रहा करता है।

समूचे मुँहपर बोखारके दाने निकल आते हैं (इग्ने, नैट्र-म्यूर, नक्स, रास)। पसीनेवाली अवस्था—दिन-रात बहुत ज्यादा पसीना होनेपर भी न तो कोई लक्षण घटता है और न अच्छा होता है ; जरा भी हिलने-डोलनेपर पसीना होता है (सोरिन, सिपि) ; बार-बार शरीरसे बदबूदार कफ़ निकलता है। जीभके अगले भागमें घाव और दर्द होता है ; जीभका पिछला भाग सूखे कीचड़की तरह दिखाई देता है (कैल्के-सल्फ)।

वृद्धि।—रोगवाली करवट सोनेपर (कैलि-कार्ब, मर्क-आयोड, बेल), ठण्डी हवामें ; शरीरके वस्त्र खोल देनेपर ; ठण्डी चीजें खाने-पीनेपर ; जहाँ दर्द हो वहाँ हाथ लगानेपर (मूर्च्छातक आ जाया करती है) और पारेके अपव्यवहारसे।

उपशम।—सेंकने या गर्म प्रयोगसे ; माथा या शरीरमें गर्म कपड़ा लपेट लेनेपर ; तर हवामें (कास्टि, नैट-सल्फ, डालकैमाराके विपरीत)।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न।**—ऐसेटिक-ऐसिड, बेलेडो, कैमो, सिलिका ; शरीरके कोमल अंशका जखम या चोटके सम्बन्धमें कैलेण्डियुला इसका अनुपूरक (Complementary) है।

सदृश और तुलनीय।—(उत्तापसे घटनेके सम्बन्धमें)—आर्स, कैल्के, नक्स-मस, सोरिन। (ओढ़नेकी इच्छा न रहना)—ऐण्टि-क्रूड, क्लिमैट, सल्फ। (स्पर्श-कातरता)—ऐण्टि-क्रूड, आर्निका, लैके, सिलिका, थूजा। (हृत्पिण्डकी बीमारी)—कैक्टस, फास, स्पाइजि। (खरोंच लगते ही जखम हो जाता है)—ग्रैफ, मर्क, सोरिन, टैरेण्ट, सार्सा, सल्फ। (बच्चा खाँसनेके समय रोता है)—आर्नि, बेल। (खाँसीके बाद छींक)—बेल। (ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें मछलीका कांटा गड़ा है)—डलिकस ; आर्जेण्ट-नाई, ऐसिड-नाई। (तेजीसे खाने-पीनेसे)—बेल, लैके, डालका। (घुँड़ी)—ऐकोन, स्पञ्जिया, ऐण्टि-टार्ट, ब्रोमियम, आयोड। (कब्जियत)—ऐल्यू, ब्रायो, नक्स। (खट्टा मल)—कैल्के, रियुम। (जखममें दर्द)—लैकेसिस।

शक्ति।—१म से ६ठा दशमिक विचूर्ण ; ६, ३० और २०० शततमिक या उससे भी उच्च-शक्ति व्यवहृत होती है।

क्रियाका स्थायित्व।—४० से ५० दिन।

हिपोमेनिस

(HIPPOMANES)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पैदा हुए घोड़ेके बच्चेकी जीभमें लगे हुए लारकी तरह पदार्थको सूखाकर पहले विचूर्ण तैयार होता है। इसके बाद उससे इस औषधका अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—ताण्डव ; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह ; कलाईका पक्षाघात ; वात इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—सरमें दर्द ; रोगवाली करवट सोनेपर घटता है और धूप लगनेपर बढ़ता है। अधिककर पाकस्थलीमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना, हाथकी कलाई सुन्न और उसमें बहुत दर्द और हाथकी अंगुलीकी कमजोरीके कारण कोई चीज़ पकड़ नहीं सकता वगैरह इसके कई प्रधान क्रियाफल हैं और निर्णायक लक्षणोंमें गिने जाते हैं ; पहले यह एक प्रधान कामोद्दीपक दवाके रूपमें व्यवहृत होता था।

लक्षणावली

मन ।—विषन्नता ; बेचैनी।

मस्तक ।—माथा बहुत हलका मालूम होता है (जेल्स, मिडोरिन, पल्स) ; सर-दर्दमें माथा खाली मालूम होता है, नींद आती है और बार-बार जम्हाई आती है (सिपा, ग्लोन, सिङ्को ; जम्हाई आनेपर सर-दर्दका घटना—स्टैफिसे) और बहुत प्यास लगती है। घूमनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो माथा सामनेकी ओर गिर जायगा (मूर्च्छाके उपक्रमके साथ—कैस्टोर, हिपोजिन, वेरेट, कैल्के) ; जिस ओर दर्द होता है, उसी ओर सोनेपर घटना (ब्राई) और धूपमें घूमनेपर बढ़ता है (ग्लोन, नेट्र-कार्ब)।

मुख-विवर और पाकस्थली ।—सर-दर्द या गलेके जखमसे मुँहमें बहुत अधिक लार पैदा हो जाती है (ऐमोन-कार्ब, मर्क), ऐसा मालूम होता है कि कण्ठके भीतर (बाएँ पार्श्वमें) मानो एक डाँट या काँटी छेद बन्द किये हुए हैं (ऐल्यू, ऐसिड-लैक्ट, प्लम्ब, सिपि)। खट्टी चीज़ खानेकी इच्छा और मिष्टान्नसे अरुचि (आर्स, बैराई, कास्टि, मर्क, फास, सल्फ, सिनैप)।

हिपाटिका

(HEPATICA)

दूसरा नाम ।—हिपाटिका-ट्राइलोबा । लिवर वार्ट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पत्तोंसे अर्क तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—सर्दी ; ब्राङ्काइटिस ; अग्निमान्द्य ; खून-मिली खाँसी ; गलेका जखम वगैरह लक्षणोंमें इसकी निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय ।**—स्टैनम, कास्टिकम, सैंगुइनेरिया, लैके, सिस्टाइटिस, फास, रियुमेक्स, कैलि-बाई ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हिरैक्लियम

(HERACLIUM)

दूसरा नाम ।—वेङ्का आर्सिना ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—समूचे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कमजोरी ; अग्निमान्द्य ; सर-दर्द ; गठिया वात ; मूत्रग्रन्थिका दर्द ; उदरामय ; शूल वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है । सर-दर्दके साथ औंघाई ; खुली हवामें घूमनेसे बढ़ना ; कपड़ेसे कसकर माथा बाँध लेनेपर घटना इसका निर्देशक लक्षण है ।

सम्बन्ध ।—**तुलनीय ।**—एबिज-नाइग्रा, सियानोथस, कोनायम, ब्रूसिया, जेल्स, जिनसेङ्ग, नेट्रम-सल्फ, नक्स-मस, सल्फ ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

पाकस्थलीमें बरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है (कोलचि, कैम्फ, फास, लैक्टियु-वाई ; भोजनके पहले और बाद—सिस्टस-कैन)।

पेशाब और पुं-जननेन्द्रिय।—पेशाबके बाद मूत्राधारकी मुख श्रायिकासे रस निकलता है (ऐनाक, कैलि-कार्ब, हिप, नेट्र-कार्ब)। बहुत वेग देनेपर सूतकी तरह पतली धारमें पेशाब होता है। ऐसा मालूम होता है, कि मूत्रनालीके भीतरका एक अंश विशेष फूल जानेके कारण पेशाब निकलनेमें बाधा पड़ती है।

प्रत्यङ्ग आदि। हाथकी कलाई सुन्न, विशेषकर सवेरे बिछावनसे उठनेके पहले (ऐको, प्लम्ब ; वातको वजहसे—रियुटा) ; कलाईमें भयङ्कर दर्द, मानो मोच खा गई है (आर्निका, कार्बो-ऐन, लैके, रोडो, कैस्टोर-इकुई), विशेषकर बायें हाथकी कलाईमें। हाथ और अंगुलियाँ सब बहुत कमजोर, कोई चीज़ पकड़कर रख नहीं सकती (एपिस, नेट्रम-म्यूर, साइक्लामिन, सिना, कूप्रम-मेट ; ताण्डव रोगाधिकारमें बाएँ हाथसे कोई चीज़ पकड़ नहीं सकता—लैके ; कलम नहीं पकड़ सकता—बिस्मथ ; वातकी वजहसे—कोलचि)। पैरके घुटना और तलवा बहुत चोण मालूम होते हैं। ऊपर लिखे लक्षणवाला ताण्डव रोग। शरीरके तेजीसे बढ़नेकी वजहसे प्रत्यङ्गोंकी कमजोरी।

सम्बन्ध।—सदृश।—कास्टि, ग्लोन, कैम्फ, सिपि, ऐल्थ, सिस्टस-कैन, नेट्र-म्यूर, कैस्टोर-इकुई)।

शक्ति।—३, ६, ३०, ३००।

होयाङ्ग-नान

(HOANG-NAN)

दूसरा नाम।—स्ट्रिक्नस-गल्थेरियाना।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विशुद्ध वल्कलसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—सुस्तीके साथ सरमें चक्कर आना ; हाथ-पैरोंका सुन्न भाव और उनमें सुरसुरी, निचला जबड़ा सुन्न हो जाना, छाले, फोड़े, उपदंश, एकज़िमा, सुन्न हो जाना, कुष्ठ, पुराना जखम, जिन अङ्गोंमें

ग्रन्थियाँ ज्यादा हैं, उनका केन्सर, सर्प, विषैले कीड़ोंका काटना वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

हीयाङ्ग-नाम केन्सरके जखमका रक्तस्राव और सड़नको तुरन्त घटा देता है तथा जखमके जो तन्तु नष्ट हो गये हों, उनके दुबारा पैदा होनेमें सहायता करता है।

यह आर्सेनिकके बाद खूब अच्छा काम करता है। इस दवाके सेवन करनेके समय शराब पीना निषिद्ध है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—ऐङ्गस्टियुरा, कुरारि, ब्रूसिया, हाइड्रोकोटाइल, नक्स।

शक्ति।—५ से २० बून्द मात्रामें मूल अर्क।

होमेरस

(HOMARUS)

दूसरा नाम।—लोबस्टर (Lobster)।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—चिंड़ी मछलीके माथेके घेरेके साथ दूधकी चीनी मिलाकर विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—पीठमें दर्द ; हड्डीमें दर्द ; सर्दी ; अजीर्ण ; आध्मान ; आँखकी बीमारी ; सर-दर्द ; गलेमें दाने-भरा जखम ; यकृतमें दर्द ; शोथ ; पक्षाघात ; प्लीहाका दर्द ; कलाईमें दर्द इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—अजीर्ण रोग, गलेका जखम और सरमें दर्द वगैरह इसके विषयीभूत हैं। कमरमें दर्द, कामोद्दीपना, नींदमें गड़बड़ी, रातमें वायु निकलनेकी वजहसे नींद खुल जाती है। रोगी सवेरे शरीर हिला नहीं सकता, प्रायः पित्त बढ़ जाया करता है। निम्नाङ्ग खुजलाता है और खुजली बन्द होते ही पलक, ओंठ, नाक वगैरह फूल उठती हैं और कण्ठके फूलनेकी वजहसे श्वास बन्द होनेका उपक्रम हो जाता है प्रभृति इसके कई निर्णायक लक्षण हैं। दूध पीनेपर पेटके उपसर्ग बढ़ते हैं (हमारे एक बन्धुका

कहना है कि मोचा चिंड़ी मछलीका माथा चबानेपर उनके मुँहकी श्लैष्मिक झिल्ली पहले पिटपिट किया करती है और कुछ ही देर बाद फूल उठती हैं)।

लक्षणावली

मन ।—भीत भाव, हिलने-डोलनेमें भय इत्यादि ।

मस्तक ।—सर-दर्द—सवेरे, बाईं ओरकी कनपटीमें बहुत दर्द होता है ; दर्द बाईं आँखके ऊपरसे माथेके पिछले भागतक फैल जाता है। आँखमें दर्द ; बायीं आँखपर हाथ लगानेसे बहुत दर्द मालूम होता है। सवेरे बिछावनसे उठनेके समय बायीं आँखमें दर्द मालूम होता है, मानो कुछ उड़कर गिर गया है। सवेरे पलकें सट जाती हैं और फूल उठती हैं (शरीर खुजलाना रुकनेपर) ; आँखसे बहुत पानी गिरता है (इयुफ्रे)।

नाक ।—नासा-रन्ध्रमें ऐसा दर्द, मानो काँटा गड़ गया है। नासा-रन्ध्रसे गलेके भीतरतक बहुत जलन, सवेरे उठनेके बाद नाक बन्द हो जाती है। बायीं नाकसे कच्ची सर्दीकी तरह पानी गिरता है (एमोन-ब्रोम, डायस्को, लिलियम-टाइ) ; बार-बार छींक आती है।

गलेके भीतर ।—कण्ठनालीका मुँह लाल हो उठता है और उसमें जलन होती है, विशेषकर दाहिनी ओर ; कण्ठके पिछले भागमें गाढ़ा श्लेष्मा जमा हुआ दिखाई देता है और जिह्वामूलके बगलवाले गह्वरमें बराबर श्लेष्मा जमा रहता है ; क्रमसे गलेमें बहुत दर्द होता है, जलन होती है और वह फूलकर शिरामय हो जाता है। मुँह और गलेमें लसदार श्लेष्मा जमा रहता है और कण्ठके बाईं ओर ये सभी लक्षण बढ़ जाते हैं। नींद खुलनेपर कण्ठ सूख जाता है और उसमें दर्द मालूम होता है ; गलेके भीतरवाली श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर मांसांकुर पैदा होनेकी वजहसे कफ़ नमकीन हो जाता है ; नींद खुलने बाद कण्ठ सूखा और उसमें दर्द होता है ; गलेके भीतरकी श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर छींटा पड़नेकी तरह गोल दाग होते हैं (ऐम्ब्रा, कार्बो-वेज, ड्रोसे, ग्रैफ, आयोड, लेके, लाई, पल्स, स्टैन), गलेमें जलन होती है और खाँसी पैदा हो जाती है, मुँह फाड़कर ठण्डी हवा कण्ठमें खींच लेनेपर घटती है। कण्ठमें, कानके छेदमें और गलेके बाम पार्श्वमें दर्द होता है, माथेकी बाईं कनपटी हाथपर रख लेनेसे दर्द घटता है। कण्ठ इतना फूल उठता है, कि

श्वास-प्रश्वासमें बाधा पड़नेकी सम्भावना हो जाती है (एड्रलैन, बेल, कैल्के, लैक-कैन, मर्क, फाइटो)।

पाकस्थली ।—पूर्वाह्नमें रह-रहकर उत्तापका आविर्भाव होनेके साथ पेटमें दर्द। रातमें नींद खुलनेपर भयानक दर्द होता है; सवेरे अच्छा हो हो जाता है और शामके वक्त फिर आरम्भ हो जाता है; हलका भोजन करनेके पहले और बाद पेटमें दर्द हुआ करता है; पेटभर खा लेनेपर घट जाता है; दर्द पेटसे पीठतक फैल जाता है और मेरुदण्डके पास बहुत अधिक मालूम होता है। वायु निकालनेके लिये रोगीकी नींद रातमें खुल जाती है। अकसर पित्त बढ़ जाया करता है और इसके साथ ही कितनी ही तरहके लक्षण पैदा हो जाया करते हैं। दूध पीनेपर तो लक्षण बहुत ही बढ़ जाते हैं।

अन्त्राशय ।—उदरके भीतर तथा कोषमें और यकृतके निचले अंशमें बहुत दर्द होता है; यकृतका दर्द सन्ध्याके समय बढ़ जाता है; दिनमें यकृत और प्लीहामें दर्द होता है; यकृतके पासका दर्द दीर्घ निश्वास लेनेपर बढ़ जाता है (किनिन-सल्फ़)। कई मिनट सोते ही पतला पाखाना लग आता है और नींद खुल जाती है; बहुत वायु निकलनेपर यह लक्षण घट जाता है। रातमें पाखानेके समय बहुत वेग देनेपर कहीं लम्बा और मोटा तथा गाढ़ा लसदार मल निकलता है।

श्वास-यंत्र ।—सोनेपर श्वास-कष्ट पैदा हो जाता है (डिजि, फास)। बायें फेफड़ेके भीतर और पीठमें तेज दर्द होता है। वक्षोस्थिके निचले अंशकी दाहिनी ओर भयानक जलन होती है। कभी-कभी श्वास-कृच्छ्रताके साथ दोनों ओर बहुत जलन मालूम होती है। कण्ठनाली इतनी फूलती है, कि श्वास-प्रश्वास रुक जाना चाहता है।

प्रत्यङ्ग आदि ।—पीठकी दाहिनी ओर मसानेके पास एकाएक ऐसी तेज दर्द पैदा हो जाता है, कि रोगीको बाध्य होकर बैठ जाना पड़ता है। कोहनीकी सन्धि (Elbow joint) के ऊपरी अंशमें मानो दबा रखा है, इस ढङ्गका दर्द—दाहिने हाथमें ही दर्द अधिक होता है। घुटनेके ऊपरी अंशमें खूब अधिक दर्द होता है। घुटना बहुत क्षीण रहता है और काँपता है। बहुत अस्वस्थ मालूम होना; हिल-डोल नहीं सकता, पर हिलाने-

डोलानेपर अच्छा रहता है। शरीरमें अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है। जलपान और मध्याह्न भोजनके बाद रोगी अच्छा रहता है।

त्वचा।—शरीरके कितने ही स्थानोंमें दिन-रात खुजली होती है; सोनेके पहले और बाद बहुत खुजली होती है; खुजलानेपर आराम मिलता है, पर फिर दूसरी जगह खुजली होने लगती है, निम्नाङ्ग विशेषकर पैरकी पोटलीकी पेशीमें बहुत खुजली होती है और रगड़नेपर घट जाती है। (आमवात—ऐस्टेकस-फ्लूवि); खुजलानेके कुछ ही समय बाद ओंठ, गलेका भीतरी भाग और नाक फूल उठती है।

वृद्धि।—दूध पीनेपर, सोनेपर; ठण्डी साँस लेनेपर और रातमें।

उपशम।—हिलाने-डोलाने, वायु निकलनेके बाद, खाने या मध्याह्न भोजनके बाद, गलेमें ठण्डी हवा घुसने और खुजलाने या रगड़ने बाद।

सम्बन्ध।—सदृश।—ऐस्टेकस-फ्लू, लैके, युफ्रे, फाइटो, साइक्यू, लेक-कैन, ऐसिड-नाई, चायना, कोरा, सिपि, मैग-म्यू। तलवा ठण्डा (कैल्के)। नींदके बाद बढ़ना (लैकेसिस); दूध पीने बाद बढ़ना (कैल्के, सिपिया, सलफर इत्यादि)।

शक्ति।—३रे और ४थे दशमिकसे ६ठा दशमिक विचूर्ण और ६ठा शततमिक क्रम।

होमेरिया

(HOMERIA)

दूसरा नाम।—होमेरिया फोलिना, केइप-टालिप।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—यह एक तरहका तेज़ नशीला विष है। बहुत अधिक कब्जियतके साथ **पतनावस्था**—इसका निर्देशक लक्षण है।

शक्ति।—३० शततमिक।

ह्यूरा-क्रिपिटेन्स

(HURA CRIPITANS.)

दूसरा नाम ।—सैण्ड बक्स ; एक तरहका फल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रोटोन, रिसिनस, कैस्टर-आयलकी तरह यह भी एक विरेचक दवा है। ह्यूरा तैल २० बून्दकी मात्रामें सेवनसे दो चम्मच कैस्टर आयलकी तरह विरेचनका काम होता है ।

होमियोपैथी मतसे यह उदरामय, वमन, गलेका जख्म, गलेमें जलन अनुभव होना और दृष्टि-शक्तिका घटना लक्षणमें व्यवहृत होता है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कास्टिकम (गलनालीमें जलन), क्रोटोन, होरा ब्रैसि, रिसिनस ।

दोषघ्न ।—कैम्फर और ओपियम इसका विष-दोष नष्ट करता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

ह्यूरा इरासिलियेन्सिस

(HURA ERASILIENSIS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मनसा जातिके वृक्षके गोंदसे तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—अन्धापन ; मूर्च्छावायु ; कुष्ट ; चर्म-रोग ; मेरुदण्डमें दर्द इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—क्रोटोन टिग्लियमकी तरह इसके द्वारा भी शरीरमें जगह-जगह चेचककी गोटियोंकी तरह दाने निकला करते हैं और ये दाने रससे इतने भरे रहते हैं, कि किसीका भी मुँह फाड़ देनेपर रस छिटक पड़ता है। इसका एक प्रधान निर्णायक लक्षण यह है, कि रोगीके

अंगूठेके नखमें ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है और गण्डास्थिकी तरह शरीरके जिन अंशोंकी हड्डी ऊँची हो रही है, उन-उन अंशोंकी आवरक त्वचा, इससे पैदा हुए उद्भेद आदिके मनोनीत आवास-स्थल रहते हैं। क्रोटोनमें जिस तरह शरीरकी त्वचामें कसावटका भाव मौजूद रहता है, ह्यूरासे पैदा हुई गोटियोंमें भी उसी तरहके रसकी अधिकता दिखाई देती है। (डा० फैरिङ्गटन)।

लक्षणावली

मन।—बहुत दुःखित— मानो कोई भयङ्कर घटना घटी है। लगातार रोता-रोता जोरसे हँस उठता है। मानस-पटलपर भविष्यके सम्बन्धके विषाद-जनक चित्र अङ्कित करता है, मानो भविष्यमें उसका जीवन बहुत दुःखमय हो उठेगा। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके किसी प्रिय बन्धुकी शीघ्र ही मृत्यु होगी, यहाँतक कि उसे ऐसा मालूम होता है, मानो उन बन्धुओंकी लाशें उसके सामने रखी हुई हैं। सामान्य शब्दसे भी रोगी चौंक उठता है (बेल, काक्यु, मिडोरिन, ओपि, सिलिका)।

नाक।—दोनों रन्ध्रोंसे बहुत ज्यादा खून निकलता है। ऐसा मालूम होता है, मानो नासा-मूल सट गया है (कैलि-बाई, लैक-डिफ्लो, सिपि ; खूनके स्रावके साथ—रियुटा) और टपकका दर्द होता है (कैलि-बाई, सेरासीनियाँ)। रन्ध्रसे खूनका स्राव होनेके पहले नाकमें खूनकी गन्ध आती है।

पाकाशय आदि।—खाना समाप्त करते ही फिर भूख मालूम होने लगती है (सिना, फास, फाइटो, स्टैफिस ; जितना ही खाता है, उतना ही अधिक खाना चाहता है—लाई)। बहुत भूख मालूम होनेपर पेटमें दर्द होने लगता है। बहुत असह्य यंत्रणा-जनक अन्त्रशूल (आँतोंमें दर्द) और उसके साथ ही पतले दस्त आते हैं और शरीर काँपता है (इथ्यू, कोलचि, क्रोट-टिग, कैल्को, प्लम, वेरेट)। अन्धान्त्र-प्रदेशमें (Ilio-cœcal region) में ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ रही है, हिलने-डोलनेपर बढ़ जाता है। बाएँ कोखमें मरोड़की तरह या समूचे वस्ति-गह्वरमें (Pelvic region) ऐसा असह्य दर्द मानो काट रहा है, रोगी तकलीफसे चिल्लाया करता है। उदरामय—मल पतला बिना किसी दर्दका, हिलने-डोलनेपर ही पाखाना लग आता है (ब्राई, कोलचि, फेरम ; नीचे उतरनेपर—बोरैक्स)। मल बहुत बदबूदार और मृदु, क्रोटो

सफेद कृमि-मिला (ऐस क्लिप, टियुब, ऐब्रोट, कैल्क, स्टैन, स्पाई, सिना, इग्ने) ; कब्जियत, कड़ा और बहुत थोड़े परिमाणमें मल, बहुत तकलीफ़से निकलता है। मलद्वारमें संकोचन।

पेशाब।—चलनेके समय दाहिनी मूत्रग्रन्थिमें तेज दर्द और बहुत ज्यादा पेशाबका वेग होता है। पेशाब कुछ हरा और उसमें सफेद तली जमती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—असह्य लिङ्गोद्गम ; वीर्य गाढ़ा और पीला। चलनेके समय दोनों अण्डकोषोंमें भार मालूम होता है (ऐसिड-आक्सैल)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें दर्द—मानो किसीने जरायुको दबा रखा है, मानो उसमें कोई तेज अस्त्र घुसा दिया गया है और इसके बाद योनिमें इस ढंगका दर्द होता है, मानो कोई छुरी मार रहा है। ऋतु—नियमित समयके आठ दिन पहले हो जाता है (काक्यु, आर्निक) ; स्राव बहुत थोड़ा, प्रदर-स्रावके साथ बहुत ज्यादा ऋतुस्राव होता है (बोविस्टा, कैल्के, कार्बो-वे, सिनैमोन, लाई, लिसिन, नैट्र-मूर, पल्स)।

श्वास-यंत्र।—कण्ठ सूख जाता है और सुरसुरी होकर खाँसी आती है, कफ़ मिर्चकी तरहके (Rusty) रङ्गका खून-मिला श्लेष्मामय (ऐण्टि-टार्ट, हिपोजिनिन, आयोड, लाई, फास)। कुछ देरतक बातचीतके बाद कण्ठके भीतर और श्वासनालीमें ऐसा मालूम होता है, मानो खाल उधड़ गयी है और जल उठता है तथा बहुत-सा खून मिला पाखाना निकलता है। खून मिला कफ़।

त्वचा।—दोनों पैरोंके प्रत्येक रोंएँकी जड़में मच्छड़ काटनेकी तरह छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंमें विशेषकर गण्डास्थिकी तरह जिस अंशकी हड्डियाँ उठी हुई हैं, उन हड्डियोंके ऊपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं और उनको फोड़ देनेपर रस छिटक पड़ता है (क्रोटोन, कैन्थ देखिये)। कुष्ठ व्याधि (हाइड्रोकोट)।

सम्बन्ध।—**सदृश या तुलनीय**।—कैन्थ ; क्रोटोन ; इयुफोर्बि ; ऐसिड-आक्सैल।

प्रतिविष या दोषघ्न।—ओपि, कैम्फ।

शक्ति।—३रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रम।

हाइड्रैञ्जिया-आर्बोरेसेन्स

(HYDRANGIA-ARBORESCENS)

दूसरा नाम ।—सेवेन-वर्क्स ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते और नयी फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—यह मूत्र-पथरी रोगकी एक बढ़िया दवा है । कमरमें दर्द, मूत्र-पथरीका शूल, लाल रङ्गका पेशाब या खून-मिला पेशाब, पेशाबमें छोटी-छोटी पथरी निकलना वगैरह लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है ।

किसी-किसीका कथन है कि—बहुत तेज़ प्यासके साथ बहुमूत्र रोगमें भी यदि पेशाबका वेग रोकनेकी शक्ति न रहे तो इससे आशातीत लाभ होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—बार्बेरिस, सैबाल-सेरु, सोलिडेगो, थ्लैस्पि-कार्सा, उवा-उर्सी, ओसिमम-कैनम, लाइको, चिमाफिला, पेरेइरा, आक्सि-केड्रडन ।

शक्ति ।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति ।

हाइड्रैस्टिनिनम म्यूरियैटिकम

(HYDRASTININUM MURIATICUM)

परिचय ।—एक तरहका हाइड्रैस्टिस कैनाडेन्सिसका उपचार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—दाने (Cystals) से विचूर्ण तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथीके मतसे भीतरी रक्तस्रावमें इसका व्यवहार प्रचलित है ।

होमियोपैथीके मतसे बहुत ज्यादा ऋतुस्राव और तन्तुमय अर्बुदकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

शक्ति ।—२ दशमिकसे ६ शततमिक क्रम ।

हाइड्रैस्टिकम म्यूरियैटिकम

(HYDRASTICUM MURIATICUM)

दूसरा नाम।—म्यूरियेट और हाइड्रैस्टिया।

उपयोगिता और आभास।—इसमें धमनीका संकोचन पैदा करने और जरायुसे रक्तस्राव रोकनेकी शक्ति है। इसीलिये यदि जरायुसे बहुत अधिक रक्तस्राव (विशेषकर यदि वह तन्तुमय अर्बुदके कारण हो) वगैरह लक्षणमें विशेष सफलताके साथ व्यवहृत होता है।

मुँहमें जखम, गलेमें जखम, नाकमें जखम वगैरहमें इसका बाहरी प्रयोग करनेपर विशेष लाभ होता है।

सम्बन्ध।—**तुलनीय**।—हाइड्रैस्टिस कैना।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हाइड्रैस्टिस कैनाडेन्सिस

(HYDRASTIS CANADENSIS)

दूसरा नाम।—आरेञ्ज रूट। गोल्डन सिल।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
शराब पीनेकी वजहसे मतवालापन ; दमा ; केन्सर या कर्कटीया जखम ; सर्दी ; कब्जियत ; गट्ठा ; अजीर्णता ; खसड़ा ; कर्ण-रोग ; मूर्च्छा ; नासूर ; पाकाशयका विकार ; प्रमेह ; अर्श ; कामला ; श्वेत-प्रदर ; नखकी बीमारियाँ ; स्तनकी घुंड़ीका जखम ; यकृतकी बीमारी ; कटिवात ; श्वित्र ; बहुत ज्यादा रजःस्राव ; जरायुसे खूनका स्राव ; मुँहका जखम ; माथेमें आवाज़ ; नकसीर ; फूल अटकना ; गुह्यद्वारकी बीमारी ; गृध्रसी या पैरका झुनझुनीवाला वात ; माथेसे रक्त-स्राव ; पाकस्थलीकी बीमारी ; उपदंश ; स्वाद बिगड़ा ; गलेका जखम ; सान्निपातिक ज्वर ; जरायुकी बीमारी।

उपयोगिता और आभास।—इसका सभी श्लैष्मिक झिल्लियोंपर आक्रमण होता है और कण्ठ, पाकस्थली, जरायु और मूत्रनालीकी सर्दी पैदा हो जाती है और उसके भीतरकी झिल्लीसे गाढ़ा गोंदकी तरह पीला श्लेष्मा निकला करता है। पाकस्थली और यकृतके क्रिया-विकारके साथ कर्कट पैदा होनेवाली धातुवाले मनुष्य या बहुत शराब आदि पीनेके कारण जिनका स्वास्थ्य भङ्ग हो गया है, उनके लिये हाइड्रैस्टिस विशेष लाभदायक है। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं:—नाक, गलेका भीतरी भाग, पाकस्थली, अन्त्राशय, जरायु या मूत्रनालीकी श्लैष्मिक झिल्लीसे गाढ़ा गोंदकी तरह और पीले रङ्गका श्लेष्माका स्राव; कर्कटका अर्बुद (Scirrhus), कड़ा और त्वचासे सटा हुआ, उसकी आवरक त्वचापर छींटेकी तरह दाग रहते हैं और वह सिकुड़ी हुई उसमें अस्त्रकी चोट लगने और छेदनेकी तरह दर्द होता है; स्तनकी घुंड़ी पीछेकी ओर खिंचती है। ढीली और दाँतके दागसे भरी जीभ। खाँसनेपर नाकके पीछेवाले छेद (Posterior Nares) और जीभकी जड़के अगल-बगलवाले दोनों गह्वर (Fauces) से नीला और गाढ़ा गोंदकी तरह या पतला रबरकी तरह श्लेष्मा निकलता है। पारा या उपदंश विषके कारण पैदा हुआ गलेका जखम।

लक्षणावली

मन।—विस्मृति-प्रवण, जो पढ़ता है या बोलता है, वह याद नहीं रख सकता। किये हुए अपकारका बदला चाहनेवाला स्वभाव (नक्स, कैलि-आयोड)। ऐसे आकांक्षा करता है, कि वर्त्तमान रोगमें उसकी मृत्यु हो जाये (ग्लोन, क्रियो, मर्क, सल्फ, सिफिलिन)।

मस्तक।—माथेमें नशा होनेपर जैसा हो जाता है, उसी तरहकी गड़बड़ी या जड़ता मालम होती है (जेल्स)। आँखके ऊपर कपालमें दर्द होता है—हाथसे दबा देनेपर आराम मिलता है। ब्रह्मतालुमें दर्द होता है, एक दिनका नागा देकर, दिनके ११ बजनेके समय आरम्भ होता है, जो मिचलाता है, ओकाई आती है और मनमें कष्ट होता है; कपालमें जहाँ केश खतम हुए हैं वहीं फोड़ा होता है, बाहरकी ठण्डी हवा सेवन करते-करते, गर्म कमरेमें जानेपर घाव बढ़ जाता है और पानीसे धोनेपर रस निकला करता

है। माथेकी पेशीमें ज्यादा दर्द होता है, माथेकी त्वचा और गलेकी पेशीमें दर्द हुआ करता है (ऐक्टि-रेस)।

आँख।—आँख और पलकोंमें दर्द और जलन होती है और बहुत ज्यादा आँसू गिरा करते हैं। पलकें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, ब्राई, पल्स, लाई)। आँखका स्वच्छ आवरक अस्वच्छ या गदला भाव लिये रहता है (कैनाब-सैट, कोना, इयुफ्रे)। ठण्ड लगनेकी वजहसे आँखका प्रदाह, आँखसे गाढ़ा श्लेष्मा निकलकर (बेराइ, कैल्कि, हिप, मर्क, आयोड, पल्स, सल्फ), आँख घोर हरा-पीला मिले रङ्गकी हो जाती है।

कान।—कानमें गरजनेकी आवाज या भों-भों शब्द (कास्टि, ग्रैफ, पल्स), कर्ण-स्राव, बदबूदार गाढ़ा पीब निकलता है। गल-ग्रन्थियोंके (Tonsils) बढ़नेके कारण बहरापन। कर्ण-पश्चान्नलीकी सर्दी, रोगीके कण्ठकी आवाज़ बहुत चढ़ी रहती है।

नाक।—नयी सर्दी, स्राव पानीकी तरह और जखम पैदा करनेवाला (आर्स, आर्स-आयोड, सिपा, एरम-ट्राई)। अस्थि-गोलकके ऊपरी भागमें भार मालम होता है; कपालमें दर्द होता है और बार-बार छींक आती है। साँस खींचनेपर नासारन्ध्रमें ठण्ढक मालूम होती है। खाँसनेपर नासा-पश्चान्नलीसे पीले रङ्गका गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है (नासा-पश्चान्नलीसे श्लेष्मा कण्ठनलीके मुँहमें गिरता है—फेर, कैलि-बाई), पीनस या पुरानी सर्दीकी बीमारी, खून मिला पीबकी तरह श्लेष्मा निकलता है कभी-कभी नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है (कोरैल-रूब)। पारा या उपदंश विषकी वजहसे गलेका जखम और निगलनेमें कष्ट। नासारन्ध्रमें सुरसुरी होती है, ऐसा मालूम होता है कि उसमें केश अड़ा हुआ है, विशेषकर दाहिने छेदमें (बायें छेदमें—आर्जेण्ट, स्पाई, कैलि-बाई)

मुखमण्डल।—चेहरा उतरा हुआ, पीला और आँख कालिमासे घिरी; दोनों आँखें गड्ढेमें धँसी, ओंठका एक तरहका कर्कट रोग; श्वेत-कुष्ठ।

मुख-विवर।—मुँहमें ऐसी जलन मालूम होना मानो मिर्चा चबाया है। जीभपर सफेद लेप और बीचमें एक पीली रेखा; जीभ फूली और उसके दोनों ओर दाँतके दाग (आर्स, मर्क); जीभ मानों झुलस गयी है (सैङ्ग्वि),

ऐसा मालूम होना (कोलो, वेरेट, विर)। स्तन पिलानेवाली माताके मुँहका जखम (लैके, लैक-कैन, पोडो ; स्तनवृन्तमें जखमके साथ होनेपर—फास); पारा या क्लोरेट आव पोटास लगने या सेवन करनेके कारण मुँहका जखम ; जीभका कर्कट रोग (एपिस, कार्बो-ऐन, कोना, लैके, एसिड-नाई, फाइटो, सिलिका)।

गलेके भीतर।—खाँसनेपर नासा-पश्चान्नली और जिह्वामूलकी जड़के दोनों गह्वरसे गाढ़ा गोंदकी तरह लसदार और पीला श्लेष्मा निकलता है। गलेमें जखम पैदा हो जाता है।

पाकस्थली।—ऊपरी पेटके कर्कट रोगमें पेट बराबर खाली और क्षीण मालूम होता है ; डकार लेनेमें गलेमें अम्ल आ जाता है और पानी मिले दूधके सिवा और जो कुछ खाता है या पीता है, वह सब कै हो जाता है। रोगीको स्वभावतः अच्छा पाखाना नहीं होता (ग्रैफ, काण्डियुरैंगो)। पाकाशयका प्रतिश्याय या सर्दी (Gastric catarrh), मुँह उजला, जीभ पीली लसदार ; खाने बाद पाकस्थलीमें सुस्ती मालूम होती है और रोगीको पर्याय क्रमसे पतला और कड़ा पाखाना हुआ करता है, इसके साथ ही कामला रोग (Jaundice)। रोटी या साग-सब्जी खानेपर अम्ल हो जाता है। रोगी आलसी हो पड़ता है और जो खाता है, वह पचता नहीं है। कलेजेमें धड़कनके साथ पाकाशयमें खालीपन और सुस्ती मालूम होती है, मानो पेटमें कुछ नहीं है। सुखण्डी (Marasmus), पेट खोखला हो जाता है और रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है ;

अन्त्राशय।—यकृतकी क्रिया न होनेके कारण उजला और बहुत थोड़े परिमाणमें पाखाना होता है। यकृत छोटा हो जाता है (Atrophied)। ऊपरी पेट और तलपेटमें थोड़ा दर्द और जलन होती है और प्लीहा-प्रदेशमें तेज दर्द मालूम होता है। पित्त पथरीका शूलका दर्द (कैल्के, कार्ड्यस-मेरी, चायना)। कब्जियतके साथ छेदनेकी तरह शूलका दर्द विशेषकर तलपेटमें। वायु निकलने बाद घट जाता है, मानो छुरीसे काटनेकी तरह तेज दर्द होता है और दर्द अण्डकोषोंतक उतर आता है, पाखाना हो जाने बाद मूर्च्छाकी तरह हो जाता है। पुट्ठेमें ऐसा दर्द होता है मानो जकड़ गया है और मानो काटता है, इस ढङ्गका दर्द अण्डकोषतक फैल जाता है।

मलान्त्र और मल।—दस्त पतले, मल उजला और कुछ हरी आभा लिये, मलद्वार जखम पैदा करनेवाला। कब्जियत—मल थक्का-थक्का और पीले श्लेष्मासे ढका (ग्रैफ); किसी तरह भी पाखाना नहीं होता और माथेमें धीमा-धीमा दर्द हुआ करता है। पेट बिलकुल खाली मालूम होता है और अच्छी तरह न पचनेके कारण खाँसी आ जाती है; विरेचक दवाएँ खानेपर कब्जियत और भी बढ़ जाती है। पाखानेके समय और बाद मलान्त्रमें बहुत देरतक जलन हुआ करती है। मलद्वारका नासूर या भगन्दर। अर्श—रक्त-स्राव होनेके कारण रोगी क्षीण और सुस्त हो पड़ता है। मलान्त्र-प्रदाह (Proctitis of inflammation of Rectum—ऐलो, पोडो, कोलचि, ऐसिड-नाई, फास)।

पेशाब।—मूत्रस्थलीका प्रदाह (Cystitis), पेशाबके साथ गाढ़ा गोंदकी तरह पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलता है और तली जमती है (चिमैफिल)। मूत्र-ग्रन्थि-प्रदेशमें लगातार थोड़ा-थोड़ा दर्द होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—स्वप्नदोषके बाद रोगी कमजोर हो पड़ता है (सिङ्को)। प्रमेह—द्वितीय अवस्था, गाढ़ा पीला श्लेष्मा निकलता है। लाल प्रमेह (Gleet), सुस्ती और बहुत ज्यादा परिमाणमें बिना दर्दवाला स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—प्रदर; स्राव कभी-कभी पानीकी तरह या अधिकांश समय गाढ़ा ही होता है, रङ्ग पीला और जखम पैदा कर देनेवाला; ऊपरी पेट खाली मालूम होता है और कलेजा धड़का करता है (डा० फेरिङ्गटन); ऋतु होनेपर बढ़ता है। जरायु-द्वार, जरायु-ग्रीवा और योनि-पथ मानो खाल उधड़ जानेकी तरह हो जाता है (Excoriated) सूत्र-तन्तु-मय अर्बुद (Fibroid tumor) होनेके कारणसे जरायुसे रक्तस्राव होता है, वयःसन्धिकालमें (at menopause) बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव होता है और योनि-द्वारमें भयानक सुरसुरी होती है—कभी-कभी कमरमें उत्तेजना होती है। अस्त्रकी चोटकी तरह दर्द, स्तनसे कन्धे तक और कन्धेसे बाँहतक फैल जाता है। स्तनका कर्कट, अर्बुदमें ऐसा मालूम होता है मानो छुरी मारी जा रही है; बाएँ स्तनमें कड़ा और ऊँचा-नीचा अर्बुद, स्तनकी घुंड़ी भीतरकी ओर घुस जाती है। बगलकी गांठ फूलती है, उसमें दर्द होता है और रोगिनी दुबली हो जाती है; जिनका बच्चा स्तनका दूध पीता है, उनके मुँहके

छाले; स्तनकी घुंड़ीकी खाल उधड़ जाती है अथवा फट जाती है और उसमें बहुत दर्द होता है। जरायु-भ्रंश, इसके साथ ही जरायु-ग्रीवा और योनिमें घाव हो जाता है।

श्वास-यन्त्र।—स्वरनालीमें पिट-पिट करती हुई सूखी खाँसी आती है। छातीमें जलन होती है, उसमें बहुत दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है मानो भीतर जखम हो गया है। दुबले-पतले वृद्ध मनुष्योंका वायुनली-भुज-प्रदाह (Bronchitis), कफ़ पीला और गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मामय (कैलि-बाई)। क्षय-कास रोगमें ऊपरी पेट खाली मालूम होता है, शरीर दुबला हो जाता है, सवेरे बहुत देरतक छाती धड़कती और भूख नहीं रहती। कलेजा धड़कना, छातीके भीतरसे बाएँ कन्धेतक तेज़ दर्द फैलता है और बाँया हाथ सुन्न हो जाता है, हृत्पिण्डकी गति अनियमित और आयास साध्य, करवट बदलकर सोनेपर बढ़ जाता है; बाईं करवट सोनेपर ऐसा मालूम होता है, मानी साँस रुक जाती है।

त्वचा।—पाण्डुरोग, शरीरकी त्वचा गाढ़ी हरी पीली रङ्गकी। शरीरके अंश-विशेषमें बहुत अधिक पसीना होता है (बहुत पानी या स्वेदका स्राव), बगल और जननेन्द्रिय प्रदेशमें बहुत ज्यादा और बदबूदार पसीना होता है। शीत-पित्त या आमवात, खुजलानेपर और रातमें बढ़ता है। बच्चोंके गले और अङ्ग-अङ्गके गांसेमें खाल उधड़ जानेकी तरह घाव हो जाता है (Intertrigo—लाई, ग्रैफ)। मसूरिका या चेचक (आरम्भसे अन्ततक प्रयोग करना चाहिये)। दाने सब काले, भयानक पिट-पिटाहट और खुजली होती है। मुँह फूलता है, ऐसा मालूम होता है, मानी गलेके भीतरकी खाल उधड़ गयी है—रोगी बहुत कमजोर।

वृद्धि।—रातके समय; उत्तापसे; धोनेपर और शरीर सञ्चालनसे।

उपशम।—विश्राम और रगड़नेपर।

प्रतिविष।—(Antidote) सलफर।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—एसिट-क्रूड, पल्स (श्लैष्मिक-झिल्ली); कैलि-बाई, ऐलो, कोलिन्सो, बार्बा, लाई, पोडो, मार्क, नक्स-वोम (पाकाशयकी सर्दी); मर्क-कोर, इयुफ्रे (सर्दी); हिप (पीनस); कोना,

कार्बोनियम, क्रियो, फाइटो (कर्कट); चेलिडो (यकृत); सैङ्गियु, हाइड्रोकोट, बैप, थूजा, सलफर (निम्नाङ्ग)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३० शततमिक क्रम (अजीर्ण रोगमें निम्न और नाककी सर्दी रोगमें उच्च क्रमका व्यवहार करना चाहिये)।

हाइड्रोकोटाइल एसियाटिका

(HYDROCOTYLE ASIATICA)

दूसरा नाम।—एक तरहकी कोढ़ी।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—स्थलकुड़ी लताके समूचे वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; कब्जियत ; गोद ; सड़नेवाले जखम ; प्रमेह ; कुष्ठ ; प्रदर ; यकृतका घटना ; स्नायुशूल ; चर्म-रोग ; जरायुकी बीमारियाँ ; योनिमें खुजली।

उपयोगिता और आभास।—कुष्ठ और त्वक् रोग (मुँहका एक तरहका सफेद रङ्गका जखम) में इसका फायदा प्रसिद्ध है। शरीरकी त्वचाकी तरह स्त्री-जननेन्द्रियपर भी इसके द्वारा प्रभाव पहुँचनेके कारण प्रदर आदि उत्पन्न हो जाया करता है और यकृत, स्नायुमण्डल और श्लैष्मिक-झिल्लीपर भी इसकी महान शक्तिका परिचय मिला करता है। इसके क्रियाफल-स्वरूप व्रण, एकजिमा, जले घाव (Pemphigus), त्वक् (Lupus) और तांबेके रङ्गके उद्भेद प्रभृति नाना प्रकारके चर्मरोग पैदा होते हैं ; मुखमण्डलमें स्थान-स्थानपर घनी फुन्सियाँ और शरीरकी कितनी जगहपर असह्य खुजली ; अविषाक्त या उपदंश दोषके कारण मुँहके घाव, बार-बार मूत्राशयमें सङ्कोचनकी वजहसे पेशाबका वेग, पेशाबकी परिमाणमें अधिकता ; स्त्री-योनिमें गर्मी और सुड़सुड़ी ; जरायु भारी ; जरायुमें मांसांकुरमय जखम (Granular Ulceration) ; चेहरेका स्नायु-प्रदाह और पेशीमण्डलीमें दर्द वगैरह इसके कई क्रियाफल हैं।

लक्षणावली

मन ।—विषन्नता ; एकान्तमें रहनेकी इच्छा ।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, घोर दृष्टि, नाक फूलना इत्यादि ।

मुखमण्डल ।—बायें पैरकी हड्डी और आँखके कोटरके चारों ओर क्षणभरके लिये पैदा होनेवाला या रह-रहकर होनेवाला दर्द । लाल व्रण (Acne Rosacea), विशेषकर जरायुकी बीमारीकी वजहसे व्रण (ऐक्टिया-रेसि)। बोलनेमें व्याघात होना। कोमल तालुमें ज्यादा रक्त जमा होनेके कारण कोई पदार्थ निगलनेमें दर्द होता है ; खानेपर बढ़ता है। मुँहके भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्लीमें खून इकट्ठा हो जाता है। दोनों जिह्वामूलीय ग्रन्थियाँ लाल और प्रदाहयुक्त हो जाती हैं।

पाकाशय आदि ।—अरुचि। तम्बाकू खाना अच्छा नहीं लगता (इग्ने, काक्यु, युग-रिजी, कैम्फो)। बार-बार खट्टी डकार आती है। पेट फूलता है, मानो पेटमें सब वायु एक जगह एकत्र होकर एक बड़ा-सा गोला बन गया है। ऐसा मालूम होता है, मानो एक आग-भरी लकड़ी पेटके भीतर चारों ओर गर्मी फैला रही है। आँतें आदि इस तरह जकड़ जाती हैं, कि भयानक दर्द होने लगता है। वृहत् योजकान्त्र (Transverse colon) में क्षणभरके बाद रह-रहकर दर्द। पेटके यन्त्र सब ऐसा मालूम होता है, मानो हिल रहे हैं। यकृतके ऊपरी अंशमें दर्द, यकृतमें खूनका दौरान रुक जाता है। मलनाली (Rectum) में भार मालूम होता है और मलद्वारमें जलन होती है। पाखानाकी वृथा चेष्टा। मल सूखा और काला (लेप्टे, हिलियैन)।

पेशाब और पुं-जननेन्द्रिय ।—मूत्रस्थली ग्रीवाका प्रदाह (मिचेला, युपेट-पर्पि)। शुक्ररज्जुमें (Spermatic cord) ऐसा दर्द मानो जकड़ रहा है। बाईं ओर दर्द अधिक होना। मुष्क (Scrotum) झूल पड़ता है (ऐसिड-नाई, सल्फ)। रमण या आलिङ्गनकी इच्छा न होना। मूलाधारकी मुखशायिका (Prostate gland) ग्रन्थि भारी मालूम होती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु-ग्रीवा (Cervix uteri) लाल (मिचेला, रेप) और योनिके भीतर उत्ताप मालूम होता है और खुजलाती है (जरायु-द्वारमें जखम—वेस्पा)। जरायुका मांसांकुरमय जखम (Granular ulceration in womb), जरायु बहुत भारी मालूम होता है (ऐलेट, बेल, कैल्के, कोलोफाइल, फ्रैक्स-ऐमि, जेलिस, नक्स)। बहुत ज्यादा प्रदरका स्राव (सिफिलिन, सिलिका, कैल्के, स्टैन)। जरायुके बाएँ पार्श्वमें बहुत दर्द होता है। जरायु और उससे लगे हुए यन्त्रोंमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है (जेल्स, इग्ने, पल्स)।

प्रत्यङ्ग आदि।—बाँहका अगला आधा भाग और दोनों पैर, ऐसा मालूम होता है, मानो छोटे होते जा रहे हैं। हाथ-पैर फैला-फैलाकर अङ्गड़ाई लेनेकी इच्छा (ऐमिल, साइमिक्स, हेलोडर्मा)। प्रत्येक पेशी और हरेक सन्धिमें दर्द मालूम होता है, बायें अङ्गमें अधिक। अस्थि-मज्जाके भीतरसे ऐसा बोध होता है मानो गर्म पानी बह रहा है। चलनेके समय डगमगाया करता है; खड़ा नहीं रह सकता। उरुमें तेज़ दर्द। नींद खुलनेपर मालूम होता है, कि सभी पेशियोंमें दर्द हो रहा है। समूची देहमें क्लान्ति और असाच्छन्द्य मालम होना।

त्वचा।—सूखी फुन्सियाँ। गाल और नाकके अगले भागमें सफेद जखम (हाइड्रैस्ट, फेर-पिक)। उप-त्वचा बहुत मोटी हो जाती हैं और रूसी या खाल उधड़ जाया करती है; चेहरेपर ताँबेके रङ्गके उद्भेद निकलते हैं। विचर्चिका (Psoriasis) अर्थात् कितनी ही पूरी-पूरी न निकली हुई फुन्सियाँ सूखकर रूसी या मरी छालकी तरह हो जाती हैं और फिर रसीले दानेके रूपमें हो जाती हैं। चेहरेपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ (Pimples) निकलती हैं और वक्षस्थलमें रस-भरी फुन्सियाँ (Vesicles) निकलती हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंमें पिटपिटी होती हैं, कितनी ही जगह फ्रोकर और ऐसे उद्भेद निकलते हैं, जिनके किनारे पपड़ीसे ढँके रहते हैं। पैरमें बहुत खुजलाहट होती है। शरीरमें जगह-जगह अरुणिका (Erythema) निकलती है, उनमें बहुत खुजली होती है और बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है। पेटपर खसड़ेकी तरह दाने निकलते हैं।

सम्बन्ध।—सदृश।—हाइड्रैस्टिस, हियुरा, फेरम-पिक (कुष्ठ-व्याधि; शरीरकी त्वचा मोटी हो जाती है), ऐनाकार्ड, थ्रैस्पाई-बार्बा (जरायु); फ्रैक्सि-ऐमि, मिचेला-रेप, इयु-पर्पि, हाइड्रैञ्जिया (मूत्रस्थलीकी

सर्दी ; मूत्रस्थली-ग्रीवा और वेस्ट-पेशीका प्रदाह ; वृक्ककी सर्दी (Renal Catarrh), पेशाबमें पीला चूर दिखाई देता है और मूत्रस्थलीमें जलन होती है ; सुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना वगैरह—सैबाल-सेरु, एपिस ।

शक्ति ।—मूल अर्कसे १२ शततमिक क्रमतक ।

हाइड्रोफाइलम वर्जिनियेनम

(HYDROPHYLLUM VIRGINIANUM)

दूसरा नाम ।—वर्जिनियम वाटर लीफ ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे तुरन्तके खिले उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—इयुफ्रेशियाकी तरह यह भी आँखकी बीमारियोंकी एक बढ़िया दवा है। आँखसे आँसू बहना, जलन, खुजली, आँखसे कीच निकलना, पलकें सट जाना, फूलना और लाल हो जाना ; रोशनीका सहन न होना वगैरह आँखोंके प्रदाहके लक्षणमें लाभदायक है।

यह रस-टक्सका विष-दोष नष्ट करता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

हायोसायेमिनम

(HYOCYAMINUM)

परिचय ।—हायोसायामसका एक तरहका दानेदार क्षार ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण या तरल आकारमें क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—चक्षु चिकित्सक ऐट्रोपिनकी तरह आँखकी पुतली फैलानेके लिये इसका व्यवहार करते हैं ।

होमियोपैथीके मतसे यह स्नायुशूल, आक्षेप, अस्पष्ट दृष्टि, चेहरेपर खूनकी झलक, कण्ठ सूखा, पलकोंका स्नायुशूल और आक्षेप, स्नायविकता, अनिद्रा, गलेका जखम और सान्निपातिक ज्वर प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—हायोसिन-हाइड्रोब्रोम, हायोसायमस-नाइजर, बेल, ऐट्रोपियम, स्ट्रैमो।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

हायोसिन हाइड्रोब्रोम

(HYOSIN HYDROBROM)

दूसरा नाम।—स्कोपोलेमिन-हाइड्रोब्रोमाइ।

उपयोगिता और आभास।—अनिद्रा, यक्ष्मा रोगमें सूखी खाँसी, पक्षाघातग्रस्त अंगोंका काँपना, मूत्र-विकार, नयी स्नायविक कमजोरी, एकाएक गहरा शोक समाचार सुननेके कारण उपसर्ग वगैरह लक्षणकी उत्कृष्ट दवा है।

शक्ति।—३x—६x।

हायोसायेमस

(HYOSCYAMUS NIGER)

दूसरा नाम।—हेन-बेन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—ताजे गाछसे मूल अर्क बनता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—

अस्थापन; कलेजेका दर्द; मूत्राशयका पक्षाघात; श्वासनाली प्रदाह; ताण्डव; तन्द्रा; खाँसी; मदात्यय; अतिसार; बाधक; सान्निपातिक ज्वर; मृगी; नाकसे रक्तस्राव; कामोन्माद; आँखकी बीमारी; रक्त-कास; रक्तस्राव; हिचकी; जलातङ्क रोग; व्याधि-शङ्का; प्रसवके बादका स्राव; प्रसवके बादका

स्राव रुक जाना ; उन्माद ; मस्तिष्क और मेरुमज्जाकी झिल्लीका प्रदाह ; मानसिक विकार ; स्नायुशूल ; रतौंधी ; पक्षाघात ; कानका दर्द और प्रदाह ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूतिकोन्माद ; क्रोधका दुष्परिणाम ; नींदमें व्याघात ; तोतलाना ; धनुष्टङ्कार ; दाँतका दर्द ; पेशाब रुकना ; दृष्टिमें गड़बड़ी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—रक्त-प्रधान, क्रोधी, थोड़ेमें ही कातर परिवर्त्तनशील स्वभाव और भूरे केशवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष लाभदायक है। भय या कृमिके कारण धनुष्टंकार ; प्रसवके बादका या प्रसवके समयका धनुष्टंकार ; मस्तिष्कको प्रदाह-शून्य उत्तेजना, मदात्यय (Delirium Tremens)। विकार और प्रलाप—शय्यासे उठकर भाग जाना चाहता है ; कोई बात पूछनेपर उत्तर देता है, पर तुरन्त सो जाता है ; बहुत सन्दिग्ध चित्त, अपने आत्मीय ही उसे विष खिला देंगे, ऐसी धारणा रहती है, ऐसा विश्वास रहता है, कि वह जिस जगह है, वह उसका घर नहीं है ; पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ; आँखोंसे पैरकी अंगुलीतक प्रत्येक पेशी एक बार सिकुड़ती फिर फैला करती है, अचेतन अवस्था ; प्रणयकी पूर्त्ति न होनेकी वजहसे मानसिक विकार ; असम्बद्ध प्रलाप ; ठहाका मारकर हँसनेका आवेग ; कामोन्माद—शरीर खोलकर गुप्ताङ्ग या लिङ्ग आदिका स्थान निर्लज्ज भावसे सबको दिखाता है ; खाँसी—सोते ही बढ़ जाती है और उठ बैठनेपर घटती है ; विषय आदिकी दुश्चिन्ताकी वजहसे नींद न आना। मूत्रस्थलीका पक्षाघात, प्रसवके बादकी बहुव्यापक सर्दी (Influenza) और फेफड़ेके प्रदाहकी वजहसे बोखार, विकार-प्राप्त या आच्छन्न-भावापन्न हो पड़ता है, रोगी अपने केश पकड़कर खींचा करता है, विकार अवस्थामें रोगी सोचता है, कि रूई या कीड़े आदि उड़ रहे हैं और उन्हें पकड़नेकी चेष्टा करता है। शय्या और अपने नख खोंटा करता है। अनजानमें पाखाना पेशाब वगैरह कई हायोसायमसके प्रधान निर्णायक और सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन ।—अकेले रहनेमें डरता है (कैल्के, कैम्फो, क्लिमेट कैलि-कार्ब, मर्क, नक्स, लाई, स्ट्रैमोन) ; बहुत सन्दिग्ध चित्त (ऐनाग्नि, कास्टि, कैलि-

ब्रोम, पल्स), किसीपर भी विश्वास नहीं करता, उसके आत्मीय यहाँतक कि स्त्रियाँ भी उसे विष खिला देंगी—ऐसा ही विश्वास करता है (ऐलिसैट, कैलि-ब्राई, रास, एपिस)। हमेशा डरता है, कि कोई उसे दाँतसे काट लेगा; उसे डर रहता है कि कोई उसे बेच डालनेकी चेष्टा करता है; उसकी ऐसी धारणा रहती है, कि सभी उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हैं। प्रणयका बदला न मिलनेकी वजहसे मानसिक विकार (अरम-मेट, कैल्के, फास, इग्ने, लैके, नैट्र-म्यू, ऐसिड-फास), स्त्री या पतिके चरित्रमें अविश्वास (एपिस, इग्ने, लैके, स्ट्रैमो) कर उसको मार डालनेकी चेष्टा करती है, असम्बद्ध प्रलाप बकता है (ऐनाक, कैम्फो, कैनाब-इन, कैमो, जेल्सि, नक्स-मस) और जोर-जोरसे हँसनेका आवेग (क्रोकस), निर्लज्ज कामोन्माद (ओरिगेन, प्लैट, स्ट्रैमोन, टैरेण्टि, ग्रैटि, ऐसिड-पिक, कैन्थ, फास, हाइड्रो-फोर्ब), वस्त्र खोलकर शरीरके गोपनीय स्थान सब दिखाता है; अश्लील गाने गाया करता है (स्ट्रैमोन), उलंग (नंगा) होकर सोया रहता है और बका करता है। विकार और प्रलाप, मदात्यय (Dilirium Tremens), रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है। शय्यासे कूदकर भाग जाना चाहता है (बेल, ब्राई, क्रोटेल-होर, रास, स्ट्रैमोन), कोई बात पूछनेपर असम्बद्ध उत्तर देता है (नक्स-मस, वैलि) और बात समाप्त होते ही गहरी नींदमें अभिभूत हो जाता है। मस्तिष्कमें गड़बड़ी होनेपर भी सम्बद्ध उत्तर देता है—कोलचि, कानवैल, काक्यु, आइरि-वर्सि, ऐसिड-फास, प्लम्ब, टिलिया; कोई बात पूछनेपर सही उत्तर देकर फिर तुरन्त बेहोश हो जाता है—ऐसिड-फास, आर्नि; धीरे-धीरे उत्तर देता है—हेलिबो, मर्क-फास, ऐसिड-फास; घबड़ाकर जल्दीमें उत्तर देता है—ऐकि, सिना, रास-टक्स; कोई उत्तर नहीं देता—ऐगार, सैबाड, ऐसिड-सल्फ), उत्तर समाप्त होते-न-होते सो जाता है; रोगी जहाँ रहता है (बैप्टी); जिस स्थानपर रोगी रहता है उसे अपना घर नहीं समझता। वहाँसे घर जानेकी इच्छा प्रकट करता है (ब्राई, कैप्स, इयुपेट-पर्पि, ओपि); अमूलक अत्याचारोंकी बात कहता है, किसी तरहकी शिकायतकी बात नहीं करता (ओपि); विकार उत्ताप-रहित, चेहरा मलिन—बेल; लाल और भीतरी उत्तापकी अधिकता रहनेपर भी हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। अनुपस्थित या मृत व्यक्तियोंको भी मानो रोगी देख रहा है। मृत व्यक्तिके साथ बातचीत करता है। लगातार बका करता है (स्ट्रैमोन)।

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना ; मानो शराब आदिके नशेके कारण चक्कर आ रहा है ; चारों ओर अन्धकार देखता है (ऐनाक, कैम्फो, कूप्रम, साइक्लैमेन, जेल्सि, केलि-बाई, फाइटो, स्ट्रैमोन, नक्स-वोम) ; यन्त्रणासे बेहोश हो जाता है (कोना, ओपि, पल्स)। माथेके भीतर खून जमा होनेके कारण रोगी विकारग्रस्त और बेहोश हो पड़ता है, पर कोई बात पूछनेपर ठीक-ठीक उत्तर देता है ; आँख लाल और चमकीली तथा चेहरा नीली आभा लिये लाल रहता है ; मस्तिष्क-प्रदाह—माथेके भीतर चुनचुनी और टपक होती है, मानो माथेमें तरंगें उठ रही हैं। मस्तिष्क मानो माथेकी खोलसे अलग हो रहा है (ब्राई, नेट्र-सल्फ)। माथेमें पानी पैदा होकर रोगीको मोह (मूर्च्छा) हो जाता है ; ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें पानी हिल रहा है ; हाथकी मुट्ठी बँधी और हाथका अंगूठा तलहत्थीके ऊपर मुड़ जाता है (हेलिबोरस)।

आँख ।—आँख लाल, चमकीली और दृष्टि स्थिर (बेल); पलकें आप-से-आप बन्द हो जाती हैं और रोगी आँख खोले नहीं रह सकता (कोलोफाइल, जेल्स, कास्टि, ग्रैफ), पुतली फैली (बेल, ओपि ; संकुचित—साइक्यू, फास), सभी चीजें लाल (बेल, कोना, क्रोकस, स्ट्रान), बहुत बड़ी (लोरो) या दूने आकारकी दिखाई देती है ; दूरकी चीज़ पास मालूम होती है (बोवि) और रोगी उसे पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाता है।

मुखमण्डल ।—चेहरा—ठण्डा, उजला और नीला अथवा फूला हुआ लाल दिखाई देता है। मुँहकी पेशियाँ सब फड़कती हैं। मुखमण्डलकी भाव-भङ्गी विकृत, नीले रङ्गकी ; मुँह फाड़े रहता है। दोनों जबड़े अकड़ जाते हैं, हनुस्तम्भ और दाँती लगना ; विकारावस्थामें चेहरा सफेद या रक्तशून्य और पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। ऐसे व्यक्तियोंके दाँतका दर्द जो थोड़ेसे ही कातर हो जाते हैं या क्रोध आ जाता है ; रोगी तकलीफ़से पागल हो उठता है ; दाँत सब बहुत लम्बे मालूम होते हैं ; सवेरे ठण्डी हवा लगनेपर तकलीफ़ बढ़ जाती है ; टपक-जैसा दर्द ; पसीनेके समय दाँतमें कनकनी होती है ; मसूढ़ेमें ऐसा दर्द मानो छुरी बिध रही हैं, कानमें झिन-झिन शब्द और रोगीके दाँतकी जड़ शिथिल मालूम होती है ; सब दाँतोंपर मैल चढ़ा रहता है।

मुँह और गलेके भीतर ।—नमकीन लार बहा करती है (युफोर्ब, फास, सिपि, सल्फ, वेरेट)। लार खून-भरी (कैन्थ, क्लिमेट, मर्क, रास-टक्स,

ड्रोसेरा, मर्क-वाई, मर्क-कोर, ऐसिड-नाई, ब्रूफो)। मुँहसे फेन निकलता है (इनैन्थि, आर्टिमि-वाल, कूप्रम-ऐसेट, कैलि-बाई, लोरो, लाई ; खून-भरा फेन—लैके, स्ट्रैमोन)। मुँहसे बदबू आती है—रोगीको स्वयं वह गन्ध मालूम होती है। दोनों ओंठ सूखे चमड़ेकी तरह मालूम होते हैं (सूखे और फटे-फटे—ब्राई, स्ट्रैमो)। जीभ—सफेद, लाल या भूरे रङ्गकी ; सूखी फटी-फटी और जले चमड़ेकी तरह कड़ी ; साफ़ ; निरस ; बहुत तकलीफ़से बाहर निकाल सकता है (बहुत अधिक फूलनेके कारण बाहर नहीं निकाली जा सकती—मर्क-कोर ; गलेके जखमकी बीमारीमें—सैबाड ; बहुत अधिक काँपती है—जेल्स ; नीचेके दाँतमें अटक जानेकी वजहसे—लैके) ; बाहर निकालनेपर सहजमें ही भीतर नहीं खींची जा सकती ; बोलनेमें गड़बड़ी होती है (जीभके पक्षाघातकी वजहसे)। कण्ठनाली पतली हो जाती है, इसलिये कोई चीज़ निगल नहीं सकता, खासकर पतली चीजें (बेल, लोरो, स्ट्रैमोन ; कड़े पदार्थ निगलनेके समय दर्द घटा मालूम होता है—इग्ने ; ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनालीका छेद हिलता है (हाइपेरि)।

पाकस्थली।—पानी पीनेके समय बड़ा भय पैदा हो जाता है (कैन्थ, स्ट्रैमोन, लिसिन)। बहुत प्यास, पर पानी बहुत थोड़ा पीता है (बार-बार बहुत थोड़े परिमाणमें पानी पीता है—आर्स, सिङ्को)। कुछ खानेपर कै हो जाती है (खाने-पीने बाद कै कर देता है—आर्स, इपिका, वेरेट)। रक्त और रक्तमय श्लेष्माका वमन होता है। पाकाशयका शूल—वमनके बाद आराम (भोजनके बाद अच्छा होना—हिप)। भोजन आदिके बाद बच्चा वमन कर देता है और एकाएक चिल्लाकर बेहोश हो जाता है।

अन्त्राशय।—पेट फूल उठता है और बहुत कड़ा हो जाता है ; हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। हिचकी आती है और पेट गड़गड़ाता है। तलपेटकी पेशीका आकुञ्चन-प्रसारण (सिकुड़ना-फैलना) हुआ करता है ; खाँसनेपर ऐसा मालूम होता है, कि उदरकी पेशीमें जखम हो गया है। आँतके उपद्रवके कारण धनुष्टंकार हो जाता है।

मलान्त्र और मल।—मल पतला, परन्तु किसी तरहका दर्द नहीं रहता ; मल पीला और पानीकी तरह (सिङ्को, हिप, पोडो)। सान्निपातिक (Typhoid) ज्वराधिकारमें अनजानमें पाखाना-पेशाब होता है। मल बहुत

बदबूदार (कार्बो-वे, रास, सिकेलि), प्रसवके बादका उदरामय। अर्श—उससे बहुत ज्यादा रक्त-स्राव होता है।

पेशाब।—प्रसवके बाद मूत्रस्थलीमें दबाव मालूम होना और पेशाब रुक जाना; अनजानमें पेशाब हो जाता है, मानो मूत्रस्थलीमें पक्षाघात हो गया है (आर्स, बेल, कास्टि, पल्स)। बार-बार पेशाबका वेग होता है, परन्तु थोड़ा ही पेशाब निकलता है।

पुं-जननेन्द्रिय।— बहुत अधिक कामोद्दीपन, शरीरके गुप्त स्थान सब खोल रखता है। ध्वजभङ्ग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—कामोत्तेजन; अपनी देहके सब गुप्त स्थान खोलकर सबको दिखाती है (ओरिगैनम, कैन्थ)। गर्भस्रावके बाद रक्त-स्राव, पेशियाँ सब एक-एककर धड़कती हैं और लगातार लाल रङ्गका चमकीला रक्तस्राव हुआ करता है और हाथ-पैर पटका करती हैं। प्रसवके बादवाला क्लेद-स्राव (Lochia) रुककर पेट फूल उठता है और कड़ा हो जाता है (कोलो, कोना, नक्स, पल्स, सिकेलि)। ऋतु होनेके पहले रह-रहकर हाथ-पैरमें ऐंठन होती है और जोरसे ठहाका मारकर हँसना चाहती है; ऋतुके समय हाथ-पैर पटकती है (कैलो-फिल, केलि-ब्रोम, सिकेलि)। सरमें भयानक दर्द होता है (बेल, ग्लोन, क्रियो, नेट्र-म्यूर, प्लैट, सिपि) और बहुत ज्यादा पसीना हुआ करता है (ग्रैफ)।

श्वास-यंत्र।—रह-रहकर वायुनलीके मुँहपर सुरसुराहट होती है। सूखी खाँसी आया करती है, विशेषकर वृद्ध मनुष्योंको (सेनेगा)। वृद्धि—रातमें विश्रामके समय, निद्रावस्थामें, ठण्डी हवा लगनेपर और खाने-पीने बाद (खाने-पीने बाद—स्क्वि); उठ बैठनेपर घट जाती है (पल्स, कैलि-बाई, फास; उठ बैठनेपर बढ़ जाती है—कैलि-कार्ब, जिङ्क; थोड़ा पानी पी लेनेपर ही घट जाती है—कास्टि, क्यूप्रम)। प्रचण्ड आक्षेपिक खाँसी, दिनके समय नमकीन श्लेष्मामय या थक्का-थक्का चमकीले लाल रङ्गका खून-मिला कफ निकलता है। श्वास-प्रश्वासके समय गलेमें घरघराहट होती है (ऐण्टिम-टार्ट), फेफड़ेका प्रदाह—बीमार और बेहोशीकी अवस्थामें सूखी श्लेष्मा पैदा करनेवाली खाँसी आती है; रातमें बढ़ जाती है; छातीमें घड़घड़ शब्द होता है, शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, ऐसा दर्द होता है मानो उदरकी पेशीमें

जखम हो गया है। शराबियोंका रक्तकास (Hæmoptysis), हृत्प्रदेशमें सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार ; बच्चोंकी आँतमें कृमि चलनेकी वजहसे प्रसवके दर्दके समय और प्रसवके बादका आक्षेप ; खाने-पीने बाद बच्चे कै कर देते हैं और एकाएक चिल्लाकर बेहोश हो जाते हैं। पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना ; बेहोश अवस्था ; आँखसे पैरकी अंगुलीतक सभी पेशियाँ फड़का करती हैं (बेहोशीवाली अवस्थामें पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना—नक्स ; कार्बोनियम-सल्फ)। अकड़नके समय मुट्ठी बन्द हो जाती है और अंगूठा मुड़कर हाथकी पीठपर आ पहुँचता है। रोगी शय्या नोंचा करता है। हाथ-पैरकी कण्डरा और पेशियोंके प्रान्त भाग सब सिकुड़े और फैला करते हैं। चलनेके समय और सीढ़ी चढ़नेके समय पैरका अंगूठा टेढ़ा हो जाता है। अपस्मार या मृगी—चेहरेका रङ्ग नीला और फूला। अनजानमें पेशाब और फेन निकलता है ; हाथका अंगूठा पीछेकी ओर मुड़ जाता है ; आँख चमकीली और टकटकी लगी रहती है ; रोगी रह-रहकर चिल्ला उठता है और दाँत-पर-दाँत कड़कड़ाया करता है ; प्रकोपके बाद रोगी गहरी नींदमें जा पड़ता है और उस समय उसकी नाक बोला करती है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो वह शून्यमें घूम रहा है। अधिकांश लक्षण पीने और भोजनके बाद और सन्ध्याके समय पैदा हो जाते हैं।

निद्रा।—गहरी नींदवाली अवस्थामें धनुष्टंकार, निद्रावस्थामें चौंक उठता है (आँख बन्द करनेके समय—बेल)। शिशु सोया-सोया फूट-फूटकर रोने लगता है। सोता-सोता शय्या नोंचता है या मुस्कुराकर हँसता या चौंक उठता है।

ज्वर।—आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वर (Typhoid fever)—जीभ सूखी और बहुत फूल उठती है, मस्तिष्ककी बहुत अधिक जड़ताकी वजहसे कुछ पूछनेके लिये जगानेपर भी वह उसका उत्तर देकर फिर तुरन्त मोह-प्राप्त (बेहोश) हो जाता है (आर्नि, एसिड-फास) ; इस तरह बेहोश रोगीकी दोनों आँखें खुली रहती हैं। स्थिर दृष्टिसे घरके चारों ओर देखा करता है और चारों ओर उसे ऐसा ही मालूम होता है मानो रूईके गुच्छे उड़ रहे हैं और उन्हें पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाता है, शय्या नोंचा करता है और बुदबुदाकर बका करता है या कभी-कभी दो-चार घण्टेतक गुम-सुम पड़ा रहता है।

दाँतोंपर मैल चढ़ी रहती है, निचला हनु अलग होकर झूल पड़ता है (ओपि), मल-मूत्र आदि अनजानमें निकला करता है और हाथ-पैरके बन्धन सब सिकुड़ते और फैलते हैं (बेल, ऐगार, रास, स्ट्रैमोन)। नाड़ी तेज़, पुष्ट और कड़ी। चेहरेपर उत्ताप और हाथ ठण्डा होकर सारे शरीरमें जाड़ा मालूम होता है। निद्रितावस्थामें इतना पसीना होता है, कि रोगी कमजोर हो पड़ता है (सिङ्को, मर्क, कार्बो-ऐन)।

वृद्धि।—रातमें, ऋतुके समय, मानसिक आवेग और उत्तेजनासे, चरित्रमें अविश्वास और प्रणयका बदला न मिलनेके कारण, सोनेवाली अवस्थामें, ठण्डी हवाके स्पर्शसे ; रोगवाली जगह छूनेपर।

घटना।—उठ बैठनेपर।

सम्बन्ध।—बेल, स्ट्रैमोन और वेरेट, इसके साथ तुलनीय। कामोद्दीपनमें यदि हायोसायमससे लाभ न हो तो फास्फोरसके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है। शराबियोंके रक्त-कास (खून-मिली खाँसी) में नक्स-वोम और ओपियम इसके सदृश है।

दोषघ्न।—ऐसिड-नाइट्रिक, बेल, चायना, स्ट्रैमोनियम।

तुलनीय।—प्रसवके बादका स्राव रुकना (नक्स, सिकेलि, पल्स); अधिक बकना (स्ट्रैमो, लेके, ओपि); पतली चीज़ निगलनेमें तकलीफ़ (बेल, कैन्थ, इग्ने, मर्क इत्यादि); आक्षेप (सिना); खाँसी (ड्रोसे); ईर्षा (एपिस, इग्ने); उन्माद (स्ट्रैमो); भूत देखना (कैलि-ब्रोम); हिचकी (इग्ने); क्रोध (स्टैफि) इत्यादि।

शक्ति।—निम्नक्रमसे उच्चतर और उच्चतम क्रम व्यवहारमें लाया जा सकता है। मानसिक रोगोंमें उच्चतम क्रमका प्रयोग करना चाहिये।

क्रियाका स्थायित्व।—६ से १४ दिन।

हाइपेरिकम पर्फोलियेटम

(HYPERICUM PERFOLIATUM)

दूसरा नाम।—सेण्ट जान्स वार्ट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—प्रसवके बादका दर्द; दमा; दाँत काटना; मस्तिष्कका संघात; चोट लगना और काला दाग पड़ना; हड्डी टूटना; गट्ठे; कमर और कमरके नीचेवाले स्थानमें दर्द; अतिसार; बन्दूककी गोलीका आघात; बवासीर; सर-दर्द; जलातङ्क रोग; बहुत अधिक चैतन्य या स्पर्श अनुभव होना; ध्वजभङ्ग; प्रसव-वेदनाकी अधिकताके दुष्परिणाम; मस्तिष्कावरण-प्रदाह; मानसिक रोग; स्नायुशूल; नश्तर लगवानेका दुष्परिणाम; अंगुलहाड़ा; पक्षाघात; वात; गृध्रसी; मेरुदण्डकी उत्तेजना; गर्दन अकड़ना; धनुष्टङ्कार; हूप खाँसी; ताजे जखम।

उपयोगिता और आभास।—इसके कई निर्णायक लक्षण यहाँ लिखे जाते हैं:—(१) स्पर्श-ज्ञान करानेवाली अंगुली आदिका अगला भाग वगैरह स्नायुके किसी अंशमें चोटकी वजहसे बीमारियाँ। (२) तलवा, तलहत्थी या अंगुलीके अगले भागमें काँटी, पीन या काँटा गड़नेके कारण धनुष्टङ्कार या हनुस्तम्भ होनेका उपक्रम। (३) मेरुदण्डमें चोट या ऊँचे स्थानसे गिरकर मेरुदण्डके निचले अंशमें दर्द। (४) बाधक, ऋतु देरसे और जरायुमें कसावटका भाव, मानो वह एक बन्धनसे कसकर बाँधा हुआ है। (५) प्रदर रोगमें देरसे ऋतु होना, कलेजा धड़कना, कमर और तलपेटमें बहुत भार मालूम होना; बालिकाओंका कषाय-गुणविशिष्ट (Acrid) त्वचाको क्षय करनेवाला और दूधकी तरह प्रदरका स्राव।

लक्षणावली

मन।—लिखनेके समय बार-बार भ्रम होता है; अक्षर छोड़ जाता है; बोलना कुछ और चाहता था, बोल गया कुछ दूसरा ही या भूल जाता है। रातके ४ बजनेके बाद निद्रितावस्थामें प्रलाप बका करता है; विकार; गाता-

गाता रोने लगता है और ऊँचे स्वरसे चिल्लाने लगता है। डर जानेके कारणसे पैदा हुई बीमारियाँ (ओपि, हायो)। प्रबल और अप्रत्याशित शोकको वजहसे बीमारियाँ।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है, रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसका माथा एकाएक लम्बा हो गया, इसके साथ ही रातमें पेशाबका वेग होता है। सर-दर्द—चित्त गिरनेके कारण, यदि माथेके पीछे चोट लग जाय और इसी कारणसे सर-दर्द हो, रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो कोई उसे शून्यमें उठाता है और कहीं इतने ऊँचेसे गिर न जाय, इसी वजहसे डरता है। रातमें ब्रह्मतालुके नीचे झुनझुनी होती है (नेट्र-सल्फ), ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने कपालमें बरफकी तरह ठण्डा हाथ लगा दिया। ब्रह्मतालुमें टपक होती है, बन्द घरमें दर्द बढ़ता है। मस्तिष्क और स्नायुका अवसाद और दुःखित चित्त। मस्तिष्कावरण-प्रदाह (Meningitis), माथा झुकानेपर तकलीफ़ घट जाती है।

मुख-विवर और गलेके भीतर।—मुँह और दोनों ओंठ बहुत सूखे। बायें गालकी हड्डीमें छेदनेकी तरह दर्द। जीभ—सफेद या मैला पीला लेप चढ़ी। मुँहमें पानीकी तरह या खूनका स्वाद आ जाता है। मुँहमें गर्मी और प्यास मालूम होना। गलेमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक कीड़ा रेंग रहा है (पल्स, स्पाइजि)।

पाकस्थली।—गर्म पानीय पीना चाहता है (ब्राई, कैस्टेन-वेस्का, लैक-कैन, लाई); चोटकी वजहसे मस्तिष्कावरण प्रदाहमें। शराब पीनेकी बहुत अधिक इच्छा (इथ्यू, ब्राई, कैल्के, साइक्यू, हिप, लैके, मेजर, फास, सिपि, स्पाइजि); सवेरे और सन्ध्याके समय बहुत भूख लगती है। पाकस्थलीमें मानो एक गुल्म है (लोबेल, मिडोरिन, एबियेज-नाई, ब्राई), पेट बहुत फूलता है; पाखाना होनेपर घटना। पेटमें नश्तर लगवाने (Laparotomy) की वजहसे बीमारी।

मलांत और मल।—ग्रीष्मातिसार रोगमें शरीरपर एक तरहका फुन्सी-फुन्सी जैसा उद्भेद निकलता है। उदरामय—रोगी सवेरे शय्यासे घबड़ाकर उठ बैठता है और पाखानेकी ओर दौड़ पड़ता है (सल्फ)। कब्जियत—भयानक कूथनके साथ एक छोटी, कड़ी, गांठ-भर निकल जाती है; इससे कभी-

कभी जी मिचलाता है। मलान्त्रके (Rectum) भीतर सूखापन मालूम होता है और जलन तथा सुरसुरी होती है। बवासीरमें बहुत दर्द, बहुत ज्यादा खून जाता है और छूनेपर दर्द होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बाधक रोगमें, बहुत देरसे ऋतु होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो जरायु एक बन्धनसे कसकर बँधा हुआ है। प्रदर—ऋतु देरसे प्रकाश होता है, छाती धड़कती है, कमर और तलपेटमें बहुत अधिक भार मालूम होता है; बालिकाओंका प्रदर, स्राव दूधकी तरह सफेद और जखम करनेवाला। यन्त्र आदिके सहारे प्रसव करानेके बाद नकली दर्द (आर्निका)।

श्वास-यन्त्र।—दमा, जाड़ा पड़नेपर बढ़ जाता है; बहुत बलगम निकल जानेपर कहीं घटता है। क्रुप खाँसी; सन्ध्या ६ बजेसे रातके १० बजेतक जोर रहता है। वक्षःस्थल मानो कसकर बँधा हुआ है, ऐसी अकड़न मालूम होती है; छातीके भीतर ऐसा दर्द मानो डंक मार रहा है; शरीर हिलानेपर बढ़ता है। फेफड़ेका प्रदाह—जिनके अर्शके मस्सेसे खून निकलता है। कलेजा धड़कनेके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड स्थान-भ्रष्ट हो जायगा—सन्ध्याके समय।

प्रत्यङ्ग आदि।—चोट लगकर बदन छिल जाता है, उस स्थानपर बहुत दर्द होता है और हाथ लगानेसे ही अनुभव होता है (लिडम); तलवा या हाथकी अंगुलीमें काँटी, सुई, आलपीन या सींक गड़कर वे अंश फूल जाते हैं और बहुत दर्द होता है (लिडम); चूहा काटनेकी वजहसे पैदा हुए घावकी वजहसे धनुष्टंकार, जबड़े अटकना या दाँती लगनेका उपक्रम हो जाता है। स्पर्श-ज्ञापक स्नायुमय अंशमें जैसे—अंगुली, पैरका अंगूठा, तलवा या तलहत्थीमें चोटकी वजहसे रोगवाली जगहमें असह्य दर्द और यन्त्रणा होती है; चोट या नश्तर लगवानेकी वजहसे स्नायविक अवसाद; एकाएक प्रबल शोक या आतङ्कके कारण पैदा हुई बीमारियाँ, जखम होने या जखममें पीब होना रोकती है; अंगुलीका अगला भाग कुचल जाना; चोटकी वजहसे धनुष्टंकार। ऊँचेसे बैठनेवाली अवस्थामें गिरनेके कारण मेरुदण्ड या मेरुदण्डके निचले स्थानमें दर्द; गर्दन या हाथ जरा हिलाते ही असह्य तकलीफ़ मालूम होती है और रोगी चिल्ला उठता है; इतना दर्द होता है कि मेरुदण्डमें हाथ नहीं लगाने देता। माथेमें चोट या संघात (Concussion)की वजहसे धनुष्टंकार।

पैरके अंगूठेमें बहुत दर्द और सूजन तथा गट्ठेमें असह्य दर्द। धनुष्टङ्कार (फाइजस, कैलि-ब्रोम)।

वृद्धि ।—बरफ गिरनेके समय, बन्द घरमें और थोड़ी भी हवा लगनेपर।

उपशम ।—माथा पीछेकी ओर झुकानेपर।

सम्बन्ध ।—**सदृश** ।—आर्नि-कैलेण्डियुला; रियुटा, स्टैफिस, सिम्फिटस।

दोषघ्न ।—आर्सेनिक (कमजोरी ; हिलने-डोलनेपर मिचली) ; कैमो (मुँहमें दर्द)।

तुलनीय ।—नक्स (धनुष्टंकार), ऐकोन, कोमोक्लेडिया (चैतन्यकी अधिकता), (चत) ; लैग्नो (दाँत काटना)।

शक्ति ।—मूल अर्कसे उच्चतम क्रमतक (विशेषकर बहुत दिन पहलेकी चोट आदिके कारण रोगमें)।

आइबिरिस ऐमेरा

(IBIRIS AMARA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—इसके बीजसे अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—दमा ; श्वासनली-प्रदाह ; शोथ ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ वगैरहमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास ।—इसकी क्रिया प्रधानतः मानव-हृदयपर प्रकट हुआ करती है। हृत्पिण्डका बढ़ना और इसी वजहसे पैदा हुई कितनी ही तकलीफोंमें यह बहुत फायदा करता है और हृत्पिण्डका अस्तित्व या उसकी गतिकी उपलब्धि, धूम्रपान या शराब पीने तथा शरीरके थोड़ा भी हिलाने-डोलानेपर हृत्पिण्डकी क्रियाका बढ़ जाना और हृत्स्पन्दन (कलेजा धड़कना) इसके कई अव्यर्थ निर्णायक लक्षण हैं। हृत्पिण्ड प्रदेशमें थोड़ा-थोड़ा सूक्ष्म-शलाका बेधनेकी तरह दर्द, शरीरको हिलाते ही श्वास बन्द हो जाना

और कलेजा धड़कना ; हृत्पिण्डकी धमक या चाल ऊपरसे दिखाई देती है, चलनेपर बढ़ना और स्थिर होकर बैठ जानेपर घटना ; गलेमें श्वास-रोधका उपक्रम और हृत्पिण्डमें छुरी मारनेकी तरह दर्द ; सरमें चक्कर आना और हाथकी अंगुलीमें चुनचुनी मालूम होना और सुन्न मालूम होनेके साथ हृत्पिण्डकी जड़में बहुत तकलीफ़ मालूम होती है। रह-रहकर सामनेसे पीछेकी ओर फैलनेवाला तेज़ और डंक मारनेकी तरह दर्द तथा हृत्पिण्डमें बहुत दबाव और भार मालूम होना ; हृत्पिण्डका बहुत अधिक बढ़ना वगैरह कई लक्षण इसके प्रधान क्रियाफल हैं।

लक्षणावली

मन ।—बहुत विषन्न और दुःख भारसे दबा हुआ चित्त। बार-बार ठण्डी साँस लिया करता है। बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव, विशेषकर सवेरे उठनेपर इसके साथ ही बुद्धिकी जड़ता और स्मरण-शक्तिका घटना। ऐसा भाव दिखाता है, मानो बहुत डर गया है और उसकी देह काँपा करती है। भय, चकित भाव और ठण्डे पसीनेसे ढका मुखमण्डल।

मस्तक ।—सवेरे शय्यासे उठनेके समय सरमें चक्कर आता है (नैष्ठ, म्यूर); फिर बाध्य होकर सो जाना पड़ता है, खड़े होनेपर सरमें चक्कर आता है, सर झुकानेपर बढ़ता है ; माथेके पिछले भागमें ऐसा मालूम होता है, मानो चक्कर खा रहा है (पिङ्गील)। गर्दन और माथेके भीतर पूर्णता मालूम होना और गर्मी। चेहरा तमतमाया रहता है और हाथ-पैर बरफ़की तरह ठण्डे रहते हैं। चेहरा तमतमाया और दोनों आँखें लाल। थोड़ा-थोड़ा दर्द होता है और कलेजेमें धड़कन होती है। रोगीकी अपनी आँखोंके सामने चकाचौंध-सी दिखती है।

गलेके भीतर ।—कण्ठमें ऐसा मालूम होता है, मानो धूल प्रवेश कर गयी है। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेकी दोनों ग्रन्थियाँ (Tonsils) बड़ी हो गयी हैं। बार-बार खाँस-खाँसकर गोंदकी तरह कफ़ निकालता है, खानेके बाद बन्द हो जाता है। गलेमें पूर्णता और उत्ताप मालूम होता है, इसके साथ ही श्वास रुक जाना चाहता है। कलेजा धड़कता है और खाँसनेमें तकलीफ़ होती है तथा हृत्पिण्डमें ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी मार दी गयी है तथा ऐसा मालूम होता है, मानो कण्ठनाली संकुचित हो गयी है।

पाकस्थली।—ऐसा अनुभव होता है, कि जो कुछ खाता है वह हज़म नहीं होता और अरुचि बनी रहती है। हमेशा नशीली चीजें खाने-पीनेकी इच्छा। भोजनके बाद खट्टी गन्धवाली वायु निकलना, खट्टी डकार आती है, गाढ़ा लसदार कफ़ निकल जानेपर आराम मिलता है। यकृत-प्रदेशमें पूर्णता और दर्द होता है तथा कीचकी तरहके रङ्गका पाखाना होता है (चेलिडो, आयोड, हिप)। तलपेटमें दर्द होता है और पतला सफ़ेद आभा लिये पाखाना होता है (डिजि)।

श्वास-यन्त्र और हृत्पिण्ड।—सीढ़ीपर चढ़नेसे ही श्वास-कष्ट हो जाता है और कलेजा धड़कता है। दुबारा साँस लेनेपर भी आराम नहीं मिलता। वक्षोस्थिके नीचे पूर्णता और जकड़ जानेकी तरह तकलीफ़ होती है और छातीके भीतर ऐसा दर्द होता है, मानो छुरी मारी जा रही है। हृत्पिण्डका अस्तित्व या गतिका ज्ञान रहना (पाइरोजेन, फास)। टहलने बाद माथेमें चक्कर आता है और गला रुक जानेके साथ कलेजेमें धड़कन होती है; बाएँ हाथकी अंगुलीके अगले भागसे आरम्भ होकर समूची बाईं बाँहमें झुनझुनी पैदा हो जाती है और वह सुन्न जैसा मालूम होने लगता है; सामान्य परिश्रम करनेपर भी कलेजा धड़कता है; हृत्पिण्डकी धड़कन या चाल बाहरसे दिखाई देती है, टहलनेपर बढ़ता है और स्थिर भावसे बैठे रहनेपर घट जाता है। हृद्-प्रदेशमें भार और दबाव मालूम होता है और बीच-बीचमें छातीके सामनेकी ओरसे शरीरको भेदकर पीठतक तेज़ डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है। हृत्पिण्ड बड़ा हो जाता है (Hypertrophy); बाईं करवट सोनेपर ऐसा मालूम होता है मानो हृद्कोषके भीतर एक सुई लम्बी पड़ी हुई है और हृत्पिण्डके प्रत्येक संकोचनमें ऐसा मालूम होता है, मानो वही सुई हृत्पिण्डमें घुसती है। हृत्पिण्डमें लगातार दर्द बना रहता है, यह सोनेपर बढ़ जाता है। तकलीफ़ देनेवाली कलेजेकी धड़कन, खाँसने, हँसने, रातमें, सबेरे बिछावनसे उठने, सर झुकाने, घूमनेके समय, सोने, बाईं करवट सोने और शय्यापर करवट बदलकर सोनेपर बढ़ जाता है और स्थिर चुपचाप बैठने, सन्ध्याके कुछ पहले और निर्मल वायुके सेवनसे आराम मालूम हुआ करता है। शरीरका काँपना, सुस्ती और कातरताकी वजहसे रोगी सोया नहीं रहना चाहता।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और सरमें पूर्णता और गर्म मालूम होनेके साथ-साथ चेहरा तमतमा उठता है और हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे हो जाते हैं। बाएँ हाथकी अंगुलीकी नोकसे आरम्भ होकर क्रमसे समूची बाँहमें झुन-झुनी पैदा हो जाती है और वह सुन्न होता जाता है; नाड़ी काँपती रहती है और उसकी गति अनियमित। बायें हाथमें ऐंठन होती है। समूची रात उस हाथको दबाकर सोया रहना चाहता है। सीढ़ीपर चढ़नेके समय साँस लेनेमें तकलीफ़ और कलेजेमें धड़कन होती है। समूची देहमें दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो अपने बशमें न हो, मानो बहुत सर्दी लग गयी है। सारी देहमें कँपकँपी मालूम होती है (ऐसिड-सल्फ) और इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। नशीले पदार्थके सेवनकी बहुत इच्छा (आर्स, लैके, मर्क, नक्स-वोम, पल्स, सल्फ ; बल बढ़ानेवाली दवाके सेवनका अनुराग—कास्टि)।

वृद्धि।—धूम्रपान या सुरापान ; सवेरे शय्यासे उठनेके समय ; थोड़ा ही परिश्रमसे या शरीर हिलानेपर ; खाँसने या हँसनेपर ; सर झुकानेपर ; करवट लेनेके समय या बाईं करवट सोनेपर ; चलनेके समय।

उपशम।—स्थिर बैठनेपर ; सन्ध्याके पहले और निर्मल वायुके स्पर्शसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—ऐमिगडेला-ऐमि, बेल, कैक्ट, क्रैटिग, डिजि, स्ट्रैफान, स्पाइजि, फेजियोल, कैलि-कार्ब।

शक्ति।—१म दशमिक क्रम (इसका मूल अर्क भी १म दशमिक जैसा होता है)।

इक्थाइयोलम

(ICHTHYOLUM)

दूसरा नाम।—ऐमोनियम इक्थायोल-सल्फोनेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—तरल आकारमें क्रम तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—इस दवाकी होमियोपैथिक मतसे स्वस्थ शरीरवाले मनुष्य और रोगियोंपर परीक्षा नहीं हुई।

ऐलोपैथगण वात, गलगण्ड धातु, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, प्रमेह, चर्म-रोग प्रभृतिमें इसका भीतरी और ग्रन्थिवातमें इसका बाहरी प्रयोग क्रिया करते हैं। होमियोपैथी मतसे भी कोई-कोई ऊपर लिखे रोगोंमें इसका निम्न-क्रम व्यवहार करनेका उपदेश दिया करते हैं।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—पेट्रोलियम, कैल्के-कास्टि, सल्फ, प्लैण्टेगो, कार्बोलिक-एसिड।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

इक्टोडिस फिटिडा

(ICTODES FŒTIDA)

दूसरा नाम।—पोथस फिटिडस।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़के साथ समूचे गाछसे मूल अर्क बनता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—दमा; सर्दी; खाँसी; शोथ; मूर्च्छा; वात वगैरह रोगमें लाभदायक हुआ है।

उपयोगिता और आभास।—दमा रोगमें यह ज्यादा फायदेमन्द हुआ करता है, विशेषकर जब वायुनलीमें धूलके कण प्रवेश कर जाते हैं और इसी वजहसे दमा बढ़ जाता है। जगह बदलनेवाला और आक्षेपिक दर्द, वायुसे पेट फूला हुआ और कड़ा; जिह्वामूलके पार्श्वके दोनों गह्वरसे कण्ठ-नालीके भीतरतक जलन; गल-ग्रन्थिका बढ़ना; नाककी फूलन और बार-बार छींक तथा अकड़न-भरी खाँसी और दादकी तरह नाना प्रकारके चर्म रोगमें इसका साधारणत: व्यवहार हुआ करता है। पाखाना होनेके बाद दमा या श्वासमें कष्टका घटना इसका एक प्रकृतिगत लक्षण है।

लक्षणावली

मन।—बहुत चिड़चिड़ा; अविमृष्यकारी; प्रतिवाद करनेमें बहुत पटु; हमेशा अन्यमनस्क और सभी विषयोंमें मन न लगा सकनेवाला।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है और धुआँ दिखाई देता है (ऐनाक, फेरम, लैक्टियु, मर्क, वेरेट, कैलि-कार्ब)। सरमें दर्द—किसी-किसी समय किसी-किसी जगहमें दर्द होता है और कुछ देर बाद दूसरी जगह हट जाता है; कभी दाहिनी, कभी बायीं कनपटीमें अधिक दर्द होता है और धमनीमें टपक-जैसा मालूम होता है।

नाक और मुखमण्डल।—नाकका समूचा हड्डीवाला अंश फूला हुआ और हलका लाल रङ्गका; छूनेपर बहुत दर्द होता है; बाईं बगलमें दर्दकी अधिकता; गालपर लाल चकत्ते और बाएँ गालपर छोटी-छोटी रस-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं। तालु, जीभकी जड़के बगलवाले दोनों गह्वर और अन्ननालीसे पाकस्थलीतक सब स्थानोंमें दर्द; जोरकी छींकके साथ हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं। जीभ सुन्न हो जानेके कारण उससे दाँत छुए नहीं जाते। जीभके काँटे सब ऊँचे उठ जाते हैं। जीभका अगला भाग और अगल-बगलके दोनों स्थान लाल और क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होते हैं। जीभकी जड़के अगल-बगलवाले दोनों गह्वरसे वक्षके भीतरतक जलन मालूम होती है। छींक आनेपर अन्ननालीमें दर्द मालूम होता है। धूम्रपानकी इच्छा रहती है, पर अच्छा नहीं लगता।

पाकस्थली आदि।—जोरसे पैर चलानेपर उदरके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ टूट गया। पेट फूला और कड़ा। चलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो अन्त्रमण्डली (आँतें सब) शिथिल होकर झूल गयी हैं (इग्ने, सोरिन; पाकस्थली मानो झूल रही है—इपिका, स्टैफ, इयुफोर्ब)।

श्वास-यन्त्र।—एकाएक मानसिक अस्थिरता, श्वासमें कष्ट और पसीना निकल आता है; पाखाना होनेपर सब तकलीफें घट जाती हैं। वक्षके भीतर खालीपन मालूम होनेके साथ बार-बार लम्बी साँस लेनेकी इच्छा (इरिडियम); गलकोष (Fauces) और वक्षस्थल मानो जकड़ गये हैं। वायुनलीके भीतर धूल घुस जानेपर श्वास-कष्ट या दमा पैदा हो जाता है (आर्स, कैल्के, इपिका, साइलि; पत्थरके कोयलेका चूर घुसनेपर बढ़ना—नेट्रम-आर्स)। अकड़नवाली खाँसीके साथ गलकोषमें जलन मालूम होती है (वेरेट)।

सम्बन्ध।—सदृश।—आर्स, एरम-ट्राई, इग्ने, मिफाइटिस, कैप्स, वेरेट।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा शततमिक क्रम। ३रा दशमिक साधारणतः व्यवहारमें आता है।

इग्नेशिया ऐमेरा

(IGNATIA AMARA)

दूसरा नाम।—सेण्ट इग्नेशिया बिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसके बीजसे मूल अर्क और विचूर्ण तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—तलपेटका फूलना; शोक या क्रोधका दुष्परिणाम; मलद्वारकी बीमारी; क्षुधा विकृति (भूख लगना); निस्पन्द भाव (चुप पड़े रहना); ताण्डव आक्षेप; घुंड़ी (काली खाँसी); दुर्बलता; सुस्ती; दाँत निकलना; उपझिल्ली-प्रदाह; बाधक; मृगी; मूर्च्छावायु या हिस्टीरिया; मूर्च्छा; डर जानेका दुष्परिणाम; आध्मान वायुका रुकना; ग्रन्थियोंका बढ़ना; अर्श; सर-दर्द; हृत्पिण्डकी बीमारी; हिचकी; सविराम ज्वर; गति-शक्तिकी कमजोरी; विषाद वायु; सुन्न हो जाना; अन्ननालीकी बीमारी; पक्षाघात; चक्षुरोग; मलद्वारका बाहर निकल आना; आमवातिक ज्वर; गृध्रसी या झुनझुनीवाला वात; चैतन्यकी अधिकता; निद्राका व्याघात; मेरुमज्जाकी उत्तेजना; वेग या कूथन; गलेका जखम; दाँतका दर्द; कम्पन; पेशाबमें गड़बड़ी; स्वरभङ्ग; जम्हाई इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—रोगिनी चुपचाप अपना दुःख सहन करती रहती है; एकाएक जोरसे हँस उठती है या रोने लगती है। दुःख भारसे दबा हुआ चित्त। उदरके ऊपरी प्रदेशमें खालीपन मालूम होना, इसके साथ ही अनजानमें दीर्घ श्वास निकल जाता है। धूम्रपान करने, सुँघनी-सूँघने या तम्बाकू आदि पीनेवालोंके पास बैठनेपर सर-दर्द पैदा हो जाता है। ज्वराधिकारमें शीतावस्थामें प्यास और बाहरी उत्तापसे आराम मालूम होता है;

उत्तापवाली अवस्थामें प्यास नहीं रहती और सेंकना या गर्मी अथवा ओढ़ना असह्य मालूम होता है; शीतावस्था असह्य मालूम होती है। शीतावस्थामें चेहरा लाल हो जाता है। बच्चा धमकानेके कुछ ही देर बाद यदि सो जाता है तो धनुष्टंकार आदि आक्षेपकी बीमारी पैदा हो जाती है। सर-दर्दमें ऐसा मालूम होता है, मानो शंखदेश या कनपटीमें लोहेके खीलें गड़ रही हैं, माथेका दर्दवाला अंश दबाकर सोनेपर दर्द घट जाता है। साधारणतः बहुत ही विनम्र और कोमल स्वभाव, पर थोड़ा भी असन्तोषका कारण होनेपर इसका रोगी बहुत ही उत्तेजित हो उठता है। बहुत दिनोंतक शोक भोगनेकी वजहसे देह और मन जर्जरित, क्रोध, शोक या जिस प्रेमका बदला न मिला हो ऐसे प्रेमकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ, एकान्तमें बैठकर काल्पनिक विषयको लेकर सोचते रहना, पर किसीसे भी कुछ न कहना, बहुत अभिमानी। सदसत ज्ञान बहुत ही प्रखर; अस्थिर मति, अधीर, दृढ़ प्रतिज्ञ न रहना और विवादप्रिय (झगड़ालू) स्वभाव। भोजनके समय मुखमण्डलके एक छोटेसे अंशमें पसीना हो जाया करता है; दर्द आदि सहन नहीं कर सकता; गाड़ी आदिपर सवारी करनेकी वजहसे मलका कड़ापन; मलद्वारका अपने स्थानसे हटना या काँच निकलना—कोमल मल निकलनेके समय बढ़ना; अर्श, मलान्त्रके भीतरसे सुई बेधनेकी तरह दर्द तेजीसे ऊपरकी ओर चढ़ता है—पाखाना हो जानेके बहुत देर बादतक ऐसा दर्द हुआ करता है; नींद आनेके समय अङ्ग-प्रत्यङ्ग सब एक-एककर चौंक उठते हैं। दर्द आदि हर बार ठीक एक ही समय पैदा होते हैं वगैरह कई इग्नेशियाके प्रधान और अव्यर्थ सिद्धिप्रद लक्षण हैं। डा० ऐलेनने लिखा है:—स्नायविक धातुवाले, अभिमानी, उत्तेजना-प्रवण (सहजमें ही उत्तेजित हो जानेवाले), गहरे काले घने केशवाले, साँवले और कोमल स्वभाव तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले व्यक्तियोंके लिये यह दवा विशेष उपयोगी है। इसकी लक्षणावलीपर ध्यान देनेसे मालूम होता है कि उनके ह्रास-वृद्धिके कारण और अवस्थाएँ सब, बड़ी ही आश्चर्यजनक रीतिसे विपरीतता दिखाया करती है, जैसे—बहुत शोक तो है, पर रोगी विकट हास्य करता है; क्लीवता है, पर रमणकी बहुत इच्छा रहती है, विश्रामके समय चेहरा उतर जाता है; ज्वरकी जाड़ेवाली शीतावस्थामें प्यास; उत्तापावस्थामें प्यासका न रहना; चलते-चलते स्थिर होकर खड़े हो जाते ही खाँसी आने लगती है। रोगी जितना ही खाँसता है, खाँसी उतनी ही बढ़ती है; पाकाशयमें खालीपन

मालूम होना, यह खा लेनेपर भी दूर नहीं होता; गलेके जखमकी बीमारीमें कोई कड़ी चीज निगलनेके समय दर्द आराम मालम होता है; परन्तु कानमें भों-भों शब्द; यह संगीत सुननेसे आराम होता है और बवासीरकी बीमारीमें चलनेपर अर्शमें आराम मालम होता है।

लक्षणावली

मन।—मनोवृत्तियाँ सब बहुत तेजीसे विपरीत अवस्थायें धारण कर लेती हैं—जैसे रोता-रोता जोरसे हँसता है; अभी हँसी-दिल्लगी कर रहा था, तुरन्त रोना आरम्भ कर दिया (काफि, क्रोक, नक्स-मस); बहुत दिनोंतक शोक भोगनेकी वजहसे देह और मन जर्जरित हो जाता है, अनजानमें ठण्डी लम्बी साँस निकल जाती है (लैके); इसके साथ ही उदरके ऊपरी प्रदेशमें खालीपन मालूम होता है, भोजन करनेपर भी यह शून्य भाव नहीं घटता है (हाइड्रैस्ट, सिपि); क्रोध, शोक या अप्रतिदत्त (बदलाहीन) प्रणयकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ (कैल्के-फास, हायो); दुःखकी कल्पना कर एकान्तमें चिन्तामग्न बैठे रहता है। अन्तर्निहित (भीतरी) दृष्टि; (इरिझगो) हमेशा अकेला रहना चाहता है। बहुत अभिमानी और सदसत (अच्छा-बुरा) का ज्ञान बहुत ही प्रखर; अस्थिर मति, अधीर, अदृढ़ प्रतिज्ञ कलह-प्रिय स्वभाव। जब अच्छा रहता है तब बहुत ही कोमल तथा नम्र स्वभाव रहता है, पर थोड़ा-सा भी असन्तोषका कारण हुआ कि बहुत ही उत्तेजित हो उठता है; उसका काम यदि कोई दिखाता है या उसकी बात काटता है, तो बहुत चिढ़ उठता है, रोगी क्रोधान्ध हो जाता है। बच्चेको डाँटने या तिरस्कार करनेपर यदि तुरन्त ही सो जाये तो चौंककर जाग उठा करता है, यहाँतक कि उसे धनुष्टंकारतक हो जाता है। अशुभ समाचार, हृदयमें जमा क्रोध या असन्तोष; अप्रकाशित मर्म-पीड़ा या लज्जा (स्टैफाई) वगैरहसे पैदा हुई स्वास्थ्यकी हानि। गड़बड़ी सहन नहीं कर सकता, रातमें चोरोंका डर लगता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ती हुई मालूम होती हैं (कैम्फो)। नासामूलमें दबावके साथ ऊपरी भागमें सर-दर्दके साथ मिचली, ललाटके भीतरसे बाहरकी ओर डङ्क मारनेकी तरह दर्द (कैलि-आयोड, मैग-फास, गासिपि)। मूर्द्धा और ललाटदेशमें सट

या जकड़ जानेकी तरह दर्द, चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है, चेहरा लाल हो उठता है और रोगी रोने लगता है। सर-दर्दका बढ़ना—काफि ; शराब या धूम्रपानसे घटना—डाय); धुएँकी गन्धसे, सूँघनीसे, शब्दसे, तेज़ गन्धसे, पढ़नेपर और लिखनेपर ; धूपमें तथा आँख हिलानेपर ; करवट बदलनेके समय और करवट सोनेके समय घटना। सर-दर्द, मानो कोई मस्तिष्कमें या कनपटीमें लोहेकी खील ठोंक रहा है, रोगवाला अंश दबाकर सोनेसे घट जाता है (काफी, नक्स, थूजा); मस्तिष्कके गभीरतम प्रदेश और ललाटमें तेज़ छेदनेकी तरह दर्द—सोनेपर घट जाता है। धनुष्टंकार आदि आक्षेपके समय माथा पीछेकी ओर झूल पड़ता है, उत्तापसे घटना। केश झड़ जाना।

आँख।—आँख करकराती है (कार्बो-वे, कास्टि, इयुफ्रे) और दबाव मालूम होता है, मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं। आँख लाल, दिनमें आँखसे कषाय आँसुओंका स्राव होता है (इयुफ्रे) और रातमें आँखें सट जाती हैं (इयुफ्रे, ग्रैफ, हिप, फास)। आँख और पलक फड़का करती हैं (बेल, काक्यु, क्यूप्रम, हायो, बार्बा, लैके); पुतली फैली और स्थिर दृष्टि (इथु, बेल, हायो, लैके, लोरो, ओपि, सिकेलि, स्ट्रैमोन)। दृष्टिका मैलापन ; मानो चारों ओर अंधेरेसे ढका है (बेल, कैल्के, साइक्ले, मर्क, प्लम ; आँख मलनेपर यह भाव दूर हो जाता है—क्रोक, पल्स)। सर-दर्दके साथ आँखके सामने बिजली चमकनेकी तरह मालूम होना (नेट्र-म्यु) और तारे सब देखना (बेल, नेट्र-मूर, कैस्टोर, क्रोक, नक्स-वोम, स्पाइजि, स्टैफि); उज्ज्वल चमकीली रोशनी या धूपका सहन न होना।

कान।—कर्णमूल-ग्रन्थिका फूलना और उसमें बहुत तेज़ दर्द। मनुष्यके कण्ठ स्वरके सिवा और कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पाता (मनुष्यका कण्ठ सहजमें ही नहीं सुन पाता—फास, साइलि, सल्फ)। कानमें तेज़ हवा चलनेकी आवाज़ या सों-सों शब्द, कानमें खुजली।

मुखमण्डल।—मुँहकी पेशियाँ सब फड़का, सिकुड़ा और फैला करती हैं (ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, साइक्यू, स्टैमो)। चेहरा पर्यायक्रमसे म्लान और लाल दिखाई देता है (ऐको, कैमो, सिना, मैग-कार्ब, ओपि, पल्स)। एक गाल और कान लाल और गर्म मालूम होता है। चेहरेका रङ्ग कीचड़की तरह ; आँख और गाल गड़हेमें धँसे और दोनों आँखोंके चारों ओर नीला

घेरा। ओंठका संयोगस्थल फड़का करता है (ओपि)। दोनों हनु एकाएक आपसमें जुड़ जाते हैं (साइकूट, हायो, लोरो, नक्स इत्यादि)। दोनों ओंठ सूखे, त्वचा फटी हुई और खूनसे भरी, गर्दन हिलानेके समय दोनों हनुके नीचेवाली ग्रन्थिमें दर्द मालूम होता है।

मुख-विवर।—सामनेवाले दाँतमें छेदनेकी तरह दर्द; काफी या धूम्रपानके बाद बढ़ जाना। दाँतका दर्द—ऐसा दर्द मानो पेषण दाँत सब टूट गये; भोजन करना समाप्त करनेके समय और भोजनके बाद, सन्ध्याके समय, सोने बाद या सवेरे नींद खुलनेपर या दोनों वक्तके भोजनके बीचके समयमें दर्द बढ़ जाता है। दाँत निकलनेके समय बच्चोंको नाना प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं—धनुष्टंकारतक हो जाता है। मुँहमें बहुत अधिक लार इकट्ठा होती है; धनुष्टंकार या मृगी आदि रोगमें मुँहसे फेन निकलता है (इथ्यू, ऐगार, बेल, कैम्फो, कैमो, साइकूट, काक्यु, हायो, लोरो, स्ट्रैमो, वेरेट)। बोलने या चबानेके समय गालके भीतरी भागमें (कास्टि) या जीभमें (ऐसि-नाई) काट लेता है। जीभ तर और सफेद मैलसे ढँकी रहती है। मुँहका स्वाद खट्टा (ऐसिड-नाई, नक्स, सिपि)।

गलेके भीतर।—गलेका जखम; जब कोई चीज़ नहीं निगलता है, उस समय मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है (कैमो, नक्स)। कोई चीज़ निगलनेके समयके अलावा और सब समय गलेमें एक सूक्ष्म शलाका या सुई गड़नेकी तरह अनुभव होना; पर कड़ी चीज़ निगलनेके समय आराम मालूम होना। गलेके भीतरसे कानतक सुई बेधनेकी तरह दर्द (हिप)। पानीय आदि पतली चीजें निगलनेके समय अटक जाती हैं; कड़ी चीज़ सहजमें ही निगल सकता है।

पाकस्थली।—मुँहमें खड़ियाका स्वाद मालूम होना (नक्स-मस)। किसी भी खानेकी चीज़का स्वाद नहीं मिलता। गर्म पदार्थ, दूध, मांस और तम्बाकूसे अरुचि। डकारके साथ गलेमें तीता रस चढ़ आता है (ब्राई, नक्स, पल्स; खट्टी डकार—ऐसिड-नाई, फास, ऐसिड-सल्फ, रोबिनिया; मीठा रस चढ़ आता है—मर्क, प्लम्ब)। हिचकी—खाने-पीने बाद और धूम्रपानकी वजहसे (सेङ्गिविन)। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और खालीपन मालूम होना; भोजनके बाद भी यह भाव नहीं जाता (ऐसिड-म्यूर, सिपि; पाकस्थलीमें खालीपन मालूम होना—सेङ्गियु, सार्सा)। पाकस्थलीमें रह-रहकर

एकाएक दर्द पैदा हो जाता है। पाकाशयमें सूक्ष्म सुई बेधनेकी तरह दर्द (राम)। खाये हुए पदार्थ सहजमें ही पच नहीं जाते। भोजनके बाद पेटमें दर्द हो जाता है और फूल जाता है (दो-एक ग्रास खाते-न-खाते पेट भरा-सा मालूम होता है (चायना, लाई, नक्स, फास, सल्फ)। सन्ध्याके समय भूख लगनेकी वजहसे रोगी सो नहीं सकता। निर्दिष्ट समयका अन्तर पेटमें दर्द होता है और नींदमें बाधा पड़ जाती है तथा रोगवाला अंश दबा देनेपर दर्द बढ़ जाता है। रातमें पेट खाली होनेकी वजहसे नींद नहीं आती (लाई)।

अन्त्राशय।—प्लीहाके स्थानपर सूजन और कड़ापन मालूम होना। पेटमें टपक (ऐलो, सैङ्गियु)। आँतोंमें हुड़हुड़-गुड़गुड़ शब्द ; पेटमें वायुकी वजहसे आँतोंमें शूलका दर्द, विशेषकर रातमें बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—पाखाना होनेमें तकलीफ़ और मलद्वारका बाहर निकल आना। जरा भी वेग देनेपर या माथा झुकानेपर या कोई भारी चीज़ उठानेपर मलनाली बाहर निकल आती है (ऐसिड-नाई, पोडो, रियुटा), विशेषकर पतला पाखाना होनेके समय। बवासीर—हरेक बार पाखाना होनेके समय मसा बाहर निकल पड़ता है और अंगुली आदिके सहारेसे भीतर घुसा देना पड़ता है। मलान्त्रसे तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द ऊपरकी ओर फैलता है (ऐसिड-नाई); पाखाना हो जाने बाद बहुत देरतक सम-भावसे दर्द हुआ करता है (रैटान, सल्फ)। कब्जियत—गाड़ी आदिपर सवारी करनेकी वजहसे ; आँतोंकी निष्क्रियतासे पैदा हुआ पाखानेका बहुत ज्यादा वेग होता है, पेटके ऊपरी भागमें ही यह वेग अधिक मालूम होता है (वेरेट) ; पाखाना होनेके समय इतनी तकलीफ़ होती है, कि रोगी पाखाना जानेसे डरता है। मलान्त्रमें सूतकी तरह कृमिका रहना मालूम होता है ; सन्ध्याके समय मलद्वारमें बहुत खुजली उठती है (इण्डिगो, टियुक्रि, कैल्के, सिना)। बच्चोंकी दाँत निकलनेके समय उदरामयसे पैदा हुई उत्तेजना, मस्तिष्कमें प्रतिक्षिप्त होकर चेहरा एकाएक सफेद पड़ जाता है और विकार पैदा हो जाता है ; सर हिलाया करता है, कोई पदार्थ सहजमें ही निगल नहीं सकता और आँख तथा पलक फड़का करती हैं।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत ही असमयमें ऋतु हो जाता है। प्रत्येक दस या पन्द्रह दिनका अन्तर देकर स्राव ; काला, गाढ़ा, थक्का-थक्का, सड़ी बदबू-

दार (ऐमोन-कार्ब, क्रोक, साइक्ले, प्लैट) ; आर्त्तव-स्रावके समय सरमें भार; गर्मी और दर्द मालूम होता है, रोशनीका सहन न होना ; शूल और संकोचनकी तरह (कैमो, काक्यु, नक्स) दर्द ; मानसिक उद्वेग ; कलेजा धड़कना और बहुत थकावट मालूम होना, यहाँतक कि बेहोशी भी हो जा सकती है। साँस रुकनेका उपक्रम होनेके साथ जरायुके भीतर ऐंठनकी तरह या गड़नेकी तरह दर्द, दबानेपर और चित्त होकर सोनेपर दर्द घट जाता है। प्रदर—स्राव आरम्भ होनेके पहले जरायुमें संकोचनकी तरह दर्द ; पीवकी तरह और त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव (क्रियो)।

श्वास-यंत्र।—रोगी ऊँचे स्वरसे बोल नहीं सकता। गलेमें मानो गन्धकका धुआँ प्रवेश कर गया है (आर्स, सिङ्की)। ऐसा मालूम होनेकी वजहसे वायुनलीके मुँहपर संकोचन और बार-बार खाँसी। पतली सर्दी निकलनेके साथ दिन-रात सूखी और अकड़न पैदा करनेवाली या शरीरको हिला देनेवाली खाँसी, सवेरे उदरके ऊपरी प्रदेशमें खुजलीकी वजहसे पैदा होनेवाली खाँसी, सन्ध्याके समय बहुत दिनोंके पुराने श्लेष्माकी तरह गन्ध और स्राव मिला कफ़ निकलता है (सल्फ़)। रोगी वायुनलीमें खुजलीके कारण जितना खाँसता है, खाँसी भी उतनी ही बढ़ती है। आधी रातके बाद वक्षस्थलमें दबाव और बहुत श्वासकृच्छ्रता मालूम होती है, मानो छातीपर एक टुकड़ा भारी पत्थर दबाया हुआ है। चलनेके समय श्वास घट जाता है और चलते-चलते खड़े होनेपर खाँसी पैदा हो जाती है। दौड़नेके समय साँस रुकने लगती है। बाएँ वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (फास, दाहिने वक्षमें—बेल)। हृत्पिण्डमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और स्पन्दन (डिजि, स्पाइ)। अन्त्रशूल रोगमें छाती और पंजरेमें आध्मान वायुके कारण तेज़ शूलका दर्द हुआ करता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और पीठ अकड़ी हुई मालूम होती है। सब ग्रीवा ग्रन्थियोंमें दर्द होता है। गलेकी सब गाँठें फूलकर गुटिकाकी तरह दिखाई देती हैं (आयोड, कोना, लेपिस) ; सवेरे पीठके बल, चित्त होकर सोनेपर चूतड़में दर्द होता है ; नितम्बके स्थानपर तेज़ दर्द, मानो मरोड़ खा रहा है ; कमरेके पीछे या त्रिकास्थिसे उरुतक इस ढङ्गका दर्द मानो अस्त्रसे आघात कर रहा है। कटि-स्नायु-शूल या गृध्रसी (Sciatica) दर्द, अस्त्रकी चोट, फाड़ने या फूटन और टपककी तरह दर्द। जाड़ेके दिनोंमें बढ़ना, गर्मीके दिनोंमें घटना, इसके साथ प्यास न रहना और उत्ताप पैदा हो जाना

भी मौजूद रहता है, विशेषकर मुखमण्डलमें। रोगवाली जगह फूली और उरुदेश गांठ जैसा मालूम होता है, रोगिनोको उठने या सोनेमें तकलीफ़ होती है, विशेषकर बायें अङ्गमें अधिक मालूम होती है। बाँह हिलानेके समय कन्धेमें ऐसा दर्द होता है मानो सन्धि खुल गयी है (ब्राई, रियुटा)। बाँहकी त्रिकोण पेशी और बाँह तथा अंगुलियाँ सब रह-रहकर फड़क उठती हैं। तलहथी और अंगुलीमें गर्म पसीना निकलता है। उठनेके समय जानु और गुल्फ सन्धि अकड़ी मालूम होती है। घुटनेको हिलानेके समय मटमट शब्द होता है (आर्स, कैल्के, कास्टि, शरीरकी सभी सन्धियाँ ही कड़कड़ाती हैं—कैप्स, लिडम, रास), चलनेके समय दोनों पैर और निचला पैर भारी मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है मानो एँड़ी जकड़ गयी है, बाँहकी त्वचाके नीचे मानो एक जीव घूम रहा है—ऐसा मालूम होना (क्रोकस)।

सार्वाङ्गिक।—नींद आनेके समय अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि यहाँतक कि समूची देह फड़क उठती है (कैल्के, बेल, हायो, स्टैमोन)। शरीरके छोटे-छोटे सीमाबद्ध अंशोंमें दर्द पैदा हो जाता है (सीड्रन), मृगीकी तरह आक्षेप, मुँहसे फेन निकलता है, बार-बार जम्हाई आती है, आँखें सब फड़का करती हैं, हाथके अंगूठे दोनों मुड़ जाते हैं और चेहरा लाल या कभी-कभी लाल और कभी सफेद मालूम होता है। धनुष्टंकार आदिके समय रोगी कभी जोरसे हँस उठता है और क्षणभर बाद ही रोने लगता है (साइक्यू-वाइरो)। लक्षण आदि प्रायः भोजनके बाद ही, सन्ध्याके समय, सोनेके बाद या सवेरे सोकर उठनेके समय पैदा हो जाते हैं। काफी, धूम्रपान और शराब आदि पीनेपर या शब्दसे बढ़ जाते हैं और चित्त होकर सोनेपर या रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर और खड़े रहनेवाली अवस्थासे बैठने या बैठनेवाली अवस्थासे खड़े होने या सोने वगैरह शारीरिक अवस्थाका परिवर्त्तन करनेपर लक्षण आदि घट जाते हैं (रास)। दर्दकी वजहसे रातमें नींदमें व्याघात होता है। शोक या डर जानेके बाद अंग-प्रत्यङ्गोंकी अकड़न जैसी अवस्था (जेल्स, कोलोसिन्थ, ओपि ; बहुत दिन पहलेके शोककी वजहसे—ऐसिड-फास)।

त्वचा।—सारे शरीरमें खुजली—खुजलानेपर घट जाती है। स्त्री-योनि और मुँहके चारों ओरकी त्वचाका क्षय हो जाना। ज्वरकी उत्तापावस्थामें, समूची देहमें बहुत खुजली होती है और आमवात निकल आता है तथा

पसीना होनेके साथ ही अदृश्य हो जाता है (शीतावस्थाके पहले और समय खुजली और डङ्क मारनेकी तरह मालूम होना और पित्ती निकल आना—हिप ; शीत और उत्तापावस्थामें—रास ; उत्तापावस्थामें—एपिस)।

निद्रा।—ज्वरकी उत्तापावस्थामें नाकमें आवाज़के साथ गाढ़ी मोहाच्छन्न निद्रा (एपिस, ओपि) और बार-बार ठण्ढी साँसें लेना ; सवेरे या दोपहरमें सोनेके बाद, बहुत जम्हाई आनेके समय निचले जबड़ेमें दर्द होता है, मानो जबड़ा टूट गया और आँखसे आँसूका स्राव हुआ करता है। निद्रावस्थामें ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने मुँह दबा रखा है और रोगी बार-बार चौंक उठता है। नींद आनेके समय सारे शरीरमें या किसी एक अंगमें चमक पैदा हो जाती है (बेल, हायो, डिजि)।

शीत, उत्ताप और पसीना।—ज्वर आनेपर रोगी बार-बार जम्हाई और अंगड़ाई लिया करता है, हाथ-पैर फैलाता है (इयुपेट, नेट्रम-म्यूर, रास)। शीतावस्थामें चेहरा लाल हो उठता है (फेरम), बहुत प्यास (चिना), बाहरी उत्तापसे शीत घट जाता है ; कम्पनकी वजहसे शीत, गर्म घरमें और चूल्हेकी गर्मीसे घट जाता है। उत्तापावस्थामें प्यास नहीं रहती, वाह्य उत्ताप सहन नहीं होता, किसी तरहका ओढ़ना भी सहन नहीं होता। बाहर उत्ताप और भीतर जाड़ा मालूम होता है ; उत्तापवाली अवस्थामें बहुत खुजलानेवाली जुलपित्ती निकलती है और रोगी गहरी नींदमें अभिभूत हो जाता है तथा उसकी नाकसे आवाज़ निकला करती है। पसीनेवाली अवस्थामें—हाथ-पैर आदि या मुखमण्डलके एक छोटेसे अंशमें थोड़ी मात्रामें गर्म पसीना होता है, पसीना निकलनेके साथ ही जुलपित्ती गायब हो जाती हैं ; पसीनेवाली अवस्थामें रोगीको बहुत सुस्ती मालूम होती है, बेहोश हो जाना चाहता है। जीभ साफ़, खट्टी लारसे भरी। खाये हुए किसी पदार्थका भी स्वाद नहीं मिलता। ज्वर छूटनेवाली विज्वरावस्थामें—ओंठ और ओंठके संयोगस्थलपर जल-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं ; दोनों ओंठ सूखे, उनकी त्वचा फटी या कड़ी ; दिनके ११ बजनेके समय रोगीको बहुत भूख मालूम होती है (सल्फ) और उसका चेहरा रक्तशून्य और उजला मालूम होता है (महात्मा हैनिमैनके मतसे सविराम ज्वराधिकारमें यदि शीतावस्थामें प्यास अधिक रहे और उत्तापवाली अवस्थामें बिलकुल न रहे तो इग्नेशिया, उस ज्वरको एकदम आरोग्य कर सकता है)।

वृद्धि ।—धूम्रपान, काफी या शराब पीनेपर, छूनेपर ; तेज़ गन्धसे, मानसिक आवेग या शोककी वजहसे ; जाड़ेके दिनोंमें सवेरे नींद खुलते ही, संध्याके बाद सोनेपर और कुछ स्पर्श करनेपर ।

घटना ।—उत्तापसे, जोरसे मलने या रगड़नेपर ; कड़ी चीज़ निगलने और चलनेके समय तथा गर्मीके दिनोंमें, चित्त होकर रोगवाली करवट सोनेपर और शरीरकी अवस्थाका परिवर्त्तन करनेसे ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—क्रोकस (तेज़ हँसीका उद्वेग) ; लाई, (नींदमें व्याघात ; भूख न लगना) ; जेल्स, ओपि, कालो, वेल, कास्टि, लैके (तरल पदार्थ निगलनेमें कष्ट) ; प्लम, नक्स (ज्वर) ; सल्फ (तुच्छ विषयोंमें भी क्रोध) ; कोलिन, पल्स (दुःखको छिपाना) ; पोडो, एपिस, हायो, स्ट्रैन, काक्यु, वेरेट, क्यूप्रम ।

असम्बन्ध ।—काफी, नक्स, टैबाक । **तुलनीय**—जेल्स (सर-दर्दकी शान्ति, पेशाब होना) ; मस्कस (सहजमें ही मूर्च्छा) ; ओपियम (एकाएक आवेगका दुष्परिणाम) ; काकुलस (जरायुका आक्षेप) ; एपिस (स्नायविक खाँसी) ; ज्वर और आँसुओंके स्रावमें—नेट्रम ।

दोषघ्न ।—पल्स, आर्निका, कैम्फो, काकुल, काफिया, कैम्फर ।

शक्ति ।—निम्न-क्रमसे २०० शततमिक और इससे भी ऊँचा क्रम ।

क्रियाका स्थायित्व ।—८ दिन ।

इलेक्स-एक्विफोलियम

(ILEX AQUIFOLIUM)

दूसरा नाम ।—होलि ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्ते, फल और कोमल फुनगियोंसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय, सविराम ज्वर, प्लोहामें दर्द ; कामला और आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ । **जाड़ेके दिनोंमें रोग-लक्षणोंका घटना** लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—इलेक्स-पेरा, इलेक्स-वोमि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इलिसियम एनिसेटम

(ILLICIUM ANISATUM)

दूसरा नाम ।—एक तरहका जीरा ; स्टार साइज ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—भारतवर्षमें जीरा भोजनके बाद मुखको सुगन्धित करने, पाचन करने और छौंकनमें तथा मसालेके रूपमें व्यवहृत होता है ।

पेटमें वायु लक्षणकी यह एक उत्कृष्ट दवा है । शूलके दर्दके साथ यदि उदरमें वायु-सञ्चयकी वजहसे घड़घड़ शब्द हुआ करता है और नियमित भावसे ठीक एक ही समय, शूलका दर्द आरम्भ हो जाता है—इन लक्षणोंमें इससे आशासे अधिक लाभ होनेकी सम्भावना रहती है ।

साधारणतः दाहिनी ओर, कभी-कभी बाईं ओरकी पंजरास्थिमें, वक्षोस्थि (Sternum) से एक या दो इञ्च दूरीपर दर्द और बार-बार खाँसी पैदा होना, इसका एक विशेष लक्षण है ।

पुराने शराबियोंकी सर्दी और उदरामय, पुराना दमा, श्वास-कष्ट, रक्तवमन प्रभृति लक्षणमें भी यह किसी-किसी जगह लाभ करता है ।

शक्ति ।—२ और ६ ।

इम्परेटोरिया

(IMPERATORIA)

दूसरा नाम ।—प्यूसिवेनम—आस्ट्रे पियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—अन्त्र और श्वासनलियोंमें श्लेष्मा-स्रावकी कमी इसका निर्देशक लक्षण है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

इण्डिगो

(INDIGO)

दूसरा नाम ।—वन-नील ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण, पीछे तरल क्रम या अर्क तैयार होता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे निकलना ; रजःस्वल्पता ; गुह्यद्वारका बाहर निकल आना ; कब्जियत ; खाँसी ; अतिसार ; मृगी ; सर-दर्द ; मूर्च्छा-वायु ; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; दाँतका दर्द ; कृमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—खास-खास लक्षणोंमें यह अपस्मार या मृगी रोगमें विशेष लाभदायक है अर्थात् आँतमें कृमि रहनेकी वजहसे अपस्मार या मृगी रोग ; रोगी बहुत दुःखित और विषादयुक्त रहता है या रोगके आक्रमणके पहले उन्मत्तता दिखाता है और इसके बाद नम्रता और कातरता या डरपोकपन प्रकट करता है ; पाकस्थलीके पीछेवाले स्नायु-समूहोंसे उत्ताप पैदा हो जाता है और मस्तककी ओर दौड़ पड़ता है ; शीत लगनेपर, मनमें डर पैदा होनेपर रोगका प्रकोप पैदा हो जाया करता है । ऐसा अनुभव होता है कि माथेमें तरंगें उठ रही हैं, इसके साथ ही चारों ओर अँधेरा दिखाई

देता है, यह इसका एक प्रकृतिगत लक्षण है ; संध्याके समय और सोने बाद हूप खाँसीकी तरह ऊपर-के-ऊपर लगातार खाँसी आती है, इसके साथ ही नाकसे रक्तस्राव होता है ; प्रत्येक बार भोजनके बाद हाथ-पैरमें दर्द ; विश्रामके बाद पहली बार शरीर हिलानेपर दाहिने उरुमें दर्दकी अधिकता : बाँह और उसके पीछेवाले स्नायुमें शूलका दर्द, बैठनेके समय बढ़ना और शरीर संचालनपर घटना ; मलान्त्रमें कृमि चलनेकी तरह असह्य खुजली, निद्रितावस्थामें कृमि सब मलद्वारसे बाहरतक चली आती है ; थोड़ा भी ज्यादा भोजन करनेके चार-पाँच घण्टे बाद पाकस्थलीमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है वगैरह कई इण्डिगोके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—बहुत दुःखित और विमर्ष स्वभाव और असन्तुष्ट चित्त। निर्जनता प्रिय। अपस्मार या मृगीके आक्रमणके पहले बहुत उत्तेजित भाव और इसके बाद कोमल और भीरु स्वभाव प्रकट करता है। हमेशा किसी-न-किसी काममें लगा रहना पसन्द करता है (आयोड, कैलि-ब्रोम, हेलोन, लिल-टाइ, सल्फ, टैरेण्ट)।

मस्तक।—सरमें दर्दके साथ सरमें बहुत अधिक चक्कर आना (आर्जेण्ट-नाई, बैराई, लैके)। मस्तक स्वाभाविककी अपेक्षा बड़ा मालूम होता है, मानो उसने अधिक जगह घेर ली है (ऐपियोल, आर्जेण्ट-नाई, आर्नि, नक्स-मस ; एक डलियाकी तरह बड़ा—जेल्सि, मानो एक गिर्जेकी तरह बड़ा—नक्स-वोम ; मानो एक पार्श्वकी ओर बढ़ गया है—लैक-डिपलो, मानो लम्बा हुआ जाता है—हाइपर)। ललाट-देशमें ऐसा मालूम होता है, मानो माथा कसकर बाँधा हुआ है (ऐसिड-कार्बोल, सिपा, काक्यु, साइक्ल जेल्सि, हिप, आयोड, ऐसिड-नाई ; बाधक रोगमें—जैन्थक्स), ऐसा मालूम होता है मानो मूर्द्धापर एक भार दबा हुआ है (ऐलो, कैल्क, ग्लोन, लैके, फेलैन)। ललाट-देशमें उत्ताप और बुलबुले फूटनेकी तरह मालूम होता है अर्थात् मानो पानी खौल रहा है (ऐसिड-बेन, रातमें—पल्स)। शिरामें—पीछेकी ओरसे सामनेकी ओर तरंगें प्रवाहित हो रही हैं (ग्लोन), ऐसा मालूम होना और इसी वजहसे अस्पष्ट दृष्टि। मिचली-मिला सर-दर्द (चेलिडो, क्लोरोफ, काफि, कैलि-कार्ब, लैक-डिफ्लो, सिलिन, मिलिलोट, सैङ्गियुई, वेरेट-विर) ; स्थिर रहनेपर बढ़ता

है और मलने, दबाने और और शरीर हिलानेपर घटता है (दबानेसे घटना—लेके पल्स, सेङ्गियुई ; शरीर सञ्चालनसे घटना—ऐसिड-म्यूर, नक्स-मस, रास, स्पाइजि)। अन्तर्निहित दृष्टि (Mental Introvision—इग्ने)।

आँख।—दोनों पलकोंका बहुत अधिक फड़कना और काँपनेकी वजहसे दृष्टिका व्याघात (ऐगार, रियुम, इग्ने, कोडेन)। लगातार सूखी खाँसीके साथ नाकसे खूनका स्राव (आर्नि, कोरैल-रूब, कोचोलेरिया, क्रोटेल, ड्रोसे, इपिका, मर्क, ऐसिड-म्यूर, नक्स-वोम, स्ट्रैमोन)।

नाक।—दृष्टि लोप हो जानेके साथ नाकसे रक्त-स्राव (ऐसिड-आक्सेल)। ऊपरके ऊपर सूखी खाँसी आनेके साथ नाकसे खून जाना (आर्नि, कोरैल-रूब, कोचलेरिया, क्रोटेल, ड्रोसे, इपिका, मर्क, ऐसिड-म्यूर, नक्स-वोम, स्ट्रैमोन)।

मुखमण्डल आदि।—मुँहकी हड्डीमें, विशेषकर निचले हनुमें छेदने, बेधने या चबानेकी तरह दर्द (अरम, ऐसिड-फ्लु, मेजेर, ऐसिड-नाई, ऐसिड फास, रियुटा, स्टिलिङ्ग), निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थिसे दाँततक फैलनेवाला दर्द। दाँतका दर्द, खींचने, चबाने या छेदनेकी तरह, मानो दाँत उखाड़े जाते हैं (मेजेर, रास, जिङ्कम), उत्तापसे बढ़ना ; संचालनसे घटना, ठण्डी वायु लगनेसे थोड़ी देरके लिये घटना। खून-मिला लारमय थूक निकलना (इयुफोर्बि, ऐसिड-नाई, हायो, मर्क-नाई, मर्क-कोर)। जीभके अगले भागमें रसभरे दाने निकलना।

पाकस्थली आदि।—मुँहमें धातुके जंगका स्वाद। मीठी स्वाद-मिली डकार। ओकाई आते-आते पानीकी तरह पदार्थ निकलता है। पाकस्थलीमें ऐसा शून्य भाव मालूम होता है, मानो उपवास कर रखा है, रह-रहकर गर्म डकार उठती हैं—बैठनेके समय भूख बहुत कम ; कुछ अधिक आहार करते ही ४-५ घण्टेके बाद पाकाशयमें बहुत गड़बड़ी मालूम होने लगती है।

मलान्त्र और मल।—सूत्र-कृमि, मलान्त्रमें कृमि चलनेकी तरह मालूम होना और निद्रितावस्थामें कृमि सब मलद्वारके बाहर आ जाती है (इग्ने, सिना, टियुक्रि)। पेटमें बहुत ज्यादा परिमाणमें वायु मिला दस्त। न हटनेवाली कब्जियत, मल बहुत थोड़ा, कड़ा और सहजमें ही नहीं निकलता।

पेशाब।—मूत्र-पथरीकी वजहसे शूल। मूत्रस्थलीकी नलीमें जलनके साथ बार-बार पेशाबका वेग; बहुत कष्टसे थोड़े परिमाणमें गदला पेशाब होता है। पेशाबकी नलीमें बहुत अधिक संकोचन मालूम होता है और मूत्रस्थलीमें दर्दके साथ श्लेष्मा मिला बहुत ज्यादा परिमाणमें गदला पेशाब होता है। मूत्रनालीका संकोचन या अवरोध; मूत्रस्थलीमें कभी-कभी पैदा होनेवाली सर्दी (Catarrh)।

श्वास-यन्त्र।—ऊपर-के-ऊपर तेज़ खाँसी; खाँसते-खाँसते वमन हो जाता है और नाकसे खूनका स्राव होने लगता है (इपिका, आर्निका, कोचलोरिया-आरमो, क्रोटेल)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गृध्रसी या उसके पिछले भागके स्नायुमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द और बराबर व्यथा मालूम होती है। जानु-ग्रन्थिमें मानो कोई छेद कर रहा है और पीटलीमें मानो सुई बेध रहा है—इस ढङ्गका दर्द। बैठनेके समय तीसरे पहर और सन्ध्याके समय वृद्धि; रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है; शरीर हिलानेपर घटता है, पर शरीर हिलाना आरम्भ करनेपर दर्द हुआ करता है। दाहिने उरुके ऊपरी अंशमें नीचेकी ओर फैलनेवाला दर्द, विश्रामके बाद पहली बार शरीर हिलानेके समय दर्द बढ़ा मालूम होता है (रास, साइक्ले), यहाँतक कि रोगी करवट नहीं बदल सकता। हाथ-पैरोंमें दर्द; भोजनके बाद बहुत बढ़ जाता है। उरुके बीचसे जानुतक हड्डीमें बेहद दर्द; चलनेके समय घटता है और तीसरे पहर स्थिर होकर बैठनेपर फिर पैदा हो जाता है।

स्नायुमण्डल।—दर्द ज्यादा पैदा करनेवाले गुल्म-वायुके आक्रमणकी तरह आक्षेप, बहुत स्नायविक उत्तेजना, अपस्मार या मृगी रोग; उदरके ऊपरी प्रदेशसे उत्ताप पैदा होकर माथेकी ओर जाता है (मानो आगकी भाफ़ उठ रही है—लाई); आरम्भमें चक्कर आया करता है; रोगी बहुत ही दुःखित हो पड़ता है; दोनों कन्धोंके बीचवाले किसी दर्द-भरे अंशसे सुरसुरी पैदा हो जाती है। रोगके आक्रमणके पहले रोगी बहुत उत्तेजित और उन्मत्तकी तरह हो जाता है और इसके बाद नम्र और डरपोक बन जाता है। क्रिमिकी वजहसे पैदा हुई उत्तेजनाके प्रतिक्षेपकी वजहसे शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें आक्षेप, यहाँतक कि धनुष्टङ्कारतक पैदा हो जाता है। रातमें क्रिमिकी सुरसुरीकी वजहसे नींद खुल जाती है। क्रिमिकी वजहसे ज्वर।

वृद्धि ।—विश्रामके समय, बैठनेवाली अवस्थामें, तीसरे पहर और सन्ध्याके समय (पर सन्ध्याके समय सरमें चक्कर आना घट जाता है) और भोजनके बाद ।

घटना ।—शरीर हिलानेपर, चलनेके समय और दबाने या हाथ फेरनेपर ।

दोषघ्न ।—कैम्फर, नक्स-वोम ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—सलफर (मृगी ; क्रिमि ज्वर); सिसिसि (माथेमें दर्द); बूफो (मृगी); इग्ने (विषाद)। कैलि-ब्रोम, ऐक्टि-रेसि, रास, बूफो, लाई, बैप्टी, इग्ने, सिना, स्पाइजि, स्टै न ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम ।

इण्डियम

(INDIUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—एक तरहका धातु, इसका विचूर्ण हुआ करता है। इसके बाद ६ठे दशमिक क्रमके बादसे अर्क या टिञ्चर तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पीठमें दर्द ; नाकसे रक्त-स्राव ; सर-दर्द ; पैरमें पसीना ; स्वप्न-दोष ; गलेमें जखम ; अलिजिह्वाका बढ़ना ।

उपयोगिता और आभास ।—जननेन्द्रियके सम्बन्धमें इसकी क्रिया प्रायः सेलिनियमकी तरह है। रोगीमें इन्द्रिय दमनकी शक्ति नहीं रहती ; रातमें उसे वीर्यपात हो जाता है और वह कामोद्दीपक सपने देखा करता है। इसकी क्रियाके आधीन रोगीका चित्त सदैव दुःखी रहा करता है, उसे अकसर भयानक सर-दर्द होता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेके भीतर प्रचण्ड दर्द मालूम होता है ; सर-दर्द हो जानेपर नींद आती है और जी मिचलाता है। गलेमें दर्द, सन्ध्याके समय बढ़ना और ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; पेशाब कुछ देरतक पड़ा रहनेपर उसमें बहुत बदबू पैदा हो जाती है ;

बहुत बेचैनी और इधर-उधर घूमनेकी इच्छा और दिनके ११ बजनेके समय रोगी बहुत कमजोर हो जाता है इत्यादि कई इस धातव दवाके प्रकृतिगत लक्षण माने जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—दुःखित चित्त। मन बहुत थका मालूम होता है; किसी तरहका मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता (वेण्टि, चेलिडो, नक्स, सेङ्गियुई)। किसी विषयपर मन स्थिर नहीं कर सकता (इस्क्वियु, इथ्यू, बोवि, ऐग, लैक-कैन, ऐ-फास)। सरमें दर्द होनेपर नींद आ जाती है और क्रोध बढ़ता है (नींद आती है—क्रियो जेन्थक्स; क्रोध बढ़ता है—लैक-कैन, नक्स, लिसिन)। पढ़नेकी चेष्टा करनेपर रोगी सर-दर्दसे बेचैन और उन्मत्तकी तरह हो जाता है।

मस्तक।—बैठे-बैठे उठनेमें सरमें चक्कर आता है (कैल्के-फास, कैमो, कोना, डिजि, लाइ, फास, पल्स); सोनेपर जी मिचलाता है और सरमें चक्कर आता है; बैठे रहनेपर (कैमो, पल्स, रास) और कुछ झुकनेपर रातके ३ बजेसे ४ बजेके बीचमें, सर घुमानेपर (कोना, फास, टिलिया) और खड़े होनेपर (ब्राइ, नेट्र-म्यूर, सेलिन, टैबाक) बढ़ता है। रोगी सीधा तनकर नहीं बैठ सकता (कार्बो-ऐन, डायाडेमा, टेल्यू, शय्यापर उठकर बैठ नहीं सकता—चेलिडो, काक्यु)। औंघाई (लैके, नक्स-मस, ओपि, स्टैन), कै होनेके बाद जी मिचलाता है और माथेमें धीमा-धीमा दर्द होता है। पूर्वाह्नमें दोपहरके पहले बहुत तेज़ सर-दर्द, माथेके पीछे दाहिनी ओरसे दर्द आरम्भ होकर माथेके ऊपरसे बायीं आँखमें जा पहुँचता है (स्पाइ)। पाखाना होनेके समय जोर देनेपर माथेके भीतर असह्य दर्द मालूम होता है (लाइ, साइलि)। सन्ध्याके समय बाएँ पार्श्वका सर-दर्द (किनिन-सल्फ)। माथेके भीतर टपक होती है और गर्म हो जाता है, माथेमें ठण्डा पानी डालनेपर घटता है (कैल्के, फास, सैंगिविन, स्पाइजि, जिङ्कम)। मस्तिष्कमें मानो चोट लग गयी है, ऐसा दर्द मालूम होता है, ठण्डी हवा लगनेपर घटता है, सबेरे उठनेपर सरमें दर्द होता है, खानेपर घटता है, इसके एक घण्टे बाद फिर पैदा होकर दोपहरतक रहा करता है, ब्रह्मतालुमें खुजली होती है और बहुत दिनोंतक ऐसा ही हुआ करता है; सबेरे आराम हो जाता है।

आँख।—सभी चीजें या मनुष्य डरावने, उजले या केसरिया रङ्गके दिखाई देते हैं (डिजि)। इधर-उधर आँख घुमानेपर, उसमें सामनेकी ओरसे पीछेकी ओरतक तेज़ दर्द मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है मानो आँखें नींदसे बन्द हुई जाती हैं; नकली रोशनी लगनेपर बढ़ता है, हमेशा आँख बन्द किये रहनेकी इच्छा होती है, पर उससे दर्द बढ़ता है; बाईं आँखका बाहरी कोना रह-रहकर फड़क उठता है।

नाक।—रह-रहकर फुन्सियाँ हो जाती हैं और वे पकती हैं, ऐसा मालूम होता है मानो उनमें सुई गड़ायी जा रही है; यह फुन्सियाँ चारों ओर बहुत दूरतक लाल हो जाती हैं। मुँहमें सब जगह व्रण हो जाते हैं, उनमें इतनी जलन और दर्द होता है कि हाथ लगानेसे ही दर्द होता है। सरमें दर्द होनेपर चेहरा लाल और गर्म हो जाता है और रङ्ग उजला दिखाई देता है। मुँहका कोना फटा और जखम-भरा हो जाता है (ग्रैफ, काक्यु)।

गलेके भीतर।—अलि-जिह्वा बढ़ी और तालुमूलका पिछला भाग गाढ़ा पीले श्लेष्मासे ढका रहा करता है और श्लेष्मा बड़ी तकलीफ़से निकलता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और दोनों गलग्रन्थियाँ जखम-भरी हो जाती हैं। ये सभी जखम गाढ़े पीले श्लेष्मासे ढँके रहते हैं (कैलि-बाई, मर्क-पेरैन, फाइटो)। बाईं गलग्रन्थि (गलेकी गांठ) फूलती है, कोई पदार्थ निगलनेमें बहुत दर्द और तकलीफ़ होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो काँटा गड़ गया है (एपिस), निगलनेमें बहुत कष्ट होता है (हिप)। कण्ठका दर्द सन्ध्याके समय बढ़ता है और खानेके बाद (इग्ने) और ठण्डा पानी पीनेपर घटता है (इस्क्यू-हिप, ऐसिड-बेन, सिस्टस, लैके)।

पाकस्थली।—जी मिचलाता है और सरमें दर्द होता है। सवेरे खानेके समय, दिनके ११ बजनेके समय (फास, नेट्र-कार्ब, जिङ्कम, सल्फ़) और बिछावनसे उठनेके समय रोगीका ऊपरी पेट खाली और बहुत कमजोरी मालूम होती है और सोनेपर सरमें चक्कर आता है और यकृतमें दर्द होता है। ऊपरी पेटमें वमन होनेकी तरह हो जाता है, मानो कै हो जानेपर आराम मिलेगा (नक्स-वोम)। ऊपरी पेट और पाकस्थलीमें दर्द होता है। यकृतमें ऐसा दर्द होता है मानो सुई गड़ गयी है। अन्त्रशूल—नाभि-प्रदेशसे नीचेकी ओर नस-नाड़ियाँ सब मरोड़ खा रही हैं, ऐसी तकलीफ़ होती है; मालूम होता है, मानो पतला दस्त आयगा।

मल।—काईकी तरह, फीका या पीला और बदबूदार मल ; खाये हुए पदार्थोंके कण मिला मल ; पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द होता है ; पेशाबके समय अनजानमें (ऐलो) थोड़ा-थोड़ा मल निकला करता है या मलका पहला अंश छोटी गांठ-भरा और बाकी अंश ढीला ; इसके अलावा कभी-कभी मल कड़ा और खून-भरा भी होता है। उदरामय होकर माथेके दाहिनी ओर दर्द हो जाता है, पाखाना होने बाद जलन और मरोड़ हुआ करता है। पाखानेके समय वेग देनेपर माथेमें बहुत दर्द होता है (लाई, पल्स, साइलिसिया, सल्फ)। जोर देनेपर ऐसा मालूम होता है मानो पेटकी कोई नस-नाड़ियाँ टूट जायँगी (एपिस)।

पेशाब।—पेशाब करनेके समय मलद्वार वेष्टिनी पेशीकी शिथिलता, अनजानमें पाखाना हो जाना (ऐलो, कैन्थ, हायो, ऐसिड-मूर, वायु त्यागनेके समय—ऐलो-ओलियैन, ऐसिड-फास, पोडो)। निकले हुए पेशाबमें कुछ देर बाद बहुत बदबू हो जाती है (सविराम ज्वराधिकारमें बदबूदार पेशाब—युपेट-पर्फोल)।

पुं-जननेन्द्रिय।—कामेन्द्रियमें उत्तेजना और रमण-शक्तिमें गड़बड़ी, रमणके समय बहुत जल्दी वीर्यपात हो जाता है और उससे सुख नहीं मालूम होता। स्वप्न-दोष—एक रातमें दो बार और लगातार चार रातोंमें होता है ; रातमें अनजानमें वीर्यपात हो जाता है। लिङ्ग-मुण्डमें खुजली होती है। दाहिने अण्डकोषमें भयानक दर्द मालूम होता है (ओस्मियम, कोबाल्ट)। दोनों अण्डकोष बतौड़ेकी तरह हो जाते हैं और उन्हें छूनेपर बहुत दर्द होता है ; रेतोरज्जुके भीतर ऊपरकी ओर चढ़नेवाला तेज़ दर्द होता है, बाएँ रज्जुमें दर्द ज्यादा मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायु वगैरह वस्ति-गह्वरके सभी यन्त्र मानो टूटकर गिर जायँगे—रोगिनी चिड़चिड़ी और रोनी हो जाती है।

श्वास-यंत्र।—रोगी बिछावनसे उठकर देखता है कि उसका स्वरभङ्ग हो गया है और उसमें जखम हो गया है। सोया-सोया विशेषकर बाईं करवट सोनेपर बार-बार ठण्डी साँस लेनेकी इच्छा होती है (ऐल्यू, ब्राई, कैल्के, ग्लोन, मिडोरिन, मर्क, फास, आइरिस, नैट्र-सल्फ, डिजि)। चित सोनेपर नहीं

होता (इक्टोडिस)। वक्षोस्थिके पास बाईं ओर छातीके भीतर जलन होती है और ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षोस्थि पीछेकी ओर खिंच रही है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दन और दोनों कन्धे ऐसे मालूम होते हैं, मानो जकड़ गये हैं। पीठकी फलकके कुछ ऊपर दब जानेकी तरह दर्द होता है और स्थिर होकर बैठनेपर यह जगह अकड़ गयी-सी मालूम होती है; पहली बार हिलाना आरम्भ करनेपर दर्द अधिक मालूम होता है। बाईं फलकमें दर्द और समूचे बाएँ बाँहमें बहुत दर्द मालूम होता है; कभी-कभी यह दर्द इतना तेज़ हो जाता है कि मानो बायाँ बाँह एकदम सुन्न हो गया है, बहुत बेचैनी मालूम होनेकी वजहसे रोगी इधर-उधर टहला करता है—एक स्थानपर स्थिर नहीं रह सकता। दोनों पैर बहुत अस्थिर और कमजोर मालूम होते हैं। बाएँ पैरके अंगूठेकी सन्धिके भीतर मानो किसी भोथरे अस्त्रसे खोदा जा रहा है, ऐसा दर्द होता है; रोगी तकलीफ़ सहन नहीं कर सकता, तकलीफ़ घटनेकी आशासे रोगी हमेशा पैर हिलाया करता है। पैरमें बहुत पसीना होता है और वह बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है।

वृद्धि।—संध्याके समय ८ बजेसे ९ बजेतक दर्द होता है, दोनों पैरोंकी अंगुलियोंमें बेहद जलन और खुजली होती है; गर्म घरमें, शरीर हिलानेपर और रातके २ बजेसे ४ बजेतक और दिनके ३ बजेसे ६ बजेके भीतर।

उपशम।—भोजन करने या ठण्डा पानी आदि पीने अथवा निर्मल वायुके सेवनसे, ठण्डी हवा लगने और ठण्डे पानीसे रोगवाला अंश धोने या तर करनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—सेलिन, ओस्मियम, नैट्र-कार्ब, सल्फ़, नक्स-मस, ओसि, ऐसिड-बेन, इथ्यू, लैके।

तुलनीय।—बेलेडो, (सर-दर्द, ऋतु); सैङ्गियु (वात और सर-दर्द); जिङ्कम (मूर्च्छा-भाव); फेरम (सर-दर्द, कन्धेकी पेशीका सुन्न होना)।

शक्ति।—६ठा दशमिक (६x) से २०० शततमिक या इससे भी ऊँचा क्रम।

इनुला

(INULA)

दूसरा नाम।—इनुला—हेलिनियम ; स्केब वार्ट।

उपयोगिता और आभास।—श्लैष्मिक-झिल्लीपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। सूखी खाँसी, पुराना श्वासनली-प्रदाह, थक्का-थक्का बलगम निकलना, वक्षोस्थिके पीछेकी ओर सुरसुरी, गुटिका-दोष, वायुनली-मुख-प्रदाह प्रभृति श्वासयन्त्रके लक्षणमें यह विशेष लाभदायक है।

उदरमें कोई जीवित प्राणी घूमता-फिरता है ऐसा मालूम होता है (क्रोकस, थूजा) और उदरके भीतरवाली आँतें आदि जननेन्द्रिय या मलद्वारके पथसे बाहर निकल पड़ेंगी ऐसा मालूम होना (सिपिया) लक्षणवाले बहुतसे स्त्री-रोगोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—क्रोकस, इग्नेशिया, अरम-डिकाड्रियम, सिपिया, थूजा।

शक्ति।—१म और ६ठाँ।

आयोडियम

(IODIUM)

दूसरा नाम।—आयोडिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—रेक्टि-फायड स्पिरिटसे मदर टिञ्चर तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—भूखकी गड़बड़ी ; दुबलापन ; मस्तिष्क या ग्रन्थिका बढ़ना ; कर्कटका जखम ; कब्जियत ; क्षयकास ; सर्दी ; खाँसी ; घुंड़ी ; कमजोरी ; बहुमूत्र ; अतिसार ; उपझिल्ली-प्रदाह या डिफ्थीरिया ; आन्त्रिक ज्वर ; स्तनसे बहुत दूध गिरना ;

गलगण्ड ; अर्श ; सर-दर्द ; हृत्पिण्डका कड़ापन और बहुत तरहके रोग ; हिचकी ; मस्तिष्कोदककी बीमारी ; आँखकी अकड़न या प्रदाह ; कामला ; सन्धियोंकी बीमारी ; स्तनके दूधका विकार ; स्वरनली-प्रदाह ; श्वेत-प्रदर ; यकृतकी बीमारी ; लसिका ग्रन्थियोंकी बीमारी ; विषाद ; डिम्बाधारकी बहुत-सी बीमारियाँ ; पूतिनस्य (नकसीर, फूटना) ; मूलाधारकी सुखशायिका ग्रन्थिका बढ़ना ; आमवात या सन्धिवात ; लार बहना ; बन्ध्यात्व ; जरायुकी बीमारी ; स्वरमें गड़बड़ी ; वमन ; क्रिमि इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नयी प्रसूताकी अवस्थाकी तरह कमजोरी और सुस्ती मालम होना ; रोगी इतना क्षीण और दुबला हो जाता है, कि बात करनेपर भी उसे पसीना हो जाता है । ऋतुके समय बहुत बेचैनी मालूम होती है, खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय ; जरायुसे बहुत दिनोंतक स्थायी खूनका स्राव ; दोनों स्तन सूखे और पतले पड़ जाते हैं । प्रदर—स्राव त्वचाको क्षय करनेवाला, यहाँतक कि वस्त्र आदिमें लगनेपर दाग पड़ जाते हैं ; ऋतुके समय प्रदर बहुत बढ़ जाता है । जरायुका कर्कट रोग (Cancer Uteri) ; प्रत्येक बार पाखानेके समय जरायुसे खून निकलता है और उदरमें छेदनेकी तरह दर्द होता है और कमर तथा कमरके पीछेवाले भागमें दर्द होता है । बच्चोंका दुबलापन और सुखण्डी रोग (Marasmus) ; चेहरा सफ़ेद हो जाता है ; बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें ढीला पाखाना होता है ; राक्षसी भूख ; बहुत ज्यादा खाते रहनेपर भी बच्चा दिनोंदिन दुबला होता जाता है । मालूम होता है, कि बच्चा खानेसे अच्छा रहता है, पर वह किसी तरह भी पचा नहीं सकता ; सवेरेसे शामतक उसे खाली डकार आया करती है, मानो जो कुछ खाता है सब भाफ़में परिणत हो जाता है ; बच्चेको क्षण-क्षणभरपर भूख लगती है और प्रत्येक बार कुछ खानेको न मिलनेपर बहुत चिढ़ उठता है और असन्तोष प्रकट करता है । पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न और मस्त रहता है । डा० ऐलेन कहते हैं, कि शरीरकी ग्रन्थियाँ सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं ; काले केशवाले व्यक्तियोंका गलगण्ड (घेघा—Goitre) । प्रत्येक धमनीमें टपक मालूम होती है ; स्नायुमण्डलका संवाद (Sensibility) या अनुभव-शक्ति बहुत तेज़ हो जाया करती है । थोड़ी भी शारीरिक परिश्रम करनेपर कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है ; ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डको किसीने हाथसे दबा रखा है, मानो लोहेके बने

हाथसे कोई कसकर पकड़े हुए हैं। वक्षोस्थिके पीछे और फेफड़ेके निचले भागमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है; फेफड़ेसे वायुनलीके भीतर होकर नाककी जड़तक सुरसुरी होती है। घुँड़ी--काली खाँसी (Croup) रोगमें बच्चेकी छाती और स्वरनालीमें दर्द मालूम होता है, गलेमें साँय-साँय शब्द हुआ करता है। कभी-कभी बच्चा कण्ठनालीपर हाथ लगाता है; मुखमण्डल सफेद हो जाता है; बहुत मोटे-ताजे बच्चेका चेहरा भी बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। कण्ठस्वर गम्भीर, कर्कश और भग्न। नकली झिल्ली पैदा करनेवाली घुँड़ी खाँसी, तर हवामें बढ़ जाती है। रोगी बहुत उत्तेजना-प्रवण और बेचैन रहता है, एक जगहपर स्थिर हो, बैठ नहीं सकता। ऐसी आशङ्का होती है, कि बीमारी बहुत बढ़ जायगी। मानसिक उद्वेगकी अधिकताके कारण किसीसे मिलना नहीं चाहता, यहाँतक कि चिकित्सकसे भी नहीं मिलता। छिपा रहता है। ऊपर लिखे कई लक्षण आयोडियमके प्रयोगके सम्बन्धमें अव्यर्थ सिद्धि-प्रद हैं।

लक्षणावली

मन।—सदा उदास और रोने ऐसा चेहरा बनाये रहना, दिन-रात बेचैन, एक क्षण भी एक स्थानपर स्थिर भावसे नहीं रह सकता; चलनेके समय दौड़ा करता है, उसे ऐसा विश्वास रहता है कि धीरे-धीरे चलनेसे गिर जायगा। काल्पनिक या प्रकृत असद्व्यवहारके विषयमें सोचनेपर बहुत तेजीसे कलेजा धड़कने लगता है। एकाएक उन्मत्तता पैदा हो जाती है और रोगिनी हत्या करना चाहती है। बहुत ही भूल जानेवाला, दूकानमें चीज़ खरीदता है, पर वहीं छोड़कर चला आता है (ऐग्नस, ऐनाक, कास्टि, लैक-कैन, नैट्र-कार्ब)। हमेशा सोचता है कि उसने क्या भूल की है। अपने मानसिक उद्वेगकी अधिकता, भूल जानेके लिये हमेशा किसी-न-किसी काममें लगा रहता है। उसे हमेशा मालूम होता है कि उसकी बुद्धि गड़बड़ा गयी है (सिपा, कैनाब-इन, लेकी, हाइड्रोफ, कैलि-ब्रोम, लैक-कैन, लिलि-टाइग्रि, मिडोराइन, नक्स, सिफिलिन), कोई और विशेषकर चिकित्सक, जब रोगीके पास जाता है तो वह बहुत भयभीत होकर छिप जाता है (वेराई, वेरेट-विर)। बुद्धि-वृत्तिके परिचालनसे बहुत नाराज़ रहता है (एसिड-कार्ब)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आता है, माथा और समूचे शरीरमें टपक होती है, कलेजा धड़कता है और बेहोश हो जानेकी तरह हो जाता है;

आसन या शय्यासे उठते ही या सामान्य परिश्रमके बाद बैठने या सोनेपर बढ़ जाता है। माथेके बाईं ओर और ब्रह्मतालुमें दर्द और दोनों बाँह कभी-कभी सुन्न मालूम होते हैं। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसका माथा एक-एक फीतेसे कसकर बांधा हुआ है (सिपा, काक्यु, सिक्लेम, जेल्स, हिप, ऐसिड-नाई, सल्फ, टेरिब ; गर्म हवामें बहुत देरतक गाड़ीमें घूमनेपर (काक्यु, कैलि-कार्ब, नक्स-मस, सिपि ; गाड़ीपर चढ़नेसे घटता—ऐसिड-नाई) और तेजीसे चलनेपर बढ़ जाता है। नासामूलके ऊपरवाले एक छोटेसे अंशमें ऐसा दर्द होता है, मानो दबा रखा है। जरा हिलने-डोलनेसे ही माथेमें टपक होने लगती है और सरमें चक्कर आया करता है (एपिस, ब्राई काक्यु, ग्लोन, लाई, नैट्र-म्यूर)।

आँख।—तिमिर-दृष्टि, चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है या मानो पर्देके भीतरसे चारों ओर देख रहा है (कास्टि, क्रोक, हायो, लौरो, लिथि, नैट्र-म्यूर, फास, रास, स्ट्रैमोन, सल्फ)। ऐसा दिखाई देता है मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ा है (ऐमिल, बेराई, कैल्के, फेर, आयोड, इग्ने, लाइकोपस-वार्जि, फास, नैट्र-म्यूर, स्पञ्जि, थाइराइड); आँखमें करकराहट होती है (ऐल्यू, फाइजस, सिपा, कैलि-कार्ब, साइलि, सल्फ)। दाहिनी आँखमें बराबर ऐसा दर्द हुआ करता है मानो काटता है—यह दर्द भीतरी कोनेसे हनु सन्धितक फैल जाता है, आँखका सफेद अंश मैला, पीला (चेलिडो, मर्क, युपेट-पर्फो, मैग-म्यूर), आँखकी पलक इतनी फूल जाती है मानो शोथ हो गया हो (एपिस, मर्क)। ऐसा दिखाई देता है, मानो आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं ; सिलाईका काम करनेके समय बढ़ता है। बराबर आँख घुमाता है और पुतली बड़ी हो जाती है।

कान।—शब्द सहन न होना। सर्दीसे बहरापन (आर्स, कैल्के, कार्बो-वेज, लीड, मर्क, पल्स)। कानके पीछेवाली नली रुक जानेके कारण कर्णनाद (कैलि-म्यूर, पल्स)।

नाक।—सन्ध्याके समय नाकसे पानी गिरता है और बार-बार छींक आती है। नाकसे पानी गिरता है। प्रचण्ड सर्दी, आँखसे पानी गिरता है और नासा-मूलमें दर्द होता है, श्लेष्मा गर्म और उससे नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है ; बोखार रहता है। नासारंध्र बन्द हो जाता है, नाक छिड़कनेपर

बहुत-सा पतला श्लेष्मा निकल पड़ता है। हवा लगनेपर सूखी सर्दी तर हो जाती है।

मुख-विवर।—मुँहमें सफेद जखम या उत्सङ्ग (Aphthæ); मसूढ़ेसे सहजमें ही खून गिरना। बहुत बदबूदार लार बढ़ना, जीभपर मोटा लेप चढ़ा, मसूढ़ा फूल जाता है और दर्द होता है, खून गिरता है और दोनों गाल फूल जाते हैं; मसूढ़ेमें हाथ लगानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। मुँहसे बहुत बदबूदार लार बहती है, पाराका व्यवहार करनेपर और भी बढ़ता है।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वा फूलती और बड़ी हो जाती है। गलेके जखमके साथ कण्ठमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दबा रखा है; कुछ निगलनेके समय यह दर्द नहीं रहता, अन्ननाली पतली हो जाती है और निगलनेमें दर्द और तकलीफ़ होती है। गलेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार सञ्चय होना, कण्ठकी द्विदल ग्रन्थि और निचले हनुकी नीचेवाली गाँठें सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं (स्पञ्जि, थाइरायडिन, कैल्के)। अन्ननालीके प्रदाहमें—उनमें बहुत जलन होती है और त्वचा छिल जानेकी तरह दर्द मालूम होता है।

पाकस्थली।—राक्षसकी तरह भूख; खूब खाता है अथच दिनोंदिन दुबला होता जाता है (ऐब्रोट, नेट्रम-मूर, सेनिक, टियुबर्क्युलिन)। भूख लगते ही कुछ भोजन न करनेसे बहुत बीमार-जैसा मालूम होता है—क्षण-क्षणभरपर खाता है (मानो खानेके काममें लगे रहनेपर वह अपना मानसिक उद्वेग भूल जाता है—डा० केण्ट); खानेके समय और खानेके बाद रोगी अच्छा रहता है। पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न रहता है। दिन-रात लगातार खाली डकार आया करती है मानो जो कुछ खाता है, वही भाफ़ बन जाता है (आर्जेण्ट-नाई, नक्स-मस; जो खाता है, वही अम्ल बन जाता है—कैल्के-कार्ब); कभी जोरसे भूख लगती है और कभी भूख बिलकुल ही नहीं लगती। गुरुपाक द्रव्य खानेपर छातीमें जलन होती है (पल्स)। खट्टी डकार आती है और गलेमें जलन होती है। खूब जोरसे वमन होता है, खा लेनेपर फिर वमन हुआ करता है। प्रचण्ड शूलका दर्द होकर पित्त और दूध वमन होता है। पेटके भीतर एकाएक गड़बड़ी पैदा हो जाती है, जो मिचलाता है और पेटमें दर्द हुआ करता है। ऊपरी पेटमें इतना दर्द रहता है, कि हाथ नहीं लगाने देता।

आसन या शय्यासे उठते ही या सामान्य परिश्रमके बाद बैठने या सोनेपर बढ़ जाता है। माथेके बाईं ओर और ब्रह्मतालुमें दर्द और दोनों बाँह कभी-कभी सुन्न मालूम होते हैं। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि उसका माथा एक-एक फीतेसे कसकर बांधा हुआ है (सिपा, काक्यु, सिक्लेम, जेल्स, हिप, ऐसिड-नाई, सल्फ, टेरिब ; गर्म हवामें बहुत देरतक गाड़ीमें घूमनेपर (काक्यु, कैलि-कार्ब, नक्स-मस, सिपि ; गाड़ीपर चढ़नेसे घटता—ऐसिड-नाई) और तेजीसे चलनेपर बढ़ जाता है। नासामूलके ऊपरवाले एक छोटेसे अंशमें ऐसा दर्द होता है, मानो दबा रखा है। जरा हिलने-डोलनेसे ही माथेमें टपक होने लगती है और सरमें चक्कर आया करता है (एपिस, ब्राई काक्यु, ग्लोन, लाई, नैट्र-मूर)।

आँख।—तिमिर-दृष्टि, चारों ओर अंधेरा दिखाई देता है या मानो पर्देके भीतरसे चारों ओर देख रहा है (कास्टि, क्रोक, हायो, लोरो, लिथि, नैट्र-मूर, फास, रास, स्ट्रेमोन, सल्फ)। ऐसा दिखाई देता है मानो आँखका गोला बाहर निकल पड़ा है (ऐमिल, बेराई, कैल्के, फिर, आयोड, इग्ने, लाइकोपस-वार्जि, फास, नैट्र-मूर, स्पञ्जि, थाइराइड); आँखमें करकराहट होती है (ऐल्यू, फाइजस, सिपा, कैलि-कार्ब, साइलि, सल्फ)। दाहिनी आँखमें बराबर ऐसा दर्द हुआ करता है मानो काटता है—यह दर्द भीतरी कोनेसे हनु सन्धितक फैल जाता है, आँखका सफेद अंश मैला, पीला (चेलिडो, मर्क, युपेट-पर्फो, मैग-मूर), आँखकी पलक इतनी फूल जाती है मानो शोथ हो गया हो (एपिस, मर्क)। ऐसा दिखाई देता है, मानो आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ रही हैं; सिलाईका काम करनेके समय बढ़ता है। बराबर आँख घुमाता है और पुतली बड़ी हो जाती है।

कान।—शब्द सहन न होना। सर्दीसे बहरापन (आर्स, कैल्के, कार्बो-वेज, लोड, मर्क, पल्स)। कानके पीछेवाली नली रुक जानेके कारण कर्णनाद (कैलि-मूर, पल्स)।

नाक।—सन्ध्याके समय नाकसे पानी गिरता है और बार-बार छींक आती है। नाकसे पानी गिरता है। प्रचण्ड सर्दी, आँखसे पानी गिरता है और नासा-मूलमें दर्द होता है, श्लेष्मा गर्म और उससे नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है; बोखार रहता है। नासारंध्र बन्द हो जाता है, नाक छिड़कनेपर

बहुत-सा पतला श्लेष्मा निकल पड़ता है। हवा लगनेपर सूखी सर्दी तर हो जाती है।

मुख-विवर।—मुँहमें सफ़ेद जख़म या उत्सङ्ग (Aphthæ); मसूढ़ेसे सहजमें ही खून गिरना। बहुत बदबूदार लार बढ़ना, जीभपर मोटा लेप चढ़ा, मसूढ़ा फूल जाता है और दर्द होता है, खून गिरता है और दोनों गाल फूल जाते हैं; मसूढ़ेमें हाथ लगानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। मुँहसे बहुत बदबूदार लार बहती है, पाराका व्यवहार करनेपर और भी बढ़ता है।

गलेके भीतर।—अलिजिह्वा फूलती और बड़ी हो जाती है। गलेके जख़मके साथ कण्ठमें ऐसा दर्द मालूम होता है, मानो दबा रखा है; कुछ निगलनेके समय यह दर्द नहीं रहता, अन्ननाली पतली हो जाती है और निगलनेमें दर्द और तकलीफ़ होती है। गलेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार सञ्चय होना, कण्ठकी द्विदल ग्रन्थि और निचले हनुकी नीचेवाली गाँठें सब बड़ी और कड़ी हो जाती हैं (स्पञ्जि, थाइरायडिन, कैल्के)। अन्ननालीके प्रदाहमें—उनमें बहुत जलन होती है और त्वचा छिल जानेकी तरह दर्द मालूम होता है।

पाकस्थली।—राक्षसकी तरह भूख; खूब खाता है अथच दिनोंदिन दुबला होता जाता है (एब्रोट, नेट्रम-म्यूर, सैनिक, टियुबर्क्युलिन)। भूख लगते ही कुछ भोजन न करनेसे बहुत बीमार-जैसा मालूम होता है—क्षण-क्षणभरपर खाता है (मानो खानेके काममें लगे रहनेपर वह अपना मानसिक उद्वेग भूल जाता है—डा० केण्ट); खानेके समय और खानेके बाद रोगी अच्छा रहता है। पेट भरा रहनेपर बहुत प्रसन्न रहता है। दिन-रात लगातार खाली डकार आया करती है मानो जो कुछ खाता है, वही भाफ़ बन जाता है (आर्जेण्ट-नाइ, नक्स-मस; जो खाता है, वही अम्ल बन जाता है—कैल्के-कार्ब); कभी जोरसे भूख लगती है और कभी भूख बिलकुल ही नहीं लगती। गुरुपाक द्रव्य खानेपर छातीमें जलन होती है (पल्स)। खट्टी डकार आती है और गलेमें जलन होती है। खूब जोरसे वमन होता है, खा लेनेपर फिर वमन हुआ करता है। प्रचण्ड शूलका दर्द होकर पित्त और दूध वमन होता है। पेटके भीतर एकाएक गड़बड़ी पैदा हो जाती है, जो मिचलाता है और पेटमें दर्द हुआ करता है। ऊपरी पेटमें इतना दर्द रहता है, कि हाथ नहीं लगाने देता।

ऊपरी पेटमें सुई गड़ने-जैसा दर्द होता है, पेट फूल जाता है और बाध्य होकर कपड़े ढीले करने पड़ते हैं (कार्बो-वे)। दूध सहन नहीं होता। बहुत प्यास, सविराम ज्वरके बाद प्लीहा फूल उठती है (आर्निका, सियानो, सिङ्को, आर्स, लैकेसिस)।

अन्त्राशय।—उदरके बायीं ओर वायु अड़ जाता है (उदरके दाहिनी ओर—नेट्रम-सल्फ)। मध्यान्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थियाँ सब बड़ी हो जाती हैं और उनमें प्रदाह होता है। उदर इतना फूलता है कि रोगी यदि चित होकर सोता है तो इस अवस्थामें उसकी साँस बन्द होना चाहती है (कार्बो-वेज, रैफेनस, नक्स-मस)। यकृतके ऊपर इतना दर्द होता है कि हाथ नहीं लगाया जाता (डिजि, चियोनैन, इयुपेट, टैरैक्स); यकृत फूलता और बड़ा हो जाता है; नैबा या पाण्डु रोग (कैमो, चेलिडोन, मर्क)। उदरकी वृहद्धमनीमें टपक।

मल।—मलका पतलापन, मल पानीकी तरह फेन-फेन, सफेद आभा मिला; पाखाना केवल सवेरे हुआ करता है; कभी-कभी बहुत-सा धस-धसा मांड़की तरह मल निकल जाया करता है; आमाशय रोगाधिकारमें केवल आँव निकलती है। कभी मल कड़ा और कभी मल पतला होता है। ऐसा ही पर्यायक्रमसे हुआ करता है (ऐब्रोट); **स्वाभाविक सरल पाखाना कभी नहीं होता,** वृथा वेगके साथ मलका कड़ापन; ठण्डा दूध पीनेपर अच्छा हो जाता है। मल कड़ा, गांठ-गांठ, काला; अर्शका मसा बाहर निकल पड़ता है और बहुत जलन होती है; सेंकनेसे जलन बढ़ जाती है।

पेशाब।—वृद्धोंको अनजानमें पेशाब हो जाता है (बैराइ, कास्टि) और मूत्राधारकी मुखशायिका ग्रन्थि बड़ी हो जाती है, विशेषकर रातके समय। पेशाब घोर लाल, गदला या हरा-पीला या दूधकी तरह सफेद होता है या कषाय होता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—शुक्ररज्जुके भीतर मानो कोई जोरसे दबा रहा है या मरोड़ता है—इस तरहका दर्द; स्त्रीसे प्यार या आलिङ्गन आदि करनेपर अण्डकोष और मूत्राधारकी मुखशायिका ग्रन्थि बढ़ जाती है और कड़ी हो जाती है। रमण-शक्ति लोप हो जाती है और अण्डकोष छोटे हो जाते हैं (अरम, कोन, कार्बो-ऐन, कैलि-आयोड) और जननेन्द्रिय-प्रदेशमें बदबूदार

पसीना होता है। पाखाना होने बाद मूत्रनालीसे थोड़ा दूधकी तरह पदार्थ निकल जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित, समयपर कभी बहुत पहले या कभी बहुत दिन बाद हुआ करता है; उम्र न होनेपर भी ऋतु हो जाना, स्राव बड़े वेगसे और परिमाणसे बहुत ज्यादा होता है। जरायु-ग्रीवामें कर्कट होनेका उपक्रम (Cancerous degeneration)—उदरमें ऐसा दर्द होता है मानो कोई काटे डालता है और प्रत्येक बार पाखाना होनेके समय जरायुसे रक्त-स्राव होता है। जरायुसे रक्त-स्रावके साथ रोगिनीके स्तनमें भयानक दर्द होता है या वह शिथिल और शुष्क हो जाता है (कोना, कैलि-आयोड, क्रियो, ऐसिड-नाई, नक्स-मस)। दाहिने डिम्बाधारसे जरायुतक ऐसा दर्द मानो दबा रखा है। प्रदर—स्राव शरीरमें लगनेपर जखम हो जाता है; उरु-देशकी त्वचा और वस्त्र क्षय हो जाते हैं, ऋतुके समय प्रदर बहुत बढ़ जाता है। पुराना डिम्बाधार-प्रदाह (Ovaritis) और पीले रंगका गाढ़ा और जलन करनेवाला प्रदरका स्राव। ऋतुके समय सीढ़ीपर चलनेमें बहुत थकावट मालूम होती है और श्वास कष्ट होता है (ऐल्यु, कार्बो-ऐन, काक्यु)।

श्वास-यन्त्र।—स्वरभङ्ग, दिन-रात बना रहता है, थोड़ा-थोड़ा गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है और रोगी लगातार गला साफ़ करनेकी चेष्टा किया करता है। स्वरतन्तु फूलता और काँपता है—बच्चेके गलेमें घड़-घड़ साँय-साँय शब्द होता है, उससे समूचा घर परिपूर्ण रहता है (बेल, ब्रोम, कैलि-ब्रोम, लैके, स्पञ्जि)। झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी, साँय-साँय और खस-खस शब्द करनेवाला श्वास-प्रश्वास; घन-घन शब्दवाली खाँसी, विशेषकर काली आँख और काले केशवाले बच्चोंकी; खाँसनेके समय बच्चा अपनी कण्ठनालीमें हाथ लगता है (सिपा, ऐकोन); गरम जलीय हवामें बढ़ना; प्रायः गाढ़ा श्लेष्मा निकलता है (हिप, मार्क, कैलि-बाई)। सीढ़ी चढ़नेसे श्वासकष्ट, हृत्स्पन्दन और बहुत थकावट मालूम होती है। वक्षोस्थिके पीछेवाले फेफड़ेके भीतर सुरसुरी होकर खाँसी आती है; वायुनलीके भीतरसे सुरसुरी होकर नासारन्ध्रतक फैल जानेके कारण (कक्कस, कैक, कोना, फास) छींक आया करती है। कफ़ नमकीन या कुछ खट्टा मालूम होता है, रङ्ग भूरा या सफ़ेद; फेफड़ेका यकृतकी तरह हो जाना; दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशपर ही रोगका हमला अधिक होता है (चेलिडो)। बहुत तेज़ बोखार, बेचैनी और उदास-

भाव, ऐसा मालूम होता है, मानो कलेजा जकड़ गया है। वक्षमें बहुत ज्यादा सुरसुरीकी वजहसे क्रुप खाँसीकी तरह खाँसी आती है। रोगीका चित्त उद्वेग-पूर्ण और देह दुबली हो जाया करती है।

हृत्पिण्ड।—कलेजा धड़कना, शरीरसे किसी तरहका परिश्रम करते ही कलेजा धड़कने लगता है (मानसिक परिश्रम-मात्रसे—कैल्के-आर्स)। हृत्पिण्ड मानो कोई जोरसे दबा रहा है या लोहेके हाथसे कसकर पकड़े हुआ है, ऐसा दर्द अनुभव होता है (कैक्ट, लिलि-टाइग्र, सल्फ)। हृदयके अगले भागमें बहुत अस्वाच्छन्द्य मालूम होता है, इसी वजहसे रोगी क्षणभर भी एक भावसे रह नहीं सकता, कभी बैठता है, कभी सोता है और कभी-कभी खड़ा होता है या टहलने लगता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गलगण्ड (कैल्के, कार्बो-ऐन, फेर-आयोड, लेपिस, स्पञ्जिया)—कड़े, काले केशवाले व्यक्तियोंकी बीमारी (ब्रोमा ; भूरे केशवाले व्यक्तिको—ब्रोम); रोगीकी सभी तकलीफें खा लेनेपर अच्छी हो जाती हैं। गर्दनकी गाँठें सब फूलती और कड़ी हो जाती हैं। मेरुदण्डकी बीमारीकी वजहसे गाय बैलकी तरह पैरके अगले भागपर भार देकर चलता है (लेके, साइलि)। कमरका पिछला भाग और उसके नीचे दर्द, सवेरे शय्यासे उठनेके समय दोनों बाँह अवश मालूम होते हैं। तलहत्थी और तलवा बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है, जगह बदलनेवाला सन्धिका दर्द। सन्धि-प्रदेशमें पुराने वातकी वजहसे दर्द, रातमें बहुत बढ़ जाता है। रोगवाली सन्धियाँ फूलती नहीं हैं, हाथ-पैरकी बंधनी या सब कण्डराओंके एकाएक सिकुड़ने और फैलनेकी वजहसे ये सब अङ्ग रह-रहकर फड़क उठते हैं (ऐसेर, हायो, इग्ने, साइक्यु, रास, जिङ्क)। हाथ-पैरका फड़कना या काँपना। रोगी चलते-चलते डगमगाया करता है (ऐगार, कास्टि)। समूची देहमें टपक होती है—जरा भी परिश्रम करनेपर आरम्भ हो जाता है, देह विशेषकर निचला अंश शीर्ण और कंकाल-सार हो जाता है (ऐब्रोट, सैनिक, टियुबर्कुलिन, नेट्र-मूर, सार्सा)। समूची देह फूलती है, मानो शोथ हो गया है (फेरम, आर्स)। घुटने गर्म और लाल रङ्गके होकर फूल उठते हैं, भयानक जलन होती है और ऐसा दर्द होता है, मानो सुई गड़ रही है—हाथ लगाने या दबानेपर बढ़ता है। पैरमें पसीना होता है और उस पसीनेसे जखम हो जाता है (बेराइ, ग्रैफ, सैनिक)। दर्द-भरे गट्टे। रातके समय निचले पैरमें ऐंठन होती है,

बहुत कमजोरी मालूम होती है, यहाँतक कि बात करनेपर भी पसीना निकलने लगता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—रातभर दोनों पैर ठण्डे रहते हैं। रोगी शीतसे काँप उठता है, गर्म घरमें भी शीत नहीं घटता। कभी-कभी समूची देहसे उत्ताप पैदा हो जाता है। फेफड़ेका प्रदाह, घुंड़ी वगैरह रोगके समय बोखारका प्रकोप बहुत बढ़ जाता है; बेचैनी, प्यासका अधिक रहना, टपकवाला सर-दर्द, गालका कुछ भाग लाल हो उठता है (सैङ्गियु), मन उदास। रातमें पसीना होता है; रातके अन्तिम भागमें सुस्त करनेवाला खट्टी गन्ध-लिये पसीना होता है और भयानक प्यास पैदा हो जाती है।

वृद्धि।—शरीर हिलाने और शारीरिक परिश्रमसे, सोनेपर, उत्तापसे, गर्म जलीय वायुमें; छूने और दबानेपर; सीढ़ी चढ़नेपर।

उपशम।—सीधे होकर बैठनेपर; खानेके समय और भोजन करनेपर तथा निर्मल ठण्डी हवामें।

सम्बन्ध।—सदृश।—झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी वगैरहमें श्लेष्माकी वजहसे रोगाधिकारमें ऐसिड-ऐसेट, क्लोरम, ब्रोम, कोना, कैलि-बाई, स्पञ्जि, हिप, मर्क, ऐको इत्यादि इसके साथ तुलनीय हैं। ब्रोमियम (आयोडियम, काले रंगका चेहरा, केश घने काले), नेट्रम-मूर (राक्षसी भूख, पर दुबला होता जाता है); कैलि-आयोड, (वाचाल); बेराई (आन्त्रिक क्षय रोगमें); ऐल्यूमिना (आतङ्क); ऐपिस (शोथ); स्पाइजि (हृत्पिण्ड); हाइड्रैस्ट (जरायु); हायोसा (स्वरभङ्ग) इत्यादि। स्वनामधन्य डाक्टर लिपिके मतसे गलगण्ड रोगाधिकारमें पूर्णिमाके बाद या कृष्ण पक्षमें आयोडमके प्रयोगसे बहुत फायदा हुआ करता है।

अनुपूरक।—लाइकोपोडियम।

दोषघ्न।—ऐण्टि-टार्ट, एपिस, आर्स, बेलेडो, चायना, काफिया, हिपर, ओपियम, कैम्फर इत्यादि।

सदृश।—बेराइटा-कार्ब, नेट्रम-मूर, सैनिक्यु, ऐब्रोट, सार्सा, कास्टि, फास, साइलि, स्टैफि, हाइड्रैस्ट, एपिस।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रमतक।

क्रियाका स्थायित्व।—३० से ४० दिन।

आयोडोफार्मम

(IODOFORMUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं :— स्तनमें दर्द ; उपदंश ; खाँसी ; प्रलाप ; दो देखना ; आन्त्रिक ज्वर ; आँखकी बीमारी ; पक्षाघात ; सर-दर्द ; मस्तिष्कोदक रोग ; उन्माद ; मस्तिष्कावरण प्रदाह ; गुटिका रोग इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—गुटिका दोषयुक्त मस्तिष्कावरण-प्रदाह (Tubercular Meningitis), इसके सबसे प्रधान क्रियाफल हैं । कारण स्वस्थ शरीरमें इसका प्रयोग करनेपर उक्त रोगके प्रायः सभी लक्षण प्रकट हुआ करते हैं और इन लक्षणोंके आविर्भावके पारम्पर्यके अनुसार ही यहाँ लिखे गये हैं । जैसे—रातमें बहुत अधिक मानसिक उद्वेग और शारीरिक अस्थिरताका मालूम होना, बहुत अधिक निद्रालुता, इसके बाद क्रमसे पित्त मिला सहज वमन, मलमें कड़ापन और मस्तकमें गड़बड़ी मालूम होना ; रातमें बहुत बेचैनी, सोया-सोया बार-बार लम्बी साँस छोड़ता है और निद्रितावस्थामें रह-रहकर चिल्ला उठता है ; दिनमें औंघाई, आँखकी दोनों पुतलियोंका असम सङ्कोचन और धीरे-धीरे आलोक विज्ञानका आर्विभाव ; सभी विषयोंमें उदासीन, अपनी शय्याके पार्श्वके मनुष्योंको भी पहचान नहीं सकता ; इसके बाद घोर अस्थिरताके बदले शान्त विकार पैदा हो जाता है, नाड़ी सूक्ष्म और उसकी गति तेज़ । मुखमण्डलका आकार विकृत और मुँहकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं ; माथा एक ओर भूल पड़ता है और हाथ तथा एक पैर अनजानमें हिला करता है । अधिककर दोनों पैर क्षीण मालूम होते हैं ; दो देखता है ; उन्मादका लक्षण, बल और रुचिका गायब हो जाना ; हमेशा घोर निद्रामें पड़े रहनेका भाव ; बुद्धि गायब हो जाना और बोध-शक्तिकी कमी और शारीरिक दुबलापन वगैरह भी इस दवाके कई प्रधान लक्षण हैं ।

लक्षणावली

मन ।—मानसिक उत्तेजना, दुःखित भाव, भूख देखता है और भूल ही सुनता है ; शय्यासे उठकर कई क़दम जाते-न-जाते गिर जाता है ; बुदबुदाकर

असम्बद्ध बका करता है; कोई चीज़ हाथसे पकड़ नहीं सकता; क्योंकि सभी चीजें उसे दो मालूम होती हैं। बहुत बकता है। मानसिक उद्वेग और मृत्यु-भय, शय्याके बगलवाले किसी मनुष्यको जोरसे पकड़कर अपनी आसन्न मृत्युकी बात कहता है और बहुत खेद प्रकट किया करता है। गहरी नींद—धीरे-धीरे मोहाच्छन्न अवस्थामें जा पड़ता है। एकाएक उन्मादके लक्षण प्रकट करता है; कोई बात पूछनेपर बहुत अनिच्छासे जवाब देता है। अपनी शय्याके पासवाले मनुष्यको भी पहचान नहीं सकता। रोगी अपने मनमें समझता है, कि वह एक बहुत ही लम्बा-चौड़ा आदमी है और धीरे-धीरे वह और भी बढ़ता ही जाता है। रातमें बहुत बेचैन हो जाता है। याद दिलाये बिना दो दिन पहलेकी घटना याद नहीं कर सकता। सभी विषयोंमें बहुत उदासी दिखाता है।

मस्तक।—सारी रात सरमें दर्द हुआ करता है; शय्यापर उठ बैठनेपर माथेमें चक्कर आया करता है (ब्राई, कूप्रम)। माथेके भीतर मानो सुई गड़नेकी तरह दर्द (हायो, लोरो, मर्क, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, सल्फ़)। नींद खुलनेके बाद सरमें दर्द हुआ करता है (मिनियेन, जेल्स, ग्लोन)। माथेमें बहुत भार मालूम होता है, यहाँतक कि तकियेसे माथा उठानेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (पल्स, तकियेपर सर नहीं रख सकता—ग्लोन)। कपालमें दर्द होता है; सीढ़ीसे उतरनेके समय बढ़ता है और कानके भीतर तेज़ दर्द मालूम होता है, कपालका स्नायुशूल; सर झुकानेसे बढ़ जाता है। माथेमें तेज़ दर्द रहनेकी वजहसे रोगी रह-रहकर चिल्ला उठता है (ऐपिस, बेल, ग्लोन, स्ट्रैमो)।

आँख।—आँख लाल और उसमें दर्द; आँख करकराती है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो कांटा गड़ रहा है। सभी चीजें चौकोनियाँ तस्वीरदार और लाल रङ्गकी दिखाई देती हैं (बेल, कोना, हायो, नक्स-मस); अपनी जगहसे उठनेपर घटता है। ऐसा मालूम होता है मानो पर्देके भीतरसे सभी चीजें या मनुष्योंको देखता है (कास्टि, आयोडम, लोरो, स्ट्रैमो, सल्फ़); दो देखना (जेल्स, नेट्र-मूर, ऐसिड-मूर, ऐसिड-नाई)। आँखकी पुतलीका बराबर संकोचन न होना; रोशनीका ज्ञान धीरे-धीरे प्रकाश होता है। खड़े होकर आँख बन्द करनेपर ढलमलाया करता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई) और सीधा चल नहीं सकता।

आयोडोफार्मम

(IODOFORMUM)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले विचूर्ण इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:— स्तनमें दर्द; उपदंश; खाँसी; प्रलाप; दो देखना; आन्त्रिक ज्वर; आँखकी बीमारी; पक्षाघात; सर-दर्द; मस्तिष्कोदक रोग; उन्माद; मस्तिष्कावरण प्रदाह; गुटिका रोग इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—गुटिका दोषयुक्त मस्तिष्कावरण-प्रदाह (Tubercular Meningitis), इसके सबसे प्रधान क्रियाफल हैं। कारण स्वस्थ शरीरमें इसका प्रयोग करनेपर उक्त रोगके प्रायः सभी लक्षण प्रकट हुआ करते हैं और इन लक्षणोंके आविर्भावके पारम्पर्यके अनुसार ही यहाँ लिखे गये हैं। जैसे—रातमें बहुत अधिक मानसिक उद्वेग और शारीरिक अस्थिरताका मालूम होना, बहुत अधिक निद्रालुता, इसके बाद क्रमसे पित्त मिला सहज वमन, मलमें कड़ापन और मस्तकमें गड़बड़ी मालूम होना; रातमें बहुत बेचैनी, सोया-सोया बार-बार लम्बी साँस छोड़ता है और निद्रितावस्थामें रह-रहकर चिल्ला उठता है; दिनमें औंघाई, आँखकी दोनों पुतलियोंका असम सङ्कोचन और धीरे-धीरे आलोक विज्ञानका आविर्भाव; सभी विषयोंमें उदासीन, अपनी शय्याके पार्श्वके मनुष्योंको भी पहचान नहीं सकता; इसके बाद घोर अस्थिरताके बदले शान्त विकार पैदा हो जाता है, नाड़ी सूक्ष्म और उसकी गति तेज़। मुखमण्डलका आकार विकृत और मुँहकी पेशियाँ सब फड़का करती हैं; माथा एक ओर भूल पड़ता है और हाथ तथा एक पैर अनजानमें हिला करता है। अधिककर दोनों पैर क्षीण मालूम होते हैं; दो देखता है; उन्मादका लक्षण, बल और रुचिका गायब हो जाना; हमेशा घोर निद्रामें पड़े रहनेका भाव; बुद्धि गायब हो जाना और बोध-शक्तिकी कमी और शारीरिक दुबलापन वगैरह भी इस दवाके कई प्रधान लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—मानसिक उत्तेजना, दुःखित भाव, भूख देखता है और भूल ही सुनता है; शय्यासे उठकर कई क़दम जाते-न-जाते गिर जाता है; बुदबुदाकर

असम्बद्ध बका करता है; कोई चीज़ हाथसे पकड़ नहीं सकता; क्योंकि सभी चीजें उसे दो मालूम होती हैं। बहुत बकता है। मानसिक उद्वेग और मृत्यु-भय, शय्याके बगलवाले किसी मनुष्यको जोरसे पकड़कर अपनी आसन्न मृत्युकी बात कहता है और बहुत खेद प्रकट किया करता है। गहरी नींद—धीरे-धीरे मोहाच्छन्न अवस्थामें जा पड़ता है। एकाएक उन्मादके लक्षण प्रकट करता है; कोई बात पूछनेपर बहुत अनिच्छासे जवाब देता है। अपनी शय्याके पासवाले मनुष्यको भी पहचान नहीं सकता। रोगी अपने मनमें समझता है, कि वह एक बहुत ही लम्बा-चौड़ा आदमी है और धीरे-धीरे वह और भी बढ़ता ही जाता है। रातमें बहुत बेचैन हो जाता है। याद दिलाये बिना दो दिन पहलेकी घटना याद नहीं कर सकता। सभी विषयोंमें बहुत उदासी दिखाता है।

मस्तक।—सारी रात सरमें दर्द हुआ करता है; शय्यापर उठ बैठनेपर माथेमें चक्कर आया करता है (ब्राई, कूप्रम)। माथेके भीतर मानो सुई गड़नेकी तरह दर्द (हायो, लोरो, मर्क, नेट्र-कार्ब, नेट्र-मूर, सल्फ़)। नींद खुलनेके बाद सरमें दर्द हुआ करता है (मिनियेन, जेल्स, ग्लोन)। माथेमें बहुत भार मालूम होता है, यहाँतक कि तकियेसे माथा उठानेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है (पल्स, तकियेपर सर नहीं रख सकता—ग्लोन)। कपालमें दर्द होता है; सीढ़ीसे उतरनेके समय बढ़ता है और कानके भीतर तेज़ दर्द मालूम होता है, कपालका स्नायुशूल; सर झुकानेसे बढ़ जाता है। माथेमें तेज़ दर्द रहनेकी वजहसे रोगी रह-रहकर चिल्ला उठता है (एपिस, बेल, ग्लोन, स्ट्रैमो)।

आँख।—आँख लाल और उसमें दर्द; आँख करकराती है और उसमें ऐसा दर्द होता है, मानो कांटा गड़ रहा है। सभी चीजें चौकोनियाँ तस्वीरदार और लाल रङ्गकी दिखाई देती हैं (बेल, कोना, हायो, नक्स-मस); अपनी जगहसे उठनेपर घटता है। ऐसा मालूम होता है मानो पर्देके भीतरसे सभी चीजें या मनुष्योंको देखता है (कास्टि, आयोडम, लोरो, स्ट्रैमो, सल्फ़); दो देखना (जेल्स, नेट्र-मूर, ऐसिड-मूर, ऐसिड-नाई)। आँखकी पुतलीका बराबर संकोचन न होना; रोशनीका ज्ञान धीरे-धीरे प्रकाश होता है। खड़े होकर आँख बन्द करनेपर ढलमलाया करता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई) और सीधा चल नहीं सकता।

अन्त्राशय।—गुटिका-दोष पैदा हो जाना (Tuberculous), इसके साथ ही अन्त्राशयके क्षय रोगकी वजहसे पुराना उदरामय (आयोडम, ओलियेंको, ऐसेलाई)। पेट फूल उठता है; आँतके भीतरवाली ग्रन्थियाँ बड़ी हो जाती हैं (आयोड, बैराई, कार्बो-ऐन, ओलि-ऐकोर)। शिशु विसूचिका या गर्मीके दिनोंका ग्रीष्मातिसार (इथ्यू, आर्स, इपिका, कैमो, मैग-कार्ब, ओपि, पोडो, रिसिन, वेरेट, जिङ्क)।

श्वास-यंत्र।—बिछावनपर सोनेपर खाँसी आती है; वायुनलीमें श्लेष्मा पैदा होकर साँय-साँय शब्द हुआ करता है। कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है मानो गला दबाया हुआ है। ऐसा मालूम होता है, मानो वक्षके ऊपर एक भारी चीज़ दबाई हुई है और इसी वजहसे साँस लेनेके समय पूरी तरह कलेजा फैला नहीं सकता। फेफड़ेमें ऐसा मालूम होता है मानो बहुत सर्दी लग गयी है। दाहिने फेफड़ेके शिखर-देशमें ऐसा अनुभव होता है कि जखम हो गया है; साँस लेने और छोड़नेके समय मानो दो जखमवाले अंश आपसमें रगड़ खा रहे हैं। बाईं छातीमें दर्द मालूम होता है, मानो हृत्पिण्डके तलदेशमें जोरसे दबाये हुए है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके पिछले भागमें ऐसा दर्द होता है मानो चोट लग गयी है। शिवदण्ड (पीठकी रीढ़) में इतना दर्द होता है, कि रोगी उसे छूने नहीं देता। दोनों पैर बहुत कमजोर, आँख बन्द करनेपर ढलमलाया करता है (ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई); स्थिर होकर खड़े रहनेपर या सीधा चल नहीं सकता। सीढ़ीपर चढ़नेके समय घुटने बहुत क्षीण मालूम होते हैं (रियुटा); अङ्ग-प्रत्यङ्ग आदि और मुँहकी पेशी लगातार सिकुड़ा और फैला करती है और रोगीका श्वास-प्रश्वास कभी रुक जाता है और कभी लम्बी तथा गहरी साँस चलने लगती है। मस्तिष्कावरण-प्रदाह लक्षणकी तरह बीच-बीचमें रोगी चिल्ला उठता है और तकलीफ़से दोनों पैर सिकोड़ लिया करता है।

त्वचा।—कमर, बाँह और कोहनीके पीछेकी ओर भूरे रङ्गकी फुन्सियाँ पैदा हुआ करती हैं (सैङ्ग्वियु)। सारे शरीरमें भयानक सुरसुरी हुआ करती है।

निद्रा।—रह-रहकर नींद खुल जाती है, ऐसा निद्रावेश क्रमसे मोहाच्छन्न अवस्थामें परिणत हो जाता है। सोनेकी चेष्टा करनेपर स्नायुओंमें

रह-रहकर झटका मालूम होता है। रातमें दो बजनेके बाद रोगी बहुत बेचैनी प्रकट करता है।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—हिप, सेङ्गुई (पसीना)।

सदृश ।—ऐल्यू, आर्जेण्ट-नाई, आयोडम, कैलि-आयोड, कार्बो-ऐन, नक्स-वोम।

शक्ति ।—२रा और ३रा दशमिक विचूर्ण।

इपिकाकुआन्हा

(IPECACUANHA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—सूखी जड़से विचूर्ण और अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— खूनकी कमी ; दमा ; स्वरनालीका प्रदाह ; सर्दी ; विसूचिका ; क्षय-कास ; आक्षेप ; खाँसी ; बहरापन ; अतिसार ; आमाशय ; आन्त्रिक ज्वर ; आँखकी बीमारी ; पथरी ; पाकाशयका जखम ; खूनकी कै ; रक्त-स्राव ; अर्श ; मूर्च्छा-वायु ; सविराम ज्वर ; आर्त्तवमें विकार ; गर्भावस्थाके उपसर्ग और बीमारियाँ ; स्वल्पविराम ज्वर ; लार बहना ; धनुष्टंकार ; दंतशूल ; वमनकी इच्छा ; वमन ; हूप-खाँसी ; कृमिकी वजहसे बोखार ; पीत्त-ज्वर इत्यादि।

उपयोगिता और आभास ।—विरक्त करनेवाली और बहुत अधिक मिचली और बार-बार ओकाई आना। “जीभ साफ़, पर बार-बार मिचली” इसका सबसे प्रधान निर्णायक लक्षण है। माथा झुकाते ही ओकाई आने लगती है। (१) मल—घासकी तरह हरा और पीला या हरा, फेन-भरा गुड़के फेनकी तरह सुनहरा रक्त मिला, नाभिमें ऐसा दर्द मानो मरोड़ खा रही है, शरीर हिलानेपर बढ़ना। (२) पतली सर्दी—प्रबल सूखी खाँसी ; छातीमें श्लेष्माका घड़घड़ शब्द, कभी-कभी बच्चा बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा क कर देता है। हूप खाँसी, खाँसते-खाँसते बच्चेकी देह कड़ी हो जाती है और उसका चेहरा रक्तहीन-सा दिखाई देने लगता है इसके साथ ही मिचली मौजूद रहती

है। श्वासरोग या दमा—छातीमें भार और उद्वेग मालूम होता है; एकाएक वक्षमें साँय-साँय शब्द हुआ करता है; श्वास और गला रुक जानेका उपक्रम और मिचली पैदा हो जाती है। शरीर हिलानेपर बढ़ना। (४) खूनका गिरना, रक्त-कास, चमकीला लाल खून निकला करता है। पेटसे चमकीला लाल रंगका खून लगातार धारमें निकला करता है; रोगी हाँफता रहता है। (५) सरमें दर्द, तेज़ अधकपारीका दर्द, एक आँखके ऊपरी अंशमें तेज़ दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो रोगवाली जगह चूर-चूर हुई जाती है और बहुत ही सुस्त करनेवाली मिचली। (६) पेटमें बहुत गड़बड़ी मालूम होती है, ऐसा अनुभव होता है कि मानो पाकस्थली झूल पड़ेगी। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर उदरमें बाईं ओरसे दाहिनी ओर फैलनेवाला कतरनेकी तरह तेज़ दर्द। (७) सारे शरीरमें प्रचण्ड दर्द, मानो हड्डियाँ सब टूटती जा रही हैं। (८) सविराम ज्वर, बहुत थोड़ी देरतक रहनेवाली शीतावस्था, उत्तापावस्थामें प्यास रहती है और वह बहुत देरतक स्थायी रहती है; कमर और माथेमें दर्द, मिचली, खाँसी और अन्तमें पसीना निकलना, जिन ज्वरोंमें दवाका चुनना कठिन हो जाता है और किसी एक दवाके लक्षण ठीक-ठीक नहीं मिलते या क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे होनेवाले ज्वरमें पहले इपिकाक ३० का प्रयोग करनेपर कितनी ही बार या तो बुखार एकदम छूट जाता है या आगेकी दवा चुननेके लक्षण साफ़ हो जाते हैं।

लक्षणावली

मन।—क्रोधी और बहुत तरहकी आकांक्षा पैदा करनेवाला चित्त, पर रोगी यह नहीं जान पाता कि वह किसकी आकांक्षा कर रहा है। रोगी यदि बच्चा रहता है तो वह बराबर रोता भी है और चिल्लाया भी करता है और अवस्था प्राप्त होनेपर हमेशा क्रोध प्रकट किया करता है; विमर्ष भाव और सभी विषयोंमें उदासीनता प्रकट करता है, उसे सामान्य शब्द भी असह्य मालूम होता है। क्रोध और घृणा मिली मर्म पीड़ा या विरक्त करनेवाली मानसिक बीमारी।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—चलनेके समय और माथा घुमानेपर या खड़े होनेपर ढलमलाया करता है। सरमें दर्द—माथेके हरेक अस्थि-फलक और जिह्वामूलतक दर्द रहता है। इसके साथ ही मिचली और

वमनका लक्षण मौजूद रहता है (काक्यु, सिपि)। अधकपारीका दर्द—एक आँखके ऊपरी अंशमें तेज़ दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो रोगवाला अंश चूर-चूर हुआ जाता है। इसके साथ ही बहुत सुस्त करनेवाला वमन (कैलि-कार्ब)। बहुत दिनोंके उदरामयकी वजहसे क्रमसे पैदा होनेवाला मोह या मस्तिष्कोदक रोग (एपिस, इग्ने, ऐसिड-कार्बो, सिना, फास, टियुबर्क)।

आँख।—आँख लाल और प्रदाह-भरी। आँखमें (विशेषकर दाहिनी ओर) तेज़ कतरनेकी तरह दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है—कपालमें फैलकर यह दर्द इतना बढ़ जाता है, कि रोगी शय्यासे उठ बैठता है, तेज़ रोशनीमें बढ़ता है और रोगीको क्रमसे शीत, उत्ताप तथा पसीना होने लगता है। दाहिनी आँख खोलनेपर; आँखके पानीसे तकिया भींज जाती है। गण्डमाला दोषयुक्त अक्षि-प्रदाह (Scrofulous ophthalmia—आर्स, हिप, मर्क-कौर, सल्फ), ललाट और शङ्खदेश या कनपटीमें दर्द, रोशनीका सहन न होना (ऐकोन, कोना) और सफेद आवरककी त्वचाका क्षय होना भी मौजूद रहता है। योजकत्वक गुलाबी रंगका हो जाता है, स्वच्छावरक गदला और दाहिनी आँख दृष्टिशक्तिसे रहित हो जाती है, रोगी पढ़ने आदिका काम नहीं कर सकता, क्योंकि दीयेकी रोशनीमें उसकी आँख झिलमिलाने लगती है। मांसांकुरयुक्त चक्षु-पुट (Granular Lids—पल्स, ग्रैफ, हिप, थूजा)। पलकका फड़कना (कोडाया, ऐगार)। बहिरपाङ्ग या बाहरी कोनेमें गाढ़ा श्लेष्मा संचित होता है।

मुखमण्डल आदि।—मिचली बतानेवाला चेहरेका भाव (इथ्यु, ऐण्टि-टार्ट)। मुखमण्डल मलिन, पाण्डुवर्ण या पीली आभा लिये, दोनों गाल फूले और दोनों आँखें नीलिमा लिये। मुँहकी पेशियाँ सब रह-रहकर फड़का करती हैं। एकाएक रह-रहकर दाँतमें दर्द पैदा हो जाता है—ऐसा दर्द होता है मानो दाँत सब उखाड़े जा रहे हैं, तीसरे पहर और रातमें दर्द बढ़ जाता है और खा लेने बाद घट जाता है। दाहिनी कनपटीमें स्नायुशूल (वायोला-ओडो), मुँहमें बहुत लार संचय होती है, बार-बार लार निगलनी पड़ती है। सोनेपर मुँहसे लार बहकर तकियातक तर हो जाती है (कैमो, नक्स, फास)। जीभ मोटे सफेद लेपसे चढ़ी। स्वाद लेनेकी शक्तिका गायब हो जाना।

पाकाशय आदि।—सभी पदार्थोंसे अरुचि ; मिठाई, मिष्टान्न आदि खानेकी इच्छा (हिपर)। इसके सभी रोगोंमें लगातार मिचली और वमन मौजूद रहता है (ऐण्टि-टार्ट, फास, वेरेट)। मिचली—बहुत ज्यादा लार संचय होनेके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें सफेद रंगका उजला श्लेष्मा कै हो जाता है ; बार-बार वमन होनेपर भी मिचली शान्ति नहीं होती ; खाये हुए पदार्थ अजीर्ण अवस्थामें कै हो जाते हैं (ऐब्रोट, ब्राई, नक्स, इथ्यू, पल्स), पित्तमय तीते पदार्थका वमन (कैमो, मर्क, फास, वेरेट, मीठा स्वाद मिला पदार्थ वमन होता है—जैट्रोफा ; खूनकी कै—ब्राई, हैमा, हायो, नक्स ; काले अलकतरेकी तरह पदार्थ वमन—आर्स, सिकेलि, वेरेट ; मल-मूत्र वमन—ओपि, प्लम्ब)। माथा झुकानेपर वमन बढ़ जाता है (ऐल्यू, रास ; गाड़ीपर सवारी करने, जहाज या नाव आदिमें घूमनेकी वजहसे वमन—आर्स, काक्यु, पेट्रोल ; खाने बाद वमन—इथ्यू, आर्स, ब्राई, नक्स, पल्स ; पीने बाद—आर्स, विस्मथ, ब्राई, क्रोटोन-टिग, वेरेट) ; वमनके बाद औंघाई (इथ्यू) ; बहुत ज्यादा धूम्रपान करनेसे और गर्भावस्थामें वमन। पाकस्थली बहुत शिथिल मालूम होती है, मानो झूल पड़ी है (इग्ने, लोबेल, ऐसिड-म्यूर, टैब, सिपि, स्टैफ)। पाकस्थलीमें प्रचण्ड और असह्य दर्द और मिचली। घृतपक्व द्रव्य आदि खानेकी वजहसे पाकाशयमें विकार, इसके साथ ही प्रायः निर्मल जिह्वाका लक्षण मौजूद रहता है (जीभपर मैलके साथ—पल्स)।

अन्त्राशय।—आँतोंमें शूलका प्रचण्ड दर्द ; मानो कोई बड़े जोरसे हाथोंसे अन्त्रमण्डली पकड़कर प्रत्येक अंगुली कसकर आँतोंमें गड़ाये देता है और मरोड़ता है। नाभि-प्रदेशमें आध्मानसे पैदा हुआ कतरनेकी तरह दर्द—शरीर हिलानेपर सभी तकलीफें बढ़ जाती हैं और स्थिर रहनेपर आराम मालूम होता है। बच्चोंका अंत्रशूल—बच्चा तकलीफसे चिल्लाकर रोता है, छटपटाया करता है और बहुत कातरता प्रकट करता है। प्रत्येक बार शरीर हिलानेपर उदरके बाईं ओरसे दाहिनी ओर जानेवाला छेदनेकी तरह दर्द (लैके ; दाहिनी ओरसे बाईं ओर—लाई ; एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्वकी ओर—ऐकि)।

मल।—उदरामय, मल सड़े हुए गुड़की तरह फेनमय या इक्षुसारकी तरह (रियुम, सैबाड ; शराबके फेनकी तरह—आर्नि ; घासकी तरह हरा—आर्जेण्ट-नाई ; गहरा पीला आम-भरा—मर्क ; सड़ी तलैयाके पानीमें तैरती हुई काईकी तरह—मैग-कार्ब), सफेद रंगका आम-भरा (कोलचि) या

चमकीले लाल रङ्गका खून मिला। शरद ऋतुमें होनेवाला आमाशय जब दिनमें गर्मी और रातमें सर्दी पड़ती है (कोलचि, मर्क)। बहुव्यापक विसूचिका, पहली अवस्थामें मिचली और वमन बहुत ज्यादा रहता है (कोलचि); दुरारोग्य उदरामय।

पेशाब।—पेशाब खून-मिला (कैक, मिलिफो, ऐसिड-नाई)। गदला पेशाब, ईंटके चूरकी तरह तली मिला (बेल, फास ; कुछ लाल रङ्गका पेशाब और ईंटके चूरकी तरह तली—सिङ्की)। कीड़े काटनेकी तरह दर्दके साथ पेशाबसे पीबका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयके बहुत पहले प्रकट हो जाता है और स्राव भी बहुत अधिक हुआ करता है (बेल, कैल्के, सेबाई)। जरायुसे खूनका स्राव—खून बहुत ज्यादा, जमा हुआ और थक्का-थक्का ; स्रावकी वजहसे सुस्तीके कारण रोगिनी हाँफा करती है और नाभिके पाससे जरायुतक सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। जरायुसे रक्तका स्राव होनेकी वजहसे रोगिनीका शरीर और मन सुस्त हो जाता है। दाहिने ललाटमें दर्द और जरायु-प्रदेशमें बाएँ उरुके पिछले भागमें बहुत दर्द मालूम होता है ; शरीरकी त्वचा पीली, खुजली-भरी और आँखें काले घेरेसे घिरी रहती हैं। स्रावके बाद बहुत ज्यादा चमकीले लाल रङ्गके खूनका स्राव होता है। प्रसव या गर्भ-स्राव होनेकी आशङ्काजनक दर्दमें मिचलीके साथ तलपेटके बाईं ओरसे दाहिनी ओर बार-बार तेज़ दर्द फैल जाया करता है (लेके)।

श्वास-यन्त्र।—सूखी, आक्षेपिक या शरीर हिला देनेवाली खाँसी ; दमाकी तरह श्वासनलीका संकोचन। दमा—छातीमें दबाव और उद्वेग मालूम होना, एकाएक बचमें साँय-साँय शब्दसे खाँसी आरम्भ होती है, श्वास और गलरोध होनेका उपक्रम हो जाता है और मिचली आ जाया करती है ; शरीर हिलानेपर बढ़ना। थोड़ा भी शारीरिक परिश्रम करनेपर श्वासमें कष्ट पैदा हो जाता है। खाँसनेके समय वायुनलीभुजमें श्लेष्माकी आवाज़ अर्थात् घड़घड़ शब्द हुआ करता है, विशेषकर साँस लेनेके समय (ऐण्ट) ; वायुनलीके भीतर श्लेष्मा अधिक हो जानेकी वजहसे श्वास रुक जानेकी आशङ्का (खाँसी रुककर यदि रोगी औंघाई प्रकट करता हो तो समझना चाहिये कि फेफड़ेकी क्रियामें अवसाद पैदा होनेका लक्षण आ रहा है और उस समय इपिकाकके बदले

ऐण्टिम-टार्टका प्रयोग करना चाहिये)। वक्षगह्वर श्लेष्मासे भरा मालूम होता है, किन्तु खाँसनेपर थोड़ा भी नहीं निकलता (ऐण्टिम-टार्ट ; श्वासरोधक खाँसी ; गलनलीमें संकोचनके साथ खुजलाहट, खाँसते-खाँसते श्लेष्माकी कै हो जाती है—ऐण्टिम-टार्ट)। क्रुप खाँसी—खाँसते-खाँसते बच्चेकी देह अकड़ जाती है और कड़ी हो जाती है (कोरैल-रूब्र), श्लेष्मा-सञ्चय और वमनकी वजहसे गलरोध होनेका उपक्रम हो जाता है और नाकके छेद तथा मुँहसे खूनका स्राव हुआ करता है (इण्डिगो, आर्निका); रातमें खाँसी बढ़ जाती हैं और खाँसनेपर माथे और पाकस्थलीमें चोट लगती है (ब्राई, नेट्रम-म्यूर, नक्स)। रक्तकास—थोड़े भी शारीरिक परिश्रमसे बढ़ जाती है (धीरे-धीरे चलनेपर घटना—फेर)। घरके भीतर श्वास-रोध होनेका उपक्रम और घरके बाहर घटना। भोजनके बाद खाँसीकी वृद्धि (नक्स) और ठण्डा पानी पीनेपर घटना। खसड़ेका एकाएक बैठ जाना और इसी वजहसे फेफड़े आदिकी बीमारी (ब्राई, मस्तिष्क रोग—क्यूप्रम)।

प्रत्यङ्ग आदि।—हड्डीमें चोटकी तरह दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डियाँ सब छिन्न-विच्छिन्न होती जा रही हैं (मानो टूट रही हैं—इयुपेट)। एकाएक सारे शरीरमें अस्वाच्छन्द्य पैदा हो जाना ; सभी तरहके खाद्य-पदार्थोंसे अरुचि और सुस्ती मालूम होती है। धनुष्टङ्कार, कभी रोगीकी देह पीछेकी ओर टेढ़ी हो जाती है और चेहरा बिगड़ जाता है या चेतना-शक्ति जाती रहती है ; चेहरा नीला और तमतमाया, अधमुँदी आँख और मुँहकी पेशी, ओंठ, पलक और अङ्ग-प्रत्यङ्गोंका सिकुड़ना-फैलना, बीच-बीचमें ऊँची आवाज़से रोना, मिचली और छातीमें श्लेष्माकी आवाज़ हुआ करती है। शीत और उत्तापका बहुत अनुभव होना।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था, बहुत जाड़ा मालूम होना ; पानी पीनेपर घटना (आर्स, इग्ने, कैलि-कार्ब)। शीतके साथ बोखार सवेरे ६ से १२ बजेके समय (१० से ११ बजेके भीतर—नेट्रम-म्यूर) आता है और बिना जाड़ेका बोखार दिनके ४ बजे एकाएक पैदा हो जाता है। प्यास नहीं रहती। बहुत अधिक पाकाशयका विकार मिला हुआ सविराम ज्वर, क्विनिनके बहुत ज्यादा व्यवहार या अपव्यवहारकी वजहसे ज्वर। शीतवाली अवस्था बहुत थोड़ी देरतक रहती है, परन्तु उत्तापकी अवस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है, कमरमें बहुत ज्यादा दर्द रहता है। अधिकांश स्थानोंमें केवल

उत्ताप, प्यास, सर-दर्द, मिचली, खाँसी और अन्तमें पसीना होता है। भीतरी उत्तापके साथ बाहर शीत मालूम होना।

वृद्धि।—छूनेपर, शीतऋतु और सूखी हवामें, गर्म घरमें या बाहरी उत्तापसे, जलीय दक्षिणी हवामें (इयुफ्रे), वमनके बाद, खाँसनेपर, खुजली विलोप हो जानेपर, गुरुपाक पदार्थ खानेपर, भोजनके बाद, शरीर हिलाने और क्विनिनके अपव्यवहारकी वजहसे।

घटना।—विश्रामसे, दबानेपर, आँख बन्द करनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—एपिस, आर्नि, चायना, फेर, लोरो, ओपि, नक्स, टैबाक।

अनुपूरक।—क्यूप्रम।

सदृश।—ऐण्टि-क्रूड, ऐण्टि-टार्ट, पल्स इत्यादि।

तुलनीय।—भोजनके बाद खाँसी—नक्स; एक हाथ ठण्डा और दूसरा गर्म—चायना, पल्स इत्यादि। हमेशा मिचली—काकु, सल्फ, इग्ने; घासकी तरह हरा मल—आर्जेण्ट-नाई; कुचलनेकी तरह सर-दर्द—विरेट्रम; गुरुपाक द्रव्यसे पाकाशयमें विकार—पल्स; दमा—कूप्रम, लोबेलिया; हूप खाँसी—सिना; वमन—ऐण्टि-टार्ट; बच्चका लक्षण—ब्रायो इत्यादि।

शक्ति।—१x से १००० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व।—७ से १० दिन।

आइरिडियम

(IRIDIUM)

दूसरा नाम।—धातु-विशेष।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

उपयोगिता और आभास।—रक्तकी कमी, रक्तमें रक्त-कणका अभाव, संन्यास, वात, ग्रन्थिवात, जरायुका अर्बुद, अन्तःखलावस्थाके समयका

मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, कमजोर और जल्दी बढ़नेवाले बालकोंके उपसर्ग, रोगके बादवाली कमज़ोरी वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—आइरिडियम-क्लोराइड; प्लैटिना; पैलेडियम; ओस्मियम।

शक्ति।—६—२००।

आइरिस टेनैक्स

(IRIS TENAX)

दूसरा नाम।—आइरिस माइनर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—समूचे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—उपास्थि-प्रदाह; ज्वर; सर-दर्द; अपना घर छूटनेकी वजहसे विषाद; सविराम ज्वर; उन्माद; अनिद्रा; पाकाशयका प्रदाह; वमन।

उपयोगिता और आभास।—उपास्थि-प्रदाह ही इसका प्रधान क्रियास्थल है और इसी रोगमें इसके व्यवहारसे आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसके साथके अन्यान्य लक्षण यहाँ संक्षेपमें लिखे जाते हैं—बहुत ही दुःखित भाव, निर्वासनकातरता अर्थात् घर छोड़कर जानेमें तकलीफ़, मुँह और गलेमें जलन, मुख-विवर बहुत सूखा और लारका न रहना, पाकाशयमें शून्य भाव, रोगीके बहुत सुस्त हो जानेकी वजहसे बाध्य होकर सोना पड़ता है; भयानक जाड़ा लगने बाद, उत्तापकी अधिकता, अन्धान्त्र-प्रदेशमें स्पर्श सहन न होना; पित्तमय वमन इत्यादि।

लक्षणावली

मन।—दुःखित भाव, अपना घर छूटनेका दुःख, एकाएक रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसके कई बन्धुओंकी मृत्यु हो गयी है (लैकेन); परन्तु दूसरे दिन ही महान हर्ष प्रकट करती है। रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी बुद्धिमें गड़बड़ी आ जाना चाहती है

(ऐक्टि, लैक-कैन)। रोगिनी बहुत रोनी हो जाती है (पल्स, नैट्र-मूर, इग्ने, सिपि)।

मस्तक।—कई वर्षतक प्रति-सप्ताह दाहिने पार्श्वका अधकपारीका दर्द, दाहिनी आँखसे दर्द आरम्भ होकर क्रमसे माथेका समूचा दाहिना अंश घेर लेता है और जब दर्द चरम सीमापर पहुँच जाता है, तब हरे रङ्गके पित्तकी कै होती है (एपिस, आइरिस-वार्स, लैक-डिफ्लो, सैङ्गुइन), वमन न होनेपर तीसरे पहर दो बजेसे ३ बजेके भीतर मिचली और जाड़ा पैदा हो जाता है। सवेरे ५ बजेके समय दोनों कनपटियोंमें दर्द और आँखमें खुजलाहटकी वजहसे नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आती और ठण्डी जगहपर माथा रखनेकी इच्छाके कारण बार-बार तकिया उलट दिया करता है, कारण ठण्डे स्पर्श होनेसे उसका सर-दर्द घट जाता है; माथेकी त्वचापर बहुत खुजलाहट और जलन, मानो मिर्च पीसकर माथेमें लगा दी गयी है और इसके साथ ही दोनों आँखोंमें भी जलन हुआ करती है, परन्तु एक बून्द भी आँसू नहीं गिरता।

आँख।—दोनों कनपटियोंमें दर्दके साथ आँखमें खुजली। ब्रशसे केश झाड़नेपर आँखमें करकराहट होती है, मानो उसकी आँखके सामने कोई धूल उड़ रहा है; परन्तु आँसुओंका स्राव नहीं होता।

मुँह और गलेके भीतर।—मुँह और गलेमें क्रमसे बढ़ती हुई जलन, अन्तमें ऐसा मालूम होता है मानो मुँह और गलेमें आग जल रही है, ठण्डा पानी लगनेपर भी नहीं घटती (कैप्स); आधी रातके बाद या जायतूनका तेल या कपूरके प्रयोगसे या मुँहमें ठण्डी हवा खींच लेनेपर आराम मालूम होता है। मुख-विवर सूखा और लारहीन। बार-बार घूंट लेनेकी इच्छा।

पाकाशय और अन्त्राशय।—सवेरे नींद खुलनेके बाद खड़े होनेपर पाकस्थलीमें खालीपन और सुस्ती मालूम होती है और थोड़ा-सा हरा पीला गोंदकी तरह, परन्तु अतिरिक्त पदार्थकी कै हो जाती है। एक प्याला चाय पीनेपर घट जाता है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें भयानक मिचली अनुभव होनेके साथ गाढ़ा हरे रङ्गका पित्त वमन होता है (आइरिस-वार्सि, आर्स, ब्राई, कैमो, कोलचि, क्रोटेल, डलिकस, इयुपेट, इपिक, लेप्टैन, मर्क, नक्स, पल्स, वेरेट)।

अन्त्राशय ।—अन्धान्त्र-प्रदेश अर्थात् छोटी और बड़ी आँतोंके संयोग-स्थलपर भयङ्कर दर्द मालूम होता है। अन्धांत्र-प्रदेशमें दबानेपर उदरके ऊपरी भागमें भयानक मिचली पैदा हो जाती है। अन्धान्त्र-प्रदेशमें ऐसा दर्द होता है मानो जखम पैदा हो गया है। अन्त्राशयमें दर्दकी वजहसे माथेकी कनपटीमें दर्दकी वृद्धि हो जाती है। हरे रंगके पित्तकी कै हुआ करती है, बाहरी उत्तापके प्रयोगसे अंत्राशयका दर्द घटता है और आधी रातके समय बहुत अधिक परिमाणमें पाखाना होता है। अन्धान्त्र-पुच्छ या उपाङ्ग-प्रदाह (कोलचि, क्रोटल-होर, एकिनेशिया, लैक-डिफ्लो, प्लम, सेबाल, टियुबर्क)। रोगीको बहुत अधिक सुस्तीकी वजहसे यद्यपि अन्त्राशयका दर्द आदि घट जाता है तथापि सवेरे शय्यासे नहीं उठ सकता। तीसरे पहर दो बजनेके समय समूचे शरीरमें अस्वाच्छन्द्यकी वजहसे बाध्य होकर उसे शय्याका आश्रय लेना पड़ता है।

निद्रा ।—उत्तम रूपसे नींद न आनेके कारण रोगी क्रमसे अधिक-से-अधिकतर दुःखित हो जाया करता है। रातके १ बजनेके बाद यद्यपि नींद आती भी है, परन्तु ५ बजते-न-बजते दोनों ओरकी कनपटियोंमें दर्द और आँखमें खुजलीकी वजहसे नींद खुल जाती है और ठण्डी जगहपर माथा रखनेकी आशासे रोगी बार-बार तकिया उलट दिया करता है, कारण ठण्डा लगनेपर उसके सरका दर्द घटा जाता है।

शीत, उत्ताप और पसीना ।—तीसरे पहर २ बजनेके समय भयानक शीत पैदा हो जाता है और इसके बाद ही बोखार आ जाता है और उत्ताप बढ़ा करता है। यह उत्ताप घटते ही थोड़ा पसीना हुआ करता है।

वृद्धि ।—निद्रा भङ्ग होनेपर।

उपशम ।—शीतल तकिया लगनेपर (सर-दर्द), बाहरी उत्तापके प्रयोगसे (अन्त्राशयका दर्द); ठण्डी हवा मुँहमें खींच लेनेपर या जायतूनका तेल और कर्पूरारिष्टका प्रयोग करनेपर (मुँह और गलेमें जलन) और चाय पी लेनेपर (वमन)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—कोलचि, लैके, प्लम, आर्स, कैप्स, केलि-बाई, एपिजि, लैक-डिफ्लो, सैङ्गुइन, ग्रेटि, आइरिस-वार्स।

तुलनीय ।—अन्यान्य-प्रदेशमें (आर्निका, आर्स, लैके); सर-दर्द (जेल्स, आइरिस, इग्ने); अपना घर छोड़नेमें (कैप्सि, फास्फोरिक-ऐसिड)।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

आइरिस फ्लोरेण्टिना

(IRIS FLORENTINA)

दूसरा नाम ।—ह्वाइट फ्लेग; ओरिस रूट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—प्रलाप, आक्षेप, पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग पक्षाघात, सर-दर्द, उदरामय वगैरहमें लाभदायक है।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—विरेट्रम, सेबाडिला, आइरिस-वार्सि।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

आइरिस फिटिडिसिमा

(IRIS FŒTIDISSIMA)

दूसरा नाम ।—आइरिस फेकटिसिया।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—जड़से अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द, आँत उतरना लक्षणमें लाभदायक है।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति।

आइरिस जर्मेनिका

(IRIS GERMANICA)

दूसरा नाम ।—ब्लू-गार्डेन-आइरिस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—अरिष्टके आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—उदरामय ; त्वचापर मस्सेकी तरह उद्भेद लक्षणमें यह खूब लाभ करता है ।

शोथ रोगमें इसको निम्न-शक्तिका बार-बार प्रयोग करनेपर बहुत ज्यादा पेशाब होकर शोथ घट जाता है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

आइरिस वार्सिकोलर

(IRIS VERSICOLOR)

दूसरा नाम ।—ब्लू-फ्लैग ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—वसन्त ऋतुमें संग्रह किये हुए वृक्ष-मूलसे अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मलद्वारका फटना या फटा घाव ; पैत्तिकता ; कब्जियत ; दुधिया पपड़ी जमना ; बहुमूत्र ; अतिसार ; आमाशय ; बाधक ; अजीर्ण ; पामा ; मलद्वारका नासूर ; पाकाशयका शूल ; सविराम ज्वर ; सर-दर्द ; यकृतकी बीमारी ; अधकपारीका सर-दर्द ; स्नायुशूल ; रातमें रेतःस्खलन या स्वप्नदोष ; क्लोम-रोग ; कानका शूल ; गर्भावस्थामें वमन ; विचर्चिका ; मलद्वारमें जलन ; वात ; लार बहना ; गृध्रसी या पैरमें झुनझुनीवाला वात ; वमन ; अंगुलहाड़ा इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—मुँह, पाकस्थली और क्लोम-प्रदेशमें असह्य जलन ; मुँहसे लगातार लार गिरना, गाढ़ा गोंदकी तरह लार-भरा

वमन, पानीकी तरह मल निकलना और तलपेटमें आवाज़, अरुचि और स्वाद-शक्तिका न रहना, खाये हुए सभी पदार्थ अम्लमें परिणत हो जाना, तिमिर दृष्टि पैदा करनेवाला पित्ताश्रित अधकपारीका दर्द, दर्दकी प्रकोपावस्थामें खट्टा पानीकी तरह कै होती है, बाईं ओरके उरुके पिछले भागका स्नायुशूल और इसी तरहके नाना प्रकारके चर्म-रोगपर इसकी विशेष क्रिया होती है। इसका दर्द घूमनेवाला और दाहिनी ओरसे बाईं ओर तेजीसे दौड़ता है। इसका सर-दर्द, अन्त्रशूल वगैरह बँधे समयपर पैदा होता है; उदरामय, आमरक्त (रक्तामाशय) रोग वगैरह वसन्त और शरत् कालमें और उदरामय तथा आमाशयका दर्द रोज़ रातमें दोसे तीन बजनेके समय पैदा होता है। थोड़ी देरका अन्तर देकर और एकाएक लक्षण आदिके प्रकोपकी अधिकता हो जाया करती है।

लक्षणावली

मन।—तुरन्त रोग हो जानेकी आशंका। अपने पढ़नेके विषयोंपर मन नहीं लगा सकता। स्थूल बुद्धि।

मस्तक।—माथा भरा और बहुत भारी मालूम होता है। सर-दर्द—कनपटी और आँखमें दर्द, कभी मीठा स्वाद मिला या कभी थोड़ा पित्त-मिला तकलीफ़ देनेवाला वमन होता है। ललाटके दाहिने पार्श्वमें शूल बेधनेकी तरह तेज़ दर्द और मिचली, सन्ध्याके समय, ठण्डी हवामें और खाँसनेपर वृद्धि और थोड़ी देरतक चलनेपर आराम मालूम हुआ करता है। अधकपारीका दर्द—पहले दृष्टि-शक्तिकी गड़बड़ी पैदा हो जाती है (बेल, कास्टि, जेल्सि, कैलि-बाइ, नेट्र-म्यू); इसके बाद खट्टा पानीकी तरह वमन (कैल्के, काफि, नेट्र-मूर); दाँत और चक्षुगोलकके ऊपरवाले स्नायुमें तेज़ और बेहोश करनेवाला सर-दर्द; दर्द आराम होने बाद रोगवाले अंशमें बहुत दर्द होता है। दाहिने पार्श्वका अधकपारीका दर्द—दृष्टिका धुन्धलापन और ललाटमें असह्य दर्द; सर-दर्दके समय बहुत मिचली मालूम होना और बहुत ज्यादा लार बहना (ऐमोन-कार्ब, मर्क)। ललाट और मूर्द्धदेशमें बहुत दर्द, मानो खोपड़ी या करोटी उड़ जायगी (बेप्टि, कैमो, ऐक्टिया-रेस, कोबाल्ट, नेट्र-क्लोर, इयुका-फिल)। माथेके ऊपर पीव-भरी फुन्सियाँ निकलती हैं।

आँख।—दाहिनी आँखके बाएँ कोनेमें जलन और आँसू बहना। आँखके ऊपरी प्रदेशमें भयानक दर्द।

कान।—बहरापनके साथ कानमें भयङ्कर आवाज़ (सिङ्को, चिनिन-सल्फ)। भयंकर कानकी आवाज़के साथ सरमें चक्कर आना; वमन और आँखके सामने पर्यायक्रमसे रोशनी और अन्धकार दिखाई देना।

मुखमण्डल।—मुँहके दाहिने पार्श्वके स्नायुशूलकी वजहसे नींद खुल जाती है और दो क्षय हुए दाँतोंमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है। ऊपरी और निम्न अंगका स्नायुशूल; रोज़ सवेरेके भोजनके बाद पैदा हो जाता है। मुँहमें जगह-जगह पीव भरे दाने पैदा हो जाते हैं और उनसे रक्त-स्राव हुआ करता है।

मुख-विवर।—खाद्य पदार्थ आदिमें स्वाद नहीं रहता या खट्टा मालूम होता है। मुँह सूखा और लसदार मालूम होता है। मुखविवर और पाकस्थली जलती हुई मालूम होती है (आर्स, कैन्थ)। मुँहमें बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा गोंदकी तरह लार पैदा होती है और बातचीतके समय रोगीके मुँहसे बून्द-बून्द गिरा करती है। सवेरे उठनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो जीभ और दोनों मसूढ़े चर्बीकी तरह पदार्थसे लिपटे हुए हैं। दोनों ओंठ सूखे और फटे।

गलेके भीतर।—गलेका जखम, तालुमूल संकुचित और निगलनेमें तकलीफ़, गलेमें सूखापन, खूनसे तर और चमकीला लाल रङ्गका दिखाई देता है तथा जलते हुए गह्वरकी तरह उसमें जलन (आर्स, कैप्स) मालूम हुआ करती है (आइरिस-टैन, आर्स, इयुफोर्ब, कार्बो-वेज, फास)। जिह्वामूलके पार्श्ववाले दोनों गह्वरसे पाकस्थलीतक सब जगह भयानक जलन होती है (आइरिस-टैन, आर्नि)। वायुनलीमें खुजलानेकी वजहसे खाँसी और गलेमें जलन होती है। मुँहके भीतर ठण्डी हवा खींचने या ठण्डा पानी पीनेपर थोड़ी देरके लिये आराम मालूम होता है।

पाकस्थली।—मिचली और बहुत ही खट्टा पानीकी तरह वमन। पाकाशयके भीतरकी सभी चीजें खट्टी हो जाती हैं (कैल्के-कार्ब)। खाये पदार्थ आदि खट्टे या पित्तमय मीठे स्वाद मिले। जलीय पदार्थ और बच्चोंकी खट्टे दूधकी कै होती है (कैल्के, इथ्य)। समूची अन्ननलीमें जलन। बहुत

ज्यादा लारका स्राव होता (इपिक, मर्क, कैलि-आयोड)। गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा या लार वमन (एपिफिगा, कैलि-बाई); मुँहसे जमीनतक श्लेष्मा झूला करता है। पहले न पची हुई चीजें, इसके बाद खट्टे तरल पदार्थ और अन्तमें पीला या हरा पित्त-वमन होता है और सरमें बहुत उत्ताप मालम होता है। तेज़ खट्टा स्वादवाला और गलेके भीतरकी त्वचाको क्षय करनेवाला पानीकी तरह वमन।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें दर्द, शरीर हिलानेपर वृद्धि। क्लोम-प्रदेशमें भयंकर जलन, ठण्डा पानी पीनेपर कुछ भी नहीं घटता। अंत्रशूल, शरीर सामनेकी ओर झुकानेपर आराम मिलता है (कोलो, क्यूप्रम ; पीछेकी ओर—डायस्को), वायु छूटनेपर आराम मालम होता है। छूटी हुई हवा बहुत ही बदबूदार। तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द।

मल।—आँतोंमें शूल और गड़गड़ाहटके साथ उदरामय, मल पतला पानीकी तरह; आँतोंमें गड़गड़ाहटके साथ कोमल हरे रङ्गका मल, खूनभरा आँव मिला मल, इसके साथ ही कूथन। मलद्वारमें जलनके साथ बार-बार पानीकी तरह पाखाना होना। पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें भयानक जलन, मानो आग छू गयी है। कभी-कभी रातमें होनेवाला उदरामय, हरे रंगका मल और पेटमें दर्द (इपिक, आर्जेण्ट-नाइ)। उदरामय और रक्तामाशय रोग,—प्रति वर्ष शरत् और वसन्त ऋतुमें पैदा हो जाता है। कई दिनोंतक कब्जियत रहने बाद पानीकी तरह पतला पाखाना होता है; आध्मान वायुकी वजहसे आँतोंका शूल, अर्श या अधकपारीका दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—जरायुमें स्नायुशूल या वाताश्रित दर्द। गर्भावस्थामें सवेरेके समय वमन—खट्टा या तीता स्वाद मिला वमन; बहुत ज्यादा गाढ़ी गोंदकी तरह लार मुँहमें बराबर इकट्ठा रहती है। जरायु-प्रदाह-भरा और दर्दसे भरा रहता है—स्पर्श सहन नहीं होता। पीले रंगका पित्त-मिला दस्त।

प्रत्यङ्ग आदि।—अम्ल और अजीर्ण रोगाधिकारके साथ वक्षस्थलका पेशीवात। दाहिने कन्धेका नया वात,—शरीर हिलाने, विशेषकर दाहिना हाथ उठानेपर दर्द ज्यादा मालूम होता है (सैङ्ग्वि)। अंगुलियोंकी सन्धिमें प्रचण्ड दर्द, उरुके पीछेवाले स्नायुमें शूल—उरुदेशमें तकलीफ़ देनेवाली अकड़न

और सुन्नकी तरह मालूम होना, मानो उरु मोच खा गयी है—जानु-सन्धिके पीछेतक दर्द चला जाता है। बाएँ उरुके पीछेवाले स्नायुमें एकाएक तेज़ दर्दकी वजहसे सुन्नपन पैदा हो जाता है। रोगवाली जगह हिलानेपर दर्दका बढ़ना ; थोड़ा भी हिलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है, पर रोगवाले अंगको जोरसे हिला देनेपर किसी तरहका दर्द नहीं होता। दर्द आदि एकाएक पैदा हो जाता है। जगह बदलनेवाला दर्द।

त्वचा।—दाद—दाहिनी ओर, अम्लपित्त रोगके कारण शिर: प्ररोहिका अर्थात् माथेमें पीव-भरी फुन्सियोंके आकारमें दाने पैदा होकर रस गिरता है और वे फटे घावमें परिणत हो जाते हैं, रातमें वे बहुत खुजलाते हैं, विचर्चिका चिकनी रूसीसे ढँकी।

शीत, उत्ताप और पसीना।—सारी रात जाड़ा मालूम होना। समूची देहमें उत्ताप मालूम होता है, पर हाथ और दोनों पैर बहुत ठण्डे मालूम होते हैं। पसीनेवाली अवस्थामें कोखमें बहुत अधिक परिमाणमें पसीना होता है। खट्टी गन्ध लिये पसीना।

वृद्धि।—विश्रामसे (सर-दर्द); जोरसे शरीर हिलाने और सन्ध्या तथा रातके समय ठण्डी हवामें (सर-दर्द और मिचली)।

घटना।—धीरे-धीरे शरीर हिलानेपर (सर-दर्दका घटना, परन्तु उरुके पीछेवाला स्नायुशूल बढ़ जाता है); निर्मल वायु लगने और ऊपरी आधा शरीर झुकानेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—नक्स-वोम।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—इपिका (वमन); आइरिस-टेनैक्स, कैन्थरिस, कैप्सिकम (गलेमें जलन); कैलि-बाई (सर-दर्द); सैङ्गुइन (सामयिक सर-दर्द); लैक-डिफ्लो, जेल्स, नेट्र-म्यूर, कोलो, नेफिल, ऐसिट-क्र्ड, आर्स, लैप्टैन, एपिजिया, एपिफिगस, विरेट्रम (अतिसार); पल्स (रातके समय दस्त); चायना (गर्मीके दिनोंका उदरामय)।

शक्ति।—मूल अर्कसे १००० शततमिक क्रम।

इटू

(ITU)

दूसरा नाम ।—रेसिना इटू ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—रेसिन सुरासारमें गलाकर मूल अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐसा मालूम होना, मानो दृष्टिके सामने छोटी-छोटी चीजें उड़ रही हैं। एकाएक कानमें गरजनेकी आवाज़ सुन पड़ना और इसी शब्दके कारण दाँतमें दर्द ; आँत उतरना ; योनि-प्रदाह, गर्दन न झुका सकना प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

जैबोरैण्डी

(JABORANDI Or PILOCARPUS)

दूसरा नाम ।—पाइलोकार्पस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—केश झड़ना ; क्षीण दृष्टि ; श्वासनली-प्रदाह ; दाह ; मोतियाबिन्द ; क्षय-रोग ; अतिसार ; बाधक ; विसर्प ; चर्म-रोग ; हृत्पिण्डकी बीमारी ; श्वेत-प्रदर ; कर्णमूल ; बहुत पसीना ; बहुत लार बहना ; क्रिमि रोग इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—क्षयकास आदि रोगोंमें अनियमित पसीना निकलना ही इसका प्रधान लक्षण है। मुख-विवरवाली लार बहनेवाली ग्रन्थिमात्र ही इससे उत्तेजित हो जाया करती है और मुँहमें अनियमित लार सञ्चय होनेके कारण रोगी बार-बार थूका करता है। चेहरा तमतमाया और गर्म हो जाया करता है। कनपटीवाली शंख-देशीय धमनियोंमें टपक होने लगती है और ललाट, गाल और सारे शरीरसे सोतेकी तरह पसीना निकला

करता है। आँखसे आँसूका स्राव होता है; नासारन्ध्रके बीचमें स्थित श्लेष्मा-स्रावी झिल्ली और तालमूल, वायुनली और वायुनलीभुजकी सभी श्लैष्मिक-ग्रन्थियाँ उत्तेजित हो उठती हैं। लाला-ग्रन्थियाँ बन्द हो जाती हैं। रोगीको अत्यधिक प्यास मालूम होती है। लार बहना और पसीना निकलना बन्द होनेपर रोगी बहुत सुस्त हो जाता है और उसे नींद आने लगती है। इसके अलावा जोरसे निकलनेवाला उदरामय, वमन और दर्द; मूत्रस्थलीमें दर्द और पेशाबका वेग वगैरह लक्षण भी इस दवाकी क्रियाकी वजहसे पैदा होते हैं। जिन युवतियों या रमणियोंकी ऋतु-स्राव थोड़ा होता है, जिन्हें पसीना नहीं होता और जिनके माथेमें प्रायः रक्तसञ्चय हो जाया करता है, उनके लिये जैबोरैण्डी विशेष उपयोगी है (डा० हेल)। नाना प्रकारकी आँखकी बीमारियोंमें भी यह लाभदायक है। जैसे—दूर देखना, मानो दूरकी चीज़ स्पष्ट दिखाई देती है, पर पासकी चीज़ बहुत धुँधली दिखाई देती है; पलकोंकी अकड़न। प्रदर-स्राव और सूत्र-क्रिमि। शरीरके बाएँ अङ्गपर ही इसकी क्रिया अधिक प्रकट होती है; क्योंकि बहुतकर देखा जाता है कि इसकी क्रियाका अधीनस्थ दाहिना अङ्ग सूखा रहता है और बाएँ अङ्गसे बहुत ज्यादा पसीना निकला करता है (दाहिने पार्श्वमें पसीना निकलना—पल्स) और इसी वजहसे सर-दर्द, अधिकांश स्थानोंमें माथेके बायें आधे भागमें अधिक मालूम होता है।

लक्षणावली

मन।—स्नायविक उन्मत्तता; घरके सब आदमियोंको कुठारसे मार डालना चाहता है। बोलने-चालनेकी इच्छा नहीं होती।

मस्तक।—सन्ध्याके समय मूर्द्धा-प्रदेशमें और ललाटमें धमकन; रोज़ दोपहरके समय दर्द पैदा हो जाता है, श्वास-प्रश्वास तेजीसे चलने लगता है। वक्षपर दबाव मालूम होता है, मानसिक उद्वेग पैदा हो जाता है, कलेजा धड़कता है और हृद्-प्रदेशमें दर्द मालूम हुआ करता है। गलक्षत रोगमें माथेके बाएँ पार्श्वमें दर्दकी अधिकता और ऐसा मालूम होना, मानो श्वास-रोध हो गया है, माथा खाली मालूम होना (काक्यु)। इन्द्रलुप्त या खल्वाट हो जाना (बाहरी प्रयोग)।

आँख।—आँखकी पुतली संकुचित रहती है और रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। आँखमें करकराहट होती है। पलकोंका स्पन्दन (कोडाया, रिङ्गर,

होयो), आँखकी मध्य त्वचा या कृष्णावरकका क्षय होनेवाले प्रदाहके कारण रोगी झपकी लेता रहता है तथा काँप उठता है। इसके साथ ही एकाएक आँखके सामने अँधेरा छा जाना। नासा-मूलकी ओर झुकी या खिंची हुई दोनों पुतलियोंके साथ टेढ़ी दृष्टि या डेरा देखना (स्पाइजिलिया, साइक्लामिन, सिना, पासकी चीज़ देखना—लिलियम, सिपि, फाइजस)। बहुत देरतक दृष्टि-शक्तिका परिचालन करने बाद सरमें चक्कर आ जाना और मिचली। आँखके सामने सब सफेद बिन्दु उड़ते हुए दिखाई देते हैं (कोका, सल्फ़)। इसके साथ ही पलकोंकी पेशियोंका सिकुड़ना और फैलना। आँखसे आँसू और नाकसे बहुत ज्यादा रस क्षय हुआ करता है। तालुमूल, वायुनली शाखासे भी बहुत ज्यादा पतला श्लेष्मा निकला करता है।

मुखमण्डल।—चेहरा, दोनों कान, गला, गाल, यहाँतक कि समूची देह लाल रंगकी हो जाती है, विशेषकर अधिक पसीना होनेके समय चेहरेमें उत्ताप और कनपटीकी धमनियोंमें धमक, अन्य समय मुखमण्डल रक्तहीन और म्लान मालूम होता है।

मुख-विवर।—जीभ लेपसे ढँकी; रोगी बड़े कष्टसे और अस्पष्ट वाक्य उच्चारण किया करता है। बहुत ज्यादा पसीना होनेके साथ बहुत अधिक लार बहती है, लाल गाढ़े गोंदकी तरह (आइरिस-वार्सि, कैलि-बाई); बार-बार मुँहसे क्षारमय लार फेंकता है और निद्रावस्थामें मुँहसे लार निकलकर तकियेपर गिर जाती है। लार और पसीना होना बन्द होनेपर मुख-विवर और तालुमूल बहुत सूख जाता है और बहुत प्यास लगती है।

गलेके भीतर।—निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं (बैराइ-म्यू, कार्बो-ऐन, सिङ्की, हिपोजिन लाइ, मर्क-डाल, फाइटो) और दर्द। दोपहरके पहले गलेका भीतरी भाग सूखा और प्रदाह-भरा मालूम होता है और कोई भी द्रव्य निगलनेके समय करकराहट होती है। तीसरे पहर प्रदाह बढ़ जाता है; गल-ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं और दोनों हनु अकड़ जाते हैं।

पाकस्थली।—रातमें भोजनके बाद एकाएक निगली हुई लार वमन हो जाती है। पहले पाकस्थलीमें खाये हुए पदार्थ आदि और इसके बाद पित्त वमन होता है और अन्तमें लगातार ओकाई आया करती है। अन्न-

नालीके निचले आधे भागमें और पाकस्थलीके बीच तकलीफ़ मालूम होती है; अन्ननालीका सङ्कोचन; पाकस्थलीमें कोई न पचा हुआ पदार्थ रहनेकी वजहसे मध्याह्न भोजनके समय उपस्थित होनेपर अन्नद्वारमें बहुत भार और तकलीफ़ मालूम होती है, पेटभरकर खा लेने बाद आराम मालूम होता है (पेटभर खा लेनेपर बढ़ना—ऐबियेज-नाइग्रा)।

अन्त्राशय।—पेट खाली मालूम होता है; दिनमें बिना दर्दके पतला पाखाना होनेके साथ तमतमाया हुआ चेहरा, बहुत ज्यादा पसीना निकलना और विटप-देशमें दर्द मालूम होना; इसके साथ ही भयानक दर्द और पेशाबका वेग, पेशाब हो जाने बाद घटना। मलका पतलापन—मल पानीकी तरह पतला, अजीर्ण खाये हुए पदार्थ मिला, यंत्रणा-रहित और वेगसे निकलनेवाला; सवेरे ६ बजनेके समय और मध्याह्नमें बढ़ना, भोजनके बाद घटना, विशेषकर पाकस्थलीके दर्दमें,—बहुत ज्यादा लार बहनेके साथ तेज़ प्यास। मलके साथ सूतकी तरह कृमि निकलना (ऐसक्लिप-टियुब)।

पेशाब।—पेशाब गदला और परिमाणमें बहुत थोड़ा; विटपदेशमें असह्य दर्दके साथ बहुत अधिक वेग। मूत्रस्थलीमें एकाएक तेज़ दर्द पैदा हो जाता है और यह दर्द मूत्रनलीके भीतर चला जाता है। इस समय रोगीको वाध्य होकर चिल्लाना पड़ता है। पसीना निकलनेके समय पेशाबका परिमाण बढ़ जाता है और उसका आपेक्षिक गुरुत्व घट जाता है; पेशाबका परिमाण घट जानेपर आपेक्षिक गुरुत्व बढ़ जाता है। एकशिरा—वायुनलीभुजमें होनेवाले रोगकी सूचना; कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह। अण्डकोषके प्रतिक्षेपसे पैदा हुआ (पल्स) रोग।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रजःस्राव थोड़ा, सरमें अधिक रक्त-संचय होना, शरीरकी त्वचा सूखी। ऋतु होनेके समय शीत और सुस्ती मालूम होना; मस्तक तथा वस्तिगह्वरमें स्नायविक टपक और पीठमें दर्द। स्तनका छोटा हो जाना (ऐसाफि, रिसिनस-कमा)। बाधक, कभी-कभी वयःसन्धिकालकी तरह क्षणभरके लिये उत्ताप हो जाना (ऐमिल-नाई, लेके); प्रदर; गर्भावस्थामें शोथ या प्रत्यङ्गोंकी सूजन। प्रसवके बादका आक्षेप, आच्छन्न अवस्थामें मुँहमें संचय हुई ज्यादा परिमाणमें लार निगल न सकनेके कारण श्वासरोधका उपक्रम।

श्वास-यंत्र ।—वायुनली भुजके आवरक झिल्लीका प्रदाह और श्लेष्मा-स्रावी ग्रन्थियोंसे श्लेष्मा निकलनेकी क्रियाका बढ़ जाना। बार-बार खाँसी आना और श्वास-कृच्छ्रता। पतला श्लेष्मा मिली खाँसी। फेफड़ेका फूलना (ऐण्टि-टार्ट, आर्स, लैके)। फेन-भरा और पतले रसकी तरह कफ़ (नेट्रम-म्यूर, वेरेट); वक्षके भीतर सुई बेधनेकी तरह दर्द। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें दर्द। वक्षपर दबाव मालूम होना; चित्तकी चञ्चलता और कलेजा धड़कना। वक्षपर दबाव मालूम होनेके कारण नींद नहीं आती। यक्ष्मा रोगमें बहुत अधिक पसीना निकलना।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐमिल-नाइ (बहुत पसीना); बेल, कैल्के, सिङ्को, हिप (श्लेष्मा स्रावकी अधिकता); मर्क, नक्स, सिपि, वेरेट, फाइजस, साइक्ले, लिलियम-टाइ (चक्षु); स्पाइजि, साइकूरटा, इससे उत्पन्न या इसका उपचार पाइलोकार्पिनमसे तुलनीय।

शक्ति ।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

जैकारण्डा कैरोबा

(JACARANDA CAROBA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे फूलसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—प्रमेह; उपदंश; वात; प्रमेहकी वजहसे पेशियोंका पैशिक वात; चमड़ी इत्यादि रोगमें लाभदायक हुआ है।

उपयोगिता और आभास ।—पुं-जननेन्द्रियके नाना प्रकारके रोगोंमें फायदा दिखानेके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है। उपदंश, प्रमेह, यन्त्रणा-जनक लिङ्गोच्छ्वास वगैरहपर इसका प्रयोग बहुत ही लाभदायक हुआ करता है। उपदंशके जखममें पेशाब लगनेपर भयानक छेदनेकी तरह तकलीफ़ हो जाती है। चमड़ी—लिङ्गके अगले भागका चमड़ा बहुत फूल उठता है और लिङ्गपर खींचकर नहीं लाया जा सकता, लिङ्गमुण्डकी खोलनेकी चेष्टा करनेपर उसमेंसे हरा, पीला पीव निकलता है। वातका दर्द—माथा उठाकर श्वास लेनेके समय वक्षोस्थिके नीचे धीमा दर्द होता है और हृत्पिण्डमें डङ्क मारनेकी तरह

दर्द, भोजनके समय मिचली और खाये हुए पदार्थका स्वाद न मिलना वगैरह कई इसके प्रकृतिगत निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मस्तक।—उठनेके समय सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही ललाटमें भार मालूम होना और आँखमें दर्द, आँखें प्रदाहयुक्त और आँसूसे भरी। नयी सर्दीमें माथेमें भार मालूम होता है; कानमें पक्षीके पर फड़फड़ानेकी-सी आवाज़ (ऐण्टि-टार्ट, मैग-कार्ब)।

पाकाशय आदि।—सब खानेके पदार्थ स्वादहीन या खट्टे मालूम होते हैं। भोजनके समय मिचली पैदा हो जाती है (फेरम); तालुमूलका संकोचन और निगलनेमें तकलीफ़ तथा गलेमें क्षत। उदरके ऊपरी प्रदेशमें दबाव और भरापन मालूम होता है और साँस तेजीसे चलती है। उदरके ऊपरी भागमें और नाभि-प्रदेशके बीचमें तकलीफ़ देनेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होता है। पुट्ठा तथा मलद्वार फूल उठता है; बैठनेके समय मलद्वारमें खुजली; मलद्वारमें अस्त्रके आघातकी तरह दर्द। मलद्वारके चारों ओर काँटा गड़नेकी तरह मालूम होना और श्लेष्मागुटीका बाहर निकलना (कास्टि, डाल्का, इयुफ्रे, ऐसिड-नाई, थूजा)।

पुं-जननेन्द्रिय।—बहुत ही उग्र प्रमेह,—लिङ्गमुण्ड और उसके आवरकके बीचके अंशतक पीब संचय हो जाता है; लिङ्गमुण्ड खोलनेपर उसमेंसे हरा, पीला या सफेद पीला पीब निकला करता है (मर्क-सोल)। लिङ्गके अगले भागका चमड़ा या मेढ्रत्वक बहुत फूल जाता है, लिङ्गमुण्डका आवरण खोला नहीं जा सकता (मर्क-सोल, गुयायेकम); जबर्दस्ती खोलनेकी चेष्टा करनेपर उससे हरे पीले रङ्गका पीब निकलता है। उपदंशका जखम—जखममें पेशाब लगनेपर छेदनेकी तरह भयानक दर्द पैदा हो जाता है। मेढ्रत्वचाके अगले भागमें बहुत खुजलाहट होती है। लिङ्गका टेढ़ापन—लिङ्गमें कड़ापन आनेपर बहुत यन्त्रणा होती है (कैन्थ, आर्जेण्ट-नाई, थूजा)। चलनेके समय बाएँ अण्डकोषमें दर्द। लिङ्गमें जगह-जगह उपदंशकी तरह लाल जखम या औपदंशिक उद्भेद (कोरैल-रूब्र) और लिङ्गार्श पैदा हो जाता है, यह बहुत खुजलानेवाला, सूख जानेपर लाल रङ्गका चिन्ह रह जाता है।

श्वास-यंत्र।—सर उठाकर साँस लेनेपर वक्षोस्थिके नीचे धीमा दर्द और हृत्पिण्ड-प्रदेशमें अस्त्राघातकी तरह दर्द होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनमें इतना दर्द होता है, कि रोगी दाहिनी ओर माथा नहीं घुमा सकता। सवेरे बाएँ बाँहमें वातका दर्द मालूम होता है। दाहिने जानुमें वातका दर्द, इस अंगको हिलानेपर घट जाता है। पैरका जखम, पेशियोंकी वात व्याधि—सवेरे रोगवाले अंगमें बहुत दर्द होता है और अकड़न मालूम होती है; अंग हिलानेसे वृद्धि, हिलनेके समय, माथा उठानेपर और बैठनेवाली अवस्थामें दर्द पैदा हो जाता है। प्रमेह दोषकी वजहसे वात (थूजा, सार्सा, कैलि-आयोड)।

सम्बन्ध।—जैकाराण्डा-गुयेलैण्डी, नाना प्रकारके उपदंशज रोगोंमें यह बहुत लाभदायक है। उपदंशका जखम, उपदंशके कारण अक्षि-प्रदाह (मर्क-कोर), आँख सट जाना; पुराना प्रमेह; उपदंशकी वजहसे गलेका जखम, तालुमूल लाल, उत्तापयुक्त और उसमें छोटे-छोटे छाले निकलते हैं। जरायुके प्रतिश्याय (सर्दी) की वजहसे प्रदर (लैके), उदरामय—आममिला काला मल।

सदृश।—तुलनीय।—थूजा (प्रमेह); कोरैल-रूब (उपदंश); मर्क-सोल; मर्क-कोर।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

जैकाराण्डा गुयालैण्डी

(JACARANDA GUALANDI)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—सूखे पत्तेसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—बिना दर्दका उदरामय, बहुत ज्यादा काले रङ्गका दस्त, उपदंश दोषके कारण **आँखका प्रदाह, गलेका जखम,** प्रमेह, श्वेत-प्रदर प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—दोषघ्न।—मर्क्युरियस। यह मर्क्युरियसका दोषघ्न है।

तुलनीय।—बेल, मर्क्युरियस, फाइटो, जेकारेण्डा।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-शक्ति।

जैलापा इपोमिया

(JALAPA IPOMOEA)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पहले मूलका विचूर्ण, इसके बाद तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मलद्वारकी अकड़न या जखम ; सर्दी ; अतिसार ; वात ; मूर्च्छा ; बेचैनी।

उपयोगिता और आभास।—ऐलोपैथिक मतसे यह एक प्रधान विरेचक दवा है। इसलिये, सदृश-विधानके मतसे यह एक विशेष प्रकारके उदरामयमें बहुत लाभदायक है। इसके कई प्रधान लक्षण नीचे लिख देनेसे ही इसके गुणोंका आभास मिल जायगा—खट्टी गन्ध लिये पानीकी तरह या खून मिला मल, रातमें बढ़ना ; उदरमें काटनेकी तरह दर्द, बच्चा मानसिक और शारीरिक अस्थिरता बहुत अधिक प्रकट करता है ; दिनभर तो बच्चा शान्त रहता है, पर रातमें असह्य अंत्रशूलकी वजहसे चिल्लाता, छटपटाता और दोनों पैर फेंका करता है और चेहरा नीला हो जाता है। बच्चोंको रातमें होनेवाले असह्य यंत्रणादायक शूलके दर्दकी यह एक प्रधान दवा है (कैमोमिला, कोलोसिन्थिस, स्टैफाइसेग्रिया और वेरेट्रम ऐलबम) ये चारों दवायें भी बच्चोंके अन्त्रशूलमें बहुत लाभदायक हैं।

लक्षणावली

पाकस्थली और अंत्राशय।—मिचली और वमन। आध्मानकी वजहसे फेन-भरी डकार, डकार आनेपर अन्त्रशूल आराम हो जाता है। रातमें तलपेटमें ऐसा दर्द होता है मानो आँतें आदि मरोड़ खा रही हैं या छुरीसे काटी जा रही हैं। पाखाना होनेके पहले और समय काटनेकी तरह अन्त्रशूल ;

रातमें बहुत बढ़ जाना। बच्चा दिनभर शान्त रहता है, पर रातमें लगातार चिल्लाया करता है और छटपटाया करता है। यन्त्रणासे बच्चेकी देह कभी पीछेकी ओर, कभी सामनेकी ओर और कभी बाईं ओर घूम जाती हैं या टेढ़ी पड़ जाती है। बच्चा शारीरिक और मानसिक अस्थिरता प्रकट किया करता है, उसकी देह बरफकी तरह ठण्डी और चेहरा नीला हो जाता है। बाईं कोखके नीचे स्थूलान्त्रकी द्विभाँज ग्रन्थि-प्रदेशमें भयानक दर्द मालूम होता है। यंत्रणासे बच्चा हाथ-पैर पटका करता है।

मल।—उदरामय–मल खट्टी गन्धसे भरा, पानीकी तरह या खून मिला; वेगसे निकलनेवाला और परिमाणमें अधिक; पाखाना होनेके पहले और समय तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द। मलद्वारकी त्वचा क्षय हुई-सी मालूम होती है। पेशाबके समय मूत्रनालीमें महान सुख मालूम होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—हाथ-पैरोंमें दर्द। पैरके अंगूठेकी सन्धिमें बहुत उत्ताप, टपक और छेदनेकी तरह दर्द। पैरके तलवेमें जलन (ऐम्ब्रा, कैल्के, सल्फ़, लैके)। नखकी जड़में करकराहट होती है। माथे और कन्धेमें बहुत पसीना होता है। तकलीफ़से हाथ-पैर पटका करता है।

सम्बन्ध।—**दोषघ्न**।—कैनाब-सैट, इलैटिर।

सदृश।—कैमो, कोलो, स्टैफाई, वेरेट-ऐल्ब, कैम्फो।

तुलनीय।—कैम्फर (अतिसार और कम्प); कोलोसिन्थ (पेटमें दर्द); आइरिस-टे (अन्धान्त्रमें दर्द)।

शक्ति।—३रे दशमिक क्रमसे ३० शततमिक क्रमतक।

जैस्मिनम

(JASMINUM)

दूसरा नाम।—जैस्मिनम आफसिनेल; सफेद जेस्मिन।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—लाल बीजोंसे अरिष्ट तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—तन्द्रालुता, पतले दस्त, आक्षेप और अन्तमें धनुष्टंकार लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—निक्नैन्यस।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

जैट्रोफा कार्कस

(JATROPHA CURCAS)

दूसरा नाम।—फिजिक-नट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—बीजसे टिंचर और विचूर्ण तैयार हुआ करता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैः—पलकोंका आक्षेप; पेट बोलना या गड़गड़ाहट; हैजा; विसूचिकाकी तरह उदरामय; ऐंठन; अतिसार; मुँहमें जखम; त्वचाकी बीमारियाँ; वमन; क्रिमि-रोग।

उपयोगिता और आभास।—विसूचिका और उदरामय रोगमें, किसी खास अवस्थामें आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देता है। इसकी लक्षणावली बहुतसे अंशोंमें इलाटेरियम, क्रोटन-टिग्लियम और वेरेट्रम-एल्बमकी तरह है। मल पानीकी तरह और वेगसे निकलता है। रोगी उदास भावसे सोया रहता है, किसी तरहकी तकलीफ़ नहीं प्रकट करता; पर उसकी मूर्त्ति मानसिक बेचैनी और तकलीफ़ प्रकट किया करती है; दोनों आँखें नीली रेखासे घिरीं और चेहरा उतरा हुआ; मुख-विवर, जीभ और गलेमें सूखापन और जलन या उसमें पानीकी तरह लार संचय हुआ करती है; दुर्दमनीय जलन-भरी प्यास और डकार; बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा हरे रंगका थक्का-थक्का पित्त और श्लेष्मा या अण्डलालकी तरह पदार्थकी कै हुआ करती है; पाकस्थलीमें जलन मालूम होती है; रह-रहकर एकाएक पाकस्थलीके संकोचनकी वजहसे भयानक दर्द पैदा हो जाता है; पेट आसमान वायुसे

कारण फूला रहता है और उसको छूना सहन नहीं होता। पेटमें इस तरहका कलकल गड़गड़ शब्द होता है मानो बोतलसे पानी ढाला जा रहा है, पाख़ाना होनेके पहले और बाद यह आवाज़ बराबर समभावसे सुन पड़ती है। ऊपरी और निचले पैरमें ऐंठन हुआ करती है; पाखाना होनेके पहले और बाद यह शब्द समान भावसे सुन पड़ता है; ऊपरी और निचले पैरमें ऐंठन होती है; देह बरफ जैसी ठण्डी रहती है और सारे शरीरमें ठण्डा और लसदार पसीना होता है।

लक्षणावली

मन।—सारा शरीर शीतल और पाकस्थलीमें जलनके साथ चित्तकी चञ्चलता। प्रशान्त चित्त; उदास-भाव; यन्त्रणा बर्दाश्त नहीं कर सकता; सारे शरीरमें सुस्ती मालूम होती है। दर्द पैदा करनेवाले उदरामयमें शरीर भाफ़की तरह हलका और चित्त प्रफुल्ल रहता है।

मुखमण्डल।—चेहरा और माथा गर्म; चेहरा रक्तहीन, उजला और दोनों आँखें नीले घेरेसे घिरीं। मुख-विवर, जीभ और गलेमें सूखापन और जलन और उनमें बहुत पतली लार संचित हुआ करती है। रातमें मुख-विवर और जीभ सूखी रहती है, पर रोगीको प्यास नहीं लगती।

पाकस्थली।—दुर्दमनीय जलन-भरी प्यास, पानी पीनेसे प्यास बिलकुल ही नहीं जाती। रोगी कै हो जानेके भयसे पानी नहीं पीना चाहता। बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा हरे रङ्गका पित्त या श्लेष्मा वमन हो जाता है (आर्स, बिस्मथ)। बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह लार-भरा पदार्थ वमन होता है (मर्क-कोर, प्लम) और इसके साथ ही बराबर पानीकी तरह दस्त हुआ करता है; पाकस्थलीके एकाएक संकोचनकी वजहसे भयानक दर्द और जंघाकी पोटलीमें ऐंठन हुआ करती है (कूप्रम, सिकेलि, वेरेट)। शरीर बरफकी तरह ठण्डा और लसदार पसीना। पाकस्थलीमें जलन और उत्ताप मालूम होना। पाकस्थली और आँतोंका प्रदाह।

अन्त्राशय।—उदर आध्मान वायुसे फूला रहता है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता। अन्त्राशयमें ऐसा मालूम होता है मानो एक गोल पदार्थ लुढ़क रहा है। अन्त्रशूल—अस्त्राघात और शूलकी तरह दर्द। उदरमें ज़लन, ठण्डक पानिको आशासे शरीरका आवरण उतार डालता है और

जमीनपर सोया रहता है। नाभिसे कमरतक मानो रह-रहकर शूल गड़नेकी तरह मालूम होता है। अन्त्रशूलाधिकारमें उदरमें कलकल ध्वनि सुन पड़ती है, वायु सेवनके लिये बाहर घूमनेके समय बढ़ जाती है। पाखाना होनेके पहले और बाद पेटमें भकभक शब्द होता है, मानो बीतल या पीपेके छेदसे पानी निकल रहा है। पतला पाखाना होनेके बाद यह आवाज़ आनी बन्द हो जाती है।

मलांत्र और मल।—एकाएक मलवेग और उदरमें लगातार कलकल शब्द, मानो पेट पानीसे भरा है, बाईं ओर ही यह अधिक सुन पड़ता है। उदरामय या विसूचिका,—मल जलवत् और तेज़ स्रोतके जलकी तरह बड़े वेगसे निकलनेवाला, चावलके सिझाये हुए पानी या माँड़की तरह अर्थात् फेनकी तरह; विसूचिकाकी पहली अवस्था,—हिमाङ्ग (Collapse) होनेके पहले उदरामयमें कभी-कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें सूत्र या केंचुएकी तरह कृमि मिला रुखड़ा मल निकलता है। सर्दी लगने बाद बहुत सुस्ती पैदा करनेवाला पानीकी तरह उदरामय।

प्रत्यङ्ग आदि।—प्रचण्ड आक्षेपकी वजहसे प्रत्यङ्गोंकी पेशियोंका प्रबल संकोचन; जंघाकी पोटलीकी पेशीका प्रबल खिंचाव या सिकुड़कर पिण्डकी तरह बन जाना। चलनेके समय एँड़ीमें बहुत दर्द मालूम होता है। सारे शरीरकी शीतलता और उठनेकी शक्तिका न रहना; नाड़ी बहुत क्षीण और तेज़, थोड़ा भी शरीर हिलानेपर बढ़ जाती है। मुखमण्डल और माथेमें उत्ताप और पीठमें शीत मालूम होना। बरफकी तरह ठण्डा हाथ और नीले रङ्गके नखके साथ शीत मालूम होना। अंगमें स्थान-स्थानपर नीलापन; जाड़ा मालूम होना और लसदार पसीना होना।

वृद्धि।—घरके बाहरी भागमें वायु सेवनके लिये चलनेके समय, आधी रातके बाद।

घटना।—ठण्डे पानीमें हाथ धोनेपर।

सम्बन्ध।—**सदृश।**—क्रोटोन-टिग, युफ्रे, करोल, इलैट, आर्स, वेरैट।

तुलनीय।—विसूचिकामें (विरेट्रम); जलपानके बाद ही वमन (आर्सेनिक); जोरसे पाखाना होना (इलाटे)।

शक्ति।—३रे दशमिकसे ३० शततमिक क्रम।

जैट्रोफा इयुरेन्स

(JATROPHA URENS)

दूसरा नाम ।—स्पार्ज्ज नेटेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे उद्भिदसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० एलेनके मतसे यह एक विषाक्त उद्भिद और नहीं है । शोथ, हृत्पिण्डका आंशिक पक्षाघातकी वजहसे बेहोशीके लक्षणमें यह विशेष लाभदायक है ।

शक्ति ।—६—३० ।

जेक्विरिटी

(JEQUIRITY)

दूसरा नाम ।— ऐवास-पिकटोरियस ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—बीजसे विचूर्ण या अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—आँखोंपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है । आँखोंका प्रदाह और जखम ; आँखसे बहुत ज्यादा पीब निकलना, पलकोंपर गुहौरी वगैरह लक्षणोंमें और मुखमण्डलकी ग्रन्थियोंके दूषित जखममें इसका भीतरी और बाहरी प्रयोग करनेपर बहुत फायदा होता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—जेकुई रिटल, इपिकाक ।

शक्ति ।—६, ३० ।

जुग्लैन्स कैथर्टिका या सिनारिया

(JUGLANS CATHARTICA Or CINEREA)

दूसरा नाम ।—बटर नट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—मूलकी छालसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—मुँहासे ; कलेजेका दर्द ; बगलमें दर्द ; वक्षमें दर्द ; सर्दी ; पामा ; विसर्प ; सर-दर्द ; वक्षोदक ; नाना प्रकारके चर्म-रोग ; झिल्लिका ; अरुणिका ; दाद ; जखम ; पृष्ठ-फलकमें दर्द ; दृष्टि-दोष ।

उपयोगिता और आभास ।—सर-दर्द, सरके पिछले भागमें तेजीसे फैलनेवाला बेधनेकी तरह और चिलक मारनेकी तरह दर्द । (२) कामला पाण्डु-रोग ; यकृत-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द और दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे दर्द, सरके पिछले भागके दर्दके साथ रातमें ३ बजनेके समय रोगीकी नींद खुल जाती है, फिर नींद नहीं आती ; पित्त-मिला, पीली आभा लिये हरे रङ्गका, कूथनके साथ मल और मलद्वारमें जलन ; वक्षोदक या वक्षान्तर-वेष्टनीका शोथ, जब शरीरकी त्वचापर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल दाग सब निकलते हैं । फेफड़ेसे गहरे लाल रङ्गका खूनका स्राव (जुग्लैन्स-रिजिया—जरायुसे) । हृत्शूल । कक्ष-प्रदेशमें या बगलमें तेज़ सुस्ती पैदा करनेवाला दर्द (कक्षमें प्रदाह—जुग-रिजो), दाहिने बगलसे बाँहमें दर्द चला जाता है । बार-बार जलन पैदा करनेवाले पाखानेके साथ सरमें दर्द, गोल जखम, पार्श्वके चारों ओरके तन्तुओंको ध्वंसकर फैलता जाता है । आरक्त ज्वर इत्यादि रोगोंमें इस दवासे लाभ दिखाई देता है ।

लक्षणावली

मन ।—एकाकी (अकेला) रहना चाहता है (कैप्स, ऐकि, साइक्ले, हायोसाया, इग्ने, आक्साइ-ट्रोप) ; "खूब खाने-पीनेपर नींद आयगी"—ऐसा सोचकर ही बहुत प्रसन्न हो जाता है, किसी विषयमें मन लगाने या सोचनेसे बहुत ही नाराज़ रहता है (ऐलोज, कैप्स, कार्बो-ऐन, कोबाल्ट, कोना,

इयुपस-टी)। मस्तिष्कमें आच्छन्नता रहनेकी वजहसे पढ़नेमें मन नहीं लगा सकता। हमेशा अन्यमनस्क रहता है, क्या करना चाहता था, यह भूल जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, पाकस्थलीमें सुस्ती और शून्यता मालूम होना, इसके साथ ही अन्त्राशयतक यह शूलभाव फैल जाता है। सवेरे नींद खुलनेपर सर-दर्द (ब्राई, चेलिडो, आइरिस-वा, नक्स-वोम), पीला लेप चढ़ी जीभके साथ दोपहरके पहले होनेवाला सर-दर्द, दाहिने पार्श्वमें अधिक मालूम होना, माथा पीपेकी तरह बड़ा मालूम होता है (डलियेकी तरह—जेल्स ; गिर्जेकी तरह बड़ा—नक्स-वोम ; मानो उसका बाहरी आयतन बढ़ रहा है—लैक-डिफ्लो)। बार-बार जलन करनेवाले पेशाबके साथ सरमें दर्द। पीछेवाले कपालमें स्थित (कपालके ठीक नीचेवाले भागमें) सर-दर्द, माथेके पिछले भागमें तेज़ बेधनेवाला यकृतकी बीमारीकी वजहसे दर्द। सरमें खुजली—रोगी माथा खुजलाया करता है (बोवि)।

मुखमण्डल आदि।—चेहरा लाल, सूखा और जलन-भरा। दोनों आँखें लाल और फूली और ऐसा मालूम होता है, मानो एक दूसरेकी ओर खिंच रही हैं। एकाएक उठनेपर या चलना आरम्भ करनेपर दिखाई नहीं देता। सरमें चक्कर आ जाता है और शरीर सुन्न मालूम होता है। नासामूल और नासादण्ड बहुत सुन्न मालूम होता है—रगड़नेपर घटना। नाकके ऊपर गोल जखम होकर चारों ओरके तन्तुओंको ध्वंस करता हुआ फैलता है।

मुख-विवर।—जीभ, साधारणतः सफेद लेप चढ़ी, सवेरे पीले रङ्गका लेप मालूम होता है और गलेमें जलन तथा कुटकुटी होती है। निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं, खासकर दाहिने पार्श्वका गलक्षत—दोपहरके पहले गलेमें रुखड़ापन और सूजन मालूम होती है, विशेषकर निगलनेके समय।

पाकस्थली।—राक्षसी भूख, बहुत प्यास ; लगातार पानी पीनेकी इच्छा। रातमें मिचलीका बढ़ जाना। पाकस्थलीमें जलन। सर-दर्दके साथ पाकस्थलीमें उदरतक फैलनेवाला खालीपन और सुस्ती मालूम होना।

अन्त्राशय।—कामला या पाण्डुरोगमें तथा यकृत-प्रदेशमें और दाहिने पृष्ठफलकके नीचे (ब्राई, चेलो, नक्स) सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना।

दोपहरके भोजनके बाद उदरमें दर्द और इसके बाद पतला पाखाना होना और मलद्वारमें जलन ; सोयी या अर्द्धसुषुप्तावस्था त्यागकर उठनेके समय वंक्षण या पुट्ठेके स्थानपर जखमकी तरह दर्द। पाखाना हो जानेपर पेटमें जलन मालूम होती है।

मलान्त्र, मल और मूत्र।—पाण्डु-रोगमें उदरामय, बहुत अधिक कूथन पैदा करनेवाला पित्त-भरा मल या पीली आभा लिये हरा मल—पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें जलन। विदेशमें खुली जमीनपर खेमेमें रहनेके समयका उदरामय (बैप्टी, सिप्टि सिमिन)। बार-बार जलन करनेवाले पेशाबके साथ सरमें दर्द, मलान्त्रसे मूत्रस्थलीतक फैलनेवाला तेज़ दर्द ; चलनेके समय घटता है।

श्वास-यन्त्र आदि।—फेफड़ेमें काटनेकी तरह दर्द और छातीमें दबाव मालूम होना। फेफड़ेसे खूनका स्राव ; खून गहरे लाल रङ्गका और जमा (जरायुसे ऐसा ही स्राव—जुग्लेन्स-रिजिया), वक्षोस्थिलके पीछे दर्द ; ऊपर चढ़ने या घरके बाहरी भागमें घूमते समय मालूम होता है या बढ़ जाता है। वातकी वजहसे वक्षोदक या वक्षान्तर्वेष्टनीका शोथ, शरीरकी त्वचापर मच्छड़ काटनेकी तरह लाल बिन्दु सब दिखाई देते हैं। तीसरे पहर ६ बजनेके समय, चलनेके समय एकाएक बाईं छातीमें ऐसा दर्द मानो मोच खा गयी है। इसी वजहसे रोगीको बाध्य होकर खड़ा हो जाना पड़ता है, परन्तु उससे भी घटता नहीं है।

प्रत्यङ्ग आदि।—मेरुदण्डमें ऊपरसे नीचेतक सुई गड़नेकी तरह मालूम होना, झुकनेपर दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्द, रोगवाला अंश हिलानेपर या लम्बी साँस लेनेपर बढ़ जाता है, त्रिकास्थि और श्रोणिदेशके बीचवाली सन्धिमें दर्द, पूर्वाङ्ग और बैठनेवाली अवस्थामें बढ़ जाता है। कन्धा और कलाईमें वातका तेज़ दर्द, दाहिनी बगलमें तेज़ दर्द, यह दर्द दाहिने बाँहमें चला जाता है (दाहिनी बगलकी भीतरवाली ग्रन्थिका प्रदाह और छोटे-छोटे फोड़े निकलना—जुग-रिजि)। सीढ़ी चढ़नेके समय दाहिनी जंघामें दर्द मालूम होता है। सुन्न भाव—बैठे-बैठे उठकर चलनेके समय घट जाता है।

त्वचा।—कामला—यकृत-प्रदेशमें और दाहिने पृष्ठ-फलकके नीचे सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ ; शरीर गर्म होनेपर खुजलानेवाले दाने निकल

आते हैं और वे सुरसुर करते हैं। फुन्सियाँ निकलना। निम्नाङ्गमें—त्रिकास्थि-प्रदेशमें और हाथके ऊपर अकौता और अन्य स्थानोंपर अरुणिकासे ढँके रहनेकी तरह लाल वर्ण। बाँहमें खुजली—खुजलानेपर घटना।

वृद्धि।—शरीर गर्म होनेपर (खुजली)। चलनेमें (हृत्शूल); सीढ़ीपर चढ़ने और झुकनेपर।

उपशम।—चलनेके समय (मलान्त्रसे मूत्रनालीतक फैलनेवाला दर्द) और उठनेके समय (सर-दर्द)।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष**।—**दोषघ्न**।—ब्रायोनिया।

सदृश।—ब्राई, नक्स, चेलिडो, बेप्टी, सेप्टिसिमिन, ओलियेन, जेलस, काकूय, ग्लोन।

तुलनीय।—ब्रायो (हृत्शूल, वात, सर-दर्द, वक्षका शोथ, यकृत); चेलिडो (यकृत) : नक्स-वोम (कामला); आइरिस (अतिसार); रास, आर्स (त्वचा) इत्यादि।

शक्ति।—मूल अर्कसे ६ठा दशमिक क्रम।

जुग्लैन्स रिजिया या नक्स-जुग्लैन्स

(JUGLANS REGIA Or NUX JUGLANS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—मुँहासे ; मलद्वारमें जलन ; बगलकी गांठमें पीव ; उपदंश ; आँखमें दर्द ; आध्मान ; सर-दर्द ; रजसाधिक्य ; प्लीहामें दर्द ; दादकी तरह दर्द वगैरह बीमारियोंमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—इससे नाना प्रकारके चर्म-रोग उत्पन्न हो जाया करते हैं। जैसे—कानके पीछे चकत्तेकी तरह दाद, बहुत खुजलाहटके कारण रोगीको रातमें नींद नहीं आती, बगलकी गांठमें प्रदाह होकर फोड़ा हो जाता है या उसपर पपड़ी जमा फटा घाव हो जाता है, पहले दाहिनी, फिर बायीं बगलमें फोड़ा फैलता जाता है। शरीरमें जगह-जगह घमौरीकी तरह बहुत खुजली पैदा होती है। शरीर धोने अथवा खुला रखने-

मात्रसे ही खुजली बढ़ जाती है ; गौण उपदंशके उद्भेद, सन्ध्याके बाद शायितावस्थामें मस्तिष्कमें मादकता अनुभव होना और ऐसा मालूम होना, मानो शून्य-मार्गसे कहीं उड़ा जाता है ; सभी विषयोंमें असन्तोष या असहिष्णुता प्रकट होती है और मनोवृत्तियाँ एकदम आलस्यपूर्ण या जड़ हो जाती हैं । माथेमें विशेषकर ललाटमें (माथेके पिछले भागमें—जुग्लैन्स सिनारिया) तेज़ अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द । रमणके बाद पुं-जननेन्द्रियमें प्रदाह और त्वचाका क्षय हो जाना ; जरायुसे गहरे लाल रङ्गके जमे खूनका स्राव, पित्त-मिला उदरामय। उदर आध्मान-वायुसे फूल जाता है और उसमें उत्तेजना ; पाचन-क्रियामें विकार और उसके साथ ही सहानुभूतिकी वजहसे शरीरके अन्यान्य अंशोंकी बीमारियाँ वगैरह जुग्लैन्स-रिजियाकी प्रधान क्रिया-निर्देशक है ।

लक्षणावली

मन ।—सन्ध्याके बाद सोनेके समय माथेमें नशा-सा मालूम होता है और ऐसा मालूम होता है कि मानो माथा शून्यमें उड़ रहा है । रोगी सन्ध्याके समय अत्यन्त असन्तोष और असहिष्णुता प्रकट करता है । ज्यादा बोलना पसन्द नहीं करता ; पढ़नेमें अमनोयोग ।

मस्तक ।—ललाटमें अस्त्र बेधनेकी तरह तेज़ दर्द (सरके पिछले भागमें जुग्लैन्स-सिना) । माथा और नाकमें सर्दीकी पूर्वावस्थाकी तरह अनुभव होना । हाथ-पैर ठण्डे और माथेमें जलन पैदा करनेवाला उत्ताप । आँखके ऊपरी प्रदेशमें दर्द, शरीर, माथा या आँख हिलानेपर बढ़ना ; औंघाई और बार-बार जम्हाई, इसके साथ ललाटमें तेज़ दर्द, कनपटीमें टपक, निर्मल वायु लगनेपर घटना और गर्म कमरेमें प्रवेश करनेपर फिर बढ़ जाना । माथेके बाएँ पार्श्वमें अधकपारीके दर्दकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी बोल नहीं सकता ।

अन्नाशय आदि ।—पाकाशयमें पूर्णता और सूजनकी वजहसे रोगी भरपूर भूख रहनेपर भी खा नहीं सकता, डकार आनेपर घटना । भोजनके बाद तेज़ हिचकी । उदर आध्मान-वायुसे भरा, कड़ा और भारी मालूम होता है और बार-बार मल वेग, डकार और वायु निकलने बाद आराम मालूम होता है, उदरमें दबाव और खींचनकी तरह दर्द, शरीर हिलानेपर बढ़ जाता है और रजःस्राव आरम्भ होनेपर घटता है ; इसके बाद आठ दिनोंतक बहुत ज्यादा परिमाणमें काली आभा लिये खूनका स्राव हुआ करता है, कभी-कभी

थक्का-थक्का खून-मिला स्राव, रोगिनी बहुत सुस्त हो पड़ती है और किसी खाद्य पदार्थपर उसकी रुचि नहीं रहती। प्लीहा-प्रदेशमें दबाव और खींचनकी तरह दर्द—लम्बी साँस लेनेपर, हँसने या झुकनेपर दर्द बढ़ जाता है।

मलान्त्र और मल।—पतला पाखाना, उदरमें दर्दके साथ पहले बड़ा कोमल, इसके बाद पतला पाखाना होता है। लम्बा लेंड़ पाखाना होनेपर मलद्वारमें भार और जलन। संध्याके समय शायितावस्थामें मलद्वारमें खुजली और सुई बेधनेकी तरह मालूम होनेकी वजहसे रोगी सोया नहीं रह सकता और इसी वजहसे घरमें टहला करता है।

पेशाब।—दिन-रात बार-बार पेशाबका वेग और प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब निकलता है (स्क्रियुला, नक्स), बहुत अधिक पेशाब होनेपर भी प्यास न रहना। गाढ़ा लाल रङ्गका पेशाब।

पुं-जननेन्द्रिय।—स्त्रीके साथ रमणके बाद शिश्नमें जलन और मेढ्र-त्वचा और लिङ्गमुण्डके संयोगस्थलकी त्वचा क्षय हो जाती है। इस स्थानपर क्रमसे पीव संचय होकर जखम हो जाता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयके १५ दिन पहलेसे आरम्भ होकर ८ दिनोंतक स्राव हुआ करता है और कभी-कभी काला थक्का-थक्का खूनका स्राव होता है, स्रावके पहले उदरमें बहुत दबाव और खींचनकी तरह दर्द मालूम होता है और स्राव हो जानेपर रोगिनी बहुत सुस्त हो पड़ती है और किसी तरहकी खाद्य सामग्रीपर उसकी रुचि नहीं रहती।

त्वचा।—कानके पीछे लाल चकत्तेकी तरह दाद, खुजली रातमें इतनी अधिक बढ़ जाती है कि रोगी सो नहीं सकता। बगलकी गाँठें फूलकर फोड़ेमें परिणत हो जाती हैं (हिप)। बाँह और बगलमें फटे घाव पैदा हो जाते हैं, पहले दाहिने फिर बाएँ भागपर रोगका आक्रमण होता है। गर्दनके पिछले भागमें लाल वर्णकी तरह चकत्ते। खुजलानेपर उनसे रस बहता है (सेलिन), उद्भेद आदिको धोनेपर या शरीर खोल रखनेपर खुजली बढ़ जाती है। खुजलानेवाले दाने सब, उनमें पीव पैदा होनेके कारण फोड़े बन जाते हैं। कन्धा और यकृत-प्रदेशमें रक्त, फोड़ा, वातकी वजहसे गांठोंका फूलना, उपदंशके पारा-विष-दूषित तथा वातसे उत्पन्न फोड़े और दाद प्रभृति हो जाते हैं। दाहिनी बगलमें पहले जलन, त्वचा जखम-भरी और फटी-फटी तथा

क्रमसे लाल पपड़ोसे ढँक जातो है और इसके बाद उनमें रस मिलकर वस्त्र आदिमें लगनेपर हरी आभा लिये पीला दाग पड़ता है तथा जिस स्थानपर वस्त्रमें लगता है वह सूखकर कड़कड़ करता है। इसीलिये बगलमें कभी-कभी इतना दर्द होता है कि उस हाथसे किसी तरहका काम नहीं किया जाता। दाहिनी बगलसे जखम क्रमसे बायीं बगलमें पैदा होते हैं।

वृद्धि।—शरीर हिलाने, बोलने, हँसने, जखम आदि धोनेपर, संध्या और रातके समय और शरीर खोल रखनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—रास।

सदृश।—जुग्लेन्स-सिना, ग्रैफ, रियुमिक्स, मेजेर, इलेप्स, लाई, सल्फ, एरन्डोलिया-रोब।

तुलनीय।—रासटक्स (त्वचा); ग्रैफाइट (दादकी तरह चकत्ते); सियानोथ (प्लीहा); लाइको (पेटमें वायु)।

शक्ति।—मूल अर्कसे ३रा दशमिक क्रम।

जङ्कस एफ्यूसस

(JUNCUS EFFUSUS)

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—जड़से मदर-टिंचर तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—दमा; कमरमें दर्द; अश्मरी या पथरी; सर्दी; शोथ; पेट फूलना; सर-दर्द; वात और मूत्रग्रन्थिकी बीमारीमें लाभदायक है।

उपयोगिता और आभास।—यह पेशाब लानेवाली एक खास दवा है और पेशाब रुकना, पेशाबमें तकलीफ़, मूत्र-पथरी, शोथ और मूत्र-ग्रन्थि वा मसानेकी बीमारीमें विशेष लाभदायक है। शरीरके कितने ही स्थानोंमें बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज़ आना, पेटमें हुड़-हुड़ गुड़-गुड़ वगैरह आध्मान वायुकी आवाज़, छातीमें दबाव और पतली सलाई बिंधनेकी तरह दर्द आदि कई एक इसके प्रधान लक्षण हैं। शरीरके बाएँ अंगके साथ इसकी बहुत घनिष्ठता दिखाई देती है और इसके लक्षण बायें अङ्गमें ही अधिक

प्रकट होते हैं। रास्टक्सकी तरह इसका वातका दर्द भी विश्रामसे बढ़ता है और रास्टक्स तथा नक्सकी तरह शरीरके वस्त्र उतारनेपर जाड़ा बढ़ जाया करता है, वायु छूटनेपर पेट फूलना घट जाता है।

लक्षणावली

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, स्थिर रहनेपर रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो उसके चारों ओरकी चीजें सब चक्कर खा रही हैं; चलनेके समय सरमें चक्कर आनेके साथ-ही-साथ मिचली। सरमें दर्द, सर झुकानेपर ऐसा मालूम होता है कि माथा बीचसे फट जायगा। सवेरे शय्यासे उठ बैठनेपर ललाट और माथेके पिछले भागमें छेदनेकी तरह दर्द, रोगवाले अंशमें पीव जमा हो गया है, ऐसा मालूम होता है। कुछ देरतक सोनेपर दर्द एकदम गायब हो जाता है। कपालके पिछले भागके दाहिनी ओरसे दाहिने कानतक भीतर बुलबुले फूटने जैसी आवाज़ आती है।

आँख।—पलकोंकी बगलमें खुजली (नक्स, स्टैफाइ; मलनेपर बन्द हो जाती है (आँखें मलनेपर धुँधली दृष्टिका घटना—क्रोकस, पल्स)।

मुँह और गलेके भीतर।—सवेरे मुँहके बाएँ कोनेके ऊपरी अंशमें सूक्ष्म शलाका वेधनेकी तरह दर्द होता है, मानो उसमें एक तेज़ काष्ठ-शलाका (सींक) गड़ रही है। दाहिनी हनु-सन्धिमें बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज़ सुन पड़ती है और ऐसा मालूम होता है मानो उसका भीतरी अंश फूल गया है। जीभपर सफेद पीला लेप चढ़ा रहता है और दोपहरके भोजनके बाद मुँहमें गोंदकी तरह स्वाद मालूम होता है। निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो गलेकी ग्रन्थियाँ दोनों फूल गयी हैं। बिना खाँसे ही बहुत ज्यादा परिमाणमें पीला बलगम निकलता है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—उदरका ऊपरी भाग फूल उठता है। लगातार पेट गड़गड़ानेके कारण रोगीको बाध्य होकर पाखाना जाना पड़ता है; पर जरा भी पाखाना होनेके बदले जोरसे वायु निकलती है। उदरके दाहिने पार्श्वमें ऐसा मालूम होता है मानो फोड़ा निकलना चाहता है। मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है। छोटी-छोटी कोमल गुटिकाएँ निकलती हैं।

पेशाब।—मूत्रनालीमें जकड़ जाने या सट जानेकी तरह मालूम होता है और ऐसा अनुभव होता है कि उसमें कोई सजीव पदार्थ है। मूत्र कीचड़-भरे पानीकी तरह; उसमें लाल रङ्गकी तली जमती है। मूत्रकृच्छ्र; मूत्राश्मरी।

प्रत्यङ्ग आदि।—त्रिकोण पेशीका फड़कना या सिकुड़ना-फैलना दिखाई देता है। लिखनेके समय बाएँ हाथमें ऐंठनकी तरह दर्द। चलनेके समय बाएँ उरुमें खींचन होती है, मानो कण्डराएँ सब सिकुड़कर छोटी होती चली जाती हैं (ऐमोन-म्यूर, कास्टि, साइमेक्स, गुयायेक, नेट्र-कार्ब)। शरीरके बाएँ पार्श्वमें ही दर्द ज्यादा होता है। नितम्ब स्थानकी पेशीका सिकुड़ना और फैलना मानो उसमें कोई सजीव पदार्थ हिल रहा है (क्रोकस-सैट)। जंघाकी पोटलीकी पेशीके भीतर बुलबुले फूटनेकी तरह आवाज़ होती है। दर्द रातके समय बढ़ता है और सवेरे और सन्ध्याके समय फिरसे पैदा हो जाया करता है। रोगवाले अङ्गको मोड़ने या पार्श्वकी ओर टेढ़ा करनेसे दर्द बहुत बढ़ जाता है और फैलानेपर घट जाता है। सवेरे उठनेके समय बहुत जाड़ा मालूम होता है और ओढ़ना उतारनेपर जाड़ा बहुत ही बढ़ जाया करता है। पुराने नश्तरके जखमके भीतर खुजली और ऐसा मालूम होता है कि फिरसे जखम पैदा हो जायगा (ऐसिड-फ्लू, साइलि, ग्रैफ)।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—रास्टक्स (विश्राम और ओढ़ना उतारनेपर बढ़ना); बार्बेरिस (फूटन मालूम होती है); साइलि (दाग) इत्यादि। रास्टक्स, बार्बेरिस, रियुम, स्क्रियुला (बुलबुले फटनेकी आवाज़); ऐसिड-फ्लू, साइलि, नक्स-वोम।

शक्ति।—मूल अर्क और निम्न-क्रम।

जूनिपेरस कम्युनिस

(JUNIPERUS COMMUNIS)

दूसरा नाम ।—जुनिपर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजे पके फलसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मसानेकी बीमारीके कारण शोथ, कष्टरजः, बार-बार पेशाबका वेग, थोड़ा और खून मिला पेशाब आदि लक्षणोंकी एक उत्कृष्ट दवा है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—युकैलिप्टस, टैरिबिन्थिना, जनि-वर्जिनिया, सैबाइना ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति और क्वाथ ।

जुनिपेरस वर्जिनियेनस

(JUNIPERUS VERGINANUS)

दूसरा नाम ।—रेड-सिडर ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—ताजी फुनगीसे अरिष्ट तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—मसानेपर ही इसकी प्रधान क्रिया दिखाई देती है । मूत्राशयमें तेज़ खींचन, कमरमें खींचन मालूम होनेकी तरह दर्द, मूत्राशय-प्रदाह, मूत्र-पिण्डका बढ़ना, जवान आदमियोंका पेशाब रुकनेके साथ शोथ, पेशाब करनेके समय काटने और जलन करनेकी तरह दर्द प्रभृति लक्षणोंमें सुन्दर कार्य करता है ।

इसके अलावा संन्यास, आक्षेप, जरायुसे रक्तस्राव प्रभृति लक्षणोंमें भी यह सुन्दर कार्य करता है ।

सम्बन्ध ।—जुनिपेरस-कम्युनिस ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि ऐसेटिकम

(KALI ACETICUM)

दूसरा नाम ।—कैलि-ऐसिटम ; ऐसिटेट आव पोटास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—चुआये हुए पानीमें गलाकर तरल क्रम तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—ऐलोपैथ इसे साधारणतः एक पेशाब लानेवाली और कभी-कभी विरेचक दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं । होमियोपैथीके मतसे यह बहुत ज्यादा पाखाना होनेके लक्षणमें जैसे हैजा आदि रोगमें और मूत्ररेणु प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है । शोथ, उदरी, फेफड़ेकी आवरक झिल्लीमें जल सञ्चय, उदरामय, क्षारमय मूत्रस्राव प्रभृति लक्षणोंमें इससे बहुत लाभ दिखाई देता है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—ऐसेटिक-ऐसिड, कैलि-कार्ब, ऐमोन-ऐसिड, लाइको ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि आर्सेनिकोसम

(KALI ARSENICOSUM)

दूसरा नाम ।—पोटास आर्सेनाइट ; फाउलर्स-सल्यूशन ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—पहले चुआये हुए पानीमें गला लिया जाता है, इसके बाद सुरासारमें इसका क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :—
मसानेकी बीमारियाँ ; कर्कटका घाव ; बहरापन ; अतिसार ; शोथ ; आँखकी बहुत-सी बीमारियाँ ; खसड़ा ; विषाद ; स्नायुशूल ; बहुत तरहके चर्म-रोग ; जीभकी बीमारी ; शिराका फूलना ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास।—व्रण, विसर्प, विचर्चिका, अकौता वगैरह नाना प्रकारके चर्म-रोगोंमें फायदेके लिये यह बहुत प्रसिद्ध है और इन सब शरीरके दाहिने पार्श्वके चर्म-रोग कैलि-आर्सके (और आर्सेनिक) एक प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। अन्यान्य लक्षणोंमें बाएँ पार्श्वका सर-दर्द, माथा बड़ा मालूम होना, आँखके दोनों गोलोंका बाहर निकल आना ; जीभमें जलन और सुन्न मालूम होना, जीभ बड़ी मालूम होना, उदरोर्द्ध प्रदेशमें मानो एक गोला उठकर श्वासनलीको रोक रहा है, ऐसा मालूम होना, लगातार मिचली ; पाकस्थली खाली मालूम होना ; मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक जलती हुई लोहेकी सलाई घुस रही है ; लक्षणोंकी सामयिकता अर्थात् बँधे समयपर लक्षण पैदा होना इत्यादि कई इसके प्रकृतिगत और सिद्धिप्रद लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—कड़वा बोलनेवाला, विमर्ष, असन्तुष्ट और कलह-प्रिय स्वभाव (अरम-मूर, नैट, पेट्रोल, नक्स, लाई, निकोल-कार्ब, रैनान, वैरेट्र-विरि) ; सभी विषयोंमें ताच्छिल्य ; कोई बात पूछनेपर अकसर जवाब नहीं देता (ऐगार, सैबाड, ऐसिड-सल्फ ; बड़ी अनिच्छासे प्रश्नका उत्तर देता है—कैरिका-पैपाया, रास, ऐसिड-सल्फ) या कर्कश-भावसे उत्तर देता है (कैमो) ; दृष्टि स्थिर और डरावनी मुख-भङ्गी ; यह भाव दो दिनका अन्तर देकर दिखाई देता है।

मस्तक।—अपना माथा बहुत बड़ा मालूम होता है (एपियोल, आर्जेण्ट-नाई, पेरिस ; ऐसा मालूम होता है, कि माथा लम्बा हो गया है—हाइपिरिक)। बाएँ पार्श्वका सर-दर्द, मानो इस स्थानपर जखम पैदा हो गया है और कोई उसे हाथसे रगड़ रहा है ; यन्त्रणाके कारण पागलकी तरह काम करता है। दुधिया फोड़ा (वैरोला-ट्राई, विङ्का-माई, रास-विन, लाई, सिपि, सोरिन)।

आँख।—भय-चकित दृष्टि, आँख मानो धक्का देकर बाहर निकली आ रही है ; आँख चकचौंधी-भरी ; चेहरा म्लान, रक्त-शून्य और दोनों गाल गड्ढेमें धँसे। आँखकी सफेद झिल्ली मोटी और पीले रङ्गकी दिखाई देती है—पाण्डु-रोग, आँख पानीसे भरी, मानो न जाने कितना रोया है (क्रोकस)।

मुख-विवर आदि ।—मसूढ़े फूले और दर्द-भरे। जीभ साफ़ और लाल, कच्चे मांसकी तरह (कैलि-बाई, नेट्र-आर्स) मालूम होती है। जीभके अगले भागके कुछ नीचे एक चिकनी लाल फुन्सी पैदा होकर बहुत जला करती है और जीभमें सुन्नपन पैदा करती है। जीभ फूल उठती है और बहुत बड़ी मालूम होती है (हाइड्रैस, कैलि-बाई, कैलि-आयोड, नेट्र-आर्स), गलेमें और स्वरनलीके मुँहपर दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है मानो टूट जायगा। लगातार बहुत ज्यादा लार बहा करती है और गलनलीमें संकोचन मालूम होता है। चिबुकके ऊपर पपड़ी उजड़नेवाला जख्म पैदा हो जाता है।

पाकस्थली ।—भोजनके बाद दर्द और मिचली; बार-बार अजीर्ण पदार्थोंका वमन। भोजनके बाद पेटमें भार मालूम होना; दो घण्टे तक ऐसा मालूम होना, मानो एक गोला पाकस्थलीसे वायुनलीके मुँहपर चढ़ जाता है और इसी वजहसे साँस रुकना चाहती है। जोरसे वायु छूटनेपर घटना। उदरके ऊपरी भागमें खालीपन और सुस्ती मालूम होना। लगातार मिचली, पेटमें कुछ नहीं रहता।

अन्त्राशय ।—तलपेटमें जलन, तेज़ प्यास; पेट फूलनेकी वजहसे कड़ा और दर्द-भरा हो जाता है। अनजानमें पानीकी तरह मल निकलना और ऐसा मालूम होना मानो मलद्वारमें एक गर्म लौह-शलाका प्रविष्ट कर रही है। उदरमें लगातार मोच खानेकी तरह दर्द और बार-बार मलका वेग हुआ करता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु-द्वारमें फूलगोभीकी तरह या मुर्गेकी पूँछकी तरह उपमांस पैदा होता है। चारों ओर दर्द फैल जाता है और जरायुसे सड़ी गन्ध-भरा स्राव निकला करता है। ऋतु और स्तनका दूध रुक जाता है। बहुत अधिक कमजोरीकी वजहसे रोगिनी शय्यासे उठकर बैठ नहीं सकती, किसी तरहकी ऊँची आवाज़ सुननेपर उसका सारा शरीर काँपा करता है।

त्वचा ।—शरीरकी त्वचा रुखड़ी; शरीर कंकाल-सार। समूचे चेहरेपर विसर्प, कई दिवस बाद उससे रूसीकी तरह छाल निकला करती है। रस-गुटी या मसूरिकाकी तरहके आकारवाला व्रण। खसड़ेकी तरह दाने निकलना। माथेके अलावा सारे शरीरमें अकौता, पहले छोटे-छोटे दानोंकी

तरह निकलते हैं, इसके बाद उनमें पीव-सञ्चय होता है और दोनोंसे पीव या रस निकला करता है और फटे घावमें परिणत हो जाता है। इन सब जगहोंमें असह्य खुजली रहती है और डङ्क मारनेकी तरह और जलन पैदा करनेवाला दर्द पैदा हो जाता है, खासकर कपड़े उतारनेके समय; देह-काण्डमें, दोनों पैरोंमें और दोनों बाहुओंके अगले आधे भागमें यह ज्यादा हुआ करता है। शैवालिका या आपसमें मिली हुई घमौरी; चेहरा, हाथ और तलवा तथा वक्षस्थलके कुछ अंशोंके अलावा समूची देह घमौरीसे भर जाती है। तन्तुओंको क्षय करनेवाला जखम, गहरा और घूमा हुआ पार्श्व; हाथ-पैरके गाँसोंको त्वचा फटी हुई (वात-गुटिका—कैलि-बाई, कैलि-आयोड)। वातकी वजहसे और उपदंशसे पैदा हुआ दर्द। पाण्डु-रोग, आँखकी सफेद त्वचा पीली हो जाती है (चेलिडो, मर्क, कैमो, क्रोटेल, फास)।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—नेट्र-आर्स, सोरिन, चायना, (सामयिकता); साइक्लू (आँखके गोलेकी स्थिरता); लोरो, लैके, ओपि, जुग्लैन्स-रिजि, कैलि-बाई, आयोड, लैपिस, ऐल, मर्क-कोर, मेजिर, ऐसिड-नाई।

दोषघ्न।—"आर्सेनिक" सदृश।

शक्ति।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक।

कैलि बाइक्रोमिकम

(KALI BICROMICUM)

दूसरा नाम।—बाइ-क्रोमेट आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—इसका विचूर्ण और चुआये हुए पानीमें द्रव या तरल क्रम। इसके बाद उच्च क्रम सब सुरासारमें तैयार होते हैं।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे; खूनकी कमी; दमा; हड्डीमें नाना प्रकारकी गोटियाँ; श्वासनली-प्रदाह; काली खाँसी; दाह; सर्दी; निम्न-कटिका शूल; आँखोंका प्रदाह; कब्जियत; आँखके श्वेत आवरणका मैलापन; आँतोंमें जखम; अजीर्ण; कर्ण-

प्रदाह ; दुबलापन ; मृगी ; नाकसे रक्त-स्राव ; आँखकी पुतलीका प्रदाह ; पाकाशयका जखम और प्रमेह ; वात ; सर-दर्द ; सविराम ज्वर ; कटिवात ; खसड़ा ; खसड़ाके बादवाली खाँसी ; कानका दर्द ; स्नायुशूल ; छाती दबनेकी बीमारी ; नाकमें दबावकी तरह दर्द ; जखम ; नकसीर ; नाकमें पालीपस या अर्बुद ; योनिके बाहरी भागमें खुजली ; आमवात ; गृध्रसी या पैरका झुनझुनीवाला वात ; गण्डमाला ; सूँघनेकी शक्तिमें भ्रम ; सूर्योदयके साथ-ही-साथ सर-दर्द बढ़ जाना ; उपदंश ; गलेका जखम ; गलेमें केश रहनेकी तरह मालूम होना ; तम्बाकूका सहन न होना ; स्वरनालीका प्रदाह या जखम ; मसे ; क्रूप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—नीचे लिखे कई इसके प्रधान और अव्यर्थ लक्षण हैं:—(१) मांसल—मोटा-ताजा, गोरा रङ्ग, कोमल देह, उपदंश और श्लेष्मामय दोषवाले मनुष्योंके लिये यह विशेष उपयोगी हैं। (२) इसके सभी श्लेष्माके स्राव बहुत गाढ़े, लसदार या रबरकी तरह होते हैं ; यह स्राव वायुनली, नाक, जरायु या जखम, जहाँ कहींका हो, ऐसा ही होता है। (३) इसके जखम सब रोगवाले अंशको छेद देते हैं। (४) सर-दर्द—मानसिक चक्षुके ऊपरके और माथेके दाहिनी ओरके अंशपर ही अधिकांश स्थानोंमें इसका आक्रमण हुआ करता है, दर्द आरम्भ होते ही आँखसे दिखाई नहीं देता और दर्द बढ़नेके साथ-ही-साथ दृष्टि-शक्ति फिरसे लौट आती है। (५) पैत्तिकता या पित्ताधिक्य—शरीरकी त्वचाका रङ्ग पीला और फुन्सियोंसे भरा ; जीभ मैलसे ढकी और जगह-जगहपर सफेद और कितनी ही जगह लाल। कूथनके साथ सवेरेके समय पानीकी तरह पतले दस्त। (६) आँखके सफेद आवरणको फाड़ डालनेवाला जखम। (७) दोनों गल-ग्रन्थियाँ फूलीं और जखम-भरीं और उनसे पीवकी तरह रसका स्राव होता है। जीभकी जड़का स्थान पीले रङ्गका और वहाँसे इसीकी प्रकृतिका स्राव होता है ; उपजिह्वा फूलकर एक थैलीकी भाँति हो जाती है। (८) रोहिणी या नकली झिल्ली पैदा हो जानेका लक्षण। उपझिल्लीका प्रदाह—जीभ पीले लेपसे ढँकी या सूखी और लाल, नकली झिल्ली दृढ़ सूत्रमय और उसका रङ्ग कोतीकी तरह सफेद, वायुनली और स्वरनलीकी ओर फैलनेवाली। (९) नाककी जड़में दबावकी तरह दर्द—नासारन्ध्रसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव और जमा हुआ सूखा श्लेष्मा खण्ड-खण्ड निकला करता है।

श्लेष्माका स्राव रुकनेपर सरके पिछले भागसे ललाटतक भयानक दर्द पैदा हो जाता है। (१०) पाकाशयका गोल जखम, गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा और रक्तका वमन ; भोजनके बाद पेट फूलना। (११) शरीरकी अंगुलीसे अगले भागके एक परिमित स्थानमें दर्द, यह दर्द तेजीसे एक स्थानसे दूसरे स्थानपर चला जाता है और एकाएक पैदा होकर एकाएक ही गायब हो जाता है। (१२) वात-वेदना और रक्तामाशय पर्यायक्रमसे पैदा होते हैं—एकके प्रकोपके समय दूसरा रुका रहता है। इसका दर्द तेजीसे जगह बदला करता है और एकाएक पैदा होता है और हठात् ही गायब भी हो जाता है।

लक्षणावली

मन ।—मनुष्य पसन्द नहीं करता ; सभी विषयोंमें ताच्छिल्य प्रकट करता है ; बहुत शिथिलताका भाव ; शारीरिक और मानसिक परिश्रम करनेकी इच्छा न रहना ; सामान्य विरक्ति मालूम होनेपर पाकस्थलीमें गड़बड़ी मालूम होनेके साथ ही उदासी और दुःखित भाव प्रकट करने लगता है।

मस्तक ।—एकाएक आसनसे उठनेपर सरमें चक्कर आ जाया करता है। सरमें चक्कर, शय्यामें उठ बैठनेपर घर घूमता हुआ-सा मालूम होता है, इसके बाद सोनेपर सरका चक्कर बढ़ जाता है और ओकाई आने लगती है (उठनेके समय, माथा झुकाने या ऊपरकी ओर देखनेपर—पोडो, पल्स ; गाड़ीमें सवारी करनेके समय—काक्कु, हिप ; सोनेके समय या करवट बदलनेके समय—कोना ; सर उठानेपर—सिङ्को ; सीढ़ी चढ़नेके समय—कैल्के ; उतरनेके समय—फेरम)। सर-दर्द आरम्भ होनेके पहले ही आँखसे दिखाई नहीं देने लगता (जेल्स, लैक-डिफ्लो) ; रोगीको बाध्य होकर सो जाना पड़ता है। रोशनी और शब्द बहुत ही विरक्तिकर मालूम होते हैं ; दर्द बढ़नेके साथ-ही-साथ दृष्टि-शक्ति फिरसे लौट आती है (आइरिस, साइलिसिया, नेट्र-मूर, सोरिन, लैक-डिफ्लो)। दाहिनी ओरके चक्षुगोलकपर दर्द बराबर समयका अन्तर देकर पैदा होता है। नासा-मूलसे बाईं आँखके ऊपरवाले स्थानतक फैलनेवाला डंक या काँटा गड़नेकी तरह भयंकर दर्द, इसके साथ ही दृष्टि-लोप, दर्द सवेरे आरम्भ होता है), मध्याह्नमें बढ़ जाता है और सन्ध्यामें आराम हो जाया करता है। बराबर समयका अन्तर देकर पैदा होनेवाला

अर्द्ध-अवभेदक या अधकपारीका दर्द, अंगुलीके अगले भाग द्वारा उसे दबा रखता है, इतने छोटेसे स्थानमें दर्द होता है। ललाट-देशका सर-दर्द, बाईं भौं पर ही ज्यादा होता है (मिचली और वमनके साथ दाहिनी भौंपर—सैङ्गिविन)। सर्दी रोगाधिकारमें—नाकका स्राव रुके रहनेकी वजहसे सरके पिछले भागसे ललाट देशतक भयानक दर्द मालूम होता है (सिङ्कोन, नक्स-वोम), मूर्द्धदेशमें मानो एक भारी चीज़ दबाई हुई है, ऐसा दबाव मालूम होना (ऐलो, कैनाब-सैट, कैक्ट ; ललाट में इस प्रकारका दबाव मालूम होना—ऐको, बेल, नक्स, सल्फ)। मध्याह्न भोजनके कुछ ही बाद अक्षि-प्रदेशमें भार मालूम होना और टपक पैदा करनेवाला दर्द आरम्भ हो जाता है, ऐसा मालूम होता है मानो माथा दो हो जायगा। शय्या या तकिया किसी चीज़पर भी माथा रगड़ने या निर्मल वायुके स्पर्शसे दर्दमें शान्ति मालूम होती हैं और शरीरको हिलाने या माथा झुकानेपर बढ़ जाता है। सूर्यके उदय-अस्तके साथ सरका दर्द पैदा हो जाता है, बढ़ता है और अच्छा भी हो जाया करता है (फास, स्पाइजि, सैङ्गिविन, नैट्र-मूर, टैबाक)। गर्म शोरबा पीने, रगड़ने, निर्मल वायु लगने और भोजन कर लेनेपर इससे पैदा हुआ सर-दर्द घट जाता है ; माथा झुकाने, शरीर हिलाने या रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर घटना (ब्राई, हिपोमेनिस) और रातमें वृद्धि। रोज़ ठीक समयपर सर-दर्द पैदा हो जाता है (नक्स, सल्फ)।

आँख।—नींद खुलनेपर ऊपरी पलक बहुत भारी मालूम होती है, बहुत चेष्टा किये बिना आँख खुली नहीं रखी जा सकती (कोलोफिल, कास्टि, जेल्स, ग्रैफ, सिपिया)। पलकोंमें जलन और प्रदाह तथा बहुत सूजन रहती है। आँखके बगलमें लाल दाने निकलते हैं। पलक फूली-सी मालूम होती है (एपिस, कैलि-कार्ब)। आँखमें जलन मालूम होती है और बार-बार आँख मलनेकी इच्छा होती है ; चक्षु-प्रदाह। सवेरे नींद खुलनेपर आँखें सट जाती हैं और आँखका कोना पीला रहता है और उसमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा संचित रहा करता है। पलकमें नया और बड़ा मांसांकुर पैदा हो जाता है (ऐकोन, आर्स, ग्रैफ, मर्क-कोर, सिङ्गिविन) ; ऊपरी पलकपर एक बहुत बड़ी बतौड़ी पैदा हो जाती है (ऐसिड-नाई, थूजा), आँख हिलानेपर उसमें करकराहट हुआ करती है, मानो उसमें बालके धारदार

कण सब पड़े हुए हों (आर्स, कार्बो-वेज, कोरेल-रूब, डिजि, इयुफ्रे, ऐसिड-फ्लू, हिप, साइलि, सल्फ); वातकी वजहसे आँखकी श्वेत त्वचा और उपतारकाका प्रदाह, इसके साथ ही बहुत अधिक यंत्रणा और रोशनीका सहन न होना। उपतारका प्रदाहकी परिणामावस्थामें काँटा या डंक मारनेकी तरह जगह बदलनेवाला बहुत तेज़ दर्द, बाईं आँखमें अधिक मालूम होता है, कनीनिकाके चारों ओरकी त्वचा फल जाती है और प्रदाहकी अपेक्षा रोशनीका भय बहुत अधिक हो जाता है। स्वच्छावरकके ऊपर जखम पैदा होकर उसमें छेद हो जानेका उपक्रम हो जाता है। सफेद झिल्ली मैली, हरे रंगकी, फूली और पीले भूरे बिन्दुसे भरी। केवल दिनकी रोशनीका सहन न होना; आँख खोलनेपर पलक हिला करती है। जलन और आँसूओंका स्राव; धुँधली दृष्टि; सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं (कैन्थ, डिजि, सैण्टोनिन, सिना, साइक्लेम, सफेद रंगकी मालूम होना—केरोल; रातमें भी—इलैप्स)। गण्डमाला दोषकी वजहसे या प्रमेह-दोषकी वजहसे आँखका प्रदाह—धीरे-धीरे बढ़नेवाला; कोनेमें बहुत दर्द मालूम होता है। आँखके चारों ओर दाने निकलते हैं, चारों पलकोंका आपसमें मिल जाना और फूलना और सफेद त्वचाका पीला हो जाना। पीब पैदा होनेवाले आँखोंके प्रदाहके साथ कनीनिकाका मोटापन और लालीकी वजहसे सभी चीजें लाल दिखाई देती हैं। खुजलानेके साथ स्वच्छावरक-प्रदाह—स्वच्छावरकका बिचला अंश मैला गदला हो जाता है, उपदंश विष दूषित धातुवाले व्यक्तियोंकी (मर्क-कोर) ऐसी ही बीमारी।

कान।—बाएँ कानसे मुख-विवरके ऊपरी अंशतक जानेवाला बहुत ही तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द (दाहिने कानमें—ऐसिड-नाई)। मुख-विवरसे गाढ़ा गोंदकी तरह और पीले रङ्गका तथा सड़ी गन्ध भरा स्राव (बेल, खसड़ाके बाद—पल्स; दूधिया पपड़ी रुक जाने बाद—सल्फ)। कर्णमूल ग्रन्थिका फूलना और लचीलापन न रहना।

नाक।—नासारन्ध्र बहुत सूखा (ऐसिड-नाई, ग्रैफ; नासारन्ध्र क्षय हुई त्वचा और पपड़ीसे ढँका—कैल्के, ऐसिड-नाई, सिलि)। नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह, हरा और सड़ी गन्ध मिला श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, मर्क, रास), पीला, बदबूदार स्राव (अरम-मूर, पल्स)। नासा-रन्ध्रसे सूखा और कड़ा

श्लेष्मा-खण्ड निकलता है (ऐल्यू, सिपि, साइलि, थूजा)। नाकके भीतरकी हड्डीमें जखम (अरम)। नासारन्ध्रसे बदबूदार स्राव (ऐसिड-नाइ, कैल्कि, मर्क)। पश्चान्नलीसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, हाइड्रैस्ट)। नासामूलमें दबावकी तरह दर्द (ललाट और नासामूलमें—स्टिक्टा)। सर्दी रोगमें स्राव रुकनेकी वजहसे सरके पिछले भागसे ललाटतक भयानक दर्द (साइलिसिया), रन्ध्रवाली भेदकास्थिका जखम। इसके साथ ही खून मिले श्लेष्माका स्राव या छोटा-सा सूखा, कड़ा श्लेष्मा-खण्डका स्राव होता है (ऐल्यू, सिपि, टियुक्रि)। नयी सर्दीके साथ पतले श्लेष्माका स्राव ; संध्याके समय, घरके बाहरकी हवामें और वायु-प्रवाह लगनेपर बढ़ जाता है ; सवेरे रुक जाता है और दाहिनी नाकसे खून निकला करता है ; निकला हुआ श्लेष्मा ओंठ और नाकाकी त्वचाकी क्षय करनेवाला होता है।

मुखमण्डल।—मुँहकी सभी हड्डियोंमें चोट लगनेकी तरह दर्द। नासामूलसे ऊपरी ओंठमें उपदंशका उद्भेद ; नाकके दाहिनी ओर त्वक रोग। दाहिनी ओरकी कर्णमूल-ग्रन्थिका प्रदाह। मुखविवर और दोनों ओंठ बहुत सूखे, ठण्डा पानी पीनेपर घटना। मुँहके भीतर गाढ़ी गोंदकी तरह और फेनभरी नमकीन लार एकत्र होती है। जीभ मोटी और प्रसर तथा उसपर दाँतके दाग भरे रहते हैं, मखमलकी तरह और पीले भूरे लेपसे ढकी (मर्क-प्रोटो-आयोड)। आमरक्त रोगाधिकारमें जीभ लाल और चिकनी ; सूखी और उसकी पीठ फटी रहा करती है (बेल, रास ; सूखी, कड़ी और कालिमा लिप्त—मर्क)। दोनों ओठोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर कड़े पार्श्ववाले सब जखम पैदा हो जाते हैं। जीभ दर्द-भरे जखमसे पूर्ण ; जीभमें डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

गलेके भीतर।—जीभके पिछले अंशमें मानो एक टुकड़ा केश फँसा हुआ है, ऐसा मालूम होना ; पीने या भोजनके बाद यह घट नहीं जाता है। अलिजिह्वा बहुत फूलकर थैलीकी तरह हो जाती है और ऐसा मालूम होता है, कि गलेमें एक खील अड़ी हुई है (हिप)। उपझिल्ली-प्रदाह, जिह्वामूलके अगल-बगलवाले दोनों गह्वर, गलग्रन्थि और कोमल तालुके ऊपर कड़ी, मोतीकी तरह चमकीली, सफेद रङ्गकी और सूत्रमय नकली झिल्ली पैदा हो जाती है और यह झिल्ली नीचेकी ओर वायु और स्वरनलीमें फैलनेका भाव

दिखाती है (लैक-कैन ; ऊपरकी ओर फैलनेवाली—ब्रोम) ; उपजिह्वा और दोनों गलेकी ग्रन्थियाँ जखम-भरी (एपिस, बेल, मर्क, ऐसिड-म्यू) ; तालुमूलसे पाकस्थलीतक जलन-भरी रहती है। मुख और गलेके भीतरसे निकला हुआ गाढ़ा और डोरीकी ओर गोंदकी भाँति श्लेष्मा खींचनेपर बढ़ता है और मुँहसे जमीनतक झूला करता है। जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वरमें गहरा जखम उत्पन्न हो जाता है ; अधिकांश स्थानोंमें उपदंश-विषका दोष वर्त्तमान रहता है।

पाकस्थली ।—बियर नामक शराब और चीजें पीने तथा खानेकी इच्छा ; मांससे अरुचि। बियर सेवनकी वजहसे पाकाशयकी बीमारियाँ,—अरुचि, उदरके ऊपरी प्रदेशमें भार मालूम होता है ; पाकस्थलीमें आध्मान,—भोजनके बाद ही बढ़ जाता है ; पाकाशयमें एक तरहका गोल जखम (जिमोक्ले, काण्डु, आर्जेण्ट-नाई) और गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा मिली खूनकी कै। भोजनके बाद खाये हुए पदार्थ आदिसे पाकस्थलीके भीतर पत्थरकी तरह भार मालूम होता है (आर्स, ब्राई, मर्क, नक्स, सिपि)। बहुत ज्यादा परिमाणमें पीले रंगके पदार्थकी कै होती है। पाकाशयका दर्द आदि भोजनके बाद घट जाता है। कभी पाकाशयकी बीमारी और कभी वात-व्याधि,—इस तरह पर्यायक्रमसे पैदा हो जाया करती है। एक हेमन्त ऋतुमें और दूसरी वसन्त ऋतुमें पैदा होती है, वात-व्याधि और रक्तामाशय रोग भी पर्याय-क्रमसे प्रकट होता है—वातका दर्द घट जाने बाद आमरक्त रोग अच्छा होनेपर वातका दर्द पैदा हो जाता है (ऐब्रोट)। पाकस्थलीके फूलनेकी वजहसे वस्त्र आदिका दबाव सहन नहीं होता (लाई, नक्स)।

अन्त्राशय ।—रातमें अन्त्रशूल और नाभि-प्रदेशमें छेदनेकी तरह दर्द पर्यायक्रमसे पैदा हो जाता है। पेटमें थोड़ा भी दबाव सहन नहीं होता। यकृत-प्रदेशमें दबाव और सुई बेधनेकी तरह दर्द। प्लीहा-प्रदेशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, शरीर हिलाने या दबानेपर बहुत बढ़ जाता है ; सुई बेधनेकी तरह दर्द प्लीहाके स्थानसे पीठतक फैल जाता है। उदराध्मान,—समूचा पेट फूल जाता है और डकार आया करती है। उदरसे मेरुदण्डतक फैलनेवाला सुई बेधनेकी तरह दर्द। खानेके कुछ ही बाद उदरमें ऐसा दर्द होता है, मानो छुरीसे काटा जा रहा है। पुराना या बहुत दिनोंका आँतोंका जखम

रोगमें (मर्क); अजीर्ण खाये हुए पदार्थका वमन। विलेपी या क्षय ज्वर और दुबलापन।

मलान्त्र और मल।—मलका कड़ापन,—मल सूखा, गाँठ-गाँठ, इसी वजहसे मलद्वारमें जलन पैदा कर देता है (नैट्र-म्यू, वेरेट), रंग स्लेटके पत्थरकी तरह और खून मिला। सवेरे पतला पाखाना होता है,—बहुत जोरसे पाखाना लगनेकी वजहसे नींद खुल जाती है (नक्स-वोम, सल्फ), मल पानीकी तरह, बहुत वेगसे निकलता है,—पाखाना हो जाने बाद कूथन; कभी-कभी खून मिला माँड़की तरह मल। मलद्वारमें ऐसा मालूम होता है मानो एक काँटी गड़ी हुई है (ऐनाक, लैके, मानो एक गोला अड़ा हुआ है—सिपि)। कभी-कभी कीचड़की तरह मल भी निकला करता है (बार्बा, जेल्सि, हिप, चेलिडो, आइरिस, लेप्टैन, माइरि-सेर, ऐसिड-फास, पोडो)। मलद्वारमें जखमकी वजहसे चलनेमें बहुत तकलीफ़ मालूम होती है।

पेशाब।—पेशाबके समय मूत्रनालीमें गर्मी मालूम होना और मूत्रनालीके ग्रन्थिमय प्रदेशमें जलन; पेशाबके बाद मूत्रनालीके पश्चाद्देशमें जलन और ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें एक बूंद पेशाब रुका हुआ है, पर जोर लगाने और वेग देनेपर निकलता है। बहुत देरतक पेशाब करनेके लिये बैठना पड़ता है, इसके बाद कमरके पिछले भागमें भयानक दर्द मालूम होता है, उठनेके समय यह दर्द बहुत अधिक बढ़ जाता है।

पुं-जननेन्द्रिय।—स्थूलकाय व्यक्तियोंमें काम-प्रवृत्ति बिलकुल ही नहीं रहती। रमणके बाद क्रमसे बढ़नेवाला दमा रोग। चलनेके समय मूत्राधारकी मुख-शायिका ग्रन्थिमें सुई बेधनेकी तरह दर्दके कारण रोगीको स्थिर होकर खड़े हो जाना पड़ता है। जननेन्द्रियके केश-भरे प्रदेशमें खुजली; इस स्थानकी त्वचा प्रदाह-भरी हो जाती है और उसके ऊपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं। उपदंशका गहरा जखम। पुराना प्रमेह —गाढ़े गोंदकी तरह या मांड़की तरह स्राव, शिश्नके ऊपर सुई बेधनेकी तरह दर्द-भरी और पीब-भरी फुन्सियाँ और उपदंशका जखम आदि निकलता है; रातमें बढ़ना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु—नियमित समयके बहुत पहले पैदा होता है, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना और माथा घूमना; पेशाब

रुकना या लाल रंगका पेशाब ; झिल्ली-मिला बाधक । अपत्य-पथमें क्षय हुई त्वचाकी तरह मालूम होना । प्रदरका स्राव पीला, गाढ़ा गोंदकी तरह ; कमर बहुत क्षीण, उदरके ऊपरी अंशमें धीमा दर्द मालूम होता है । जरायु-भ्रंश ।

श्वास-यन्त्र ।—सन्ध्याके समय स्वरभङ्ग (कैल्के, कार्बो-वेज, सवेरेके समय—कास्टि, युपेट-पर्फो, फास)। कृत्रिम झिल्ली पैदा करनेवाली घुंड़ी (काली खाँसी—ब्रोम, आयोड), खाँसीका शब्द टूटा हुआ और कांसेकी तरह ; सवेरे नींद खुलनेपर गाढ़ा गोंदकी तरह या श्लेष्मामय तन्तुकी तरह शल्क-मिला कफ़ निकलता है, इसके साथ ही श्वास-कृच्छ्रता ; सोनेपर श्वास-कष्ट घट जाता है (सोने बाद बढ़ना—ऐरैल, लैके)। खाँसी प्रबल और घड़घड़ शब्द करनेवाली (फास, स्टैफाई) और गलेमें गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा पैदा होनेकी वजहसे कण्ठरोध होनेका उपक्रम हो जाता है । पहननेके वस्त्र उतारनेके साथ खाँसी बढ़ जाती है (हिप)। स्वरनालीमें सुरसुरी होती है ; प्रत्येक बार साँस लेनेके समय खाँसी पैदा हो जाती है ; सवेरे खाँसीकी वृद्धि ; गाढ़ा श्लेष्मा-भरा कफ़ और उसके साथ ही वक्षमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; खाँसनेपर वक्षोस्थिमें दर्द मालूम होता है और यह दर्द पीछेकी ओर फैलकर दोनों कन्धोंके बीचमें मालूम होता है । हृत्पिण्ड-प्रदेशमें काँटा गड़नेकी तरह दर्द । मोटे-ताजे, जिनका मांस झूल रहा हो ऐसे बच्चोंकी नाक रुकना, नासारन्ध्रसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलता है । वक्षःस्थलमें दबाव और भार मालूम होना, मानो कोई भारी चीज़ छातीपर दबायी हुई है । ऐसा अनुभव होनेकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है और शय्यामें उठ बैठनेपर आराम मिलता है । छातीमें बहुत दिनोंका श्लेष्मा-संचय, सवेरे ऐसा मालूम होता है, मानो छातीका भीतरी भाग श्लेष्मासे भरा हुआ है । निकला हुआ श्लेष्मा पीला या पीली आभा लिये हरा और गाढ़ा गोंदकी तरह निकलता है ।

प्रत्यङ्ग आदि ।—सामनेकी ओर माथा झुकानेपर गर्दनमें अकड़न मालूम होती है, गले और सरके पिछले भागकी ग्रन्थियाँ सब फूल जाती हैं । मसाना या मूत्रग्रन्थि-प्रदेशमें तेज़ डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है (बार्बा)। त्रिकास्थि या नितम्ब (चूतड़) प्रदेशके एक छोटेसे अंशमें ऐसा मालूम होता है मानो फोड़ा हो गया है, इसी तरहका तेज़ और लगातार होनेवाला टपकका दर्द हुआ करता है, रातमें दर्द बढ़ जाता है और नींदमें

बाधा पैदा कर देता है। दिनमें चलनेके समय आराम मालूम होता है; पर रोगी कोई भारी चीज़ उठा नहीं सकता। त्रिकास्थि-प्रदेशमें दर्दकी वजहसे रोगी सीधा खड़ा नहीं हो सकता। मेरुपुच्छमें प्रचण्ड दर्द, सवेरे और बैठनेके समय, चलने या स्पर्श करनेपर दर्द बढ़ जाता है। बाएँ पृष्ठ-फलकके निचले कोनेमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (दाहिने पृष्ठ-फलकके भीतरकी ओर निचले कोनेमें लगातार दर्द—चेलिडो)। वात-वेदना; बहुत छोटेसे अंशमें (अंगुलीके अगले भागके सीमाबद्ध स्थानमें) असह्य दर्द मालूम होता है (इग्ने) और एक जगहसे दूसरी जगह तेजीसे चला जाता है (कैलि-सल्फ, लैक-कैन, पल्स) और एकाएक पैदा होता है तथा एकाएक ही गायब हो जाता है (बेल, इग्ने, मैग-फास)। स्नायुशूल नित्य एक ही समय पैदा होता है (सिड्रन; रोज़ तीसरे दिवस सवेरे—कैलि, आर्स)। वात-वेदना और पाकाशयिक लक्षण या वात-वेदना और आमाशय पर्यायक्रमसे (ऐब्रोट) पैदा होता है; हेमन्त ऋतुमें पाकाशयकी बीमारी और वातका प्रकोप हो जाया करता है। दर्द कोना-कोनी भावसे पैदा होता है, जैसे—दाहिने स्तन और बाईं कोहनीमें, बायें हाथके अगले आधे भागमें और दाहिनी ओर माथेके पिछले भागमें; दाहिने जानु और उरु और बाएँ वक्ष और कन्धेमें; दाहिनी बाँहके अगले भागमें और बाईं कोहनी इत्यादि (ऊपरी अङ्गके बायें और निम्नाङ्गके दाहिने अंशमें—ऐगार, ऐण्टि-टार्ट, स्ट्रैम; दाहिने अर्द्धाङ्ग और बाएँ निम्नाङ्ग—ऐम्ब्रा, ब्रोम, मिडोरिन, फास, ऐसिड-सल्फ)। सन्धि-स्थानमें, विशेषकर कलाईमें वातका दर्द (ऐसा दर्द मानो सन्धि खिसक गयी है—ब्राई, रियुटा)। सवेरे उठनेपर सारे शरीरमें वातका दर्द मालूम होता है। सुस्ती मालूम होनेकी वजहसे रोगी हमेशा सोया रहना चाहता है।

त्वचा।—समूची देह गर्म, सूखी और लाल। सूखी खुजलीकी तरह दानोंसे समूची देह ढक जाती है, परन्तु फूटे या फटे बिना ही सब दाने विलुप्त हो जाते हैं; नखकी जड़में छोटे-छोटे दाने निकलकर कलाईतक फैल जाते हैं। पीब पैदा होनेवाले दादकी तरह उठे हुए दाने निकलना (कैल्के, मर्क); दाहिने पैरके तलवेमें रस-भरे दाने या छाले निकलना। अंगुली, नख और लिङ्ग-मुण्डकी जड़में फटे घाव, शल्क पड़ना या त्वचाकी फोड़ देनेवाला ज़खम, बगलमें न फैलकर केवल गहरा होता चला जाता है। ऐसे ज़खम

मानों अस्त्रसे काट-काटकर घाव बना दिये गये हैं। मसूरिका या चेचककी गोटियोंकी तरह बहुत जलन-भरे उद्भेद।

शीत, उत्ताप और पसीना।—शीतावस्था—प्यास न रहना; बाँह, कन्धा और पीठ ठण्डी मालूम होती है और काँपा करती है; रोगीको बहुत औंघाई रहती है और शरीरको गर्म जगहमें रखना चाहता है (आर्स, हिप, रास)। जाड़ा मालूम होना, निचले पैरसे आरम्भ होकर ऊपरकी ओर फैल जाता है; मूर्द्धाकी त्वचामें खींचनकी तरह मालूम होता है, हाथ-पैर ठण्डे मालूम होते हैं। उत्तापावस्थामें प्यास—रातमें सारे शरीरमें उत्ताप और रह-रहकर चेहरेमें उत्ताप पैदा हो जाना। पसीनेवाली अवस्था—स्थिर भावसे बैठनेके समय बहुत ज्यादा पसीना होता है। थोड़ा भी शरीर हिलानेपर बहुत ज्यादा पसीना निकलना—ब्राई, सिपि, साइलि, सल्फ)। ललाटके सिवा चेहरेका बाकी अंश सूखा। दोनों बाँह ठण्डे और ठण्डे पसीनेसे भरे (सिकेलि)।

वृद्धि।—शरीर खोलनेपर, भोजनके बाद, छूनेसे, विश्रामके समय, माथा झुकानेपर, बैठनेके समय, जाड़ेके दिनोंमें, सूखी हवामें, गर्म और तर हवामें (युफ्रे) और शरीर थोड़ा भी हिलानेपर।

घटना।—शरीर ढँक लेने, मलने, ठण्डी हवामें और रोगवाला अङ्ग संचालन करनेपर।

दोषघ्न।—आर्सेनिक, लैकेसिस (काली खाँसी), पल्स।

सम्बन्ध।—सदृश।—आमरक्त रोगाधिकारमें कैन्थरिस या ऐसिड कार्बोलिकके प्रयोगसे मलसे आँतोंका खरोंच निकल जानेपर कैलि-बाइक्रोमका प्रयोग करना चाहिये। घुंड़ी खाँसीमें ब्रोमियम, आयोडम और हिपर इसके सदृश हैं। प्रतिश्याय या सर्दीके सम्बन्धमें और चर्म-रोगमें ऐण्टिम-टार्ट इसका अनुगामी हो सकता है और नाककी सर्दीमें कैल्केरियाके बाद इसका व्यवहार करना चाहिये। इसके अलावा उपदंश-विषसे दूषित रोगोंमें—कैलि-आयोड, ऐसिड-नाई, फाइटो (तेजीसे स्थान बदलनेवाले दर्दमें—कैलि-सल्फ, लैक-कैन और पल्स); एकाएक पैदा होनेवाले दर्दमें (ऐसिड-क्रामिक, बेल, इग्ने और मैग-फास); रमणके बाद लक्षणोंका बढ़ना (कास्टि, कैलि-कार्ब, स्टैफाइ); नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव (ग्रैफ, हाइड्रैस्ट, आइरिस-वार्सि); नासिकामें सूखी पपड़ी निकलना (सिपि, टियुक्रि); झिल्ली निकलने बाद

कालो खाँसीमें (ब्रोम, हिप, आयोड, केयोलिन), यहाँतक कि जब उत्पन्न हुई झिल्ली वायुनलीके भीतरतक फैल जाती है और छातीमें इतना दर्द मालूम होता है, कि रोगी उसे किसी तरह छूने नहीं देता (ऐबिस-नाइग्रा, ब्राई, नक्स, रास प्रभृति)।

तुलनीय ।—कैलि-कार्ब (स्थूलकाय व्यक्ति); कैलि-आयोड, ऐसिड-नाई (उपदंश); ब्रोमिन (कालो खाँसी); साइलि, मेजेर (हड्डीकी बीमारी); स्पञ्जि (ऐंठन); हाइड्रैस, आइरिस (लसदार स्राव); लैके, टेरिबिन्थ (चमकीली जीभ); सिपिया, टियुक्रि (शिकन पड़ना); पल्स (घूमनेवाला वात); थूजा (नकसीर); एपिस (आँखोंका प्रदाह); लैकेसिस (संकोचन); कक्कस (हूप खाँसी); ऐबिस, नक्स (अजीर्ण); ग्रैफाइटिस (कर्ण-प्रदाह); सलफर (गलेमें ऐसा मालूम होना कि केश हैं)।

शक्ति ।—२रे दशमिक विचर्णसे ३० या २०० शततमिक क्रम।

क्रियाका स्थायित्व ।—३० दिनतक।

कैलि ब्रोमेटम

(KALI BROMATUM)

दूसरा नाम ।—ब्रोमाइड आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचर्ण और अर्कका क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है :— मुँहासे ; स्वरलोप ; संन्यास ; दमा ; शिशु-विसूचिका ; शूलका दर्द ; बहुमूत्र ; स्वप्न-दोष ; मृगी ; उन्मादग्रस्त व्यक्तियोंका पक्षाघात ; बवासीर ; ध्वजभङ्ग ; स्वरनलीकी बीमारी ; छाती दबनेके सपने ; नाकके ऊपर उद्भेद ; डिम्बाधारकी बीमारी ; पक्षाघात ; विचर्चिका ; पसीना निकलना ; हाथसे या नकली मैथुन ; नींद न आना ; स्वप्नमें घूमना ; उपदंश ; धनुष्टंकार ; स्पर्श-चेतनाका गायब हो जाना ; बोलीकी जड़ता ; पेशाबका वेग रोक न सकना।

उपयोगिता और आभास ।—स्थूलकाय मनुष्य और बच्चोंकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। (१) स्मरण-शक्तिका न रहना ; अन्यमनस्क ; हमेशा चिन्तित और उद्वेगपूर्ण चित्त ; रोगीको डर मालूम होता है,

कि उसकी बुद्धि गड़बड़ हो जायगी। (२) बच्चोंको रातका भय, सपनेमें घूमना, भयानक स्वप्न देखकर उत्तेजित हो पड़ता है। (३) अपस्मार या मृगी रोग ; जन्मगत या उपदंश विषसे उत्पन्न या क्षयरोगात्मक ; ऋतु होनेके दो-एक दिन पहले या शुक्लपक्षके आरम्भमें प्रकोपका बढ़ जाना। (४) पेशियोंमें सामञ्जस्य न रहना, गति-विधायक स्नायुका सुन्न हो जाना या पक्षाघात। (५) मानसिक उत्तेजना, सम्पत्ति या सम्मान-नाश या दूसरे प्रकारकी वैषयिक गड़बड़ीके कारण चित्त चंचल रहना और नींद न आना। (६) थोड़ेमें ही कातर और हमेशा अस्थिर, क्षण-भरके लिये भी हाथ-पैर स्थिर नहीं रख सकता। स्थिर होकर एक जगह बैठ नहीं सकता, एक बार इधर एक बार उधर लगातार किया करता है ; किसी-न-किसी काममें लगे रहना ही चाहता है। (७) बाल-विसूचिका और उसके प्रतिक्षेपसे मानसिक उत्तेजना, इससे मोहावस्था प्राप्तिकी पहली अवस्थामें हरेक रातके अन्तिम भागमें ५ बजनेके समय लड़कोंकी आँतोंमें दर्द (तीसरे पहर ५ बजनेके समय—कोली, माई)। (८) थोड़ेमें ही कातर, रक्त-प्रधान व्यक्तियोंका डर जाना या क्रोध या मानसिक उद्वेगकी वजहसे अङ्ग-प्रत्यंगोंका आक्षेप, प्रसव या दाँत निकलनेके समय और हूप खाँसी या लाला मूत्र रोग आदिमें। (९) व्याहत-वाक् या तोतलाना—बात बहुत धीरे-धीरे या बहुत कष्टसे उच्चारण करता है। (१०) व्रण, साधारण कड़ी नलीवाला या पटल व्रण ; चेहरा, कन्धा या वक्षस्थलपर नीली आभा लिये पीबभरी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद ; अच्छे हो जानेपर भी बदरंग दाग रह जाता है। (११) गर्भावस्थामें स्नायविक खाँसी (कीना, प्रबल, सूखी लगातार होनेवाली, गर्भपात होनेका उपक्रम हो जाना। (१२) अनुभव शक्तिका लोप हो जाना, खासकर जीभके अगल-बगलवाले दोनों गह्वरोंकी ; स्वरनाली और मूत्रनली तथा समूची देहकी ; दोनों पैर अवश, चलनेके समय ढलमलाया करता है और दोनों पैर पार्श्वकी ओर मुड़ जाते हैं। (१३) बाएँ पार्श्वकी अपेक्षा दाहिने पार्श्वपर रोगका आक्रमण अधिक हुआ करता है। (१४) शरीरके अंश विशेषमें ऐसा मालूम होता है, मानो वह अंश बढ़ गया है ; कम्पन मालूम होना। (१५) जरायुमें कोषार्बुद और उसके कारण या किसी दूसरे ही कारणसे पैदा हुआ आर्त्तवकी अधिकताका राग या जरायुसे खूनका स्राव—ये कई कैलि-ब्रोमैटमके प्रकृतिगत और निर्णायक लक्षण हैं। डा० क्लार्कका कथन है, कि स्नायु-मण्डलीमें संवेद-राहित्य (सुन्न

हो जाना) और सुस्ती ; आन्त्रिक या सान्निपातिक ज्वरके बाद और प्रसवान्तिक उन्माद रोग तथा अवस्था अधिक हो जानेकी वजहसे मस्तिष्ककी कोमलता—ये कई कैलि-ब्रोमके उच्च क्रममें प्रयोग करनेके निर्देशक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—स्नायविक अस्थिरता, स्थिर होकर क्षणभर भी रह नहीं सकता, एक बार एक तरफ़ तो दूसरी बार दूसरी तरफ़—ऐसा लगातार किया करता है ; किसी-न-किसी काममें मन लगा ही रहना चाहिये (आयोड); हाथ और अंगुली आदि हमेशा चंचल रहती हैं, पैर अस्थिर रहता है (इग्ने, जिङ्क-वैलि); अंगुली वगैरहका सिकोड़ना और फैलाना कठिन हो जाता है ; रुलाई आना ; गहरा विषाद ; स्मृति-लोप,—बिना तुतलाये अपनी बात कह नहीं सकता। हमेशा अन्यमनस्क रहता है ; दुःखित और उद्वेगपूर्ण चित्त ; रोगी डरता है कि कहीं उसकी बुद्धिमें विपर्यय न हो जाये (ऐक्टिया, कैल्के, कैनाब-इन, लिलि-टाइ, लिसिन, नक्स); शोक, विरक्ति, सम्पत्ति या सम्मान-नाश या और किसी तरहकी साम्पत्तिक गड़बड़ीके कारण चित्तकी बेचैनी और नींद न आना, बच्चोंका रातमें डरना—कैलि-फास, अरम-ब्रोम, ऐकोन); निद्रितावस्थामें दाँत कड़कड़ाता है (बेल, कैनाब-इन, साइना, हायो, इग्ने), गों-गों किया करता है (कार्बो-ऐनिम, कैमो, इपिक, लाई, ओपि, सल्फ़) या चिल्ला उठता है (एपिस, पल्स, सल्फ़, भयानक सपने देखकर उत्तेजित हो उठता है, कोई समझाता है तो उसका कुछ फल नहीं होता—इग्ने); सपनेमें घूमना (आर्टिमि-वाल, ब्राई, इग्ने, कैलि-फास, फास, साइलि, टेरेण्ट)। विकार—भ्रम-देखना, ऐसा विश्वास हो जाना कि लोग उसपर अत्याचार कर रहे हैं (सिङ्को, लैके); उसे ऐसा मालूम होता है कि कोई उसका पीछा कर रहा है (ऐनाक); उसे विष खिला देनेकी चेष्टा करता है (प्लम्ब, हायो, रास); रोगिनीको ऐसा विश्वास हो जाता है कि उसकी सन्तान मर गयी है (कोना, प्लम्ब); गर्भावस्थामें रातमें बहुत डरावने दृश्य सब उसके मानस-चक्षुपर उदित होते हैं। रोगी बहुत ही सामान्य कारणसे कातर हो पड़ता है, सो नहीं सकता और किसी काममें लगे रहनेपर अच्छा रहता है (आयोड, टेरेण्ट)।

मस्तक।—मस्तिष्ककी जड़ता ; धीरे-धीरे बोलता है, मतवालोंकी तरह ढलमलाया करता है (बेल, ऐसिड-कार्बोलिक, जेलस, बेरा)। माथा

खाली मालूम होता है और कानमें आवाज़ आया करती है; नींद नहीं आती; सरमें चक्कर—कलेजा धड़कना, मिचली, यहाँतक कि कभी-कभी बेहोशी भी आ जाती है। ऐसा मालूम होता है मानो पैरके नीचे जमीन धँस गयी है; चलता-चलता ढलमलाया करता है; सुस्ती और मिचली और इसके बाद ही गाढ़ी नींद; मस्तिष्कमें कसावटका भाव (कैमो) और काम या अनुभव शक्तिका न रहना। सरके पिछले भागसे पीठके बीचतक लगातार टपककी तरह दर्द, सीधे होकर बैठने, चलने या सर हिलानेपर दर्द बढ़ जाया करता है; बहुत गड़बड़ी और चित्तमें विकलता मालूम हुआ करती है। चेहरा तमतमाया, गर्दनकी दोनों धमनियोंमें टपक हुआ करती है; दोनों आँखें पानीसे भरी रहती हैं और माथेमें भार मालूम होता है। खून आदि रस-क्षय हो जानेसे उत्पन्न मस्तिष्ककी रक्तहीनता, लगातार औंघाई आती रहना, भौंहें तथा आँखकी पुतली फैली, आँख गड़हेमें धँसी, लक्ष्यहीन, आँखका गोला चारों ओर घूमता रहता है, हाथ-पैर नीले और बरफकी तरह ठण्डे; नाड़ीमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता, मस्तिष्कोदक हो जाने या बहुत दिनोंके उदरामयकी वजहसे ये बीमारियाँ, माथामें संघर्षकी वजहसे भयङ्कर सर-दर्द। माथा झूल पड़ता है, सीधा रख नहीं सकता (गलेकी कमजोरीकी वजहसे होनेपर—ऐब्रोट, टियुबर्क)। रूसी।

मुँह और गलेके भीतर।—श्वासकृच्छ्रता—जीभ विकल; नींद खुलनेपर बहुत धीरे-धीरे और कष्टसे बोलता है; व्याहतवाक् या तोतलाना, जीभ लाल, सूखी और उसका आयतन बढ़ा हुआ। कभी पहले लाल, फिर सूखी और भूरे रङ्गकी दिखाई देती है। मुँहमें एक तरहकी घृणा पैदा करनेवाली या घिनौनी गन्ध आती है, जीभका रङ्ग सफेद, बदबूदार, बहुत ज्यादा लार निकलना। बहुत दिनोंतक शराब पीनेका विषमय फल यह होता है कि मुख-विवर, गलेका भीतरी भाग और तालुमूल सुन्न और स्पर्श-ज्ञानहीन हो जाता है। बच्चा जलीय पदार्थ निगल नहीं सकता; कड़े पदार्थ सहजमें ही निगल नहीं सकता (कड़े पदार्थ निगलनेके समय गलेका दर्द घट जाता है—इग्ने)। उपजिह्वा या जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे फूल उठते हैं। उपझिल्ली-प्रदाहके कारण बोखार, नाड़ी तेज़, जीभ सूखी, मुँहमें बदबू; जिह्वामूल पार्श्ववाले दोनों गह्वरोंमें बहुत रक्त-सञ्चयकी वजहसे वह गहरा लाल हो जाता है, तालुमूल या गलेकी ग्रन्थिके ऊपर निकला हुआ रस जमकर गोल आकारकी नकली झिल्ली पैदा हो जाती है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—स्नायु-प्रधान रमणियोंका भोजनके बाद वमन, विशेषकर उत्तेजक समाचार आदि सुननेपर, इसके साथ ही दुर्दमनीय प्यास। मुख-विवर सूखा; जलन-भरी प्यास। बच्चा जन्मसे ही कड़ी चीजें अनायास ही निगल जा सकता है; परन्तु पतले जलीय पदार्थ पीनेसे गला रुक जानेकी तैयारी हो जाती है। मध्याह्न भोजनके बाद पाकस्थलीमें लगातार गड़बड़ी मालूम हुआ करती है। प्लीहा और यकृत दोनों ही बढ़ जाते हैं। प्लीहा-प्रदेशमें छोटा अर्बुद पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें आदि झूल पड़ती हैं। पेटके भीतर बहुत शीतलता मालूम होती है। शिशु-विसूचिका रोगमें रोगीका उदर मेरुदण्डसे लग जाता है। बराबर समयपर पैदा होनेवाला नाभि-स्थानका शूलका दर्द,—रोज़ रातमें ५ बजनेके समय पैदा हो जाता है (तीसरे पहर ५ बजनेके समय—कोलो, लाई)। थोड़ी उम्रवाले बच्चोंका अन्त्रशूल—उदरकी प्राचीर संकुचित रहती है और लचीली नहीं मालूम होती, आँतें आदि गोलेकी तरह बनकर पेटमें एक जगह ऊँची उठ जाती हैं और उदरके एक किनारेसे दूसरे किनारेतक घूमती-फिरती हैं। इसके साथ ही अकसर मुँहमें जखम और बहुत ही असह्य दर्द मौजूद रहता है, कब्जियत या मलके पतलेपनके साथ इसका सम्बन्ध नहीं रहता; प्लीहा या यकृत रोग मिली उदरीकी बीमारी। शिशु-विसूचिका या ग्रीष्मातिसार,—मस्तिष्क-प्रदाहान्वित, चेहरा तमतमाया, पुतली फैली और दोनों आँखें गड़हेमें धँसी; हाथ-पैर ठण्डे, रह-रहकर चिल्लाकर जाग उठता है; माथेमें धामनिक रक्तकी अधिकता; सर्दी लगी झिल्लीसे रस बहनेके पहले प्रदाह; बहुत दिनोंतक स्थायी, उदरामयके बाद होनेवाले, मस्तिष्कोदक रोगके आरम्भमें मल पानीकी तरह, हाथ और अंगुलियाँ बराबर हिला करती हैं, हाथसे कोई काम करनेके समय वह हाथ काँपा करता है; हाथ-पैर ठण्डे और हाथ तथा कलाई बरफकी तरह ठण्डी तथा पसीनेसे तर मालूम होती है।

मलांत और मल।—गर्म घरमें भी ठण्डक मालूम होनेके साथ ही बिना दर्दके पतला पाखाना हुआ करता है; मल पानीकी तरह या फेनकी तरह। मारात्मक विसूचिका पहली अवस्थामें—कै, अकड़न, मांड़की तरह दस्त और पेशाब रुकना (पेशाब फिर स्थापित होता है)। कभी-कभी पीले रङ्गका पानीकी तरह और कभी-कभी बहुत ज्यादा परिमाणमें खून मिला पाखाना होता है; अधिक वेग देनेपर, महीलता (केचुआ) की तरह पतले

पतले पदार्थ निकला करते हैं, कभी-कभी इसी तरह फिर पीले रंगका बदबूदार मल निकलता है।

पेशाब।—मूत्रनालीमें स्पर्श ज्ञानकी हीनता या सुन्नता मालूम होती है, बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब और बहुत प्यास। बहुमूत्र,—चीनी मिला और परिमाणमें बहुत ज्यादा पेशाब, रोगी दुबला, रक्तहीन और सफेद हो जाता है; शरीरकी त्वचा ठण्डी और सूखी; नाड़ी तेज़ और चीण; जीभ लाल और दर्द-भरी; मसूढ़े नरम हो जाते हैं और उनसे सहजमें ही खून निकला करता है; बहुत प्यास, बहुत अधिक भूख, मल कड़ा और पेशाब सफेद, बार-बार पेशाबका वेग। पेशाब परिमाणमें बहुत ज्यादा, चीनी मिला और बहुत अधिक आपेक्षिक गुरुत्व विशिष्ट; यकृत फूला और दर्द-भरा, मधुमेह।

पुं-जननेन्द्रिय।—हमेशा कामोद्दीपक चिन्ता और रातमें कामोद्दीपक सपने। रातमें काम-प्रवृत्तिकी उत्तेजना और बार-बार लिंगमें कड़ापन आ जाना, स्नायविक अवसाद और अवसादके साथ नपुंसकता। बहुत अधिक काम-प्रवृत्तिके व्यवहारके कारण क्लीवता और मेरुमज्जाके अवसादसे उत्पन्न पक्षाघात और प्रत्यंगोंका आक्षिप्त भाव, शुक्रक्षयके साथ विषाद, कमरमें दर्द और रोगी चलनेके समय ढलमलाया करता है। प्रमेह रोगमें तकलीफ़ देनेवाला या दर्द-भरा लिङ्गका कड़ापन।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—स्त्रियोंका कामोन्माद। बहुत अधिक काम परिचालनसे उत्पन्न बन्ध्यात्व; बहुत थोड़ा आर्त्तवस्रावके साथ वीतस्पृहा, जरायुकी अनमनीयता; प्रसवके बाद जरायुकी आकृतिका बढ़ जाना और बहुत ज्यादा स्राव। जरायुके भीतरवाला सूत्रमयतन्तुविशिष्ट अर्बुद, अत्यन्त वासनासे उत्पन्न जरायुका स्नायुशूल और अस्थिरता। डिम्बाधारका स्नायुशूल—बाएँ डिम्बाधारमें दर्द; फूलन और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; साथ ही पेशाबका वेग और बहुत थोड़े परिमाणमें पेशाब होना। जरायुके भीतरवाले अर्बुदकी उत्तेजनाकी वजहसे—बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव, जरायु-स्राव, कामोन्माद और ऋतुके समय मृगी या आर्त्तवापस्मार, गर्भवतियोंकी विकृत कल्पना, रातमें उन्हें ऐसा मालूम होता है मानो उसने अपनी सन्तान या स्वामीका हत्यारूप महापाप किया है। मृगी; अत्यधिक और अस्वाभाविक रूपसे इन्द्रिय परिचालनके कारण, आर्त्तव-स्राव आराम होनेके कुछ ही पहले

या ऋतु-स्रावके समय, किंवा अमावस्या या प्रतिपदाके समय प्रकोपका अधिक होना, प्रकोपके अन्तमें सर-दर्द। मोटी-ताजी स्त्रियोंको थोड़ा ऋतु-स्राव होना; वयःसन्धिके समय, रोगिनी बेचैनी और हमेशा चंचलता दिखाती है; उसे नींद नहीं आती, शरीर काँपा करता है और रह-रहकर चेहरा गर्म और तमतमा उठता है तथा सरमें रक्तका संचय अधिक हो जाता है (एमिल-नाई, ग्लोन, लैके)। गर्भावस्थामें सवेरेके समय वमन। गर्भावस्थामें स्नायविक उपदाहकी वजहसे ऊपर-के-ऊपर खाँसी, यहाँतक कि गर्भ-स्राव होनेकी तैयारी हो जाती है (कोना)। प्रसवके दर्दके समय धनुष्टङ्कार आदि आक्षेप, जरायुका बढ़ना।

श्वास-यंत्र।—ज्ञानराहित्य या स्पर्श अनुभव करनेकी शक्तिका गायब हो जाना, जिह्वामूल पार्श्वके दोनों गह्वर और स्वरनाली सुन्न हो जाती है, पुराना प्रतिश्याय या सर्दीमें कफ़ पीबकी तरह और स्लेटके पत्थर जैसे रंगका निकलता है। सर्दीसे उत्पन्न और कौषिक स्वर तन्तुका प्रदाह। स्वरनालीकी अविमिश्र, स्नायविक उत्तेजना या किसी यन्त्रके रोग प्रतिक्षेपक कारण। दाँत निकलनेकी वजहसे या कृमिके कारण उत्तेजनाका प्रतिक्षेप होनेके कारण सूखी काली खाँसी एकाएक पैदा हो जाती है। झिल्ली पैदा करनेवाली घुँड़ी (काली खाँसी), बलगमके साथ निकले हुए रससे उत्पन्न झिल्ली सफेद रंगकी। सूखी सुस्त करनेवाली खाँसी, प्रत्येक दो या तीन घण्टे बाद पैदा हो जाती है, रोगी हाँफा करता है और अन्तमें खाये हुए पदार्थ और श्लेष्मा कै हो जाता है—रातमें या सोनेपर बढ़ जाता है; श्वास-प्रश्वासके समय वक्षस्थल मानो कसा हुआ है—ऐसा मालूम होता है। क्रुप खाँसी आक्षेपिक या देहको हिला देनेवाली सूखी खाँसी; स्वरतन्तुके आक्षेपके साथ धनुष्टंकार।

प्रत्यङ्ग आदि।—बहुत ज्यादा इन्द्रिय सेवाकी वजहसे मेरुमज्जाका क्षय और गति-शक्ति-विधायक स्नायु प्रभृतिका पक्षाघात या शुक्रक्षयकी वजहसे कमरमें दर्द (कोबेल्ट)। हाथसे कोई काम करनेके समय वह हाथ काँपा करता है या मदात्ययकी वजहसे हाथ आदि काँपते हैं। हाथ और अंगुली आदिका बराबर चंचल रहना, अंगुली आदिका बराबर नाचना (आर्नि, साइकूय-वाई)। चलनेके समय ढलमलाया करता है, लोग मतवाला

समझते हैं। शरीरमें स्पर्श ज्ञान न रहने या स्पर्श अनुभव शक्तिका लोप (ऐनाक, कैम्फो, कैप्स, कार्बोन-सल्फ, साइकूट, फास, प्लम्ब, जिङ्कम); नख लगने या आगसे छू जानेपर भी जान नहीं सकता, पेशियोंमें पारस्पर्य न रहना (जेल्स), गतिशक्ति-विधायक स्नायुमण्डलका पक्षाघात।

त्वचा।—व्रण, सरल (कार्बो-वे, बेल, पल्स, वैलिस, आर्कटियम-लैप), दृढ़ या भूरा (कार्बो-ऐन; जरायु विकार मिला—हाइड्रोकोट; शराब आदि पीनेकी वजहसे—नक्स, ऐण्टि-क्रूड; अत्यन्त लाल और उत्तेजनायुक्त होनेपर—रास; नीलिमा मिला—ऐगार; दुरारोग्य—आर्स, आयोड); मुखमण्डल, छाती और कन्धेपर नीली आभा लिये लाल रङ्गके दाने पैदा होते हैं और आराम हो जानेपर एक बदरङ्ग दाग रह जाता है (कार्बो-ऐन); मोटे-ताजे और गन्दे स्वभाववाले युवक और युवतियोंकी बीमारी। लगातार असंख्य छोटे-छोटे और बहुत खुजलानेवाले फोड़े निकलना। बहुत दिनोंके स्लेष्माश्रित जखम आदि। उपदंश, विचर्चिका (व्रण-रोगमें आगे—युजिनिया-ऐम्बसके प्रयोगके बाद कैलि-ब्रोम प्रयोग करनेपर एकदम आरोग्य हो जाता है—एच० सी० ऐलेन)।

निद्रा।—बहुत औंघाई—कुर्सीपर बैठते ही गहरी नींद आने लगती है और जागनेपर फिर तुरन्त निद्राभिभूत हो पड़ता है। अनिद्रा और बहुत चञ्चलता—किसी काममें लगी न रहकर स्थिर नहीं रह सकता (आयोड)। बच्चोंको रातमें डर (अरम-ब्रोम, ऐको); निद्रावस्थामें दाँत कड़कड़ाया करता है। अस्पष्ट शब्द या बुदबुदाया करता है और कभी-कभी चिल्ला उठता है, सपने देखना, बालकोंका सपनेमें घूमना (Somnambulism या Night-walking)।

वृद्धि।—रातमें; रोज़ रातमें २ बजनेके समय, प्रति रात्रिमें ५ बजनेके समय (बच्चोंका अन्त्रशूल), गर्म वायुमें, ग्रीष्म ऋतुमें, माथा झुकानेपर (सरमें चक्कर आना) और सोने बाद (खाँसी)।

घटना।—किसी काममें लगी रहने और अन्यमनस्क रहनेपर और जाड़ा तथा ठण्डी हवा लगनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—कैम्फो, नक्स, जिङ्कम, यह सीसेके विषका प्रतिविष है।

तुलनीय ।—कैल्के, ब्रोमिन (रातके समय भय) ; हायोसा (उन्माद-प्रकृति) ; प्लैटिना (भूत देखना) ; आर्जेण्ट-नाई (डरा हुआ भाव) ; ग्लोनोइन, रास-टक्स (विषाक्त होनेका भय) ; स्टैफि (मानसिक अवसाद) ; जेल्स (पेशियोंकी दुर्बलता) ; कोनायम (खाँसी) ; स्ट्रैमो (तोतलाना) ; इपिका (शिशु-विसूचिका) ; जिङ्कम (बेचैनी) ; टैरेण्टुला (प्रतिच्छिन्न लक्षण) ।

सदृश ।—युजिनिया-ऐम्बस, ब्रोमियम, कैम्फो-मनोब्रोम, ऐमोन-ब्रोम, अरम-ब्रोम, कैलि-आयोड, कार्बो-ऐन, प्लैट, हायो, रास, ग्लोन, जेल्स, स्टैफाई, जिङ्कम-वैलिरियाना ।

शक्ति ।—साधारणतः निम्न-क्रमका (तृतीय दशमिक) विचूर्ण व्यवहृत हुआ करता है; परन्तु २०० शततमिक क्रमतकका व्यवहार भी प्रचलित दिखाई देता है ।

कलि क्लोरोसम

(KALI CHLOROSUM)

दूसरा नाम ।—ऐविल-वाटर ; ब्लिचिङ्ग फ्लूड ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—तरल आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—गलनलीपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है । सर्दी, दमा, स्वरभङ्ग, गलनलीकी झिल्लीका प्रदाह (Diphtheria) प्रभृति लक्षणोंमें यह विशेष लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—कैलि-म्यूर, क्लोरम, कैलि-क्लोर, नेट्रम-हाइपोक्लोर ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि साइट्रिकम

(KALI CITRICUM)

दूसरा नाम।—साइट्रेट आव पोटास, पोटैसिक साइट्रेट।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल दोनों ही आकारमें तैयार होता है।

उपयोगिता और आभास।—मूत्रपिण्डपर इसकी मुख्य क्रिया दिखाई देती है। मसानेका प्रदाह और इसके साथ ही शोथके लक्षणमें लाभदायक है।

सम्बन्ध।—तुलनीय।—नाइट्रिक-ऐसिड।

शक्ति।—निम्न-शक्ति।

कैलि कार्बोनिकम

(KALI CARBONICUM)

दूसरा नाम।—कार्बोनेट आव पोटास, साल्ट आव टार्टर।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण।

डा० ऐलेन कहते हैं:—वृद्ध मनुष्य, काले घने केश, स्थूलकाय, शोथ और पक्षाघातयुक्त मनुष्योंकी बीमारीमें उपयोगी है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हैं:—स्वल्प आर्त्तव या ऋतु-स्राव थोड़ा होना; खूनकी कमी; दमा; पीठमें दर्द; पैत्तिकता; सर्दी; श्वासनली-प्रदाह; क्षय-कास; खाँसी; दुर्बलता; शोथ; मुँहका व्रण (मुँहासे); पाकाबाधक; अजीर्णता; कर्ण-प्रदाह; वक्ष-प्रदाह; अर्श; केशकी बीमारियाँ; सर-दर्द; हृत्पिण्डकी क्षय-प्रदाह या शूल; रक्त-स्राव; मूर्च्छा-वायु; मूत्रग्रन्थि (मसाना) की बीमारी; वयःसन्धि रोग; वक्षोदक रोग; स्वरनलीकी सर्दी या प्रदाह; श्वेत-प्रदाह; बीमारियाँ; जानु-सन्धिकी बीमारी;

यकृतकी बीमारी ; कटि-शूल ; बहुत अधिक आर्त्तव-स्राव ; जरायुसे खूनका स्राव ; बगलमें दर्द ; फुसफुसावरक-झिल्ली-प्रदाह ; गर्भावस्थाकी बीमारी ; गृध्रसी ; अनिद्रा ; गलेका जख्म ; दाँतका दर्द ; सान्निपातिक ज्वर ; आमवात ; जरायुका कर्कटीया जख्म ; सरमें चक्कर आना ; हूप खाँसी इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—(१) सुई बेधनेकी तरह तेज़ दर्द ही इसका प्रधान क्रिया-फल है और विश्रामके समय या रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर यह दर्द बढ़ जाया करता है (ब्रायोनियाके ठीक विपरीत)। रोगी शरीरके किसी भी अंशमें स्पर्श सहन नहीं कर सकता ; कितनी ही सावधानीसे उसे स्पर्श क्यों न किया जाय, वह चौंक उठता है, खासकर पैरका निचला अंश छूनेपर। (२) शरीरके रस आदि या जीवनी-शक्तिके क्षय हो जानेपर, खासकर जिनके शरीरमें खूनका भाग कम है। (३) अकेला नहीं रहना चाहता। (४) सामान्य कारणसे ही सर्दी हो जाया करती है। (५) भौं और ऊपरी पलकके बीचमें अर्बुदके आकारकी सूजन हो जाती है। (६) दृष्टि क्षीण, वमन, शुक्रक्षय, गर्भस्राव या छोटी माताके बाद। (७) सवेरे मुँह धोनेके समय नाकसे खूनका स्राव होता है। (८) दाँतमें दर्द, केवल भोजन करनेके समय। दर्द टपक-भरा ; कोई ठण्डी या गर्म चीज़ लगते ही बढ़ जाता है। (८) पाकस्थली फूली, दर्द-भरी और उसमें स्पर्शका सहन न होना ; भोजन करते ही ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थली फट जायगी—इसी तरह फूल उठती है। आध्मान ; जो कुछ खाता है, वही ऐसा मालूम होता है, मानो भाफ़ बन जायगा। (१०) ऋतु होनेके एक हफ़्ता पहलेसे ही रोगिनीको बहुत गड़बड़ी मालूम होने लगती है ; रजःस्रावके पहले और समय कमरमें तेज़ दर्द मालूम होता है। (११) कमरमें दर्द, पसीना अधिक होना ; गर्भ-स्राव, प्रसव-वेदना और जरायुसे रक्त-स्रावके बाद और भोजनके समय दुर्बलता ; चलनेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है कि वह अब अधिक न चल सकेगी और उसे सो जाना पड़ेगा। (१२) प्रसव-वेदना, क्षीण-वेग ; कमरमें प्रचण्ड दर्द,—कोई अगर रोगिनीकी कमर दबा देता है, तो उसे आराम मालूम होता है। (१३) खाँसी—सूखी, लगातार, गाढ़े गोंदकी तरह या पीबकी तरह श्लेष्मा गलेमें उठकर फिर गलेके अन्दर जाता है—बाहर नहीं निकलता, खाँसी आक्षेपिक और गलेकी रोध करनेवाली या अनपची खाई हुई चीजें कै हो जाती हैं ; खाँसते-खाँसते कड़ा सफेद रङ्गका धुमैला जमा हुआ

श्लेष्मा गलेसे छिटककर बाहर निकल पड़ता है। (१४) क्रुप-खाँसी या दमा—रातमें २ बजेसे ४ बजेतक अधिक प्रकोप रहता है; सीधे होकर या सामनेकी ओर शरीर झुकाकर बैठनेपर या हिलनेपर घट जाता है। (१५) निगलनेमें कष्ट, तालुमूलमें सुई वेधनेकी तरह दर्द, मानो उसमें काँटा गड़ रहा है; खानेकी चीजें अकसर वायुनलीमें प्रवेश कर जाती हैं और अनकुख हो जाता है; निगलनेके समय पीठमें दर्द मालूम होता है। (१६) हृत्पिण्डमें मेदापजनन प्रवणता, हृत्पिण्डमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक सूतके सहारे लटकाया हुआ है। (१७) मल-काठिन्य—मल कड़ा गाँठ-गाँठ, बहुत कष्टसे निकलता है और मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है, पाखाना होनेके दो-एक घण्टा पहले पेटमें तेज़ दर्द आरम्भ हो जाता है। (१८) भोजनके समय और बाद निद्रालुता (औंघाई)—बार-बार जम्हाई आना। (१९) लक्षण आदि रातके अन्तिम भागमें (२ बजेसे ४ बजेके बीचमें) बढ़ जाते हैं और बाएँकी अपेक्षा दाहिने अंगमें ही रोगका आक्रमण अधिक हो जाया करता है। (२०) नाना प्रकारकी भ्रम कल्पना, मानो उसकी खाट नीचे खिसकती चली जाती है, मानो उसकी देहका भीतरी भाग खाली और खोखला है; खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ लुढ़ककर उलट-पलट रहा है। (२१) खूनका पतलापन या खूनकी कमी, बहुत अधिक कमजोरी और इसके साथ ही उजले धुमैले रङ्गकी त्वचा। (२२) शोथ, उदरी इत्यादि केलि-कार्बोनिकमके कई प्रकृतिगत और अव्यर्थ निर्णायक लक्षण हैं। कच्छुसदृश विषनाशक (Antipsoric) दवाओंमें यह एक प्रधान दवा है; इसकी क्रिया बहुत गंभीर और दीर्घ-काल स्थायी है।

लक्षणावली

मन।—अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें उत्सुकता—डरता है, कि मानो अब उसकी बीमारी अच्छी न होगी। अस्थिरमति, शंकान्वित चित्त, "शायद यह काम करूँ और कुछ अमंगल हो जाये।" सभी विषयोंमें ऐसी ही चिन्ता बनी रहती है। चिड़चिड़ा स्वभाव; अधीर; असन्तुष्ट। परिश्रम-कातर, अकेला रहनेसे डरता है या रहना पसन्द नहीं करता (आर्स, बिस्मथ, लाई, हायो, लैके-कैन, सिपि, स्ट्रैम; अकेला रहना पसन्द करता है—कैप्स, ऐक्टि, साइक्ले, हेलिबो, आक्साई-ड्रोप, रास, इग्ने)। एकाएक किसी तरहकी

आवाज़ सुनते ही चौंक उठता है (बेल, बेर, हियुरा, कैलि-आर्स, मैग-म्यूर, थिरिड, मिडोरिन, नक्स-मस)। सभी विषयोंमें ताच्छिल्य प्रकट करता है (इपिक)। कोई बात पूछनेपर स्थिर नहीं कर सकता कि क्या उत्तर दें। अत्यन्त स्पर्शकातर—कितनो ही सावधानीसे उसे स्पर्श क्यों न किया जाय, वह चौंक उठता है, विशेषकर पदतल या तलवा छूनेपर (लिसिन, इसके विपरीत—नैट्र-कार्ब)।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, मानो दोनों कान रुके हुए हैं ऐसा मालूम होता है। आँखके सामने अन्धेरा पैदा हो जाता है (ऐकि-पाई, डालका, ओपि)। सवेरे, संध्याके समय और भोजनके बाद या शरीर अथवा माथा तेजीसे घुमानेपर (कैल्के, ऐकि)। चलनेके समय डलमलाया करता है (ऐसिड-म्यूर, नक्स-मस, नक्स-वोम); मालूम होता है मानो पाकस्थलीसे सरमें चक्कर पैदा हो रहा है। गाड़ीपर चढ़नेपर (बेल, काक्यु), छींकनेपर, खाँसनेपर या सवेरे सरमें दर्द ; अधकपारी या एक ओरका सर-दर्द। इसके साथ ही मिचली और वमन (कोलो, कोना, इपिक); वृद्धिकी अवस्थामें माथा जरा भी हिलानेपर दर्द असह्य मालूम होता है। माथेके पिछले भागमें लगातार दर्द हुआ करता है (सामनेवाले अंशमें—बेल, ब्राई, पल्स ; मूर्द्धदेशमें—हिप, लैके), विशेषकर चलनेके समय, क्रोध-प्रवणताके साथ। रोशनी सहन न होनेके साथ ललाटमें टपकको तरह दर्द (बेल, कोना, ग्रैफ, मूर्द्धदेशमें—कैप्स, क्रियो, नैट्र-कार्ब, स्ट्रैम ; समूचे माथेमें—लैके, पल्स), कनपटीमें या शङ्खदेशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। माथेमें शीत लग जानेकी तरह मालूम होना (बेल, सिलि)। अस्त्र द्वारा काटनेकी तरह सर-दर्द, विशेषकर कनपटी और ललाटमें। माथा झुकाने या हिलानेपर और आँख तथा निचला हनु हिलानेपर वृद्धि, माथा उठानेके साथ, उत्ताप लगने और ललाट मलनेपर घटना। ऐसा मालूम होता है, मानो सरमें कोई पदार्थ अलग-सा रहकर घूम रहा है और इन सब स्थानोंके केश चक्कर खा रहे हैं। सवेरे ललाटमें पसीना। केश झड़ जाना, विशेषकर कनपटी, भौं और चिबुकदेशके [illegible] रूखे दिखाई देते हैं और झड़ जाते हैं।

आँख।—आँखका सफेद अंश लाल (रक्तवर्ण—थूजा)। आँखमें सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई)। सवेरे नींद खुलनेपर पलकें सट जाती हैं (इयुफ्रे, हिप, पल्स, कैलि-बाई)। मानो एक टुकड़ा छेददार वस्त्र दृष्टिमें

व्याघात पैदा कर रहा है। दृष्टिके सामने काले रङ्गके बिन्दु सब उड़ते हुए दिखाई देते हैं (काक्यु, कास्टि, डिजि)। भौं और आँखकी पलकोंके बीचमें अर्बुदकी तरह सूजन दिखाई देती है (निचली पलकके नीचे—एपिस)। आँख और पलक सट जाती है और दीयेकी रोशनीमें दर्द मालूम होता है। आँखके कोनेकी त्वचा क्षय और पीब सञ्चय हो जाता है। पढ़नेके समय या आकाशकी ओर देखनेपर ऐसा मालूम होता है मानो दृष्टि-पथपर बिन्दु सब नृत्य कर रहे हैं (ऐगार, बेल, सिङ्को, काक्यु, कोना, फास); दिनके समय आँख झुलस जाती है। रमण, शुक्रक्षरण, गर्भ-स्राव और खसड़ा रोगके बाद क्षीण-दृष्टि।

कान।—दोनों कानोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम होना (ऐसिड-नाई, कोना)। कानमें रह-रहकर कट्-कट् शब्द होता है (चिबानेके समय—ग्रैफ)। कानमें सों-सों भों-भों शब्द; श्रवण-शक्तिमें गड़बड़ी। कर्णमूल-ग्रन्थिका कड़ापन और सूजन।

नाक।—लाल और जलन पैदा करनेवाले उत्तापके साथ सूजन। बहुत देरतक नासारन्ध्रमें, मुँहमें क्षय हुई त्वचा या खाल उधड़ जाना और पपड़ी जमना। नासारन्ध्रमें जखम और उससे रक्तमय श्लेष्माका स्राव, सबेरे मुँह धोनेके समय नाकसे खूनका स्राव (ऐमोन-कार्ब, आर्नि, ब्राई), सर्दी पतली, बार-बार छींक, कमरमें दर्द और सरमें दर्दके साथ—नाकसे खून मिला श्लेष्मा-स्राव; नाकमें पीबकी तरह श्लेष्मा इकट्ठा हो जाना। बदबूदार श्लेष्मा निकला करता है।

मुख-विवर।—सूखा, थकावट प्रकट करनेवाला और तेज़हीन चेहरा। गालमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। मुँहमें सूर्य-गन्ध दाग। दोनों ओंठ मोटे और फटे-फटे और रूसीकी तरह छाल निकलना। निचला हनु और निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थि फूली। दाँतमें दर्द, केवल भोजन करनेके समय या सबेरे नींद खुलनेपर; दर्द टपककी तरह, कोई ठण्ढी या गर्म चीज़ छू जानेपर दर्द बढ़ जाता है। मुँहका स्वाद तीता रहता है। मुँहसे बदबूदार हवा निकलती है। मुँहमें बहुत लार सञ्चय होती है, इतनेपर भी मुँह सूखा रहता है; मुँहके भीतर और जीभकी पीठपर रसभरे दाने निकलते हैं और त्वचाकी खाल उधड़ जाती है। जीभके अगले भागमें दर्द-भरे दाने निकलते हैं; जीभके अगले भागकी लताकी तरह छोटी पेशीमें जखम।

निगलनेमें कष्ट—तालुमूलमें सुई बेधनेकी तरह दर्द, मानो काँटा गड़ गया है (हिप, डलिकस, ऐसिड-नाई)। खानेके पदार्थ आदि प्रायः वायुनलीमें प्रवेश कर जाते हैं और अनकुख लग जाता है; निगलनेके समय पीठमें दर्द मालूम होता है। दाँतमें दर्द और बाएँ वक्षमें सुई गड़नेकी तरह या छेदनेकी तरह दर्द पर्यायक्रमसे प्रकट होता है।

पाकाशय और अन्त्राशय।—भोजनके समय औंघाई, बार-बार जम्हाई आया करती है। खटाई या चीनी खानेकी इच्छा (हिप देखिये)। दूध या गर्म चीज़ अच्छी नहीं लगती और सहन भी नहीं होती (पल्स, सिपि)। पाकस्थली आध्मान वायुसे फूली रहती है और उसमें स्पर्श सहन नहीं होता; भोजन करते ही पेट इतना फूल जाता है कि ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा। बहुत अधिक वायु-सञ्चय; रोगी जो कुछ खाता है वह सभी ऐसा मालूम होता है, मानो भाफ़ बन जाता है (आयोड, नक्स-मस, अम्लमें परिणत हो जाता है—केल्के-आष्ट्र)। भोजनके बाद खट्टी डकार (ब्राई, केल्के, फास, तीते स्वादकी डकार—बेल, चायना, नक्स-वोम; लहसनकी गन्धकी डकार—मस्कस)। मिचली इतनी अधिक रहती है, कि ऐसा मालूम होता है कि रोगी सुन्न हो पड़ेगा, सोनेपर वह बन्द हो जाता है (रास)। खायी हुई चीज़ अम्लमें परिणत होकर कै हो जाती है (नक्स, फास, बहुत खट्टा जलीय वमन—आइरिस)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होता है मानो अस्त्रसे काटकर टुकड़े-टुकड़े कर रहा है (मानो छिन्न-विच्छिन्न कर रहा है—आर्स)। पाकस्थलीमें टपक (नक्स, पल्स)। पाकस्थलीमें ऐसा मालूम होना मानो एक मुट्ठी-भरका गोलेकी तरह पदार्थ है। यकृत-प्रदेशमें जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द (ब्राई)। आँतें आदिकी निष्क्रियता और आँतमें ठण्डक मालूम होना (आर्स, फास, सिलि)।

मलान्त्र और मल।—मलमें कड़ापन, मल कड़ा और बड़े कष्टसे निकलता है, पाखाना होनेके एक या दो घण्टा पहले, मलान्त्रमें सुई गड़नेकी तरह शूलका दर्द अनुभव होता है। पाखाना होनेके पहले और पाखाना होनेके समय सफेद आँव निकला करती है। मलान्त्रमें जलन और खुजली। बवासीरका मसा बड़ा और फूला तथा बाहर निकला हुआ (ऐसिड-म्यूर)। बहुत दर्द-भरा, खाँसनेपर अर्शका दर्द बढ़ जाया करता है। मलद्वारमें ऐसा

मालूम होता है, मानो एक जलता हुआ लोहेका सींखचा घुस रहा है; ठण्डे पानीके स्पर्शसे क्षणभरके लिये आराम मिलता है (कैलि-आर्स)। ऋतुके समय मलका कड़ापन (सिपि)। गर्भावस्थामें मलद्वारमें सुई गड़ने और पीसनेकी तरह दर्द।

पेशाब।—बार-बार वेग और बहुत थोड़े परिमाणमें गर्म पेशाब होना, पेशाबके अन्तमें मूत्राधारकी सुखशायी-ग्रन्थिसे रस-स्राव। मूत्रनलीमें काटनेकी तरह दर्द, दर्द बाईं ओरसे दाहिने पार्श्वमें चला जाता है। पेशाब करनेके समय और बाद मूत्रनालीमें जलन होती है।

पुं-जननेन्द्रिय।—शिश्न और लिङ्गमुण्डमें खींचने और छेदनेकी तरह दर्द। मुष्कमें चोटकी तरह दर्द; रमणकी इच्छा न होना। कामोत्तेजक सपने और वीर्यस्खलन। रमण और वीर्यस्खलनके बाद क्षीण दृष्टि और आलस्य मालूम होना।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—रमणियोंको रमणसे अनिच्छा; रमणके समय योनिके भीतरकी खाल उधड़ जानेकी तरह दर्द होता है, ऋतु बहुत देरसे होता है, सफेद और थोड़ा होता है (डाल्का, हिप, नेट्रम-म्यूर, सल्फ, पल्स), निर्दिष्ट समयके बहुत पहले बहुत ज्यादा आर्त्तव-स्राव (बेल, कैल्के, नक्स, फास, सेबाइ)। रोगिनी ऋतु आरम्भके बाद एक सप्ताह पहले बहुत गड़बड़ी अनुभव करती है; आर्त्तव-स्रावके पहले और बाद कमरमें दर्द होता है। गर्भ-स्राव और जरायुसे रक्त-स्रावके बाद और भोजनके समय कमरमें बहुत दर्द, बहुत पसीना होना और थकावट मालम होना; चलनेके समय रोगिनीको ऐसा मालूम होता है, कि वह चल न सकेगी और उसकी सो जानेकी इच्छा होती है। प्रसवका दर्द, क्षीण वेग; नितम्बदेशमें तेज़ दर्द, कमर दबा देनेके लिये कहती है (कास्टि); बहुत अधिक कमरमें दर्दके साथ पीली आभा लिये लिये प्रदरका स्राव (ऐल्यु, सल्फ; पीले रङ्गका और गाढ़े गोंदकी तरह—कैलि); गर्भवतियोंका खूनका स्राव—थक्का-थक्का जमा हुआ खूनका स्राव। ऋतुकालमें सवेरे सर-दर्द, उदर या तलपेटमें छेदनेकी तरह दर्द; कमरमें ऐसा दर्द, मानो एक भारी चीज़ दबाई हुई है, कर्ण-विवरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द; नयी सर्दीका स्राव और समूची देहमें खुजली निकल आया करती है। गर्भावस्थामें चलनेके समय जी मिचलाता है, परन्तु वमन नहीं होता और रोगिनीको ऐसा

मालूम होता है, कि वह अभी-अभी लेटनेपर मर जायगी ; शरीरमें सब जगह यहाँतक कि पैरकी अंगुलीके अगले भागतककी धमनियोंमें टपक पैदा हो जाती है ; शरीरके भीतर खालीपन मालूम होता है और रोगिनी इतनी गड़बड़ी अनुभव करती है, कि वह बड़े कष्टसे दो-एक क़दम चल सकती है ; कमरमें इतना दर्द होता है, कि वह रास्तेमें ही लेट जाती है। सूतिका ज्वरमें बहुत अधिक प्यास।

श्वास-यंत्र।—स्वरभङ्ग और स्वरलोप (फास)। गलेके भीतर सुरसुरी या उत्तेजनाकी वजहसे खाँसी (बेल, चायना, नक्स, फास)। खाँसी—सूखी, ऊपर-के-ऊपर, खाँसते-खाँसते गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्मा या पीब वायुनलीके भीतरसे अलग होकर गलेमें आ जाता है ; पर वह बाहर न निकलकर फिर निगलनेके साथ गलेमें चला जाता है। आक्षेपिक खाँसी—गलरोध करनेवाली या अजीर्ण खाई हुई चीजोंकी कै करा देनेवाली ; खाँसनेके समय मुँहके भीतरसे कड़ा, सफेद या धुमैला जमा हुआ या छोटे श्लेष्माकी गोलियाँ सब निकलकर फैल जाती हैं (बैडि, चेलिडो)। बाएँ वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ सूखी प्रबल खाँसी ; रातके ३ बजेसे ४ बजनेके समय बढ़ना। स्वरनालीमें एक खोल या ठेपी मानो रुकी हुई है, ऐसा अनुभव होना (स्पञ्जिया)। बाहरी सञ्चालनसे खाँसी आने लगती है या बेहला बजानेके समय बार-बार खाँसी आती है। बलगम पीला पीबकी तरह या गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मामय, कभी खट्टा स्वाद लिये या खून-मिला। हूप-खाँसी—बार-बार सूखी, शरीरको हिला देनेवाली, हूप शब्दमें अन्त होनेवाली खाँसी—नाकसे खूनका स्राव, पाकस्थलीके भीतरके सभी खाये हुए पदार्थ वमन कर डालना। खून-मिले बलगमके साथ ऊपरी पलक और भौंके बीचमें थैलीकी तरह सूजन ; रातके ३-४ बजेके समय बढ़ना। श्वासरोग या दमा ; सीधे होकर या सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर या हिलनेपर श्वासकष्टका घटना ; रातमें २ बजेसे ४ बजेतक बढ़ना। तेजीसे चलने या सवेरेके समय श्वास-प्रश्वासमें बाधा पहुँचती है। श्वास लेनेके समय वक्षोस्थि और दाहिने वक्षसे पीठतक सुई गड़नेकी तरह दर्द। रातमें श्वास-प्रश्वासमें व्याघातकी वजहसे नींद खुल जाती है (सोते ही श्वास-रोध होनेका उपक्रम होता है और नींद खुल जाती है—क्लोरम, जेलिस, ग्रण्डि, लेके, लैक-कैन, ओपि)। फेफड़ा और यकृतके प्रदाहमें दाहिने वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द। फेफड़ेमें पीब-सञ्चय या फोड़ा निकलना। "फेफड़ेके

जखमवाले रोगमें यह कच्छु-विषवत्‌दोष नाश करनेवाली दवा सेवन न करनेपर रोगी कभी आरोग्य नहीं हो सकता"—हनिमैन। रोगी कहता है—"२५ वर्षकी उम्रमें मुझे फेफड़ेका जो प्रदाह हुआ था, उससे अबतक एकदम अच्छा न हो सका।" कलेजा धड़कना, विशेषकर सवेरे नींद खुलनेपर बढ़ना, इसके साथ ही मस्तिष्कमें जड़ता और मिचली। हृद्‌-प्रदेशमें जलन (जाड़ा मालूम होना—नैट्र-म्यूर), हृद्‌प्रदेशमें ऐंठनकी तरह दर्द, मानो जकड़ गया। हृत्पिण्डके भीतर या हृद्‌-प्रदेशमें नख लगने या जकड़ जानेकी तरह दर्द और ऐसा मालूम होता है, मानो हृत्पिण्ड सूत या डोरीसे झुलाया जा रहा है। दाहिनी करवट सोनेपर ऐसा मालूम होना, मानो हृत्पिण्ड बाएँ पार्श्वकी ठठरियोंकी दाहिनी ओर खींच रहा है। दीर्घ निश्वास ग्रहण करनेपर या खाँसनेपर बढ़ जाता है, शरीर हिलानेके समय दर्द मालूम होता है। शरीरमें सब जगह यहाँतक कि पैरकी अंगुलीके अगले भागतक धमनीकी गति अनुभव होती है।

गर्दन और पीठ।—गर्भ-स्राव—जरायुसे शोणित-स्राव और प्रसवके बाद तथा भोजनके समय पीठ और कमरमें दर्द, पसीना ज्यादा होना और कमजोरी (कैल्के-हाइपोफास); चलनेके समय कमरमें इतना दर्द और थकावट मालूम होती है कि रोगिनी रास्तेपर ही सो जाना चाहती है। ऋतुके पहले और समय कमरमें तेज़ दर्द; कमरमें अकड़न और सुन्न करनेवाला दर्द (गलेमें—सल्फ)। दोनों ही मूत्र-ग्रन्थियोंमें सुई बेधनेकी तरह दर्द (बाईं ओर—बार्बेरिस, टैबाक; दाहिनी ओर—लाइकोपोड, ओसि-कैन)। ऐसा मालूम होता है मानो गलेका पिछला भाग जकड़ गया है (बेल, फास, सिपि, सल्फ)। ग्रीवा-देशकी ग्रन्थि फूली (कास्टि, मर्क, साइलि)। निचली पीठमें लगातार आकर्षणकी तरह प्रचण्ड दर्द और कभी-कभी टपक मालूम होती है; शायितावस्थामें घटना। कमरमें चोटकी तरह दर्द, केवल विश्रामके समय अनुभूत होता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कन्धेसे मणिबन्धतक, समूचे बाँहमें उखाड़नेकी तरह दर्द (रास, कन्धेकी सन्धिके स्थानपर—ब्राई, सल्फ)। ऐसा दर्द मानो कलाईकी पेशियाँ-सब उखाड़ी जा रही हैं। रातके समय दोनों पैरोंमें छेदनेकी तरह वातका दर्द, स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। रोगीको चाहे कितनी ही सावधानतासे छुआ जाये, वह चौंककर काँप उठता है, विशेषकर यदि निचला पैर या तलवा छू जाये। तलवेमें बहुत भार और अकड़न मालूम होती

है। सीढ़ी उतरने, खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय दोनों जानु क्षीण और सुन्न मालूम होते हैं (रियुटा, हियुरा)। दोनों पैर बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार पसीनेसे भरे रहते हैं। किसी अंगको दबाकर सोनेपर वह सुन्न हो जाता है; तलवेके गट्ठे, छूनेपर बहुत दर्द मालूम होता है। पैरके अंगूठेका नख, ऐसा मालूम होता है, मानो माँसमें घुस गया है (साइलि)।

निद्रा।—दिनमें और संध्याके पहले अकसर औंघाई आया करती है। खाता-खाता सो जाता है। सोया-सोया दाँत कटकटाता है, काँपता और सिहर उठता है। बोलता है और भयसे चौंक उठता है। रातके ३ या ४ बजे नींद खुल जाती हैं। साँस रुकनेकी वजहसे नींद खुल जाती है। डाकू, मृत्यु, विपत्ति, सर्प, प्रेत इत्यादिके सपने देखता है।

शीत, उत्ताप और पसीना।—नाड़ीकी गति विभिन्न प्रकारकी। सवेरे जाड़ा मालूम होना या ज्यादा कँपकँपी मालूम होना (सन्ध्याके समय अधिक—पल्स)। दर्दके बाद प्रायः शीत मालूम होता है (दर्दके समय जाड़ा मालूम होना—आर्स, मर्क, पल्स)। सन्ध्याके समय शीत मालूम होना, अंगीठी या चूल्हेके पास बैठनेपर आराम मालूम होता है (आर्स, इग्ने; अंगीठी या चूल्हेके पास जाड़ा अधिक मालूम हो—इपिक)। भीतरी उत्ताप, परन्तु बाहरी जाड़ा। शीताविर्भाव—भोजनके बाद; शरीर सञ्चालनसे हो; घरके बाहरकी हवा लगनेपर बढ़ना; गर्म लगनेसे घटना; उत्तापावस्थामें प्यास नहीं रहती; बार-बार जम्हाई आती है; मस्तक और वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होता है; श्वासकृच्छ्रता; भीतरी उत्ताप और बाहरी शीत; मानसिक परिश्रम करनेसे ही पसीना आ जाता है; रातभर पसीना होता है, पर बोखार नहीं छूटता।

वृद्धि।—रातके ३ बजेसे ४ बजेतक, विश्रामके समय या सोनेपर; दाहिनी करवट सोनेपर, रोगवाला पार्श्व दबाकर सोनेपर, शरीर सामनेकी ओर झुका रखनेपर, खाँसनेपर, सवेरे, सन्ध्याके बाद सोनेपर; ठण्डी हवा लगनेपर, गर्म द्रव्य आदि पीनेपर, छूनेपर, दबानेपर और रमणके बाद।

उपशम।—दिनमें इधर-उधर घूमते-फिरते रहनेपर, दिनमें सीधे होकर या सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर, चलनेपर (नाकका छेद रुकनेपर), निर्मल वायु सेवनसे (परन्तु शीत बढ़ जाता है); उत्ताप लगनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर और दबानेपर (उदरका दर्द)।

सम्बन्ध ।—दोषघ्न या प्रतिविष ।—कैम्फो, काफि इत्यादि ।

अनुपूरक ।—कार्बो-वेज, फास, नेट्र-म्यूर, सिपिया, नाइट्रिक-ऐसिड ।

सदृश ।—ब्राई, लाई, नेट्रम-म्यूर, ऐसिड-नाई, स्टैन, फास, सिपि, चेलिडो, कैल्के-हाइपोफास । "जब नेट्र-म्यूरसे रुका हुआ रजःस्राव फिरसे जारी करनेकी चेष्टा विफल हो, उस समय कैलि-कार्बकी दो-चार मात्रा प्रयोग करनेपर तुरन्त काम बन जाता है" (हनिमैन)। तरल और घड़घड़ शब्द करनेवाली खाँसीमें कैलि-सल्फ, फास और स्टैनमके बाद कैलि-कार्ब खूब फायदा करता है ।

तुलनीय ।—कास्टिकम (श्वास-प्रश्वास क्रिया ; अर्श, वात) ; कैलि-बाई (सर्दी, सर-दर्द, अजीर्ण) ; ब्रायो (तेज़ दर्द, पित्त लक्षण) ; चेलिडो, मर्क-बाई (न्युमोनिया) ; सिपिया (स्त्री-रोग) ; स्पाइजि (हृत्पिण्डमें दर्द) ; इपिकाक (हमेशा मिचली) ; ऐण्टिम-टार्ट (श्वासनाली-प्रदाह) ; सोराइनम (कमजोरी) ; कैल्के (हताशभाव) ; फास-ऐसिड (उदासीन भाव) ; हैमा (अर्श) ; ब्रायो, साइलि (जानु-सन्धि) ; फास (हृत्पिण्डका मेदापकर्ष) ; लैकेसिस (हृत्पिण्ड मानो सूतेमें झुलाया हुआ है) ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे १००० शततमिक क्रमतक ।

क्रियाका स्थायित्व ।—४० से ६० दिन ।

कैलि क्लोरिकम

(KALI CHLORICUM)

दूसरा नाम ।—पोटेसियम क्लोरेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—पेशाबमें अण्डलाल ; मुँहमें जखम ; दमा ; मुँहका उपक्षत ; माथेमें पपड़ी जमना ; मूत्राधारका प्रदाह ; रक्तामाशय ; कर्कटकी तरह जखम ; खूनका पेशाब ; रक्त-स्राव ; बवासीर ; नखकी बीमारी ; पाराका विकार ; मुँहका

प्रदाह ; मसानेका प्रदाह ; स्नायुशूल ; शोथ ; पक्षाघात (मुँहका) ; स्वर-नालीका प्रदाह ; मुँहासे ; धूम्ररोग ; शीताद ; उपदंश ; मुँहका स्नायुशूल ; जखम इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—इसका प्रधान-क्रियास्थल श्लैष्मिक-झिल्ली है। इसके द्वारा मुख-विवर और दोनों ओठोंकी भीतरी झिल्लीके ऊपर छाले, फोड़े आदि निकलना ; जिस झिल्लीपर रोगका आक्रमण होता है, वह लाल हो जाती है और फूल उठती है और उसके ऊपरवाले जखम आदिका तल-देश भूरा मालूम होता है, इसके अलावा शरीर सामनेकी ओर झुकानेपर या उठनेके समय सरमें चक्कर आना और दो देखना, चेहरा फूला, चेहरेका स्नायुशूल, जीभमें जलन, भूख न लगना, पेट फूलना और पेटमें भाफ़ पैदा हो जाना, पेशाब अधिक होना, डरावने सपने देखना, ठण्डे दिनोंमें शीत और कँपकँपी ; हृत्प्रदेशमें शीत मालूम होना ; यकृत आदिमें मेदापजनन, यंत्रणादायक आम-रक्त रोग वगैरह कैलि-क्लोरिकमके विषयीभूत हैं। वायुमार्ग, तालुमूल वगैरहसे भी इसकी क्रियाका परिचय मिला करता है। रोगवाले पार्श्वमें स्पर्श सहन न होना इसका एक निर्णायक लक्षण है (डा० ह्यिुज)।

लक्षणावली

मन ।—प्रफुल्लता, इसके बाद दुःखित भाव ; ताच्छिल्य भाव, आक्षेपके बाद विकार और प्रलाप ।

मस्तक ।—सामनेकी ओर देह झुकानेपर और उठकर खड़े होनेपर सरमें चक्कर आ जाता है। बलपूर्वक देह हिलानेपर रक्त-संचय ज्यादा हो जानेके साथ-ही-साथ सरमें चक्कर आना। माथेके भीतर छेदनेकी तरह दर्द और यह दर्द गण्डास्थितक फैल जाता है। बच्चोंका दुधिया फोड़ा (वायोला-ट्राई, विङ्का-माई, रास-विन)। आँखके गोलेके ऊपरी प्रदेशमें हलके दर्दके साथ दो देखना और ऐसा मालूम होता है, मानो द्रव्य आदि अगल-बगल सटे हुए रखे हैं। खाँसी या छींकके बाद आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देती हैं।

नाक ।—नाकके छेदसे बराबर पानीकी तरह श्लेष्माके साथ लगातार छींक आती रहना (साइक्लेमेन)। रातमें केवल दाहिने छेदसे खूनका स्राव—रक्तस्राव होने बाद चित्तकी विकलताका दूर होना ।

मुखमण्डल ।—सवेरे नींद खुलनेपर मुँह इतना फूल जाता है, कि देखनेमें गड़बड़ी होती है। मुँह, आँख और चर्वण-पेशीका स्पन्दन। मुँहकी हड्डीमें खींचन, ऐंठन और पीसनेकी तरह दर्द। एक पार्श्वका पक्षाघात (कास्टि), रोगवाले पार्श्वमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, मुँहके बाएँ पार्श्वमें बिजलीकी सलाई गड़नेकी तरह दर्द; बोलने, खाने या जरा भी छूनेपर बढ़ना; धीरे-धीरे रोगवाला पार्श्व सुन्न हो जाता है। हनु-सन्धिमें ऐंठन और हनु तथा दाँतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द मालूम होना; दाहिने पार्श्वमें दर्दकी अधिकता। दोनों ओंठ नीले और फूले।

मुख-विवर ।—हनु और दाँतमें डङ्क मारनेकी तरह दर्दके साथ गालसे हनु-सन्धितक फैलनेवाला दर्द, ऐसा मालम होना, मानो जकड़ गया है। दाँतके दोनों मसूढ़े छेद-भरे, कोमल रहते हैं और उनसे सहजमें ही खून निकलता है, मुँह और गलेके भीतर छोटे सफेद आभा लिये जखम सब निकलते हैं और मुँहसे बहुत बदबूदार वायु निकलती है। मुँहके भीतरी भागका उपक्षत और कौषिक-प्रदाह, आक्रान्त श्लैष्मिक-झिल्ली लाल हो जाती है और फूल उठती है तथा गालका भीतरी भाग, ओठ, मसूढ़ा वगैरहमें धुमैली तलीवाले जखम पैदा होते हैं (ऐसिड-म्यूर, ऐसिड-सल्फ, मर्क-कोर)। बहुत ज्यादा लार बहना—ओठके अगले भागसे लगातार चुआ करती है। जीभ फूली हुई।

गलेके भीतर ।—हनुके नीचेकी ग्रन्थियाँ सब फूली; गलेका भीतरी भाग लाल और फूला हुआ मालूम होता है। गलेका भीतरी भाग सूखा और त्वचामें रगड़ मालूम होनेकी तरह प्रचण्ड खाँसी, मानो गलेमें गन्धकका धुआँ घुस गया है। गल-ग्रन्थिका प्रदाह और जखमकी तरह अवस्था और सूजन।

पाकस्थली ।—प्रचण्ड भूख, पर थोड़ा-सा भी पानी पीनेपर तृप्ति हो जाती है और भूख नहीं रहती; शून्य या खट्टी डकार; कभी तेज़ डकार और कभी-कभी वक्ष और पाकस्थलीमें दर्द—इसी तरह पर्यायक्रमसे हुआ करता है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें भार और भारीपन मालूम होना और आध्मान (पेट फूलना), रातमें घटना। पीली आभा लिये काले रङ्गका पदार्थ वमन होता है। प्यास नहीं रहती।

अन्त्राशय।—बहुत अधिक गैस पैदा होना और पेट फूलना; पेटमें गड़गड़ाहट होकर पतला-पतला पाखाना होने लगता है। नाभि-प्रदेशमें भार, कड़ापन और दर्द मालूम होता है। बायीं कोखमें दबाव मालूम होता है; दाहिनी कोखसे नाभि-प्रदेशतक भीतरसे दबाव मालूम होना; वायु निकलनेपर घटना।

मलांत्र और मल।—मलमें कड़ापनके साथ निकला हुआ अर्श (ऐसिड-म्यूर)। यकृत और पित्तवाही शिरामें अधिक रक्त-सञ्चय होना और पित्तके प्रवाहका रुक जाना, इसके साथ ही अर्श पैदा हो जानेकी सम्भावना। रक्तामाशय—पेटमें भयङ्कर दर्द, मानो किसी अस्त्रसे छेद रहा है। बार-बार मल-वेग; कूथनकी वजहसे रोगी चिल्लाया करता है, बहुत थोड़ा मल। बहुत बार केवल सूखा खून निकलता है और रोगीमें उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती (टी० एफ० ऐलेन)। प्रबल उदरामय, मल क्रमशः और भी पतला हो जाता है, अन्तमें केवल आम निकला करती है।

पेशाब।—मसाना या वृक्क-प्रदाह। पेशाब—प्रबल और बार-बार वेग। मूत्रस्थली खाली नहीं होती, कई बूंद खून-मिला पेशाब बूंद-बूंदकर निकलता है। मूत्रस्थली और मूत्रनालीमें उत्तेजनाके साथ बार-बार अधिक परिमाणमें पेशाब होना। पेशाब लार-भरा और काली आभा लिये या पीला-काला रङ्ग। खूनका लोहित उपादान मिला; कभी-कभी गदला पेशाब होना। पेशाब रुकना।

श्वास-यंत्र।—कण्ठ और वक्षमें सूखापन मालूम होनेके साथ प्रचण्ड खाँसी, मानो गलेमें गन्धकका धुआँ घुस गया है। श्वास-रोग, इसके साथ ही वक्षस्थलमें कसावटका भाव (जिङ्क, कैड्मि-सल्फ, कैक्ट), मानो वक्षमें गन्धकका धुआँ प्रवेश कर गया है। वक्षमें दबाव मालूम होना और मानो दोनों फेफड़े एक सूतेसे कसकर बँधे हुए हैं। हृदयके अगले भागमें शीत मालूम होना (कैलि-नाई, नेट्र-म्यूर)। हृत्पिण्डमें बहुत टपकका दर्द, वक्षमें दबाव मालूम होना और दोनों पैरोंका ठण्डा मालूम होना।

प्रत्यङ्ग आदि।—धनुष्टंकार आदि आक्षेपके बाद विकार और प्रलाप। माथा तथा अन्यान्य अङ्गोंका स्पन्दन। शरीरके विभिन्न अंशोंमें वातकी वजहसे दर्द। कमजोरी, आलस्य और निद्रालुता। हिमाङ्ग अवस्था। गर्म जलमें

स्नान करनेपर पसीना और उत्तम नींद आकर घट जाता है। बहुत जाड़ा मालूम होना, लगातार सिहरावन और कम्पन और कभी दोनों हाथ ठण्डसे अकड़ जाते हैं। दोनों पैर लगातार ठण्डे रहते हैं। पेशियोंकी अकड़न। दोनों हाथ बहुत ज्यादा ठण्डे मालूम होते हैं। प्रदाहजनक नख-शूल। ठण्डे पैरोंके साथ कलेजा धड़कना।

त्वचा।—शरीरका नीलापन, विशेषकर ओठ और हाथ-पैरोंका; ललाट, ओठ और चिबुकके बीचमें और उरुमें लाल रङ्गके दाने निकलते हैं। हाथ-पैरोंमें लाली-भरी और रस-भरी खुजलानेवाली फुन्सियाँ निकलती है। समूची देहमें खुजली, सन्ध्याके बाद सोनेपर बढ़ना। नेबा या कामला।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—मर्क।

तुलनीय।—कैलि-म्यूर (मुँहका पक्षाघात); कास्टि, कैलि-बाई (गलनलीका प्रदाह); कैक (दमा); कैडमियम-सल्फ, जिङ्क, कैलि-नाई, नेट्र-म्यूर (हृत्पिण्डमें ठण्डक मालूम होना)।

शक्ति।—पहला दशमिक विचूर्ण (ह्रियुज)। १लासे ६ठा दशमिक क्रम। आजकल ३० या उच्च क्रम व्यवहार हुआ करता है।

कैलि सायानेटम

(KALI CYANATUM)

दूसरा नाम।—साइनाइड आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:— संन्यास; दमा; कर्कट रोग; आँखका स्नायुशूल; मृगी; सर-दर्द; स्नायुशूल; वात; बोलीकी जड़ता; जीभका कर्कटीया जखम।

उपयोगिता और आभास।—अपस्मार या मृगीकी तरह और संन्यास आदिके लक्षणमें इसका प्रधान लाभ दिखाई दिया करता है। अधिककर कनपटी और भौंहोंका स्नायुशूल और जीभके कर्कट रोगमें भी यह बहुत लाभदायक है।

लक्षणावली

मस्तक।—माथेमें बहुत चक्कर आना; ऐसा मालूम होता है, मानो उसके चारों ओर सभी चीजें घूम रही हैं। माथेके पीछे खींचन। कनपटी और भौंहोंमें स्नायुशूल—भयङ्कर यन्त्रणा, रोगी चिल्लाया करता है और रोगवाली जगहमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता। कनपटी और ऊपरी हनुके बाएँ अंशमें प्रचण्ड स्नायुशूल—रोज़ रातमें ४ बजनेके समय आरम्भ होकर १० बजेतक क्रमसे बढ़ा करता है। १० बजे बाद घट जाता और ४ बजे बाद आराम हो जाता है (प्लेट, स्टैन)।

आँख।—आँखें स्थिर। अपस्मार रोगमें पलक पर्यायक्रमसे खुलती और बन्द होती है और कुछ देर बाद दृष्टि चारों ओर घूमा करती है। पलक बन्द रहनेपर भी उसके भीतरका आँखका गोला बराबर घूमा करता है। पुतली फैली हुई और उसमें रोशनीका ज्ञान नहीं रहता। धुँधली दृष्टि—बड़े कष्टसे शय्याके पार्श्वमें खड़े हुए रिश्तेदारोंको भी पहचान पाता है।

मुखमण्डल।—चेहरा पीला और फला हुआ। बेहोशीकी अवस्थामें यदि कोई जोरकी आवाज़में कोई बात पूछता है, तो रोगी मुँह हिलाया करता है, मानो उस अवस्थामें भी उसकी श्रवण-शक्ति फिरसे पैदा हो गई है। बोलनेके समय निचला हनु हिलानेमें थोड़ी तकलीफ़ होती है, रोगीके हाथ-पैर आदि अकड़ जाते हैं। दोनों हनु आपसमें मिल जाते हैं और इस तरह एक-से-एक जकड़ जाते हैं, कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता; चक्षु-गोलक उलट जाता है, मुँहकी भाव-भङ्गी विकृत हो पड़ती है, नाक नुकीली हो जाती है, मुख-विवर बाहरकी ओर खिंच जाता है। नाड़ी छूनेसे नहीं मिलती और दोनों हाथ बराबर काँपा करते हैं।

मुख-विवर।—जीभमें जखम, जखमके किनारे फूले और कड़े; जीभके दाहिने पार्श्वमें एक जखम, जिह्वामूलतक रोग फैल जाता है। सहजमें ही बोली नहीं निकलती।

प्रत्यङ्ग आदि।—अपस्मार, एकाएक बेहोश होकर गिर जाता है, अङ्ग-प्रत्यङ्ग बहुत जोरसे फड़का करते हैं और पटकता है तथा भयानक श्वास-कृच्छ्रता पैदा हो जाती है। हाथकी अंगुलियाँ सब पर्यायक्रमसे फैलती हैं

(सिकेलि) और एकाएक सिकुड़ती हैं। प्रकोपके समय हाथ-पैर आदि कड़े और अकड़ जाते हैं और पेशियाँ सब सिकुड़ा और फैला करती हैं।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐसिड-हाइड्रो, कैम्फो, सिकेलि, स्ट्रैमोनियम, सीड्रन इत्यादि।

शक्ति ।—३रा दशमिक या ६ठा दशमिक विचूर्ण।

कैलि फेरोसायानेटम

(KALI FERROCYANATUM)

दूसरा नाम ।—पोटासिक फ़ेरो साइनाइड।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—मृत्पाण्डु ; दुर्बलता ; वाधक ; अजीर्ण ; हृत्पिण्डमें चर्बी बढ़ जाना ; श्वेत-प्रदर ; अधिक मात्रामें खून बहना ; वात इत्यादि रोगोंमें फायदा पहुँचाता है।

लक्षणावली

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचना (सिपि)। बहुत ही उदास भाव, यहाँतक कि समय-समयपर रुलाईतक आ जाती है ; उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती और शून्यता ज्ञात होना। जरायुसे शिराओंका रक्त-स्राव और उसीकी वजहसे बहुत कमजोरी। प्रदर—पीवकी तरह पीले रङ्गका, गाढ़े दूधकी तरह बहुत अधिक ; केवल ऋतुके बाद और प्रायः दिनमें ही स्राव होता रहता है।

हृत्पिण्ड ।—हृत्पिण्डकी क्रिया धीमी और क्षीण तथा उसीके कारण जाड़ा मालूम पड़ना, सुस्ती, सरमें चक्कर आना, सुन्न हो जाना और भीतरी कम्पन होना। अकसर हृत्पिण्डमें जोरका दर्द और समय-समयपर ऐसा दर्द मालूम होता है मानो छुरी घुसेड़ी जा रही है। शरीर हिलानेपर बढ़ता है और विश्राम करनेपर घट जाता है। रोगी भलीभाँति समझ सकता है कि उसे कोई कठिन हृद्-रोग है और उससे उसकी मृत्यु होना निश्चित है ; बहुत

अधिक जाड़ा लगना और हाथ-पैर बरफ-जैसे ठण्डे हो जाते हैं। हृत्पिण्डका चर्बी बढ़नेवाला रोग।

सम्बन्ध।—सदृश।—सिपिया, कैलि-कार्बोनिकम। स्टैनम (स्वर-दर्दमें); फेरम (मृत्पाण्डु); डिजि (हृद्रोग, नाड़ीकी गति धीमी हो जाना); कोलिन्सोनिया, हाइड्रो-ऐसिड।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे ६ठा दशमिक क्रमतक।

कैलि आयोडेटम

(KALI IODATUM or KALI HYDRIODICUM)

दूसरा नाम।—आयोडाइड आव पोटास।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—धमनीका अर्बुद; मूत्र-ग्रन्थिकी बीमारी; बाघी; कर्कटका जखम; अस्थि-क्षय; सर्दी; मसे; क्षय-कास; खाँसी; घुंड़ी; दुर्बलता या शीर्णता; शोथ; कर्णमूल; आँखकी बीमारी; ग्रन्थिका फूलना; प्रमेह; सन्धिवात; उपदंश-विषसे उत्पन्न अर्बुदकी तरह गुटिका; रक्त-स्राव; सर्दीकी बीमारी; स्वरनालीका प्रदाह; यकृतकी बीमारी; निचले अङ्गकी पाक्षाघातिक दुर्बलता; कटिवात; फेफड़ेकी बीमारी; आर्त्तवमें विकार; स्नायुशूल; कानमें आवाज़; शरीरकी गन्ध बिगड़ी हुई; उपजिह्वाका फूलना; आक्षेप; क्लोम-प्रदाह; पक्षाघात; फुसफुस-आवरक-झिल्ली-प्रदाह; मूत्राधार-मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारी; आमवात; अस्थियोंमें विकार; गृध्रसी, कितने ही प्रकारके चर्म-रोग; गण्डमाला; चेचक; कशेरुका-मज्जाकी वक्रता; प्लीहाकी बीमारी; उपदंश; चेहरेका स्नायु-शूल; अर्बुद; जखम आदि।

उपयोगिता और आभास।—यह उपदंश और पाराका एक सर्वोत्तम प्रतिविष या दोषघ्न औषध है। पारा और उपदंश विषकी तरह इसके द्वारा लसिका ग्रन्थियोंका क्षय या छोटापन, अस्थि और अस्थिवेष्टनी आक्रान्त होकर उसपर गुटिका पैदा हो जाती हैं और तन्तुओंमें रस आदिका संशोधन न

होनेकी वजहसे शरीरके कितने ही स्थानोंमें सूजन और विभिन्न अंगोंमें शोथ पैदा हो जाया करता है। उदर और जरायुमें सूत्रतन्तुमय अर्बुद, लसिका-ग्रन्थिका बढ़ना, उपदंशकी गुटिका प्रभृति दोष पैदा हो जाते हैं ; रोगवाले अंशमें फैली हुई स्पर्श-कातरता, जैसे—माथेमें इस ढंगकी स्पर्श-कातरता कि खुजलानेपर मानो मुर्द्धादेशमें जखम हो गया है ; कण्ठदेशकी ग्रन्थिमें तेजीसे बढ़नेवाली सूजन और स्पर्शका सहन न होना, नयी सर्दीके रोगमें नाकसे क़सैला पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव, आँखमें करकराहटका दर्द, आँख फूलना, स्वरनाली-द्वारका शोथ और घुंडी खाँसी, रातमें ५ बजनेके समय बढ़ना ; छाती और फेफड़ेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द ; शून्यगर्भ या खोखली और भग्न-स्वर खाँसी, वक्षमें दर्द मालूम होना और बहुत ज्यादा परिमाणमें पीले रंगका साबुनके फेनकी तरह और मीठा या नमकीन स्वादवाला कफ़ निकलता है। नींद खुलनेपर कलेजा धड़कता है। रातमें श्वास रुकनेका उपक्रम होनेकी वजहसे रोगी उठ पड़ता है और चलनेके समय हृत्पिण्डमें दर्द बढ़ जाया करता है ; अरुचि और राक्षसी भूख और उदरमें भाफ़ पैदा होनेके साथ-ही-साथ पेट फूलना तथा अजीर्ण रोग और शीत लगनेपर पाकाशय और अन्त्राशयके रोग आदिका बढ़ना ; रमणके बाद मूत्रनालीमें दर्द ; श्लेष्मा और उपदंशके कारण नाना प्रकारके चर्म-रोग , नाना प्रकारकी भ्रम कल्पना, जैसे—मानो माथा बड़ा हो गया है ; मानो माथा फटकर दो हो जायगा, नासामूलमें छोटे पत्तेका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है और पीठ मानो जकड़ गयी है इत्यादि कई कैलि-आयोडेटमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। इसके सभी लक्षण सूर्यास्तसे सूर्योदयतक बढ़ा करते हैं (आरम, मर्क, सिफिलिन)। सर्दी लगने, यहाँतक कि ठण्डा पानी आदि पी लेनेपर भी इसके लक्षण सब बढ़ जाते हैं अथवा रोगी स्निग्ध वायु सेवनके लिये लालायित रहता है। जो सर्दी माथेका आश्रय ग्रहणकर नीचेकी ओर उतरती है कैलि-आयोडेटम उसकी अव्यर्थ दवा है।

लक्षणावली

मन ।—वाक्पटु, हँसी-दिल्लगी बहुत-प्रिय, क्रोधी स्वभाव, कलह-प्रिय, आवाज़ सुनते ही चौंक उठता है। उत्तेजित भाव दिखाता है, मानो शराब आदि पिये हो। स्मृति-लोप, याददाश्तका गायब हो जाना, जब जिस बातकी जरूरत होती है, वह बात याद नहीं आती। अपने कामोंका विवरण नहीं लिख सकता। रातभर मानो आधा पागल बना रहता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना; अन्धकार तथा भाफ़वाली गाड़ीमें घूमनेपर बढ़ना। ग्रन्थियाँ फूली या क्षीण और क्षय रोग-ग्रस्त मनुष्योंके माथेमें अधिक रक्त-संचय होना; ललाट देशमें मानो कोई हथौड़ीसे आघात कर रहा है। ऐसा मालूम होना कि माथा बढ़ गया है; उद्वेगपूर्ण और अस्थिर निद्रा, माथेमें मानो प्रबल वेगसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी घुस रहा है। हरेक रातमें ५ बजेसे सर दर्द और माथेमें भार मालूम होना, कहीं भी सर रखनेपर आराम नहीं मिलता; उठनेपर घटना। माथेके दोनों पार्श्व मानो स्क्रू द्वारा कसकर सांटे हुए हैं—ऐसा दर्द, निर्मल वायु सेवन करनेपर घटना। बायीं कोख या कनपटीमें और बाईं आँखके ऊपरी प्रदेशमें ऐसा दर्द मानो छुरी बेधी जा रही है। बाहरी माथेमें बहुत तेज़ सर-दर्द रोगमें मूर्द्धादेशमें जगह-जगह गोटियोंकी तरह ऊँचा उठ जाता है और छूते ही तेज़ दर्द मालूम होता है, उपदंश या पारा विषकी वजहसे या वातके कारण सर-दर्द। माथा खुजलानेपर मूर्द्धालमें ऐसी स्पर्शकातरता मालूम होती है मानो जखम हो गया है। उपदंशके कारण केश झड़ जाना और केशका रंग बदल जाया करता है।

आँख।—उपदंश रोगमें पाराके अपव्यवहारके कारण आलोकावरण या उपताराका प्रदाह; आँखें पानीसे भरी रहती हैं और गदली हो जाती हैं; पलक बहुत लाल, दर्द आदि रातमें बढ़ जाता है। उपतारका और कृष्णा आवरक दोनोंमें ही प्रदाह, विशेषकर उपदंश-विषकी वजहसे। बहिःसृताक्षि-गोलक (गोला मानो बाहर निकला हुआ)। आँखमें दर्दके कारण नींद खुल जाती है, आँखसे आँसुओंका स्राव हुआ करता है और नाक तथा गलेमें जलन हुआ करती है। सन्ध्याके समय पीवकी तरह श्लेष्माका स्राव होता है और आँखमें जलन होती है; पलक लाल हो जाती है और दाहिनी आँखसे आँसुओंका स्राव हुआ करता है। आँख बराबर फड़का करती है, किसी तरह भी स्थिर नहीं कर सकता। ऋतुस्रावके साथ पलकोंमें शोथकी तरह सूजन। चक्षुगह्वरकी अस्थिवेष्टनीका प्रदाह, योजकत्वचाकी सूजन और आँखसे पीवका स्राव हुआ करता है।

कान।—अस्थिविकार रोग-ग्रस्त बच्चोंके माथेमें स्पर्श सहन न होना, इसके साथ ही कानमें छेद करनेकी तरह दर्द; दाहिने कानके भीतर ऐसा

मालूम होना, मानो शूल गड़ रहा है। कानमें स्पर्श-कातरताके साथ शूलका दर्द ; कोई चीज़ निगलनेकी चेष्टा करनेपर दाहिने कानमें कड़ाकसे आवाज़ हो उठती है या दाहिना कान स्फुटित हो जाता है (कैल्के, मिनियैन, ऐसिड-नाई)। कानमें नाना प्रकारकी तेज़ आवाजें आती हैं (कार्बोन-सल्फ़), मानो पानीका स्रोता प्रवाहित हो रहा है या मानो छत या छप्पड़पर पानी बरस रहा है, ऐसी ही आवाज़ आती है (रोडो, काक्यु, पल्स) ; श्रवण-शक्ति प्रायः गायब रहती है।

नाक।—पाराके अपव्यवहारके कारण नाकसे बहुत अधिक खून गिरता है। सर्दी लगनेके साथ ही जोरकी सर्दी हो जाती है, श्लेष्मा-कषाय पलक शोथकी तरह फूली ; कानके भीतर डङ्क मारनेकी तरह दर्द, चेहरा लाल, जीभ सफेद लेपसे ढँकी ; भयङ्कर प्यास ; पर्यायक्रमसे शीत और उत्ताप मालूम होना, सरमें दर्द, गाढ़ा लाल रङ्गका और गर्म पेशाब। नाक लाल रङ्गकी और फूली, निकला हुआ श्लेष्मा-कषाय और पानीकी तरह, इसके साथ ही आँसू बहना (ऐलियम-सिपा) ; नासा-मूलमें कसावटका भाव ; बार-बार छींकके साथ नाकसे स्वच्छ पानीकी तरह जल-स्राव (साइक्लेम)। पीनस—नाकमें जखम होकर नासास्थिमें छेद पैदा कर देता है और गाढ़ा पीले रङ्गका और बदबूदार श्लेष्माका स्राव हुआ करता है। नासा-रन्ध्रसे गर्म पानी निकलकर त्वचाकी क्षय कर देता है। नासामूलके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो छोटे पत्तेका एक टुकड़ा अड़ा हुआ है, मानो एक छोटा कीड़ा रेंग रहा है।

मुखमण्डल।—मुँह और जीभ फूली, विशेषकर पाराके व्यवहारके बाद पतली सर्दी होनेपर मुखमण्डलमें शूल या डङ्क मारनेकी तरह दर्द मालूम होना ; बायाँ गाल दबाकर सोनेके समय बाएँ गालकी हड्डीमें छेदने और सुई बेधनेकी तरह दर्द। गालकी हड्डियोंमें छूना बिलकुल ही सहन नहीं होना।

मुख-विवर।—दाँतकी जड़में ऐसा मालूम होता है, मानो कीड़े रेंग रहे हैं। मसूढ़े फूले, दाँत सब क्षय हुए ; क्षय हुए दाँतोंकी जड़में सूजन। दाँत सब बड़े मालूम होते हैं ; सन्ध्याके समय दाँत और मुँहमें सिड़सिड़ाहट होती है ; लार बहुत ज्यादा, प्यास, कानमें शूल बेधनेकी तरह तेज़ दर्द, नाकके नीचेवाले अस्थिमय छिद्रमें फोड़ा निकलना (मेजेर)। कुछ खाने या पीनेके

बाद मुँहका स्वाद बहुत कड़वा हो जाता है। मुँह और गलेमें तीता स्वाद, यह सवेरेके भोजनके बाद दूर हो जाता है। जीभके अगले भागमें जलन, जीभके अगले भागमें रस-भरे दाने निकलना। मुँहके भीतर टेढ़े-मेढ़े किनारेवाले जखम सब ऐसे मालूम होते हैं, मानो दूधसे ढँके हुए हैं। गर्भावस्थामें मुँहसे गाढ़े गोंदकी तरह और नमकीन लार बहना। मुँहमें मीठापन मालूम होना, इसके साथ ही खून-मिली लारका स्राव (ऐसिड-नाई, मर्क-कोर, नेट्र-मूर)। रातके समय जिह्वामूलमें भयानक दर्द मालूम होता है।

गलेके भीतर।—कण्ठस्थित थाइरायड ग्रन्थिकी तेजीसे बढ़नेवाली सूजन और बहुत स्पर्श-कातरता, निचले हनुके नीचेवाली ग्रन्थिका फूलना और उसमें पीव सञ्चय होनेका लक्षण। गलरोध—मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है। खाँसकर थोड़ा-सा गाढ़ा श्लेष्मा निकाल देनेपर आराम मालूम होता है। निगलनेके समय बाएँ पार्श्वमें काँटा गड़नेकी तरह मालूम होना, मानो उसमें घाव हो गया है। सन्ध्याके समय बढ़ना। उपजिह्वा फूली और बढ़ी हुई। गलेके भीतरवाली श्लैष्मिक-झिल्ली शोथकी तरह फूली। गलेमें उपदंश-विष-दूषित जखम—त्वचाको छेदनेवाला और तन्तुको नष्ट करनेवाला, उपजिह्वा और कोमल तन्तुको ध्वंस कर देता है।

पाकस्थली और अन्त्राशय।—बहुत ज्यादा परिमाणमें कै हो जाती है, जोर-जोरसे डकार आती हैं; पाकस्थली और अन्त्रमण्डलका प्रदाह। उदरके ऊपरी प्रदेशमें जलन। पाकस्थलीमें जलन और दबाव मालूम होना, डकार आनेपर भी यह लक्षण नहीं जाता। पेटमें कुईकुई और कलकल शब्द। एकाएक पेट फूल जाता है और ऐसा मालूम होता है कि पेट फट जायगा। सवेरे नींद खुलनेपर, वायु निकलनेपर घट जाना; इसके बाद दो बार पतला पाखाना होना; पेटमें गड़गड़ शब्द मालूम होता है, मानो उसमें एक जीव हिल रहा है (क्रोकस, कैल्के-फास, थूजा, साइक्लेमेन)। प्लीहा बढ़ना रोगमें, प्लीहा-प्रदेशमें स्पर्श सहन नहीं होता। कायिक परिश्रमके बाद यकृत-प्रदेशमें स्पर्श-कातरता। नाभि-प्रदेशमें कतरनेकी तरह दर्द और जलन। जलन और छेदनेकी तरह दर्द; निर्मल वायु लगनेपर घटता है, परन्तु घरमें घुसते ही फिर पैदा हो जाता है। रातमें पेटमें बहुत गड़बड़ी मालूम होती है; सर्दीका स्पर्श होते ही, यहाँतक कि ठण्डा पानी या दूध पीनेपर भी लक्षण

आदि बढ़ जाते हैं। दिनके ११ बजनेके समय उदरके ऊपरी-प्रदेशमें खालीका भाव (सलफर)।

मलान्त्र और मल।—उदरामय, बहुत कूथन और कमरमें भयानक दर्द, मानो चिमटेसे पकड़े हुए है; पाराके व्यवहारके बाद। मलद्वारसे रसकी तरह श्लेष्मा निकलता है। कब्जियत, मल बहुत थोड़ा, कड़ा और बड़ी तकलीफ़से निकलता है।

पेशाब।—वातकी वजहसे या पारा-विषसे दूषित उपदंशसे उत्पन्न लाल-मूत्र। मांसांकुर-भरा मसाना या मूत्र-ग्रन्थि। पेशाबका वेग यन्त्रणा-दायक। ऋतु आविर्भाव होने बाद पेशाब रुक जानेकी वजहसे यन्त्रणा-जनक वेग। पेशाब बहुत ज्यादा परिमाणमें होता है और पानीकी तरह होता है; कभी-कभी खूनकी तरह लाल भी होता है। बहुत ज्यादा पेशाब और दुर्दमनीय प्यास (लैक-डिफलो, सिजिजियम-यैम्बोल)।

पुं-जननेन्द्रिय।—अण्डकोषका क्षय और दुबलापन (कैप्स, अरम, आयोड, कार्बो-ऐन, लिसिन)। लिङ्गमुण्डका बहुत ज्यादा बढ़ जाना और उल्टी चमड़ी (मर्क, मर्क-कोर, ऐसिड-नाई, परिवर्त्तिका या चमड़ी बढ़ी—कैनाब-सैट, लाई, मार्क, ऐसिड-नाई)। शिश्नके ऊपर उपदंशकी तरह उठे हुए किनारेका घाव (कैलि-बाई, लैक-कैन, ऐसिड-नाई, लैके) और मूत्रनालीमें जलन। लिङ्गार्श या माँस किल (ऐसिड-नाई, थूजा)। साधारण वस्त्रकी रगड़से भी त्वचा क्षय हो जाती है (नैट्र-कार्ब)। धीरे, पर दीर्घस्थायी लिङ्गका कड़ापन, रमणमें तकलीफ़ या दर्द, बहुत देरतक वीर्यस्खलन नहीं होता। रमणके बाद अकसर मुष्कत्वकमें अस्त्र बेधनेकी तरह दर्द। रमणेच्छाकी प्रबलताका न रहना। प्रमेह—स्राव गाढ़ा हरे रंगका। लालामेह—बहुत दिनोंतक स्थायी और दुरारोग्य।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत देरसे होता है, पर स्राव बहुत ज्यादा होता है; ऋतु रुक जाना। आर्त्तव होनेके पहले बार-बार पेशाबका वेग। ऋतुके समय दोनों ऊरुमें ऐसा मालूम होता है, मानो घिसा जा रहा है (कोना, नक्स-मस); जाड़ा मालूम होना और सरमें उत्ताप मालूम होना। प्रदर—स्राव पानीकी तरह, कषाय और त्वचाको क्षय करनेवाला। योनिके बाहरी भागमें कुटकुटी हुआ करती है। योनिके भीतरसे श्लेष्माका स्राव,

स्तन सिकुड़ जाते हैं या सूख जाते हैं (कोना, आयोड, ऐसिड-नाई, नक्स-मस, लेक-डिफ्लो); चलनेके समय जरायुमें भार और ऐसा मालूम होता है, मानो नीचेकी ओर खिंच रहा है, बैठनेपर घटना। (सिपि, जरायु बाहर निकल पड़नेके भयसे रोगिनी बैठ जाती है—नेट्र-म्यूर)। ऋतु-निवृत्तिके समय योनिसे खूनका स्राव (जरा हिलने-डोलनेसे ही खून निकल जाता है—ऐम्ब्रा)। जरायुमें सूत्र-तन्तुमय अर्बुद पैदा हो जाया करते हैं। रोगिनीको हमेशा यही मालूम होता रहता है कि उसके जरायुमें अर्बुद पैदा हो गया है। स्तनका स्राव (कैल्के, आयोड, कोना, रास)।

श्वास-यन्त्र।—दोनों स्वरनालियोंके शोथ रोगमें (एपिस, आर्स, सैङ्गिविई), गर्दनकी ग्रन्थिका फूलना, स्वरलोप, गलेमें सूखापन और श्वास-प्रश्वासमें व्याघातकी वजहसे रोज़ ५ बजनेके समय नींद खुल जाती है। पीनस रोगाधिकारमें नकियाकर बोलता है, स्वर-भग्न या लोप हो जाता है। खाँसी—गहरी, खोखली और टूटी हुई आवाज़ मिली; खाँसनेपर छातीमें दर्द होता है; फेफड़ेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, वक्षोस्थिके मध्य-भागमें और चलनेके समय वक्षोस्थिके बीचसे पीठ या वक्षके गम्भीरतम प्रदेशतक नोकीली सलाई गड़नेकी तरह दर्द। बहुत ज्यादा हरे रङ्गका या साबुनके फेनकी तरह कफ़; सन्ध्याके समय वक्षमें ऐसी यन्त्रणा होती है, मानो काटकर टुकड़े-टुकड़े कर रहा है। सीढ़ी चढ़नेके समय हृद्प्रदेशमें दर्दके साथ श्वास-कृच्छ्रता। झुककर बैठनेपर बाएँ वक्षके ऊपरी अंशमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, नीचे होकर बैठनेपर घट जाता है; घूमने या चलते रहनेपर वक्षके भीतरका दर्द घट जाता है। श्लेष्मा पैदा होनेवाले यक्ष्मा-रोगाधिकारमें पीवकी तरह कफ़ निकलता है। सुस्त करनेवाला पसीना रातमें होता है और पाखाना पतला होता है। फेफड़ेका प्रदाह— जब पहले-पहले फेफड़ेमें श्लेष्मा इकट्ठा होना आरम्भ होता है या जब यकृत भाव प्राप्त हो जानेकी प्रबलताकी वजहसे सरमें अधिक रक्तसञ्चय होता है और रस-स्राव आरम्भ हो जाता है, उस समय चेहरा लाल; आँखकी पुतली फैली; पेशाब रुकना और शरीरका एक अङ्ग प्रायः लकवा मार जानेकी तरह हो जाता है। फेफड़ेका शोथ—फेफड़ेके प्रदाहके साथ या लाला-मूत्र रोगके प्रतिक्षेपकी वजहसे कफ़ हरा और साबुनके फेनकी तरह निकलता है। सवेरे नींद खुलनेपर छाती धड़कती है और रोगी साँस रुक जानेके डरसे उठ बैठता है। हृद्स्पन्दन, चलनेसे बढ़ना, पारेके व्यवहारके बाद या बार-बार

प्रदाहके साथ बीमारी, सर्दी लगते ही दर्द आदिका फिरसे पैदा हो जाना, इतनेपर भी रोगी निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित ही बना रहता है।

प्रत्यङ्ग आदि।—कमरमें ऐसा मालूम होता है, मानो एक बड़े चिमटेसे किसीने कसकर पकड़ रखा है; मस्तिष्कावरणी प्रदाहमें कमरमें शूलकी चोटकी तरह दर्द मालूम होना। त्रिकास्थिके सबसे निचले प्रदेशमें दर्द, मानो किसी ऊँचे स्थानसे चूतड़के बल गिरा है। बायें कन्धेमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। कन्धे और कानमें छेदनेकी तरह दर्द। प्रत्येक क़दम बढ़ानेपर बाएँ उरु-शिखरमें तेज़ दर्द, इसी कारणसे रोगी लंगड़ाया करता है। उरुके पिछले भागका स्नायुशूल, दाहिने उरु और जानुमें छेदनेकी तरह दर्दकी वजहसे रातमें रोगीकी नींद खुल जाती है; रातमें और रोगवाला पार्श्व दबाकर सोने (लाई) या चित होकर सोनेपर बढ़ना; निर्मल वायु लगनेपर (दाहिने पार्श्वका—कोलो, मैंग-फास, लाई) घटना। जानुदेश फूला और लचीला न रहना। त्वचामें जगह-जगह लाल रंग और गर्म और उसमें चबाने, बेधने या छेदनेकी तरह दर्द। रातमें रोगी इस करवटसे उस करवट किया करता है; जानु-सन्धिकी सफ़ेद रंगकी सूजन। तलवेमें चोटकी तरह दर्द। एंड़ीके नीचे और पैरकी अंगुलीमें जखमकी तरह दर्द। देहका क्रमशः दुबलापन। पेशियोंका एकाएक सिकुड़ना और फैलना; कण्डाराक्षेप, हाथ-पैरकी पेशियोंके अगले भाग रह-रहकर फड़क उठते हैं; रातमें और रोगवाले पार्श्व दबाकर सोनेपर बढ़ना; पारा, उपदंश विष या वात आदिसे उत्पन्न। सूर्यास्तसे सूर्योदयकालके बीचमें दर्द आदि बढ़ जाया करता है। रोगी तकलीफ़से उन्मत्तकी तरह हो जाता है (अरम, मर्क, ऐसिड-नाई, सिफिलि)। चैतन्य या स्पर्श-कातरताका बढ़ जाना। ऐसा मालूम होना मानो शरीर घूमता जा रहा है। निर्मल वायु सेवनके लिये लालायित। अस्थिवेष्टनीपर रोगका हमला होकर गुटिका-दोषकी सृष्टि कर देता है। अधिकांश दर्द विश्रामके समय पैदा हो जाता है और रोगवाले अंगको हिला देनेपर घट जाता है (रास)। शरीर संचालनसे, विशेषकर चलनेपर, रोगी अच्छा रहता है और अक्लान्त भावसे बहुत दूरतक भ्रमण कर सकता है। सन्धिवात—जानुसन्धि फूली, उजली और सुई गड़नेकी तरह दर्दसे भरी। जांघकी सामनेवाली हड्डीमें रातमें भयानक दर्द।

त्वचा।—मुखमण्डलपर खुजलानेवाले दादकी तरह उद्भेद। चेहरा; कन्धा और पीठमें ज्यादा परिमाणमें फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं। मूर्द्धाकी त्वचासे पीठतक पीवभरी फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं और आराम हो जानेपर भी जखमके चिन्हका दाग रह जाता है। मुखमण्डल, माथा, गर्दन, पीठ और वक्षस्थलपर छोटे-छोटे फोड़े निकलते हैं और आराम हो जानेपर उनका भी दाग रह जाता है। पारेके अपव्यवहारके बाद या श्लेष्मा-प्रधान धातुमें पारा मिला रहनेकी वजहसे गौण उपदंशके कारण उद्भेद आदि। बाघी, कड़ी ऊँचे पार्श्ववाली, उपदंशका जखम और पतला, त्वचाको क्षय करनेवाला या दहीकी तरह पीव निकलना; गहरा छेद करनेवाला जखम। पाटलिका; उकौताकी तरह उद्भेद; छालेकी तरह उद्भेद निकलकर उससे पहले पानी और इसके बाद पीव निकला करता है। हड्डीमें दर्द और वात-वेदना; अस्थि-क्षय या हड्डीका सड़ना—हाड़ सड़ा करता है; हड्डी बढ़ना (हेक्का) इत्यादि सब रोग ही रातमें अर्थात् सूर्यास्तके बादसे सूर्योदयतक बढ़ जाया करते हैं। गाँठें सब बढ़ी हुई। कण्ठदेशकी ग्रन्थिका बढ़ना, वायुनलीभुजके भीतर और हनुके नीचेवाली ग्रन्थि फूली हुई। गांठें जखम-भरी या क्षय होनेवाली, ढेला जैसी ऊँची हो जाया करती हैं और माथेसे पैरतक जलन हुआ करती है। रोगीको हमेशा बहुत ही अधिक गर्मी मालूम होती रहती है और किसी तरहका भी ओढ़ना सहन नहीं कर सकता।

निद्रा।—बार-बार और ऊपर-के-ऊपर जम्हाई आती है, पर नींद नहीं आती। सारी रात जागने बाद सवेरे नींद लग जाती है। सवेरे सोया-सोया रोकर उठ बैठता है, पहली नींदके समय ही चौंक उठता है, पर फिर तुरन्त सो जाता है, निद्रावस्थामें रोना, आनन्द या विपत्तिके उद्वेग-जनक सपने; ऐसे सपने मानो उसको कोई मार डालेगा। ऐसा सपना देखकर वह चौंक उठता है, मानो वह गिर जायगा।

शीत, उत्ताप और पसीना।—बोखार होनेके समय संध्या ४ बजेसे रातके ८ बजेतक (हिप, लाई, मैग-म्यूर) और रातमें १० बजनेके समय। शीतावस्था—प्यास, औंघाई, जाड़ा पीठसे आरम्भ होकर क्रमसे समूचे शरीरमें फैल जाता है। तीसरे पहर ४ से ७ बजेतक शीतसे काँपा करता है; शय्याके उत्तापसे शीत कुछ घटता अवश्य है, पर आग या चूल्हे आदिके उत्तापसे कुछ भी

आराम नहीं मालूम होता (पोडो ; अङ्गीठीकी गर्मीसे घटना—इग्ने, सैबाड)। रातमें कम्प हुआ करता है, ऐसा मालूम होना, मानो शीतसे शरीर और खून जमा जा रहा है (हैलोडर्मा) ; कितना भी ओढ़ना क्यों न ओढ़ा दिया जावे, जाड़ा बिलकुल ही नहीं घटता, इसके साथ ही औंघाई और निद्रावेश ; पैर बरफकी तरह ठण्डे और शोथ रोग हो जानेकी तरह फूले (एपिस, आर्स)। उत्तापावस्था,—बहुत उत्तापके साथ पसीना ; कुछ देर बाद ही फिर बहुत जाड़ा पैदा हो जाता है ; रह-रहकर उत्ताप पैदा होना, कभी-कभी जाड़ा मालूम होना और कभी बहुत ज्यादा पसीना होना। माथेमें गर्मी मालूम होनेके साथ-ही-साथ चेहरेमें जलन और उसका लाल हो उठना। पसीनेवाली अवस्था, पसीना थोड़ा या उत्तापावस्थामें ही पसीना होना आरम्भ हो जाता है। रातमें पसीना।

वृद्धि।—रातके समय, रोगवाले पार्श्वमें सोनेपर, ठण्डा लगते ही, घरके भीतर, विश्रामसे, रातमें ५ बजे, ठण्डा पानी या दूध वगैरह पीने, बैठने और स्पर्श करनेपर।

उपशम।—शरीर संचालनसे, चलनेपर, निर्मल वायु सेवन करनेपर, वायु सेवनके लिये टहलनेके समय और गर्मी लगनेपर।

सम्बन्ध।—प्रतिविष या दोषघ्न।—हिप, ऐसिड-नाई (डाक्टर क्लार्क और बार्नेट)।

सदृश।—ऐसिड-नाई, अरम, आयोडम, मर्क, हिप, सिफिलिन, मेजेर, लाई, कार्बो-वेज, सोरिन, आर्स, एपिस, कार्बो-सल्फ।

तुलनीय।—आयोड (गलगण्ड और हृत्पिण्डकी बीमारी) ; कास्टिकम (उपदंश) ; कैलि-कार्ब, लैकेसिस (दम अटकनेका भाव) ; नक्स (उपदंश) ; इयार्वा-सैण्टा (सर्दीसे उत्पन्न क्षयकास) ; ऐण्टि-टार्ट (फेफड़ा) ; बेलेडो (मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता) ; एपिस (शोथ) ; लाइकोप (आध्मान इत्यादि)।

शक्ति।—प्रथम दशमिकसे २०० शततमिक क्रम। गौण उपदंश लक्षणादिमें भी उच्चक्रमका प्रयोग करना चाहिये।

कैलि म्यूरियैटिकम

(KALI MURIATICUM)

दूसरा नाम।—क्लोराइड आव पोटास। कैलि क्लोरेटम।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—मुँहासे; उपक्षत; बाघी; दाह या जले घाव; मोतियाबिन्द; नीहार कण्डू; कब्जियत; घुँड़ी या काली खाँसी; मूलाधार-प्रदाह; अतिसार; उपझिल्ली-प्रदाह; शोथ; आमाशय; कानकी बीमारियाँ; पामारोग; कर्णनालीकी बीमारियाँ; आँखकी बीमारी; ग्रन्थियोंका फूलना; अर्श; हृत्पिण्डकी बीमारी; खूनकी कमी; कामला; सर्दीमें आवाज़; श्वेत-प्रदर; कर्णमूल-प्रदाह; वात या आमवात; शीताद; बसन्त; मसा; कण्डारकी बीमारियाँ; गो-बीजका टीका देनेका दुष्परिणाम इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—डा० शुसलरने इस दवाकी विशेष रूपसे परीक्षा की है। सर्दीसे उत्पन्न श्वास-कृच्छ्रता और नकली झिल्ली पैदा करनेवाले श्लेष्माका स्राव आदिपर इसकी प्रधान क्रिया है। इसके सभी स्रावोंमें दो प्रधान गुण वर्त्तमान रहते दिखाई देते हैं, जैसे—सफेद रंगका और गाढ़ा गोंदकी तरह स्राव। विचले कानकी बहुत दिनोंतक स्थायी सर्दी; कर्ण पश्चान्नालीका रुक जाना; कानमें कुछ फूटनेकी तरह आवाज़; जीभ धुमैली सफेद; कुछ सूखी और गोंदकी तरह लेपसे ढकी; रक्तस्रावी-अर्श—स्राव काली आभा लिये लसदार और ढेला-ढेला; नकली झिल्ली पैदा करनेवाला उपझिल्ली-प्रदाह; वातके कारण बोखार और रोगवाली सन्धिमें रससंचय और सूजन वगैरह कई कैलि-म्यूरियैटिकमके प्रधान निर्णायक लक्षण हैं। पाकाशयकी उत्तेजनाके कारण बार-बार खाँसी। खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो चक्षुगोलक बाहर निकल पड़ा है।

लक्षणावली

मन।—रोगीको विश्वास हो जाता है कि उसे अनाहारसे मरना पड़ेगा।

मस्तक।—वमनके साथ सर-दर्द और खाँसनेपर गलेके भीतरसे दूधकी तरह श्लेष्मा निकलना, मस्तिष्कावरणी-प्रदाह (पहले फेरम-फास)। दुधिया पपड़ी या रूसी।

आँख।—आँखसे सफेद रंगकी पपड़ी या श्लेष्मा निकलता है या पीले रंगका हरी आभा लिये श्लेष्मा और पीले रङ्गकी पीवकी तरह पपड़ी निकलती है। आँखके ऊपर एक छोटा-सा रस-भरा दाना निकलकर क्रमसे एक चिपटे बाहरी जखममें परिणत हो जाता है। आँख करकराती है, मानो उसमें धूलके कण गिर गये हैं। पीवका स्राव; संक्रामक आँखें उठना या आँखोंका प्रदाह, मोतियाबिन्द (सिनारेरिया-मैरिटाइमा)।

कान।—मध्य कानकी पुरानी सर्दी (इलैप्स-कोरैल, कैली-बाई, मर्क, डाल, सोरिन)। कर्णपश्वानालीका बोध-जनित बहरापन; कानमें फूटनकी आवाज़।

नाक।—सर्दी, श्लेष्मा-सफेद रङ्गका और गाढ़ा। सर्दीमें माथा भरा मालूम होता है और जीभपर धुमैले सफेद रङ्गका लेप चढ़ा रहता है। तालुमूलका ऊपरी अंश सूखा और श्लेष्मासे ढका हुआ। तीसरे पहर नाकसे खूनका स्राव होता है।

मुख-विवर।—दोनों गाल फूले और दर्द-भरे। बच्चोंकी तथा स्तन पीनेवाले शिशुओंकी माताके मुँहमें उत्सङ्ग या मसूढ़ेका घाव। हनु और गलेकी ग्रन्थियाँ सब फूली, जीभ फूली। जीभ धुमैली-सफेद, कुछ सूखी और लसदार लेपसे ढँकी। जीभके ऊपर ऐसा मालूम होता है मानो कोई अर्बुद निकलेगा (डा० क्लार्क)।

गलेके भीतर।—गलग्रन्थिका प्रदाह; दोनों ही गालकी ग्रन्थियाँ इतनी फूल उठती हैं कि श्वास रुकनेका लक्षण पैदा हो जाता है; गाढ़ा गोंदकी तरह कड़ा श्लेष्मा निकलता है; रोगीके लिये कोई बहुत कोमल पदार्थ निगलना भी कष्टकर हो जाता है। कण्ठनाली टेढ़ी किये बिना खाद्य आदि निगल नहीं सकता। गलेके भीतर और गल-ग्रन्थिके ऊपर धुमैले रङ्गके श्लेष्माका लेप चढ़ा रहता है, खाँसनेपर पनीरकी तरह बदबूदार छोटे-छोटे श्लेष्मा खण्ड निकलते हैं। कर्णमूल-प्रदाह हो जाता है। कर्णमूलीय-ग्रन्थि फूल उठती हैं।

पाकस्थली और अंत्राशय ।—चर्बी-भरे या गुरुपाक द्रव्य आदि खानेपर नहीं पचती (पल्स, कार्बो-वेज); सफेद रङ्गके स्वच्छ श्लेष्माकी कै; मुँहमें बार-बार जल-सञ्चय। कब्जियतके साथ पाकस्थलीमें दर्द; भूख ज्यादा लगती है, परन्तु पानी पीते ही भूख लगना बन्द हो जाता है और फिर खानेकी इच्छा नहीं होती (कैलि-आयोड)। द्वादश-अंगुलि नाड़ीमें शीत लग जानेके कारण सर्दीके साथ नेवा या कामला रोग, मल सफेद रङ्गका। यकृत क्रियामें विकार और दाहिने पुट्ठेमें दर्द, घीमें पके हुए पदार्थोंके खानेसे पैदा हुए अजीर्ण रोगमें यकृतकी विकृतिकी वजहसे कब्जियत और भरपूर पित्त न संचित होनेके कारण, मल पीले रङ्गका। घीमें पके या मेदमय पदार्थ आदि खानेकी वजहसे (पल्स, कार्बो-वेज, साइक्ली) और आन्त्रिक-ज्वराधिकारमें (आर्स, बैप्टी, हायो, लैके, ऐसिड-म्यूर, ओपि, स्ट्रैमो), मल हलके पीले रङ्गका, कीचड़की तरह या सफेद रङ्गके गोंदकी तरह। आमातिसार—मल लसदार आम मिला और पतला। अर्श—रक्तस्राव होनेवाला, खून काली आभा लिये, गाढ़ा सूतमय श्लेष्मा-मिला और जमा हुआ या गाढ़ा।

पुं-जननेन्द्रिय ।—प्रमेह; रुके हुए प्रमेहकी वजहसे एकशिरा या अण्डकोष-प्रदाह। बाघी कोमल और फूली हुई। कोमल उपदंश, इसके साथ ही लाल-मेह और उकौता।

स्त्री-जननेन्द्रिय ।—ऋतु-स्राव बहुत देरसे या विलुप्ति, रुका हुआ या बहुत असमयमें ही हो जाता है। स्राव बहुत ज्यादा; खून काला और गाढ़ा लसदार अलकतरेकी तरह (प्लैटि)। प्रदर—दूधकी तरह सफेद रङ्गका और गाढ़ा श्लेष्मा-भरा स्राव। गर्भवतियोंकी सवेरेकी मिचली, सफेद रङ्गका श्लेष्मा वमन कर देना।

श्वास-यंत्र ।—स्वरभङ्ग; स्वर-लोप, श्वास-रोग या दमा, इसके साथ ही अजीर्ण आदि पाकाशयकी बीमारी, सफेद रङ्गका श्लेष्मा और बड़े कष्टसे निकलता है। पाकस्थलीसे खाँसी उठती है, क्रुप खाँसीकी तरह—खुसखुसी; तेज़ और आक्षेपिक खाँसी; कफ़ गाढ़ा और सफेद रङ्गका, गाढ़ा गोंदकी तरह; श्लेष्माके बुलबुले फटनेकी वजहसे वायुनलीमें धड़धड़ शब्द; बड़े कष्टसे श्लेष्मा निकला करता है। खाँसनेके समय दोनों आँखें निकली मालूम होती हैं।

प्रत्यङ्ग आदि।—वातकी वजहसे ज्वर; रोगवाली सन्धिके भीतर रस और सूजन। शरीर हिलानेके समय दर्द मालूम होता है या दर्द बढ़ जाता है। रातमें वातका दर्द—शय्याके उत्तापसे बढ़ना; दर्द कमरसे बिजलीकी शलाईकी तरह तेजीसे तलवेंकी ओर दौड़ जाता है। रोगीको शय्यासे उतरकर बाध्य होकर सीधे बैठ जाना पड़ता है। लिखनेके समय हाथ अकड़ जाति हैं।

त्वचा।—व्रण, अरुणिका, श्वेत रस-भरी फुन्सियोंसे भरा अकौता। शरीरकी त्वचासे मैदेकी तरह चूर या भूसी उठा करती है। छोटी उमरके बच्चोंके माथे और चेहरेपर दुरारोग्य पपड़ी जमे घाव। हाथपर मसा निकलता है (थूजा)।

वृद्धि।—गुरुपाक द्रव्य खाने, शरीर हिलाने तथा उत्तापसे।

सम्बन्ध।—सदृश।—तुलनीय।—कैलि-क्लो, पल्स (घृतपक्क-द्रव्य भोजनसे बढ़ना); कार्बो-वेज, कैलि-बाई, मर्क-डाल (कर्णनली); कैलि-कार्ब, एसिड-नाई, थूजा।

दोषघ्न।—बेलेडोना, कल्के-सल्फ, पल्स।

शक्ति।—३रे दशमिक विचूर्णसे २०० शततमिक क्रमतक।

कैलि नाइट्रिकम या नाइट्रम

(KALI NITRICUM or NITRUM)

दूसरा नाम।—सोरा।

प्रस्तुत-प्रक्रिया।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार होता है।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा; वक्षस्थलमें दर्द; शूल; बहुमूत्र; आमरक्त; बाधक; शय्यामें पेशाब कर देना; सर-दर्द; पाकाशयका प्रदाह; हृत्पिण्डकी बीमारी; रजसाधिक्य; श्वासनली-प्रदाह; फेफड़ेका प्रदाह; फुसफुस-आवरण-प्रदाह; वात; सरमें चक्कर आना इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—श्वास-रोगमें इसका विशेष फायदा दिखाई दिया करता है; रोगीको इतनी अधिक श्वासाल्पता हो जाती है, कि प्रत्येक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता; लगातार दो चम्मच पानी पीनेपर श्वास-रोध हो जाना चाहता है। कैलि कार्बोनिकाकी तरह इसका दर्द भी बहुत तेज़ और सुई बेधने, अस्त्र बेधने, छेदने और पीसनेकी तरह होता है; मूर्द्धाकी त्वचा, उदर, अण्डकोष प्रभृति प्रदेशमें रोगी अत्यन्त स्पर्श-कातरता प्रकट किया करता है। अन्त्राशय और वस्ति-गह्वरमें क्रियाकी अधिकताकी वजहसे इसके द्वारा प्रचण्ड अन्त्रशूल और बहुत ही यन्त्रणादायक रक्तामाशय और उदरामय, अण्डकोष और रेतोरज्जुमें उत्तेजनाकी अधिकता और दर्द तथा स्याहीकी तरह काले रङ्गका रक्तमय तथा बहुत ज्यादा आर्त्तवका स्राव उत्पन्न हो जाया करता है। रोगीको क्रोध बहुत आया करता है, सभी विषयोंमें वह असहिष्णु रहता है और आलस्य प्रदर्शन किया करता है। थोड़ी मात्रामें शराब आदि पीनेपर भी नशा ज्यादा होना, दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें बहुत दर्द और स्पर्शकातरता वगैरह इसके कई निर्णायक लक्षण हैं।

लक्षणावली

मन।—सवेरे मुखमण्डल और ललाटमें ज्यादा गर्मी पैदा हो जानेके साथ-ही-साथ किसी विषयकी सोचनेकी शक्तिका न रह जाना। आलसी, रोगी दुःखित, डरपोक और अभिमानी। जो बोलना चाहता था, भूल जाता है (हाइपेरि, मेजेर, रोडो), इसके साथ-ही-साथ सवेरे सरमें चक्कर आना। बहुत थोड़ी मात्रामें शराब पीनेपर भी बहुत अधिक नशा दिखाया करता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना—नींद आनेपर (सैङ्गियु, साइलि); सामनेकी ओर गिरनेका उपक्रम हो जाता है (कास्टि, साइक्यूर, नक्स)। सरमें चक्कर आनेके साथ बेहोश हो जानेका उपक्रम (लैके, नेट्रम-म्यूर); सवेरे उठकर खड़े हो जानेपर; बैठनेसे घटना (जितनी ही बार खाटसे उठनेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार सरमें चक्कर आ जाता है और सोते ही होशमें आ जाता है—ओपि)। सरमें दर्दकी वजहसे आँख बन्द हुई जाती है; माथा झुकानेपर बहुत बढ़ जाता है; मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो कोई केश खींच रहा है (ऐल्यु); शय्यासे उठनेसे बढ़ना (घटना—ऐसाफिट)। सरमें दर्द—पलकोंमें

खींचनके साथ एक शामसे दूसरी सन्ध्यातक यह दर्द स्थायी रहता है; सर झुकानेपर दर्द असह्य मालूम होना। पीसनेकी तरह सर-दर्द, यह ललाटसे नासामूलतक फैल जाता है। मूर्द्धादेशमें दर्द, मानो एक पत्थर दबाया हुआ है। माथेसे नाकके अगले भागतक फैलनेवाली खींचन मालूम होती हैं। स्त्रियोंके सरके पिछले भागमें दर्द, केश खोल देनेपर आराम मालूम होता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें केश उड़ जाना।

आँख—आँखमें जलन, अश्रु-स्राव (आँसू बहना) और रोशनी न सहन होनेके साथ सवेरे ठण्डे पानीसे धोनेपर बढ़ जाना। चक्षुगोलकके भीतर सफेदी लिये मैलापन या गदला भाव (आर्स, हैमा, सीलेनम, नाई, फास)। दीप-शिखाके चारों ओर इन्द्रधनुषकी तरह नाना प्रकारके रङ्गोंके चक्कर दिखाई देते हैं (स्टैनम)।

कान।—सन्ध्याके समय कानमें तेज़ शलाका बेधनेकी तरह दर्द, रोगवाले कानको दबाकर सोनेके समय बढ़ना; श्रवण-शक्ति विधायक स्नायुके पक्षाघातकी वजहसे बहुत दिनोंतक बहरापन। कानमें आवाज़, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना (नैट्र-सैलिसाई)। कानके छेदका जखम।

नाक।—नाककी सब हड्डियाँ छुई नहीं जाती। सरमें दर्द रोगमें ललाट, आँख और संकोचनका भाव, नाकके अगले भागमें केन्द्रीभूत होता है। दाहिने रन्ध्रके भीतर सूजन मालूम होना और उसका छुआ न जाना; दाहिनी नाकके ऊपरी अंशमें जखमकी तरह दर्द और स्पर्शका सहन न होना। नाकका अगला भाग लाल और खुजलानेवाला (नाकका अगला भाग लाल—कार्बो-ऐन, लैके, ऐसिड-नाई; जलनके साथ—निकोल, लाल और चमकीला—फास)। नासार्बुद (नकसीर) या नासा रोग—थूजा, टियुक्रि।

मुख-विवर।—क्षय हुए दाँतके भीतर ऐसा मालूम होता है, मानो हवा बह रही है। क्षय हुए दाँतको छूनेसे तेज दर्द, रात्रिके समय दन्तमें टपककी तरह दर्द, ठण्डे द्रव्य आदि मुँहमें ले जानेपर बढ़ जाता है। मुँहमें बदबू। जीभके अगले भागमें ज्वाला-जनक रस-भरे दाने या छोटे छाले; जीभ सफेद लेपसे ढँकी। दिनभर मुखमें बदबू या कुछ खट्टा स्वाद रहता है। गलेमें जखमके साथ तेज़ दर्द और कोमल तालु और अलिजिह्वाका प्रदाह, विशेषतः निगलनेके समय। गलनालीके संकोचन और श्वास-प्रश्वासमें बाधा।

पाकस्थली ।—मिचली ; गलेसे पाकस्थलीतक ठण्डक मालूम होना। बहुत तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्दकी वजहसे रोगी साँस नहीं ले सकता। दुष्ट भूख। भयानक प्यास रहनेपर भी श्वासाल्पताकी वजहसे एक बार एक चम्मचसे अधिक पानी नहीं पी सकता, लगातार दो चम्मच पानी पीते ही श्वासरोधका उपक्रम हो जाता है। बार-बार ओकाई आती है और खून मिला श्लेष्मा वमन होता है। पाकस्थलीमें दर्द, ऐसा मालूम होता है कि उसमें कोई चक्कर लगा रहा है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें सुस्ती मालूम होना। पाकस्थलीमें ऐंठनकी तरह भयंकर दर्द और संकोचन मालूम होना। उदरके दाहिने पार्श्वमें प्रचण्ड दर्द। पेट फूलना और सूजन। नाभि-प्रदेशमें ऐसा मालूम होना मानो कोई मरोड़ रहा है, वायु निकलनेपर आराम मालूम होना। सुई गड़नेकी तरह दर्द, पेट फूलना और स्पर्श सहन न होना। अन्त्रवेष्ट या अन्त्रावरक-झिल्लीका प्रदाह, उदरमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, निचले अंग सब बरफकी तरह ठण्डे और रोगवाले अंशोंका सुन्न हो जाना मानो वे काठके बने हैं। छेदनेकी तरह दर्द, सन्ध्याके समय यह दर्द फिर नहीं रह जाता। उदरमें हड़-हड़ गुड़-गुड़ शब्द हुआ करता है।

मलांत्र और मल ।—मल बहुत कड़ा, बहुत जोर लगाये बिना नहीं निकलता। उदरामय, मल पानीकी तरह तरल या खून मिला, पाखाना होनेके पहले, समय और बाद, सभी समय शूलकी तरह दर्द, कूथन और कतरनेकी तरह दर्द। कभी-कभी पाखानेके साथ सूत्र तन्तुमय रूसी निकलती है और अत्यन्त कूथन हुआ करती है। रक्तामाशय, कतरनेकी तरह अत्यधिक वेदना, बहुत प्यास एवं निचले दोनों पैर बरफकी तरह ठंडे हो जाति हैं।

पेशाब ।—लालमूत्र (अण्डनालीका पेशाब), कटिदेशमें आमवातसे पैदा हुआ ऐंठन और जलनेकी तरह दर्द ; पेशाबकी कमी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्रनलीमें उत्ताप मालूम होनेके साथ बार-बार पेशाबका वेग। कैन्थरिसका अपव्यवहार या तेज़ दवाओं आदि (मूत्रनालीके भीतर) की पिचकारीके प्रयोगकी वजहसे मूत्रकृच्छ्रता या प्रमेह रोग फैल जानेके कारण पेशाबमें तकलीफ़।

पुं-जननेन्द्रिय ।—सङ्गमकी इच्छा पूरी न होनेकी वजहसे अण्डकोष और कोषरज्जुमें अकड़न और दर्द मालूम होता है।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—ऋतु बहुत जल्दी-जल्दी होता है और बहुत ज्यादा स्राव हुआ करता है; खून स्याहीकी तरह काला, अन्त्रशूल, कमरमें दर्द। वंक्षण-प्रदेशमें जलन और दोनों पैर बहुत क्षीण और इतने सुन्न मालूम होते हैं, मानो काठके बने हों। प्रदर,—सफेद रङ्गके रसकी तरह, स्राव वस्त्र आदिमें लगने और सूखनेपर कड़ा हो जाता है; त्रिकास्थि या नितम्ब प्रदेशमें दर्दके समय प्रदरका स्राव हुआ करता है, बाएँ स्तनके नीचे बार-बार सुई गड़नेकी तरह दर्द (ऐक्टिया-रेसि)।

श्वास-यंत्र।—स्वर-भंग और स्वरनालीमें कर्कशता और त्वचा क्षय हो जानेकी तरह मालूम होना; निकला हुआ श्लेष्मा पीला रहता है। श्वासाल्पताके कारण पानी पीनेके समय थोड़ा-थोड़ा पानी पीता है। लगातार यदि दो चम्मच पानी पीना चाहता है, तो श्वास-रोधका उपक्रम हो जाता है (स्क्वियुला)। श्वास-रोध—सन्ध्या और रातमें अधिक प्रकोप हुआ करता है; सीढ़ी चढ़नेके समय साँस लेनेमें तकलीफ़। हाथ-पैर फैलाकर सो नहीं सकता। खाँसते-खाँसते रातके ३ बजनेके समय तेज़ सर-दर्द पैदा हो जाता है और नींद खुल जाती है; निर्मल वायु लगनेसे ही खाँसी। सीढ़ी चढ़नेके समय बोली रोक देनेपर खाँसी बढ़ जाती है और वक्षके भीतर अस्त्र और सुई बेधनेकी तरह दर्द मालूम हुआ करता है। जमा हुआ खून मिला कफ़ निकलना, फेफड़ेके प्रदाहमें लम्बी साँस लेनेपर वक्षमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है, सोनेपर या खाँसनेपर यह दर्द बढ़ जाता है, इसके साथ ही श्वास-कृच्छ्रता और मानसिक आवेग भी मिला रहता है। वक्षपर इस तरहका भार मालूम होना मानो एक भारी चीज़ दबायी हुई है, साथ ही साँस रुकनेका उपक्रम हो जाना। जिस तरह थोड़े परिमाणमें फेफड़ेमें रक्त संचित होता है और फेफड़ा यकृद्भावको प्राप्त होता है, श्वास-कृच्छ्रता उसकी अपेक्षा कहीं अधिक मालूम होती है। हृद्स्पन्दन (कलेजा धड़कना), शय्यासे उठने या तेजीसे चलनेपर, इसके साथ ही चेहरेमें उत्ताप और दबाव मालूम होना; चित्त होकर (आर्स, नक्स) या दाहिनी करवट सोनेपर (बैडी, ब्रोम, लिलियम-टाइ, प्लैट) कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है। फेफड़ेमें पीव-संचय होना और सुस्त करनेवाला पसीना।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनके पीछेसे लेकर पीठतक फैला हुआ दर्द, मानो कोई जोरसे केश खींच रहा है। दोनों पृष्ठ-फलकोंके बीचमें श्वास-

कृच्छ्रताके साथ सुई गड़नेकी तरह तेज़ दर्द, रातमें चित्त होकर सोनेपर बढ़ता है और दाहिनी करवट सोनेपर घटता है। स्कन्ध-देशका (कन्धेका) वात, दर्द, रातके समय बढ़ता है; हाथ, अंगुलियाँ-सभी फूली मालूम होता हैं। वातकी वजहसे पक्षाघात। हाथ और अंगुलियाँ सुन्न हो जाती हैं और उनमें झुनझुनी हुआ करती है। बाँह, कोहनी, हाथ और अंगुलीकी सन्धियोंमें छेदने और सुई गड़नेकी तरह दर्द, विशेषकर रातमें; हाथ बहुत बड़े मालूम होते हैं; रातमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ वातव्याधि। रोगवाले अंग काठके बने मालम होते हैं। दिनके समय जो लक्षण प्रकट होते हैं, शामको सोने बाद वे सब गायब हो जाते हैं; बहुत तेजीसे सारे अङ्गमें फैल जाते हैं। चलनेकी अपेक्षा बैठनेके समय बहुत थकान मालूम होती है, हाथ-पैरमें चींटी रेंगनेकी तरह मालूम होता है; अन्तमें जीभमें भी ऐसा ही मालूम होता है।

वृद्धि ।—शराब पीने, ठण्डी हवा लगने, आँखमें ठण्डे पानीका प्रयोग करने, माथा झुकाकर सोने (स्पाइ, स्पाञ्जि)। रातके ३ बजनेके समय, लम्बी साँस लेने और काफी पीनेपर।

घटना ।—दाहिने पार्श्व सोने और गर्म चीजें पीनेपर (शीतका आविर्भाव)।

सम्बन्ध ।—**दोषघ्न** ।—प्रतिविष, नाइट-स्पिरि-डाल।

सदृश ।—**तुलनीय** ।—आर्नि, ड्रोसे, नैट्र-मूर, ऐसिड-नाइ। इपिकाकसे खाँसी घट जाती है।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

कैलि आक्सैलिकम

(KALI OXALICUM)

दूसरा नाम ।—कैलि-आक्सेलस ; पोटैसियम बाई-आक्सैलेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल दोनों आकारमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—कटिवात, वमन, आक्षेप, ताण्डव प्रभृति रोगोंमें लाभदायक है ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि पर्माङ्गेनिकम

(KALI PERMANGANICUM)

दूसरा नाम ।—पर्माङ्गनेट आव पोटास ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और चुआये हुए पानीमें द्रव (अर्क) ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—खाँसीमें उपझिल्ली-प्रदाह ; पाकाशय-प्रदाह ; नकसोर ; गलेका जखम ; लार बहना ; मसे इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—रोहिनी और गलनालीके उपझिल्ली-प्रदाह रोगमें ही इसका व्यवहार और फायदा दिखाई देता है, खासकर इस प्रदाहसे पैदा हुए स्राव जब बहुत ही बदबूदार होते हैं । नासारन्ध्र, कण्ठ और स्वरनालीके भीतर बहुत अधिक उपदाह, रसकी तरह और खून-मिला स्राव और बार-बार निगलनेकी इच्छा ; पाकस्थलीसे बहुत ज्यादा गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलना और लगातार लार निकलना, गलेका भीतरी भाग और अलिजिह्वा फली और कण्ठमें स्पर्श सहन न होना वगैरह कई इस दवाके प्रधान प्रयोग-लक्षण हैं ।

लक्षणावली

नाक।—नाकसे उत्तेजनाजनक रक्त-स्राव। नासारन्ध्र और स्वर-नालीसे निकले हुए पदार्थ खूनसे रंगे रहते हैं। नासारन्ध्रसे बहुत ज्यादा खूनका स्राव। दोनों रन्ध्र रुक जाते हैं और उन्हें साफ़ करनेकी चेष्टा करनेपर खूनका स्राव आरम्भ हो जाता है।

मुख-विवर।—बहुत ज्यादा लार बहना। बोलनेमें तकलीफ़ मालूम होती है।

गलेके भीतर।—खाँसनेपर गलेके भीतरसे जो भी पदार्थ निकलता है वह खूनसे भरा रहता है। उपजिह्वा, कोमल तालु और जिह्वामूलके बगलवाले दोनों गह्वर विभिन्न रङ्गोंसे रंगे दिखाई देते हैं और गहरे लाल रङ्गके और बीच-बीचमें नीला दाग दिखाई दिया करता है। उपजिह्वा फूली और लम्बी मालम होती है। गलेमें सूखापन और दर्द मालूम होनेपर भी बार-बार निगलनेकी दुर्दमनीय प्रवृत्ति। मुँहमें बहुत ज्यादा लार सञ्चय होना और निगलनेके समय बाधा पड़नेकी वजहसे मुँहसे लार निकला करती है। गलेकी पेशी और कर्णमूल ग्रन्थिमें ज्यादा दर्द रहनेके कारण मुँह फाड़नेमें बहुत तकलीफ़ होती है। मुँहसे निकली हुई हवा बहुत बदबूदार; बहुत ज्यादा सुस्ती और उठनेकी शक्तिका न रहना। कण्ठके ऊपर बहुत अधिक स्पर्श-कातरता। जलीय पदार्थ निगलनेके समय वह नासारन्ध्रसे बाहर निकल जाता है (एरम-ट्राई, लैक-कैन, लैके, लाई, मर्क, सायानेट)।

पाकस्थली।—अग्निमान्द्य। पाकाशयसे प्रायः लगातार गाढ़ा गोंदकी तरह श्लेष्मा-स्राव हुआ करता है (आइरिस-वार्सि), इससे यद्यपि कोई तकलीफ़ नहीं मालूम होती, तथापि इसके द्वारा मिचली दूर नहीं होती। वमन—पहले पाकाशयस्थित खाये हुए पदार्थ आदि और इसके बाद गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्माकी कै होती है (आइरिस-वी, कैलि-बाइ)। मिचली और बार-बार निगलनेकी प्रवृत्ति, दुरारोग्य कब्जियत।

सम्बन्ध।—**सदृश**।—कैलि-बाइ, ऐसिड-म्यूर, ऐपिस, मर्क-सायान, मर्क-प्रोटो, फाइटो, एरम-ट्राइ, कैलि-म्यूर।

शक्ति।—मूल या विचूर्णसे तृतीय दशमिक विचूर्णतक व्यवहृत हुआ करता है।

कैलि फास्फोरिकम

(KALI PHOSPHORICUM)

दूसरा नाम ।—फास-फेट आव पोटैसियम ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल क्रम तैयार हुआ करता है ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—निम्नलिखित रोगोंमें लाभदायक है:—केश उड़ जाना ; रजःस्वल्पता ; खूनकी कमी ; दमा ; मस्तिष्ककी शीर्णता और कोमल हो जाना ; मुँहका सड़नेवाला जखम ; दूषित फोड़ा ; जाड़ेके दिनोंके फोड़े ; विसूचिकाकी तरह पतले दस्त आना ; उपझिल्ली-प्रदाह ; रक्तामाशय ; अनजानमें मूत्र-स्राव ; चेहरेका स्नायुशूल ; सड़नेवाला जखम ; व्याधिशंका ; मूर्च्छावायु ; नींद न आना ; विषादोन्माद ; आर्त्तवमें विकारकी वजहसे सर-दर्द ; स्नायविक अजीर्णत्व ; रातके समय भय ; कामोन्माद , पक्षाघात ; फेफड़ेका प्रदाह ; सूतिका ज्वर ; सूतिकोन्माद ; गृध्रसी ; पाकाशयका जखम ; आमवात ; अंगुलहाड़ा इत्यादि ।

उपयोगिता और आभास ।—डा० सुसलरने इस दवाकी विशेष रूपसे परीक्षा की है। अत्यधिक मानसिक या शारीरिक परिश्रम या बहुत दिनोंतक रोग या तृप्त काम-चेष्टा या अतृप्त काम-चेष्टाके कारण उत्तेजनाकी अधिकताकी वजहसे स्नायविक पूर्ण अवसादकी अवस्थामें यह सञ्जीवनी सुधाकी तरह स्वास्थ्यको फिरसे ठीक कर देता है। डा० "रा" का कथन है—"स्वरनलीके रोगमें, जहाँ बहुत देरकर चिकित्सा आरम्भ हुई, और रोगीमें उठनेकी शक्ति न रह गयी हो ; नीला मुखमण्डल वगैरह लक्षण दिखाई देता हो, वहाँ कैलि-फास विशेष उपयोगी है।" डा० हेरिङ्ग कहते हैं, कि रोगकी अन्तिम अवस्थामें जब रोगी बहुत ही निम्न स्वरमें बातें किया करता हो, जब उसकी बोली क्रमसे जकड़ती जाती हो और चारों ओरसे पक्षाघात तेजीसे हृत्पिण्डकी ओर आता दिखाई देता हो, उस समय सबसे पहले कैलि-फासका प्रयोग करना चाहिये। इसके कई प्रधान निर्णायक लक्षण ये हैं :—(१) मानसिक उद्वेग, बहुत अधिक शङ्का करना ; किसीके साथ यहाँतक कि पुराने बन्धुओंसे भी बात नहीं करना चाहता। डरता है, बहुत निराशा-भरा, लज्जाशील और क्रोधी स्वभाव। (२) सरमें चक्कर आना, इसके साथ ही

माथेके पिछले भागमें दर्द, पेटमें खालीपन मालूम होना, धीरे-धीरे शरीर हिलानेपर अच्छा रहता है ; बहुत दिनोंतक मानसिक परिश्रम करनेके बाद सर-दर्द । (३) इन्द्रियोंमें सुस्ती और रमणके बाद सुस्ती मालूम होना । कमर और हाथ-पैरोंमें पक्षाघात और उनका अवश मालूम होना--परिश्रमसे वृद्धि । (४) मसूढ़े छिद्र भरे और उनसे सामान्य कारणसे ही रक्त-स्राव होना । (५) पेशाब या अन्यान्य स्राव कमला नेबू या सुनहरे रङ्गकी तरह पीले ।

लक्षणावली

मन ।—उद्वेगकी अधिकता, सदा शंकान्वित चित्त ; पुराने बन्धु आदि किसीसे भी मिलनेसे डरता है ; यदि उससे खोई बात करता है, तो चिढ़ उठता है ; सभी विषयोंमें निराशा ; लज्जाशील ; क्रोधी स्वभाव ; सामान्य मानसिक परिश्रम करनेपर भी सुस्ती मालूम होना ; बहुत अधिक आलस्य और विषाद ; सामान्य परिश्रमका काम भी बहुत भारी मालूम होता है । स्नेहविकार, स्वामी, पुत्र आदिके प्रति भी निष्ठुरताका आचरण करता है । काल्पनिक पदार्थ पकड़नेके लिये बाँह फैला देता है । बच्चोंकी रातमें भय (आरम-ब्रोम, कैलि-ब्रोम)

मस्तक ।—सरमें चक्कर आना, सोने बाद (कास्टि, लैके, पल्स, रास), बैठनेपर (कैम्फो, कैमो, पल्स, रास), खड़े होनेपर (काक्यु) और ऊपरकी ओर देखनेपर (कैल्के, क्यूप्रम, ग्रैफ, लैके, पल्स, साइलि, टैबाक), सरमें चक्कर आना । कपालके पिछले भागमें सर-दर्द, सारी रात रहा करता है और दर्दकी वजहसे बार-बार नींद खुल जाया करती है ; शय्यासे उठनेपर अच्छा हो जाता है, सरके पिछले भागमें और कमरमें दर्दकी वजहसे रातमें नींद खुल जाती है, चित्त होनेपर घटता है और बहुत थकावट मालूम होती हैं, सोनेपर और आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेपर घट जाता है (सिरियम-आक्सेलिक और लैकेसिस) । आँखसे मस्तिष्कका निचला भाग भेदकर, सरके पिछले भागतक दर्द मालूम होता है, रातमें बढ़ जाता है ; खा लेने और धीरे-धीरे टहलनेपर घटना । आर्त्तव-स्रावके पहले और आर्त्तव-स्रावके समय सरमें दर्द, दाहिनी आँखसे सरके पिछले भागतक उत्ताप मालूम होना, मलने, सोने, खाने और धीरे-धीरे टहलनेपर घटता है तथा आवाज़से बढ़ जाता है ; सरमें दर्दके साथ भूख लगना । मस्तिष्कमें खूनकी कमी, सदा पढ़ने

लिखनेमें लगे रहना, विषय-सम्बन्धी चिन्ताओंसे आक्रान्त और बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम करनेवालोंका सर-दर्द। पाकस्थलीमें खालीपन और सुस्ती मालूम होनेके साथ-ही-साथ सरमें दर्द (इग्ने, सिपि, सल्फ)। माथेमें जगह-जगहके बाल उड़ जाते हैं (ऐलोपेसिया—फास)। ऐसा मालूम होता है, मानो एक "हवाई" माथा छेदकर निकल गयी है इस ढङ्गका दर्द।

आँख।—उपझिल्ली-प्रदाह रोगके बाद तीक्ष्ण दृष्टि, पहचाननेकी शक्तिका अभाव। स्नायविक अवसादकी वजहसे पलकें आप-से-आप गिर जाती हैं और आँखें बन्द हो जाती हैं (कोलो, कास्टि, जेलसि, ग्रैफ, सिपि), विशेषकर बायीं आँखकी पलक। ऐसा अनुभव होना मानो आँखमें कोई सलाई या धूलका कण गिर गया है। आँखमें जलन और करकराहट होती है, आँखसे पानीकी तरह श्लेष्माका स्राव हुआ करता है, आँखें श्लेष्मासे भरी, विशेषकर सन्ध्याके समय। पलकें फूली, सवेरे सट जाया करती हैं (सिपा, इयुफ्रे, हिप, ग्रैफ); बाईं आँखकी निचली पलकपर अंजनी; बाईं आँख प्रायः बन्द रहा करती हैं। दाहिनी आँखसे कनपटीतक तेज़ दर्द; दोनों कनपटी हाथसे दबा रखनेपर आराम मालूम होता है। आँखके किनारे इस ढङ्गका दर्द होता है, मानो जखम हो गया है तथा आँखमें इस ढङ्गकी जलन मालूम होती है, मानो धुआँ लग गया है (सिपि, क्रोकस); आँखमें इस तरहका दर्द होता है, मानो न जाने कितना रोया है; बाईं आँखमें तेज़ दर्दकी वजहसे नींद खुल जाती है, टपक हुआ करती है और धूपमें दर्द बढ़ जाता है। पढ़नेके समय आँखें थक जाती हैं। आँखके सामने काले बिन्दु सब उड़ते फिरते हैं (चायना, काक्यु, कोना, सिपि)।

कान।—कानमें नाना प्रकारकी आवाजें आती हैं (चायना, कास्टि, ग्रैफ, पल्स)। श्रवण-शक्ति बहुत तेज़, ऊँची आवाज़ बहुत कष्टकर और असह्य मालूम होती है।

नाक।—दोनों छेद रुके-से मालूम होते हैं; स्वच्छ और गाढ़े गोंदकी तरह (कैलि-बाई) श्लेष्मा-स्राव। नयी सर्दीके लक्षणके साथ लगातार प्रबल छींक, नासा-रन्ध्रमें पीले रङ्गकी पपड़ीसे ढँका जखम, घोर लाल रङ्गका रक्त-स्राव। स्राव आदि बहुत बदबूदार।

मुखमण्डल।—आँख और दोनों गाल गड्ढेमें धँसे और चेहरा नीलापन लिये, दाहिने पार्श्वका स्नायुशूल, ठण्ड प्रयोगसे घटना। हनुकी अस्थिमें लगातार कांटा गड़नेकी तरह दर्द, खानेके बाद, बोलनेपर, चलने या स्पर्श करनेपर घट जाता है। बायें गालमें उत्ताप मालम होना, मानो उस गालके पास दीया रखा हुआ है। कर्णमूल और बगलकी गाँठें फूली और छूनेसे तकलीफ़ होना।

मुख-विवर।—सवेरे मुँहसे निकली हुई हवा बहुत ही बदबूदार होती है। बाईं ओरके निचले हनुकी नीचेवाली गाँठें सब फूल जाती हैं और उन्हें छूनेसे तकलीफ़ होती है। जीभ सरसोंके चूरकी तरह भूरे रङ्गके लेपसे ढकी रहती है या कभी-कभी सफेद अथवा हरी आभा लिये पीले रङ्गके मैलसे ढकी रहती है; जीभकी पीठ अकड़ जाती है और किनारे लाल और तेज़ दर्दसे भरे रहते हैं। मुख-विवरका ऊपरी अंश कहीं-कहीं फूला हुआ, ऐसा मालूम होता है, कि चर्बीसे लकीर खींच दी गई है। बहुत ज्यादा लार बहती है और वह गाढ़ी तथा नमकीन रहा करती है; मुँहका स्वाद बहुत कड़वा, विशेषकर सवेरे हो जाता है। मसूढ़े बहुत शिथिल हो जानेके कारण उनसे खूनका स्राव होता है, दाँत जड़से अलग हो जाते हैं और उन्हें छूनेसे ही खून निकलता है। सर्दी लगते ही दाँतोंमें दर्द होने लगता है। बहुत ज्यादा लार बहनेके साथ-ही-साथ दाँतमें दर्द, जीभ ऐसी मालूम होती है, मानो टकराती है या तालुमें सट गयी है।

गलेके भीतर।—दोनों गाँठें बढ़ी हुई और उन्हें छूनेसे दर्द, खासकर बायीं ओरकी (लेके); गलेमें बहुत अधिक सूखापन मालूम होना, मानो अनाज आदिकी छाल लगी हुई हैं। सवेरे दोनों ही गल-ग्रन्थियाँ सफेद रङ्गकी झिल्लीसे ढकी मालूम होती हैं और इस नकली झिल्लीका थोड़ा अंश जिह्वा-मूलके पार्श्वके दोनों गह्वरोंकी बन्धनीके ऊपर भी दिखाई देता है, जैसा कि उपझिल्ली रोगमें हुआ करता है; बायीं गलग्रन्थिसे इसी कानके भीतरी प्रदेशतक प्रचण्ड सुई बेधनेकी तरह दर्द फैल जाता है। दाहिनी गल-ग्रन्थिमें भयानक दर्द, निगलनेके समय वह दर्द बढ़ जाता है। सवेरे सोकर उठनेपर बहुत ज्यादा नमकीन श्लेष्मा निकलकर मिचली पैदा कर देता है। पाकस्थलीसे गलेके भीतरतक ऐसा मालम होता है, मानो गुल्म उठ रहा है (इग्ने, ऐसाफि)।

पाकस्थली।—मीठी चीजें आदि खानेकी तथा सिरकेकी खटाई और बहुत ज्यादा परिमाणमें बरफकी तरह ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा। भूख खूब लगती है, परन्तु खानेका पदार्थ देखनेपर फिर रुचि नहीं रहती, भोजनके बाद मिचली और इसके बाद ही औंघाई आने लगती है। उदरके ऊपरी प्रदेशमें खालीपन मालूम होना और सुस्ती (इग्ने, सिपि, सल्फ)। कलेजा धड़कना और खूनकी कै। पित्तमय डकार, भोजनके बाद बढ़ना। वायु निकलनेके बाद मिचलीका घट जाना। आर्त्तव-स्रावके समय पाकस्थलीमें शब्द हुआ करता है, ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने घूंसा मार दिया है।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें दबाव डालनेपर दर्द होता है। प्लीहामें सुई या सलाई गड़नेकी तरह दर्द, शरीर हिलानेपर बढ़ना। कोखमें बहुत दर्द, छींक आनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो दोनों कोखे फट जायंगी; बार-बार छींकनेकी इच्छा। वृथा ही पाखाना लग आनेके साथ ही साथ तलपेटमें शूलकी तरह दर्द, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर घटना (कोलो, कूप्रम), आँतें आदिका नीचेकी ओर खिंचना, सीधे होकर बैठनेपर घटना; बायें पार्श्वमें और पानी पीनेपर बढ़ना। पेट फूलना और इस ढंगका दर्द, मानो ऐंठन या मरोड़ हो रहा है। भोजनके समय बढ़ना।

मलान्त्र और मल।—उदरामय, मल कीचड़की तरह, पानी जैसा पतला; बहुत ज्यादा वेग; बदबूदार वायु निकलना और पाखाना होने बाद काँखना या सफेद बदबूदार और तृप्ति न होनेवाला सवेरे ६ बजनेके पहले न रुकनेवाला बड़े वेगसे पाखाना लगता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें, बिना दर्दका, बदबूदार अजीर्ण काली आभा लिये पाखाना होता है; सवेरेका भोजन अथवा दोपहर और शामके भोजनके बाद बढ़ जाना। खाते-खाते पाखाना लग आता है (क्रोटोन, फेरम); डरकी वजहसे पैदा हुआ उदरामय (जेल्स, ओपि), इसके साथ ही शारीरिक और मानसिक अवसाद।

रक्तामाशय।—मल, बिना मिलावटके खून-भरा, रोगीमें विकार पदा हो जाता है और पेट फूल जाया करता है। विसूचिका, चावलके धोवनकी तरह (फेनकी तरह) मल (आर्स, जैट्रोफा, वेरेट)। मलान्त्रका बाहर निकल आना या अपनी जगहसे हट जाना (इग्ने, पोडो)। अर्श—बाहरी मसा फूला और जलन भरा।

पेशाब।—पेशाबका रङ्ग कमला नीबूकी तरह (ऐब्सिन्थ) या केशरकी तरह गहरा पीला रङ्ग, तली कुछ लाल आभा लिये धुमैली। प्रसवके बाद मूत्रनालीमें जलन मालूम होना। बच्चोंकी शय्यामें पेशाब हो जाना (सिपि सिना); पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना। मूत्रनालीसे खूनका स्राव।

पुं-जननेन्द्रिय।—काम-प्रवृत्तिकी प्रबलता। सवेरे लिङ्गमें कड़ापन, रमण-शक्तिका घटना या एकदम नष्ट हो जाना; क्लैव्य (ध्वजभङ्ग)। सवेरे पेशाबके वेगके साथ लिङ्गमें कड़ापन पैदा होता है। रातमें जो वीर्यपात होता है, उसमें दर्द होता है। रमणके बाद बहुत सुस्ती मालूम होती है और उठनेकी शक्ति नहीं रह जाती तथा दृष्टि क्षीण हो पड़ती है (कास्टि, कैलि-कार्ब)।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—बहुत असमयमें और बहुत थोड़ा आर्त्तव-स्राव; खूनका रङ्ग अकसर काला रहता है और पहले दिन कुछ गाढ़ा हो जाता है। ऋतु-स्रावके समय पाकस्थलीमें नाना प्रकारके शब्द हुआ करते हैं और दोनों पैरोंमें बहुत दर्द हुआ करता है, मानो स्वास्थ्य-भंग हो जानेका उपक्रम हो रहा है। ऋतु होनेके कई दिन पहले कमजोरी मालूम होती है और रजःस्रावके समय आँतें आदि नीचेकी ओर खिंचती हैं। ऐसा मालूम होता है; मानो पेट फूलकर फट जायगा, बेचैनी मालूम होना शरीरको हिलाने अथवा पेटको दबाकर सोनेपर घटना (कमरका दर्द पेटको दबाकर सोनेपर घट जाता है—ऐसिड-ऐसेट और सिना तथा ऐब्रोट); बायें अण्डाधार या डिम्बाधारमें तेज़ दर्द, चित्त होकर सोने या टेढ़े होकर सोनेपर घटना (लैके; बढ़ना—फास)। उदरके बाएँ पार्श्वमें और बाएँ डिम्बाधारमें दर्द (एपिस; लिलि-टाइग्रि, लैके, आस्टिलेगा); उदरके बाएँ पार्श्वसे दाहिने पार्श्वमें फैल जाता है (लैके, दाहिने पार्श्वसे बाएँ पार्श्वमें—लाई)। प्रदर, स्राव पीला या कुछ हरी धारा लिये, सड़ी गन्ध मिला रस; यह स्राव जहाँ लगता है, वहीं छाल या रस भरे दाने पैदा हो जाते हैं, इसके साथ ही थोड़े समयतक होनेवाला ऋतुस्राव। रजःस्रावके चार-पाँच दिनोंतक रमणेच्छा बहुत अधिक हुआ करती है। गर्भावस्थामें खून मिला स्राव (काक्यु, रास, ट्रिलियम, बहुत विश्रामके बाद और मानसिक विषादकी वजहसे—ऐसिड-नाई, प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ—कैमो; पाँचवें और सातवें महीनेमें—सिपि)।

श्वास-यंत्र ।—खाँसी—स्वरनालीके नीचे उग्रताकी वजहसे खाँसी (बेल, स्पिा, हिप, लैके)। बहुत थोड़े परिमाणमें गाढ़ा, सफेद या पीली आभा लिये श्लेष्मामय बलगम निकलना ; गलेमें दबाव मालूम होकर (लैके) एकाएक खाँसी पैदा हो जाती है। यक्ष्मा रोगमें सुनहले रङ्गका पीला बलगम निकलता है। श्वास-रोग—बहुत थोड़ा खानेपर भी बढ़ जाता है ; सीढ़ी चढ़नेपर श्वास-रुकनेका उपक्रम (आर्स, कैलि-नाइट्रि)। सीढ़ी चढ़नेपर कलेजा धड़कना ; खूनकी कै और कलेजा धड़कना ; थोड़ा भी शरीर हिलानेपर हृत्स्पन्दन।

प्रत्यङ्ग आदि ।—ग्रन्थियोंके फूलनेकी वजहसे गलेकी अकड़न (कोना, आयोड देखिये) ; छातीमें सुई गड़नेकी तरह दर्दके साथ श्वासकृच्छ्रता, चित्त होकर सोने, बैठने या चलनेपर बढ़ना ; किसी अवलम्बनपर भार देकर ठहर जानेपर घट जाना। सरके पिछले भागमें और कमरमें दर्दकी वजहसे दर्द होकर नींद खुल जाती है ; चित्त सोनेपर घटता है और सोकर उठनेपर आराम हो जाता है। बहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनकी वजहसे मेरुमज्जाका क्षय (ऐगार)। पीठमें और हाथ-पैरोंमें लगातार दर्द, धीरे-धीरे हिलानेपर घटना। कन्धा और दोनों बाहुओंमें दर्द ; धीरे-धीरे हिलानेपर घटना। सवेरे सो सकता है। स्नायविक अस्थिरता (बेचैनी) और थोड़ा भी कारण होनेपर बहुत कातर हो जाना ; निचला पैर स्थिर नहीं रख सकता ; दोनों पैरोंकी पेशियोंमें खासकर जंघाकी, पैरकी पोटलीकी पेशीमें कँपकँपी मालूम होती है। दोनों बाँह और अंगुली आदिकी पेशियोंका संकोचन ; पीठ तथा प्रत्यङ्गोंका सुन्न हो जाना ; शारीरिक परिश्रमसे बढ़ना। मानसिक और शारीरिक सुस्ती।

वृद्धि ।—भोजनके बाद, सवेरे शय्यासे उठनेपर, रोगवाला अंश दबाकर सोनेपर, बैठने या चलनेपर, रातमें ३ बजेसे ५ बजेके समय, बहुत सवेरे, सर्दी लगनेपर, रमणके बाद, छींकनेपर, सूर्यकी ओर मुँहकर खड़े होनेपर, पानी पीनेपर आर्त्तव-स्रावके पहले चित्त होकर सोनेपर।

घटना ।—आर्त्तव-स्राव आरम्भ होनेपर, सोनेके बाद, किसी चीज़पर भार देकर ठहरनेपर, सीधे बैठनेपर, सामनेकी ओर टेढ़े होनेपर, वायु निकलनेपर, उत्ताप लग जानेपर, शरीर धीरे-धीरे हिलानेपर, घरके बाहरकी निर्मल हवा सेवन करनेपर।

तुलनीय ।—रास-टक्स, बैप्टो (सान्निपातिक अवस्था); ऐनाकार्ड (स्नायविक अजीर्णता); हायोसा (उन्माद); फेरम (आहारके समय); इग्ने (मूर्च्छावायु); कैलि-कार्ब (सङ्गमके बाद बढ़ना); ओपियम (तन्द्रा); आर्निका (आमवात) इत्यादि ।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—ऐगार, नेट्र-मूर, ऐसिड-मूर, लैके, ऐक्टिया, जेल्स, जिङ्कम, कैलि-कार्ब, क्रोटोन, फेरम, ओपि, सिरियम-आक, आर्स, कार्बो-वेज, फाइटो, क्रियो ।

शक्ति ।—डा० हैनिमैनके मतसे ३रे दशमिकसे १२ दशमिक विचूर्ण; पर आजकल २०० शततमिक और उससे भी ऊँचे क्रम व्यवहारमें आते हैं ।

कैलि पिक्रिकम

(KALI PICRICUM)

दूसरा नाम ।—पोटासियम पिक्रेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

उपयोगिता और आभास ।—पाण्डु रोग, उदरामय, शूल, आक्षेप, प्रभृति लक्षणोंमें लाभदायक है । साधारणतः यकृतपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—पिक्रिक-ऐसिड, फेरि-पिक्रि ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलि सल्फ्यूरिकम

(KALI SULPHURICUM)

दूसरा नाम ।—पोटैसियम सल्फेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण ।

लक्षणके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक है:—दमा ; मोतियाबिन्द ; सर्दी ; ताण्डव ; अजीर्ण ; खसड़ा ; कर्कटका जखम ; बहरापन ; प्रमेह ; कच्छू ; आमवात ; नकसीर फूटना ; विचर्चिका ; वात ; सरमें चक्कर आना ; क्रूप खाँसी ; रास-टक्सकी विषाक्तता ।

उपयोगिता और आभास ।—कैलि-सल्फ तन्तु-जायु चिकित्सा-शास्त्रका पल्सेटिला जैसा है। इसके सभी श्लैष्मिक-स्राव पीले रङ्गके होते हैं और इसके सभी लक्षण उत्तापसे बढ़ जाते हैं और खुली निर्मल हवा सेवन करनेपर घट जाते हैं और पल्सेटिलाकी तरह इसका दर्द भी जगह बदला करता है तथा पल्सेटिलाकी तरह यह भी नये पैदा हुए बच्चेकी आँख उठनेमें विशेष उपयोगी है। आरक्त ज्वर, खसड़ा या छोटी माता, उपझिल्लीका कर्कट रोग वगैरह जिन रोगोंमें उपत्वक् और उपझिल्लीमें विकार हो जाया करता है, उनमें कैलि-सल्फ विशेष लाभदायक है। सारे शरीरमें भार मालूम होना, हमेशा ऐसी थकन मालूम होना, कि न जाने कितना परिश्रम किया है, सरमें चक्कर आना, जाड़ा लगना, कलेजा धड़कना, मानसिक उत्सुकता, चिन्ता-विषाद, दाँत और सरका दर्द, सरकी बीमारियाँ और अङ्ग-प्रत्यंगोंमें दर्द वगैरह इसका प्रधान क्रिया-फल है।

लक्षणावली

मस्तक ।—माथेमें भयङ्कर चक्कर आना ; शय्या छोड़कर उठनेपर (साइक्लूर, ओलियैन, सल्फ) या खड़े होनेपर बढ़ता है (काक्यु)। वातकी वजहसे सरमें दर्द (कैक्ट, चिनिन-आर्स, कैलि-बाई, कैल्मी, लैके, मर्क, रैनान, फाइटो, सैंगुइ), गर्म घरमें और सन्ध्याके समय बढ़ना और निर्मल वायु लगनेपर घटना। एक पार्श्वसे दूसरे पार्श्व या नीचेकीओर माथा हिलानेपर दर्द मालूम

होना। पीली लसदार रूसी (सफेद—कैलि-म्यूर, फास, थुजा)। माथेके बाईं ओरके तथा मूँछमें जगह-जगहके केश उड़ जाना (सूजाक होने बाद)।

आँख।—आँख प्रदाहित पीबकी तरह या पीले रङ्गका श्लेष्मा निकलना (पल्स, कैलि-बाई, कैलि-म्यूर; स्वर्ण-वर्ण, सुनहले रङ्गका—कैलि-फास)। नये पैदा हुए बच्चोंकी आँखोंका प्रदाह—आर्जेण्ट-नाई, कैल्के, ऐसिड-नाइ, पल्स, रास)।

कान।—सर्दीकी वजहसे बहरापन, कर्णपश्चान्नालीकी सूजन (कैलि-म्यूर); स्राव पतला, पीला और लसदार (लाई, नेट्र-सल्फ़, इलैप्स)।

नाक।—पीनस या नकसीर फटना रोगमें स्वाद और आघ्राण शक्तिक लोप हो जाना; स्राव पीला, बदबूदार और कभी-कभी पानीकी तरह, बाए रन्ध्रसे ज्यादा सर्दीका स्राव, पुरानी सर्दी पीले रङ्गकी और गाढ़े गोंदकी तरह श्लेष्माका स्राव।

मुखमण्डल।—मुँहका दर्द, गर्म घर और सन्ध्याके समय बढ़ना। निर्मल वायु लगनेपर घटना। दाहिने गालके भीतर या दाहिनी नाकके छेदमें उपझिल्लीका कर्कट रोग (आर्स, आयोड, थूजा, हाइड्रेस, कैलि-सायानेट), दोनों ओठोंमें छाले और सूजन।

मुख-विवर।—दाँतमें दर्द; गर्म घरमें बढ़ जाना (कैमो, पल्स) और निर्मल हवा लगनेपर आराम मालूम होना (ब्राई, सिपि, नक्स, पल्स)। स्वाद-शक्तिका गायब हो जाना या खानेकी चीज़ोंका कोई स्वाद न मिलना। जीभ पीले गोंदकी तरह श्लेष्मासे लिपटी हुई, कभी-कभी दोनों पार्श्वके स्थान सफेद मालूम होते हैं।

पाकस्थली।—मस्तिष्ककी कमजोरी या जड़ताके साथ पाकाशयमें सुस्ती मालूम होना। रोगिनीको हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी बुद्धिमें विकार पैदा हो रहा है (ऐक्टि)। पीले रङ्गके लेप-चढ़ी जीभके साथ मानो पाकस्थलीमें एक भारी चीज़ दबी हुई है, ऐसा मालूम होना। ज्वालामयी तृष्णा, मिचली और वमन। गर्म चीजें पीनेसे भय मालूम होता है। अर्शके साथ कब्जियत (नक्स, सल्फ)। मलका पतलापन—मल पीला और लसदार गोंदकी तरह। कामला या पाण्डु रोग। हूप-खाँसी रोगमें पेट वायुसे फूला हुआ और कड़ा।

पुं-जननेन्द्रिय।—प्रमेह, स्राव पीला या पीली आभा लिये श्लेष्मामय (नेट्र-सल्फ़, थूजा)। रुके हुए प्रमेहकी वजहसे अण्डकोषका प्रदाह या एकशिरा (पल्स, क्लिमेंट, नेट्र-मूर, ऐण्टि-टार्ट)। लाला-मेह।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—आर्त्तव—बहुत देरसे और थोड़ा स्राव, इसके साथ ही उदरमें दबाव और भार मालूम होना; पीनस रोगाधिकारमें प्रति तीन सप्ताहका अन्तर देकर रजःप्रकाश हुआ करता है। प्रदर-स्राव पीला, जलवत या रेतकी तरह।

श्वास-यन्त्र।—वायुनलीभुज-प्रदाह, श्वास-रोग, क्रुप-खाँसी, फेफड़ेका प्रदाह वगैरह रोगमें पीला लसदार कफ़, श्लेष्मा बहुत सहजमें निकल जाता है; छातीमें श्लेष्मा हमेशा घड़घड़ाया करता है और पतला श्लेष्मा-भरी, घड़-घड़ शब्द करनेवाली खाँसी (ऐण्टि-टार्ट, कैलि-कार्ब, फास, स्टैन) आया करती है, सन्ध्याके समय गर्म जल-वायुमें वृद्धि। स्वरतन्तुके ऊपर गाढ़ा श्लेष्मा संचय होनेकी वजहसे स्वरभङ्ग (हिप, स्पञ्जि)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनका अकड़ना, माथा बाईं ओर फूला करता है और दोनों कन्धे कुछ ऊँचे हो जाया करते हैं। दर्द आदि भी तेज़ गतिसे एक स्थानसे दूसरी जगह हट जाता है (कैलि-बाई, लेक-कैन, पल्स) और गर्म घरमें बढ़ना और निर्मल वायु लगनेपर आराम मालूम होना।

त्वचा।—शल्कसे ढँके उद्भेद, बाँहमें ही ज्यादा होते हैं; गर्म पानीसे धोनेपर अच्छे रहते हैं। कामला, रुका हुआ खसड़ा। पीले रङ्गके गोंदकी तरह रस-स्राव करनेवाले जखम। उपझिल्लीका कर्कट रोग (आर्स, आयोड, हाइड्रेस्ट, थूजा)। उपत्वचा रूसीसे ढँकी (पिक्स-लिक, फास, ऐन्थ्राक्सिन)। छोटे-छोटे सूक्ष्म दाने सब आपसमें मिल जाते हैं और इसीलिये रोगवाली जगह लाल सूजन-भरी मालूम होती है। रगड़ने या खुजलानेपर त्वचाका प्रदाह। नख रोग, विचर्चिका (आर्स, थाइराइड)। आमवात (एपिस, आर्टिका-यु)।

वृद्धि।—उत्तापसे, गर्म घरके अन्दर, सन्ध्याके समय (पल्स)। गोधूलिके समय और बसन्त ऋतुके आरम्भमें वायु-परिवर्त्तनके समय (ऐण्टि-टार्ट, नेट्र-सल्फ़)।

घटना ।—निर्मल वायु लगनेसे (पल्स, ऐण्टि-टार्ट)।

सम्बन्ध ।—सदृश ।—पल्स, नेट्र-सल्फ, फास, स्ट्रैनम, ऐण्टि-टार्ट, कैलि-बाई, लैक-कैन, आर्स, हाइड्रैस्ट, (अजीर्ण और उपक्षतमें तुलनीय)। रास-टक्सकी विषाक्ततामें दोषघ्न ।

शक्ति ।—३रे दशमिकसे ३० शततमिकतक ।

कैलि टेल्यूरिकम

(KALI TELLURICUM)

दूसरा नाम ।—पोटैसियम-टेल्यूरेट ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—विचूर्ण और तरल दोनों ही रूपमें तैयार होता है ।

उपयोगिता और आभास ।—श्वास-प्रश्वासमें बदबू, मुँहसे लार बहना, जीभ फूली, वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है ।

सम्बन्ध ।—तुलनीय ।—टेल्यूरियम, फास, कैलि-फास ।

शक्ति ।—निम्न-शक्ति ।

कैलमिया लैटिफोलिया

(KALMIA LATIFOLIA)

दूसरा नाम ।—अमेरिकन लोरेल ।

प्रस्तुत-प्रक्रिया ।—फूल हो जानेपर ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है ।

लक्षणोंके अनुसार प्रयोग ।—नीचे लिखे रोगोंमें लाभदायक हुआ है :—हृत्शूल ; अम्लत्व ; मूत्र-रोग ; शोथ ; वाधक ; पाकाशयका शूल ; मूर्च्छा-वायु ; वात ; आमवात ; सन्धिवात ; हृत्पिण्डकी बीमारियाँ ; प्रदर ; कटिवात ;

स्नायुशूल; पलकोंका गिरना; गर्भावस्थामें अण्डलाल मिला पेशाब; उपदंशसे पैदा हुआ गलेका जखम; कानका प्रदाह; तम्बाकूका दुष्परिणाम; सरमें चक्कर आना; वमन इत्यादि।

उपयोगिता और आभास।—नया और तेज़ स्नायुशूल; वात; छोटी सन्धियोंके प्रदाहकी वजहसे बीमारियाँ और वात या छोटी सन्धियोंके प्रदाहके प्रतिक्षेपकी वजहसे हृत्पिण्डकी बीमारीमें यह विशेष उपयोगी है। हृत्शूल और वातकी बीमारी यदि पर्यायक्रमसे पैदा होती है या मौजूद रहे तो इससे बहुत फायदा हुआ करता है। इसका दर्द सुई या शूल बेधनेकी तरह और पीसनेकी तरह नीचेकी ओर जानेवाला और सुन्न करनेवाला होता है। दर्द आदि स्नायुकी गतिके अनुसार चलता है, एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें जाकर ठहरता है और रोगवाली सन्धि गर्म, लाल तथा फूल जाया करती है। जरा भी हिलानेपर वहाँका दर्द बढ़ जाया करता है। माथा झुकाने या नीचेकी ओर देखनेपर सरमें चक्कर आ जाता है। दाहिनी आँख और आँखके गोलेमें तेज़ सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है तथा पेशियोंकी अकड़न आँख हिलानेपर बढ़ जाया करती है; आँखका दर्द और सरका दर्द सूर्योदयके समय आराम होता है, दोपहरमें खूब बढ़ता है और सूर्यास्तके समय आराम हो जाता है। छातीके भीतर धड़कन हुआ करती है और इसी वजहसे रोगी अपने जीवनके सम्बन्धमें डरा करता है; दर्द हृत्पिण्डको बेधकर पृष्ठ-फलकके नीचे जाता है। कलेजेकी धड़कन, झुक जानेपर बढ़ जाती है। श्वासकष्टताके साथ हृत्पिण्डका बहुत ही तेज़ स्पन्दन। नाड़ीकी गति धीर, प्रायः छूनेपर मालूम नहीं होती, चेहरा तथा हाथ-पैरका अगला भाग बरफकी तरह ठण्डा—ये कई कैल्मियाके प्रधान क्रियाफल और निर्णायक लक्षणकी तरह माने गये हैं।

लक्षणावली

मन।—शयनावस्थामें अच्छा रहता है; पर चलने-फिरनेपर सरमें चक्कर आने लगता है, उद्वेग, कलेजा काँपना और अप्रसन्न भाव पैदा हो जाता है।

मस्तक।—सरमें चक्कर आना, दर्द और दृष्टिहीनता (मर्क, आसरिस, नेट्र-मूर, कैलि-बाई, वेरेट), इसके साथ-ही-हाथ पैरमें दर्द और थकन मालूम

होना, माथा झुकानेपर (ग्लोन, नक्स, पल्स) या नीचेकी ओर देखनेपर (स्पाइजि, एलियैन, ऊपरकी ओर देखनेपर—कैल्के, क्यूप्रम, ग्रैफ, लैके, टैबाक)। सरमें चक्कर आना; शरीर हिलाते ही सरमें चक्कर पैदा हो जाता है (बेल, मिडोहन)। ललाटदेशमें सर-दर्दके बाद अगल-बगलके मुँहकी दोनों हड्डियोंमें उखाड़नेकी तरह तेज़ दर्द। दाहिनी आँखमें दर्द, माथेमें खालीपन मालूम होना, आँख जल भरी और क्षीण-दृष्टि। माथेके दाहिनी ओरके एक छोटेसे अंशमें दर्द (इग्ने, अंगुलभर जगहमें—कैलि-बाई)। नित्य तीसरे पहर और रातमें स्नायुशूल, माथेके पिछले भागसे आरम्भ होकर ऊपरकी ओर फैल जाता है, चेहरेके दाहिने पार्श्व तक रोग फैल जाता करता है। माथेमें फूटनेकी तरह आवाज़से (ऐलो) रोगी डर जाता है और क्रमसे यही आवाज़ कानमें शंखकी आवाज़की तरह मालूम होती है। बहुत तेज़ पीसनेकी तरह सर-दर्द, सूर्योदयके समय आरम्भ। दोपहरमें अत्यन्त वृद्धि और सूर्यास्तके समय आराम हो जाता है (नैट्र-म्यूर, स्पाइजि, सैङ्गियु, टैब), बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होनेपर सर-दर्द घट जाता है (जेलसिमियम)।

आँख।—दाहिनी आँख और अक्षिगोलकमें सुई बेधनेकी तरह तेज़ दर्द (बाईं आँखमें—स्पाई)। पेशियोंकी अकड़न और आँख हिलानेपर दर्द बढ़ जाता है (स्पाई, ब्राई); सूर्योदयके समय आरम्भ होकर, दोपहरमें बहुत बढ़ जाता है और सूर्यास्तके समय अच्छा हो जाता है (नैट्र-म्यूर); यह दर्द ललाटतक फैल जाता है। दृष्टि-हीनता, सीधे होकर बैठनेपर, वमनकी अधिकताके समय और नीचेकी ओर देखनेपर बढ़ जाती है। अण्डलाल मिली पेशाबकी बीमारीमें आँखका रोग; इसके साथ ही पीठमें ऐसा दर्द मानो पीठ टूट जायगी। आँख मलनेपर उसमें डंक मारनेकी तरह दर्द मालूम होता है।

मुखमण्डल।—टपककी तरहके सर-दर्द रोगमें चेहरा लाल और चिन्ता प्रकट करनेवाला हो जाता है। मुँहका स्नायुशूल दाहिनी ओर होता है (रैनान, बेल, मैग-फास, चेलिडो)। बाएँ पार्श्वका (स्पाई, कोलो, मेजिर); दर्द बहुत ही प्रचण्ड, छेदनेकी तरह और बेहोश कर देनेवाला—यन्त्रणासे विकारतक पैदा हो जाया करता है और मुँहका स्वाद दूधकी तरह हो जाया करता है। मुँहके दाहिने पार्श्वका स्नायुशूल—सर्दी लग जानेसे उत्पन्न (जेल्स, नाइड्रि, स्पिरिट-डाल, ग्रैफ, रास, ऐको) दर्द दाहिने बाँहतक फैल

जाता है और रोगवाली जगहको सुन्न बना देता है (ऐको, कैमो, प्लैट) ; दर्द बहुत तेजीसे नीचेकी ओर दौड़ जाता है (कैक्ट ; ऊपरकी ओर—लिडम) ; विरक्ति या मानसिक परिश्रमसे बढ़ना और भोजन कर लेनेपर घट जाना। दोनों ओंठ फूले, सूखे और अकड़े हुए। चिबानेवाली चर्वणपेशिओंमें थकन मालूम होती है। हनुसन्धिमें डंक मारनेकी तरह दर्द।

मुँह और गलेके भीतर।—तीता स्वाद और मिचली ; भोजन कर लेनेपर यह दूर हो जाती है। जीभ सफेद आभा लिये, सूखी, उसका बायाँ पार्श्व ऐसे दर्दसे भरा मानो त्वचा चय हो गयी है। बोलनेसे जीभमें दर्द होता है। जीभके दाहिने पार्श्वमें छेदनेकी तरह दर्द ; दाँतसे दबानेपर आराम मालूम होता है। भोजनके कुछ ही बाद लाला-ग्रन्थिमें चुनचुनी पैदा हो जाती है। अन्ननालीमें कुछ खौलनेकी तरह मालूम होना और बहुत ज्यादा लार बहना, जीभके नीचेकी लाल-ग्रन्थिका प्रदाह। गला सूखा और ऐसा मालूम होता है मानो एक गोला नीचेसे उठकर कण्ठद्वार रोक रहा है (इग्ने, आर्स, लाई, प्लैट, पल्स)।

पाकस्थली।—भोजनके बाद दर्द आदिका बन्द हो जाना। मिचलीके साथ चारों ओर अन्धकारमय दिखाई देना, गलेमें दबाव मालूम होना, आँतें रुकी, आध्मान-वायु, श्वास-प्रश्वासमें बाधा और हाथ-पैरोंमें दर्द। मिचली न रहनेपर भी वमन और चबानेकी तरह मुँह चलाना। वमन हो जाने बाद पाकाशयमें संचय हुआ आध्मान-वायु दब जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि उदरके ऊपरी भागमें बैंगनकी तरह कोई पदार्थ दबाव डाल रहा है ; झुककर बैठनेपर दर्द अधिक मालूम होता है ; इतनेपर भी रोगीसे झुके बिना रहा नहीं जाता ; सीधे बैठनेपर आराम मालूम होना। पाकस्थलीमें गड़गड़ शब्द और शून्य भाव—मानो सबेरेसे उसने कुछ भी भोजन न किया हो। उदरके ऊपरी भागमें स्पर्शका सहन न होना।

अन्त्राशय।—यकृत-प्रदेशमें दर्द। यकृतके निचले भागसे अचानक दर्द आरम्भ होकर बायीं ओरको बढ़ जाता है और फिर दाहिनी ओर आनेके बाद बन्द हो जाता है। हिलने-डोलने और किसी भी करवट सोनेसे दर्द बढ़ जाता है, इसलिये रोगी चित्त होकर सोनेके लिये मजबूर होता है। सीधे बैठनेसे घट जाता है। विवाहिता स्त्रियोंका स्नायुशूल।

पेशाब।—बार-बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होनेपर सर-दर्द घट जाता है (जेल्स, साइलि)। लाला मूत्र—निम्नाङ्गमें दर्द और सारे शरीरमें शोथके साथ चेहरा मलिन—दीप्तिहीन, उजला और त्वचा बिना पसीनेकी।

स्त्री-जननेन्द्रिय।—वाधक, ऋतु बहुत ही तकलीफ़ देनेवाला ; हाथ, पैर, कमर और दोनों उरुके भीतरी भागमें बहुत दर्द मालूम होना। प्रदर कुछ पीला, ऋतुके एक सप्ताह बाद स्राव आरम्भ हो जाता है ; प्रदर-स्रावके समय दर्द आदि बढ़ जाया करता है।

श्वास-यंत्र।—ऐसा मालम होता है, कि किसीने कण्ठनालीको अंगुलीसे दबा रखा है। साँस लेने और छोड़नेके समय स्वरनलीके आक्षेपकी तरह आवाज़। गलेमें सूखापन या त्वचामें रगड़ लगनेकी तरह मालूम होना और इसी वजहसे बार-बार खाँसी ; बहुत ही सहजमें धुमैला और सड़ा हुआ या नमकीन स्वादका बलगम निकलता है। श्वास-कष्ट ; गलेमें सूजन मालूम होती है ; हृत्स्पन्दन, उद्वेग और छातीमें दर्दके साथ कलेजा धड़कना—हृत्शूल रोगमें। साँस लेने और छोड़नेके समय और शरीरको थोड़ा भी हिलानेपर छातीमें बहुत गर्मी मालूम होती है। वक्षस्थलमें ऐसा दर्द मानो चोट लग गयी है। हृद्पिण्डके ऊपरी स्थलसे शूलकी चोटकी तरह तेज़ दर्द वक्षको भेदकर पृष्ठ-फलक और बाईं बाँहतक उतर आता है (रास, स्पाई, कैक्ट)। वक्ष और पीठकी पेशीका वात, शरीरके प्रत्येक संचालनसे बढ़ जाता है।

हृत्पिण्ड।—छाती धड़कती है (कैक्ट, कैलि-बाई, लैके, लोरो, लिलियम-टाई, लिसिन, नक्स-मस, ऐसिड-आक्सैल)। हृत्स्पन्दन, उद्वेग, वाधा-प्राप्त श्वास-प्रश्वास, सुस्ती या श्वास-कृच्छ्रता, हाथ-पैरोंमें दर्द और वक्षके निचले अंशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द ; मुँहके दाहिने पार्श्वमें स्नायुशूल, हृत्स्पन्दन, सामनेकी ओर झुकनेपर बढ़ जाता है। सोने बाद कलेजा धड़कना और इसी वजहसे गलेके भीतरतक टपक मालूम होती है और समूची देह काँपा करती है ; बाईं करवट सोनेपर बहुत बढ़ जाता है (डेफनी, फास, पल्स) और चित्त सोनेपर घटता है। रोगीके मनमें बहुत डर पैदा हो जाता है। वातके कारण हृदन्तर्वेष्टित प्रदाह और इसी वजहसे हृत्पिण्डका

बढ़ना और द्वारावरोधिनी पेशीमें विकृति। हृत्पिण्ड-प्रदेशमें जगह बदलनेवाला वातका दर्द—दर्द बायें बाँहतक फैल जाता है। शूल या छुरी बेधनेकी तरह दर्द, हृत्पिण्डको भेदकर बाएँ पृष्ठफलकतक फैल जाता है। इसके साथ ही हृत्पिण्डमें भयङ्कर टपक, नाड़ी क्षीण, पर तेज़ या धीर-गति; क्षीण, छूनेपर प्रायः मालूम नहीं होती, अनियमित; मुखमण्डल सफेद और हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं; इसके अलावा कभी-कभी बहुत ही धीर गति और क्षीण हो जाया करती है। श्वासमें तकलीफ़के साथ हृत्पिण्डकी गति बहुत ही तेज़। वातका दर्द एकाएक हाथ-परसे हृद्पिण्डमें प्रतिक्षिप्त हो जाता है (कोलचि, ऐब्रोट)।

प्रत्यङ्ग आदि।—गर्दनकी पेशियाँ सब छूनेपर या गर्दन हिलानेपर बहुत दर्द मालूम होता है। गर्दन अकड़ी हुई; विशेषकर कशेरुकाका सिरा (गर्दन और पीठके बीचवाले अंशमें जहाँ एक कशेरुका कुछ ऊँची उठी हुई है) वाले स्थानमें स्नायुशूल, दर्द गलेसे दाहिने बाँह, कनिष्ठ या अनामिका (४थी अंगुली) में चला जाता है और रह-रहकर पैदा होता है तथा रातके आरम्भमें बढ़ जाता है। मेरुदण्डके बीचमें लगातार दर्द, इसके साथ ही उत्ताप और जलन। नितम्ब-देशमें शलाका बेधनेकी तरह दर्द होता है और तुरन्त गायब हो जाता है, एकाएक पैदा होता है और तुरन्त अच्छा हो जाता है, शरीर हिलानेपर घटता है। पीठकी राहसे दर्द नीचेकी ओर चलता है, मानो मेरुदण्ड टूट जायगा—इस ढङ्गका दर्द। त्रिकास्थि-प्रदेशमें सुन्न जैसा मालूम होना, वात-वेदना—बहुत ही तेज़, एकाएक दर्द अपनी जगह बदल देता है और एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें चला जाता है। रोगवाली सन्धि गर्म, लाल और फूली; रोगवाली जगह जरा भी हिला देनेपर दर्द बढ़ जाता है (ब्राई देखिये)। वात-वेदना; बाँहके ऊपरी अंशमें और पैरके निचले अंशपर आक्रमण करती है; सोनेके समय बढ़ जाती है। कन्धेमें दर्द, दाहिने कन्धेकी त्रिकोण-पेशीका वात। बायें पृष्ठफलकके निचले अंशमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। बाएँ बाँहमें दर्द और सुन्न मालूम होना; कोहनीकी सन्धिमें कुटकुटाहट (एमोन-कार्ब, ऐण्टिम-क्रूड; बाईं कोहनीमें ऊँची आवाज़के साथ फूटन—जिञ्जिव)। ऊरु-शिखरसे पैरकी राहसे चरणतक छेदनेकी तरह दर्द। पैरकी पोटलीकी पेशी क्षीण मालूम होती है। सभी पेशियाँ बहुत क्षीण और क्लान्त मालम होती हैं; रोगी परिश्रम बिलकुल ही करना नहीं चाहता, यहाँतक कि

सीढ़ी चढ़कर ऊपर भी नहीं जा सकता। उदरामयके साथ सुस्ती और माथेमें खालीपन मालूम होना।

त्वचा।—शरीरकी त्वचाकी क्लान्ति, थोड़ा-सा पसीना निकलनेके साथ शरीरमें जगह-जगह कुटकुटाहट होती है। जगह-जगह लाली, सूजन और प्रदाह पैदा हो जाता है, मानो फोड़ा निकलना चाहता है। हाथके ऊपर विसर्पकी तरह उद्भेद और प्रदाह पदा हो जाता है (रास), इसके साथ ही साँसमें तकलीफ़।

निद्रा।—अस्थि-वेष्टमें दर्दकी वजहसे नींदमें व्याघात पैदा हो जाता है। सोया-सोया उठकर खड़ा हो जाता है और टहलने लगता है; निद्रित अवस्थामें बोलता है (ऐको, ऐलैन, इग्ने, कैलि-कार्ब, लेडम, पल्स), मस्तिष्क बिगाड़ देनेवाले सपने; हत्याके सपने।

वृद्धि।—प्रदर-स्रावके समय, छूनेपर, रोज़ रातमें, सोनेके बाद तुरन्त ही; सूर्योदय और दोपहरके समय, उत्तापसे, निर्मल वायु लगनेपर (सर-दर्द और आँखकी बीमारियाँ), मानसिक परिश्रमसे, शरीर हिलाते ही, झुककर बैठनेपर, माथा झुकानेपर और नीचेकी ओर देखनेपर।

घटना।—सूर्यास्तके समय, सर्दी लगनेपर, चित्त सोनेपर, सीधे होकर बैठनेपर या खड़े होनेपर और भोजनके बाद।

सम्बन्ध।—**प्रतिविष या दोषघ्न**।—ऐकोन, बेलेडोना।

तुलनीय।—टैबेकम (हृत्पिण्डका रोग, नाड़ी धीर); पल्स (घूमनेवाला दर्द); लेडम, ऐब्रोट (वात); इस्कूल (मलान्त्र); रस-टक्स (आमवात); ऐकोन, डिजि (हृत्पिण्ड); आर्स (स्नायुका दर्द); जेल्स (पलक); बेलेडो (सर-दर्द); डायस्को (पाकाशयका शूल); कैलि-बाई (सर्दी); लाइको (सन्धिवात); कैक्टस, स्पाइजि (वात, अन्त्रशूल)।

सदृश।—लिडम, कैक्ट, टैबाक, रोडो, स्पाइजि, कोलचि, ऐब्रोट, रास, ऐक्टि, ऐसिड-बेन, कैलि-बाई, लेक-कैन, लिथिया-कार्ब, लाइको, ऐलो। हृत्पिण्डके रोगमें नक्स, थाइरायड और स्पाइजिलियाके बाद कैल्मियाका प्रयोग करनेपर बहुत अधिक फायदा होता है।

शक्ति।—३x दशमिकसे २०० शततमिक क्रम।

Shri Harbamsha Prasad Upadhyay Baskota
श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishw
...e),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके,
P. O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich
S.B.

०४६|९|२३